

काबल धर मुक्कलिय आनि अटकिम रेवापर ॥
 . उनंसत होय सरिता. उत्तरि गति सबेग काबल गयो ॥
 निद्रित जगाय अद्विय रजति आलस प्रति दल अप्पयो ॥१॥
 बुल्लो दे कग्गरहिं छत्र भग्गत भुव भग्गी ॥
 अब निवारि निंदरिय पिक्खि पव्वय दव लग्गी ॥
 घर फुट्टा जर फुट्टि फुट्टि हिंदुव मिलि आवत ॥
 आजम अन्नय सिचान परत दिह्लिय पारावत ॥
 बंधहु प्रपंच. मंडहु बिहित यह न बेर फिरि आयहे ॥
 बिन जतन गये लव लव बहुरि दूजे कलप दिखायहे ॥२॥

[निःशाखी]

अद्धीके घरियारपै चर पत्र लगाया ॥
 धूजि थरत्थर नाजरुं अवरोध चलाया ॥
 साहबहादुर सैनसै बरजोर जगाया ॥
 जिन खंधै सुख निंद ते परलोक पलाया ॥ ३ ॥
 जिनकी बाहर चाहते तिन धाट बनाया ॥
 अब उठैही अप्पनां नहिं छत्र पराया ॥
 यौसुनि बेगम अप्पनी कर अँचि उठाया ॥
 जाको कंत कहावते वह बासर आया ॥ ४ ॥
 लाय सिलगगी भक्खरौ तुम निंद लुभाया ॥
 यौ सुनि आलस जगिक्कँ अवरोध उठाया ॥
 कग्गर बंचि प्रपचक्कँ बुधसिंह बुलाया ॥

कृमिजा"इतिहैमः ॥ रेषा नर्मदा. दल पत्र. अप्पयां दयो ॥१॥ बुल्लंप्रोडति ॥ अ-
 गगत नष्टहीत. निंदरिय निद्रा. सिचान तांके बाज. पारावत कपोत. "पाराव-
 त. कलरवः" इतिहैमः ॥ बिहित यांग्य ॥ २ ॥ निःशाखी ॥ अद्धीकेइति ॥ अ-
 द्धी अर्थरात्रि. देशीप्राकृत. तांके चर दूत. (नाजर) यावनी. अंतःपुर में जायये
 योग्य नरयेसधारी नपुंसक तिननै. अवरोध अंत पुर नामै. "बुद्धान्तश्चावरोध
 श्रेत्यमरः ॥ सैन सघन तासों. निंद निद्रा ॥३॥ जिनकीइति॥ बाहर सहाय. धा-
 द लोके धाड़ा. बासर दिन॥४॥ लाय सिलगगीइति॥ भक्खर पर्वत. देशीप्राकृत.

नैन मिलाया नेहसैं भुज भार मिलाया ॥ ५ ॥
 वस सताके वीरतू कहि यों बिरदाया ॥
 हिंदू भूष हराम है सब फोरि मिलाया ॥
 दिल्लीके कुच कुभपैं कर आजम लाया ॥
 जोर जनानैं जारका नहिं जात पचाया ॥ ६ ॥
 अब तेरे भुजदडपैं रसबीर बढाया ॥
 बाजीमें ओर न रहया पण प्राण लगाया ॥
 हौर भुगन हूर है जितैं जस माया ॥
 यों सुनि राव उछाडकैं कर मुच्छ मिलाया ॥ ७ ॥
 मुष्टि सम्हारी सभरी रस सत्त ७ उडाया ॥
 थाई वीर रउडका इकैं छक छाया ॥
 ज्यों कंदल कनउज्जके भट सजमजाया ॥
 कै गोरी सुरतानपैं मजि कन्ह धकाया ॥ ८ ॥
 ज्यों जभासुर जगपैं सतसत्त सुहाया ॥
 कै दोआचल जैनको कपिगज कसाया ॥
 पीवन पारावार कै घटजात घुमाया ॥
 कै बन सुत्ता विटिकैं मृगराज जगाया ॥ ९ ॥
 कै काकोदर चपतैं फनफैल बनाया ॥

नैन अवरोधवठाया दूर किया कंगार पत्र फैकारिकैं बुधोसहबुद्धा कस्था
 ताको मिलाया दिया ॥ ५ ॥ वसइति ॥ सताके शत्रुशत्रुके जोर पराक्रम पचा
 पाचन किया दिल्ली मेरे भोगने योग्य स्त्री रूप है; ताके कुच कुभपैं आजम
 स्ताक्षेप कियो चाहत है यामैं जनानेके जार आजमका जार मेरे पाचन नहीं
 ता ॥ ६ ॥ अबइति ॥ बाजी खेलतामैं पण दाव भुगन भोगियेको हूर अ
 सरा पाचनी माया वैभव ॥ ७ ॥ मुष्टिइति ॥ खट्वाणी यह शेष सत्त सत्त ७
 थाई स्थाईभाव पीररउडका पीररम रौबरस का उत्साह अरु क्रोध यह अ-
 नै गोरी सुरतानपैं कन्ह पृथ्वीराज चहुवानका काफा ॥ ८ ॥ ज्याइति ॥ स
 तसत्त सतसत्त (इन्द्र) शुद्धप्राकृत, कपिराज हनुमान कमाया सजीभूत हुआ
 पारावार समुद्र ताको घट कलस तासा जात जन्में ऐसे अगस्त्य, घुमाया
 उत्साह युक्त भया ॥ ९ ॥ कैइति ॥ काकोदर सर्प ताको, सायात बारूद तामैं

सोर किधौ साबातमें दब दुंग मिलाया ॥
 जमका भुंखल जानिकैं कहि पाव दबाया ॥
 यौ मुनि वतैं संभरी मन जंग लगाया ॥ १० ॥
 सौक सिलग्गा साहका कहि वैन समाया ॥
 सो सिर जोखौ कंधपै सुख अप्प कुमाया ॥
 गही ज्यानपनाहकी हम बीर सिवाया ॥
 धरगइरामी सेर व्है कोऊ न कहाया ॥ ११ ॥
 अगैं पंडव जितिकैं कुरुवंस नसाया ॥
 रावन किन्नी रामसौं साही फल पाया ॥
 पापन पक्षी होनवै दल होहु सिवाया ॥
 अँचौ आजम कंठमैं धरि चाप अधाया ॥ १२ ॥
 यौ मुनि साह सिराइकैं तजबीज लगाया ॥
 सेनानी संभर किया चतुरंग सजाया ॥

॥

बहू प्रात प्रयानको फरमान चढाया ॥ १३ ॥
 जंग नगरोँ नह व्है धर काबल छाया ॥
 सिंधू राम रनंकिया चढि सोर सिवाया ॥
 डेरौ डेरौ सज्ज व्है नर बाजि कसाया ॥

जालग तीजे जासका घगियार बजाया ॥ १४ ॥

दुग दांग (गिनती) जानि इच्छा पूर्वक ॥ १० ॥ सो कहति ॥ सिलग्गा प्रखलि-
 तनया, लसाया लसित किया, सोतिर भेगे मस्तक कंधपै कंधे पर, तोलों य-
 त जंग, हुलागा संचय किया, ज्यान प्राण भयनके तिनके, पनाह रक्षक, ऐसे
 आप, तिनकी है गहजंग, ज्यान पनाह ए दोऊथावनी लवज हैं, सिवाया सब
 सौं सिवाय, सेर सिंह यावनी ॥ ११ ॥ अगैं इति ॥ पक्षी प्रारब्धकी सिद्धि,
 दल सेना, होहु यदुक्त धातुको जोदु लकार के प्रथम पुरुषके भवतु प्रयोग को
 प्राकृत है, अधाया अतुत ॥ १२ ॥ यौ इति ॥ सिराइ प्रशंसा ताको, कै करिकैं,
 आस बडी लभा तजबीज देगी प्राकृत, प्रारब्धकी रचना विशेष, सेनानी से-
 नापति, संभर बुधासिंह, फरमान हुकम ॥ १३ ॥ जंग इति ॥ रनंकिया यह शब्द
 को अनुकरण, कसाया सज्ज नया, जास प्रहर ॥ १४ ॥ कै इति ॥ डेरौ डेरौ ह-

के गज घेरों घल्लिकें चेरों गरदाया ॥
 काहू व्याज प्रपचकें धिरुदाय मिलाया ॥
 अंग रुमाळों मंजिकें रजरग उढाया ॥
 द्वैद्वै मनके मानके सजाव खिलाया ॥ १५ ॥
 के जल देगों पायकें मुख लोभ लगाया ॥
 अगों रक्खि गजीनको दिसवास बढाया ॥
 भूपि महाउत कधपै गति बंदर आया ॥
 जगी द्वेदन मडिकें गुड नद्ध बनाया ॥ १६ ॥
 घाय घग्गारी घोरज्यों घलि घट फिलाया ॥
 चाप तुपकाँ आदिकें सब हेति सजाया ॥
 बधि वरत्तों सज्जकें बड वाक लगाया ॥
 फोजों नायक भार ए सिर तेरे आया ॥ १७ ॥
 यों कहि कवा थप्पिकें रन रग रचाया ॥
 जगी अदुक डारिकें आत्मान छुराया ॥
 वारी बाहिर वाकतें रवि डाक डगाया ॥
 केक मतगों तुगके धुजदड झुकाया ॥ १८ ॥
 मेघाडवर के कसे सिर अवर लाया ॥
 केक हवहों सज्जकें गल गज्ज मचाया ॥
 यों नभ अवर अघ्र भू १००० परिमान गिनाया ॥

स्त्री क अलुवर तिनने व्याज कण्ट, रुमाळ घज के लंड विशेष तिनकरि सं-
 जाप लप्याव लारु सैरा तथा हलवा खिलाया मद्यकराया ॥ १५ ॥ केह
 ति॥ द्वै देशीप्राकृत एहुत पडे पात्र विशेष तिनको गजी इस्तिनी तिनको
 गति तरह पद पातर ताजी गुड इस्ती की सिताइ तिनकरि मद्य दध ॥ १६ ॥
 घायइति ॥ हेति आयुध वरत रस्मे तिनकरि घड बडे, वाक यवन ॥ १७ ॥
 'पाइति ॥ अदुक जर्जर आत्मान यधकोखूदा तथा लभा "आत्मान यधनस्त
 म" इतिहैम ॥ वारी इस्तीको ठान ताके "वारी तु गजबन्धु" रितिहैम ॥
 तुंग जये ॥ १८ ॥ मेघइति ॥ मेघाडवर कायापारे होदा लोके अयावाजी

हत्थी आलमसाहके रन एह सजाया ॥ १९ ॥
 लक्ख १००००० तुरंगों लेनपै वर साज बनाया ॥
 देत खलीनों दोरपै ननि कंध नमाया ॥
 जंग पलानों डारिकै कसि तंग गिलाया ॥
 घोर घमंकी पक्खगैं छोनीतल छाया ॥ २० ॥
 रंग बिरंगे गह के गजगाह लगाया ॥
 छोरि दुवगों ठानतैं चर बाहिर लाया ॥
 तुक्कि मलंगों तुंगपै रवि लुक्कि लुभाया ॥
 तोप हजार १००० तीरकै चहकात चलाया ॥ २१ ॥
 डारि दवाली बीर जे सजि जंग लुभाया ॥
 साहबहादुर सज्ज ठहै अब बाहिर आया ॥
 बारनपट्ट अरोहिकै फरमान लगाया ॥
 कुंच नर्कावो बुल्लिकै हरवल्ल बढ़ाया ॥
 एते मान बिहानका धरियार बजाया ॥
 पाय रकावों मंडिकै चढि वीर चलाया ॥
 छोनि मचक्की भारकै फन नाग डगाया ॥
 चौंके दिग्गज चिक्करैं उर कल्प भ्रमाया ॥ २३ ॥
 ध्यान समाधी छोरिकै मन चित्र बढाया ॥

के कितेकनपै. नभ शून्य०. अंबर शून्य०. अभ्र शून्य०. भू एक१. ऐसे हजार १०००
 ॥ १९ ॥ लक्खइति ॥ लेन पंक्ति. तिनपै. खलीन लगाम तिनकों ॥ २० ॥
 रंगइति ॥ राह रीति. तिनकरिकै. दुवागों दोऊ तरफ ववके अगारी के रस्से
 तिनकों. तुक्कि तुलितुलिकै. तुंग ऊंची. तिनपै. तोप हजार तोपनको हजार.
 हजार १००० तोप यह अर्थ. तीरकै तीर उनको निवाला बादरुकी थैली अरु
 गोला सो उनमें डारिकै. चहकात चहकनों. चरखनके शब्दको अलुकरना ॥ २१ ॥
 डारिइति ॥ दवाली मेखलाकों. देशीप्राकृतमें. बारनपट्ट मुख्यबारन हस्ती ता
 पै ॥ २२ ॥ एतेइति ॥ कल्प प्रलयकाल ॥ २३ ॥ ध्यानइति ॥ समाधि समाधि

तद्दिन धूरि बितानके घन भान पिधाया ॥
 सारद पुण्ड्रिणमका ससी जिम बारद छाया ॥
 दब्बि धरिती पक्खरों इक ओघ लखाया ॥ २४ ॥
 सेलों अबर ढाकिया नभचार रुकाया ॥
 म्हा वात भूपेटकै फीलों फहराया ॥
 तारस उत्तरि पौदकी सुभ सौन बताया ॥
 दक्खिन भास्त्राजनै द्रुत लाभ दिखाया ॥ २५ ॥
 यों दरकुच अनीकनै लाहोर निराया ॥
 पजाबी दल बुल्लि कै कछु तथ्य मिलाया ॥
 आलममाह सिपाह यों सजि सेर सिबाया ॥
 द्विल्लीके सिर दावपै कगि चाव चलाया ॥ २६ ॥

इति श्रीवशमारकरे महाचम्पुके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपति
 बुधसिंहचरिते दूतद्वाराबहादुरशाहान्तिकौरंगजेवपञ्चत्वोदन्तप्रापशा
 सेनापनीकृतबुधसिंहससैन्यबहादुरशाहलवपुरागमनवर्णन दश
 ममयूख ॥१०॥ आदितोऽष्टचत्वारिंशोत्तरद्विशततम ॥२४८॥

वारे तिननै चित्र अविरज, पिधाया अन्तर्धान हुआ पुण्यम पूर्णिमा वा दि
 पस बारिद मघ ओष मयूह ॥ २४ ॥ सेलोइनि ॥ नभचार पक्षी घात पवन
 फीलों फील[हस्ता] पावनी, तिनपै तारामामदिशसे दक्षिण दिशा फाली शिरी
 आवै ताको कहिये पौदकी काली शिरी सौन शकुन भारद्वाज लोके रूपारेल
 तथा बुलावहा सानधिरी ॥ २० ॥ योंइति ॥ निराया निकटलिया पजाबी प
 जायका, दल फटक बुल्लि बुलाया तथ्य तदा सेर सिंह यावनी चाव चाह
 [उत्साह] ॥ २६ ॥

अधिशमारकर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि म बुंदी के राजा बुं
 धसिंह के चरित्र में कृत द्वारा बहादुरशाह को औरंगजेब के मरने की खबर
 मिलना, बुधसिंह को सेनापति करके सेना सहित बहादुरशाह के लाहोर
 आन के वर्णन का दशवा १० मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ अंश
 तालीस २४८ मयूख हुए ॥

॥ गीर्वाणभाषा ॥

लाहोरनामपुत्रोऽपि कृते एवमे,
मेघालुकाश्चकदहादुरशाहजन्मा ॥

आयातमानु दलमीपितमानरातो

ऽजीमस्य भूतसुनभाविनिदः तदा कृतः ॥ १ ॥

[उपजानिः]

श्रुत्वाऽवरङ्गं कृतकायहानं, स्या समानस्य पत्नैः प्रपुत्र्य ॥

तत्रत्यभूतिर्दविष्णादिगता दुर्गा च सज्जीभूतजायमानाः ॥ २ ॥

स्वास्थ्यं गृहाणोति विचार्य वलर्जहीहि चायाजितयन्त्रिन्ताम् ॥

गीर्वाणभाषा ॥ वसंतनिलका ॥ लाहोरेति ॥ सेवानुसारतनहादुरशाहजन्मानेना-
ऽनुकृतवत्या बहादुरशाहसेनया लाहोरनामपुत्रीनतायात् प्रपुत्र्य ॥ पुत्र ज-
ति आगरात आगरानामन्तरकायात् भूतसुनका विनिदः अतीव तीव-
र्यदुःखानवतः अजीमस्य स्वपुत्रराजां साजितयन्त्रिन्ताम् ॥ स्वपुत्रः स्व
शब्देन बहादुरशाहचोदयस्वरयं पुत्रः पुत्रस्य सा जय भक्तवर्तिना ॥ इति यत्र
आशु शीघ्रं आयातं प्रापत् ॥ १ ॥ उपजानि ॥ अर्धेति ॥ अत्रत्य सैन्य-
मह कृतकायहानं त्यक्तशरीर 'अत एवमे' इत्यन्तर्भागे यत् ॥ 'चुकोत्ताता'
वित्यनोदश ॥ मया कर्त्ता जयैकपुत्रं ॥ तं ह सेनपुत्री तारतः स जयत् ॥ यमराष्ट्रं
समागत्य सप्राप्य तत्रत्या तत्र जना या इवगातिभूतिः इत्यादि-पैथ्ये या
ता गृहीता तस्या दुर्गा च सज्जीभूत रातर्जितुय ॥ २ ॥ स्वाभ्यासात् ॥ दनः
हंपितस्त्वं इति मल्लिखितं ॥ पथे एवास्थेऽप्यनतं दृष्ट्वा गृह्णन् ॥ यदा विज-
तचक्रचितं आया लघुपितृव्यत आजमशाह त त एव अजीम साजितं यत्र
क्र सेना ताचिन्तां ॥ जहीहि त्यज ॥ अत्र पुत्रकार्यं मया कर्त्तं प्रदत्तो वि-

॥ भाषानुवाद ॥

लाहोर नाम नगर जे मेघ का अनुकरण करनेवाली बहादुरशाह की सेना
प्रयाण करते ही आगरा नामक नगर से भूत आदि को जारनेवाले अपने पु-
त्र अजीम का चाहो हुआ पत्र शीघ्र आया ॥ १ ॥ अवरंग के जंगल की हा-
नि सुनकर मैंने मैतपुरी में आकर यहाँ जा बैसब धन आदि ले लिया और
आगरा के गढ़ को भी सज्जीभूत कर लिया है ॥ २ ॥ हे पिता! इस मेरे लिखे
हुए को विचार कर निश्चिन्ता धारण करो और मेरे काका आजमशाह की
एकत्र कीहुई सेना की चिन्ता को छोड़ो ॥ यहाँ मैंने भी युद्ध का उपाय रच-

मित्रा आत्मको पत्र लिखना] उत्तमराशि-एकादशमयुत (२६१)

मतेऽत्रापि मया प्रयत्न प्रलक्ष्यते चाऽऽजमगादपन्था ॥ ३ ॥

[इन्द्रजित्]

मपता द्वाग्भवतापि विद्वन् गेनामृता बुन्दिवृषेण नाकस ॥

मात्र शुद्धातमुखा विमूर्ति जातमो विपुर्जाजवसीन्नि जय्य ॥ ४ ॥

(शुद्धमादृतमापा)

(गीते)

इय पत्त सौक्या अर्द्धमन्तिहिम जयायमेष्टु समम् ॥

माद्वहाउजोहा हरिमपपद्या जिईमभा तृचा ॥ ५ ॥

जह सृगस शास्थिते बुद्धो मेरो पद्धमालिगिम ॥

अद्दिगपरो उद्द्यो विगादिमसुद्ध विह्लपदि दगरो ॥ ६ ॥

वा रोयम्मि अमज्जे मिन्त्रिओ जनेतरा बुद्धादममम् ॥

इत फि ते यपु याजमगादपन्था अ जमगादपन्था प्रलक्ष्यते ॥ ३ ॥ इन्द्रजित् ॥ य तमराशिनिति ॥ ४ विद्वन् पत्रा जयता अपि तु
पद्म शुद्धातमुखा मनापु ॥ ने ॥ या ॥ सा ॥ स ॥ त्रक शीघ्र आगम्यताम्
मूर्ति कोन ॥ दिनागिर नाह्य मय पयित्वा आत्म अविधायीकारा पता
गे विपु आत्ममगाद चाजवसीन्नि जाजयनामनारसीमाय जय्य जनु
तय ॥ ४ ॥ शुद्धमादृतमापा ॥ गीते ॥ प्रचाहि ॥ इति पत्र बुद्धा अर्द्ध-
मन्तिहिम जयायमेष्टु ममम् ॥ गारय गकुया रा ह्यपमृता जिगीषवा मगा ॥
मया शु रगाणन्त उष्टा मय प्रलक्ष्यताक्षिरा ॥ अथवा दिनकर उदिता निशा दि-
व्युदवन्तरल पथिरगणे ॥ ५ ॥ अथवा रो र क अनाप्य एने प अस्तु-
त के साथ धन्वन्तरि मिल वा बुद्धा के शरीर म आश्रय करनेवाले माण
फिर आवे ॥ ७ ॥

॥ नायानुवाद ॥

जिया है और आजमगाद का मार्ग रखा हुआ ॥ ३ ॥ हे बुद्धिमान् जित् आ-
प नी बुद्धि के राता जेतापति बुद्धिमेव मदिष्ट शीघ्र आया जनागा आदि वै
अथ और श्रीजन आदि पयित्वा को गया रत्नका अविधायी (बुद्ध) जय्य (आ-
जमगाद) को आजय नामक नगर की सीमा अ जातन का ममम् है ॥ ४ ॥
अजीम का लिखाबुद्धा पत्र पत्र सुनकर जय के आजन के साथ पछादुरगा
ह के धीर दर्प से पूर्ण जीतन की इच्छावाले हुए ॥ ५ ॥ जैन पद्धतु माण्य के
धुम्पत हुए खेन पर बारी होवे तैसे या राशि के दिशा प्रलक्ष्य हुए अनाकुल पथि-
का क ममृह म सुर्ष उदय हुआ ॥ ६ ॥ अथवा रो र क अनाप्य एने प अस्तु-
त के साथ धन्वन्तरि मिल वा बुद्धा के शरीर म आश्रय करनेवाले माण
फिर आवे ॥ ७ ॥

अहवा कुणावसरीरे अब्बो पच्चागया असुखो ॥ ७ ॥

प्रायोन्नजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

[पट्पात्]

किय उछाह इम साह वंचि कग्गर चूगमम ॥

बुल्लि नृपति बुधसिंह कहयो तदुदंत विहित क्रम ॥

इक्क१इक्क२संजोग होत जिहिंविधि एकादम११ ॥

इम अर्जाम गढ लेत दइव दीसत अप्पन वस ॥

अल्लाह महर सूचक यहै अब न बीच अरि भय अटक ॥

आगग ओर पढति उचित क्रम सबेग हंकहु कटक ॥८॥

यह प्रपंच अनुकूल पिक्खि बुधसिंह चमूपाति ॥

किय फोजन दरकुंच मंडि व्यूहन विदग्ध मति ॥

सेन मध्य सुरतान हड्ड नरनाह ढगोली ॥

सुवन साहके तीनश्वाम दक्खिन चंदोली ॥

जयसिंह अनुज कूगम विजयलघुवय लखिनृपसंगलिय ॥

इहिं क्रम उपेत दब्बत अचनि चलि सबेग चतुंगिनिय ॥९॥

काकोदर कलकलत फनन फुंरुरि पलटावत ॥

कडू हिय अकुलात लखत पुत्तहिं लचकावत ॥

त्यौं विनता उर तिकख पुव्व चिंतत दामीपन ॥

यह कोतुक अदभूत फैलि करमपघर फोजन ॥

संकर समाधि तजि तजि सन्नज कारन लखत विचार कगि ॥

अथवा कुणावसरीरे अहह प्रत्यागता अमवः ॥५॥

प्रायोन्नजदेशीया प्राकृती मिश्रित भाषा ॥ पट्पात् ॥ कियडति ॥ चूगमम
साम सहित. बुल्लि बुलाय. तदुदंत वा अर्जाम को वृत्तान्त. ओर तरफ. पढति
मार्ग. “सरणी पढती पये” त्यमरः ॥ ८ ॥ यहडति ॥ व्यूह रचना विशेष सु-
वन पुत्र. मोजदीन १ रफीलकदर २ अखतरविलंद ३. उपेत सहित ॥ ९ ॥ का-
कोदरडति ॥ काकोदर यहां शेष. कडू नागमाता. विनता गरुड़माता. पुव्व प-
हिलो दासीपनो. कडूनें याकों दामी करीही वह आच. नदमालहेतु नवीन मुंड
माता को कारन. इनहिं इनकों शिषकों. गहकि सौं-सोबिकें. गवरिपार्वती १०

गलमका आगरेको कूच करगा] सप्तमराशि एकादशमयुल (२९१३)

माल हेतु कदि कदि इनहिं गहकि मोद बाढत गवरि ॥१०॥

मिजल इक्क१सादसन अग्ग चोकी ति३सदसन ॥

अरिन छन्न उपचार प्रवल विस आदि परक्खन ॥

निधि तून अन्न निवान मग्ग मैदान मुकामिक ॥

खग मृग तरु उद्यान जात सोधत इम जामिक ॥

प्रतिदिस जिहान खलभल परिग मनहुँ वजू भुव फोरिहँ ॥

पापिन निदान आय कि प्रलय छलि समुद्र हद छोरिहँ ॥११॥

कमठ भग गिलि अंग प्रान नारिन परि बुडिय ॥

भिरि हमल्ल भुव भार पिडि पावक घसि उडिय ॥

मगि दमग बढि माल जात कच्छप पतग जरि ॥

दरित टारि दतुलिय टिकत सुकर तुडाकरि ॥

आतक सुग्न उतपात इहिं कपत जग कारन कहिय ॥

बुधसिंह मनहुँ आगम विजय अक्खार आइति दिय ॥१२॥

अहि कच्छप भूदार दुहिन दिग्गज दिगपालक ॥

भूलोक रु तिम भुवर बहुरि सुरलोक बिसालक ॥

इम समस्त अतलादि तिमहि सागर इत लासहिं ॥

इक्कहिं परि आयास अवर आतक उपासहिं ॥

मिजलइति ॥ अग्ग अगारी त्रिसदसन तीन हजारन ३०० फी अ-
रिन अन्नके छह शुभ मैदान चोर्गान पावनी मुकामिक मुकाम सयवी ख-
ग पर्वा मृग पशु उद्यान यन पापिननिदान पापी यदूत पदे तिनक कारन
सों कि मनो इह सीमा ॥ ११ ॥ कमठइति ॥ नारिन नाहिनमें पतन पीट
पतन तुल्य पदा जात असो वर्तमान प्रयोग किपो यातें एक कच्छप जरत बि-
धाता बूजो बनायत सो जरत ताजो बनायत ऐसे जानिये दरित भीत "द-
रितअकितो भीत," इतिहैम ॥ सुकर पराह अक्खार कच्छपगज "अक्खार कू-
मराजे सडोदधौ" इतिमदिनी ॥ १२ ॥ अहिकच्छपइति ॥ अहि शेष कच्छप
भूमिस्तभक भूदार पराह "आखो भूदार इत्यपि" इत्यमर ॥ दुहिय अघा
"वाताज्जपोनिदुहिय" इत्यमर ॥ सुकर भुवरलोक अतलादि अतलकों आ-
दि दैकै सातों ही तैले लोक इक्कहिं इनमेंसों एककों अघाकों तो आयास अ-

संकित बिनास धुज्जत सकल चकित चेत भूतन भजिय ॥
 प्रिय जिय इतेन नागिन परिग भटन नह नारिन तजिय ॥ १३ ॥
 इम अनीक दग्गुंय आय उत्तरि बृंदावन ॥
 संभरपति बुधसिंह मंत्र मंडिय प्रपंच मन ॥
 रानिय गनाउत्ति आदि अप्पन अंतउर ॥
 कामविपिन लज बीच तत्थ गविस्वय जुहातुर ॥
 नजि कुंच बहुरि आलग सहित नृपति आय अकवर नगर ॥
 मित्ततहि अजीम संबोधि मुद जटित पिबिस्व बीरन जगर ॥ १४ ॥
 तेरीवेर अजीम न्याय रङ्गोरि मडिय दुख ॥
 तेरीवेर अजीम थात्त वज्जो म सवन सुख ॥
 तेरीवेर अजीम पट्ट दिहिय चढिपानी ॥
 तेरीवेर अजीम जन्पां ओर न तुरकानी ॥
 इम इहिं मिरादि बुंदिय अविप नद दत्ता दुग्ग सम्हाणि लिय ॥
 मिलि सुतहिं साह मंडिय गहर कहि तुम विजय प्रपंचकिय ॥ १५ ॥
 कछु क काल गहि तत्थ सेन पिबिस्वय सेनापति ॥
 दत्त सारध दुवल्लकख २५०००० तो प हज्जार १००० विविध तति ॥
 सवालकख १२५००० तुक्खार जग पदस्वर जिन्ह डारिय ॥
 दुव २००० नन वर वीर वससि गज गाम बढारिय ॥

म. प्रजा के प्रवापनेहों. अवर ओर. (ब्रह्मा विना). भूतन देहधागीनके. भजिय
 भाजें जिय जाव. इतनें डने. ये कहे निनके. न रिन न'डनमें. परिग परे. ना-
 रीन नारी स्त्री. तिन संबधी ॥ १३ ॥ इमइति ॥ अनेउर चवहपुर. कामविपि-
 ने कामवन. जुहातुर अंतउरकां विशेषन. अय. धयो. बुद ओदसों. जटित जंग.
 जगर कवच. "जगरः कवचोऽस्त्रिया" स्त्रियमः ॥ १४ ॥ तेरीइति ॥ रङ्गोरि रू-
 प नगरके राजा मानसिंहकी घटी. तेरी माना तानें. दुःख मर्न संबधी चढि
 चढ्यो. वही रङ्गोरि तुक्कका दई. यानें कछों महर कुरा पावनी ॥ १५ ॥ कछु-
 कइति ॥ सेनापति बुधसिंहनै. सारध (सार्ध) अथ सहित दुव लवण २५००००
 छढाई लाख यह अर्थ. विविध अनेक प्रकार. तति पंक्ति. तुक्खार घोर. जिन्हें

इम सहस्र इक १००० चैव निगड बहु निसान फहराति यनि ॥
इम सव सम्हाणि बुद्धि नृपति प्रति जवनस प्रयान भनि ॥१६॥

॥ दोहा ॥

अतद्वपुर धन प्राप्ति भव, राज विभव रखि तत्थ ॥

अनक डरु पज्जिग बहुल, समर पढत समथ ॥ १७ ॥

अप्यन दत्त रु अर्जान दत्त, सव एकत्त सम्हाणि ॥

कगिउ कुच तजि अगग, रावन जाजवगारि ॥ १८ ॥

इति श्री बगमागके महाचम्पूक उत्तराध्याये सप्तमगणौ बुद्धी
पतिबुधमित्रचरित्रे अद्यर्गक्षितवृत्तावनबुधरिहावरावदहादुरगा-
क्रिवरगुगगमनमेकादशो मधुव्य ॥ १९ ॥

अग्नि एकोऽप्यध्यायोत्तरदिगततम ॥ २० ॥

दोहा—मेघक फागुन साह मणि, उा सुनि मधु अवडात ॥

आवत भित्तो माग रुपर अव आगड प्रयात ॥ १ ॥

आगग कल्लु क विनाव क्रिय, सावदादुर भाग ॥

दत्त निवादि आवत दिन, आवत भुव अनुगग ॥ २ ॥

तपन नेठ निरुह दुमह, आगम कटक दुगत ॥

जिगम बुद्धीना दाऊ नी न निदु सुमलमात निगके इन हस्तो निगड क
जीर परगात परवना ॥ १ ॥ दादा ॥ समरपुडात ॥ तत्थ महा [आगगमै]
अथ पात्रविशेष पशुलघात समरपुडाताया ॥ १ ॥ अप्यनर्हति ॥ स्पष्ट ॥ १८ ॥

आगगमाहतर म विचरू क उत्तर गयु क अप्यन गणि में बुद्धी के भूयति
बुधमित्र क आगग म म ग म बुधमित्र के जनाने का वृद्धावन में रखकर महा-
कु शाह क आगग आने क पर्यन का गगारहवा ११ मयूज समाप्त वृद्धा धी-
र आदि मे ग सौ इनवास २०६ मयूज वृष ॥

मेघकहति ॥ मयूज वृषगवत्त फगुन फागुन मान सपधी तामें साह ओर
गजेय मरि मरवा इन या आलमगाहन सुनि सुन्दर मधु रघवान तामें
हवदात शुद्ध पक्षमें ॥ १ ॥ २ ॥ तपनहमि ॥ वृत्त पष्टमों गयनाका अत आये
ऐमो पशु जयपक्ष कयययय नगरका राजा राठार, पृथ्वीगजवाजानका प्रति
पक्षी, अगों पारहसे आष्टवालीस १२८८ क साल विषमात हा सा जामिये

चलात पंगु जयचंद्र जिम, वसुधातला दब्बंत ॥ ३ ॥

इम पत्तो ग्वालेरपुर, आजम विभव उपेत ॥

साजि किल्ला वनितादि सब, रक्खिय तत्थ निकेत ॥

॥ पट्पात ॥

अग्रज अवरंगीय साहदारा अभिधानी ॥

ताकी तनया व्याहि लई आजम अभिमानी ॥

यह अगैँ इकवर पकरि वंधी मरहट्टन ॥

तब अनिरुद्ध नरेम जिति आनी भुजदंडन ॥

दीदागबखस जाके उदर ताहि नगर ग्वालेर धरि ॥

उततैँ उफान सागर उपम आयो आजम कोपकरि ॥ ५ ॥

अकबरपुर इन तजिय तजिय ग्वालेरनगर उन ॥

ए दक्खिन सम्मुह रु वेसु उत्तरपर आरुन ॥

इम आवत दुव कटक मिले जाजव दिन अत्थैँ ॥

रहि मुकाम वह राति कलह उग्गतगवि कत्थैँ ॥

दुव २ दल प्रपात सोहत सहज मनहुँ सिंधु वाचिन धारिग ॥

वहल उदीचि आवाचिके प्रवल बात भेट कि परिग ॥ ६ ॥

बाके सेन बहुतही. अस्सी लाख घोर हे, मानैँ सेना क बाहु क्यम चार्का उपमा दीनी. दब्बत दावंत ॥ ३ ॥ इमइति ॥ पत्तो प्राप्त भयो. उपेत सहित. किल्ला ग्वालेरपुरको. वनिता स्त्री. तिनकां आदि दैँसैँ सब वैभव. निकेत स्थान ॥ ४ ॥ पट्पात ॥ अग्रजइति ॥ अग्रज बडां भाई. अवरंगीय अवरनशाहको. साहदारा अभिधानी दाराशाह नामक. तनया पुत्री. यह आजमकी स्त्री. अनिरुद्ध तुंगी कां राजा बुधसिंहको पिता तानैँ. ताहि वा अपनी स्त्रीको ॥ ५ ॥ अकबरइति ॥ अकबरपुर आगरा. इन बहादुरशाहन. उन आलमशाहन. ए बहादुरशाहकी सेनावार. रु अरु. ये आजमशाहकी सेनावार. सु पादपूरार्थ है. आरुन से सा-रुन. जाजव आगरा अरु ग्वालेरके बीचमें ग्राम विशेष तहां. कलह युद्ध क-त्थैँ कहैँ. प्रपात पडाव. बीचिन बीची (तरंग) तिनकारि. भारिग अरयो. वहल मेघ. उदीचि उदीची (उत्तरदिशा) ताके. आवाचिके दक्षिण दिशा ताके. बात पवन ताकरि. कि मनो ॥ ६ ॥ दोहा ॥ समइति ॥ जुग चयार ४. खट छै ६. सत्रहसैँ चौखठि १७६४. असित कृष्ण पक्षकी ॥ ७ ॥ पञ्चतिका ॥ दैदख-

जाजबमें दोनो सेनाओंका भिड़ना] सप्तमराशि द्वादशमयुल (२९१०)

॥ दोहा ॥

सक चउधखट सत्रह१७६४समय, आसित तीज३आपाठ ॥

दिय मुकाम दुव दलन इम, मिलि जाजव गहि गाढा॥५॥

(पद्धतिका)

दे दल मुकाम बुदिय नरेस, किय मत्र पिक्खि अरि दल बिसेस
रतिवाह वाह गोकन बिचारि, निज दल प्रबध बधिय निहारि ॥८॥

पखरेत सहैत द्वादस१२०००प्रवीर, सजि अपि सेन बाहिर सधीर
निज भट रनपडित जैत नाम, तिनमाहि मुख्य करि गिखतामा१॥

यह बैगिसल्ल कुल भा अभग, निज बधु जैत दिय सोधि सग ॥
कहि नेह बचन सनमानकीन, अब काका दिल्ली तव अधीन १०

जा रचहि सत्रु रतिवाह जाल, तो मेलि चास भेजहु उताल ॥
इम भाखि छपीनाँ किय तयार, ह्य जैतसग द्वादसहजार१२०००

दल परिधि जाय तिन चक्र दिन्न, क्रम इम प्रबध चहुवान किन्न ॥
पुनि बाहिय नीति साहहि प्रवाधि, सुख सैन करहु अब काल

सोधि ॥ १२ ॥

निस जाम रहत निदहि निवारि, पिक्खहु बिहान रन भट प्रचारि ॥
सुनि साह सैन मडिय सतोस, भूपाल बुद्ध भुज दुव भरोस ॥१३॥

सब साह इसम डेरन सम्हालि, नृप गिबिग आय कटिपट निवारि
ति ॥ रतिवाह रात्रि समय अचानक आय लरै सा युद्ध ताके पाह बार त

या प्रहार प्रबध रचना विशेषमा फोजका राखना मघिग बध्या निहारि दे-
खि कै ॥ ८ ॥ पखरेतइति ॥ जैतनाम जैतमिह नामक बेरीशल्लान हाका फलो-
वी मगरको अधिगज तिनमाहि व छपीनाक पारिह हजार १२००० पखरेत

सेनाके बाहिर गिरदही चाकी फिरयेका भेजे तिनमें ताम तथा ॥ ९ ॥ यहइ
ति ॥ यह जैतमिह अब भयो बधु सपिह कुलमें सोधि बिचारिकै ॥ १० ॥

गोरखहिइति ॥ रतिवाह रात्रिजा युद्ध ताको आस खबर ॥ ११ ॥ दलइति ॥
परिधि गगद [चक्र मडल फिना] सैन सपन [सोवना] ॥ १२ ॥ निसइति ॥
नाम एक प्रहर निदहि निद्राको बिहान प्रातकाल सैन मयन सतोस गो-

त्र प्रसन्नता ता सहित ॥ १३ ॥ सपइति ॥ इसम बैभय देशीमाकृत सिबर

लिख सबहि फोज नागव बुलाय, समुझाय कहिय आगम सुनाय १४

अग्यै प्रमाद समुपत सुत, पांडव दल माग्यो दान पुत ॥

निस सुत साह गोरिय अन क, कडमास डककिय कांदिगीत १५

तसमात अमन अल्पद्विधाय, सज्जहि समस्त मोदहु सुभाय ॥

करि तीन ३ स्वस्व परिकर दिनाग, कहहु त्रिउ जाम जय रादख

गय ॥ १६ ॥

गज हयन देहु विश्राम वंशि, श्रम पिदिख अल्प आहार नधि ॥

वपु गंजि सजहु हय गज बहारि, जंगी पलान संधान जंगि १७

निस रहत जाम तजि तजि निकाय, एतना सु रकावन देहु पाय

बुल्लिय विदग्ध तोपन चलाऊ, काह बिंदि दलहि भडहु कजाऊ

पंद्रहजार १५०० पायक तुंग, आगेपि साह तोरन असंग ॥

इस मंडि व्यूढ जामिक अरू, चहुवान अमन किन्नों चरपा १८

हुए पुनि अगेहि हैर दिवान, सबहिग किहि किन्नों सावधान ॥

इस सिविर पिदिख निज थान आय, मुख्य सयन किन्न नय बल

सुभाय ॥ १९ ॥

रचना बिजेय सो आनी मरा को डेरानहीं. कति डकमरंधरा. जन्मा स्वयं
करि. नागव बुलाय. समुझाय कहिय आगम सुनाय ॥ १४ ॥ अग्यै इति ॥ प्रमाद गा-
फिलता क. समुपत मद्रि. सुत सुत लाके सुता. द्रोणपुत अमरत्याभा ता-
नै. साहगांयि गोगा जाति को पठान मजबूतीको नादशाह बहादुरदान नास-
क ताको. कयमान पृथ्वीराज चहुवानको अर्थ ताई कांदिखीक अवसां भा-
जिवेवा ते. "कांदिखीको मद्रुप" इति हैमः ॥ १५ ॥ तसमातइति ॥ अमन
भोजन. अहारि थोरोंही. विय य कारि. मजाहे गज्जीहू हां. स्वस्व अपन
अगर परिकरिके चिजाम तीन प्रहर. जय विजय तामें. राग प्राति ॥ १६ ॥
॥ १७ ॥ निसइति ॥ जाम डल प्रहर. निकाय स्थान "निकायरो थान कुटः"
इति हैमः ॥ बुल्लिय बुलाये. विदग्ध चतुर ॥ १८ ॥ पंद्रहइति ॥ पायक पयादे.
तुंग असवार. यहाँ उवादान चहुवा नीयह अर्थ जानिये. आरापि स्वयं र-
फवे. तंगन बाहिरको दरगजा तहाँ व्यूढ रचनाविशेष नाकरिकें. जामिक प-
हरायन. अमन भोजन. चसूर सनायति. यहाँ चहुवानको विशेषन ॥ १९ ॥
हैवर हय. दिवान बुधसिंहको उपपद ॥ २० ॥ बहइति ॥ अपि थोपि. निसान

सुनि अनीक व्यूहन विवेक, आजमहु यपि जामिक अनेक
 किय मुकाम दुवदल अमान, दुवर्घा निघात बज्जत निसान २१
 माहताव उदित दुर्ओर, धकि चौकिपरत जिन लखि चकोर
 दिदुर्दल चंद्रजोतिनविकास, पुगियाम मयक बहुविफुरिपास २२
 हुँओर बाजि गज रव दुरत, दुवसेन उच्च डेग्न दिपच ॥
 हुँओर सूर जामिक दुरूह, सजि सजि अनेक विचरत समूहा २३
 हुँओर लखत प्रछन्न दूत, दुव दल नकीन आरव अभूत ॥
 कडन कपेट मच्चत दुर्ओर, सिंघुव अलाप दुवदिस सजोर ॥ २४ ॥
 हुँओर कगत जामिक दुगव, दुहुँओर छवीना लखत दाव ॥
 हुँओर बाजि फाँदत दुर्वध, दुहुँओर दति गज्जत मदध ॥ २५ ॥
 हुँओर सुद्व मेलन चमक, दुहुँओर घट पम्बर घगक ॥
 हुँओर मूर हूरन उछाह, दुहुँओर होत हरि हर इलाह ॥ २६ ॥
 हुँओर सुतर जघाल जात, दुहुँओर चाम पल पल दिखात ॥
 हुँओर करत बहुरीति दान, दुहुँओर होत विधिजुत विधान ॥ २७ ॥
 गुन ३ जाम रति हुव इम अर्तात, गहकिय सु जग आरभ गीत ॥
 निदहि निवारि बुदिय नरेस, करि नित्य वदि पभु द्वारिकेस ॥ २८ ॥
 धायविशेष ॥ २१ ॥ रनइति ॥ माहताप घायनी हयाई विशेष जाको प्रका
 श चद्रिका के माफिक होत है सो दुओर दोऊ तरफ बुदल दोऊ दलनमें
 चद्रजोतिन चद्रज्योति नामक हू हयाई विशेष होत है तिनको विशेष प्रकाश
 पुगियाम पृथिमासी ताके मयक मृगाक (चद्रमा) पिफुरि विस्फुरित भये पा
 स समीप ॥ २२ ॥ दुहुँओरति ॥ रघ शब्द दिपल सोहत बुद्ध ऊहा तर्कना
 तामें कुपसों आँधै ऐसे ॥ २३ ॥ दुहुँओलखतइति ॥ प्रच्छन्न गुप्त आरव शब्द
 अमृत अमृत ॥ २४ ॥ दुहुँओकरतइति ॥ दुराष पैखेनका १ दीर्घ ऐसे गोप्य चोकीमें
 छिगनों बाजी घोरे फादत कूदत कुपघ दोऊ अगागी पिछारीके पधन छर्तेहु
 दति दती [हस्ती] ॥ २५ ॥ २६ ॥ दुहुँओसुतरइति ॥ सुतर ऊँट घायनी जघाल अति
 वेगवान् "जघालोऽतिजघस्तुन्य" इत्यमर ॥ चास खयरि ॥ २७ ॥ गुनइति ॥ गुन
 तीन ३ जाम प्रहर रतिरात्री अतीत व्यतीत ॥ २८ ॥ २९ ॥ सुनिइति ॥ उवाच

जामिकन साह आलम जगाय, बुधसिंह तयाहि दुन नित्य बुलाय
 कहि उचित मंत्र मंडहु नरेस, अब नहि बिलंब हुय अब अयेस ॥ ३० ॥
 सुनि नृप उवाच नय कलु सनर्म, अब होत जंग विधि विधि अधर्म
 बहु तोष करत दूरहि विनास, बरहु सकैं न यह टारि नाय ॥ ३१ ॥
 लैजात सबन धरि सिरत घोर, मनमहि रहत सुभटन संग ॥
 तसमात अप्प दल पिछि दूर, रहि छत्र काल कटहु जर ॥ ३२ ॥
 हम सुभट जुद्ध पंडित हगोल, विधि सब निवाहि नय धर्म बोल ॥
 मधि दल समुद्र भुज मंदराग, निज दल कृपान गचि चंड नाग ॥ ३३ ॥
 जयरत्न कहि जतन जह्म, व्है रूपात निवेदहि निज हज ॥
 इहिनीति छन्नसाहहि निकासि, बल सजिय अप्पहिय जय विकसि
 दल चढन बेग दै निज निदेश, विधि करि विहान मंध्या विशेष
 सजि उनहु चढन आपस प्रसाहि, नरगज तुरंग कलकलनिहारि ॥ ३४ ॥

॥ दोहा ॥

दुवदल डम खलमल परिग, गहकि नफीगिय गान ॥

किलक नकावन हुय कहर, पहर पलान पलान ॥ ३५ ॥

॥ भुजंगप्रयातम् ॥

जगी सेन दोऊ रही जाम रत्नी, बजे बंध पेरी बडी हल्ल धरनी ॥
 दुहूँ ओर व्है सुद्ध के नित्य मडैं, दुहूँ ओर संसारतै प्यार छुडै ॥ ३६ ॥
 दुहूँ ओर गंगोद कै अंग मंजै, दुहूँ ओर गीतादि गीतादि रंजै ॥
 दुहूँ ओर बानैत नागोद बंधै, दुहूँ ओर के टोप सझाह संधै ॥ ३७ ॥

कहत मयो. सनर्म नर्म लोके ठह्रा. तासहित ॥ ३० ॥ लैजातइति ॥ सिस्न ना-
 क ॥ ३१ ॥ हमइति ॥ मंदराग मंदर नामक अग पर्वत. ताकरि नाग बालुकि.
 ॥ ३२ ॥ जयइति ॥ यहनीति या नीतिसौं. इस सेना ॥ ३३ ॥ दलइति ॥ निदेश
 छुक्रम. उन आजप्रशाहनें कलकल कोलाहल ॥ ३४ ॥ दोहा ॥ दुनइति ॥ नफीगी
 वाद्य विशेष. देशोप्राकृत ॥ ३५ ॥ भुजंगप्रयात ॥ जगाइति ॥ स्पष्ट ॥ ३६ ॥ दुहूँ
 गंगोद इति ॥ गंगोद गंगाजल. ताकरि. गीतादि भगवद्गीतादिक. पुनः गीतादि
 गान तदादि करि नागोद लोके पंथी ॥ ३७ ॥ दुहूँ जालीइति ॥ जाली लोके

हुँगो जाली दवालीन डारै, दुहुँगोर धाराल धाराल धारै ॥
 हुँगोर सिंधून उच्छाह जगै, दुहुँगोर वाजीनपै जीन लगै ॥ ३८ ॥
 हुँगोर झडाल सुडाल गज्जै, दुहुँगोर हिजीर जजीर वज्जै ॥
 हुँगोर उच्छल नेजा फरकै, दुहुँगोर के जोर छोनी मचकै ॥ ३९ ॥
 हुँगोर धानुख टकार पूरै, दुहुँगोर देखै लगी लोभ हरै ॥
 हुँगोरमें दूत ठहै भूत भिल्लै, दुहुँगोर बेताल खेताल खिल्लै ॥ ४० ॥
 हुँगोरक भीरु उद्राव मडै, दुहुँगोरके वीर बानेत तहै ॥
 हुँगोर बदीनको गोर बहै, दुहुँगोर तोपें दरावीन चहै ॥ ४१ ॥
 परै कुत बडक तुल्लै वगछी, हल्लै हकि हत्थी खुल्लै सज्ज कच्छी
 बढी सेन दोऊ बढी जगचाहै, गवाची उदीची घटा ज्यौ उमाहै ॥ ४२ ॥
 ॥ दोहा ॥

बुद्धिपति सन्नह बनि, नय निकासि निज साह ॥

दल सागध दुयलख २५००००लै, चढ्यो तुरग जय चाह ॥ ४५ ॥

उत आजम आगेहि गज, लै दल मन्मुह आय ॥

मुलक प्रलय आगम मनहुँ, उदधि सत उफनाय ॥ ४६ ॥

इति श्री वगभारकुरे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशि बुद्धि-
 पतिबुधसिंहचरित्रे अकबरपुरमस्थितबहादुरशाहगोपादिपुग्गस्थि-
 जिरह "जाबिका त्यगरवणा" तिरहेम ॥ धाराल अच्छी धारावाले धाराल
 लख ॥ ३८ ॥ दुहुँ० झडालइति ॥ झडाल झडोवार सुडाख हस्ती ॥ 'सुडाख
 सामजो नाग' इतिधनजयः॥हिजीर हम्तीके जजीर जजीर हस्ती बिना और
 पावर तोप आदिके जानिये उच्छल ऊपर मुल पहे फूझारै॥ "अस्पाच्छला-
 वधुलारव्यादुर्वाधामुलकचका" बिलिहैम ॥ ३९ ॥ दुहुँ० धानुखइति ॥ धानु
 ख धानुख कमनैत॥ "तुगी धनुमान् धानुख" इत्यमर ॥ भिल्लै मिलै खेता
 ल चप्रपाल ॥ ४० ॥ दुहुँ० भीरु ॥ उद्राव आजनों तहै गर्जनाकरै ॥ ४१ ॥ ४२ ॥
 ॥ ४३ ॥ ४४ ॥

श्रीयशसाधर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुद्धि के भूपति
 बुधसिंह के चरित्र में आजम से बहादुरशाह और ग्वाजर से आजमशाह का

ताजमशाहरशाहेतुजाजवनगरान्तिकरकन्धावारनिवेशनं दादजा
मयूखः ॥ १२ ॥

आदितः पञ्चाशोत्तरद्विशततमः ॥ २५० ॥

(दोहा)

सक चउ खट सत्रह १७६४समय, मिलि चउत्थि सुचि मास ॥
असित पक्ख उग्गत अरक, बढि दल विजय विलास ॥ १ ॥

(मुक्तादाम)

बढे दल तोपनकों करि अग्ग, मिले भट उद्धत संगर मग्ग ॥
इतेबिच कोतुक जंग अछक, उयो उदयाचलके सिर अक ॥ २ ॥
लख्यो रवि दोउन बंदि बिसेस, भयो तव तोपन पुब्ब निदेस ॥
पलट्टनि पिक्खि रुमालन सैन, लगी दुहुँओर अत्तातन देन ॥ ३ ॥
मिली तँहँ तीनहजार ३०००न अग्गि, वढी अफलैत दुहुँदिसदग्गि
भयो नभ धूमित धुंधरि भान, लगे दग मीचन देव विमान ॥ ४ ॥
परे अय गोलाक बिद्युत पात, जुरे नर गँवर है उडिजात ॥
उगल्लत फैरहिँ फैर अखंड, चलै चटका रिनके मित चंड ॥ ५ ॥
भुजंगमके सिर नच्चत भुम्मि, धरैँ फनतैँ फन घायन घुम्मि ॥
नचे जिम कन्हर कालिय कंध, बनैँ इम छोनिय तंडव वंध ॥ ६ ॥
लगे डगमग्गन अद्रिन सृंग, गिरैँ जिनतैँ सृंग भ्रामित भृंग ॥

चलकर युद्ध के अर्थ जाजव नामक नगर के पास मुक्ताम करने के वर्णन का
बारहवां १२ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ पचास २५० मयूख
हूए ॥

सकइति ॥ चउत्थि चतुर्थी. ४ सुचि आषाढ. असित कृष्ण ॥ मुक्तादाम ॥ बढेइति ॥
अछक अतृप्त. उयो उदयभयो. अक अर्क (सूर्य) ॥ २ ॥ लख्यो ॥ पलट्टनि पया
दे सिपाहनकी पंक्ति ॥ ३ ॥ मिलीइति ॥ अफलैत तोपमके तीर कराचथे की
क्रिया विशेष ॥ ४ ॥ परैँइति ॥ फैरहिँ फैर अवाज प्रति अवाज. भित प्रमान.
भुजंगमइति ॥ भुजंगम शेष ताके. कन्ह कृष्णावतार. कालिय कालीनाग

निवानन आकृति तुष्टत नीर, पर्यो इक आतप धीखम पीर । ७।
 तजै बढि वीविन सागर सीम, भ्रमै प्रलयानिलमें जिम भीम ॥
 जुरयो दिन बढि कूहु तम जग्गि, अलात लगै जनु प्रेतन अग्नि ८
 परै दृग वे उत सोर प्रकास, लखै इनहु इत फैर उजास ॥
 दुहुँदिस पौ लखि मारत दाव, भयो दुहुँघाँ इम सोर भ्रमाव ॥ ९ ॥
 सज्यो बढि घूम सुरालय सग, अजौ नभ बहल राजिहि रग ॥
 गिरै बिच गोलक गोलक फेट, मनो पविर्त पवि चंडचपेट ॥ १० ॥
 गिरै गजमथ छिनच्छिन छूट, कटै पवि पात कि अद्रिन कूट ॥
 गिरै गज झडहु गोलन गोन, गिरै तरु तात कि पवय पोत ११
 लख्यो रवि उगगत ज्यो तम लाल, किते अब भुल्लत आन्हिक
 काल ॥

बिहानहु कोकन लगि वियोग, चिनाँ नर जानत जामिनि जोग
 परै गज गडन गोलक पात, करै जनु भद्रक जातिन ख्यात ॥
 परै दुहुँ ओर तुपकन पथ, मच्यो रव भ्राष्ट्रक ज्यो हरिमथ ॥ १३ ॥
 चहुँदिस चढ चढयो रज चूर, पर्यो रजताचल्लो उडि पूर ॥

ताके ॥ ६ ॥ ७ ॥ तजइति ॥ सीम भयकर कूहु अद्रकला रहित अमायास्या
 की रात्रि ताके सो तम अघकार ८ ॥ परैइति ॥ वे पेखी सेनाके उत पात-
 रफके सोर पारुव ताके प्रकाशमें दीसै इन ओली सेनाधारेनको इत पातर
 फके लखै देखै ॥ ९ ॥ सज्योइति ॥ सुरालय सुरलोक ताको अजा अघसी
 नभ आकाश पवण मेघ ए स्याम जिहरग वा धुषाके रगसों है पवणे पार-
 गके न हे गोलक गोलासों पवि धर ॥ १० ॥ गिरैइति ॥ गोन गमन
 तासों तरुतात तातवृक्ष कि मनो पवय पर्यतसों पोत पवन करिकै ॥ ११
 लख्योइति ॥ तम अघकार तामै लाल मणिकय भिनानर मनुष्य रहित और
 प्राणीमात्र जामिनि रात्रि ताको ॥ १२ ॥ परैइति ॥ भद्रकजातिन भद्रजाति
 धारेनके ख्यातप्रकट भद्रजाति इस्तिनके मस्तकसों मोली निकसै हैं यातै रघ
 शब्द भ्राष्ट्रक लोके भाव तामै हरिमथ चार ॥ "अणको हरिमथक" इति हैम ।
 चहुँदिसइति ॥ रजताचल्लों रजताचल कैलास पर्वत तथा लागि जटी शिख

जटी जटजूटहु पंकिलजात, लगे कुव कंजन पुंज लसात ॥१४॥
 भज्यो सासि भीरुक भालहि छोगि; रहैं रज लेत सुधा सम चोरि।
 अंकज सकंज भये इम ईम, समात न साद भयो भर सीस ॥१५॥
 महानट योलहि खेद समाज, निमीलत नैन समाधिक वजाज ॥
 जलंधर बंचित चंडिय अग्न, लखें धव संकि महाभय लग्न ॥१६॥
 भयो यह विग्रह संकरभान, गिरैं पतना इत गोदन मोन ॥
 धरत्थर भुस्मि जथा जल थाल, बन्यो रन तोपन यों विकराल १७
 सिलगगहिं तज्जहिं गज्जहिं सार, लरज्जहिं बज्जहिं सिंधु हिलोर ॥
 भजैं गज संगर बंगर तोगि, महावत रावत लावत सोरि ॥ १८ ॥
 दिसाबिदिसा जगि जारत ज्वाल, मनो कुहु उज्ज दमंधन माल ॥
 चलैं उडि सोर सिखा चमकात, परैं जिम भद्व बज्जुव पात ॥१९॥
 भ्रमैं कडि सुडि गिरैं उडि भाग, मनो जनमेजय अध्वर नाग ॥
 परावलि गिद्धनकी मजरात, जटायुक अग्रज ज्यो गिरिजात ॥२०॥
 उडैं ध्वजदंडन खंड अकास, रचैं जिम उडहि केकिय रास ॥
 जरैं गज पिडि पताकन जूट, किधौ दव लगिय अद्दिन कूट ॥२१॥

तिनकी. जट जटा ताको जूट जूरा. पंकिल पकवारो जात भयो कुवकज कुव
 कुवलय. लोके गहूल. कंज कमल तिनके. "कुवेल कुवल कुच" इतिहैमः ॥ १४ ॥
 भज्योससिइति ॥ भालाहि शिवके ललाटको छोरि त्यागिकें अंकज कज चं-
 द्रमा ताबिना. कंज कमल. तिनसहित साद पक. "कर्दमश्च निदधरः नादः"
 इतिहैमः ॥ १५ ॥ महानटइति ॥ महानट शिव. "महापरादेवनटेश्वरा हरः" इ-
 तिहैमः ॥ वजाज मिससों. जलंधरबंचित जलंधर दैत्यकी ठगी. चंडिय पार्वती.
 धव अपनों पति. ताको लग्न लग्न. लांके लख्यो ॥१६॥ १७ ॥ सिलगगहिइति॥
 तज्जहिं तर्जना करै. सोर बाखूद. हिलोर महातरंग ॥ १८ ॥ दिसावति ॥ कुहु
 चंद्रकलारहित अमावास्या की राशि तामैं. "सा नष्टेन्दुकला कुहुः" इतिहैमः॥
 उज्ज कार्तिकमास तामे. "बाहुलोज्जो कार्तिकिक" इत्यमरः ॥ दसेधन दी-
 पक. तिनको माल. "दशेन्वनो गृहमणि" इतिहैमः ॥ १५ ॥ भ्रमै इति ॥ अ-
 ध्वर यज्ञ. तामैं. 'वितानं बर्हिरध्वरः' इतिहैम ॥ जटायुकअग्रजज्यो संपाति
 गृध्रके समान ॥ २० ॥ उडैंइति ॥ उडहि ऊपरही. केकिय मयूर. रास लुप्त ॥२१॥

कहैं पुर जाजव हो अग्रकोस, दग्यो चहुँघाँ तउ भगति दोस ॥
तप्यो समरगन तोपन ताप, चढ्यो नभ जामल २ जाम दिवाप ॥२१॥
॥ दोहा ॥

इम तोपन रन होत इत, इत कोतूहल आस ॥
गवि दुपहरलो चढि रुक्यो, तकरन तुमुल तमास ॥ २३ ॥
इहिं अतर दुवादिअ अतुल, घुगत तोप निर्घात ॥
साहबहादुर भाग सन, बज्ज्यो उत्तर बात ॥ २४ ॥
॥ पदपात् ॥

पलटत उत्तर पवन दाह तोपन इत दगिगय ॥
उड्डत पिक्खिअ अनीक लाय सत्रुन उर लगिगय ॥
आजम गज आरुढ हुतो निज कटक हगेली ॥
गोला लागि लौगयउ पारि दल मध्य प्रतोली ॥
इम तोप जनरु आजस उडत निज दल लखिपर भर नयो
दादारबखस तस सुत दुसह छै नायक हरवल भयो ॥५२॥
आजमसुत इम कहिय मरन भगल भट सगर ॥
करहु सोक जिन वीर धरहु पायन लज लगर ॥
इम बिसासि सख सेन अग ठहो आजमसुत ॥
गति अगद पय गाहि मरन मढ्यो जनुँन जुत ॥
दै पुनि निदेस तापन दगन नृप नबाव हलकारि सब ॥
दादारबखस सज्ज्यो दुजन गुमर टेक मडत गजब ॥ २६ ॥

कहैपुगइति ॥ जामल उभय दिवाप दिवापति (सूर्य) ॥ २० ॥ दोहा ॥ इमइ-
ति ॥ तल्लत देव्यत तुमल सकुलितपुह ताको ॥ २३ ॥ इहिअतरहात ॥ बात
पवन ॥ २४ ॥ पदपात् ॥ पलटतइति ॥ सराली फोजके अग्रभाग प्रतोली बी
धी लाके गली "रथ्या प्रतोली बिसिखा" इतिहैम ॥ तम ताको ॥ २५ ॥ आ
जमसुतइति ॥ सगर चुभै रहलपुये भट सूरवीर को भगल बरसव होतहैं ता-
तैं जनुन पावनी कोध ॥ २६ ॥ दतियापतिइति ॥ इतेन इतन सहित इनमप्र

दत्तियापति राउत्त नाम दलपति बुंदेलह ॥
 नरउरपति गजसिंह बंस कछवाह समेलह ॥
 रामसिंह चहुवान अनय आकर कोटापति ॥
 लागि बुंदियधर लोभ गिनत भोरो न कालगति ॥
 सचिवन इतेन आजमसुवन गजारूढ हरवल्ल गहि ॥
 इनमेंत्र अबहि आजम उडयो सुवन रवास अवसेस रहि ॥ २७ ॥
 इम आजम उडुतहि सुवन ठहो चढि सिंधुर ॥
 दगत तोप दुहुँओर उवत बीरन रस अंकुर ॥
 इहिँ अंतर जयसिंह नगर आमैर नरेसुर ॥
 निज नकीब मुक्कलिय बुद्ध भूपति प्रति आतुर ॥
 गृहविधि कहाय प्रछन्न गय जामिप तुम ए खल जवन ॥
 कुल स्वसुर टारि मडहु कलह होत तोप सालक हवन ॥ २८ ॥

[दोहा]

बुंदियपति यह सुनि बिनय, प्रतिउत्तर पठवाय ॥
 घर अप्पन संबंध घन, यँहँ रन दंड उपाय ॥ २९ ॥
 ताँतै तुम साहस तजहु, बय नय समर विचारि ॥
 बचहु बाम दक्खिन बदलि, तोपनको मग टारि ॥ ३० ॥
 इम कहाय बुंदिय अधिप मंडयो तोपन जंग ॥
 इहिँ अंतर दूतन कहयो, भो आजम असु भंग ॥ ३१ ॥
 बलहिँ प्रचारत भटन बिच, हो हत्थिय आरूढ ॥
 गोला लागि दोजख गयो, महा अनय रत मूढ ॥
 तब ताको सुत सज्जहुव, तथा सचिव नृप तीन ॥

ए तीन सचिव कहे तिनके मंत्रियों ॥ २७ ॥ इमइति ॥ उवत उदयहोत. रस
 बीररस ताको. हवन होम ॥ २८ ॥ दोहा ॥ बुंदियइति ॥ अप्पन अपने ॥ २९ ॥
 ताँतैतुमइति ॥ साहस हठ ॥ ३० ॥ इमइति ॥ असुभंग प्राणभंग ॥ ३१ ॥ बल
 हिँइति ॥ दोजख. यावनी. मरक ॥ ३२ ॥

नरउरपति दतिया नृपति, कोटा पति इरु कीन ॥३३॥

[पट्पात]

सुनत एह बुंदीम मंत्र निजदल मह मडिय ॥

अरि आजम उहुतहि लगन तमसुत हराल लिय ॥

अरक जाम अवमग तोप चल्लत त्रिजाम गय ॥

अव हय देहु उठाय जानि ब्रह्मिन्थ जयाजय ॥

इम कहि तेम सुभटन उचिन हयन इकि सम्मुह हलिय ॥

नीगद उदीचि दिसतँ मनहु चड पयन दखिखन चलिय ॥३४॥

इतिश्री बरागारके महानम्पूके उत्तगायण सप्तमराशा बुन्दीप-
तिब्रुर्षिहचरित्रे जागयनगगन्तिरुहादुग [आत्मम] गाहाजमरा
हनालीय-त्रद्वियामरगाजमगाह १ पितृधानरियताजमसूनुददारव
कमरगावर्णा ३ आदेगा मयूख ॥ १३ ॥

[नाराचम्] उठाय जग यो तुग बुद्धमिह उप्पग्यो ॥

मर्चा कजाक हड्ड हाक बीर बाक बित्थग्यो ॥

महा गभीर धीर बीर नीर छीर ज्यो मिल ॥

हमल्ल भोक भुम्मिल्लाक खड खड व्है गिल्ले ॥ १ ॥

अनकितति भिवरी अलाप राग सुक्कयो ॥

रनकि जान पक्खरीन पौन गौं रुक्कयो ॥

खनकि शर व्है प्रहार अग भग उल्लटँ ॥

सनकि म्वास सेमका फनालि फुकरँ फटँ ॥ २ ॥

॥ ३३ ॥ ३४ ॥

श्री ब्रजनास्कर महाचम्पू के उत्तगायण कल्पम राशि म बुन्दी क रूपति बुज
मिह क चरित्र म जाजव नगर के समीप बरादुरशाह [आत्ममगाह] और आ-
जमशाह म दुपहर तरु तोष का युद्ध हाकर आजमशाह का मारा जागा १
आजम क पुत्र दीदारखसम का पिता क स्थान म स्वामी होकर लडने के वर्णन
को तरहवा १३ मयूख समाप्त हुआ और आदिसेवा सौ इकावन २१ मयूख हुए ॥
नाराय ॥ यह स्पष्ट ॥ १ ॥ अनकिइति ॥ यहस्पष्ट ॥ २ ॥ छनकिइति ॥ छविपौ

छनंकि बान लौ उडान आसमान छदयो ॥
 ठनंकि घंट जंग जोम नाग तोम नदयो ॥
 तनंकि रंच खंचतैं प्रतंच चाप टंकरैं ॥
 भनंकि पच्छ भूरि भच्छ गिद्धनी आरफ्फरैं ॥ ३ ॥
 चली भली कृपान सानसुद्ध रात्र बुद्धकी ॥
 अरीन जुद्धकी उमंग राज रंग रुद्धकी ॥
 मप्यो अनीक संभगीक आजमीक अंगम्यो ॥
 चलैं कु चक्र भोगि भोगभोगपैं भ्रम्यो भ्रम्यो ॥ ४ ॥
 प्रहार खगगधार मार लुथि लुथिपैं परैं ॥
 चिरैं वितंड गंड अंड खंड खंड डै अरैं ॥
 दिमादिसानमें कृपान विज्जुमान निकखसी ॥
 भिरैं गरूर पूर सूर पिक्खि हूर हुल्लमी ॥ ५ ॥
 सुवाजि सोक ओकओक भीरु लोक भगगये ॥
 लरैं निघात सखपात इक्करीठ लगगये ॥
 अरैं ससुंड गै भुसुंड कंध बंधतैं कटैं ॥
 अटैं सु रुंड गोलकुंड फाटि सुंड उच्छटैं ॥ ६ ॥
 छिकैं बिछेक बान के पलान हान वित्थरैं ॥
 गिरैं उलट्टि सूर पिक्खि हूर भूर भगगरैं ॥
 जमाति जुगिनानकी पिदंत पेय पत्तकैं ॥

आच्छादित कियो। नागतीस नाग हस्ता तिनको। तोम समूह। भूरि बहुत ॥ ३ ॥
 चलीइति ॥ सानसुद्ध सान खुरसान। ताकरिकैं तयार। अरीन अरिनकी। राज-
 रंग राजनके लखि अंग्य रंग संग्राम भूमि तामैं। रुद्धकी रोककी। आजमी आ-
 जमका पुत्र। कुचक्र भूमिचक्र। भोगि भोगभोगपैं भांगी जेय ताके भाग फन
 फनपैं ॥ ४ ॥ प्रहारइति ॥ वितंड वतंड [हाथी] तिनके। गंड गरूर। विज्जुमान विज्जु
 प्रमान ॥ ५ ॥ सुवाजिइति ॥ सुवाजि अच्छेवार्जा तिनकी सोकलों। ससुंड सुडादंड स-
 हित। गै भुसुंड गै हम्ती तिनके सुसुंड दान सहित मुख। कंधबंधतैं कलावाके बंधके
 स्थानतैं ॥ ६ ॥ छिकैंइति ॥ हान त्याग। सूर भुड। पेय उनके पीबे योग्य राधर।

किलाकि बीर बाधनी ५२ फिरै उमत्त रत्तकै ॥ ७ ॥
 चलै समग खग के कटार पार निखसै ॥
 सुवीर सीस सचपी गिरीस हुल्लसै हसै ॥
 दरारि वारिजत्र ज्यों छुलाकि घाय उब्बकै ॥
 अनीक नागि के छडल छोह छाकमैं छकै ॥ ८ ॥
 दुरै विभान मुक्कि दान कुक्कि मुक्कि के करी ॥
 वजत हेति हतिकैं मनो कि दड चचचरी ॥
 जै बितड पिठि भड अडिकूट तालज्यों ॥
 बहत रत्त खाल के विमाल ताल नालज्यों ॥ ९ ॥
 सिलगि सोर ओरओर ज्वाल जोर सकम्पों ॥
 भयो निसान ध्वान जो दिसा दिसानमै भ्रम्पों ॥
 विधाय मानु रेनुको वितान व्योम विथरयां ॥
 लखे पौर न अप्प पार अधकार यों भरयो ॥ १० ॥
 चलचली मही रु मेन आजमी खलभली ॥
 कलकली किलक काल ज्वाली कलकली ॥
 गिलत गूद गिहनी फिकारि फिकरी फिरै ॥
 खिलत कक रपार खग धाग धारतै खिरै ॥ ११ ॥
 उडै दुओर वीर यों तुपकक तोप त्यों चलै ॥
 जरै दुकूल के दठी दकारि सम्मुहे हलै ॥

परिषायनी धारनकी पावनी ५२ ॥ ७ ॥ चलैइति ॥ सुधीर चाच्छे वीर ति
 नेक शीसनके सचययारे गिरीस शिव ॥ ८ ॥ दुरैइति ॥ विभान सुधियिना
 दान मदके वितेक हेमि हतिनके शत्रुशत्रु करिकै दडचचरी चचरीके दड पा
 सरलोग कागनमैं लगावैहैं ते ताल तलाग लोक तलाव ताके ॥ ९ ॥ सिलगि
 इति ॥ ध्वान शब्द "ध्वनिध्वानरथस्थना" इत्यमरः ॥ पिषाय अतर्धान क
 रिहैं मानु सुपेको ॥ १० ॥ चलचलीइति ॥ फिकरी अंगाली ॥ ११ ॥ चडैइ-
 ति ॥ दुआर होऊ तरफ तुपकक धकक दुकूल धस काखलख कलेजा ॥ १२ ॥

छिक्कें बितंड कालखंड ग्यान मिहनी धर्म ॥
 गिरिंद रुपामकी गुता महाभुविंद ज्यों दर्भ ॥ १२ ॥
 सिलगि अगिअकी सिला चसकि गैनलो चढ ॥
 बिमान अच्छीनका उदाय दाह यों दढ ॥
 उडैं अलान ओकओक दोक लोक मंडुनौ ॥
 खुलैं समाधि डमकी धुती दिगीनकी दुनौ ॥ १३ ॥
 उवाचि वातये पदात मन आजगी चर्नौ ॥
 हरोल पंड सुदका कगल मुदकी हर्नौ ॥
 डराल डक डिडिमी डसकि डकिनीनकी ॥
 नसैं उमंग साकिनीन नागि नाकिनीनकी ॥ १४ ॥
 बिकृत प्रत रतकी छछि छिछि उच्छनै ॥
 चलैं कि जंन जावकी मिला कि पावकी चनै ॥
 हवाछि घाय नदके कपोत आय उर्ग ॥
 पलहि कटि के उलटि डक डकपै परे ॥ १५ ॥

[दोहा]

लरत मगत चहुँदिस मुभट, मिलि पय गत मिलाप ॥
 कछु कछु तोपन दसन क्रम, पयत इक असि धाप ॥ १६ ॥

[पदपात]

कोटापति बारन बढाय रस बीर अधायो ॥

सिलगिइति ॥ गैनलों गजनलों, धुती बीरता, दिगीस दिक्पालनकी ॥ १३ ॥
 उर्वाचिइति ॥ डिडिमी वाद्य विजेष नने नासहोत, साकिनीन साकिनी अ-
 नेक पड़ी अयंकर आई तिन करिक्कें नागिनाकिनीनकी नाक स्वर्ण तावारी ना-
 रा खी तमासे देखवै अनेक आई तिनकी ॥ १४ ॥ बिकृतइति ॥ बिकृत छिदि
 ऐसैं बल घाय तिनसो, जावकी जावक संबधी, पावकी अग्नि संबधी कपोत
 आय कपोतकी तरह ॥ १५ ॥ दोहा ॥ लरतइति ॥ पद दुग्ध, मिष्टरस विशेष,
 इनके मिलापकी तरह असि खड्ग ॥ १६ ॥ पदपात ॥ कोटाइति ॥ निबिद्ध

वगम्वत मानन विदु निविड नीगद वनि आयो ॥

सुडि दीच इहिं समय घाय गाला लागि घल्ल्यो ॥

इम पोगर उडिजात चक्रित चिकरि मजि चल्ल्यो ॥

गन मजन कुडि वर्गागगति कछि असिप दारुन कलह ॥

इयमेव चरा दारत इलिय नगा मडि अति कोप मह ॥१७॥

[तिसर्ग]

कोटिस कृपानी पडचलानी घर घल्लानी सेर घटा ॥

तडे रचि ताली जुगिनि जाली भूरि मटाली करत कटा ॥

काही किलकारे बीर बकरे चढचिकारे कुभि करे ॥

जाति पात उमारे बाध निसारे मुडन मारे प्रेत परे ॥ १८ ॥

अमवार उलट कट कट पूर पलटै मूर सजे ॥

पनाग फा फट अगार उलटै वच विकटै ब्रववजे ॥

धुनेपतिनारा काल कर्ग तेग दुगर्ग बेग चली ॥

काटेग अनामन उग्र उछाइन माड महारन बीर बली ॥१९॥

गिरी गहि अती धरम उडती कोरु मित्तती चग निभा ॥

सूगन सिर छाया रचन रचायावेस बनाया छत्र विभा ॥

सुडेन मगि फुके तेगव भुके चासठि चुके नच नसा ॥

हल्लीसक भडे तालिता तडे स्वाय अखडे बीर वमा ॥ २० ॥

सवन नीगद सेव इज रानी पाग सुदामो अग्र चक्रित भीत चिकरि चि-
कारी करि अतिक्रामसह अति यद्वनहे कोप काध अरु मह इत्साह वा त
ज ताका एसो 'नरनाजस्तुत्यथ च' तिहेम ॥ १७ ॥ तिसर्ग ॥ काटसइति ॥
कोटस कोटापुरका ईश ताकी मटाली मटनकी आली पक्ति कुभि कुभी
[गज] अतिपाडमारे पान पीवन रुपिरको ताक इत्साह ॥ १८ ॥ अमवारोति ॥
कट कवच विकटै धन चिकट यहा यद्वचनभैरवा ॥ १९ ॥ गिरीइति ॥
अती अग्र ताके आग अगनिदा या फानजका पची जाक होर पाधि पा
जक उछायेहे तात गिन आचार छत्रविभा छत्रकी तरह फुके यहा यद्वचन
मगे ऐकारहे चुने पाकपरे हल्लीसर री जनको महलाकार इत्य ॥ 'मह-
छेन तु पन्दित्व जीणा हल्लीसक तु तव' इतिहेम ॥ यसा हृदयको गद 'इन्मेद-

गहुगहु बढि बानी भटन भयानी धार धपानी मार मचै ॥
 ढालन लगि ढल्लरि के अमि कल्लरि गव सु झल्लरि भाव रचै ॥
 कटि हड्ड करकैं फिफ्फ फरकैं तेग तरक्कैं एक उडै ॥
 चाटन असि चडै खंडै खंडै छोगि बितंडै गिरत गुडै ॥ २१ ॥
 बिबु मत्थ दुवाहे संभु सिराहे चंडिय चाहे उडि अरै ॥
 डोलै गज डारे फुटि नगागे पत्थ हठारे बत्थ परै ॥
 गजदंत उपारै कोप कगारै मीरन मारै बीर बडै ॥
 कटि धार कृपानन गात सु गानन बीर बिमानन कोक चडै ॥ २२ ॥
 जुगिनि जय जपै कातर कपै बाजि बिभंषै बेग बली ॥
 लुत्थिन भुव छावै वीर बढावै मिच्छु न मावै छोह छली ॥
 कोटंस बिनाँ हय छंडि महा गय रुडि बडे रय गरि रुप्यो ॥
 गज बाजि गहम्मह कूह कदककह ब्रंव ब्रह्मद लोक लुप्यो ॥ २३ ॥

[दोहा]

कोटापति किलकत परयो, आलम दल्ल सिर आय ॥
 करि सु संघ चंडासि कुल, तुट्यो आसिन अघाय ॥ २४ ॥

स्तु वपा वसे' त्यमः ॥ २० ॥ गहुगहुहति ॥ धपानी धपायवेवारी. के कितेक.
 अमि खड्ड. झल्लरि कालंगवहैकैं. गव शब्द. झल्लरिभाव देवालयमें बाघ विशेष-
 प ताकी तरह. फिफ्फ लोके फेफरा. तेग खड्ड. तरक्के तडाके. एक केवल 'एक'
 संख्यातरे अष्टे केवल तरयात्रिपि' तिमिदिना ॥ बितंडै बेतडोंके. गुडै गुड हस्ता
 की मिलत. तहां बहुवचनमें अकार है ॥ 'गुडकं हस्तिमल्लाहः' इतिमदिना ॥
 ॥ २१ ॥ बिबुहति ॥ दुवाहे दोऊ हस्तों से लुत्थ प्रहार करै ते. गजडारे गजन
 के पटके. पत्थहठारे पत्थ पार्थ ताकी तरह हठवारे. मीरन मीर जवन विशेष
 तिनकां. गात गवत. सुगानन अच्छे गाननकां ॥ २२ ॥ जुगिनिहति ॥ जपै
 कडै. बिभंषै विशेष करिकैं झंषै. बीर बीर रस. मिच्छु लुत्थ. नमावै नहीं मावै.
 छोहछली जामसां उफनी हुई. यहां दंशरुद्धियों मिच्छुको खालिग कियो. ग-
 य गज. रय घग. गहम्मह घनी भीर. रुद्धशीय प्राकृत. लुप्यो लुप्तभयो ॥ २३ ॥
 दोहा ॥ कोटाइति ॥ लुसंघ अष्ट है संघा प्रतिज्ञा जाकैं एसा ॥ २४ ॥ पदपा-

(पदपात्)

तजि मतग भुव बुद्धि कहि ग्रामि वर धकि कुप्पो ॥

नट मजग नाचे अग रग अगद जिम रूपो ॥

रता भोज रविमल्ल मग उज्जल करि मानी ॥

तिलतिल धाग तुटि भयो अमरन अगवानी ॥

पैतीसअचग मिश्ववत प्रकट धारत तदपि न धर्म धर ॥

चडामि बरा रन भजि चलन नन मिस्खो पिस्खो गिडर ॥२५॥

चकरयो कठु चित्तहनिन कठुक गिदिन निज किन्नो ॥

कठुक लह्यो निसकठ कठुक कालिय लागि किन्नो ॥

स्वाय कठुक गित्ताल डमरुधर ताल डकारयो ॥

भग्नि जुग्गिनि कठु भाग बहुत अनुगग बढायो ॥

अटि अटि हड्डुड फगुन उपम फटि फटि फांजन उप्फन्प्यो ॥

कोटा नरम कटिकटि असिन बटिवटि बहु पोसरु बन्प्यो ॥२६॥

(दोहा)

कोटापनि भरि भुव पगन, आजम गुत अकुलाय ॥

पट्ट मतगज पिळ्ळिके, आयो बलहि बढाय ॥ २७ ॥

इतिर्था वगभारकर महाचम्पके उत्तगयणो सप्तमराशौ बुन्दीप-
तिबुधसिंहचरित्र निरुद्धनालीयन्त्रगणोत्थापिताइवबहादुरशाहसै-

त्त ॥ तजिहाग ॥ पैतीसपममिगयन चह्याग बिना और ज्ञप्रियनके पुरातन
और नूतन मम आधुनिक लाल गणनास पैतीस ३० वषा हैं ते युद्धम बहुत
टोर भजि जायत हैं याही उनको राजपो सिम्बायनो है ॥ २५ ॥ चकरयो
इगि ॥ चिसकठ जिघ तिनै तिलाल छेष्टपाल अटिअटि अटन हरिकरिके
फटिफटि जुग व्हँवैर आधया फाटि फाटि यमि यमि लपनका व्हँवै पोषक
पोषिषधारी ॥ २६ ॥ कोटाइति ॥ पट्टमतगज मुख्य हस्ती ॥ २७ ॥

श्रीपञ्चमास्कर महाचम्पूत उत्तगयण क मागये राशि म बुन्दी के स्थामी
युधसिंह के चरित्र म, तापा का युद्ध राक कर बहादुरशाह का सेना के घाटे
उठाने में तरबारा स युद्ध राकर कोटा के राख रामसिंह के काम आने का

न्यासिसमरकोटाधीशगवगमनिह्नगसं चतुर्दशो मयुखः ॥ १४ ॥
आदितां द्विज्याशोक्तर्द्धिततमः ॥ २५२ ॥

॥ पन्थातू ॥

घटिय पंच दिन रहन पगत उद्धत कोटापति ॥
आजमसुत डभ पिछि गुमर मंडन गवन गति ॥
आयो अहि जिय बिनित्व निलिख नगरन कुंतामव ॥
नरउर दतिया नृपति वाम दत्तिलन मजि संजन ॥
दब्बत उमीर बीगन दुगह धुंदियपति उप्पर बांज ॥
मानहुँ अवाचि छुँनडन मुद्दिर चंड अनिल उन्नर चष्टिम १॥
डरु ब्रंवरु डरुडकन धान लकलत कत ललम मग ॥
छिंछि रुद्धि छरुडकन धान भकभकन दमर दम ॥
वेतालक बरुव कत धरुन अउछि छल देवत ॥
उवर छुद्धि करुफतत भिद्र मक्तम कत खोत जन ॥
कोसन दुमंत दारुन कलउ नगर मंडन ॥ २ ॥ नमिम ॥
मानहुँ विगंचि लूनन मजुज मग आनउज से दिन रचिम ॥
धगनि धुज्जि धममसन रम कलनगत कमउ नग ॥
हर दिग्गज हिय दुल्लि खुल्लि अडगत भचन अग ॥
कटि कंरुट नागोद टोप बाहल रुद्धि लूकन ॥
रथ्या दिसदिस रचन बेध विगिगत दंडूकन ॥
बनि दून भूत दुहारेम विविन गिम रवान लाना जुरन ॥

चउदहवां १४ मयुख हुआ और आदि स दो दो वादन २५२ मयुख हुए ॥
षट्पात् ॥ घाटियपंचडति ॥ विमिख बिना सिखातो रलेन्द्र यन जय. विमि-
ख तीर. मजव सम्यक् है जव बेग जाका जेना खुदिर भेध 'घनतीतालु दन'
इतिहमः ॥ अनिल पवन ॥ १ ॥ डरुत्रवरुडान ॥ खलम कोटाविह्नग कोटे टोहो.
दम स्वाम. यावर्ता. उवर उदर मडलगा मडन'अ खल तिन करिहे विगंचि
ब्रह्मा. "द्रुहिणो विरचिर्द्वेधणा विरिचः" इतिहमः ॥ नलमविउज मडूखुनरम.
ताकरिकै ॥ २ ॥ धरनिइति ॥ सम सहित. रथ्या गतो. रिस क्रोध, जुरन ल-

छल इहिँ अनेक कटि भट छकत मिच्चु चहत न चहत मुरन ।३।
 गज पय खहन जोरि रचत उप्पर नर रुहन ॥
 सजि सुडिन उच्छीस मजु कदुक नृप मुहन ॥
 गुड पक्खर गद्दी रु वधि बहु अत वरत्तन ॥
 इहिँ मचक आरुढ मात कालिय अधप्प मन ॥
 लौ तिहिँ पिसाच बाढक महत घहत उछाहक महमहत ॥
 जित तित सुगधि तित ते सजव रुहिर मिठ हेरत रहत ।४।
 भटन भूत कहूँ भिरत कहूँक कातर आकदत ॥
 करभ कहूँक कल्लरत गिरत गज कहूँक चिकरत ॥
 कहूँक अश्व कटि परत कहूँक घायल भट घुम्मत ॥
 कहूँ कवध उठि लरत कुहु कुणापन कहूँ सुम्मत ॥
 कहूँ कक भेद कवलन करत कहूँ सिचान झारत झपट ॥

॥ ५ ॥

कहूँक नैन कटि परत कहूँक कटि भौँह फदकत ॥
 उत्तमग कहूँ उहत गहत हर उद मोदगत ॥
 कालखंज कहूँ कटत बुद्धि बुक्कन कहूँ बुद्धत ॥
 कहूँ फुल्लत हिय कज मधुप मानस उडि उडत ॥

कर पय विभिन्न तरफत कहूँक मनहु मीन जल तुच्छ मत ॥

तत्सरियेको छलयइ या भूतनके छलमों मिच्चु नृपु मुरन मुरयो ॥३॥ गजप
 घइति ॥ पय पद उच्छीस उसीमा कदुक छोटत किया, गुड गजमिलइ गद्दी
 मिछोना तिहँ पाकालीका मद्दमहत मद्दकत सुगध मोठे रुधिरको जानिये
 ॥ ४ ॥ भटनइति ॥ करभ जइ करभ विना मस्तक कियापत सूरपीर कुदुदुको
 पृ लोके स्थाल कुणापन कुणाप मृगक मिनके ॥ ५ ॥ कहुकइति ॥ उरु ऊर्ध ऊप
 रही मोदगत मोदप्राप्त कालखंज कलेजा 'कालखंज कालखंज कालेय कालि
 य पशुवि' तैटैय ॥ मधुप अमर मोही मानस मन उडिबहुत या हियकजाहिँ
 सो यामें कत गत, छमत रमत, ए अन्धाऽनुपास राखे या रीति सर्वत्र एकसों
 लोके जितमैं अक्षरनको अन्धाऽनुपास खटावैं तितमैं अक्षरनको पद जुदो क-

नेलि मूर ऊँ पग पै न मुरै, जिम तन्त्रिकय महिय वाद जुगै ॥ १० ॥
 पग धागन धार समार खिगै, पत्त भोजन चोमठि लगै ॥
 टके बट छे मट के लटके भटकेन भौ बटक बटक ॥ ११ ॥
 केलकारत में करि भूत मिले, हलकाग्न स्थितरपाल खिले ॥
 हमे ग्रामि मिज्जुव अकनसे, चुगडे दल महयके धनम ॥ १२ ॥
 तहि भोग नर्तकी गतिकौ, मिलि बचन कालियकी मतिकौ ॥
 ततिउ समुड ग्रमुड कगै, अनि आखुग सका अक वर्म ॥ १३ ॥
 पुत जानि प्रभुपन ईम मज, भव धार तैं किलकारि भैं ॥
 उह जाजन फाजन मुस्मि छई, अति पाउम जानि घटा उनई ॥ १४ ॥
 पवमान दिगुत्तरको प्रमग्घो, मु मों घन पामक हाय सम्यो ॥
 बटुघाँ तग्वाग्निकी चमकै, नि दिपै मनु विज्जुवकी दमकै ॥ १५ ॥
 मिलि भूवन ओज डग्गमदलाँ, लागि मिजित ददुगके नदलों ॥
 बहु भड मु रोहित चाप वनै, तनिताग्व दुदुति डाल तनै ॥ १६ ॥

लक्ष्मि आदि (आन्ध्रशास्त्र व्याख्यान ताक पाठक ॥ १० ॥ खगोलशास्त्र) सुमा
 न दर्शायाकृत नातिशय फारे ॥ चोमठि घटा युद्धमै १४ जोगनी ऐस मर्षन
 जानिये बट मार्गे भूत्वेन भटके दर्शायाकृत पद्माऽऽनान तिन फारे ॥ ११ ॥
 किलकारतइति ॥ व नय आसि खलुग अकनसे अरु गिन्त तिनमा विज्जुरी
 के चिन्तनमे यह अर्थ ॥ १२ ॥ ॥ गतिइति ॥ नर्तकी नर्तक बहुल्य स्वाग आ
 जिनेयारा ताकी अचन टगत करितुट कगि तस्नी तिमके तुड सुमा "तुडमा-
 ल्य सुव घफ" मिनिर्से ॥ मसुत्त सुडा मलित म्पमुड अपन महर्म आरुगम
 मणश आखु उदग ताकरिऊँ चलिपेयारे "छेमातुरा राजास्यैतदगता गपादरा-
 लुगौ" इति १३ ॥ अग लोके गोव ताई ॥ १४ ॥ १५ ॥ पवमानइति ॥ पवमा
 न पवन दिगुत्तरका उत्तर रिमा रयकी राफकी दिशा ताको आजमशाह गो
 लामा उता ताक पतिगर्वा पलट्या लो रो सरथा चयो यहा प्रम या पस
 रया ए अत्यामुपाम है ति ने ॥ १६ ॥ मिशिइति ॥ डरन्मदलो डरन्मदमयी
 प्रभा ताके सुयय 'मेवम्योर्गतिरिमद' इत्यमर ॥ सिजित मूदणका शब्द "भू
 पणाना तु सिजित" मित्यमर ॥ ऊड ऊड राणिनीधइधनुष 'तदयकाजु
 रोहत्' इत्यमर ॥ तनिताग्व तगित मनिन मेघका तियाप ताके तुल्य आ
 रम शब्द 'स्वमित गजित मेघनिर्घाष' मित्यमर ॥ १७ ॥ फरकावलिइति ॥

करकावलि हड्डन खंड किरैं, फटि टोप उडे बकपंति किं ॥
 चमकैं जो इरिंगखालों चिनगी, उद सोनित बुद्धि अंग उमर्गा ॥१७॥
 रन जाजव पाउस यों विरच्यो, सुगलान चुहानन दाव मच्यो ॥
 भट खगन के कटि सुंडि भ्रमैं, अहि ज्यौं जनमंजय अध्वरगें ॥१८॥
 करकैं कटकावलि कोच कटैं, फगकैं कटि कालिक बल्ल फटैं ।
 तरकैं तरवारिन हड्ड तुटैं, छरकैं छिति छिछिन रत्त छुटैं ॥१९॥
 लटकैं असवार तुखार लरैं, पटकैं गहि इकहिं इक पंग ॥
 चटकैं कटि टोपनकी चटकैं, छटकैं भट बाजिन लोह छकैं ॥२०॥
 गटकैं पल गिहनि प्रेत गिलैं, खटकैं असि खुप्परि खंड खिलैं ।
 अटकैं कि रकावन पाय अगे, भटकैं भट गजहि छोह भगे ॥२१॥
 लगि कोसन जंगनकी लरसैं, बरखा नरअंगनकी बरसैं ॥
 सननंकत प्रोथन प्रान सरैं, अननंकत आयुध अग्नि भरैं ॥२२॥
 तननंकत तेगनकी तरकैं, थगकैं गननंकत लोह थकैं ॥
 रन होत मुहूरत भान रह्यो, बलतैं बल लोह सुमार बहयो ॥२३॥

[दोहा]

बल बल लोह सुमार बडि, धोग मचिग घमसान ॥

करका लोके गड़ा तिनकी. आवली पंक्ति. किं विचरैं. लड़ंगला स्वयंत.
 लोके जिणनियोंके तुल्य. 'स्वचोता ज्योतिरिंगल' इति. ॥ यहाँ लकार
 विशिष्ट ओकारको प्राकृत तालों पहरव जाबिये. यतैं जगनको पहास भयो नहीं
 यथा ॥ 'इहिआरा बिहुजुआरा ओलुडा. अवलंसिलिआवि लहुलहवजणसंजो-
 ये परे असेस विसविहास' इति. ॥ नाथराजः ॥ उद जल. यहाँ नरगी
 अर्णी अन्याऽनुप्रास ॥ १७ ॥ रनेति ॥ अध्वर यज्ञ तागैं ॥ १८ ॥ करकैंइति ॥
 कालिक कलेजा. बल्ल लोके छाना. रत्त रत्त ॥ १९ ॥ लटकैंइति ॥ तुखार उत्तम
 हथ विशेष. "ताजिकाश्च खुराखाणास्तुपाराश्चोत्तमा हयाः" इति नकुलपांडव ॥
 चटकैं चटक खंड ताके बहुवचनमें ऐकार है ॥ २० ॥ गटकैंइति ॥ कि कितेक.
 ॥ २१ ॥ लगिइति ॥ लरसैं लरस. पंक्तिको वाचक. देशीप्राकृत ताके बहुवचनमें
 औकार. प्रान हृदयमें रहिवेवारे प्रान विशेष. सरैं चलैं ॥ २२ ॥ २३ ॥ दोहा ॥

आजमसुत अधार भो, चढाकिरन चहुवान ॥ २४ ॥

(पट्टपात्)

घटिय दोय २ रावि रहत प्रथित आजम सुत पिल्लयो ॥

नरउर दतिया नृपति ठानि हरवल दल ठिल्लयो ॥

कुक्क परिग चहुँकोद टुकक टुककन दल तुटत ॥

हरन मोह हुलास छोह सूरन असु छुटत ॥

निज साह भाग रनरीति नव प्रवल नीति फल पक्कयो ॥

बुदिय नरेस पावक विसम तून आजम दल तक्कयो ॥ २५ ॥

(मुक्तादाम)

घटानिभ फोजन भो घमसान, उतै जवनेस इतै चहुवान ॥

वजै असि हड्डन अह बिदारि, किधौ तरु कटहि कूर कवारि ॥ २६ ॥

अरघो दतियापति सम्मुह आय, परघो झरि वीर लयो फल पाय ॥

रुप्यो गजसिंहहु कूरमराज, सज्यो इत हड्डनको सिरताज ॥ २७ ॥

बढी बुध भूपतिकी हतवाह, कटे भट और भज्यो कछवाह ॥

धरा नत मगर मकुलि घुमि, लयो नृप आजमको सुत रुधिर ॥ २८ ॥

रुपे इम जाजव ते दल गरि, झरै असि झल्लरिलो झनकारि ॥

महानट नञ्चन मुडन मोह, करै किलकारत कालिय कोह ॥ २९ ॥

झुकै विहसै चउमहि ४६न झुड, रचै असिवार नचै बहु रुड ॥

अरै डकतै डक वतथन आय, परै गज पव्वय ज्यो पयि पाय ॥ ३० ॥

थरत्थर भुम्मि चलच्चल यान, लग्यो अहिभोगनको लचकान ॥

कुलात्तक चक्र भयो भमि कच्छ, घरकत सूकर दह्व विलच्छ ॥ ३१ ॥

वर्णन इति ॥ अधार अधकार चढाकिरन सूर्य ॥ २४ ॥ पट्टपात् ॥ घटियइति ॥ प्र
थित विरूपात् ॥ २५ ॥ मुक्तादाम ॥ घटाइति ॥ कवारि कपारी वनकटे ॥ २६ ॥
॥ २७ ॥ २८ ॥ रुपेइमइति ॥ महानट शिष कोह कोलाइल ॥ २९ ॥ झुकैइति ॥
असि स्वस्रग ताके पार प्रहार रुह बिता मस्तक के कियावान सुभट रुहकयन्धौ
त्यपशीर्षे कियागुलि ॥ इति हैम ॥ पयि वज्र ताको ॥ ३० ॥ थरत्थरइति ॥ भो-
॥ ३१ ॥ छगेइति ॥ त्रिषिष्टप स्वर्ग मृगत मृष-

लागे अतलादिक कंपत लोक, इतैं अकुलात त्रिनिष्टप ओक ॥
 रमैं पलचारहु आरुन रंग, सबै इम सूचत सोनन संग ॥ ३३ ॥
 चढयो गज आजमपुत्त सचाव, धप्यो नृप र सुनु उन्नत धाव ॥
 कमानन अँचत कानन कानि, तक्ष्यो इम गारुत बानन तानि ॥ ३४ ॥
 लगैं सर छत्तिन व्है इम लीन, मनो बिल सप्य वि भंनर मन ॥
 सजैं बजि पलन सायक सोक, उडैं सलभा जिम अंवर ओका ॥ ३५ ॥
 चलैं असि कुंत बरच्छिन चोट, अमूर दुँ बहु हत्थिन आट ॥
 उडैं बहु अंवर अग्नि अलात, जरी गिरि गिहनि चित्तानि जात ॥ ३६ ॥
 फिरैं रचि फेरव फेन फाल, विबुलत कक उडैं विहगत ॥
 कमान फटैं रु हटैं कमनैत, पलान कटैं उलटैं पायन ॥ ३७ ॥
 हरैं कहुँ पान लरैं कहुँ हकि, जरैं कहुँ मुच्छ पेरैं कहुँ जकि ॥
 बरैं कहुँ हूर भरैं कहुँ बाढ, गिरैं कहुँ मात धरैं कहुँ गाढ ॥ ३८ ॥
 रुलैं कहुँ मत खुलैं कहुँ रास, हुलैं कहुँ हाथ्य हुलैं कहुँ दोस ॥
 बकैं कहुँ प्रेत छकैं कहुँ बाग, धकैं कहुँ ज्वाल हकैं कहुँ धाग ॥ ३९ ॥
 बढैं कहुँ बाजि बढैं कहुँ चाव, पढैं कहुँ वंदि कढैं कहुँ पाव ॥
 धमैं कहुँ रवास नमैं कहुँ धून, धमैं कहुँ गिह रमैं कहुँ भून ॥ ४० ॥
 मचैं कहुँ गीठ जचैं कहुँ भुड, रचैं कहुँ माग नचैं कहुँ रुड ॥
 बजैं कहुँ प्राथ सजैं कहुँ बाह, लजैं कहुँ भीत भजैं कहुँ ताह ॥ ४१ ॥
 रवसैं कहुँ छुम्मि हमैं भट सग, बलैं कहुँ रोय करैं कहुँ संग ॥

ना करत. सोनितसंग रुधिरके संगती ॥ ३२ ॥ चत्योणजइति ॥ कानि अवाधि
 ॥ ३३ ॥ ललैमइति ॥ सवर जल तामैं पत्त्रन अण्णें पल्लन करिकें ॥ ३४ ॥
 चलैंइति ॥ अलूर कातर अलात अगारे जरी दग्ध अह, ॥ ३५ ॥ फिरैंइति ॥
 फेरव शृगाल. 'फेण्डः फेरवः शिवा' इति हैम. ॥ फेरन फेराफिरकें ॥ ३६ ॥ ३७ ॥
 रुलैंकहुँइति ॥ हुलैं रसैं हत्थि हरती लाका. होम हान ॥ ३८ ॥ चढैकहुँइति ॥
 वंदि वंदिजन. धमैं धसन करैं ॥ ३९ ॥ मचैंकहुँइति ॥ जचैं मागैं. साम उपाय
 विशेष प्राथ हपनासा बाह प्रहार. लाह लास ॥ ४० ॥ स्वसैंकहुँइति ॥ ब्रसैं

घट्टे कहुँ सोन घट्टे कहुँ चेत हट्टे कहुँ पिक्खि रट्टे कहुँ हेत ॥४१॥

बट्टे कहुँ सगि रट्टे कहुँ बैर, खट्टे कहुँ भिटि चट्टे कहुँ खेर ॥

चट्टे कहुँ उट्ट फट्टे कहुँ चाट, अट्टे कहुँ मिच्छ दट्टे कहुँ मोट ॥४२॥

भिट्टे कहुँ वाग खिट्टे कहुँ भुम्मि, भिट्टे कहुँ घुम्मि भिट्टे कहुँ भुम्मि ॥

लट्टे कहुँ मोह वट्टे कहुँ षोह, दट्टे कहुँ तोप जट्टे कहुँ दाह ॥ ४३ ॥

गिट्टे कहुँ घाय वट्टे कहुँ गात्र, हट्टे कहुँ दोगि भट्टे कहुँ हाय ॥

चिट्टे कहुँ सोन लिपे कहुँ चेल, छिट्टे कहुँ भाजि दिपे कहुँ छेला ॥४४॥

तनकत चाप पचन तुट्टि, खनकत खगग सु मुट्टिन खुट्टि ॥

सनकत बानन पानन सकि, मनकत पक्खग रात्रि भमकि ॥४५॥

बट्टे पणवानक नट्टे विट्टे, महावल बुद्ध रत्तया अवमट्ट ॥

परया अरि सन उपक्रम पूर, सज्यो डम समर पुगन सूर ॥ ४६ ॥

येइत्यइ नट्टे उट्टि कवध, मलपट्टि दे कर ताल मदध ॥

निमादिन जादिन द्विज अनत, भिट्टे गजतैगज मन भमन ॥४७॥

अट्टे बहु वीति विनाँ अमवार, उलट्टे खुट्टे जान अपार ॥

गिट्टे इमपालक दागित गत, मनो तरुते कपि निंद पमत्त ॥ ४८ ॥

ग्राम पावै सान रुधिर ॥४९॥ यट्टे कहुँ इति ॥ बट्टे पक्ष मरुदेशीय प्राकृत उद्धत तासों

खट्टे, भिट्टे मिलिकेँ पैर पावनी कुशल उट्टे ओट्टे लाके ओट ॥ ४२ ॥ ४३ ॥

गिट्टे कहुँ इति ॥ घाय पाव तिनकों, सोन नाधर पैल पक्ख 'बेल पैल पल्लु खट्टे'

रिट्टि छिट्टि पकोशकारः ॥ छल पला सनासुदगीके रमित्त जानिये ॥ ४४ ॥ ४५ ॥

बट्टे इति ॥ पणवानक पणन पाव विजय आनक हाल तिनक विट्टे घने अट्टे

अवमट्ट अवमट्ट शाक फकरपाण ॥ "अवमट्टे पौडन" इति हैम ॥ उपक्रम

पलायन, "उपक्रमसमुत्प्रेरणप्राप" इति हैम ॥ सनरपुगव सनर नामक अट्टे

पाननमै अट्टे ॥ ४६ ॥ यट्टे इति ॥ ए दाऊ नृत्यक अनुवार शब्द हैं ॥ यहाँ

धकार विशिष्ट दाऊ प्रकारनकों प्राकृत तासों पट्टिल छिरया पानाभाजके

पचनसों नट्टे जानिये निमादिन निमादी हाथीनके असवार तिन करिकेँ

"हस्त्यारोह मादिपन्ता महामात्रनिमादिन" इति हैमः ॥ जादिन पादियममै

हट्टे हीन अनत आरिभित्त ॥ ४७ ॥ अट्टे इति ॥ वीति अथ "अथर्वो वा स

सवीति" इति हैम ॥ इमपाल लाके महावन, "गजाजी इमपालका" इति

॥ ४८ ॥ पला-

पताकिन होत सदंड प्रपात, बडे तरु ताल सकीस कि बात ॥
 किरैं बहु मस्तक लस्तक कटि, गिरैं गुन तुष्टि फिर धनु फट्टि ॥ ४९ ॥
 खिरैं बिखरैं सर छोरि निखंग, जथा बिलतैं बहु भीम भुजंग ॥
 इली आसिधेनुन बुडि अपार, किधौ मलयाचल नागकुमार ॥ ५० ॥
 बहैं परिघातन कुंत सबेग, त्रिसीसक सगि रु पट्टिस तेग ॥
 अरैं कति अश्वन मंडि निपुद्ध, करैं तुमुलाहव के भट क्रुद्ध ॥ ५१ ॥
 परैं फटि दुंदुभि भेरिन पूर, गरज्जहिं के नर मंडि गरूर ॥
 परैं झरि बग्ग कबी रुलपान, कटैं खुर प्रोथ हयच्छद कान ॥ ५२ ॥
 रची इम संभर जाजव शरि, इनी आरे सेन घनी हलकारि ॥
 घटा गज मध्य सु दै घन घाय, लयो नृप आजम पुत निराय ॥ ५३ ॥
 भयो जबही असु आजम भंग, सबै नृप तत्थ टरे तजि संग ॥
 भज्यो इक १ भूप रु द्वै २ हनि भिटि, लयो अब आजमको सुत
 भिटि ॥ ५४ ॥

किनइति ॥ पताकिन पताकी पताका रखववारे. लोके निखानिबरदार. तिन
 के. लदंड ध्वजा डंड सहित. तरुताल तालवृक्ष सकीस कीस धानर तासहित
 “कपिः कीमः पलबंगमः” इतिहैमः ॥ कि मनो. दात पवन सो. किरैं बिखरैं.
 लत्तरु धनुषकी सुष्टी. “द्रोणासो लक्ष्मकोस्यांत” इतिहैमः ॥ घुन प्रत्यंचा.
 ॥ ४९ ॥ खिरैंबिखरैंइति ॥ सर तीर. भीम भयंकर. इली लोके सुती ॥ “स्यादि-
 ती कर्मानिके” तिहैमः ॥ आसिधेनु छुरी. “छुरिका चासिधेनुका” इत्यमरः ॥
 ॥ ५० ॥ बहैंइति ॥ परिघातन परिघ लोके लोहांगी. “परिघः परिघातन” इत्य-
 मरः ॥ त्रिसीसक त्रिलाल. “सर्वला तोमरे शल्यं शंकौ शूले त्रिशोर्धक” इति
 हैमः । अरैं जरैं. अश्व घोरेनकों. निपुद्ध भुजयुद्ध. “निपुद्धं बाहुयुद्धं स्या” दि-
 त्यमरः । तुमुलाहव संकुलित युद्ध ॥ ५१ ॥ परैंफटिइति ॥ पूर समूह. गरूर
 देवीप्राकृत गर्व. बग्ग घोरेनकी बाग. कर्षा लगाय. हयच्छद घोरेनके स्कंध.
 “हयच्छदो हयच्छदे” तिहारावली ॥ ५२ ॥ रचीइमइति ॥ घटागजमध्य हस्ती
 नकी घटाके बीच. “दहनां घटना घटे” तिहैमः ॥ सु सो ॥ ५३ ॥ भयोइति ॥
 असु प्राण. आजल लुप्तपण्डीन. लूप आर्यराज. इक नरवरको राजा गजसिंह
 कछवाह भज्यो. रु अरु. द्वैर कोदको महाराव रामसिंह अरु दतियाको राजा
 दलपतिसिंह उंदेला २ प दोन तिनकों. भिटि मिलिकैं. भिटि घेरि ॥ ५४ ॥

चढ्यो गजहो अथ द्वारि विचारि, रची सुत आजम बानन रारि ॥
 सु सभर हेति सबै बरसाय, दयो अरि निव्वल पारि दबाय ॥ ५५ ॥
 हुती हयउलकख चमू हमगीर, भयो अवसान न इक्कु भोर ॥
 रच्यो जिहि विग्रह भुगन राज, वचै वह तित्तिरि क्यौ लहि बाज ॥ ५६ ॥
 फितूर दफै करि मडल केरि, घनी निज सेन लयो गज घेरि ॥
 कियो तउ बानन जग कराज, कदाँलग जोर करै लहि काल ॥ ५७ ॥
 अधर्म न होत सहायक अत, लगे बुध आयुध मर्म मिलत ॥
 भयो सुत आजम मोहि विभान, चलयो समतगहि लै चहुवान ॥ ५८ ॥
 (दोहा)

घटिय इक्क खिल रवि रहत, घल्लिय सभर घत्त ॥

आजमसुत इभपाल सह, मोहित भयउ प्रमत्त ॥ ५९ ॥

इभ समेत लै तिहिँ अधिप, उमँडि मुकामन आय ॥

साहवहादुर ढिग सजव, पत्र विजय पठवाय ॥ ६० ॥

सरिता इक ढिग सजतहो, सफरन बडिस सिकार ॥

आयो डेरन विजय सुनि, कहत बुद्ध जयकार ॥ ६१ ॥

इति श्री वशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणो सप्तमराशो बुन्दी-
 पतिबुधसिंहचरित्रे आजमप्रधानान्तरमनेकार्यराजाजमसेनापृथ-

चढ्योइति ॥ सु सो (दीदारयकदा) सभर बुधसिंहनेँ हेति शक्र ॥ ५५ ॥ हुती
 इति ॥ हय सात ७ लाख अवसान अत समय श्रीर सहाय भुगन भोगिष
 को ॥ ५६ ॥ फितूरइति ॥ फितूर पावनी कूटो गर्ब लुप्तद्वितीयाक दफै पाव
 नी नष्ट तउ तथापि काल मृत्यु ताहि ॥ ५७ ॥ अधर्मइति ॥ अत अवसान
 तामें मोहि मूर्छित न्हैकें विभान बिना भान समतगमतग मातग बाको ह-
 स्ती तासहित ॥ ५८ ॥ दोहा ॥ घटियइति ॥ खिल शेष जोके पाकी घसघात
 इभपालसह महापत्त सहित ॥ ५९ ॥ इभसनेतइति ॥ अधिप राजा (बुधसिंह)
 सजव पेग सहित ॥ ६० ॥ सरितेति ॥ सफरन सफर मत्स्य तिनकी पडिस
 पनसी लोके पालिया ताकरिकें ॥ ६१ ॥

श्रीवशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सातवें राशि में बुद्धी के पति बुध-
 सिंह के चरित्र में आजम के मरे पीछे अनेक आर्य राजाओं का आजम की

गभवन १ नरवरनृपकूर्मगजसिंहरणपलायन २ दतियाभूपदत्तपति
सिंहसरण ३ आजमात्मजदीदारवरसमूर्छितदशायदृशां पञ्चदशो
मयूखः ॥ १५ ॥

आदितस्त्रिपञ्चाशोत्तरदिशततमः ॥ २५३ ॥

(दोहा)

आजम दत्त अबलग वज्यो, पृथक् लोभगति पाय ॥

अब टरिटारि सब उत्तरे, आलम दत्त विच आय ॥ १ ॥

(पट्टपात्)

चरमाचल रयि चढत चित्त प्रसुदित निसचारन ॥

आजम सुत तजि मोह बहुरि बुल्लयो थित बारन ॥

को जित्यो दत्त कोन सु सुनि इन कहिय कुसीलित ॥

जित्यो आलमसाह कटक वाको तुम कीलित ॥

दीदारवरस यह सुनि दुचित होदासों सिर हनिमरिय ॥

अति लोह छवित इभपालहू परि प्रमत्त असु परिहरिय ॥ २ ॥

[दोहा]

जिहिँ उप्पर आजम सुवन, मरिग फोरि उतमंग ॥

बारन वह सोनित बमत, आयुध भेदित अंग ॥ ३ ॥

सेना से जुदा होना १ नरवर के राजा गजसिंह कछवाहे का युद्ध से भागना
२ दतिया के राजा दत्तपति सिंह बुंदेल का मारा जाना ३ आजम के पुत्र दी-
दारवरस का मूर्छित दशा में पकड़ेजाने का पन्द्रहवां १५ मयूख समाप्त हुआ
और आदि से दोसौ त्रेपन २५३ मयूख हुए ॥

दोहा ॥ आजमइति ॥ अबलग अचावधि. पृथक् जुदो ॥ १ ॥ पट्टपात् ॥ चरमे-
ति ॥ चरमाचल अस्ताचल ताके ऊपर "अस्तस्तु चरमदमाभू" दित्यमर ॥
प्रसुदित प्रमोदित लोभकरि. मोह सूच्छाकों सु सो इन बुधसिंह के सुभटों
नं. कुसीलित यह संबोधन है. छोटे सीखवारे ते. कीलित बद्ध. लोके कैदी
प्रमत्त मोहित. असु प्रान. परिहरिय तजिय ॥ १ ॥ दोहा ॥ जिहँउप्परइति ॥
सोनित रुधिर. बमत उगलत ॥ ३ ॥ आजमइति ॥ जेवर यावनी आभूषण.

पुष्पासिंहका सुकसे शयन करगा] सप्तमराशि-पोहशमयूज [२०९५]

आजमसुत सृत सुनि अधिप, इभ सु सगहारिय आनि ॥
कोटि इक्क१०००००००जेवर कडिय, पृथक सु धरिय प्रमानि ॥ ४ ॥
स्वचर भेजि निज साह डिग, कय सब पिदित कहाय ॥
आजमसुत गत असु भयो, प्रभु अप्पन जय पाय ॥ ५ ॥
कोटि इक्क१जेवर कड्यो, सो यित फील समेत ॥
आयस वसि प्रात कि अबहि, आऊँ सबन उपेत ॥ ६ ॥

(पट्पात)

सुनि बुडोदित साह खास निज दास खिनायो ॥
मडि विविध मनुहारि कथित अति नम्र कहायो ॥
बल तेरे छुदीस उमडि आजम पर आये ॥
कावल जेतै कहिय बैन करि सत्य बताये ॥
अब परिय रति तुम श्रमित अति वपु विमल्य करि विधि विहित ॥
सेना सम्हारि मडहु सयन आवहु प्रात नरस इत ॥ ७ ॥

[दोहा]

तव यह सुनि सन्नाह नजि, निज वपु सख्य निकारि ॥
किय विधान भिसकन कथित, सब दल प्रथम सम्हारि ॥ ८ ॥
भीम निसा आगम भयो, डहिंतर तिहिंतर अैन ॥ ९ ॥
क्रम सब सायकृत्य करि, सभर मडिय सैन ॥

॥ तोटकम् ॥

छपि भानु छपा सु जिहान छई, मिलि कज बिरजहु सोक मई ॥

स्वचरइति ॥ स्व अपने चर दास गतअसु गतप्राण ॥ ५ ॥ ६ ॥ पट्पात ॥
सुनिबुडोदितइति ॥ बुडोदित पुष्पासिंहको कह्यो विमल्य विना शाल शस्त्र
नके शय्य रहे हाय तिनका निकासिऊँ यह अर्थ ॥ ७ ॥ दोहा ॥ तययइति ॥
सनाह कवचोंको विधान क्रिया भिषक पैय कथित तिनका कह्यो ॥ ८ ॥
क्रमसयइति ॥ सायकृत्य सायकालको कर्म सैन सयन भीम घोर भयकर
अैन अपन स्थान ॥ ९ ॥ तोटकम् ॥ छपिइति ॥ छपा छपा रात्री जिहान

बिबुधालय झल्लरि घंट बजै, सुरभीन रवबच्छन मेलसजे ॥ १०॥
 दिन सूकन घूकन हूक दर्ई, चित चक्रन चौंकि तजी चकई ॥
 चिल्लकारिन पिंगलिका चहकी, निधिसी निसचारन धारनकी ॥ ११॥
 चहुँओरन चोरन चाय चढे, बहु जारन दारन मोद बढे ॥
 दिनचार भयार अगार दुरे, फबि व्योम नछत्रन चित्र फुरे ॥ १२ ॥
 जुरि दीप निवासन भास जगी, दहनोदय चुलिहन हेति दगी ॥
 रचि गायक गोरिय गान रहे, गनिकान उमंगि भुजंग गहे ॥ १३॥
 रस पीय स्वकीयन हीय रजे, परकीयन तीयन पीय तजे ॥
 भय मुद्ध नवोढन चित भरघो, हिय हृच्छय मध्यन बोध हरघो ॥ १४॥
 बसि प्रोढन केलि त्रपा बिसरी, क्रुध धारि अधीरन रारि करी ॥
 छमि आगस धीरन नाह छले, चढि चाव बिदग्धन दाव चले ॥ १५॥

यावनी संसारमें. विरंज बिना रंज. बिबुधालय देवालयमें ॥ १० ॥ दिनसूक-
 इति॥ चिल्लकारिन चीत्कारी वाके शब्दको अनुरूप है. "चिलीतिसान्ते चि-
 लीलिते" दीप्तवसंतराज ॥ पिंगलिका कोचरी. की करी. कही नहीं अन्त्यानु-
 प्रास है ॥ ११ "चहुँइति ॥ भयार भयवारे ॥ १२ ॥ जुरिदीपइति ॥ जुरि ज्व-
 लितवहैकै. दीप दीपक. निवासन घरमें. भास कांति. "माइछविद्युतिदीप्तयः"
 इत्यमरः॥ दहनोदय दहन अग्नि ताके उदय करिकै. चुलिहन चुल्ही चुली लोके
 चूल्हा. रसोई पकायबेके तिनमें. हेति भाल. "अर्चिर्हेतिः शिखा स्त्रिया" मि-
 त्यमरः ॥ गोरियगान गोडी रागिनीको गान. हनुमान कपिराजके मतमें तथा
 आधुनिक गायकनके मतमें गोडीको समय सायंकाल है. भुजंगगहे भुजंगस
 अपने पति ॥ "भुजंगो गणिकापति" रितिहैमः ॥ १३ ॥ रसपीयइति ॥ पीय
 प्रिय. अपनों परिणीत. अपनों परिणीत नायक. तत्संबंधी रस शृंगार तामें.
 स्वकीयन स्वकीया नायिकानको. हीय हृदय रजे रंजित भये. मुद्धनवोढान मुद्ध
 मुग्धा नवोढन नवोढा तिनके चिह्न ही लज्जा तानें. "मंदार्त्तं नहीलपा ब्री-
 डा" इत्यमर ॥ हृच्छय काम तानें "विषमायुधो दर्पककामहृच्छयाः" इतिहै-
 मः ॥ मध्यन मध्या नायिकानके ॥ १४ ॥ बसिप्रोढनइति ॥ प्रोढन प्रोढा नायि-
 काननैं. केलिवसवहैकै. त्रपा लज्जा कों. क्रुध क्रोध कों. अधीरन अधीरा नायि-
 काननैं. छमिआगस आगस अपराध ताकों. छमि चमाकरिकै. धीरन धीरा
 नायिकाननैं. नाह नायक. बिदग्धन बिदग्धा परकीया नायिका विशेष तिननैं.
 वाक्बिदग्धा १, क्रियाबिदग्धा २ ए दोऊ तिनके. दाव चातुर्यसों नायककों

रस भूति रसदूतिन रुति रची, वयवारिन लच्छितिकान वची ॥
 कुलटा तजि गेह सनेह क्रमी, जियमै मुदितान सु प्रीति जमी ॥१६॥
 अनुपुब्बसयानन भीति अरी, पिय सग सहेट न भेट परी ॥
 परभोगदुर्वीन सखीपरखी, हिय रूप रु प्रेमवती हरखी ॥ १७ ॥
 पतिप्रोषितकान विलाप परचो, क्रुध मानस खडितिकान करचो ॥
 दिन टेक निवाहि अरै दग्गिता, ताजे मान उठी कलहतरिता ॥ १८ ॥
 ऋगि विप्रसलब्धन सोक झिल्लयो, मन सेट महेट न आनि मिलयो।
 उतकठिनि पुच्छि निदान अली, लखयो मगवासकसज्जलली ॥१९॥
 भर दर्प अधीनडनान भज्यो, अभिसारिनि बेस नयो उपज्यो ॥
 बहु गध कुबेलनको बिकरयो, ससिह व उदैगिरितै निकस्यो ॥२०॥
 ससिके बसि आपधि पोष लहयो, गहकाय चकोरन मोद गहयो ।

सकेतादि स्वप्ना करियेके ॥ १० ॥ रसभूतिइति ॥ रसभूति रसहीमै भूति वै-
 भव जिकै ऐसी रसदूति स्वपद्वितिकानगै यह नायिका प्राचीनननै लिखी
 नहीं अरु चमत्कार विशेष पू नहीं तथापि आधुनिक भाषाकविनके मतानु-
 सार लिखिदीनी है उति फीदा पयवारिन पयवारी अपनै समान अवस्था-
 पारी सखी तिनसो लच्छितिका लक्षिता नायिका नपची नहीं छिपी रही.
 मनहनह साहित प्रामीचली मुदिता मुदिता नायिकानकै ॥११॥ अनुपुब्बइति ॥
 अनुपुब्बसयानन अनु है पूर्णमै जिसके ऐसी सयानन सयाना जे अनुसयाना
 तिनके भीति पास सकेतके तामादिककी सहेट सकेत तथा भेट भिलाप,
 परभोगदुर्वीन अन्यसभोगदुर्विलता तिनगै सखीपरखी पहा विपरीत लच्छ-
 नासा याकी शत्रु जो नायकसो संभोग करिआई सो दूती जानिये रूपरुप्रेम.
 वती रूपगर्धिता प्रेमगर्धिता ए दोऊ ॥१७॥ पतिप्रोषितिकाइति ॥ पतिप्रोषितिका
 प्रोषितपतिका तिनके क्रुध क्रोध मानस मन खडितिकामल्लक्षिताननै द्रिता
 दरी दुई ॥ १८ ॥ ऋगिविप्रइति ॥ ऋगि दूनी प्रकूपित व्हैकै विप्रसलब्धन वि-
 प्र सहित लब्धा जे विप्रलब्धा तिनकै मनसेट मनस हट, मन ताको हट स्वा-
 भी एसो नायक वत्कठिनि वत्कठिता तिननै पुच्छि पूछयो निदान आदि-
 कारन नायकके अनागमको लखयो लखयो मग मार्ग पासकसज्जलली वा-
 सफमज्जा लखनानै ॥ १९ ॥ भरदर्पइति ॥ भर भार दर्प गर्व ताको अधीन
 इन अधीन पशीप्रत है इन पति जिकै ऐसी जे स्वाधीनपतिका तिननै अ-
 भिसारिन अभिसारिका तिननै कुबेलनको कुबेल कुबलय लोके गइल तिन-

भुवपैँ इम होत निसीथ भयो, रस प्रेतन साह नयो रचयो ॥२१॥
 थित निंद प्रजा व्यवहार थके, जिम संजम इंद्रिय जोगिनके ॥
 गति या भति रत्ति सु बित्ति गई, भल ब्रह्ममुहूरत बेर भई ॥२२॥
 बिरुदारव बंदिनको बिथरयो, क्रम जग्गि तहाँ नृप नित्य करयो ॥
 छकतैं कसि आयुध जोम छल्यो, चढि बाह रुसाह हजर चलयो ॥२३॥
 इत आगम प्रात लुभे अहके, चढकी चरनायुधहु चढके ॥
 दिक प्राचिय आरुन रंग दिपी, लागि अंबर भुम्मि सु रोचि लिपी ॥२४॥
 लघु दिहि नछत्रन निहि लहैं, चित ज्यो तजि भांगन ग्यान चहैं ॥
 भजिकैं तम अद्रि गुफान भरयो, जिम तत्व लहैं गृह दंद जरयो ॥२५॥
 दुति पूर जरूर इतैं दमकयो, चढि अछ उदेगिरिपैं चमकयो ॥
 छकमैं तिहिं बेर नरेस छयो, गति अर्जुन साह समीप गयो ॥२६॥

(दोहा)

साहबहादुर तिहिं समय, बैठा आस बनाय ॥
 नजरि निछावरि लेत निज, परिकरतैं जय पाय ॥ २७ ॥
 सुनि आगम बुंदीसको, दारु अटा चढि देखि ॥
 प्रमुदित आयो तखत पुनि, लोभ विजय हिय लेखि ॥२८॥

(मनोहरम्)

एतेमैं नरेस आय अंदर प्रवेश होत,
 उमडि नकीव कीनी रूचना अछूती है ॥
 जाय करि नजरि निछावरि मिसल लेत,

को. व अथ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ इतआमइति ॥ अहके दिनके. चढकी
 चिरी. चरनायुध कुक्कुट. दिक दिशा. प्राचिय प्राची पूर्व. आरुन अरुन लाल
 रंगकी. सु सो. रोचि कांति ॥ २४ ॥ लघुदिहइति ॥ भांगन शब्द स्पर्शादि
 विषयनको. तम अंधकार. तत्वलहैं तत्वज्ञान भये ॥ २५ ॥ दुतिपूरइति ॥ दुति
 कांति. ताको पूर समूह. अछ अर्क सूर्य ॥ २६ ॥ दोहा ॥ साहबहादुरइति ॥
 आम बड़ी सभा ॥ २७ ॥ सुनिआगमइति ॥ दारुअटा काठकी बुरज. प्रमुदित
 अधिक प्रसन्न. पुनि फिरि. लेखि देखिकैं ॥ २८ ॥ मनोहरम् ॥ एतेमैंइति ॥ नरे-

आदशाहका बुधसिंहको बखशीम देना] सत्तराशि पौषशमग्रह (२०००)

निकट बुजाय साह बखसी बिभूतीहै ॥
दोऊहाथ हियसों लगाय मुसिकाय कह्यो,
सरद बली तैं रखी खूब मजबूतीहै ॥
दिहौपुर गादी मैं लही जो यह बादी वीर,
मेरे महारावराजा रावरी सपूतीहै ॥ २९ ॥

(पादाकुलकम्)

महारावराजा इस अरुणो, भूपति छिनक लाय हिय रख्यो ॥
पुनि बखसीस करी दिछिपपति, रामनृपति वह सुनहु रक्खि रति ३०
कोटादिक चोवन५७गढ दानै, कहत नाम कछु कछु हम चीनै ॥
कोटाश्वहुरि अरुगपटनि२, गंगोनि३तीजो दुर्गन मनि ॥ ३१ ॥
साहावाद४सेरगढ५यानक, अरु बडोद६चेचत७अभिधानक ॥
छवडा८अरु गूँर९दुर्गनर, पचपहाड१०पडाप११डग१२नगर ॥ ३२ ॥

॥

॥ ३३ ॥

॥

॥ ३४ ॥

॥

॥ ३५ ॥

स बुधसिंह अदर सिराययेके मध्य सुचना जानकारी बाहूती और काहूके
आययेसा जा सुचना नहीं भई ऐसी आजमशाहके मारियेवारे अरु दीदार-
बखश को मूर्छित समतंगज कीलित करि व्याययेवार, बुदासके आययेतैं नकी-
यनै कीर्णै विभूति विशेष पैमघ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥

स्वयं प्रयकर्ता [सूर्यमल्ल] की रचौहुई टीका यहां तक ही हमको मिली सो हमने प्रयकर्ता के रखेहुए
क्रम के अनुसार ज्या की त्यो यहां लिख दी है अब यहां से आगे हम [वारहठ कृष्णसिंह] अपने रखे
हुए क्रम के अनुसार मूल काठिन शब्दों पर अंक देकर नीचे टीका लिखते हैं.

॥

॥ ३६ ॥

॥

॥ ३७ ॥

साह सिक्ख डेरन दिन्नी जब, विन्नति नृप करजोगि करी तव ॥
 कूरम नृप जयसिंह हरामिय, पै सेवक संगी तस जाँमिय ॥ ३८ ॥
 ताँतें तिहिँ संबंध अरज यह, आजँम दोस आदि जखँ नी बह ॥
 जो आयँस तिहिँ ढिग तो जाऊँ, सेवक करि अत्पन समुझाऊँ ॥ ३९ ॥
 सुनि यह अरज साह कछु अक्खँ, तव संबंध महर हस रक्खँ ॥
 पुर आँमैर सु तो फिरि पावहु, अब तव संग भलँ ढिग आवहु ॥ ४० ॥
 यह सुनि नृप कूरम ढिग आयो, प्रदँर पाय सिद्धत वह पायो ॥
 तीर एक श्रुज सब्य लग्यो तस, जाजवरन इक श्रुंठ लहन जस ॥ ४१ ॥
 सो जस भयो बुद्ध सरनागत, छकि कूरम पाये केवल छतँ ॥
 तिन सिद्धत जायरु नृप तद्धयो, करि मनुजागि जोद हिंछयो ॥ ४२ ॥
 कही बहुरि नृप नेह कदाई, आजग वसि आँमैर दिहाई ॥
 आलम सेवा अवहि अराधहु, नररूप जोर दुलभ सुख लाधहु ॥ ४३ ॥
 डेरा अब आलम दल मंडहु, रंगि कछु दिन विपति दुखखंडहु ॥
 कूरमकों लै संग यहै कहि, बाहुवान निज दल आयो बहि ॥ ४४ ॥
 अत्पन ढिग कछवाह उतारे, सालक जाँमिय दिनय लम्हारे ॥
 बिधि इहिँ कर्दँन अपूरब बित्तयो, जाजवरन दुल्लभ नृप गित्तयो ॥ ४५ ॥

१ उसकी बहिम की सुझसे मगाई (अंगनी) हुई है ॥ ३८ ॥ २ आजस के पक्ष में होने के अपराध से ३ घायल है ४ आज्ञा होवे तो ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ५ तीर के घाव को तपाता हुआ ६ बाँम श्रुज पर ॥ ४१ ॥ ७ घाव ही पाया, यश नहीं पाया ॥ ४२ ॥ ८ बहिम के पति (बहिमोई) बुधसिंह के बल से ॥ ४३ ॥ ९ सहन करके ॥ ४४ ॥ १० साला बहिमोई ने अधिक नम्रता की ११ इस रीतिसे-अपूर्व (पहले नहीं हुआ ऐसा) नाश १२ राजा बुधसिंह ॥ ४५ ॥

इतिश्री वशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबु-
धासिंहचरित्रे मूर्च्छास्थितश्रुतस्वानीकपराजयकरिपल्याणप्रहारभग्न
मस्तकदीदारबख्शामरणा १ दीदारबख्शगजगतकोटिमुद्रालकारो
पेतप्रिजयप्राप्तिबुधासिंहबहादुरगाहसेवानिवेदन २ द्वितीयदिनप्रभातय
वनेन्द्रबहादुरशाहसभासमागतबुधासिंहार्थमहारावराजपदसहितद्वा-
पञ्चारात्मान्तयवनेन्द्रप्रदान ३ बुधासिंहालमसेनासमानीतामैराधी-
शजयसिंहालमसेवकत्ववर्णन पोहशो मयूख ॥ १६ ॥

आदित चतु पञ्चाशोत्तगद्विगततम ॥ २५४ ॥

(षट्पात्)

मरत साह अग्रंग मत्रे मडिय रठोरन ॥

अव न साह अवनोस मूढ तम सुत प्रमाद मन ॥

डहिं अतर यह पिक्खि आनि बभन अगार सन ॥

पट्ट तखत जोधपुर नृपहिं रमखहु निसक मन ॥

यह मिसल यहउपजाय उर द्विज गृहते तव आनि हुते ॥

नृप अजितसिंह रकरूपो तखत सबन तत्थ जसवत सुत ॥ १ ॥

(दोहा)

इत आलम लहि विजयअरु, प्रभुपन सत्य प्रमानि ॥

श्रीवशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सातव राशि में बुन्दी के भूपति
बुधसिंह के चरित्र में, मूर्च्छा से मथेत हुए दीदारबख्श का अपनी पराजय
सुनकर हाथी के होदे से मस्तक फोड़ कर मरना १ दीदारबख्श के हाथी पर
फोड़ रुपयों के भूषण सहित विजय मिलने का बुधसिंह का बहादुरशाह की
सेवा में निवेदन करना २ दूसरे दिन बुधसिंह का प्रभात समय बादशाह बहा-
दुरशाह की समा म जाने पर बादशाह का बुधसिंह को महारावराजा के
पद के साथ वावन परगने देना ३ आमैर के राजा जयसिंह को बुधसिंह का
आलम की सेना में लाकर आलमशाह के सेवक बनाने के धर्षन का सौलह
वा १६ मयूख समाप्त हुआ और आवि से दोसौ चोपन २६१ मयूख हुए ॥
राठोडों ने १ सलाह की २ भूमि का पति बादशाह अब नहीं है उसका मूर्ध
पुत्र उन्मत्त मनवाला ३ ब्राह्मण के घर से ४ जोधपुर के वमरावा की गणना
में मुख्य पाठ मिसल (बैठन की जगह) मानी जाती हैं १ शीघ्र ॥ १ ॥ २ ॥

सृत जखमिन आजय गठन, नृपन दगायी जानि ॥ २ ॥
 इहिं अंतर मरुंधर खगलि, पहुँचा विविध पुकारि ॥
 रठोरन जसवंत सुवै, दयो तखत वैठारि ॥ ३ ॥

[पट्पात]

यह सुनि आलमसाह कडैर हिंदुनपर कुप्यो ॥
 प्रलय रुद्र जिम प्रबल राज घोरज सब लुप्यो ॥
 दिय आयरा तिहिंवेर नगर आभोग १२ तउउग्न ॥
 कोटापत्तन ३ बहुणि पुरी इतिया ४ न जोधपुग ५ ॥
 आभैर आदि चउधगजग मे आजग दोन्य उतारि लिय ॥
 रठोर हुकम बाहिर रहत धन्य सीम अनम्य धाकिय ॥ ४ ॥
 समैर जिति सत साह गतिग चउधनाम भुजावर ॥
 इस दसमी १० अवदाति अनखि सारवैधर उग्न ॥
 पोरन जागति करन बुद्धि अजगेर सदागो ॥
 करि फोजन दखुंय आय आभेग नहानो ॥
 बुधमिह हितु जयसिंह तद कहिय एह पणिन नखय ॥
 इत साह संग अनवधि समन वहिनि गई इत उचित वय ॥ ५ ॥

(दोहा)

साह जेर करि जोधपुग, करिहै दकिखन जे ॥
 बेग न पुनि आवन बनें, व्याहनर्का नह वेर ॥ ६ ॥
 लग्गी हमरी स्वातरो, रजधानी रन रास ॥

१ सारवाड़ देश की २ पुत्र को ॥ ३ ॥ ३ क्रोध करके अबदा जुलम के साथ हिंदुओं पर क्रोधित हुआ ४ आभेग को जादि लेकर चार राज्य तो आजम के पक्ष में होने के दाप से उतार लिये और राठोड़ पहिले लेहा हुकम बाहिर थे इसकारण ५ सारवाड़ पर क्रोध में ६ जता (प्रज्वलित हुआ) अथवा क्रोध करके सारवाड़ पर चला ॥ ४ ॥ ७ जाजब का बुद्धि आश्विन ९ यदि दसमी १० सारवाड़ पर क्रोध करके ११ से १२ परनने (विवाह करने) का १३ बिना अवधि १४ विवाह के उचित अवस्था ॥ ५ ॥ १५ लड़ाई करने के क्रोध

[अलमशाहका मारवाडमें अमल करना] सप्तमराशि-सप्तदशमयुख [१००३]

*ग्रतहपुर सामोदगढ, रक्ख्यो भटन भरोस ॥ ७ ॥
 तातैं द्वैरदिन सिक्खलै, वहिनी लेहु विवाहि ॥
 सगहि औहैं साहबिग, चित्त बहुरि भुव चाहि ॥ ८ ॥
 बुदियपति यह सुनि कहिय, सुनहु अरज मम साह ॥
 मुलतान जु सबध भो, जानत ध्यानपनाह ॥ ९ ॥
 कूरम नृप यातैं कहत, सहर निकट सामोद ॥
 द्वैरदिन अतर लगनहै, विरचहु व्याह विनोद ॥ १० ॥
 तातैं जो आयसैं लहों, आऊँ करि उदवाँह ॥
 द्वैरदिनकी यह सुनि मुदित, सिक्ख दई तब साह ॥ ११ ॥
 सभर कूरम सिक्खलै, आये दुहुँ सामोद ॥
 बनि दुल्लह बुधसिंह नृप, सहि लगन सविनोद ॥ १२ ॥
 जामि बडी जयसिंहकी, अमरकुमरि अभिवान ॥
 बुदियपति हिय हित विरचि, व्याही विहित विधान ॥ १३ ॥
 इत आलम अजमेरपुर, पहुँच्यो गजब गरूर ॥
 बुदियपति आभेरपति, आये बहुरि हजूर ॥ १४ ॥

(पट्पात)

इम आलम अजमेर आय पूजन पीरन करि ॥
 रचि मारुन पर रीस हँल्यो वरकुच अलसैं हरि ॥
 अजितसिंह मुनि एह नमित मरुदेस नरेसुर ॥
 वेग आय कर वधि परयो पायन अलहनपुर ॥
 इम साह धन्य किय निज अमल सत्य रक्खि जसवतसुवा ॥

सं राजधानी (सामैर) खालमे होगई ॥ जागना १ उमरावो के भरोसे
 ॥ ७ ॥ २ भूमि खेने की चाह से ॥ ८ ॥ ३ मुलतान में थ तप ॥ ९ ॥ १० ॥ ४
 आशा ५ विवाह ॥ ११ ॥ १२ ॥ ६ अहित ७ नाम ८ उचित रीति से ॥ १३ ॥
 ६ पदत घमड से ॥ १४ ॥ १० मारवाडो पर ११ खला १२ आलमस्य मिटा कर
 १३ आलमयावास नामक नगर में १४ मारवाड मे १५ जशवतसिंह के पुत्र को

मृत जखमिन आजम भटन, नृपन हरासी जानि ॥ २ ॥
 इहिं अंतर मरुंधर खलारि, पहुँचा बिविध पुकारि ॥
 रठोरन जसवंत सुवै, दयो तखत बैठारि ॥ ३ ॥

[पट्टपात]

यह सुनि आलमसाह कहैर हिंदुनपर कुप्यो ॥
 प्रलय रुद्र जिम प्रबल लज धरिज सब लुप्यो ॥
 दिय आयस तिहिँवेर नगर आमेर १ रु नरउग्र २ ॥
 कोटापत्तन ३ बहुरि पुरी दतिया ४ रु जोधपुर ५ ॥
 आमेर आदि चउठराज्य ये आजम दोख उतारि लिय ॥
 रठोर हुकम बाहिर रहत पँव सीस अमरख धकिय ॥ ४ ॥
 समर जिति यह साह रहिय चउठमास भुसावर ॥
 इस दसमी १० अवदात अनखि मारवंधर उप्पर ॥
 पारन जारति करन छुलि अजमेर बहानों ॥
 करि फोजन दरकुंच आय आमेर बहानों ॥
 बुधसिंह हितुं जयसिंह तब कहिय एह परिनय समय ॥
 इत साह संग अनवधि गमन बहिनि भई इत उचित वय ॥ ५ ॥

(दोहा)

साह जेर करि जोधपुर, करिहै दक्खिन जेर ॥
 बेग न पुनि आवन बनें, व्याहनर्का यह वेर ॥ ६ ॥
 लग्गी हमरी खातरौ, रजधानी रन रोस ॥

१ मारवाड़ देश की २ पुत्र को ॥ ३ ॥ ३ क्रोध करके अथवा जुलूम के साथ हिंदुओं पर क्रोधित हुआ ४ आमेर को आदि लेकर चार राज्य तो आजम के पक्ष में होने के दोष से उतार लिये और राठोड़ पहिले लेही हुकम बाहिर थे इसकारण ५ मारवाड़ पर क्रोध में ६ जला (प्रज्वलित हुआ) अवदा को ध करके मारवाड़ पर चला ॥ ४ ॥ ७ जाजब का युद्ध ८ आश्विन ९ सुदि दसमी १० मारवाड़ पर क्रोध करके ११ से १२ परनने (विवाह करने) का १३ बिना अवधि १४ विवाह के उचित अवस्था ॥ ५ ॥ १५ लड़ाई करने के क्रोध

आलमशाह का सारवाचमें अमल करना] सममराशि सप्तदशमयुग [१००३]

*ग्रतहपुर सामोदगढ, रक्ख्यो भटन भगोस ॥ ७ ॥
 तातैं द्वेर्दिन सिक्खलै, वणिनी लेहु विवाहि ॥
 सगहि औहैं साहडिग, चित्त बहुरि भुव चाहि ॥ ८ ॥
 बुदियपति यह सुनि कहिय, सुनहु अरज मम साह ॥
 मुलतान जु सबभ भो, जानत ज्यानपनाह ॥ ९ ॥
 कूरम नृप पातैं कहत, सहर निकट सामोद ॥
 द्वेर्दिन अतर लगनहै, विरचहु व्याह विनोद ॥ १० ॥
 तातैं जो आयसैं लहो, आऊँ करि उदवाँह ॥
 द्वेर्दिनकी यह सुनि मुदित, सिक्ख दई तव साह ॥ ११ ॥
 समर कूरम मिक्खल, आये दुहुँ सामोद ॥
 बनि दुल्लह बुगमिह नृप, सहि न्तगन सविनोद ॥ १२ ॥
 जामि बडी जयसिंहकी, अमरकुमरि अभिधान ॥
 बुदियपति हिय हित विरचि, व्याही विहित विधान ॥ १३ ॥
 इत आलम अजमेरपुर, पहुँच्यो गजब गरूर ॥
 बुदियपति आमरपति, आये बहुरि हजूर ॥ १४ ॥
 (पट्पात्)

इम आलम अजमेर आय पूजन पीरन करि ॥
 गचि मारुन पर रीस हँलपो दरकुच अलसैं हरि ॥
 अजितसिंह सुनि एह नमित मरुदेस नरेसुर ॥
 वेग आय कर वधि परयो पायन अलहनपुर ॥
 इम साह धनैव किय निज अमल सख रक्खि जसवतैंसुवा ॥

ते राजधानी (जामैर) राजमे होगई ॥ जाना १ अमराघों क अरोसे
 ॥ ७ ॥ २ भूमि खेने की चाह से ॥ ८ ॥ ३ मुलतान में थ तय ॥ ९ ॥ १० ॥ ४
 आज्ञा ५ विवाह ॥ ११ ॥ १२ ॥ ६ पक्षि ७ नाम ८ अचित् रीति से ॥ १३ ॥
 ६ पशुत घमछ से ॥ १४ ॥ १० मारवाहों पर ११ अला १२ आज्ञस्य मिटा कर
 १३ आज्ञयावास नामक नगर में १४ मारवाह में १५ जशवतसिंह के पुत्र को

उत्परि उफान साँगर उपम दक्खिन पर गज्जयो मरुवा ॥१५॥
 रहि कछुदिन अजमेर सज्जि संभर सेनापति ॥
 दक्खिनपर दक्कुंच गब्ब धरि चलिय जनक गति ॥
 होय दुरग चित्तोर हेठ दसउर मिलान दिय ॥
 यँह रानाँ अमरेस प्रनति मनुहारि पठाविय ॥
 हिंदवान सीस मिच्छन हुकम तामें कुल रानेन दस्यो ॥
 जवनेस तँदपि निकसत निकट प्रनति द्रव्य पठवने परयो ॥१६॥

[दोहा]

अमरान अप्पन अनुज, तखतसिंह अभिधान ॥
 देवसिंह वेधमपुर पँ, दुवरपठये सनिधान ॥ १४ ॥
 इक्कअनेकपँ च्यारि४हय, साह काज दिय संग ॥
 च्यारि४बाजि चहुवाँन हित, इम पठवाय अभंग ॥ १८ ॥

(पट्पात्)

अठ्ठबाजि गज इक्कभेट अमरेस पठाये ॥
 तखतसिंह अरु देव लै रु दँसउर दुवरआये ॥
 बाजि च्यारि बुधसिंह हेत नतिपुँब निवेदिय ॥
 मंडि विविध मनुहारि जानि जामिप प्रमोदि जिय ॥
 पुनि कहिय साँहहित रान प्रभु हय हत्थिय पठये हुलाँसि ॥

साथ रख कर वहाँ से १ उपड कर २ ससुद्र के बहाव के ३ भाँति बहुत (भारी) ॥ १५ ॥ ५ चहुवाण बुधसिंह को ६ गर्व ७ पहिले इसका पिता औरंगजेब गया था उसी रीति से ८ चित्तोड़ के नीचे होकर ९ संदसोर सुकाम किपा १० अमरसिंह ने ११ विशेष नज्र होकर १२ हिन्दुस्थान के ऊपर मलेच्छों के हुकम से १३ रानाओं का कुल ही बचा है १४ तोभी १५ सेजना पड़ा ॥ १६ ॥ १७ अपना छोटा भाई १८ नाम १९ पति २० कारण सहित [अपने देश में आये हुए बड़ों को भेट देने की चाहिये इसकारण से] ॥ १७ ॥ २० हाथी २१ बुधसिंह के लिये, 'अभंग' यह सहाराणा का विशेषण है ॥ १८ ॥ २२ संदसोर नामक पुर में २३ नज्रता पूर्वक २४ बुधसिंह को बहिन का पति जान कर २५ बादशाह के लिये २६ प्रसन्न होकर

मिलवाय हमहि यह भेट अव* विदित निवेदहु समय बसि।१९।
दोहा-सुनि सैभर तिन्ह संग लै, जवनैईस ढिग जाय ॥

मिलवाये दसतूर मित, क्रम सलाम करवाय ॥ २० ॥

सीमोदन अक्खी सबहि, नुति जु कडाई रान ॥

आलम अगोकार किय, नुति रु भेट सनिदौन ॥ २१ ॥

बुदियपति करि सिक्ख तव, लै तिन्ह डेरन आय ॥

नृप कूरम ग्ठोरैह, लीन्हे उभय बुलाय ॥ २२ ॥

अजितसिंह जयसिंहको, डक सभर अवलव ॥

पुच्छिय मत्र नगमंप्रति, कहिकहि किति कंदब ॥ २३ ॥

[पट्टपात]

धेदहु वत्त बुदीस ग्राय रुक्कत हम आतुर ॥

लियउ कुप्पि जवनेम छिन्नि आमैर जोधपुर ॥

नहि निदाहि अत्र सकत बिभव गज बाजि बिमैन अति ॥

सोत सफरं जिम साह गहत दिनदिन उलटी गति ॥

सुनि यह नरेसैं अक्खिय उचित बाँसर कछुधीरज बर्द्धहु ॥

सेवन बढाय कछु साहको गत मही सु निजनिज गहहु ।२४।

बुदियपतिको हुकम साह दलै माहि सबनसिर ॥

सीसोदन यह पिक्खिं जानि जामिप जग जाहिर ॥

रान सुभैट राउत्त देवसिंहह वेघम पति ॥

* प्रसिद्धा॥२७॥१ बुधसिंह२ पादशाह के पास३ रीति के अनुसार॥२०॥१ नम्रता वा स्तुति० कारण सहित अर्थात् राणाओं ने पहिल नम्रता और भेट कभी नहीं की थी इस कारण स॥२१॥१ आमैर का राजा कछुबाहा जयसिंह७ जोधपुर के राजा राठोड अजीतसिंह का ॥ २० ॥ बुधसिंह का ही आधार था१ बुधसिंह से १० कीर्ति का समूह ॥ २३ ॥ ११ कहो १२ हम आमद रुक्ने से १३ पीडित हैं १४ उदास १५ जल के प्रवाह में मच्छ के समान [बहते हुए जल में मच्छ धलटाही जाता है] १६ बुधसिंह ने कहा १७ दिन १८ धारण करो ॥ २४ ॥ १९ बाह्या द की सेना में २० देवकर २१ वहिनोई २२ महाराजा का वसराव देवसिंह

संभर प्रति करजोरि बिदित अक्खिय यह बिग्नति ॥
 करि नेह गेह पावन करहु मंजु विवाहहु जाँमि मम ॥
 सुनि यह नरेस स्वीकार किय सिक्ख बिमंगिय साह सर्म ॥

[दोहा]

दस बाँसैरकी सिक्ख दिय, साह बिदित सनमान ॥
 अजितसिंह जयसिंहसौं, तब अक्खिय चहुवान ॥ २६ ॥
 बेधम व्याहन जात हम, तुम रहि साह समीप ॥
 मन न गिनहु कुमहर महर, उर बिचारि अवनीप ॥ २७ ॥

[पट्पात]

सुनि कूरम रहोर दुहुन अक्खिय सनेह सधि ॥
 साह कितवके संग अबहु जैहैं रेवाँवधि ॥
 इहिं अंतर कछु होय ततो रहिहैं संगति सर ॥
 नहिं तो अहैं मुररि अप्प करियो कछु उप्पर ॥
 यह सुनि नरेस पुनि उच्चरिय यह उचित न तुमको अबहि ॥
 जोलों बिवाहि आऊँ सजव तोलों पुनि रक्खहु हितहि ॥ २८ ॥

[दोहा]

इम प्रबोधि बुंदिय अधिप, मन जय जुँववन मत्त ॥
 दसउरतैं दरकुंच करि, पुर बेधम द्रुत पत्त ॥ २९ ॥
 पुँती अनुपमसिंहकी, फूलकुमारि अभिधान ॥
 देवभ्रातैं सबिनय दई, बुद्धहिं बिहित बिधान ॥ ३० ॥
 बान तक सुनि इक्क १७६५सक, पुणिगाम भाधव मास ॥

१ सुंदर २ बहिन ३ मांगी ४ बादशाह से (यहाँ 'लम' शब्द 'ले' का वाचक है) ॥ २५ ॥ ५ दिन की ॥ २६ ॥ ६ अकृपा और कृपा ७ हे राजाओ ॥ २७ ॥ ८ छली [ठग] के साथ ९ नर्मदा नदी पर्यन्त जावेंगे १० साथ चल कर ११ बेग सहित ॥ २८ ॥ १२ समझाकर १३ जाजब के बुद्ध की जय और जोबन से मन में मस्त होकर १४ प्राप्त हुआ [गया] ॥ २९ ॥ १५ पुत्री १६ नाम १७ आई देव-सिंह ने १८ उचित रीति से ॥ ३० ॥ १९ वैशाख ॥ ३१ ॥

बुधसिंह का कोटा लोको कागद भेजना] सप्तमराशि सप्तदशमयूख (३००७)

चुडाउति व्याही चतुर, बुदियपति सबिला म ॥ ३१ ॥

इति श्री वशभारक महाचम्पू के उत्तरायणो सप्तमराशौ बुन्दीप
तिबुधसिंहचरित्रे दृष्टयवनेन्द्रराज्यदौर्बल्यमारवठकुगजितसिंहयो-
धपुरपट्टाभिषेचन १ शुभमरुदेशोदन्तक्रुदपवनेन्द्राजममित्रत्वापराध
हतामरकोटानरउग्दतिनागज्यपाधपुगपाशा २ हतपोधपुगल
मशाहदक्षिणदेशगगन लसदगो मयूख ॥ २७ ॥

आदित पञ्चपञ्चागोत्तगडिगततम ॥ २५५ ॥

[पट्टपात]

चोवन ५१ गढ जव त्याह दये जाजव रन जित्तत ॥

कोटाहू तिन माँहि नृपहिं निन्नो अरिवित्तत ॥

जय उदत चहुवान नाँहि मम भिमम विचारगो ॥

भातन सुव लरि लेन प्रथम दत्त उतहि हकारग्यो ॥

कैंगर पठाय निखि अप्प कर पेघस सन बुदिय नगर ॥

करिलेहु प्रथम कोटा अमल भट मजिय सगति समर ॥ १ ॥

एह कैंगर द्रुत वधि मत मडिय इत बुदिय ॥

जो प्रराज परधान बनिंक बयवृद्ध प्रपचिय ॥

धावरे गंगाराम सूर सुभटन इकत करि ॥

कोटा उप्पग कटक वेग मडिय वीरन वरि ॥

श्रीवशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के नातये राशि में बुन्दी के भूपति
बुधसिंह के चरित्र में बादशाही का निर्गत देग कर मारवाड के उमरावा
का अजितसिंह का जोधपुर की गद्दी पर बिठाना, मारवाड की लखर सुनने
से बादशाह का काधित होकर ग्राजम के साथी होने के दोष से आसैर,
काटा, नरवर, दतिया इन चार राज्या को खालसै करके जोधपुर पर चढ़ाई
करना २ जोधपुर को खालसे करके आलमशाह के दक्षिण में जाने का सत्र
हवा मयूख समाप्त हुआ और आदि ने दोमा पचपन २५५ मयूख हुए ॥

१ बुधसिंह का २ शत्रुओं का नाश होने पर ३ सेना ४ भेजी ५ कागज [पत्र]
६ अपने हाथ से उसे युद्ध में सलाह करके ॥ १ ॥ ९ पत्र १० बनिया ११ धाऊ

मुहुकम्म बंस कनकैस सुत जोगीरामहिंदुस्य किय ॥
यह वीरधीर हड्डन उमगि चलि सस्ठारि चतुरंगिनिय ॥२॥

[दोहा]

कोटापति जाजव मरचो, तारै तनय नृप भीम ॥
बैसतरुन लै पट्ट बल, सो न तजत निज मीम ॥ ३ ॥
बालकृष्ण निज व्यास अरु, फतेह कायत्य ॥
बुंदिय पठये भीमनृप, करन माम नय कत्य ॥ ४ ॥
आय दुँहुँन किन्नी अरज, काटा डकन लेहु ॥
मुलक ओर सबही नजरि, निज जिनि धरहु मनेहु ॥ ५ ॥
नाथाउति नृपभात तब, अरज न मन्ना एह ॥
हिंदुनके दिन पत्तरे, उपजत लोभा अछेह ॥ ६ ॥
तमँकि तथ दोऊरसचिव, पछे निज पुर पत्त ॥
भक्खी भूपति भीमसो, रन मंडहु अंगुत्त ॥ ७ ॥
इत बुंदियतै उमँडि दलै, चम्पलि उत्तरि चंडै ॥
गंजन जोगियराम गो, भिरत अँम भुजदंड ॥ ८ ॥

(मुक्तादाम)

सज्यो उत भीम महादँल सूर, गज्यो इत जोगियराम गरूर ॥
कचोदियखेट मिले दुव आय, दये दँल दोउन बाँजि उठाय ॥९॥
वजी रन रीठँ मची धमचक्र, चलच्चल छेनिरे लग्गि लक्ष्य ॥

१ कनकसिंह का पुत्र २ लेना ॥ २ ॥ ३ बल रामसिंहजी पुत्र भीमसिंह
तरुण अवस्था में था तो भी ॥ ३ ॥ ४ राजा भीमसिंह ने नीति के कथन से
मिलाप करने को भेजा ५ अपने जान कर ॥ ५ ॥ ६ बुधसिंह की माता ने
॥ ६ ॥ ७ तहाँ क्रोध करके ८ कहा ९ युद्ध में अनुरक्त होकर युद्ध रचो
॥ ७ ॥ १० सेना ११ अंगकर (यह यातो लेना का विशेषण है अथवा चाम-
ल नदी का विशेषण है) १२ आकाश से ॥ ८ ॥ १३ भीमसिंह १४ बड़ी सेना
१५ कचोदीखेड़ा से १६ सेना से १७ घोड़े उठादिये ॥ ९ ॥ १८ बल पूर्वक प्रहार
अथवा निरंतर प्रहार १९ भूमि चलायमान होकर झुकने लगी

कोयपुर जैपुर दोनों राजाओं का पठाना] सप्तमराशि अष्टादशमयूख [१००९]

खटकिय हंडन हंडन खग, मचकिकय पव्वय लै डगमग ॥१०॥

बडेबल भीम करी हतबाह, कटे बहु बुदिय सेन सिपाह ॥

तिलत्तिल तुष्टिग म्वामिय काम, परघो कनकाउत जोगियराम ॥११॥

दयो सय बुदिय सेन बिगारि, जयो नृप भीम हजारन मारि ॥

उतै सु कबध रु कूरम नत्यै, गये दुव मेकलजा लग सत्य ॥१२॥

तथापि न साह भयो अनुरत्त, चलो दरकुचन जात उमत्त ॥

वहै सरिता तय साह उतारि, फिरे दुव भूपति डेरन जारि ॥१३॥

मिल्यो नृप रान हर्षा अनुरत्त, उदैपुर दरकुचन पत्त ॥

इते दुलही नृप वेधग व्याहि, चलो जवनौधिप सेन चाहि ॥१४॥

लपै त्रय रानिन सग, मिला जयनेसनि धारि उमग ॥

गयो दरकुचन दक्खिन साह, मजे दल सब्बलै सूर सिपाह ॥१५॥

(दोहा)

कामवखस निज भ्रातहो, दक्खिनवर रग्वार ॥

भागनग बीजापुर, हुव तिहि सिर हुसियार ॥१६॥

विक्रमनृप परमारभो, उज्जिनीपुर ईम ॥

ता पाछै नृप भोज भो, धारानगर अधीस ॥१७॥

इति श्री वशभारकर महाचम्पू के उत्तरायणो सप्तमरागो बुन्दीप
तिबुधसिंहचरित्रे कोटारावभीमसिंहस्पकोटाविजयार्थप्रस्थितबुन्दी
सैन्यनिरसनमष्टादशो मयूख ॥ १८ ॥

१ हाथों के खड्ग हाथों पर खटके ॥ १० ॥ २ नृप (मारागया) ॥ ११ ॥ ३ बिजई पुत्रा ४
भीमसिंह ५ कछवाहों का नाथ (पति) ६ नर्मदा तक साथ गये ॥ १२ ॥ ७
तोभी = अनुकूल ८ उन्मत्त १० यह नर्मदा नदी ॥ १३ ॥ ११ पादशाह को
सेन की इच्छा से ॥ १४ ॥ १२ बुधसिंह १३ सपल (बलवान्) ॥ १५ ॥ १६ पति
॥ १६ ॥ १७ ॥

श्रीवशभारकर महाचम्पू के उत्तरायण के मातले राशि में बुन्दी के अपति
बुधसिंह के चरित्र में कोटा के राव भीमसिंह का कोटा विजय करने को
गईहुई बुन्दी की सेना को नष्ट करने का आठारहवां १८ मयूख समाप्त हुआ

आदितःषट्पञ्चाशोत्तरद्विशततमः ॥ २५६ ॥

(दोहा)

इन लग हिंदुन अदरयो, छकि उचित रैन छोम ॥
इन पिच्छै नय धरम तजि, लग्गे केवल लोम ॥ १ ॥
पृथ्वीराज चुहान नृप, जयचंदह रठोर ॥
इनलगहू कछु अनुसरी, हिंदुन धरम हिलोर ॥ २ ॥
तिनपिच्छै तुरकान हुव, निज नय धरम निधान ॥
पीठिन कछु अंतर परत, छंडी तिनहु कुगन ॥ ३ ॥
इत बुंदियपति अदरिय, कोटाउप्पर कोप ॥
इत आलम रन अंकुरयो, लाज धरम करि लोप ॥ ४ ॥
कामबखस आलम अनुज, अगै जिहिं अवरग ॥
भागनगर बीजापुरह, सूया दिय हित संग ॥ ५ ॥

॥ षट्पात् ॥

तुरकन दिन बिपरीत आय आलम तिहिं उप्पर ॥
धर दक्खिन धमचक्क सजिय बीजापुर संगर ॥
बुधसिंहहिं बलईल बिरचि अति कोप बढारयो ॥
कामबखसको पकरि सुद्ध अगस विनु मारयो ॥
बप्पके दये छलकरि कुंविधि लिय बीजापुर भागपुर ॥
सूना सम्हारिसजिय अमल आलम अनैय उमंगि उर ॥ ६ ॥
इत कूरम रठोर आय बिरहित अति आतुर ॥
मेकलजासन मुररि उरैरि हुव पत उदैपुर ॥

और आदि से दोसौ छप्पन २५६ मयूख हुए ॥

१ युद्ध में उचित क्रोध करना इन तक ही रहा २ नीति ॥ १ ॥ २ ॥ अपनी नी-
ति और धर्म में निधान ऐसे ३ यवना का राज्य हुआ ॥ १ ॥ ४ युद्ध में लड़ा
हुआ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ५ युद्ध ६ सेनापति ७ सुख ने ८ अपराध बिना ९ पिता को
दिये हुए १० बुरी नीति से ११ अनीति से ॥ ६ ॥ १२ अपने राज्यों की आमद के
विरह से पीड़ित होकर १३ नर्मदा से १४ उदंड होकर (धीठता से) १५ प्राप्त हुए

जोधपुरजैपुरके राजाकामहाराणासे मिलना] सप्तमराशि एकोनविंशमयुख [१०।१]

दहवारी दिस इक हुते बहुरा जु बिनायक ॥

आय रान अमरेस तथ भिट्यो छल तच्छक ॥

तीनइहि नरेस केकानै तजि मन प्रसन्न बत्थन मिले ॥

रानहिं निहारि भूपन दुट्टनखूबिंध हिय पकज खिले ॥७॥

(दोहा)

अगै रान प्रतापसे, भये अरोतिन भीम ॥

आपसहू नहि अहग्यो, साहनको जिन सीम ॥ ८ ॥

साह सिकदर जुलिकरन, अरु गज्जन गोरीस ॥

अगै हिंदुन जितिके, भये प्रबल भुव ईस ॥ ९ ॥

तिनतैं अवलग नहिं तक्यो, सीसोदन गिनि साह ॥

यह कुल राउल वर्पको, गखैं हिंदुन राह ॥ १० ॥

पुर आमैर रु जोधपुर, साह सुभट सरमाय ॥

आलमतैं अब तोरिके, उभयउदैपुर आय ॥ ११ ॥

अमर रान अति मोद करि, भिट्यो सनमुख आय ॥

कूरम तैंह जयसिंह कछु, चरनन हत्य चलाय ॥ १२ ॥

पकरि हत्य हियलौय तब, कहिय रान अमरेस ॥

भूपति में पावन भयो, आवन दुहुनअसेस ॥ १३ ॥

(पट्पात)

इम मिलाप करि रान आय तिनसहित उदैपुर ॥

महलन परिवंद मडि उभयखुले अवनीसुर ॥

बाहिर परिखद लाधि रान सम्मुह पुनि आयो ॥ ॥

१ महारा विनायक नामक [गणेश] २ छल की काटनेवाला [यह महाराणा का विशेषण है] ३ घाह छोड़ कर ४ खुशी से ॥ ७ ॥ ५ शत्रुया को म पकर हृष्ट ६ हृष्ट ॥ ८ ॥ ९ ॥ ७ पादशाह अर्थात् उनका मदैय ही शत्रु ही समझे पादशाह कभी नहीं समझे ८ पापा राउल (इनका नाम मदेन्द्र और उप पद पापा था) का कुल ॥ १० ॥ ९ पादशाह के समराज ॥ ११ ॥ १० मिथ्या ॥ ११ ॥ ११ हृदय से लगाकर १२ अमरसिंह ने ॥ १३ ॥ १३ समा

करि जुहार कर सीस रक्खि बहु मोद बढायो ॥
 कर दुहुँन रथंभि निज संग करि हुलसि खास परिश्रम हलिय ॥
 उमराव बुल्लि निजनिज उचित करन मने एकैत किय ॥ १४ ॥
 (दोहा)

बहिनी बुद्धिं व्याह डत, देवसिंह तखतेस ॥
 बेधपतें डेत आगकैं, भिँटयो गन नंगस ॥ १५ ॥
 दिलखुशाल प्रासादकें, गोख मध्य पराधारि ॥
 बैठ भूपति तानड्डी, दोरो गहर डारि ॥ १६ ॥
 नध्य रान अमरेख अरु, कूरम नृप दिस वाम ॥
 बदिखन दिस रहोर नृप, हम रहि साज्जग साम ॥ १७ ॥
 ॥ पट्पात ॥

कूरमपति करजोरि कहिय सीमोद नृपति प्रति ॥
 तुरकनको नहिँ तोरे भयो लव जार मंद गति ॥
 राजाकुल तुमरो सुँ दह हिंदुन तुन रक्खें ॥
 जोखैं दिखिय जार प्रबल आनन तुम पक्खें ॥
 साहसौं तारि हम आय डत राज धरम साहम परखि ॥
 हिंदुन हँकारि हिंदुन अवाजि हिंदुनपति सुगह हरखि ॥ १८ ॥
 (दोहा)

इत बुल्लयो रहोरनृप, हम रावरे सुभँड ॥
 सुगह प्रज्जाँउत भुव, लहि दिखिय पुर पट ॥ १९ ॥
 (मुक्तादाम)

१ अत्र (खलाह) करने को २ एकत्र (डकड़े) ॥ १४ ॥ ३ शीघ्र ४ मिला ॥ १५ ॥
 ५ दिलखुशाल नाखक महल के ऊरोरो में ६ पधार कर ॥ १६ ॥ ७ अमरसिंह
 ८ भिलाप किया ॥ १७ ॥ ९ प्रताप १० सो ११ योषित (स्त्री). दिल्ली रूपी स्त्री
 है सो तुम जैरो प्रबल जार का १२ सुख देखती है १३ हिंदुओं को बुलाकर हि-
 न्दुओं की भूमि को १४ हे हिंदुओं के पति हर्ष के साथ भोजो १५ उमराव १६
 आर्यावर्त की भूमि ॥ १९ ॥

महाराणा अमरसिंहका पीछा कहना] ससमराधि-एकोनविंशमयूख[३०१३]

यहै सुनि रान कही अमरेस, न मैं पुरविलिय जोग्य नरेस ॥
 सुनै हम दिलियको दसतूर, रहो सब साजेलि साह हजूर ॥२०॥
 प्रवेसत सायुध इक्क न आम, सजै सब बारहि बार सलाम ॥
 जहाँ बिनु आयसँ बुल्लि सकैं न, नमैं इकटक्क निहारत नैन ॥२१॥
 जहाँ नहिँ बैठक दुखव दुखह, तरजत तहिँ नकीवन जूह ॥
 चलै सब पैदल आनन अगग, प्रभूजिम मन्नि पलोत पग ॥ २२ ॥
 पठावत नारिकों नबरोज, उठावत पलनकों इतओज ॥
 वजावत बबै न जावत बार, सजावत पुत्रिन व्याहि सिंगार ॥२३॥
 सुनौ यह साइनको दसतूर, हलै सब हिंदुव धुजि हजूर ॥
 प्रभुप्पन मिच्छन भोग्यहि एह, लिख्यो विधि हिंदुन गोधि न लेहै २४
 रु कोउ करै हम हिंदुव राज, भिरै तब जानि असूपन भाजै ॥
 हमै तसमांत न दिलिय हौस, दहै घर रक्खन ही निस ब्योसा २५।
 रु जो दह दोउनको मत एह, गिनौ तब दिलियही यह गेह ॥
 रजु तुम साह उथप्पन राज, उदैपुर ही तब दिलिय आज ॥२६॥
 पुगै नृप कूरम मान जु किन्न, पधारि सुधारि बहै तुम लिन ॥
 अबै दह अप्पन ज्यो जस होय, जथो करिये बल कालहिँ जोय ॥२७॥

१ हाथ जोड़े हुए ॥ २० ॥ २ आयुष सहित ३ यही समा में ४ बिना
 आज्ञा बोल नहीं सका बादशाह के देखत ही नेत्र नहीं टिमका कर ५ सु-
 कते हैं ॥ २१ ॥ ६ कठिनाई से तर्कना में आये ऐसा कुत्त ७ गर्जना करके
 नकीर्णों का समूह डराता है और मुख आगे सध पैदल चलते हैं ८ स्वामी
 के समान आन कर ९ पैर दघाते हैं अथवा पग पपोखते हैं ॥ २२ ॥ १० नगारा
 ११ उनसे विवाह करके पुत्रियों को शृंगार कराते हैं ॥ २३ ॥ १२ यह स्वामीपन
 स्नेहा के भोगने योग्य ही है १३ लछाट में नहीं लिखा १४ लेख ॥ २४ ॥ जाति
 की अक्षया के १५ पात्र १६ इसकारण हम को दिल्ली की याद नहीं है १७ घर की
 रक्षा में ही जलते (छीजते) हैं ॥ २५ ॥ १८ इस घर (उदयपुर) को ही दिल्ली जा-
 नों ॥ २६ ॥ १९ पहिले २० तुम्हारे प्रपितामह राजा मानसिंह ने जो किया
 था (मानसिंह ने बादशाह अकबर की सेना का सेनापति होकर महाराणा
 प्रतापसिंह से युद्ध किया था और सामिल भोजन नहीं कराने के कारण रा-
 णा की पुत्रियों को यवनियें यमाने का भय दिखाया था) २१ जिस प्रकार ॥ २७ ॥

बघो पुनि कूरम भूप वृत्तंत, भल्ली सबही करिहै भगवत ॥
अबैंकरि हिंदुन इकत *अत्थ, सजें पुनि आलमपें निज सत्थ ॥

(दोहा)

हिंदुव चाकर रानके, इक परंतु यहँ आग ॥
आलमतैं हम तोगिहैं, लियउ रावगो जोर ॥ २९ ॥
देस दुहुनरके खालसै, ओर न लेन उपाय ॥
तो हम जितैं मुलक निज, जो दल देहु सहाय ॥ ३० ॥
जिति मुलक पुनि कटक सजि, व्हें दुवंगन दजूर ॥
दक्खिनपर दरकुंच वारि, जितहिं साह जलूर ॥ ३१ ॥
रानकहिय कछुदिन उभय२, रहहु अत्थ मृद जानि ॥
पुनि जो जो भवितैव्यहै, लेहैं सबहिं प्रमानि ॥ ३२ ॥
वाँदिन डेरन सिक्ख दिय, दोउनतैं कहि एह ॥
इक१इक१गज हैरहै अरव, दोउरन अप्पि सनेह ॥ ३३ ॥
अतरपान पुनि बुल्लिकैं, इन ढिग रक्खे रान ॥
तब दोउनरकर ओडि कहि, देहु अप्प कर दान ॥ ३४ ॥
रान तथैपि न पान दिय, पानदान गहि हत्थ ॥
जिहिं अंतर कर दुहुँनरके, संग्रहि धरिय समत्थ ॥ ३५ ॥
दोऊरनृप इन पान लै, निज निज डेरन आय ॥
दूजेदिन किय गोठि तव, रान अमर रस भाँय ॥ ३६ ॥
दोऊरनृप बुल्लिलय बहुगि, पंति परिय चहुँ ओर ॥
करिय अरज तहँ रान प्रति, पुनि कूरम रहोर ॥ ३७ ॥
इक१थाल बिच अप्पनौ, हमसैह भोजन होय ॥
अबतैं संतंत एकता, करहु न संमय कोय ॥ ३८ ॥

* यहाँ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ १ जांघपुर और आलम के दाना राजा ॥ ३१ ॥
२ यहाँ रहनेवाला ॥ ३२ ॥ ४ उस दिन ॥ ३३ ॥ ५ बुलाकर ६ हाथ माँड (फैला)
कर ७ आप के हाथ से ॥ ३४ ॥ ८ ताँची ९ पकड़ कर, उस समर्थ (सत्तराथा)
ने ॥ ३५ ॥ १० स्नेह की रीति से ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ११ हमारे साथ १२ निरंतर ॥ ३८ ॥

महाराणा जयसिंहका चरण] सप्तमराशि-एकान्विशमयूष [३०१४]

सुनि बुल्लयो *भट रानको, दढमन गगादास ॥
सगताउत पुगवानसी, पति कछु +रोस प्रकास ॥ ३९ ॥
‡क्रम पति यह रावरे, पुरुखन अगौ कीन ॥
तोहू कुल उज्जल यहै, भो नहिं धरम विहीन ॥ ४० ॥
॥ पट्पात् ॥

अगौ अकबरसाह लैन जुगराज लुभाये ॥
भगवतसिंह रु माने पिता सुत उभय२ पठाये ॥
दरकुचन इन दोरि जोर जिती गुज्जरधर ॥
पलटे पुनि सुत जनक मिजल पंचकपके अतर ॥
भगवतसिंह आयो प्रथम दिखिय जावत रान घर ॥
जिनदिनन छत्र राना उदय धारन हिंदुन धर्मधर ॥ ४१ ॥
नृप भगवतहिं रान जाय सम्मुह गृह लायो ॥
उनहू भोजन करन रान जुत प्रसन्न रचायो ॥
दिय उत्तर तब रान देत तुरकन तुम पुत्रिय ॥
हम हिंदुव अकलक धरम छडै न जात जिय ॥
तसमात सुनहु दोउन२अमन इकश्याल नहिंन उचित ॥
यहसुनि नरेस भगवत तब पृथक जिम्मि बुल्लयो बिदित ॥ ४२ ॥

॥ पञ्कटिका ॥

नृप सुनहु पच बारि बिहाय, सुत मान इहाँ अहै सुभाय ॥

* महाराणा का जयसिंह १ आष करके ॥ ३९ ॥ † हे कछवाहा के पति (जयसिंह) आप के बहादुरों ने भी पहिल देमा ही किया था ॥ ४० ॥ ‡ मानसिंह २ गुजराज १ पुत्र और पिता ४ पाच दिन के अतर * मे ॥ ४१ ॥ † छठ किया १ निष्कलक २ इसकारण से ८ भोजन २ भिक्ष (भुदा) जीमकर १० भिक्ष होता ॥ ४२ ॥ ‡ पाच दिन बिनाकर १९ मरा पुत्र मानसिंह

छठे राशि की राका के नोट में हम लिख आये हैं कि आमेर के राजा मानसिंह के साथ भोजन नहीं कर ने का विरस महाराणा प्रतापसिंह से हुआ था उदयसिंह का नाम मूल से लिखा गया है सोही यहाँ जान ना चाहिये ॥

वासों नरेस व्है हठ प्रमत्त, बुल्लहु न भुल्लि औसी *कुवत्त ॥ ४३ ॥
 यह कहि नरेस भगवंत वत्त, दरकुंचन दिल्लिय नगर †पत्त ॥
 दिन पंचक अंतर कुमर मान, भिट्यो पुनि ‡सम्मुह जाय राना ४४।
 मिलि तासँ विरचि अति मानुहारि, पुनि रान रवगृह तिन जुत पधारि
 रचि गोठि विविध व्यंजन रसाँल, बैठारयो मानहिँ पृथक थाल ॥ ४५ ॥
 रहि रान दिठि परूसनँ लगाय, तब कुमर मान बुल्लयो हिताय ॥
 तुमकोहु उचित बैठन नृपाल, भुज्जैँ दुव भुज्जन इक्क थाल ॥ ४६ ॥
 तब कहिय रान राजाधिराज, एकासन व्रत में करिय आज ॥
 कूरम तथाँपि बुल्लयो निहोरि, सागँस न होत व्रत इक्क छोरि ॥ ४७ ॥
 हमरो हुव आगम समय पाय, है इक्क थाल भोजन हिताय ॥
 इम प्रसँभ पुंज मानहिँ निहारि, पटु गन उँदय बुल्लयो प्रचारि ४८
 तुम लोभ धारि लिय जवन रीति, हमरे घर हिंदुन धर्म नीति ॥
 तुम अधम जाँमि दुहिताँ कलत्रँ, तुरकन समपि हुव सचिवतत्रा ४९।
 अकलंक यहै ईकलिंग अँन, तसमातँ संग भोजन वनेँ न ॥
 यह सुनत मान कुप्यो कराल, बुल्लयो सु उठि छँकि छोरि थाल ५०
 तुम तियन पारि तुरकन प्रसंग, कछु दिनन अंत खैहँ वँ संग ॥
 यह कहि द्रुत दिल्लिय मान जाय, अकवरहिँ अत्थ आन्पो कृपाय ५१

*ऐसी खोटी वार्ता झूलकर भी मत कहना ॥ ४३ ॥ † प्राप्त हुआ (पहुँचा) ‡
 सम्मुख जाकर मिला ॥ ४४ ॥ १ उस मानसिंह से २ मनुहार ३ उस मानसिं-
 ह सहित ४ रसयुक्त ॥ ४५ ॥ ५ परोखे में दृष्टि लगाकर ६ भोजन करें ७
 भोजन ॥ ४६ ॥ ८ राजाओं के पति [महाराना] ने कहा ९ दिन में एक समय
 भोजन करने का व्रत १० तोभी कछवाहा बोला कि ११ एक व्रत छोड़ने से
 अपराध नहीं होता ॥ ४७ ॥ १२ हित के अर्थ १३ मानसिंह का हठ का समूह
 देख कर वह चतुर १४ [महाशया उदयसिंह] ललकार कर बोला ॥ ४८ ॥ १५
 बहिन १६ बेटियों और १७ स्त्रियों को देकर वहाँ (यघनों के) सचिव हुए हो
 और यह १८ एकलिंगेश्वर का घर [सेवाइवालों के इष्टदेव एकलिंग महादे-
 व हैं] कलंक रहित है १९ इसकारण २० क्रोध में पूर्ण होकर ॥ ५० ॥ २२ अथ
 २१ साथ लावेंगे ॥ ५१ ॥

बहु बरस रहिय चितोर जग, रान न तयापि छड्यो स्वरंग ॥
 विनु वित्त लहिय बरसन बिपत्ति, छिति हित तथापि कपी नछत्ति।
 यह कुल वहै हि निज नय उपेत, दुहितादि तुम सु तुरकान देता।
 इकथाल असन तातैं बनेन, भट हम निसक मिथ्या भनैन ॥५३॥
 यह सुनि कवध कछवाह राय, खमि समय जानि रोस न दिखाय ॥
 करजोरि कहिय दुवरनृपनफेरि, हिंदुन नरेस तुम धर्म हेरि ॥५४॥
 हम किय अधर्म गिनि विभव हानि, मरजी सु करहु भट हमहिमानि ॥
 अमरेसरान यह सुनि उदार, बुल्लयोसु व्यावहारिक विचार ॥५५॥
 मम गेह ओर नहिं तुमहिं देय, इक वत्त सुनहु दुवरनृप अजेय ॥
 सोंपहु जा निजकैर लिखित सत्य, अवतैं न देहिं तुरकन अपत्या ॥५६॥
 तो दुवरसुतां सु दोउनरबिवाहि, देसहु लो देहैं अरिन दाहि ॥
 सहैभोजन तो नहिं उचित आहि, पत्रांवल्लि जिम्मत हम सदाहि ॥५७॥
 तुम डारि रजत विष्टर विसाल, नगजटित मध्य धरि कनेक थाल।
 हम भुज्जत तुरकन एधैमान, इत्यादि हेतु सह असन हयान ॥५८॥
 करि लिखित देहु जो कैयित चाहि, तो देहिं सिक्ख पुत्रिन बिबाहि।
 दुवरनृपन यहै सुनि असनै किन्न, राम सु परुसावन रहिय भिन्न ॥५९॥
 नृप दुव जिमाय हम सिक्ख अप्पि, डेरन ईन आय रु मत्र थप्पि ॥

१ तोभी २ अपनी धर्मपरायणता का रंग नहीं छोड़ा ३ घन ४ तोभी भूमि के अर्ध छाती नहीं कापी ॥ ५२ ॥ ५ आपनी नीति सहित ६ पुत्री आदि ॥ ५३ ॥ ७ सहन करके ॥ ५४ ॥ ८ हमराख मान कर ९ व्यवहार सम्यन्त्री ॥ ५५ ॥ १० देने योग्य ११ किसी से नहीं जीते जायें ऐसे १२ अपने हाथ का लिखा हुआ १३ मन्तान (पुत्री) ॥ ५६ ॥ १४ पुत्रियें हैं सो १५ सामिल भोजन करना तो १६ उचित नहीं है १७ पातल (वृक्ष के पत्रों के निर्मित पात्र) म ॥ ५७ ॥ १८ खादी का बाजोट १९ सोने का थाल २० भोजन करते हो २१ घघनों का पकाया हुआ [यहाँ 'इध एधने' इस धातु से एधमानशब्द हुआ है जिसका अर्थ पकाना है] ॥ ५८ ॥ २२ मैंने कहा उसकी [बिबाह की] चाहना होवे तो २३ भोजन किया २४ न्यारे ॥ ५९ ॥ २५ इन दोनों राजाओं ने

यह उभय साहसों तोरि आय, करि लिखित दैन इत इन कहाय ॥६०॥
 अब करहि साह कुमहर अजेय, तसमांत रान कथितहि विधेय ॥
 यह सोधि लिखिय नय दुहुँन २ आदि, तुरकन न देंहि अवतें सुतादि
 कहिहैं जु रान धरिहैं सु सीस, इम लिखित ठानि दुव भुव अर्धास ॥
 यह लिखित रानकर दियउ आय, प्रभु रान सुनत विस्वास पाय
 दुहिता दुहुँन २ व्याहन विचारि, बिरचिय विवाह उच्छव बढारि ॥
 कूरमनरेश यह समय पाय, प्रछन्न रान प्रति कथ कहाय ॥६३॥
 संग्रामसिंह पट्टप कुमार, मुहिं तास जामि दैहो उदार ॥
 सुनि रान बहुरि पछी कहाय, इक लिखित ओर अप्पहु लिखाय ॥
 याकै जु पुत्र जगदीस देंहि, वह मुख्य राज आमैर लेंहि ॥
 आमैरईस सुनि यह उपाय, लिखि रवकर पल दिन्नों पठाय ॥६५॥
 दुहिता स्वकीय जनिहै सु पुत्त, आमैर पट्ट लहिहै अभुत्त ॥
 यह लिखित रान बंचि रु विचारि, निज पुत्ति उचित कूरन निहारि ॥

(दोहा)

निज पुत्ति संध तव, कूरम सैन क्रिय रान ॥
 निज काकासुत पुत्रिका, दिय रहोरहि दान ॥ ६७ ॥
 चंद्रकुमरि कूरम लहिय, कृष्णकुमरि रहोर ॥
 इम विवाहि दुव २ भुव अर्धिप, जचिय सिक्ख इन जोर ॥६८॥
 हाँटक दोलाजत्र तव, दुहुँन २ रान नृप दिन्न ॥

१ महाराणा ने ॥६०॥ २ इस कारण से ३ राना का कहना ही ४ उचित है ५ दोनों ने नीति को आगे करके ६ पुत्री आदि ॥ ६१ ॥ ७ भूपति ॥ ६२ ॥ ८ छानें ॥ ६३ ॥ ९ आप के पादपी पुत्र संग्रामसिंह की पुत्री ॥ ६४ ॥ १० जयसिंह ने ॥ ६५ ॥ ११ आप की पुत्री १२ अभुक्त (नहीं भोगने योग्य अर्थात् छोटा होने पर भी आमैर का राज्य लेवेगा) १३ पुत्री यहां सामान्य रीति से पोती को पुत्री करके लिखा है ॥ ६६ ॥ १४ पुत्री का १५ से ॥६७॥ १६ भूपति १७ मांगी [इन, विवाह कीहुई कन्याओं के बल से, अथवा महाराणा के, बल से ॥ ६८ ॥ १८ स्वर्ण का १९ हिंडोला [हींडलाट] ॥ ६९ ॥

निर्गो राजा गोता सा भर पर आना] सप्तमराशि एकोनविंशमयुव[१०१९]

दुहुँ न शतुल्य दायज अरपि, कुसल सिक्ख तब किन्न ॥६९॥

सत्त सहस ७००० निज दल सवल, करि दुव २ भूपन सग ॥

रान सिक्ख देसन दई, अत्रनी लैन अभग ॥ ७० ॥

तव दुव २ भूपति सिक्ख करि, बढि चल्लिय वरजोर ॥

छोनी दवत साहकी, उमँडिय सभर ओर ॥ ७१ ॥

दुव २ नृप डम दरकुच करि, सभर उप्पर जात ॥

नाग्नोल सय्यद सुनी, रूमा विलुट्टन वात ॥ ७२ ॥

इतिश्री वशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीप-
तिबुधसिंहचरित्रे दक्षिणगतालमशाहहतस्वानुजकामवस्त्रभा-
गनगरबीजापुरादान १ आलमशाहविरुद्धनर्मदाप्रत्यागतामैराधीश-
जयसिंहयोधपुराधीशाजितसिंहोदयपुरागमन २ सहभोजनानगी-
कारापमानितलेखितयवनेन्द्रकन्यापदानप्रतिषेधपत्रोक्तोभयराज-
महाराणामगसिंहनिजात्मजायुगलपरिणायन ३ पट्टपाभावेऽपिले-
खितम्बदाहित्रामैरस्वामित्वहरताक्षग्महाराणामरसिहस्वपट्टपुत्रस-
ग्रामसिंहकन्याजयसिंहपाणिपीडनवर्णनमेकोनविंशो मयूख ॥१९॥

१ सेना २ भूमि लेन को [अभग, यह महाराणा का विशेषण है] ॥ ७० ॥ ३

सामर नगर की ओर घटे [बटे] ॥ ७१ ॥ ४ सामर लूने की ॥ ७२ ॥

श्रीवशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के रूपति
बुधसिंह के चरित्र में, आलमशाह का दक्षिण में जाकर अपने छोटे भाई का
मयूख को मार कर भागनगर और बीजापुर लेना १ आसैर के राजा जय
सिंह और जोधपुर के राजा अजितसिंह का आलमशाह से विरुद्ध होकर
नर्मदा नदी से पीछे फिरकर उदयपुर आना २ महाराणा अमासिंह का उक्त
दोनों राजाओं को सामिल भोजन नहीं करा कर अपमान किये पीछे आगे
कभी पयना को पुत्रिये नहीं विवाहने का पत्र लिखा कर दाना राजाआ का
अपनी दो पुत्रिये विवाहना ३ अपना दाहिता पाटवी नहीं दाने की अथवा
में भी आसैर के स्वामी होने के अक्षर लिखा कर महाराणा अमासिंह का
अपने पाटवी पुत्र मगानसिंह की पुत्री का जयसिंह से विवाह करने के वर्ण-
न का वन्नीसवा १९ मयूख समाप्त हुआ और आदि में दोसरी सत्तावन २५७

आदितः सप्तपञ्चाशोत्तरद्विशततमः ॥ २५७ ॥

[षट्पात]

जाजव संगर जित्ति साह अति गंब्ब सम्हारयो ॥
 संभर पिक्खि सहाय धरा जित्तन मन धारयो ॥
 हुसनअली सय्यद नबाब आदिक सम्मत करि ॥
 जित्ति सँजव जोधपुर धाय दक्खिन साहस धरि ॥
 कूरम कबंध अवनीप इत अमररान पुत्तिनपरनि ॥
 पृतना प्रचारि लुट्टन प्रथम पत्ते लगि संभरसरनि ॥ १ ॥

[दोहा]

नारनोलपुर सेनपति, हुसनअलीके भ्रात ॥
 धिंसीखान रु नूरदी, तँहँ पँती यह बात ॥ २ ॥

॥ षट्पात ॥

हुसनअली सय्यद नबाब सुभटन अग्रेसर ॥
 नारनोलके फोजदार ताके सोदर भैर ॥
 धिंसीखान रु नूरदीन तिन बत्त सुनी यह ॥
 लुट्टत संभर नगर सुपहु कूरम कबंध सह ॥
 सजि तबहि सेन द्वादस सहस्र २०००० रुमाँ नगर रक्खन चलिय ॥
 इत नृपन लुट्टि संभर सहर कहँर काल बेहाल किय ॥ ३ ॥

(दोहा)

पुरहिँ लुट्टि दुवर नृप कळत, सय्यद पत्ते आय ॥
 भट कूरम रहोरके, बुल्ले तिन बिहसाय ॥ ४ ॥

मयूख हुए ॥

१ गर्ब २ बुधसिंह को अपनी सहाय पर रखकर ३ सहमत (सलाह) ४ शीघ्र
 ५ भूपति ६ राणा जयसिंह की ७ सेना ८ प्राप्त हुए ९ सांभर के भाग्य से लग
 कर ॥ १ ॥ १० सेनापति ११ पहुंची ॥ २ ॥ १२ उमरावों में अग्रणी मुख्य १३ भ-
 ड [वीर] १४ सांभर नगर की रक्षा करने का चले. इधर काल रूपी १५ क्रोध कर-
 के इनने बुरा हाल कर दिया ॥ ३ ॥ ४ ॥

हेरवै राउत हकिये, आतप करत उभेल ॥

श्रमजल हथ पसाजिहै, मुँडि न पैहै मेल ॥ ५ ॥

सुनत एह सय्यद भटन, दिय उत्तर अति आघ ॥

छाँहानल बिच छिजिकै, नैहो दरित निदाघ ॥ ६ ॥

इम कहि वाजिन बगलौ, तुटै द्विदुन सीम ॥

दल दोउन धमचक्र बजि, ज्यो कैटभ जगदीस ॥ ७ ॥

॥ पटपात ॥

मिलि द्विदुव मुगलान धिहँ रन रिहँ रंभापुरि ॥

भिरि भट चचल सयन पयन चचल जिम पातुरि ॥

लुत्थिन लुत्थि अटुटि बुत्थि बुत्थिन भट कट्टि ॥

हड्डन गग खनकि रुड मुटन भुव पट्टि ॥

हाकिनिन हक हिडिमि इमकि नचि भैगव डैरुव नदियै ॥

जिम बनिजैकाग टंडा हरत इम अनीकै भुव अच्छदियै ॥ ८ ॥

॥ दाहा ॥

धिमीखान रु नूगदी, दुवर सय्यद लिय मारि ॥

सहैग १००० सूर दुहँ ओरके, झरिगे घोर खग स्कारि ॥ ९ ॥

इम कूगम रठोर नृप, पुरसभर जय पाय ॥

दिल्ली गहि दोउनर दई, लहँगे अदर लौय ॥ १० ॥

॥ सारहा ॥

निज निज देसन आय, दुवर नृप सभर लुटिकै ॥

१ धर २ रूप [गरमी] ३ परिश्रम के जल [पसीने] से हाथ फिमलें [रपटें] गे, इमकारण
४ तलवार की मूठ से मेल नहीं पायेंग अर्थात् हाथ से तलवार नहीं धामी जावगी
॥ ५ ॥ ६ फाँस रूपी अग्नि म जलकर गरमी से ७ टंगेनाला जल (पसीना) ८
मष्ट होगया ॥ ९ ॥ १० सेना १ जिस प्रकार कैटभ नामक दैत्य आर विष्णु भगवान्
के युद्ध हुआ था तैवे ॥ १० ॥ १० घुष्ट (बीठ) ११ यत्न पूर्वक प्रहार १२ साबर १३ चमल
हाथों से १४ युद्ध करके १५ नावयुक्त किया अर्थात् भैरवने खरू (भैरव के पाय वि
शेष) को बजाया १६ घनजारा १७ मगा से १८ मूमि को आच्छादन ॥ १८ ॥ १९ झटके
(मारेंगे) २० भयकर खड्ग चलाकर ॥ ११ ॥ २१ दिल्ली रूपी आ के लहँगे (गाधरे)

थानाँ दिपउ उठाय, आलमके करि करि अमल ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

इत कोटापति भीम दिप, बुंदिय कैटक विगारि ॥

जुझयो जुगियराम हद, मागि मगद तरवारि ॥ १२ ॥

धावर गंगाराम पुनि, सेनानायक होय ॥

कोटा उप्पर उप्परयो, उत्तरि चम्मलि तोय ॥ १३ ॥

कायथ घासीराम किय, पंचोलिय परधान ॥

मंलि बनिक हरिराम किय, गुज्जर कुमति गुमान ॥ १४ ॥

अलीखान अभिधान डक, जवन रुहिल्ला बुलित ॥

पंचसहस्र ५००० पाँति रक्खगो, खंमग पताकन खुलित ॥ १५ ॥

यह सुनि कग्गरं भीम नृप, धावर प्रति पठवाय ॥

बाँवा धावर हसहुकाँ, रक्खहिं बुंदिय रौय ॥ १६ ॥

जान्यो धावर नीतिजैड, गुज्जर गहल गमार ॥

बाबा कहिकहि जो लिखत, भिरै न सो रन भार ॥ १७ ॥

द्वै मिलान बहु दिन रहयो, तव धावर नय हिन ॥

अलियखानको हँक चढयो, दोयश्मास दिन तिन्न ॥ १८ ॥

॥ पञ्चटिका ॥

लहि समय भीम तव किय उपाय, बहु वित्त रुहिला हित पठाय

अकिखंय धावर प्रति बैदहु बैन, हक देहु न तो अब हम लैरै न ॥ १९ ॥

धावरहिं कहिय यह अलियखान, जब किय कुंमंत्र गुज्जर अजान

में अग्नि लगा दी ॥ १० ॥ १ मारवाड़ और डूँडाड़ में अमल (अधिकार)

करके आलमशाह के धागे उठादिये ॥ ११ ॥ २ भीमसिंहने ३ सेना को

॥ १२ ॥ ४ सेनापति ५ चामल नदी के जल को उतरा ॥ १३ ॥ १४ ॥ ६

नाम ७ पाँच हजार सेना का स्वामी ८ आकाश मार्ग में ध्वजाएं खोलकर

॥ १५ ॥ ९ कागज (पत्र) १० हं धावा धाऊ [धाव का पति] ११ बुंदी का रा-

जा ॥ १६ ॥ १२ नीति में सूख उस धाऊ गुजर जाति वाले ने जाना कि ॥ १७ ॥

१३ लुकाम १४ तनखा ॥ १८ ॥ १५ भीमसिंह ने १६ धन १७ कहा १८ धाऊ से कहा

॥ १९ ॥ १६ बुरीसलाह २० गुजर जानि के सुर्जन

बुढ़िय भट बुद्धि रु कहिय एहु, मिलि सबहि जवन हक वित्तदेहु २०
जो वित्त तो न हय करभ टारि, सब याहि देहु भरनाँ बरारि ॥
सुनि यह कुमत्र दुर्मन सिपाह, चढिचढि समस्त लागि घरन राह २१
तुरकन दिय धावर कैद धँति, यह खबरि देस दक्खिन हु पति ॥
सुनि नृपति बुद्ध आयसँ पठाय, नहि लेहु मूढ धावर छुगाय ॥२२॥
बहुदिन तब धावर कैद लिन्न, हरिरामसाह पुनि अरज दिन्न ॥
तब हुकम पाय जवनन चुकाय, हरिराम लियउ धावर बुलाय २३
कोटा नरेस इम खगग मारि, हैरवेर कटक दिन्नो बिगारि ॥
इत कामबखस मोदरहि मारि, निज अमल देस दक्खिन बिथारि २४
दरकुच उतरि रवा दुरत, उज्जैनि आय करि भ्रात अत ॥
गिरिवर मुकुंददर मध्य होय, पुर पट्टनि चैम्मलि लाघि तोय ॥२५॥
लाखैरिय गिरि दरै कहि सुभाय, अजमेर पीर भितन चलाय ॥
सक सत्त तक सुनि डकक १७६७मान, अजमेर आय दिन्नो मिलान २६
तब बुद्धसिंहप्रति कहिय साह, कूरम कबध किन्नाँ गुनाह ॥
सभैरहि लुट्टि लिय स्वैस्व देस, तसमातँ जग मडहु नरेस ॥२७॥
कहि भूप जियत अवरगसाह, हिंदून कियउ सौसन निबाह ॥
यह आदि मुलक हिंदुन असेस, बिनु नीति अमल करनो न बेसँ २८
फरमान दे रु दोउन बुलाय, अबही नहि रुक्कहु दुहुन २९ आय ॥

अवरहु अनाय किय भुम्मि भोज तिन सबन समप्पहु स्वस्वराज २९

१ घना ॥ १० ॥ २ ऊटों को छोड़कर ३ उदास होकर ॥ २१ ॥ ४ कैद में घाल दिया
[रख दिया] ५ हुकम भेजा ॥ २२ ॥ ६ अरजी भेजी ॥ २३ ॥ ७ सगे भाई को
॥ २४ ॥ ८ दूर है अत जिसका ऐसी नर्मदा नदी ९ नाश १० सुकुंदरा का घाटा
कोटा के राज्य में है ११ आमल नदी का पानी लाघकर ॥ २५ ॥ १२ लाखैरी के
पर्वतों के दूरे से निकलकर १३ मुकाम ॥ २६ ॥ १४ सागर का १५ अपने अपने
देश १६ इसकारण से ॥ २७ ॥ १७ आज्ञा का पालन किया १८ उत्तम नहीं है
यावनी भाषा में वेस शब्द अधिक का बाध्यक है परन्तु यहाँ लाकस्वी से उ
त्तम के अर्थ में लिया है ॥ २८ ॥ १९ आमदनी २० बिना आमदनी २१ भूपतियों को

यह कहि पठाय फरणान नैत, संभरहु लिखिय दुवश्चपन पन ॥
 हम कहि गुनाह सब कियउ दूर, आवहु निगंक तुम आव हजूर ॥ ३० ॥
 यह सुनि कबंध कुर्य चलाय, अजमेर नाह भिट्यो सुमाय ॥
 तव कहिय साह गिनि अप्प नंग, गंभर दुहन रहिय स्वजोग ॥ ३१ ॥
 कूरम कबंध तव कहिय छड़, निज स्वामि निमक खढो सनेह ॥
 आज्ञा अधीन अब उभय अँहि, जँह स्वामि काम तँह लरन जाँहि ॥ ३२ ॥
 आलम सिराहि तव दुव नरेभ, दोउन रहिखाय दिय रवरव देस ॥
 दतियादि राज अवहु लिखाय, सँहदेस सवन दिन्नै बुलाय ॥ ३३ ॥
 हम दिंदु नृपन बिरवामि साह, गहि नीति सवन अप्पिय गुनाह ॥
 दिन कछु बिताय अजमेर दंग, अब आय तखत दिहिय उमंग ॥ ३४ ॥

इति श्री वंशनामकरे महाचम्पूके उत्तमगण सप्तमराजो बुन्दीप-
 तिबुधसिंहचरित्रे योधपुरराजराष्ट्रद्वाराजितसिंहामें गंगजकर्मजयसिं-
 हयोर्महाराणासैन्यसहायशाकम्भरीपुरालुल्लानानन्तरवरवराज्य -
 स्वाधिकारप्रापण १ फोटाविजयप्रस्थितबुन्दीसेनापतिधावगंग-
 रामगूर्जरस्य यवनकरकारानिपतन २ अजमेरगतालमशाहग्याहू-
 ताजितसिंहजयसिंहभूपतिद्वयतद्राज्यपुनर्दानानन्तरेतरराजदतियादि

॥ २६ ॥ १ तहाँ २ बुधसिंह न भी ३ पत्र ॥ ३० ॥ ४ मिला ५ अपना प्रताप
 जानकर ६ अपने धल से ॥ ३१ ॥ ७ गतेह पूर्वक निमक खाया 'सांभर नगर
 में निमक की झील है इसकारण यहाँ निमक खाना कहा है' ८ हैं ॥ ३२ ॥ ६
 दतिया का आदि लेकर १० देश सहित ॥ ३३ ॥ ११ सब के अपराध दिये
 [चमा किये] १२ नगर में ॥ ३४ ॥

अधिशमासकर महाचम्पू के उत्तमगण के सप्तम राजा से बुन्दी के भूपति
 बुधसिंह के चरित्र में जोदपुर के राजा राठोड अजितसिंह और आमेर के
 कछवाहा राजा जयसिंह का सहाराणा की सेना की सहायता लेकर सांभर
 नगर को लूटकर अपने अपने दोनों राज्यों में अपना अधिकार करना १ फोटा
 को विजय करने को गयेहुए बुन्दी के सेनापति धाव गंगाराम गूजर का एक
 यवन की कैद में होना २ शाह आलम का अजमेर आकर राजा अजितसिंह
 और जयसिंह को बुलाकर दोनों को दोनों के राज्य पीछे दिये पीछे अन्य रा-

आलमशाहका अजमेर से दिल्ली जाना] सप्तमराशि एकविंशमयूख[१०२५]

राज्यपुनर्दानवर्णन विंशो मयूख ॥ २० ॥

आदितोऽष्टपञ्चाशोत्तरद्विशततम ॥ २५८ ॥

[दोहा]

नृप कूरम रठोर सिंग, साह नजरि लखि मुद्द ॥

हुसनअली सद्यद धक्को, बहुत बैर प्रबुद्ध ॥ १ ॥

पति बुदिय अरु जवनपति, जाजव रन दुव जिति ॥

अब अभिमानन उप्फने, कर्गन किति अपकिति ॥ २ ॥

कामबखस जवतैं हन्यो, तबतैं आलम मुद्द ॥

वाहि मुद्दपनै चितयो, बुदियपति अब बुद्ध ॥ ३ ॥

पुर दिखिय दिन पत्तग, आलम गरब उपेत ॥

पुर बुंदिय दिन पत्तग, उपजिय धरम अद्देत ॥ ४ ॥

तुरक हिंदु सब सग तक्ति, उपजि अयुव्य उछाह ॥

करिय कुच अजमर सन, लिय दिल्लिय मग साह ॥ ५ ॥

सेखाउत कूरम सहग, नाम मनोहरदग ॥

दिन दुवतत मिलान दिय, आलम अधिक उमग ॥ ६ ॥

नृप कूरम रठोरको, दिय निज देसन सिक्ख ॥

चित्त बुद्ध बुदिय चहिय, तोरैं गरब जय तियख ॥ ७ ॥

[पट्टपात्]

किय विन्नति करजोर रावराजा आलम सन ॥

वदगीहु किय बहुत रचिय पुनि स्वामिधरम रन ॥

पुरबुदिय अब पास सिक्ख वखसहु प्रसाद सभ ॥

जाओ को दतिया आदि राज्य पीछे देने का पीसधा २० मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ अठावन २१८ मयूख हुए ॥

१ क्रोधित हुआ २ माइया का बैर स्मरण करने से ॥ १ ॥ १ पादशाह ४ कीर्ति को अपकीर्ति करने के लिये ॥ २ ॥ ६ सूर्य दृष्ट १ जानकर सूर्यपन का स्मरण किया ७ बुरसिंह न॥ ८ सहित १० वर्ष की शबुता ॥ ४ ॥ १० अपूर्व ॥ ११ ॥ ११ मनोहरपुर १२ सुकाम ॥ ६ ॥ १३ बुधसिंह न॥ १४ प्रताप ॥ १५ प्रसन्नता से १६ से

भट बिग्रह मम भुस्मि उतहु रचिहैं कलु उद्यम ॥

मम जैत नाम काका मरद बैरसल्ल कुल उद्गम ॥

*सादी हजार १००० सुभटन सहित रहिहैं हाजरि चतुग्न ॥८॥

(दोहा)

यह सुनि बुंदिय सिक्ख दिय, बुद्ध नरेसहिं माह ॥

जेतसिंह भट सँहँस जुत, संग लया हु मियेनाह ॥ ९ ॥

इम आलम दरकुंच कगि, पुर दिहिय संपैत ॥

सत्त तक्क सुनि इक्क १७६७ सक, बेढो तखत दियैत ॥ १० ॥

फूरुक्सेर अजीम सुत, कगि तिहिं संग कर्गम ॥

पूरव सूबा ताहि दिय, रक्खयो निकट अजीम ॥ ११ ॥

बिनु बिक्रम अरु नीति बिनु, रहत पिक्खि दिह्यास ॥

दक्खिन कावल दोहु दिस, सीमा दविय संगस ॥ १२ ॥

इत आलमनै सिक्ख लै, चित इच्छत घर चाव ॥

चलिय मनोहर द्रंग तैं, बुदिय दिस बुधराव ॥ १३ ॥

[पट्पात]

इक्क कनफटा नित्यनाथ कउल्लन आचारिज ॥

हेरि हेर धरम हटाय करत अधमन मत कारिज ॥

सिरिय बहुत तस संग सुभट हय गँय सिविका सह ॥

जावत दक्खिन देस नृपहिं मगमाहिं मिल्यो वह ॥

गजमुखेह पुरोहित नृपति को कउल्लमंग सेवत रहत ॥

तिहिं जाय नाथ भिट्यो लैरित परिय पाय कित्तिर्य कहत १४

(दोहा)

* सन्नार ॥ ८ ॥ ६ ॥ १ संप्राप्त हुआ (सुख से पहुंचा) २ विशेष मत्त होकर ॥ १० ॥ ३ फरुखासियर नामक ४ करीबवखस नामक ॥ ११ ॥ ५ रीस (क्रोध) सहित ॥ १२ ॥ ६ राव बुधसिंह ॥ १३ ॥ ७ बाखलारियों का ८ वैष्णव ९ शैवधर्म को हटाकर १० हाथी ११ पालखी सहित १२ पुरोहित का नाम है १३ बाममार्ग १४ मिला १५ शीघ्र १६ कीर्ति ॥ १४ ॥

नित्यनाथको *गुरुवं नमि, गजमुख नृप ढिग आय ॥
 सिद्ध मन्नि गोरक्ख सम, महिमा कहिय बनाय ॥ १५ ॥
 यातैं †सकति प्रसन्न अति, याहि सकति बर दिह ॥
 दै मनबछित यह करत, सिस्यहुको सैम सिद्ध ॥ १६ ॥
 अनुष्ठान जप होम अरु, मन्त्र जत्र मतिमंत ॥
 कहैं जाहि भसमहु करें, कहैं जाहि भुवंकत ॥ १७ ॥
 किय नृप गजमुख कथित सुनि, नाथ निकेत प्रयान ॥
 बुदियको विगरन समय, अरु भावी बलवान ॥ १८ ॥
 नित्यनाथ ढिग जाय नृप, पैय परि करिय प्रनाम ॥
 कहिय मिस्य मोको करहु, भरहु भेट धन धाम ॥ १९ ॥
 लक्ख १०००००रूपयन करं सुलभ, अैसे ग्राम अनूप ॥
 गहहु दच्छिना छंत गिनि, रहहु इहाँ गुरु रूप ॥ २० ॥
 नित्यनाथ यह सुनि कह्यो, हम दक्खिन बसवान ॥
 गुरु मृत सुनि द्रुत जातहैं, न रहैं तास निदान ॥ २१ ॥
 हम भवदीय पुरोहितहि, मुख्य मन्त्र देजात ॥
 यातैं सिच्छा लेहु तुम, देहु याहि बसु ब्रान्त ॥ २२ ॥
 यह कहि मँनु गजमुखहि दै, गयो कनफटा देस ॥
 इत बुदिय ढिग कुचकरि, आयो बुद्ध नरेस ॥ २३ ॥
 जन काबल नृप बुद्ध हो, तब निज सोदर जोधैं ॥
 चढि तरहैं गुनगोरि दिन, किय जलकेलि कुँबोध ॥ २४ ॥

*गुरु के समान ॥ १५ ॥ † शक्ति १ अपने परावर का सिख करदेता है ॥ १५ ॥ २
 बुद्धिमान् ३ राजा करता है ॥ १७ ॥ ४ गजमुख का कहा हुआ ५ उम नित्य-
 नाथ नामक नाथ के स्थान पर गया ॥ १८ ॥ ६ पैरो में पड़कर ॥ १९ ॥ ७ सु-
 गमता से लाख रुपये प्रतिवर्ष हासिल के आँखें ऐसे ८ छात्र (शिष्य) ॥ २० ॥
 ९ गुरु को मरा हुआ लुन कर १० इसकारण से ॥ २१ ॥ ११ आप के पुरोहि-
 त को १२ शिक्षा १३ धन का समूह ॥ २२ ॥ १४ मन्त्र ॥ २३ ॥ १५ सगा भाई
 जोधसिंह १६ नाथ पर १७ त्वुरी बुद्धि म ॥ २४ ॥

सुभट सचिव अनुचर सकल, बैठे पोतन तत्थ ॥
 नचि गावत पातुगिःनिकर, ध्रुति स्वर तारन सत्थ ॥ २५ ॥
 गज इकलिंगप्रसाद इक, इहिं अंतर मयमत ॥
 निजैदायज आयो हुतो, उदयनैरतें अन ॥ २६ ॥
 वहै बारन अति दानछक, जल पीवन तहै आय ॥
 ताल पिक्खि पोतन तिरत, कुप्पि चलयो अतिकाय ॥ २७ ॥
 सत्थ सकल आपोन थित, किन्नो कछु न उपाय ॥
 निज पोतहि पकरी निहुग, एतेमें गज आय ॥ २८ ॥
 धाइभ्रात निज संगहो, तास मयो इक वार ॥
 एतेबिच उलटाइ इभ, बोरी नाव सु बार ॥ २९ ॥
 नियति जोग सब निरि कठिय, अमु बैसु त्वरित अवेरि ॥
 धाइभ्रात अरु अप्पें दुवरे, स्वर्गत निकासे हेरि ॥ ३० ॥
 निकसन खिन गुंजर सरिय, अरु निज कछु अवसेस ॥
 सो चउत्थि तसमात सो, पत्तो मृत परदेस ॥ ३१ ॥
 अनुज गन जयसिंहको, भीम सुतां यह तास ॥
 जोधै नारि सहंमन वारे, पत्ती दिव पति पास ॥ ३२ ॥
 पातैं पुर अवितत अवहु, खादर सुचै न सदाय ॥
 मति तेंअपि सवोधि मन, इम पुरछिग नृप आय ॥ ३३ ॥

*समूहाराण के साथ भी बाईस अति गौर स्वर तथा तालों के साथ ॥ २५ ॥ १
 मदमस्त २ जोधसिंह के बड़ेज ने ॥ २६ ॥ ३ वह एकलिंगप्रसाद हाथी ४ बड़े
 शरीर वाला (यह हाथी का विशेषज्ञ है ॥ २७ ॥ ५ पागजोष्टी (मतवाल) में
 ६ जोधसिंह की नाव को ही ॥ २८ ॥ ७ धाय भाई (धाय का पुत्र) ८ हाथी
 ने ९ जल में वह नाव डुबा दी ॥ २९ ॥ १० प्राणरूपी ११ घर को शीघ्र अवेर
 कर १२ जोधसिंह १३ तृप्त हुए (प्रन्तिन) स्वास लेने लुओं को ॥ ३० ॥ १४
 निकलते समय गुजर जाति का धायभाई सर गया और जोधसिंह का कुछ
 प्राण बाकी था सो १५ इससे चौथे दिन जर कर १६ परलोक गया ॥ ३१ ॥
 १७ बनेडा के राजा भीमसिंह की पुत्री १८ जोधसिंह की स्त्री १९ सती हो-
 कर २० स्वर्ग गई ॥ ३२ ॥ २१ शोक २२ तोभी बुद्धि से मन को समझा कर

मुनि भूपहिं आवत सुभट, सचिव वेग ॥ समुपेत ॥

बुधियपुर सन निकमि सव, सम्मुह आय ॥ सहेत ॥ ३४ ॥

नगर जैतगढ तालें तट, रहि नृप अत्प मिलान ॥

प्रात पुरहिं प्रविमत प्रकटि, गृहगृह मगल गान ॥ ३५ ॥

कोटारन निज भट मायो, जुगियराम निसर्क ॥

ताको सुत सालम लायो, गजाँहूढ नृप अक ॥ ३६ ॥

इम आलमको पमै रनि, पदह १५ वरस बिहाय ॥

इय खट सत्रह १७६७ सहै सित, प्रविरयो बुधिय आय ॥ ३७ ॥

बुधियपुर प्रविमत समय, सउने किह मग रुद्ध ॥

विज्यावाँल रजग्वला, पिक्खी सम्मुह बुद्ध ॥ ३८ ॥

इत्यादिक असउने विविध, मन मन्ने नहिं तैत्त ॥

प्रणिग्यो उत्तगढा पुर, जात्रव जय उनमत्त ॥ ३९ ॥

इतिश्री वगभास्कर महाचम्पूके उत्तगयण सप्तमराशा बुन्दीप-
तिबुधसिंहचरित्रे अजितमिहजयसिंहबुधसिंहार्थदत्तराजस्वराज्य-
गमनाज्ञालमगाहदिल्लीगमन १ गुगागोरीदिनबुधसिंहानुजयोधसिं-
हस्य नावा सह बुन्दीतडागमज्जनसूचनमक विंशोमयुग ॥ २१ ॥

आदित एकोनपष्ठ्यधिकद्विशततम ॥ २५९ ॥

॥ १३ ॥ ४ सहित १ स्तोत्र साहस्य ॥ ३४ ॥ १ तालाव के किनारे २ सुकाम

॥ १५ ॥ ३ बिना शका बाबा जोगीराम ४ हाथी पर चनेहृण राजा न गोद में

लिया ॥ ३५ ॥ ५ अमीन ६ मादरा खुदि पक्ष में ॥ ३७ ॥ ७ जकुनों ने मार्ग

राका ८ बालविधवा श्री रजस्वला को बुधसिंह ने ९ सामों दया ॥ ३८ ॥

१० इनका आदि देकर अनेक प्रकार ११ अशकुन १२ तडा ॥ ३९ ॥

अधिशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति
बुधसिंहक चरित्रमें अजितमिह, जयसिंह, बुधसिंह इनको अपने अपने राज्या
की सीमा देकर बादशाह आलम का दिल्ली जाना १ गुनगौर के दिन बुढ़ी क
तालाव में बुधसिंह के छोटे भाई जोधसिंह का नाव सहित डूबने की सूचना
का इफीसबा २१ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसो उनसठ २५९, म-
यूख हुआ ॥

(छप्पई)

बुंदिय गदिय बैठि बुल्लि गजमुखह पुरोहित ॥
 मन्नि गुरुव सुनि संत्र कउल मारग चाहयोचित ॥
 लकख १००००० रूपयन मुलक हँथि सिबिका हय अप्पिय ॥
 गदिय तक अधिकार बखसि गजमुख गुरु थप्पिय ॥
 आचार अधम अहरि रहिय पंच मकारन सुदित मन ॥
 बुंदीस बुद्धि बिगरी बिबिध कउल कम्म लग्गो करन ॥१॥
 जब काबल बुंदीस हुतो आलम अनुगामी ॥
 तबहि रान जयसिंह गयो परलोक सु नामी ॥
 तास तखत अमरस रहयो रानाँ कलु बच्छंर ॥
 पैतो वह परलोक सुनी बुंदिय यह संभर ॥
 लौ सिक्ख तबहि पटरागिनी रानाउति पीहर गई ॥
 उम्मेदकुमरि तत्थहि अँचिर भावीबसि अँसु बिनु भई ॥२॥

[दोहा]

पटरागिनि पंचैत्व इम, लयो उदैपुर जाय ॥
 च्यारिलकख ४००००० मुद्रा प्रभित, रहयो तहाँ तस राँय ॥३॥
 इहिअंतर बुंदीस प्रति, सगपनहित सरसाय ॥
 पुर भनाय रडोरके, नारिकेल द्रुत आय ॥ ४ ॥
 सो सगपन स्वीकार करि, नारिकेल लिय केलि ॥

१ बुलाया २ गजमुख नामक पुरोहित को ३ वासमार्ग ४ हाथी ५ पालखी ६
 गादी पर बैठने तक का अधिकार ७ वासमार्ग के *पांच सकारों में मन प्रसन्न
 करके ८ वाजियों के कार्य ॥ १ ॥ ९ अमरसिंह १० वर्ष ११ प्राप्त हुआ १२ च-
 हुवान बुधसिंह ने १३ पाटराणी १४ शीघ्र १५ प्राण बिना ॥ २ ॥ १६ सृष्टि १७
 धन ॥ ३ ॥ १८ संबंध के लिये १९ नारियल (सम्बन्ध करने का प्रथम दस्तूर)

*वासमार्गियों में, मदिरा १ मास २ मैथुन ३ मुद्रा ४ और मत्स्य ५ ए पांच मकार प्रसिद्ध हैं, जिनके
 सेवन से बामीलोक मोक्ष होना मानते हैं, जिनका विशेष विवरण देखना होवै तो वामियों के 'भैरवो चक्र'
 नामक ग्रन्थ में देखे ॥

षादशाहका नानकमतिपों को दखदेना]ससमराधि द्वाविंशमधूख [३०३१]

मन परतु लागि कउल मत, प्रथित वेदमत पेलिं ॥ ५ ॥

रहत चक्रपूजांनुरत, विधि नय धरम बिसारि ॥

आलस मद्य प्रमाद करि, बिगरी राज सम्हारि ॥ ६ ॥

इहिअतर लाहोरतें, दिलिय आय पुकार ॥

सूवा विच दल बधि सब, सिख मिलि करत बिगार ॥७॥

नानक मत अर्जुनामि सिख, अजितसिंह तिन ईस ॥

सो मडत अप्पन अमल, सूवा खडि सैरीस ॥ ८ ॥

(पट्पात)

सुनत एह दिलीस अटकदिस कटक अगजित ॥

सजि चलिय द्रुत साह राह उदत जय रजित ॥

सबहि पुत निज सग हुरम बेगम सब हाजरि ॥

तीन लखख३०००००तुङ्गवार भार सतपच५००ताम भीर ॥

सर्कमित साह आलम सबैल क्रम प्रवेस लाहार करि ॥

वह अजितसिंह सब सिखन हनि दडिग्वडिलिन्नो पकरि ॥९॥

(दोहा)

आसितें करि सब सिखनतें, नानक पथ छुराय ॥

मुडित डही मूछ करि, दडि^३ दये निकसाय ॥ १० ॥

सालमार उपवन निकट, रहयो कछुक दिन साह ॥

शशिआये ॥ ४ ॥ १ प्रसिद्ध २ हटाकर ॥ ५ ॥ ३ चक्रपूजा म ४ गफलत [भूल]

॥ १ ॥ ७ ॥ ५ नानक के मत के साथ चलनेवाले १ रीस [शोध] सहित ॥ ८ ॥

७ घोड़े = घल कर १ सेना सहित १० दंड तोड़ कर [नानक मतवाले हाथों में बंध रखते हैं] ॥ ९ ॥ ११ आसयुक्त करके १२ उन दंड रखनेवालों को डाढ़ी

मूछ मुछवा कर निकला दिये [डाढ़ी मूछ का मुछवाना नानक मत के विरुद्ध है]

॥ १० ॥ १३ सालमार नामक पाग के समीप

* धाममांगियों के प्रथो म "भैरवी चक्र" की पूजा की विधि विस्तार से लिखी है, वह यहाँ नहीं लिखी जासکتی जिन किसीको देखना होये वह "भैरवी चक्र" नामक ग्रन्थ में देखे, उसका सिद्धान्त नीचे के रत्नोक्त से जानना चाहिये ॥

प्रश्न भैरवीचक्रे सर्वे वर्णा द्विजोत्तमा ॥ निरुते भैरवीचक्रे सर्वे वर्णा, पृथक् पृथक् ॥ १ ॥

अब अभाम तुरकानको, उलटी करत *उलाह ॥ ११ ॥

(पट्टपात)

कल्लिजुग भूपन कुमति निलय नारिन भरि रखै ॥

रहै इक अनुरत्त अवर जारन तब चकखै ॥

यौही आलम संग निकर नारिन अंतहपुर ॥

तिनमें बेगम इक लज्ज लंघिय कामातुर ॥

सँहसन सिपाह जातिक रहत रुकत तोहु न कामग्य ॥

निसदीह जार इच्छत निलज सरमा जिम सारद समय ॥ १२ ॥

(दोहा)

गायक आवत गान गृह, सिखवन नारिन गान ॥

तिनबिच पिक्खयो रूप बैर. गायक इक जवान ॥ १३ ॥

छुनै ताहि कहायकै, रखयो चिकन दुगाय ॥

प्रतिसीरा पलटाय पुनि, लिन्नौ रति बुलाय ॥ १४ ॥

बिन रखै मंजूस धरि, रति निकारै ताहि ॥

यौ बेगम दिल्लीसकी चिपी कलावत चाहि ॥ १५ ॥

पिक्खि सँउत्तिन इक निस, अक्खी आलम अगग ॥

सुनत प्रमादी साह धकि, लयो ताहि गृह मगस ॥ १६ ॥

साहामें बेगम सुनत, छुनै संग लगाय ॥

जाय सँउच संकानिलय, आई ताहि दुराय ॥ १७ ॥

(पादाकुलकम्)

* ईश्वर वाची यावनी शब्द है ॥ ११ ॥ † स्त्रियों से घर भर रखते हैं, उन में एक से प्रीतियुक्त रहता है १ स्त्रियों का समूह २ जनाने से ३ काम से पीड़ित ४ पहरायत ५ काम का वेग ७ सरदश्चतु के समय में ६ कुत्ती के समान ॥ १२ ॥ ८ कलावंत ९ गाना सिखाने के लिये १० देखा ११ अष्ट ॥ १३ ॥ १२ कनात से लपेटकर ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ सौतों ने १४ उसी बेगम के घर का मार्ग ॥ १५ ॥ १५ बादशाह का आना १६ छाने अपने साथ लेकर १७ पाखाने जाकर १८ पाखाने में १९ उस कलावंत को छिपाआई ॥ १७ ॥

इहिँअतर आलम तँहँ आयो, तिय जुव्वन ऋतसकर नहि पायो ॥
 तव नचाय ॥सोतिन उगतारा, ॥सउचगेह दिय सैन इमारा॥ १८ ॥
 सु लखि साह अखिखय वेगम सन, मैं ॥विरकगद ॥अज्जविकल मन
 यह सुनि गायक मिच्छु विचारयो, खजर दारि साह हिय माखो
 राठेक फारि पार वह फुटो, छिन अतर आलम असु छुटो ॥
 निपति जाग इम लेहु निहारै, दिछीसहिँ गायक हनिहारै ॥ २० ॥
 गायकहू नारिन गहि माखो, साह कुविधि मरि सुजस विगारयो ॥
 अतहपुर तव बजिगं अचानक, डतउत रुदनराग उरआनक ॥ २१ ॥

(पट्पात)

हुम हार श्रृंगार तोहि भूरत तोवा करि ॥
 भागिभारि वगग्नि परत लुटत उटत परि ॥
 मोजदीन पट्टप कुमार यह सुनि डेत धायो ॥
 सुतो कुमर अजीम भुँद ताकँहँ हनिआयो ॥
 लघुभ्रात दोय तिन सिर निलज पिल्लयो दर्ल हलकारिकैं ॥
 दोउन२मराय गदिय लई आजमँ अनय विचारिकैं ॥ २२ ॥

(दोहा)

आलम मरन अपुँव हुव, फुट्टी दिस दिस वत्त ॥

श्री क जाया का चार मीनाने नेत्रों की पुमलिया का इमारा करके इतहारत म
 हाने का इनाग किया ॥ १८ ॥ इदस्तों के राग मीं आज मृत्यु ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥
 की लयी] इट्टी अथवा पीठ को फाड़ कर प्रमाण भाग्य के योग से • कलावत
 ॥ २० ॥ १ वज ७ रोने क राग और • छानिया के दोल ॥ २१ ॥ २ फारसी में
 तापा शब्द परित्याग की प्रतिज्ञा का वाचक है जिसका अन्यय 'हार शृंगार'
 २' क साथ है, अर्थात् हार शृंगार क परित्याग की प्रतिज्ञा करके १० शीघ्र ११
 मूढ [यहा मूढ बढ़ने का अर्थ यह है कि अजीम, आलमशाह का छोटा पुत्र होने
 स वह पाद का एकदार नहीं था तो भी उस मूर्ख ने वृथा मारवाला १२ मेजी १३
 सना १४ आजमशाह के किये हुआ अनय [अनीति] को विचार करके अर्थात्
 आजम न मी आलम के छोटे भाई होने पर दिछी के तसलत का दावा किया
 था इसीप्रकार ये भी कर बैठ तो आशयर्थ नहीं, यह जानकर ॥ २२ ॥ १५ अपूर्ण

मोजदीन तयश्चात हनि, बैठो तख्त प्रसन्न ॥ २३ ॥

(पट्टपात)

आलम सृत सुनि अजितासैह मरुदेस नरेशुर ॥
करि फोजन दरकुंच आय अजमेर निहर उर ॥
लिन्नो * बिंदुलि दुग्ग साह थाँनाँ हनि † संभर ॥
सूबा इब्बि ‡ सजोर भयो बिनु संक गड्ढ भर ॥
इत तक्कि छिद्र दक्खिन अर्वनि मग्गहन बल मंडयो ॥
जिततित उठाय दिल्लिय अमल छंलि कातरपन छंडयो ॥ २४ ॥

(दोहा)

मँति प्रमाद आलम मरत दिल्ली तिय बरजोर ॥
तक्की मारि कटाँछ दृग, सहर सितारा ओर ॥ २५ ॥

(पट्टपात)

देसदेस मचि दंगँ चंगँ भूखन चमकाये ॥
पुरपुर धाटिँन पात पयन घुग्घर धनकाये ॥
अलस अस अन्याय हावभावन बिनतारत ॥
आसवपान अपार मार आतुर दृग मारत ॥
गनिकान बिभव अधिकार गत चंडाँतक घुम्मर रचिय ॥
दिल्लिय नवोढ दुलहनि बनिय सहर सितारा बरन प्रिय ॥

(पहले किसी बादशाह का मरना नहीं हुआ ऐसा) ॥ २३ ॥ * अ-
जमेर के गढ़ का नाम 'बीटली' है † मुहल्ले ‡ जोर [बल] सहित १ भूमि
में २ बट कर ३ कायरपन छोड़ा ॥ २४ ॥ ४ प्रमाद की बुद्धि से ५ कटाक्ष ॥ २५ ॥
अब यहाँ रूपक अलंकार से दिल्ली रूपी स्त्री का सितारा शहर को बरने का
वर्णन करते हैं कि ६ उपद्रव (दंगा) मचा सोही तो ७ चंगे (सुन्दर) भूषण च-
मकाये और पुरपुर से ८ धाड़े (डाके) ९ पड़े देही पैरों में गूँघरे बजाये १० अ-
त्यंत मद्य पीना ही कामदेव से पीड़ित होकर नेत्र चलाये [नजारे मारे] गनि-
काओं को वैभव मिलना और राज्य के अधिकार [उहदे] मिलना ही ११ लह-
गे [घागरे] की घूमर लगाई (स्त्रियों के समूह के नृत्य का नाम घूमर है) ॥ २६ ॥

॥ दोहा ॥

मोजदीन इत धात हनि, बठि तखत बनि वीर ॥
निलज दूर किन्नाँ *अनखि, आलमसाह वजीर ॥ २७ ॥

॥ पदपात् ॥

हुसनअली †आलमवजीर करि दूर ‡कुसिकखन ॥
जुलफकारखा नाम अवग यप्यो लखि §इकखन ॥
तजि पत्तन लाहोर रचिय दरकुच गेह रुख ॥
ततिजव दिलिय आय पट्ट पायो सु परम सुख ॥
आसव गाविपान अनुरक्त अति दूठ प्रमत्त तयश्चात हनि ॥
गातिकान सग गादग रहत दिलिय पादप दीमै बनि ॥ २८ ॥

॥ दोहा ॥

नारिक लाडकपूर डक, गायक गेहिर गुमान ॥
तास लालबीबी बहिनि, अधिक रूप गुन आन ॥ २९ ॥
पट्ट हुरम ताको करी, मोजदीन बस होय ॥
गलबाँही छिनछोरिगै, कम्म सुनै नहि कोय ॥ ३० ॥

पादाकृतकम् ॥

नारिन सग फिरत कानारन, नारिनहीमै सहल सिकारन ॥
डक दिन राग करी अमवारी, नाजर मग तथा सब नारी ॥ ३१ ॥
पान कार्पिसायन प्रति किन्नाँ, सामे चढन सासन पुनि दिन्नाँ ॥
दिन बेला बनि कलि बिहाई, अपगअन्ह सध्या अब आई ॥ ३२ ॥

५ क्रोध हरके ॥ २७ ॥ † आलमशाह के वजीर को ‡ बुरी शिजा से [लोगा क मित्रान ग] § परीक्षा करत क जिये अथवा अपने नेत्रों से देख कर ॥ विजेष पान [अधिक पीने] में अनुरक्त १ दिल्लीकी शृज का २ दीम-क (उद्दी) ॥ २० ॥ ३ कलावतों का अफसर ४ कलावत [गानकार] ५ गहरे घमड़ घाटा ६ घर अथवा नक्करा ॥ २० ॥ १० ॥ ७ घनों में ॥ ३१ ॥ ८ मय-पान ९ सन्ध्या समय १० दिन का समय फीला में बिताया ११ अपरान्ह स-

मोजदीन अतिपान बिमत्तो, रूहसि लालबीबी अनुमत्तो ॥
 सोधि तास सिविका बिच भोयो, जावतखिन काहू नहिं जायो ॥ ३३ ॥
 असवारीके समय अचानक, इत उत वजे चढनक आनक ॥
 कहि कहि त्वराँ दरोगन किन्नी, मव दुरमन सिविका कर्म दिन्नी ॥
 लैलै चले कहार नृजानन, जोवत फिगत साहकाँ सब जन ॥
 भटन लालबीबिय छिग भास्यो, खाँजन तब तँहँ जायगिकारयो ॥ ३४ ॥
 खोलि बंध सिविका डक नाजर, आन्योँ साह भटनके अंतर ॥
 अति अचेत सिविकाबिच डारयो, बुहुहिं राज समगत विचारयो ॥ ३५ ॥
 आई तब दिल्लिय अमवारी, मनजित साह रहैं डम सारी ॥
 दे अधिकार बिभव सुखदायक, गुरुमंत्री किन्नेँ सब गायक ॥ ३६ ॥
 दोहा—इत दिल्लिय डम मचि अनय, इत बुंदिय अवनास ॥

साहबहादुर सिँचु सुनि, सोचि रु धुन्ध्योँ मीम ॥ ३८ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायण सप्तम ७ गथो बु-
 न्दीपतिबुधसिंहचरित्रे बुधसिंहवासमार्गधारण १ नानकमनीयोप-
 द्रवश्रवणालमशाहलाहोरगमन २, आलमशाहकलत्रोपपतिगाय-
 ककरालमशाहपञ्चत्वप्रापण ३ हतानुजत्रिकनोजदीनदिल्लीपट्टो-
 पविशन ४ अतिमद्यपमोजदीनगायककनीलालबीबिविशासवनं हा-

न्ध्या [सायंकाल] ॥ ३२ ॥ १ विशेष मत्त हुआ २ एकान्त ज ॥ ३३ ॥ ३
 शीघ्रता ॥ ३४ ॥ ४ फाललियों को ५ नाजरों ने ॥ ३५ ॥ ६ उमराओं के भी-
 तर ॥ ३६ ॥ ७ बादशाह के मन को जीतने वाली = सहासारी [मनी] रोग वि-
 शेष जिसको अंगरेजी में प्लेग कहते हैं, यह लालबीबी का विशेषण है ९ ब-
 डे सलाहकार सब कलावतों को किये ॥ ३७ ॥ १० अतीति ११ मृत्यु ॥ ३८ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सातवें राजि में बुन्दी के नृपति,
 बुधसिंह के चरित्र में, बुधसिंह का वासमार्ग धारण करना १ नानक मत वा-
 ले सिक्कों का उपद्रव सुन कर आलमशाह का दिल्ली से लाहोर जाना २
 आलमशाह की बेगम के जार [उपपति] एक कलावत के हाथ से बादशाह
 आलमशाह का मारा जाना ३ तीन छोटे भाइयों को मार कर मोजदीन का
 दिल्ली के तख्त पर बैठना ४ अत्यन्त मद्यपान करनेवाले मोजदीन का एक

विंशो मयूख ॥ २२ ॥

आदित पष्ट्युत्तराशिततम ॥ २६० ॥

दोहा ॥

मति बिगारि भर्जि वाममत, सजि विभिगदित समाज ॥

आलस पर आसिक भयो, राजकाज तजि राज ॥ १ ॥

पदपात् ॥

हुसनअली सय्यद नवाब इक मंत्र रचिय इत ॥

मोजदीनकों मत्त जानि चितिय प्रपद्य चित ॥

पूरव पुर पटनाँ सु साहफूरक अजीम सुव ॥

तब पत्रनँ मिलि ताहि भिरन आन्यों दिल्ली भुव ॥

रन मोजदीन तासन विरचि भजि विल्लिय अदर दुरयो ॥

लगि पिठि साहफूरक सजव आय ताहि हनि अकुँरयो ॥ २ ॥

दोहा ॥

सक नव खट सत्रह १७६९ समय, बिक्रम हार्यन बट्ट ॥

मोजदीनकों मारिकै, बैठो फूरक पट्ट ॥ ३ ॥

जुलफकागखाँ सचिव तस, हन्यों सोहु हमगीर ॥

सय्यद फूरकसाह किय, हुसनअली सु वजीर ॥ ४ ॥

पलटी गहिय तीन ३ इम, वरस इक १ के माँहि ॥

आलम पिच्छैँ मोजदी, अब यह फूरक आँहि ॥ ५ ॥

बुध नृपक पाही वरस, भयो कुमर कुलभान ॥

कछवाही रानी उदर, देवसिंह अभिधान ॥ ६ ॥

हात जनम दिग्दिम दये, लकरवन देम्म लुटाय ॥

कलावत की पुत्री लाखा बीबी के पशीभूत होने का बार्हस्पति २० मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ साठ २६० मयूख हुए ॥

१ वाम मत का सेवन करके ॥ १ ॥ २ फूरकशाह ३ पुत्र ४ पञ्चों से मिल कर अर्धाल् लिखा पढ़ी करके ५ युक्त करने के लिये ६ वस फूरकशाह से ७ लड़ा हुआ ॥ २ ॥ ८ विक्रम के सम्वत् के मार्ग से ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ९ रुपये

जातकरम अरु दान जप, सबविधि पुब्ब सधाय ॥ ७ ॥
 कुमर जनम आमैरपुर, सुनि जयसिंह नरिंद ॥
 पठये कुल पहिरावर्ना, दस १० हय दोय २ कैरिंद ॥ ८ ॥
 मास तीन ३ रहि कुमर वह, छोरि गयो निज देह ॥
 विगारि वाममग बुद्धमति, आलस गहिय अछेह ॥ ९ ॥
 असो आलस अवर गत, सुन्यौ न पिकरयो रंच ॥
 सातों ७ प्रकृति सम्हार नहिं, बिगरत सबहि प्रपंच ॥ १० ॥
 पुर बनाय संबंध भो, तिहिं पर लगन लिखाय ॥
 रठोरनकोँ खबरि दिय, आवत बुंदिय राय ॥ ११ ॥
 विप्र पुरोहित निज बिबुध, नाम भवानीदास ॥
 महँडू केसोदास पुनि, कुल चारन मतिकीस ॥ १२ ॥
 ये दुव २ भूप तयार करि, पठये नगर बनाय ॥
 लगन बेर हम आयहै, दिन्नी एह कहाय ॥ १३ ॥
 द्विज चारन दुव २ जायकै, भाखि लगन रहि तत्थ ॥
 इत नृपकोँ आलस अधिक, उपजत बिबिध अनर्थ ॥ १४ ॥
 बहै लगन नृप चुक्किँ, दूजो लगन दिखाय ॥
 लगन पंचाइस चुक्कयो, व्याहन गो न बनाय ॥ १५ ॥
 द्विज चारन प्रति कहिय तब, पति बनाय करि रास ॥
 अब तुम सिर कन्या हनौ, कै आनहु बुन्दीस ॥ १६ ॥
 तब चारन तत्थहि रहयो, द्विज आयो नृप पास ॥
 बुल्लयो अब मरिहौ न तो, व्याहहु आलस बाँस ॥ १७ ॥
 यह सुनि द्विज संकोच वारि, गो नृप नगर बनाय ॥

१ विधिपूर्वक ॥ ७ ॥ २ बड़े हाथी ॥ ८ ॥ ३ बुधसिंह की बुद्धि ॥ ९ ॥ ४ अन्य
 में गया हुआ स्वामि, अमात्य, मित्र, कोश, राष्ट्र, दुर्ग, सेना ये राज्य के सातों
 अंग हैं ॥ १० ॥ ११ ॥ ५ पंडित ७ चारनों की एक शाखा का नाम है ८ बुद्धि का
 प्रकाश करने वाला ॥ १२ ॥ १३ ॥ ९ अनर्थ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ हे आलस्य
 का स्थान ॥ १७ ॥

परनि सुता रटोरकी, विविध त्याग बटाय ॥ १८ ॥
 बुद्धि दिस पुनि कुच किय, अति आलस *अलसात ॥
 आत आत मगमौहिं रुकि, बहु मुकाम रहि जात ॥ १९ ॥
 चलत रुकत रुकि चलत डम, नगर मालपुर आय ॥
 तहँ तैडाग अतर उतगि, कटके मुकाम कराय ॥ २० ॥
 व्याहयो मासतपरय बिच, साह्यो अलग सुगाढ ॥
 रहत मास पुरताल बिच, आयो सिर आपाढ ॥ २१ ॥
 पट्टपात ॥

गरजि मेघ घनघोर ओर उत्तर सन आये ॥
 अधिक महि आसोर बिहित सबैर बरसाये ॥
 आयो जल जब ताल तबहि स्पदर्न मँगाय इक ॥
 तिहिँ उप्पर थित होय रहयो बहु दीह आलसिक ॥
 मालपुर सचिव यह सोधि मन कूरमर्षति मलि पत्र दिय ॥
 उन कहिय नीर परिधाँइ मग कहहु तब यह इन करिय ॥ २२ ॥
 गीर्वाणभाषा ॥ उपजाति ॥

इत्थ स वक्षोद्वयसे कृपीटे रथस्थितो मालपुरातडागे ॥
 बहून्यहानि ह्यवसत्प्रमत्तश्चिरक्रियो बिन्दुमतीक्ष्णितिशः ॥ २३ ॥
 अनुष्टुप् ॥

तत्रैव फूरुके शाहे, जाते भटसहस्रभृत् ॥

स्वामिदर्शनसाकाक्षो, जैलसिंह समागत ॥ २४ ॥

॥ १८ ॥ * आलस्य करता हुआ ॥ १९ ॥ १ तालाब के आतर २ सेना
 का ॥ २० ॥ ३ फागुन में ४ वस आलस्य को गाढा (हृष्ट) पकड़ा ॥ २१ ॥ ५ मेघ
 घारा ६ उचित ७ जल ८ रथ मगया कर ९ आमेर के राजा जयसिंह प्रति १०
 जल निकलने के मार्ग [मारी] के रस्ते से ॥ २२ ॥ इसप्रकार घट छाती प
 र्यन्त जल आने पर रथ म बैठाहुआ मालपुरा क तलाब म मदोन्मत्त आलसी
 बुद्धी का राजा बहुत दिना तक रहा ॥ २३ ॥ घड़ा की फरोखशाह के पादशाह
 होने पर हजार योद्धाओं को धारण करनेवाला और स्वामी के दर्शनों की इ
 च्छावाला जैलसिंह आया ॥ २४ ॥ जिस पीछे आध्या मास के आने पर, आ

वंशरथः ॥

ततो नृपः श्रावणिके समागते, बुन्दीं समागम्य विपुलबुद्धिभृत्।
 आलस्यनाभेष्ठ चिरक्रियेश्वगेऽवसद्यथापूर्वमवस्थितः पुनः । २५ ।
 प्रायो ब्रजदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

इत मेरुनृप अजमेर लिय, तव विग्रह हुव एक ॥
 रूपनगर रहोर नृप, राजसिंह किय टेक ॥ २६ ॥
 मरुभूपति सौं नहिँ मिल्यो, हठपृग्व हमगीर ॥
 साहहिँ गिनि भानेज सुत, भो वह दिल्लिय भीर ॥ २७ ॥
 याकै अरु मरुईसकै, बनी नाहिँ जव वत्त ॥
 तब रजधानी संगलै, दिल्लियपुर वह पर्त ॥ २८ ॥
 बुंदियहू तव आय वह, राजसिंह रहोर ॥
 नहिँ किन्नौं सतकार तस, बुद्ध पलस वरजोर ॥ २९ ॥
 राजसिंह निज पुलिका, समपन हित कहि वत्त ॥
 सोहू नृप मन्त्री नहौं, अलम नारि अनुत्त ॥ ३० ॥
 पाय अनादर तव गयो, कोटापुर रहोर ॥
 कन्या भीमहिँ व्याहिकै, जुरि मंडयो डक जोर ॥ ३१ ॥
 रूपनगर पति सीत डहिँ, भीम हितु करि मंत्र ॥
 निज रजधानी संगलै दिल्लिय गयउ स्वतंत्र ॥ ३२ ॥
 मरुनृपको बाने बनि पिसुन, अनय साहसौं अकिख ॥

लस्य का आश्रय लेकर, आलसियों का शिरोलसि, सोई हुई बुद्धि को धारण करनेवाला, राजा [बुधसिंह] जिसप्रकार पहिले स्थित था तिसीप्रकार बुन्दी में आकर फिर रहा ॥ २५ ॥ १ नारवाड़ के राजा ने रक्षितनगढ़ के राज्य के प्राचीन राजधानी का नाम रूपनगर है ॥ २६ ॥ २७ ॥ ३ राजधानी की हाथी घोड़ा आदि सब सामग्री ४ प्राप्तहुआ ॥ २८ ॥ ५ बुधसिंह ने ॥ २९ ॥ ६ आलस्य रूपी स्त्री से अनुरक्त ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ७ भीमसिंह से सलाह करके ॥ ३२ ॥ ८ बुगल ९ अनीति

धुरसिंहका फरमान न मानना] सप्तमराशि त्रयोविंशत्युष ॥ १०४१ ॥

साह लगत भानेज सुत, यातैं अहर रक्खि ॥ ३३ ॥

पद्धति ॥

इत बैठि पट्ट फूरुक सिताव, करि सचिव मुख्य सय्यव नवाव ॥
फरमान देसदेसन पठाय, सतकारपुर्व्व सब नृप बुलाय ॥ ३४ ॥
बुधसिंह पास नैति सहित तत्र, निज हथ मडि पठयो सु पत्र ॥
इत सदल आय सत्रुन विदारि, चाचा न रचहु मम घर सम्हारि ॥ ३५ ॥
सोहू न पत्र मन्थो नरेस, विधजोग राज बुद्धन विसेस ॥
तेय छत्रमहँले विच सतत बास, अच सुभट मत्रि सब हुव उदास ॥ ३६ ॥
दोहा ॥

चारन केसोदाससों, डकदिन अक्खिब बुद्ध ॥

मरुनृप जो आपन मिलैं, जुरैं साहसों जुद्ध ॥ ३७ ॥

बुदिय तजि उत हम चलाहि, वे आवहिँ इत बेग ॥

ततो उभयभगमाहिँ मिलि, धर दब्बहिँ गदि तेग ॥ ३८ ॥

महडू केम्हादास तव, यह सुनि गा अजमेर ॥

मरुनृपसों मिलिकै कहयो, अब नहिँ करहु अवेर ॥ ३९ ॥

हेरतहो मरुनृप यहहि, कोऊ मिलहिँ सहाय ॥

यातैं द्रुत दरकुच करि, बुदिय तरफ चलाय ॥ ४० ॥

कुच तीन ३ मरुनृप करिय, चढ्यो तथापि न बुद्ध ॥

तव आलस्य अचेत गिनि, फिरयो कवधहु क्रुद्ध ॥ ४१ ॥

दिल्लीपति फरमान इत, नहिँ मत्रें बुदीस ॥

यातैं अनखं विचारि उर, रची साहडू रीस ॥ ४२ ॥

रूपनगरपुर भूपको, तबही लग्यो दाव ॥

सभरको मरुपति सहित, चरच्यो पिर्सन चंवाच ॥ ४३ ॥

॥ ३१ ॥ १ पूर्वक ॥ ३४ ॥ २ नम्रता सहित ३ सेना सहित ४ हे काका अप
॥ ३५ ॥ ५ बुंदी के एक महल का नाम है जिसमें निरंतर रहना माँडा ॥ ३६ ॥
॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३० ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ॥ वक्रोक्ष करके ॥ ४२ ॥ ७ रूपनगर नामक पुर के
राजा का ८ शुगल ने ९ शुगली रथी ॥ ४३ ॥

[पट्टपात]

रूपनगर पति कहिय सुनहु मम वत्त साह श्रुत ॥
 मरुपति अरु बुंदीस जुरत मिलि उभयभूमंत्र जुत ॥
 कोटापुर पति मरद वाहि बुल्लहु करि अहर ॥
 दै तिंहिं बुंदिय देस प्रवल पिल्लहु तिन उपपर ॥
 कूरम नरेस जयसिंह कहैं छंद लिखाय हिय प्रीतिछकि
 उज्जैन नगर सूबा अपि तत्थ पठावहु नीति तकि ॥४४॥
 सुनत एह दिल्लीस पत्र लिखि भाम बुलायो ॥
 महाराज कहि मिलि रु बलुन सतकार बढायो ॥
 दै तिंहिं बुंदिय देस साह पिल्लयो दोउनपर ॥
 इहिं तब कोटा आय सेन सज्जिय हिन मंगर ॥
 इत साह भेजि आमैर दल जयसिंहहिं इम हुकन दिय ॥
 सूबा सम्हारि उज्जैनपुर करहु जाय हम महर किय ॥४५॥

(दोहा)

सुनि कूरम उज्जैन दिस, करि दरकुंच चलाय ॥
 सूर सबल सैना रहित, बुंदिय निकस्यो आय ॥ ४६ ॥
 संभर सम्भुह जायकै, आन्यों पुरहिं बधारि ॥
 रक्खयो कछुदिन प्रीति रस मंडि विविध मनुहारि ॥४७॥
 अंतेउर कछवाहको, अंतेउर विच आय ॥
 मिलि ननंद भाउज सुदित, रही हृदय हरखाय ॥ ४८ ॥
 उपालंभ कूरम दयो, बुद्ध नरेसहिं तत्थ ॥
 मन्नै नहिं फरमान तुम, किन्नौ बहुत अनर्थ ॥ ४९ ॥

१ कानों में २ पत्र ३ तहां (उज्जैन) ॥ ४४ ॥ ४ भीमसिंह को ५ कोटावाले हस्त
 समय से पहिले केवल राव कहलाते थे अब महाराज की पदवी मिली ६ भेजा
 ७ युद्ध के अर्थ ८ पत्र ॥ ४५ ॥ ९ वह शूर और बलवान् जयसिंह ॥ ४६ ॥ ४७ ॥
 १० कछवाहे का जनाना ११ बुन्दी के जनाने में आया १२ बुधसिंह की स्त्री
 ननंद और जयसिंह की स्त्री भोजाई ॥ ४८ ॥ १३ ओलंभा १४ अनर्थ ॥ ४९ ॥

बादशाह का भीमसिंह को बुदी खिजदना] सप्तमराशि त्रयोविंशमयुज [३०४१]

कोटापुर पति भीम अब, बुदिय लिनन लिखाय ॥

तुम प्रमत्त वह छिद्र तकि, करिहैं विग्रह आय ॥ ५० ॥

यातैं मम मत आहि यह, सजहु धात दुव साम ॥

प्रथित सत्य में बीच परि, कष्टों ब्रह्म निकाम ॥ ५१ ॥

तब प्रमत्त नृप कहिय फिरि, एह गेहकी रारि ॥

घरहीमें हम समुझिहैं, लिन्नी बिबिध बिचारि ॥ ५२ ॥

सक अवर गिखि सत्त ससि १७७०, फगुन द्वादसि रंघाम ॥

कछवाही उर कुमर हुव, भावतगिह स नाम ॥ ५३ ॥

भागिनेयें दिन हरख करि, करिय कुच कछवाह ॥

पहुँचावन बुदीसहू, चढ्यो तुरग दित चाह ॥ ५४ ॥

चढत बाजि प्रासाद सिर, बुल्लयो बिकट उल्लूक ॥

काकन ककन कुक्कुरन, किय फेरडन कूक ॥ ५५ ॥

यह असकुन चिते न चित, चल्लयो चढि चहुवान ॥

कूरमकों पहुँचायकैं, मुररघो अलस अमान ॥ ५६ ॥

नाथाउत नगराजको, गुढा नाम डक गाम ॥

मातुलकुलें चहुवानको, किन्नै तत्थ मुकाम ॥ ५७ ॥

सक अवर रिखि सत्त इक १७७०, फगुन मेचैक भूत १४ ॥

काटापति लौ दैल चढ्यो, बुदीपर मजबूत ॥ ५८ ॥

इति श्री वंशभारकरे महाचम्पूके उत्तरायणो सप्तमराशौ बुन्दी
पतिबुधासिंहचरित्रे हतदिल्लीपतिमोजदीनफूरुकसिपरशाहयवनेन्द्री

॥ ५० ॥ १ मेरी सलाह है १ प्रसिद्ध ॥ ११ ॥ १२ ॥ ३ कृष्णपक्ष की ॥ ५३ ॥ ४
मानजे के ॥ ५४ ॥ ५ घाड़े पर चढते समय ६ महल के ऊपर ७ पक्षि विशेष
८ कुत्तों ने ९ गीदबा [स्यालियों] ने कूक की ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ १० घुर्घासिंह
के मामा के कछवाहा का था ॥ १७ ॥ ११ कृष्णपक्ष की चतुर्दशी १२ सेना
॥ १८ ॥

श्रीवंशभारकर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुदी के रूपति
घुर्घासिंह के चरित्र में दिल्ली के बादशाह मोजदीन को मारकर फूरुकशाह का

भवन १ बुधसिंहद्वारा मृततांति तु मण्डायपदपूर्वा विवाहस्तर्गपञ्चका-
तिक्रमण २ मरुपाजितमिताजमेग्रहतांति हृत्पनगराजराजसिंह
दिल्लीगमन ३ आज्ञापत्रातिक्रमफरकसियरबुधसिंहद्वारा दग्धान-
न्तरकोटापतिभीमसिंहनम्प्रदान ४ आमेगर्धागजयसिंहोज्जयिर्नाप-
दप्रेपणं त्रयोविंशो मयूखः ॥ २३ ॥

आदित एकपट्टयुनरक्षिततमः ॥ २६१ ॥

[पट्टपान]

पौतन चम्मलि छाया घाय बाँझग निमान घन ॥
पक्षर घंट घमंकि बेग हल्लिय टन बाँन ॥
माधानी सब संग भिन्न अवस्तु अनेक भट ॥
सहस्र बीस २०००० हय लज्जि भीम आगु उट्ट उट्ट ॥
निस घटिय दोय २ रहतं निडर लरन घाँ उट्टिय नटे ॥
प्रातहि पुकार बुंदीस प्रति भय निहाल हाजगि भट ॥ १ ॥
सुनत एह बुंदीस चलिय चलि बाँज सुन मन ॥
खबरि इते विच आय धूर् धिन्नो अरि पैतन ॥
तवहि भूषण ^{विन} टार वाम लंघि असतोन्ती भूधर ॥
आय सुरथपुर करिय रक्तदंता दग्गन वर ॥
गजमुखह पुगेहित कहिय तव मंतो जावन लरन रन ॥
भीमसौं भिंठि दिखगय भुज नगर द्वार रचिहों मगन ॥ २ ॥

बादशाह होना १ बुधसिंह के अत्यन्त आलस्य के कारण मणाय के राजा की
पुत्री से विवाह करने में पाँच लगनों को चुकाना २ नारवाड़ के राजा अजि-
तसिंह का अजमेर लेना और खपनगर के राजा राजसिंह का अजितसिंह के
विरुद्ध दिल्ली जाना ३ फरमान नहीं झूलने के कारण फरकसियर का बुधसिं-
ह से बुंदी छीनकर कोटा के राजा भीमसिंह को देना ४ आमेर के राजा जयसिंह
को उज्जैन के सूबे पर भेजने का तेईसवाँ २३ मयूख समाप्त हुआ और आ-
आदि से दो सौ २६१ मयूख हुए ॥

१ नावों से घासल नदी को छाकर मेघ के २ समान नगारे घजे ३ हाथी ४
माधोसिंहोत हाडे ५ बिना मार्ग ॥ १ ॥ ६ मन का मूर्ख ७ पुर द असतोन्ती ना-

यह कहि गजमुख आय प्रियसि पच्छिम पुर तोरन ॥
 दक्खिन तोरन निज निकेत तँहँ जाय रच्यो रन ॥
 भरि भरि बाहत तुपक पिक्खि नृप भीम कहाई ॥
 दोउन २ कैँ तुम बर्य मिलहु करि बध लराई ॥
 गजमुखहु पाय तब लोभ गति मर्द जाय भीमहिँ मिल्यो ॥
 पकराय तवहिँ खिन्नो निँपुन गुरुतामद तब द्विज गिल्यो ॥३॥
 (दोहा)

गजमुखको पकराय डम, तोरन अँररन फारि ॥
 आय तखत कोटेस अगि, बुदिय अमल विधारि ॥ ४ ॥
 इत नृपसों सालम कह्यो, मग्न उचित इहिँ जुद्ध ॥
 जो न रुचत ता लरहिँ डम, हमहिँ सिक्ख अब सुद्ध ॥ ५ ॥
 यह कहि सज्ज्यो जाय गढ, निज पुर करउर नाम ॥
 नृप सु सुगथपुरतें मुगि, गो मेवारन गाम ॥ ६ ॥
 मेवारहिँ पुनि दाहिने, करि गो मालव देस ॥
 सालकें भिट्यो जाय तँहँ, पुर आमैर नरेस ॥ ७ ॥
 इहिँ अतर उनीयांग पति, नरुववस सग्राम ॥
 नैननैंगरके ग्राम कति, दब्बे तकत कुकाम ॥ ८ ॥
 कैँरातें गजमुखहु कढि, गो मालव नृप पास ॥
 तवहिँ अनादर तरँजि नृप, अतर भो जु उदास ॥ ९ ॥
 छिन्नि अखिले अधिकार तस, द्विज सिवदासहिँ विद्ध ॥
 कउल मग्न गुरुसिर कहँ, कोप विगारि अब किद्ध ॥ १० ॥

म पर्वत लाघकर ॥ २ ॥ १ शहर के द्वार में २ अपना घर ३ नमस्कार करने योग्य ४ भूर्ख ५ चतुर भीमसिंह ने ॥ १ ॥ पुर के द्वार के ७ किचाइों को तोड़-
 कर ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ८ मेवाह क गामों मे ॥ १ ॥ ९ शाला [जयसिंह] से मिछा
 ॥ ७ ॥ १० छियारा का पति ११ नरुका सग्रामसिंह १२ मैणवा नगर के ॥ ॥
 १३ कैद से १४ धमकाकर ॥ ८ ॥ १५ सय १६ कोष “यहा कोष की अधिकता दि-
 खाने को एकार्य बाजी दो शब्दों का प्रयोग है” या कहर का अर्थ दुश्मन है

कोटापति बुंदिय मुलक, इत समस्त अपनाय ॥
 अनायत करउर समुक्ति, घेन्थो सालस जाय ॥ ११ ॥
 बुंदियपुर अवरोधतैं, रानिय विपति दिरत ॥
 इक १ बेघम आमैर इक १, पुर भनाय इक १ पत्त ॥ १२ ॥
 अवर लोक अवरोधके, विभव सचिव तिहिं वार ॥
 सब बेघमपुर संचरे, देवसिंहके द्वार ॥ १३ ॥
 खरच रूपये अठसत ८००, अंगपि गित्य निन्ह एव ॥
 इक १ हायन बुंदिय विभव, दुमर निवाह्यो देव ॥ १४ ॥
 इत नृप सालव जायकैं, लिन्नैं तुरग अनाय ॥
 बेघमपति प्रति मोलकी, हुंडिय दिन्न पढाय ॥ १५ ॥
 देवसिंह वह बंघि दैल, गिनि गगपन दगद्वार ॥
 दिन्नी हय सोदागन, सुदा तीस हजार ३०००० ॥ १६ ॥
 विपति बीच इम बंदगी, चुंदाउत किय चाहि ॥
 अप्पन सिर ऋन किय अनिक, बुंदिय विभव निवाहि ॥ १७ ॥
 इत करउरपुर भीम नृप, रह्यो विटि अनरत ॥
 अठारह ८१ अंह अंकुशें, सुग्यो न सालस गत ॥ १८ ॥
 पल पल बिच गोलन परिग, प्राकारैं बिच पथ ॥
 सब करउर तोपन सिलागि, हुव ज्ञासूतैं हरिमंथ ॥ १९ ॥
 मुहुकमकुल उमराव इक, सुखसिंह चहुवान ॥
 पुत्रहिं दै घर विभव पद, किय कसायें परिधान ॥ २० ॥
 वह अनिच्छि बिचरत फिरत, कोटा दैल बिच आय ॥

॥ १० ॥ १ स्वतंत्र ॥ ११ ॥ २ जनाना से ३ विरक्त होकर ॥ १२ ॥ १३ ॥
 ४ देकर तिनको धारण किए (रक्खे) ५ एक वर्ष ॥ १४ ॥ ६ कुछ आमद
 नहीं तो भी ॥ १५ ॥ ७ पत्र ८ घोड़ों के सोदागरों का ॥ १६ ॥ १७ ॥ ९ युद्ध
 में प्रीति करके १० अठारह दिन ११ खड़ा रहा ॥ १८ ॥ ११ कोटों से मार्ग होकर
 १२ भाड़ में १३ चने हावें ऐसे होगया ॥ १९ ॥ १५ अगवा १६ दल ॥ २० ॥ १७
 इच्छा रतिह १८ कोटा की सेना में आया

भीमसिंहका पुत्री नहीं छोड़ना] सप्तपराशि-चतुर्विंशत्युख [१०४५]

मिलि गदिय तजि भीम नृप, दयो ताहि बैठाय ॥ २१ ॥

कह्यो भीम करजोरि तग, मो सिर करहु निवेम ॥

सुखसिंहहु यह सुनि कह्यो, चढि घरजाहु नरेस ॥ २२ ॥

तवहि कहैं सुखसिंहकैं, वह चढि बुदिय आय ॥

नतो कितो करउर नगर, लेतो हुँतहि छुगय ॥ २३ ॥

(पादाकुलकम्)

कोटापति सुखसिंह कयिते किय, जान्यो लोकन सालम जितिय ।

कूरमपति इत गत विचारयो, जामय बुदिय हीन निहारयो ॥ २४ ॥

अमर रानके पट्ट उदैपुर, लसत रान संग्राम धरम धुरे ॥

तिहि प्रति दलत जयसिंह पठायो, रच कर सहि सतकार सिवायो ॥ २५ ॥

हे नृप तुम भीमहि रघुभावहु, बुद्धहि बुदिय देस दिवावहु ॥

यह गोसिर अँगान करहु अव, तुमरो हुकम भीम स्वीकृत सब ॥ २६ ॥

तवहि गन यह पल विचारयो, कूरमपति सकाच सम्हारयो ॥

निज काका तखतेस बुलायो, बुदिय भीम समीप पठायो ॥ २७ ॥

तवहि आय तखतेम भीम प्रति, अखिय बिबिध रानकी विन्नति ॥

बुदिय तजि निज गेह पधारहु, मो सिर यह अँगान विचारहु ॥ २८ ॥

यह सुनि भीम कह्यो धरि गव्हहि, बुध नृपतैं बुदिय नहि दव्हहि ॥

जमी समस्त माहकी जानों, तजिहों तो वहेहैं तुरकानों ॥ २९ ॥

यह कहि मिदख दई तखतेसहि, तजत भीम नहि बुदिय देसहि ॥

तव देसहि सालम लागि लुट्टन, कोटा पति थानन करि कुट्टन ॥ ३० ॥

[दोहा]

मेवावन सामतहर, इन छहून गदितेग ॥

॥ २१ ॥ १ आजा ॥ २२ ॥ २ शीघ्र ही ॥ २३ ॥ ३ कहना किया और लोगों ने जाना कि सालमसिंह जीत गया ॥ २४ ॥ ४ महाराणा अमरसिंह के ५ पत्र ॥ २५ ॥ ६ स्वीकार (संजूर) करेगा ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ७ गर्व ८ यवनों का राज्य ९ पुन्दी के देश को सालमसिंह लूटने लगा ॥ ३० ॥

बुंदीपट्टि पुर जैतगढ, लुट्टिय आय सवेग ॥ ३१ ॥

तिन पर पठ्यो भीम नृप, धाडभ्रात भगवान ॥

वाँनै जाय धनावपुर, किन्नों हद घेसमान ॥ ३२ ॥

मेवावत सामंत हर, मरे बहुत करि जंग ॥

धाडभ्रात भगवानके, घाय बिलेगगे अग ॥ ३३ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तगायने सप्तगणों बुन्दीप-
तिबुधसिंहचरित्रे कोटामहारावभीमसिंहबुन्दीहरण १ बुन्दीन्द-
बुधसिंहजयसिंहनृपान्तिकगालवगमन २ वेघमरावदेवसिंहबुन्दी
कुटुम्बपालन ३ सुखसिंहाभिवदुपतिकथनमहारावभीमसिंह-
करवरनगरप्राप्त्युत्थापन ४ जयसिंहनेखमहाराणासंग्रामसिंह-
स्य बुन्दीमुक्त्यर्थमहारावभीमसिंहमशानतदगर्वाकमरावगणनं चतु-
र्विंशो मयूखः ॥ २४ ॥

आदितो द्विपद्युत्तगदिगननसः ॥ २६२ ॥

(पञ्चतिका)

संग्राम रान सौंदर कहाय, सो भीम नाहिँ मन्निम सुभाय ॥

तकसीर तास मेटन विचारि, कांटेम उदय पत्तन पधारि ॥१॥

सीसोदभिंदि संग्राम रान, दिय भीम तथ्य कछुदिन मितान ॥

॥ ३१ ॥ १ युद्ध ॥ ३२ ॥ २ सामंतसिंह के बगवाले ३ विशेष करके बाव
लगे ॥ ३३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तगायण के सप्तम राजि में बुन्दी के भूपति बुध-
सिंह के चरित्र में, कोटा के महाराव भीमसिंह का बुन्दी छीनना १ बुन्दी के
रावराजा बुधसिंह का राजा जयसिंह के पास सालवे में जाना २ वेघम के
राव देवसिंह का बुन्दी के कुटुम्ब की पालना करना ३ महाराव भीमसिंह का
सुखसिंह नामक हाडा सन्ध्यासी के कहने से करवर नगर का घेरा उठाना
४ जयसिंह के लिखने से महाराणा संग्रामसिंह का बुन्दी छोड़ने के अर्थ महा-
राव भीमसिंह को कहलाना और भीमसिंह के अस्वीकार करने का चौवी-
सवां २४ मयूख सलास छुआ और आदि से दोसौ वासठ २६२ मयूख छुए ॥
४ आदर सहित ५ उदयपुर ॥ १ ॥ ६ मुकास

राठोर जयसिंह का सालम मिह पर जाना] मज्जमराशि पचविंशमध्याय (३०४९)

* अट्टाल सीम इक दीह आय, बैठे दुःखूप उपगिखद बनाय ॥ २ ॥
 प्रामाद तामके दृष्ट पास, इक नटिय आय किन्नो सुतमास ॥
 कोटस कुजस करि कहि कुबत्त, बुल्लिय सालम जस चढि वत्त ॥ ३ ॥
 सो सुनत भीम कर मुच्छ घल्लि, लौ सिक्ख आय बुदय उम्फलि ॥
 रठोर सुभट जयसिंह नाम, सालम मिह पिल्लयो जय सकांम ॥ ४ ॥
 दल मड्डमवीम २००००० ल तब दुँरुह, जयमिह विनि रसजि तोपजूह
 करउ सु जाय विटिय मजोर, इक शमास रहिय घमगान धार ॥ ५ ॥
 करउ रजपूतन डग उंपत, मर पूर संगधि जिम सोम दत ॥
 जयमिह पुर सु तुटत नजानि, मन साधि श्रय सामहि प्रमानि ॥ ६ ॥
 सालम ममाप लिमि देल पठाग, अब माम हगहि तुम मिलहु आय ॥
 अरु तुनरे सुत मा हे अगेय, मम दुहता सगपन ह बिधय ॥ ७ ॥
 सालम कहाय तन इन अ ठाक, पुरता न अदर मिलन ठाक ॥
 मन्नी यहैहु रठोर तथ, पुर द्वार गगो लो तुच्छ गथ ॥ ८ ॥
 उततै चढि मातम मदेव आय, रठार लिपउ त्रार बुलाग ॥
 सालम सु मिलयो जालम जैनून, हव घटिय यद बैठक दुहून ॥ ९ ॥

(राधा)

वीममहं २००००० दलतै वर्ये, औमो करउ हो न ॥

यहै नजानै क्यो मिल्या, मीहै कबध मि या न ॥ १० ॥

सालम सुत पगतापसो, राथै सुता सबय ॥

करि बुदिय गो कुचकरि, सु जयसिंह तह संधै ॥ ११ ॥

* जतन जगदीश्वर का फल ॥ २० ॥ उत्तीमहल के नीच ॥ ११ ॥ सुख पर दाथ
 रथ का रथ कर जय की कामना सहित ॥ १२ ॥ फानना से स गगना में आवे
 एसा ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ सप्त ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥
 ८ साम वपाय ॥ ९ ॥ १० पत्र ॥ ११ ॥ १२ फाटा की सना में १३ जग का द्वार
 के भीतर मिलना ठीक है ' पात्र निरुद्ध में पकड़ ला का अप था इसका
 रण' ॥ ८ ॥ १२ सना सहित १३ जुलम करन बाल काथ से ॥ ९ ॥ १४ काय-
 र ॥ १० ॥ १५ अपनी (जयसिंह राठाड की) पुत्री का १६ विजय करन का म-

जायो जुगियगमको, अंकुश कगउग एम ॥
 जेर न दोरह बग भो, भावी मिटै सु केम ॥ १२ ॥
 इत कूगम कहि मंगमहि, उज्जडनी हम जात ॥
 जोलां तुम अथहि रहहु, हम करिहैं भुव हात ॥ १३ ॥
 यह कहि वह उज्जैन गो, सूचापति सगसाय ॥
 गाम नाम कायथिया, रहयो सु बुंदिय राय ॥ १४ ॥

(पटपात्)

इत मरुपति निज भटन पुच्छि लखि ममय मंत्र क्रिय ॥
 मिलि अप्पन कूगमन अगग मंगगपुर लुटिय ॥
 अब कूगम पनि फुटि भयो सूचा मिर स्वामी ॥
 एकाकी अप्पनहि रहे दिल्लस हगर्मा ॥
 अवर न उपाय सुज्जन अबहि उचित आहि दिल्लिय गमन ॥
 सुंदर विवाहि साहहि सुता रहैं सदा सिर कूगमन ॥ १५ ॥

(दोहा)

अमर लिखार्ड उदय पुर, मैटि रीति वह सुद्ध ॥
 पुलिन संटै पहुमि पुनि, लग्गो रक्खन लुद्ध ॥ १६ ॥
 निज तनया तब मगले, यह कुमंत्र उपजाय ॥
 अजितमिह दिल्लिय गयो, पग्यो साहके पाय ॥ १७ ॥
 तब हिंदुन जिम तारैकी, सुता विवाहयो माह ॥
 अजितमिहको इक्कठ, किन्नै नाफ गुनाह ॥ १८ ॥
 साह बनायो सय्यदन, यार्तै बे^{१२} हमगोर ॥
 हुसनअली इच्छिन करै, बाहियेनात्र वजीर ॥ १९ ॥

तिज्ञा छोड कर ॥ ११ ॥ १ उदय [खडा] होवर २ आर्धान (नही झुका) ॥ १० ॥
 ३ बुधमिह को ॥ १३ ॥ १४ ॥ ४ अकेले ५ बादशाह को बेटी पगना कर ६
 कलब-हों के अस्तक पर रहैं ॥ १५ ॥ ७ महाराणा अमरमिह ने बादशाहों को
 पुत्री नहीं देने की रीति लिखार्ड थी उनको सेठ क ८ खूर्च ने ९ बदले में १०
 कोर्मा ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ उसको ॥ १८ ॥ १९ सय्यद १३ चाहा हुआ (चाहे सो) करै

तिनसों माहहु दबि रहन, सम्मुह सजत न मत्थ ॥
 हुसनअलीके हुकमकों, मिटन कोन समत्थ ॥ २० ॥
 हुसनअली काह मुकलपो, यह मरु भूपति पास ॥
 सभर पुग भाई हर्नै, यैर बिभंगों तास ॥ २१ ॥
 यह सुनि तब मरुपति गयो, हुसनअलीके गेह ॥
 करन जोरि मरु साय कारि, अकखी निहिं पति एह ॥ २२ ॥
 में करम बरज्यो बहून, सौहस तदपि सम्हारि ॥
 जयभिंहहि पुग लुट्टिगों, आत रावो मारि ॥ २३ ॥
 सपन ल्यो कणि इन मिला, सपनदमौ मरुमोरै ॥
 सपन तन मार्गस गिन्यो, जयसिंहहि बरजार ॥ २४ ॥
 जयनिहहु यह मन सुन्यो, मरुपति सपनद मेल ॥
 तब उज्जडनी नीनि तकि, अकुगि रहिय अठैल ॥ २५ ॥
 डहिं विव दक्खि देम की, पता आनि पुकार ॥
 मगहटे लुट्टा मुलक, करि करि विविध बिगार ॥ २६ ॥

(पट्पात)

हुसनअली सपनद नवाब दक्खिन पुकार लहि ॥
 पुग अचगाधाद चल्पा दरकुच बिजय चहि ॥
 सारधलकव १५००००तुरग सग सत दोय २००तोप सजि ॥
 आत घन जिम उमहि बब निकैरब तनित बजि ॥
 उज्जैन निकट आयां जवाहि कूगमपति इक नीति करि ॥
 पैतीस ३५कोस दरकुच गो दुलहनि व्याहनवैयाज दौरै ॥ २७ ॥

(दोहा)

॥ १० ॥ २० ॥ १ उज्जैन की मागना हु ॥ २१ ॥ २२ ॥ २ हठ से तोना ॥ २३ ॥
 ४ फूरे सोगन ५ चारवाह का मुकट ६ अचगाध सहित ॥ २४ ॥ ७ नहीं छिरी
 ऐमा हाकर ॥ २० ॥ २५ ॥ ८ यहाँ अजहल स्वार्थी लक्षणा से सपन जानने
 चाहिये ९ नगारों का समूह १० मघ की गर्जना के समान बज कर ११ यिथ ह
 के मिछ से रह कर ॥ २० ॥

सा लि३५कोस उज्जैनतैं, इक चहुवानन गाम् ॥
 निन ननया सगपन कियउ, कूरमसों सह सौम ॥ २८ ॥
 वह सगपन मन चिनि अरु, सद्यद गिनि बगजोर ॥
 बिबुहि लगन व्याहन गयो, कूरम कुल सिरमोर ॥ २९ ॥
 गीर्वाणभापा ॥

वंशस्थः ॥

लग्नं विनोद्वाहचिकीर्षया गतो नीतिरथ आमेरपुगे नरेश्वरः ॥
 तत्तरयपत्नीं खलु चाहवाणजा पलंकपाया बलवान्यधारयत् ॥ ३० ॥
 प्राकृती मिश्रितभापा ॥

(दोहा)

कूरम हों परिनाय डैम, सद्यद दक्खिन पैत ॥
 नववर ता उज्जैनपुर, आपो पगति उमत्त ॥ ३१ ॥

[पट्पात]

नववर आय अवंति जानि सद्यद दक्खिन गैत ॥
 लिखि भिन्नति मुक्कलिय साह फूरक हजूर तत ॥
 बुंदोपति आयैत रवाम आयम लुप्यो किन ॥
 आलमके अतिसोक नाहिं फरमान लये इन ॥
 बुंदिय लिखाय बखमहु इनहिं सिग सब हुकम चढायहै ॥
 फरमान दे रु बुल्लहु बुधहिं अब हजूर हुत आयहे ॥ ३२ ॥

दोहा ॥

यह सुनि साह नबाब डक, नाम दलावरखान ॥

१ मिलाप के साथ ॥ २८ ॥ २० ॥ नीति में स्थित, आमेर का राजा विना लग्न ही विवाह की इच्छा से गया इसकारण से उसकी स्त्री, चहुवाण की पुत्री ने निश्चय ही ज्ञान की चूड़िये धारण कीं, अर्थात् विना लग्न अचानक विवाह ने के कारण दांत का छूड़ा उपस्थित नहीं हो सका ॥ ३० ॥ २८ छवाहे को ३ इसप्रकार विना लग्न ही व्याह कर गया ९ नवान वर [जयसिंह] ॥ ३१ ॥ ६ गया हुआ ७ आपके आधीन है ८ मालिक का हुकुम किसने लोपा ॥ ३२ ॥

पादशाहका बुधसिंहको उदी दता ममनराशि पयपिंशमयुग्म [३०५१]

लिखित पटा जुन मुक्कल्पो, करम अरज प्रमाने ॥ ३३ ॥

आप दत्तावरखान तव कूरम सचिव समेत ॥

बुदी लो द्रुत भीमसो, अर्प्पा इनहि सहेत ॥ ३४ ॥

प्रथम नाद किय खालसे, बुद्धि तदनु समप्ति ॥

कोटाके उठवायके, यानाँ इन निज थप्ति ॥ ३५ ॥

सुता भनाय अप्रीमकी, रानी जो गृहेगि ॥

सुता नाम सूरज कुमार, हुन ताक गुनगोरि ॥ ३६ ॥

सक अरु हय सत्त इक १७७०, ग्रमाँ रु फगुन मास ॥

कोटापति बुदियलई, गिल्या सु देजर घास ॥ ३७ ॥

सक जामल हय सत्त इक १७७२, अगहन दादास रंघाम ॥

आई पुनि बुदीमके, वमधा कुलटा वाम ॥ ३८ ॥

बुद्धि सचिव बुर्गसके, फेरि बुद्ध नृप आन ॥

वै बुदी दिदिय गयो, जवन दलावरखान ॥ ३९ ॥

अवर देन बुदीसके, आयो सबहि बहोरि ॥

भीम नगर वागै मऊ, द्वे परगना न छोरि ॥ ४० ॥

तत्पनतर फगमान पुनि, पठये साह जरूर ॥

बुद्धिगिह जयसिंह नृप, बुद्धे उभयर हजूर ॥ ४१ ॥

(पटपात)

फगमानन हेत केलि सज्यो कूरम नरेस जब ॥

बुदीमहि बुलवाय कह्यो औहूत उभयरअव ॥

ए विरहबहु फगमान चलहु दिल्ली हम सत्य ॥

लई माह गिकाय मुकुट लई अरि मर्य ॥

१ माफिक ॥ १३ ॥ २ जयसिंह के कामदार सहित ॥ १४ ॥ ३० ॥ ३ पुत्री
॥ ३६ ॥ ४ अमावास्या ५ कुर्जन (शत्रु) ने ॥ १७ ॥ ५ कृष्णपक्ष की ७ खी ॥ ३८ ॥
॥ ३९ ॥ ८ भीमसिंह न ॥ ४० ॥ ९ जिस पीछ ॥ ४१ ॥ १० शीघ ११ दोनों को
पुछाये हैं १२ देखो १३ शत्रुओं के मस्तक पर

कूगम नगरेस यह कहि चढ्यो बंशीपति तदपि न चढत ॥
 आलस अचेत मतिमंद अति पल पल प्रति चलिहैं पढत ४
 सुनत एह जयसिंह आमुं बुंदिय दल आयो ॥
 जामिप बुद्धहिं कहिय साला मजि संद सिवाया ॥
 अब नृजान आरुहहु चलहिं धरि खंध भृत्य हम ॥
 निज अमुं सपथ दिवाय एह आकषय नृप कूगम ॥
 संकोच तास चहुवान तव चढि तरंग तिन संग हुव ॥
 इहिं रीति छोरि मालव अवनिदल्लिय चलिअ भूपदुव २१४३

[दोहा]

कहि मुकुंद दर उत्तरे, चम्पलि पटन ओर ॥
 लकखैगिय गिरि लंधिकै, आय ग्राम अनघोर ॥ ४४ ॥
 कछुदिन तथ मुकाम करि, चंग मुकलि हित चाय ॥
 संभर निजउमराव सब, दे दैल लित्र बुलाय ॥ ४५ ॥
 प्रथम इंद्रसल्लोत भट, नगर इंद्रगढ नाह ॥
 मेघ सुवन छित्तर मरद, आयो अधिक उछाह ॥ ४६ ॥
 छित्तरसौं जयसिंह नृप, मिल्यो न बर्थन घल्लि ॥
 इन अकखी तुम आसई, हम मिलिहे अब हल्लि ॥ ४७ ॥
 हम कहि कूगमसौं मिल्यो, दे पय गह्विय सीस ॥
 इक सूपन अनुसरयो, अनखि इंद्रगढ ईस ॥ ४८ ॥
 करउरपति आयो तनूँ, मिल्यो उरर उद्योत ॥
 सालम जुग्गीराम सुव, भट मुहुकमसिंहोत ॥ ४९ ॥
 रन कगउर पचि पचि रहयो, सु नृप भीम हत संध ॥

१ तोर्मा २ मंड बुद्धिबाला ॥ ४२ ॥ ३ रजाघ ४ सेना में ५ बहिन
 पनि बुधसिंह में ६ साले ने ७ पालखा पर चढो ८ अपने प्राण का ९ सौ
 गन ॥ ४१ ॥ ४४ ॥ १० हलकार भेज कर ११ पत्र देकर ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ १२ हाथ
 बढा कर नहीं थिला १३ रंगो ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ १४ जिस पीछे १५ उरड (घमेंड) प्र
 काश करके १६ पुत्री ॥ ४९ ॥ १७ प्रतिज्ञा छोड कर

यातें दोउंन अद्वाधो, सालाम अप्पल्लि स्वय ॥ ५० ॥

सुभट वैरिसल्लोत सजि, नगर पलोरी नाह,
जैतसिंह जाजय जय्या, आयो सरम सिपाह ॥ ५१ ॥

वैरिसल्ल कुल उद्भूत, दृष्ट्वा गत तमर्गात् ॥

बलवनपति आपो बहुभि, अभयमिह अति बीर ॥ ५२ ॥

पुर ग्वातोली पति प्रबल, अमरसिंह आभंगान ॥

इंद्रभिह कुल उद्गम, चाप मिल्यो चहुवान ॥ ५३ ॥

मिल्यो मां ने उद्धत गुमर, चडं समर चहुवान ॥

सेगसिंह सामत हग, भजनेगी पुर भान ॥ ५४ ॥

नाथाउत नगराजह, नगर गुढाको नाह,

पुनि दूजो निम्मान पति, आयो मिलन उछाह ॥ ५५ ॥

सबल भिजे उमगात्र सब, उम ग्वार्मा ढिग आय ॥

सद्यहि मिगंहे सूरपन, जयमिहहु जम गाय ॥ ५६ ॥

दोहा-सवन कह्या िल्लीस दिप, बुदिप लिखित लिखाय ॥

तं कर्मणः पित्र्यै ह्यगृह, तत्र दनं दिन्नं तृत्वाय ॥ ५७ ॥

पिण्डं पटा मन्त्रेण कथया, कूरम नृपतिं सिगाहि ॥

मऊ नगर बागौं मुलक, ए न पटाविच आदि ॥ ५८ ॥

कूगम नृप भुंगिकाय काहि, दुव २ तम दिहिय जात ॥

अथ लक्ष्मि कान्ति माहर्षी, गेमं मुल्लक वसु ज्ञातं ॥ ५९ ॥

इमं काहिं श्रवणं । सक्खरं, चत्त उभय नृप तथै ॥

सालमागह रु जनमा, मुभट लपदुव उ सन्थ ॥ ६० ॥

इमं दुयं २ नृप मासिगपुर, दग्कुचन चाल आये ॥

जामिप सलिक प्रात जुत, गह कल्लुक दिन गय ॥ ६१ ॥

नाम ॥ १३ ॥ २ यद् मे भवतु ॥ १४ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

१ यात्री का देग ७ धन का समूह ॥ ५० ॥ ८ तदा स ॥ ६० ॥ ९ महिनाई

और साला १० राजा

तैंहँ करउग रन गीभा तकि, सात्वत हित नृपसींग ॥
 नैननैग को परगनाँ, सब पद्यों बुदीन ॥ ६७ ॥
 सात्वतके डकन मई, पटुनि प्रपे नवतदस्य ॥ ६८ ॥
 कातिकन तव योद्ध कदयो, वनि कवटु निजवि ॥ ६९ ॥
 ॥ मुकुन्ददास ॥

करी इम सात्वतको वसुगींग, गये पुनि विजि ॥ ६८ ॥
 उभै हित रंग गये पुनि आगे, गयी नृप ॥ ६९ ॥
 अनामय दोउनका जननेस, गिनाय ॥ ७० ॥
 उभै २ नृप अपन अपन जोति, गिनाय ॥ ७१ ॥
 उभै २ भट गालन जेत मवत्य, कुलायउ ॥ ७२ ॥
 नकीवनकी इतगींग उभलत, गयी नृप ॥ ७३ ॥
 दई पुनि सात्वतमवन गिनाय, गयी नृप ॥ ७४ ॥
 रहैं इम विजित ॥ ७५ ॥ नरनाद, गयी नृप ॥ ७६ ॥
 लयो नृप कूरम साह गिनाय, प्रसन्न को ॥ ७७ ॥
 मुमाहव सात्वतको करि गुहैं, पठावउ ॥ ७८ ॥
 सभा दिन डक वडी रनि साह, कुलायउ ॥ ७९ ॥
 गयो जयमिहद कूरम डेय, गयो नृप ॥ ८० ॥
 गरबवत साहलके समुभैत, गयो सरु डेय ॥ ८१ ॥
 गयो नृप संभैर भीम मदंध, गयो पुनि ॥ ८२ ॥
 गये इम हिंदुव मिच्छ अरोसैं, गयो पहिलें तैंहें ॥ ८३ ॥
 सत्ताम करी कसि पहिलें डलत, लई नृप ॥ ८४ ॥
 ॥ ६१ ॥ १ नैगवा नगर का ॥ ६२ ॥ २ जयों की आनवरी की ३ जय ॥ ६३ ॥
 ४ आम दरबार में ॥ ६४ ॥ ५ कुशलता ६ हंसते हुए छोटे से ७ स्वान पर ८
 प्रशंसा पाकर ॥ ६९ ॥ ९ समर्थ १० रोव बढ़ानेवाली ११ डाल पर ॥ ७० ॥
 ॥ ७१ ॥ १२ सूर्य (बुधसिंह) ने ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ १३ बादशाह का सख्ता होने से
 घमंड करता हुआ १४ अजितमिह १५ चट्टवाण जीतनिह १६ स्वप्नगर का १७
 राठोक ॥ ७० ॥ १७ सव १८ बुधसिंह १९ कदारी ॥ ७१ ॥

बादशाहमे संग्रामसिंहराजाकी बानी] सप्तमराशि-पञ्चमिंशमयुक्त [१०५७]

गये तदनंतर सर्वहि आम, सजी हित पूव नम्प्र सलाम ॥
बिलव कछू करि आयउ भीम, तकपो छिय हेत रची तसलीम ॥ ७२ ॥
सिरे लखि बुद्धहिँ मुद्ध गिमाय, जग्यां मनमहिँ सु कपो मिटिजाप ॥
दर्ई उठि साह समस्तन सिकव, रही तैंहुँ बुद्ध बलापति तिकख ७३
(शुद्धप्राकृतभाषा)

(मालिनी)

इय उअयउगआं तत्थ सद्धामरगणा,
शाग्वडजयभिह पेमिअ गोहपत्तम् ॥
जइ कुणाड पमाअ फूआ तुव्भ धीए,
वसड शाणु तओ मे पट्टण चित्तऊडम् ॥ ७४ ॥
शायमयजयसिंहो त कखु दहूणा पण्णा,
समयवत्तविण्णो शाइ एकत्तुबुद्धिम् ॥
दहवडहि गयो सो साहआमम्मि कुम्भो,
कहिउ जवणाणाह फूअं राणावत्तम् ॥ ७५ ॥
॥ प्रापोदेरीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

(पदपात)

१ जिस पीर सय आम दरबार मे गय २ आदाब ॥ ७२ ॥ ७३ ॥

संस्कृत अनुवाद ॥

इत उदात्तपुत्रात् तत्र संग्रामराजानरपतिजयसिंह प्रेषित स्नहपत्रम् ॥
यदि करोति प्रसाद फूरकग्राह कृपा करे तो निरखय ही जिसोइ यस जावै ७४ ॥
नगम ॥ यमिह ते पला दृष्ट्यापणं समगयलविषेकी नीत्वा एकत्र बुद्धिम् ॥
शीघ्र गेतोमी शाहकार्ये कूर्म कथयितुं यरगनाथफूरक राजबानीम् ॥ ७५ ॥

॥ आधानुवाद ॥

इवा राणा संग्रामसिंह ने वहा राजा जगसिंह को प्रीति पत्र भेजा कि जो
मुम्हारी बुद्धि मे फूरकग्राह कृपा करे तो निरखय ही जिसोइ यस जावै ७४ ॥
यस समय को और बल को जाननवाला जयसिंह नीति के पत्र को निरखय
हय कर बुद्धि को एकत्र करके बादशाह के कार्य में शीघ्र वह कछवाहा फूर
यार्ता कहने को गया ॥ ७५ ॥

अगँ अकबर साह लिपउ चितोर दुग्ग वर ॥
 पच्छी अपिग बहुगि रह्यो तवने वह उज्जर ॥
 साह हुतम बिनु गन जाय समुद बस किम ॥
 यातै पठई अथ अरज संग्रामभिंह डम ॥
 अप्पहु निदेस बसवाय अब चित्रकूट हमहू रई ॥
 सतपंच५०० सुभट पखैत मम काथनकरो तँहँ निव्वहँ ७६

[दोहा]

नजरि द्रव्य कगिहै किता, यहै कही जब साह ॥
 तबहि दम्भ त्रयलक्ष ३००००० मित, अकखे कूगमनाह ७७

(पट्टपात)

सुनि सु रान मुकलिय नजरि हुंडी तय ३ लक्षन ॥
 कूगम किन्नी नजरि साह पिकखा सु मोद मन ॥
 लिपउ पाट लिखवाय रही महुगहि अवममह ॥
 अरज डक पुनि कगिय नगर आमेर नरेमह ॥
 ब्रुभभिंह भीम बिग्रह बिरचि छिज्जहिँ लरि लरि परमपर ॥
 दोउन मिलाय अब अप्प हुन मेटि बइर मंडहु महरा ७८ ॥

[दोहा]

सुनत एह काहेसभौ, दिन्नी साह कहाय ॥
 करहु मेल बुदास मन, जयसिंहह डिग जाय ७९ ॥
 जा तुम छिन्न्या हुकम लहि, सो सब पछो देहु ॥
 उभयभ्रात एकत जुगि, सुनय साम काग लेहु ८० ॥

(दहिर्गातम्)

बरजोर आयस साहका सुनि भीम भा जुन धी भई ॥

१ अन्य २ स्वतंत्र ३ कहना करो तहां ॥ ७६ ॥ ४ कउचाने के पालन ॥ ७७ ॥
 मुहर लगाना ५ बाकी रहा ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ६ चलवान् आजा ७ भय
 सहित ८ बुद्धि

जयसिंहके धन रूप हेग्न जाय विन्नति मडई ॥

कछवाह कहि बागौ मरु अब छोगि इन लिखि नीजिये ॥

बुदापमौ माल मोमकैं इकथाल भाजन कीजिये ॥ ८१ ॥

तब माह ओ कछवाह दरमन मत्र इकन जानिकैं ॥

॥ काटेम यह तजि देस गनौ लेख कगार ठानिकैं ॥

करि असेन इकशह थाल आ भूपाल त्रय दिन बिन्दरयो ॥

नृप भाम उपर योग ओ मनमहि दाख भयो ज यो ॥ ८२ ॥

सक तीन हय गिख डटु ७७३ मैं यह वत्त तीननकैं भइ ॥

॥ इहि बीच जट्टनका पुकार अपार दिल्लिय उन्नई ॥

इक नेर थूहनि ईम जट्ट सु नाम चूडामनि रहैं ॥

धन जोर ओ मन जार जा रन जोर फाजन निव्वहैं ॥ ८३ ॥

तब माह जट्ट पुकारपै कछवाह भूपति पिल्लयो ॥

बुदीम बिनु सन सग नृप करि मेन संचय ठिल्लयो ॥

इन जाय तोपन माल कैं राच जाल थूहनि बिटई ॥

इत माह बुदिय नाह बुल्लि र रैन वत्त सु पुन्छई ॥ ८४ ॥

बुधमिह रान पठाय विन्नति चित्रकूट बसावहीं ॥

किय भेट दम्भ त्रिलख ३००००० या अपनो निदेम उठावहीं ॥

नयैमद हह नगिद यो सुनि कुम्भ कानि हु नौकरा ॥

जयमिह उक्त प्रपचैं जानत हू यह कथ उच्चरि ॥ ८५ ॥

वह दुर्ग अकबर माह रन करि अउद ह्वादम गौ लयो ॥

हम आदि बहुतन रैन तजि तब सीम माहनको नया ॥

वह चित्रकूट बसायकैं पुनि रान फौल प्रचाहैं ॥

१ नाम उपाय [मल] करके ॥ ८ ॥ २ ओर १ पत्र १ लख कर
४ भोजन ० धरनाग [कलाया] ॥ ८२ ॥ ३ जादों की उठती ॥ ८३ ॥ ४ मे
जा ० पत्र करके १० बुका कर ११ राणा की शर्त ॥ ८४ ॥ १२ हे पुषामिह
११ नीति संसुख १ जयमिह की १० जयसिह का कहीहई यह रचना जानता
या तो भी ॥ ८५ ॥ १३ राणा का छाह कर दावशाहों का शिर मुलाया है

अवनीप हिंदुन फोरि अंकुरि साह नाह विमारिहें ॥ ८६ ॥
 यह राह फूरक साह सुनि वह पत्र भीत विदाग्यो ॥
 जयसिंहपै इत भीम थूहनि जंग मोह प्रमाग्यो ॥
 करजोरि कहि मम गेह पुतिय अप्प उपनयं काजिये ॥
 कछवाह तब जयसाह कहि कछु दीहें अंतर दीजिये ॥ ८७ ॥
 नृप बुद्ध सोदरकी सुता हम पुंवर सगपन कै बरी ॥
 वहव्याह करि हुन रावरे गृह बत्त उपनयं अहर्ग ॥
 जयसिंह यह कहि भीमभौं बुधसिंह प्रति दैल पिल्लयो
 तुम व्याह मंडहु बेग मै पुनि भीमको बैच भिल्लयो ॥ ८८ ॥
 बुधसिंह यह सुनि साहसौं लहि सिक्ख थूहनि मंक्रम्यो ।
 जल घोर सिंधु हिलोर ज्यौं दैल जोर जटनपै जम्यो ॥
 लिखि पत्र बुंदिय जोधैं सोदरकी सुता नृप बुल्लई ॥
 उम्मेदकुमरि सु नाम जो पग्गिनाय कूरमको दई ॥ ८९ ॥
 कोटेस भीमहु अप्पनी तनया सु तथ बुलायकै ॥
 बरजोर कूरम मोर को दिय प्रीति सह परिनायकै ॥
 सक अग्गि हय रिखि इंदु १७७३ हायन नैर थूहनि जंगमें ।
 कछवाह इम दुव व्याह कीने बीर सुंचे रस रंगमें ॥ ९० ॥
 ॥ करि व्याह कूरम नाह यौ पुनि ताव जटनपै दयो ॥
 हरिमंथं भ्राष्ट्रकै गंव ज्यौं तरकाव तोपनको भयो ॥
 उडि कोट अट्टन थट्ट यौ गढ बँट्ट जटनकै परे ॥

१ हिन्दु राजाओं का २ उदय होकर बादशाह का स्वामी बन भूलेगा ॥ ८६ ॥
 ३ डर कर फाड़ डाला ४ विवाह ५ दिन की छेटी ॥ ८७ ॥ ६ बुधसिंह के
 सगे भाई की बेटी ७ पहिले ८ जीध ९ विवाह की वार्ता स्वीकार करी
 १० पत्र भेजा भीमसिंह का ११ बचन ॥ ८८ ॥ १२ चला १३ सेना का १४ छोटे
 भाई जोधसिंह की बेटा को १५ बुल्लई ॥ ८९ ॥ १६ पुत्री को १७ बलवान उस बीर
 कछवाहे को १८ युद्ध में १९ नृगार रस किया ॥ ९० ॥ २० चनों का २१ भाड़ में २२
 शब्द होवै तैसे २३ बुरजें २४ मार्ग

भारतपुरमें जादोंका राज जनना) समभराणि पंचविंशतयुष [३०११]

ब गहि तेग वे सब मेन सम्मुह ठहै मरे ॥ ९१ ॥
 कटि वेग त जनि नोरि कै डम जट्ट चूडामनि ॥ ९२ ॥
 जयसिंह थुहहि रक्खि सगनें *अप्य जय छक उप्फन्यो ॥
 अरु वदना गेह तनिकेत सूरजमल्ल जट्ट रु पुतभो ॥
 जिहि वदना सिंग डगटि लै भुव फोज लखन जतभो ॥ ९३ ॥
 जतर बटिकै ०० आमद मुलक नबि रू ताव साहनपे दयो ॥
 द्वै कोटि २००००० ०००० कोटि स्वकीये कोस सरास सत्रुनको जयो ॥
 धरि बीस २००००० लहि मारि दिखिय साह कोसन लुटिकै ॥
 चार आग पुर निज राजधानी जंग मिच्छन जुटिकै ॥ ९४ ॥
 किय भरत र कुम्भर दिग्घ रुबैर ए चउठनिभये ॥
 गढ भरतपुर आभैरको भुल्ल्या न जोहु इते भये ॥
 अंसान सिहरमल्ल पुत्र सदाय सूरहु जाहिलै ॥
 वाकं जवा रूपति बिजयगिहहु डक गहिय ताहिलै ॥ ९५ ॥
 बैठो सु मै नातिष ए भये तिहि सरन करम रवीकरयो ॥
 जिहि पुत्र थुहनि तारि सब नृप जोरि दिल्हिय सचरयो ॥
 गढ फरि रू सिंगहगो मिलि साहसौं जय अपयो ॥
 रस राहर भूप समस्तमै बजोर कूम यो भयो ॥ ९६ ॥
 सिंगमो साह उमेरहि डक गिा ६॥ ज भीम विशायो ॥
 कछवाह र रचि घात जड नृप सत्र मत्र सम्हारया ॥
 जौमात गर नरेग अरु मरुदेमपति दुव बुल्लिकै ॥
 पुग रूपन ह मम्मति मलै गडिय भूष तीन भुल्लिकै ॥ ९७ ॥
 मिलि ड

॥ ९७ ॥ * आप ॥ घा में १ घन पाद कर १ घदे से मस्तक लहर ॥ ९७ ॥ १
 आपने स्वजाने में जीमा ३ पादशाह क स्वजान का ४ स्लेखो ज ॥ ९८ ॥ २
 पनाये ६ पीर भी जिसकी सहायता लेन थे ७ मारवाह का राजा ॥ ९९ ॥
 ८ पोते ६ स्त्रीकार १० मय राजाओं को एकचित्त करके ॥ १०० ॥
 भीमसिंह न ११ ॥ ११ ॥
 ॥ ९९ ॥

लिखि पत्र सय्यदपैं *नतकिखन देम दकिखन मुकल्यो ॥
 इत साहकी हित चाहसों कछवाह अपति †उज्जल्यो ॥
 जयसीह यह कछु दाहमें अधिकार अप्पन पायहैं ॥
 बनिकैं वजीर समस्त मस्तक चडै घात चलायहैं ॥ ९७ ॥
 रहनों तुम्हें जु वजीर ठै अरु बंधु बैर निवेगनों ॥
 तो बेग आवहु तेग मंडि घुमंडि कूम घेगनों ॥
 द्रुत पिक्खि यह छुई सज्जि सय्यद मेन सम्मद उप्पग्यो ॥
 सजि अगग तोपन मगग कोपन लज्ज लोपन संचंग्यो ॥ ९८ ॥
 उज्जैन आय रु माहको दँल मडि दूनन अप्पये ॥
 हम आनि पूरव देससों तुम पट्ट दिअल्लय थप्पये ॥
 जयसिंह नृप मम भ्रात मांगक ताहि निज हिय लायकैं ॥
 मम तुल्लय अहर अहरयो सु दये हि अप्प भुलायकैं ॥ ९९ ॥
 कछु लौग नहि बिसवासहै अब पाग आय रु अकिखहों ॥
 रन चाँय आयस पाय मै निज बंधु बैर न रकिखहों ॥
 सुनि साह यह निज मातमों सब बात सय्यदकी कही ॥
 तब मात अकिखय घात यह जयसिंह उप्परहै सही ॥ १०० ॥
 तिहिं देहु सौंदर सिक्खसों आमै नैर पठायकैं ॥
 तब चूँक अप्पनमाँहिं नाँहिं लौं जु मय्यद आयकैं ॥
 सुनि साह यह कछवाहमों हित चाह अकिखय सबही ॥
 तुम जाहु बेगडिं सिक्खि लै अति फँल सय्यदको सही ॥ १०१ ॥
 जयसिंह अकिखय भो वजीर जु माजदीनहिं मारिकैं ॥
 लौहैं सु आवत बैर ये सब चाँग छत्र उतागिकैं ॥

* उमो समय † बडा ‡ आरु वजार पन का २ अयंकर ॥ ९७ ॥ ३ भाइयो
 का बैर मिथाना होवे तो ४ पत्र ५ हर्ष सहित ६ चला ॥ ९८ ॥ ७ पत्र लिख
 कर ८ हलकारों को दिया ९ सारनेवाला १० आदर से मेरे बराबर किया ११
 अपने ॥ ९९ ॥ १२ डर १३ कहूंगा १४ छुकर पाकर युद्ध की चाह से ॥ १०० ॥
 १५ आदर के साथ १६ दोष (भूल) ॥ १०१ ॥

बादशाहकी राणाकीरामपुर लिखदेना] सप्तमगाथि पचविंशमधुक् (१०१३)

तममाने सज्जहु सेन सम्मुह सत्रु सय्यद मारिहैं ॥

सबहिंदु पायन लाय हिंदुमथान आन बियारिहैं ॥१०२॥

॥ काह साह तुम गृह जाहु जो अति जोर सय्यद जानिहैं ॥

१ पुनि तुमहिं वुल्लि प्रपच करि तिहिं मागि खैर प्रमानिहैं ॥

तव कहिय कूगम गनहित फामान जो वह निर्भयो ॥

चित्तार दुगग बमायवेहित मो ममुद्रहु नभयो ॥ १०३ ॥

धुंरास नैन धिते तव यह माह नाहिं न रवीकरी ॥

१ कुछ और मगहु रान हित दैहैं सु यह पुनि उच्चरी ॥

आमगपति तव एह अफिखय रामपुर लिखिदीजिये ॥

करि भान भूपति गन सर्वसमान सेवक काजिये ॥१०४॥

[दोहा]

मालवधर अतर मुलक, नगर रामपुर नाम ॥

चद्राउत मीसोद तैंहैं, खामि नाम सग्राम ॥ १०५ ॥

याके पुरुखन अग अति, सेये दिलिलय साह ॥

किये सुभट तव राव कहि, राज बखानि हित राह ॥ १०६ ॥

तवतैं बुदिय जोधपुग, पुर आमैर समान ॥

सनमानित मीसोदहू, सेवत रहि सुलतान ॥ १०७ ॥

तिन कुल यह सग्राम नृप, रहयो मुरारि लहि काल ॥

छिद्र यहैं तकि गहन छिति, कहि कूगम भूपाल ॥ १०८ ॥

पट्पात् ॥

कहि कूगम करजोरि सुनहु मम बत्त साह श्रुतैं ॥

रामपुर पै सग्राम रहिय अव मुरारि जोर जुत ॥

१ इसकाग्य से ॥ १०२ ॥ २ कुशलगया ३ लिखागया था मो० मुद्रा [छाप] सहि
त नहीं हुआ अपात् छाप नहीं लगी सो लगबादेध ४ स्वीकार नहीं करी ५
लादर काक ॥ १०५ ॥ १०५ ॥ १०६ ॥ ६ सम्मान पाकर द्वादशाह का ॥ १०७ ॥
१ समय १० मूमि लन के छिय ॥ १०८ ॥ १० कान म १२ पति

जनपद लेहु उतारि रहैं मुग़ै न ठिकानाँ ॥
 रानहिं देहु लिखाय रचहि सेवन यह रानाँ ॥
 सुनि यह लिखाय फगमान दिय करि समुद्र जयसिंह कर ॥
 रान तुम दबि गढ रामपुर सज्जहु सेवन सुभट वर ॥१०९॥
 दोहा ॥

रामपुरहिं लिखाय इम, गन अरथ हित राह ॥
 सजव सिक्ख करि साहसों, नीति चतुर कछवाह ॥११०॥
 जामिप डेरन आय कहि, चलहु अप्प करि सिक्ख ॥
 इहाँ समय कछु औरभो, रहैं न राजस तिकख ॥ १११ ॥

पट्पात् ॥

सुनत एह बुंदीस दियउ कूम प्रति उत्तर ॥
 तुम आयउ लहि सिक्ख सजव सज्जित पैदति पर ॥
 हमहि सिक्ख अब होत कछुक अंतर परिजहैं ॥
 चलहु अप्प तरमाँत सिक्ख लै द्रुत हग अहैं ॥
 जयसिंह सु सुनि आगैरपुर आय कटक बहुमज्ज किय ॥
 इत सँदल आय दिहिय उमँडि हुसनअर्ला अनखात हिय ॥११२॥
 स्वसुर साहका गूढ अजित अभिधान धन्वपति ॥
 रूपनगर रहोर जनक मातुल बिमंदमति ॥
 पाँदाको जामान भीम कांटेस राम सुत ॥
 बंधुवरग नय जानि बाच डारिय विसास जुत ॥
 कहि साह साम सयपद बिरचि राजकाज निबहहु सकल ॥

१ देश २ छाव (गुडग) लगाकर ॥ १०९ ॥ ११० ॥ ३ चहिनाई [बुधसिंह] के डेरे पर ४ राजापन की या राजागुन की ॥ १११ ॥ ५ मार्ग पर ६ इसकाण्य से ७ सेना सहित ॥ ११२ ॥ अजितसिंह = नाम ८ बारवाड़ का पति १० बादशाह फ़ारोख़सिंह के पिता का ११ मामा १२ विशेष मूर्ख बुद्धिवाला १३ डली राजसिंह का जमाई भीमसिंह कोटा के राजा रामसिंह का पुत्र १४ इन तीनों को सम्बन्ध जानकर

'इन दियउ डागि मय्यद श्रवने उन सब फोरिय मलबल ॥ ११३ ॥
 ए तीन ३ डि अनीप लचिग अति भुम्मि लुभाये ॥
 बदलि साहसो छन्न अरु म मय्यद बिच आयै ॥
 साहहिं दै बिसवास इक बासर जुरि डकत ॥
 बैठे करन रहस्य साह पचमप करि सम्मत ॥
 तब साह तीन भूपन पकारि बधि जाहि की पग्य करि ॥
 मखतूल पासि गल डारिकै मारि गिरायउ गोरि जरि ११४
 हरिगतिम् ॥

सक वेद हय गिरि इंदु १७५४ हैयन माम फग्गुन गोरमै ॥
 हनि साह त्रय नैरनाह सय्यद चाह हव अति जोरमै ॥
 परि कुरु दिस दिम हरमखानन नारि तोबैह उच्चै ॥
 आतक सय्यदका अतीव सु द्रव्य गार्पनहू करै ॥ ११५ ॥
 लौ मवन हरमन द्रव्य धन्य धोसै धा गृहमे धरयो ॥
 मरुईस सुनि वसुजुर्त पुत्तिपै बुलि लोभहि अहन्धो ॥
 सह वित्त मुक्कलि धन्य दिय तनया मु यो मरु ईसनै ॥
 अरु भीमै सय्यदसो कही बुधयिह बग रचै धनै ॥ ११६ ॥
 जयसिंह जौमिप है यहै तुममोह छल करि तोरिहै ॥
 तसैमान मारहु याहि सब मिला जोर छल यह जोरिहै ॥
 सुनि एह सय्यद फेरि फोजन बैठ बुदिय बधयो ॥

१५६ घागी मय्यद क कामो म छालदा ॥ ११३ ॥ भूमि के ताम से ये तीनों राजान-
 म गये एक दिन एकत्र होकर एकान्त सभा करने बैठे पादशाह को तीनो
 राजा आनन्दसो, पादशाह की पगड़ी में ८ रमस की फार्मा ९ गालिया से
 लटकर अर्थात् पादशाह का तालिये दफर ॥ ११४ ॥ १० मन्वत् ११ शुक्लपचम
 ११ राजा १२ 'ताया ताया' करने लगी १४ धन छिपाने लगी ॥ ११५ ॥ १५ मा
 रघाह के १६ पात की १७ पृथी के घर में १८ जन १९ सजित पुत्री का २० पटी की
 घन सहित मारवाह म भेज दी २१ कोटे क मदाराय नामसिंह ने ॥ ११६ ॥
 १२ बहिन का पति १३ इसकारण स १४ युद्धी का मार्ग -

१. अवनीस तीनन^३ अँप्प लौ बुधसिंह डेरनपैँ गयो ॥ ११७ ॥
 बुंदीस यह सुनि सेन सज्जि रु सेन सम्मुह संकैम्यौ ॥
 तब जैत अक्खिय घोर यह अति जोर सव्यदको जम्यौ ॥
 लाहोर तोरै न होय नृप तुम जाहु कूगम देसमै ॥
 हम धार रन हमगीर जुज्जहिँ बीर जौरठ बेसमै ॥ ११८ ॥
 यह कहत आतुर आय खल दल जानि बदल लुंबये ॥
 बजि बीर आनकँ यौ अचानक राग सिंधुव लगगये ॥
 बाजि डैरु डिंडिम डक ओ बहरक अँभ फरकई ॥
 अहि भोगँ लेत लचक ओ धरनी सु धक्कन धक्कई ११९
 परि ओर ओग्न रोरेँ दिह्लिय जोर जालम जंग भो ॥
 हटनारि हटन लागि पँटन अंग रंग विरंग भो ॥
 प्रजरात जान बजार बोथिनैँ यौ अलौत सु उछरैँ ॥
 जिम मास बाहुल दैसपैँ नेहँस काँस करैँ जरैँ ॥ १२० ॥
 आकास धूम रु धूलि धुंधुरि भान भासन लुप्पयो ॥
 बजि कंक गिद्ध सिचान पछँति रारि सव्यद रूपयो ॥
 अनिरुद्ध भुँव तब तेग भारत मीर मारत निककल्यो ॥
 कुल बैरिसल्लजैँ जैतसिंह सु सेन सम्मुह उजँभल्यो ॥ १२१ ॥
 पुनि जोधराज प्रधान ऊँरुज आय ए रन अँकुरे ॥
 लहि शोक कोकँन सोक भो पुरलाँक ओकँन मैँ दुरे ॥

१ आप (सव्यद) तीनों राजाओं को साथ लेकर ॥ ११७ ॥ २ चला ३ जैतसिंह
 ने कहा ४ लाहोरी दरवाजे होकर ५ घृद्धावस्था में ॥ ११८ ॥ ६ शीघ्र वा घबराया
 हुआ ७ कि बुधसिंह आग नहीं जावे ८ होल ९ ध्वजा १० आकाश में ११ फण
 ११६ ॥ ११ अथ १२ हाटों के किवाड लग कर १३ गलियों में १४ अग्नि १५ का-
 तिके मास की १६ अमावास्या पर १७ दीपक १८ प्रकाश ॥ १२० ॥ १९ सूर्य का
 दीखना छुपगया २० पंख २१ पुत्र बुधसिंह). बैरीसाल के कुल में २२ जनमाहुआ
 २३ बहा ॥ १२१ ॥ २४ वैश्य २५ खंडहुए २६ सूर्य की राक्ष वेखकर चकषा च-
 कषियों को शोक हुआ २७ घरों में छिपे.

कमनैत फोजनमें परघो भट जैत दह हकारिकैं ॥

रन नैरे दिल्लियकी रही तिग जालंगध निहारिकैं ॥ १२२ ॥

तगवागि नागिनि जेतकी विस मोह सत्रनकाँदयो ॥

दल जुद्ध जाँव प्रबुद्ध वहे नृप तौव तोरन लघयो ॥

निकसाय स्वामिय सकरैं बाने आट तोरनपै घरयो ॥

बाजि इक्क रन धमचक्क यों विनु मत्थ जैत लग्यो परघो ॥ १२३ ॥

परि वीर सत्रह १७ सगके दल जाँम इक्क १ सु रुक्कयो ॥

लागि क्रोध कै परि जाँवे ऊरुज स्वामि कन सव चुक्कयो ॥

लाहोर पैदति भूप कहि कछवाह जैनपद मकरैंयो ॥

इत जीति सगर घोर सद्यद जार दिल्लिय में जम्पों ॥ १२४ ॥

किय साह नाम रफ लदाला मास छद्दविच सा मग्धा ॥

तव ओर किय दुवर् मास भिच तजि साहु सचैर सचैरघा ॥

तव किय मुहम्मदशाह साँह सु चाह सद्यदकाँ भई ॥

पह यों छद्दहापनमें छ ६ साहन धाँपि दिल्लिय भुगई ॥ १२५ ॥

(पदपात)

सक बसु खट हय हट १७६८ मरिग आलम ओरँग सुँव ॥

गुनहतारि ६६ इनि माँजरीन फूँक पट्टप हुव ॥

किय रफील दोला सु ताहि इनि सक चउहतारि ७४ ॥

पवहतारि ५७ पद मात अवर किय सोहु गयो मरि ॥

सद्यद वजोर पुनि मत्र सजि आलम नाँतो जानि जिय ॥

तफ़कत रफील रुदह तनय साह मुहम्मद शाह किय ॥ १२६ ॥

१ दिल्ली नगर की छिन्न २ जालियों के छिन्न में ॥ १२२ ॥ ३ सूझा ४ सेना

से जब तक युद्ध हुआ ५ तब तक राजा सवेन होकर ६ बाहर का खार लाय

गया ॥ १२३ ॥ ७ सेना को एक पहर तक रोकी ८ करक ९ जोधराज वैश्य १०

मार्ग ११ देवा म १२ खला ॥ १२४ ॥ ११ जरीर को छाड़ कर १४ बजा (मरा)

१५ बादशाह १६ छ वर्ष में छ बादशाहों न १७ दौड़ कर (कीटना स) १२५ ॥

१८ पुत्र १९ आलम का पोता

(दोहा)

सक मर हय मत्रह १७७५ ममय, सद्यद थप्पि सुं लाह ॥

पुर दिल्लीके पट्टपर, धग्यो मुहुम्मदसाह ॥ १२७ ॥

श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायण सप्तमगणौ बुन्दीपति
बुधसिंहचरित्रे महागणासंग्रामसिंहभणनबुन्दीमुक्तयर्वाकाराप-
राधक्षमापनमहारावभीमसिंहोदयपुरगमन १ करवरसमग्निराश-
कोटाकटकप्रत्यागमन २ मरुधराधीशाजितसिंहदिल्लीन्द्रफूरुकसिय-
रस्वसुतापरिणायन ३ आत्तसैन्यहुसनअलीसद्यददक्षिणादिगमन
४ वैवाहिकनक्षत्रमन्त्रगापिहुमनअलीभीतत्यक्तोज्जयिनीनगरशरगु-
णाकोशान्तरजयसिंहव्यविवाहार्थगमन ५ जयसिंहप्रार्थनापत्रागम
भीमसिंहत्याजितबुन्दीबुधसिंहप्रत्यर्पण ६ यवनेन्द्राव्हानजयसिंह
बुधसिंहदिल्लीसरखा ७ जयसिंहहागमहागणासंग्रामसिंहस्य पुन-
रिवत्तोडवासहेतुफूरुकसियगजाग्रहण ८ चूडामणिजट्टविजयार्थज-
यसिंहाधिकारश्रूहणपुरयवनेन्द्रमैन्यप्रपण ९ श्रूहणपुरसमगविवाह
द्वयकण्ठानन्तरजयसिंहजट्टविजयन १० जयसिंहविरोधेन कोटाधी-

॥ १२३ ॥ १ अपना श्रेष्ठ लाभ ॥ १२७ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सातवें राशि में बुन्दी के पति
बुधसिंह के चरित्र में, महाराजा संग्रामसिंह के कहने से बुन्दी नहीं छोड़ने
का अपराध क्षमा कराने को महाराव भीमसिंह का उदयपुर जाना १ करवर
के जुह में कोटा की सेना का निगस होकर पीछी आना २ मारवाड़ के रा-
जा अजितसिंह का दिल्ली के बादशाह फूरुकसियर को बेटी विवाहना ३
सद्यद हुसनअली का सेना लेकर दक्षिण में जाना ४ हुसनअली के भय से
उज्जैन को छोड़ कर पैंतीस कोस के अंतर पर जयसिंह का बिना ही लग्न
विवाह करने को जाना ५ जयसिंह की अरजी जाने पर अमीरसिंह से छुटा
कर बुधसिंह को बुन्दी पीछी देना ६ बादशाह के बुलाने पर जयसिंह और
युधसिंह का दिल्ली जाना ७ महागणा संग्रामसिंह का जयसिंह हाग बाद-
शाह फूरुकसियर से चीताड़ बसाने की आज्ञा मांगना ८ चूडामणि जाट को
विजय करने के अर्थ बादशाह का जयसिंह के अधिकार में श्रूहणपुर पर से-
ना भेजना ९ श्रूहणपुर के युद्ध में राजा जयसिंह का दां विवाह किये पीछे

शभीमसिंहादिसय्यपदहुमनअलीदाक्षिणादिल्लीप्रत्पानयन ११ हुसन-
अलीभययवनेन्द्रजयसिंहामेरपेपणाजयसिंहमहाराणासंग्रामसिंहा-
र्थरामपुरदापन १२ घोघपुरकोटारूपनगगराजत्रयसहायहुमनअलीय-
वनेन्द्रफूरुकसियरहनन १३ कूनयुद्धयुगसिंहदिल्लीनि सरणा १४
यवनेन्द्रद्वयशीघ्रशीघ्रमरणानन्तरहुसनअलीमुहुम्मदराहयवनेन्द्रीक
रणा पञ्चविंशो मयूख ॥ २५ ॥

आदितस्त्रिपष्टयुनरद्विशततम ॥ २६३ ॥

[पट्पात]

इत कूरम गृह आय सेन सय्यपद डर सज्जिय ॥

लिखित रामपुर पत्र रान अतिके मुक्कलि दिय ॥

मुलक गमपुग दखि अमल महहु हुत अप्पन ॥

दल पुनि मजहु दुरत मते बलवत यप्पि मन ॥

हम सीम घात सय्यपद तक्रन याततायि दल दर्प अति ॥

जो परहि काम तो इत सजेय पिछहु दल चितोर पति ॥ १ ॥

[दोहा]

॥ यह कहाय सजि दल अतुल, इत कूरम मतिमान ॥

गाम सु टांडा भीमके, दिनें आनि मिलान ॥ २ ॥

इहि अतर कूरम सुन्यो, दिखिय जामिप जग ॥

जाटों का विजय करना १० पाटा के महाराय भीमसिंह यादि का जयसिंह
को विरोध पर सय्यपद हुमनअली का दक्षिण से दिल्ली में चलता ११ हुसनअ-
ली के भय से पादशाह का जयसिंह को साम्र भेजना और जयसिंह का
महाराणा दल पाले का रामपुर दिलाना १२ जोधपुर काटा और रूपनगर
के लीजो राजाओं के साथ हुमनअली का पादशाह फूरुकसियर को मारना
१३ नुरामि का युद्ध करके दिल्ली से निजलना १४ या पादशाहों के शीघ्र
शीघ्र पर पाछ हुमनअली का लुप्पत जाह का पादशाह बरान का पसीस
या २ नयूय मनात हुआ और यादि से दोसो भेसठ २१३ मयूख हुए ॥
१ मराठाणा के मनात २ शीघ्र ३ दूर है अग जसका (पहुन) ४ भय (मवाह)
५ शीघ्र, ६ सेना भजना ॥ १ ॥ ७ मुकाम, ८ ९ ॥ ८ पहिनोई से

लांघि पहर खट्कअसन लिय, पुनि सुनि कुसल प्रसंग ॥३॥
 दिल्लीतैं इहिं बिच निकसि, रन वारि बुंदिय नाह ॥
 मिलिय आनि जयसिंहसौं, टोडा अधिक उछाह ॥ ४ ॥
 कोटापति अगैं लियउ, सोपुर मुलक छुगाय ॥
 इंद्रसिंह सोपुर अधिप, निकस्यो प्रान वचाय ॥ ५ ॥
 गोर बंस अवतंस यह, सोपुर पुर अधिराज ॥
 आयो मिलि बुंदीससौं, कूरम ढिग भुवकाज ॥ ६ ॥
 उछुर ॥

इत उदयपुर पति एस, संग्रामसिंह नरेस ॥
 पुर रामपुर लहि पतैं, सजि सेन पिछ्लिय तत्त ॥ ७ ॥
 तिन रामपुर नरनाह, संग्रामसिंह सचाह ॥ ८ ॥
 कर बांधि नैर बिहाय, पय रान लगिय आय ॥
 तब रान लखि नत एस, दिय मंडि अद्धह देस ॥ ९ ॥
 लहि अद्ध भुव तब राव, हुव रानको उमराव ॥

बराव १ भराव २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

भुव अद्ध छिन्निय रान, थित च्यारि४ पुर जुतथान ॥१०॥
 जिन्नोद १ जीरन २ दंग, सजि कुकुटेश्वर३संग ॥
 लिय नैर नीमचि४नाम, किय तत्थ सेन मुकाम ॥ ११ ॥
 भुव अद्ध लै इम रान, दिय फेरि अप्पन आन ॥
 भुव अद्ध पत्तिहिं रक्खि, लिय बंदगी रस चक्खि ॥ १२ ॥
 खट सत्त हय इक१७७६मान, लिय रामपुर इम रान ॥
 इत जोर सय्यद किन्न, गहि हत्थ दिल्लिय लिन्न ॥ १३ ॥
 निज पति मुहुम्मदसाह, ताकी न कछु जिय चाह ॥

१ भोजन ॥३॥ ४ ॥ २ गोंड वंश का स्फुट पति ॥ ५ ॥ ४ पत्र ५ भेजी तहां ॥ ७ ॥
 ॥ ८ ॥ ९ नगर को छोड़ कर ७ नम्र देख कर ८ आधा देश लिख दिया "यह
 रामपुरा वाले पहिले से श्रीतांड के राव थे परन्तु उस महाराणा की विपत्ति
 में स्वतंत्र राजा होगये थे" ॥ ६ ॥ १० ॥ ६ नीमच ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥

कोटेस अरु मरुनाह, किय दोहुबुल्लि सु लाह ॥ १४ ॥

तुम जाय निज निज देस, सज्जहु अनीक बिसेस ॥

खगमार धारन खेरि, लैहैं ब कूगम घेरि ॥ १५ ॥

दुवर्गाल जामिप मारि, आभैर बुदिय धारि ॥

रहिहैं निरकुस होय, पिछैं न कटक कोय १६ ॥

मरुईस सुनि यह वत्त, मरुदेस आयउ मत्त ॥

लागि सेन सज्जन अध, कछवाह सीस कवध ॥ १७ ॥

इत भीम भुम्भि उमग, ब्रज आय गोकुल दग ॥

गुरु गोकुलस्थ बिचारि, लिय मंत बल्लभ धारि ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

वल्लभमत चहि मत्र लहि, रजतंतुला किय दान ॥

हुव सेवक ब्रजनाथको, कोटापति चहुवान ॥ १९ ॥

(पादाकुलकम्)

कृष्णदास निज नाम कहायो, नदगाम कोटा लिखवायो ॥

सेरगढ सु थपिय बरसानों, इन नामन व्यवहार चलानो ॥ २० ॥

कोटकोट अतर कोटापुर, किय ब्रजनाथ निवेदित आतुर ॥

दान रु द्विज भोजन बहुदिनों, चिकनमाहिंरहनों पुनि लिन्नो २१

दुखो कितव डेनरके अंदर, बाहिर नांयो पदह १५बौसर ॥

रोग रोग कहि मृत्यु उढायो, कोटापुर सुनि सोरु अघायो ॥ २२ ॥

माधौनी मिलि चाहि जुद्ध चित, सावधान कोटा किय सज्जित ॥

हारन आरें लगाय धीर धुत्र, बुरज बरन सिंग मग्न मंडि हुव २३

जान्यो मृत भीमहिं सुनि अहैं, बुदिय कटक छिन्नि गढ लैहैं ॥

सोहि भई सालम सुनि धायो, लुट्टन कोटा मुलक लगायो ॥ २४ ॥

१ मारवाड का पति ॥ १४ ॥ २ सेना ॥ १५ ॥ ३ साखा ४ यहिनाई ॥ १६ ॥ ७ ॥

बम्बभ सप्रदाय को ॥ १८ ॥ ९ चांदी की ॥ १० ॥ ११ सेरगढ का नाम बरसाना

रफ्तार ॥ २० ॥ ८ भेट ॥ २१ ॥ २ छछो १० नही आया ११ दिन ॥ २२ ॥ १२ म

पोसिहोत हाडा १३ किबाड ॥ २४ ॥ २४ ॥

दिल्लीतैं नृप साल बिहत्तरि ७२ सालम पठयो मुख्यमचिव करि ॥
 इहिँ तब असो राज अवेग्यो, *फिचो +सर्वाभ विनु फेरयो फेरयो २५
 अब यहँ साल छहत्तरि ७६ अग, मृत +मृत सुनि भीमहिँ इवालि सवर ॥
 बुंदियतैं चलि बेग कुबुद्धा, रुपि सालम कोटा घर गम्भी ॥ २६ ॥
 बिनु नृप +आयस द्रोह बढायो, मार लूट करि फैल मचायो ॥
 सु सुनि भीम गोकुल सन चल्लयो, गिनि सागम मुच्छन कर घल्लयो
 कोटापुर पैंतो निस बेल्ला, दार आय सुभटन दिय हेला ॥
 खुल्लहु अररँ जियत हम आये, प्रात सबहि करिहैं मनभाये ॥ २८ ॥
 यह सुनि अजबसिंह माधानी, प्रेम सुवन वानी पहिचानी ॥
 हसि तब आयउ द्वार कन्ह हर, अर खलि भूपहिँ लिय अंदर ॥ २९ ॥
 बंटिय घर तब कुसल बधाई, इस सु भाम वह रँति विहाई ॥
 प्रातहि कटक अचानक सज्ज्यो, गहि गुमान सालमसिर गज्ज्यो ३०
 पुर आटोनि हुतो वह सालम, पहुँच्यो भीम जोर दल जालम ॥
 सालम दलहिँ पकिख बिथ्य सह, सबन सुनाय भीम अकखी यह ३१
 पलवकुमम् ॥

सालम दल बहु सज्जि मुलक निज मारयो ॥
 अप्पन अब इहिँ खेत लरन ललकाय्यो ॥
 बुद्ध निरपनि बलवान ततो हम जितिहैं ॥
 कोटापति सकुहुं नतौ यँहँ विचि हँ ॥ ३२ ॥

(दोहा)

अर्जुन नाती हड्डो, पुर बड़ोदपति पाम ॥

तिहिँ अकखी नृप भीमसौ, उलटी यह दिन आस ॥ ३३ ॥

*अबहुहुहु प्राविना समस्त (निर्गुण) ॥ २॥ *भीमसिंह को गन्ध सरा खुन कर
 सूखी में अंष्टी गेकी ॥ २॥ *राजा की बला आला के अपराध सहित ॥ २॥ *प-
 हुंया ३ रात्रि के समय ४ किंवाड ॥ २॥ ५ प्रेमलिह के पुत्र न ॥ २९ ॥ ६
 राज बिताई ७ घमंड करके ॥ ३० ॥ ८ बिस्तार सहित ॥ ३१ ॥ ९ बुधसिंह
 का भाग्य १० नाश होवेगा ॥ ३२ ॥ ११ पोता ॥ ३३ ॥

भीम कहिय जिते विनौ, अप्पन जियत रहैं ॥
 अप्पन विनु यह उग्रहै, लैंहैं बुदिय अँन ॥ ३४ ॥
 यह कहि वाजिन बगलैं, पग्यो भीम पैवि पात ॥
 खरकोनैन मनु चुगत खिन, घल्लौ सेनन घात ॥ ३५ ॥
 मरुभाषा डिंगलभाषेत्येके ॥

अस्मिन्सजातीपेष्वेधप्रसिद्धगीतनामकं मरुदेशीयं छंद ॥

गीतेष्वपिसुपचीगीतः ॥

भूमी लागरै लुंभागा डोगाँ सपाति रूपरा भढाँ,
 लेताँ तागाँ बागै भूपराँ जग्गी लीह ॥
 अँगाया खागै वाँस भागै ऊपरा आयो,
 साजमेस नागै धूँग भाममीह ॥ १ ॥
 घटा बीज घोटकी उनाँले खागाँ वाँग घाँचै,
 रटा ब्रवाटकी वागाँ घोळ नागाँ राडि ॥
 दै कैंवो रामर छटा बिहगगटकी दोले,
 फैंटा सेना विगोले फाटकी फाडि फाडि ॥ २ ॥

१ बुन्दी का स्थान जवैगा ॥ ११ ॥ २ वज्र पड़ने का समान ३ मानों चुगते हुए तीतरा पर
 शिखा (सिकरे) न घात डाली ॥ १५ ॥ मरुभाषा जो डिंगल भाषा कहलाती है
 उसमें हमारी जाति में ही प्रसिद्ध है ऐसा गीत नामक मारवाड़ी छन्द, जिन
 गीतों में भी यह सुगहरा गीत है ॥ श्रुति का ४ लोम लाग कर ५ डाखा,
 लगा हुआ (मरु) सपाति रूप के पीरों में घोड़ों की घाँवें ६ र्थिघने ही ७ श्रु
 मि पर ८ लकीरमी लग गई स्वज्ञ से ९ अतृप्य [शुद्धा] १० पी [पत्नी] तिन के
 ईस (गुरु) के मार्ग से मानमसिंह रुरा भर्ग का ११ मस्तक पर भीमसिंह
 आया ॥ १ ॥ घाटा में बिजुली का १२ लगाने स्वज्ञ को हाथ में नाक कर,
 पीरों को घेर (चकेल) कर १३ नामों के चिरन्तर शब्द होने पर सगों से युद्ध
 करके रामसिंह के पुत्र ने १४ घेरा देकर, पञ्जिया के राजा [गुरु] की शोभा
 से चारों ओर, सेना रूपी १५ फणों को १६ उड़ाये, और उसमें नाका को फाड़
 फाड़ कर पछाट डाली ॥ २ ॥ डाखा सगेष्टुप (उस ड की पीरों का विशेषण है)

डांशाँ ओक ओक *जाँगी जैतरा रुड़ाया डाकी,
 तोक चंचाँ केवाणाँ छुड़ाया वीर ताल ॥
 पाँशाँ ओक संभरी असंखाँ के उड़ाया पाँशाँ,
 बाणाँ ओक पंखाँ के उड़ाया बुंदीवाल ॥ ३ ॥
 काटी पूछ अंडा ले किशोर दूजे दाटी कोपि,
 सेना फटा फाटी भैं कटार पंजाँ साजि ॥
 बैनतेय भामरी लपाटी तेग आगैं बचे ,
 भोगी जांगीरामरो त्रिपाटी गया भाजि ॥ ४ ॥ ३६ ॥
 प्रापोदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

दोहा ॥

इअहि सालम इम भजिजगो, फोज फटा सु फटाय ॥
 व्याधि महिन कृषि बैर की, अतिजव बुंदिय आय ॥ ३७ ॥
 कोटेमहु दुते पिछि लागि, लिन्नी बुंदिय घेरि ॥
 सठ सालम इक दीह लरि, गो भाजि आयुध मेरि ॥ ३८ ॥
 जायो जुगियगमको, आया नगर अलाय ॥
 कोटापति इत लुट करि, बुंदिय दिन्न जराय ॥ ३९ ॥
 फगुन बिसद चउत्थसक, रस हय सत्रह १७७६मान ॥
 बहुरि भीम बुंदिय लई, इम फेरी निज आन ॥ ४० ॥

ने घर घर मे विजय के * नगरे बजाए और तरवारों रूपी चंचुओं में उठा-
 कर खड्गों की मूठों से वीरों की तालयाँ [हथेलियों] छुड़ाई, इसकारण हे चहु-
 पाण तुम्हारे । हाथों को धन्य है कि जिन से असंख्याँ के प्राण उड़ाए और
 बाणाँ के ओक रूपी पंखाँ से बुन्दीवालों को उड़ाये ॥ ३ ॥ उस सेना के अं-
 डे लेने रूपी पूछ को काटा और । दूसरे किशोरसिंह ने क्रोध कन्के दलाई
 कटार रूपी पंजाँ का भय मज कर सेना रूपी फण को फाड़ा, इसप्रकार गरु-
 ष रूपी भीमसिंह की शीघ्र चलनेवाली तेग के आगे पच कर, जोगीराम का
 पुत्र रूपी सर्प शीघ्रता की दौड़ में भाग गया ॥ ४ ॥ ३६ ॥ १ सर्प १ फण २
 राँग सहित ३ वह बैर का कांडा ४ बहुत शीघ्र बुन्दी आया ॥ ३७ ॥ ५ शीघ्र
 ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ६ सुदि पक्ष की ७ प्रमाण वाला ॥ ४० ॥

सबहि देम बुदीमको, अहर भीम अपनाय ॥

लूट मीहि बहु दज्यलै, हम पुनि कोटा आय ॥ ४१ ॥

(पादाकुलकम्)

अवरहु भीम देस बहु छिन्ने, चउदह सहस्र ४००० गाम निज किन्ने

अगैलिखित * कर्महि अप्पो, सो सब लृप्ति लाभ हिय थप्पो ४२

हुलासि एह आक्खिय सुभटन हित, अब बजनाथ करहि सब इच्छित ॥

रन जयसिंह बुद्ध जगि मारहि, बुसुमति आन इमोघ बिथारहि ४३

इक पुत्रहि बुदियगढ अप्पहि, थिर इक्कहि काटागढ थप्पहि ॥

इक सुतहि सोपुगढ वैहैं हम उज्जैन राज आव लैहैं ॥ ४४ ॥

तदनंतर सयपद प्रति कर्गंग, पठगो द्रुन लिखि भीम अप्पकर ॥

इत दल सगव सज्जि हम आगत, उत तुम यावहु कटक अमावत ४५

पकरि बुद्ध जयसिंह बिपदखन, लैहैं पहुंमि मारि भट लखन ॥

यह विगि संगर भीम उमाहया, चहुं मजि महैन बीम २००००

जय चाह्यो ॥ ४६ ॥

[दोहा]

इत सयपदसौ मिश्रव लठि, अजितसिंह मरु आय ॥

जैहैं सुभटन एकैत जुगि, अक्खिय मल उपाय ॥ ४७ ॥

[पट्पात]

मिमल अठ्ठ उमराव जवहि रट्ठो इक जुगि ॥

अजितसिंह प्रति अक्खि अनयै किन्नों तुम अकुंरि ॥

कूमपतिसौ तोरि आप सयपद चाह्यो उर ॥

॥ ४१ ॥ * कछवाहा जयसिंह को दिल्ली में लिख दिया था कि मुन्दी के पर
गम छोड़ देंगे, उसको ॥ ४२ ॥ † बुधसिंह का १५वीं पर १ पाछा नहीं
फिर ऐसा आया कैलाशेंगे ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ १ जिम पीछ २ पत्र ३ अपने हाथ
से ४ नहीं मावै बीसा ॥ ४५ ५ अथ्यों को ६ भूमि ७ युद्ध पर उमाह युक्त
हुया ८ सेना ॥ ४६ ॥ ९ म रघाव म १० एकत्र ॥ ४७ ॥ ११ अनीति को १२
अड़े एकर

अज्ज गई आमैर कलिह जैहैं सु जोधपुर ॥
 स्वामिकों मागि मण्यद मवल कानि न रक्खहिं अप्पनी ॥
 तममात जोरि जयसिंहमों धन्व पहुमि रक्खहु धनी ॥४८॥
 दोहा—कूरमगों सगपन विरचि, मरुधर बुल्लहु नाहि ॥
 रुचिर मुता अव रावगी, बिधिजुत देहु विवाहि ॥ ४९ ॥
 मरुपतिमों यह मंत्र करि, पठयो मुभटन पैत ॥
 नृप कूरम आवहु निडर, यँहँ व्याहन अरुत्त ॥ ५० ॥
 कूरम सुनि पच्छी कहिय, धरा अलप तुम धार्य ॥
 रक्खहु पुत्रिन जतन रचि, पगहिं साहसों काम ॥ ५१ ॥
 यह सुनि इन पच्छी लिखिय, हम तुम विच हरि आहिं ॥
 आवहु अप्पन डकहैं, जावहु मसुख विवाहि ॥ ५२ ॥
 सु सुनि कूब जयसिंह किय, सजि दल मवल मिपाह ॥
 बुंदी सोपुर नृप उभय, अलिय मंग हित चाह ॥ ५३ ॥

(पादाकुलकम्)

रस हित विनय परमपर पति, तव नृप तानर जोधपुर पते ॥
 रडोरन अकिखय कूरम सैन, लगनवर अव चलहु विवाहन ॥५४॥
 मरुपति सों तव सबन सँमखी, कूरमपति सुभटन यह अखी ॥
 हँम नृप परनि पधारहिं जोलों, हमनिच रहहु धन्वपति तालों ॥५५॥
 अजितसिंह यह मनि रहयो यँहँ, कूरमपति गो तव व्याहन कँहँ ॥
 रनँ जिन सजि कवच धारन करि, वर दुलहनि रडोरि लई वारि ॥५६॥

१ उसके पति दादशाह को मार कर बलवान् हुआ है २ डमकार-
 ण से ३ सारवाह की अस्ति ॥ ४८ ॥ ४ सुन्दर पुत्रा ॥ ४९ ॥ ५ उमरावों ने
 ६ पत्र भेजा ७ प्रीति युक्त ॥ ५० ॥ ८ तुम्हारे घर में ॥ ५१ ॥ ९ विष्णु भग-
 वान् है ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ १० नञ्जना ११ रक्त प्रातियुक्त हुए १२ जयसिंह से कहा १३
 विवाह करने को ॥ ५४ ॥ १४ ममर्त्ता सामन, रोवरु १५ महाराजा [जयसिंह] १६
 हे सारवाह का पति [अजितसिंह] तब तक हमारे बीच में रहो “भीतर ज-
 यसिंह को धुक करके न मार सकें इसकारण से” ॥ ५५ ॥ १७ जैसे युद्ध में स-
 जित होकर जाता है तैसे १८ श्रेष्ठ दुलहान राठोड़ी को वरी ॥ ५६ ॥

(दोहा)

इक नवाय कलीजखा, इहि अतर लहि *काल ॥
दक्खिन मन आपो दुसह, दिल्लीपर रचि जाल ॥ ५७ ॥

(पदपात्)

हुसनअली सध्यद वजीर सुनि एह बंदि †जर ॥
नाम दलावरखान मुगल ‡पिल्लयो तिहि उप्पर ॥
नरउर पति गजसिंह संग सह सेन दयो सजि ॥
कटोपति प्रति पत्र त्वरित लिखवाय गेव्व तजि ॥
मारहु कलीजखानहि मरद खानदलावर सग रहि ॥
जयसिंह जेर पिच्छै करहि यह करि जेर कलीज अहि ॥ ५८ ॥

(दोहा)

सु सुनि भीम सिर घुनिकै, दिय दैल अधिक छुराय ॥
जान्पौ तप जयसिंहके अत अप्पनो आय ॥ ५९ ॥
बुढे बीगन सग लै, तव यह मरन विचारि ॥
सम्मुह खानकलीज सौ, रचन चल्पो अब रारि ॥ ६० ॥
खानदलावर भीम अरु, नरउरपति कछवाह ॥
दरकुचन चलि भिटये, सत्रुन सबल सिपाह ॥ ६१ ॥
मेकलजाके पार इक, तटिनी कोढी नाम ॥
तीनन३ खानकलीज सौ, सजिय तत्थ संग्राम ॥ ६२ ॥

(पदपात्)

सल्लो जुरि दुवरसेन हुलासि जुज्मन बढि दल्ली ॥
कादबिनि चल्ली किं बाढ चमकत धैनवल्ली ॥

* समय पाकर ॥ ५७ ॥ † धन बाढ कर ‡ मजा १ घमह को छोड कर २ हे वीर ३ दलावरखा कैसा घरह कर ४ कलीजखा रूपी सर्प को ॥ ५८ ॥ ५ जय सिंह के मारन को अधिक सना रक्खी थी जिसको छोड कर ६ जयसिंह के तप से ॥ ५९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७ नर्मदा नदी के पास ८ नदी ॥ ६२ ॥ ९ घोडा के सवार १० मेघमाळा ११ मानों १२ विजुत (विजुली)

दिष्टि जुरत हय दपटि मिले रनरसिक महाभट ॥
 तब बज्जिग तरवारि भीरु भज्जिग बट *उब्वट ॥
 गिद्धनि सिचान +संकुलि गगन रचि *मयूख अवगंध क्रिय ॥
 खुग्तार मार ऽजव धार खुदि दिसदिस ॥ पुहवि दगगदिय ६३
 लग्गे जिम जिम लोहं छोहं तिम तिम उर छायो ॥
 धायो जिम जिम धीर वारै तिम तिम प्रकटायो ॥
 जिम खादित जैपाल मथत अंत्रन द्रुत दुँज्जर ॥
 इम कलीज दल अतुल मथ्यो सायुध संय संभर ॥
 हैदराबाद भट बहुल हनि चिर अच्छरि रस चक्खयो ॥
 भूपाल भीम कोटस सिर रुद्रमाल नैन रक्खयो ॥ ६४ ॥
 हत्थी भज्जत हड्ड चढ्यो हयबर रँय चंचल ॥
 हय कट्टत पयचौर बन्यो खयकौर महाबल ॥
 तोमर तुटत तेग तेग तुटत करि कत्तिथ ॥
 कत्तिय कट्टत कैरद धोर छत्तिय अरि घत्तिय ॥
 देख्यो कजीज जीवन दुलभ मिलत भीम भद्व सुदिरे ॥
 जिम जिम रँवसीस रज रज राचिय तिम तिम धुन्निय संभु।सेर ६५
 दोहा ॥

मुनि हय मत्त रु डक्क १७७७ सक, जेठ रु पुण्ड्राम दीह ॥

*विना मार्ग आकाश म भर कर मृग की करणों को रोक दांड़जा घ दौड़ने के
 वेग से ॥ भूमि ने ॥ ६३ ॥ १ शस्त्र २ क्रोध वा उत्साह ३ वीर रस ४ जिस प्रकार
 दुःख से जरनेवाला खाया हुआ ५ अजैपालया [जमालगोटा] आंतों को शीघ्र
 मथ डालता है तिसी प्रकार महाराज भीमसिंह ने ६ कलीजखां की बड़ी सेना
 को मथी ७ आयुध सहित हाथ से चहुवाण ने ८ बहुत ९ राजा भीमसिंह ने
 अपने मस्तक का शिव की सुडमाला के अर्थ नहीं रक्खा, अर्थात् टुकड़े टुकड़े
 होगया १० बंग में चपल घोंडे पर चढ़ा ११ पैदल होकर १२ नाश करनेवाला
 [यमराज] १३ भाला १४ खड्ग विशेष १५ कटारी अथवा मतांग से छुरी १६
 भादवा के मेघ के समान १७ अपने मस्तक का १८ सुडमाला ने योग्य नहीं
 रहने के कारण शिव ने मस्तक धुना ॥ ६५ ॥ ६६ ॥

परयो दत्तावरखान रन, सहित *भीम गजसिंह ॥ ६६ ॥
नरउरपति जाजव भज्यो, परयो इहाँ तजि मान ॥
मारि हजारन भीम जिम, परयो भीम चहुवान ॥ ६७ ॥

(पट्पात)

सुनि कोटापुर भयउ †भीत मरतहि निज भपति ॥
धाडभ्रात भगवान हुतो बुदी सु जानि ‡हति ॥
बुदिय बिच बुधसिंह आन फिरवाय सोधि उर ॥
अपन सब थानाँ उठाग आयउ कोटापुर ॥
सुनि खबरि एह मातेगद सठ मालम आय भलाय सन ॥
बनि सचिव मुखप बुदिय बहुरि राजकाज लग्गो करन ॥ ६८ ॥

[दोहा]

तनय तीन ३ नृप भीमकै, जेठो अर्जुन १ नाम ॥
अमररान भानेज यह, तव भूपति हुव ताम ॥ ६९ ॥
स्पामसिंह २ मध्यम सुवन, लघु सुत दुरजन साल ३ ॥
राज लोभ निसदीह रखि, कट्टत एहू काल ॥ ७० ॥

[षट्पदी]

हुसनअली इत सज्जि छोह कूरम सिंग छायो ॥
साह मुहम्मदको चढाय आमैर चलायो ॥
सद्यद अति बरजाग साह दुर्मन इहि कारन ॥
चितत रहत उपाय मन्नि निहचै तिहि मारन ॥
तव नाम मुहम्मदखान इक तूगनी तक्कयो प्रबल ॥
राचि मल साह तासो रहोसि माग्यो सद्यद छेदि छल ॥ ७१ ॥

दाहा—तव पच्छे दगकुच करि, हुसनअलीको मारि ॥

* भीमसन के समान ॥ १७ ॥ † भय ‡ भीमसिंह का नाश जानकर ॥ १८ ॥
१ मठागणा अमरसिंह का २ तथा [कोटा म] ॥ १६ ॥ १ पुत्र ॥ ७० ॥ ४ उदाम
५ एकान्त में सलाह करके ॥ ७१ ॥

बनि स्वतंत्र इम साहू, पुर दिल्लिय*पगधारि ॥ ७२ ॥
 बरस तीन३ नृपकै बच्यो, भावतसिंह कुमार ॥
 दुव२रानिन उर दोष२सुत, बहुरि भये इहिँ बार ॥ ७३ ॥
 नाम भवानीसिंह सुत, कछवाही गृहजात ॥
 पदमसिंह दूजो२ भयो, चुंडाउति जठरांत ॥ ७४ ॥
 कुमर बधाई जोधपुर, पत्ती संभर पास ॥
 जयसिंहहु तत्थहि सुन्यौ, सय्यद सत्रु विनास ॥ ७५ ॥
 सुनत कुंच जयसिंह किय, बिर्नस्यो सय्यद बैर ॥
 सोपुर बुंदिय नृपन सह, आयो पुर आसैर ॥ ७६ ॥
 संभर किय हुढाहरहि, बसवा निबसथ बास ॥
 अनाहूत जयसिंह गो, साह मुहुम्मद पास ॥ ७७ ॥
 अठ सत्त हय इक्क १७७८ सक, चित्त महर करि चाह ॥
 अकबरपुर सूबा दियउ, कूरमपतिको साह ॥ ७८ ॥

पञ्चाटिका ॥

पुनि कहिय साह कछवाह राय, क्यों नाहिँ अत्र बुंदीस आय ॥
 जयसिंह कहिय सालमं नरेस, आबाद रखत पुनि नहिँ असेस ७९
 कोटेस भीम करि जोर दाय, बाराँ मऊ सु लिन्नै छुराय ॥
 बिनु खरच नाहिँ निबहत प्रवास, जर कोस सबहि हुव नैठ जास ॥
 सतपंच ५०० सुभट साँदी सुमंत, मम संग दिय सु हाजरि रहंत ॥
 पुनि साह दयो अमरख निवारि, ऐसी अनेक दिय कुंम्म टारि ८१
 चूड़ामनि सुत मुहुकम्म जट्ट, इन दिनन बहुरि लग्गो कुंबट्ट ॥

* पधारा ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ कछवाही के घर में १ जन्मा २ जठर (उदर)
 में ॥ ७४ ॥ ३ बुधसिंह के पास ॥ ७५ ४ नाश हुआ (मिट्टा) ॥ ७६ ॥ ५ बुधसिंह
 ने ६ बसवा नामक ग्राम में ७ बिना बुलाया ॥ ७७ ॥ ८ कृपा ॥ ७८ ॥ ९
 यहाँ १० सालमसिंह ११ राजा (बुधसिंह) का ॥ ७९ ॥ १२ जोर की रीति से
 [बल पूर्वक] १३ नष्ट ॥ ८० ॥ १४ सवार १५ ओष्ठ बुद्धिवाले १६ क्रोध १७
 जयसिंह ने ऐसी अनेक आपत्तियों डाल दीं ॥ ८१ ॥ १८ कुमार ।

करि लूट मुलरु सिर घालि धैत, मरुईस सरन मरुदेस पतै ॥ ८२ ॥

जयसिंह वदन जट्टहिं सहेत, बहुभुव दिवाय थूहनि समेत ॥

वहै साह दितु मुहुकम हगम, यातै पत्ताय गय धैन्व धाम ॥ ८३ ॥

तब साह कहाई हे नरेस, यातुर् गहि भेजहु जट्ट एस ॥ ८४ ॥

मन्था न हुकम यह मैरु मदीस, रचि साह मुहुम्मद सुनत रीस ॥ ८५ ॥

इन लहि प्रमाद आलस अनत, बुदीम गाम बसवा बसत ॥

तहँ किय अनीति लोकन अपार, दविय अनेक परकीय दार ॥ ८६ ॥

ताडन रु लूट तज्जर्न विधाय, पत्ता प्रजा भुँ किय दुखित प्रौप ॥

पुरजन सब लाह तब दुख अपार, कूरम प्रति दिली किय पुकार ॥ ८७ ॥

सुनि कहिय भूप कूरम हसंत, बसवा गु गाम थैवहू बमत ॥

कहि पुनि वे जागिष अरमदीयै, सहनो ममस्त दुखबहु गैगिय ॥ ८८ ॥

तुम माँहि अबहु जो परहिं बास, तो कहहु जाय बुदीस पास ॥

मम ढिग जो भेहो बहुगि भजिज, देहो निकामि तो तौहि ताजि ॥ ८९ ॥

यह कहि पुरवामिन सिरग्व दिन्न, कूरम डम जागिष हितहि किन्न ॥

मन्थो न हुकमडतमहँ रिस, बँलमजियसाहतिहिंसिरविसेस ॥ ९० ॥

मरु पिल्लि बहादुरखान मीर, पिल्लगा पुनि कूरमपति प्रवीर ॥

हम दुवचलाय मरु दिस अमोन, मरुपहु सुनि सम्मुह किय प्रयाण ॥ ९१ ॥

मगहूर पूर बनि मरु महीप, सजि आय मनोहरपुर समीप ॥

इततैं सँसेन मारन उपाय, जयमिह बहादुरखान आय ॥ ९२ ॥

मरु ईस अतुलै लाखि साह सैन, भजिगो ताजि हेमन अप्प सैन ॥

१जातरमारवाड गया ॥ ८१ ॥ २मारवाड मे भाग गया ॥ ८२ ॥ ३जीधर मारवाड के पति ने ॥ ८४ ॥ ४पराई खिया को ७ पीटना ८ धमकाना ९ करके १० चस नगर की प्रजा का ११ मरुन कुली की ॥ ८० ॥ १२ काछु माया मे फटा कि क्या अ-
प भी यह ग्राम यमता है १३ ज्वारे पल्लोह है १४ भारी दुख होवे सो भी सहना चाहिये ॥ ८५ ॥ १५ ताडना और तज्जर्न करके ॥ ८६ ॥ १६ बहिन के पति का १७ मारवाड के राजा १८ जेना ॥ ८९ ॥ १९ मारवाड मे भजा २० अमापर २१ मारवाड के पति ने भी ॥ ९० ॥ २२ सेना सहित ॥ ९१ ॥ २३ अताब (पशुत) २४ अपन घर (जाघपुर)

सक अंक सप्त हय इक्क १७७९बीज, गन छोरि लागई गालिनीन १२
 सुनि साह कहैक अति जब चलाय, रहुं विमन विम लुहिआय
 संभर बिलु कहँ तरतहु सुन्यौ न, भजि गजि गो सगर छोरि भोन ९३
 अगँ जब आलम गो चलाय, अल्हनपुर लग्गो पयन आय ॥
 पुनि अमर रान कर लिखत दिन्न, सो मटि साह जामात किन्न ९४
 अरु बहुरि सप्यदन मिलि अधर्म, जामात साह हनि किय कुकर्म
 पुनि तब तृतीय र्गन समय पाय, पृथना तजि कातर गो पलाय ९५
 जयसिंह बहादुर लगिय पिछि, इन रचिय संत्र गृह जाय निछि ॥
 रघुनाथ सचिव रहुं सर्व, मिलि कहिय गज गय अप्य गर्व ९६
 कर बंधि परहु अब साह पाय, जो यह न देखु कुमरहिं पठाय ॥
 भट सचिव मंत्र इम तब विचारि, जयसिंह नरेशहिं बीच डारि ९७
 सुन अभयसिंह पटप सगत्य, पठयो पुर दिहिय कुम्भ सत्य ॥
 रघुनाथ सचिव दिय संग ताम्र, लहि साह जाय इन किय मत्ताम ९८
 गृह जाहु कुमर यह कहिय साह, आवत हम मंडहु गन उछाह ॥
 तब कुम्भ कहिय यह गिनत आन, याको न दोस जन कहि अमान ९९
 पुनि कहिय साह जो यह प्रपन्न, तो जैनक हनहु तब हम प्रसन्न ॥
 यह सुनि उवाचँ कछवाह ईस, वहेँ जु हुलम धरिहँ सु सीस १००
 प्रल्हाद एँह तुम हरि प्रमान, मरुपति हिरण्यकसिपुव समान ॥
 यह सीस साह सेवन वहंत, चित जनक ईहिं न यातैं चहत १०१

॥ ६२ ॥ १ बादशाह की सेना २ बड़े घेग से ३ सांभर नगर के विना ॥ ९३ ॥
 ४ राणा अमरसिंह के हाथ में ५ लिखावट लिखकर दी थी उसे मिटाकर ६
 जमाई ॥ ९४ ॥ ७ जमाई बादशाह को मारकर ८ सेना छोड़कर भगनया
 ॥ ९५ ॥ ९ आपके घमंड से ॥ ९६ ॥ १० जो यह नहीं करों तो ॥ ९७ ॥ ११ सनधि
 १२ कछवाहा जयसिंह के साथ भेजा १३ तहां ॥ ९८ ॥ १४ नहीं माननेवाला
 इसका पिता ही है ॥ ९९ ॥ १५ जगन्नाथ हैं तो १६ पिता (अजितसिंह) को
 मार डालें तो १७ बोला ॥ १०० ॥ १८ यह [अभयसिंह] १९ इस प्रकार से
 पिता इसको नहीं चाहता ॥ १०१ ॥

ॐ प्रल्हादवत्त कूर्म सुनाय, डम अभयसिंह हित गिर उडाय ॥
 कहि साह हमहिं जो गिनत ईस, सुत तो अब आनहु जनक मोस १०२
 रघुनाथ सचिव किय भरज तत्थ, सब कहि पाय आयस समत्य ॥
 हेरन बहो गिलहि सिक्ख आय, दैल अभयसिंह पठयो लिखाय १०३
 निज अनुज भात बखनेस नाम, तिहि प्रति उदत सब लिखिय ताम
 यह मिच्छ जनक सिर कुपित आज, लौ है उतारि धुन धन्वराज ॥
 लहि राज भाग जो चहत लाल, तो भ्रात इनहु जनकहि उताल
 देहो तव तो कह अद्द देस, नागौरपुर पे कहिहो नरह ॥ १०५ ॥
 बखनेस भुंख यह पत्र पाय, जनक सु निज साख्यो भुंखत जाय ॥
 हाकार जोरपुर नगर होय, रनवास अचानक उठिय गोय १०६ ॥
 सुनि मिमल अद्द ८ उमगाय एह, गहि तेग कुमार बिटयो रंगेह
 बखनेस भोति तव नैति विधाय, दिप अभयसिंह केगार दिखाय ॥
 गिनि तव समस्त यह मत्तगूढ, अब किय नरेस चितिको अरूढ
 नाजरन सहित सुंढात नारि, चितिअंगि भरमहुव असिह च्यारि ८४
 सक गगन अद्द हय डक १७८० साल, यह खवगि भई दिखिय उताल

० प्रवृत्त की घाती १ पिता का प्रत्यक्ष ॥ १०२ ॥ ० समर्थ बाबा पाकर ३ पत्र ४
 अपने छाट भाई १ पत्रमहि के नाम ॥ १०३ ॥ १ घुस्त्रान्न ० गदा ८ पिता के ऊ
 पर ६ निश्चय ही मारबाह का राज्य उतार लेवेगा ॥ १०४ ॥ १० शीघ्र ११ ना
 गौरपुर का पति करके १२ राजा करदगा ॥ १०० ॥ १३ सुद १४ मोते हुए
 पिता को ॥ १०९ ॥ १५ अपने घर में बेगलिया १६ मय में १० नज्जता करके
 १८ पत्र ॥ १०७ ॥ ११ चिता पर चढ़ाया २० जनान की श्रिया २१ ३ चिता
 की अग्नि में चोरासी जन मरम हुए ॥ १०८ ॥

* इसके लिये गणपूतान में ऐसा प्रसिद्ध है कि गानर आदि जिन जिन का बखतासेह का अपन स वि
 द्य दाने का खटका था उन ८४ जनों का चिता की अग्नि में बखताकार ढाल कर मरम कर दिये
 इस वखतासेह की मूर्छा का यह कण्य वेद प्रसिद्ध है ॥

धषय ॥ प्रथम तात मारियो, मान जीवनी अच्छाई ॥ अलीप्यार अदमी, इत्याचार पण्य आई ॥
 फर गाढो इच्छस, वेग जैसिह युलायो ॥ मिट मुरघर मरजाद, मरम गाँठ को गुमाया ॥
 कीयणो ईष देयाकर, चण्डदक छदण घरी ॥ बखतासी जमय पाया पजे, कसादत आर्जा करी ॥ ११ ॥

सुनि गीकि मरातव बखसि साह, किय अभयसिंह मरुदेस नाह १०९
 अरु कहिय राज्य जमवाय जाय, पुनि आवहु सेवन मोद पाय ॥
 सरपनि उवाच तब नाय मत्थ, नागोर देत में अनुज अत्थ ११०।
 सो सुभट गोहि नहि दैन देन, कगि लिखित अप्प पठवहु निकेत
 राजाधिराज पद वाहि देहु, अप्पहु निदेस कगि अहर एहु १११।
 इम अभयसिंह कहि धन्य आप, पुनि दिवउ साह लिखित सु पठाय
 राजाधिराज उपपद संगेत, नागोर देहु वखतेस देत ॥ ११२ ॥
 यह सुनि छुटैरन तजिय टेक, कहिय दिन मरुपति मरु कितेक
 हनि अजितसिंह पितु बुद्धि हीन, इम वखतसिंह नागोर लोन ॥
 पट्टय कुमार भक्तसिंह जाय, हुव अरग बीर अनरेस नाम ॥
 नृप इंद्रसिंह नानी जु तास, सो करत पट्ट नागोर वाम ॥ ११४ ॥
 नृप अभयसिंह ताकैं निकासि, नागोर दई अनुजहिं विचारि ॥
 इत कुंन्व साह मेवन बिंवाय, लहि सिक्ख यहहु आगैर आय ॥
 आभैर हुनो बुंदी नरेस, पुनि कियउ भूप कूगम प्रवेस ॥
 मिलि तबहि साला जागिष समोद, बिगचिय दुहून २ कति दिन चिनोद
 दोहा ॥

सक ससि वसु सलह १७८१ समय, कहि बुद्धि कछवाह ॥
 विरचहु राज्य प्रबंध तुम, वा हम रचहिं सुलाह ॥ ११७ ॥
 बिलु प्रबंध आलस बहत, रहत न सुरपुर राज ॥
 कहत होत बुंदिय कुंनय, अह प्रति महत अकाज ॥ ११८ ॥
 बुंदीपति अदिखय तबहि, अच्छी करहु विचारि ॥
 पठवहु कोऊ नाति पट्ट, सब जो करहि सन्हारि ॥ ११९ ॥

१ नारवाड़ का पति ॥ १०९ ॥ २ अभयसिंह ने कहा-३ छोटे भाई बखतसिंह को ॥ ११० ॥ ४ आप ५ हमारे घर [जोधपुर] ॥ १११ ॥ ११२ ॥ ६ मारवाड़ में ॥ ११३ ॥ ७ गजसिंह का पुत्र न उमका पोता ॥ ११४ ॥ ८ जयसिंह १०८२ के ॥ ११५ ॥ ११६ ॥ ११७ ॥ ११८ स्वर्ग का १२ अनीति १३ दिन प्रति ॥ ११८ ॥ ११९ ॥

नाथाउत नगराज तब, नृप मातुल कुल जानि ॥
 पठयो वह करम सु पहुँ, बुढ़ी विभव बखानि ॥ १२० ॥
 आय लघि रक्ख्यो नृपति, द्विगुन खरच निज सत्य ॥
 सब मेटयो नगराज सो, अधिप ग्विज्यो डम अत्थ ॥ १२१ ॥
 कछवाही सेवन करत, श्रीहरि मूर्ति सुमत ॥
 कउल भूप बरजत कुढत, तदपि न टेक तजत ॥ १२२ ॥
 पति पतनीकै याहि पर, वनै न हितकी बत्त ॥
 दड न लोपै तिय हुकम, तदपि कउल मत रत्त ॥ १२३ ॥
 अर्ग नन हप सत्त डक १७७९, कछवाही यह किद्ध ॥
 लौ रालममाँ सचिवपन, निज अनुचरकों दिद्ध ॥ १२४ ॥
 राम नाम निज दास इक, सो करि सचिव सु भाय ॥
 डम गनो पति हुकम चिनु, रही राज्य अपनाय ॥ १२५ ॥
 अद्ध खरच कहत लग्यो, नाथाउत बिख रूप ॥
 गनी प्रति तब प्रीति रचि, भाखी बुढ़िय भूप ॥ १२६ ॥
 निज अनुचर प्रति लिखहु तुम, रनै करि रक्खहु गेह ॥
 नाथाउत नगगजकों, द्रंग न प्रविसन देहु ॥ १२७ ॥
 रानीहु समुझी तवहि, रुक्मिणि मार निदेस ॥
 सो करिहैं नगगज जो, कहिहैं कुम्भ नरेस ॥ १२८ ॥
 यातैं अनुचर राम प्रति, दिय लिखि पत्र पठाय ॥
 नन सौपहु नगगजकों, अप्पन गृह ठपय आँय ॥ १२९ ॥
 तब बुढ़िय नगराज तिन, दिन्नो प्रविसन नाहि ॥
 महुरछाप दैहि न कहयो, अधिप निदेस न आहि ॥ १३० ॥

१ बुधसिंह के मामा के २ कुल म ओष्ठ राजा ने १२० ॥ १२१ ॥ ३ ओष्ठ बुद्धि
 ४ याममार्गी राजा [बुधसिंह] ५ जलता [छाजता] ६ तो भी ॥ १२२ ॥ १२३ ॥
 स ॥ १२४ ॥ १२५ ॥ १२६ ॥ ७ बुद्ध करके ८ पुर म मत घुमने दमा ॥ १२७ ॥ ८
 जयसिंह कहैगा सो करैगा ॥ १२८ ॥ ९ सख १० आमद ॥ १२९ ॥ राजा की
 आज्ञा नहीं ११ है ॥ १३० ॥

तिनहिं *ठिल्लि नगराज तब, प्रविश्यो बुंदिय आय ॥
 राजकाज लग्गो करन, †नूतन छाप घराय ॥ १३१ ॥
 आय खरच सब लिखिलियउ, ‡खंधावार सम्हारि
 स्वामि समुक्ति बुधसिंहको, बिगरत लिन्न सुधारि ॥ १३२ ॥
 द्विगुन खरच मेहत कियउ, मातुल पर नृप रोस ॥
 अच्छामैं उलटी समुक्ति, दिय कूरम सिर दोस ॥ १३३ ॥
 इत द्रुत जामिपै राज्यको, करि प्रबंध कछवाह ॥
 दरकुंचन दिखिय गयो, सबिनयं भिंटयोसाह ॥ १३४ ॥
 तदनंतर मरुईसहू, जय नयं राज्य जमाय ॥
 दिखिय भिंटयो मुगल द्रुत, साहमुहुम्मद आय ॥ १३५ ॥
 कूरम प्रति मरुपति कहिय, मम भट अति मगरूर ॥
 जमन देत नहि राज्य जुगि, करहु अप्प मचकूर ॥ १३६ ॥
 पठयो कूरम जोधपुर, तब निज कटंक उताल ॥
 रठोरन समुझाय रहि, कट्यो तहैं बहुकाल ॥ १३७ ॥
 हुते भूप जयसिंहकैं, सुतो दोय२सुत दोय२ ॥
 सुनहु रामनृपें नाम तिन्ह, सावधान श्रुति होय ॥ १३८ ॥
 जेठो सुत मिहसिंह१जो, मारयो जनक प्रमत्त ॥
 अनुज ईश्वरीसिंह२तस, तात कथित कर तत्त ॥ १३९ ॥
 सुता बिचित्रकुमारि१इक१, दूजी२कृष्ण कुमारि ॥
 सु पहुँ रान संग्रामकी, जामेयी निरधारि । १४० ॥

*ठेल (हटा) कर † नवीन ॥ १३१ ॥ ‡ स्कंधावार [राजधानी] को ॥ १३२ ॥ १
 मामा पर ॥ १३३ ॥ २ शीघ्र ३ बहिनोई के राज्य की ४ नम्रता सहित ५ बा.
 दशाह से मिला ॥ १३४ ॥ ६ जिसपीछे ७ नीति से जीतकर ॥ १३५ ॥ = उम-
 राव ९ विचार ॥ १३६ ॥ १० सेना ॥ १३७ ॥ ११ पुत्रियां १२ हे राजा रामसि-
 ङ्ग कानों से सावधान होकर सुनो ॥ १३८ ॥ १३ उन्मत्त होने के कारण पिता
 (जयसिंह) ने मार डाला १४ पिता जयसिंह का कहना करनेवाला ॥ १३९ ॥
 १५ सो प्रभु राणा संग्रामसिंह की १६ भानजी ॥ १४० ॥

भयो विचित्रकुमारिको, वयः*उपयम अनुसार ॥

जानि जनक जयसिंह जब, रचिय व्याह व्यवहार ॥१४१॥

अभयसिंह मरुईससों, करि सगपन कछवाह ॥

सामग्री किय उचित सब, नयपटु जैपुर नाह ॥ १४२ ॥

सिक्ख तवहि लहि साहसों, दुवर्नृप मथुरा आय ॥

अतहपुरं आमैरतैं, लिन्नो सकल बुलाय ॥ १४३ ॥

सक ससि वसु सत्रह१७८१ असित, अठ्ठमि८१६ विचारि ॥

तनया व्याही मरुपतिहि, कुम्म विचित्रकुमारि ॥ १४४ ॥

माता नृप सग्रामकी, रानाँ अमर कलत्र ॥

चाहुवान पुरवेदला, पतिकी तनया तत्र ॥ १४५ ॥

सरसू वह जयसिंहकी, गगा न्हावन आय ॥

मुरत मग्ग मथुग मिली, लीनी कुम्म वधाड ॥ १४६ ॥

चाहुवानि पिकरुयो रुचिर, बिट्टी तनयाँ व्याह ॥

वरनि विचित्रकुमारि नव, नव दुल्लह मरुनाह ॥ १४७ ॥

[पदपात्]

सरसूकी जयसिंह केानि किंकर जिम किन्नी ॥

इक दिन गोकुल जात खध सिविका तस लिन्नी ॥

इक्क वस गहि अप्प मैरुप कर इक्क गहायो ॥

मातासों गिनि मैहत विहिते सतकार बढायो ॥

अप्पनों गिनहु मोकोँ अनुगें यँहँ तीरथ हरि अवैतरिय ॥

* विवाह के ॥ १४१ ॥ १ नीतिषतुर २ जयपुर का पति "अथ थोड़े ही समय में जयपुर पसावेगा इसमें जयपुर का पति कहा है" ॥ १४२ ॥ ३ जनाना ॥ १४३ ॥ ४ कृष्णपञ्च ५ भादवा की ॥ १४४ ॥ ६ उदयपुर के राणा अमरसिंह की स्त्री ॥ १४५ ॥ १४६ ॥ ७ बेटी की पुत्री [दौहिती] का ८ बीवनी (बुलहिन) नथीन ॥ १४७ ॥ ९ अदय १० पालषी ११ एक पास तो आप [जयसिंह] ने लिया और दूसरा पास जोधपुर के राजा [अभयसिंह] का पकड़ाया १२ यही १३ उचित १४ सेवक १५ विष्णु भगवान् ने अवतार लिया सो तुम यहा

तुम देहु बैठि हाटक तुला करन जोरि इम अरज किय ॥१४८॥
दोहा ॥

यह सुनि महिषी अमरकी, बोली नयमय बैन ॥

दुहिताके बसुतें तुला, हमको उचित यहै न ॥ १४९ ॥

गीर्वाणभाषा ॥

शार्दूलविक्रीडितम् ॥

श्रुत्वैवमुदिताऽमररय महिषी प्रोवाच जामातरं,
वस्वस्माकमकब्बगदनुचितञ्जातन्तथाप्यायतम् ॥

भावत्कम्भुवनम्भवेद्यदिसुभूभृद्भूरिभर्माकरं,

पौरटयो बहुशस्तुलारस्तदिह कार्या जामिजामेययोः ॥१५०॥

स्त्रग्विणी ॥

एवमाकर्ण्य कूर्मेश्वरः साहसी स्वस्वसारन्तदोवाच कार्या तुला ॥

बुन्दीभृज्जाययाऽपीति नोर्गीकृतन्तत्कृता भागिनेयस्य राज्ञा दृष्टात ॥

प्रायोदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

हु

दोहा ॥

सुन नाम भवानीसिंह निज, हो जामेयहु तथ ॥

जेर ताकी तब हाटक तुला, किय कूरम हठ सथ ॥ १५२ ॥

रान मात जामात प्रति, पुनि अकिखय चित प्रेय ॥

१ सोने की तुला दो१दोनों हाथ जोड़ कर ॥१४८॥ २ पटरानी ३ राणा अमरसिंह की ४ नीतिमय ५ बेटी के ६ धन से ॥१४९॥ प्रसन्नता से ऐसा सुन कर अमरसिंह की पटरानी जमाई से बोली कि हमारा धन तो बादशाह अकबर से युद्ध होने में अनुचित गया अर्थात् ऐसे पुण्य में नहीं लग सका और उसी प्रकार उस [अकबर] के आधीन गया. हे उत्तम राजा जो आप की भूमि बहुत सोने की खान वाली होवे तो आपके बहिन और भानजी की सोने की बहुत तुला करो ॥१५०॥ ऐसा सुन कर उस साहसवाले कछवाहों के पति ने उस समय अपनी बहिनको तुलादान करनेको कहा यह बुन्दीके राजाकी स्त्रीने भी स्वीकार नहीं किया तब वह तुला राजाके हठसे भानजेकी कीगई ॥१५१॥ ८ भानजा ९ स्वर्ण की तुला ॥१५२॥ १० राणा की माता ने ११ जमाई जयसिंह से १२ प्यार से

पुल *कालिंदी सरित पर, वधों सुगम †विधेय ॥ १५३ ॥
 इन तव लिखि दिल्लीससों, लित्रों हुकम मगाय ॥
 सद्धि सदैस ६०००० ‡मुद्रा खरचि, इडन पुल दिय वधाय १५४
 कुमार रान सम्रामकै, जगतसिंह ¶अभिधान ॥
 ताहूकै तिहि दिन तेनय, भो प्रताप कुलभान ॥ १५५ ॥
 सुत सुत सुतकी मधुपुरहि, सुनी खवरि चहुवानि ॥
 दिय हाटक लखखन द्विजन, मुदित वधाई मानि ॥ १५६ ॥
 कूरमपति पठयो तदनु, अतहपुरँ आमेर ॥
 इत पत्नी चहुवानिहू, निज उदयादिकनैर ॥ १५७ ॥
 अभयसिंह जयसिंह ए, दुव २ पुनि दिल्ली आय ॥
 हाजरि साह हजूर हुव, लाह विनय हित लाय ॥ १५८ ॥
 सक दग वसु सत्रह १७८२ समय, सेयै रिम्मायो साह ॥
 सोहि करत दिल्लीम सब, कहत जोहि कछवाह ॥ १५९ ॥
 सूबा दुव २ जयसिंहकै, आगगा रु उज्जैन ॥
 अब सूबा अजमेरको, बहुरि दयो हित बैन ॥ १६० ॥
 मैतिमें नयमें मलें में, सबमें कूरम सेरें ॥
 विनु वजीर दब्बे बहत, जवन हिंदु सब जेरें ॥ १६१ ॥

[पदपात्]

अभयसिंह मरुईस सुन्यो निज देस देवर दुख ॥
 सिक्ख साहसों मगि रचिय दरकुच गेह रुख ॥

* जमुना नदी पर † सुगमता से वध सक तो पुल बनाया ॥ १५३ ॥ ‡ रुप-
 पे † महाराणा की माता ने ॥ १५४ ॥ ¶ नाम १ पुत्र २ प्रतापसिंह नानक
 ॥ १५५ ॥ ३ पदपोते की ४ मयुरा में ही ५ लाखों ब्राह्मणों को सोना दिया
 वा ब्राह्मणों को लाखों मुहर दों ॥ १५६ ॥ ६ जिस पीछे ७ जनाने को ८ प्राप्त
 हुई (पहुंची) ९ उदय है आदि में जिसके ऐसा नगर अर्थात् उदयपुर ॥ १५७ ॥
 १० काम ॥ ११८ ॥ ११ सेवन करके ॥ १५९ ॥ १० ॥ १२ बुद्धि में ११ नीति
 में १४ सलाह में १५ सिंह (बलाबाध) ॥ १६१ ॥ १६ उपद्रव (दुष्ट कसोट)

संग दियउ जयसिंह सेन बसुसहस्र ८००० जुत वर ॥

राजामल निज सचिवकेर सिवदास *सहोदर ॥

†कहि जाय राज्य मरुईसको सजव जमावहु जोर सन ॥

समुझाय सबहि रहोर सठ पारहु तुम मरुपति पयन ॥ १६२ ॥

[दोहा]

आयो मरुपति गेह इध, सत्थ सचिव सिवदास ॥

इत भेटयो कूरम अधिप, तँहँ इक हिंदुन त्रास ॥ १६३ ॥

दिल्लामैं यह दुसह दुख, सहि सब कटत काल ॥

गहि गहि हिंदुन बरस प्रति, कर मंगत चंडाल ॥ १६४ ॥

बीस २० दम्भ बसुमान सौं, इक्क १ अवसु सौं लेत ॥

जर्न प्रति हेरत स्वपचै जर, दिन प्रति यौं दुखदेत ॥ १६५ ॥

पादाकुलकम् ॥

दिवाकिंति तिनमैं इक नायब, स्वपच ओर तस कथित करैं सब ॥

दिन प्रति करि हिंदुन हरवल्ली, स्वपच कहैं स्वामिहिं जुरि सल्ली ॥ १६६ ॥

हमरी यह रैयत हे नायब, आई हासिल दैन इहाँ अब ॥

तब वह अखिख स्वामि जिम उत्तर, कथितै रीति सब हितुँ गहैं कर ॥ १६७ ॥

कर गहि लिखि बंधैं दैल कंठन, यह लिखि स्वपच तजैं इक हाँयन

दूजे बरस बहुरि गहि लावैं, अह प्रति दैद मंदध उपावैं ॥ १६८ ॥

हिंदुन हेरत फिरत हीन दैल, कगत राहि दिन प्रति कोलाहल ॥

* सगा भाई† कहा ॥ १६२ ॥ १६३ ॥ १ भंगी (चांडाल) ॥ १६४ ॥ २ धनवान् से बीस रुपये सालियाना ३ निर्धन से एक रुपया ४ मनुष्य प्रति ५ भंगी [चांडाल] धन लेता था ॥ १६५ ॥ ६ उन भंगियों में एक नाई ७ हाकिम [अकबर] था = सब भंगी [चांडाल] उसका कहना करते थे ९ आगे करके १० सवार होकर ॥ १६६ ॥ ११ स्वामी [मालिक] कहै तिस प्रकार १२ ऊपर कहीहुई रीति से १३ से ॥ १६७ ॥ १४ वह कर लेकर कंठ में पत्र बांध देते १५ एक वर्ष तक उसको चांडाल छांड देते थे १६ दिन प्रति १७ उपद्रव ॥ १६८ ॥ १८ बिना पत्र वालों को १९ रोक कर

स्वपचन प्रनति करहिं हिंदू सब, तेंदपि दह अप्पहिं छुट्टहिं तब १६९
 दिल्लिय यह दिनप्रति दुम्सह दुख, मव कर दयें विना न लहैं सुख॥
 कूरम नृप यह माफ करायो, लिखित लिखाय साह सन लायो १७०
 छाप वजीर करैं नहिं उदत, बहुत बेर सुनि टारि गयो वैत ॥
 द्विज डक दया बहादुर नागर, सा जावत दक्षिण न सुवापर ॥ १७१ ॥
 जाको मनमुन सत्त ७६ जारी, तीन अयुन ३०००० भट संग तुखारी ॥
 वासों मिलि कूरम यह अकखी, रहैं काँनि हिंदुन तब रक्खी १७२
 कहि द्विज करन सिम्ह दम जेहैं तब छपाय वल करि देल लैहैं ॥
 जो वजीर सम्मुद पिल्लै दल, तो तुम करहु सहाय खडि खल १७३
 यह कहि विम ताग गृह पत्तो, सग सबहिं सुभटन अनुगतो ॥
 वह वजीर बैरखान मुहुम्मद, हुसन अली सुहन्पौ जिहिं सय्यद १७४
 मद १५ द२ अन्त्यानुप्रास ॥ १ ॥

सुभट सग सहँसन तूगानी, इम वरजोर रहैं अभिमानी ॥
 यह द्विज बीर गयो तस आलप, रोके भट सु रुकेन बडे रंय १७५
 दै पय खान मुहुम्मद गहिय, इहिं देल छाप करहु यह बहियें ॥
 लखी वजीर छाप यह लैहैं, जोर करैं अतिवल हनि जैहैं १७६ ॥
 इम बिचारि पत्र सु छप्यो उन, हटि भग्गो तवतैं दुख हिंदुन ॥
 सक गुन अहसत डक १७८ अतर, किय वरजोर समुंद सु कोगर १७७
 यह जयसिंह अप्पब किन्नी, नागर किति बंदि इम लिन्नी ॥
 बहु औसी किन्नी कूरम बैर, कहि साहहि मिटवाय गया कर १७८
 [पट्पात]

१ तोभी ॥ १६६ ॥ १७० ॥ २ वानी ॥ १७१ ॥ ३ घोडों के मवार ४ अदर ॥ १७२ ॥ ५ पत्र
 ६ सन्मुख मना मजे तो ॥ १७३ ॥ ७ वजीरा में अष्ट ॥ १७४ ॥ ८ वमक घर
 ९ यह बेग से ॥ १७५ ॥ १० इस पत्र पर छाप करो यह ११ कहा ॥ १७६ ॥
 १२ १३ पत्र को १४ मुद्रा (छाप) सहित किया ॥ १७७ ॥ १४ अष्ट ॥ १७८ ॥

कौटिके अरु कांदविके द्रव्य विक्रय ढिग धारै ॥
 अनुक्रम आपन अवलि क्रेय निज निज बित्यारै ॥
 सोहू साहहिं अक्खि प्रबल मेटी कूरमपति ॥
 इम करि किंति अनेक साह सेयो नय सम्मति ॥

लाहि धरम मग्ग मनुमत समुक्कि श्रुति निदेस कछु अनुसगिय ॥
 पटु बुद्धि भयो इहिं समय 'पै कहिहैं देस' १० अनुचित करिय ॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीप-
 तिबुधसिंहचरिते उदयपुराधीशरांणासंग्रामसिंहरामपुरविजयन १
 कोटाधीशमहारावभीमसिंहस्य बल्लभसंप्रदायानुयायिताहेत्वन्तर्हि-
 तत्वकारणाभरणप्रख्यापन २ महारावभरणज्ञानकोटाहरणाहेतु-
 बुन्दीनगरसालमसिंहकोटानगरगमन ३ अकस्माद्वासिसमयगोकु-
 लागतभीमसिंहसमरपराजितसालमसिंहपलायनभीमसिंहबुन्दीह-
 रणा ४ अभैराधीशजयसिंहस्ययोधपुराधीशाजितसिंहकनीविवाह-
 न ५ कोटामहारावभीमसिंहदत्तावरखांसमरमरणा ६ पुनर्बुधसिंहा-

१ लट्ठीक [कलसी] और २ कंदोई हलवाई ३ देखने की वस्तु पास पास रखते थे
 अर्थात् मांस और मिठाई पाग पास विकती थी अनुक्रम से ४ व'जार में ५ पंक्ति
 यांवर ६ अपनी अपनी देखने की वस्तु को फैलाते थे ७ कीर्ति ८ मनु के
 मत [मनुस्मृति] को समझकर ९ कुछ नेद की आज्ञा के साथ चला १० पर-
 न्तु ११ जयसिंह ने दश पाते अनुचित की जो नामे कहेंगे ॥ १७९ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सातवें राशि में बुन्दी के पति बु-
 धसिंह के चरित्र में उदयपुर के महाराजा संग्रामसिंह का रामपुरा विजय
 करना १ कोटा के महाराव भीमसिंह का बल्लभ मत पारण करके पड़दा में
 रहने के कारण मरना प्रसिद्ध होना २ महाराव को मराहुआ जानकर कोटा
 खेने के अर्थ बुन्दी से सालमसिंह का कोटे जाना ३ गोकुल से अचानक रा-
 त्रि के समय आये हुए भीमसिंह से सालमसिंह का पराजित होकर भाग-
 ना और भीमसिंह का बुन्दी लाना ४ अभैर के राजा जयसिंह का जोधपुर के
 राजा अजितसिंह की पुत्री से विवाह करना ५ कोटा के महाराव भीमसिंह
 का दत्तावरखां के युद्ध में दक्षिण में मारा जाना ६ बुन्दी का फिर बुधसिंह

धिकारबुन्दीगमन ७ अर्जुनसिंहकोटापट्टपापदा ८ जयसिंहगारग्या
 र्यसयवनेन्द्रप्रयागकर्तृतय्यदहसुनअलीछलमारकयवनेन्द्रमुहम्म-
 दशाहपुनर्दिल्लीगमनजयसिंहार्थाकबरपुगाधिकारसमर्पण ९ मरुदे-
 शोपरियवनेन्द्रसेनायानभीतपत्तापिताजितसिंहनिजश्रेष्ठात्मजाभ
 यसिंहदिल्लीप्रेषण १० यवनेन्द्रनिशेथनिजानुजप्रखतसिंहकरमागित
 जनकाजितगिहाभयगिहपोभपुरपट्टाधिगमन ११ गृहीतयवनेन्द्राज्ञा-
 भयसिंहनिजानुजप्रखतसिंहार्थगजाधिराजपदसहित आगोत्रगरा -
 जप्रदान १२ अभयसिंहस्य जयसिंहकनीपाशिप्रशशा १३ जय-
 सिंहपानुचितहिन्दुकरमोचन १४ जयसिंहानेरुप्रशतनीयकार्य
 गगानासहितदनुचितदशकार्यप्रदर्शनप्रतिज्ञान बह्विंशो मयूख
 ॥ २६ ॥

आदितश्चतुःषष्ट्युत्तरद्विशततम ॥ २६ ॥

[दोहा]

इत कोटा अर्जुन नृपति, पाया त्रिशंख धान ॥

के अधिकार में होना ७ काटा में अर्जुनासह का गद्दी बैठना ८ जयसिंह को
 मारने के लिये बादशाह सहित बहाई करनेवाला राज्यद दूधनअली को छठ
 पात से मार कर बादशाह मुहम्मदशाह का पीछा दिल्ली जाना और जयसिं
 ह को आगरे का सुबा देना ९ मारदाय पर बादशाही सता जाने के कारण
 डरकर भागेहुए राजा अजितसिंह का अपने बड़े पुत्र अभयसिंह को दिल्ली
 भेजना १० बादशाह की आज्ञा से अपने छोटे भाई प्रखतसिंह के हाथ से
 पिता अजितसिंह को मरवाकर अभयसिंह का जोधपुर की गद्दी पर बैठना
 ११ बादशाह की आज्ञा लेकर राजा अभयसिंह का अपने छोटे भाई प्रखत
 सिंह का राजाधिराज की पक्षी के साथ नागार का राज्य देना १२ राजा
 अभयसिंह का राजा जयसिंह की पुत्री से विवाह करना १३ जयसिंह का
 हिन्दुओं के ऊपर से अनुचित कर का छुटाना १४ जयसिंह के अनन्य प्रखत-
 नीय कार्य की गणना के साथ उनमें दश अनुचित कार्य बनाने की प्रतिज्ञा
 का प्रकीर्तना २५ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दासौ चौसठ २१४ म
 यूख हुए ॥

०

१ तीन वर्ष जीवित रहा

स्याम रु दुज्जनसल्लके, भो भू हित धैरसान ॥ १ ॥
 अधेज स्यामहिँ मारिकै, भो नृप दुज्जनसल्ल ॥

बुंदीपर दावा बिरचि, हठि सु बिचार तहल्ल ॥ २ ॥
 इत दिल्लिय कूरम अधिप, माह जिह्वायन सेय ॥

सक चउठवसु सत्रह १७८४समय, आयो निजम अजेय ॥ ३ ॥
 करि अर्मात्य नगराज दिय, बुंदिय कूरम पदाय ॥

बुंदीपति इहिँ पर बिमर्न, रक्खत निज रिसाय ॥ ४ ॥
 कछवाही प्रति नृप कहिय, अंजुज प्रबोध आज ॥

राज तुम्हैं जो दब्बनों, तो रक्खहु नगराज ॥ ५ ॥
 भ्रातहिँ इम गनी यनन, कहयो तमनिँ कछवाह ॥

भगिनी तुमरी भुम्मिकी, चित न रक्खत चाह ॥ ६ ॥
 जामिपँ अलस प्रमाद जुत, अरु तु मी मति एह ॥

गेह द्वि भूपन बिगरते, बिगरयो डल्लहिँ गेह ॥ ७ ॥
 हम जान्यो बिगरत बियव, लैहैं अदहु तधामि ॥

तुमरी मति भ्रम माहिँ तो, हमहु दयो हित टारि ॥ ८ ॥
 यह कहि नृप जयसिंह तव, लिय नगराज बुलाय ॥

रंच सिराही राँगिनी, इहिँ पर बुंदिय राय ॥ ९ ॥
 बुंदाउति उर जो भयो, कुमर पदम अभिधान ॥

आर्मय बस तिहिँ इन दिनन, किन्न महाप्रधान ॥ १० ॥
 नाथाउत कूरम नृपति, बुँल्लयो विविध रिसाय ॥

राजकाज लगगो करन, बुंदिय सालम आय ॥ ११ ॥

१ श्यामसिंह और दुज्जनसल्ल के भूमि के अर्थ २ बुंदा बुंदा ॥ १ ॥ ३ बड़े
 माई श्यामसिंह को ॥ २ ॥ ४ बादशाह की तीन वर्ष सेवा करने ५ अपने
 घर (आमैर) आया ॥ ३ ॥ ६ प्रधान (कामदार) ७ जयसिंह ने ८ उदास ॥ ४ ॥
 ९ बुधसिंह ने कदा १० छोटे भाई [जयसिंह] को समझाया ॥ ५ ॥ १० क्रोध
 करने ११ बलि ॥ ६ ॥ १२ बहिनोई ॥ ७ ॥ ८ ॥ १४ रानी को ॥ ८ ॥ १५ बुधसिंह
 १६ नाथ १७ ॥ १८ वंश १९ परलोक गया ॥ १० ॥ १६ बुलाया ११ ॥

कछवाही रान याहिपर, कछु गसन्न बुंदीस ॥
 चुडाउति रठोरि गिर, यहहि रही बनि ईम ॥ १२ ॥
 दिल्लीसन बुंदीस जब, दुदाहर धर आय ॥
 चुडाउति रठोरि तब, लिन्नीही बुलवाय ॥ १३ ॥
 कछवाहीके डर दुहुँनर, रक्खि *निवाई नैर ॥
 पटरानीके वचन बसि, अप्प रहिय आमैर ॥ १४ ॥
 नाम भावानीसिंह निज, पटरानी किय पूत ॥
 औरस वो कृत्रिम यहै, सु हँम न जान्यो सूत ॥ १५ ॥

पादाकुलकम् ॥

सिख तब रानी सुतहिं सिखावहिं, पति ढिग भोजन काल पठावहिं
 अरज कुमार असनहिं अकखहिं, भिन्न थात भोजन तब रक्खहिं १६
 उर भ्रम सवन यहै लखि आन्यों, पै काहू न तत्व पहिचान्यों ॥
 छित्तरसिंह इद्रगढ स्वामी, नृप ढिग मिलन आय भट नामी १७ ।
 भुज्जन नृप बैठो छित्तर सहँ, रानी तबहु सुकल्यो सुत बह ॥
 छित्तर लगि ताहि बैठावन, दिय तब नृप उत्तर छल दावना १८ ।
 खल्लु सुर अर्चन कछुक रदयो खिल, करि वैह इक १ थात भुज्ज-
 हिं कैल ॥

दिन प्रति इम बढि बढि भ्रम दोरयो, सोतिन आदि सबन मन
 मोरयो ॥ १९ ॥

रानी अय नृप सीस रिसावै, पुत्रहिं असनैकाल न पठावै ॥

॥ १२ ॥ १३ ॥ * निवाई जायक नगर में ॥ १४ ॥ १ कछवाही ने २ कछवाही के
 बदर से उत्पन्न हुआ था या करतवी (बनायटी) था सो ३ ग्रंथकर्ता (सूर्यमल्ल)
 कहते हैं कि यह हमने भी नहीं जाना ॥ १५ ॥ ४ भोजन करने के अर्थ ५ सु
 के थात म ॥ १६ ॥ १० ॥ ६ भोजन करने को • छित्तरसिंह के साथ ॥ १८ ॥
 ८ निद्राण ही ९ देवपूजन (कुमार के अर्थ देवताओं की कृपापात करी थी सो)
 करना १० याकी है सो ११ वह पूजन करके १२ एक थात में कुमार के साथ
 १३ निद्राण ही भोजन करेंगे ॥ १० ॥ १४ भोजन के समय

नृप जयसिंह यहाँ नहि जानै, मिथ्याही भगिनी रिस मानै ॥२०॥
 प्रीति दिखाय रह्यो नृप उप्पर, अरुचि धरै रानीपर अंतर ॥
 *कुम्हहिं नहिं बुंदीस कहावै, †पुत्तहिं लाखि ‡संतत दुख पानै ॥२१॥
 सक चउ४वसु सत्रह१७८४संबच्छर, धल्लपो यह विग्रह बुंदियधर ॥
 लोकहु बहु बदनीति मचाई, सुनि सुनि सब जयसिंह पचाई ॥२२॥

(पट्टपात)

बुंदी लोकन बहु अनीति आमैर मध्य क्रिय ॥
 सठ नाजर किसतूर नगर कुतवाला मारि लिय ॥
 पकरि पकरि परदार जार बहुतन गहि रख्यी ॥
 मार लूट मचवाय नगर लज्जा सब नकखी ॥
 सुनि सुनि अनीति कूम्ह सहिय कहिय कहु न बुंदीस प्रति ॥
 जिम जिम सही सु तिम तिम जुलम अनय प्रचारयो नरनअति ॥२३॥

(दोहा)

दिन दिन अब कूम्ह हुंमन, कह्यो कछुहुन जाय ॥
 अंधु छाँह जिम कहु अनख, राखी हृदय समाय ॥ २४ ॥
 सुता रान संगमकै, ईदरपति भानेज ॥
 स्वसाँ सहोदर नाथकौ, उपर्यम उचित अजेज ॥ २५ ॥
 लौ चर ताके लौंगली, आये जैपुर अंत्य ॥
 सुभट केसरीसिंह पुर, सँलूमरिप के सत्य ॥ २६ ॥
 सगपन ईश्वरिसिंहसौं, कूम्ह सुतसौं ठानि ॥
 कछवाही भानहिं कह्यो, मम सुत व्याह प्रमानि ॥ २७ ॥

॥ २० ॥ * जयसिंह को † पुत्र को ‡ निरंतर ॥ २१ ॥ १ सत्रहसर (वर्ष) में ॥ २२ ॥ २ पराई स्त्रियों को ३ अनीति ॥ २३ ॥ ४ छदास ५ छुए की छाया के समान ॥ २४ ॥ ६ सगी वहिन ७ नाथसिंह की, जिसको मेवाड़ में 'नाथजी' कहते हैं ८ विवाह के उचित ९ विलंब रहित शीघ्र ॥ २५ ॥ १० ना रिचल ११ यहाँ १२ सल्लुवरके पति के साथ ॥ २६ ॥ २७ ॥

भेदात् स्वीये भानेजद्, व्याह उचित अब एह ॥
करिये सगपन रानके, कुमर सुती तस गेह ॥ २८ ॥

(गीवर्वाणभाषा)

(इन्द्रजिजा)

शुत्वैरमाहूय सल्लूमरीश चुगडाउत केसगिर्मिहसज्ञम् ॥
रागेशसामतचयोडुचन्द्र प्रोवाच दुडारधराधवरतत् ॥ २९ ॥

[स्रग्धरा]

बुदीधीशात्मजोपञ्जलनकुलमणिभांगिनेयोऽरमदीयो,
युष्मज्जामातृभावगमितमुचित इत्येवमालोच्य तस्मात् ॥
अरमायष्टाऽब्दकाण्युदयनगरनाथेन पट्टायनी सा,
राणेरौनादिराज्ञा तवजननभृता सव्विवादया खपौत्री ॥ ३० ॥

(स्रग्विणी)

इत्यभाकर्ण्य बुन्दीनरशस्तदाऽऽहूय चुगडाउतम्पावदम्बम्मतम् ॥
रागाराजा ध्रुवनप्त्रिकोद्गाहकृन्नोररीकार्यमस्मन्निदेशं विना ॥ ३१ ॥

प्रायोदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

(दोहा)

कूरमपति यह वत्त सुनि, सभर भूपं समीप ॥

१ हे भाई २ तुम्हारा भानजा श्रीशराणा के कुमर के पुत्री है ॥ २८ ॥ ऐसा सुन कर
केसरीसिंह नाम सल्लूमर के पति को बुझाया जो राणा के तारों रूपी बसर-
खों में चन्द्रमा रूपी था उससे दुहाइ के पति ने विवाह सम्पन्धी वार्ता क-
ही ॥ २९ ॥ यह अग्नि धंधा का मणि बुन्दी के पति का पुत्र और हमारा भा-
नजा है, इसकारण से निरवय करके तुम्हारा जमाई होने के योग्य और उचि-
त है सो विचारो इसका शरीर आठ वर्ष का है और यह उदयपुर के पति
की कन्या छ वर्ष की है महाराजा छव के वंश को धारण करनेवाले आदि
राजा हैं, ता अपनी पोती को अच्छे प्रकार से विवाहने योग्य हैं ॥ ३० ॥
इस प्रकार सुन कर बुन्दी के राजा न बस सल्लूमर के पति चुगडावत को बुला
कर अपना मिष्टान्त कहा कि मेरी जाना क बिना राणा की पोती के विवा-
ह का कार्य स्वीकार मत करना ॥ ३१ ॥ ४ राजा बुधसिंह के पास

कूरम पुच्छन सुकल्पो, *कुंभानी भट दीप ॥ ३२ ॥

[षट्पात्]

दीपसिंह कछवाह जाय बुंदीस निकट तव ॥

यह सगपन अवरोध संधि अंजलि पुच्छयो सब ॥

कहिय बुद्ध सुनि कुमार आहिं मम जात नाहिं यह ॥

रानी कृत्रिम रचिय सोति सुत जानि गठ्य सह ॥

जो चहत भूप जयसिंह अब वंस बरनसंकर करन ॥

तो उदयनैर व्याहहु सुतहिं निर्गमरीति यह उचित नन ॥ ३३ ॥

दोहा ॥

यह कहि सुदा रंजतमय, सत्तरि सँहर १०००० मँगाय ॥

दिन्नी कूरम दीप हित, न्याय तथा अन्याय ॥ ३४ ॥

न लिय दीप तब कहिय नृप, जंपि सपथ छल जोरि ॥

हम यिति रक्खहु समय हित, लौहें संगि बहोरि ॥ ३५ ॥

दीपसिंह जान्यों बहुरि लौहें द्रव्य मँगाय ॥

पँतो पुनि नृप पास पै, जुलन कह्यो नहि जाय ॥ ३६ ॥

कूरम नृप सुभटहिं कह्यो, पुच्छी सो कहियेहु ॥

कहिय दीप तिन अलस करि, अबही कह्यो न पहु ॥ ३७ ॥

अकिखय तब जयसिंह यह, रखत जामि पर रीस ॥

कुमरहिं ईम कृत्रिम कहत, बिरचि अनय बुंदीस ॥ ३८ ॥

यह कहि बुंदी ईस प्रति, कहि पठई कछवाह ॥

मम जनपद अब रहहु मति, चलहु जैतय चित चाह ॥ ३९ ॥

*कुम्भारि शाखा के कछवाह उल्लाख दीपसिंह को भेजा ॥ ३३ ॥ इरोपमे का
कारण § हाथ जोड़ कर ॥ यह कुमार सुक से उत्पन्न हुआ नहीं है + सौत को
पुत्र बांभी समझ कर गर्व सहित १ वंद की रीति से यह उचित नहीं है ॥ ३३ ॥
२ चांदी के रुपये ३ कछवाह दीपसिंह के अर्थ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ४ गया ५ परन्तु
वहाँ जाकर यह जुलन की बात नहीं कही ॥ ३६ ॥ ७ उल्लाख को ॥ ३७ ॥
८ बाहिन पर ९ इसकारण १० अनीति ॥ ३८ ॥ १० मेरे देवा में ११ जहाँ जी-

गीर्वाणभाषा ॥

इन्द्रवज्रा ॥

श्रुत्वेति बुन्दीनरप प्रमादी कूर्मश्वरम्प्रत्यवदहत्वेन ॥

युष्मानिराहे प्रथम रहस्य तद्युष्मदुक्त सकल करिष्ये ॥ ४० ॥

अनुष्टुप् ॥

रहस्याहूय बुन्दीश जयभिर्हरतदा नृप ॥

पमच्छ जामिजोदन्त-नम्बो नीतिपरायणा ॥ ४१ ॥

शुद्धप्राकृतभाषा ॥

आख्या ॥

सोक्त्या धियेउ रणया स्तात्त दुहृङ्कुल कखु विय होइ ॥

यायाये ओगसबिष्टो रागाए कित्तमो किडो ॥ ४२ ॥

गीर्वाणभाषा ॥

शालिनी ॥

शृग्वन्नित्थङ्कूर्मगजो महात्माप्यामर्षी प्रोन्नद्धभोगोवसर्प्य ॥

तर्जन्नुद्यो जानिपम्प्रत्युवाचारमज्जामेये ऽनौरसे कोत्र हेतु ॥ ४३ ॥

आहै पदा जजो ॥ ४४ ॥ यह सुन कर इन्मल बुन्दी क राजा न पछवाहों के

पति को पत्र से उत्तर दिया कि मैं पहिले आपके पास एकात बाहता हु कि

र आपका कहा हुआ सब करना ॥ ४० ॥ तब बुन्दी के राजा को एकात में

बुझा कर बस नीतिनिपुण जयभिहू ने मग्न होकर भामजे का वृत्तान्त पूछा ॥ ४१ ॥

संस्कृत अनुवाद ॥

सुत्वा कथे राज्ञः पालुष्टकुल सखे पथ भवति ॥ नन भूत औरसपुत्रो रा-

ज्या कृत्रिम कृत ॥ ४२ ॥

भाषानुवाद ॥

यह सुन कर राजा सोचा कि हू साज्जा मेरा अष्टकुल दुष्ट (वृषित) होजाये

गा क्योंकि यह औरस पुत्र नहीं हुआ है राक्षी न कृत्रिम किया है ॥ ४२ ॥

इण प्रकार सुन कर महाशय कछवाहों क राजा ने क्रुध होकर कण उठाये

हुए सर्प के समान उग्र मज्जाना करके बणिहोई (बुधसिंह) ने कहा कि हमारे

प्रायोदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

(षट्पात्)

कह्यो प्रकट कछवाह प्रीति तुमरी न जामिपर ॥

सेवत श्रीगोविंद बीजे द्रव्यादि कउकैवर ॥

चुंढाउति पर चित्त तात जो हांहि तनय प्रव ॥

दैहा ताकैहँ राज्य साधि दमहू जिन्नी सब ॥

बहुद्वरस पालि पुत्रहिं सविधि धिक मन सिद्धु गायन धमिय ॥

अभिंसाप अप्प अप्पत अन सु किन अलोक जनमत करिय ॥४४॥

दोहा ॥

संभर अक्खिय एह सुनि, हमहिं कालिका आन ॥

कछु कार संकट टारिहौ, सो मव करहिं प्रमान ॥ ४५ ॥

कूरम अक्खिय कउल तुम, अपथन नहिं विरवास ॥

लिखि रवहत्थ अप्पहु लिखित, तप लैहँ असुतांस ॥४६॥

चुंढाउति रहोरि कै, निपजहु पुन निसंक ॥

बाहि न वैहँ राज्य अब, अवगहिं तैहँ अंक ॥ ४७ ॥

(षट्पात्)

सुनत एह बुंदीस कैर निज हत्थ लिखित किय ॥

चुंढाउति रहोरि जनित पैहँ नहिं बुंदिय ॥

तुम कैर अप्पहि ताहि करहु अप्पन मन इच्छित ॥

कहिहो जिहि कछवाह मूनु थप्पदि करि सिच्छित ॥

१ बाहिन पर २ कारण ३ हे वाममार्गियों जे अष्टावस चुंढाउति के अम ७ मित्
थ्या दोष देते हो खां जन्मते ही बनाज बयों नहीं करादिषा ॥ ४४ ॥ ५५ ॥ ७ तुम वा-
ममार्गी हो इसकाण्य तुम्हारे सौगनों का विश्वास नहीं है ८ अपने साथ ले
जिन्नायद जिन्नायद दो ९ तब उस लड़के के प्राय लेवेंगे ॥ ४५ ॥ १० दूसरे को
गोद लेवेंगे ॥ ४७ ॥ ११ कूड़ (मूर्ख) ने यह लिज दिया कि १२ चुंढाउति और
राठोड़ी के पुत्र होवेंगे सो हम तुम्हारे हाथ से देवेंगे फिर तुम १३ अपना मन
का चाहा करना १४ हे कछवाह १५ सिद्धित

दत्तं दियउ एह जयसिंह कर सैक्खी लिखि हइन सबन॥
कोऊन लिखत औसी कुबिधि लिप्प्यो जिम सभर लिखन४८
(शुद्धप्राकृतभाषा)

इम लिहिअ कत्तु तदो प्पिअवयणोहिं गिहाय सवन्धम् ॥
रगणा जयसिंहाण सुज्जकुमारी गिअप्पजा दिहा ॥ ४९ ॥
(पट्टपात)

याहि बरस जयसिंह नगर जयपुर बसवायो॥
सित सहस्रं ब्राह्मसिप १२ मकर रवि लगन मिलायो ॥
सिलप तत्र अनुसार सबहि व्यवहार सधाये ॥
बारह१२कोस बिथार बिबिध प्राकारं बधाये ॥
रवि जुकति दम्भ कोटिन खरवि पुर अपुब्बकिन्नो प्रकट॥
हिंदुवसथाने दूजो नहिन सहर प्रातिबिंबक सुघट ॥ ५० ॥
गोर्वाणभाषा ॥

भुजङ्गप्रपातम् ॥

विधायैवमग्र्यम्पुरं कूर्मराज श्रुतीर्धीर आसेव्य जब्ध्वा स्मृतीश्च॥
द्विजेन्द्रान् समाहृत्य धर्मानुगस्तत्सवर्णाश्रमश्चेय आचिश्चकार ५१

१ पत्र १ साक्षी १ बुधसिंह ने लिखा जिसप्रकार ॥ ४८ ॥

संस्कृत अनुवाद ॥

एष लिखितं कृत्वा तदा प्रियवचनैर्निधाय सम्बन्धम् ॥ राजा जयसिंहाय
सूर्यकुमारी निजात्मजा दत्ता ॥ ४९ ॥

॥ भाषानुवाद ॥

तब ऐसा लिखित करके प्रिय वचनों से सम्बन्ध स्थापन करके उस राजा
(बुधसिंह) ने जयसिंह को सूरजकुमारी नाम अपनी पुत्री दी ॥ ४९ ॥

४ पौष सुदि बारस ० शिवप शास्त्र के अनुसार १ बिस्तार ७ कोट ८ युक्ति
९ रुपये १० अपूर्व ११ हिन्दुस्थान में ११ इसके सुखोल प्रतिपिपधाता
॥ ५० ॥ धर्म को धारण करनेवाले कछुवाहों के राजा जयसिंह ने इसप्रकार
प्रधान नगर [जयपुर] बसाकर वेद विहित कर्म करके स्मृतिशास्त्र पाकर प्रा-
प्ति को एकत्र करके धर्म शास्त्र की मर्यादा से चलकर चारों वर्ग और आ-
भम के कल्याण कारी मार्ग को प्रकट किया ॥ ५१ ॥ वह अपनी राजा बुद्धि

धियारत्नः विद्याः समाकर्ण्य धौर्यस्ततोर्नातिमेत्यप्रकृष्टाः कलाश्च ।
 यतद्वृद्धराजपांगसप्तोपपुष्टो जनेनाननूनान्समाक्रम्य तमर्थो ॥५२॥
 सुखम्पुण्यभूमीश्वराः प्रक्षयनाशा वजीरश्च बहुद्विवेगन्न जग्मुः ॥
 बिहायैव तन्मलेच्छपोप्यन्यभूपानियायोच्चमालंबमामंगमौलिम् ॥५३॥
 विधायाऽग्निहोत्राऽध्वराद्येकयज्वा नियम्याऽप्यधर्महर्षाकेशभक्तः ॥
 सितारेशादिल्लीशसंरुष्टमंत्रः कृता पुण्यभूमौ वभूवाप्रयनामा ॥५४॥
 कृतो धीरखः खानदोराऽभिधेन प्रणत्पैव दिल्लीन्द्रमेनाधिपेन ॥
 महात्मा स विष्ण्वात्मजः कूर्मराजो रराजाखिलेऽव्ययसंको यथाहि

(कामक्रीडा)

तंत्रावापोपेतं रक्कन्धावारं सर्वार्च्यकुर्वन्,
 वव्राज श्रीविष्णुत्रातो नीत्या दिल्लीशोन्मुखस ॥
 आन्वीक्षिकया धर्मार्थार्थी चक्रे राज्यं कृत्ताभि,
 र्योजाचारं भेजे भूम्युन्वाशीर्भ्राजद्भूमर्त्ता ॥ ५६ ॥

से चौदह विद्याओं को यह नीति शास्त्र को प्राप्त हो चौसठ कलाओं को सी-
 ख यत्न करते हुए और बड़े हुए राज्य के सातों थंगों में पुष्ट होकर अपने से
 न्यून नहीं ऐसे राजाओं को दयाकर रहने लगा ॥ ५२ ॥ आर्यावर्त के राजा
 उसका झुह ताकते थे और बड़े बड़े वजीर उसकी बुद्धि के वेग को नहीं पहुँ-
 चते थे बादशाह भी दूसरे राजाओं को छोड़कर आमेर के मुकुट (जयसिंह)
 को ऊँचा [बड़ा] आलवन समझते थे ॥ ५३ ॥ नित्य यज्ञ करके नैमित्तिक यज्ञ
 का एक ही कर्ता पापों का निवारण करके ईश्वर का भक्त जिससे सितारा
 और दिल्ली के पति सजाह पृच्छते थे ऐसा चतुरों का अग्रणी (जयसिंह) आ-
 र्यावर्त में हुआ ॥ ५४ ॥ बादशाह के सेनापति खानदारों ने बड़ी नम्रता के
 साथ उस राजा को अरना सत्री (मलाहकार) बनाया. विष्णुसिंह का पुत्र
 महात्मा वह कछवाहों का राजा जब में ऐसा प्रकाशमान हुआ कि जैसे दि-
 न में अंकला सूर्य होता है ॥ ५५ ॥ राज्य वृद्धि और शत्रु वश करने की चि-
 न्ता सहित, राजधानी को सब से उच्च बना कर श्रीविष्णुभगवान् से रक्षित
 जयसिंह नीति से दिल्लीज के सम्मुख गया और ब्राह्मणों के आजीर्षाद से
 राज नीति के अनुसार, धर्म और अर्थ [पुरुषार्थ] को चाहता हुआ वह तेज-
 स्वी राजा शत्रुओं का नाश करके खोज के समान राज्य करता था ॥ ५६ ॥

(नकुटकम्)

मतिरुद्धादा उल्लगादारदतमिश्रहरि,
समिदतत्तरष्टगर्गवविलङ्घन एकतरि ॥
जयनयधार्यकार्यमननार्य उदयगति,
भुवि यशमा रराज जयसिंह इत्ताधिपति ॥ ५७ ॥
प्रापदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

[पदपात]

इम कूगम जयसिंह हिंदु। मेच्छन उप्पर हुव ॥
जाप धर्म श्रुति जेजन भूरि ग्रव्वर बिंथरि भुव ॥
निंदत निगम पिछानि जार तुरकान प्रजारन ॥
सहर सिताराधीस मन्नि बुल्लपो तिन मारन ॥
साहू नगस लहि तव समय दिल्लीपति उप्पर दुसह ॥
सिंधिया बहुरि हुलकर सुभट पिल्ले दुवर दल अमित मह ॥ ५८ ॥
दोहा ॥

नृप साहू नवलक्ख ९००००० दल, सहर सितारा ईस ॥
पिल्ले हुलकर सिंधिया, दव्वन भुव दिल्लीस ॥ ५९ ॥
इन अवरगावाद तारि, पहिलै अमल प्रचारि ॥
वह नागर सूबा अधिप, दयावहादुग मारि ॥ ६० ॥

श्रुति राजा जयसिंह अपने यश से पृथ्वी पर प्रकाशता था जा बुद्धि के लि
ये चन्द्र रूप और उत्कट (उग्र) वरिष्ठ रूपी अथवा आगिती रूपी अन्धकार का
नाश करने को सूर्य रूप, युद्ध रूपी अथाह समुद्र को लाने के लिये अद्विती
य नौका [नाव] रूप जय और न्याय से चारण करन योग्य कार्य का विचार
करने में अष्ट और यह ऊंचे पदवाला शासकमान हुआ ॥ ५७ ॥ १ वद २
देवपूजन ३ धर्म यज्ञ ४ भूमि पर विस्तार [कैला] कर ५ वेद की निंदा करने
वाले समझ कर यचना का बल जलाने के अर्थ ६ सितारा के दोना समर्थों
को भेज ७ सेवा क अत्यन्त उत्साह से ॥ ५८ ॥ १९ ॥ = यह हिंदुओं क कर
हुनाने के पत्र पर छाप करानेवाला नागर जाति का प्रारम्भ ॥ ६ ॥

इत *गुज्जर धर जवन डक, सरबिलंद सप्रसाद ॥
 सूबापति वह साहको, नगर अहमदाबाद ॥ ६१ ॥
 सुं बैसु गाम सत्तरिसहंस ७००००, आयस जास अधीन ॥
 मरहठन सोहू मिल्यो, लिखि पत्रन अंध लीन ६२ ॥
 उज्जइनी अकबरनगर, अरु पत्तन अजमेर ॥
 सूबा त्रय ३ जयसिंहको, सो बुल्लत बल सेर ॥ ६३ ॥
 इत खटकत दिल्ली उदर, साह मुहुम्मद मूल ॥
 कंटक अरि काजीनको, अनय अस अनुकूल ॥ ६४ ॥
 मंद नपुंसक रत मुदित, यौही पुनि अनुचार ॥
 रक्त कापिसायन रहत, सचिवहु मंद सैमार ॥ ६५ ॥
 मोजदीनतै इक्कसे, भये पंच ५ दिल्लीस ॥
 दिन दिन बोरि कुरान दिय, रचिय नबी पर रीस ॥ ६६ ॥
 इत बुंदिय पति लिखित करि, रचि सालक सन साम ॥
 बिट्टी^१ हित जयसिंह बरि, आरंभिय उपर्याम ॥ ६७ ॥
 नगर निवाई हितुं लिय, रानी उभयर बुलाय ॥
 मुंजकुमारि जयसिंहको, प्रथितै दई परिनाय ॥ ६८ ॥
 संगानैर समीप यह, बुंदीपति किय व्याह ॥

दायज बैसु त्रय लक्ष ३००००० दिय, अधिक दिखाय उछाह ६९
 सक चउ बैसु सत्रह १७८४ समय, तिथि तैपस्य सित आदि ॥

*गुजरात में †प्रसन्नता सहित ॥ ६१ ॥ १ सो २ धनवान अथवा श्रेष्ठ धनवा-
 ले ग्राम ३ जिसकी आज्ञा में ४ पाप हैं ॥ ६२ ॥ ५ आगरा. उस जयसिंह
 ने ७ बलवान सेना को ८ बुलाई २ ॥ ६३ ॥ ८ काजियों का शत्रु ९ आसक्त
 ॥ ६४ ॥ १० वह मूर्ख ११ हींजडों से रत [मैथुन] करने में प्रसन्न १२ चलन [बरता-
 व] १३ मद्य में आसक्त १४ उसका बजीर भी मूर्ख १५ कामी था ॥ ६५ ॥ १६
 खुदा [यावनी भाषा का ईश्वरवाची शब्द है] ॥ ६६ ॥ १७ साले जयसिंह से
 मिलाप [खुलहा] १८ बेटी [पुत्री] के अर्थ १९ विवाह ॥ ६७ ॥ २० से २१ सूरज-
 कुमारि २२ प्रसिद्ध ॥ ६८ ॥ २३ धन ॥ ६९ ॥ २४ काल्पुन सुदि एकम

कूरम डम *जामात किय, पति चहुवान प्रमादि ॥ ७० ॥

पादाकुलकम् ॥

यह विचार सभर उर आयो, कूरम रिस बसि लिखित करायो ॥
अब रिस गये लिखित मुहिं अप्पहिं, थिर सुत अक लैन नहिं थप्पहिं
विष्टी निज यह सोधि विवाही, सत्य लिखित कूरम यह साही ॥
ओरस सुत होहि सु हम लौहैं, दायांदजहि अंक धरि दैहैं ॥ ७२ ॥
मम जामिज कृत्रिम जिहिं मानत, मारहिं तिहिं अब न्याय लि-
खित मत ॥

जामिपं अक अवर कोउ रक्खहिं, चुडाउति न पुत्र फल चक्खहिं ७३
यह जयसिंह नियम अवगाह्यो, सत्य लिखित उप्पर हठ साइयो ॥
बुदीपति अब दुमन विचारैं, टेक न यह कूरम नृप टारैं ॥ ७४ ॥
बुदी लिखित सग हम वेंरी, जुलम भयो चलहिं न अब जोरी ॥
उर दयितैं भव सुत अकूरी, मुरख्यो नृप लौ डम ठग मूरी ॥ ७५ ॥

इतिश्री वशभारकरे महाचम्पूके उत्तरायणो सप्तमराशौ बुन्दीपति
बुधसिंहचरित्रे कोटामहारावार्जुनसिंहमरणमारिताम्रजश्यामसिंहदु-
र्जनशालनृपीभवन १ महाराणासंग्रामसिंहसुताया जयसिंहपुत्रेश्व-
रीसिंहेन सह सवधभगान २ बुदीमहारावराजबुधसिंहस्य स्वात्मज-

* जमाई † भूल से [बुधसिंह ने समझा था कि इस समय और हायजा देने
के कारण जयसिंह प्रसन्न होकर मेरे हाथ का खेल भुके पीछा दे देवेगा, इस
भूल से) ॥ ७० ॥ ‡ क्रोध के वश § गोद ॥ ७१ ॥ १ पुत्री २ कछवाहे ने
इस बात को पकड़ी कि यह लिखावट सत्य है ३ सर्पिंदी मं से ४ गोद रख
देवेंगे ॥ ७२ ॥ मेरे ५ भानजे को ६ लिखावट के मत से ७ पहिनोई की गोद
॥ ७३ ॥ ८ उदास ॥ ७४ ॥ ९ दुपोंई १० प्यारी चुडाउति के उद्गर में पुत्र के
जन्म का अकुर हुआ ११ ठगकीसी मूली [कूटी भाशा] लेकर ॥ ७२ ॥

श्रीवशभारकर महाचम्पू के उत्तरायण के सातवें राशि में बुन्दी के राजा
बुधसिंह के चरित्र में कोटा के महाराव अर्जुनसिंह के मरे पीछे यद्ये भाई श्या-
मसिंह को मार का दुर्जनशाल का राजा होना १ महाराणा संग्रामसिंह की
पुत्री की राजा जयसिंह के पुत्र ईश्वरीसिंह से सगाई होना २ बुदी के महा

भवानीसिंहकृत्तिमत्वप्रदर्शनपूर्वकोदयपुरसंबंधनिवाग्ग्रा ३ भवानी-
सिंहमारणावस्थायां दत्तजयसिंहचुण्डाउतिराष्ट्रकूर्ताजठरजातजय
सिंहदत्तदत्तकपुत्रार्थबुंदीराज्यप्रदानप्रतिज्ञाविषयबुधसिंहहरताक्षर-
करणा ४ जयसिंहजयपुरनगरनिर्माणा ५ दिल्लीन्द्रपञ्चयवनेन्द्रनि-
न्दनजयसिंहमन्त्रागतमहरट्टदिल्लीधगाक्रमणा ६ जयसिंहरय बुधसि-
हपुत्रीविवहने सप्तविंशो मयूखः ॥ २७ ॥

आदितः पञ्चषष्ठ्युत्तरद्विशतंतमः ॥ २६५ ॥

नाराचः ॥

इतैं अरीन जावदारुप नैर रानको हन्यो ॥

सुनी अवाज कूर्मराज सज्ज भीरुको वन्यो ॥

भनंकि भौरं भौर के ठनंकि अहुं गै गुरे ॥

कुं दार नैन चारके तुखार सज्ज संजुरे ॥ १ ॥

रावराजा बुधसिंह का अपने पुत्र भवानीसिंह को कृत्रिम बनाकर उसके उदयपुर संबंध होने को रोकना ३ भवानीसिंह को मार डालने की अवस्था में चुंडाउति और राठोड़ी के उदर से पुत्र उत्पन्न होने उन पुत्रों को जयसिंह का देकर जयसिंह के दिये हुए दत्तक पुत्र का बुंदी का राज्य देने की प्रतिज्ञा का बुधसिंह का अक्षर करना ४ राजा जयसिंह का जयपुर नगर बसाना ५ दिल्ली के पांच बादशाहों की निन्दा और जयसिंह की सत्ता से आए हुए मरहटों का दिल्ली की भूमि को दवाना ६ जयसिंह का बुधसिंह की पुत्री से विवाह करने का सन्तर्हसवां २७ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ पैंसठ २३५ मयूख हुए ॥

इधर महाराना के १ जावद नामक नगर को शत्रुओं ने मारा [लूटा] जिसकी २ खबर कछवाहों के राजा (जयसिंह) ने सुनी इसलिए ३ सहाय करने को सज्जित हुआ सो ४ भ्रमरों का समूह उड़कर ५ जजीरें बजकर ६ हाथी गुड़े (हाथियों को सज्जित करते समय उनको जर्मान पर लेटाकर रज झाड़ने हैं ड-सी कारण उनका गुड़ना लिखा है) ७ कुलटा (ग्वंटी) ८ स्त्री के नेत्र चलने के समान चपल ९ घोड़े सज्जित होकर एकत्र हुए; अथवा झु (पृथ्वी) जिसको वि-दारण करनेवाले "द्विदारणे" इस धातु से दार शब्द का अर्थ विदारण है अर्थात् अपने चरणों के आघात से भूमि को विदारण करनेवाले और नेत्रों के

चमू हजार अथ दान ५० लौ कृपान भानकी ॥
 गिमाय कुम्भराय यो चलयो सहाय रानकी ॥
 वुलैं नकीब दोयसै २०० हुलैं हगेल दौकरैं ॥
 मुकैं भेटालि भीर त्यों रुकैं समारैं साँकरैं ॥ २ ॥
 बजैं निसानें नाद सो दिसा दिसान बित्थरैं ॥
 सँकूक ददसूककी फँटा हजार फुकरैं ॥
 मवारसँ बास जासपास जास त्राम कपपे ॥
 चकार चीस कै पुरीमें दिक्कीसँ चपपे ॥ ३ ॥
 चले मतग अदि अग रुपाम रग सज्जके ॥
 कुरगें फाँद के चले तुग जग कैज्जके ॥
 चले दुवाह के गिपाह स्वामिधर्म सगलें ॥
 चली सु तोप सडि ६० त्यों चँटडि चह चीसलें ॥
 मिले प्रवीर पँतवाह पत्रवाहें बेधते ॥
 कमान पँत्यके कमान पत्यकी निसेधते ॥
 भिरे सुँवाँला भुमियाँ सु भागधेयँ भेटलें ॥

समान चतनेवाले [चपल] नेत्रों का धर्म ही अपल है इमकारण यह दूसरा
 अर्थ भी सगत है ॥ १ ॥ १ सूर्य के समान तेजवाली अथवा चमकती हुई तर
 वारें लेकर २ सेना का अग्रभाग का पहाने की हाक करके ३ वीरों की पक्ति
 घटती है जिनकी सकड़ाई [नीड] से ४ पवन रुकता है ॥ २ ॥ ५ न
 क्षारों का जव्द पजकर दिशा दिशाओं में ६ फैलता है जिससे ७ कूक स
 हित ८ शेषनाग क हजार ९ कण फुकार करत हैं "पहा हजार कणा क
 योग से सामान्य गर्भ शब्द के होने पर भी शेषनाग का ग्रहण है" जिसकी
 ग्राम से ग्राम पाम के १० चोरों और लुटेरा क स्थान धूजने हैं और चीस
 और ११ छान्द [विष्टा] करक १२ विशाखा के लार्थी १३ दध ॥ ३ ॥ १४ शिखा
 की कलाग भरनवाले १५ युद्ध क काम के १६ वीर १७ पहिया क पिचन का
 चीस करके [यह यल पूर्वक विचने के शब्द का अनुकरण है] ॥ ४ ॥ अत्यन्त
 वीर १८ पाया स १९ पहिया को बधत हुए मिले २० धनुष के मार्ग में (याग वि
 धा की रीति में) २१ अर्जुन के धनुष का निषेध करत हुए रम्पाल (राजा) औ
 र भामिय २२ हासिख (गिराज) भेट ले लोकर मिल

कहाँन ओज उन्नयो जु तौस फोज भेटलै ॥ ५ ॥
 फरकि केतु गैन यों बिजेय बैन बित्थरी ॥
 सहाय दैन कुम्म सैन रान अैन संचरी ॥
 सुनी सु रान कान त्यों प्रयान सस्मुहो कियो ॥
 हिले मिले दुहूँ २ नरेस हेत हुल्लस्यो हियो ॥ ६ ॥

[षट्पात]

मिच्छन धाटि प्रपात रान जनपंद जावद सुनि ॥
 पृतना सँहस पचास ५०००० चंडे क्रोधन जोधन चुनि ॥
 आमैरो नरनाह पंत हित चाह उदैपुर ॥
 दहबारी लग रान आय सस्मुह मुद आतुर ॥
 महिपाल उभय हिय लाय मिलि सुख सह पत्तन संचरिग ॥
 करि दल मिलान कूरम रहिय सुपहुँ रान महलन सरिग ॥

[दोहा]

सक सर बसु सत्रह १७८५ सँमा, लहि कूरम निज भीर ॥
 अति आदर शानाँ कियउ, व्है प्रशमन हमगीर ॥ ८ ॥
 इक जाँमिप पुनि दैल अतुल, बहुरि बढ्यो लहि कौल ॥
 यातैं तँहँ प्रति नमू अति, भयउ रान भूपाल ॥ ९ ॥
 इक १ थाल किन्नाँ असन, पुँव रीति सब पेलि ॥

१ किसीमें तेज [पराक्रम] २ नहीं उठा कि ३ उस जयसिंह की सेना से टकरा लेवे ॥ ५ ॥
 आकाश में ४ ध्वजा उड़कर ५ विजय करने के वचन फैले ६ राणा के घर में कछ-
 वाहे की सेना चली ७ महाराणा ने सस्मुख गमन किया ॥ ६ ॥ स्लेच्छों का
 ८ धाड़ा ९ पड़ना १० राणा के देश में ११ सेना १२ भयंकर क्रोधवाले १३
 प्राप्त हुआ १४ पुर में गये १५ सेना का मुकाम करके १६ वह प्रभु राणा १७ चला
 ॥ ७ ॥ १८ विक्रम के शक में सत्रहसौ पिच्यासी के सम्वत् में १९ विशेष
 नम्र होकर ॥ ८ ॥ २० जामाता (जमाई) यहाँ 'जामि' शब्द का अर्थ 'पुत्री' है
 सो ही शब्दार्थ चिन्तामणि कारने लिखा है "जामिः. दुहितरि" बहुत २१
 सेना २२ समय याकर ॥ ६ ॥ २३ पहिले की जुदा भोजन करने की रीति को
 हटाकर

कछु अतर हितमैं न किय, हिय तब हिंदुन हेलिं ॥ १० ॥

कूरमहु करजोरि कहि, पैति नति करि पलटाव ॥

मन्त्रहु अप्पन सुमेट मुहिं, जिम सोलह १६ उमराव ॥ ११ ॥

मैं इनहूसौं अनुगतम, ममहित नहिं मरजाद ॥

बिधि सब कैहों बदगी, पैहों रान प्रसाद ॥ १२ ॥

यह कहि कूरम चमर गहि, कियउ रान सिर उठि ॥

रवि अजलि तब रानहु, वरजि निछि हित छुडि ॥ १३ ॥

इत्यादिक किय अनुगपन, कूरम हित निकरव ॥

जामिपैं बिनु रानहु जप्यो, अवर न मम आलव ॥ १४ ॥

(पट्पात)

कूरम प्रति दिन इक्क कहिय सीसोद जोरि कर ॥

रामपुरेप सग्राम बदलि अब रहत टेक वर ॥

नैकन करत निदेस भुम्मि अही पुनि भुगगत ॥

सुनि अक्खिय जयसिंह वाहि हनिहों रन उद्धत ॥

रामपुर देहु मोकैहं नृपति मैं सेवन करिहों मुदित ॥

कहि यह सलाम जयसिंह किय मुलक लैन लक्खन प्रमित ॥ १५ ॥

महासुदरी ॥

सुनि यों मन रानों खिसानों महा अहिघँस्त छुछुदरि वैनो परयो ॥

दुवश्वेर कही हमरोही हुतो तब दैम्म अिलकख ३००००००० दै लैनो परयो

सुनि योंहु सलाम करी जयसिंह नयो तब रानकों नैनो परयो ॥

१ हिन्दुओं के सूर्य ने (यह महाराणा का विशेषण है) ॥ १० ॥ २ उत्तर में न

अता का पकटा करके ३ आपका उमराव जिसप्रकार सौख्य उमराव हैं ति-

सी प्रकार ॥ ११ ॥ इनसे भी अधिक ४ सेवक ५ करुणा ६ प्रसन्नता ॥ १२ ॥

७ हाथ जोड़कर ॥ १३ ॥ ८ सेवकपन ९ हितका समूह १० जमाई के बिना

॥ १४ ॥ ११ रामपुर का पति १२ प्रसन्न होकर खाकरी करुणा १३ लाखों की

आमद के प्रमाणवाला ॥ १५ ॥ छुछुदर को पकड़नेवाले १६ सर्प के समान घ

छुदर को पकड़कर छोड़ने से सर्प अघा होजाता है और खाने से मरजाता है

१५ रुपये १६ जयसिंह हुका तब राणा को भी झुकना पड़ा

लिय साहकों सेय जो रामपुरा सु कृती कछवाहकों दैनों परयो १६
(दोहा)

नीति निपुन भुव लोभ लागि, इम कूरम तँहँ आय ॥
लियउ रामपुर रानसों, करि नैति लिखित कराय ॥ १७ ॥
रान सचिव कायथ तँहँ, कगगर छाप करी न ॥
तब कूरम गृह जाय तँस, पाई नीति प्रवीन ॥ १८ ॥
पट्ट प्रपंच इम रामपुर, लियउ नीति लागि लाह ॥
बहुरि रान सन अनुंग बनि, किय रहस्य कछवाह ॥ १९ ॥

(षट्पात्)

कहिय मंत्र कछवाह देइव हिंदुन सुभ दायक ॥
मिटत जानियत मिच्छ निर्गम निंदक भुव नायक ॥
कबहु न सुनत कुरान नहिँन कलमाँ निमाज नैत ॥
काजिन उप्पर क्रुद्ध मुँह नन जात महज्जत ॥
रत पान कापिसौयन रहत मासूवाँन जानत महत ॥
बिधि थप्पि संड मोहँन बहत चित प्रपंच कछुहु न चहत ॥
अब बिचारि हम एह मंत्रि^१ बुल्लत मरहठन ॥
सजि प्रपंच तिन संग बोरि तुरकान हिंदु बँन ॥
हे नृप हिंदुन हेलि^२ अप्प इक^३ छत्र रहहु अब ॥

१ वह चतुर कछवाहे को ॥ १६ ॥ २ स्तुति ॥ १७ ॥ राणा के प्रधान बिहारी-
दास कायस्थ ने ३ पत्र पर छाप नहीं की ४ उस बिहारीदास के घर ५ छाप
कराई ॥ १८ ॥ ६ सेवक बनकर ७ एकांत में सलाह की ॥ १९ ॥ = भाग्य ९
वेद की निन्दा करनेवाले १० भूमि के पति ११ भुक्त हैं (यावनी भाषा में प-
रमेश्वर के वाक्य को कलमाँ कहते हैं अर्थात् धर्मोपदेश को नहीं भुक्त) १२
मूढ़ १३ सत्य पीने से १४ यावनी भाषा में प्रीति करनेवाले को आशक और
जिस पर प्रीति की जावे उनको माशुक कहते हैं उस माशुक को ही १५ बड़ा
जानते हैं १६ नपुंसकों से मैथुन करते हैं १७ राज्य प्रबंध को चित्त पर कुछ नहीं
चाहते ॥ २० ॥ १८ सलाह करके बुलाते हैं १९ हिन्दुओं रूपी जल में यवनों
को डुबोकर २० हे हिन्दुओं के सूर्य

भुगहु दिलितय भुम्मि सचिव हम करहि जेर सब ॥

मरदह पार भडहि अमल अप्पन चम्मलि वार इत ॥

यह अक्खि बहुणि करम आधेप लियउ दाय जामिप लिखित ॥२१॥

दोहा ॥

लिखवायो पढिले लिखित, समैगै जयसीह ॥

सो दिखाय सम्राजको, अन्गवी सम्मत ईह ॥ २२ ॥

[षट्पात]

सुनहु रान मग्राम साज खट इय सन्नद १७७६ जब ॥

सभरपतिके सूनु भयो मम जामि जठा तब ॥

रखत जामिपर रीस कउल जामिप बिनु कारन ॥

कृत्रिम कहि सु कुमार मोहि गोपत अब मारन ॥

हम कहिय कपो न जनमत हन्यो अब इहि हान प्रपच अति ॥

पापहु तथापि तुम करहु पै मम जनपद अब रहहु सति ॥२३॥

उत्तर पुनि उच्चरिय कउल जगदव सपथ करि ॥

मै नहि हनन समर्थ अप्प यह हनहु वस अरि ॥

जुलमसीले तुम जामि कलह हमसह वह कथहि ॥

कछु तुमते नन कहहि अप्प थप्पत श्रुति अत्यहि ॥

यह अघ अरिष्ट तसमात अय कंम जिम तिम मेट करि ॥

कहिहो जु सोस धमिह कथिते नहि स्वतत्र रहिहै निवारी ॥२४॥

हठ उत्तर पुनि हमहु हेतु कृत्रिम बिच हरे ॥

१ चामल नदी के छपर २ चामल नदी के इधर ३ पहिनाई [बुधसिंह] की लिखावट हाथ में ली ॥ २१ ॥ ४ बुधसिंह से ५ राय देने की चेष्टा कही ॥ २२ ॥ ६ बुधसिंह के ७ पुत्र ८ मेरी बाहिन के छदर से ९ मेरे देश में ॥ २३ ॥ १० सांगन ११ समर्थ १२ वश क शत्रु को (वर्णनकर हान के कारण यह भवानीसिंह का विशेषण है) १३ जुलम करनेवाला १४ चमाय १५ तुम्हारी पद्धति का १६ आप यद के १७ अथ का स्थापन करने को इसकारण १८ पाप का उत्पात १९ हे करम (जयसिंह) १९७६ ॥ २४ ॥ उस लड़के के जाली होने के २० कारण

पै' इक्क१न तँहँ पत्तै बहुत ऋतँ माँहि निवेरे ॥

कहयो बुद्ध नृप कबहु निकट रानी मम नाई ॥

यह जो तो किम अगग भये तहुदरँ दुव२भाई ॥

पुनि कउल एहँ वहँ हरि प्रनत करै न अघ इर्म कोप कित ॥

बसु८बरस बहुरि न सुन्योँ बितैथ पुनि चुंडाउति अधिक प्रिय ॥२५॥

कुंभांनी भट दीप बहुरि पुच्छन पठयो हम ॥

रूपय सत्तरि सँहँस ताहि दिन्नै प्रछन्नतँम ॥

तब मै भंडारेजँ छिन्नि भट दीप निकास्यो ॥

पंच हेतु इम पाय भगिनि पुत्रहि ऋतँ भास्यो ॥

हम तब बिचारि चहुवान हठप्रतिबँच अक्खिय नीति पर ॥

करि लिखित देहु जिम हम कहत कृत्रिम तब मन्नहि कुमर ॥२४॥

(दोहा)

सीसोदनि रठोरि सुत, होहि सु तुमकोँ दैहिँ ॥

जुँ तुम अंकेँ धरि थप्पिहो, सु सुत मन्नि हम लैहिँ ॥२७॥

हम जान्योँ यह लिखित हठि, न लिखहिँ बुद्ध नरेस ॥

हत्यातँ तब टरहिँ हम, डहिँ भल मारहु एस ॥ २८ ॥

लिखि यहहु दुँकर लिखित, मम कर दिन्नोँ मुँह ॥

सब हड्डनकी सँक्ख धरि, वालिँस पुगँव बुद्ध ॥ २९ ॥

शुद्धप्राकृतभाषा ॥

(आर्या)

१ परन्तु २ एक भी प्राप्त नहीं हुआ ३ सत्यता में ४ नहीं आई ५ उसके उदर से ६ बुधसिंह तो वाममार्गी और ७ राणी वैष्णव है ८ इसकारण ९ यह श्रु-
5 वचन ॥ २५ ॥ १० कुंभावत शाखा के उमराव दीपसिंह को ११ अत्यन्त
छाने १२ नगर का नाम है १३ सत्य दीखा १४ पीछा वचन [प्रयुत्तर] ॥ २६ ॥
१५ जो १६ गोद ॥ २७ ॥ २८ ॥ १७ दुँकर [कठिनाई से किया जावे ऐसा]
१८ मुख १९ साजि २० सूखों में २१ अष्ट बुधसिंह ने ॥ २९ ॥

संस्कृत अनुवाद ॥

लेखमें सग्रामसिंहकी साची) सप्तमराशि अष्टाविंशमयुक्ता (३१११)

तद्वा लिहि अवकज्ज कज्जं अहोहिं सच्चवयणोहिम् ॥

तिम चेयवि तुहोहिं कज्जाकज्ज वियज्ज सीकज्जम् ॥ ३० ॥

इन्द्रवज्रा ॥

सोऊगा सगामणारिस्सरोवि ढोऊगा सक्खी लिहिअम्मि तद्धि ॥

घेत्तूगा गीइ गिअलोहिणीए सो अप्पऊरीकरणा लिलेह ॥ ३१ ॥

उपजाति ॥

खु पास्सए विन्दुमईसपट्टे अणोरसो तम्स धिय कुविट्ठो ॥

दिट्ठूगा लेह बुहसंहिकिद्ध सगामराणा लिहिअ मए वि ॥ ३२ ॥

(इन्द्रवज्रा)

गागा भडागा विजिसोलहागा १६लेह दले सो इय लेहिऊगा ॥

दिद्धं तदो कुम्मकरम्मि पण्णा लिद्ध हि तद्वा पिहुल पसाअम् ॥ ३३ ॥

प्रायोदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

तस्मात् लिख अपकृत्य कृत्यमस्माक सत्यवचनेन ॥ तथैव युष्माभिरा
कार्यकार्ये विचार्य स्वीकार्यम् ॥ ३० ॥ श्रुत्वा सङ्ग्रामनरेश्वरोऽपि श्रुत्वा सा
ची लिखिते तस्मिन् ॥ गृहीत्वा नीति निजलेखिन्या सोऽपि आत्मोरीकरणं कि
लेख ॥ ३१ ॥ खलु पार्श्वके विन्दुमतीक्ष्णपत्रे अनौरसस्तस्य पुत्रो कृपुत्र ॥ दृष्ट्वा लेख
बुधसिंहकृत सङ्ग्रामराशेन लिखितं मयापि ॥ ३२ ॥ तेषां भटानामपि च षोड
शानां लेखन्दत्ते स इति लेखयित्वा ॥ दत्तं तदा कूर्मकरे पत्रं खण्डस्तस्मादपि
प्रचुरं प्रसादं ॥ ३३ ॥

॥ भाषानुवाद ॥

इसकारण से हमारा कृत्य अकृत्य होवे सो आप सत्य बचन से लिखो तै-
से ही आप भी इस कार्य अकार्य का विचार कर स्वीकार करो ॥ ३० ॥ यह
सुनकर राणा सग्रामसिंह ने भी उस लिखित पर आप साची होने का नी
ति ग्रहण करके अपनी लेखिनी से स्वीकार लिखदिपा ॥ ३१ ॥ निश्चय ही बु
न्दी के पति के पत्र को देखा उस (बुधसिंह) की बुद्धि में यह पुत्र अनौरस है
सो बुधसिंह के किये हुए लेख को देखकर मुक्त (सग्रामसिंह) ने भी लिख दि
या है ॥ ३२ ॥ उन सौलह वमराशों से भी उस [सग्रामसिंह] ने यह लेख लि
खवाकर यह पत्र फछवाहे [जयसिंह] के हाथ में दिया जिससे बहुत प्रसन्नता
हुई ॥ ३३ ॥

(दोहा)

*सभट रानकी सिक्ख इम, बहुल प्रपंच बनाय ॥
 बुद्ध लिखित दल सिर सविधि, लिय कूरम लिखवाय ॥ ३४ ॥
 कछु दिन रहि कोतुक करत, नृप कूरम तिहिं नैर ॥
 पाय रान सन सिक्ख पुनि, आयो पुर आमैर ॥ ३५ ॥
 गो कूरम जब रान गृह, बुद्ध तवहि बुंदीस ॥
 सह कुटुंब आमैर सन, रचिय प्रयान संगीस ॥ ३६ ॥
 द्विजवर गुरु जयसिंहको, रतनाकर अभिधान ॥
 कानीखोह भुक्काम तैस, दिन्नै तत्थ मिलान ॥ ३७ ॥

(पट्टपात्)

जिहिं रतनाकर बिम सुगुन जयसिंह सिखायो ॥
 स्मृति रु निर्गम खट्ठ सत्थ विविध नृप धर्म वतायो ॥
 चउदह १४ पुनि चउसठ्ठि ६४ कला विद्या पटु किन्नो ॥
 जयसिंह गं दारिद्र जोग भूसुरं जिहिं भिन्नो ॥
 धारन कराय सब कुल धरम कैलि भूपन सिरमोर किय ॥
 जिन जिम प्रताप कूरम जग्यो आचारिज तिम अहरिय ॥ ३८ ॥
 बिनु त्रि ३ संधयं जलपान जंग्य पंचक ५ बिनु भोजन ॥

* उमरावों सहित १ साजि १ बहुत १ बुधसिंह के लिखे हुए पत्र पर ॥ ३५ ॥
 ३५ ॥ १ बुधसिंह ने १ काध सहित गमन किया ॥ ३६ ॥ २ नाम उदस र-
 नाकर का काणीखोह ग्राम था ४ तहां भुक्काम किये ॥ ३७ ॥ ५ वेद ६ जय-
 सिंह की जन्मपत्नी में दारिद्र योग गया हुआ [प्राप्त] था जिसको ७ इस ब्रा-
 ह्मण ने मिटाया = कलियुग के राजाओं में ॥ ३८ ॥ ९ तीनों मन्ध्या किये वि-
 जल नहीं पिया १० गृहस्थी के प्रति दिन करने के * पांच यज्ञ किये बिना

* पाठो होमश्चातिथीना सपर्या तर्पण वलि ॥ एते पञ्च महायज्ञा ब्रह्मयज्ञादिनामका ॥ इत्यमरः ॥
 मध्यापनं ब्रह्मयज्ञं पितृयज्ञस्तु तर्पणम् । होमो दैवो बलिर्भौतो नृयज्ञोऽतिथिपूजनम् ॥ अर्थ—विधि पूर्वक वे-
 पढाना ब्रह्मयज्ञ कहाता है तर्पण करना है सो पितृयज्ञ है, वैश्वदेव का होम है सो देवयज्ञ कलहाता है वलि
 ध्यात् जीवों को अन्न देना है सो भूतयज्ञ कहाता है और घर में आए हुए अतिथि की सेवा करके खान
 नादि से सत्कार करना है सो मनुष्ययज्ञ कहाता है इन्ही प्रतिदिन किये जानेवाले पांच यज्ञों का नाम महायज्ञ है।

बिनु रमृतीने व्यग्रहार ख्यात नय बिनु बसु खोजन ॥
 द्विज सुपात्र बिनु दान ध्यान हरि हर बिनु धारन ॥
 बिनु विधि काल व्यवाय मत्त नय बिनु आरं मागन ॥
 बिन न्दान निगम पाठन बहुरि बिनु प्रपचं सगर विकट ॥
 इहिं द्विज प्रसाद कूरम इते नन रक्खे निज भुव निकट ॥
 जब कूरम जोधपुर चलपो व्याहन नय चातुर ॥
 तब मध्यद डर ताकि पुँव पठयो अतहंपुर ॥
 नगर कगेली नाह भृप जटुवम जासभुव ॥
 द्रगे देहादुरदुग धीर रक्खयो सु तत्थ धुव ॥
 अवरोध सग हो द्विज यहहु तिहिं तँहं दिन्नो देह तजि ॥
 तब कुम्म तास जठो तनय मूसुर गंगाराम भजि ॥ ४० ॥
 दोहा ॥

गंगारामहु अमिते मति, भो द्विजराज सुभाय ॥
 बहु मैव नृप किय जास बल, बलि जैपुर बसवाय ॥ ४१ ॥
 निनैसथ कानीखोह तम, रहिय आय बुन्दीस ॥
 कठवाही आमैर रहि, रचत स्वामिपर रीस ॥ ४२ ॥

(पट्टपात्)

इत कूरम गृह आय कालकोविदे प्रपचकिय ॥
 मगहहन छन्न मिलि दई अरजी पुनि दिलिलय ॥

भाजन नहीं किया १ धर्म शास्त्र के बिना जिसका व्यवहार प्रमिद नहीं हुआ २ बिना नीति के ३ धन नहीं लिया सुपात्र आश्रम के बिना दान नहीं दिया, विष्णु और शिव के बिना ध्यान नहीं किया, उषित समय के बिना ४ मैथुन नहीं किया, नीति की मलाह के बिना शत्रुको नहीं मारा बिना स्नान किये ५ वेद का पाठ नहीं किया, बिना ६ रचना (व्यूह) के भयकर युद्ध नहीं किया ॥ ३० ॥ ७ कृपा ८ जाने से पहिल ही ९ जनाने का १० नगर ११ पहाड़ गढ़ नामक १२ जनाना के साथ १३ आश्रम गंगाराम का मथन किया ॥ ४० ॥ १४ अपार बुद्धिवाला १५ यज्ञ ॥ ४१ ॥ १२ घाम ॥ ४२ ॥ १७ समयतुर

रचत दोरै मरहठ लूट मंडत चम्मलि लग ॥

जो भेजहु वैल बित्त प्रवत हम लगहिं मंडि पग ॥

सुनि साह पुच्छि सचिवन सवन उचित मंत्र यह उच्चरहु ॥

कथ ताव खानदोरां कहिय कहत कुम्म जिम तिम करहु ॥ ४३ ॥

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दी-
पतिबुधसिंहचरिते महाराणा संग्रामसिंहजावदनामनगरधाटीपतनो
दन्तश्रवणासमकालससैन्यजयसिंहादयपुरगमन १ महाराणास-
काशाज्जयसिंहरामपुरप्रापणा २ दत्तकपुत्रबुन्दीदानबुधसिंहलेख-
विषयसाल्हीकृतमहाराणाजयसिंहजयपुरागमन ३ जयसिंहगुरुर-
त्नाकरप्रशंसया सह महाराजजयसिंहप्रशंसावर्णनमष्टाविंशो म-
यूखः ॥ २८ ॥

आदितः पट्पष्ट्युत्तरद्विशततमः ॥ २६६ ॥

[दोहा]

इत कोटापति नृप उमँडि, संभरँ दुज्जनसल्ल ॥

पायो कुम्म जु रामपुर, हठि लुट्यो रन हल्ल ॥ १ ॥

पादाकुलकम् ॥

पंच अठ सुनि ससि १७८५सम्मित सक, इक विग्रह कोटा हुव ओचक

१ दौड़ अथवा कैलाव २ सेना ३ धन ४ तहाँ ॥ ४३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दीके भूपति बुध-
सिंहके चरित्रमें महाराणा संग्रामसिंह के जावद नामक पुर में धाड़ा पड़नेकी
खबर सुनने से सेना सहित जयसिंह का उदयपुर जाना १ महाराणा से रा-
जा जयसिंह का रामपुरा पाना २ दत्तक पुत्र को बुन्दी देने के बुधसिंह के लेख
पर जयसिंह का महाराणा की सार्छा कराकर जयपुर आना ३ जयसिंह के गुरु
रत्नाकर की प्रशंसा के साथ महाराजा जयसिंह की प्रशंसा के वर्णन का
अठारहसवां २८ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ छःसठ २६६ मयू-
ख हुए ॥

५ चहुवाण ६ जयसिंह ने राणा संग्रामसिंह से पाया यह ॥ १ ॥

मेवाउत हड्डा भट *छित्तर, प्रबल सिपाह बहयो छक उप्पर ॥२॥
 महागव भट पढे मत्त मन, घटीपति राउत्त गिब्व घन ॥
 कछुक वत्त उप्पर वह कोप्पो, लज्ज रु स्वामिधरम सब लौप्पो ॥३॥
 करउर अग्न लख्यो जो रनकरि, तिहिँ कवध जयसिंहहिँ सह्रि ॥
 रत्ति निकसि हड्डा सु बढेरय, रामपुरप सम्राम सरन गय ॥ ४ ॥
 कोटापति सुनि एह कहाई, सरन न रक्खहु चोर सहाई ॥
 चढाउत सु सुनी न धरी चित, तब धंकि दुज्जनसल्ल बढयो तिता ॥
 हरिगीतम् ॥

करि हल्ल दुरजनसल्ल नृप तब रामपुर पर उप्परयो ॥
 बजि नैह मँहल हह सँहल भँह बहल ज्यौँ भरयो ॥
 उडि केतु दतिन पति पतिन सिंधु ततिनँ लग्गये ॥
 नखराल चालन बाजि जालनँ ज्वाल नौलन जग्गये ॥६॥
 ठननँकि घटन घोर त्यों रननकि कोचनकी करी ॥
 सननँकि सँत्तिन नास सास म्मनकि पक्खर म्मल्लरी ॥
 विरुदैतँ वीर पटैतँ कह कैमनेत सज्जित संक्रमे ॥

*छीतरसिंह ॥ २ ॥ पद्म गर्भ से ॥ १ ॥ मारकर ॥ ४ ॥ क्रोध करके उपर पडा ॥ ५ ॥ तब राजा दुर्जनपाल हल्ला करके रामपुरा के ऊपर बठा जय ५ भादवा के भरे हुए मेघ के समान ४ पूर्ण शब्दापमान होकर १ मर्दल [ज्यों मृदंग के आकार 'मादल' नाम से धागयिषेप प्रसिद्ध है] का २ घन्ट हुआ १ हाथियों पर २५ जग की अनेक पक्षियों उडकर ७ तान के पार्श्वों पर सिंघाणी [घडाराग] रागनी जगी ८ नखरावाजी ९ चालों से घोषों के १० समूह की ११ नाजों [खुरसाजों] से १२ अग्नि जगी ॥ ६ ॥ हाथियों के घट और १२ कवचों की कवियों बर्जी १३ घोषों के नाकों (फुरणों) से बसास पजकर म्मल्लरों के समान पाखरों बर्जी १४ विरुदाये (स्तुति किये) हुए कितने ही १५ पटा कैकनेवाले वीर और कितने ही १६ कमानवाले [धनुषधारी] सज्जित होकर १० पक्षे

* अग्नि शब्द पुष्पिग है परन्तु लोकस्त्री से जहाँ तहाँ हमने स्त्रीकिंग सिखा है जिसको अशुद्ध नहीं जानना चाहिये, इसीप्रकार देवता और देहा आदि कितने ही स्त्रीकिंग शब्दों को लोकस्त्री के कारण पुष्पिग कहे छिडे हैं उनको भी शुद्ध ही जानें क्योंकि "यद्यपि शुद्ध लोकविद्वद् नो करणीय माचरणीयम्" यह प्राचीनों का मत है सो ही समीचीन है ॥

रन सैन लखि लागि लैन के गन गेन गिद्धनके भ्रम ॥७॥
 डगमगि अद्रिन कैट तूटत सेतु सागर लुप्पयो ॥
 दैर दिट्टिदै भुव पिट्टि कच्छप निट्टि निट्टिन रूपयो ॥
 नउवत्ति नादन बीर वादन छोनि छादन वित्थगयो ॥
 जिम भद्र संबर धूलि डंबर एम अंबर उच्छगयो ॥ ८ ॥
 फटकारि सुंडिन मत्त गै नभ घत्त पच्छिन के करै ॥
 जिन मान पव्वय प्रान गव्वय दान निज्झर निज्झरै ॥
 असवार तोकै तुखार के भट चक्रचारै फिरावहीं ॥
 अबलौ सु सिकखन पौन पै वह गोन रंचन आवहीं ॥ ९ ॥
 तिन धार मार भैयार भार हजार भोगै प जैक्यो ॥
 खुरतार अंगन भुम्भि फूटत ज्यों उदुंबर पक्यो ॥
 खुरली सु खिलहत बीर के मुंगली सु सिंधुव उच्चरै ॥

१ युद्ध करनवाली सेना को देखकर ग्रीधनियों के ३ समूह की २ पंक्तियों
 लगकर ४ आकाश में असन उड़ने) लगी ॥७॥ पर्वत हिलकर ५ शिखर तूटने लगे
 और समुद्र ने अर्थात् छांडी ६ भय की दृष्टि देकर भूमि को पाठ पर लिये हुए
 कच्छप कठिनाई से खड़ा रहा ७ नोवतों के शब्द ८ धीरों के वचन ९ भूमि
 को ढकनेवाले होकर फैले १० भादवे की मेघधारा "यहां शम्भर शब्द सा-
 मान्य जल का वाचक है परंतु भाद्रपद के योग से मेघधारा का ग्रहण है"
 के समान धूल [रज] का ११ आडंबर होकर आकाश में उछला ॥ ८ ॥ मस्त
 हाथी सुंडों को फटकार कर आकाश में कितने ही पक्षियों की घात करते हैं
 १२ बल के गर्ववाले जिन हाथियों का १३ प्रमाण पर्वतों के समान है उनके
 डाण (मदधारा) १४ भ्रमण के समान भ्रमता है कितने ही घोड़ों को १५ वा-
 गों में उठाकर बीर १६ चक्र के चलने के समान [गोलकुंडा] फिराते हैं उस
 गति को १७ पवन अथ तक सीखता है "पवन वात्या (घूल्या) होकर गो-
 लाकार फिरता है सो जाना इमीकी नकल करता है" परन्तु गति कुछ भी
 नहीं आती ॥९॥ १८ उन घोड़ों की गति [दौड़] की मारके १९ भयंकर भार से
 हजार २० फणों का पति [शेषनाग] २१ गिरा. उन घोड़ों की खुरतालों के २२ अ-
 ग्र भाग से पके हुए २३ ऊसर वृक्ष के फल की भांति भूमि फटी कितने ही बीर
 २४ शस्त्राभ्यास के खेल खेलते हैं और २५ वंसियों में बड़े राग का उच्चार करते

किलकारि जुगिनि सग व्है हलकारि भैरव हुकरै ॥१०॥
 भट भीमलों निज सीमतेँ सुन भाम यों चढि सचैरघो ॥
 लिप घेरि दुग्ग सु रामपुर दल फेरि सगर बित्थरघो ॥
 लागि अग्नि तोपन काल कोपन नैर लोपन मढयो ॥
 खगि गोख जालन सौंध सालन दुग्ग गोखन खडपो ॥११॥
 जरि हट्ट पट्टन बट्ट बट्टन धूम धोरनि धुधरे ॥
 दुरि ओक भोकेन सोक कै पुग्लोक संसयमें परे ॥
 प्राकार गिरि गिरि जात कहूँ छिकि बँप कपिसिरै उच्छटै ॥
 कहूँ फुट्टि खोमैन तोमै गिरि पगिखान पूगि मु उप्पटै ॥१२॥
 दगि दाव तुट्टि लदाव मडप ग्राव गिदनि ज्यो चढै ॥
 प्रासाद पत्थर मोर सत्थरै व्है थरथर के कढै ॥
 छकि छिन्न तोपन छूट के परिकूट गोपुरतै गिरै ॥
 फुल्लिंगे फालन जगि ज्वालन चित्रसालन के किरै ॥१३॥

हैं, किलकार करके योगनियें साथ होती हैं और घोरों को ललकार कर भैरव हुकार करते हैं ॥ १० ॥ १ भीमसेन के समान घोर होकर अपनी सीमा से महाराथ भीमसिंह का पुत्र बट कर २ बला ३ सेना का घरा लगा कर ४ पुत्र फैलाया ५ काल के कोप के समान तोपों से ६ अग्नि लगा कर नगर का नाश रखा और गोले लग कर झरोखे, जालिये ७ मटल और शाखाओं को गिराई ॥ ११ ॥ हाटों में बल्ल जल कर मार्ग मार्ग में धुषा की घोर से बंधेरा दोगपा शोक के साथ ८ घरों घरों में छुप कर पुर के लोग ९ जीवन के सदेह में पडगये कि अधित रहेंगे या नहीं १० छोटा कोट गिरता है और कहीं पर ११ बड़ा कोट छिक कर १२ कागरे छछटते हैं 'जो कोट थास हाथ से नीचा होये उसको प्राकार और इससे बड़ा हावे उसको धम कहते हैं और मत्तगर से घूल काट का नाम भी धम है' कहीं पर १३ बुरजों के १४ समूह गिर कर १५ स्त्रियों को पूरण करके उफलते हैं ॥ १२ ॥ अग्नि लग कर लदाव और मडप (गुमज) लूट कर उनके १६ पत्थर ग्रीधनिया के समान आकाश में बढते हैं और १७ पारुद के साथ घुज कर मडला के पत्थर निकलते हैं, गोपा स बट कर १८ नगर के द्वारों से छूट कर उन के शिखर गिरते हैं और अग्नि लग कर १९ अग्निकण उडने से नितनी ही चित्रशालिये गिरती हैं ॥ १३ ॥

छहरात गोलेन थंभ के थहरात छत्रिन छुटिकैं ॥
 छिकि जात छप्पर छज्ज के टिकि जात टप्पर तुटिकैं ॥
 अंगार छार अंगार द्वार बजार बीथिन उच्छैं ॥
 न रहैं निवानन छिज्जि नीर समीरें ग्रीष्मलों रारैं । १४ ।
 जरि जात पर परि जात गिद्धनि डोरि तुटत चंगँज्यों ॥
 अरिजात अंडन दंड के गिरिजात केकिंय भंगज्यों ॥
 धकि धाम धामन धुम्मतैं पुररामं बिबभल छुक्कयो ॥
 इम हल्ल दुरजनसल्ल करि हरवल्ल अल्लन अुक्कयो ॥ १५ ॥
 दै दै निसैनिन बीर के हमगीर अँटनपैं चढे ॥
 के दोरि अँरन तोरि अगल्लें पोरि मग्न लगे वढे ॥
 वह हड्ड छित्तर आय चँत्तर धीर धारनमैं धरयो ॥
 करि जंग कछु बिधि अरि खग्न सु फारि फोजहिँ निबल्लस्यो १६
 संग्राम नृप यह काम सुनि तब राक्षपुर तजि भज्जयो ॥
 इत-जित्ति दुरजनसल्ल हँत्तन लुट्टि पँत्तन गज्जयो ॥
 बरजोर कूरममोरैं कौं गिनि भीति मानससौं भिरी ॥
 जयसिंह वह लिय रानसौं इम आन अप्पन नाँ फिरी । १७ ।

१ गोलोंके गिरने[बरसने]से छतरियोंके थंभ धूज कर छूटते हैं, कितने ही छपरे और छाजे छिकते हैं और कितने २ टापरे तूट कर छहरजाते हैं दरवाजों के बाहर बजार में और ४ गलियों में अंगारे और ३ भस्मि उड़ती है निवाणों में छीज कर पानी नहीं रहा और ग्रीष्मऋतु के समान (जरम) ५ पवन ६ चलने लगा ॥ १४ ॥ जैसे डोरी तूट कर ७ पतंग [कनकडवा] गिरै तैसे पंख जल कर ग्रीधनियें गिरती हैं कितने ही ध्वजाओं के दंड जल कर ऐसे गिरते हैं जैसे अरेहुए ८ मयूर ऊपर से गिरें ९ घर घर जल कर धुवाँ से घवराया हुआ १० रामपुर कूका इसप्रकार दुर्जनशाल हल्ला करके सेना के अग्रभाग को ११ अलने को बढ़ा ॥ १५ ॥ १२ वुरजों पर चढे और कितने ही १३ कँवाड़ों को और १४ आगलों (अगला, भागल) को तोड़ कर द्वार के खार्ग लग कर बढे वह हाडा छीतरसिंह १५ चौक में आकर ॥ १६ ॥ १६ छीतरसिंह के निकलजाने का कार्य सुन कर १७ हाथों से १८ नगर को लूट कर १९ कछवाहों के पति (जयसिंह) को बलवान जानकर २० मन में भय हुआ [डरा] ॥ १७ ॥

(दोहा)

कोटापति नहीं भ्रमल किय, कूरम नृप भय भार ॥

लुट्टि रामपुर *जाम लग, आयउ अप अगार ॥ १८ ॥

[षट्पात्]

चदाउत सीसोद नृपति सग्रामसिंह इत ॥

पुर विभोली आय रहयो चितत प्रपच चित ॥

मातुल हो परमार नाम विक्रम विभोली ॥

इहि कारन नैंह आय खूब भज्जत कटि खोली ॥

धनकुमरि नाम जननीहु तस ही पीहर ईम तत्थ रहि ॥

दिन कछु विहाय दिल्लिय गयो साहमुहुम्मद सरन गहि ॥ १९ ॥

(दोहा)

काछु बसुं हुडी नजरि करि, लिय निज भुम्मि लिखाय ॥

दिय कोटा आमैर दुव, वनि वनि पिसुन बताय ॥ २० ॥

कछु दिन रहि निज पुर कैम्पो, पटा मुलक सब पाय ॥

सरनि मध्य जयसिंह सो, मारयो चूक कराय ॥ २१ ॥

(षट्पात्)

तदनंतर सैक वान अट्ट सत्रह १७८५ सबच्छर ॥

अमा अहर्गन पोस भयउ सुत पुनि कूरम घर ॥

रानाउति जाँठरज नाम माधव नृप नदन ॥

सुनत खबरि जयसिंह घुम्मि मडिय उच्छव घन ॥

दिय द्विजन दान रुपप अयुत १०००० कथिते रीति जप जज्ञ करि ॥

सुत प्रसवकर्म सदिय सकल आमनाय अनुसार सैरि ॥ २२ ॥

*एक पहर पर्यन्त पहर ॥ १८ ॥ १ मार्गशीर्षी भोली नामक नगर में इसकारण ४
 धिता कर ॥ १९ ॥ ४ घन ॥ २० ॥ ६ खला ७ मार्ग में ॥ २१ ॥ ८ जिस पीछे ९
 विक्रम के शक के १७८५ के वर्ष में १० अमावास्या के ११ दिन १२ बहर से
 उत्पन्न १३ कही हुई रीति से १४ जातकर्म १५ वेद के अनुसार चलकर ॥ २२ ॥

(दोहा)

कछवाही भ्रातहिं कहिय, उदयनैर तुम *पत्त ॥

†भामजको संबंध भो, वा नहिं अखहु ‡अत्त ॥ २३ ॥

॥ पट्पात ॥

कहि कूरम तब कुपि §भाम कृत्रिम तिहिं भाखत ॥

हमतै ¶इस नहिं होय बदहु पतितै जु करहिं बत ॥

कछवाही सुनि कहिय तुमहु कृत्रिम हम जानत ॥

बिजयसिंह मम अनुज सत्य पै जग नहिं मानत ॥

यह अखिख अनुज कटिबंधं गहि खंजर खैंचन करिय कर ॥

भंभंति छुगय कूरम अंति आयो बाहिर दै अरर ॥ २४ ॥

दोहा ॥

कछवाही पिच्छैं निकसि, हुत निज सत्थ बुलाय ॥

चढि संपुत्र रयंदन चर्ला, स्वामी निकट रिसाय ॥ २५ ॥

(पट्पात)

जामिपै प्रति जयसिंह तबहि चैर भेजि कहाई ॥

पहुँचे सब तुम पास भलैं बिरचहु मनभाई ॥

हत्या देत जु हमहिं ततो हम करहिं लिखित तकि ॥

नतो अप्प गृह जाहु करहु चित चाह पाप पकि ॥

यह सुनत भूप पछी कहिय अप्प निवेरहु कलह यह ॥

हैं सदा लिखित अनुसार हम अवर न मन जानहु असह ॥ २६ ॥

सुनत एह जयसिंह मुख्य मंत्रिय राजामल ॥

पठयो अखिख प्रपंच लैन भानेज छत्र छल ॥

* गये सो † भानजे का ‡ यहाँ कहो ॥ २३ ॥ § बहिनोई [बुधसिंह]
इसको करतबी कहते हैं ¶ इसकारण १ सरा छोटा भाई २ कमरबन्धा पकड़
कर ३ शस्त्र विशेष ४ शिटका देकर ५ शीघ्र ६ किचाड़ देकर बाहिर आगया
॥ २४ ॥ ७ शीघ्र ८ अपने साथ को ९ पुत्र सहित रथ पर चढके १० बुधसि-
ह के पास ॥ २५ ॥ ११ बहिनोई बुधसिंह से १२ हलकारा भेजकर ॥ २६ ॥

तव खत्री तैं जाय कह्यो कारन रानी प्रति ॥

सुरम्भयो कलह समस्त ॥ अनुज तुम पक्ष करिय अति ॥

कहिहो तैंहैंहि सगपन करहिं बुद्धिमहु नहिं भव विमन ॥

करि लिखित दिन्न जयसिंह कर किन्न सबहि उररीकरन । २७ ।

पादाकुलकम् ॥

तव रानी नृप हितु कहाई, भौमज निजहिं बुलावत भाई ॥

सुरम्भयो जो विग्रह हित सत्यहि, तो भेजहिं अप्पन सुत तथैहि ॥ २८ ॥

तव बुद्धीस कह्यो रानी प्रति, तुमरो अनुज बलिष्ठ बढ्यो अति ॥

इम सुरम्भा उरम्भी सुन चिन्है, अकखी उन जिमतिम लिखि दिन्है ॥

यह सुनि जान्यो साम भयो अब, समुम्भयो रानी बांह मिटयो सब ॥

तबहि भवानीसिंह स्वीय सुत, मातुल ढिग पठयो खत्री जुन ॥ ३० ॥

राजामल लै तिहिं तहैं आयो, कुम्भ सु तार्कहैं दतन कहायो ॥

दुर्ग माहिं डक दुर्ग भयकर, नाम चिलहटोला काराघर ॥ ३१ ॥

तहैं चढाय बालक वह मात्था, नृप कर्म काहु न निवार्यो ॥

एह कुमार हमहु अनुमान्यो, पै असत्य सत्य न पहिचान्यो ॥ ३२ ॥

कुटिल कुसील लखत कहवाही, इम हम मति कृत्रिम भौवगाही ॥

पुनि बुद्धीस नष्ट मैति पिकखत, देखि हेतु अवग्रह अत दिखत ॥ ३३ ॥

प्राचीनैन यह कथ इम रक्खी, यतैं हमहु अनिश्चय अकखी ॥

॥ तुम्हारे छोटे भाई [जयसिंह] ने तुम्हारा बहुत पक्ष किया । उदास । अर्थात् कार [स्थिका] ॥ २० ॥ २ पुत्रसिंह स मेरा भाई जयसिंह ३ अपने भानजको बुलाता है । तथा ॥ २० ॥ ४ बलवान् ५ नहीं देखा ॥ २० ॥ ७ अपने पुत्र को मामा के पास राजामल खत्री सहित भजा ॥ १० ॥ ८ कैद [जल] खाना ॥ ३१ ॥ ९ राजा जयसिंह को किसीने नहीं रोका १० ग्रन्थकर्ता (सूर्यमल्ल) कहते हैं कि इस कुमार के लिये हमने भी अनुमान किया ॥ ३२ ॥ ११ बुर स्वभाववाला १२ कृत्रिमपन का ही पाह लिया अर्थात् कृतक ही जाना १३ नष्ट पुत्र वाला १४ सत्य दीपना है ॥ ३३ ॥ १५ ख्याति लिखनेवाले प्राचीन लोग १६ इस कथा का इसीप्रकार रक्खी है ॥ ३४ ॥ १६ इसकारण हमने भी सदेव-

*द्रुत सुनि सूनू कैद हिय दाही, किन्नौ कलह कुपि कछवाही ३४
 पति सन कहिय हन्यौ तुम पुत्रहि, यातैं तजिहौं देह अमुत्रहि ॥
 इम कहि अन्नत्याग अवधारयो, व्याकुल नृप तब सोक विचारयो ३५
 मतिजड़ भूप कँउल निश्चित मन, नारिन नैक उदास सहै नन ॥
 बिनयादिक करि कोप बहावैं, अंतर तबहि इष्ट सुख आवैं ३६।
 ललना माल कह सु न लुप्यैं, करै प्रनति जब जब कोउ कुप्यैं ॥
 यह बुंदीपति सील अपूरब, तातैं करि करि प्रनति कही तब ३७
 सत्रुन हत्थ तुमहि सौँप्यो सुत, अब क्यों रिस हम कियउ कहा उत
 कहिहो पुनि सोही हम करिहैं, असन लेहु इच्छित अनुसरिहैं ३८
 यह सुनि दिय रानी प्रतिउत्तर, कुमार सु मम मंडहु यह कगगरं ॥
 तब नृप लिख्यो कलह दुख टारक, कछवाहीको एह कुमारक ३९
 कलह उग्र रानी पुनि किन्नौ, निठिनै अन्न दिनै न विच लिन्नौ ॥
 इत पुनि गरभ धरयो चुंडाउति, होवत जास जग्य जप आहुति ४०।

उति १ हुति २ अन्त्यानुप्रासः ॥ २ ॥

अब तकत कूरम नृप याकँहँ, कब सुत होय मंगिहौं ताकँहँ ॥
 कुमार भयै जामिज गति कैहौं, दुहितौ जो स्वसुतहिं तो दैहौं ४१।
 चोपाई ॥

कूरम इम हेरत जानि काल, रक्खे भट जामिकँ रक्खवाल ॥

घुमडि रहे डेरन जे घेरि, नृप सुत लोभ लयो मन फेरि ४२।

ली ही रक्खी है * शीघ्र पुत्र को कैद सुनकर ॥ १ परलोक के अर्थ २ धार-
 ण किये ॥ ३५ ॥ ३ लूख बुद्धिवाला ४ वासमार्ग में मन का निश्चय करनेवा-
 ला ५ नहीं चाहता ॥ ३६ ॥ ६ स्त्रीमात्र ७ विशेष नम्रता ॥ २७ ॥ ८ तुम्हारा
 चाहा हुआ करेंगे ॥ ३८ ॥ ९ वह कुमार मेरा था १० यह पत्र लिख दो ११ टा-
 लने [मेलने] वाली ॥ ३६ ॥ १२ कठिनता से १३ कई दिनों में ॥ ४० ॥ १४
 भानजें की गति हुई सो ही करूंगा अर्थात् मार डालूंगा १५ बेटी हुई तो अ-
 पने बेटे ईश्वरीसिंह को परगाढ़ंगा ॥ ४१ ॥ १६ बालक जन्मने के समय को
 १७ पहरायत १८ बुधसिंह ने पुत्र के लोभ से जयसिंह से मन फेर लिया ॥ ४२ ॥

[पट्पात्]

तेदनु ईश्वरीमिह सुपहु जयसिंह पट्ट सुत ॥

रान कुमर जगतेस सुता व्याहयो हित सजुत ॥

सर बसु सत्रह१७८५ साल माघ सित लगन मिलायो ॥

जदहिउदैपुर जाय उचित उपयम करि आयो ॥

इत दबि मुलक मालव कियउ मरहठन मडू अमल ॥

आजलो दूर सुनते इनहि प्रविमन अब लगगे प्रबल ॥४३॥

दोहा ॥

रन अवरगावाद रचि, पहिलै कटक प्रचारि ॥

दयावहादुर विप्र वह, सूवापति लिय मारि ॥ ४४ ॥

(षट्पात्)

इहिं द्विज दिल्लिय अंग मेदि हिंदुन दुख दिन्नो ॥

साह हुकम पुनि पाय कुच दक्खिन सिर किन्नो ॥

तीन अयुत३०००० तुक्खार सुभट निज संग सिधारे ॥

सहस बीस२०००००पुनि साह कटक भट दिन्न करारे ॥

कोटा नगस प्रति पत्र लिखि दुज्जनसल्लहु सग दिय ॥

इन जाय सरित रेखा उतरि कछुदिन पार मुकाम किय४५

कोटापति करि कपट तथ कछु काल बिहायो ॥

द्विज द्विग निज दल रक्खि अंग कोटा चलि आयो ॥

उत अवरगावाद लुट्टि मरहट चलाये ॥

द्विज त्रि३ बेर दल पिल्लि पिल्लि रचक ठहराये ॥

अति जोर बढिय मरहट अरि तब द्विज सम्मुह मिल्लये ॥

पाँसक कृपान चोपरि प्रथित खेन प्रान पैन खिल्लये ॥४६॥

१ जिम पीछे २ राणा सग्रामसिंह के पुत्र जगतसिंह की पुर्खा १ रुद्धि ४ वि-

वाह ॥ ४१ ॥ ४४ ॥ ५ आगे ६ घोडो [मवार] ७ लेना ८ नर्यदा नदी ॥ ४५ ॥

९ तहा कुछ समय पिताया १० अपनी सेना ११ आछाण तीन बार सेना भेजकर

१२ लड़ रुपी पासा से युद्धक्षेत्र रुपी १३ प्रसिद्ध चोपड़ म १४ प्राणा का दाव

दयाबहादुर बीर बिप्र नागर सूबा पति ॥
 खूब मारि रन खग मारि बहु सत्रु महामति ॥
 तिल तिल तेकन तुष्टि बिरचि अच्छरि लगवाँहीं ॥
 गंजि अरिन करि गरद भरद पत्तो दिवँ माँहीं ॥
 जिम जिम प्रमाद मिच्छन जगिय भोगै न जिम जिम भुल्लये ॥
 तिम तिम कटाच्छ तिरछे बिरचि दिल्ली जारन बुल्लये ॥ ४७ ॥

(दोहा)

मारि द्विजहिँ मंडत अमल, रेवा लंघि रिसाय ॥
 मरहठन मालव लयो, उज्जइनी लग आय ॥ ४८ ॥
 लै मंडू दसउर लियउ, निज निज थानाँ रक्खि ॥
 सूबापति गुजरातको, सोहु मिल्यो हित रक्खि ॥ ४९ ॥
 तवके आवत दक्खिनी, भुव दब्बत बरजोर ॥
 अब कूरम कहि मुक्कल्यो, तजहु रामपुर मोर ॥ ५० ॥
 जानि इनहु जयसिंहको, रामपुर सु दिय छोरि ॥
 अवर देस उज्जैन लग, बढि बढि लिन्न बहोरि ॥ ५१ ॥
 कूरम तव मुक्कलि कैटक, अमल रामपुर किन्न ॥
 मरहठन सैन छन्न मिलि, दिल्ली सिर भगदिन्न ॥ ५२ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणो सप्तमराशौ बुन्दी-
 पतिबुधसिंहचरित्रे कोटामहारावदुर्जनशल्यरामपुरलुण्टन १ राम-
 पुरपलायितदिल्लीगतरावसंग्रामसिंहपुनारामपुरलेखन २ प्राप्त-
 रा-

लगाकर खेला ॥ ४३ ॥ १ स्वर्ग में गया २ भोग भागने में ३ कटाच्छ ॥ ४७ ॥
 ॥ ४८ ॥ ४ हित की साज्जी [गवाही] से ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५ अन्य ॥ ५१ ॥ ६ सेना
 भेजकर ७ से द भार ॥ ५२ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सातवें राशि में बुन्दी के भूपति
 बुधसिंह के चरित्र से कोटा के महाराव दुर्जनशाल का रामपुर को लूटना ?
 रामपुर से भागे हुए राव संग्रामसिंह का दिल्ली जाकर पीछा रामपुरा लि-
 खाना २ जयपुर के राजा जयसिंह का रामपुरा भाकर पीछे आते हुए राव

राजाके सुरजकुमारी कन्या होना] सप्तमराशि त्रिंशमयुख (११२७)

मपुरप्रत्यागच्छजयपुराधीराजयसिंहस्य रावसग्रामसिंहच्छलघात-
मारणा ३ जयसिंहकानिष्ठसूनुमाधवसिंहजनन ४ जयसिंहस्य स्व-
भागिनेयब्रुन्दीपट्टराजकुमारभवानीसिंहमारणा ५ जयसिंहपट्टकुमा-
रेइवरीसिंहादयपुगविवाहन ६ गृहीतोच्चयनीकमहरष्टदरापुरपुगव-
धपाठमखवर्णनमेकोनत्रिंशो मयुख ॥ २९ ॥

आदित. सप्तपष्ठ्युत्तरद्विशततम. ॥ २६७ ॥

[दोहा]

अतपसिंह मरुईस इत, मरुधर राज जमाय ॥

स्वामिधरम बैहि साहको, अतिजवै दिल्ली आय ॥ १ ॥

इत नृप कानीखोह गहि, तज्यो वचन गहि गाढ ॥

सक खट वसु सलह १७८६मय, आयउ अब आपाढ ॥ २ ॥

[पदपात]

अनित पखख आपाढ मास सनिवार चउहमि १४ ॥

चुडाउति उर कुमर भयो दहमांस जठर बसि ॥

धात्रेयी नृप निकट उलवै सहितहि गहि आन्यो ॥

बुल्की नीति विचारि जनन अबलग नहि जान्यो ॥

पै अब न छन्न रक्खन उचित कोउ न पुनि कहिहैं कुमर ॥

॥ ३ ॥

पादाकुलरुम् ॥

सग्रामसिंह को छलघात से मरवाना १ जयसिंह के छोटे पुत्र माधवासब का
जन्म होना २ राजा जयसिंह का अपन भाणोज और बूढ़ी के पाटधी राजकु-
मार भवानीसिंह का मरवाना ५ जयसिंह के पाटवा पुत्र ईश्वरसिंह का ल-
दयपुर में विवाह होना ६ मरुठरा का उल्लिख कर मरुधर तक बढ़ने का
उत्तरीमवा मयुख समाप्त हुआ और याद में दोमाँ सहस्र २३० मयुख हुए ॥
१ कारण करके २ अत्यन्त गरीब ॥ १ ॥ २ ॥ ३ कृष्णपक्ष ४ अश्विमास उदर में
पास करके ५ धाय की बेगी ६ बुधसिंह के समीप ७ आबल (जग की पैली)
सहित ८ अन्य मनुष्या न आधवा कुमर का जन्म अन्य लोगों न नहीं जाना

अगँ जवहि *भीम लुट्टी भुव, तिनया तव गूरु कुलारि हुव ॥
 रिपुभयसौं सुत सुत करि राखी, भावतसिंह भये सुत आख्या ॥ ४ ॥
 जँहँ सुताहिँ सुत सुत कहि ठानै, तिहिँ पुनि सुता कहँ जग मानै ॥
 सुतहिँ सुता कहि कहि जँहँ रक्खहिँ, ताहिँ बहुरि कोउ न सुत अरक्खहिँ
 हुव संतान सबन यह जान्यौं, पुत्री सुत अबहि न पहिचान्यौं ॥
 पै छुन्नै रक्खै नहिँ भल मत, ख्यात कियँ कूरम इहिँ संगत ॥ ६ ॥
 हमरी मति सु फुरत प्रकटावन, पुनि कहिहो सु करहिँ किं करपन ॥
 धात्रेयँ जु अनिरुद्ध नरेसह, देवकग्न अभिधान हुतो वह ॥ ७ ॥
 ताकी इहिँ तनया धालेई, कोविदँ नीति कही इम केई ॥
 सुहि पुनि नाजर अमर सुनाई, बंटहु सुत भव प्रकट वधाई ॥ ८ ॥
 भावसिंह नृपको यह नाजर, बय नैय वृद्ध रु राजकाज बैग ॥
 अगँ नृप अनिरुद्ध समय जब, अंतहपुरं कोउ बेलँ चली तवा ॥
 सिविका छोरि अपुव्व सयानी, रथहि चढी राजाउति गनी ॥
 चिकन ओट कछु लखत प्रपंचकँ, बाहिर कढी अंगुली गंचकँ ॥
 कहि तब नाजर अमर करारी, छैगी तीन३ अंगुलि पर मारी ॥
 उपालंभँ अनिरुद्ध भूप दिय, नाजर तवहि जोमि कः अविखय ११
 दासी जन अंगुलि मै मानी, रानी रथ आरुढ न जानी ॥

है ॥ ३ ॥ * कोटा के महाराज भीमसिंह ने १ पुत्री १ शत्रु के इस भय से कि
 अब इनके पीछे कोई पुत्र नहीं है इसकारण वृद्धी को दवालेना चाहिये २ यत्र
 कह कर प्रसिद्ध किया कि भावतसिंह नामक पुत्र हुआ है ॥ ४ ॥ ३ जहाँ पु-
 त्री को ही पुत्र पुत्र कहकर रखते हैं ४ तो पुत्र को ५ पुत्री कहकर रक्खेंगे
 तो ६ उसको फिर कोई पुत्र नहीं कहेगा ॥ ५ ॥ ७ परन्तु ८ प्रसिद्ध करने से
 ९ जयसिंह इसको आंगता है ॥ ६ ॥ १० हमारी बुद्धि प्रसिद्ध करने में ही च-
 लती है ११ नौकरपन के कारण १२ धातुभाई १३ नास ॥ ७ ॥ १४ बेटी १५ नी-
 ति चतुर ने कई वार्ता कही १६ पुत्र के जन्म की ॥ ८ ॥ १७ अवस्था और
 नीति दोनों में वृद्ध १८ ओष्ठ १९ जन्म २० किसी बाण में ॥ ९ ॥ २१ अपूर्व
 २२ शहर आदि की रचना देखने को २३ थोड़ी सी ॥ १० ॥ २४ करड़ी (कठि-
 न) २५ छड़ी २६ ओल्लाभा ॥ ११ ॥

उम्मेदसिंहको मागने पर राजाका नटना) मसमराशि त्रिंशमयुख (३१२४)

यातें रही अगुली अक्खेय, नहिं तो जेतो कट्टि रीति नय ॥ १२ ॥
 औसो तुजक हुतो वह नाजर, किन्नों तिहिं पैहँ अरज जोरि कर
 बुदिय जो वारिधिं विच बोरहु, छन्नै राखिख ततो नय छोरहु ॥ १३ ॥

(पदपात)

सु सुनि भूप बुंदीस कुमर जाहिर तब किन्नों ॥
 हुंदुभि बजिग द्वार द्रव्य विपन बहु दिन्नों ॥
 गंगाकन अरु नेवगिन कुम्म नृपसौहु कहाई ॥
 सत १०० सत १०० रूप्य सबन दई जयसिंह बधाई ॥
 बुद्धहि कहाय पठई बहुरि सोंपहुँ अब हम हत्य सुव ॥
 गहि लिखित रीति लिखि बधुँ गन धारहु अवरहि अकै धुव १४

[दोहा]

कहि पठई बुधसिंह तब, पच्छी ँपाज बिसास ॥
 करन देहु जातक करम, पुनि भेजहिं तुम पास ॥ १५ ॥

(षट्पात)

जातकरम सब करिय तैनय उच्छव तदनंतर ॥
 सुन्यो कुमर ससार नाम उम्मेदसिंह बर ॥
 बहुरि कुम्म इक वनिकै सचिव पठयो हीरामल ॥
 कहयो देहु मुहिं कुमर छोहैं तब कियउ रूपात छल ॥
 अक्खिय रिसाय बुदिय अधिप पुत्रहु कहिं मगे मिलत ॥

१ चय रहित २ न्याय की रीति से अगुली काटलेता ॥ १२ ॥ ३ प्रबधकर्ता
 (यह याचना शब्द अनेकार्थ वाची है, जिसके अर्थ दयदया शान शोकत प्रब-
 न्धकर्ता आदि कई हैं) ४ समुद्र में डुबोना होवे तो ५ नीति ॥ ११ ॥ १ सो
 ७ नगारे यजे ८ ज्योतिषियों और ९ नेग पानेवालों ने जयसिंह से भी १०
 बुधसिंह का ११ सुत्र [पुत्र] १२ लिखावट की रीति से आहूषों के समूह में
 से १३ निश्चय किसीको गोद रखलो ॥ १४ ॥ १४ छल से विश्वास देकर कह-
 लाई १५ जन्म समय के वेद विहित कार्य ॥ १५ ॥ १६ पुत्र के वरसब का १७
 जिस पीछे १८ मनिया १९ क्रोध करके २० प्रसिद्ध

बरजोर लेहु हो तुम प्रबल हम रन इच्छतं स्वर्ग हत ॥ १६ ॥
 सुनत एह जयसिंह घल्लि कर मुच्छ रिसायो ॥
 पन्नैग पय दब्बयो किँ छुँधित सद्दूल खिजायो ॥
 तँमकि भूप ततकाँल सचिव राजामल बुल्लयो ॥
 कहयो कहा करतव्य खिजि अब उन छल खुल्लयो ॥
 करि उचित लेहु खत्री कहिय गृहबाँसिन इन हनहु नैन ॥
 इच्छितहिँ राज बुंदिय अपि प्रथित निबाहहु लिखित पैन ॥ १७ ॥
 (दोहा)

तब छित्वर प्रति इंदगढ, कुम्म लिखी यह चाहि ॥
 देवसिंह भेजहु कुमर, बुंदी अप्पहिँ ताहि ॥ १८ ॥
 प्रथम राज तुमकोँ मिलत, जो यह तुमहिँ रुचै न ॥
 तो हम अवरहिँ अप्पिहैं, बदहु न पिच्छै बैन ॥ १९ ॥
 छित्वरसिंहहु तबहि लिखि, पठई कूरम गेह ॥
 हम किंकर बुंदीसके, अनुचित करहिँ न एह ॥ २० ॥
 अवरहुँ गोपीनाथ कुल, नटयो अनुक्रम पाय ॥
 बुंदीतैँ कूरम तबहि, सालम लिन्न बुलाय ॥ २१ ॥
 कहयो धरहु तुमरो कुमर, बुंदी गहिय बीर ॥
 लखहु एह जामिर्प लिखित, हम सहाय हमगारि ॥ २२ ॥
 सठ सालम यह लोभ सुनि, बुल्लयो कुमर प्रताप ॥

१ युद्ध करना चाहते हैं २ तरवार मारकर ॥ १६ ॥ ३ सर्प को पैर से दबाया
 ४ किधों ५ झूखे सिंह को क्रोधित किया ६ क्रोध करके ७ तुरन्त ८ बुलाया
 ९ वया करना चाहिये १० अपने घर में बास किये हुआँ को ११ मारो मत
 "यहाँ अधिक निषेध के लिये दो नकारों का प्रयोग है सो अन्यस्थानों में भी
 जहाँ 'नन' शब्द आवै वहाँ अधिक निषेध समझना चाहिये" १२ चाहे जिस
 को बून्दी का राज्य देकर १३ प्रसिद्ध लेख [लिखावट] की १४ प्रतिज्ञा निबा-
 हो ॥ १७ ॥ १५ छीतरसिंह के नाम १६ जयसिंह ने ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ १९
 सालमसिंह को ॥ २१ ॥ २८ वहिनोई [बुधसिंह] की लिखावट ॥ २२ ॥ १९ बुलाया

नय विचारि सोहू नटघो, उच्चरि दुरित अमाप ॥ २३ ॥

जड सालम बुल्लयो जवहि, मध्यम कुमर दलेल ॥

करउरतैं आयो कुटिल, मन इच्छित लाहि मेल ॥ २४ ॥

अभयसिंह इत मरुग्रामिप, बखसि साह वसु ज्ञात,

मगबुलंद सिर मुकल्लयो, दै सूवा गुजरात ॥ २५ ॥

दिल्लीतैं मारव नृपहु, आयो जैपुर अंत्य ॥

बरखनलग जैपुर वस्यो, हो जयसिंहहु तत्थ ॥ २६ ॥

तब दरकुचन आय तैंहँ, मरुपति दिन्न मिलान ॥

इहिं सुनि कानीखोदतैं, चढि आयो चहुवान ॥ २७ ॥

मरुपतिसों अति हेत मिलि, कहि सब लिखित कुंकाम ॥

जयनिवास उपवन निकट, किय बुदीस मुकाम ॥ २८ ॥

मुक्तादाम ॥

मिले मरुभूप रु बुद्ध विनोद, पारुपर डेरन आय प्रमोद ॥

सु डेशकरि गोठिनैं जिम्मन साजि, दये लिय दोउनरवारन बाजि २९

मरु प्रभु डेरन कुम्महु आय, सुँतापति जानि मिल्यो सरमाध ॥

कह्यो करि पावन जैपुर जेधैं, मंभालप भोजन "कैं चलिये बै॥३०॥

कह्यो मरुभूपहु यों सुनि तत्थ, चलैं हम बुद्ध बंजापति सत्थ ॥

ठगो इनकों तुम जानि प्रसन्न, हमे इनतैं हित हेयें न अत्त ॥ ३१ ॥

यहै सुनि कूरम अखिय एह, चुक्यो मिलि जामिपतैं यहदेह ॥

यहै कहि लौ मरुभूपहिं जाय, दई बिनु जामिपैं गोठि जिमाय ॥३२॥

१ पाप ॥ २३ ॥ २ दलखामिह को ॥ २४ ॥ ३ पादशाह ने घन का समूह देकर

॥२४॥ ४ मारुपाह का राजा ९ यहा ९ कई वर्षों से घाम किया हुआ ॥२५॥

७ मुक्ताम ॥ २७ ॥ ८ जयसिंह को लिखावट कर देन का खोटा कार्य कह

कर ९ याग क समीप ॥ २८ ॥ १० गोठ ११ हाथी घोड़े ॥ २९ ॥ १२ अपनी

पुत्री का पति जानकर १३ रस युक्त [प्रसन्न होकर] १४ शोभा १५ मेरे घर १६

भोजन करने पर १७ अथ चलिये ॥ २० ॥ १८ यह बुधसिंह का विद्यापय है १९

त्याज्य नहीं है ॥ २१ ॥ २० घटिनार्ह न यह दह मिल चुका अर्थात् अथ कभी

नहीं मिलसक्ता "यह काटू माया का कथन है" २१ बिना बुधसिंह के ॥३२॥

चल्यो लहि कूरम सिक्ख कबंध, बद्यो नृप बुद्धहि फेरि प्रबंध ॥
 रहो तुम कूरमकी यह जानि, कछू करिहे मम भद्र प्रमानि ॥३३॥
 सु तो सब गो तुमरी लिपि संग, अबैं नैन रक्खहु राज्य उमंग ॥
 चल्यो मम सत्थहि जो चहुवान, ततो इन्ह ठिछहि लै तुम थान ॥३४॥
 यहै हु न मन्निय बुंदिय ईस, रची मरुभूपतिहू कछु रीस ॥
 क्रम्यो करि कुंचन धन्व कबंध, रच्यो धर गुँज्जर लेन प्रबंधा ॥३५॥
 इतैं सठ संभर मोह अरोहैं, क्रम्यो निज डेरन कानियखाह ॥
 दई पुनि बुद्धहिं कुँम्म कहाय, भयो सुत औरस सौंपहु भाया ॥३६॥
 रु लै सुत सालम अंक दलेलैं, मनो इहिं पुत्र गिनो लहि मेल ॥
 न मन्निय फेरिहु बुंदिय नाह, कुप्यो गहि सुच्छ तबै कछवाह ॥३७॥
 दलेल बुलायउ सालम नंद, मिल्यो नृप कूरम प्रीति अमंद ॥
 बरब्बर गदिय पै बइठारि, कह्यो तुम बुंदिय भूप हँकारि ॥३८॥
 अबैं तुमको दुहिता हम अप्पि, थिरा निज भुग्नन भेजहि थप्पि ॥
 बिराजहु बुंदिय गदिय जाय, सबै हम रान समेत सहाय ॥३९॥
 रह्यो अभिसेक सुतो लहि काल, सबे सधिहै पुनि सत्रुनसाल ॥
 यहै कहि सालमसिंह बुलाय, प्रबोधितं बुंदिय दिन्न पठाय ॥४०॥
 कह्यो बुधसिंहहिं आन न देहु, सबे तस राज्य रजू करिलेहु ॥
 सज्यो तब सालम बुंदिय सीस, हैराम तजी नय धर्म हदीस ॥४१॥

(दोहा)

१ बुधसिंह से कहा २ कल्याण ॥ ३३ ॥ ३ लिखावट के साथ ४ नहीं
 ५ जयसिंह को हठाकर ॥ ३४ ॥ ६ चला ७ चारवाड़ में ८ गुजरात की भू-
 मि लेने का ॥ ३५ ॥ ९ बुधसिंह १० अज्ञान [भूल] पर सवार होकर ११ ज-
 जसिंह ने कहलाया १२ लिखावट की रीति पूर्वक ॥ ३६ ॥ १३ सालमसिंह के
 पुत्र १४ दलेलसिंह को गोद लेकर पुत्र मान कर रहो ॥ ३७ ॥ १५ बहुत प्रीति
 से १६ ललकार करके कहा ॥ ३८ ॥ १७ अपनी [बुन्दी की] भूमि भोगने को
 १८ उदयपुर के राणा सहित ॥ ३९ ॥ १९ समय पाकर २० समझाकर ॥ ४० ॥
 २१ उस हरामी ने नीति और धर्म की २२ सीमा [मर्यादा] छोड़ दी ॥ ४१ ॥

यह सुनि कानीखोहतै, बुद्ध नरेसहिँ छोरि ॥

मुरि मुरि सालममै मिले, बहु भट सचिव बहोरि ॥ ४२ ॥

पद्धतिका ॥

इक वनिक नाम वानाँश्रधर्म, किय मुख्य सचिव जोरत कुकर्म

यह जोधराज *जामिज अनीति, पलटयो सठ सालममै सप्रीति ४३

सुखरामनाम कायत्य स्वान, भरि लोभ चोधरी उदयभान ३ ॥

नागर द्विज इक जगदीसधनाम, हड्डा पुनि भित्तुवपहुव हराम ४४

भट अनय पुंज हड्डा भवान ६, यित नैर दुधारी जास थान ॥

पुनि धाडभात सुभराम पाप, मुरि कियउ दुष्ट सालम मिलाप ४५

अरु सठ अलोदपुर पति अमान, मातुल सु महारामाभिधान ७ ॥

इत्यादि सचिव भट सठ अनेक, टरि टरि सालम विच गय सटेक ४६

इत किय प्रपच कछवाह राय, दिल्ली सु अरज पठई लिखाय ॥

बुदीस बुद्ध आलस बहत, गित अब न साह सेवन चहत ॥ ४७ ॥

नहिँ पुत्र आहि इनके निकेत, तसमात भातजहिँ राज्य देत ॥

मुहुकम्म वम सालम अठेल, वर कुमार तास मध्यम दलेल ॥ ४८ ॥

अति गुन प्रपच रन पट्ट उदार, विक्रात सुभग वर मति बिचार ॥

बुदीस राज्य अब देत ताहि, अरु मरुप गन हम मतिहु आदि ४९

तसमात पटा मुद्रित कराय, मम निकट देहु हजरत पठाय ॥

सुनि साह मुहुम्मद अरज एह, लिखवाय पटा पठये सनेह ॥ ५० ॥

घुदिय दलेलसिंहहिँ समप्पि, बुधसिंह पट्ट इहिँ देहु थप्पि ॥

तुम जाहु कुंम्म मालव सु देस, आवत गिनीमै रोकहु असेस ५१

पठये हम रूपय त्रि ससि ३००००० लक्ख, इन घल अनीकै विरच-

* भानजा ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ १ अनीति का समूह ॥ ४५ ॥ २ नाम ॥ ४६ ॥ ३

है ४ घर मे ७ इसकारण से ४ भतीजे को ॥ ४८ ॥ ७ वीर = मेरी सलाह भी

है ॥ ४९ ॥ ९ इसकारण से १० छाप कराकर ॥ ५० ॥ ११ हे जयसिंह १२ सप

शत्रुओं को ॥ ५१ ॥ ११ सेना

हु अपकृष ॥

उज्जैन वार आवन न देहु, लागि पिछि समस्तन मागि लेहु ॥५२॥
कूरम नरेस तव भुग्य अरोस, हैं हम निचिंत अति मुदित होस ॥
इम लिखि पठाय फरमान साह, कछवाह बंघि मंडिय उछाह ॥५३॥

॥ पट्टपात ॥

बंघि साह फरमान हगखि जयसिंह महीपति ॥
रूपय तरह १३ लक्ष पाय मंडिग दैल दुम्मति ॥
मनतैं मिलि दक्खिनिन अक्खि उपपर साहायस ॥
किय मालव पर कुंच बुत्थि आमिख जिम बायस ॥
संगहि दलोल सालम सुवन लैं मंडिग दक्खिन चलन ॥
बुंदीस इत सुबिगग्घो विविध मन्नि न उगगन अत्यमन ॥५४॥
किय बुंदीस विचार जान मालव सालक जिय ॥
विजयसिंह निज अनुज कुम्न कंरागृह रुक्खिय ॥
जाहि कछि बरजोर थिगहि जैपुर नृप थप्पहि ॥
कहि फोजन एकल थोहि दारिद अब अप्पहि ॥
यह किय प्रपंच बुधसिंह इत सो सब नृप जयसिंह सुनि ॥
वह विजयसिंह सोदर अनुज पठयो हनि करि अनय पुनि ५५
धरमधौर जयसिंह करम अनुचित यह किन्नो ॥
विजयसिंह हनि अनुज भोजि जायिपं छिग दिन्नो ॥

१ अरहठों का पक्ष नहीं करनेवाला ॥ २॥ ३॥ २ सेना ३ दुर्मति (बादशाह से
रुपये लेकर उड़ीले) जब मगहठों से मिल जाने के कारण यह विशेषण दिया
है) ४ बादशाह की आज्ञा ५ मांस के दुब्ड़े पर ६ काकगर्जी की भांति ॥ ५४ ॥
७ बुधसिंह ने ८ अपने जाल (जयसिंह) के मालके लें जाने के विचार से ९
जयसिंह ने अपने छोटे भाई विजयसिंह को १० कैद कर दिया था ११ जय-
सिंह तो १२ सगे छोटे भाई का १३ अन्याय करके मारकर बुधसिंह के पास
भेज दिया ॥ ५५ ॥ १४ धर्म को धारण करनेवाले १५ बुधसिंह के पास

कहि पठई पुनि कुंम्भ जाँमि भ्रात रु तव सालक ॥

आयउ यह मम ईसँ प्रथित लुढाहर पालक ॥

इहिँ बिधि कहाय वर जिज अनुज कँटक बुद्ध डिग दगध किय ॥

पुनि लिखि पठाय बुदिय पुरहिँ प्रति सालम यह मर्त्र मिप ॥५६॥

(दोहा)

हम जावत सालव पटुमि, मिलि रुक्मन मरहट्ट ॥

बुदिय धर तुम जतन बल, करि रक्खहु नहिँ कँह ॥५७॥

साह मुहुम्मद तुमहिँ सब, बुदिय धर दिय बीर ।

सठ बुद्धहिँ देहु न धसन, हट्टन पति हमगीर ॥ ५८ ॥

सालम प्रति यह लिखि सबल, लौ निज सग दलेल ॥५९॥

मालव उप्पर उप्परघो, मग्गट्टन हिय मेल ॥

इतिश्री वराभारकरे महाचम्पूके उत्तरायणो सप्तमरागो बुन्दीप-
तिबुधसिंहचरित्रे बुधसिंहपुत्रोम्मेदसिंहजयसिंहयाचन १ बुधसिंह-
पुत्रदाननिषेधबुधसिंहदत्तकीकृतकरवरपतिसालमसिंहमध्यात्मजद-
लेलनिहार्यजयसिंहबुन्दीसमर्पण २ प्रदत्तानल्पवित्तमरुधराधीशा-
भयसिंहयवनेन्दमुहुम्मदशाहाहमदाबादोपरिप्रस्थापन ३ प्रेषितप्रा-

१ जयसिंह ने २ पत्नि [रुक्मिणी] का भार और तुम्हारा साला ३ मरा पति
[जिसको तुम मेरा स्वामी बनाना चाहते थे वही] ४ प्रसिद्ध लुढाघर देश की
पालना करनेवाला ५ बुधसिंह की सेनाके पास जाया ६ यह प्यारा मेघ
॥ ५६ ॥ ७ कष्ट नहीं है अर्थात् बादशाह की आज्ञा मगवा देने के कारण अब
बूढ़ी की भूमि का परा करना कुछ कठिन नहीं है ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ८ सेना सहित
॥ ५९ ॥

श्रीरघुनाथसर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि म बूढ़ी के भूपति
बुधसिंह के चरित्र में बुधसिंह के पुत्र उम्मेदसिंह के जन्म होने पर उसको
जयसिंह का मागना १ पुत्र के देने में बुधसिंह के ताहा करने पर करवर के
पति सालमसिंह के मध्यम पुत्र दलेलसिंह का बुधसिंह की गोद रखकर रा-
जा जयसिंह का उसका बूढ़ी देना २ नारबात्र के राजा अभयसिंह को यह
त था देकर बादशाह मुहुम्मदशाह का अहमदाबाद सेजना राजा १ जयसि-

र्थनापत्रजयसिंहदलेलसिंहार्थबुन्द्यधिकाराजापत्रलेखन ४ मरहट्ट-
वारणार्थोज्जयिनीप्रस्थातृजयसिंहस्य खानुजविजयसिंहमारणां
त्रिंशो मयूखः ॥ ३० ॥

आदितोऽष्टपष्टद्युत्तरद्विशततमः ॥ २६८ ॥

दोहा ॥

सक खट बसु सत्रह १७८६ समय, उज्जं मास अवदांत ॥
कूरम मालव कुंच किय, मनसिज तिथि १३ उमहात ॥ १ ॥
सुता भनाय अधीसकी, बुंदिय पति लघु बाम ॥
संगानैर समीप सो, ही असती रु हराम ॥ २ ॥
सस्सू यह जयसिंह की, सुज्जकुमारि प्रसूति ॥
पलटाई कूरम नृपति, अब नवीन रचि ऊँति ॥ ३ ॥

पञ्चाटिका ॥

गढोरि निकट जयसिंह राय, पहु दिय दलेलसिंहहिं पठाय ॥
कहि यह सु पुण्य तुमरो कुमार, इहिं गिनहु राज्य थंभन उदार ॥ १ ॥
सुनि यह दलेल सन अति कंसूर, कहि पुत्र मिली गढोरि कूर ॥
इम कूरम संगानैर आय, सस्सू पलटाई छल सहाय ॥ ५ ॥

ह का बादशाह को अरजी देकर दलेलसिंह के नाम पर चूंदी का फरमान म-
गाना ४ मरहट्टों को रोकने के अर्थ खजीना जाते हुए राजा जयसिंह का अ-
पने छोटे भाई कैदी विजयसिंह को मारने का तीसवां मयूख समाप्त हुआ
और आदि से दोसौ अड़सठ २६८ मयूख हुए ॥

१ कार्तिक के २ शुक्ल पक्ष में ३ कामदेव की तिथि [ज्योतिषियों में त्रयोदशी
तिथि का स्वामी कामदेव है] ॥ १ ॥ ४ बुधसिंह की छोटी स्त्री ५ कुलटा [य-
हां अत्यन्त कुलटा होने के कारण असती, और हराम एकार्थ बाची दो श-
ब्दों का प्रयोग किया है] अथवा पति से विरुद्ध होने के कारण हराम पद दि-
या है तो यह अर्थ है कि वह कुलटा और स्वामी हरामी [अधर्मिणी] सांगा-
नेर के समीप थी ॥ २ ॥ ६ सूर्यकुमारी जननेवाली ७ कीड़ा [नया खेल रच-
कर] ॥ ३ ॥ ८ राजा दलेलसिंह को भेजा ९ यह तुम्हारा धर्म पुत्र है ॥ ४ ॥
१० बड़े अपराध सहित था तो भी ११ साधु को ॥ ५ ॥

इम दुवर्द्धलेल कूरम *अमान, मिलि नैर निवाई दिय मिलान॥
 बुदिय लिखि पठई पुनि बिचारि, मालम तुम मडहु घर सम्हारि॥
 हम मिलन प्रथम आवहु हजूर, पुनि भुगगहु बुदिय कटक पूर ॥
 सुनि यह सठ सालम अनय सोम, कूरमडिग आयउ मिलन काम७
 मिलि उभयशगाम मुडवा मिलान, दिय कुम्म सालमहिं सिक्खदान
 कहि जावहु बुदिय तुम निसक, अब तव कुमार सिर पैट अक८
 इहिं लै इम मालव जात आज, सूबा अवति रक्खन समाज ॥
 सालम तुम जावहु गृह सधीर, बुद्धहि नन प्रविसन देहु बीर ॥ ९ ॥
 यह अक्खि सालमहिं सिक्ख अप्पि, मालव चलि कूरम कुच मप्पि
 दल भरन भुम्मि फुटत दरारि, चचल मतग दल्लिय चिकारि ॥ १० ॥
 वहि सजवै तरारन लेत बाजि, उदत भट मडन कपट आजि ॥
 रचि इम दरकुचन कूर्मराज, कोटा धर सर्कामे प्रथिते काज ॥ ११ ॥
 नदि कुसक तीर परि दल अनत, दिस दिसन फुटि गय यह उदत
 कोटा नृप दुज्जनसल्ल कूर, दित सचिव दोयर्पठये हजूर ॥ १२ ॥
 नागर द्विज बेणीराम नाम, रन चतुर व्यास दोल्लतराम ॥
 इम दुव पठाय कूरम अनीकै, कोटेम रचिय प्रैनतिय कितीक १३

[षट्पात्]

कुसक छोरि पुनि कुच करिय अगै नृप कूरम ॥
 सिंधु सरिते निवसथ बढोद किय तैंहँ मुकाम क्रम ॥
 उज्जइनीके अँनुग गोइ १ उम्मट समैर गन ३ ॥
 अरु कबंध ४ कछवाइ ६ सुपहु खिच्चिय ७ सुनि सेवन ॥

अच्छ १५ (अत्यन्त) मुकाम ॥ १॥ पूर्ण सेना से अनीति का मिताप करने का
 ॥ ७ ॥ २ युन्दी के पाट का लेख ॥ ८ ॥ ३ पुष्पसिंह को कदापि मत घुसने देना ॥ ९ ॥
 ४ सेना के भार से ५ भीष्कार शब्द [भीसली] करके ॥ १० ॥ ६ वेग सहित
 ७ सेना के वरत धीर मार्ग में कृत्रिम युद्ध करते आते थे ८ यथा ९ प्रसिद्ध
 कार्य के लिये ॥ ११ ॥ १० वृत्तान्त ॥ १२ ॥ १३ कछवाहे की सेना में १० वि-
 शेष नम्रता ॥ १३ ॥ सिंधु नामक १३ नदी १४ ग्राम १५ सेवक १६ चट्टपाण

सूबाधिनैथ कुम्भहिँ समुक्ति नृप ये सब आयउ निकट ॥
सजि सजि मिलाप जयसिंह सैन किप सासन मृगि सिर कण्ठ १२

(दोहा)

निज गढ सोपुर गोड़ नृप, उम्मट पट्टनि ईस ॥
कोटापति चंडासि कुल, संभग्वार बन्तीस ॥ १५ ॥
गढंगछव बज्रंगगढ, ये खिच्चिय चहुवान ॥
नरउरपति कछवाह नृप, सुत गजसिंह मयान ॥ १६ ॥
पति ईडग रतलामपति, हुव रहोर दलेस ॥
इत्यादिक उज्जैनके, आये अलुग असेस ॥ १७ ॥

(पादाकुलकम्)

सूबानुंग नृप समय सयाने, मिलि जयसिंह सबहि सनमाने ॥
अरु कोटेस पटालय आयो, भीम जनकै भव सोक भुलायो ॥ १८ ॥
जान्यो दई दलेलहिँ बुंदिय, होय यहें इनकै गवीकृत हिय ॥
इम बिचारि कोटा अयनायउं, बहु मुद डेरन जाय बढायउ ॥ १९ ॥
जयहरि लौ इम सवन बडे जंग, मंडुवपुर प्रविर्गयो धर मालव ॥
प्रकट दिखात साह किं करपन, मिल्यो कितव अंतरै मरहटन २०
कछुदिन संमर व्याज तँहँ कह्य, बँहुत पिक्खि दक्खिन दल बहे ॥
लुँबि कटक अप्पन लुटवायो, मरहटन कँहँ विजय मिलायो २१
कछु धन बमनँ निवेदन किन्ने, लोभ छन्न तिनके वचँ लिन्ने ॥

१ सूबा का पति [गवर्धी] २ मसीप ३ से ४ जैमे अकुश को ५ यपने मस्तक पर हाथी सहन करै तैसे ॥ १४ ॥ ६ चहुवान ॥ १५ ॥ ७ राघवगढ ॥ १६ ॥ ८ सेना के ईश ९ सेवरु ॥ १७ ॥ १० सूबा के साथ चलनेवाले ११ पिता भीमसिंह के मरने का शोक भिटाया ॥ १८ ॥ १२ कोटावालों को स्वीकार होजावे इसकाग १३ कोटे को अपना किया ॥ १९ ॥ १४ जयसिंह १५ उघिघना से १६ प्रवेश दिया १७ छली १८ भीतर के मन से साहटों से मिला हुआ था ॥ २० ॥ १९ युद्ध के सिवसे २० बहुत देवरु २१ उरु [जयसिंह] लोभी से अधवा लोभ रु-र के अपनी सेना को लुटवाई ॥ २१ ॥ २२ वस्त्र २३ वचन

वहै कूरम हम साह दरामी, किय मरदह मेल भुव *जामी॥२२॥
(दोहा)

तदनंतर करि सिक्खगो, कोटापुर कोटेस ॥

अवर रहे हाजरी अखिल, नरउर आदि नरेस ॥ २३ ॥

इतिश्री वराभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दी-
पतिवृधसिंहचरिते जयसिंहकाटागमनपूर्वकोजयनीगमन १ मगदु-
पुरमरदहमिश्रितकपटिजयसिंहरवानीकलुगटनमेकत्रिंशो मयू-
ख ॥३१॥

आदित एकोनसप्तत्युत्तद्विशततम ॥ २६९ ॥

(षट्पात्)

इत बुंदिय अवनिस चाहि बुद्ध नृप चलिय ॥

कानीखोह मुकाम छोरि बुदिय दिस छेलिय ॥

रस वसु सत्रह१७८६मैरत पाय अगहन सित पचमि ॥

किय स्वदेसपर कुच भुल्लि ज्यो मृगस्थल जल भ्रमि ॥

चंद्रसू निवाई मग चलि भगवतगढ भोरा रहिय ॥

इत सुनि उदत सालमै यह सु बुदियतजिसम्बुह बहिया ॥

उग्र वैधिक कउवाह समय सरधि रु सर साहस ॥

हठ गुन साह निदेस चाप चतुर्ग रगरसे ॥

* भूमि की कामनावाला ॥ २२ ॥ † जिसपीछे ॥ २३ ॥

श्रीवराभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सातवें राशि में वूरी के भूपति
गुप्तसिंह के चरित्र म राजा जयसिंह का कोटे छोकर बड़जीव जाना ? मगदु-
र में मारुठा में मिलकर छली राजा जयसिंह का अपनी सना को लुप्ताने
का इकतीसवा १७ मयूख समाप्त हुआ और आदि में दोसौ उनदत्तर २९
मयूख हुए ॥

+ बुन्दी का राजा § गुप्तसिंह १ उभक्ता [षट्पा] २ सम्पत् ३ मृगस्थल के जल
स भ्रम कर मृगस्थल म जाये जैसे ४ चाटसू ५ समाचार ६ सालमसिंह ॥१॥
जयसिंह तो उग्र ७ शिकारी और समय है सो ८ भाया है जिसमें दह है सो
ही पाण है यादशाह का आज्ञा ही दह प्रस्थान है १० युख कर मवाली मेरा है

वन हड्डोतिय बिकट खान सालम दलेल सह ॥
 लिखित बागुरा लगि गाढ मत कँउल फंद ग्रह ॥
 बुद्धपन अलस लहि सोह मन बुद्ध सु मंत्र बिबेक^३ विन ॥
 उनमत्त एँन संभर अधिप इच्छत जल बुंदिय डरिन^४ ॥ २ ॥

[दोहा]

सुनि इत आवत संभरहिँ, बनि सालम बुंदीस ॥
 लै दल सम्मुह उल्लटयो, स्वामि हराम सँरीस ॥ ३ ॥
 लहि सीमा बुंदिय मुलक, अड्डो ठड्डो आय ॥
 यह सुनि सठ बुंदिय अधिप, बाम मुखो बिहसाय ॥ ४ ॥
 जैतसिंह जाजव जंयी, दिल्लिय रन अंसु दिन्न ॥
 तास देवसिंहह तनय, भकति स्वामि रस भिन्न^५ ॥
 नगर पलोधी धाम निज, वैरिसल्ल भव बंस ॥
 कुसथल पंचोलास पुनि, ये दुव पुर उँत्तंस ॥ ६ ॥
 साह समप्पे संभरहि, चोवनगढ गहि बाँहँ ॥
 कुसथल पंचोलास ए, उभयइजाफाँ माँहिँ ॥ ७ ॥
 तब संभर दिय जैत हित, कुसथल पंचोलास ॥
 सय्यव सँन दिल्लिय समर, बिरच्यो जिहिँ दिवँ बास ॥ ८ ॥
 तास देवसिंहह तनय, स्वामिधर्म रत सूर ॥
 ताके पुर कुसथल तबहि, आयउ बुद्ध जरूर ॥ ९ ॥

सो ही धनुष है हाडोती देश रूपी बिकट वन और सालमसिंहसहित दलेल-
 सिंह ही खान [कुत्ते] हैं बुधसिंह ने जयसिंह को लिखावट कर दी वह लि-
 खावट ही १ बागर [फंदा] है जिसमें २ बाममार्ग की दृढ़ता ही फंदों की गाँठें
 हैं मन पर सूर्खपन और आलस्य रूपी सोह लेकर ३ बिना सलाह और बि-
 ना विचार का वह चहुवाण राजा बुधसिंह रूपी उन्मत्त ४ मृग बुंदी रू-
 पी ५ ऊपर भूमि [मृगतृष्णा] का जल चाहता है ॥ २ ॥ ६ बुधसिंह को ७
 क्रोध सहित ॥ २ ॥ ८ बुधसिंह ॥ ४ ॥ जाजव के युद्ध में ९ जय पानेवाला १०
 मारागया ११ भीगा हुआ ॥ ११ ॥ १२ नगरों के सुकुट ॥ ६ ॥ १३ सिवाय (तर-
 की) में दिये ॥ ७ ॥ १४ से १५ स्वर्ग को गया ॥ ८ ॥ ९ ॥

बिष्णुसिंह तनया बहुरि, अनुपम तनया आय ॥
 ये सगहि रानी उभय२, पति प्रमत्त गति पाय ॥ १० ॥
 पुरवाहिग पृतना परिग, घन जिम डेगन घेर ॥
 देवसिंह महिमानी दिय, बुद्धहि गोठि द्विरे ॥ ११ ॥
 परि डेरन लग पांमरे, धाम भवीये पधराय ॥
 निज सगवन्ध निवेदयो, देवसिंह हित दाय ॥ १२ ॥
 यह सुनि पुग बलवन अघिप, अभयसिंह अनि धीर ॥
 इनज दल सजि आयउ निडग, बुदियपति डिग बीर ॥ १३ ॥
 अभयदत्र य भट उभय२, देसिल्ल भय बस ॥
 सम्मलि हुय बुडीमकै, नेइ अगपि सजि दस ॥ १४ ॥
 यह उदत सुनि डडगढ, सुभट डडसलोत ॥
 देवसिंह छि वर सुवन, आयउ दल उद्योत ॥ १५ ॥
 कछु किसोर वय बसि कछुक, करम भय लहि कूर ॥
 देव पृथक डेग दये, दल सभरं तजि दूर ॥ १६ ॥
 इन सठ सालम पिठि परि, कृतघन चिति कुकाग ॥
 पत्तन पचोलास डिग, किन्ने लरन मुकाम ॥ १७ ॥
 कुल बधन मुहुकैम्मके, मिलि सत्र सालम माहि ॥
 पट्टालीपुग पति प्रथिते, मिल्यो जवान सु नहि ॥ १८ ॥
 तोप डक १ जवूर सत १००, हैसत १०० सजि बदूक ॥
 मिल्यो आनि बुधसिंहमै, अनुचर धरम अचूक ॥ १९ ॥
 तपोदी डक १ नगराज तैह, मुहुकम बस वतसै ॥
 सालममै न मिल्यो सुभट, पट्ट विरुपात प्रसम ॥ २० ॥

१बिष्णुसिंह की पुत्रीरघुवम क रावत अनोपसिंह की पुत्री ॥ १० ॥ २पडाव से
 (सेना का डेरा) दृष्टा ॥ ११ ॥ ४ पावडे (पगमडे) ५ अपन स्थान पर (स्थान) की
 रीति स ॥ १२ ॥ ११ ॥ ७ कचच समकर ॥ १४ ॥ ८ वृत्तान्त ॥ १५ ॥ ९ देव-
 सिंह ने १० बुधसिंह की सेना को बुर छोड़कर ॥ १६ ॥ ११पुर ॥ १७ ॥ ११ मो-
 कमसिंह के कुल के राजा ११ विदित ॥ १८ ॥ १९ ॥ १० मुकुट ॥ २० ॥

[पट्टपात]

सुनि ईत रन जयसिंह भीर सालम दल भेजिय ॥
 तीन सहस्र ३००० तुक्खार पंचउमराव मुख्य प्रिय ॥
 ईसरदापुर ईस नाम कोजुव १ निसंक नर ॥
 सारसोपपुर स्वामि निदित फतमल्ल २ बीरवर ॥
 साँवल ३ मुहाड़पुर पति सबल प्रबल अचल ४ नानेड़ि पति ॥
 बहादुरसिंह ५ कूगम बहुरि बुढानीपुर पति विमति ॥ २१ ॥

[दांहा]

ब्रजभुव बागी सुभट बल्लि, नरुव वंस कछवाह ॥
 नामधेय सिरदार १ निज, सां द्विय संग सिपाह ॥ २२ ॥
 पृथ्वीसिंह २ रु कनक ३ पुनि, उभय नरुव अवतंस ॥
 घासीराम ४ रसोरपति, बल्लि भट कूगम वंस ॥ २३ ॥
 सेगमिह खिखिय सबल, पुनि जह्व परतापर ॥
 हरि १ तौवर कल्ला हुकम १, मारन करन १ मिलाप ॥ २४ ॥
 उदयसिंह १ पुनि रूप २ अरु, जोध ३ सुरत ४ भट जत्थ ॥
 सालम हित कूगम सजे, सोलंखी चउ ४ सत्थ ॥ २५ ॥
 आमैर पं पठये डते, लगि बुंदिय भुव लैन ॥
 विप्रैह बहुरि प्रवास बसि, सब रक्खिय ढिग सैन ॥ २६ ॥
 नरउरपाति गजसिंह सुवै, जयसिंहहिं तहँ जंपि ॥
 समर प्रपंची मम सचिव, चाहत जय अरि चंपि ॥ २७ ॥
 भेजहु तिहिं इनसंग भल, कूगम तब मुसिकाय ॥
 मंगहि द्विप नरउर सचिव, नाम सु खंडेगाय ॥ २८ ॥

१ इधर युद्ध सुनकर २ घाड़े (घोड़ों के सवार) ३ विशेष बुद्धिवाला ॥ २१ ॥ ४ ब्रज की भूमि में रहनेवाले उमराव ५ फिर ६ नरु के वंश का [नरुका] कछवाहा ७ नाम ॥ २२ ॥ नरुकों के=सुकुट ८ पुनि ॥ २३ ॥ १० बुधसिंह को मारने और ११ सालमसिंह से मिलाप करने का ॥ २४ ॥ २५ ॥ १२ आमैर के पति ने १३ मरहटों से युद्ध और १४ विदेश में घसने के कारण ॥ २६ ॥ १५ सुत १६ दवाकर

(पट्टपात)

सुभट भानसिंहोत कलह इम पचपमुख्य किय ॥
अवरहु सुभट अनक सेन सम्मलि हेत सज्जिय ॥
करि यह दल दसकुच मुलक मालव तजि महुव ॥
जुरि आयउ जघाल भीर सालम कुसथल भुव ॥
करि दल मिलान सालम कटक इहून पति ढिग मिलन हित ॥
इन पचपभटन आय रु बाहिय बुद्ध श्रवन धारहु विदित २९

(दोहा)

अभयसिंह बलवन यग्रिप, पट्टनि भजिग एह ॥
भीम हितु अति मन्नि भय, दुल्लभ मन्नत देह ॥ ३० ॥
जाके बल जयसिंहतै, अवन रचहु न एह ॥
दिनप्रति रूपय दोयसत २००, रहि हृदावन खेहु ॥ ३१ ॥
नहिं दुल्लयो बुद्धिय नृपति, क्रम सब सहित कुवैन ॥
राजाउत पचन सरिस, निठुर दिखाये नैन ॥ ३२ ॥

(पट्टपात)

कूरमपति भट कुबच प्रकट सुनि सुनि बलवन पाति ॥
अभयसिंह अति बीर भयउ धकि प्रलय रुद्र भति ॥
करखि मुच्छ डमि अधग निरखि पचनपउफनायो ॥
पन्नग पय चापो कि मत्त मृगराज खिजायो ॥
बुल्लयो विदित भुज ठोकि बल गल्ल बजत गोदर डरै ॥
बुधसिंह भान कूरम बलौहिं केहरि हम गैहरिकरै ॥ ३३ ॥

(दोहा)

॥ २७ ॥ २८ ॥ १ य भानसिंहोत राजाघनों के नाम से प्रसिद्ध है २ श्रीधर ३ श्रीधर बलनेयाले ४ सालमसिंह की सेना म ५ हे युधसिंह सुना ॥ २९ ॥ ५ पाटन के युद्ध में भगा था ७ कोटा के राजा भीमसिंह से ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ८ भीम (भीम) सहित ॥ ३२ ॥ ९ अंतिम १० सर्प को पैर में दयाया ११ युधसिंह के सौगन है कि १२ छपाहे की सेना को हम सिंह होकर १३ गांधार (अह) के स

भ्रातन अगँ हम भजत, गृह रन अनुचित गाव ॥
 अवरनतँ रन आहुरत, पञ्चय दडुन पाप ॥ ३४ ॥
 इम हकागि बलवन अधिप, सुरि उड्डिग गहि मुच्छ ॥
 फँटाटोप मंडिग गनहुँ, पन्नंग दब्बत पुच्छ ॥ ३५ ॥
 तब कूरम सुभटन तँसकि, सजिय जाय निज भैन ॥
 जुत सालम सब इक्क जुगि, लगि दल बांधिय लैन ॥ ३६ ॥
 देवसिंह छित्तर सुवन, इंदगढप मुनि एह ॥
 भीरु मान्ने जयसिंह भय, गयां सपरिँकर गेह ॥ ३७ ॥
 हदयनरायन हरिय कुल, ए वंधुव उमराव ॥
 करन भीर बुंदीसकी, हुत आयै रन दाव ॥ ३८ ॥
 हड्ड मेव सामंत हर, माधव हर भट मोर ॥
 कुल बल्लन अरु नाथ कुल, ये चालुक नृप ओर ॥ ३९ ॥

शुद्धप्राकृतभाषा ॥

(आर्या)

बिडहअशोहविपगी अणुअं बुंदीमपट्टवं पिक्ख ॥
 सालमउत्तपआवो जिठो मिलिओ बुहेण भूवइणा ॥ ४० ॥
 प्रायो देशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

मान करेंगे ॥ ३३ ॥ १ घर का युद्ध अनुचित कहकर २ हाडाओं के पैर पर्वत
 के समान हैं ॥ ३४ ॥ ४ मानों सर्प ने पूछ दवाते ही ३ फण का आटोप (छत्र)
 रचा है ॥ ३५ ॥ ५ क्रोध करके ६ सेना की पंक्ति (परेट) बांधी ॥ ३६ ॥ ७ पर-
 गह सहित घर गया ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ८ बालगोत शाखा के १ सोलखी १० बुधसि-
 ंह की ओर ॥ ३९ ॥

संस्कृत अनुवाद

विविधानेहोचिवेकी अनुजं बुन्दीशपट्टपम्प्रेक्ष्य ॥ सालमपुत्रप्रतापः ज्येष्ठो
 मिलितो बुवेन भूपतिना ॥ ४० ॥

अनेक प्रकार के सज्यों को जाननेवाला छोटे भाई को बुन्दीश के पाट का
 पति देखकर सालमसिंह का बड़ा पुत्र प्रतापसिंह राजा बुधसिंह से मिला ॥ ४० ॥

(दोहा)

राजसिंह अन्वये रतन, बंधव निज वग्धीर ॥
 दोलतसिंहहु सज्जि दल, भट आयउ नृप भीर ॥ ४१ ॥
 हाजरि भट प्रथमहि हुते, महासिंह कुल मोर ॥
 असित पखके इहु जिम, लग्यो घटन दल ओर ॥ ४२ ॥
 दस हजार छैनना बदलि, सब हुव सालम संग ॥
 दस हजार १०००० नृप निकट दल, रहिय रचावन रंग ॥ ४३ ॥
 उभय पख अरि मित्र तजि, समय जोर दरसाव ॥
 रहिय इद्रगढ आदि बहु, उदासीन उमराव ॥ ४४ ॥
 सालम ढिग तेरह सहस्र १३०००, नृप ढिग दस निरधार ॥
 इत कुप्यो बलवन अधिप, भुज धरि बुदिय भार ॥ ४५ ॥
 बुद्ध नृपति वरजत रह्यो, दोउन संपथ दिवाय ॥
 हहे भज्जन नाँ सुनै, लग्यो अदर लाय ॥ ४६ ॥
 अभयसिंह अरु देव इत, अरु कछु सभर सैन ॥
 जिहिं बिच जे भट सज्ज किय, वरनत तिन्ह कविबैन ॥ ४७ ॥
 महाराम मातुल कुलज, मुखो जु सालम मेल ॥
 वाको सुत सग्राम इत, सोहि सज्यो गहि सेल ॥ ४८ ॥
 प्रेमसिंह सज्ज्यो प्रथिते, नाथाउत रन नूर ॥
 बखतसिंह ३ जगभानु ४ बैलि, सजे हहु अति सूर ॥ ४९ ॥
 साँवलदास ५ सज्जो सजि, गोरे वस उजियार ॥
 जोरावर ६ कलनाह जुरि, परसुराम ७ परिहार ॥ ५० ॥
 वरजत नृप सुदीसके, सहठ दिवावत सोई ॥

१ बण ॥ ४१ ॥ २ कृष्ण पक्ष क अग्रभा के समान ॥ ४२ ॥ ३ सेना ४ पुषसिंह के पास ५ युद्ध करने को ॥ ४३ ॥ ६ दोनों पक्षवालों से शत्रुता और मित्रता छोड़कर ७ तटस्थ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ८ सौगन दिखाकर ॥ ४६ ॥ ९ बहुधाय सेना ॥ ४७ ॥ १० पुषसिंह के मामा के कुल में वरपक्ष ॥ ४८ ॥ ११ प्रसिद्ध १२ पुनि ॥ ४९ ॥ १३ गौड़ बण का प्रकाशक ॥ ५० ॥ ५१ ॥

अभयदेव संगहि इते, भटन तनंकिय भोंहैं ॥ ५१ ॥
 देवसिंह अभमल्ल दुव, दुल्लह ललित उदार ॥
 अच्छरि दुल्लहनि अहरिय, जन्म इते जुद्धार ॥ ५२ ॥
 अवर भटन पिकरुयो समय, सालम अग्रुत अनीक ॥
 छोरहु नृपहि न इक्क छिन, को जानैं वं कितीक ॥ ५३ ॥
 जो भूपहु सिर घात जड़, कूरम घल्लहिं कूर ॥
 तो सब स्वामि समीपही, सत्रुन गंजहिं सूर ॥ ५४ ॥
 स्वामिदये न लरन सपथ, बलि नृप तजन न बैस ॥
 नय बिचारि इम इन निकट, सकल रहे सुभटेस ॥ ५५ ॥
 बीर जिते पहिलैं बढिय, तिन नैन मन्निय भोंहैं ॥
 अभयसिंह संगहि उठिय, भयद फुगवत भोंहैं ॥ ५६ ॥
 कहि कुबैन उठि कूरमन, निजदल पिल्लिय जाय ॥
 यह सही न बलवन अधिप, लगिय सोरविच लाय ॥ ५७ ॥
 अभयसिंह अरु देव इत, कुप्पि चलिय जिम काल ॥
 सिर धैरसत अंजलोकसों, पय परसत पायालैं ॥ ५८ ॥
 सालम अरु कूरम सुभट, जुरि इत प्रबल जरूर ॥
 बुंदिय दल सिर बगलैं, सकल चढे बढि सूर ॥ ५९ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीप-
 तिबुधसिंहचरित्रे ज्ञातदक्षिणगतजयसिंहत्यक्तकाशीखोहग्रामबुध-
 सिंहबुन्दीदिग्गमन १ आत्तसैन्यसालसिंहबुधसिंहसंमुखसरणा २

॥५२॥ १ जानैती २ अब ॥ १३ ॥ ३ मारंगे ॥ ५४ ॥ ४ सौगन २ पुनि ३ उत्तम नहीं है ॥ ५५ ॥ ७ कहें
 ८ सौगन नहीं माने ९ भय देनेवाले ॥ ५६ ॥ १० अपनी सेना को भेजी ॥ ५७ ॥ महनक
 १२ ब्रह्मलोक से १३ घिसता है और पैर १३ पाताल का स्पर्श करते हैं ॥ ५८ ॥ ५९ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सातवें राशि में बुन्दी के भूपति
 बुधसिंह के चरित्र में राजा जयसिंह को दक्षिण में गया हुआ जान कर राव-
 राजा बुधसिंह का काशीखोह नामक ग्राम को छोड़ कर बुन्दी की ओर आ-
 ना १ सालमसिंह का बुन्दी से सेना लेकर बुधसिंह के सम्मुख जाना २

बुधसिंह और सालमसिंहके युद्धका पारम] सप्तमाशि द्वात्रिंशमयुग ३११७)

सालमसिंहसहाय जयसिंहसैन्यसहित जयपुरसामन्तपञ्चककुसथ-
त्तारूपनगरनिकटमालमसिंहमामिश्रणा ३ प्रत्यहद्विगतमुदाग्रहणापू-
र्वकबुधसिंहसैन्यसहायनवासार्थजयपुरसामन्तभगान ४ जयसिंहभी
तित्पक्तबुधसिंहकतिपयबुन्दोसैन्यसालमसिंहमिलनकतिपयसाम-
न्तोदासीनभावतटस्थतासादन ५ सालमसिंहसैन्यभीतबुधसिंहस्य
युद्धाकरणार्थम्बसामन्तशपथदापन ६ देवसिंहाभयसिंहादिकतिप-
यसामन्तगपथभगपूर्वकममरसज्जभवनवर्णनद्वात्रिंशोमयुख ॥३२॥

आदित सप्तत्युत्तगद्विगततम ॥ २७० ॥

[दोहा]

सक हय वसु सत्रह१७८७मय, मार्धव दस३०मिलाप ॥

घटिप रुद१२गविके चढत, उलटि समुदन आप ॥ १ ॥

[दुर्मिला]

दुय सेन उदगगन खगग समगगन अगग तुरगगन वगग जई ॥

माचि रग उतगन दग मतगन सजिज रनगन जग जई ॥

सालमसिंह की सहायता पर राजा जयसिंह की बेजी हुई सेना सहित जयपुर
रक पाच उमरावों का कुसथल नामक नगर के समीप सालमसिंह के सा-
मिन्न होना ३ जयपुर के उमरावा का प्रतिदिन दोसौ रुपये लेकर बुदावनवा-
स करने की बुधसिंह से कहलाना ४ जयसिंह के भय से बुन्दी की बहूषा
सेना का बुधसिंह का छोड़ कर सालमसिंह में मिलना और किन्त ही उम-
रावों का उदासीन भाव से तटस्थ रहना ५ सालमसिंह की सेना से अरेहुए
बुधसिंह का अपन उमरावों को नहीं लड़ने के सौगन दिलाना ६ जयसिंह
और अभयसिंह आदि थाड़े से उमरावों का सौगन नहीं मान कर युद्ध के
अर्थ तैयार होने का बलीमबा मयूख समाप्त हुआ और आदि से दसौ मि-
लर २७० मयूख हुए ॥

१ वैशाख मास की २ अमावास्या के मिलने पर ग्यारह घड़ी दिन बड़े पर समु-
द्रों का ३ पानी उछलता ॥ १ ॥ ४ उदग्र [उछलने हैं अग्र भाग जिनके पसे] ख-
ल्ल लेकर दोनों सेना के ५ मय जाको न घोड़ों की याग आगे ली अर्थात् रोये
छठाये उस युद्ध में युद्ध जीतनेवाले सजेहुए ऊंचे हाथियों का ६ युद्ध हुआ

लागि कंप लजाकन भीरु भजाकन वाक कजाकन हाक बढी॥
 जिम मेह ससंवर यों लागि अंबर चंड अडंबर खेदचढी॥२॥
 फहरकि दिसान दिसान बंड बहरैकि निसान उडै विथरै ॥
 रसना अहिनायककी निकसै कि परा भल हांगियकी प्रसरै ॥
 गज घंट ठनंकिय मेरि भनंकिय रंग रनंकिय कोच करी ॥
 पखरान अनंकिय वान सनंकिय चाप तनंकिय ताप परी ॥ ३ ॥
 धमचक्र रचकन लागि लचकन कोल मचकन ताल कढ्यो ॥
 पखरालन भार खुभी खुरतालन ठपाल कपालन साल बढ्यो ॥
 डगमगि सिलोअय शृंग दुले भगमगि कृपानन अंगि करी ॥
 बजिखल तबलन हल उभलन भुमि हमललन घुमि भरी ॥४॥
 मचि धोरन दोर दुश्ओर समीरन जोर उमीरन घोर जम्प्यो ॥
 अभमलल उछाहन हड हठी कछवाहन गाहन चाह क्रम्यो ॥
 सुवै जैत इतै भट देव सही करि स्वामि महीहित संग मज्यो ॥

जिस से १ लजित होनेवाले और भागनेवाले कायरों को कंप [धुजनी] लग
 कर २ युद्ध करनेवाले वीरों के वचनों की हाक बढी और ३ जल सहित मेघ
 के सजान भयंकर आडंबर से आकाश में खेद [रंजी] चढी ॥ २ ॥ ४ चढी
 ध्वजायें और छोटी ध्वजायें फरक कर दिशा दिशा में उड़ कर कैलास सोमा-
 नों ५ शेषनाग की जिह्वा निकलती है अथवा होला की झाल फैलती है
 उस युद्ध में हाथियों की घंटा ६ नोषत और ७ कवचों की कड़ियें बजी ८
 घोड़ों की पाखरों का झणकार बाणों का झणकार और धनुषों के खिचने से
 भय हुआ ॥ ३ ॥ उस युद्ध में टकर लेने से भूमि में लवक लग कर भूमि को
 धारण करनेवाले ९ वाराह के झुकने का तोल कड़ा १० पाखरों वाले घोड़ों
 के आर से खुभी खुरतालों से ११ शेषनाग के कपाल में साल बड़ा १२ पर्वत
 हिल कर उनके खिलर डुलने लगे और १३ तरवारों से चमकी हुई १४ अग्नि
 गिरी, उस हल्ले के बढाव में खाल के ऊपर १५ तबलें [कुठार विशेष] बज
 कर भूमि हमललों से घूमने लगी ॥ ४ ॥ घोड़ों की दौड़ से दोनों ओर का १६
 पवन चल कर अमीरों [मरदारों] का भयंकर बल जमा उस समय हठवाला
 हाडा अभयसिंह कछवाहों को मारने की चाह से १७ चला इधर जैतसिंह का
 १८ पुत्र देवसिंह निश्चय ही अपने १९ स्वामी [शुभसिंह] की भूमि के अर्थ स-

दुहुओर कुलाहक तोप दगी लागि भई बलाहक नैह लज्पो ॥५॥
 उततैं कछवाहन उग्र उछाहन बेग सु बौहन वग्ग लई ॥
 वनि बुदिय वालम जग सु जालम सगहि सालम दोर दई ॥
 परि रिठि कृपानन चड चुहानन गिद्धि उहानन गूदु गई ॥
 गर्न धीर गुमानन पीर प्रमानन वीर कमानन तीरवई ॥ ६ ॥
 बढि बुत्थिन बुत्थि छई वसुधां लागि लुत्थिन लुत्थि परै प्रजैरै ॥
 घटै सेला घमाकन रगै गमाकन दह सु हाकन होस हरै ॥
 लाखि खग उदगगैन मग लगी जुरि अछरि जग प्रैजापतिज्यौ ॥
 गलवाह करै करि वीर बरै गमनै गन गेवरकी गतिज्यौ ॥ ७ ॥
 छननकि उहानन वान छये ठननकि गयदन घट घुरे ॥
 फननकि दुवाहन टोप फटे रननकि सिपाहन कोचै रुरे ॥
 हुलि भैरव हैरवतैं डहकी डगि डाकिनि साकिनि चौकिचली ॥

जिनत दृष्टा उस समय दाग और १ कोलाफ करनेवाली अथवा खोटा ला-
 भ करन (भारने) वाली अथवा क (पृथ्वी) का लाभ करनेवाली तोपें खलीं जि-
 नसे २ मादया के समय की उगजना लाजित लई ॥ ५ ॥ उधर से घडे बत्साह
 घाले पछयाहों नेहवाहों की शीघ्र पागे उठाई और उनके साथ ही युद्ध में
 लुप्त करनेवाला सालमसिंह १ बुद्धी का पति धन कर ७ दौड़ा भयकर सु-
 हाया के बद्धों के ८ निरंतर प्रहारों से उड़ते हुए प्रीधाने गूद ग्रहण किया
 धीर लोगों के ६ समूह के घमट की पीछा का प्रमाण करने के लिये वीरों की
 कयाला ने तीर चढ़ते हैं ॥ ६ ॥ जिनसे बूथ [नाम के टुकड़े] बड कर १० भूमि
 दक गई और ११ लोथ (मृतक शरीर) पर लाथ गिर कर जलने लगी १३ यु-
 द्ध में फीड़ा करनेवाले धीरों के १२ शरीरा पर भाला के घमाके होकर हाथा
 चपिया की हाक धनकी चाहना मिटाते हैं १४ उदय तरवारों को देख कर
 अप्सरायें १० जिसप्रकार वृक्ष पजापति के यज्ञ में गई तिसप्रकार इस युद्ध
 के मार्ग में लगीं, वे गलवाहों करके वीरा को घरती हैं और उनका समूह
 १५ राधियों की चाल के समान चलता है ॥ ७ ॥ इनके शब्द करके उड़ने वाले
 पाण लागये और इनके शब्द करके १७ हाथिया के घटे बजे फनक शब्द करके
 १८ वीरों के टोप फटे और रणक शब्द करके १९ सिपाहों के कवच बजे बैरव
 के डेरु से २० चमकी हुई डाकनिये और डाकनिये (देवी की दासी विशेष)
 डर कर इपर उपर कुल कर प्योक कर खलीं

नचि नारद *नञ्चबिसारद वहाँ बिबि बारद भाँति मिले खुरली ॥८॥
 कटि खगग कलापं रु दंत कट्टे कटि कुंभं मउत्तिन मेह फुरें ॥
 तरिताँ तनु तेग तहाँ तरकै घन गज्ज मतंगज गज्ज घुरें ॥
 बैक पंतिय दंतिपै दंत बढे चहुँओर अचानक अँवभ चढे ॥
 कटिकै उडि चातक घंट कढे प्रति पक्खर भेक अनेक पढे ॥९॥
 यह आनि सुमाँकरमैं बरखा बढि माधवमास अँमा बिथुरयो ॥
 लखि नायक सूरन हूरन हूरन अंगनँ अंग अनंगँ फुरयो ॥
 इत सूरन चंदन अँस चढे रस कै इत हूरन राग रचे ॥
 उमहे इत सिंधुनकी ध्वनितैं सँधुँहै उत सिंजितैं सह मचे ॥१०॥
 इत डाकिनि दूति कैजाकिनि ओ इत साकिनि नाँकिनि या
 ससखी ॥

सब हूर सुहागिनि इक्क अभागिनि बुद्ध विभागिनि सो विलखी ॥

*नाचने में चतुर नारद नाचा और दो मेघों के समान शस्त्र विद्या जाननेवाले
 वीर मिले। हाथियों के कलावे [गरदन] कट कर दंत निकलते हैं और रक्तमस्थल
 कट कर मोतियों का मेह होता है। बीजली के विस्तार वाले खड्ग चलते हैं और
 रमेघ की गर्जना के समान हाथी गर्जना करते हैं। बुगलों की पंक्ति के समान
 १ हाथियों के दंत कट कर अचानक चारों ओर ७ आकाश में चढते हैं और
 हाथियों के घंटे कट कर चातक [पपीहा] के समान निकलते हैं और पाखरों
 रूपी अनेक मँडक बोलते हैं ॥ ९ ॥ इसप्रकार ८ पुष्पों की खान ऐसी वसंत
 ऋतु में ९ वैशाख मास की १० अमावास्या के दिन वर्षा बड़ी, जहाँ ११ वी-
 रपतियों को देख कर १२ अप्सरा अप्सरा प्रति १३ प्रत्येक अंग में १४ कामदे-
 व बड़ा इधर वीरों के चंदन रूपी १५ रुधिर चढा और उधर प्रीति करके अ-
 प्सराओं ने गाना रचा इधर वीर लोग १६ सिंधवीरागनी [बडाराग] की ध्व-
 नि पर उत्साहित हुए और उधर १७ सम्मुख [अप्सराओं में] १८ भूषणों
 का शब्द हुआ ॥ १० ॥ १६ युद्ध कराने वाली इधर डाकिनी और इधर सा-
 किनी दोनों सखियों सहित २० अप्सराओं ने यात्रा की। यहाँ 'य' शब्द या-
 त्रा वाचक है यथा 'या यात्रायाम्' इति शब्दार्थचिंतामणौ ॥ वे सब हूरें सुहा-
 गिनी हुईं उनमें जो बुधसिंह के २१ बंट में आई वही एक अप्सरा दुहागिन
 रही सो २२ रोई (बुधसिंह डर कर युद्ध में नहीं आया इसकारण उसके बंट
 में आई हुई अप्सरा ही निर्भाग्य रही) उस अभागिनी ने

हुत हार सिंगार बिगारि दये धुपि अजन रोदन बारि बहयो ॥
 कर ककन फोरि मरोगि कैलापहिं छोरि अलापहिं ताप सहयो ॥
 यह आइय डाकिनि की सिखई धवहीन भई अब छोई छई ॥
 अति आरति अच्छरि की लखि कै हमि डाकिनि डिंडिम डक्क दई ॥
 सहनाइय सुडिन की करि कै गन बाजन परगावन में गेह कै ॥
 कटि मुंड रु रुड किरै ॥ इतकों चंडसहि ६१ न झुड न चैं चहकै ॥ १२ ॥
 पखगेल तुरगन पर किते नखगेल कुंगन फाल मचै ॥
 भट वार कटारन पार करै अमि मार अंगारन मार मचै ॥
 फटकारि मतगंज सुडि फिरै कटकारि चुटानन झुड कैमै ॥
 हलकारि चुरेलिनि होम हरे ललकारि भयकर भूत भ्रमै ॥ १३ ॥
 खंग धारन धार खिरै खटवै पलचारन झुड भटै भूपटै ॥
 खुरतारन भार खुदै पहुमा असवारन वार दटै दपटै ॥

१ शीघ्र हार शृंगार बिगाह दिने और ३ रान का पानी (अश्रु पहन से उसका २ क-
 ल्लल धुप गया, हाथों के कण्ठों का फौंड कर ४ कटिमेखला (कण्ठगती) का मरो
 ड (ताड) कर और ५ गाना छाह कर हुआ महा ॥ ११ ॥ यह अप्सरा ६
 डाकिनी के सिखाने से बुधसिंह को परने को यहां आई थी सो ७ पनि से
 हीन हाकर ८ अत्यन्त क्रोध में हुई उस अप्सरा की अत्यन्त पीडा दख कर
 डाकिनी हस कर अपनी डिमडिमी [वाच विशेष] बजाई और उधर हाथियों
 की फटी हुई १० सुडा की सहनाइयें बना कर वाहन चैरयगान में ११ प्रसन्नता
 की पोली बोलते हैं, रुड और झुड फट कर १२ गिरते हैं और उधर १३ चौंसठ
 योगिनिया का झुड नच कर बोलते हैं ॥ १२ ॥ कितने ही १४ वाक्खगेवाल घोड़ों
 का समूह १५ नवरा करनेवाले १६ हिरण्यों की छलांगें मरते हैं और जाग वार
 से कटार पार करते हैं और १७ तरवारों की ज्वाला से अगा १८ की मार मच
 ती है १९ हाथी सूड का फटकार कर फिरते हैं और १६ सेना के शत्रु चुहाणों
 के समूह २० चलते हैं उन चुहाणों की हलकार [ललकार] सुईला की बाह को
 मिटाती है भयकर ललकार से भूत फिरते हैं ॥ १३ ॥ २१ तरवार की घाव
 पर तरवार की घाव लग कर खिराई और खटकती है और २२ मान खाने
 वाहों का समूह शीघ्रता से भूपटते हैं घोड़ों की खुरतालों के भार में भूमि
 खुदती है और असवार अपने वार से २३ दौड़ते और दयाते हैं कितने ही बी

उपकारन कार किते उमहे सिव धारन काज गहैं सिरकों ॥
 दल मारन मार मिले हुवघाँ मद बारन बार चले चिरकों ॥ १४ ॥
 घमसानन वान उडाननलै अरि प्रानन पीवत काल अही ॥
 बहुवाननके करकी उपमा पवमान न मानस वहाँ निबही ॥
 काव्वालन चंड उडी चिनगी भट जालन भीर भिरैं भुरसैं ॥
 बलि ज्वाला करालन लोक वरैं दिक्पाल कपालन साल बसैं ॥
 गजराजन डाल लहैं हरवैं रत भाजन घाय भरैं भभकैं ॥
 लागि लाजन सूर लरैं लटकैं छटकैं भुव काजन लोहैं छकैं ॥
 कटि कालिक पीहैं किरैं कलिमें फटि मस्तक खंड उडैं फबिकैं
 जिस सैलनशुग खिरैं विखरैं प्रतिमंल्ल पुरंदरके पबिकैं ॥ १६ ॥
 मथि मथैनि मथ गहैं गतिसौं गन गिद्धनि गोदैं गिलैं गंहकैं ॥
 मनु ग्वालनि मट्टैं दही मथिकैं नैवनीत निकारन बारनकैं ॥

र उपकार के १ काम पर २ उत्साह युवत होते हैं और शिव को धारण कराने को मस्तक उठाते हैं सेना को मारने की मार से ३ दोनों ओर से मिले और ४ मस्त हाथियों के मद का पानी बहुत समय तक चला ॥ १४ ॥
 ५ युद्ध में उडान लेकर वाण ६ काले सपों के समान शब्दों के प्राण पीते हैं वहाँ पर बहुवाणों के हाथों की उपमा ७ पवन और ८ मन से भी नहीं निभी ९ खड्गों से भयंकर अग्निकण उड़कर १० वीरों के समूह से भिड़कर ११ जलते हैं भयंकर ज्वाला बहकर लोक १२ जलते हैं और दिग्गजों के कपालों में साल बसते हैं ॥ १५ ॥ हाथियों के ऊपर से १३ बड़े झंडे गिरकर पड़ते हैं और भरे हुए घाव १४ रुधिर के पात्र होकर उफलते हैं भागने की लज्जा लगकर सूरवीर लड़कर लटकते हैं और १५ भूमि के अर्थ गिरकर १६ शस्त्रों से छकते हैं १७ कलेजा और १८ प्लीहा [तिल्ली] कटकर १९ युद्ध में २० गिरते हैं और जिसप्रकार २१ शत्रु २२ इन्द्र के २३ वज्र से पर्वतों के शिखर फिर फिरकर विखरें तिसप्रकार फटे हुए मस्तकों के टुकड़े उड़कर २४ शोभा देते हैं ॥ १६ ॥ २५ बिलोवणी रूपी २६ मस्तक को लेकर ग्रीधनियों का समूह उनको जथकर २७ भेजी [मस्तिष्क] खाकर २८ प्रसन्नता की बोली बोलती हैं लो मानों ग्वालनी दही के २९ मटके को मथकर ३० मक्खन निकालने में

चहि मार दुधारे चलो चमकै असवार तुखारे कटै उलटै ॥
फटि मकुन ऊरु फटै उछटै कटि बाहुलौ बाहुलौ बाहु कटै ॥१७॥

(दोहा)

इहि रन विच बलवन अधिप, अभयसिंह अति वीर ॥
फतमल्लहि खोजन फिरत, हुलसि हृष्ट हमगीर ॥ १८ ॥
जगहि पचपञ्चसिंहको, ये कूरम उमराव ॥
बुदीपति अगै बिदित, बुल्ले कुचयं बढाव ॥ १९ ॥
इनहुमै फतमल्ल पैहँ, सारसोप पति सूर ॥
कहि कातर अभमल्लको गद्गयो बहुत मगरूर ॥ २० ॥
इहि कारन अभमल्ल अब, तिहि हंगत गहि तेग ॥
दुरयो कहाँ कूरम देखित, बीग बतावहु वेग ॥ २१ ॥

(पट्टपात्)

जिम नागहि खगगैज मृगहि मृगगैज महावन ॥
जंभहि जिम जंभाहि मधुहि मानहुँ मधुसूदन ॥
पानी जिम पाकैहि तृनहि पावक जिम तक्कत ॥
सजय कपोतहि सेनै हनन हेगन जिम हक्कत ॥

विलस नहीं काती है माना बाइकर दो १ धारोवाले अमरुत छूए लवङ्ग च-
लते हैं जिनसे सवार औ २ घोड़े कटकर उलटते हैं वन खड्गों से ३ जघाघ्रा-
ण कटकर ४ जरायें कटकर उल्लसती हैं और ५ दस्तान [बाहुघ्राण] कटकर ६
बहुत बाहु कटते हैं ॥ १७ ॥ १८ ॥ ७ लोहे बचन ॥ १९ ॥ ८ कायर ॥ २० ॥ ९
ढाकर ॥ २१ ॥ जिस प्रकार १० सर्प को ११ गरुड और मृग को बलवान् १२
सिंह जमासुर का जैसे १३ इन्द्र और जैसे मधु दैत्य को १४ विष्णु भगवान्
१५ अग्नि को जैसे पानी और तृणा को जैसे अग्नि, कवूर को जैसे वेगवान्
१६ शिकरा (बाज पक्षी) मारने को हरेक १७ चले तेम आधवा

* इस छन्द में 'हनन हरेन जिम हक्कत' इस क्रिया पद के आये पीछे फिर उपमा दी है सो समा-
प्तपुनराद्य दोष है परन्तु क्रिया के आये पीछे एक ही उपमा फिर दी जाये वहाँ यह दोष होता है किन्तु
क्रिया आये पीछे फिर अनेक उपमा आजाये वहाँ यह [समाप्तपुनराद्य] दोष नहीं रहता सो ही यहाँ वा-
चना चाहिये ॥

आखुँहिँ बिडाल तिमिरहिँ अरुन नर रंकहिँ दारिद्रानिभ ॥
फतमल्ल रूप पौमिनि फिरत इम हेरिय अभमल्ल इभ २२

(दोहा)

समुख पिक्खि फतमल्लसों, इम अक्खिय अभमल्ल ॥
गीदर गाल बजायकैं, अब किन करत उभल्ल ॥ २३ ॥
इम हकारि बलवन अधिप, मंडत बानन मेह ॥
उफनावत आयो उमँडि, दँस न मावत देह ॥ २४ ॥

(पट्टपात)

पय दब्बत अहि पुच्छ मुच्छ अँचत मयंदं जिम ॥
सोर मनहुँ साबाँत अँगि लगगत प्रचंड इम ॥
हेलिँ मयूख हजार १००० जेठ दुपहर जनु जगिय ॥
प्रलय उग्र जिम प्रथित लाय अंखिन अति लगिय ॥
कानन प्रमान बानन करखि कूरम देह सु मेह किय ॥
मदमत्त लखहु हड्डे मरद गड्डे पद अंगद गतिय ॥ २५ ॥

[मुक्तादाम]

पुरयो अभमल्ल इतैं रुपि जुद्ध, अरयो फतमल्ल उतैं केलि क्रुद्ध ॥
उभै निज स्वामिनकी भुव आस, तकावत अक्कहिँ चक्क तमासा २६ ॥
उभै रन दच्छ बडे उमगाव, उभै उमँडे रमवीर उगाव ॥

१ चूहे को रबिल्ली २ अँबरे का सूर्य ४ रंक मनुष्य को दरिद्र हेरे तैमे फतहसिह रूपी
५ हथनी को अथवा पझिनी (कमलनी) को अभमसिह रूपी देहाधी ने हेरा ॥ २२ ॥
॥ २३ ॥ ७ कवच में ॥ २४ ॥ ८ सर्प ९ मिह १० रजक का बारूद [तोड़ादार
धंदू के कान में डालने के लिये बारूद को दुबारा करके तेज करते हैं उसको
'साबात' कहते हैं और मतान्तर से जामकी [तोड़ा] का भी साबात कहते
हैं जो डिंगलभाषा में प्रसिद्ध है; अथवा रजक और साबात दोनों ही बारूद
के नाम हैं जो अत्यंत प्रबलता दिखाने के अर्थ बीप्सा के अर्थ में एकार्थवाची
दो शब्दों का प्रयोग किया है] ११ अग्नि १२ सूर्य १३ प्रलय का शिव जैसे
प्रसिद्ध है १४ अंगद के समान चरण रोपे ॥ २५ ॥ १५ युद्ध में क्रुद्ध होकर १६
सेना का तमासा ॥ २६ ॥

उभै जय थप्पनहारि उथप्पि, उभै उफनार्य कुबेनन अप्पि ॥ २७॥
 उभै दक्ष दुल्लह सज्जित अग, उभै भैर औचत मुच्छ अमग ॥
 उभै अनुरूप रिक्तावत रत्न, उभै रत्न अगनके जय ग्वभ ॥ २८॥
 उभै सिव दारिद मिट्टनहार, उभै पलचारनक उपकार ॥
 उभै कमकावत खग उदगाँ, उभै चलि प्रेत हसावत अग ॥ २९॥
 उभै भवतै तजि मोह अल्लुह, उभै मन वृत्ति लगावत उँह ॥
 उभै तुम बाहहु बाहहु अक्खि, उभै करि सृजको निज सँक्खि ३०
 उभै कनकाचली पायन वधि, उभै दैम उद्धत महारि सधि ॥
 उभै तुलसी धरि मस्तक आय, उभै जल गग उमग अचाप ॥ ३१॥
 उभै वृक्षजानि जुगे इक धेनु, उभै करि राज कि इक्क करेनु ॥
 उभै इक भिदनि ज्यो वनईसै, जुगे इम क्रूरम हहु जपीस ॥ ३२ ॥
 मिले पहिलेँ दुव तीरन मार, कढे सर दोउनमेदि कगर ॥
 चटवृद्धि चड प्रतचन चाप, उहँ सलैभा जिम रोपै अमाप ॥ ३३ ॥
 जहाँ करि दानन यो रत्न जोर, मिले पुनि सेलन द्वैरभट मोर ॥
 सु ककटै भेदि कढ घँट सारि, किधो तरु तेजँन अग कुदारे ॥ ३४॥
 चली अभमल्ल वरच्छिष अच्छ, परयो छिदि कूरम बाँजि दुपच्छ ॥
 वहाँ हय ओर चढयो कछवाह, रूपो अभमल्लहु पँव्वयराह ॥ ३५॥

१ घटे ॥ २० ॥ २ मड ३ अपने महारा ४ रत्ना नामक अप्सरा को 'दिगल भा
 पा य सामान्य अप्सरा को यो रत्ना कहते हैं' ॥ २८ ॥ ५ शिष का मस्तक
 रूपी द्रिद मिट्टानेवाले १ मास खानवाला के ७ उदग्र (उद्वलने) हुए अग्रमा
 ग वाला ॥ २६ ॥ ८ समार से ६ निर्लोभी १० ऊपर ११ साक्षी ॥ ३० ॥ १२
 सुमेरु पर्यंत को १३ दह देने में १४ नीति के प्रथम सधि गुण का महारकरके
 १५ पीकर ॥ ३१ ॥ १६ वृषभ १७ गरुड पर १८ हथिनी पर १९ सिंह ॥ ३२ ॥ २०
 टीडिया के समान २१ पाण्ड ॥ ३३ ॥ २२ कथ को और २३ दारीर को कोढ़
 का २४ मानो पाँस के धूल का २५ अग्रभाग २६ भूमि को कोढ़ पर निक
 ला ॥ ३४ ॥ २७ कछवाहे का घोड़ा दोनों बाजू से छिद कर गिरा २८ परबत को
 भाति ॥ ३५ ॥

बराच्छिन जंग अपुव्व बिधाये, लई अब खापनैतें हिमलायें ॥
 किधौं धनतें कढि बिज्जु कराल, किधौं बिलतें किलें कुंडलिकाळ ३६
 किधौं नभतें ससि द्वैज कला कि, कढी जमके मुखतें दसना कि ॥
 हली कि हुंतासनतें कढि हेति, मयूख नमोमैनिनैतें अथं वति ॥ ३७ ॥
 कढी ध्वनि ठंवाकृतितें कि सकारें, कढे मत गोतमतें कि समास ॥
 कटाच्छ किधौं कुलटा दग कुंजें, पयोमैव कोमकतें अलि पुंजा ३८
 कलिंदकतें निकसी जमुना कि, प्रजापति तें परिपूरि प्रजा कि ॥
 गुनलैपतें कि चले महदादि, अहाँनटकी जटतें प्रेमथादि ॥ ३९ ॥
 हिमालयतें जिम गंग हिलोर, किटीश्वरके मुख दंतुलिकोर ॥
 अनंतक आननतें जिम जीह, सटांछुनि थंभदितें नैरसीह ॥ ४० ॥
 नबोढनके उरतें कि उरौज, उदैगिरितें कि दिवाकरौज ॥
 कि अंजनिके उरतें हनुमान, पगसरनदंनतें कि पुगन ॥ ४१ ॥
 सुराधिपके करतें जिम संभै, कढे धनु गौडिदतें कि कैलंब ॥
 सही कपिलाननतें जनु साप, लयाधेन गायनतें कि अलाप ॥ ४२ ॥

अपूर्व पुद्गलकरक २ स्थानों में से ३ ठही अग्नि ली (यह तरवार का विशेष-
 ण है) ४ मेघ से विद्युत् [विजुली] की क्रांति ५ निश्चय ३ काला सर्प [यह आं-
 धी छई तरवार की उपमा है] ॥ ३३ ॥ ७ दोज के चंद्रमा की कला [जहां जहां
 अकला 'कि' आवै वहां किधौं, किना मानों अर्थ जानना चाहिये. प्रत्येक स्था-
 न पर इसका अर्थ लिखने से बिस्तार होता है] ८ दाढ़ ९ अग्नि से १०
 ज्वाला [भाल] १२ अथवा ११ सूर्य से किशोर प्रकाश करै जैसे ॥ ३७ ॥ १३
 व्याकरण की १४ समीपता से शब्द कहे जैसे १५ नेत्रों के कौनों से १६ कम-
 ल की कली से १७ भ्रमरों का समूह ॥ ३८ ॥ १८ पर्वत विशेष १९ जमुना
 नदी २० ब्रह्मा से परिपूर्ण प्रजा निकले तैसे २१ सत, रज, तम, इन तीन
 गुणों से महदादि चौबीस तत्व निकले तैसे २२ शिव की जटा से २३ गण
 निकले जैसे ॥ ३९ ॥ २४ वाराह के मुख से २५ शेषनाग के मुख से २६ गरद-
 न के केश धुजा कर थांभे से २७ लसिंह निकले ऐसे ॥ ४० ॥ २८ कुच २९
 सूर्य का तेज ३० वेदव्यास से ॥ ४१ ॥ ३१ इन्द्र के हाथ से ३२ वज्र ३३ वाण ३४ क-
 पिलदेव के मुख से ३५ मानों आप निकला ३६ लय को जानने वाले कलावंत
 से ॥ ४२ ॥

अभयसिंह और कोजुरामका युद्ध सप्तमराशि अथालिखमयूख (११५७)

धपी जनु नीरदतैं जलंधार, महाबल भाधवतैं मनु मार ॥
 त्रिलोचनके कर्तैं कि तिसूल, मउत्तिय सुत्तिपतैं कि अमूला ४३।
 कढे इम दोउन रखापन खग, मिले प्रलयानल व्हे रन मग ॥
 उभै करि लाघर्व दाव दिखात, परस्पर देत प्रहार निपात ॥ ४४ ॥
 उभै फिरि मोहल टारत वार, महाबल मार दुधारन मार ॥
 दई धपि सभर दाहिन असं, परचो कटि कूरम रूपातैं प्रससा ४५
 (दोहा)

दृष्टि कूरम फतमल्ल हनि, अभयसिंह चहुवान ॥
 कूरम कोजुरामको, पिकखत गाहक मान ॥ ४६ ॥
 ईसरदा पुगपति अतुल, वह कोजुर कछाह ॥
 अप्पहिं खोजत इकिखकैं, अभिमुख रचिग उछाह ॥ ४७ ॥
 मिलि दोउन गकिर्त्रा मुदित, नार्गफन मनुहारि ॥
 अक्खी पुनि अभमल्ल इम, कूरम सुनहु इकारि ॥ ४८ ॥
 सब तुम मलि हमरे सुनत, भूपहिं डारी भौति ॥
 तुमहूमें फतमल्ल तैंह, अक्खी अधिक अनीति ॥ ४९ ॥
 काकोदैरहिं कुापयकैं, काउर जियत सकोप ॥
 फननै हन्यो फतमल्लको, अब तव सिर आंटीप ॥ ५० ॥
 फतैं बान फतमल्लके, छति अभय छैत छेक ॥
 जनु छानन जय अरु अजय, बन्धो तितैंउ सबिवेक ॥ ५१ ॥

मानों २ मघ से ३ जलंधारा १ दौडा बडे बलवान् ४ आकृष्य से मा-
 नों कामदेय ५ शिव के हाथ से ६ जिसप्रकार सीप से मोती निकले तिस
 प्रकार दानों ने म्यानों में से तरवार लेकर ॥ ४३ ॥ ७ प्रलय की अग्नि के
 समान ८ शीघ्रता से ॥ ४४ ॥ ९ बजाकार (गोलकृष्ण) १० दौड़के बहुवा-
 ण ने दाहिने कंधे पर धी ११ प्रसिद्ध प्रशसाघाता ॥ ४५ ॥ १२ सामने
 ॥ ४७ ॥ १३ अफीम की ॥ ४८ ॥ १४ मय ॥ ४९ ॥ १५ सूर्य को कोषित करके
 १६ कर्णों से १७ ठाव ॥ ५० ॥ अभयसिंह की छाती में रघावों के बिंदु करके
 फतहसिंह के पाण्य एमे १८ शोभा देते हैं २० मानों इस युद्ध के जय और अज-
 य छानने के लिये विचार पूर्वक २१ चालनी [खरखी] बनी है ॥ ५१ ॥

यातैं कोजुवराम अब, मिलि बुल्लयो रन माँहिं ॥
जिनके बानन तुम छिदे, तिनतैं गबबहुं नाँहिं ॥ ५२ ॥

[षट्पात]

यहै सुनत अभमल्ल खगग कोजुव सिर आरिय ॥
सजि कोजुव इत संगि हड्ड उर तकि प्रहारिय ॥
याके खगग उदगग कटि बाहुल कर कट्यो ॥
वाकी संगि अपुब्ब चक्खि हिय रीढेक चट्यो ॥

अरि तब सिराहि बलवन अधिप पुनि असि आरिय मत्थ पर ॥
कटि टोप सीस कटिय सकल मनहुँ बिरबंधव बंदि घर ॥ ५३ ॥

(दोहा)

कोजुवराम सु सिर कटत, बेग बसन सन बंधि ॥
कर इक्कशहि असिबर करखि, सिर आरिय जय संधि ५४
कोजुवको दक्खिन कर सु, इम कट्यो अभमल्ल ॥
यातैं गहि कर वाम असि, आरी बहुरि उभल्ल ॥ ५५ ॥
टोप कटि तिखी तरकि, तुटि परिय तरबारि ॥
अक्खिय तब अभमल्ल इम, बाहहु नैक विचारि ॥ ५६ ॥
जिहिं करतैं असिबर जुरत, तिखी तरकत तुटि ॥
जनि ताकाँ हरखैं जननि, कयो बहु थालन कुटि ॥ ५७ ॥
कहि इम कोजुवगम पर, अमि आरिय अभमल्ल ॥
सिव गहि लिन्नौ उडत सिर, ढरयो यहहु रनढल्ल ॥ ५८ ॥
ईसरदाके पतिहिं इम, बलवन पनि हनि बेग ॥
साँवतदास सुहाड पति, तक्कयो आरत तेग ॥ ५९ ॥

१ गव खत करो ॥ २ ॥ ३ कोजुवराम के मस्तक पर ३ दस्ताना काट कर ४ पीठ को ५ सानों दो भाइयों ने घर का घट फिया ॥ ५३ ॥ वस्त्र ६ से शीघ्र बांध कर ७ छोट तरबार खेच कर ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ वह युद्ध की दाल ८ गिरा ॥ ५९ ॥

(मुक्तादाम)

चवीं यह दूतन भूतन चासै, सुनी सब कूरम साँवलदास ॥
 उदायुध उग्र दिवाकर अस, रहै इतनी सहि कपो रघुबस ॥६०॥
 मिल्यो अभमल्लहु उद्धत मान, धपावत धारहि दै बलिदान ॥
 धप्यो कुवलाश्व कि धुधुहि धारि, किधौ रन रावन राम हकारि ६१
 किधौ बलपै बल वासर्व क्रुद्ध, जटासुरपै कि रुकोदर जुद्ध ॥
 कुं अर्थे भ्रमावत हथ कृपान, दिखावत सकरको अति दान ६२
 सुहावै हू इततै गहि सगि, मिल्यो अभमल्लहि भैल्ल उमगि ॥
 नची तैहँ तालिनि चासठि ६३ नारि, रची डम हड्ड रु कूरम रारि ६३
 जहाँ तैहँ आवहि आवहि जाप जहाँ तैहँ खूटत खगन खापै ॥
 जहाँ तैहँ प्रेत डकारत जोग, जहाँ तैहँ घापन घापल घोर ॥६४॥
 जहाँ तैहँ नारदको अति नञ्च, जहाँ तैहँ सूगन हूरन मञ्च ॥
 जहाँ तैहँ भूतन भूख प्रकास, जहाँ तैहँ गिद्धिनि गूद बिलास ६५
 जहाँ तैहँ डाकिनि डिडिम डक्क, जहाँ तैहँ धौरनकी धमचक्क ॥
 जहाँ तैहँ हथिन चडै चिकार, जहाँ तैहँ फेगविकान फिकार ॥६६॥
 जहाँ तैहँ फुटत भू अति जोर, जहाँ तैहँ ब्रंचक तडैय तोर ॥
 जहाँ तैहँ दिग्गज कातर गज्ज, जहाँ तैहँ साहत सूगन सज्ज ॥६७॥
 जहाँ तैहँ कातर कूकन कूरु, जहाँ तैहँ चाहत चचल चूक ॥
 जहाँ तैहँ फुटत फिलैन मत्थ, जहाँ तैहँ सूगन हूरन हत्थ ॥ ६८ ॥

दुगों लीं भूषा ने यह २ खपर १ कही ३ ऊबे किये हैं गज्ज जिसन ४ सुगंधयुग्मी
 ॥ ६० ॥ माना १ कुवलाश्व नामक राजा ७ धुधु नामक राजन ५ दो दख कर
 १ दौडा ॥ ६१ ॥ ८ पतादान हन्त्र कोधित दृष्टा ० भीमसेन का युद्ध १० सूमि
 क ११ धर्म हाथ म तरवार ११ गता दृष्टा ॥ ६२ ॥ १२ मुहाड का पति १३
 अच्छे उत्तमाह से मित्रा १४ बहा पर लक्ष्मि देकर श्रीपठ योगिनि नची
 ॥ ६३ ॥ १५ तरवारों से म्यान खूटत हैं ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ १६ तरवार की
 धाराया की लक्षियों को १७ मयकर बीस १८ फारिया [स्पाग्निया] के कतरार
 ॥ ६६ ॥ १९ सूमि १० लामे [घाघ पित्राय] २१ नृत्य की रीति क तरंगों की २२
 कापर गर्जना ॥ ६३ ॥ २३ लवघान २४ हाथिया के जा २५ अस्तगता का हाथ
 [हथलेशा जुद्धता है]

जहाँ तँहें स्वर्गन खंडे खिंत, जहाँ तँहें गैवर गंज गिरंत ॥
 जहाँ तँहें जुगिनिका जयकार, जहाँ तँहें जंडन मुंडन मार ॥६९॥
 जहाँ तँहें साकिनि सोर सुनाव, जहाँ तँहें पंडित जंग प्रभाव ॥
 जहाँ तँहें हथिन बँथन जुटि, जहाँ तँहें नेग तरकर तृटि ॥ ७० ॥
 जहाँ तँहें सोनिन सौं बढि साँद, जहाँ तँहें प्रेनन भँच्छ प्रमाद ॥
 जहाँ तँहें चाल चुरेलिनि चौकि, जहाँ तँहें भोग भौर्य भौंकि ७१
 जहाँ तँहें हड्डन जालम जोर, इतैं तँहें दुरमह कंगम ओर ॥
 सुहाईप कूरम साँवलदास, मिल्यो अभमहहिं पुंज प्रकास ॥७२॥
 कहैं दुव दाहहु दाहहु कथ, रचैं रन त्यों रवि रुक्मन रथ ॥
 सैं जलजंत्र कि घायन सोन, जुरैं इन दाउननैं तँहें जोन ॥७३॥
 लरैं अभमह सु बुंरिय लाज, करैं उत कूरम जैपुर काज ॥
 ब्रह्म असि बान बगच्छिन बात, परैं मनु भद्व विजुव पात ॥७४॥
 येड त्येइ नञ्च कबंर्यन थूलै, वनैं तँहें कानैर पत्त वैधूल ॥
 नलंगत भोग सोनितै मत्त, छलंगत गिह वनैं सिर छैत्त ॥ ७५ ॥
 नचैं निकस हिपै कठि नैन, सैंरोज कि सोन मिलीमुख सैन ॥
 कठैं फटि बुंकरन दुकर विकास, मनौ सुभैं किं तुक भांधव मास ७६

१ दुकड़े २ बाधियों के लखड़ ३ जय हो जय हो ऐसा शब्द ॥ १२ ॥ ४ तोलाहल ५ बाधों
 से [दानों हाथों को फैला कर अक में भर कर बाहु युक्त होता है] लड़-
 ते हैं ६ तरवारें फिसल कर तृटता हैं ॥ ७० ॥ ७ लोहा का कीचड़ ८ खा-
 ने का ९ भयकर १० नाजते हैं ॥ ७१ ॥ ११ जुलम करनेवाला १२ वह जुलम
 फइवाहों की तरफ नहीं सहने योग्य है १३ सुहाड का पति १४ प्रकाश का स-
 मूह ॥ ७२ ॥ १५ छुदारा चलै जिस प्रकार १६ घायों में रक्त चलता है ॥ ७३ ॥
 १७ समूह ॥ ७४ ॥ १८ निना सस्नक वाले क्रियादान शरीरों का १९ समूह २० आ-
 यर २१ धूले (वायु के गोठे) के पत्तों के समान २२ रक्त से सस्न होकर २३
 छत्र ॥ ७५ ॥ २४ छाती पर नेत्र निकल कर नाचते हैं सो मानों २५ ताल
 कमल पर २६ अमर शयन करते हैं २७ वृकों (गुड़दों) के दुकड़े होकर फट कर
 निकलते हैं सो मानों ३० वैशाख मास में २६ ढाक के (पेसुला के) २८ पुष्प
 फूले हैं ॥ ७६ ॥

उहँ सिर अंबर पच्छिन पेलि, करै जनु कालिय कटुक कैलि ॥
 उछट्टहिँ ढालनमें कढि अतै, भुजंग टिपारनमें कि भ्रमत ॥७७॥
 रुँरै सिर अद्द फटयो इहिँ रारि, दयो जनु जुगिनि खप्पर डारि॥-
 सिखा कटि सूरनकी फहरात, किधौ जेयकेतु प्रभजन पात ॥७८॥
 किँरै फटि टोपनतै करबौल, फँटा बिनु लेत भुजग कि फाल ॥
 सुहावत के भरि नैकैक समूल, फवै इसँमास मनौ तिलफूल ७९
 लगै अँसि ओठ भरै कटि लाल, पके जनु बिँबै कि पुज प्रवाल
 उहँ कटि दतन ओघ अखडै, खिरै फटि हीरनके जिम खड ॥८०॥
 किँरै सह मुँति प्रहारनै कान, बनेँ सह मुत्ति सु मुँति बिधान ॥
 जहाँ भरि हथ्य गिरै अति जुद्ध, किधौ फन पचकके अदि क्रुद्ध ८१
 तिँरै बहु खेटैक सोनितै ताल, मनौ कि सरस्वति कच्छप माल ॥
 मुकै बहु सूर मटयैकन मार, गिरै जिम आसव मत्त गमार ८२

पक्षियों को २ हटाकर आकाश में १ मस्तक उछल है सो १ मानों
 कालिका गैद ४ खेलती है, ढालों के ऊपर ४ आतें गिरती हैं सो मानों
 टिपारों में १ सर्प फिरते हैं ॥ ७७ ॥ इस युद्ध में आधा फटा हुआ मस्तक
 ७ गुडता [लुडकता] है सो मानों योगिनी ने खप्पर डाल दिया है ८ धीरों
 की ओटियें कट कर उछलती है सो मानों ९ विजय की ध्वजा १० पवन से
 पछती है ॥ ७८ ॥ दोनों के ऊपर से तूट कर ११ तरवारें १२ गिरती हैं सो मानों
 ११ धिना कण सर्प उछलते हैं १४ लाल सहित नासिका कट कर ऐसी
 दीखती है कि मानों १५ आसोज मास में तिर्था के फूत शोभा देते हैं ॥७९॥
 ११ तरवार लग कर लाल होट कट कर गिरते हैं सो मानों १७ धिम्पकल (एक
 फल धियोप) और १८ मूँगों (नग विशेष) का समूह है १६ धिना तूटे हुए दांतों
 के समूह कट कर उछलते हैं सो मानों हीरों के टुकड़े होकर फिरते हैं ॥८०॥ १२
 प्रहारों से २१ मोतियों सहित कान २० गिरते हैं सो विधान पूर्वक मातियों स-
 हित २१ सीपें पनती हैं ॥ ८१ ॥ उस २१ रुधिर के ताजाव में बहुत २४ ढालें
 गिरती हैं सो मानों २५ सरस्वती नदी में कच्छपा की पक्षि तिरती है (सरस्व-
 ती नदी के पानी का रंग लाल प्रसिद्ध है) २७ तरवारें चला कर 'द्विगल भाषा
 में तरवार के एक धार में दो टुकड़े होजायें उसको मटका कहते हैं परन्तु
 लौकिक में इसकी रूखी छद्म में होगई है इसीकारण यहाँ तरवार खिजा है'

डरावत डाकिनि दंत दिखाय, जरावत साकिनि लावत लाय ॥
 तिन्हें भट नाटकके नट तोर, गिनेँ रस अद्भुतही नहिँ धोर ॥८३॥
 गिरै कहूँ भज्जतं भीरुन सीर, उठावत पूर्व बिहावत ईस ॥
 गिलैँ तिनको नन गूदहु गिद्ध, बुरे इर्म जे कि मरे भय विद्ध ॥८४॥
 मिले दुवर्षा गतिके रन माँहिँ, जचैँ जुरनोँ तँहँ नाँहिँ सु नाँहिँ ॥
 लगी गर बुंदिय जैपुर लाज, करैँ नहिँ अँगघ सरैँ नहिँ काज ॥८५॥
 भयो बल साँवलको बल भाव, दयो अभमल्ल पुगँदर दाव ॥
 चली पबिकी छवि ते असि चंड, खुल्यो सिर साँवल ज्योँ गिरि खंड ॥८६॥
 (पट्पात)

अभयसिंह सुत अत्थ प्रबल सुगतेस १० पूरन २ ॥
 दासी औरस दुव रहि चले चाहत अरि चूरन ॥
 सारसोपके सुभट बह्नि पहुंचे सुहाड़ बैल ॥
 भट साँवल के भंजि दब्बि नाँनेड़ी दयो दल ॥
 इन्ह हनत पिक्खि कूरम अचलैँ दोउन ३ भुगगन हूर दिय ॥
 उभैँ पुत्र मरत अभमल्ल अब लरि अचलेस समीप लिय ॥८७॥
 अचलसिंह तरवारि परिय अभमल्ल बाँजि पर ॥
 भरत खंध हय झुकिय इनहु झारिय इहिँ अवसर ॥
 सूर अचलको सीस तरकि तुट्यो असि उच्छट ॥

॥ ८२ ॥ १ अग्नि लाकर धीर लोग उसको नटों के २ खंल की भांति अद्भु-
 त रस ही मानते हैं ३ भयानक रस नहीं गिनते ॥ ८३ ॥ ४ भागते हुए
 फिर कायरों के मस्तक समझ कर ५ छोड़ देते हैं, और वे भय से धिंध कर
 खरे ६ इसकारण बुरे हैं अथवा उन का स्वाद मजा) बुरा है ॥ ८४ ॥ ७ वहाँ
 बहुत कायरों के मस्तक गिरते हैं जिनको पहिले तो महादेव उठालेते हैं परन्तु
 नहीं करने की ही नहीं थी ८ प्राणों का आघ नहीं करते अथवा पाप नहीं
 करते ॥ ८५ ॥ साँवलदास का बल राजा ९ बलि की भांति होगया उस समय
 अभयसिंह ने १० इन्द्र के समान दाव दिया ११ वज्र की छवि से तरवार च-
 ली ॥ ८६ ॥ १२ सुहाड़ की सेना में १३ नानेड़ी की सेना को १४ अचलसिंह ने १५ दो-
 नों ॥ ८७ ॥ १६ घोड़े पर

लियउ भेलि लागि लाह नचि बहु मडि *महानट ॥
अचलहि बिदारि अभमल्ल इम सुतन बैर कछयो सकल ॥
बिनु बाजि जाय गज्यो बलिय बुद्धानीपुर पति प्रवक्ष ॥८८॥
दोहा ॥

वीर बहादुरसिंह तव, बुद्धानी पुर नाह ॥
अश्व रहित अभमल्लको, इक्खत रचित उछाह ॥ ८९ ॥
वेग हयहिं भपटाय बलि, सम्मुह आगिय संगि ॥
अभमल्लहिं यह लागिम डम, अंग सिर पंवि कि उमगि ९०
॥ पट्पात ॥

लगत सगि अभमल्ल छति फुटन नन छोहिंउ ॥
बिरचि बंपा बखसीस हकिं कूरम दल डोहिंउ ॥
बिनां तुरग इठ बधि तुमुल कोऊ नहिं तक्रत ॥
यह अर्चिज सहि सगि बढयो सम्मुह अय वक्रत ॥
जिम तुंला दड खभहि जुरत उर प्रविद्ध अभमल्ल डम ॥
बुद्धानि नगर ईसहिं सविधि तुंलि पटक्किय अवनि तिम ९१
[दोहा]

परयो बहादुरसिंह इत, इत सु परयो अभमल्ल ॥
इम कूरम भट पचप, अरि, इनि सुतो हरवल्ल ॥ ९२ ॥
पञ्चमटिका ॥

चहुवान देवसिंहहिं विचारि, सिरदार कुम्म नौरव सम्हारि ॥
नाथाउत चालुक प्रेम नाम, किय आहव नरउर सचिव काम ९३
सग्राम नाम चालुक्य सग, जुरि करनसिंह कछवाह जग ॥

* शिव ने ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ १ बरछी २ पर्यंत पर ३ घड़ा ४ १० ॥ ४ भूखित नहीं
हुआ ५ मज्जा ६ क्रूर कर ७ मथा ८ आश्चर्य है कि बाकी को सदन करक ९
घोछता हुआ १० लकड़ी की छाड़ी किसी छमे से पाया जाये तैसे ११ घेपन
होकर १२ तोल (ठठा) कर भूमि पर पटक १३ ॥ १४ नरुका १५
सीलजी १६ कार्य ॥ ९३ ॥

परिहार*परसुधर बल प्रचंड, दिय जोध चालुकहिं दुग्ध दंड ९४
 गेजन अरि साँवलदास गोर, उडि रूपसिंह चालुक्य आर ॥
 जोरावर नारव कुम्भ जत्थ, सुरतेस बीर चालुक्य सत्थ ॥ ९५॥
 बखतेरा हड्ड अमि करत बाह, चलि उदयसिंह चालुक्य चाह ॥
 जगमानु हड्ड अति मंचित्र जंग, सजि कूरम पृथ्वीसिंह संग ॥ ९६॥
 (दोहा)

इन बुंदिय आसैर भट, रचिग पररपर रारि ॥

जुद्ध मिले जल दुद्ध जिम, अवन बगग उपारि ॥ ९७ ॥

[मुक्तादाम]

चली असि बान बरच्छिन चोट, लगे कति लेत कबुत्तर लोट ९८
 उलटिय सत्त समुद्रन आप, प्रकटिय कूरमको यँहँ पाप ॥
 थरक्किय त्यों अतलादिक थान, तरक्किय सेस फँटा लचकान ९९
 तरक्किय कच्छप पिडि सत्रास, बँहँ जनु अंडकटाह विनास ॥
 टिक्यो किँरि तुंडहिं दंतुलि टारि, चिक्यो दिक्कुंजर पुंज चिकारि
 छुटँ सिर छत्तिन छत्तिन छेकि, कढँ बनतँ जिम कुक्कत केकि ॥
 करक्कहिं कोचनको अँसि कटि, फरक्कहिं विज्जुव ज्यों घन फटि १०१
 खरक्कहिं ढालनके कटि खंड, दरक्कहिं तालनसे ध्वजदंड ॥
 छरक्कहिं छोनियँ छिछिन रँत्त, बरक्कहिं बाहुन टोप विधँत्त ॥ १०२॥
 भरक्कहिं इक्काहिं इक्क भटकि, थरक्कहिं रुंड तरक्कहिं थकि ॥
 गरक्कहिं खँजँर पंजँर गोदि, जरक्कहिं जोर महाभट मोदि ॥ १०३॥

* परशुराम ॥ ९४॥ नखरु कछवाह ॥ ९५॥ आश्चर्य युद्धत युद्ध करनेवाला
 ॥ ९६॥ १ दुग्ध ॥ धोड़ों की बागें उठा कर ॥ ९७॥ १६० ॥ १ जल २ जयमिह
 का ३ कण ॥ ९९॥ ४ सगों ब्रह्मांड का विनाश (प्रलय) होवेगा ५ धाराह का
 मुख ६ दिग्गजों का लसुह चीसली करके हटे ॥ १००॥ ७ चक्रियों की छातियों
 को फोड़ कर दमयूर १ कवचों को काट कर १० खड्ग ११ विजुली ॥ १०१॥ १२ ताड़ वृक्ष
 के समान १३ भूमि को १४ रक्त की छींछों (पिचकारियों) से १५ दस्ताने १६
 विशेष घात से ॥ १०२॥ १७ शस्त्र विशेष [एक प्रकार की छुरी] १८ शरीर
 को खोद कर १९ प्रसन्न होकर गिराते हैं ॥ १०३॥

प्लवंगन प्रोथ सनकिय स्वास, भनंकिय भेरि बलाँहक भास ॥
 रनकिय कोचन रोचन रुह, अनकिय अक्खर पक्खर जुडा ॥ १०४ ॥
 खनकिय हँहन हँहन खग्ग, फनकिय फेनिज सेस समग्ग ॥
 छनकिय बान उडानन छूट, ठनकिय घट करी कटिकूट ॥ १०५ ॥
 इतै तँहँ देव उतै सिरदार, हमल्लन भल्लन देत प्रहार ॥
 उभै २ अपटावत सतिनै सूर, उभै अधिवीर महा ममरुर ॥ १०६ ॥

(दोहा)

महाचंड अरु चंड मनु, दोऊ भट जम दास ॥
 असु दल गाढक अकुँरे, रन भौरी भव रास ॥ १०७ ॥

[पट्टपात्]

देवसिंहके सुभट हनिय सिरदारसिंह खट ॥
 नारवके रन रुपि देव सद्धिय दादस भट ॥
 द्विगुन जोर लखि दुतहि अक्कै पहिले तिन्ह अँहरि ॥
 अरु महल भिर्देवाय प्रथम पठये स्वधर्म परि ॥
 हाकिनि पिसाच यह कूक दिय सु सुनि सोर नारव सुभट
 दस १० मान उग्र अहे दुसह बहुरि आनि ठँठे विकट ॥ १०८ ॥

१ घोड़ों के २ फुराणा [नासिकाओं] से ३ नोषत ४ मेघ की शोभा से पञ्जी ५ कवचों से आभायमान धनु ६ नहीं गिरे हुए अर्थात् हाथी घोड़ों पर लगे हुए पाखरों के समूह यजे ॥ १०४ ॥ ७ हाडा खत्रियों के खट्टावरीर के हाथों पर यजे, या हथों के शस्त्र हाडाओं पर ही यजे [क्योंकि यहा दोनों आर के युद्ध करने वाले हाडा ही थे] ८ भागों सहित शेष के सब कथ केव [भाग] सहित होकर फुत्कार करने लगे [यहाँ केमों के योग से फणों का ग्रहण है] १० हाथियों के कुम्भस्थ फट कर ॥ १०५ ॥ ११ घोड़ों को १२ वीरों के पति [स्वामी] ॥ १०६ ॥ १३ सेना के प्राणों के ग्राहक १४ खड़े हुए १५ युद्ध में महामारी (प्लेग) का मृत्यु हुआ अर्थात् मनुष्यों के समूह का नाश करनेवाली महामारी का मृत्यु हुआ ॥ १०७ ॥ १६ सूर्य ने १७ देवसिंह के वीरों का आहर करके १८ सूर्य महल का मे दन कराकर १९ प्ररुके २० दश का प्रमाण घाले अर्थात् दश भट या २१ ख से हुए ॥ १०८ ॥

(दोहा)

सुभट अट्टनिज संटिकैं, देवसिंह द्रुत दाय ॥

नारवके ते दस१०निगलि, नारव तिय निषराय ॥ १०९ ॥

(पट्पात)

श्रव उन्नततम अंस उपर दिनकर आगोहत ॥

चित्र जंग दिय चच्छु मुदित सारथि सह मोहत ॥

देवसिंह सिरदार जय रु राधंय मिले जहँ ॥

बिरचत दुवर्जाल बंधि तुमुल थल रंग जंग तहँ ॥

सत्तन खलीन खंचिय अरुन चुकिक सैकति फनिपति चकिय ॥ ११० ॥

दुवर्जाम अधिक संजोग सुख तदिन चक्रक चकिकन तकिय ॥

जिम द्रोणाचल लैन उठयो अंजनि सुत लासक ॥

अचवने जिम अंभोधि विदित आतापि विनासक ॥

चंडी जिम चंडपर खान मुष्टिक संकरखने ॥

धन्नगपर कि सुंपर्षा गरवि तैम हिमकर ग्रासन ॥

पौर्णमासी २ नरुते सरदारसिंह को समीप लिया ॥ १०६ ॥ इस समय
 १ वदले में देवसिंह भाग (अध्यान्ह) पर चढ़ कर ४ सूर्य ने इस ५ आश्चर्य बाछे
 ३ अत्यंत ऊंचे [दे] [नेत्र] दिय और सारथि सहित प्रसन्न होकर मोहित
 ६ युद्ध पर ७ चच्छु ह और सरदारसिंह रूपी ८ अर्जुन और ९ कर्ण मिले
 हुआ. जहां देवसिंह और सरदारसिंह रूपी ८ अर्जुन और ९ कर्ण मिले
 तहां दोनों ने बल कर युद्ध क्षेत्र में भयकर युद्ध किया वहां सूर्य के
 सारथि अरुण ने घोड़ों की सातों १० जगामें खेची (युद्ध देखने को रथ
 रोका) और ११ अपनी कर्षि को धूल कर १२ शेषनाग डिंगा १४ उस दिन
 चक्रवा चक्रवियो ने १३ दो पहर तक संयोग का अधिक सुख देखा अर्थात्
 युद्ध का कौतुक देखने के कारण सूर्य दो पहर अधिक ठहरा इससे वह
 दिन छे पहर का हुआ ॥ ११० ॥ जिस प्रकार १५ दृष्ट्य करता हुआ हनुमान
 द्रोणाचल लेने को उठा. जिस प्रकार १६ सुभट को १७ पीने के लिये आतापि
 नामक राजस को १८ मारने वाला (अगस्त्य) उठा. चंड दैत्य को मारने के अर्थ
 चंडी और मुष्टिक मल्ल को मारने के लिये १९ बलदेव किधों सर्प के ऊपर २० गड-
 द और २२ चद्रमा को ग्रहण करने को घमड करके २१ राहु उठा तिस प्रकार

कुल उद्धरन लरि समीप नारव लियउ ॥

१. दृढ पय मुररि दुरसासन उप्पर दियउ १११

भुजगप्रयातम् ॥

के वस मँज्झी, दुहूँ फोजमें ओजेंतें मोजें दँज्झी

भुम्मि दब्धी, इतैं गोभुखा भेरि वज्जे अरब्धी ११२

॥ बेस भिन्नो, किंटी दतुली टारिकैं तुह दिन्नो ॥

॥ ल त्राता न कोऊ, सखो बैच्छ बीभैच्छ दौले-

र्य सोऊ ॥ ११३ ॥

कूँट हल्ले, चहुँ कोदैं रप्रोदैं के श्रोत चल्ल ॥

दे लोकेसैं मो न, लगे ईतैं को सँसके लाभ लोने

लोग भिन्ने, नची जुगिनी ताल वेताल दिन्न ॥

बुल्लै अखहैं, मनो फग्गमें चच्चरी दह महुँ ॥ ११५ ॥

का वकार करनेवाले देषमिह) १ युद्ध करक १ नरुक स

१४ लिया सो मानो २ पीछा फिर का भीमसन ने दुरसा-

दिय ॥ १११ ॥ इस प्रकार ३ अग्नि यशी और सूर्य यशी

१२) मिछे जिनही ५ गाव स दाना और १० सेना की ३

४ दोनों न प्रताप क जोर से भूमि का दवाई और ४ घर

विशेष] नोपन और ६ सारणी तास यज्ञ ॥ ११२ ॥ शेष

अत्यन्त दीन के घेस में होगया और १० पाराह ने दतुली

नीचा कर लिया उस समय पाताल में ११ शय नाग की

कोई नहीं निकला और १३ ग्लानी युक्त होकर १४ कमठ

यज्ञ चला ॥ ११३ ॥ अब दृढ वाले दाना पीरा के १५ युद्ध

पर्यंत क १६ जिखर हिलने लगे और चारा १७ दिशा म

के साते चले भगवान् स समुद्र चार मान हैं परन्तु वाक्का

न ही लिखे हैं १८ स्वर्ग आदि क जाक भग कर २० अग्रा

११ ११ शिष का मस्तकों का लाभ २२ सुदूर लगा ॥ ११४ ॥

१३) की लागवाला (वीर रस का पोषक) २३ मिथवी राग ह

१० जोगमिछें नची और येतालो ने ताल दी, एद्वियो पर तर

१२ शब्द होने लगा सो माना काग में अधवा फाल्गुन मान

१३) क दखे यजते हैं ॥ ११५ ॥ दोना और के समूह पाछ

उभै मंडली धावे वाजी उडावैं, उभै वारकी सारमें नाहिं आवैं ॥
इतैं लज्ज बुन्दीसकी ठाकि ठिल्लैं, उतैं खपालह जेसिंहके जोर
खिल्लैं ॥ ११६ ॥

उभै जेठके भानके मानें उग्गे, परैं फोजके ओजके अंसु पुग्गे ॥
बकी डाकिनी डक्क डैरों वजाये, घने भेदके मेद भेरो अघाय ११७
फिरैं फेकरी चंड फेरंड फुल्ले, भिरैं भूत के रंतमें मत्त भुल्ले ॥
भ्रमैं गिहनी चिलहनी मेद भखैं, रमें पंकमें कंक ना संक रक्खैं
तपैं रंगे वाजीनके तंग तुहैं, छिपैं भीरुं विद्राव कैं चाव छुहैं ॥
उलट्टी नदीलौं गिरैं को उछहैं, फिरैं गीस कैं इसके सीस फटैं ११८
कटी के पताका उडी अंध्य कहैं, चमू मेघके जोर ज्यों मोर चहैं ॥
भुके भंड बेतंडपैं वात भपैं, किधों सैलके संग खज्जूरि कपैं १२०
बन्पों संकुली सत्थ लै वंथ वाहीं, निःशो पोनेपैं वहाँ सैदागोन नाहीं

गोड़ में २ घोड़ों को उडाते हैं सो दोनों ओर के महारों में नहीं आते धधरतो बु-
की लज्जा के अर्थ (कि हमारे कारण से ही उसकी लज्जा रह जावे) शत्रुओं
बदले में दूर ३ हटाते हैं और उधर जयसिंह के जोर से उड़ाई का खेल खेलाते
अत्यंत ऊंचे ॥ दोनों ही ज्येष्ठ मास के सूर्य के ४ समान उदय हुए जिनकी ५
युद्ध पर ७ - किरणों के पहुंचने से सेना गिरती है उन फौजों के गिरने से डा-
अ. - डरव बजाकर चकने लगें और बहुत प्रकार के ७ मांसों से भैरव
- तृप्त हुए ॥ ११७ ॥ खपालनिघें फिरती हैं और अघंकर ९ खपाल फूलते हैं १
रुधिर में मस्त होकर मूले हुए भूत परस्पर भिड़ते हैं और उड़ती हुई भीधनि-
यें और चीलहें मांस खाती हैं उस लोही मांस के कीचड़ में कंक [ढीच] पत्ती
निःशक होकर फीड़ा करते हैं ॥ ११८ ॥ ११ युद्ध में तपे हुए घोड़ों के तंग तूट-
ते हैं १२ कायर लोग भागकर उत्साह छोड़कर छिपते हैं और कितने ही उल-
टी हुई नदी के समान उछट कर गिरते हैं और क्रोध करके शिष की मुंडमा-
ला में गएहुए मस्तक भी फटते हैं ॥ ११९ ॥ १५ सेना में कटी हुई १३ ध्वजा
ऐसी दीखती है जैसे मेघ के जोर से १४ आकाश में मगूर चढ़ते हैं १७ पवन
लगने से १५ हाथियों पर झंडे ऐसे दीखते हैं जैसे १८ पर्वत के शिखर पर ख-
जूर का वृक्ष कांपता है ॥ १२० ॥ २० एक दूसरे को सुजाणों में भरकर वह
सेना ऐसी १९ भरगई कि जिसमें होकर पवन का २१ सदागोन [निरंतर ग-

गहे कोदं कटार के पार गोदें, खुरों बाजि के घुम्मिकें भुम्मिखोदें
 फिरें के गदा मारि गै मत्थ फोरें, चिरें कुभें मुत्तीनको रगचोरें ॥
 कटें हत्थि होदेनके उछ कँछी, मुँ तारकी वगग ज्यों धारमच्छी
 किते कुप्पि होदेनमें मूर कुहँ, मरोरें निसादीनके कठ मुहँ ॥
 भिदें त्यों गजाजीवें के जीव भुहँ, बडे मोदमें के पदप्रस्त बुहँ १२३
 नदें भभँकी फुट्टि मेरी नगारे, बदै के विदारें इहा हाय हारे ॥
 चढी अगि जगी चिनगी चमकी, सिँकी मार ससारकी बुद्धिसकी
 तपें पक्खरी बाजि दँजमें तरकें, जपें राम के घुम्मिकें भुम्मिजँकें
 खिरें इह के झुड के खड खडी, मनो बुद्धि मोरेनकी मेघ मडी ॥ १२५ ॥
 चलें रोपें त्यों चाप जीवों चट्टें, नचें खेचरी भूचरी प्रान नैहँ ॥
 बहँ वेगते तेग सँनाह बहँ, किधों सँवुकी पतिमें तति कहँ ॥

मन] नहीं होसका "यचन का नाम ही सदागति है वह मार्यक नहीं हुआ"
 कटार ग्रहण करके उसका १ कोना [नोक] मास में २ पार करते हैं और कि-
 तने ही घोड़े फिर कर भूमि को छोड़ते हैं ॥ १२१ ॥ कितने ही गदाओं से
 ३ हाथियों के मस्तक को छेने फिरते हैं और घिरे हुए, ४ कुमस्थकों से ४
 मोतियों का रंग चुराते हैं अर्थात् ह्वेत रंग के मोतियों को कथिर से छाल
 कर देते हैं ७ घोड़ों को हाथियों के होदों से ६ ऊपर निकासते हैं वे घोड़े
 छत के तार की, पाग से ८ पानी में मच्छी मुड़े तैसे मुड़ते हैं कितने ही धा-
 र क्रोध करके होदे में झूड़ते हैं ९ हाथी के खबारों के कठ मरोख कर प्रसन्न
 होते हैं १० कितने ही महावत भिड़कर जीव भूखते हैं कितने ही हाथियों के
 ११ पैरों में दण्ड कर मूर्खिन होकर खोजते हैं ॥ १२१ ॥ १२ भ्रम [फूटे पाजे के शब्द का
 अनुकरण है] करके कितने ही १४ मोषत और नगारे १२ बजते हैं कितने ही क
 टे हुए हाथ टाप करते हैं १५ युद्ध संधी अग्नि बह कर उसकी चिनगारियाँ
 चमकीं जिनकी व्याप्ता से १९ जल कर ससार की बुद्धि शक्ति दुई ॥ १२४ ॥
 पाखरों बाखे घोड़े तप कर १७ जलते हैं तहकते हैं अथवा झूड़ते हैं और कि-
 तने ही राम राम करके घूम कर भूमि पर १८ गिरते हैं कितने ही हाथों के
 झुड टुकड़े टुकड़े होकर खिरते हैं सो मानों मेघ ने १६ ओलों (गडों) की वृष्टि
 रखी है ॥ १२५ ॥ उपा २० बाण बखते हैं त्यों धनुष की २१ प्रत्यक्षा बटकती
 है खेचरी भूचरी [देवी की दासी विशेष] नखती है और प्राण २२ नष्ट होते
 हैं वेग से तरवारें पहकर २३ कपच कटते हैं सो मानों २४ सापन की पक्ति

करैं सुंति हृत्पीनके सुंद जुद्धें, कटैं प्रीथ वार्जानके कंक कुक्कैं
 भई रंघैं त्रैलोक्यकों धुंवि थारी, उई स्वर्गकी नामतो भामछारी
 तकैं बीर कायास आयाम तंद्रा, चढा गति सोपे अर्गा नष्टनंद्रा॥
 सजी देव त्रैनामके पुंन रंझा, नैं भौनकैं विष्णुग चंद्र वंझा॥
 सवैं संझुली धांत संग्रान सीमा, भंचकी फिरो कार अंगार भीमा
 दिपैं ठाँ कटारी उडो भ्रम दीमी, सुही चंद्र कौ मोहिनी रोहिनीसी
 जरैं गैन गिरीनके नेन नैककी, सुही भ्रमकी तीन इतार थगकी
 उडैं हीर जा कौलिनी इकक १ उगैं, प्रभा जासैं अंधारपें मारपुगैं
 क्रमैं गैन के मल उँया जाग कहैं, मृदाकौरि आदित्य जे च्यागि ४ चहैं
 छुटयो कटि त्रैमूल उहाँ छे हैं, सुही तीन इतारानैं पुण्य मो हैं॥

क. तांत निकलती है ॥ १२६ ॥ सुंद कटने से हाथियों के समूह झुनते हैं और
 भुंड़ों के १ जुगले [नासिका] कट कर २ मांनहारी पत्ती विशेष कृत हैं
 वन्यपक्षकार तांतों लोको को ३ गोक कर भारी दुधि हुई और वह ४ भयंकर
 रौड़ से वीर ७ आलस्य अथवा निद्रा को ताकते हैं उस समय नष्टचंद्रा ८
 १ वदले वास्या के समान दिन में ही रात्री होगई ६ रात्रि के पहिले ही देव ने
 ३ नह १० संध्या का दी जो १ सूर्य के बिना और चंद्रमा से १२ वां भ (बंध्या)
 रात्री बही ॥ १२८ ॥ संग्रास की सब सीमा १४ अंधर से १३ भगई उस स-
 लय उवाला और १६ अतारों की १७ भयंकर १८ नक्षत्र मंडली [नारा मंडल]
 फिरी. 'अब यहां नक्षत्रों का स्वरु वखन करते हैं' वहां १८ आकाश में चही
 हुई कटारी दीखता है सो ही चंद्रमा को १९ मोहनेवाली रोहिणी जोसा दे-
 ती है 'रोहिणी चंद्रमा की स्त्री है इनकारण उसको चंद्रमा को मोहनेवाली
 कही है' आकाश में ग्रीधनिमा के नेत्र और २० नामिका जलते हैं सो ही २१
 सृगवर नक्षत्र के तीन तारे ठहरे. वहां हीरा उडता है सोही २२ आद्री नक्षत्र
 का एक तारा उदय हुआ २३ लिसही कान्ति की मार अंधरे पर पहुँचती है
 ॥ १३० ॥ किनने ही तीरों के भाल २४ प्रत्यंचा के जोर से निकल कर आकाश
 में फिरे हैं सो २५ घर के आकाश २६ पुनर्वसु के चार तारे चहे हैं छूटा हुआ
 त्रिशूल कट कर २७ नक्षत्र जोसा देता है सोही २८ पुण्य नक्षत्र के तीन तारे
 दीखते हैं [पुण्य नक्षत्र त्रिशूल के आकार है] १३१ ॥

छुटै चक्र ठहै बक्र आपांत छाजै, भुनगी भे जो पंचपतारेन भाजै
गृहाकांठहै पच अगार उडै, गघा जो मनो हकि आई हंडुडै ॥
जरते उडै कालिका पालिकापै, ति पुढेओत्तराफगुनी रिच्छ छैरुदे
उडै ओ जै हौत्र लग्गी अंगारी, भे पचांत जो हरत नक्षत्रभारी
चडै अंब भुती वैं इक्क १ चित्रा, प्रवाली चड रंवाति इक्कै १
पवित्रा ॥

धकती कंधी अंबवै अंब धावै, बिमाखा सु चाथारेंछकाखीव-
नावै ॥ १३४ ॥

उडै तपो तिते मौनके के अंगारे, ति ज्यो सिर्न नक्षत्रके चवारिधतारे
चली कानतै कुडली व्यागै चानों, सुनासीरक पिच्छके ते भे तीनों ३
इली बक्रपै रुद्र सखपा १ अंगारे, ति ज्यो सिंहलंगुन त्यों मूलतारे

देहे चलने ५ परिश्रम से चक्र लूना हँ सा ११ सर्प के आकार घांसे [मरुतोदा] १
नक्षत्र के पाच तार ११ भा दने हैं (मतांतर म ग्रहोपा के छ तार भी मानते
हैं) ७ घर के आकार होकर पाच तारे बटत हैं सा ही माना मघा ७ चक्र चल
कर १ हड्डा गालकुडा] खेज विशेष पर आई है ॥ १३२ ॥ ७ कालिका
देवी के ८ पल्ल पर जलने हुए अंगारे उडत हैं १० घे पल्ल ही १० पूर्वाफा-
लगुनि और उत्तराफागुनि नक्षत्रों के दो दो तारे बनते हैं [ये दोनों नक्षत्र
दो दो तारा के होते हैं] १४ हुए ११ हाथों के अंगार लग कर उडते हैं सा १२
हस्त नक्षत्र के ११ पाप तारे होते हैं [हस्त नक्षत्र हाथ के आकार होता
है ॥ १३३ ॥ १४ आकाश म मोती चढता है सो ही चित्रा नक्षत्र का एक तार
रा होता है आकाश मे १५ भुगा चढता है सो १६ पवित्रा स्थानि नक्षत्र का
एक तारा होता है १८ घोड़े के मुग से जलनी हुई १७ लगाम १९ आकाश
म जाती है सो २० चार तारों क चित्रावा नक्षत्र का २१ डाल (आकार) प
जाती है ॥ १३४ ॥ २२ उमने ही प्रमाख के अक्षतनर अंगारे चढते हैं २२ व २४
अनुराधा नक्षत्र के (चामर वृद्ध के आकार) चार तारे होते हैं कान से पक्षी
हुई कुडली २५ आकाश म गीबनी है सो कुडल के पाकार २६ हथ के २७
नक्षत्र (ज्येष्ठा) के तीन २८ तारे हैं "ज्योतिष मे ज्येष्ठा नक्षत्र का देवता इन्द्र
है" ॥ १३५ ॥ १६ टेढ़ी लखार पर अंगार मडग के अंगार हैं सा ३० सिंहपु
च्छ क आकारघांसे ११ मूल नक्षत्र क तारे हैं

जरै अब्भ गैदंत दो + ओर सों जो, दिपै पुब्ब आखाढ सो ऽ रिच्छ द्वैश्व
 अंगारी उमै २ अब्भ काहू उछारी, कढे उत्तरा द्वैश्व मंचानुकारी
 इतेमैं उडैं अब्भ ओरैं अंगारे, त्रिकोणाभ जे ते भिजिं तीन ३ तारे।
 भं गोबिंदको ज्यौं कह्यो मग्न त्यों भो, मृदंगें लख्यो चो ४ ध
 निर्घठा भ ज्यौं भो ॥

उडैं चर्म सो १०० चंद्र माला अरोहयो, सुही वृत्त बारीसको रिच्छ
 सोहयो ॥ १३८ ॥

महारत्ति अकैंदुके संग मन्ने, छदतारे रहे कृत्तिका अंत छन्ने ॥
 त्रिजामाहिं पुंवा भई यो त्रिजामा, परी फौलि ज्यौं अस्त्र उद्वेद पामा
 हठी बीर जौसिंहके धूंक हुक्के, कुँहू सौलमी सूर फेगंडें कुक्के ॥
 फिरै भैंगली बंगुली गिद्ध फुल्लैं, भ्रमैं पिंगला सेन भा लेन भुल्लैं ॥ १४० ॥

आकाश में * हाथी के दाना + ओर के दंत जलते हैं सो (गज दंत के आकार) ऽ दा
 तारों का पुत्राषाढा नक्षत्र होता है ॥ १३९ ॥ १ आकाश में दो अंगारे किसीने उछा
 ले सो २ उत्तराषाढा नक्षत्र के दो तारे ३ मंच के आकार हुए आकाश में और अं
 गारे उडते हैं सो ४ त्रिकोण के आकार ५ अभिजित नक्षत्र के तीन तारे दी-
 खते हैं ॥ १३७ ॥ ७ बिष्णु भगवान् का ६ नक्षत्र "ज्योतिष में अवण नक्षत्र
 के देवता बिष्णु हैं" आर्ग के आकार अवण नक्षत्र हुआ ८ मृदंग के आकार
 चार तारों का धनिष्ठा नक्षत्र हुआ ९ ढाज के ऊपर के चांद (फूल) १० चढे हुए
 उडते हैं सो ही ११ गोलाकार सौ तारों का वरुण का १२ नक्षत्र शतशिषा
 शोभायमान है "ज्योतिष में शतशिषा नक्षत्र का स्वामी वरुण है" ॥ १३८ ॥
 १३ उस काल रात्रि में १४ सूर्य चन्द्रमा के साथ माने हुए इसकारण कृत्तिका
 नक्षत्र के अंत तक पूर्वाभाद्रपद १ उत्तराभाद्रपद २ रेवती ३ अश्विनी ४ भर-
 णी ५ कृत्तिका ६ धेनु नक्षत्र १५ छुपे रहे अर्थात् नहीं दीखे "ये नक्षत्र वैशा-
 ख भास में सूर्य के आस पास रहते हैं और अमावास्या का दिन होने के का-
 रण सूर्य चन्द्रमा का साथ होना लिखा है" १६ रात्रि के १७ पहिले ही इसप्र-
 कार की १ दरारि हुई वह ऐसी फैली कि जैसे १९ रुधिर में पामा रोग २० प्रकट हु-
 आ ॥ १३९ ॥ अयासिंह के बीरों रूपो २१ उरुतू बोले २२ उस नष्टचंद्रा अमावा-
 स्या में २३ सालमसिंह सम्बन्धी २४ गीदड बोले २५ भागलों (भागनेवाले-
 कायरी) रूपी २६ बागल (बलगीदड) प्रफुल्लित हुए २७ वह सेना कोचर पत्नी
 की २८ क्रान्ति को लेना नहीं भूलकर अमती है ॥ १४० ॥

हाटों और कछपाहों का युद्ध] सप्तमराशि अष्विनिशमयुक्त (११७३)

भन्यो वेगिसल्लोत भूतसँ भायो, जग्यो देवकन्याद जो जैत जायो।
नरुजात सँ गात यो लीलिलिनित्रों, नहीं ईस जच्चयो सु पै सीस
दिनों ॥ १४१ ॥

[दोहा]

गिरत गिरत नारव गजव, हुँत मडिग सिरदार ॥
देवसिंह किय छकित दे, असि उपवीतँ उतार ॥ १४२ ॥
अन सुँ देव हनि नारवहिं, खाय डक्क तस खगग ॥
धन्यो प्रवत्त हरवल्ल धुर, फिरत मचावत फगग ॥ १४३ ॥

(पट्टपात्)

अग्यौ तच्छकै उरग बहुरि पय पुच्छ विदव्वियँ ॥
अग्यौ बरँ बारुद छोरि पौवक सिर छव्विय ॥
अग्यौ दिनैकर असह मुररि उत्तर मग लिहो ॥
अग्यौ छुधितँ मयँदँ बहुरि विच्छिय थ्रँल विहो ॥
अग्यौ सु देव आहव अहर अरु नारव अति उप्फन्यो ॥
जयसिंह मान भजँक सँजव बेतालन रजँक वन्यो ॥ १४४ ॥

[नि शास्त्री]

१ घरीशाल के घशाला २ शिष क मन भाया ३ देवसिंह
“कन्याद सिंहे” इति शब्दार्थचिन्तामणि ॥ ४ जैतसिंह का पुत्र (देव-
सिंह) जगा ५ गरुका से ६ गात्र (शरीर) ७ लीला (खेल) से =
शिब ने उसका मस्तक नहीं मागा ८ परन्तु ॥ १४१ ॥ १० नरुके सरदा-
रसिंह ने ११ शीघ्रता की १२ तरवार से जनेऊ दी (जनेऊ के आकार शरीर
को काट देने को जनेऊ उतार कहते हैं) ॥ १४२ ॥ ११ वह देवसिंह १२ नरुके
को १३ प्रथम ॥ १४३ ॥ पहिले ही १४ तत्काल सर्प था और फिर परग से उस
की पूछ को १५ दवाई १६ पहिले ही श्रेष्ठ बारुद था और फिर १७ आगि के ऊपर
छाया २० पहिले ही नहीं सहने योग्य सर्प था और फिर मुडकर उत्तर दिशा
का मार्ग लिया, २१ पहिले ही मृत्वा २२ सिंह था और फिर पीछ के २३ छंक
से बाधा गया इसप्रकार देवसिंह पहिले ही २४ युद्ध में निर्भय था और फिर
२५ नरुका सरदारसिंह बहुत पडा इसकारण जयसिंह के मान को २६ मिटा-
नेवाला होकर बेतालनों को २७ शीघ्र २८ प्रसन्न करनेवाला हुआ ॥ १४४ ॥

नारवकों देवा निगलि अगों उफनाया ॥
 इत नरउर नृप के सचिव चालुक चंपाया ॥
 प्रेमसिंहहूँ है पलट हुँत दाव दिखाया ॥
 झल्लरिलों झननंक ते तेगा तरकाया ॥ १४५ ॥
 सराँ हूराँ सत्यवै गलबत्थ मिलाया ॥
 खंडेराय खिलहारहूँ रन फग रचाया ॥
 पातँ गदा के पुँटली फटकार फनाया ॥
 घाय हव्वकौँ रंग के जलजल चलाया ॥ १४६ ॥
 खेह गरदी मेहलों अँवरीर उढाया ॥
 फूल कलेजे फिफरे फवि फाँक फुलाया ॥
 गोली गोटे गुलालके चहुओर चढाया ॥
 डेराँ डिंडिम डाकिनी डफ डक बजाया ॥ १४७ ॥
 गनिका ज्यौँ नचि जुगिनी थेई थरकाया ॥
 भैराँ गायक भायकौँ आलाप उठाया ॥
 नाथाउत प्रेमहु निडर खग खेल खिलहाया ॥
 दोऊ फग उँदगमें इम कोतुक आया ॥ १४८ ॥

नरुके को खाकर देवसिंह आगे १ घड़ा २ सोलंगी का दवाया ३ श्रीघ
 खड्ग विशेष ॥ १४५ ॥ वीराँ और ५ अप्सराओं ने साथ होकर ६ उस फा
 में कितनी गदाओं का पड़ना ही ७ पोटली का फटकारना ८ शोभायमा
 हुआ और कितने ही घाय उबकते हैं सो ही रंग के ९ फुहारे चलाये ॥ १४६ ॥
 मेघ के समान अंधेरा करके धूल उड़ती है सोही १० गुलाल उड़ाई उस युद्ध में
 कलेजे और फेंकरी की फाँके हैं सो ही फूले हुए फूल हैं और गोलियों रूप
 ११ गुलाल गोटे चोतरफ चढाए और भैरव के वाद्य डैरव और डाकिनिय
 के वाद्य डिंडिमियें बजे सो ही उस फाग में डक बजाये ॥ १४७ ॥ और वैश्य
 ओ के समान थेई थेई करके जोगिनियें चली और वावन ही भैरवों ने १
 कलावंतों की भाँति आलाप ला, नाथाउत प्रेमसिंह ने भी निर्भय होकर त
 रवार का खेल खिलाया १३ उदग (उछलते हुए शस्त्रों की चपवा निरंकुश
 फाग में इसप्रकार खेल पर आये ॥ १४८ ॥ इसप्रकार तीरों से छातियों के

छेदैं तीरन छत्ति यों वीरन विरमाया ॥
 सेल घमाकों सकुलै छाकों कि छकाया ॥
 दोऊरमारत दाव जे घन घाव घुमाया ॥
 नरउर मत्री प्रेमका बहु वार बचाया ॥ १४९ ॥
 खंडे खंडेरायके द्रुत प्रेम दबाया ॥
 चबल चड चमकिकैं ग्रीवा गरकाया ॥
 सिवकों दै मिर प्रेमका गतप्रान गिराया ॥
 चालुककों नरउर सचिव हनि यों रु दकाया ॥ १५० ॥
 देखि निरकुस देव डहिं सज्जित समुहवाया ॥
 धर दोउन धमचक्रदैं फनमाल फिराया ॥
 हड्डन मसं निहागहौं हड्डा हठ आया ॥
 जिम लगैं तिम लौ चलैं खग पान पचाया ॥ १५१ ॥
 ककर्ट टोपों कटिकैं कटि जात अधाया ॥
 ज्यों सबनीगेर सबनुमें चाहि तत्र चलाया ॥
 यों असि उच्छट देवकी रन चित्रं रचाया ॥
 खंडेराय खिलहारकों खगों बल खाया ॥ १५२ ॥

(दोहा)

नरउर पतिको सचिव हनि, खंडेराय सु नाम ॥
 बहुरि देवसिंह बल्यौ, कूरम दल जय काम ॥ १५३ ॥
 (पट्टपात)

छेद कर धीरा को ? विजमाया (मानद पूर्वक ठहराया) माला के पहार २ भ
 र गये (अथकाश रहित होगये) सो मानो मय के प्याला से मृत किया है १
 प्रेमसिंह का ॥ १४९ ॥ प्रेमसिंह को खांडेराय ने ४ तरवार से जीघ दबाया
 ५ गरदन में घुस गया ६ सम्मुख आया ७ जहा छेद छेद पर आत ई तदा ए
 द्विपों पर मान नहीं रहता तरवार के पाण से पचाया हुआ मांस जहा प
 तरवारे लगती है तदा से लजाती है ॥ १५१ ॥ वे खड्गकवच और टापा का
 काट कर १ मुख ही निकल जाते हैं जिसे कि १० भागन बेषनवाजा माया में
 तात चलायै वह मृत्ती ही निकल जाती है ११ युद्ध में आश्चर्य किया ॥ १०२ ॥

महाराज नृप *माम मृद पहिलें जु पलट्यो ॥

सुत ताके संग्रामसिंह कूरम दल कट्यो ॥

करनसिंह कछवाह चाहि तिहिं ओर चलायो ॥

पानी मानहु प्रलय उदधि सत्तन उफनायो ॥

अमकात खग आरत अपटि बाँजि दपटि सम्मुह कट्यो
त्रयनैनं निरखि बयरैय तदिन पय पय प्रति जय जय पढ्यो ॥५॥

इत संग्राम असंक करन कूरम उत उदत ॥

इत बुंदिय जय आस उत सु जैपुर जय इच्छत ॥

दोऊ जुरि जम दाव घाव खँग धाव घुमाये ॥

बहुरि मान अच्छरिन लुब्धिम आयास लुभाये ॥

वीर रु रउट्ट बीमच्छ बलि अति अचिज्ज रस उत्पज्यो ॥

नद्यत अनेक मुंडन निरखि भालचंद्र तदिन भज्यो ॥५५॥

करमन ग्रीवा कटत उनहिं वेताल उठावत ॥

अंत्र तलें आरोप बीन लय लीन वजावत ॥

मनुजैन रुंड सृदंग ढोल बजत हय ढँहर ॥

गोमुख गति गज मुंडि मचत संगीत मनोहर ॥

॥ १५३ ॥ *राजा बुद्धसिंह का मामा. मानों सातों ? ससुद्रों से प्रलय का पा
नी बहा २ घोड़े दौड़ा कर ४ उस दिन ३ शिव ने अवस्था का ४ वेग देख क
पग पग प्रति जय जय का शब्द पढा ॥ १५४ ॥ ५ कछवाहा करणसिंह अपटि
यों की दौड़ से घूमे ८ फिर इन लोभियों (अप्सराओं से विवाह करने के लो
भियों) ने ९ अपने युद्ध के परिश्रम पर उनमानवाली अप्सराओं को विवा
ह के लिये लोभ युक्त की वहाँ वीर रस, रौद्र रस, १० भीमत्स रस और ११ अ
श्चर्य (अद्भुत) रस उत्पन्न हुए और शिव की मुंडमाला में अनेक मस्तकों का
नाचते हुए देख कर राहु रोगहण होने की शंका करके १२ शिव के ललाट क
चन्द्रमा उस दिन आगा १५५ ॥ १३ ऊंटों की गरदन कटती हैं जिनको उठा
कर उनके आँतों की १४ ताँत बना कर वेताल लय में लीन होकर उस वीर
को बजाते हैं १५ मनुष्यों के रुंडों की सृदंगों और घोड़ों के १६ अस्थिपंजरों [ह
ड्डियों के पीजरों] के ढोल बजाते हैं हाथियों की कटी हुई मुंडों को १७ गोमुख

गायत पिसाच जुगिनि गंढकि लहकि सुसिर अनंद तत ॥
करि तांत खड सोमक किलकि हल्लोसक हाकिनि हलत १५६
(दोहा)

॥ रन दोऊ या बिधि रचत, सेजि करन रु संग्राम ॥
आजि न रुके लो अहर, ताजिन वगग तमाम ॥ १५७ ॥
कुपि दनिय कूरम करने, सोलखी उर संगि ॥
प्रतिगट पर अति भट यहहु, इततै बढिष उमगि ॥ १५८ ॥
आरिय खग चालुक रूपटि, बैल हय दपटि अलूक ॥
क्रिय मिर कूरम करनको, टोप सहित द्वे दूक ॥ १५९ ॥
हनि याहि रु मल्ला हुक्रम, खिचिय सेर खपाय ॥
लिय अम गाम रसोर पति, घासीराम निरौप ॥ १६० ॥
कूरम घासीराम तब, मिर आरिय सैमसेर ॥
कहत खिन वह मिर क्रियउ, सिव निज भौल सुमेर १६१
समर पगघो संग्रामको, देवसिंह हुत देखि ॥
कूरम घासीरामको, पूगो ससुंगुह पोखि ॥ १६२ ॥
देवसिंहके उर दुसह, हुत कूरम खग दीन ॥
पैठो कटि नैगोद पुनि, तरकि पंसुली तीन ॥ १६३ ॥
इहि अतर देखहु अनुल, तंस सिर आरिय तेग ॥

(वाच्य विशेष) की भाति केसर जनोहर संग्राम मयाते छैलाहा १ प्रस-
जता की भोली से विशाच और जागनिये गार्ती हैं तथा २ फूक से पजने
पाजे [पगी आदि]-१ खाण से मदेहण [याख यादि] पाजे पज कर कटेपुण
मस्तकी के ४ ताल मजारे करके ४ घूम के नाच से किलेकारी करके हाक-
निये पकमी हैं 'जिपों के समूह के नाच का नाम हल्लोसक है' ॥ १६४ ॥
युद्ध में महीं रुके ७ घोड़ों की पागे ८ काची, करके (घोड़ा की पागे काची
करना होइने का सूचक है) ६ कछकाह करणसिंह ने कोष करके १० परछी
शायु पर वह अर्पणत थीर हपर से मया ॥ १५८ ॥ ११ खचन घोड़े को बौदा
कोर ॥ १५९ ॥ १२ समीप ॥ १६० ॥ १३ खड्ग १४ समय १५ अपनी मुणमाया का
सुमेघ ॥ १६१ ॥ ॥ १६२ ॥ १६ छंदर का कचका [पेटी] कट कर ॥ १६३ ॥ १६४

हनि रसोर पतिकों हुलासि, बढ्यो बहुरि अति वेग ॥ १६४ ॥

हरियसिंह तौवर हठी, पुनि जहव परताप ॥

करनसिंह रठोर कुल, ये अरि पिक्खि अमाप ॥ १६५ ॥

*लिखत इन्हें मानहुँ लिखे, खग मँसिचान १स्वरकोन ॥

आयो देव सु उप्परहि, प्रलय माँहिँ जिय पोन ॥ १६६ ॥

तबहि देवके खंध तकि, तौवर आरिय तेग ॥

तीननइइन हनिकें तऊ, वीर न भो हत वेग ॥ १६७ ॥

जैतसुवन के इस जवग, तीनइलगिय तरवारि ॥

अरु खटइभट आमैरके, सरद लये रन मारि ॥ १६८ ॥

अब सु देव अति लोह छकि, परयो मृगछित प्रान ॥

हूरनकों हौंसहि रही, यँह आयुहिँ बलवान ॥ १६९ ॥

सालम दल सागर मथ्यो, अभय देव अति लाग ॥

तोउ न लँदो जय रतन, यँह बुंदीस अभाग ॥ १७० ॥

सठ सालम इक खालो विच, दुख्यो रह्यो भय दाव ॥

बुंदिय दल सम्मुह बढे, आमैरे उमराव ॥ १७१ ॥

(षट्पात्)

परसुराम परिहार जोध चालुक अति जुद्धिय ॥

साँवल गोर सजोर रूप चालुक्य अहुद्धिय ॥

जोरिवर नरु बंस लरिय चालुक्य सुरत सह ॥

बलि हड्डा बखतेस उदय चालुक लिप अगर्गह ॥

जगभानु हड्ड उद्धत जुख्यो कूरम पृथ्वीसिंह सन ॥

सजि माँहिँ माँहिँ दुव दल सुभट लग्गे इस लग्गन खरन ॥ १७२ ॥

॥ १६५ ॥ * देख करी देखे † मिचान (बाज, शिकरा) पाँच ने १ तीतर पाँचियों को ॥ १६६ ॥ १६७ ॥ १ जैतसिंह के पुत्र के ॥ १६८ ॥ २ अप्सराओं को इसके वरने की चाहना ही रही अर्थात् मरन नहीं ॥ १६९ ॥ ३ समुद्र को ४ जय रूपी रतन नहीं मिला सो बुद्धसिंह का अभाग्य था ॥ १७० ॥ ५ नावों में बिपां रह ६ आमैर के ॥ १७१ ॥ ७ लड़े में आगे ॥ १७२ ॥

[नि शाणी]

दोऊ ओर दुबाह पों असि बाह अछकैं ॥

उरों डाइल डिहिमी डकों डक डकैं ॥

सेल भचकैं सकुले अति घाय उबकैं ॥

सीस कपाली सयहैं काली सु किलकैं ॥ १७३ ॥

खुर बजाई खगन धारा धमककैं ॥

कुक्कैं क्रोह करारिकैं कमठेस मचकैं ॥

नीसासा नासानुगी आसांगज तक्कैं ॥

भोगी भोग न भित्तिसकैं भुम्मी अकबकैं ॥ १७४ ॥

चोहों दिस रोहों रुके छोहों भट छक्कैं ॥

जड़े जजीरन जरे वड़े गज बकैं ॥

तांगी तगन तोरिकैं फालों फररकैं ॥

मेह अहवर मडती रज अवर ढकैं ॥ १७५ ॥

के सूगन थकैं कलह के हून तकैं ॥

गात नमावैं गिदनी गिलि गूद गजकैं ॥

के घायक, पायक कटैं सायकैं सकसकैं ॥

खधे खेलह खिलहारके भट सेल भचकैं ॥ १७६ ॥

खड चटकैं खुप्परी लागि लुत्थि लटकैं ॥

सेलों मार सुमार वैं असवार उंचकैं ॥

धुकि इत्थी धीरन धरैं जजीरन जैकैं ॥ — — —

लैकलकैं बरछी लगत छलि घाय छकैं ॥ १७७ ॥

रीस बटकके अगके के सीस पटकैं ॥

१धीर२बाघ विशेष३अकवाश रक्षित४शिष्य॥१७३॥५घराह६नासिका के साय
बलनेपाछे निडवास से ७ दिशाओं के हस्ती ८ शेष नाग ९ व्याकुल होकर
फलापर भूसि नहीं भेल सका ॥ १७४ ॥ १० चारों दिशा ११ रोक से १२ क्रोध
१३ जाहे [मोटे] १४ घोड़े ॥ १७५ ॥ १५ खारभजन [होग] १६ बाण ॥ १७६ ॥
१७ जजीरों से, पांश कर, पकब लेते हैं १८ कापसे हैं ॥ १७७ ॥

के कंकट संकट कटें ते तेन तरुणें ॥
 सिर फटें धर उच्छटें काठ भंग फटकें ॥
 हथ हटें पय उच्छटें रथ भंग रटकें ॥ १७८ ॥
 खोड़ी बुढ़नि जातकी धावा धकधकें ॥
 केडाकिनि खप्पर भैं के खाकिनि छैं ॥
 चंड कृपानी चंचला चलि चंग चमैं ॥
 सौं अंबर आयुध उडें गिन नाग लटकें ॥ १७९ ॥
 बीरों बीर बरवाँ तस्वारी तरुणें ॥
 दो हथिन स्तारें दपटि के गथिन तलें ॥
 के भंगक बंदक बजें के डोरा डमकें ॥
 के जंछुन मंड बैलन के कंक फिलकें ॥ १८० ॥
 के बंकाँ छुल्लें दित्त रसबीर उडें ॥
 मूर उडें समुझी नभ हूर थरकें ॥
 तीर दुसरोँ निदखरें रनधीर रटकें ॥
 के भीतर मानक कटें के कैतर चकें ॥ १८१ ॥
 सोर मलकें लंछुनी तपि घोर लुपकें ॥
 के कंकट आडोपकें के टोपी चमकें ॥
 गुंघे बडल धूनके छाये छिति उडकें ॥
 कपि बरकें के लुकें पय कपि लरकें ॥ १८२ ॥
 घांग हलकें के हकें हथीन डलकें ॥

१ कवच से घिर हुए रथवरन होकर उड़ते हैं ॥ १७८ ॥ ४ साँवली की लोचनी (वीरवहूटी) के समान घाल रक्त की गारा निकलती है. ५ अंगर सङ्ग रूपी ६ विद्युत् [बिजुली] ७ आकाश में = लप ॥ १७९ ॥ ८ बीरों बीरों में परावर १० नगरे ११ गाँव १२ आल (झुपा, लुका) ॥ १८० ॥ १३ आद १४ बीर रस चढती है १५ दोनों ओर घुड़कर १६ लड़ते हैं १७ माला जाता १८ कायर ॥ १८१ ॥ १९ खीलें. कितने ही लोग कहते हैं तब कितनेक २० कषणों को २१ मस्तक पर टक लेते हैं. हुए को धादल दौड़ कर २२ शक्ति को टक देते हैं ॥ १८२ ॥ २३ हाथियों के हलके [सौ] हाथियों के समूह को हलका कहते हैं

गीत अलापों जुगिनी लौ जात ललम्कै ॥
 ग्राम सुपै गधामे तीखे स्वर तकै ॥
 ज्यों नर त्यों दैवर उडै ज्यों गैवर जकै ॥ १८३ ॥
 धातों जग निम्मानके अभिमान असक ॥
 पानी मुम्मि पताललां जिम थाल थरकै ॥
 अग्घे अग्घे होहु यों बँडे भट बकै ॥
 त्यों त्यों पय पच्छे लागै छती धक धकै ॥ १८४ ॥
 समय घोर सँवारको इहिरीति उवकै ॥
 कौन पिता को पुत्र यों नाते सब थकै ॥
 उवैरिवेमै इकमे मन भीनें मुग्डै ॥
 जिम तिम प्यारे जीवकों तजनों नन तकै ॥ १८५ ॥
 कलबँछी बानी कडै अग्नि भीरु भटकै ॥
 पाप चटकै पैगडों लरि लुँथि लटकै ॥
 अत उलज्भै अतसों जिम फेद जरकै ॥
 इक झटकै इककों पखरैत पटकै ॥ १८६ ॥
 केते होदन कगुगों गुरताल गवनकै ॥
 बापि बालेज क कडै के दँडर डकै ॥
 पिछि मचस्कै पसुली गीठकै वरककै ॥

१ गाली है २ तो भी गायान ग्राम स तीख स्वर से गती है 'राग के समूह को ग्राम कहते हैं वे तीन हैं, ग्राह-

“यज्ञग्रापो न्यवादा मध्यमग्राम एव च ॥

गान्धारग्राम इत्यतस्त सामश्रयमुवाचतम” ॥ १ ॥

३ घोष ४ हाथा गिरने हैं ॥ १८३ ॥ ५ ब्रह्मा ससार ६ बनाने के अभिमान में ७ अशक्त होना है अर्थात्, जिनने अनुप्यन्सार जात हैं इतने पीछे पनाये नहीं जात ८ आगे, पढो आगे पढ़ा ॥ १८४ ॥ ९ नाश का १०-सम्बन्ध ११ पचने का समय से ॥ १८५ ॥ १२ झल्लाई हुई १३ बोलों के पागबान (रक्षापा) स १४ मृतक शरीर ॥ १८६ ॥ १५ शरीर का, पिंजर १६ पीठ की जड़ी हड्डी

केते हूल कृपानकी बांतूल बबककैं ॥ १८७ ॥
 फट्टैं मुंडन फाँक ज्यों दारिम दररकैं ॥
 कंध कफौणी कर कटैं करकोच करकैं ॥
 कट्टे किरत नितंब के जिम कच्छप जकैं ॥
 कटि जंघा सत्थी कटैं हत्थी हनि हककैं ॥ १८८ ॥
 व्यंजन प्रेत बनात के गहकांत गटककैं ॥
 केते टोप कंटाहकैं पय लोहितं पककैं ॥
 उँबी सिँबी अंगुली बहु सैकि बटककैं ॥
 खाजे पूँपी खल्लके ताजे करि तककैं ॥ १८९ ॥
 खुरमाँ खंडी खुप्पी चखखैं धर्मचककैं ॥
 भेजा भात भरायकैं गिलि जात गँजककैं ॥
 फैले घेउर पिप्परन छै'ले बनि छककैं ॥
 बुक्का ठोर बनायकैं बुँक्का भरि हककैं ॥ १९० ॥
 भुँजन ऐसे भूत गन करि केक किलककैं ॥
 जिहिँ बेल्ला संके जुरत बंके अकवककैं ॥

१ तरवार की हूल से २ घायड़ा (बाबला) ॥ १८७ ॥ ३ झुहनी ४ हाथ का कवच (दस्ता-
 ना) ५ कटेहुए नितंब (हूंगे) गिरते हैं सो किधों कच्छप पजे हैं ६ नितंबों के
 नीचे की जाड़ी जंघा को (जांघ) और उससे नीचे की ओर छुटनों से ऊपर
 की पतली जंघा को स्रक्षी (साथल) कहते हैं ॥ १८८ ॥ प्रेत ७ भोजन के पदा-
 र्थ बना कर ८ प्रसन्नता की बोली बोल कर खाते हैं सो कितने ही कटेहुए
 टोपों के ९ कंटाह बना कर १० रक्त रूप पानी में पकाते हैं, उन में अंगुलियों
 रूपी ११ दांघी (जब, गेहूँ का फल) और १२ फलियाँ लेकर खाते हैं और
 खाल (चर्म) के ताजे ताजे खाजे १३ पुड़ियाँ बना कर देखते हैं ॥ १८९ ॥ १४
 उस युद्ध में कटी हुई खोपरियों के खुरमे करके खाते हैं और भेजा रूपी भा-
 त मिला कर १५ खारभंजना (गजक) निगलते हैं फैलेहुए फीफरों के घेवर
 बना कर १६ रसिक होकर तृप्त होते हैं और बुँकों (खुडदों) के ठोर बना कर
 उनसे १७ सुख भरकर चलते हैं ॥ १९० ॥ १८ इस प्रकार के भोजन करके कि-
 तने ही भूतों के समूह किलकारियें करते हैं १९ उस समय दंडे वीर भी युद्ध

फाटि बकतर बिखरें के टोप चटक्कें ॥
 फील छटक्कें फाँदते खग हड्ड खटक्कें ॥ १९१ ॥
 भुल्ले के मग भाँवरी पग पकं खचक्कें ॥
 घुमै खेतपाल लौ घन रत्त घुटैकें ॥
 चाहे रत्त चटैठिकें चउसहिद्वचहकें ॥
 काय उभक्कें के कटै मरि पाय भभक्कें ॥ १९२ ॥
 लागै अवर लायसी के धाय टपकें ॥
 के बटके बटके करै भटकेन भमकें ॥
 नाच न चुकै डकिनी लौ डँच डचकें ॥
 ज्वाल भरकें के जरी गजहोल डरकें ॥ १९३ ॥
 बीर बकतर पारके दै तीर तमकें ॥
 दत्त दमकें हीरैलाँ चिनगी कि चमकें ॥
 सत्त लोक उप्पर सिकै धर सत्त धमकें ॥
 परि अहाँ दिकपालके कप्पाल कसकें ॥ १९४ ॥
 के भुक्कें गाफिल कटै लागि नैन पलक्कें ॥
 सेस करकें सकुली फनैपति फरकें ॥
 घायन सत्ये स्वास के भरि केन भभकें ॥
 छोह गरुँरी छोरि के सिर फोरि ससकें ॥ १९५ ॥
 भुल्लि भटकें के भिरै कैलि खान कटकें ॥
 महिलौ पय मजीरलौ हिँजीर ठमकें ॥
 वनै ठहकें बीरै में के वनै ब्रह्मकें ॥

करने को सकते और घपराते हैं १ हाथी ॥ १९१ ॥ २ भँवछ (बक) खाकर ३
 फीचट में घुसते हैं ४ रक्त की घूँट ५ पीकर ६ शरीर ॥ १९२ ॥ ७ आकाश में
 ८ घाव ९ तरवारों से १० मुख में पड़ा आस ११ हाथियों के मीसाय गिरते हैं
 ॥ १९३ ॥ १२ तीरों को फँस कर १३ हीरों की भाँति १४ जलत हैं १५ नीचे
 के साता लोक घुजते हैं १६ कपाल (लोपरी) ॥ १९४ ॥ घोष नाग की रीढ़क
 (पीठ की हड्डी) हटती है और १७ फलों की पत्ति पुरकती है १८ माग १९ घमघ
 ॥ १९५ ॥ २० युद्ध में २१ स्त्रियों के पंगों के नूपुरों के समान २२ साकछे पज
 ती हैं २३ नगरे २४ धीर रत्न में २५ तासे पजते हैं

पिष्टि कसकैं*कच्छपी धर धुजि धसकैं ॥ १९६ ॥

बे बंतुलि नाराहकी बहु भार बरकैं ॥

लौ के घायल लंकलकी सैटि निष्टि सरकैं ॥

को रजपूतों बल कठें धूतों परि धक्कैं ॥

पत्तं खरकैं जुगिनी के रत्त छक्कैं ॥

तछयो जिन तैसां तुंछुल ते फेरि न नक्कैं ॥

तदिन पंचोलासपैं नर नास न थक्कैं ॥

गों बुंदी आमेरकी अति लाज अटक्कैं ॥

हड्डे कूरग हल्लसों हरवल्लन हकैं ॥ १९८ ॥

[दोहा]

इहिं अंतर अवसेस अब, दुवर्नाडी दिवसेभैं ॥

बुंदी भट छिजत बढ्यां, विजय कूरमन बेसैं ॥ १९९ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचरूपूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुंदी
पतिबुधसिंहचरित्रे बुधसिंहदलेलासिंहोभयभूपसेनासमस्तद्रयप्रच्छ
न्नार्सानबुधसिंहकुत्साख्यापन १ चाहुमानागयसिंहसारसोपठवकुर
फतहसिंहसरदाठवकुरकोजूगमसुहाड़पतिश्यामलदासकूर्माचलमि
हबुद्धानीपतिबहादुरसिंहमारगानन्तरमरण २ बुन्दोजयपुरवीरहन

* कच्छप की ॥ १९६ ॥ १ दांनों २ क.प ३ लंछित होकर ४ धूतों के ऊपर
पत्र व रक्त ॥ १९७ ॥ ७ संकुलित युद्ध ८ उन दिन ॥ १९८ ॥ ९ बार्की १० दे
घडो ११ सूर्य रहते १२ अट ॥ १९९ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचरूपू के उत्तरायण के सातवें राशि में बुंदी के भूपति
बुधसिंह के चरित्रमें, बुधसिंह और दलेलामिह बुंदी के दोनों राजाओं की
सेना का युद्ध होना और युद्ध का भय से छिप कर बैठे हुए बुधसिंह की निंद
की सूचना १ चहुवाण अभयसिंह का सारसोप के ठाकुर फतहसिंह को मारना
अभयसिंह का ईसरदा के ठाकुर कोजूगम को मारना अभयसिंह का
सुहाड़ के पति श्यामलदास को मारना अभयसिंह का कछवाहे अचल
सिंह को मारना अभयसिंह का बुद्धानीपति बहादुरसिंह को मार कर मा-
रा जाना २ बुंदी और जयपुर के वीरों का द्वंद्व युद्ध करना ३ चहुवाण दे-

भवन ३ चाहुमानदेवसिंहस्य नरूकासरदारसिंहहनन ४ देवसिंहस्य प्रेमसिंहहन्तृनरउरसचिवखण्डेरावमारण ५ बुधसिंहमातुलपुत्रसग्रामसिंहस्य कूर्मकरणासिंहासुहरण ६ रसोरपतिघासीरामस्य सग्रामसिंहहननदेवसिंहतन्मारण ७ इतपटकूर्मदेवसिंहमूर्च्छासादन ८ दृष्टकुल्याप्रच्छन्नबुन्दोपतिसालमसिंहबुधसिंहसेनोपरिजयपुरसैन्यसमाक्रमण ९ मुहूर्तावशिष्टास्ताचलचुम्बिनि मरीचिमालिनि इतबुधसिंहसैन्यकूर्मकटकविजयवर्णन तयस्त्रिंशो मयूख ॥ ३३ ॥

अदित एकसप्तत्युत्तरद्विशततमः ॥ २७१ ॥

[दोहा]

नृपके वरजत जे निहग, अभय देव जिम आय ॥

तिल तिल बुदिय बीर ते, तुष्टे असिन अघाय ॥ १ ॥

तिनमें इक १ जैतह तनय, देवा लरन उदार ॥

मिचु न तउ मूरछि मरद, सुतो त्रिअसि समार ॥

(षट्पात्)

पथो अभयहरि प्रथम पारि पचपडि गजाउत ॥

पुनि निज सगहि परिगं सुगत पूरन दोऊरसुत ॥

हह देव पुनि हनिय नरुव सिरदार स्वतंत्री ॥

यसिंह का नरूके सरदारसिंह को मारना ४ देवसिंह का प्रेमसिंह को मारनेवाले नरहर के सचिव खंडेराव को मारना ५ बुधसिंह के मामा के घेरे भाई सग्रामसिंह का कछवाहे करणसिंह को मारना ६ रसोर के पति घासीराम का सग्रामसिंह को और देवसिंह का घासीराम को मारना ७ देवसिंह के छे कछवाहों को मार कर मूर्च्छित होना ८ बुंदीवाले सालमसिंह को एक नाले में छिपा हुआ देख कर बुधसिंह की सेना पर जयपुर की सेना का पड़ना ९ बुधसिंह की सेना के मारेजाने पर दो घण्टी दिन बाकी रहते जयपुर की सेना के जय पाने का तैतीसवा ११ मयूख हुआ और आदि से दोसो इफहत्तर २७१ मयूख हुए ॥

१ तरवारा से मृत होकर ॥ १ ॥ २ मृत्यु नहीं थी तोभी ३ मूर्च्छित होकर ४ तीनों तरवारों की मार सहित ॥ २ ॥ ५ अभयसिंह ६ पड़े ७ स्वतंत्री (अपने अधिकार में रहनेवाला, अथवा अपने अधिकार में लेकर) नरूके सरदारसिंह को

स्त्रिजि पुनि खंडेराय मारि नरउर पति मंत्री ॥

हनि पुनि रसोर पति वह हुलसि कूरम घासीगम कलि ॥

जहव कबंध तौवर जुरे बहे ते अरि तीनइबलि ॥ ३ ॥

(दोहा)

खगगन इस उमराव खटव, मारि देव वंसि मोह ॥

रिपु रुंडन मंचक रसिक, लारि सुतो छकि लोह ॥ ४ ॥

करन हुकम अरु सेर इन, तीननइहनि बलि तेग ॥

नाथउत्त संग्राम नर, बिनु सिर नच्चयो वेग ॥ ५ ॥

बदलेहु यह बैप्पकैं, नारी बदल्यो नाहि ॥

सीस अरथ बुधसिंहकैं, दै पतो दिव माहि ॥ ६ ॥

(पदपात)

परसुराम परिहार परचो चालुक जोधहि हनि ॥

चालुक रूपहि चकिख परचो साँवल गोरन मनि ॥

जोरावर नरु जात सुरत चालुक हनि सुतो ॥

उदयसिंह हनि परिग हडु बखतेस विरुतो ॥

जगभालु हडु जुजक्त हन्यो कूरम पृथ्वीसिंह कंह ॥

लगि माहि माहि छिजे लरत तोउ न कोप समात तंह ॥ ७ ॥

(दोहा)

बुंदीपतिको भट्ट बलि, नाम सु जहांगाय ॥

अति उद्धत हनि पंचअरि, तुहयो असिन अघाय ॥ ८ ॥

बारहसै १२०० इत्यादि बलि, दुवरदिस परिग हुंवाह ॥

भट्ट हजार १००० घायल भये, निडर देव तिन नाह ॥ ९ ॥

१ युद्ध से २ बलवानों को अधवा फिर ॥ ३ ॥ ४ मूर्छा के ३ वश होकर ५ शत्रुओं के धड़ों स्त्री मंत्र (चमारपाई) के ऊपर ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ पिता के बदलने पर भी ७ स्वर्ग में गया ॥ ६ ॥ ८ जौड़ वंश के क्षत्रियों का प्राणि ६ बिना भव करने वाला (मृतक होकर ॥ ७८ ॥ १० वीर ११ उन घायलों का निर्भय

(पट्टपात)

कुसथल पचोलास भयउ इम जगभयंकर ॥
चरमे अदि ढिग चपल हकि पहुँचत रवि हैवर ॥
विखम रारि हुव वध बुत्थि पत्थरि बट उव्वट ॥
देवघाँ सो लखि दाव खेत खोजन मेजे भट ॥
कुरापन कुरानुं चिति होम करि लाये डेरन घायलन ॥
जैपुर नरेस, जयसिंह जय बुदीपति अनजय विमन ॥१०॥

[दोहा]

बित्तो इम आहव विकट, जित्तो सालम जोर ॥
सोधत अब घायल सुभट, आगम निस दुहुँ ओर ॥
त्रिअसि घाय जैतह तनयें, देख्यो घुम्मत देव ॥
निज सिबिका पठवाय नृप, आन्यो वह ढिग एवं ॥१२॥
सुनत पराजय खग सजि, खिजि तँहँ भोप खवास ॥
पासवान रघु दुहुँन पुनि, विरच्यो लरि दिवँ वास ॥१३॥
वगजतहू तिल तिल बढ्यो, कटि अरिन अति कोप ॥
स्वामि हारि सहि नहि सक्यो, भलभल नापित भोप ॥१४॥
कछु, अनीकें बुदीसको, अँभय सग इम लगि ॥
यह, रन करि अब हारि गिनि, पलटयो द्रोहन पग्गि ॥१५॥
समय घोर परखे सुभट, बदले सब नय बोयै ॥
घायहुं सेके घायलन, सालम दल बिच सोय ॥ १६ ॥
गहे भँनुज बुदीस ढिग, डक सहेँस अनुकूल ॥

पति देवसिंह था ॥ १ ॥ २ चपल घोडा को हाक कर सूर्य के २ अस्तापल के समीप पहुँचते ही ४ मार्ग और बिना मार्ग बुझे ३ कैल कर ५ दोनों तरफ से ६ सुग्दों को ७ घिता की आग्नि में ८ विजय नहीं होने से उदास हुआ ॥१०॥
६ रात्रि के आने पर ॥११॥ १० जैतसिंह के पुत्र देवसिंह को तरवारा के तीन घायों से ११ इसप्रकार घुमते हुए को ॥१२॥ १२ स्वर्ग में ॥१३॥ १३ नाई ॥ १४ ॥
११ सेना ११ अमरसिंह के साथ ॥१५॥ १५ नीति को कुशो कर ॥१६॥ १६ मनुष्य

साल्म बिय दल नव सहँस ६०००, मुरयो बहुरि अघ मूल १
इहिँ अंतर अंधार अति, कुहुँ निस आगम कीन ॥
बुंदीपति मतिमंद बुध, नाँती बिपति नवीन ॥ १८ ॥

(पट्टपात)

जिहिँ बुंदिय हित देवसिंह मैनेन रन मारिय ॥
जिहिँ बुंदिय हित समरसिंह वर दुर्ग विथारिय ॥
जिहिँ हित सूरजमल्ल रतन रानाँ खिजि खढो ॥
जिहिँ हित भोज सजोर लरि रुँ सूरति जय लढो ॥
जिहिँ हित जयीस संभर सँता साहजिहाँकोँ सीस दिय
बुध धरहिँ छोरि जारन बिखय तदिन वह बुंदिय तकिय ॥

(दोहा)

बुंदी पति बहुबिधि बिगारि, असो भयउ अंसत्त ॥
अर्थ बिनु हल जिम अंधकी, वरनी जाय न बत्त ॥ २० ॥
कूरम दल इत बिजय करि, साल्म सहित सँहास ॥
समल किन्न आमैरको, कुसथल पंचोलास ॥ २१ ॥
इमे कुसथल अनिरुद्ध सुँव, पाय अनादर उच्च ॥
इमे रति बितायकैँ, कोटाकोँ किय कुच्च ॥ २२ ॥
संभर देव सु जैतसुँव, असि त्रयऽपायल अंग ॥
छुट्टी जानि स्वकीयैँ छिति, सिबिका चढि हुव संग ॥ २३ ॥

॥ १७ ॥ १ नष्टचन्द्रा अम्हापास्या की रात्रि २ बुलाई ॥ १८ ॥ ३ सैनो
को ४ श्रेष्ठ गढ का विस्तार किया ५ सुरत नामक शहर से जय करनेवाले ६
चहुवान शत्रुशाल ने ८ पति बुधसिंह को छोड़ कर. जारों से भोग करने को
उस बुन्दी ने जारों को उस दिन देखा ॥ १९ ॥ १० अशक्त (बाताकत) ११ जि
स प्रकार बिना स्वर की सहायता के हल् अक्षर नहीं बोला जाता तिस प्रकार
उस अन्ध की वार्ता नहीं कही जाती ॥ २० ॥ १२ दास्य सहित ॥ २१ ॥ १३
इसकारण १४ बुधसिंह १५ उदास होकर रात्रि बिता कर ॥ २२ ॥ १६ अपनी
१७ श्रुति छुटी जानकर

(पट्टपात)

घटि चलिय चहुवान छोरि बुदिय छप्राधर्म ॥

कोटा निबैसथ मगरोल किय तँहँ मुकाम क्रम ॥

हो दुवसरानिय संग पुर सु कोटा पठवाई ॥

पठयो सालिक पास कुमार निज रु यह कहाई ॥

तुम देवसिंह जिहिं तिहिं तरह याहि जियावहु छत्र अथ ॥

जपसिंह जोर पिखवहु जवर गुंमर तोर मडत गजब ॥२४॥

[दोहा]

सेवा सु हरी ग्रामको, गुज्जर गेदा गीत ॥

जिहिं निज धावर धाई जुत, पलनौ लिय धरि पोत ॥२५॥

चुडाउत सीसोद भट, भारतनाम सुभाय ॥

कढन छत्र नृप कुमारकै, सो दिय संग सहाय ॥ २६ ॥

[पादाकुलकम्]

धावर भारतसिंह पिंधाये, चम्मेलि उत्तरि सजव चलाये ॥

डविमय नाम विंदुमति ग्रामह, आय उहाँ विगचिय विश्रामह ॥२७॥

जहँ दलसिंह इह भोजाउत, जतनन रक्खे गेह विनैय जुत ॥

कुमर उमेद रति यँहँ कष्टी, प्रात लगिय बेघम मग पैट्टी ॥ २८ ॥

गिरिबैर घटिय लघि बेग गति, पहुँच्यो बाल नैर बेघम प्रति ॥

देवसिंह मातुल बेघम द्रुत, जाय बघाय लमो उच्छत्र जुत ॥२९॥

इत सालम लागि पिछि उढायउ, मगरोल बुद्धि पहुँचायउ ॥

पञ्जो मुरि आयउ बुदिय प्रति, अमल स्वकीय कियउ जय उन्नति ॥३०॥

॥२१॥ १ अथम (नील) क्षत्रिय २ ग्राम ३ चपने साले वेधम के राखत देवसिंह के पास ४ घमड और प्रताप से ॥ २४ ॥ ५ घाऊ ६ पालक [चम्मेवसिंह] को पलने में घर क्षिया ॥ २५ ॥ २६-॥ ७ छिपेहुण अथवा दौड़े ८ बुन्दी का ग्राम ॥ २७ ॥ ९ यतनो से १० नम्रता सहित ११ शीघ्रता की दौड़ से ॥२८॥ १२ अष्ट पर्वत (आवायला) की घाटी छाव कर १३ भाँसा ॥ २९ ॥ अथवा, अधिकार ॥ ३० ॥

दिन्नी मुलक दलेल दुहाई, सेठकों नृपता अधिक सुहाई ॥
 छत्रमहल बिच रहि छात्राधम, कियउ राजधानी भुग्नन कम ॥३१॥
 भुल्लि गुनहँ डम अस सुलायो, मनहु राज पीढिनतँ पायो ॥
 भुल्लत कर दासिन भक भोरन, कनक पउत कनक दिंडोरन ॥३२॥
 मंगरोलतँ इत मति मुद्धह, बिनु सुधि चलयो करम जिम बुद्धह ॥
 स्यंदन सत १०० वारन बत्तीसह, बहलदेल डेरा इकबीसह ॥३३॥
 पुनि सतसत्तरि १०० संकट प्रमानह, रुचिरँ पालकी तखतरवानह ॥
 इत्यादिक बहु रँखत सुहाये, खरचहीन तथहि रखवाये ॥ ३४ ॥
 अप्प चलयो जित मुँह तित असै, पै न बिचार कोन गृह पैसै ॥
 गहन लंघितँ राज गिरि घंटिय, भूखन भंजि बैलहिँ जर बंटिय ॥३५॥
 राजा इम पहुँचयो प्रमाद रँढ, ग्राम प्रेमपुर व्है मधुकरगढ ॥
 कछुदिन तथ रह्यो कउलेसह, देखन चह्यो रानको देसह ॥३६॥

(दोहा)

असित जेठ तेरासि १३ दिवस, सिद्धियोग रविवार ॥
 मधुकर गढतँ बुद्ध नृप, सुरि चलयो मेवार ॥ ३७ ॥
 कुसलसिंह भट रानको, भँसरोर गढ धाम ॥
 तथ बँभनी सरित तट, किन्ने जाय मुकाम ॥ ३८ ॥

पादाकुलकम् ॥

सगताउत भट भँसरोर पति, बहु प्रँज कुसलसिंह रचि विन्नति ॥

१ दुष्ट का २ राजा पन ३ अधम (नीच) क्षत्रिय ॥ ३१ ॥ ४ अपराध भूल कर ५ दासियों के हाथों के झोलों से ६ कनकसिंह का पोता ७ स्वर्ण के दिंडोलाद पर ॥ ३२ ॥ ८ मतिमुद्ध ९ ऊट के समान १० बुधसिंह ११ तथ १२ हाथी १३ दल घादल यह बड़े डेरे का विशेषण है ॥ ३३ ॥ १४ छत्रमहल (महलियाँ) १५ सुन्दर १६ तखतरवाँ (वास) १७ नरघान विशेष १८ मोमग्री (सामान) ॥ ३४ ॥ १९ जिधर मुख हुआ उधर २० परन्तु २१ पूर्वमे कालामे है २२ सेनाको ॥ ३५ ॥ २३ घावलापन के हँठ से २४ वासमार्गियों का पति ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ २४ अम्हरी नामक नदी के किनारे ॥ ३८ ॥ २५ बहुत सन्तान वाला

सम्मुह आयनजरि हय किन्नो, अरु तिहिँ नृपहु बाजि इक १ दिन्नो १९
रत्ति इक १ पिच्छेँ बेघम रहि, चाहवान गो-उदयनेर चहि ॥
आय रान सग्राम मन्नि सुहै, मोहिछा मगरी लग सम्मुह ॥ ४० ॥
मिलतहिँ मुद बुदीस बढाभा, चरन रान प्रति हृत्थ चलायो ॥ १
रान सु हत्येँ पकरि अनुरेत्तो; मुसकिँलाये छत्तिय मय मत्तो ॥ ४१ ॥
इहिँ विधि प्रकट कियो अति अहर, अरु विमना कूरम हित अंतर
प्रबिस्पो पुनि बुद्धिँ लौ पंतन, महिमाती पठई राकोचन ॥ ४२ ॥
इति श्री वशमास्करे महाशम्पूके उत्तेराप्रणो सप्तमराशौ बुन्दीप-
तिबुधसिंहचरित्रेँ सग्रामहतक्षतप्राप्तगणानया सह समराङ्गणान्वेषण
त्पक्तबुधसिंहबुन्दीमुभटसाजमसिंहमिलन १ सालमसिंहकुसयला-
धिकारातन्तरप्रदुतबुधसिंहकोटादिगगन २ कोटामुक्तपत्नीहयबु-
धसिंहस्वकुमारिस्मेदिसिंहबेघमप्रेषण ३ मगरीलमुक्तगजरथादिप-
रिकरबुधसिंहोदयपुरगगन चतुस्त्रिंशो मयूख ॥ ३४ ॥

ओदितो द्विसप्तत्युत्तरद्विशततम ॥ २७२ ॥

(दोहा)

१ घोमा ॥ ३९ ॥ २ सुख मान, कर ॥ ४० ॥ ३ मोहशराना के चरणों में हाथ मढ़ाया
४ प्रीति युक्त हुआ ५ इस कर छाती के लगा कर ६ हृदय में मदमत्त हुआ ॥ ४१ ॥
७ जयसिंह के कारण भीतर से बड़ास था ८ नगर में गया ९ अपने घर
पर आने के सफीष से महिमाती भेजी ॥ ४२ ॥

श्रीवशमोहकर महाशम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के राजा पुष-
सिंह के चरित्रों में युद्ध में मरनेवाले और घायलों की गणना के साथ युद्धक्षेत्र
को हरने का वर्णन और बुन्दी के बमरायों का बुधसिंह को छोड़ कर साजम-
सिंह से मिलना २ कुसयल में सालमसिंह के नाम ल करके पर बुधसिंह का
कोटा की ओर जाना ३ बुधसिंह का अपनी दोनों राखियों को फोड़े और कु-
मर शम्भेसिंह को बेघम भेजना ४ बुधसिंह के हाथी रथ आदि घोड़ों को
मगरील में छोड़ कर उदयपुर जाने का खोतीसवा ३४ मयूख समाप्त हुआ
योर आदि से दोसौ पशुत्तर २ २ मयूख हुए ॥

इत कूरम मालव अवनि, सुनि कुसथल संग्राम ॥

कंदन मनि निज भटनको, कुप्पि फिरयो जयकाम ॥२॥

पादाकुलकम् ॥

मनहुँ बैगध बिचिछय चटकायो, जानि प्रलय भूतेसँ जगायो ॥

कुच्च कलहँ जयसिंह मानि किय, कोटा सीम मुकाम आनि किय २

हो दलेल संगहि सालम सुत, बहयो राज जिहिँ स्वामि धरम च्युत

वा जुत नृप कूरम उफनायो, इम हुत सरितँ कुसक तट आयो ॥३॥

कुसकहि गयो मिलन कोटापति, बिरचिय समय जानि अति विन्नति

इय गज बसन नजरि करि दह्या, तजि नृप धरम खुच्यो अघ दह्या ॥४॥

पञ्चभटिका ॥

उज्जैन अनुग नृप करि इकल, तनि मंत्र जाल जयसिंह तत्त ॥

लिय बुद्धहिँतुँ जो दँल लिखाय, दिय प्रकट बचि सबहिन दिखाय ५

कहि रानहु छप्प्यो लिखित एह, लिखवाय सँकिख निज भटन केहँ

अब निजनिज छापन तुमहु अंकि, रबी करहु हुकम दिल्लीस संकिद

कोटेस छाप तब प्रथम कीन, हुत ओर नृपन पुनि छापदीन ॥

सुंबाँलुंग भूपन सबन सकिख, राजा लिखाय लियटेक रकिखा ७

पुनि तिहिँ मुकाम कूरम प्रवीन, क्रमजुत दलेलँ अभिसेक कीन ॥

कोटेस हत्थ पहिलँ कराय, बलि तिलक हत्थ अवरन बिधाय ८

करि बहुरि अप्प कर तिलक कुम्म, सिर धरिय छत्र नग लँलि-

त लुम्म

पुनि ठोरिय चामर अप्प पानि, बुन्दीस रावराजा बखानि ॥ ९ ॥

१ नाश ॥ १ ॥ २ बाघ (सिंह) को ३ बिच्छू ने काटा ४ शिव को ५ युद्ध होना

मान कर जयसिंह ने कुँच किया ॥ २ ॥ ६ स्वामि धर्म से गिर कर ७ नदी

॥ ३ ॥ ८ राजाओं का धर्म छोड़ कर ९ पाप के लड़े से फसा (गढ़ा) ॥ ४ ॥ १०

सेवक ११ बुधसिंह से १२ पत्र लिखवाया था वह ॥ ५ ॥ १३ सालि १४ लेख

॥ ६ ॥ १५ सूबा के साथ चलने वाले (सेवक) अर्थात् उज्जैन के सूबे के राजाओं

ने ॥ ७ ॥ १६ दलेलसिंह के १७ कराके ॥ ८ ॥ नगों की १८ सुन्दर लूँबोंवाला ॥ ९ ॥

जयसिंहका अपने बमराबोंको पटावेना]समसरासि पचत्रिंशमयुग(३१६३)

धरु कोटापतिसौ कहि अठेल, बुन्दीस गिनहु अब यह दलेल ॥
जो आवहि बुदिम सुभट छुट्टि, तो ताहि न रक्खहु लेहु छुट्टि ॥१०॥
इय अठ सप्त इक १७८७ अब्द मान, वनि विसद जेठ तेरसि १३
बिधान ॥

इम करि दलेल अभिसेक अंक, समयानुकूल्य कूरम निसक ११
निज कृष्ण कुमरि तनया सु नाम, लांगलि भिलाय ताके ललाम
मन्नि सु दलेल जामात स्वीय, गज इक १ अरोहि वोळरंगरीय १२
कोटेस पटालयें किय प्रयान, थिर हुव त्रय ३ इक १ हि तखत थान ॥
सिरुपाव वाजि दुवर २ दुवर नवीन, कोटेस दुहुनकी नजर कीन १३
तदनतैर कूरम तोरें तिकख, कोटेसहि कोटा दियउ सिक्ख ॥
उज्जेन अनुग अवरहु असेस, दे सिक्ख रु पठये स्वस्व देस १४
कूरम दलेल जुत बिरचि कुच्च, आयउ भुव कुसथल गुंमर उच्च ॥
सयाम भुक्ति तैं लखि समस्त, आत्मीयें भटन बटिय अन्नस्त १५

[दोहा]

इह अभय पहिलें हरियें, सारसोप पति रवास ॥

वाके सुत रतनहिं दियउ, पंतन पंचोलास ॥ १६ ॥

अजितसिंह कोजुव तैनय, ईसरदापुर ईस-॥

कुसथल पुर ताको दयो, इठि जयसिंह महीस ॥ १७ ॥

सांवलदास सुहाडपति, सुत सोभाग सनाम ॥

वाहि पलोधी पुर दियउ, कूरम नृप जय काम ॥ १८ ॥

नाह नगर नानेहिको, आहव मृत अचलेस ॥

१ नहीं डिगै जैसा (यह दलखानसिंह का विशेषण है) २ बुन्दी का बमराब ॥ १० ॥

३ प्रमाण वालो सम्बन्ध में ४ छुट्टन पक्ष ५ विधि पूर्वक ॥ ११ ॥ ६ पुत्री ७

नारियल-झपना-जमाई ॥ १२ ॥ ८ हाथी पर दोनों राजा सवार होकर १० दे-

रा म ॥ ११ ॥ ११ जिस पीछे १२ प्रताप की तीख से ॥ १४ ॥ १५ घमंड से १६

अपने बमराबों को १७ निर्मय होकर घाटी ॥ १८ ॥ १९ अभयसिंह ने २० लिया

१० पुर ॥ ११ ॥ कोजुराम का १२ पुत्र २० श्रुति ने ॥ १७ ॥ १८ ॥ २१-युक्त

सुवन तास हरिसिंहको, *बसुलग्रामक दिय बेस ॥ १९ ॥

सुवन बहादुरसिंहको, पुर बुढानी पाँताल ॥

दस १० ग्रामक तिहिँ हित दये, ढुंढाहर गिनि ढाल ॥ २० ॥

घासीराम रसोर पति, पुतहिँ ग्रामक पंच ॥

दिय भूपति जयसिंह दुत, पैहु रचि नीति प्रपंच ॥ २१ ॥

कपंच १ प्रपंच २ अन्त्यानुपासः ॥ १ ॥

अभयसिंह आत्मज अधम, नाथूरामह नाम ॥

पलटयो सठ रनके प्रथम, सालमसौँ करि साम ॥ २२ ॥

यातैँ नहिँ बलवन लियउ, मिल्यो जानि इन माँहिँ ॥

नाथूरामहिँ मन्नि निज, विस्वास्यो गहिँ माँहिँ ॥ २३ ॥

देवसिंहकी मेदिनी, इम बंटी कछवाह ॥

देवहु गिनि बुद्धहिँ अधन, कोटा गयउ सचाह ॥ २४ ॥

पुनि तजि पंचोलासकोँ, किय जयसिंह प्रयान ॥

प्रविरयो जैपुर निज नयर, उद्धत बिजय अमान ॥ २५ ॥

सोरठा ॥

स्त्रीय जननिके सत्य, उदयनैर ही जो अवहि ॥

तनयाँ बुल्लिय तत्य, कारन व्याह दलेलके ॥ २६ ॥

दोहा ॥

सुत समेत जयसिंहसौँ, रानाउति सु रिसाय ॥

बरख छियासी ८६ माघ बिच, पैती पीहर जाय ॥ २७ ॥

ही तबतैँ तत्थहिँ-सुन्यौँ, अब तनया आव्हान ॥

सालम सुतके व्याहकोँ, यातैँ पठई सा न ॥ २८ ॥

रा * आठ उत्तम ग्राम दिये ॥ १९ ॥ † पालन करनेवाला ॥ २० ॥

१ प्रभु (राजा) ने ॥ २१ ॥ २ पुत्र ॥ २२ ॥ २३ ॥ ३ भूमि ४ बुधसिंह को निर्धन जान कर ॥ २४ ॥ २५ ॥ ५ पुत्री को जयपुर बुलाई ॥ २६ ॥ ६ गई ॥ २७ ॥ ७ पुत्री का बुलाना ८ उसको नहीं भोजी ॥ २८ ॥

कर्म पुनि कहि मुकलिय, नहिं यह सालम नंद ॥

हैं अब यह बुदीस *सुब, अधिप दलेल अमद ॥ २९ ॥

हुकम साह लिखवाय हम, दिय इहिं राज्य दिवाय ॥

जिहिं रक्खन हम रान जुत, सब कहवाह सहाय ॥ ३० ॥

यातैं कछु न विचार अब, इहिं ललाट नृप अंक ॥

तनया देहु पठाय तुम, सोक बिहाय निसक ॥ ३१ ॥

निज रानी पति प्रन्न इम, पठयो कर्म पात ॥

पै कुमरी कछु रोग पगि, आय सकी नहिं हाल ॥ ३२ ॥

इति श्री वंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण सप्तमराशौ बुन्दी-
पतिबुधसिंहचरित्रे जयपुराधीशजयसिंहयोज्जयनीतो बुन्दीदिग-
मन १ बुदीराज्याभिषिक्तदलेलसिंहेन सह जयसिंहस्वसुतासन्वध-
करण २ दृष्टकुसस्थलयुद्धक्षेत्रमृतस्वभटतत्सूनुबुदीग्रामवितरण ३
दत्तभूमिजयसिंहजयपुरगमनवर्णन पञ्चलिशो मयूख ॥ ३५ ॥

आदित्सिसप्तयुत्तरद्विंशततम ॥ २७३ ॥

(दीहा)

इत नृप प्रविम्बो उदयपुर, स्वसुर हवेली पास ॥

आंधे छज्जनके महल, उतरयो तत्थ उदास ॥ १ ॥

मोदक फल भोजन अमित, पुनिरूपय सत पच ५०० ॥

* बुन्दी के पति का पुत्र है ॥ २६ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥

श्रीवशभास्कर महाचम्पू के सप्तमराशि के सातवें राशि में बुन्दी के राजा
धर्मसिंह के चरित्र में, जयपुर के राजा जयसिंह का छज्जना से बुन्दी की ओर
गाना १ दलेलसिंह के बुन्दी का, राज्याभिषेक करके अपनी पुत्री का दलेल-
सिंह से संध कराने राजा जयसिंह का कुसस्थल के मुकाम मुख क्षेत्र को
देख कर, आने में हुए समराधों के पुत्रों को बुन्दी के ग्राम जागीर में देना
१ जागीरें दिये, पीछे जयसिंह के जयपुर जाने का पैंतीसवा ३५ मयूख समा-
प्त हुआ और आदि से दोसौ तिहास २७३ मयूख हुए ॥

१ धर्मसिंह २ वंशम की हवेली [जहाँ पर अब रेजीडेन्सी है] के पास ३ आंध
छाजा के महल (अब भी इसी नाम से प्रसिद्ध है) ॥ १ ॥ ४ छह (निर्वाह) ५ पात्र

महिमानी इम मुक्कलिय, रान विरचि हित रंच ॥ २ ॥
 विपति अतीन विचारिकैं, इकत करि उमगाव ॥
 कहिय रान बुधसिंहकैं, द्रुत धर आवन दाव ॥ ३ ॥
 पंचन कहि तव रान प्रति, विधि कोटेस बुलाय ॥
 मंत्र रचहु नृप तीनै मिलि, पहुमी लैन उपाय ॥ ४ ॥

पादाकुलकम् ॥

पहु बिचारि इम रान मंत्र पन, कोटा पति बुल्लिय इहिं कारन ॥
 पुनि गिनि बुद्धहिं जनक जामि पति, अंतहपुर बुल्लिय मंडिय मति ॥
 रीति सु सुनि कूरमपति रानी, रान सहोदर जामि रिसानी ॥
 जनक जामि मम भुवा जियत नन, अंतहपुर बुल्लहु जिहिं कारन ॥
 बिनु कारन बुल्लहु नन बुद्धहिं, कछु मन्नहु कूरमपति क्रुद्धहिं ॥
 जामि बचन सुनि राने सोचि जिय, बुद्धहिं निज अवरोधन बुल्लिय ॥
 इहिं अवरोध गमन अवरोधहु, सुनि रु गमन चित्यो बिनु सोधहु ॥
 बिष्णुसिंह पुर बंसबहाला, भगिनी तस गुन रूप सुभाला ॥ ८ ॥
 नाम गुमान कुमारि सुभ लच्छन, बहुरि सीत गुन विनय विचच्छन ॥
 बच्छर हुवरके पुब्ब बिधौई, संभरपति सौं तास सगाई ॥ ९ ॥
 संपति बिनु पुनि व्याह सुहायो, पत्र दूत द्रुत अगग पठायो ॥
 मंगिय सिक्ख रान प्रति मुँदह, बरजिय तदपि रान नृप बुद्धह ॥ १० ॥
 पहुमी निज हित मंत्र प्रचारन, कोटापति बुल्लिय तुम कारन ॥
 अरु मम भटहु घरन तजि आये, अप्पन हित इम मंत्र उपाये ॥ ११ ॥

१ थांडा ला स्नेह करके ॥ २ ॥ २ एकत्र ॥ ३ ॥ ३ उदयपुर, कांटा और
 बुन्दी के तीनों राजा मिल कर ॥ ४ ॥ ४ पिता की बहिन (भुवा) का पति ५
 राखले (जनाने) में बुलाने की ॥ ५ ॥ ६ राना की सगी बहिन ७ पिता की
 बहिन ॥ ८ ॥ ८ बहिन के ९ अपने जनाने से नहीं बुलाया ॥ ७ ॥ १० जनाने
 से जाने का रोकना सुन कर उदयपुर से जाना बिचारा ११ अष्ट भाग्य
 वाली ॥ ८ ॥ १२ बिचच्छ १३ दो वर्ष पहिले १४ की थी ॥ ९ ॥ १५ मूड ने ॥ १० ॥
 ॥ ११ ॥

तुमको रूचत अनवसर उपनयै, मन्नहु तो डक वचन नीति मय ॥
 मम सालिय पानिग्रह मडहु, वधुनकै ओरहु तनया बहु ॥ १२ ॥
 जो हियरुचिहिं व्याहितिहिं अत्यहि, सजहु भुम्मि उद्यम हम सत्यहि
 सभरकहि यह पुच्छ सगाई, बलि छोरीं नन होत बडाई ॥ १३ ॥
 हठि हठि रान वराजि पुनि हारयो, बुद्ध मुद्ध नयै तउ न विचारयो।
 पुनि कहि रान आत कोटा पति, आये तुम घर हमहिं लज्जअति १४
 यातैं कछु विरचत उपाय अब, तुम इत जात कोन करिहैं तब ॥
 यह जो दृढ व्याहि रु द्रुत आवहु, जो बरै सचिव रक्खि तिहिं
 जावहु ॥ १५ ॥

मयाराम तब अप्प पुरोहित, अवनि उपाय काज रक्खिय इत ॥
 अप्प विबाह हरख उफनायो, चहि दिस दक्खिन द्रुतहि चलायो १६
 करहिं न व्याह विपति विच कोऊ, सभर पति अच्छोगिनि सोऊ
 मही सरित्त उत्तरि प्रमत्त मन, पहुँचिय वसबहाला पत्तन ॥ १७ ॥
 सावन असितैं सत्त वसु ८७ सवत, सद्धि लगन एकादसि ११ सगत ॥
 व्याहिय विष्णुसिंह भगिनी बत, राउल अजब सुता रमनी रंत १८
 बहु विधि राउल हरख बधाये, स्वागत सवन अपुव्व सधाये ॥
 रूचि बरात आश्विन लग रक्खिय, अरु पुनिहू जावहु नन अक्खिय
 धरिय बरैनि तत्यहि आधानह, यातैं तहैं रक्खिय बहुवानह ॥
 अभयसिंह मरुधर नरेस इत, चहि दिल्लीस निदेसैं करन चित २०
 मूवापति गुज्जरैधर स्वामी, ग्राम महँस सत्तरि ७०००० अनुगामी ॥
 प्रवल्त अहमदाबाद नगर पति, सरबिलंद जित्तन करि सम्मति २१
 सक मुनि वसु अत्यष्टि १७८७ मास ईस, हुँत हकिय गुजरात पहु-

१ धिना समय २ विबाह ३ चियाह ४ हमारे भाइया के ॥ १२ ॥
 ॥ १३ ॥ मूर्ख मुषसिंह ने तोभी ५ नीति नहीं गिहारी ॥ १४ ॥ ६ अष्ट ॥ १५ ॥
 ७ भूमि के ॥ ११ ॥ ८ मही नामक नदी ९ पुर म ॥ १७ ॥ १० यदि पक्ष १ सन्तो-
 प युक्त ॥ १८ ॥ १२ कुलहा वा रुचि पूर्वक ॥ १९ ॥ १३ कुलहि ने १४ गर्भ १५ बावन्हाह
 की आज्ञा ॥ २० ॥ १६ गुजरात के १७ सत्ताके साथ ॥ २१ ॥ १८ आश्विन मास १९ शीघ

मि दिस ॥

निदित बिजय दसमी सनि बासर, बिंठि अहमदाबाद लयो बैर२२
 अंग कछुक तोपन रचि जाहिर, बुल्लयो बहुरि डाक दै बाहिर ॥
 लखि आवत रठोर लरन हित, चहिरन सब हंकिष प्रसन्नचित२३
 ऊदाउत चंपाउत उद्धत, मेरतिया कुंपाउत दढ मत ॥
 जैताउत पुनि जैतमालाउत, बल्लहाउत करनोत जोरजुत ॥ २४ ॥
 पाताउत रु कलाउत प्रतिभट, बढि धूढ़ रानाउत रन बट ॥
 भदाउत रु महेचे बिजु भय, रूपाउत रु सताउत अतिरय ॥ २५ ॥
 गोगाउत रु करमसीउत जैहँ, देवराज रनधीर वंसि तँहँ ॥
 चाहड़देवउत रु पोकरनाँ, चंडाउत हुमंडि दढ मरनाँ ॥ २६ ॥
 जोधे रतन केसरी कुल भव, धंधल अरु सिंधल अरि बन दँव ॥
 भूपतिउत रतनोत बडे भर, मंडनउत चुंडाउत अर्सिकर ॥ २७ ॥
 बरसिंहोत नराउत अति बल, सोहड़ रायपालउत अतिभल ॥
 रनमल्लोत मंडलो रनरत, मुदित आरमल्लोत लरन मत ॥ २८ ॥
 बहुरि चंद्रसेनोत महाबल, इत्यादिक संजुरि चित उज्जल ॥
 नृप अभमल्लहिँ हत्थ दिखावत, लगे लरन मुच्छन कर लावत २९
 सरबुलंद सूरज कर सकिखयँ, निडर मिच्छे उततै हय नकिखय

१ दिन २ ओष्ट अहमदाबाद को घेर लिया ॥ २२ ॥ ३ क्रोध दिखाकर
 ॥ २३ ॥ (अब यहाँ राठोडों की शाखा गिनाते हैं) ॥ २४ ॥ ४ शत्रु से युद्ध करने
 वाले ५ उदयपुर के महाराणा प्रतापसिंह दिखा के दिनों में मारबाद में 'लोवा-
 रा' के पर्वतों में रहे थे तब प्रसन्न होकर लोवाणा के ठाकुर को 'राणा' की
 पदवी दी थी जो अब भी राणा कहलाता है जिसके वंशवाले राणावत कहलाते
 हैं और राव रिड़मल के वंश में राणा नामक एक प्रसिद्ध पुरुष हुआ था उसके वं-
 श वाले राणावत कहलाते हैं सो अब भी विद्यमान हैं और इसी जाति से
 प्रसिद्ध है परन्तु इस समय इनके अधिकार में कोई ठिकाना नहीं है ६ बड़े
 बेग वाले ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ ७ शत्रु रूपी बनों की अग्नि ८ हाथ से तरवार रखने
 वाले ॥ २७ ॥ ९ युद्ध में प्रीति करने वाले ॥ २८ ॥ १० साक्षी करके ११ मलेच्छ ने

आकुल भोगे सहस्र अकुलानें, डग मगि पव्वय कूट हुलानें॥३०॥
घने घुमड घग डैचि घोरन, रारि मचिग मिच्छन ग्ठोरन ॥

किलक प्रेत डाकिनि गन किन्नी, लॉसरय व्यैक्ति चउसष्टि ६४ न
लिन्नी ॥ ३१ ॥

डिगि बीचिन सिंधुन जल डोहयो, अरुन अव्वं सप्तक अवरोहयो ॥
कटि कंकट निकसत वपु कैसैं, जिहंग गन कचुक तजि जैसैं॥३२॥
कटि कटि कुभे तिरत सोनित किम, जल अगार्ध घट उडुपें टैं-
थुल जिम ॥

अली डमाम दोत उत औरव, इत हरि अच्छुत भूतनार्थ भव॥३३॥
भूत किलकि कहूँ हय भैरकावत, गो कि चोर लखि ग्वाज चलावत
कहूँ भट चरन रकौवन अटकत, मूढचित्त भोगन जिम दुर्मत॥३४॥
फटित केतु ईभन फहरावत, रमाँ तरु कि अँद्रि लहरावत ॥
गुटिका भ्रमत रीति पड रक्खिय, मनहु कूड सँरघाभिधमक्खिय॥३५॥

निर्मय होकर घोड़े बठाये १ कर्मव्यता में मूढ (अथ क्या करना चाहिए) हो-
कर शेष नाग के इजार फण घमराये और वर्षत हिलकर लगके २ गिल्लर छु-
ले ॥ ३० ॥ घटत घमड से घोड़ों की बागें ३ खिखर (घोड़े दौड़ा कर) स्नेह्या
और राठोडों के युद्ध हुआ यहां प्रेतों ने और डाकिनियों ने किलक करी ५
चौसठ शरीरों में योगियों ने ४ नृत्य किया ॥ ३१ ॥ ६ तरंगों ने चला कर
समुद्र के जल को मथा और सूर्य क सारथि अरुण ने सूर्य क ७ सात घोड़ा
के समूह को = रोका ९ कवच कट कर पीरों के आग ऐसे निकलते हैं जैसे १०
सपों का समूह काबली छोड़ कर निकलता है ॥ ३२ ॥ जैसे ११ गहरे जल में
घड़ा (कलश) तिरै घमघा १४ घड़ी १३ नाव तिष्ठे तैसे ११ हाथियों के क्रुभ
स्थल लटक कर रुधिर में तिरते हैं उपर (स्नेह्या की ओर) तो अली और ड
माम आदि पैगवाँ के १५ आव्व करते (नाम लेते) हैं और इधर (राठोडों) में
बिष्णु विष्णु और १६ शिव शिव करते हैं ॥ ३३ ॥ कहाँ पर मूग मिल कर
१७ घोड़ा को बमकाते हैं सो मानों पोरों को बेल कर १८ गध्यों को ग्वा
ल भगाते हैं जैसे मूर्ख विस्तवाला दुर्मति भागों में पड़ा रहै तैसे १९ पागधों
में अरण्य बलभ कर पीर लटकते हैं ॥ ३४ ॥ फटीहुई ध्वजा २० हाथियों पर
उछली है सो मानों २२ परतों के ऊपर २१ फेक का मृज कोका खाता है और
र काधित हुई २६ मधुमक्खियों के समान भिनभिनाती हुई गोखिया भ्रमती

निकसत*गोद कपाल हितु इम, मंजुांमदनामधुजाल हितुजिम
बहु आयुध आयुध पर बज्जत, लखि शूलरिदेवालय लज्जत३६
इम रन करि रहोर बढे अति, मिच्छन इनत धन्वपति सम्मति ॥
सरबुलंद लखि प्रबल भज्यो लठ, हारयो तजि गुजरात सहित
हठ ॥ ३७ ॥

बालि दिल्लीपति अमल बढायो, इम मरुभूप जिति रन आयो ॥
सुदित भयो सुनि साह सुहुम्मद, सरबुलंद दक्खिन गयहुम्मद ३८
हुम्मद १ हुम्मद २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

बुंदिय पति इत स्वसुर गेह रहि, दुलहनितत्यहिं रक्खि गमन चहि
कत्तिय सास कुच्च अप्पुन किय, दायज बंसु बहुविधि राउलदिय३९
दंतिर्य गह्वेराव सु दंतह, मास रहत बारह १२ मर्यमतह २ ॥
नृपके इभपालन वह नांयो, अँपत निर्गड जोर उफनायो ॥ ४० ॥
यह सुनि रान लयो वह हत्थी, सहँस १००० भेजि रुपय चँर सत्थी ॥
इत कोटिस उदैपुर आयउ, अधिप रान सह मंल उपायउ ॥ ४१ ॥
मयारास बिप्राधम तत्थहि, बुल्लयो कुँवच कुँमय अघ सत्थहि ॥
कहा रान पुच्छत कोटिसहिं, दब्ब्यो इन पहिलै नृप देसहिं ॥ ४२ ॥
इनकी लखि अवरन मन चल्लयो, तबहू इत न मुच्छ कर घल्लयो
कगँर लखि जयसिंह कथित किय, इनहिं पुच्छि लहिहो किम
बुंदिय ॥ ४३ ॥

इ ॥ ३५ ॥ † मधु मक्खियों के छातां (मुडाल के छातों) से सुंदर † मैल
निकलने के समान मस्तकों से * भेजे (मस्तिष्क) निकलते हैं कितने ही श-
स्त्र शस्त्रों पर बजते हैं जिन्को देख कर § मंदिरों से बजती हुई शालरें
लज्जित होती हैं ॥ ३६ ॥ १ मारवाड़ के राजा की सलाह से ॥ ३७ ॥ २ पुनि
३ मारवाड़ का राजा ४ दुर्मद (मान हीन होकर) ॥ ३८ ॥ ५ धन ॥ ९ ॥ ६
गाहेशव नामक हाथी ७ दिया ८ मदमस्त ९ बुधसिंह के सहावतों से १० न-
हीं आया ११ सांकलों को खेंचती हुआ ॥ ४० ॥ १२ हलकारे के साथ ॥ ४१ ॥
१३ नीच ब्राह्मण १४ अनीति और पाप के साथ १५ छोटे बचन बोला १६ बुधसि-
ंह के देश का ॥ २२ ॥ १७ पत्र १८ कहना

पह सुनि महाराव धांकि उठ्यो, रानहु बिप्र अधमपर रुठ्यो ॥
 इम नृपकाज बिगार बिप्र पैहँ, पहुँच्यो मगहि मध्य सैभग पैहँ ४४
 इम पुनि बुद्ध उदैपुर आया, बिपति जोर सब गुंमग विहायो ॥
 सम्पुह आय रान हित सज्जिय, लै प्रविष्यो पत्तन चहि लाज्जिय ४५
 हतिश्री वराभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणो सप्तमराशौ बुन्दी-
 पतिबुधसिंहचरित्रे बुदीहरणमन्त्रहेतुमहाराणासग्रामसिंहस्य को-
 टामहारावदुर्जनशल्पोदयपुराकारण १ पाणियदण्डहेतुबुधसिंहबा-
 सबहालागमनबुधसिंहपुरोहितकटुवचनश्रवणदुर्जनशल्पक्रोधकर-
 ण २ योधपुराधीशाभयसिंहादमदावादविजयन ३ बुधसिंहोदयपुर
 प्रत्यागमनवर्णन षट्तिशो मयूख ॥ ३६ ॥

आदितश्चतु सप्तत्युत्तरद्विशततम ॥ २७४ ॥

(षट्पात्)

रान नगर बिच रहिय हह भूपति इक १ दायन ॥
 सर सत ५०० रूप्य नित्य रान पहुँचात मान मन ॥
 सभा समय सभरहु जात पहुँ रान निकट जब ॥
 अदव रक्खि अति अग्र तखत तजिदेत रान तब ॥
 लैजात आय सम्पुह सरल इकासन बैठत उभय २ ॥
 सभरहि मन्नि पाहुन समुद बिनु बुदिय धागत बिनय ॥१॥

१ फाँच करके (भीतर से जल कर) २ बुधसिंह के पास ॥४४॥ ३ घमड़ छोड़ा ॥४५॥

श्रीवराभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सातवें राशि में बुदी के मूलति
 बुधसिंह के चरित्र में बुदी लेने की सलाह करन के अर्थ महाराणा सग्रामसिं-
 ह को कोटा के महाराव दुर्जनशाल का उदयपुर बुलाना १ बुधसिंह का विचार
 करने के अर्थ पासवहाल जाना और बुधसिंह के पुरोहित के कटु वचनों
 से दुर्जनशाल का क्रोधित होना २ जोधपुर के राजा अभयसिंह का अहमदा-
 बाद को विजय करना ३ बुधसिंह के पीछा उदयपुर आने के पथन का छत्ती
 सवा ३१ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ चोहत्तर २७४ मयूख हुए ॥
 ४ एक वर्ष ५ प्रभु १ एक गद्दी पर ७ दर्प सहित ॥ १ ॥

पादाकुलकम् ॥

बुद्ध पुगेदित मंत्र बिगारयो, नृपति रान हित तदैपि न टाग्यो ॥
अकिखन पुनि बुंदिय जब अईहैं, तुमहिं भूप जावन तव दैहैं ॥ २ ॥
अवैनि देन कूरम प्रति अकखहिं, रानाँपनको गँव्व न रक्खहिं ॥
जब स्वार्धान राजनिज जोवहिं, सुख सह निद्र हमहु तव सोवहिं ॥ ३ ॥
तोलों खरच स्वकीय मानें तत, दिन प्रति ५०० प-
हुँचत ॥

कहाँ, लगि हमरे हित बुंदिय लैहो ॥ ४ ॥
कहि नृपति कूरम पति, मम भुव जो दैहैं न टंक मति ॥
तो रन करि लैहो कि तँतविखन, प्राति तथा करिहो परपविखन ॥ ५ ॥
सुनियह रान सुजान नीति सैम, कहिय आज दिल्ली कर कूरम ॥
अकबरेग अजमेर अवंतियँ, सूबा तान अधीन साह किय ॥ ६ ॥
मित्र खानदोगाँ जिहिं मन्नत, सेनानी जु जवन पति मम्मत ॥
साहहु जास कथितँ सिर धारत, बलि अवरन जिहिं सैम न वि-
चारत ॥ ७ ॥

पुनि निज बनिबनिस्वसुर माल प्रिय, अकवर्गैं अवलों धन संचिय ॥
अरु बहु मुलक अप्पन न असो, जाम सचिव राजामल जैसो ॥ ८ ॥
राय कृपारामहु वकील रतँ, जास कथितँ जवनेस न लुप्पत ॥
गृह जाके दिल्लिय उमीर गन, पहुँचत कर जारत किंकरपन ॥ ९ ॥
जिनकी अरजसाहप्रति जंपत, बसुँ अधिकार मिलत तिनकोँ बत ॥

१ तो भी ॥ २ ॥ ३ भूमि पीछी देने का शर्वा ॥ ३ ॥ ४ आप के खरच के प्रमाण माफिक)
बुधसिंह ने कहा कि ५ जयसिंह की ॥ ४ ॥ ६ नम्रना ७ उसी समय ८ जय-
सिंह के शत्रुओं ने प्रीति करुंगा ॥ ५ ॥ ६ से १० जयसिंह पर दिल्ली के हाथ
हैं (यहाँ लक्षणा से दिल्ली के पति का ग्रहण है) ११ आगरा १२ उज्जैन ॥ ६ ॥ १३
सेनापति १४ जिस जयसिंह का कहना १५ जिसके बग़ावत ॥ ७ ॥ ८ ॥ १६ अनु-
कूल १७ जिसका कहना ॥ ६ ॥ १८ धन और अधिकार सन्तोष दायक मिलते हैं

है २ द्वै २ मत १०० * मिविका जिहि द्वारह, बहि पतिन ठकिजात
बजारह ॥ १० ॥

बैठक जाहि खास खिलवतिय, रमत माह सतरज हलसि दिय ॥
जिनके घर असेवकील जन, थिरन उथप्पि स्वामिजय थप्पना ॥ ११ ॥
जंग बिरचि तिनतै को जतहि, विनुहित काहि बिगाहि भवितहि
इहि कारन तिनतै रन उचितन, अवर उपाय रचहि बहु अप्पन ॥ १२ ॥
भेद उपाय कोहु नहि सभव, लगै नहि विनु समय जास लव ॥
यातै साम दान अनुसागै, कूरमसो तुमसो हित करिहै ॥ १३ ॥
विनु नैय समय होत नहि चाही, समर टेक नाहक तुम साही ॥
निज ठठ तो मम गज्य नमो, मैझ तुमहु को फल तब पेहो ॥ १४ ॥
सच्च कहत नृप मुद्द रिमायो, चलन हुकम सत्यहि पहँचायो ॥
हे सब अनुंग मूढ हथजोरे, न चलहु डम काहु न निहोरे ॥ १५ ॥
सक विक्रम अठ रु वसु सत्रह १७८८, बाहुल मास वृथा करि
बिग्रह ॥

अनखिं चल्पो सभरं अज्ञानी, बरजत रह्यो रान हित बानी ॥ १६ ॥
जदैपि मुरयो न रान तउ सज्जन, गज भूखन सिरुपाव बाजिगन ॥
पठये मितै दस्तुर बुद्ध प्रति, इनअखिखय हम करजदार अति ॥ १७ ॥
इनक दम्म पठावहु यातै, बनिकैन दै हम करज बिघातै ॥
तिनकी तीस सहँस ३०००० मुँदा तब, जानि बिपत्ति रान पठई
जब ॥ १८ ॥

करज मारि तिनकरि कउजेमैह, बुद्ध चलिय पैसुमति नरबसह ॥

* पालकिये † जिसके द्वार पर ॥ १० ॥ ११ ॥ ‡ धन ॥ १२ ॥ § परस्पर
प्रेम कराना (फोड तोड) १ लेशमात्र ॥ ११ ॥ २ घिना नीनि ३ युद्ध की ४ तु-
म बुद्धिमान हा ॥ १४ ॥ ५ मूढ ६ सेवक ७ हाथ जोडनेवाले ॥ १५ ॥ ८ कार्ति-
क मास मे ६ क्रोध बन्के १० बुधसिंह ॥ १६ ॥ ११ तो भा १२ दस्तुर के मा-
फिक ॥ १७ ॥ १८ अनियों को देकर १९ रुपये ॥ १८ ॥ १९ ग्राममार्गियों का
पति, १९ पशु की बुद्धि और मनुष्य के चेह से

हुँत*बाहुल मेचक चउत्थि४दिन, आयउ चलि। श्रीद्वार महड्डइन१९
 इकसत१००दम्भ भेट हँरि अप्पिय, थौवल गाम मुकाम सु थप्पिय
 बसि तत्थ रु दुव२मास बिताये, लंघन पुनि चालीस लगाये ॥२०॥
 अधिक अफीम बढ्यो नृप अगँ, पैसे त्रि३मित नित्य हित पगँ ॥
 पुनि तिम मद्य अवद्यहु पीवहिँ, जड़ बिनु भूख आयुबल जीवहिँ२१
 अमन लेत सत्तम७अठ्ठम८दिन, तुच्छ बहुत सोपै न पचै तिन ॥
 इहिँ बिधि अन्न अरुचि पर आये, लंघन तब चालीस४०लगाये२२
 तबहिँ अफीम मद्य दुव त्यागे, लै पुनि पथ्य लोभ भुव लागे ॥
 बिरचि कुछ वह ग्राम बिहायो, लुट्टन रानाँ मुलक लगायो ॥२३॥
 सठ नृप नहि परकरँ समुझायो, बहु बहु लूट प्रपंच बनायो ॥
 रानहु सुनि गिनि मुँद गिसानाँ, बुद्ध सु कँउलन हत्थ बिकानाँ २४
 दुव२मितानँ कुंभासणि किन्नै, दुव२त्रय३पुर गंधेगहु दिन्नै ॥
 पथ इहिँ रुकत चलन प्रमत्तो, पुर बेघम स्वसुरालय पत्तो ॥ २५ ॥
 बसु बसु सत्त इक्क १७८८ मित संबत, गँउर चउत्थि ४ सँहरप
 मास गत ॥

मँजु गिन्याँ न जुद्ध करिमरनाँ, स्वसुर अन्नजीवन लिय सरनाँ२६
 परदुख सँदय हृदय देवहु पुनि, सालक निज बुद्धहिँ आवत सुनि
 अभिमुख जाय निजालय आनँ, बिनय प्रीति कर जोरि बखानँ २७
 बुद्ध मुख महलन बसवायो, अप्प लालबारिय कहि आयो ॥
 रखतँ सुराजबाग खिलँ गकिखय, अब कैसँ निभिहोहु न अविखय २८

*काता बदि चौथ के दिनाँ नाथद्वारे में ढाडों का राजा आया ॥ १९ ॥ १ विष्णुभ.
 गवाल के भेट किये रयाँवला नामक ग्राम में ॥ २० ॥ ३ तीन पैसाँ अरु ४ वह अभम
 बुधसिंह मद्य भी पीता था ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ ४ परगह ने उस सूर्ख राजा को नहीं
 समझा था; अथवा उस सूर्ख ने परगह को नहीं समझाई ५ सूर्ख जानकर ७ वा-
 मियों के हाथ बिक गया ॥ २४ ॥ ८ मुकाम ९ ससुरे के घर में गया ॥ २५ ॥ १०
 शुक्ला ११ पौष मास १२ सुन्दर ॥ २६ ॥ १३ दयावान् हृदयवाले देवसिंह ने १४
 सामने १५ अपने घर ॥ २७ ॥ १६ स्वामी (सामान) १७ बासी का ॥ २८ ॥

देवासिंहका बुधसिंहको रखना] सप्तमराशि सप्तत्रिंशमयूज (३२०५)

दिय लोक विचार विहीनों, क्रम लुट्टन तत्पहि अति कीनों ॥
राउत देव तिनहि बरजाये, पै न रहे तब ग्रहन पठाये ॥२९॥
सठ बुद्धहु सुनि रोकि न रक्खिय, उपालंभ देवहिं प्रति अक्खिय॥
धरनि विपत्ति लांक मम धारत, बलिं अत्यहि आधार विचारत ३०
लुट्टन खान देहु तुम साल्लकं, क्यो मोरैन पकरात कृपालक ॥
जो सुनि देव तबहु कर जोरे, माफकरहु ओगन कहि मोरे ॥३१॥
अति सहनत्वं देव अव लीनों, बुद्ध हिं तुं वनि अधिक अधीनों ॥
पचहजारि ५००० ग्राम दिय पंचक ५, रुपय अष्ट ८ नित्य सु न
रंचक ॥ ३२ ॥

निबहनको यह देव निवेदिय, जह सभैर तोउ न धप्पत जिय ॥
करजहु करि रखैं नहिं कोऊ, समुक्की तुच्छ मूढ नृप सोऊ ॥३३॥
अग्न त्रिलक्ष हजार अठारह ३१८०००, भुगते दम्म करज
सह भारह ॥

वसु सत ८०० नित्य दये इक १ वेंच्छर, तीस सहस ३००००
हैंय हित उदारतर ॥ ३४ ॥

विभव देव जिहिं करज बिलायो, तोऊ अव गृह नजरि बतायो॥
हो सब हैय अधम नृप दह्हा, बिरचिय तदपि देव हित बँह्हा ॥३५॥

[मनोहरम्]

बुंदीके बिनामैति विहीरि देवेके जे,
तिन्हैं राखि बहु बेरन विपत्ति विकलायो नाँ ॥
याहीतैं रिसाय रैन छीनि लीनी बेघम,
कहायो नाँहि रक्खहु तथापि लास तायो नाँ ॥

१ परतु ॥ २९ ॥ २ (उरहना) ओलमा ३ फिर ॥ ३० ॥ ४ हे साखे ५ मेरे लोको को
॥ ३१ ॥ ६ सहनशीलता ७ बुधसिंह से ८ पाच ग्राम पांच हजार रुपये
सालाना आमद के ९ यह कमती नहीं थे ॥ ३२ ॥ १० बुधसिंह का ॥ ३३ ॥
११ एक वर्ष पर्यन्त १२ घोड़े भोज लिये जिनके ॥ ३४ ॥ १५ सप्त प्रकार से त्याज्य
था १६ पुस्त ॥ १७ ॥ १८ निर्धुच्छि १९ निकाज देने योग्य १७ महाराणा ने

पाघ पावलीनकी रु पैसेनकी पैनई,
मिली पै मजबूती मानि मन मुरझायो नाँ ॥
चौंढासौ सपूत बैप्प राउलके वंस कोऊ,
धर्म धुर धोरी धीर देवासो दिखायो नाँ ॥३६॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायणो सप्तमराशो बुंदीपतिबुध-
सिंहचरित्रेमहाराणासत्योपदेशक्रुद्धत्यक्तोदयपुरमार्गप्राप्तनाथद्वारथाँ
वलाग्रामगतबुधसिंहचत्वारिंशल्लङ्घनोपायमद्याहिफेनन्हसन १ मेद
पाटग्रामलुगटाकबुधसिंहश्वसुरदेवसिंहगेहवेधमगमन २ सोढापरि-
तव्ययस्वगृहरक्षितबुधसिंहराउतदेवसिंहप्रशंसनं सप्तत्रिंशो मयूखः
॥ ३७ ॥

आदितः पञ्चसप्तत्युत्तरद्विशततमः ॥ २७५ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

याहि बरस दुरभिच्छ भयो अति, नहिं तृन अन्न धनीहु धरै नति
इक १ रूपय उपधान्य जतन इत, मूल्य विक्रयो द्वैसत २००० टके
मित ॥ १ ॥

अब नृप तजि जन जान लगे इम, तरु अपत्र अफलहिं पच्छियं तिम
मनहुं तांल सुकै जल मच्छे, इम नहिं गये छद्मातक ७ अच्छे ॥ २ ॥

१ पगरखियां (जूतियां) २ चूडा के बिना ३ बापा रावल के वंश में ॥ ३६ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में बुधसिंह के चरित्र में
महाराणा के सत्य उपदेश करने पर क्रोधित होकर बुधसिंह का उदयपुर छोड़
कर नाथद्वारै होकर थांवला नामक ग्राम में चालीस लंघन करके अमल और
मद्य को कम करना १ मेवाड़ के ग्रामों को लूटने हुए बुधसिंह का अपने ससुर
देवसिंह के घर बेधम में जाना २ असह खरच भुगत कर बुधसिंह को अपने
घर में रखने की राउत देवसिंह की प्रशंसा का सैंतीसवां ३७ मयूख समाप्त
हुआ और आदि से दोसौ पचहत्तर २७५ मयूख हुए ॥

४ दुर्भिक्ष (कहत) ५ धनवान भी नम्रता धारण करते थे ६ अड़क धान्य (सां-
बां, मलीचा आदि) ७ एक रुपये का दोसौ टकों भर ॥ १ ॥ ८ मनुष्य ९ बि-
ना पत्ते और बिना फलों के वृक्ष को पत्ती छोड़े जैसे १० सूखे तलाव में ॥ २ ॥

*यादि गजादीरखत अब आयो, मगरोल रक्ख्यो सु मैगायो ॥
नृप कोटेस सोहु पठयो नन, खान खरच दै जाहु कह्यो घन ॥३॥
हम ठाँठाँ बहु बिभव रह्यो अब, समरकोँ निंदत जिहान सब ॥
पै अफीम आसव तजि पक्के, छुधा बढाय असन बहु छक्के ॥ ४ ॥
अग्गहि तजि कोटापति आहुति, आई निज पीहर चुडाउति ॥

हुति १ उति २ अन्त्यानुमास १ ॥

कोटापुरहि रही कछवाहिय, अबसु नृपहु बेघम अवगोहिय ॥५॥
जैतसुवन उत देव जग जय, गिनि बुद्धहि अधन रूँ कोटा मय ॥
तत्थहि घाय अच्छ हुव तँतो, पुनि कोटेस सभा वह पँतो ॥ ६ ॥
महाराव तब कहिय दर्प मत, सारधलकख १५०००० पटा तुमरो
गंत ॥

हम दुवलकख २००००० पटा अबदैहँ, अरु अच्छरँ तुमरे घर औहँ ७
अब बुदीस नामहु न अमखहु, रीति अदव दुगुनों यह रक्खहु ॥
यहै सुनत देवा रिस आयो, दरवीकैर जिम पुच्छ दबायो ॥ ८ ॥
उठ्यो मट भुज ठोकि अचानक, इत उत परिग सभा बिच ओर्दक

नक १ दक २ अन्त्यानुमास १ ॥

अरु उत्तर बुल्लयो असक उर, पति कूरम अगोँ दिल्लिय पुर ॥ ९ ॥
बुद्ध रु भीम उभय करि इकत, त्रय ३ नृप इक्क १ थाल जिम्मिय
तंत ॥

हे मम जनक जैत तँहँ हाजरि, कह्यो तिनहि कैंगमपति हितकगि
सुभट जैत तुम मिलहु भीम सन, अब न विरोध सौम हुव अप्पन

* स्मरण १ हाथी आवि सामान ॥ ३ ॥ १ ठाम ठाम (जगह जगह) ॥ ४ ॥

१ पुषसिंह ने निर्धन बेघम का धाह लिया ॥ १ ॥ २ ताता (बचल) ३ गया ॥ ३ ॥

४ वमंछ की पुखि से ५ गया ६ निर्मलता से, अथवा घायल हुआ वममे अच्छ

होने के उत्सव में, अथवा तुमारे घर तक सम्मुख आयेंगे 'अच्छम् अभिमुखे'

हाति शब्दार्थितामणि ॥ ७ ॥ ७ सर्प ॥ ८ ॥ ८ मय ॥ ९ ॥ ९ पुषसिंह औ

भीमसिंह को १० तथा ११ जयमिने ने ॥ १० ॥ १० मिछाय

सु सुनि भीम*अग्घो कर किन्नौं, द्रुतहिं जैत उत्तर तव दिन्नौं ११
हड्डनकी जननी रे अघहिय, भूमिनि गिनि बुंदिय तैं भुगिय ॥
यातैं स्वामिहराम अधम अति, मिलहिं तोहि किम धरम रवच्छ
मति ॥ १२ ॥

कहि इम दिय उठेलि ताको कर, वांके सुतहिं कहत इम अक्खर
अप्पन स्वामि तोहि न गुहावहिं, तोन हमहिं तव आश्रय भावहिं ॥ १३ ॥
देव न इम परिखद बिच दृष्ट्यो, फिरि धकि उठत घाय इक फट्यो
सुद्धराव कर जोरि मनायो, यह मन्न्यो न मुररि तउ आयो ॥ १४ ॥
फटत घाय अंतक गद फैलिय, कतिक मास विच त्रिदिव वास किय
इम भट देव धरम अवधार्यो, विपति सहि रु धन अनय बिहार्यो १५
कालि जुग काल भयो यह भीखम, है इक जीह कहैं कोलों हम
होवत कुल सुहुकम्म हरामी, निकस्यो बैरिसल्ल कुल नामी १६
बुध इत गरभ जानि नव बाला, व्याहि जु रक्खिय बंसवहाला ॥
ताके उदर कुमर उद्गम हुब, धरिय नाम जिहिं चंद्रसिंह ध्रुव ॥ १७ ॥
मधुगंत अमा सत्त बसु ८७ संवत, मातुलें घरहि बाल यह भो बतैं
इहिं असु धारिय मास अठारहि १८, बेघम नायसक्यो इक १ बारहि
चुंढाउति रानिय इत बेघम, गर्भ धर्यो सु भयो पुनि उद्गम ॥
संवत मान अंक बसु सत्तह १७८९, अरु सित बाहुल भालचंद्र
अह १४ ॥ १९ ॥

*हाथ आगे किया (हाथ आगे बढ़ाया) †जैत सिंह ने शीघ्र ही ॥ ११ ॥ १ स्त्री जान कर ॥ १२ ॥ २ उस जैत्रसिंह के पुत्र को इस प्रकार कहते हो ॥ १३ ॥ ३ इस प्रकार सभा में देवसिंह नहीं दवा ॥ १४ ॥ ४ काल रोग ५ स्वर्ग में ६ धारण किया ॥ १५ ॥ ७ कलियुग के समय में यह देवसिंह भीष्म के समान हुआ ॥ १६ ॥ ८ बुधसिंह ने ९ नवीन स्त्री को १० जन्म ॥ १७ ॥ ११ चैत्र मास की अमावास्या को १२ मामा के घर में १३ संतोष दायक, अथवा बालक के होने की वार्ता हुई १४ प्राण १५ नहीं आ सका ॥ १८ ॥ १६ जन्म [उत्पन्न] १७ कार्तिक सुदि १८ शिव का दिन (ज्योतिष में चौदस तिथि के स्थानी शिव हैं) ॥ १९ ॥

भृगु वासर इम हुव कुमार भव, दीपसिंह नामक अरि बनदव ॥
इत जैपुर साहस अधिकार्ह, बलि जयसिंह जु सुता बुलाई ॥ २० ॥
कृष्णकुमारि नाम अति अगर्ह, अभयसिंह मरुपति साली यह ॥

गह १ यह अन्त्यानुपास १ ॥

माधव बहिनि बही लहि मेलाहि, दर्ई सविधि परिनाय दलेलाहि २१
तब क्रूरम घर व्याह अनंतर, बसि जामात सुता इक १ बच्छर ॥
अक अष्ट सत्रह १७८९ सक आगम, सिक्ख पाय जयसिंह जनक सम
आई अब बुदिय कछवाही, बाहिर रहि यह टेक निवाही ॥
स्वसुर स्वकीय पापमति सालम, छत्रमहल रहत जु छत्राधम ॥ २३ ॥

लम १ धम २ अन्त्यानुपास १ ॥

जो यह राज्य इत्य निज जानै, काहुको न कैयित उर आनै ॥
सुत तिय जानि रुमानि स्वसुर सुँह, सो तिहिँ बेर गोहु नहि सम्मुह २४
कछवाही इहिँ अनख रिसाई, क्रूर स्वसुर प्रति यहै कहाई ॥
मैं बुधसिंह तनयकी नारी, किंकर तुम मम भाखितकारी ॥ २५ ॥
स्वसुर मन्नि सम्मुह सठ नौयउ, कर जोरि न पुनि विनय कहायउ
नृप महलन रहिकै अति उन्नति, भुगत राज्य अधबनि भूपति २६
बसहु छोरि महलन पुर बाहिर, जो सुख चहत होहु कडि जाहिर
चँवि डम ताडि निकारन चाही, बहु सिपाह पठये कछवाही ॥ २७ ॥
पुनि सालम निकरूपो अति सोचत, निजैन साहित करजोरि
अधिक नत ॥

चत १ नत २ अत्यानुपास ॥ २१ ॥

जान्यो अवधि प्रतिष्ठा जैहै, कछवाही डच्छन अब कैहै ॥ २८ ॥

१ बुद्ध २ हठ की अधिकार्ह स ३ फिर ॥ २० ॥ ४ आग्रह (आदर) से ५ माघो-
सिंह की ॥ २१ ॥ ६ व्याह क पीछे ७ जमाई और पटी ८ वर्ष ९ पिता से
॥ २२ ॥ १० अपना ॥ २३ ॥ ११ कहना १२ सुख ॥ २४ ॥ १३ मेरा कथन (कथा)
कारण ॥ २५ ॥ १४ नहीं आया ॥ २६ ॥ १५ इस प्रकार कह कर ॥ २७ ॥ १६ अपने
लोका सहित १७ नत्र होकर १८ करि हैं (अपना चाहा हुआ करेगी) ॥ २८ ॥

इम बिचारि पुर बाहिर आयो, बलि तत्थहि निज नैलय बनायो
रवबंसि राज्य इम करि दठ साहिय, अब महलन प्रविर्सा कछु-
वाहिय ॥ २९ ॥

प्रथमहि फल सालम यह पायो, अब नव नव पैहैं अकुलायो ॥
इत मरुपति गुजरात विजय करि, धर मारव पुनि आय गर-
धरि ॥ ३० ॥

बुद्ध उदंत सुनि रु लिखि कग्गर, पुर बेघम पठये चर सत्वर ॥
बेघम रहे मरुप चर मासन, तउ न जबाव लिख्यो जड़तासन ३१
इम दस १० बेर मरुप दल आयउ, पे इक १ दल न बुद्ध सन पायउ ॥
यह सुनि भो मरुभूप उदासह, रहि इत बेघम नृपहु निगमह ३:
बुद्धि बिगारि उंदवेग बढयो अति, रहन लग्यो एकांत मंद मति ॥
रवीय जनहु नहि निकट सुहावहि, काम परहि तव टेगि बुलावहि ३२

इति श्री वंशभारकरे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमगाथों बुन्दी
पतिबुधसिंहचरित्रे कोटामहारावोपरिपरिपत्क्रुद्धविदीर्णतबुन्दी
सुभटदेवसिंहमरण १ बुधसिंहपुत्रद्वयप्रसव २ परिणीतजयसिंह-
कन्यबुन्दीनवनृपदलेलसिंहबुन्द्यागमन ३ बुधसिंहोन्मादगदवर्णन
मष्टत्रिंशो मयूखः ॥ ३८ ॥

आदितः पट्सप्तत्यधिकद्विशततमः ॥ २७६ ॥

१ मकान २ अपने आधीन ॥ २९ ॥ ३ मारवाड़ में ॥ ३० ॥ ४ बुधसिंह का वृत्ता-
न्त सुन कर ५ पत्र ६ हलकारा ७ शीघ्र भेजा ८ मूर्खता से ॥ ३१ ॥ ९
मारवाड़ के राजा के पत्र ॥ ३२ ॥ १० चित्तभ्रम ११ अपने लोक भी ॥ ३३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में बुन्दीके राजा प्रकार
के चरित्र में बुन्दी के उमराव देवसिंह का सभामें कोटा के महाराव किया
करने के कारण घाव फटकर मरना १ बुधसिंह के दो पुत्रोंका उत्पन्न हो २ बुधसिंह
के नवीन राजा दलेलसिंह का राजा जयसिंह की पुत्री से विवाह कर ३ पर क्रोध
आना ४ बुधसिंह को चित्तभ्रम होने की बीमारी के वर्णन का अङ्गीसना २ बुन्दी
मयूख समाप्त हुआ ॥ और आदि से दो सौ छहत्तर २७६ मयूख हुए ॥ कि बुन्दी
वां ३८

पादाकुलकम् ॥

इत जयसिंह प्रतापबढ्यो अति, *प्रथित कहैं सु करैं दिखिय पति॥
अदबहु लिखैं विसेस साह अत्र, कग्गरमाहिं लिख्योहु जो न कव१
जैं राजाधिराज उपपद जुत, लिखत राजराजेंद्र लग्यो द्वैत ॥
तिम तिम बढ्यो सवन सिर कूरम, तहाँ अवर कोउन हुव तासम२
किय रूप्य कोसन कोटिन धन, सहँसन गज हय चतुर मंदुरन।

घन१ रन२अन्त्यानुप्रास ॥ १ ॥

जो नहि साह वजीर सके करि, सो जयसिंह करैं बल समैरि ३—
स्मृतिनै सुधाप न्पाय विसतारै, विप्रन अगध विसेस बढारैं ॥
बाहिर हम धरमानुग दीसैं, पै सु रच्यो न पिष्टे कैहँ पीसैं ॥ ४ ॥
जो निज धरम रच्यो कूरमदिय, क्यो तब कर्म अधर्म इते किय ॥
हन्पो प्रथम सिवसिंह स्वोपसुत, जोहु तास जैननी निज तिय जुत ५
पुनि जननी निजै स्वर्ग पठाई, भट धरैं विजयसिंह बैलि भाई ॥
पुनि भानेजै सत्य जो होतो, अरु असत्य सिमुँ हो तउ सोतो ॥ ६ ॥
पुनि सग्राम रामपुर स्वामी, हन्पो दग्ग रचि होय हैरामी ॥

*प्रसिद्ध (एकान्त में कहना करना स्नेह का, और प्रसिद्ध में कहना करना दया का सूचक है) ॥ १ ॥ १ पदवी (खिताब) की रशीय ॥ २ ॥ ३ गजशाला और हयशालाओं में हजारों हाथी घोड़े करदिये पल्ल से भरकर, अथवा अपने पल्ल को समाप्त कर ॥ ३ ॥ ४ धर्मशास्त्रों को दिखा कर ५ आघ (आवर) ७ ऊपर से इस प्रकार धर्म के साथ चलने वांछा दीखता था, परन्तु ८ इस धर्म में रचा (रगा) नहीं था ९ पिसे हुए को पीसता रहा ॥ ४ ॥ यदि १० जयसिंह का हृदय धर्म में रचा हुआ था तो इतने अधर्म के काम क्यों किये ११ अपने पुत्र शिवसिंह को मारा १२ उस शिवसिंह की माता और जयसिंह की स्त्री सहित ॥ ४ ॥ १३ जयसिंह की माता को मारी १४ श्रेष्ठ धीर १५ फिर अपने भाई विजयसिंह को मारा १६ अपने भानजे और पुत्री के कुमर भवानीसिंह को मारा १७ यदि वह कृत्रिम था तो भी बालक था ॥ १ ॥ १८ सग्रामसिंह अग्राम को १९ प्रथम होकर दगा से मारा

सत्त अठ सत्रह १७८८ * मित संवत, तेरह लकख १३०००००
साह रूपय तत ॥ ७ ॥

लौ अरु किंतव मिल्यो मरहठन, सो मुखो न अबलग अधर्म सन
ठन १ रन२ अंत्यानुप्रासः ॥१॥

साह तास बिस्वासहि रखैं, यह तउ मंत्र दक्खिनिन अकखैं ॥८॥
ऐसी लखि अक्खिय निंदा हम, अरु अच्छीहु करी बहु कूरम ॥
अब नव वसु सत्रह १७८९ मित संवत, आयो पुनि मालवधर
उद्धत ॥ ९ ॥

पट्टपात ॥

अब हायन नव अठ ८९ विसद बाहुल दर्पक १३ दिन ॥
आयउ पुर उज्जैन अवनि दव्वत कूरम इन ॥
सत्तलकख ७००००० साह सन व्याज रूपय मंगाय बलि ॥
मरहठन किय मेल किय न हित साह मंडि कालि ॥
दल लखिय रान संग्राम प्रति तुमहु सेन भजहु अतुल ॥
यह आय भुम्भिन दव्वन समय मिलि मरहठन बल विपुल १०
दोहा ॥

सुनत रान संग्राम यह, दल पठयो सु देराज ॥
सबन सिरोमनि निज सचिव, धाइधौत नगराज ॥ ११ ॥

दराज १ गराज २ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥

बिनु सादड़ि अरु बेदला, सर्व सुभट दिय संग ॥

ते दसउर आये त्वरित, अवनी लोभ उमंग ॥ १२ ॥

* प्रमाणबाले † तहां ॥ ७ ॥ ‡ छली § मे १ उस जयसिंह का २ सलाह
॥ ८ ॥ ९ ॥ ३ संवत् ४ कार्तिक सुदि ५ कामदेव की तिथि (ज्योतिष में
तेरस तिथि का स्वामी कामदेव है) ६ भूमि को ७ कछवाहों का पति ८ कल
से ९ बादशाह का हित रच कर युद्ध नहीं किया १० पत्र ११ तुलना रहित
१२ बहुत ॥ १० ॥ १३ सेना १४ बड़ी १५ धाय भाई ॥ ११ ॥ १६ सादड़ी के
राजराणा और बेदला के राव बिना १७ शीघ्र ॥ १२ ॥

दसउरतैं पुनि कुंच करि, आयउ पुर उज्जैन ॥
कूरमसौं हित मिलन करि, सग रहिय बस सैन ॥ १३ ॥
षट्पात ॥

*बुल्लयो तब नगराज देवसिंहहु बेधम पति ॥
तवहि देव करि कुच चलो सहसत्थ बेग गति ॥
तवहु मदे बुदीस चलो निज सालक संगहि ॥
सोधी यह कुम्म सन मिलि रु लौहैं स्वकीय महि ॥
जयसिंह व्याहि तनयां जु पै पट्ट दलेलहि थपिदिय ॥
पिक्खहु तथापि जडबुद्ध मति लैन जात निज बसुमतिपै ॥ १४ ॥
दोहा ॥

देवसिंह निज जामिपहि, आत देखि अकुलाय ॥
नगर सलूमरि नाह प्रति, लिखि दल अग पठाय ॥ १५ ॥
जामिप आवत सग मम, निज हठ मनैं नाहि ॥
कूरमको आसय लिखहु, यातैं हम धित आहि ॥ १६ ॥
जु सुनि केसरीसिंह जब, नगर सलूमरि नाह ॥
पुच्छिय यह जयसिंह प्रति, कहिय कुपि कछवाह ॥ १७ ॥
तुम सु रान घर मुखप भटे, अरु छत्रे नहि येहु ॥
चिति सु बत्त रु रहहु चुप, श्रवनन मुदन देहु ॥ १८ ॥
सुं सुनि सलूमरि पति लिखिय, देवसिंह प्रति पत्त ॥
आवन देहु न बुद्ध यहुँ, रस नहि कुम्म बिरत्त ॥ १९ ॥
षट्पात ॥

॥ १३ ॥ नगराज में बधम के पति देवसिंह को * बुल्लाय
में १ मूर्ख २ सोची (पिचारी) ३ जयसिंह से ४ मेरी भूमि लेवेगा ५ पुत्री व्याह
द कर ६ अपनी भूमि लेने को जाता है (यह कवि का व्यक्रोश का पक्षन है)
॥ १४ ॥ ७ पहिनाई को ८ पत्र लिखकर ॥ १५ ॥ ९ यहा टहरे हुए हैं ॥ १६ ॥
॥ १७ ॥ १० उसराच ११ काना को बंद करछो ॥ १८ ॥ १२ सो १३ जयसिंह
प्रतिकूल है ॥ १९ ॥

देवसिंह तब यह*उदंत बुधहिंतु निवेदिय ॥
 तबहु अंध बुन्दीस नाहिं पच्छो प्रयान किय ॥
 यह लिखि देव उदार कुंच विरन्निय बेघम प्रति ॥
 ताहि विगारन तबहि मुरचो बुधसिंह हीन मति ॥
 यह सुनत राम संग्राम धकि देवहिंतु बेघम लई ॥
 सद्धत विमूढ जामीसे सुख सालक बिच यह गति भई ॥२०॥
 दोहा ॥

नगर फुरक्कावाद पति, नाम मुहुम्मद मिच्छ ॥
 कूरमपति वासौं कियउ, अगग बइर रन ईच्छ ॥ २१ ॥
 अब बुंदिय आमैरकै, जवन वहै लखि जुद्ध ॥
 भल कगगरं भेजंत भयो, बेघम पुर प्रति बुद्ध ॥ २२ ॥
 सहजराम खत्रिय सचिव, ताको लै दल तत्त ॥
 बेघम आय रु बुद्धसौं, मिल्यो लख्यो सु प्रमत्त ॥ २३ ॥
 वह तँथापि बहुदिन रह्यो, मंग्यो दल सु मिल्यो न ॥
 वहै उदास निज गेह तब, गो खत्रिय करिं गोन ॥ २४ ॥
 सक नभ नव सत्रह १७९० समय, द्वादसि १२माघ वलच्छ ॥
 तजिय रान संग्राम तँनु, दान समय नय दँच्छ ॥ २५ ॥
 तबहि उदैपुर पट्ट लहि, हुव रानाँ जंगतेस ॥
 बुद्ध सु इत देवहिं बिपति, अँदय दई जड़ एस ॥ २६ ॥
 सक नभ नव सत्रह १७९०समय, अब फगुन अँवदात ॥
 मंगलवार चउत्थि ४ मिलि, प्रकटत समय प्रभात ॥२७॥
 चुंडाउति रानी जठैर, रहि नव ९ मास प्रमान ॥

*वृत्तांत १ बहिन के पति का ॥ २० ॥ २ युद्ध चाह कर ॥ २१ ॥ ३ कागद (पत्र) ॥ २२ ॥
 ४ तहाँ पत्र लेकर ॥ २३ ॥ ५ तोभी ॥ २४ ॥ ६ शुक्लपक्ष. दान में, समय में
 और नीति में ८ चतुर संग्रामसिंह ने ७ शरीर छोड़ा ॥ २५ ॥ ९ जगत्सिंह १०
 निर्दय ने ॥ २६ ॥ ११ शुक्लपक्ष ॥ २७ ॥ १२ उदर से

*दुहिता हुव बुदीसकै, दीपकुमरि अभिधान ॥ २८ ॥

इतिश्री वशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दी-
पतिबुधसिंहचरित्रे जयपुरनृपजयसिंहस्तुतितदनुचितकर्मगणान् १
सज्जसैन्यजयसिंहावन्तिगमनबुधसिंहप्रमदन २ उदयपुरमहारा-
णासग्रामसिंहमरणान्तरजगत्सिंहतत्पट्टाधिवेशनवर्णनमेकोनच-
त्वारिंशो मयूख ॥ ३९ ॥

आदित सप्तसप्त्यधिकद्विशततम ॥ २७७ ॥

पट्टपात् ॥

इत यह हट्ट प्रतापसिंह सालम जिहो सुव ॥

अनुजहिं गिनि अवनिस भूप सम्मलि कुसथल भुव ॥

आयो तव नृप याहि नाहि अहरि मुह लायो ॥

अव तिहिं कोटा आय रानि प्रति मत्र रचायो ॥

विसवासि ताहि तिय बुद्धकी कछुवाही यह मत्र किय ॥

हम देत खरच तुम जाय इठि बल दक्खिन आनहु बलिय ॥१॥

तव प्रताप इठ तिक्ख मिल्यो दक्खिन मरहट्टन ॥

लखि श्रीमन्त अनीक अतुल आरभ मुदित मन ॥

वावा पडित रामचद्र १ संध्या राणजिय १ ॥

*पुत्री १ नाम ॥ २८ ॥

श्रीवशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के राजा
बुधसिंह के चरित्र में, जयपुर के राजा जयसिंह की स्तुति और उनके अनुचि-
त कार्यों की गणना १ जयसिंह का सेना सज कर उज्जैन जाना और बुधसिं-
ह का प्रमाद २ उदयपुर में महाराणा संग्रामसिंह का देहात होकर महाराणा
जयसिंह के पाट पेटने के वर्णन का अन्यासीसवा ३० मयूख समाप्त हुआ
और आदि से दोसौ सितहत्तर २०७ मयूख हुए ॥

२ ज्येष्ठ (बड़ा) पुत्र १ छोटेभाई को बुन्दी का राजा जानकर कुशाग्र की
युद्ध ४ भूमि में ५ बुधसिंह ने ६ बुधसिंह की स्त्री कछुवाही ने ॥ १ ॥ ७
पूना के पति की तुलना रहित आरम्भवासी सेना को देखकर मन प्रसन्न हुआ

पुण्यापतिके पासवान बैलमें पति ए बियर ॥

इनतैंहु अधिक श्रीमंतके दैल मालिक उमराव हुवर ॥

आनंदराव परमार^१ अरु हुलकरराव मलार^२ हुव ॥ २ ॥

दोहा ॥

इन च्यारि^३न दल मुख्य लिखि, मिलि प्रताप अति मोद ॥

दम्म लक्ख खट^४६०००००देन किय, बुंदियपर स विनोद ॥ ३ ॥

इत कूरम कछु कज्ज^५ बसि, मालव अवनि विहार्य ॥

सालम सुवन दलेल सह, जैपुर पतो जाय ॥ ४ ॥

मरहठन परताप मिलि, दै खट लक्ख^६६०००००सु दम्म ॥

दल दुस्सह लाभो लरन, कन्नल बुंदिय कम्म ॥ ५ ॥

सक इक नव सत्रह^७१७६१ समय, अमा रु माधव मास ॥

बुंदी बिंटिय आनिकै, गहत अरक तमें ग्रास ॥ ६ ॥

भुजङ्गप्रयातम् ॥

बढे दक्खिनी त्यों लगे नैर बुंदी, खुरोंपक्खुरोंघुम्मि है^८ भुम्मि खुंदी

भगी ज्वालिका दीपकी मालिकासी, दर्गी नालिका कालिका

बालिकासी ॥ ७ ॥

ढट्यो पोन भडेनमें गोण हंकयो, बढ्यो घोर अंधार संसार ढंकयो ॥

१ पूना के पति के पास रहनेवाले २ सेना में ये दोनों पति थे ३ सेना-पति ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ कछवाहा जयसिंह कुछ कार्य वश होकर ५ मालवे की भूमि को छोड़कर ६ सालमसिंह के पुत्र दलेलसिंह सहित ॥ ४ ॥ ७ रुपये ८ बुन्दी के युद्ध के ९ कार्य पर अर्थात् बुंदी में युद्ध करने को लाया ॥ ५ ॥ ११ वैशाख मास की १० अमावास्या के दिन १२ सूर्य को १३ राहु ने असा (ग्रहण हुआ) उस समय बुंदी के घेरा लगाया ॥ ६ ॥ दक्षिणी बढ़कर बुंदी नगर के लगे सो १४ घोड़े घूमकर खुरों से और पाखरों से भूमि को घुंदी (कुचली) और दीपमाला के समान १६ ज्वाला १५ प्रज्वलित हुई और कालिका की पुत्रियों के समान १७ तोपें दर्गी ॥ ७ ॥ भड़ों में नहीं चल सकने के कारण पवन रुक गया और भयंकर अंधेरा बढ़कर संसार ढक गया।

चले *लोल गोला रुगें अग्नि काँवर, दुबाजु छिकें कोट देदे दरारें
परें गोख अट्टाल तुहें पताका, उहें छद्मके भद्रमें ज्यों बलाका ॥
छिकें त्यों गिरें थभ प्रसाद छत्री, पताका उहें अन्ध ठेठे पतंगी
उहें गैन गिद्धी लगे पच्छ अग्नी, लखें चर्गके पुच्छ ज्यों राललग्नी
हिगें कोल त्यों ध्याल पाताल डोलें, अकूपारकी भारसों पिछि
बोलें ॥ १० ॥

चलें तोप प्रोकारको लोप मडें, खिरें खोमके तोम के खड खडें ॥
जरें हट्टबाजार यों हेति जग्गी, मनो राल को तूलमें अग्नि लग्नी ११
कहाँ दँद पैटीर कारी कँवारी, बुझावें कहीं डारिकें नीर नारी ॥
चिनंगी उहें चित्रसारीन चडें, मनो बाग खद्योतें प्रद्योतें मडें १२ -
बडे पट्ट अट्टालिका पोंत बजें, घनी बालिका पैलिका छोरि भजें
कहाँ स्मारसों धेनु हंभारें कडें, बरें द्वार आगारें छार बडें ॥ १३ ॥

अथपक्ष गोले चलकर अग्नि की ज्वालाजगती है जिससे कोट दरारें देकर दोनों
ओर फुटता है ॥ ८ ॥ उन गोलों से १ करोड़े छतें बुरजें गिरकर ध्वजायें गिरती
हैं और जैसे भाद्रपद मास में १ पक्ष (वशुले) वडे तैसे छावित होकर लडती
हैं, यन्मे ४ महल और छतरियें छिककर गिरती हैं और आकाश में ध्वजा १
पक्षी होकर लडती है ॥ ९ ॥ पाखों में ७ अग्नि लगकर प्रीचनियां आकाश
में लडती हैं सो मानों ८ पतंग (कनकलषा) के पूंछ में राल लगी होवे
वैसे दीखती हैं ९ पराह दिगता है १० पाताल में शेषनाग हिलता है और
भार से १ कमठ की पीठ बोलती है "अकूपार कूर्मराज" इति शब्दार्थवि-
न्तामयौ ॥ १० ॥ तोपें चलकर १२ कोट का नाश करती हैं और कितनी ही
१३ बुरजों के १४ समूह के टुकडे टुकडे करती हैं, बाजार में दुकानें जलकर
पेसी १५ ज्वाला (माल) लठी कि माना राल में १६ किना १७ रूई में अग्नि
लग्नी है ॥ ११ ॥ कहीं पर १९ चन्दन की की हुई कंधारियें (कपाट विशेष) १८
जलती हैं, सो मानों पाग में २० जुगनू २१ प्रकाश करते हैं ॥ १२ ॥ छतों के पडे
पाटों के २२ पडने का शब्द होता है जिससे बहुत स्त्रियें २३ पलंग लेले कर
भागती हैं, कहीं पर ज्वाला से गडयें २४ करुणामई शब्द करके निकलती हैं
२५ घरों के जलने से दरवाजों पर २६ भस्मि (राल) लडती है, अथवा जलने
से घरों के द्वार पर भस्मि पडती है ॥ १३ ॥

फरकें कहीं गोख प्रासाद फुटें, तरकें ध्वजादंडके खंड तुटें ॥
 गिरें दोहरे तेहरे गेह गोलें, घने*पीठापल्लयंक बीथीन डोलें १
 धुनैं धप्पिगोपानसीखप्पराली, उडैं मेदपैं ॥इद्व ज्यों गिद्व आल
 हुते ज्यों रहे त्यों सबै लोक हारे, भिली ओट बुंदी परे कोटवारे १
 इतैं *दुग्गपैं बीर दैदैं निसैनी, बढे बंदरी सेन ज्यों लंक लैनी ।
 भज्यो सालमाँ सो गह्यो खूब ठोक्यो, जनानाँ लुटयो रारि थान
 न रोक्यो ॥ १६ ॥

किते बीर जैसिंह जे अँथ रक्खे, तके सम्मुहे रागपैं जानि तँक्खे।
 हसमनिँ हड्डेनकी हारि होतैं, जनी अप्पनी बिँफुरे जंग जोतैं १७।
 मची मार बाजारमैं बाढ बज्ज्यो, लग्यो कंप भीरूनकोँ नीर लज्ज्यो
 मिले दक्खिनी कूरमी बीर मत्ते, कराकैं बजे हाडकी आड कँत्ते १८
 बढयो धँत्त आरत्त बीथी बजारैं, उडैं मुंड त्यों रुंड नच्चैं अखारैं ॥
 कढे नैन नच्चैं गिरैं भौह काला, मनौ कँजके भौरके भौर माला १९
 बढैं हत्थ केते बनैं लुत्थि बत्थो, बनैं अच्चरितैं घने लुत्थि बत्थो ॥
 बजी चाप टंकार भंकार भैरी, घने दक्खिनी कूरमी सेन घेरी २०।

*बहुत चोकिये (बाजोट) पर्यङ्क (पलंग) गलियों में डोलते हैं ॥ १४ ॥ ‡मियालें "गो-
 पानसी तु बलभी छादने वक्रदारुणि" इत्यमरः ॥ जलकर उनके ऊपर से § छपारों
 की पंक्तियें उडती हैं सो मानों मांस के ऊपर ग्रीधों की ॥ बड़ी पंक्ति उडती है ॥ १५ ॥
 **दुर्ग (गढ़) पर लंका को लेने के लिये १ बदरों की सेना बढी जैसे २ सालम-
 सिंह भगा जिसको पकड़ कर खूब ठोका ॥ १६ ॥ ३ यहां रक्खे थे वे ४ राग
 के ऊपर तत्त्वक सर्प के समान सम्मुख हुए ५ अधमी हाडाओं की हार होते ही
 उस युद्ध को देखकर अपनी ६ उत्पत्ति को "जनिरुत्पत्तिरुद्भवः" इत्यमरः ॥
 ७ भूल गये अर्थात् हाडा क्षत्रियों में जन्म लेकर भागना नहीं चाहिये था सो
 भूलकर भाग गये ॥ १७ ॥ ८ कछवाहे वीर मस्त होकर मिले, हड्डियों की आड पर
 ९ तलवारों के कड़ाके बजे ॥ १८ ॥ १२ गलियों और बाजारों में १० घावों से
 ११ रुधिर का समूह बढा (यहां आरत्त का आकार समुच्चय अर्थ में है) १३
 मानों कमल के गुच्छे पर भ्रमरों की माला है ॥ १९ ॥ १४ अप्सराओं से गाढ़
 आलिंगन करके (अंग भिड़ाकर) मिलते हैं १५ नोषत भयंकर शब्द से बजी ॥ २० ॥

भुकैं सत्य देइहत्यतैं मत्य मारैं, कुलात्नी किधौं चक्क भहा उतरैं॥
कटैं पार लै लार अतैं कटारी, मनौ गोरू नागिनी हत्य भारी२१
बहैं नारि अच्छी कि अच्छी बरच्छी, मिलैं कोचकों फारि ज्यों
बारि मच्छी ॥

बजी रीठ बुदी सु वैसाख अद्दे, सजे दक्खिनी तौवके घाव सद्दे २२
घनौ चक्ककों देखनौं अक्क चाडघो, सुपैं पर्वमें गाहकी राह सादो ॥
सक्यो देखि यौ नाहि स्वर्भानु सारैं, नतो तदिनी जाम अड्डो ८
निहारैं ॥ २३ ॥

कहौ मोहैं आरोप कुकैं कंथासी, वकैं वौरुनी मत्त ज्यों ग्राम बासी।
किते उल्लटैं फाटि छत्ता कंवारे, मनौ द्वार भट्टार होके उघारे॥२४॥
भगकैं कटैं खुप्पैरी फुट्टि भेजे, फरकैं कहौ पिप्पैरे के कलेजे ॥
भिरे दक्खिनी बुद्धके काज भारी, मिलीजित्ति ओकरुमी सेन मारी२५
पटपदी ॥

मिलि प्रताप मरहठ जित्ति बुदिय जस लिननौं ॥

वानों सेना भुककर दोनों हाथों से मस्तक उतारती हैं सो माना २ चाक
के ऊपर १ से कुम्हारी भाखा (कलश) उतारती है और आतों को साथ ले
कर कटारी पार निकलती है सो मानो ३ गारहू (कात्तपेलिये) के हाथ में बड़ी
स्वर्णिनी है ॥२१॥ ४ नाखिय (नखे) पहनी हैं और कण्ठो को फाटकर बरछि-
ये पहती हैं सो मानो पानी में मच्छियें पहनी हैं (गहा बरछी के कवच को फो-
ड़ने की वपमा के संघ से मच्छी के जाल की तोड़कर निकलना समझना चा-
हिये, अथवा जैसे जल में मच्छी निकल तैसे कण्ठों को फोड़कर शरीर में ब-
रछियें निकलती हैं) १ ताप देनेवाले ॥२२॥ ७ सूर्यने इस सेना को बहुत देखना चाहा
परन्तु उपराग में उस (सूर्य) के ८ ग्राहकी ० राहु ने पकड़ लिया, अथवा युद्ध
के ग्राहकी सूर्य को ग्रहण में राहु ने पकड़ लिया इसकारण ० राहु के घण्टे में
होकर नहीं देख सका नहीं तो उस दिन १ घाट पहर देखता ॥२३॥ कहीं पर
१२ सूर्या में १ कथा करने के समान कृतता है जैसे १४ मघ में मत्त होकर गानों में
रहनेवाला (ग्रामीण) कृतता है १४ द्रव्य रूपी भट्टार के कपाट खोले हैं ॥२४॥ १५
खोपरी १७ और कहीं कहीं कई फेफरे और बल्लेज फड़कते हैं, १८ चुपसिंह क
अर्थ १९ कछवाहों की सेना को ॥२५॥

गहि सालम निज *जनक बंदि हुलकर बसि किन्नौ ॥

सालमको सरबस्व सज्ज निज करन सुहाई ॥

नगर नैनवा जाय दई निज नाम दुहाई ॥

बुंदिय छुराय मरहठ इत रस ६ मुकाम तथहि रहिय ॥

दिस दिसन बत्त फुटिय द्रुतहि कविन बाह दक्खिन कहिय २६

॥ दोहा ॥

सहर लुटिय सालम गहिय, फिरिय बुद्ध नृप आन ॥

अरु चउसत ४०० दुहुँ ओरके, परे सुभट गत प्रान ॥ २७ ॥

कछवाही कोटा नगर, यह सुनि बुंदिय आय ॥

दिय महिमानी दक्खिनिन, दुवरदिन सेन रखाय ॥ २८ ॥

कछवाही मल्लार कर, रक्खी बंधिय रानि ॥

अरु ताकी तियकी अंतुल, किय भावँज समकानि ॥ २९ ॥

तँहँ हुलकर मल्लार तब, सँधा लिय हित पग्गि ॥

बुंदिय जो जैहँ बेहुरि, लैहँ तो दठ लगि ॥ ३० ॥

अवरहु त्रय ३ दलके अधिप, तिनहूँकोँ हित धारि ॥

दिन्ने हय सिरुपाव द्रुत, रानी सुँनय विचारि ॥ ३१ ॥

कछवाहीप्रति सिक्खकरि, तदनंतर जय तोर ॥

प्रबल बीर पच्छे पलटि, उमडिय दक्खिन ओर ॥ ३२ ॥

कटक सु डब्भिय ग्राम कढि, रहि बिंभोलिय रैन ॥

बेघम कंगर बुद्ध प्रति, लिखे मिलन जस लैन ॥ ३३ ॥

॥ पट्पातू ॥

मिलन न आयउ तबहु बंछि कंगर बुंदिय पति ॥

तब उप्परि मरहठ गये दक्खिन सबेग गति ॥

*प्रतापसिंह के पिता सालमसिंह के शीघ्र ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ †राखी (रक्षा) थांधी
१ बहूत २ भोजाई के समान ३ अदब ॥ ३१ ॥ ४ प्रतिज्ञा ५ फिर जावेगी तो ॥ ३० ॥
६ सेनापति ७ श्रेष्ठ नीति विचार कर ॥ ३१ ॥ ८ जिसपीछे ९ चढे ॥ ३२ ॥ १० पत्र ॥ ३३ ॥

साहु सिताराधीसपै जु*अनीस † अब्दनतै रहै ॥
 तिहि तत्थ † साहुव छत्रपति आदाब अति करि अहरै ॥
 बइठारि गहिय कोनैपै काका कहै रु कही करै ॥ ४६ ॥
 सग्राम रान † निपात सुनि तिहि सिक्ख साहु सौं चही ॥
 जयसिंहसौं यह जानि बाजेराय मत्रियहु कही ॥
 मम मात पूरव जातै जात जु न्हान तित्थ बिधान सौं ॥
 तिहि लौ उदैपुर जाहु एह उदत अक्खहु रान सौं ॥ ४७ ॥
 तुम गन कूरम सौं कहाय यहै कहावहु साहसौं ॥
 मम मात कासिय जात जो देहै न कर रहि राहसौं ॥
 स्वच्छद मग्गहुंमैं कहां रुकिहै न दैलजुत जायहै ॥
 पुनि फल्गुगय सिर पारि पिंडन अध्व इच्छित आयहै ॥ ४८ ॥
 जयसिंह वग्घहनद यों सुनि तास मातहि सगलै ॥
 आयो उदैपुर ओ मिल्यो वह रान हितु उमगलै ॥
 करजोरि अक्खिय पेसवा नृप साहु मत्रिय आहि जो ॥
 तसमांत आवत रावरे घर धुंवं तीरथ चाहि जो ॥ ४९ ॥
 सुनि एह सम्मुह जाय रान अतीव अहरै अहरी ॥
 महिमानि मडि दिवाय डेरन कानि मोतहिलौ करी ॥
 अवरोधमौहि बुलाय प्रीति बढाय विन्नति अक्खई ॥
 सुनि रान विन्नति बात मत्रिय मात मोदमई मई ॥ ५० ॥
 गज बाजि वस्त्र विसैस रान निवेदि ताहि घनौ नयो ॥

निरन्तर † वर्षों स † छत्रपति पदवी वाला राजा साहु ॥ ४९ ॥ १ पतन
 (हान्त) १ पूर्व दिशा की जात्रा को जाती है २ विधि पूर्वक तीर्थ स्नान करने
 को ३ वृत्तान्त ॥ ४७ ॥ ४ मार्ग में स्वतन्त्र ५ सेना सहित फरगु गया में पिंड
 रके पाहे हुए ६ मार्ग से आवेगी ॥ ४८ ॥ ७ से ८ है ९ इसकारण से अर्थात्
 साहु आप के यश में है और यह उसके मंत्री की माता है इसकारण आपके
 ८ आती है १० पूर्व दिशा के तीर्थ ॥ ४९ ॥ ११ बहुत आदर से १२ माता
 समान १३ जनाने में ॥ ५० ॥ १४ भेट करके

पुनि जाय डेरन सिक्खदे सँग रवीय सेनहुकों दयो ॥
 नगरी सलूमरि नाह केसरिसिंह मुख्य सु संगभो ॥
 जयसिंह पुनि वह बग्घ नंदन संग उच्च उमंग भो ॥ ५१ ॥
 खुरतार मारन भुम्मि देत दरार दारिम पक्कज्यो ॥
 नवलक्ख ९००००० दलपति मंत्रिजननी चंड संगहि चक्कज्यो ॥
 बहरक्क दंति बडेनपेँ फहरक्कि फैलतसी फिरै ॥
 भिल्लि फेट भंड भपेटपेँ पवमान चंचलहू चिरै ॥ ५२ ॥
 श्रियमंत मात सुखेन यों सह सेन जैपुर संघी ॥
 कछवाह रायहु आय सम्मुह कानि राँनहि लों करी ॥
 जयसिंह प्रीति बढाय तास दिवाय डेरन मोदसों ॥
 बेतंड बाजि उदंड दुवश्किय भेट बँदि विनोदसों ॥ ५३ ॥
 महिमानि दै अति अग्घसों अवरोधे मध्य बुलायकें ॥
 सकुटुंब सम्मुह जाय मंदिर लाय मत्थहिँ नायकें ॥
 बइठारि गहिय ताहि अप्पुन अल्प आसनपेँ रहयो ॥
 नग बस्त्र नैय निवेदिकें हम दास कूरम यों कहयो ॥ ५४ ॥
 तैनया सु कृष्णकुमारि अप्पन जो दलेलहिँ अप्पई ॥
 गहि ताहि हत्थन कुम्म यों थिर तास अकंहि थप्पई ॥
 कहि मोर पुत्रिय बुंदि भूप दलेल रानिय है यहै ॥
 तस लज्ज भुम्मि सुहागकी तुमको सु अज्ज अभै यहै ॥ ५५ ॥

हैयहै१ भैयहै२ अन्त्यानुपासः १ ॥

तिहि लाय हिय श्रियमंत मातहु अक्खि प्रीति पैरा पगैं ॥

॥ ५१ ॥ १ पकी हुई दाड़िम के समान २ भयंकर सेना ३ भंडे घड़े
 हाथियों पर ४ पवन चंचल है तो भीष्टदेगी करता है अर्थात् उन भंडों में हां
 कर शीघ्रता से निकल नहीं सक्ता ॥ ५२ ॥ ६ सुख से ७ गई ८ राजा ९ राना ने
 की जैसी १० हाथी ११ नमस्कार करके ॥ ५३ ॥ १२ जनाने में १३ घर (महल) में
 १४ मस्तक नमाकर १५ आप छोटे आसन पर बैठा १६ नयान ॥ ५४ ॥ १७ पु-
 त्री १८ दलेल सिंह को विवाही १९ उस की गोदी में बिठाई ॥ ५५ ॥ २० परम

रूपये पचीस हजार २५००० छोरिय जे न बुदियकों लगैं ॥
 जय कुम्भ मालव पैत तत्त सु साह छन्नहिं मेलकैं ॥
 निवै हजार ९०००० लिखाय लिखठहराय दम्भ दलेलकैं ॥ ५६ ॥
 तब दक्खिनिन नृप साहुसों अरजी कराय निदेसलै ॥
 यह अकं यणिय बुदिपैं कहि कोउ नाहिं बिसेस लै ॥
 तिनमाहिंसों श्रियमन मात वै छोरि दम्भ डते दये ॥
 पुनि अक्खि पुत्तिप लाय छत्तिप नेह बीज बये नये ॥ ५७ ॥
 श्रियमत मातहि रक्खि यो जयसिंह जैपुर मासलों ॥
 पुनि साह हितु लिखाय भग कर माफ तास प्रवासलों ॥
 बलि तास डेरन जाय कूरम राय बदनकैं बली ॥
 सजि स्त्रीय सेनहु सग दै वह पथ पूरव मुक्कली ॥ ५८ ॥
 भट रान केसरिमिह ग्यो जयसिंह तत्थहि ए रहे ॥
 दक्ष ओर सगहि तास दै पुनि मास जैपुर जे रहं ॥

एरहे १ जेरहे २ अत्यानुप्रास १ ॥

नगरी सलूमरि नाह केसरिसिंह धुँत अधीर ज्यों ॥
 जयसिंह बग्घहनंद हो यह वेदपाँठक बीर त्यों ॥ ५९ ॥
 सनमान दोउनको कियो कछवाह डेरन जायकैं ॥
 हय इत्थि कूरमसों ति'लै पहुँचे उवैपुर आयकैं ॥
 मल्लार अरु परमार ए करि कैद सालमकों इतैं ॥
 तजि नैर बुदिय कुच कैं पहुँचे ति मालवमें तितैं ॥ ६० ॥
 परमार दौलतसिंह डक्क १ सु सेन दक्खिन सगही ॥

१ जयसिंह मालवे में गया २ तथा बादशाह ने छाने ३ दक्षेवासिंह स रूपये
 ठहरा दिये ॥ ५९ ॥ ४ आज्ञा लेकर ५ इसको बुदी पर गोद रखवा है; अथवा
 रूपयों का यह अंक बुदी पर स्थापन किया ६ अथ ७ पुत्री कहकर ८ छाती से
 लगा कर ॥ ५७ ॥ ९ विदेश में रहन तक का १० नमस्कार करके ॥ ५८ ॥
 ११ घूर्त १२ वेद का पाठ करने वाला अर्थात् वेद के मतानुसार चलनेवाला
 ॥ ५९ ॥ १३ ते (व) ॥ ६० ॥

यह रान को उमरावहो अरु नीति जंग अभंगहो ॥

तिहिँ अक्खि सालमसिंह मो कहँ लेहु जामिन व्हें अवेँ ॥

दुवलकख २००००० रूपय लेहु सो इन्ह देहु जावहुँ मैं तवेँ ६१

जितनै उदैपुरमें रहो अरु रानको जस वित्थेरँ ॥

मम पत्र लेहु लिखाय ओ लिखिदेहु तुम इनके करै ॥

* इनको अमात्यहु इक्क १ रूपय लैन संगहि लीजिये ॥

तिहिँ ग्राम पंचहजार ५००० को हम देहिँ सत्य पत्ताजिये ६२

तुमकोहु बुंदियको पटा मिलिहै हजारपचीस २५००० को ॥

सुनि एह दोलतसिंह पत्र लिखाय सालम हीसको ॥

अरु अप्प राव मलारसो परमारसो इम अक्खई ॥

दुवलकख २००००० रूपय देहिँ पै गृह लैहिँ तो लिखि सो दई ६३

हम रान जामिन बीच जो नहिँ देहिँ तो हम देहिँगे ॥

बाँलि रान भूप बलिष्ठ जे इनतै निवेरिहु लैहिँगे ॥

परमार यो लिखि पत्र जो परमार हुलकरको दयो ॥

निज संग हुलकर दास भट्ट महादिदेव सु पै लयो ॥ ६४ ॥

पुनि जे उदैपुर आय दक्खिन सेन सो इम सिक्खकै ॥

सुनि रान चाहि सिराहि दोलतसिंहको तब तिक्खकै ॥

लिखि पंत बुंदि दलेलको दैम दम्म सालम मंगये ॥

बदल्यो दलेलहु बँप्प हितु कैपद दोयशु नाँ दये ॥ ६५ ॥

तब सुभट दोलतसिंह जुत करि सिक्ख सालम रानसो ॥

१ सालमसिंह ने दोलतसिंह से कहा १ मरहठों को ॥ ६१ ॥ ३ तुम तो मुझसे लिखवा लो और मरहठों को तुम लिखदो ४ कामदार ५ विश्वास करो ॥ ६२ ॥ ६ उस दुःख वाले सालमसिंह को "ही विषादे" इति शब्दार्थ-चिन्तामणौ ॥ और स सहित अर्थात् विषाद सहित जो सालमसिंह था उस का पत्र लिखा गया ॥ ६३ ॥ ७ फिर ८ बलवान् है सो ९ महादेव ॥ ६४ ॥ १० पत्र ११ दंड के रुपये १२ बाप से दो १३ कोई भी नहीं ॥ ६५ ॥

चलि नैनवा निज नैर आयउ भीरु उब्बरि प्रानसों ॥

नेज कोसतैं दुव लक्ष्म २००००० रूप्य देस दक्खिन मुक्कले ॥

एनि कुंम्म आयस पाय दोउनकोहि दिन्न पटा भले ॥ ६६ ॥

ससि अक सत्त रु इक्क १७९१ सवत मास कत्तिय गोरमैं ॥

कक्कवाह किय सब भूप इक्कत जानि दक्खिन जोरमैं ॥

मेवारमैं आगोच नामक ग्राम सर्व मिले तहाँ ॥

अरजी लिखाय पठाय दिल्लिय सेन भेजहुगे यहाँ ॥ ६७ ॥

सुनि साह सेन समस्त सजुत खानदोरह मुक्कलयो ॥

यह मास अगहन कृष्ण पचमि ५ चँ चक्रहि लौ चलयो ॥

हुत आय मालव देसमैं बुलवाय कूरमहू लयो ॥

विन्नु-रान तव सब भूप सजुत सोहु मालवमैं गयो ॥ ६८ ॥

तिहि साल विच इत नैर बेघम पोस मास अमा जहाँ ॥

कक्कवाह रानिय देह दानिय दान कै रु करी तहाँ ॥

इत को नवाव रु कुंम्म मालवमैं मिले अति प्रीति सों ॥

सब हिंदु भूपन सत्य लौ रन मन्न मडिय रीतिसों ॥ ६९ ॥

अभमल्ल नृप मरुईस वीकानैर भूपति सत्यही ॥

कोटेस दुरजनसल्ल सोपुर भूप गोर समत्यही ॥

रतलाम भव्बुवके रु ईडरके कबधहु सजुरे ॥

बुवेल्ल नृप दतियादि भूप भदोर भड पैं बिप्पुरे ॥ ७० ॥

राधि मेल वीर बघेल्ल बघुव भूप सम्मलि सज्जयो ॥

नगरी करांलिय भूप जहव सेन सजुत सो ठपों ॥

पुनि रूपनैर कबध भूप जु पाय लागिय आनिकैं ॥

१ जयसिंह की आज्ञा पाकर ॥ ६५ ॥ २ शुक्ल पक्ष में आगोचा के पास ही छुरछा नामक पुर में इकट्ठे हुए थे ॥ ७॥ ४ अर्थकर ५ सेना ६ साथ ॥ ६८ ॥ ७ बेघमपुर ८ अमावास्या ९ जयसिंह मालवा देश में मिले ॥ ६९ ॥ १० एकत्र हुए ११ प्रीति ॥ ७० ॥ १२ लडा हुआ १३ रूपनगर का ॥ ७१ ॥

यह रान को उमरावहो अरु नीति जंग अभंगहो ॥

तिहिँ अक्खिख सालमसिंह माँ काँहँ लेहु जामिन उँहँ अँवँ ॥

दुवलकख २००००० रूप्य लेहु सो ईन्ह देहु जावहुँ मैं तँवँ ६१

जितनँ उदैपुरमें रहों अरु रानको जस बित्थरँ ॥

मम पत्र लेहु लिखाय ओ लिखिदेहु तुम इनके करँ ॥

* इनको अमार्त्यहु इक्क १ रूप्य लैन संगहि लीजिये ॥

तिहिँ ग्राम पंचहजार ५००० को हम देहिँ सत्य पँताजिये ६२

तुमकाँहु बुंदियको पटा मिलिहै हजारपचीस २५००० को ॥

सुनि एह दोलतसिंह पत्र लिखाय सालम हाँसको ॥

अरु अप्प राव मलारसाँ परमारसाँ इम अक्खई ॥

दुवलकख २००००० रूप्य देहिँपै गृह लैहिँ तो लिखि सो दई ६३

हम रान जामिन बीच जो नहिँ देहिँ तो हम देहिँगे ॥

बाँलि रान भूप बलिष्ठ जे इनतँ निवेरिहु लैहिँगे ॥

परमार याँ लिखि पत्र जो परमार हुलकरकाँ दयाँ ॥

निज संग हुलकर दास भट्ट महादिदेव सु पै लयो ॥ ६४ ॥

पुनि जे उदैपुर आय दक्खिन सेन साँ इम सिक्खकँ ॥

सुनि रान चाहि सिराहि दोलतसिंहको तब तिक्खकँ ॥

लिखि पँत बुंदि दलेलकोँ दैम दम्म सालम मंगये ॥

बदल्यो दलेलहु बँप्प हितु कैपद दोयरहु नाँ दये ॥ ६५ ॥

तब सुभट दोलतसिंह जुत करि सिक्ख सालम रानसाँ ॥

१ सालमसिंह ने दोलतसिंह से कहा १ मरहठों को ॥ ६१ ॥ ३ तुम तो मुझसे लिखवा लो और मरहठों को तुम लिखदो ४ कामदार ५ विश्वास करो ॥ ६२ ॥ ६ उस दुःख वाले सालमसिंह को "ही विषादे" इति शब्दार्थ-चिन्तामणौ ॥ और स सहित अर्थात् विषाद सहित जो सालमसिंह था उस का पत्र लिखा गया ॥ ६३ ॥ ७ फिर ८ बलवान् है सो ९ महादेव ॥ ६४ ॥ १० पत्र ११ दंड के रुपये १२ बाप से दो १३ कोड़ी भी नहीं ॥ ६५ ॥

चालि नैनवा निज नैर आयउ भीरु उब्बरि प्रानसों ॥
 निज कोसतैं दुव लक्ष्म २००००० रूप्य देस दक्खिन मुक्कले ॥
 एनि कुंम्म आयस पाय दोउनकोहि दिन्न पटा भले ॥ ६६ ॥
 ससि अक सत्त रु इक्क १७९१ सवत मास कत्तिय गोरंमैं ॥
 कक्खवाह किय सब भूप इक्कत जानि दक्खिन जोरंमैं ॥
 मेवारमैं आगोच नामक ग्राम सर्व मिले तहाँ ॥
 अरजी लिखाय पठाय दिल्लिय सेन भेजहुगे यहाँ ॥ ६७ ॥
 सुनि साह सेन समस्त सजुत खानदोरह मुक्कल्यो ॥
 यह मास अगहन कृष्ण पचमि ५ चँ चँकहि लै चलयो ॥
 हुत आय मालव देसमैं बुलवाय कूरमहू लयो ॥
 विनु-रान तब सब भूप सजुत सोहु मालवमैं गयो ॥ ६८ ॥
 तिहि साल विच इत नैर बेघम पोस मास अमा जहाँ ॥
 कक्खवाह रानिय देह दानिय दान कै रु करी तहाँ ॥
 इत को नवाव रु कुंम्म मालवमैं मिले अति प्रीति सों ॥
 सब हिंदु भूपन सत्य लै रन मत्र मडिय रीतिसों ॥ ६९ ॥
 अभमल्ल नृप मरुईस वीकानैर भूपति सत्यही ॥
 कोटेस दुरजनसल्ल सोपुर भूप गोर समत्यही ॥
 रतलाम म्बुवके रु ईडरके कवधहु सजुरे ॥
 बुवेल नृप दतियादि भूप भदोर भट पैं बिप्फुरे ॥ ७० ॥
 रचि मेल वीर वधेल बधुव भूप सम्मलि सज्जयो ॥
 नगरी करालिप भूप जहव सेन सजुत सो ठायो ॥
 पुनि रूपनैर कवध भूप जु पाय लागिय आनिकैं ॥

१ जयसिंह की आज्ञा पाकर ॥ ६५ ॥ २ शुक्ल पक्ष में आगोचा के पास ही छुरवा नामक पुर में इकट्ठे हुए थे ॥ ६७ ॥ ३ अर्धकर ५ सेना ५ साथ ॥ ६८ ॥ ७ बेघमपुर ८ अमावास्या ९ जयसिंह मालवा देश में मिले ॥ ६९ ॥ १० एकत्र हुए ११ पति ॥ ७० ॥ १२ खडा हुआ १३ रूपनगर का ॥ ७१ ॥

पुनि आय नैर भनाय भूपति जोर मिच्छन जानिकैं ॥ ७१ ॥
 बजरंग राघव दुग्गको महिपाल खिच्चिपहू मिल्यो ॥
 नगरी सिरौहिय देवरा नृप आनि आयसको भिल्यो ॥
 रचि चक्र टट्टिय आय भट्टिय नैर जैसलमेरको ॥
 बलि नैर पट्टिनि भूप उम्मट आय आतहि बेरको ॥ ७२ ॥
 कछवाह नगुर नाह मिच्छ नवावहू कितने कहौ ॥
 मिलि खानदोगह सौं सबै परि तत्थ रुंधि दिसा चहौ ॥
 सबको सिराहि रु खानदोगह सेन दक्खिनपै सज्यो ॥
 मरहठ सेनहु धिक्खिकैं चाहि रहै सम्मुह ठे गज्यो ॥ ७३ ॥
 रचि मंत्र मंडित रागरचंद्र मलार ओ परमार त्यौं ॥
 रागांजि सम्मलि संधिया वढि जंग जीत विचार त्यौं ॥
 दलमाहिंसौं पखरैत अठ हजार ८००० कहि रु यों क ॥
 तुम जाय जैपुर देस लुट्टहु त्यौंहि मिच्छनकी मही ॥ ७४ ॥
 असवार अठ हजार ८००० वे तत्र सीम जैपुर जायकैं ॥
 टोडा रु टौंक विगारि लुट्टिय कुम्भ आन उठाय कैं ॥
 नगरी निवाइय लुट्टिकैं पुनि लुट्टि मालपुरा लयो ॥
 लंबा रु डगिय लुट्टि पडलि दाव दुंदुवपै दयो ॥ ७५ ॥
 तिहिं माहि जारि नराननैर रु जाय सौलिय लुट्टई ॥
 मोजाद पत्तन लुट्टिकैं हलसूरि घत्तन दै लई ॥
 इम रारि खगन आरि मारि विगारि जैपुर देसमें ॥
 पुनि नैर संभर आदि लुट्टिय साहके अवसेममें ॥ ७६ ॥

१ बजरंगगढ़ और राधोगढ़ का २ दुकम को भेला ३ सेना की टाटी (धोड़ी सी आड) रच कर ४ आते समय ॥ ७२ ॥ ५ मलेच्छ (यवन) ६ चारों दिशा रोक कर ७ राष्ट्र (राज) की चाहना करके ॥ ७३ ॥ ८ पाखरों वाले ९ मलेच्छों की भूमि को ॥ ७४ ॥ पुर का नाम है ॥ ७५ ॥ नराना नामक नगर को जलाकर ११ साली पुर लूटा १२ घातें १३ बाकी में ॥ ७६ ॥

जिम कुम्म मो यँहँ साहको मरहठ नाहिँ गिँने मिस्ते ॥

तिम तेहु दक्खिन बीर मन्नि रु ग्राम जैपुरके गिले ॥

असवार मान हजार अठ्ठन लूट यों इत मढई ॥

उत रामचद्र मल्लार ओ परमार बँगनको लई ॥ ७७ ॥

निज सुत्त साह अनीकपे पविर्पात पवत्रय ज्यो परे ॥

वजि बब ध्यानक त्यों अचानक कूटि बिबभक्त ए करै ।

तब ज्यों हुते तिम साहके उमराव भीरुक भगगये ॥

लचि कुम्भमारेह खानदोरह लज्जि मैंगहि लग्गये ॥ ७८ ॥

तब सेन भज्जत साहको दखिनीन खगगन खडयो ॥

उदि खेह अबरै यों छई जिम मेह सबैर मडयो ॥

अँचलाह लक्खनै फोजकी धमचक्क धक्कनतै धुकी ॥

बद्धि व्याधि दिग्गज दत्त तद्वि समाधि सकरकी चुकी॥७९॥

फररक्षि फीर्लेन केतु त्पो थररक्षि अवर भ्रँच्छरी ॥

वररक्षि दह्व वराह भूं दररक्षि कच्छप भो देरी ॥

तरवारि दक्खिन सेनकी दल मारि दिल्लियको दयो ॥

है मीचि भज्जत साहके दल राह बुदियको लयो ॥ ८० ॥

लागि पिष्टि दक्खिनके अनोक्कन लाग चम्मजि^{१५}लौ करी ॥

इत अगग आय रु साहकी पैंतना धुँनी वह उत्तरी ॥

१ जिस प्रकार जयसिंहको यादशाह का ही पुत्रा समझें २ मरहटों से
मिला हुआ नहीं समझें इस प्रकार दक्षिणियों ने जयपुर के देश को छुड़ा ३
प्रमाण ४ घोड़ों की बागें उठाई ॥ ७० ॥ ५ यादशाह की सोती हुई सेना पर
१ पर्वत पर बज्र पड़े जैसे ७ नगारे और होल ८ ठोक कर ९ कायर १०
कछवाहों का मुकुट जयसिंह (यहा स्वार्थ में 'ह' प्रत्यय किया है सो सय जगह
हसा ही जानो) ११ लखित होकर मार्ग ही लगे ॥ ७८ ॥ १२ मरहटों ने १३ आकाश
मा १४ जलधारा १५ भूमि भी १६ लाखों सेना की १७ पीछा ॥ ७६ ॥ १८ इस्तिरों
८ २१ सप्तसरा २० भूमि २१ भय मुक्त हुआ; अथवा गुफा रूप होकर अपने अगों
पति भीतर समेट लिये २२ नेत्र बन्द करके ॥ ८० ॥ २३ सेना ने २४ बामल न-
१६ पीछा किया २० सेना २३ बह नदी (बामल)

तजि भानपुर कोटानदी लग सेन भज्जतही गयो ॥
 जब चुरागा रूपय इक्क१को इक्क१ सेर तदिन विक्रयो ॥ ८१ ॥
 अतिही छुंघातुर साहको दल आपगा इम उत्तग्यो ॥
 पुनि आय बुंदिय खानपान दलेल सालमकैं करयो ॥
 कछवाह नाह रु खानदोरह सर्व भूपन सत्यही ॥
 रहि तत्थ मंडिय मंत्र दक्खिन सेन मन्नि समत्यही ॥ ८२ ॥
 कछु देस अज्ज दयें बिनाँ उनको नहीं मन धप्पिहै ॥
 तसमात अक्खहु साहमों सुनि साह मालव अप्पिहै ॥
 तब खानदोरह मंडि यों पठवाय विन्नति साहकों ॥
 लिखिदेहु मालवकों नतो खल आत दिल्लिय चाहकों ॥ ८३ ॥
 यह मंडि ओ इत सेन दक्खिनपैहु कग्गरं मुक्कल्यो ॥
 तुम लेहु मालव साहसों करि साम संचित जो फल्यो ॥
 मरहठ बीरन बंचि कग्गर बत्त मालव स्वीकरी ॥
 जवनेसहू सुनि पल मालव दैन बत्तहि अहरी ॥ ८४ ॥
 लिखि पल मालव दैनको जवनेस बुंदिय प्रेरयो ॥
 सुनि खानदोरह कुम्ममोरह सोहि दक्खिनकों दयो ॥
 मरहठ तैतह बंचि पैंतह लौ अवंति खुसी भये ॥
 नदि नाँहि चम्मलि उत्तरे मुररे ति मालवही गये ॥ ८५ ॥
 मधुमारसँ चंद्र रु अंक सत्त रु इक्क१७६१संवत् यों भई ॥
 इत खानदोरह सिक्ख भूपन दे रु दिल्लियही लई ॥
 तब चाहकैं कछवाह भूपति दुंग बुंदिय देखनैं ॥

१ भाणपुरा का छोड़कर ३७ स दिन २ चून रूपये का एक सेर चिका ॥ ८१ ॥ ४ भूख में पीड़ित ५ नदी ६ समर्थ ॥ ८२ ॥ ७ आज ८ इस कारण से ९ मालवा देश देवेगा ॥ ८३ ॥ १० पत्र भेजा ११ तुम्हारा संचित कर्म फलीभूत हुआ है सो मि-
 लाय करके मालवा देश लेलो १२ मालवा लेने की बात स्वीकार की १३ आदरी (स्वीकार की) १४ भेजा १५ कछवाहों के मुकुट जयसिंह ने १६ तत्रह (तहाँ) १७ पत्र ह (पत्र) को (यहाँ भी स्वार्थ में ह प्रत्यय है सो सब जगह ऐसा ही जानना) ॥ ८५ ॥ १८ चैत्र मास १९ बुन्दी का गढ़ देखना चाहा ॥ ८६ ॥

दलेलसिंहका घूदीमें गढ़ पनाना] सप्तमराशि-चत्वारिंशमयुद्ध (१२११)

चढिकै दलेल समेत हथिय इफ१ बीरहु लै घनै ॥ ८६ ॥
 प्रविश्यो सु उत्तर द्वार ॥ पत्तन पति पिषखत ॥ सचरघो ॥
 चढि दुग्ग ॥ हथियपोरिठे ॥ नवठान चोकहि उत्तरघो ॥
 सठ पाप सालम आय सम्मुह जोरि हथिनको नयो ॥
 इम राजमदिर पिक्खिकै पुनि कुम्म ॥ पब्बयपै गयो ॥ ८७ ॥
 वरसिंह भूपति अगग बधिय दुग्ग जो बिगरघो लख्यो ॥
 बापिसीस भित्ति रु खातिका कहुँ खोम तोम परघो लख्यो ॥
 कछवाइ नाह दलेलसौं तव दुग्ग बधनकी कही ॥
 सुनि सच्च मन्नि दलेलहुँ स्वसुरेस उक्त कियो सही ॥ ८८ ॥
 रहि दोषरति रु अक्खि यो जयसिंह जयपुर सचरघो ॥
 नव दुग्ग बधि दलेलहुँ इत सज्ज बुदियको करघो ॥
 इहिं साल अगहन मासमें जगतेसरानहुँ जानिकै ॥
 दिप नैर बेघम देवसिंहहिं फेरि कर्गर ठानिकै ॥ ८९ ॥
 दुवलकख २००००० रूप्य दडके लिय रान राउत देवसौं ॥
 सहि दुक्ख दारिद बिगारघो इम साल जामिप सेवसौं ॥
 पुनि रान काम सु राजको नगराजसौं सब छिन्नयो ॥
 लखि लुद्ध कोविदें जो बिहारियदास कायथको दयो ॥ ९० ॥
 जिहिं अगग विल्लिय जायकै सब रान काम सुधारयो ॥
 जयसिंहको बिच डारिकै लिखवाय रामपुरा लयो ॥
 पुनि भीतें पदह १५ भेडतैं श्रियेद्वार कायथ जो रहयो ॥
 अब रान बुल्लि बहारि हू तिहिं मुख्यमन्त्रियकै चढयो ॥ ९१ ॥

१ पुरीमें चखा ॥ शार्धापोल होकर ॥ नवठानों के बीच में उत्तरा ॥ पर्वत पर (पर्वत के ऊपर के तारागढ़ में) ॥ ८७ ॥ १ कांगरे २ फोट ३ खाई ४ बुरजों का ५ समूह गिराहुआ देखा ६ ससुरे और स्वामी (अपन को बुन्दी की गद्दी पर पिठान बाजा पति) का कहना सही किया ॥ ८८ ॥ ७ रात्रि ८ फिर पत्र (पट्टा) लिख कर ॥ ८९ ॥ यह साला ६ बरिनाई की सेवा करने से भिगबा १० चतुर ॥ ९० ॥ ११ अथ से १९ वर्ष १३ नाथद्वारा म १४ राना न बुलाकर ॥ ९१ ॥

दुव अंक सत्रह १७९२ मान संवत पक्ख *उज्जल पोसमें ॥
 निज बंधु भूप अमान मन्नि रु रान उप्फनि रोसमें ॥
 देल पंति दुद्धर बंधिकै जगतेस साहिपुरा लग्यो ॥
 चहुँ ओर सोर सजोर वहाँ घनघोर तोपनमें दग्यो ॥ ९२ ॥
 तब रान सम्मलि होनको जयसिंह जैपुरसों चढ्यो ॥
 सुनि एह साहिपुरेसको अति सोक कूरमको बढ्यो ॥
 तब दंड रूपय लक्ख १००००० साहिपुरेस अप्पिय रानको ॥
 करि कुंच रानहु गो उदैपुर रक्खि बंधुव मानको ॥ ९३ ॥
 इहिं साल मेचक माघमें दबि रोग दुस्सहतेँ गरयो ॥
 निज नैनवापुर माँहिं अंध सु मंद सालमहू मरयो ॥
 मरुभूप दिल्लिय आय इत गुजरात जित्ति उछाहसों ॥
 अरजी करी कर जोरि बुद्धिहिं दैन बुंदिय साहसों ॥ ९४ ॥
 तँहँ खानदोरह जो नबाब जबाब पेस न होनदै ॥
 जयसिंहको मति मित्र यों अरजी सु लग्गन जो न दै ॥
 नव९मास बुंदिय काज यों मरुभूप दिल्लियमें रहयो ॥
 बखसीस किन्न बिसेस पै यहतो न साह करयो कह्यो ॥ ९५ ॥
 तब कुप्पिकै बिलु साह आयसँ सेन धन्वप सज्जयो ॥
 सब देस लुट्टत साहको मरुदेस गर्वित वहे गयो ॥
 दुव अंक सत्रह १७९२ साक यों सितपक्ख फँगुनमें भई ॥
 इत साह दक्खिनमें मिल्यो यह जानि कूरमकी लई ॥ ९६ ॥

*पौष सुदि पक्ष में १ नहीँ मानने वाला (निरंकुश) १ मेना की पंक्ति, दुर्धर्ष (दु ख से धर्षण करने में आवै ऐसी) बांधकर ॥ ९२ ॥ २ जयसिंह के आने का ॥ ९३ ॥ ३ माघ बादि पक्ष में ४ बुधसिंह को बुन्दी देने की ॥ ९४ ॥ ५ इच्छा मित्र (अपनी इच्छा से मित्र था जयसिंह का किया हुआ मित्र नहीं था) अथवा बुद्धि से मित्र था ॥ ९५ ॥ ६ बादशाह की बिना आज्ञा ७ मारवाड़ का पति ८ फा. ल्गुन शुक्ल पक्ष में ॥ ९६ ॥

तबही नवाय उमीरखाँ चुगली सु दोउनकी करी ॥
 पैसु खानदोगह कुम्ममोरह यों हरामिय अहरी ॥
 मिलि सत्रु सेननसों गये अरु लाभ दक्खिनतैं लयो ॥
 दुव कोटि २००००००० रूप्य देस मालव मडि साहुवकों दयो ९७
 चुगली सु जानि रु कुम्महू पुनि पत्र दक्खिन मुक्कल्यो ॥
 श्रियमत आवहु वेग इथाँ हम दोर दिल्लियको दल्यो ॥
 श्रियमतहू नृप साह मत्रिय बचि पत्र सु बेगलै ॥
 दलैं दर्प दुद्ध बधिकैं गति काल कीलिय तेगलै ॥ ९८ ॥
 दोहा ॥

नृप साहुव नवलक्ख ९००००० दल, नगर सितारा नाह ॥
 सज्जित भो ताको सचिव, बाजेराय दुबाह ॥ ९९ ॥
 ॥ षट्पात् ॥

बाया पडित रामचद्र हुलकर मलारह ॥
 रागाजिय सध्या रु प्रथित आनद पमारह ॥
 अबहु मुख्य करि इनहि चढि रु श्रियमत चलायउ ॥
 सालम सुवन प्रताप सोहु सगहि भट आयउ ॥
 क्रमहि जानि आवाहनकर इम दक्खिन सन उप्परिय ॥
 तहिने अपार दल भार तकि फैनपति फैनन फुकरिय १००
 परिय १ करिय २ अन्त्यानुपास १ ॥
 गरद गैन वित्थरिय जरदै जैम जैनक रग किय ॥

१ हे प्रभु २ जयसिंह ॥ ६७ ॥ ३ फैलाय ४ बादशाह के मंत्री राजा (जयसिंह) का ५ सेना, घमंड से, अपना सेना के घमंड से ६ दुःख से धर्यशा की जाये एती ७ समय की गति को क्षत्र से कीली ॥ ९८ ॥ ८ धीर ॥ ९९ ॥ १० पुत्र १० जयसिंह को सुलाने वाला जानकर ११ बस दिन १२ सेना का अपार भार देखकर १३ शेषनाग भागों से फूटकार करने लगा ॥ १०० ॥ १४ आकाश में गरद फैलकर १५ शनैश्चर के १७ पिता (सूर्य) का रंग १० पीला करदिया

मरद मंत्रि उम्महिय दरद भूदार दह दिय ॥

पंच अयुत ५०००० पक्खरिय सहँस १००० दंतावर्त्त सज्जि ॥

दल पदाति दक्खिनिय गर्ग्वि दुवलक्ख २००००० गगज्जि ॥

बहुबिधि निसान भेरिय बजिय बल नकीव हंकत वडिय ॥

पेसवा प्रथितं बिप्र सु बलिय चामर वैग वित्तर चडिया १० ॥

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दी
पतिबुधसिंहचरित्रे बुधसिंहपत्नीकूर्मीसंमतिमहागणपत्तपठ्ययुत
द्रकीलितसालमसिंहतदात्मजप्रतापसिंहबुन्दीहरण १ कूर्मीमल्ल
रक्षाबन्धन २ प्रेषितायुतद्वयसैन्यजयसिंहस्य युद्धमन्तरापि पुनर्दलेल
सिंहबुन्ध्यधिकारप्रापण ३ कोटामहारावदुर्जनशल्यरय राणाजग
त्सिंहजामिपाणिग्रहण ४ तीर्थयात्राप्रस्थितसिताराधीशसाहूमन्दि
बाजेरायजनन्या मार्गागतोदयपुरजयपुरसत्काररवीकरण ५ महार
णासुभटदौलतसिंहस्य महाराष्ट्रकीलितदहसालमसिंहमोचन
जयपुराधीशजयसिंहस्य खारीनदीसमीपराजरथानान्तर्वर्तिराजपुत्रे

१ वीर साहू का मंत्री उत्साहित हुआ २ बाह की दाढ़
पीड़ा की ३ पाखरों वाले सवार ४ हाथी ५ पैदल सेना ६ गर्व करके ७ नगा
८ नोचत ९ सेना को १० पेसवा पदवी वाला प्रसिद्ध ब्राह्मण ११ श्रेष्ठ च
रों को १२ विस्तर (फैला) कर चढ़ा ॥ १०१ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के राज
बुधसिंह के चरित्र में, सालमसिंह के बड़े पुत्र प्रतापसिंह का बुधसिंह की र
णी कछवाही से मिल कर मरहटों को छ लाख रुपये देकर सालमसिंह को कै
करवा कर बुन्दी छुड़ाना १ राणा कछवाही का मल्लार के राखी बांधना
जयसिंह का बीस हजार सेना भेज कर बिना ही युद्ध किये बुन्दी पर दले
सिंह का पीछा अधिकार कराना ३ राणा जगत्सिंह का कोटा के महाराव
र्जनशाल के साथ अपनी बहिन का विवाह करना ४ सितारा के अधीश स
हू के मंत्री बाजेराव पेसवा की माता का तीर्थ यात्रा जाते समय उदय
और जयपुर में अत्यन्त आदर सत्कार होना ५ महाराणा के उमराव दौलतसिं
ह का हाड़ा सालमसिंह को मरहटों की कैद से छुड़ाना ६ राजा जयसिंह
राजपूताना के राजाओं को मेवाड़ में खारी नदी के समीप एकत्र करना

श्रीमंत पेसवाका उदैपुर आना] सप्तमराशि एकचत्वारिंशमशुक्ल (१२१५)

कत्तोकरणा उदयपुगधीशमृतेराजस्थानाशेषक्षमापालसहितदिल्लीसे
नापतिखानदोगरूपस्य महाराष्ट्रोपरिदक्षिणादिगमन ८ महाराष्ट्रात्रि
णापराजितसैन्यखानदोरापलायन ९ खानदोराजयसिंहयोर्दिल्ली
वान्महाराष्ट्रमालवदेशादापन १० महाराष्ट्राजगत्सिंहरय शाहपुरेशवेष्ट
नलक्षमुद्रादशब्दादान ११ आहूतजयसिंहमहाराष्ट्रसैन्यदिल्लीप्रस्थान
वर्णन चत्वारिंशो मयूख ॥ ४० ॥

आदितोऽष्टसप्तत्युत्तरद्विशततम ॥ २७८ ॥

॥ दोहा ॥

कटकविप्रदरकुचकरि, आयउलौनावाड ॥

सु सत्र रान जगतेस सुनि, लगि वधावन लाड ॥ १ ॥

जब काका निज जैनकको, बुल्लि तखत अभिधान ॥

बहुरि सलूमरि नाह बियर, पठये प्रेम प्रमान ॥ २ ॥

मिलन गये श्रीमतसौं, तब वह सम्मुह आय ॥

मुख्य रान भट मन्त्रिकै, विपरलिप अग्न बढाय ॥ ३ ॥

प्रथम लिखिय श्रीमत प्रति, जेपुर नृप बरजोर ॥

सजि मिलाप तुम रान सन, आवहु पुनि हम ओर ॥ ४ ॥

पार्ते उप्परि पेसवा, प्रथम उदैपुर पत्त ॥

उदयपुर के महाराष्ट्रा के बिना राजपूताना के सय राजाओं को रूप लेकर
दिल्ली के सेनापति खानदोरा का मरहटों पर दक्षिण में जाना ८ मरहटों के
रतिवाह से पराजय पाकर सेना सहित खानदोरा का आगना ९ खानदोरा
और राजा जयसिंह का शाहशाह से मरहटों को मालवा देश दिखाना १०
महाराष्ट्रा जगत्सिंह का शाहपुरे को घेरकर एक लाख रुपयों का दंड लेना
११ जयसिंह के बुलावे से मरहटों की सेना का दिल्ली पर जाने के वर्खन का
बाखीसया ४० मयूख समाप्त हुआ और आदि से दासौ अठहत्तर १७८
मयूख हुए ॥

॥ १ ॥ १ अपने पिता (सम्राटसिंह) का २ तख्तसिंह नामक ॥ २ ॥ ३ दोनों
को ॥ ३ ॥ ४ जयपुर के बलवान राजा (जयसिंह) ने ॥ ४ ॥ ५ ॥

सम्मुह आयउ कोस दस१०, रानहु हित अनुगत्त ॥ ५ ॥
 आसिरबादहि अगग यह, लिखतो गुंमर लसंत ॥
 पै नमिकैँ यँहँ रान प्रति, क्रिय सलाम श्रियमंत ॥ ६ ॥

॥ प्लवङ्गमम् ॥

रानहु बिरैचि प्रनाम मिल्यो अति मोदसों,
 बाजेरायहिँ लाय बधाय बिनोदसों ॥
 आहड़ ग्राम समीप सिविँर दलको करघो,
 हो जँहँ चंपकबागँ अप्प तँहँ उत्तरघो ॥ ७ ॥
 पुनि पठई महिमानि रान बहु रीतिसों,
 रूप्यय पंचहजार५००० बँसन गज बीति सों ॥
 दूजे दिन श्रियमंत सभा रचि बुल्लयो,
 बिप्रहु गो तब बेग नेह बिथरघो नयो ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

तबहु द्वार प्रछन्नतक, आयउ सम्मुह रान ॥
 दूजी गहिय बिप्र हित, बिछवाई सु बिधान ॥ ९ ॥
 तिहिँ उठवाय रु पेसवा, बिनु गहिय गय बैठि ॥
 रच्यो अदब यह रानको, प्रीति अतुल हिय पैठि ॥ १० ॥
 गहिय पर रानाँ रहयो, सिर दुवर चमर ढराय ॥
 चमर इक्क१हुव बिप्र सिर, बलि हित वत्त बढाय ॥ ११ ॥
 रान कहिय नमनीय तुम, तब द्विज कहिय सचाँव ॥
 मोहि गिनहु नृप रावरो, जिम सोलह१६ उमराव ॥ १२ ॥
 रान तबहि जर जीन जुत हय चउ४हत्थिय एक१ ॥

१ घमंड से शोभित होकर बड़ा होवै सो आशीर्वाद देता है और छोटा होवै सो खलाम करता है तथा लिखता है ॥ ६ ॥ ३ करके ४ डेरा (पड़ाव) ५ चंपाबाग ॥ ७ ॥
 ६ वस्त्र ७ घोड़ा ॥ ८ ॥ ८ भीतर के द्वार (ढोढी) तक ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ ९
 नमस्कार करने योग्य (पूज्य) १० उत्साह सहित ॥ १२ ॥

राणा का भाजेराय को सात लाख रुपये देना] सप्तमराशि एक बत्तवारिश मयूख १२१७

नग जराय भूखन नवल, बिपेहिं दिय सबिवेक ॥ १३ ॥

सह लख १५०००० इक १ साल प्रति, स्वीकरि दखिखन दम्म ॥

दियउ परगन वनहडा, तिनमें लिखि हित कम्म ॥ १४ ॥

ताँल मध्य इक रानकै, जगमदिर प्रासाद ॥

ताहि दिखावनकी कही, बाँसर दूजे बाद ॥ १५ ॥

रान पिंसुन वनि कोउ तब, बाजेरावहिं अक्खि ॥

लै जावत मारन तुमहिं, रान कपट हिय रक्खि ॥ १६ ॥

दखिखन मन्त्रियें एह डिज, हो तथीं पि सुनि एह ॥

मूरख सच्ची मन्त्रिकै, किय रोखैरुन देह ॥ १७ ॥

पठई यो कहि रान प्रति, मैं छलघात मरौ न ॥

कौलिहि मंड सज्जहु कटक, करहिं साम अब कोन ॥ १८ ॥

॥ पद्धतिका ॥

यह सुनत रान हुव सोक लीन, पठये पुनि दुवर भट ॥ १९ ॥

तखतेस रु केसरिसिंह तथ्य, जाय रु द्विज बदिथैं जोरि हथ्य ॥ २० ॥

कहि रान अधिक सनमान कीन, अप्पन न होहु अमरख अधीन ॥

किहि मूढ कहिय यह दोह कैथ, सोकइहु अप्प सब विधि समर्थ ॥ २१ ॥

जो कहहु नाहिं तजि देहु रोस, नाहक न देहु अभिसाप दोस ॥

श्रियमत तदपि भो नहिं प्रसन्न, तब सत्त लख ७००००० दिय दम्म

छन्न ॥ २१ ॥

सग्रामरानकी मात अगंग, चहुवानि मरी निज भुगि भैग ॥

१ नवीन २ प्राध्याय बाजेराय पेसवा को बिचार पूर्यक दिये ॥ ३ ॥ १३ छेद लाख रुपये

४ हित के कार्य के लिये ॥ ४ ॥ १४ पीछोला नामक तालाब में १ महल ७ दूसर दिन

८ बचन ॥ १५ ॥ पदके ९ राणा का खुगली करने बाता बनकर ॥ १६ ॥ १०

यह प्राध्याय दक्षिण का सलाहकार था ११ तोभी १२ क्रोध में लाख शरीर कि-

या ॥ १७ ॥ १३ युद्ध रच कर ॥ १८ ॥ १४ ऊपर के कहें हुए १५ प्राध्याय को नमस्कार

किया ॥ १६ ॥ १७ क्रोध के १० बचन १८ समर्थ ॥ २० ॥ १९ सिध्दा दोष २०

रुपये ॥ २१ ॥ २१ आगे २२ भाग (पट)

तब हुव बिलखख ३००००० मित * कनक दान, सो रानदयो बिप्रहिं
समान ॥ २२ ॥

दल कुंच कियउ लै बिप्र दाम, श्रियद्वार आय किय प्रभु प्रनाम ॥
सतपंच ५०० दम्भ किय भेट तत्थ, बल्लभ कुल बंदिय पुनि समत्थ २३
गोस्वामि नाम गोवर्द्धनेस, बिरचिय तिन अग्गहु † नति विसेस ॥
तिनकोँहु ‡ दम्भ सतपंच ५०० अप्पि, मरहट्ट चलिय दलकुंच मप्पि २४
पुनि होय जाजपुर नगरपास, बल कियउ केकड़िय द्रंग वास ॥
उततैं सुनि कूरम भूप आय, चतुरंग चक्क दुद्धर चलाय ॥ २५ ॥
धमि नैर कृष्णगढ निकट धाम, भिटिय दुव २ भंभोलाव ग्राम ॥
पठई तब कूरम राह अक्खि, हम मिलहि रानघर सीति रक्खि ॥ २६ ॥
पठई कहि बिप्रहु नहि प्रमान, है रान सुपहु साहु समान ॥
जे कबहु मिच्छ अनुचर बनैन, अनुचर सदाहि तुम लोभ अँन ॥ २७ ॥
जिहिं हेतु मोहुकोँ अधिक जानि, पै मिलहिं अज्ज समंता प्रमानि ॥
तुम जानत गहिय दै उठाय, पै बैठहिं दुव २ इक १ पीठ पाय ॥ २८ ॥
हम तत्थहु दक्खिन ओर होय, दै बाम तुमहिं इम मिलहिं दोय ॥
जयसिंहहु यह सुनि प्रबल जानि, इक आसन स्वीकैरि मिलिय आनि
चढि उभय २ चक्क हुव सज्ज आय, तिन बीच इक्क पटंगुह तनाय ॥
तामाँहिं मिले दुव २ गर्जेन छोरि, बैठे इक १ आसन जाँनु जोरि ३०
द्विज किय तँहु हुक्काजंत्र पान, लागि धुम्म कुम्म मनबिच रिसान ॥

* सुवर्ण दान ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ † नम्रता ‡ रुपये ॥ २४ ॥ १ सेना का २
नगर दुःख से धर्षणा की जावे ऐसी ३ चार प्रकार (हाथी, घोड़े, रथ, पैदल)
की सेना ॥ २५ ॥ २६ ॥ ४ यह तुम्हारा कहना प्रमाण नहीं है ५ श्रेष्ठ राजा ६
सितारा के पति साहु के समान है ७ यवनों के ८ लोभ के घर ॥ २७ ॥ २८ इस का-
रण मुझ को बड़ा माना परंतु आज १० बराबर के मान कर मिलेंगे ११ एक
आसन (गद्दी) पर ॥ २८ ॥ १२ तहां हम दहिनी ओर रहकर १३ एक गद्दी पर
बैठना स्वीकार करके ॥ २९ ॥ १४ मिलाप के स्थान पर दोनों सेना सज्ज हो
कर रही १५ डेरा १६ हाथियों से उतर कर १७ छुटने मिला कर ॥ ३० ॥ १८ धूम

अयसिंहका पाजेरावसे मिलना] सप्तमराशि-एकचत्वारिंशमयुष (१२३६)

पुनि सुभट मुख्य निज निज बुलाय, बैठारि मिसल आयत बनाय ३१
दक्खिन भट हाजरि सबहि तथ्य, इक्क १ न मल्लार आयउ समथ्य ॥
सधा जिहि बुदिय लैन लिनन, द्विज बाजेरावहु वचन दिन्न ॥ ३२ ॥
श्रियमत यहाँ मिलि पलटि पो न, कछवाह बुदि छोरहु कक्षो न ॥
पोन १ क्षोन २ ग्रन्थानुप्राम १ ॥

साल्म सुत सजुत आसु उठि, इहि कारन हुलकर चलिय रूठि ३३
श्रियमत कुम्भ इम मिलि सुभाय, अब निज निज डेरन उभय २ आय
यँहँ सुनिय विप्र रुठिय मल्लार, गय तवाहिनिहोरन प्रकटि प्यार ३४
अक्खिय तव हुलकर अथ्य आय, तुम बुदिय लैन न किय उपाय
करि सपर्य लैन पुनि देहु वैन, तुम सग न तो अब हम चलै ना ३५ ॥
नृप साहु सपथ तव विप्र बुल्लि, लैहौ अब बुदिय तेग तुल्लि ॥
विचमै कछु वासर जान देहु, दोउन २ मनाय लिय अक्खि एहु ३६
कूरम रु विप्र पुनि मिलैन कीन, लहि कूर्म द्वौद रचि मत्र लीन ॥
उततै दल लक्खन तुम बनाय, आवहु इत जैपुर हे सदाय ॥ ३७ ॥
अब ही न लरन अवकास अँच्छ, दक्खिन अमात्य तुम नीति दँच्छ
मिलि बहुरि दैहिँ मिच्छन मिटाय, जँव करि दल सज्जहु गेह जाय
कूरम गय जैपुर अक्खि एह, श्रियमत मुरयो दक्खिन सनेह ॥
दुव अक सत इक १७९२ सक दुरतै, यह भयउ मास फग्गुन
उदत ॥ ३९ ॥

दाकुच तँदनु करि द्विज प्रधान, बेघम छिग आय रु दिय मिलैन
(धुँवा) लगन से जयसिंह मन म रिसाया ॥ ३१ ॥ १ तथा २ स
मर्थ ३ प्रणिज्ञा ॥ ३२ ॥ ४ श्रीघ वठकर ५ रोप (शोध) फरके ॥ ३३ ॥ ६ आश्रय
(पाजेराव) ने ॥ ३४ ॥ ७ यहा आकर फिर बुदी लैन का ८ सौगन ॥ ३५ ॥ ९
राजा साहू का (सौगन) १० दिन ॥ ३६ ॥ ११ मिलाप १२ जयसिंह का अभि
प्राय ॥ १३ ॥ १३ अच्छा १४ हे दक्षिण के मर्त्री १५ दक्ष (घतु) १६ शीघ्रता
परके सेना सजो ॥ १८ ॥ १७ गुर है अन्त जिसका, अथवा गुरा है अन्त जिस
का १८ वृत्तांत ॥ ३९ ॥ १९ जिम पीछे २० मुक्ताम

यँहँ भट प्रताप हृष्ट सु अभंग, श्रियमंत चेरहु लौ इक्क १ संग ॥४०॥
 बुन्दीस निकट गय नमिय बीर, सब यह उदंत जंपिय सधीर ॥
 कथ पेसवाहु यह तब कहाय, तुमतेँ न जुदे हम बुंदिराय ॥ ४१ ॥
 अबतो हम आये लोभ ठानि, लौहँ पुनि बुंदिय लेहु मानि ॥
 बुंदीस मिलन हित कछु कहाय, टारी सु विप्रइम दलँ लिखाय ४२
 तदनंतर दक्खिन द्विज प्रपत्तँ, गो हृष्ट प्रतापहु संग तँत ॥
 इत दिलिय कूरम कुजस उडि, श्रियमंत मिलन सुनि साह रुडि ४३
 तब साँह निजामनमुल्क बुलि, आयउ नबाब सुनि तेग तुलि ॥
 हो यह कलीजखाँ नाँम बीर, गाजुदीखाँ सुत रन गर्भीर ॥ ४४ ॥
 वह भट द्रुत दिलियनैर आय, बलि साह हितु सिजँदा विधाय ॥
 जवनेसहिँ कूरम कुपित जानि, पुनिलिखिय पत्र दक्खिनप्रमानि ४५
 अवसर अब आयउ भुम्मि लैन, श्रियमंत बेग आवहु ससैनँ ॥
 यह सुनत बज्जि जिततित निसँन, उमडिय अनीकँ सागर उफान ४६
 फहराय भंड हथिन फरकि, भहराय भज्जि भीरुँक भरकि ॥
 सज्जत भट बाहुँल कवच टोप, अतिकाय चरक्खन चढत तोप ॥४७॥
 खुरसान धार आयुध खनंकि, पाँवक प्रचंड भारत भनंकि ॥
 दक्खिन अनीकँ गज्जिय दुरंतँ, इहिँ रीति बीर सज्जिय अनंत ४८
 संबत त्रि अंक हय इक्क १७९३ मान, इसमौंस विजयदसमी १० उफान
 संक्रमियँ सिताराधीस सैन, श्रियमंत मुख्य लागि भुम्मि लैन ४९
 अतिकाय बाजि फाँदत अकास, मिटिजात दुँग पद्धर मैवास ॥

१ श्रीमंत के हलकारे को ॥ ४० ॥ २ वृत्तान्त कहा ॥ ४१ ॥ ३ पत्र ॥ ४२ ॥ ४
 जिस पीछे ५ गया ६ तहाँ ॥ ४३ ॥ ७ बादशाह ने निजामुल्मुल्क को (यह
 खिताब है. जिसका मतलब है मुल्क का इन्तजाम करने वाला) बुलाया
 युद्ध में गर्भीर ॥ ४४ ॥ ८ शीघ्र १० सलाम ११ करके ॥ ४५ ॥ १२ सेना सहित
 १३ नगारे १४ सेना ॥ ४६ ॥ १५ कायर १६ दस्ताने १७ बड़ी तोपें चरखों पर
 चढ़ी ॥ ४७ ॥ १८ अग्नि १९ सेना २० दूर है अन्त जिसका ऐसी ॥ ४८ ॥ २१
 आश्विन मास २२ चली ॥ ४९ ॥ २३ दुर्ग २४ लुटेरों के रहने के स्थान सीधे होगये

राधे लियउ ठाँके खुरतार खैह, मंडिय कि भइ आसार मेह ॥५०॥
 किलकिलत सग कालिय कगल, खिलखिलत मलगत खेत्रपाल ॥
 जुगिनि जमाति जय जयति जपि, झपटत झुकत बेताल झपि ॥५१॥
 बकबकत सग बावन ५२ प्रमत्त, सँकसकत गिह सिर होत छत्त ॥
 डमरुक डक डौदल डमकि, ठदनाय हूर नूर ठमकि ॥ ५२ ॥
 सजि चलिय मग भैरव त्रिसूल, फगकिय सिचान हिय असन फूल ॥
 आतोंपि ओघ ठकत अकास, फेगडे फलगत गिलन घास ॥ ५३ ॥
 इम चलिय सग पलचर अनेक, कटकट बिरौव प्रेतन कितेक ॥
 लागि अतल बितल सुतलन लचक, मुरकत बराह दतुलि मचक ५४
 घावन खुरतालन भरत अगि, जिहि रंध समाधि प्रमथेसँ जगि ॥
 अकबकत सेतु सागर उमंगि, मुल्लत दिसान नर मद कि 'भगि ॥५५॥
 तररकि भुम्भि छेकत तुँखार, दररकि देत पैवय दगार ॥
 रननकि गँव ककट करीन, छननकि होत जल नंदन छीन ॥५६॥
 उडिजात उँपल चूरन अनत, गडिजात तिमिर पूरन दिगत ॥

१ जलधारा ॥ ५० ॥ २ कोलाहल करके ३ हमनाहृत्था ४ 'जय हो, जय हो,
 यह कहकर ॥ ५१ ॥ ५ घट्टत घोलते हुए (यकथाह करते हुए) बावन घोर
 (जहा जहा बावन की सख्या आयै तथा तथा बावन घोर जाना चाहिये) ६
 पखो क शब्द का अनुकरण (नकल) है ७ पाघ विशप = अप्सराओं के ८
 पापजेय (पदभूषण) धजे ॥ ५२ ॥ १० भोजन के कारण हृदय फूलकर मिनाय
 पक्षी उड़े ११ चील्हों के समूह से आकाश ठकगया और तबाल गिटने को १२
 गिदह कूदने लग ॥ ५३ ॥ इसप्रकार १३ भास खानेवाले अनक पशु पक्षी साथ
 चले और पितने ही प्रेतों के दंतों का कटकट शब्द हुआ ॥ ५४ ॥ १५ पथरा
 से और घोंसों की खुरतालों से अग्नि ऊढ़ने लगी जिसके १६ शब्द से
 १७ शिव की समाधि छूट गई, घपरा कर समुद्र १८ मयादा जलकर ऐसा
 पड़ा जैसे १९ भाग के नशे में मनुष्य दिशा भूलजाता है ॥ ५५ ॥ तरार से कर
 २० घोड़े भूमि को काँदते हैं और २१ पर्वत फटकर दरारें (नेछें) दल हैं, रण-
 कार करके २३ कथच की कलियों का २२ शब्द होता है २४ पड़े जलाशयों
 का पानी खीख होता है ॥ ५६ ॥ २५ अनेक पथर चूर्ण होकर चबजाते हैं

इभराज अंदुं अँचत अभंग, रँजु कि खेत्रफल मपन रंग ॥ ५७ ॥
 बहिचलिय धातु अँद्रिन अनेक, सलसलिय पंथ गज दान सेक ॥
 इम हलिय सेन दक्खिन अनंत, दिल्लीस मुलक दब्बत दुरंत ॥ ५८ ॥
 सुनि साह सेन सज्जिय सिनाव, बँल मुखप उभय रक्खिय ननाव
 इक खानकमरदी निजवजीर, बँलि संगनिजामनमुलक बाग ॥ ५९ ॥
 दुवर चलिय सेन हरवल्ल हंकि, घनघोर घंट पक्खर घमंकि ॥
 कुलटा कँनोनि बिधि गरत बाज, उड्डन मलंगि आगामि अँज ६०
 मनके रु पवगके जे सुमित्र, चलत रँम धाँव मंडन बिचित्र ॥
 खंधन बिनँस्य चटुत खलानँ, मन्वतूँ बग्ग जँर जिलह लीन ॥ ६१ ॥
 बिरचत निकम्भं नलि जेरबंध, खँह जात भंपि तउ सँदस्य खंध ॥
 दलँ मध्य उलट पलटन दिखात, तिमिँ मच्छ मनहु अँनव तिरात ॥ ६२ ॥
 भुवकों ११ ति प्रवत्त बत्थनँ भरंत, कामिनि गँर लगगत जानि कंत ॥
 गादिनँ सुख साधित सहज सँदय, फिरिजात छत्रकी छाँह मध्य ६३
 प्रसवार चढत जिहिँ रूप द्रव्यँ, नञ्जि रु दिखात सुहि रूप नव्यँ ॥

पौर अधरे से पूर्ण होकर दिशा दिशा गडजाती (अदृश्य होजाती) है
 १ बड़े हाथी नहीं लूटनेवाले २ जंजीरों को खँचते हैं सो मानों ४ खेतों
 हो मापने को ३ डोरी (जरीब) खँचते हैं ॥ ५७ ॥ १ अनेक पर्वतों से ७ हा-
 थियों के मद के ८ लींचने से मार्ग ९ गीले होगये ॥ ५८ ॥ ९ सेना में १०
 कमरदीखां ११ फिर ॥ ५९ ॥ कुलटा के १२ नेत्रों की पुतली के समान चपल
 घोड़े १३ आगे आनेवाले युद्ध के अर्थ उड़ते हैं ॥ ६० ॥ १४ चलने में रस (स्वाद)
 उत्पन्न करते हैं और १५ दौड़ने में आश्चर्य करने हैं १६ विशेष भुके कंधों वाले
 १७ लगामों को चाटते हैं वे घोड़े १८ रेसम की बागें और १९ जरी की शोभा में
 लीन हैं ॥ ६१ ॥ स्वाभाविक भुके हुए कंधों से २० जेरबंद को निकम्मा करते
 हैं २१ आकाश में उडकर जाते हैं तो भी कंधा २२ वैसा का वैसा ही भुका
 हुआ रहता है वे घोड़े २३ सेना में उलट पलट दिखाते हैं सो मानों २४ समुद्र में
 २४ बड़े मच्छ तिरते हैं ॥ ६२ ॥ २५ वे घोड़े भूमि को अपनी २७ बाथों (भुजा
 ओं) में भरते हैं सो मानों २९ पति २८ स्त्री के गले लगता है ३१ सहज साध-
 न से २० सवारों के सुख को साधते हैं और छत्र की छाया में फिर जाते हैं ॥ ६३ ॥
 सवार जिस ३१ मध्य; अथवा विशेष नम्र रूप को देखना चाहे उसी ३३ नवीन

रन अजिर बज्ज जिनके रकाब, हरखात चैलाकन मन दिसाव ६४
 इम चलिय अच्च येइन थरक, हकिय अनेक इत्थिन हँलक ॥
 चचल खखि पच्छिन करत चोट, जिन अगग अहुँ इक्खत अगोर्ट ६५
 अति बीत पाय रोपत अहोल, लगि बहुरि हाँक बढिजात लोल ॥
 जंजीर लव अँचत सजोग, सिर रचत और गुजार सोर ॥ ६६ ॥
 आधोरन रक्खत बहु विमासि, हकत तथापि उद्धत हुल्लोमि ॥
 इम हलिय साह पुरैना अभग, दक्खिन दल सम्मुह इच्चन ॥ ६७ ॥
 सुनि इनहि आत दक्खिन दलसँ, द्रुत बढिय विगाग्न नाह देस ॥
 खटमास बट्ट आवत विताय, चकै सु अब दिहिय गिर चलाय ॥ ६८ ॥
 ग्वालेर लुट्टि बहु अरिन गजि, अब चलिय अगग रमबीर रजि ॥
 मग चुकि अगग कढिगयउ मिच्छ, इनआनिलई दिहिय गवईच्छ ॥ ६९ ॥
 सक वेद अक सत्रह १७९४ सुभार्य, अष्टमि ८ वलच्छ मधुमास आय
 दिह्लिपुर बाहिर पुरैल दोर, अति रुचिरै सिल्पविधि ओरओर ७०

रूप को नचकर दिखाते हैं १ युद्ध के आखाड़े में जिनके रकाब
 (पागड़े) बज्ज रूपी हैं जो २ घड़ने वालों के मन को प्रसन्न करते हैं
 ॥ १४ ॥ इम प्रकार के ३ घाड़े नचकर चले और अनक हाथियों के ४ हलके
 चले (सौ हाथियों के समूह का नाम हलका है) जो चचल हाथी पच्छियाँ को
 देखकर चोट करते हैं जिनके १ आग ५ मक्का का जल वहता छुआ दोखता है
 ॥ १५ ॥ अत्यन्त ७ झूलने और अकुश लगाने से अपने पगों को निखल
 रोपकर खड़े रह जाते हैं और फिर ८ क्रोध दिलाने वाले साटमारों के छोटे
 महारों पर ९ अपल होकर पड़जाते हैं बड़े जजीरों को बल पूर्णक लीचते हैं
 और जिनके मस्तक पर गुजार करते हुए अमर कोलाहल करके चलते हैं ॥ १६ ॥
 जिन हाथियों को १० महायत विरवास देकर रखते हैं, ११ लोभी प्रसन्नता
 के साथ अनन्य होकर चलते हैं १२ पादशाह की अमग सेना इस प्रकार
 अली १३ युद्ध करने को ॥ ६७ ॥ १४ दक्षिण के सेनापति १५ बह सेना ॥ ६८ ॥
 १६ धीर रस में प्रीति करके १७ यवन आगे पड़ गये १८ मरहटों ने अपनी इच्छा,
 नुसार दिह्ली को आ ली ॥ ६९ ॥ १९ अष्ट रीति से २१ चैत्र २० सुदि २२ प-
 छ फैलाव से २३ सुदर शिल्परचना की रीति से चारों ओर ॥ ७० ॥

थित इक्क कालिया देवि थान, मेला तँहँ तद्दिन हो महान ॥
 बढि रहिय तत्थ लक्खन बनिजैज, जिन्ह लखत होत धनदहिँ अचिउँज
 दक्खिन दल आय रु खगन खंडि, मेला वह लुट्टिय जुलम मंडि ॥
 कढि कढि तव अबभल बनिजकार, तजिद्रव्य भजिग कालिँदि पार
 कोटिन धन दिलितय कर्हं कुप्पि, लुट्टिय मरहठन कानि लुप्पि ॥
 बहु जलैज हीर मानिक बिथाग, प्रतिमुल्ल लाल मरकंत अपार ७३
 इम महुर हूँन रूपपय अनंत, भूखन जगाय कुंडल सुभंत ॥
 कौटीर तिलक आपाँड़ केक, अरु तौडपत्र नूपुर अनेक ॥ ७४ ॥
 सिंगेच हाग केयूर स्वच्छ, ऊर्मिकँ अँवाप कौटिसूत्र अच्छ ॥
 बहु मागि हँड लुट्टिय बिजाज, सन सूत्रमय रु गंकँव समाज ७५
 कौसेयँ पग्घ साटिन कलौप, नाँसार नडँय थुरमा अमाप ॥
 अत्तार बिपनि लुट्टिय अनेक, कँगटो रु बीति पुनि भक्षँय केक ७६
 हारँव हुव दिलितय हंत हंत, दँल कढिय तत्थ पुरतँ दुँगंत ॥
 इत रचत लूट दक्खिन अनीकँ, श्रियमंत सज्ज चाहत सँमीका ७७

१ उस दिन बड़ा मेला आश्लान्वा व्यापारी, अथवा लाग्यों का व्यापार बढ रहा था ॥ जिनका देखने मे ४ कुचेर को भी ५ आश्चर्य होता था ॥ ७१ ॥ ६ व्यापारी ७ यमुना नदी के परले किनारे भाग गये ॥ ७२ ॥ ८ जुलम करनेवाला क्रोध करके ९ बहुत माँती हारे और आशिकों का विस्तार, अत्यन्त मूल्य वाले लाल १० पन्ना ॥ ७३ ॥ ११ सुवर्ण की मोहरें और अनंत रूपये, जडाव के भूषण १२ श्रेष्ठ रीति के कर्ण रूपण १३ क्रीट (मुकुट) कितने ही शिवतिलक और १४ चूड़ामणि (मस्तक भूषण विशेष) १५ वर्णमूल (स्त्रियों के कानों का भूषण) अनेक नूपुर (चरणभूषणविशेष) ॥ ७४ ॥ १६ भुजबध्न १७ अमूठियाँ १८ कटिमेखला अर्थात् करधनी (कसगति) १९ प्राप्त की (लूटी) फिर बजाजों की २० दुकानें लूटी जिनमें सण के, सूत के और २१ जन बच्चों के समूह थे ॥ ७५ ॥ २२ रंसमी पगड़िय और साड़ियों के २३ समूह २४ ठंड को मिटानेवाले २५ नवीन अपार थुरमे (दुशाबे) अनेक अत्तागों के २६ बजार लूटे फिर २७ हाथी २८ घोड़े और कितने ही २९ खाने के पदार्थ लूटे ॥ ७६ ॥ दिल्ली में खेदकारक ३० हाहाकार शब्द हुआ तहाँ पुरसे ३१ दूर है अन्त जिसका ऐसी ३१ सेना निकली, इधर दक्षिण की ३३ सेना तो लूट कर रही थी और श्रीमन्त (दक्षिण का बजीर) सज्जित होकर ३४ युद्ध चाहता था ॥ ७७ ॥

यह सुनिय कमदीखा वजीर, बलि कहिय निजामनमुलक बीर ॥
 अप्पन मग चुकि रू अग आय, दिल्ली खल पैसे लैन दाय ७८
 यह माख मुर लो दल अभग, पहुँचे आधारहिँ जिम पतंग ॥
 उततै दल पत्तनसोहु आय, इततै नवाब दुवइय उडाय ॥ ७९ ॥
 मरहठ लय लुटत प्रमत्त, प्रतिमल्ल मिच्छ दुहुँरओर पत्त ॥
 मचि समर घोर समसेर मार, बजि निनद बब अबक बिथार ८० ॥
 धर धुरत धुजि धौवन धसकि, कुईलि कपालदरकिय कसकि ॥
 कटि परत भोह रद अवर कंध, किलकिलत मुठ नखत केबध ८१
 डमरूक मँहु डाइल डमकि, घहरात ढोल पक्खर धमकि ॥
 बबकारि करत बावन ५२ विलास, रचत जँहु जुगिनि केलिँ रास ८२
 जिततितहि मत्थ उडि पगत जत्थ, तुवा कि तंगल अवधूत हत्थ ॥
 चलि गगन टोप चमकहिँ अनेक, तुटि जँगर जात तननकि तेक ८३ ॥
 सपे गिरत भिन्न बाहुल सभेत, अहि पचपफन कि कचुक उँपेत ॥
 जिरँहन बिच कटि दग फदकि जाँहिँ, मानहुँ मखदासन जालि माँहिँ
 कटि कटि गिरत कहँ मुच्छ कदँ, रगे मृगनाभि कि दोज २८ ॥

१ पुनि २ दिह्ला म प्राप्त हुए (गय) ३ दिल्ली को जन की राति से ॥ ७८ ॥ जैसे अघर पर
 ४ सूर्य पड़चे तमे पड़ये १ वधर दिल्ली शहर से भी सेना आई ॥ ७९ ॥ मर-
 हठों को लूट म १ समापधान (गाफिल) पाये और दोनों ओर से यवन
 ७ अष्ट ८ प्राप्त हुए ९ तरवारा की मार से घोर युद्ध हुआ और नगरे व
 तासे पजकर १० शब्द का विस्तार हुआ ॥ ८० ॥ ११ घोड़ों आदि की दौड़
 से नीची पैठकर भूमि धुर्जा १२ घोपनाग का मस्तक हठकर फटा १३ विना
 मस्तक के क्रियावान घड नाचते हैं ॥ ८१ ॥ १४ कापालिका का वाय्य विशेष
 १५ योगिनिय रासकीया करती हैं ॥ ८३ ॥ १६ चपल अयधूत के हाथ से तूपा
 गिरै तैने १७ कवचा के ऊपर तणकार शब्द करके ८८ बार बारें लूटती हैं ॥ ८२ ॥
 २० पाहुप्राण (दस्ताना) सहित १६ हाथ फटकर गिरत हैं सो मानों कायली
 २१ सहित पाच फण के सर्प हैं १२ लोहे की जालीवाल टोपों में भेष निकस
 कर फदकते हैं सो मानों २१ धीमरों की जाल म से मछी जाती है ॥ ८४ ॥
 फर्की पर टेढ़ी मृच्छा क २४ समूह फट कर गिरते हैं सो मानों २५ फस्तुरी में
 रगे हुए द्वितीया के चन्द्रमा हैं

नागोद कटि कहूँ कढत गत्त, मोचातरुतैँ जिम गर्भ पत्त ॥ ८७ ॥
 कंकट बिदारि प्रबिसत कटार, बिल बीच पन्नग कि मच्छ वार ॥
 खंजर कढि पंजर पार जात, सोनित सँन्यो सुअति छवि सुहात ८८
 मानहुँ गर्वात्त रंजदिन दिखान, कर पँटु क्रिया कि जावक चुवोन
 दिपि गुरज मत्थ पारत दरार, कीर कि तरबूजन मुट्टि मार ॥ ८९ ॥
 चलेँ असिन होत गज कुंभ चीर, जगदीस भँत जुत्त कि कैरीर ॥
 सोनित तिरात धमनिनैँ समूह, जल अँरुन जानि अलँगई जूह ८९
 सरधाँ सम छुटत बिसिख ब्रौत, मधु जाल छत मँथन बनात ॥
 खिचिजात सरसैन करन कानि, जमराज लपनैँ जमुहाँत जानि ८९
 मिलिजात कोटि लस्तकैँ मचकि, सुकुमार नारि लंक कि लचकि ॥
तुरंगीर तुट्टि उड्डत अमाप, केकीनैँके कि चंद्रक कलाप ॥ ९० ॥

१ पेट का कवच (पेटी) कटकर शरीर निकला है सो मानों
 २ केल के वृक्ष से भीतर का पत्ता निकलता है ॥ ८२ ॥ ३ कवच
 फाड़ कर कटार प्रवेश करते हैं सो मानों बिल में सर्प घुसता है किना ४
 पानी में मच्छ घुसता है ५ रुधिर से ७ भीगाहुआ खंजर (छुरीविशेष) ५
 अस्थिपंजर (धड़) के पार जाता है सो ऐसी अत्यन्त शोभा देता है ॥ ८६ ॥
 जैसे कि १० क्रियाचतुर नायिका अपना ९ रजस्वला होना दिखाने के लिये
 जावक (लाल रंग विशेष) से ११ टपकता हुआ हाथ ८ भरोखे से दिखाती
 है अर्थात् अपने जार को जावक का टपकता हुआ हाथ दिखाकर व्यंग्य से
 अपना रजस्वला होने का संकेत करके उस जार के आने का निषेध करती
 (रोकती) है ॥ ८७ ॥ १२ चपल तरवारों से हाथियों के कुभस्थलों की चीरें हो-
 ती हैं सो मानों जगदीश के १३ भात सहित १४ कलश की चीरें होती हैं
 १५ नाड़ियों (नसों) का समूह रक्त में तिरता है सो मानों १६ लाल पानी में
 १७ पानी के सपों का समूह तिरता है ॥ ८८ ॥ १८ मधुमाखियों के समान
 तीरों के १९ समूह छूटते हैं सो मानों २० मस्तकों को सुवाल के छाते बनाते हैं
 २१ धनुष कानों पर्यन्त खिचता है सो मानों यमराज २२ मुख से २३ जंभाई
 (उबासी) लेता है ॥ ८९ ॥ धनुष की २४ सूठ मचक कर दोनों गोशे (नोकें)
 मिलिजाती हैं सो मानों सुकुमार स्त्री की कमर लचकती है २५ भाथा लूटकर
 अमाप बाण उड्डते हैं सो मानों कितने ही २६ मयूरों के चंद्रों (चंद्रवों) के समूह

सधत भेर धनु विच यों सुहात, दह्या कि काल आनन दिखात ॥
 खग भरत फूल धारन खनकि, तुटिपरत चाप चिह्नन तनकि ९१
 ढालनपर पप कटि ठहरि जात, कच्छप पर मर्वर सम सुहात ॥
 छलिजात रुहिर घायन छछकि, छुटिजात प्रान कहूँ लोह छकि ९२
 जिन वंदन इक्ष्णारिन उछिष्ट, चुबत शृगाल तिन उदित इष्ट ॥
 मनि कनक मच निंदक अमान, ते सूर धूर सर्जों सयान ॥ ९३ ॥
 बहु बीर बैठि अच्छरि बिमान, ताढ़ेव उपेत सुनि गान तान ॥
 धित मुँदित डारि गलबाँह चाहि, र्व कवध लरत पिक्खत सिराहि ९४
 हिय तिरत अन्न जुत निकसि दाल, मानहुँ सनाज लोहित मृनाज
 उर गिह बँपा हित धसत आय, बैठे गृही कि बँलभी बनाय ॥ ९५ ॥
 भट गिरत पाप अटकत रँकाव, घुम्मत घने कि उद्धत सराव ॥
 तुटिजात तग प्रैजरत पलान, कटि परत बाँजि गैल प्रोथँ कान ॥ ९६ ॥
 कढिजात कुतँ पक्खर विदारि, बढिजात रुहिर निमँजल बारि ॥

उद्धते हैं ॥ ९० ॥ धनुष के पीच में सधान किया हुआ ? बाण ऐसी शोभा
 देता है मानों यमराज के २ मुख में दाह दीव्यती है, तरवारों की धारों पर धारें
 खण्ण कर अग्नि कण उद्धते हैं ३ प्रत्यचा तण्ण कर धनुष तूटते हैं ॥ ९१ ॥
 कितन ही चरण कट कर ढालों के ऊपर टहर जाते हैं सो कमठ पर ४ मदरा-
 चल के समान शोभा देते हैं ५ रुधिर ॥ ९२ ॥ जिनके ६ मुख ७ एक
 स्त्री के ८ उच्छिष्ट थे उनके मुख ९ भाग्य उदय होने से गीदह खाटते हैं "यह
 इष्ट उदय होना शृगाल का विशेषण है" मणियों से जड़े हुए सुवर्ण के मर्खों
 (पल्लवों) की निन्दा करनेवाले थे वे बीर मान रहित १० धूल की शय्या पर
 सोते हैं ॥ ९३ ॥ ११ नृत्य सहित १२ प्रसन्नचित्त से १३ अपने धड़ को लटका हुआ देख
 कर प्रशंसा करते हैं ॥ ९४ ॥ तुरत का निकला हुआ हृदय आत सहित गिरता है
 सो मानो नाल सहित १४ लाल कमल तिरता है १५ चरबी के लिये ग्रीध पेट में घुसते
 हैं सो मानो गृहस्थी १६ सपसे ऊपर का मकान बनाकर बैठा है "बलभीकूटागारे"
 इति शब्दार्थचिंतामणि ॥ ९५ ॥ तिरते हुए बीरों के चरण १७ पागडों में अटक जाते
 हैं सो मानों मदिरों में धमों के ऊपर १८ आवकों (सरावणियों) के देवता ऊबे
 झुलते हैं १९ जलते हैं २० घोड़ों के २१ गले २२ फुरणे और कान गिरते हैं
 ॥ ९६ ॥ पाण्यों को तोड़कर २३ भाले निकल जाते हैं और २४ जैसे फुहारे से पानी

कटि असिन केतु उद्धत अकास, मानहुँ नयूर गन भद्र मास ॥९७॥
 इस परत खगग बहु भटन अंग, भ्रमत कि पटारै तरु पर भुजंग ॥
 इस मचिय घोर आहव अनूप, बहु कटि दक्खिन भट हुव विरूप ॥९८॥
 उडि जलिय अंगि बहि ओर ओर, जमुना जल सुक्किय ताप जोर ॥
 संकुलि प मच्छ खल भलि सु मार, पन्नग कि आहि तुंडिक टिपार ॥९९॥
 यह भयउ दैव दिल्लीस ओर, घन कटिय जंग मरदु घोर ॥
 लूटहु समस्त लिन्नी छुराय, दक्खिन बिहाल किय प्रवल दाय ॥१००॥
 श्रियमंत भीत गति मति बिसारि, भज्यो सु क्यों नं बंभन भिखारि
 इहि भजत भज्यो दक्खिन अनीक, घन विकल कहा काहिये घनीक ॥१०१॥
 मूरखन मिच्छु सोध्यो न मत्थ, बनि कांदि सारि भरि जियन वत्थ ॥
 उद्वाव ताँव बिभल अनेक, खुचि मरिय भानुजी गलनि कंक ॥१०२॥
 ॥ दोहा ॥

मनतँ मूढ जुदे नहे, जियन मरन अंत जानि ॥

संघन पंक गडि मरिय सब, अककसुता बिच आनि ॥१०३॥

निकलै तैसे रुधिर निकलता है ? तरवारों से उठकर ध्वजा आकाश में
 उड़ती है सो मानों भाद्रपद मास में मयूर उड़ते हैं ॥ ९७ ॥ वीरों के शरीरों
 पर तरवारें ऐसी पड़ती हैं जैसे २ चन्दन के वृक्ष पर सर्प पड़े ३ उपमा रहित
 युद्ध ॥ ९८ ॥ ४ अग्नि ५ भ्रमये ७ मानों टिपारा में सर्पों के फण ६ हैं
 ॥ ९९ ॥ ८ प्रवल रीति से ॥ १०० ॥ ९ भय से युद्ध की गति और बुद्धि को
 १० भूलकर भागा सो ११ क्यों नहीं भागे १२ भिक्षा माँगने वाला ब्राह्मण
 था अर्थात् उसका भगना यथार्थ था १३ सेना ॥ १०१ ॥ उन मूर्खों ने यह नहीं
 सोचा कि मृत्यु तो १४ मस्तक पर है जिससे भगकर कहाँ जावेंगे परन्तु १५
 भयद्रुत होकर भागे (भयभीत होकर; अथवा क्या करूँ, कहाँ जाऊँ इस प्रकार
 घबराकर भागे) और १६ जीने को बाध (भुजों) से भरा १७ उस भाग-
 में मैं अनेक विवहल होकर कितने ही १८ जमुना नदी की कलह में (दल
 दल में) १९ गड़कर मर गये ॥ १०२ ॥ वे मूर्ख मन से जुदे नहीं थे अर्थात् मन
 साथ चलने वाले थे और मन का धर्म डरने का है २० मरने जीने को मत्थ
 जानकर (वेदान्त के मत से मरना जीना स्वप्नवत् है) सब २१ जमुना नदी
 के २१ गहरे कीचड़ में आकर गड़ मरे ॥ १०३ ॥ हे बुद्धिमानों! सुनो, यह

मनोहरम् ॥

सुनौरे सयाने त्रिशुननको तमासो जाहि,
वस्तुते विचारें ज्ञान ज्वलन प्रचारें हैं ॥
सिद्धका न साधन कहों मैं कोन रीति वहे,
कारनन काज ओ दुहूँरमें घुर धारें हैं ॥
वाहि जे न जानें याहि सत्य करि मानें यातें,
झूठे सुख दुःख मानि बेद्यकों विसारें हैं ॥
जानें अनजानें की परिच्छा पारबेवा जानि,
डारिबेकी ठो ग धीर बोर देह डारें हैं ॥ १०४ ॥

॥ पट्पात ॥

इम सेनहिं मग्वाय भेरकि भजिग द्विज कैतर ॥
अवसेमन सजि सत्य मुरिग प्रतिमुख भय माछर ॥

तर १ बर २ अन्त्यानुप्रास १ ॥

पिक्खि सिद्धकों रयार पटकि उच्चार पत्तायउ ॥

किखिंसों गव्वन काज अनखि कोटापर आयउ ॥

चात्तीस ४० दिवस तोपन तरकि लरिरुप्पय दसलकरव १०००००० क्षिय

ससार सतो गुण, रजोगुण, तमोगुण का तमाशा है जिसको वेदान्त से विचारें तो ज्ञान की अग्नि इस को जलाता है, और सिद्ध जो परमेश्वर है उसका कोई साधन नहीं है अर्थात् जैसे इस जगत् का साधन तीनों गुण है जिस को मैं कैसे कहूँ इस में गीता का भी प्रमाण है कि 'यो बुद्धे परत स्तु स' यह किसी का नतो कारण है और न कार्य है और इन दोनों की घुर बोधी धारण करता है उस परमात्मा को जो नहीं जानते हैं वे इस ससार को सत्य मानते हैं इस कारण झूठे सुख और दुःख को मानकर जानने योग्य (परमात्मा) को छूछते हैं उस परमात्मा को जानने और नहीं जानने की परीक्षा करने की पहिचान यही है कि जहा शरीर डालने का स्थान होता है वहीं धीर और धीर छालते हैं ॥ १०४ ॥ १ चमक कर २ कायर ब्राह्मण भागा ३ याकी के लोग का साथ ४ पीछा मुड़ा ५ बिष्टा डालकर भागा ("लीख पटक कर भागा" यह राजपूताना की लोकोक्ति है) और ६ लोमड़ी (लूण्णी) से ७ गर्व करने के काम पर क्रोध करके

डरपात अलप सत्वर दुमति द्विज वह दक्खिन संचरिया १०५।
 इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीप-
 तिबुधसिंहचरित्रे उदयपुरागतसिताराधीशच्छत्रपतिसाहूमन्त्रिबाजे-
 रावपेसवारूपस्य महाराणासनाधस्तादुपवेशन १ बाजेरायस्य महा-
 राणादण्डादान २ भंभोलावग्रामान्तिकबाजेरायजयसिंहमिलनो-
 भयैकासनाधिवेशन ३ ज्ञातदिल्लीयुद्धसमयाभावजयसिंहमन्त्रबाजे-
 रायपुनर्दक्षिणादेशगमन ४ श्रीमन्तपेसवामिलनहेतुपरिज्ञातयवनेन्द्रा-
 प्रसादजयसिंहस्य दिल्ली प्रति ससैन्यबाजेरायपुनराकारण ५ दिल्लीव-
 हिःप्रदेशसमराङ्गणयवनजयमहाराष्ट्रपराजयकथन ६ अवशिष्टसै-
 न्यसहितप्रत्यावृत्तदण्डितकोटामहारावबाजेरावस्यदक्षिणागमनवर्ण-
 नमेकचत्वारिंशो मयूखः ॥ ४१ ॥

आदित एकोनाशीत्यधिकद्विशततनः ॥ २७९ ॥

॥ पट्टपात् ॥

इतं दिल्लीस वजीर जित्ति संगरै मरहठुन ॥

१ छोटी को शीघ्र डराता हुआ वह दुर्मति २ गया ॥ १०५ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में बुन्दी के भूपति बुधसिंह के चरित्र में, सितारा के राजा छत्रपति साहू के मन्त्रि बाजेराव पेसवा का उदयपुर आकर महाराणा की गद्दी नीचे बैठना १ महाराणा से बाजेराव का दंड लेना २ भंभोलाव नामक ग्राम के समीप महाराणा जयसिंह से मिलना और दोनों का एक गद्दी पर बैठना ३ दिल्ली से युद्ध करने का समय नहीं जान कर जयसिंह की सलाह से बाजेराव का पीछा दक्षिण में जाना ४ श्रीमन्त बाजेराव पेसवा से मिलने के कारण बादशाह को अपने पर अप्रसन्न जानकर राजा जयसिंह का बाजेराव पेसवा को सेना सहित फिर दिल्ली पर बुलाना ५ दिल्ली शहर से बाहिर युद्ध होकर यवनों का जय और मरहठों का पराजय होना ६ बची हुई सेना से पीछे आते बाजेराव का कोटा के महाराव से दंड लेकर दक्षिण में जाने के वर्णन का इकतालीसवां ४१ मयूख हुआ और आदि से दो सौ उनासी २७९ मयूख हुए ॥

३ युद्ध में

हरखित गपउ हजूर साह बहु दियउ रोम्न रन ॥
 इक इक प्रति आदोब उचित सब लिय सलाम करि ॥
 दूजे दिवस कलीजखान हुव त्यों तँहँ हाजरि ॥
 याकोहु दैत वैभव अतुल लिय सब पृथक सलाम नैत ॥
 इसि ताहि खानदोराँ कहिय बुद्धा बदर बैर नचत ॥ १ ॥
 ॥ दोहा ॥

सुनि साह ६ परिखद सकल, मुसविंय आसव मत्त ॥
 अँट्टाट्टहु कतिकन करिय, त्रँपा न रक्खिय तैत्त ॥ २ ॥
 खानकलीज नबाव यह, जया यँयनी जीमँ ॥
 जिहिँ अगँ गजसिंह जुत, भखे दँलावर भीमँ ॥ ३ ॥
 जिहिँ अँक्खिय यह बुद्धि जो, रहिहै साह तिहँार ॥
 बेगहि बदर नच्चिहै, प्रर दिह्लिय पाकारँ ॥ ४ ॥
 यह सुनि साह सिराहि कछु, पच्छो पारिय रोस ॥
 पै पापिनँ विगरयो समय, सो न लखै अपसोस ॥
 भोजदीनसोँ इक्कसे, भये पचप दिह्लोस ॥
 मत्त कापिरायनँ मुदित, हिय इच्छित रँतही सँ ॥ ६ ॥

१ अदब के साथ (सलाम) २ दिया तुलनारहित (बहुत) वैभव ३
 जुदा जुदा ४ झुककर सलाम करके ५ अँट्ट (अच्छा) नाचता है ॥ १ ॥ ६ सप्त
 सभा ७ मुसकराये (मद हास्य से हसे) ८ मय म मस्त ९ कितना ने छत्र स्वर
 से भी हास्य किया १० लज्जा ११ तथा ॥ २ ॥ १२ जिस प्रकार यावनी (कारसी)
 भाषा में १३ जीम अच्छर होये तिस प्रकार अर्थात् यहे पेटवाका (कारसी म
 जीम अच्छर पेसा होता है) जिसने पहिले नरघर के राजा और कोटा के महा
 राव गजसिंह सहित १४ दिहावरखा और १५ कोटा के महाराव भीमसिंह को
 मारे थे ॥ ३ ॥ १६ जिसने कहा कि १७ तेरा यादशाह इस बुद्धि से रहैगा तो
 दिल्ली नगर के १८ कोट पर शीघ्र ही यद्वर नचेंगे ॥ ४ ॥ १९ उन पापियों का २०
 चिंता है ॥ ५ ॥ २१ मय में मस्त होकर प्रसन्न रहते थे २२ ये (यादशाह) इदब
 में २३ मैथुन ही चाहते थे अथवा 'हिस' शब्द यावनी भाषा के 'हिर्म' का अ-
 पभ्रंश है तो इसका अर्थ चाहना है सो मैथुन की अधिकता पताने के अर्थ
 बीप्सार्थ में एकार्पयाची दो शब्द दिये हैं ॥ ६ ॥

सनोहरम् ॥

गानमैं गडे जे बालकानमैं बडे जे बौरु-
नीके बहकायें तैं घुमंडन पने लगे ॥
रघ्यतकी रगनि रजीली जो निहायें ताहि,
बलन बुलाय रघ्यात वहे वहे चाखनैं लगे ॥
कथित कुरानको बिसारि बैठे बातिमैं,
भनैं जो रीतिकी तो चुप छूट भाखनैं लगे ॥
दिल्लीके घरानैं उलटी करि इलाहमाँ व,
बुलिके ठिकानैं पई पायु राखनैं लगे ॥ ७॥

दोहा-जुमाँ महज्जत जात नन, सुरा मत्त मठ साह ॥

रहैं सुधि न दिन राँते की, लहैं सुरत रस लाह ॥ ८ ॥
इक दिन काजिय दिय अरज, उचित महज्जत आन ॥
करो बिधि बैठी सु चित, जैत्य विचारिय जान ॥ ९ ॥

पदपात् ॥

तहिनैं रचि आपानैं अधिक आसव बनि उद्धत ॥
संगहि लै संडै गन मत्त सब पत्तैं महज्जत ॥
बिरचि बिरचि गलबाँह साँह जुत रँवहिँ नमैं सव ॥
यह को रीति अपुब्ब तैरकि जंपिय काजी तब ॥
सुनि हसि रु एह अकिखय सबन रे नहिँ तृजानत रुचितैं ॥

१ बालकों (सूखों) में २ मद्य के बहकाये हुए ३ कुरान का कहना (उपदेश शूल गये) ४ सूख
५ सूख कहने लगे कि चुप रहो ६ अब आप परमेश्वर की आज्ञा से विरुद्ध करके ७
वे घोनि के स्थान में ८ नपुंसकों की ९ गुदा को रखने लगे अर्थात् स्त्रियों के
स्थान में नाजरों से गुदा मैथुन करने लगे ॥ ७ ॥ १० छुक वार के दिन; अथवा
बड़ी महज्जत में ११ मद्य में मत्त १२ दिन रात्रि की ॥ ८ ॥ १३ जहाँ (मस्जिद
में) जाना विचारा ॥ ९ ॥ १४ उस दिन १५ पानगोष्ठी (सतवाला) रखकर १६
नाजरों अथवा हीजडों के समूह को साथ लेकर सस्त होकर मस्जिद में १७
गये १८ बादशाह सहित सब १९ खुदा को शुक्रे वहाँ २० आंध करके काजी
ने कहा कि यह कौनसी २० अपूर्व रीति है २२ सुन्दर

मासूके जनन आसिक मिलन आदि रीति सुनियत उचित ॥ १० ॥

दोहा ॥

कार्जा तवहि कुरानकी, अपनै सिर दिय उठि ॥

आयउ आलिय सवन सह, रचक साहहु रूठि ॥ ११ ॥

नीति रहित दिह्लिय नैपर, डम मन्त्रिग अधेर ॥

कोऊ सुनत न काहुकी, घर घर हा रँव घेर ॥ १२ ॥

कटुर्क खानदोरौ कहिय, साह धुनिय हसि सीस ॥

घातै खानकलीज अब, रचत दुहुँनपर सीस ॥ १३ ॥

तिहि वजीर पलटाय लिय, खानकमरदी तत्त ॥

बहुरि महादत खान प्रति, पठयो पूरव पैत ॥ १४ ॥

खानसहादत हो यहै, दुदर पूरव देस ॥

राजगि सूबा व्यागिष्टै, पूरवके जिहि पैसै ॥ १५ ॥

ता प्रति खानकलीजके, पत्ते सँतार पत्त ॥

इहाँ ममप कछु ओरभो, आवहु कोउ न अँत ॥ १६ ॥

॥ सारिहा ॥

लिपउ वजीर मिलाय, अप्पन तीनइहि इकहँ ॥

सेन सम्हारहु आय, हनहिँ खानदोरहिँ सहज ॥ १७ ॥

रहँ निगुम होय, पटकि जोग कछु साह पर ॥

सेनापति तुम सोय, हम वजीर अब इक हुव ॥ १८ ॥

॥ पट्पात ॥

हम तुम सम्मलि हैंनहिँ खानदोरौ कपटी खल ॥

तव सेनापति तुमहिँ साह नगिहँ गिनि सबबल ॥

१ मासूक लोगों से आशिका का मिलना प्रीति करनेवालों का आशक और जिस पर प्रीति की जावे उसको फारसी में माशक कहते हैं २ योग्य ॥ ३ घर में ४ क्रोध करके ॥ ५ नगर ६ मचा (हुआ) ७ हाहाकार शब्द ॥ ८ कटुप वसन ० कलीजरा ॥ ११ ॥ १० कमरदीखा का ११ पत्र ॥ १४ ॥ १२ जिसके आधीन ॥ १३ ॥ १४ पत्र गये १४ यहा ॥ १९ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ सामिल होकर मारेग

सु सुनि सहादतखान सेन सज्जित पूरब सन ॥
 लागि सेनापति लोभ आय दिल्लिय चाहि अप्पन ॥
 अठ सत ८०० तोप जिहि बसि अतुल दगतबेर कोसन दहत ॥
 लहि एह हेतु ताकैहँ खलक कैहर भाड़भुंजक कहत ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

आय सहादतखान वह, मिलि कलीज सह मोद ॥
 इक वजीर रु अप्प वहै, बिरच्यो कपट बिनोद ॥ २० ॥

॥ पट्पात ॥

नादरसाह सु नाम तपत ईरान जवन इत ॥
 प्रबल सबहि प्रत्यंत जाहि मन्नत जित ही तित ॥
 गाजुद्दीज कलीज भाड़भुंजक जुत भाये ॥
 बुल्लन नादरसाह पैत ईरान पठाये ॥
 आवहु निसंक सुरतान इत तिय दिल्लिय तुमको चहत ॥
 सम्मुह चलाक कोउन सुभट मचन दंद दिन दिन महत ॥ २१ ॥

॥ पद्धतिका ॥

यह सुनिय बत्त पुर इस्पहान, अति बढिय सोर जनपद इरान ॥
 प्रत्यंत मुख्य बुलवाय पंच, पहुँ रचिय साह नादर प्रपंच ॥ २२ ॥
 तामाचकुली नामक वजीर, बलि मिलिय अलीनिसुरुत प्रवीर ॥
 सम्मन पुनि कम्मन कुतब सूर, गाजी हुसैन हाजी गरूर ॥ २३ ॥
 रुस्तम सलेम सैरन रहीम, कालन कमाल रोसन करीम ॥
 मारूफ मलिकमहमूद मीर, आतमतअली सद्यद सधीर ॥ २४ ॥

१ इस कारण से उसको २ संसार ३ जुल्म करनेवाला भड़भूज्या कहता है ॥ १९ ॥ २० ॥ ४ म्लेच्छ देशों में (इस ग्रन्थ में आर्यावर्त के सिवाय सब देशों को म्लेच्छ देश माने हैं और अन्य आर्य ग्रंथों का भी यही मत है) ५ नादिरशाह को बुलाने के लिये ६ पत्र ७ हे सुलतान (बादशाह) ८ उपद्रव वा युद्ध ॥ २१ ॥ ९ ईरान देश में १० म्लेच्छ देश के ११ उस प्रभु नादिरशाह ने ॥ २२ ॥ १२ पुनि १३ निसुरुतअली ॥ २१ ॥ २४ ॥

नादिरशाह को दिल्ली पर लाना] सप्तमराशि दाक्षिणात्यमयूख (३२५५)

दाऊद^२सेख इसहाकदीन, मँहदी रु मुहम्मद मौनदीन ॥

कदीन १ नदीन २ अन्त्यानुपास ॥ १ ॥

अहमद नियाज मसूद आय, सादी कुरेस मीरन सुभाय ॥ २५ ॥

गाखिव हवीव लानन गुमान, पीरोज फतैनसियब पठान ॥

आरास हसन यूसफअलीहु, दरियावखान सुनि मोजदीहु ॥ २६ ॥

याकुबअली रु अम्मन इमाम, नाँसेर असद पुनि नूर नाम ॥

इत्यादि साह भट वर अत्रस्त, सैह सचिव^३ किन्न इकत समस्त २७

सब भटन साह नादर सुभाय, दिय तव कलीज कंगर दिखाय ॥

कहि अब न जोर मुगलन निकेत, दिलिय कटाच्छ मैम ओर देत २८

अवरगजेब मिरजा मरत, धर हिंदु धेव न धारक धरत ॥

साचिवन नवाब भट सानुकूल, मिटि गय रंसूल मजहब समूल २९

गायक हन्पोहि आलम अजान, पुनि मोजदीन अति मय पान ॥

मिलि बहुरि हिंदु सय्यद बिमद, फेरूक गहि मारयो पासि फंद ३०

मुगलस दोय २ पुनि साल मद्य, जैहलन हने जे इन अबदय ॥

सय्यद अधीन पुनि तप नसाय, मिरजा समुहम्मद पट्ट पाय ॥ ३१ ॥

सय्यदहिँ मारि पुनि लोभ सीर, तूरानि मुहम्मद भो वजीर ॥

जासोँ इक वर्धन पटक जोर, हिंदुन कर वोरयो नद हिलोर ३२

जिततित गिनीम दव्वत जमीन, कटकनै वढि रेवाँ अमल कीन ॥

॥ १५ ॥ ॥ २६ ॥ १ निर्भय १ वजीर सहित ॥ २७ ॥ ३ कलीजला का पत्र ४

मुगलों के घर में मेरी तरफ नजारे मारती है ॥ २८ ॥ ६ हिंदुस्थान की भूमि

नहीं धारण करने योग्य पति को धारती है; अथवा वह घरा किसी हिंदु को

पति बनाना चाहती है ७ पैगंबर का नाम है ॥ २९ ॥ ८ कलावंत ने ९ बहुत

मूर्ख १० फुरुकशियर बादशाह को, पासी का फंद छाछ कर ॥ ३० ॥ ११

मूर्खों ने मारहाले १२ इनसे नहीं मारे जाने योग्य थे, अथवा वे बादशाह को

मारने वाले इन पिछलों से नहीं मारे गये ॥ ३१ ॥ १३ छुसन अली नामक

सय्यद को मारकर १४ दया महादुर नामक ब्राह्मण ने ॥ ३२ ॥ १५ कौजों

ने १६ नर्मदा नदी तक

अब तत्थ कमरदी हुव वजीर, सम्मलि कलीज नैय दिज सरीर ३३
 रक्खै न खवरि सठ रति दीह, लुपिय सम्हारि नथ लज्ज लीह
 चाकर चहंत मालिक मिटान, छठि डच्छत मालिक अनुमं दान ३४
 शिरजा सु मुहुम्मद तिन समंत, जा कहत जाहि की नज्जि लेत ॥
 नहिं लखत अंध किम बैद रु नेक, कहिये प्रमाद ऐसे कितेक ३५
 गनिकान गुंमर आसिक अनंत, हीरान जिनां सु रत हत हत ॥
 अधिकार गायकन दिय अनीति, पंटु नरनसौं बै नहिं नेक प्रीति ३६
 यावनीभाषा ॥

मस्तदिलाँ अजामै शराब दिली च्यकुनद बस् बे जवाब ॥
 सुहवत् वदाँ वदाना दिलाँन तार्जान तहम्मुल् मुक्विलाँन ३७
 गहदरन गुजारद् शहर बाब शैतान नवीनद् रह जवाब ॥
 अफवाजि दखनू आमद् बजोर बुजराय कलाँ गरदाद कोर ३८
 किश् मुल्क कसारा पासवाँन मरदस् बजमानेदश् अमान ॥
 इनूसाफ अदल रफ्तह बज्योर अजखासु आम आमद् बशोर ३९
 प्रायोदेशीयाप्राकृतीस्थितभाषा ॥

१ बिना नीति का बदमाश ॥ ३३ ॥ २ चाकर का भारता ॥ ३४ ॥ ३ बुरा
 ॥ ३५ ॥ ४ घमंड ५ हृदय (दिल) से ६ मैथुन में ७ प्रीति युक्त है सो खेद की
 बात है ८ कलावंतों को ९ चतुर मनुष्यों से १० अब ॥ ३६ ॥

शराब (मद्य) के प्यालों से दिल मस्त है, दिल्ली क्या करे बहुत बेगोब है, बुरे
 लोगों की सोबत (संगति) अकलमंदों (बुद्धिमानों) के साथ है, जले मनुष्य
 भी उस बुरी सोबत का आदर करते हैं और उस सोबत को पहन करते हैं
 ॥ ३७ ॥ शैतान जो नेकी का रस्ता नहीं देखता है वह शहर के दरवाजे को
 नहीं छोड़ता है दक्षिण (मरहठों) की सेना (फौजें) जोर अ आगई हैं और बड़े
 बड़े-वजीर अंधे होगये हैं ॥ ३८ ॥ मुल्क का और मनुष्यों का दाँड रखवाला
 (रक्षा करनेवाला) नहीं है और जमाने में कोई अमन (चैन) में नहीं है न्याय
 जुल्म से जाता रहा है "यहां अदल और इनसाफ, दोनों एना प्रवाची शब्द
 न्याय चलेजाने की अधिकता दिखाने के अर्थ लिखे हैं" और पड़े द छोटे
 सब पुकार (आहि चाहि) कर रहे हैं ॥ ३९ ॥

जो रक्खि सकहिँ तुम हुकम जोरि, औ हैं तो दिलिय दै बहोरि ॥
 तामाचकुली यह कहिय*तत्थ, सुनि सजिय साह नादर । समत्थ ५०
 इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमगाथौ बुन्दीप-
 तिबुधसिंहचरित्रे खानदोरांकटुवचनहेतुयवनेन्द्रविरुद्धकलीजखाँखा-
 नदोरांमरणोपायकरणा १ मद्यपयवनेन्द्रमुहुम्मदशाहनपुंसकासक्त्या
 दिनिमित्तनिन्दनदिल्लीप्रतीरानाधीशनादरशाहान्वहानार्थकलीजखाँखा-
 पत्रप्रेषणा ३ उक्तपत्रपठननादरशाहदिल्लीसमाक्रमणसैन्यसज्जनव-
 र्णनं द्वाचत्वारिंशो मयूखः ॥ ४२ ॥

आदितोऽशीत्यधिकद्विशततमः ॥ २८० ॥

॥ निःशाणी ॥

नादरसाह इरानके अब सेन सजाया ॥
 लग्गा घाय निसानपैँ घन जानि घुगाया ॥
 उर अठौँ दिकपालकेँ नैटसाल खुभाया ॥
 हाक नकीबौँ हल्लकोँ दरकुंच सुनाया ॥ १ ॥
 जंगी डैरु डमंकिया ब्रंबक ब्रहकाया ॥
 ईरानी भट उप्फने बैपु सज्ज बनाया ॥
 टोप बकतर जालिकै रन ओप रचाया ॥
 बेबे तुंगस बंधिकैँ कँटि खग कसाया ॥ २ ॥

॥ ४९ ॥ * तहां † समर्थ ॥ ५० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में बुन्दी के भूषाति
 बुधसिंह के चरित्र में खानदोरां के कटुवचन के कारण कलीजखाँ का बादशा-
 ह के विरुद्ध होकर खानदारां को मरवाने का उपाय करना १ मद्यशी बादशा-
 ह मुहुम्मद शाह की नपुंसकों से आशक्त होने आदि की निन्दा २ ईरान के बाद-
 शाह नादरशाह को दिल्ली पर बुलाने का कलीजखाँ का पत्र भेजना ३ उक्त
 पत्र को पढ़कर नादरशाह के दिल्ली पर सेना सजने के वर्णन का विघालीसवां
 ४२ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ अस्सी २८० मयूख हुए ॥

१ नगरों पर २ नहीं निकलै ऐसा साल चुभा ॥ १ ॥ तासे ३ बजे ४ शरीर
 को ५ जाली (पाखर) ६ दो दो भाथे ७ कमर पर खड्ग बांधे ॥ २ ॥

वे वे चाप बहादुरों फटकारि बजाया ॥
 तहिने देस इरानमें नर बाजि नमाया ॥
 के अफगान पठानके मुगलान मिलाया ॥
 बलखी कज्जलबास के छोड़ैं छक छाया ॥ ३ ॥
 अरबी रूसी उजबकी हरखाय डकाया ॥
 खयसी खूमी खूबही रन सज्ज सुहाया ॥
 आतसबाजी अफससी क्रम बाहँ कहाया ॥
 आरमनी सीधी इतैं आदेन उम्हाया ॥ ४ ॥
 फ्रास इतालिहु उफने समसेर सजाया ॥
 खधारी जारी खरे बहलीम बुलाया ॥
 ओलदेजी उज्जले कर मुच्छ मिलाया ॥
 रन तिब्बत तातारके दातार दिखाया ॥ ५ ॥
 वीर बुखारी काबिरी रसबीर रचाया ॥
 कायेनी अरु कासिदी लरने ति' लुभाया ॥
 यूनानी रु यहूदिया सब सग सिधाया ॥
 गालीली अरु गिंगिनी धर लैन धकाया ॥ ६ ॥
 जद्दाके अरबी जिते मक्का मन लाया ॥
 काजिदके अरु काबली सह सेन सजाया ॥
 तूरान रु हीरातके मीरात मिलाया ॥
 तिगरीके रु तिमोरके छक जोर छलाया ॥ ७ ॥
 तत्ते तुरक त्रिपोलिके कैते कसिआया ॥
 हल्ले इम लकखौं जवन दिल्ली करि जाया ॥

१ उस दिन २ मुगल ३ बलख देश के (यहा से लेकर सात फेब्रुव तक कहीं देशों
 और कहीं शहरों के नामों से बहा पसनेवाला के नाम हैं) ॥ १ ॥ ४ प्रशसा के
 बखन ॥ ४ ॥ ५ इटलीवाले ॥ ६ ॥ ६ ते (वे) ॥ ७ ॥ ७ यवनों के तीर्थ स्थान का
 नाम है मीर सय्यद का विनाश है ॥ ७ ॥ १० खल्ल ११ स्त्री बनाकर

पंच निमाजी पूत जे बल धर्म बढाया ॥
 केन मुहुम्मद निजनवी रत्न केन रटाया ॥ ८ ॥
 के बुल्ले इसलाम ओ दायूद दिपाया ॥
 के याकुब हि सगेनकों अकखें बल आया ॥
 अर्मीनादबके अरम मतमें बतलाया ॥
 के पंथम आहस कहें मलखान सुहाया ॥ ९ ॥
 के बोयस ओवेदकों चितै चित लाया ॥
 सुलैमान मतके किते हिंदवान हकाया ॥
 इत्यादिक अति गंवके चढि मिच्छ चन्ताया ॥
 नादरसाह सनाहके बिलु देह दिपाया ॥ १० ॥
 चोला काल बनातका सुहि टोप सुहाया ॥
 कर दोऊन २ कुगनलै मन नैन लगाया ॥
 बैसरके स्पंदन बडे चढि वेग चलाया ॥
 हाक नकीवौ हलकें दल डंकडगाया ॥ ११ ॥
 उग्र बिडौली अंखिके बहु मिच्छ बढाया ॥
 केके अरबी फारसी बुल्लें बिकसाया ॥
 पंचक ५ टंकी चाप जे रक्खें भुज भाया,
 चक्खें बकर एक १ जे मगरूर न माया ॥ १२ ॥
 तौजी पक्खर सज्जके वाजी बल छाया ॥
 ईरानी अरबी किते जर जीन सजाया ॥

१ दिन में पांच बार निसाज पहन में २ पवित्र ३ कितने ही ४ खुदा को
 ॥८॥ ५ कितने ही (यहां से दस के छन्द तक यवनो के पैगयरो के अथवा कहीं
 कहीं तीर्थ स्थानों के नाम हैं जिनके सजहब पर वे यवन चलते) थे ॥९॥ ६ सर्व
 वाले ७ बिना कवच ॥ १० ॥ ८ खच्चरो के ९ बडे रथ पर १० सेना को क्रोध दिला-
 कर चलाया ॥ ११ ॥ ११ बिल्ली जैसा आंख नेत्र) वाले १२ कितने ही १३ प्रसन्न
 होकर (फूले हुए) १४ यह क्रमान की ताकत देखने का एक प्रकार का तोल है, औ
 धनुष का बल परापधि अठारह टंक का माना जाता है ॥ १२ ॥ १५ नवीन १६ घोड़ों

बैठे हथिन झुडके धुजदड झुकाया ॥
 नादरसाह उछाह केँ सडसेन चलाया ॥ १३ ॥
 सत्यलोक लग यों रु यों पाताल पचाया ॥
 फट्टा रीढेक सेसका फनमाल फिराया ॥
 हल्ली जुगिनि सगही थेई थरकाया ॥
 फाल फलगी डाकिनी कर ताल बजाया ॥ १४ ॥
 कावल सीमा व्हे कैटक अब अटक निराया ॥
 हाक परी हिंदवानमें सब सोक अघाया ॥
 लधि अटक पजावका यानाँ घन घाया ॥
 सूबा नायक साहका सब फोरि मिलाया ॥ १५ ॥
 आन चलाया अप्पनाँ मुगलान मिटाया ॥
 सूर इरानी सचरे मगरूर मचाया ॥
 यों नादर अति वेगगों दिल्ली सिर आया ॥
 पानीपथ किरनालपै झुडाल झुकाया ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

सोरं मचिगं दिल्ली सहर, जोर इरानिन जानि ॥
 साह मुहुम्मद अब सुनी, मद्यप सच्ची मानि ॥ १७ ॥

॥ सोग्टा ॥

ईगनपे सुनि आत, सठ प्रसन्न सगही मचिव ॥
 सोक न तदपि समात, डक खानदोरौ उदर ॥ १८ ॥

॥ पट्टपात ॥

कूम प्रति जैधनेग खानदोरौ पठये देल ॥

१ मना सजित ॥ १३ ॥ २ इधर ३ पीठ की हड्डी ४ छलांग भर कर फूटि
 ॥ १४ ॥ ५ सेना ६ अटक नदी को समीप की ७ तूम घुण (मराठे) ॥ १५ ॥ ८
 सड खड किसे "खिगल भाषा स अत्यन्त ऊँचा करने का झुकावना पहलें है"
 ॥ १६ ॥ ९ हाक १० मची ॥ १७ ॥ ११ ईरान के पति को ॥ १८ ॥ १२ जयपुर १३ घ

तू दुद्धर कछवाह साह तोहीसों सबबल ॥
 आवत दैल ईरान रचहु दिल्लिय सहाय रन ॥
 हम तुम इकत होय भुम्मि करिहैं बसि भुग्नन ॥
 मम सीस भार आयउ अमित सो तोसैन अब उत्तरहिं ॥
 सिर धरि कुरान करियत संपथ जो उपकृत यह बीसरहिं ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

तेरीही यह बेरहै, आवहु सैदल उछाह ॥
 तोहि दुरग रनथंभ अब, रीझि समप्पहिं साह ॥ २० ॥
 इम अनेक कंगर लिखे, साह चमूर्पति सूर ॥
 सच्चे करिकैं संपथ सो, कुम्म गिनैं नहिं कूर ॥ २१ ॥
 मैं आवत तुम साह जुत, बाहिर करहु मुकाम ॥
 यों लिखि लिखि दैल मुकले, कूरम कँलुख दुकाम ॥ २२ ॥

॥ पट्टपात ॥

इम जवनन बिस्वासदै रु कूरम छल किन्नो ॥
 अंतहपुर निज अखिल उदयपुर मुकलि दिन्नो ॥
 सावधान सह सत्य रह्यो जैपुर कूरम पति ॥
 यह अचिज्ज लिखि आतैं हों रु मरन न किन्नी मति ॥
 अवरहु नरेस हिंदुव अखिल यह जयसिंह उदतैं लखि ॥
 कोऊ न गयउ दिल्लिय कँलह प्रबल कँल भाविय परखि ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

टारी इम कूरम किंतव, इत दिल्लीस अनीकैं ॥
 सबल खानदोरैं सजिय, सम्मुह चहत समीकैं ॥ २४ ॥

१ सेना २ प्रमाण रहित (अमाप) ३ तुमसे ही ४ सौगन ५ उपकार ॥ १९ ॥ ६ सेना सहित ॥ २० ॥ ७ पथ ८ बादशाह के सेनापति के ९ शपथ (सौगन) ॥ २१ ॥ ११ पाप के बुरे कार्य से १० पत्र भेजे ॥ २२ ॥ अपने १३ सब १२ जनाने को १४ आश्चर्य १५ लिखे हुए पत्र आते थे तो भी १६ वृत्तान्त देख कर १७ युद्ध में १८ समय ॥ २१ ॥ १९ छली २० सेना २१ युद्ध में चाहता

बादशाहका नादिरशाहके सामने चढ़ना]सप्तमराशि अश्वत्थारिंशमयूख (३२११)

इहिं अतरे परताप वह, जेठो सालम नद ॥

दिल्ली आय रु दासभो, छली जवनपति छद ॥ २५ ॥

पानीपथ आयो समुक्ति, सडन तजि अब साह ॥

सेनापतिके कथित सैम, रचिय कुच रन राह ॥ २६ ॥

तोटकम् ॥

कटकेस चमू सब सज्ज करी, प्रतिहार नकीवन हाक परी ॥

बल पाय निंसानन घाय बजे, लखि जे घन भद्व नह लजे ॥ २७ ॥

खुरसानन फूज कृपान खिरे, चमकात चिनगिन बाढ चिरे ॥

फननकि हुतासन धारकरी, घननकि बजी गज घट धैरी ॥ २८ ॥

पखरेत पटेत घने उमहे, कमनेत कटेत न जात कहे ॥

बहु वाजिय ताजिय सज्ज बने, जैव जान मनो पवमान जने ॥ २९ ॥

ककचच्छद कन्न मनो कलिका, कच याल लगै भुजगावलिका ॥

सहनाईमुखे जिन प्रोथे सदा, पैय लोल मनो गनिका प्रेमदा ॥ ३० ॥

कैलि जितिन कंधर बक कसे, कुलटा कि क्रियापटु लक कसे

हुआ ॥ २४ ॥ १ इसी समय के भीतर २ प्रतापसिंह १ अधिकार

म ॥ २५ ॥ ४ नपुसका को छोड़कर ५ कहने से ॥ २६ ॥ इधर १ सेनापति

(स्वानदोरा) ने ७ सेना सज्जित करी जहा ८ मारपाका की और छडीदारों

की हाक पड़ी, सेना को प्राप्त होकर, अथवा बल पर्यक ९ नगरों पर घाई

बजी जिसको देखकर भादवे के मेष का शब्द लज्जित हुआ ॥ २७ ॥ खुरसाणों

पर १० तरवारों के अग्निकण बड़े और उन चिनगारियों के चमकते हुए बाढ

धिरे और फणकार करती हुई धाराओं से ११ अग्नि झड़ी और हाथियों की

घटा रूपी १२झिपा दर्जी ॥ २८ ॥ बहुत से पाखरोंवाले और १३पटा फँकनेवाले

पतसाह युक्त हुए १४घनुष धारण करनेवाले और १५तरबारों से काट करने

वाले कहे नहीं जासकते १६ताजिक देश के बहुत घोड़े सज्जित हुए जो १७वेग

में मानों १८पथ के पुत्र (हनुमान) हैं ॥ २९ ॥ जिनके कान मानों १९केवडा

की या केतकी की कली है और केसवाली के केस २०सर्पों की पंक्ति के समा-

न गोमायमान हैं २१ जिनके फुरणें सदैव २२ सहनार्द्र के मुख के समान फूले

रहते हैं २३ जिनके पगा की २४ व्यपक्षता मानों गणिका २५ स्त्री के समान

हैं ॥ ३० ॥ २१ युद्ध जीतने को २० कथा को टेढ़े कसत हैं सो मानों २८क्रिया

टरिजात उडात करी टकरी, सकरी बिसिखाने वने चकरी ॥३१॥
 बिधुरे गजगाहन बीजित जे, जवके बल राहन बीजित जे ॥
 पखर जर जीन सजे सखरे, नचि मंडत चेरिनके नखरे ॥ ३२ ॥
 धरि धोरित बलिगत धाव धैपे, मनकी गति जे छिन माहिं सपे ॥
 छलि गात चलात धुनात छिती, किले कोट पटी बिचवत किति ॥३३॥
 भटके मन भाय फिरे लटके, धैटके निपजे कि बंटा नटके ॥
 हुलसें करि बिज्जुलिकी हसना, रंयमें मनु तकिपकी रसना ॥३४॥
 खुर राजत रंजत पत खरे, जिन पक्ष मंहायस नाल जरे ॥
 लागि यों खुरसों खुरताल लसें, गहिकें खंवरभानु कि चंद ग्रसें ॥३५॥
 लो बोधितरुच्छदमे चमकें, अपटात कनीनिपे ज्यो कमकें ॥

।सवार चहें सु कै अनुठी, मलपे बनि फाल गुलाल सुठी ॥३६॥

वदधा कुलटा नायिका कमर कसती है जिनके उडान की टकर में ?
 १ धी टलजाते हैं और सफ़ाई २ गलियों में चकरी के समान पलटते हैं ॥ ३१ ॥
 लो हुए गजगावों से जिनको ३ पवन (पंखा) होता है और वेग के बल से
 ४ गों में ४ पक्षियों को जीतते हैं ५ पाखरें और जरी के जीनों से ६
 दर सजे हुए, अथवा फैले हुए जरी के जीनों से सुंदर सजे हुए जो नृत्य करके
 लोहियों के समान नखरे करते हैं ॥ ३२ ॥ ८ धौरित और बलिगत आदि
 ढे की पांचो गतियों से ९ दौड़ते हैं जो क्षण मात्र में १० मन के चलने
 १ गति को माप लेते हैं, शरीर को फुला कर ११ भूमि को धुजा कर चलते
 जिनकी पट्टी (शीघ्र दौड़) में १२ निश्चय ही काट क्या बात है अर्थात्
 उनके आगे कांट कुछ चीज नहीं है ॥ ३३ ॥ १३ धाट देश के निपजे हुए घोड़े
 १० के मन भाफिक झुक कर फिरते हैं सां यानों नट का १४ छांकरा (पट्टा)
 तरता है, बिजुली की १५ हसी करके प्रसन्न होते हैं और १६ वेग में मानों
 ७ तार्किक (न्याय शास्त्र पढ़े हुए) की जिव्हा है ॥ ३४ ॥ जिनके खुर १८
 चांदी के पत्रों से शोभायमान हैं जिनमें १९ बड़े पक्षके लोहे (गजबल तथा
 फोलाद) के नाल जड़े हैं वे खुरताल खुरों से जग कर ऐसी शोभा पाते हैं
 जैसे चंद्रमा को परुडकर २० राहु खाता है ॥ ३५ ॥ २१ चपलना में २२ पीप-
 ल वृक्ष के पत्ते के समान चपलते हैं और दौड़ाने में २३ नेत्र की पुतली के
 समान कमकते हैं २४ अनूठी (अपूर्व) ॥ ३६ ॥

मादिरगाह का हिंदू में आना] सप्तमगादि त्रिभुवार्थमयूख (३२३६)

परि सग कुगगने जे पकरैं, छिति चौकरमें पलटा छुटकरैं ॥
बहुं जोर उम्कत प्रोथ वजैं, सफंगे पलटान उडान सजैं ॥ ३७ ॥
रस लेह खलान अधीन गहैं, गतिमें भरि बथन भुम्भि गहैं ॥
करि भप बहैं नटकी न कला, चलिजात दिखात मनो चपला ३८
प्रतिभेह वनैं नभ पच्छिनपैं, बहुं उडि दोष २ वगच्छिनपैं ॥
कुल जाति बैनायुज आदि किन, जैवमें पवमान उडान जितो ३९
कुलैटैं उलटैं उछटात कैंगे, पलटैं मनु पातुरिकी पुतंगी ॥

इक लख १००००० तुरगन या गतिके कैरंग मू हजार १०००

भली भैतिके ॥ ४० ॥

भरना तल डानन दान करैं, कुपितारुन पच्छिन चोट करैं ॥
अप लगेर अचत अहं भरे, खिजि खून भरे रुकिजात खरे ॥ ४१ ॥
हगै देत डरावत डोकनतैं, पलटैं खिजि छहैं पताकनतैं ॥
त्रिपदी पय बह तऊ तरकैं, बैमथुन लगावत बहुरकैं ॥ ४२ ॥

साथ होकर जा हरिणा का पकड़तैं ३४ चार हाथ क बिस्तर वाली १५ मीमें छ प-
लट करत हैं ४४ शरीर के जोर सदन करने म ६ फुरणें पगने हैं ७ मच्छि के पलटने के स-
मान उडान सजत हैं ॥ ३७ ॥ ८ लगाम क खाटने करस म आधीन हाकर गहने हैं और
बलने में मृमि को बाधों म पकड़ने हैं ० तिनक भप लनमें नट की भी कला
नहीं पढ़ती, अथवा हाथियों को फाड़ने म नट की कला भी नहीं पढ़ती (नट
क फाड़न की पूर्ण अथधि राधी को फाड़न की समझी जानी है) बलै जाने में
मानों १० बिजुली दीप्तते हैं ॥ ३८ ॥ आकाश में पक्षियों के ११ शत्रु (मुकाप-
ला करनवाजे) पगते हैं और दो पक्षिया पर उड़ कर पीक फिरत हैं, कुल में
किनने ही १२ पनायुज आदि देशा के उत्पन्न ११ घेग म १४ पवन के समान
उड़नेवाले ॥ ३९ ॥ ११ हाथिया को उड़ा कर १५ कुलाट लेकर चलतते हैं अ
थवा कु (एधरी) को लाटते हैं और हाथिया को उड़ा कर उलटते हैं और पलट
ने म मानों बहुरा के १७ नश की पुनजी पलटती है, अथवा नृप करन समय
बेरया की पुत्रा (लडकी) पलटती है १८ हा गी १९ भली भाणि के ॥ ४० ॥ २०
क्रोध में जाल होकर पक्षिया पर खाट करत हैं २१ लाहे के जजोर २२ घमड
से भर कर ॥ ४१ ॥ २४ साटमाग के क्रोध दिखातबाल छोटे बाधों म डगाने
वाले २३ पंड देने हैं २५ धज्जा की छाया में खिजतर पलटत हैं २६ बगवटी
(पग बघन) स पग बघे हैं ता भी तबहत हैं २७ सुड क जलकणा का पोवलों

घन *वीत घुमावत मत्थ मुरै, फटगत निसानन जेव फुरै ॥
 फटकारत सुंडिनतै नभकों, गिर भौर भनंकत मोभकों ॥ ४३ ॥
 बहु खावन रावतभ्रात बनै, जल अँचन काज अगति जनै ॥
 मखतूल कलापक कंध कम, लागि गत बगत्तन नद लसे ॥ ४४ ॥
 भल जंगिय होदन सज्ज भये, बलमैं चर पौनहिँ पै पठये ॥
 कट सुंडि कलापक रंगि रचे, बहु चित्र चितेरनके बिगचे ॥ ४५ ॥

गिरचे१ बिगचे२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १

बहु अदिन निंदत उच्चपनौ, मजबूत रुपैं जमदूत मनौ ॥
 बलके सिरताज महाबलजे, सान गहु तमोगुन भौमलजे ॥ ४६ ॥
 मदछाकन घुम्मत पैड मते, बल बाद हिमाचलसौ बढते ॥

मते१ दते२ अन्त्यानुप्रासः १ ॥

तून भौन बडे तरु तोरत जे, मनतै रवि केतु मगेरत जे ॥ ४७ ॥
 कनकौचल लडुव गाँट गिनै, रवि चंद मलीर्दन रोट गिनै ॥

के लगाते हैं ॥ ४२ ॥ * बहुत अंकुश लगाने और हलने से मस्तक घुमा कर
 मुड़ते हैं जिन पर ध्वजा उड़ती शोभा देती है वे (हाथी) सुंडों से आकाश को
 फटकारते हैं जिनके मस्तक पर १ सुगंध के लिये अमर उड़ते हैं ॥ ४३ ॥ बहुत
 खाने में रावण के भाई (कुम्भकर्ण) २ जल पीने में अगति के पुत्र (अगस्त्य)
 बनते हैं, कंध में ३ रस्म के ४ कलावे कसे हुए शरीर में लगे हुए ५ रस्मों से
 ६ बंधे हुए शोभायमान ॥ ४४ ॥ बल में मानों पवन पर ७ हलकार भंजे हैं
 जिनके ८ कपाल और सुंड रंग के समूह से रचे हुए ॥ ४५ ॥ कितने ही हाथी
 ऊँचेपन में ९ पर्वतों की निंदा करते हैं और दृढ़ता में मानों जमदूत रूपते हैं
 वे हाथी १० सेना के शिरताज और बड़े बलवान जो शनैश्चर, राहू और तमो
 गुण के समान ?? काले हैं "तमोगुण का रंग काला है" ॥ ४६ ॥ घमंड के भरे
 हुए पैड पैड पर मद की छाकों में घूमते हैं और बलवान पन का बाद हिमा
 चलय से करते हैं, बड़े वृत्तों को तृण के १२ समान तोड़ते हैं और मन से सूर्य
 की ध्वजा का मरोड़ते हैं ॥ ४७ ॥ १३ सुमेरु पर्वत को लहड्डियों के गोलों गिनते
 हैं और सूर्य चन्द्रमा को १४ अपने भोजन के रोट गिनते हैं "हाथी के भोजन
 का नाम इंगल भाषा में मलीदा है" तारों पर कठिन किलकारी करके

किलकारत तारनपै करे, चल सुहि चलात घने चैरे ॥ ४८ ॥
 कटपै कुरुबिंद प्रकासकर, सनि भौम भिरे जनु लगि गए ॥
 करंत्यो हगिताल सुढाल कखा, गुरु जानि बिबुतु पासि परयो ४९
 घरखोने चिकै न चटाइटपै, उडिजात अचानक आइटपै ॥
 कति बीगन कुतै लगे कैटसौ, बलि निष्ठि बहोगत उडवटसौ ॥ ५० ॥
 जनको निपेराय रचै जवगी, बढि अचन बैगधन की बवगी ॥
 जिन लग पाय धरे जितनै, जमको डक रेजुव बहवने ॥ ५१ ॥
 सिरपै मनि हाटक जात असो, भैरमाचलसौ मै तती कि भिगी ॥
 इम इक हजार १००० बडे इमज, निकमे सजि बहल के निमै जे ५२
 तुरकान तयार भयो रनपै फरके भुव खड फनी फनपै ॥
 खग उद्धत मयपद सेख गिजे, मिग्जा मुगलान पठान मिले ॥ ५३ ॥
 भुजदह कमानन केक धरे, स लुलापै पखालन बेध करे ॥
 बहु वीर बँटुकन दाव रचै, वर सिस्त जुरे अराणु नाँहि बचै ॥ ५४ ॥

इनको पकड़ने के लिये १ खपल सुह का चला कर बहुत २ बिरत है ॥ ४८ ॥
 ३ कपोलों पर ४ रिंगल प्रकाश करता है सा १ मानों गल से लश कर
 शनैरवर और ५ मगल भिदे है "शनैरवर का रंग काला और मगल का रंग
 लाल है" इसी प्रकार ७ सुहका हरताल से श्रष्ट किया (गा) है सो मानों
 वृहस्पति ९ राहु की पासी से पडा है "वृहस्पति का रंग पीला और
 राहु का रंग काला है" ॥ ४९ ॥ १० चरन्वियों (अग्नि श्रीवा विशेष) का चटा
 इट पर डिगत हा नहीं हैं और कभी आइट (चरण आदि लगने का सूक्ष्म
 शब्द) पर उहजाने हैं, कितन ही धीरा के ११ भाले १२ कपोला पर लगते हैं
 और १३ बिना मार्ग जाते हुआ का फिर कठिनाई से फेरत हैं ॥ ५० ॥ मनुष्यों
 को १४ मभीप लकर जपरी करते हैं और आगे पडकर खैच लग हैं सो मानों
 बकरा का १५ सिंह खैचता है इन हाथिया के लगरों (जजीरों) पर चरण
 घरते हैं उनन ही यमराज की एक १६ रस्मी में बंधते हैं ॥ ५१ ॥ मस्तक
 के ऊपर मणियों की जडी हुई १७ सुख्य की सिंगी (मस्तक मृण्मय) है सो
 माना १८ सुमरु पर्वत से १९ नखत्रों की पाँक्त भिखी है २० महल ॥ ५२ ॥
 २१ शोपनाग के फणों पर ॥ ५३ ॥ २२ महिष (मैस) सहित २३ ओष्ठ सीध

करि केक त्रिभागनतें खुगली, बाढि धावन दाव बचातबली ॥
 तरवारिन वार करै कितने, घमकावत संगिन लच्छै घने ॥ ५५ ॥
 सब दिल्लिय मीर उमीगसजे, रनमें भट भीम रहीम रजे ॥
 प्रतिवास पंच ५ निमाज पढै, कलमा बिच गुप्त बयान कढै ॥ ५६ ॥
 बिरचै बहुनेक तजै बदकौं, मन चिति रसूल मुहुम्मदकौं ॥
 रसि कंठ कुगनसिगीफ रहै, बल उच्च रु डाहिर्य कुच्च बहै ॥ ५७ ॥
 लखि मुच्छ न लंब निखा जिनकी, बिधिछिन्निय रीति प्रतीपनकी ॥
 छबिके बंपु मुहर दंड छटे, प्रतिमैल्ल घुमावत फैंकि पटे ॥ ५८ ॥
 बदै केक कितेक तजै कपटै, रैव पीग वलीन अलीन गटै ॥
 असि ढल्लन मल्ल अपुब्व अरै, कति बान बिहंगन वेध करै ॥ ५९ ॥
 खट ६ टंक कमानन खैंचतजे, अतुली पय लंगैर अंचत जे ॥
 बदै खानकलीज महादतमे, बैलि मूठ वजीर मुहब्बतमे ॥ ६० ॥

जुड़ने पर ॥ ५४ ॥ १ कितने ही भालों से शस्त्राभ्यास करने हैं २ बगछियों से ३ निमानों को ॥ ५५ ॥ ४ प्रतिदिन कलमा में "लाइलाह इल्लिलाह मुहुम्मद रसूलिल्लाह" यह यवनों का कलमा है जिसके ५ छिपे हुए आशय निकालने हैं ॥ ५६ ॥ ६ यवनों के पैगंबर का नाम है ७ डोरी में लटकी हुई कुरान शरीफ जिनके कंठों में रहता है वे बंड बल और ८ डाढ़ी के बड़े केशों को धारण करते हैं अर्थात् डाढ़ी के बाल नहीं कटवाने ॥ ५७ ॥ जिनके चोटी नहीं है और सूँझ लंबी नहीं हैं ९ मानों आर्यों से विरुद्धता की गति को विधि पूर्वक छीन ली है अर्थात् जिन रीतियों को आर्य लोग प्रतिकूल मानते हैं उनको यवन अपने अनुकूल मानते हैं, मुद्गर फेंकने और दंड करने से शोभायमान जिनके १० शरीर ११ सन्मुख होकर युद्ध करने वाले मल्ल को ॥ ५८ ॥ उन यवनों में कितने ही १२ दुष्ट और कितने ही कपट का छोड़ने वाले १३ खुदा को गुरु (उपदेशक) का १४ खुदा (ईश्वर) के भक्त और १५ अली "यह यवनों के पैगंबर का भाई और जमाई था जिसको खलीफा (उत्तराधिकारी) भी कहते हैं" को रटते हैं, कितने ही तरवार और दाल से अपूर्व मल्ल युद्ध करते हैं और कितने ही बाणों से १६ पक्षियों का बंधन करते हैं ॥ ५९ ॥ १७ अपने समान दूसरे का नहीं सम्भलनेवाला पैर में प्रतिज्ञा का लंगर पहनता है सां जय वतको विजय करनेवाला मिलता है तब खोलता है १८ दुष्ट १९ पुनि, वजीर

भट्ट हस्तुमखान चम्पू भल्ले, सजिकेँ दल दिल्लियतै निकले ॥
 चाहे फोले मुहुम्मदसाह चढयो, बजि हक निसानन ध्वान बढयो ॥६१॥
 बल के हरवल्लनके बढतै, कैरटी पुरतोरनके कढतै ॥
 गजढाल मलब सु तुष्टिपरी, क्रमि मडल मडल कूक करो ॥६२॥
 दिन मूक उलूकन हूक दई, छिति व्योम भयानक खेह छई ॥
 अपसौन उँपश्रुति पिठि पढी, कैचमुवत रजोवैति दिष्टि कढी ॥६३॥
 उनमत क्रमेलेक आत लख्यो, रु दिगंबर दत दिखात लख्यो ॥
 चिरमेहि लुंलाय मिले समुहे, छुटि व्याल कैराख विडाल छुहे ॥६४॥
 इम गौन कुसौन अनेक बने, मन उदत बीरन जे न मनै ॥
 जिम वेद बिरंचनके मुखतै, गन ज्यो गिरिजेसै जटा रुखतै ॥६५॥
 जिम जान्हवि अडंकटाहकतै, बरखा कि उँदीचि बँलाहकतै ॥

टाहकतै१ लाहकतै२ अन्त्यानुपास १ ॥

रचना कि गुनै प्रपश्यतै विकसी, पतैना इम दिल्लियतै निकसी ॥६६॥
 हुव हाक नकीव हजारनकी, हलकार बढी प्रतिहारनकी ॥
 मग डोरिन मप्यत फोज चली, उरैमी जिम सागरतै उक्ली ॥६७॥

कमरदीखा जैसे मूर्ख ॥ ६० ॥ १ सेनापति (खामदोर) २ हाथी पर ३ नगरों का ४ शब्द ॥ ६१ ॥ ५ हाथियों के ६ शहर के द्वार से निकलते ही ७ हाथी का लबा निसान लुट पडा ८ आकाश (गोलकुंडा) फिर कर ९ कुत्ते ने ॥ ६२ ॥ १० दिन में मूक (गूंगे) रहने वाला ११ आस और आकाश में १२ पीठ पर आकाश बांधी हुई कि शकुन घुरे हाते हैं १३ खुलेहुए केसा बाझी १४ रजस्थला स्त्री को देखी ॥ ६३ ॥ १५ मस्त ऊँट को सन्मुख आता देखा १६ नग्न पुरुष को ईमता हुआ देखा १७ गधा और १८ महिष (मैसा) सामने आते मिले १९ भयकर सर्प छूटा और वस पर बिछी क्रींचित हुई ॥ ६४ ॥ २० ब्रह्मा के मुख स वेद कहे जैसे २१ शिव की जटा से गण निकले जैसे ॥ ६५ ॥ २२ ब्रह्मांड से गंगा निकली जैसे २३ चत्वार दिशा के २४ मेघ से वर्षा निकले जैसे २५ सत- रज- तम- इव तीनों गुणों से अमार की रचना निकली जैसे २६ तैसे दिल्ली से सेना निकसी ॥ ६६ ॥ २७ द्वारवालों का २८ बड़े राजाओं की सभा में निकलती है तब मार्ग के दोनों किनारों पर डोरियाँ खगाई जाती हैं २९ शहर

उमडात डगात बली बलवों, धमकात धुजात रसातलकों ॥
 इक अकखहिं नादरकों गहिहैं, इक अकखहिं हूरनमें रहिहैं ॥६८॥
 इक अकखहिं जित्ति इरान लई, इक अकखहिं मंत्रि न साहसई ॥
 इक अकखहिं खानकलीज फँटयो, रु वजीर सँहादत पे पत्तठयो ॥६९॥
 इक अकखहिं अप्पन सेनपती, सब जित्तिहैं तोरि इगन तँती ॥
 इक अकखहिं जित्तिहैं नादरही, पति दिल्लिय बुद्धि प्रमादँरही ॥७०॥
 इम चँड चलयो दल दिल्लियको, हठ जानि हगामिनके हियको ॥
 क़मि मारग सत्त७ सुकाम करे, पथपानियसों वं समीप परे ॥७१॥
 खट६ कोस इरान अनीकें रह्यो, क्रम तत्थ चैसूप सुकाम कह्यो
 असवार हजार असी ८०००० उतरे, अरु वीस २०००० छवीनैन
 सज्ज अरे ॥ ७२ ॥

॥ दोहा ॥

दिल्लियपति अब उत्तरिय, परिय अनीक प्रसाप्त ॥
 रहंसि खानदोराँ रचिय, बँदन इरानिन पात ॥ ७३ ॥

॥ निःशाखी ॥

दखईसँ खानदोराँ लिखि पत पठाया,
 ईरान ईस अगँ सुनसीन सुनाया ॥
 तुमँ तोरके तरारे चतुरंग चलाया,
 लाहोर आदि सूबा बदकैल फटाया ॥७४॥
 पंजाब पेसँ थाँनाँ निज आन नधाया,

॥ ६७ ॥ १८-॥ १ बजीर बादशाह के अनुहूत नहीं है २ जुदा (भिन्न) होगया है ३ सहादतनाँ भी "वै" का अर्थ कहीं 'परंतु' और कहीं 'भी' होता है, ॥ ६८ ॥ ४ पंक्ति. दिल्ली के पति की बुद्धि ५ पागलपन (भूल) में रही ॥ ७० ॥ ६ अर्थकर ७ खलकर ८ पानीपथ से ९ अब ॥ ७१ ॥ १० सेना ११ सेनापति (खानदोराँ) ने १२ सेना की रात्रि समय की चौकी पर ॥ ७२ ॥ १३ सेना का पहाव पड़ा १४ एकान्त में (गुप्त) १५ दुष्ट ईरानियों से बार्ता रची ॥ ७३ ॥ १६ सेनापति खानदोराँ ने १७ प्रताप के ताप के उफान से १८ सेना चलाई ॥ ७४ ॥ १९ आधीन

हिंदू सबे डरामी सौने सुलगाया ॥
 दिल्ल दोरं घोर भारैं वरजोर बनाया ॥
 गिनि डरपहान बुह्नी पैर लोभ लुभाया ॥ ७५ ॥
 चोंगत अनूप दिल्ली लखि दाव चलाया,
 जानी यह न कौऊ वर तौंस बनाया ॥
 सैतानक मिखापे मंगरूर मचाया,
 दिल्लीमसों न सके दिल्ल मरत दिखाया ॥ ७६ ॥
 सुलतानकी जमोपैँ सर्मसेर सजाया ॥
 कसमीरको फते कैँ सुलतान जुटाया ॥
 दरियावको दगासों लहि नाव लँघाया ॥
 पाया प्रकार सो "पै सुलतान पचाया ॥ ७७ ॥
 चाहो सुलाह जो तो करिजाह पैयानों ॥
 जो जगकी जरूरी तो देर नजानों ॥
 दिल्लीसकी गुलामी प्रतिरोज प्रमाना ॥
 सुलतान देरजमानें वर नायब माना ॥ ७८ ॥
 इम पत्र खानदोरा पठये ति" पैठाये ॥
 ईरान साह मंत्री उमराव बुलाये ॥
 एकात ले ईजाँके अँहवाज सुनाये ॥
 भेजे ति खानदोरा देल खोली दिखाये ॥ ७९ ॥

१ छाती २ दिख बटाकर ३ पराई ॥ ७५ ॥ ४ उपमा रहित ५ बस (दिखी) ने भावरशाह को पति बनाया है ६ घमण ॥ ७६ ॥ ७ बादशाह को ८ तरवार ९ फरके १० मदी (अटक) को ११ परन्तु ॥ ७७ ॥ १२ प्रयाण (समन) १३ जमाने (समय) में १४ श्रेष्ठ अथवा ऊपर हाकिम समझो नायब अर्ज सामान्य रीतिसे तो मातहत का है परन्तु विशेष रीति से यह अन्य लोगों का हाकिम होने के कारण हाकिम के अर्थ में लिखा गया है ॥ ७८ ॥ १५ ते (वे) १६ पढ़ाये १७ इस जगह के, अथवा इनके, और यदि 'ज' पर अनुस्वार नहीं होवे तो अक्षर्यक (ह्रस्व) का अर्थ होता है अर्थात् दुख के हाल सुनाए १८ बुझाना हाथ १९ खानदोरा ने भेजा यह पत्र ॥ ७९ ॥

ईरान साह अकखी तामच कुलीसों ॥
 तैंहा वजार आनें अफवाजि खुलीसों ॥
 एतो नहीं निहारे ततबीर डुलीसों ॥
 आला वजोर आये समसेर तुलीसों ॥ ८० ॥
 हिंदू न एक आया सब सोर डरानें ॥
 तोहू ब लाख १००००० ताजी पखरैत पलानें ॥
 हाथी हजार १००० मत्ते घनरूप घुमानें ॥
 लकखों सवार अच्छे बर हू लुभानें ॥ ८१ ॥
 तोपैं हजार दो २००० पै नीसान फिरानें ॥
 छो हैं लगे छवीनां भट भीर भिरानें ॥
 लकखों पयाद जंगी समसेर सजानें ॥
 खुदमोजे खानदोरों वर फोज खजानें ॥ ८२ ॥
 एतो कलोजखांका नाहक फरेबहैं ॥
 गाफिल जरा न दिल्ली जैर जोर जेबहैं ॥
 सबही सुलाह मंडे करनौं कि जंग नां ॥
 उनतो यहै कहाई हमकों दिरंग नां ॥ ८३ ॥
 ईरानसाह अकखी सबकों सुनायकैं ॥
 उमराव बीर बोले मन मंत्र लायकैं ॥
 निसुरुत अला रु हाजी काजी करीमसे ॥
 गाजीहुसैन रुम्तुम रोसन रहीमसे ॥ ८४ ॥
 बुल्ले कलीजखांपैं अहवाल पठावैं ॥
 पौजी सु कयों बुलाये बैरजोर सुनावैं ॥

१ हे वजीर! २ प्रसिद्ध फौज (सेना) से ३ देखे ४ उपाय ५ बड़े ६ जोर के (बल) के साथ ॥ ८० ॥ ७ कोलाहल सुन कर ८ अब ९ घांटे, पाखरांवाले १० अष्ट अष्टमार्गों पर लोभित हुए ॥ ८१ ॥ ११ धजा १२ स्वेच्छाचारी (स्वतंत्र) ॥ ८२ ॥ १३ झूठ १४ घन और बल से १५ शोभायमान है १६ सुलाह (मंत्र) रचो १७ देर (विश्रांति) नहीं है ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ १८ यह हाल १९ हमें मालूम २० जबरी (बलात्कार) से

जोहिलू दंगाजना यो नाकिस् न नाकहैं ॥
 हमहू हाराम तोपें कातिलू कंजाकहैं ॥ ८५ ॥
 ईरानसाह अंसैं लिखि पत्र पठाया ॥
 आया कलीजखांपैं इन मत्र उपाया ॥
 जुमि मेल खांकमदीं दिल्ली वजीर जो ॥
 दूजो सु भाइभुजा जालमू सरीर जो ॥ ८६ ॥
 मिलि तीन३ मत्र कीनों अपनी जमीनहै ॥
 अरु साह पैं मुहुम्मद अपनैं अधीनहै ॥
 ईनेसों व खानदोराँ दुसमनू मरायकै ॥
 कछु दडदे रुपैये देहैं पठायकैं ॥ ८७ ॥
 इम मत मडि पच्छो तहैं पत्र पठायो ॥
 डरिये डजूर नाही हम काम बनायो ॥
 सब रावरे रेजूहैं तुमसों न रारिहैं ॥
 इक नों जु खानदोराँ फेदाहि मारिहै ॥ ८८ ॥
 तुम जगकी कदावो न कबूल मामलै ॥
 तन सज्ज खानदोराँ अहै तैमामलै ॥

१ तमामलै१ तमामलै२ अन्त्यानुप्रास १ ॥

हम रावरे भटोंसैं मिलि ताहि मारिहै ॥
 ईरानकी दुहाई वजमौं विथारिहैं ॥ ८९ ॥
 सुनि एह साह नादर बग्जोर कहाई ॥

१ हे मूर्ख २ दगा करनेवाला ३ निकम्मा ४ तरे नाक है कि नहीं है ५ हे अधर्मी
 ६ कतल करनेवाले ७ छुटेरे हैं अथवा 'कजा' शब्द के साथ स्वार्थ में 'क' प्रत्य
 य किया है तो मृत्यु का नाम है ॥ ८५ ॥ ८ नादिरशाह ने ९ कमरदीखा १० कुछ
 ॥ ८९ ॥ ११ अथ ईरानिया से ॥ ८० ॥ १२ अधीन है १३ एक खानदोराँ अधीन
 नहीं है सो उसको कल ही मार खालेंगे (फारसी में आगामि दिन को फरदा
 और दीरोज कहते हैं) ॥ ८८ ॥ १४ मामला (देख) अर्थात् फौज खरब लना
 मजूर मत करो १५ सब को छोकर आयेगा १६ जमाने के साथ (जमान में) ॥ ८९ ॥

*फर्दाहि खानदोराँ तुमसों ब लराई ॥
 सुनि एह खानदोराँ सब सेन सजाई ॥
 दुहुँओर होत औसैं वह रत्ति बिताई ॥ ९० ॥
 जाई१ ताई२ अन्त्यानुप्रासः १ ॥
 अब प्रातकाल आया कृकवाकु कुकानैं ॥
 अरबिंदतैं उडे के अलि रत्ति रुकानैं ॥
 परदार छोरि छाती नर जार पैलाया ॥
 गिरिराजकी गुफामें तम तोम चलाया ॥ ९१ ॥
 दैर घंट देहरो मैं बर नाद बजाया ॥
 चहि भोग चक्र चक्री सुख मेल सजाया ॥
 तारेन मंद तेजी दबिबिंब दुराया ॥
 मंथान ग्वाल गेहों घनघोर घुगया ॥ ९२ ॥
 तजि पंथ चोर तक्के छिपनोँ दरीनं मैं ॥
 गहि मौन धूक बैठे तरु कोटरीनं मैं ॥
 उदयादिपैं अनूठी इक रोचि लखाई ॥
 चल चाँटकेर चाँके चहकानि मचाई ॥ ९३ ॥

॥ दोहा ॥

सेन खानदोराँ सजिय, स्वामिधरम धरि सीस ॥
 अनय सहादत मंडि इत, रचिग साहपर रीस ॥ ९४ ॥

॥ पट्पात ॥

कहिय सहादत कजलबास बैभव मम लुटत ॥
 देहु साह आदेसैं नरन नाहक सिर तुटत ॥

† हे खानदोराँ अब * कल ही तुम स लड़ाई है ॥ ९० ॥ ‡ सुरंगे चाले
 § कमलों से २ रात्रि के रुके हुए ? अमर ३ पर स्त्रियों की छाती को छोड़ कर
 जार पुरुष ४ मगाधपर्वतों के राजा [सुमेरु] की गुफा में अंधेरे का समूह गया
 ॥ ९१ ॥ ७ शख ८ बिलोना (दधिमंथना) ॥ ९२ ॥ ९ गुफाओं में १० वृक्षों के
 कोषरों में ११ क्रान्ति १२ चपल चिड़ियाँ घोलीं ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ १३ कजल के
 रहनेवाले; अथवा काले कपड़ों वाले (ईरानी) १४ हुकम

तय नय अक्खिय साह पृथक लरनों न उचित अब ॥
 इक्क होय अकुंरहि सजहिं तुम हम कलीज सब ॥
 कहि तँदपि भाडभुंजक कुटिल सब कातर दिल्लीस दल ॥
 पिकरपो न जात हमतैं प्रबल बिरचत लूट इरान बल ॥ ९५ ॥
 यह सुनि अक्खिय साह पृथक लरि मरहु सहादत ॥
 अधम सुनत हुतँ उठि भाडभुजक अति उद्धत ॥
 चढि निज दल लै चलिय खानदोरों प्रति यों कहि ॥
 दीजै हमहि सहाय बमूआधिराज विजय चहि ॥
 इम अक्खि जाय ईरान दल मिल्यो मूढ लवहुँ न लरयो ॥
 सब भेद साह नादर समुझि अधम सहादत उँच्चरयो ॥ ९६ ॥
 ॥ दोहा ॥

मूढ सहादत जो मिल्यो, चहि ईरान अधीस ॥
 पच्छी यों कहि मुक्कली, अँतुल भार मम सीस ॥ ९७ ॥
 ॥ नि गानी ॥

सुनि एह खानदोरों चढि बेग चलाया ॥
 वींकाँ सहाय दैवे छक छोहँ छकाया ॥
 दिल्लीसकी बमूको अधिराज वीर जो ॥
 हरवल्ल व्है रु दकयो धमचक्र धीर जो ॥ ९८ ॥
 अच्छे सिपाहलैकै अब अब उढाये ॥
 मानों घटा उँदीची आसारँ मचाये ॥
 धरनी धमकि धूजी सिर फूटि सेसका ॥

१ नीति के पथन कहे २ जुदा खड़े होयेंगे ३ कलीज ली ४ तोभी ५ कायर ॥ ९५ ॥
 ७ शीघ्र उठ कर ८ अपनी सेना ९ हे सेनापति १० यह कहकर ११ चक्षम
 भी नहीं कडा १२ सहादतखा की नीय कहा ॥ ९६ ॥ १३ बहुत १४ सहादतखी
 को १५ क्रोध के छक [मद] में १६ सेना का पति युद्ध में धैर्य रखनेवाला ॥ ९८ ॥
 १७ बखर की घटा ने १८ जलघारा

दिनं चंदसा दिखानाँ दिपनाँ दिनेसँका ॥ ९९ ॥
 दल भार मार दह्या बरकी वराहकी ॥
 कमठेस पिठ्ठि फट्टी बैत आह आह की ॥
 काली तथा कँपाली आये उछाहसों ॥
 बेताल प्रेत नच्चे चतुरंगँ चाहसों ॥ १०० ॥
 गन सेन कंक गिद्धी गोर्भायु गँहक्के ॥
 जंजीर तोप जाली गज घंट ठहक्के ॥
 बैँडे हजार हत्थी बढि लैन विथारे ॥
 ताँजी तुरंग तत्ते नभ लेत तरारे ॥ १०१ ॥
 चढि बीर खानदोरौँ इम सेन चलाई ॥
 ईरानकी अँर्नापैँ अब बैँग उठाई ॥
 उततैँ हु सेन आयो सुनि याहि आतही ॥
 पाताललौँ पुकारैँ पहुँची प्रभातही ॥ १०२ ॥
 सक बान अक सत्रह १७६५ बदि फग्गुन मासे ॥
 रवि देखनैँ रुकानाँ तरवारि तमासे ॥

नमासे १ तमासे २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १
 दुहुँआर तोप दग्गी धपि धम धोरनी ॥
 कीनैँ बिमान कारे अति गौज उप्फनी ॥ १०३ ॥
 डगमगि मेदिनीके गिरि कूटँ गिरानैँ ॥
 सरिताँ तँडाग छिज्जे पसु पच्छि पिराँनैँ ॥
 आकास अच्छरीके गन गान मचायो ॥
 डँकँ सु डाकिनीके रस रास रचायो ॥ १०४ ॥

१ दिन के चन्द्रमा के समान २ सूर्य दीखने लगा ॥ ६९ ॥ ३ वार्ता ४ शिव
 ५ सेना में ॥ १०० ॥ ६ गीदड़ ७ प्रसन्न होकर बोले ८ पंक्ति फैलाई ९
 ताजिक देश के घोड़े ॥ १०१ ॥ १० सेना पर ११ घोड़ों की बागें उठाई १२
 गर्जेना बढी ॥ १०३ ॥ १३ भूमि धूज कर कितने ही १४ पर्वतों के शिखर गिरे
 १५ नदी १६ तालाब १७ पीड़ित

गोले गेरूग गजें हथी न हलकैं ॥
 बारूद मार भगैं सपां कि सलकैं ॥
 आवाज तोप उहैं जिम सँव सानुसों ॥
 ज्वाला कराल जगैं बढि चद भानुसों ॥ १०५ ॥
 आकास तूटि भुडे उडिजात ओरसे ॥
 समसेर मेहैं नचैं नभ मत्त मोरसे ॥
 कट कट काटि डारें गोले ओरातिकी ॥
 मानों पिछानि पारें गज भद्रजातिकी ॥ १०६ ॥
 हुसियार खानदोगैं समसेर चलाई ॥
 पहुमी सु रंगें पिकखी लागि रेंत ललाई ॥
 फूटैं कपाल भेजे तरवारि तरकैं ॥
 के कुतैं कंकटोंमें गत सँल गरकैं ॥ १०७ ॥
 केते तुखारैं कटैं असवार उलटैं ॥
 कटैं कटार भूखे हिय कालिके चटैं ॥
 नाँगाद वान फुटैं नर कातर नटैं ॥
 टकार चाप वज्रैं चिल्ला सु चटैं ॥ १०८ ॥
 घायल अचेत घुम्भै लटके रकावसों ॥
 मानों गमार मत्ते सरसे सरावसों ॥
 कटि पिप्परे कलेजे फाँवि फाँक फुलावैं ॥
 बैसाख माँहिं केसुं जिम जेवैं बनावैं ॥ १०९ ॥

१ घमख मिटाते हैं २ हाथियों के हलकों के ३ धिना विजली चमकती है ४ पर्ष-
 तों के शिखरो से ५ वज्र की आवाज होवे ऐसे ॥ १०५ ॥ १ तरवार से भंडे
 तूट कर आकाश में छूटते हैं सो मानों ७ वर्षा में मत्त मयूर आकाशमें ना
 चते हैं ८ हाथियों के गहमथल और कुमस्थल ९ शत्रु की तोपें ॥ १०६ ॥ १०
 उस युद्ध की भूमि ११ रुधिर छग कर लालरंग की दीखी १२ भाले १३ कव-
 चों में जाकर १४ साल सहित घुसते हैं ॥ १०७ ॥ १५ घोड़े १६ कलेजा १७ पेट
 के कवचों (पेटियों) में तीर फूटते हैं १८ कायर मनुष्य आगते हैं १९ प्रत्यक्षा खि-
 चत है ॥ १०८ ॥ २० शामित २१ दाक वृक्ष के फूल (केसले) २२ शोभा ॥ १०९ ॥

सुंढा करीन कट्टें जिम पन्नग कारे ॥
 भंभं भयानं बजैं भट भिन्न नगारे ॥
 आकास अंगि पत्ते सुरलोक उजारे ॥
 महारादि लोक वारे जनलोक सिधारे ॥ ११० ॥
 विनु चेत बीर बकैं बहु दंत बजावैं ॥
 घोड़े अनेक घुम्में मुख भग्ग हलावैं ॥
 धाराल बाढ बजैं अति बीर बकारैं ॥
 समसेरकाँ सिराहैं मुख मार उचारैं ॥ १११ ॥
 पंचासदोय ५२ भैरूँ ललकार लगावैं ॥
 लैलै ललाम लोही चउसहि ६४ चढावैं ॥
 के सीस ईस लैकैं गल भेट भिरावैं ॥
 के अच्छरी अनूठी बरमाल गिरावैं ॥ ११२ ॥

पट्पात ॥

तीन३ पहर तरवारि खानदोराँ बर बज्जिय ॥
 अनिय मोरि ईरान सबल दिल्लिय जय सज्जिय ॥
 रवि अत्थतँ रन रुकिय घाय लग्गिय अहारह १८ ॥
 खेत सहादत खान लखन हेरिय बहु बारह ॥
 पापिय कहौन पायो तँदपि देखयो सब ईरान दल ॥
 यह जानि भाड़भुंजक अधम दूत पठायउ छुँद छल ॥ ११३ ॥
 ॥ दोहा ॥

खानसहादत दूत दल, पठयो चमुपति पास ॥
 मोहि इरानिन जित्तिकैं, गाह दिय काराबाँस ॥ ११४ ॥
 अब प्रदोस आगम अधिक, अरु तुम घायल अंग ॥

१ भयंकर २ वीरों के फोडेहुए नगारे ३ अग्नि ४ पूग कर ५ जन लोक में
 गये ॥ ११० ॥ ६ तरवारों के ॥ १११ ॥ ७ सुन्दर ८ शिव ॥ ११२ ॥ ९ श्रेष्ठ
 १० सूर्य अस्त होते ११ सहादतवाँ को देखने के लिये १२ तोभी १३ उस नीच
 ने छल से दूत भेजा ॥ ११३ ॥ १४ कैदखाने में ॥ ११४ ॥ १५ सन्ध्या समय का

कलिह कुरावहु मदति करि, जानहु दुर्गम जग ॥ ११५ ॥
 वदलि मूढ ईरान बिच, खल सु सहादतखान ॥
 यह फरब कहि मुकल्पा, बनि सठ बदीवान ॥ ११६ ॥
 सेनापति यह सुनि फिरघो, जय जस कहुक उबारि ॥
 सोधि समर घायल भटन, चल्पो नृजानन डारि ॥ ११७ ॥
 पट्पात ॥

इत दिल्लीस वजीर खानदोरहिं सुनि आवत ॥
 मारन ताकहें मूढ डैष्ट बहु ँपाज उपावत ॥
 कहिय साहसो जाय भजिग कातर सेनापति ॥
 कजलैवास लागि पिछि आत डारन इत आपति ॥
 में अबहि देन दलपति मदति तांपन बल रोकत तिनहिं ॥
 यह अनृत अक्खि गोल्तन गजब गंजर बिथारिय को गिनहिं ॥ ११८ ॥
 ॥ दोहा ॥

यह वजीर अति घोर किय, खंता कमरदी खान ॥
 सेनसहित सेनेसको, पित्रौ तोपन प्रान ॥ ११९ ॥
 हुव २ हि खानदोरह चरन, गोल्तन उडिग गैन ॥
 अति घायल हुव तदपि द्रुत आयउ डेरन अैन ॥ १२० ॥
 ॥ नि शास्त्री ॥

अति घाय खानदोरौ डम डेरन आया ॥
 खैनी कलीजखाँको सैवजीर बुलाया ॥
 मन मत्रे नीति मही सबकोहि सुनाया ॥
 हौनाँ सु तो हुवा ज्यो हम ज्यौन गुमाया ॥ १२१ ॥

१ दुर्गम ॥ ११५ ॥ २ ११६ ॥ ३ अनुकूल ४ मिस (छल) ५ भागा ६ ईरानी
 ७ सेनापति (खानदोर) को ८ मूढ बोल कर ९ निरंतर प्रगर ॥ ११८ ॥
 १० अपराध (कसूर) ॥ ११९ ॥ ११ गोली स आकाश मे छडगय १२ स्थान में ॥ १२० ॥
 १३ मृत करने वाले (घातक) १४ वजीर महित १५ नीति की सलाह ॥ १२१ ॥

अब तीन ३ मंत्र अकखैं हम सो तुम कीजै ॥

ईरानसों लराई इक १ होन न दीजै ॥

दिल्लीस हितु दूजैं २ नादर न मिलावो ॥

तीजै ३ न ताहि दिल्ली तुम जाय दिखावो ॥ १२२ ॥

मंगों सु दै रुपैये प्रतिगोन करावो ॥

कीनी तुम्है जु मोसों कपों सो वँ कहावो ॥

यों अक्वि खानदोरों बपु सद्यँ बिहायो ॥

सुनि साह पै मुहुम्मद अति सोक अघायो ॥ १२३ ॥

अब खाँकलीजकाँही सेनापति कीनों ॥

अर्थ भाड़भुंजकके अर्थ न दीनों ॥

इतकाँहु साह नादर अकुलाँय विचारी ॥

उमराव इक्क किनी मम सेन दुखारी ॥ १२४ ॥

तबही कलीजखाँ पै लिखि पत्र पठाया ॥

लै दंडके रुपैये हम गोने उपाया ॥

सुनि सो कलीजखाँहू अति मोद बढ़ाया ॥

एकांत साह अगँ अब मंत्र बनाया ॥ १२५ ॥

॥ दोहा ॥

कहैं कलीज रु कमरदी साह अगग कर जोरि ॥

सेनापति मान्यो समुझि, देहु लरन अब छोरि ॥ १२६ ॥

इक्क कोटि १००००००० दम दम्मेलै, नादर पछो जात ॥

सोहि बत अब स्वीकरहु, लरैं न पुगहिँ ताँत ॥ १२७ ॥

मन्नि साह यह मंत्र तब, नादर प्रति लिखवाय ॥

दम्म कोटि लेजाहु घर, अरु नन मिलन उपाय ॥ १२८ ॥

१तीन सलाह कहना हूँ २ से ॥१२२॥ ३ उलटा गमन ४ अब ५ शीघ्र शरीर छोडा. बादशाह मुहुम्मदभी ७ भर गया ॥ १२३ ॥ = यहाँ ९ सहादतखाँ के अर्थ सेनापति पन नहीं दिया १० घबरा कर ॥ १२४ ॥ ११ जाना विचारा है ॥ १२५ ॥ १२३ ॥ १२दंड के रुपये लेकर १३स्वीकार करो १४हे स्वामी! ॥१२७॥

इक १ भाग अबही लदहु, इक १ जाय लाहोर ॥
 इक १ गिनहु लघत अटक, इम लीजे दम मोर ॥ १२९ ॥
 यह सुनि नादरसाह अब, करन विचारिष कुञ्च ॥
 खानसहादत जानि यह, अधम जन्पो अघ उच्च ॥ १३० ॥
 ॥ पादाकुलकम् ॥

खानसहादत एह विचारी, नहिँ अवर कोऊ भटभारी ॥
 प्रान खानदोराँ जब देंहैं, सेनापति तब मांदि बनै हैं ॥ १३१ ॥
 यहै विचारि वजीर मिलायो, मूढ सु ब्रथा चमूप मरायो ॥
 साह कलीज कियउ सनापति, याँतैं जन्पो सहादत अवभाति ॥ १३२ ॥
 नादरप्रति इम बैन सुनायें, ब्रथा कलीज तुमहिँ वहकाये ॥
 दिल्लिप राज दयो तुमको रब, क्यों नहिँ लेत रु जान कहत अब ॥ १३३ ॥
 खान कलीज मिलन मिस बुल्लहुँ, पुनि करि कैद खाँज सिरखुल्लहु
 तब तुमरे बसि साह मुहुम्मद, वैंहैं हुतहिँ तजहिँ साँहस इद ॥ १३४ ॥
 तब इन खानकलीज बुलायउ, करन मर्त्र वह सठ हुतैं आयउ ॥
 तबहिँ पक्रि कारीविच छाँपो, अब नादर अति गँव्य सम्हाँपो ॥ १३५ ॥
 अक्खिय सुनहु कलीज कदावहु, दिल्लीसहिँ यँहँ मिलन बुलावहु ॥
 सिर कुरान धरि सपयैं उचारत, एकासेँन बैठहिँ हित सम्मत ॥ १३६ ॥
 रत १ मत २ अन्त्यानुपास १ ॥

तबहिँ कलीज पत्र लिखि प्रेरय, आवहु मिलन इनहु हित हेरिय ॥
 यह सुनि तखत खान औरोहिय, चलत साह बहु बीरन रोहियैं ॥ १३७ ॥
 अरोहिय १ नरोहिय २ अन्त्यानुपास १ ॥

कोऊ कहत जाहु नन हजरत, कोऊ कहत अबहु दल बलवैत ॥

॥ १२८ ॥ १ अटक नदी उत्तरा तय २ इस प्रकार मुकने दडलो ॥ १२९ ॥ १३० ॥
 ॥ १३१ ॥ १३२ ॥ ३ खुदा ने ॥ १३३ ॥ ४ बुलाओ ५ फौज ६ शीघ्र ही ७ हठ
 की सीमा छोड़ देगा ॥ १३४ ॥ ८ कलीजखा का ९ सहादत करने का १०
 शीघ्र ११ कैद १२ शीघ्र ॥ १३५ ॥ ११ सौजन्य १४ एक गद्दी पर ॥ १३६ ॥ तखत
 पर १४ कर ११ रोका ॥ १३७ ॥ १७ सेना बलवान् है

हे हाजरि भट लखख १००००० कैटारे, पैहो मिलि न भली फलप्यारे
 काहूकी न साह श्रुति कीनी, चलयो मिलन सेनहु नहिं लीनी॥
 संग सु लये पंचसत ५०० साँदी, पानीपथ इम गयउ प्रमादी॥१३९॥
 पावकोस लग नादर पुँतह, गय सम्मुह बेसर रथ जुतह ॥
 इम ईरान अनीक गयो यह, डोढी लग आयउ सम्मुह वह १४०
 जाय सभा बैठे इक आसन, भाई कहि हुव दुव ३ सभासन ॥
 तब नादर दिल्लीसहिं अखहिं, सचिवहु सचिव मिले हित रखहिं १४१
 तुम वजीर बुँल्लहु यँहँ यातँ, हम वजीर रखहिं हित तातँ ॥
 तब दिल्लीस पत्र लिखि निजँ कर, बुल्लयो स्वीयँ वजीर पापपर १४२
 यह कैंगर नादर कर अप्पिय, नादर ताहि बुलावन अप्पिय ॥
 तब पचीस २५ असवार पाठाये, चंड ति कंगर लै रु चलाये १४३
 ते उद्धत आये दिल्लीय दल, बदत वजीर वजीर कुँजे बल ॥
 यह सुनि खानकमरदी कपिगँ, तिन सह चलयो नाँहि कछु जंपिगँ १४४
 तबहि मंत्र अखिखय उमरावन, जंग वजीर रचहु जावहु नन ॥

वन १ नन २ अन्त्यानुप्रासः ॥

पापी जन न सुलाँहिं पिछानै, निपैरीतहिं अनुकूल बखानै ॥१४५॥
 कहिय वजीर लरहु जिन कोऊ, करिहैं साम साह हम दोऊ ॥
 इम कहि लै द्वै सत २०० असवारन, गो वजीर चित मंत्र बिचारन १४६
 सोहु नजरिकैदी किय नादर, दिल्लीय दल सुनि भजिग महा दर ॥

नादर १ हादर २ अन्त्यानुप्रासः १ ॥

१ कटा (कतल) करनेवाले मिल कर भला फल नहीं २ पाओगे ॥ १३८ ॥ ३ सवार ॥ १३९ ॥
 ४ पुत्र (यहाँ स्वार्थ में 'ह' प्रत्यय किया है) ५ खच्चरों के रथ जुंताकर ६ सेमा
 में ७ नादिरशाह ॥ १४० ॥ ८ एक गद्दी पर ९ वार्तालाप १० कहा,
 वजीर से वजीर मिलकर ॥ १४१ ॥ ११ तुम्हारे वजीर को बुलाओ १२ हमारा
 वजीर उससे स्नेह रखेगा १३ अपने हाथ से १४ अपने पापी वजीर को बुलाया
 ॥ १४२ ॥ १५ पत्र ॥ १४३ ॥ १६ सेना में घुसे १७ धूजा १८ कुछ नहीं कह कर ॥ १४४ ॥
 १९ सलाह को नहीं पहचानते २० प्रतिकूल को अनुकूल कहते हैं ॥ १४५ ॥
 ॥ १४६ ॥ २१ बड़े भय से

अब प्रयान ईरान साह करि, आयउ पुर दिल्लिय उद्धत अरि १४७
सक सर अक सत्त इक १७९५ *हायन, परि फगुन सित दस-
मि १० मपलायन ॥

इम नादर दिल्लिय पुर आयउ, होय निरंकुस तोर चलायउ ॥१४८॥
साह मुहुम्मद खानसदादत, बहुरि बज्जार रु खाँकलीज बत ॥
ए चपारिअहि कैदी करिआनै, ईरानी दिल्लिय प्रविंसानै ॥१४९॥
अप्प मुख्य महलन निवास किय, दल मिलान नगरी अंतर दिय॥
तथ रहत निस दोय २ वितार्ई, पै सेना अनसन अकुलार्ई ॥ १५० ॥
कोउ न बनिक दृष्ट पट खोल्लै, बैठे दुरि गेहन नन बोल्लै ॥
दल नादर प्रति अरज दई तब, अत्य बनिक बेवैन अन्न अब १५१
तहँ किय अरज भेट बदीजन, राजा जुगलकिसंग प्रीति पन ॥
दल इरान देहसति मन होलत, योनै बानिक बजार न खोलत १५२
तब नादर पठई कहि जाहिर, बसहु जाइ मम दल पुर बाहिर ॥
तब आदेसै अधीन कटक चढि, बाहिर पुगके जान लग्यो बढि१५३
तिहिं खिन पुर उद्घोसै विधारयो, महलनमें नौदर हनि हारयो॥
वाको कटक भजत अब यातै, पथ रुकहु इन सबन निपतै १५४
यह सुनि जनन जरे दरवाजे, बहु बढूक रु पत्थर बाज ॥
पहर दोय २ तैस सेन पचाई, अब नादर प्रति अरज रचाई ॥१५५॥
हुकम अधीन जात बाहिर हम, पुरजन जान न देत कुटिल क्रम ॥
बढूकन प्रीवन पुनि मारत, हम सु राँवरो कथित निहारत॥१५६॥

॥ १४७ ॥ * संवत् में † शुक्ल पक्ष ‡ भगे १ प्रताप ॥ १४८ ॥ १ सदादतखाँ
१ इन चाराँ को संतोषदायक कैदी करके ४ प्रवेश हुए (हुये) ॥ १४९ ॥ १ सेना
का मुकाम १ शहर के भीतर ७ मेहाळ भूल से ॥ १५० ॥ १ सेना ने ॥ १५१ ॥
१० भय से ॥ १५२ ॥ ११ हुकम के अधीन ॥ १५३ ॥ १२ हाका फैलाया
१३ नादरशाह को मारहाला १४ मारै ॥ १५४ ॥ १५ उस (नादर) की सेना ने
॥ १५५ ॥ १५ पत्थरों से १७ आपका हुकम देखते हैं ॥ १५६ ॥

निज दैल अरज न मन्नी नादर, अप्पहि लखनै चलयो अन आदर
 संके तदपि नाहिं जन सारे, याहू पर पत्थर बहु मारे ॥ १५७ ॥
 नादर कोहु सत्य तब भासी, कट्ट मुठि निज किरचि निकासी ॥
 वयजन ताहि उच्ची कारे बुल्लयो, ईरानिन यह सुनि खग तुल्लयो १५८
 भयो कतल दिल्लियपुग भारी, लखन कटे बाल नर नागी ॥
 स्थान बिडाल धेनु हय कुंजर, एंडक अंज रु महिख खग बेसैर १५९
 कटे कैहर को गिनै अनंतन, प्रलय मच्यो त्रय जौम घोर पन ॥
 यह सुनि खानकलीज अरज किय, तब नादर यहै रुक्कि अभय
 दिय ॥ १६० ॥

फगुन मास विसैंद द्वादसि १२ दिन, इम पुर कतल कियउ ईरानिन
 नादर दैत अभय अब जानिय, तब तम भटन कोस अंसि ठानिय १६१
 रहि नादर दुव २ मास बितायउ, दिल्लिय पति सैन लिखित
 लिखायउ ॥

हो मैं साह जु हिंदवान पति, सो जित्यो नादर इरान पति ॥ १६२ ॥

वानपति १ रानपति २ अन्त्यानुप्रासः १ ॥

ज्यान माल बखसीस कियउ सब, सो मैं लियउ अधीन उभय अब
 इम लिखाय नादर दैल लिन्नो, कछु न मुहुम्मद आदर किन्नो ॥ १६३ ॥
 छिन्नि बिभूति लई सब बैर बग, सत्रह १७ मन अनमोल जवाहर ॥
 हीरा डक आयैत चतुरंगुल, जो बुंदीस भोज किय बाहुल ॥ १६४ ॥

१ अपनी सेना की ४ बादशाही लवाजमा लिये बिना देखने को २ तो भी नहीं डरे
 ॥ १५७ ॥ ३ काष्ठ (लकड़ी) की सूठ की तरवार को निकाल कर, उसको ऊँची करके
 उकतल बोला ॥ १५८ ॥ ४ कुत्ते ५ बिल्ली, बाघ, घोड़े १० हाथी ११ मेंढे १२ बकरे,
 भैंसे, गधे १३ खच्चर ॥ १५९ ॥ १४ उस जुलम में १५ तीन पहर तक १६ इस
 (कतल) को रोक कर ॥ १६० ॥ १७ सूरि १८ नादर का दिमा हुआ १९
 तरवारों को स्थानों में की ॥ १६१ ॥ २० दिल्ली के बादशाह से ॥ १६२ ॥
 २१ पत्र ॥ १६३ ॥ २२ अंठ अंठ ऐश्वर्य बिन लिया २३ चार अंगुल मोटा बुंदी
 के पति भोज ने २४ भुजबन किया था ॥ १६४ ॥

गुल १ हुल २ अन्त्यानुपास १ ॥

सोहीगहु छिन्नि लियनादर, तखत दम्म नवकोटि १०००००००० मुल्लबर
आयुध अतुल बसन मूखन प्रिय, अच्छेसत्र इत्यादि छिन्नि लिया १६५।
रहि दु २ मास दिल्लिय इम नादर, करिगय कुच्च सेन सह सादर
अब इत खानसहादत जानी, मै हराम यह साह पिछानी ॥१६६॥
जेपत नाहि छारहिं हजरत ठठ, यह बिचारि बिस खाय मग्घो सठ ॥
साह मुहुम्मद तेज नसापो, लागि कुमग्ग सव विभव लुटापो १६७
देल्लिय निबल सवन अब जानिय, पुनि मग्घहत हल्ल प्रमानिय ॥
इत बुयसिंह देह अब छोरो, बुदिय राज उर्दधि बिच बोरयो १६८

॥ दोहा ॥

पुरवेघम सने कोसत्रय ३, नाम बाघपुर ग्राम ॥

जैत्य वेह सभर तजिय, निज बियारि बदनाम ॥ १६९ ॥

सबत खट नव सत्त डक १७९६, अमा ३० रु मोधव मास ॥

इम सु बुद्ध अनिरुद्ध सुवे, किय परलोक निवास ॥ १७० ॥

प्रेत कम्म सत्र विधि सधिय, भो न भूमि गजदान ॥

बसुधी विनु किहि घर बने, बैदिकै मृतक विधान ॥१७१॥

रम्य महल १ सर २ बाग ३ रचि, करन नाम बय काल ॥

सेवन आलम साह ४११ को, प्रविसेपो बुद्ध १९७१ नृपाल १७२

कछवाही १९७२ रानी कियउ, पुग भिरवन प्रारभ ॥ ॥

जयनिवास १ अभिधान धरि, थप्पन भुव जस यभ ॥ १७३ ॥

बिच अच्युते मदिग बिगचि, पुग ताके चहुँ ४ पास ॥

अष्ट तल्ल (यह तल्ल बादशाह शाहजहा न बनाया था और 'तल्ललाजस'
स का नाम था) १५५ ॥ १६५ ॥ ३ कुमार्ग ॥ १६७ ॥ ४ समुद्र म डयाया ॥ १६८ ॥
मे ५ जहा ७ बुधसिंह न शरीर छोडा ॥ १६९ ॥ ८ अमावास्या ६ अथ मास
० अनिरुद्धसिंह के पुत्र ने ॥ १७० ॥ १ भूमि और हाथी का दान नहीं हुआ
अधना भूमि के १३ वेद विहित कर्म ॥ १७१ ॥ २ सुन्दर २ प्रवशा किया ॥ १७२ ॥ ३
गर धमान का कार्य प्रारभ किया १७३ नाम रत्न हरा ॥ १७४ ॥ ४ बिष्णु भगवान का

रानी रचन बिचार किय, जैपुर उपमिति जास ॥ १७४ ॥
 हे गनेस घंटी बिहित, ताके बाहिर तत्थ ॥
 दिस उत्तर ४।७ केदारतैं, लग्यो बसन अति अंत्य ॥ १७५ ॥
 बिच चत्वरैं तैंहं बनि सक्यो, पहु पहु आलय पीढैं ॥
 बिनु बुंदिय रुकिगो बहुरि, तुंग न भो नभ लार्ढ ॥ १७६ ॥
 निलय जोध १९७।२ रहि नृप अनुज, व्यय बिस्तरि वंसु वार ॥
 पुरतैं पच्छिम ३।५ कोस १ पर, कर्मन रच्यो कौसार ॥ १७७ ॥
 नाम जोधसागर १।२ सर १२, निबसथैं २ रचित नवीन ॥
 बाग ३ महल ४ सर सेतु बिच, प्रभु मंदिर ५ ढिग पीन ॥ १७८ ॥
 भूपति धावर गंग भो, जिहि पुर पूरव जत्थ ॥
 बिरचे उँपवन १ बापिका २, अपि हजारन अंत्य ॥ १७९ ॥
 कोटवाल नृपको कथित, रामचंद अभिधान ॥
 बिरचे बापी १ बाग २ जिहि, पुरनिच पच्छिम ३।५ थान ॥ १८० ॥
 गजमुख भूप पुरोहितहु, पच्छिम ३।५ दिस पुर पास ॥
 दधिमति देवीको सदन १, बिरच्यो बिभव बिलास ॥ १८१ ॥
 तत्थहि बेलैं १२ बापिका ३, छत्री ४ किय तिहि छीवैं ॥
 पुरके दक्खिन २।३ प्रांत पुनि, ऊँचे महल ५ अतीव ॥ १८२ ॥
 नृपदासी राधा तनैय, गंग नाम इक दास ॥
 नाल ताल नैवलकखके, सबिध महल १ तिम तास ॥ १८३ ॥
 समय भूप बुधसिंह १९७।१ के, परिकर जनन जितेक ॥

१ जिस को जयपुर का उपमान बनाने का विचार किया ॥ १७४ ॥ २ उचित गणे
 घाटी है ३ धन ॥ १७५ ॥ ४ बीच का चौक ५ हे प्रभु रामसिंह, प्रभु (बिष्णु) के मंदि
 का ६ थाला ही बन सका ७ ऊँचा नहीं हुआ = आकाश को चाटने वाला ॥ १७६
 ९ बुधसिंह के छोटे भाई जोधसिंह ने घर (बुन्दी) में रह कर १० धन के सस
 का खरच फैला कर ११ सुन्दर १२ तालाब रचा ॥ १७७ ॥ १३ ग्राम १४ पाल के ऊँ
 १५ बिष्णु भगवान् का १६ बडामंदिर ॥ १७८ ॥ १७ बाग १८ बावड़ी १९ धन देकर ॥ १७९
 २० नाम ॥ १८० ॥ १=१ ॥ २=२ बाग २=२ छीव (मत्त, पागल) ने ॥ १८१ ॥ २३ पुत्र २४ न
 में तलाब २५ नौलखा के नाम से बनाया ॥ १८२ ॥ २६ पास के मनुष्यों ने

विरचे आउठान बहु, न वनँ कबहु तितेक ॥ १८४ ॥

पिम्खहु निपति उदकँ पहु, असे विभव अपेत ॥

सो वेघम तजि सहनन, गो डम निस्सव निकेत ॥ १८५ ॥

अतहपुँके जननमै, हित पति संगति होन ॥

काहुनँ कुत्तरीति करि, सद्यो नहिँ सहगोन ॥ १८६ ॥

इतिश्री वशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणो सप्तमराशो बुन्दीप-
तिबुधसिंहचरित्रे ससैन्यनादरशाहार्थावर्तपानीपथकरनालागमन १
खानदोगस्वसहायजयपुरराजजयसिंहाकारणाव्याजदर्शनतदनागम-
न २ जयसिंहागमननिराखानदोरानादरशाहसमुखसैन्यसज्जन ३ प-
वनेन्द्रमुहम्मदसहितसमुखप्रस्थितखानदोरानादरशाहान्तिकपन्नप्रेष-
णाद्वारासधिविग्रहाभिप्रायचोदन ४ भयभीतनादरशाहान्तिककली-
जखाप्रभृतिप्रेषणाद्वारायुद्धसन्नद्धीकरण ५ समरसमयमुहम्मदवि-
रुद्धशहादतखानादरशाहसमिश्रणा ६ विजितेरानसैन्यागच्छत्खान-
दोराविरोधदिल्लीमहामात्यकमरदीखातन्मारणा ७ गृहीतदण्डरूप्य-

१ आईठाय स्थान) ॥ १८४ ॥ २ भाग्यशेराजा के आगे आनेवाले कर्मों का फल ऐसे-
वैभव को छोड़ कर ३ वेघम नामकपुर में शरीर छोड़कर दरिद्री होकर घर से गया
॥ १८५ ॥ ७ जनाने के लोका में ८ पति के साथ स्नेह नहीं था ९ सती नहीं हुई ॥ १८६ ॥

अथशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति बुध
सिंह के चरित्र में, नादरशाह का सेना लेकर हिन्दुस्थान में पानीपथ, करना
ल में आना १ खानदोरा का अपनी सहायता पर जयपुर के राजा जयसिंह
को बुलाना और जयसिंह का यहाना करके नहीं जाना २ जयसिंह के आने
की आशा छोड़ कर खानदोरा का नादर के समुख सेना सज्जन ३ बादशाह
मुहम्मद को लेकर गये हुए सेनापति खानदोरा का नादरशाह के समीप पन्न
भेज कर युद्ध करने अथवा सुलह (सन्धि) करने का अभिप्राय पूछना ४ दरे हुए
नादरशाह के समीप कलोजवा आदि का पन्न भेज कर उसको युद्ध पर समर्थ
करना ५ युद्ध के समय शहादतखा का मुहम्मद से विरुद्ध होकर नादरशाह
से मिलना ६ ईरान की सेना को विजय करके आतेहुए खानदोरा को दिल्ली
के यजीर कमरदीखा का परस्पर के विरोध के कारण मारना ७ दण्ड के रूपमें
लेकर जाने की इच्छावाले नादरशाह को समझा कर सहादतखा का सलाह

कजिगमिपुनादरशाहप्रबोधपूर्वक शहादतखांमन्त्रव्याजाहृतकलीज-
खांकीलन ८ संधिव्याजाहृतपत्रनेन्द्रमुहुम्मदमहामात्यकमरदीखां
कीलनानन्तरनादरदिल्ल्यागमन ९ विहितदिल्लीहत्याकोपितमास-
दयकारितमुहुम्मदविजयपत्रगृहीतदिल्लीमर्ववैभवनादरशाहैरानप्रति-
गमन १० दिल्लीशहादतखांविपभक्षणमरणदिल्लीराज्यनिर्वलीभवन
११ बुन्दीपतिबुधसिंहपरासुतावर्णनं त्रिचत्वारिंशो मयूखः ॥ ४३ ॥

आदित एकाशीत्यधिकांश्शततमः ॥ २८१ ॥

इतिश्री वंशभास्करे श्रीमत्परमधार्मिक-सकलशुभगुणान्वित-शोदा
बारहठशाखाक-चारणकुलावंतसशाहपुराप्रतोर्त्तापात्राऽनम्रसिंहपुत्रे
णा, उदयपुरमहाराणासज्जनसिंह-तदुत्तराधिकारिमहाराणाफतह-
सिंह-योधपुरगर्धाशमहाराजयशवन्तसिंह-ईडरमहाराजप्रतापसिंहकृपा
पात्रशाहपुरानिवासि-योधपुरमहाराजाश्रितसुकविद्वारहठकृष्णसिंहे
नविचितायासुदधिमन्थनीनामटीकायां सप्तमराश्यन्तर्गतबुधसिंह-
चरित्राय टीका समाप्तिमिता ॥

के मिस्र से बुलाकर कलीजखां को नादर की कैद में कराना ८ सन्धि के भि-
स से बादशाह मुहुम्मदशाह और वजीर कमरदीखां को बुलाकर कैद किये
पीछे नादरशाह का दिल्ली आना ९ दिल्ली में कतल किये पीछे दो मास पर्यन्त
रहकर मुहुम्मदशाह से विजय पत्र लिखा कर दिल्ली का सब वैभव लेकर
नादरशाह का पीछा ईरान में जाना १० दिल्ली में शहादतखां का विप खाकर
मरना और दिल्ली की बादशाहत का निर्वल होना ११ बुन्दी के राजा बुधसिंह
के जगने के वर्णन का तियालीसवां ४३ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो
सौ इक्क्यासी २८१ मयूख हुए ॥

इतिश्री श्रीमान् परमधार्मिक, सकलशुभगुणान्वित, शोदा बारहठ शाखाके
चारणकुलावंतस शाहपुरा के पोळपात ऐसे अथनाडासिंह के पुत्र उदयपुर के महा-
राणा सज्जनसिंह और उनके उत्तराधिकारी महाराणा फतहसिंह, तथा जोध-
पुर के महाराजा यशवन्तसिंह और ईडर के महाराजा प्रतापसिंह के कृपापात्र
शाहपुरा निवासी और जोधपुर के महाराज के आश्रित सुकवि बारहठ
कृष्णसिंह की कीहुई सुदधिमन्थिनी नामक टीका में वंशभास्कर के सप्तम
राशि के अंतर्गत बुधसिंह चरित्र की टीका समाप्त हुई ॥

॥ श्रीगणेशायनम ॥

अथ उम्मेदसिंहचरित्रप्रारम्भ ॥

॥ चूलिका पैगाची भाषा ॥

॥ गीति ॥

तुमटकतनपलपञ्जो हवति सता द्येव पीतपद्मगुरनो ॥

सा पउमाण सन्तलपामडो या नमिदपते तेवो ॥ १ ॥

सम्फु कन्तप्पहत्तं चण्डीस कजमुड कनाधिपतिं ॥

तन्तून फारतिं म करेमि अयउत्तलत्थक कथम् ॥ २ ॥

गीर्वाणभाषा ॥ अनुष्टुप्पुग्मविपुला ॥

वन्देऽमदीयवप्पार चण्डीदान महामतिम् ॥

त्रैगुण्यतिमिरत्नधनं विद्यावाग्भूषिताननम् ॥ ३ ॥

बुधसिंहेऽथ बुन्दीदे प्रपाते पञ्चतत्त्वनाम् ॥

सनुम्मेदसिंहोऽपाऽभिषिक्तोऽभून्महामना ॥ ४ ॥

पणनवादीन्दु १७६६ सरूपाभृद्विक्रमाब्दोत्तरायणे ॥

वसन्ताऽर्जुनवैशाखे त्रयोदश्या १३ नरेन्द्रता ॥ ५ ॥

दुष्टकदनपरप्राज्ञो भवति सदा एष पीतप्रावरण ॥ स पञ्चया सुन्दरयामाङ्गो
ननु नम्यते देव ॥ १ ॥ आसु कन्दर्पहर चण्डीश गजमुख गणाधिपतिम् ॥
नत्वा भारती अह करोमि अथोत्तरस्थक ग्रन्थम् ॥ २ ॥

लक्ष्मी सहित सुन्दर है घाम अग जिनका और सदैव पीत वस्त्रवाला,
बुद्धिमान् निश्चयही दुष्टों के नाश में तत्पर होता है, उस देव को मैं नमस्कार
करता हूँ ॥ १ ॥ चण्डी के पति, कामदेव को नाश करने वाले, शिव को और
गज के मुखवाले गणपति (गणेश) को और सरस्वती को, मैं नमस्कार करके
जिम पीछे ग्रन्थ करता हूँ ॥ २ ॥ विद्या और वाणी से शोभायमान है सुख
जिनका, त्रिगुण रूपी अन्धेरे के सूर्य, यह बुद्धिमान्, मेरे पैदा करने वाले
(पिता) चण्डीदान को नमस्कार करता हूँ ॥ ३ ॥ अथ बुधसिंह का देहात होने पर
उसका पुत्र महात्मा उम्मेदसिंह अभिषिक्त (राजा) हुआ ॥ ४ ॥ विक्रम के
सत्रह सौ छिनवे १७६६ के सवत् के जाने पर उत्तर अयन में वैशाख सुदि
तेरस के दिन यह उम्मेदसिंह राजापन को प्राप्त हुआ ॥ ५ ॥ (ज्योतिष म

प्रायोद्वजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ प्रलम्बकम् ॥

*पानिग्रहण चउ४हि करि पाये सुत पंचक५ उम्मेद१९८।४सधीर
उभय२खवासि तहाँ इक ९औरस सुत दुव२दुव२हि ॥ सुतासम सीर
प्रथम१व्याह भल्ला दलपतिकी तनयाँ गंगराटपुर थान ॥
कमनबरात पहुँचि अभिधा करि चिमनकुमारि१९८।१परन्यौँ चहुवान६
दूजी२रासि नगर पति दुहितौ नव वय कुंदनकुमारि१९८।२सनाम ॥
ऊदाउति रठोरि बरी इम करि बखतेस स्वसुर जस काम ॥
बखतकुमारि१९८।३ईडरेची बलिँ जुग२कर जुग२ अंचल जुग२जोरि
परनी ईडर भूप पितृव्यक रामसुता तीजी३ रठोरि ॥ ७ ॥
अजितसिंह ईडर पहुँ पुली क्रमचोथी४ तिम उदयकुमारि१९८।४ ॥
विजय नरस जोधपुर बुल्लि रु व्याही नृपहिँ सनेह बिथारि ॥
तनयें बडो१इनमें तीजी३भव सँजव मरयो सु१९९।१न भो तस नाम
पुनि सुत हुव दूजी२ पतनीकै अजितसिंह१९९।२दूजो२अभिरामा८।
तीजो३तनय बहादुर१९९।३ताँसहि क्रम सोदर ए दुव२हि कुमार ॥
पुत्र दुव२हि चोथी४पतनीकै सुत चोथो४तिनमें सरदार१९९।४ ॥
पुत्र त्रिलोकसिंह१९९।५हुव पंचम५ सिसु बय हुव तासहु अवसान ॥
सुनहु खवासि रूपरसराय१ रु अपर२ गुमानराय२अभिधान ॥ ९ ॥
दूजी२कै संतति चउ४बिधि दिय सुत सिवसिंह१तथा संग्राम २ ॥

सम्बत् को गत मानते हैं, वर्तमान नहीं मानते) * विवाह १ पांच पुत्र पाये
‡ धीरज वाले उम्मेदसिंह ने § विवाहिता स्त्री के उदर से ॥ दो पुत्रियें
१ शीलवाली २ पुत्री ३ सुन्दर ४ नाम (यश) करके ॥ ६ ॥ ५ पुत्री ६ नवीन
अवस्थावाली ७ पुनि ८ दोनों हाथ ९ दोनों बल्ल जोड़कर १० ईडर के पतिके
काका रामसिंहकी पुत्री ॥ ७ ॥ ११ प्रभु (राजा) १२ राजा विजयसिंह ने
जोधपुर बुलाकर १३ पुत्र १४ जन्मा सो १५ शीघ्र मर गया १६ स्त्री के १७
सुन्दर ॥ ८ ॥ १८ उस सहित अथवा उसी स्त्री के १९ सहोदर (सगेभाई) २०
अन्त २१ दूसरी २२ नाम ॥ ९ ॥ २३ ब्रह्मा वा भाग्य ने

अनिरदकुमारि१वडी१अरु*अनुजा२सुता भई ब्रजकुमारि२सनाम ॥
 जेठी१जनक दई जयसिंह१हिं जामाता जदुकुल सैम जानि ॥
 सुत तस सप्तश्राजसिंहा१धिक प्रकट भये कुल नियति प्रमानि१०
 दूजी२सुता जेतसिंह१२हिं दिय तकि सम कुल रठोर सतेज ॥
 नवलसिंह१ताके इक१नदन भयो प्रकट हइ६१न भानेज ॥
 दीपसिंह१९८१६इत भूप सहोदर दिय जिहिं थान कापरनिदंग ॥
 भये विवाह तास खट भावी सुव डक१दोइ२सुता बिधिसग ॥११॥
 अनुपमकुमारि१९८११वडी१ठकुराइनिसावर दीपसिंह१९८१६हितसत्य
 इद्रसिंह तनया सगताउति सील१चरित२गुन३रूप४समत्य ॥
 अरु उम्मेदकुमारि१९८१२गागरनी दूजी२ अभय सुता रठोरि ॥
 तीजी३तिय ईडरपति तनया गविते भवानकुमारि१९८१३गुन गोरि१२
 जादव सोनपाल तनया जिम फतैकुमरि१९८१४चोथी४निज नारि ॥
 नृप सामत सुता रूपनगर क्रम पचम५सु किशोरकुमारि १९८१५ ॥
 परनाई जु पितृव्य बहादुर यह रठोरि कृष्णागढ आसुं ॥
 कैमि सीहोर छठी६अमर कुमारि१९८१६सगताउत अमान सुतासु१३
 अजित सुता तीजी३ तिय इनमें अग्रजकी साली जुहि आस ॥
 सुत जेठो१सुरतानसिंह१९९१हुव तनया चद्रकुमारि१९९१हुव तास
 तिय चोथी जहोनि जनी तिम दूजी२सुता बिचित्रकुमारि२ ॥
 परिनाई जयनैर प्रतापहिं सो श्रीजिते श्रुति बिधि अनुसारि ॥१४॥
अधिपति१को रु अनुज२को अक्खिय इहाँ विवाह१प्रजा२क्रम एस
 * छोटी१पुत्री१पिता उम्मेदसिंह ने३जयसिंह को४जमाई५समान (बराबरीबाबा)
 ६राजसिंह आदि ७ भाग्य के अनुसार ॥ १० ॥ ८ पुत्र ९ उम्मेदसिंह का छोटा
 भाई १० भागे आने वाले समय में ॥ ११ ॥ ११ नगर का नाम है १२ ईडर के
 पति की पुत्री जिसका नाम भवानकुमारी कहते हैं ॥ १२ ॥ १३ जिसका विवाह
 काका बहादुरसिंह ने किया १४ थीप्र १५ जाकर ॥ १६ ॥ १६ उम्मेदसिंह
 की साली १७ है १८ बुन्दी का राज्य छोड़कर बानप्रस्थ हुए पीछे उम्मेदसिंह
 ने अपना पद (जिताय) श्रीजित (लक्ष्मी को जीतनेवाला) रक्षता था १९ वेद
 की विधि के अनुसार ॥ १४ ॥ २० उम्मेदसिंह का

जो सब प्रभु भावी बिधि जानहु बर्तमान अब सुनहु बिसेस ॥
 पाइ जनक पट्टहि दुर्गत पन करि जो जो दुष्कर रन काम ॥
 पुहविलई १६ दई २जिम पुत्रहि रोचक सकल सुनहु प्रभुराम २०३॥४
 ॥ दोहा ॥

पन १पट्ट रन २पट्ट बचन ३पट्ट, बार बरस दस १० बेस ॥
 बैठि तखत बुधसिंहके, हुव उम्मेद नरेस ॥ १६ ॥

॥ हरिगीतम् ॥

कोटेस दुर्जनसल्ल यह सुनि सोचि कछु हित हेरयो ॥
 बखतेस पृथ्वीसिंह सुत निज बंधु बेघम प्रेरयो ॥
 तिहिं खँग निज कर बंधि ओ नृप भाल तिलकहु मंडयो ॥
 नजरि रू निछावरि ठानिके निज थान परिखद बैठयो ॥ १७ ॥
 तिमही पुरोहित व्यास चारन भट्ट नजरि निवेदई ॥
 भट बर्ग पुनि कछु हे जिन्हें इम भप भूपतिता लई ॥
 गोस्वामि गोपियनाथ नृप तब लैन मंत्राहि बुल्लये ॥
 करि नौहिं आयउ नाहिं जे जयसिंहके भय भुल्लये ॥ १८ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

कुम्भें दलेलें कानि बैसु कामी, गोपियनाथ नटिय गोस्वामी ॥
 कहिय मैं न कोटापुर छोरो, दिन चँउ ४ मास कितहु नहिं दोरो १९
 यह सुनि पुर बेघम नृप भाता, बिपति स्वीय लखि नीति बिधाता
 पुनि विन्नति पठई कोटा पुर, धारक तँहँ रामानुज मत धुरा ॥ २० ॥
 द्विज नागर उपपद सहोदर, बेखाराम सनाम भट्ट बर ॥
 पठयो दैल चुंडाउति तिन प्रति, तुम समदिधि गिनहु सेवक तेहि
 १ हे प्रभु रामसिंह २ दरिद्रपन में ३ रुचिकारक ४ हे प्रभु रामसिंह ॥ १५ ॥ ५ प्रतिज्ञा
 चतुरा ॥ १६ ॥ ६ खड्ग ७ ललाट मंदसभा में बैठा ॥ १७ ॥ ८ उनने भी नजर न्यौछावर क
 १० राजापन ११ गुरु मंत्र लेने को बुलाया ॥ १८ ॥ १२ कछवाहा (जयसिंह) १३ बुन्द
 का वर्तमान राजा दलेलसिंह के भय से १४ धन की कामनावाला १५ चौमासे
 दिनों में ॥ १६ ॥ २० ॥ १६ पत्र १७ समदृष्टि १८ सेवकों की पंक्ति में ॥ २१ ॥

मम सुन कलिह सत्रु निज मागहिं, बुंदिय अप्पन आन बिथारहिं॥
जो यह निघेति जोग नहिं पावहिं, तोपै तुमहिं सदा सिर लावहिं॥२२॥
जो तुम सत्र वेन हित हेरहु, तो आवहु पुत्रहिं वा प्रेरहु ॥
बेणियराम सोधि यह वेंत्ती, बिगचि अनुग्रह जानि बिपेंत्ती ॥ २३ ॥
दैन मल पठयां बेघम हुंत श्री गोविंद नाम जेठो सुत ॥
तिहिं आय रु उपदेस मत दिय, नृप उमेद सांनुज सिच्छा लिय॥२४॥
चहि बुदिय पति भक्ति धर्म चित, गेह रु देह नियेदिय गुरुहित ॥
श्रद्धामय अर्पित गहि भूसुर, पुनि करि सिक्ख गयउ कोटा पुर॥२५॥
गहिय जवहि बुधसिंह मरन गति, उदयनैर हो तब बेघमपति ॥
अब डैस मास माहिं वह आयो, उग जामीसैंसोक अकुलायां॥२६॥
नयन श्रैत जलधार निरतर, आंधि अतुल छिज्जत श्रैसु अतर॥
बुद्ध भैसम पूजन मसान किय, अरु स्वर उच्चटेरि यह अक्खिय॥२७॥
बिनु सेवक तुम त्वरीं विचारी, करिहों मै सेवन हुतकारी ॥
इम कहि देवसिंह गृह आयउ, लालितैं जामितैं नय हिय लायउ॥२८॥
अजितसिंह मरुईस अगग मृत, सुत सप्तक७ हे तास कैलुख कृत
हो दिल्लिय पट्टप नैय हीनो, तदनुजैं बखत जैनक जिय लीनो॥२९॥
पच५ हुते तासों लघु भाई, उनको कैद करन मति आई ॥
भाजे सुनत कितेक महा भय, डारे कैद कितेकन निर्दय ॥ ३० ॥
रायसिंह१ आनद२ भ्रात दुव२, ईहरपूर अधिराज जाय हुव ॥

१ भाग्य के योगस २ तोमी ॥ २२ ॥ ३ अथवा तुम्हारे पुत्र को भेजो
४ धार्ता ५ आपदा जानकर ॥ २३ ॥ ६ शीघ्र ७ छोटे भाई सहित शिष्या ली
॥ २४ ॥ ८ अर्पण किया सो खेकर ९ बह ब्राह्मण ॥ २५ ॥ १० आश्विन मास
में ११ यद्दिन के पति के ॥ २६ ॥ १२ पहलीहुई १३ मन की पीडा से १४ प्राय
१५ बुधसिंह की मस्ती का ॥ २७ ॥ १६ शीघ्रता की १७ शीघ्रता करनेवाला अर्थात्
मैं भी श्रीघ्र मरकर तुम्हारे पास आऊंगा १८ लाह करके १९ आनजे का
॥ २८ ॥ २० पाप करनेवाले २१ बिना नीतिवाले २२ उसके छोटे भाई
पक्षतीसह ने २३ पिता को मारा ॥ २९ ॥ ३० ॥ २४ ईहर के पति होगये

इक ईडग तजि मालव आयो, जोर मँदपुर अमल जमायो ॥३१॥
 यह सुनि आनि लगे दक्खिन देल, काढयो वह रठोर बंधि बल ॥
 आतुर पुर बेघम तब आयो, देवसिंह अति मोद दिखायो ॥ ३२ ॥
 रूपय पंचपनित्य तँहँ दैकरि, धन्वपँ भ्रात रक्खि लिय हित धरि ॥
 तदनंतरँ सक खट नव सत्रह १७९६, अगहन मास बिसई पंचमि

५ अह ॥ ३३ ॥

बेघमपति देवहु बपुँ छोरयो, जिहिँ जसहेत कँपद न जोर्यो ॥
 पट सु दुनियसिंह तस पायो, रान सुनत हिय लोभ रचायो ॥३४॥
 ताके सिर दुवलकख २००००० दम्म किय, बलि लिय तबहिँ उदै-
 पुर बुल्लिय ॥

रस नव सत्त इह १७९६ मित वच्छरँ, बिसँद माघ मासगँ पंचमि
 ५ पर ॥ ३५ ॥

दुनियसिंह गय रान सभा जब, अहरि राने समुख आयउ तब ॥
 दंड लियउ वहँ दोस दबावन. अक्खिय रान कियउ मैँ पावन ३६
 इम कहि तिलक माल तस कीनौँ, अँच्छत मुत्तिय मंडि नवीनौँ ॥
 निज हत्थहि तरवारि बँधार्ई, सयनँ जोरि कहि मेघँसिवाई ॥३७॥
 ॥ दोहा ॥

नाम सिवाईमेघ तस, कहिय रान कर जोरि ॥

पुर बेघम करि सिक्ख पुनि, वह आयउ मन मोरि ॥३८॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमऽराशौ भूभू-

॥ ३१ ॥ १ सेना ॥ ३२ ॥ २ मारवाड़ के पति के भाई को ३ जिसपीछे
 ४ शुक्ल पक्ष ५ दिन ॥ ३३ ॥ ५ देवसिंह ने भी शरीर छोड़ा ७ कोही
 भी इकट्ठी नहीं की ॥ ३४ ॥ ८ फिर ९ सम्बत १० सुदि ११ माघ मास में गई
 हुई ॥ ३५ ॥ १२ वंड लिया जिस दोष को दबाने के लिये ॥ ३६ ॥ १३ मोतियों
 के आखे चढ़ाकर १४ हाथ जोड़कर १५ सिवाई मेघसिंह नाम रक्खा ॥३७॥३८॥

श्री * वंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में, स्रूपति उमेद

* यहां पर हस्को उम्मेदसिंह चरित्र और अजितसिंह चरित्र के मयूखों की इतिश्रिये ग्रन्थकर्ता (सूर्यमल्ल)

दुम्मेदसिंहऽभिषेचनवल्लभसम्प्रदायशिद्धान्तमिलनश्रीरामानुजशि-
क्षाप्रापस्तवेधमपतिदेवसिंहमरणादुनीसिंहतत्पीठोपवेशनसिवाहमेध
नामभवन प्रथमो १ मयूख ॥ १ ॥ ॥ २३८ ॥

प्रायोन्नजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहादितृत्तोत्पादिनीचूलात्राला ॥

इत वेधम बुर्दास अब, वय दस १० * हांपन भान बिराजत ॥
इय विद्या सिक्खंत हुत्तसि, नय दमधर्म निधान बिराजत ॥ १ ॥
तोमर असि पट्टिस तुपक, चापन सायकं चड चलावत ॥
खुरली बिनु वित्तं खिन न, मन जाको ब्रह्मद न मावत ॥ २ ॥
ब्रह्ममुहूर्त जग्गि बलि, सध्या न्हावन आदि सुधारत ॥
सावित्री जप इक सँस १०००, अरु हरि नाम अनादि उचारत ३
व्रत सजमँ उपवास बिधि, इक १ न टारत अप्प इत्तार्पति ॥
सञ्जीमै हित अनुसरै, गिनै न मूढन गप्प महामति ॥ ४ ॥
स्वीयेजनक बुधसिंह सठ, अति आसवै अधिकार उपायो ॥
सो मग करि उच्छिन्न सब, बैष्णव धर्म बिचार बढायो ॥ ५ ॥
हरिपूजन नैति जुत हुत्तसि, बिधि सढ खोडस १६ अंगवनावै ॥

सिंह का आभरण होकर बल्लभसम्प्रदाय की शिक्षा नहीं मिलने के कारण
श्रीरामानुज सम्प्रदाय की शिक्षा लेना १ वेधमनगर के पति देवसिंह का मरना
२ उसकी गद्दी पर बैठकर दुर्नीसिंह का सबाई मेघ के नाम से प्रसिद्ध होने
का प्रथम १ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ पियासी २८२ मयूख
हुए ॥

* दश वर्ष के ब्रमाणवासी अवस्था १ नीति और दख १ शोभायमान ॥ १ ॥
१ कटारी ३ धनुषों से भयकर पाश ४ शस्त्राभ्यास के बिना ॥ २ ॥ ५ चार
घड़ी रात्रि बाकी रहे १ गायत्री के ॥ ३ ॥ ७ इन्द्रिया का राकना ८ मृपति
॥ ४ ॥ ९ अपने पिता १० मय का ११ उस मार्ग को छोड़कर अपात् बुधसिंह
के वाममार्ग को छोड़कर ॥ ५ ॥ १२ मज्जता सहित १३ सौख्य अगों सहित
की कीहुई मिछाई हैं जिनका भाषानुवाद करके आगे विष्णुसिंह अरिण और रामसिंह अरि की इतिधि
ये तबी बनावेंगे ॥

पंचजज्ञ करवाय पुनि, लघुभोजी मन जंग लगावै ॥ ६ ॥
 भारत स्मृति पुनि भागवत, बेद वचन धरि चेत विचारै ॥
 मृगया रस रत्नो मुदित, सिंहन स्वकुल समेत विडारै ॥ ७ ॥

॥ पञ्चाटिका ॥

उम्मेदनृपति बुधसिंह पट्ट, दस १० अब्द बेस अति छक उछट्ट ॥
 अरु मंजु बालससि जिम अनूप, भल बेन सबन मन हगत भूपा ॥
 कर्कादि निसा मकरादि दीह, इम बढत गक्ख भुव लैनईह ॥
 तिम सारदूलं सिसु निस रु द्यौंस, हत्थीन हनन मन धगत हौंस ॥
 इम नृपहिं लैन बुंदिय उमंग, आयुध समरत सढत अभंग ॥
 बुधसिंह सुतहिं सुनि इम सैमथ, सब मिलिय आनि भैट सचिव
 सत्थ ॥ १० ॥

धरि सबहि महासिंहोत धर्म, भूँत्या विनु अदरि भृत्य कर्म ॥
 जे बीर रहे नृप पास जाय, पति आधिपत्य चिंतत उपाय ॥ ११ ॥
 इम भुप बढत दिन दिन अमान, अवैनी निज लैवेको उफान ॥
 इहिं बेरहिं दोलतसिंह रंच, हरदाउत हड्डा किय प्रपंच ॥ १२ ॥
 नृप अनुज दीपसिंहाभिधान, किय तास पृथक् परिखंद विधान ॥
 बहु नरन फोरि अप्पिय बिसास, पुनि यह नृप माता हुव सत्रास ॥ १३ ॥
 सुखसिंह महासिंहोत बुँल्लि, अक्खिय सुँलाह गति समय खुल्लि ॥
 मम पुत्र दुवहहि अब बैय महंत, चैल सुभट इनहिं फोग्न चहंत ॥ १४ ॥

पूजन करता है १ लघुभोजन करना वीरता का सूचक है ॥ २ ॥ २ शिकार
 के रस में प्रीति करके ३ उनके कुल सहित ॥ ७ ॥ ४ दश वर्ष की उमर में
 ५ मनोहर ६ द्वितीया के चन्द्रमा के समान ॥ ८ ॥ ७ कर्क संक्रांति के
 आदि से रात्रि बहै जैसे ८ मकर संक्रांति के आदि से दिन बहै जैसे
 ९ इच्छा ले १० जैसे सिंह का बचा ११ चाहना ॥ ९ ॥ १२ समर्थ १३ उमराव ॥ १० ॥
 १४ तनखा अथवा जागीर (चेतन) बिना ही १५ भूपति होने का ॥ ११ ॥ १६ अमाप
 १७ अपनी भूमि ॥ १२ ॥ १८ नाम १९ उम दीपसिंह की जुदा सभा करने लगा
 ॥ १३ ॥ २० बुलाकर २१ सलाह कही २२ अवस्था में बड़े होगये हैं २३ चंचल

राठोड अभयसिंहकी बीकानेर पर चढ़ाई] महमराणि-द्वितीयमयूख(१२६७)

हम गेह हुती जो राजरीति, आपत्ति सु पै पलटी अनीति ॥
छोटे रु बडे बैठे समस्त, अजलि विनु बुल्लत तिन्ह अत्ररंत ॥१५॥
दोलतसिंह सु बिग्रह बढात, दुवरबधुन बिच अतर दिखात ॥
ऐसे भट बहु विरचत अकाज, तसमात हमहिं यह उचित आज ॥१६॥
धारत तुम नैप जुत स्वामि धर्म, बिस्वास्तु तुमरो भक्ति बर्म ॥
यातैं समरत अगे निकासि, बलि लेहु सुद्ध हृदयन बिसासि ॥१७॥
रहिहैं समस्त जो राजरीति, तो हमहिं बढन ठैहैं प्रतीति ॥
सुखसिंह महामिहोत वीर, धरि हिय यहैहि किय धर्म धीर ॥१८॥
दोलतसिंहादिक वे डुबुद्धि, सध दिप बिडारि किय रीति सुद्धि ॥
नृप मातहिं पुनि अक्खिय निदान, स्वनिलय निवाह चितहु सु-
जान ॥ १९ ॥

जयसिंह गिनहु अति उग्र जोर, दिल्ली रु दक्खिनहु सहत दोर ॥
तसमात हमहिं डक मत्र आय, नृप अनुज हेत विरचहिं उपाय ॥२०॥
जगतेस रान सन यह निवेदि, कछु लेहु पटा भट तास भेदि ॥
सुनि यह नरेस जननी सुभाय, अब रान हितुं चितिय उपाय ॥२१॥
॥ दोहा ॥

इत मरूपति अभमल्ल नृप, सजि अनीकै अमान ॥
बीकानैर अधीस सन, चितिय लरन प्रयान ॥ २२ ॥

॥ पट्टात् ॥

नृप अनद अभिधान अग्र बीकानैर पै मृत ॥

तव काका सुत तास भटन गजसिंह भूप कृत ॥

॥ १४ ॥ १ हाथ जोडे बिना २ निर्भय होकर बोलते हैं ॥ १५ ॥ ३ इस कारण
से ॥ १६ ॥ ४ नीति सहित ५ हे भक्ति के फलच ६ पुनि ॥ १७ ॥ १८ ॥
७ दुर्बुद्धि = निकाल दिये ८ चम्मेदसिंह की माता को ९ अपने घर का ॥ १९ ॥
१० फैलाव ११ इस कारण से १२ चम्मेदसिंह के छोटे भाई के अर्थ ॥ २० ॥ १४ उनके
किसी उमराव को मिलाकर १५ से ॥ २१ ॥ १६ सेना १७ प्रमाण रहित ॥ २२ ॥
१८ पति १९ उमरावा ने गजसिंह को राजा बनाया

यह इक नव हय इंदु १७९१ भयउ जंगलधर भूपति ॥
 अब हय नव मुनि इंदु १७९७ मेरुप तिहि लग्न किन्न मति ॥
 यह सुनि नरस गजसिंह अब कूरमपति प्रति पत्र दिय ॥
 हैरि गज सहाय तिम तुम हुलासि मम सहाय रक्खहु महिये २३
 सुनि यह नृप जयसिंह रान अरु अप्प इक्क बनि ॥
 पठये दाउन २ पत्र सजव मरु देस कोध सनि ॥
 इन्ह तुम गिनि अंकस्थ बिभव निज करन विगारत ॥
 उचित नीति नन एह मूढबनि बंधुन मारत ॥
 इत रूपनगर उत वहं अतुल दुर्ग जोधपुर पच्छ दुवर ॥
 बिनु पच्छ गिह संपाति विधि धरिहो नहिन उडान धुवार २४
 यह कैंगर द्रुत बचि मरुप नैकनमने मन ॥
 अकखी रवमुर असंक रानजुन वनत किंति धन ॥
 सुभट मोर गजसिंह ताहि क्यो नहि समुझाऊ ॥
 मै गुंजर धर जैतवार अरि गरद मिलाऊ ॥
 यह कहि कबंध लै दल अतुल वीकानैरहिं विटि लिय ॥
 तरकाव ताव तोपन तपिय मनहुं दाव तिहुन मचिय ॥ २५ ॥
 जिम दंतन बिच जीहें इच्छु जिम जंत्र अरोहितें ॥
 इम आतुर गजसिंह मन्नि संकट हुव मोहितें ॥
 सुनि आगति जयसिंह कुंच जैपुर सन किन्नों ॥

१२ बाड के राजा ने २ जयपुर के राजा जयसिंह के नाम राजसप्रकार विष्णु भग-
 न ने गज की सहाय की तिसप्रकार मेरी सहाय करके ४ भूमि रक्खो ॥ २३ ॥
 ५ महाराणा और आप एक बनकर ६ शीघ्र ७ क्रोध में भीजकर ८ गोद बैठे
 हुए जानकर ९ किसनगढ़ की प्राचीन राजधानी का नाम है १० वीकानेर
 ११ जोधपुर के गढ़ की १२ दोनों पांखें हैं ॥ २४ ॥ १३ पत्र १४ मेरा भवशूर (जयसिंह)
 १५ उदयपुर के राजा सहित हुआ तो भी १६ क्या धन है १७ मेरा उमराव १८ गुज-
 ात की भूमि को १९ जीतनेवाला हू २० सेना २१ तींद्र वृक्ष विशेष जिमकी
 लकड़ी जलाते समय अग्नि कण बहते उड़ते हैं ॥ २५ ॥ २२ जिह्वा २३ इच्छु
 (गन्ना) २४ चरखी में चढ़ाया २५ मूर्छित (घबराया) हुआ २६ पीड़ा के वचन

बुल्लपो रानहु बेग लैन मरुघर पन लिन्नौ ॥

दरकुच चलिय कूरम दुसह खंड चउहद१२खलभलिय ॥

सुरलोक वत्त फुटिय महज किहिंसिर कूरम कोपकिय २६

नागैराज फन फटिय कमठ गीढक बरगकिय ॥

बसुधा भर विहारिय मनहुँ दारिम दरगकिय ॥

रवि लुक्किय रज मेघ दान दिग्गज गन सुकिय ॥

मग रुकिय पवमान तान अच्छरि चकि चुकिय ॥

अतुलित अनीक जयसिंह इम जाय रु बिंटिय जोधपुर ॥

रानहु प्रयान यह सुनि गचिय प्रबल सेन इकत प्रचुर ॥२७॥

दोहा बिंटयो कूरम जोधपुर, जोरयो तोपन जाल ॥

मनहुँ भगाली दच्छमेख, किन्नौ समय कराल ॥ २८ ॥

सुनि मरुपति अभमल्ल यह, सत्य अलपेतम सज्जि ॥

बेस बदलि आधी निसा, पैठो निजपुर भज्जि ॥ २९ ॥

इत कूरम नागौर पुर, दिन्नौ पत्र पठाय ॥

बखतसिंह आवहु तुम्है, देहैं तखत बठाय ॥ ३० ॥

हेरतहो बखतेस यह, भज्यो त्वेरित तजि भोने ॥

जिहिँ सठ जनक निपात किय, भ्राता तिहिँ चित कोन ३१

सज्जै आनि जयसिंहसौ, मिल्यो मूढ भुव लोभ ॥

मरुपति हिय यह सुनि अमित, छयो अनुज सिर छोभै ॥ ३२ ॥

जान्यो अग्गहि कुँम्म यह, उभय लक्ख २००००० चतुरंग ॥

पौछै आवत रान प्रनि, सहँस असी ८०००० वत्त मग ॥ ३३ ॥

॥ २६ ॥ १ शेष नाग के २ पाठ १ भार से भूमि ऐसी विदीर्य हुँ

४ माना दक्षिमधुच का फल फटा रज रूी मेघ से सूर्य ३ क्षिपा १ पवन

का ७ अतोल सना स = बहृत ॥ २७ ॥ १ शिष ने १० दक्ष प्रजापति के

यज्ञ म ॥ २८ ॥ १०१ धोखा साथ सककर ॥ २९ ॥ ३० ॥ १२ शीघ्र १३ घर

काष्ठकर १४ जिम दुष्ट ने पिता को मारहाला उमके जिये भाई कौन पात

है ॥ ३१ ॥ १०२ शीघ्र १३ फोष ॥ ३२ ॥ १७ यह जयसिंह १८ सेना ॥ ३३ ॥

जितैं विनु नहिं जीवनों, अरु जितन बहु दूर ॥
 ध्रुवहि अनुज सिर छत्र धरि, जैहँ स्वसुर जरूर ॥ ३४ ॥
 यातैं नतिही उचित अब, मंगैं सुहि दै दम्म ॥
 कूरम कुंच कराइये, कछुदिन जीवन कम्म ॥ ३५ ॥
 स्वसुर पितासम निर्गम मत, अरु सुत सम जामांत ॥
 यहै गँली अब कहिकैं, भुव रखहिं निज हात ॥ ३६ ॥
 कूरम प्रति कहि मुकलिय, इम बिचारि अभमल्ल ॥
 बंदनीय तुम स्वसुरहो, हम करैं न रन हल्ल ॥ ३७ ॥
 जो मंगहु सो दैहिंगे, लै जावहु निज गेह ॥
 मम सोदर सठ फोरिकैं, अनुचित करहु न एह ॥ ३८ ॥

॥ षट्पात ॥

नृप कूरम बाईस लकख २२००००० रूप्य तब मंगिय ॥
 इकिखँ समय मँरुईस अखिल रूप्य किय अंगियै ॥
 रठोरन यह जानि बहुत बरज्यो मरु भूपति ॥
 दम्म इते क्यों दैत मरन मंडहु निसंक मति ॥
 सचिवन तथैपि अभमल्लसों दंड दैन अकिखय उचित ॥
 सो सब कबंधँ स्वीकार किय देस काल निबँबल दुचित ॥ ३९ ॥

॥ दोहा ॥

कूरम तब जामातकों, नमितजानि इम साफ ॥
 निज तनयाकों चोल्लैके, तीनलकख ३००००० किय माफ ४०
 सेस लकख गुनईम १९ रहि, तिनमें बहु भरि लिन्न ॥

॥ ३४ ॥ १ नम्रता २ रुपये ३ जीने के काम से, अथवा जीवन से का-
 म है ॥ ३५ ॥ ४ वेद के मत से ५ जमाई ६ मार्ग ॥ ३६ ॥
 ७ अभयसिंह ने = नमस्कार योग्य ॥ ३७ ॥ ९ मेरे सगे भाई को ॥ ३८ ॥
 १० समय देखकर ११ मारवाड़ के पति ने १२ सब रुपये स्वीकार (मंजूर) किये १३
 तोभी १४ अभयसिंह ने १५ निबल ॥ ३९ ॥ १६ जमाई अभयसिंह को १७ अपनी
 पुत्री को कांचली में ॥ ४० ॥ १८ बाकी के

अमयसिंहको जयसिंहका जीतना। सप्तमगानि-द्वितीयमयूख (३३०१)

अवमेसन हित ओल्लिमें, निज प्रधान उन दिन्न ॥ ४१ ॥
रतनसिंह अभिधानै यह, मरुपति सचिव सुभाष ॥
दम के लखन दम्मलौ, कूम्ह डेग्न आय ॥ ४२ ॥
बट्टेके रूपय निरखि, पुनि किय कूरम रोस ॥
रतनसिंह तब उच्चरिय, देहु न नाहक दोस ॥ ४३ ॥
जैसे रूपय जोरकरि, हमतैं छिन्नत हाल ॥
तैसेही तुम दीजियो, हमकौ कोउक काल ॥ ४४ ॥
यह सुनि कुम्म सिराहि अरु, ओल्लिमाहिं तिहिं डारि ॥
करिय कुच निज गेहकौ, विनु रन विजय विचारि ॥ ४५ ॥
मिले स्वसुर जामांत गिनि, जर्गा बैखत हिय लाय ॥
मुह विगारि नागोरकौ, कुंम्महि निंदत आय ॥ ४६ ॥
प्रत्यार्गम जयसिंह किय, अतिदल अतुल उछाह ॥
नगर नाम सरवाड ढिग, मिलिय रान कछवाह ॥ ४७ ॥
रानहि कूरम कहिय हम, कियउ जोधपुर जेर ॥
अप्पहु अब अच्छे फिगहु, बढहिं खरच विनु बेरे ॥ ४८ ॥
कहिय गान आयउ निकट, पुसकर तीग्य एह ॥
यौ न अबहिं फिगनौ उचित, न्हाय रु जैहै गेह ॥ ४९ ॥
इम काहे गिनि न्हावन उचित, पुमकर रान पधारि ॥
कूरम आयउ आगरा, सूबा करन सम्हारि ॥ ५० ॥

इतिश्री वशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशौ पों-
गण्डकालोम्मेदखुरलीमाधनश्रोतव्यश्रवणमहामिहोतग्वामिसेव-

१ बाकी रहे जिसमें २ रुपया के एवज की कैद में ॥ ४१ ॥ ३ नाम ४ दूध के
लाखों रुपया में ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥
के हृदय में ७ जयसिंह की निन्दा करता हुआ ॥ ४९ ॥ ८ पीछा गमन ॥ ४९ ॥
९ बिना समय ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥

श्रीवशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में दश वर्ष की अवस्था
में उम्मेदसिंह का शस्त्राभ्यास करना सुनकर, महासिंह के पेशवाओं का

नदोलतसिंहादिनिष्कासनयोधपृग्गजाऽभयसिंहबीकानेरयुद्धकर -
 शातन्तृपगजसिंहजैपुरसहायपत्रप्रेषणाजयसिंहजामातृवारणाकूर्मक
 टकयोधपुरवेष्टनदण्डद्रव्यानयनसर्वाङ्गगणाजगत्सिंहाऽऽगरानग-
 रगमनं द्वितीयो २ मयूखः ॥ २ ॥ ॥२८३॥

प्रायोबजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ सचरणागद्यम् ॥

अगँ नादरसाहके समय जयसिंह दिल्ली न गयो ॥

मुहुम्मदसाहनैँ किल्ला रनथंभोर दैनों करि बुलायो तथापि टरि-
 वेकों बहानाँ लयो ॥

तदनंतरैँ नादरसाह दिल्लीकी कतलकरि तमाम बादसाही वैभ-
 ७ लूटि अपनैँ मुलक ईरान मिधायो ॥

अरु मुहुम्मदसाहनैँ सरबस्वके साथ अपनौँ तेजही गुमायो ॥१॥

अैसी अनेक बदफैली जयसिंहनैँ कीनी तथापि हिन्दुस्थानमें
 रजोरैँ जान्यौँ ॥

रूपहिलैँ याकों सूबा दयेहे ते रैजूही राखे रुबिनयसौँ बखान्यौँ ॥

राजाधिगजराजगजेन्द्र सवाईजयसिंह अैसो उपटैँक लिखायो ॥

अरु अगँ काहूको न भयो अैसो फरमानमें सतकार बिसेस
 बढायो ॥ २ ॥

यातँ जयसिंह जोधपुरकी फतै करि दगकुंच आगगप्रवेस कीनौँ ॥

अरु रानाँ जगत्सिंह पुष्कर सेमहातीर्थके स्नान को लाह लीनौँ ॥

स्वामि की सेवा करना १ दौलतसिंह आदि को निकालना २ जोधपुर के राजा
 अभयसिंह का बीकानेर में युद्ध करना ३ बीकानेर के राजा गजसिंह का
 सहाय के अर्थ जयपुर पत्र भेजना ४ जयसिंह का अपने जमाई (अभयसिंह)
 का मनन करना ५ कछवाहों की सेना का जोधपुर को घेरना ६ दंड के रुपये
 लेकर सरवाड में राखा जगत्सिंह से मिलकर जयसिंह का आगरे जाने का
 दूसरा २ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ नियामी २८३ मयूख हुए ॥
 १ नादरसाह ने दिल्ली की लूट की तब २ तोभी ३ जिस पीछे ॥ १ ॥ ४ बल
 बान् ५ आधीन ६ खिताब ॥ २ ॥

तहाँ व्यास दालतराम रानी गों अरजकरि मेवारके उदकानकी
वेगारि मटाई ॥

अरु अपने हाथ में उदक^१ मालि दोऊरनकी कीर्ति चोतरफ
चलाई ॥ ३ ॥

अगों राननकी विपत्तिमें यह बगारि जागी भई ॥

अब व्यासके आतकसों तमाम मेवार छोरि गई ॥

या रीति पुष्करमें पाप धोय रानी जगसिंह उदैपुर प्रविष्ट भयो ॥
अरु रठोर बखतसिंहनै पछिताय हाथ जोरि अपने अग्रज जोध-
पुरके राजा अभयसिंहको प्रसाद लयो ॥ ४ ॥

कही स्वामिसों इगर्मा भयो सा अपगध मेरो माफ कीजिये ॥

अरु अपने घरके बिगारे कछवाहके ऊपर फोजबधीको हुकम
दीजिये ॥

राजा अभयसिंह यह नात विचारमें लीनी ॥

अरु अधर्मी अनुजके बिगावके सारे रठोगनकोँ एकातमें सु-
नाय फोजें जयसिंहपै जगको सज्जीभूत कीनी ॥ ५ ॥

अठ्ठ नव सत्रह १७९८के साल मारवागमें नर तुग्ग न माये ॥

नव९ कोटी नाथक सेनाके सभार हजारही भोग भोगीसके
भ्रमाये ॥

बैठे हत्थीनपै लवी लालरगकी पताका फेरकानै लगी ॥

मानों ग्दतवीजके समय कालिका जिन्हाको थरकानै लगी ॥

^१ उदक मृभिषाणों की २ पानी ॥ १ ॥ ३ भय से ४ प्रवेश
किया ५ अभयसिंह की ६ प्रसन्नता ॥ ४ ॥ ५ ॥ ७ भार से ८ कण
९ शेषनाग क १० स्वजा उद्यमलगी (जोधपुरवालों का निशान साख
रग का है) ११ रक्तपीज नाम राक्षस को घरदान था कि तुम्हार रुधिर की
जिननी धूँरे भूमि पर गिरेंगी वतने ही शरीर उठकर शत्रु से युद्ध करेंगे, सो
कालिका से रक्तपीज का युद्ध हुआ तब, उसका रुधिर भूमि पर नहीं गिरने
देन के अभिप्राय से अपनी जिन्हा को फैलाकर रक्तपीज का सम्पूर्ण रुधिर

कैधों पिंगल नागराज गरुड़के आतंक वचिवेकों बडे मात्राछं-
दकी पताकों बनाई ॥

कैधों अंधकके ऊपर त्रिलोचनके त्रिसूलकी तीर्या नौख न-
जरि आई ॥

कैधों चंदनके दंडेपें पलेटा डारि रक्तराग गंजमान नागराज
फहरानों ॥

कैधों दुस्सासनके भुजदंडतैं सेगंधीकी साटीको समूह लहरानों ७
कैधों प्रचंड पवनके पातसों हारीकी भाग बढनैं लगी ॥
अरु भद्रवकी मेघमालामें इंद्रक रोहित चापसों लागि चंचैला
की चलाकी कढनैं लगी ॥

कैधों सुमेरुके शृंगतैं संभुसेखंगस्त्रवंतके गांधे स्रोतैं छूटे ॥

अरु कल्पकारस्करके कंधेतैं साखाके समूह फैलि फूटे ॥ ८ ॥

असैं अनेक फेतूहैं फीलनैंपें फहराय छोनैछाई ॥

रु राजा रहोर जयसिंहकों जीतिवेकों जैपुगपैं चंड चैतुरंगिनी
चलाई ॥

या रीति सोदैंग बखतसिंह सहित राजा अभयसिंह बडी धकसों
मेरता नगर आय मुकाम दानैं ॥

अरु बागनके विलासकी मरजी मानि मालीकागननैं प्रसूननैंके

चाटलिया, जिसकी कथा मार्कंडेय पुराण आदि ग्रंथों में विस्तार से लिखी
हुई है, वही उपमा यहां दी है ॥ ६ ॥ १ गरुड़ के भय से बचने के अर्थ पिंगल
नागराज ने मात्रा छंद की इतनी बड़ी २ पता का (छन्दों के षोडश कर्मों के
अन्तर्गत एक कर्म है) बनाई जो समुद्र के तट तक पहुंचगई तब, पिंगल
गरुड़ की कैद से भागकर समुद्र में कूद पड़ा ३ अंधक नामक दैत्य के ऊपर ४
शिव के ५ लाल रंग वाला सर्प ६ शोभायमान ७ द्रौपदी की ८ साडी
का ॥ ७ ॥ ९ प्रचंड पवन के पड़ने से १० इंद्र के सीधे धनुष से (जिसको
लौकिक में मच्छ कहते हैं) ११ विजुली की १२ शिव के मस्तक से बहनेवाली
(गंगा नदी) के १३ प्रवाह १४ कल्पतरु के १५ मूल से ॥ ८ ॥ १६ घजा १७ दाधियों पर उड
कर १८ भूमि को भयंकर १९ सेना २० सहोदर (सगेभाई) २१ मालियों ने २२ पुष्पा के

पूर नजरि कीर्ने ॥ ९ ॥

ते प्रसून राजा रठोर अपने उमरावनको बखसीस बटि दये ॥
अरु रठोर उमराव अनेक ग्रैंडी बैडी तरह लंपेटेनपें धारत भये ॥
तहाँ आउवानगरके अधिराज चौपाउत रठोर कुसलसिंहराजा
सों प्रसून नाहिं लीनों ॥

अरु कारनके पछें ग्रहकारके उफान अंगुव्य उत्तर दीनों ॥ १० ॥
अज्ञानतें आपकों प्रसूननके पैसारिखेमें लज्जाकोलेसहूहमें न
जान्यो परै ॥

रठोरनके पाघ ग्रह नासिका कछवाहननें छीनिलानें यातें
अज्ञानके प्रसून लेकें कोन ठाम धारन करै ॥

यहै सुनतही राजा अभयसिंहको सोदरानुजनागोरको अधिराज
रठोर बखतसिंह खिंसाय ऊठि बुल्लयो ॥

अरु मेरु मिं लें यह भई ग्रैंसें अंग्रजसों अंक्खी अरु जुगोही
जुद्ध करिवेकों जयसिंहपें जैनूनसों चडै चडैहास तुल्लयो ॥ ११ ॥

अरु पातरफ जोधपुरसों फोजबधी कगि रठोरनके चलायवेकी
सुनि बंड विरताकी बैरूथिनी ले जयसिंह आगगामों कुच कीनों ॥

अरु जोधपुरकीही सीमामें जाय सज्जीभूतहैं निहाननपें निर्हान
को हुकम दीनों ॥

वातरफमों रठोर बखतसिंह अपने पाँचहजार ५००० पखैरतों सँ
वागें उठाई ॥

अरु धुलीकी धुधिमें धकाय सजोगी चैक चक्कीनके चाहकी चौप
मिटार्ई ॥ १२ ॥

१ पुछे (समृद्ध) ॥ ६ ॥ २ पगड़िया पर ३ पति ४ अपूर्ण ॥ १० ॥
५ पुण्या के ६ फैलाने (देन) में ७ मगा छोटा माई ८ राजा ९
मिटार (लज्जित होकर) १० मैं जयसिंह से मिल गया तब ११ अभयसिंह से
१२ कटकर (इकाव के साथ) १३ मयकर १४ खड्ग उठाया ॥ ११ ॥ १२ सेना १३ नगा
रा पर १४ पल पुर्यक्त निरन्तर प्रहार (यजान) का १५ वरुणा यरुपी के २० लाग

मकराकर मेखेला मही महानागके मगतकके हजारे पैं नचन लगी
अरु बाराहकी तुंडापैं मचकनकी मार मचनलगी ॥

अतल १ बितल २ सुतल ३ तलातल ४ रसातल ५ महातल ६
पाताल ७ सातौंही धराके अधोभाग धूजिगये ॥

अरु भूलोक १ भुवर्लोक २ स्वर्लोक ३ महर्लोक ४ जनलोक ५
तपलोक ६ सत्यलोक ७ सहित ऊपरके आकवासी व्याकुलभये १३।
ऐरावत १ पुंडरीक २ वामन ३ कुमुद ४ अंजन ५ पुष्पदंत ६ सार्वभौम
७ सुप्रतीक ८ आठौंही आसाके अनेकपन कांपके कातर कृक करी।
अरु पुरुहूत १ पावक २ परेतपति ३ पुण्यजन ४ परंजन ५ प्रभंजन
६ पौलस्त्य ७ पिनाकपाणि ८ आठौंही लोकपालनको लोक र-
त्नामें बिपत्ति बिसेस जानिपरी ॥

लवणोद १ इक्षुरसोद २ मद्योद ३ आज्योद ४ क्षीरोद ५ दधिमंडोद
६ शुद्धोद ७ सातौंही समुद्रन क्षोभ पायो ॥

अरु अंनूरुनै अब्वर्नकी अवछेपैनी अँचि आदित्यको अरजी
अकिख अपुब्ब आहव आलोकन उछाह लगायो ॥ १४ ॥

अष्टापद अद्रिसौ अतित्वर आय महानट मनोर्ज्ञ मुंडमालाको
मिलाप मान्यौ ॥

अरु डाकिनीन डिंडिम डमरूक डाहलादिकनपैं डंके डारि हल्ली-
सैंक नच तान्यौ ॥

गोदेनके गूदनके आसको गिद्धि गन गैनेमें गरूरीसौ गहकानै ॥

(इच्छा) ॥ १२ ॥ १ समुद्र की है २ कटिमखला (कर्धनी) जिस के ऐसी भूमि
१ हजार फणों पर ४ नीचे के भाग (लोक) ९ ऊपर के स्थानों में रहने
वाले ॥ १३ ॥ ६ आठों ही दिशा के ऊपर कहेहुए नामोंवाले ७ हाथी ८
कायर (यहां कहेहुए दिग्गज और लोकपालों के नाम पूर्वदिशा से प्रारंभ
करके यथाक्रम से हैं) ९ चलायमान हुए १० सूर्य के सारथि ने घोड़ों की ११ बाग
खँच कर १२ सूर्य को १३ युद्ध देखने का ॥ १४ ॥ १४ सुवर्ण के १५ पर्वत (सुमेरु)
से १६ जीघ १७ शिव ने १८ मनचाही (इच्छानुसार) १९ डाहल आदि बाजां
पर २० घूमर का नाच २१ मस्तिष्क (भेजा) २२ मीजी २३ आकाश में घमंड

अरु कराल कलहके कोलाहल कातरनके कैलापढकानें १५
बावन ५२ बीर चउसठि ६४ जोगिनीनके जालें जुडकी जैलूसी
जोयवेकों जागी भये ॥

अरु रठोर कछवाह दोहूरेसेनाके सरदार तत्काल तुमुलपुढमें
तीखे तोरसों तत्ते तुरगन तोकिवेकों तयारी भये ॥

राजा जयसिंह जगी होदेके हत्थीपै आरूढ होय सग्रामभूमिवी
सीमाक समीप अपनी अनीकके अंतर अतीव उच्छाहसों उडत
होय आनि खरो रहयो ॥

अरु रचनासेसेसों सेनाको व्यूह बनाय बाँड दाहिनी दोऊ २
तरफ खवार्मीके हत्थी लगाय सूरवीरनकों श्रवन करायवेकों प-
डितनकों उच्चारनको आदेसे कहयो ॥ १६ ॥

सो आदेस सुनिकें दोऊखवासीके हत्थीनपै पडितराज रामा-
यन लकाकाड १ महाभाग्न दोनपर्व २ कहन लगे ॥

अरु वैडे बीग्नकों वदीजैन बीररसमें विरुदाय चतुरगैकी चला-
की चहन लगे ॥

कछवाहकी सेनाको सभार भेलिवेकों पुँहवीहू वासमय सम-
र्थ न भई ॥

अरु राजा जयसिंह असे अनीकके उफानसों रठोरनपै अँव उ-
ठायवेकी आज्ञा दई ॥ १७ ॥

जा सेनामें साहिपुराके अधिराज रानाउत उम्मेदसिंहसे बाईस
२२ राजा सज्जामृत खरे ॥

अरु ओरहू अधीन होय आहवपै उँमाहे अनेक सूरवीरनके
से प्रसन्नता की घोली घोले फायरों के १ समूह शोक ॥ १५ ॥ २ समूह ३
शोभा ४ अमकाश रहित युद्ध में ५ चबछ घाँसे ६ छठाने को ७ सना के
८ भीतर ९ अत्यन्त १० अनग्र ११ छुक्क ॥ १६ ॥ १२ भाट लोग १३ सेना की
१४ भाग १५ भूमि सी १६ सेना के पदाय से १७ घोड़े ॥ १७ ॥ १८ पति १९ बरसाह

संघट्ट अरे ॥

वा समय रथोर बखतसिंह पाँचहजार ५००० पखरैतनसों बडे
बेग बाजी बीच डारे ॥

अरु द्वैलाख २००००० सेनाके समुद्रमें पार पूगिबेकों पांतके
प्रमान पधारे ॥ १८ ॥

दोऊर कंटकनके कंकटी क्रूर कालरूप बँडेबीरकालिंग कुंटिल
कोसँनतैं कालायस कराल करवालनके कलापैं काठि कज्ज-
लसे कारे कुंजरनके कूटसे कुंभनपैं भारन लगे ॥

अरु धीर बीर धन्वदेसी बडी धकसों धकाय धूपकी धारासों
धपाय पंचैप्रंगी ध्वजादंडनकों पारिडारन लगे ॥

पर्वतसों मयूरके माफिक कुंभीनके कलापनके कलापनतैं
पताकानके पुंज उडन लगे ॥

अरु गाढे गरूंगी रथोरनके गंजे गिरन लगे गजराज गुडन लगे १९

हयनकी हयछटों कबंधनके कराल करवालनतैं कटि कटि
कैलहमें कूदते कबंधनके कंधनपैं फैहरन ठहरन लगी ॥

कैधों हयग्रीवावतारकी हजारन प्रतिमा लास्यके लालित्यसों छा-
कि लहरन लगी ॥

दोऊर चमूके मजबूत मगरूरी महाबीरनके मंडेलाग्रनकी मार
असैं मचन लगी ॥

युक्त हुए १ समूह २ नाव क समान ॥ १८ ॥ ३ सेना क ४ कवच धारण
कियेहुए (सिलहपोश) ५ काले और ६ टेढे ७ म्यानों से ८ भयंकर का-
ल की आज्ञा के समान; अथवा काले लोहे के ९ खड्गों के १० समूह निकाल
कर ११ हाथियों के १२ शिखर रूपी कुंभस्थलों पर प्रहार करने लगे १३ मार-
वाड देशवाले १४ तरवार की १५ जयपुर की ध्वजा का रंग पचरंगा है १६
हाथियों के १७ समूह को १८ करधनियों (कण्ठगनियों) से कसे हुए १९ ध्वजा-
ओं के समूह उडने लगे २० घमंडी राठोड़ों के २१ मारे हुए ॥ १९ ॥ २२ घोड़ों के
कंधे २३ राठोड़ों के भयंकर खड्गों से २४ युद्ध में २५ बिना मस्तक वाले क्रियावान
शरीरों के कंधों पर २६ उडकर ठहरने लगी २७ नृत्य की सुन्दरता से २८ तरवारों

मानों होलोके हुंलासपामरं पुरुखनके पानितें चञ्चरीकीढेढेरिरचनलगी
तगनकी तराकन पोगरनके पल्लेदेवेत सिंधुगनके सुडादहभरन लगे
मानों जन्मेजपके जिह्मग जज्ञमें मन्त्रनके मारपन्नगनके पूर परनलगे
गिरे टोपनको घहनकरि जोगिनीनकी जमाति वैडें बीरनके
बंवासों भरन लगी ॥

अरु लोहितेकी लालीमें कालीकूदि कूदि सोसैनीरग धारनकनलगी
सच्चे सूरनके सीस महेसकी मैनोंज मुडमालामें गुंफेगये तथापि
देहु देहु यों दकालन लगे ॥

तिनको सोर सुनि अनेक भ्रमपिसाच आये मानि आतकसों
भालचद्वैके पान चालन लगे ॥

जावकके जेथे जिम सोनितके स्रोतेंकी छछक्कें छूटि छूटि
छोनीतल छाववेकों परन लगी ॥

तिनको साकिनीनकी सहेति आनन उबाय ऊपरही भेलि भे-
लि पान कन लगी ॥ २२ ॥

कधधनके कलाप मानों अपने उत्तमार्गकी अखिनसों देखि
देखि दाव देवेकों दोरन लगे ॥

अरु पैने मडलामें मारि मदमत्त मातगैनेके मैत्य फोरन लगे ॥
सकचुक पच ५ फनके पन्नगके प्रमान बाहुल समेत बाहुल

की १ इत्साह म २ नीच (ग्रामीण) लोगों के हाथ में ३ काग (वसन्त
की क्रीडा विशेष) की ४ गेरूर (बैलों का खेल विशेष) ॥ २० ॥ ५ हाथी की
सुख के अग्रभाग (पुच्छ) के १ हाथियों के ७ सर्प यज्ञमें ८ सर्पों के समूह
९ गुर (धर्या) से १० रुधिर की ललाट में ११ लाल में काळा रंग मिळाने से
सोसनी रंग होता है ॥ २१ ॥ १२ मनोहर १३ गुपेगये १४ राहु १५ शिव के ललाट
के चन्द्रमा के प्राण (ग्रहण के) भयसे चलायमान होन लगे १६ कुंहारे
१७ रुधिर की पिचकारियें १८ समूह १९ मुख्य फाटकर ॥ २२ ॥ २० राठोडों के समूह
२१ मस्तकों की आंखों से (कटेपुत्र मस्तकों की आंखों से) २२ तीक्ष्ण खड्ग मस्त
२३ हाथियों के २४ मस्तक २५ काँचकी सहित पाँच कणोंवाले सर्पों के समान २६
दस्ताने सहित २७ पशुत हात

स्वाहु नूटन लगे ॥

अरु अवमर्देके आतंक कातरनके गाढ छूटन लगे ॥ २३ ॥

बाग टल्लाके इसारें बेगवान बाजी जंगी होदनकी बरबबर भंग लैन लगे ॥

अरु सादीनक सख संपात करि नष्ट नूर होय निसादानके नैन नैन लगे ॥

बंके कमनैत कठोर कोदंडनकों गोसंपचीकी बरबबर तानि तानि तीर मारन लगे ॥

ते तीर कितेक आसमानमें उडान लैंकें सरदकालके संतभन की सोभा धारन लगे ॥ २४ ॥

रठोर बखतसिंह जयसिंहकों जोयबेकों घनै हथ्यानके होदे हेगिडारे अरु द्वैलाख २००००० सेनाके पार निकसि बने बरिनसों बैरो की बैरुथिनीमें बड बेग बाजी फेगिडारे ॥

असैं दूजाबर पैलेनकों पुँतनामें पैठत देखि राजा जयसिंह साहिपुराके अधिगँज राजाउत उम्मेदसिंहसों राजा कहि बुल्लयो ॥

अरु बखतसिंहकों पैने लोह चखायबेकों सिद्धांत खुल्लयो ॥ २५ ॥

अगँ राजा न कहता रु अब कह्यो यातैं साहिपुराके अधीस राजा उम्मेदसिंह बडा उम्मेदसों ओट होय कबधनको लँकापभेल्यो अरु मारवनको मगरूर मारि खार्मा खगनको फाग खेल्यो ॥

वा जुद्धमें राजा रठोर बखतसिंहके च्यारि हजार सातसै ४७०० पखरैत भरि परे ॥

अरु तीनसै ३०० पखरैतन सहित उम्मेदसिंहकी असिबरसों

१ संकुलित युद्ध के २ भय से ॥ ३४ ॥ ३ घोड़ों के सवारों के ४ शस्त्रों के प्रहार से ५ शोभा धिगड़कर ६ हाथियों के सवारों के नेत्र नीचे होने लगने का न की बराबर ९ टीडियों की ॥ २४ ॥ १० देखने की ११ सेना में १२ घोड़े १३ शत्रुओं को १४ सेना में घुसते देख कर १५ पति १६ तीखे शस्त्र ॥ २५ ॥ राठोड़ों के १७ समूह की १८ अष्ट खड्ग से

अछकै छाकि मगिबोही मानि कछवाहके कादबिनी रूप क
सौं टरि परे ॥ २६ ॥

या रीति पलायन होय रहोर बखतसिंह नागोरको मार्ग लीनै,
अरु राजा अभयसिंहहु पाहीके बिगारिवेको आयोहो यातैं
छो जोधारको कुच कीनौ ॥

अैसें द्वे ७ बेर कछवाहकी सेनाको समुद्र तगि तीजी ३ क
ताकत न जानि बखतसिंह निकसि नागोर आयो ॥

अरु जाके इष्ट गिरिधर परमेश्वरके हाथी तथा पातुरिखाने
सहित डेरनको कछवाहको कटक लूटि लायो ॥ २७ ॥

तब वह बखतसिंहको इष्ट परमेश्वरतो जयसिंहनै नहिं पठायो
अरु पातुरिखानेको पछा भेजि कैंगरमें कातर कहि लिखायो

कहया अतहपुर हमारे भेट कीनौ परन्तु हमकोतो अभुक्त
ग्राहक जानौ ॥

भूत होकर २ जयसिंह की सयमात्रा रूपी सेना से ॥ २६ ॥ ३ भागकर ४
वर्धननाथ की मूर्ति सहित ५ सना ॥ २७ ॥ ६ पत्र म ७ कापर ८ जनाना
जिसका भोग पहिल किमाने नहीं किया हावे उसके

अम्मेदसिंह को जयसिंह का राजा नहीं कहना और इस समय राजा कहने के कारण अम्मेदसिंह
बखतसिंह से युद्ध करना सिखा सो यह बात समझ में नहीं आती क्योंकि शाहपुरा के राजा भाग
को दिखाने का बादशाह आलम बादशहशाह) न विक्रमी सवत १०९६ में राजा का खिताब देकर
तीन हजारों का मनसब दे दिया था सो कई प्रमाणों से सिद्ध है, और मारसिंह के पुत्र राजा
सिंह ने बखतसिंह से गिरिधारी की मूर्ति सहित सेवा की इतनी जानकी सो वह मूर्ति इस समय तक
में सप्तमीनारायण के मंदिर में विद्यमान है और इसी युद्ध में इस रीतिसे (बाहठ छपसिंह) के
सामने बाहठ देवसिंह बड़ी बीरता के साथ घायल हुए और नागों की जमात के एक घोर के
हाथी की सुट फटने के कारण उस नागको मारकर देवसिंह ने वह तरवार खीनली जो इस
शाहपुरा के खजाना (सिंहखान) में नागावासी तखार के नाम से विद्यमान है, इस खड्ग की
चौड़ी फाट से विस्तार के भय से यहाँ नहीं खिंची जा सकती इस युद्ध का किशदस्ती ऐसी प्रसि
ति शाहपुराका राजा अम्मेदसिंह एक और खजाना अन्नका हठजान का रातो न कहलाया कि
अम्मेदसिंह ने पीछा कहलाया कि यदि बीरता का घनद है तो यह करके हटाकर आगे जाओ
इससे युद्ध हुआ जिसमें राजा अम्मेदसिंह के आटे भाई कुसलसिंह आदि घड़े बड़े धार मार गये ॥

यातैं तुमारो तुम अवेरि फेरि ढुंडाहरसौं लरियेकी न *हौंस
आनों ॥ २८ ॥

या रीति अठ नव सत्रह १७९८ के साल राजा जयसिंह रठोर-
नसौं जंग जीति आयो ॥

अरु या जंगको जस साहिपुराके अधिराज रानाउत राजा
उम्मेदसिंह पायो ॥

या तरफ बेघम नगर रावराजा उम्मेदसिंहकी माता चुंडाउति
अपने निर्बाहको अवलंब बिचारत बरस तीन ३ निकारे ॥

अरु सुखसिंह महासिंहोतके §सम्मतसौं अपने छोटे पुत्र दीपसिं-
हके अर्थ राना जगतसिंहसौं पटा लौबेको पुरोहित दयारामको
उदयपुर पठावनमें कारन बिचारे ॥ २९ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणो सप्तम ७ राशौ राणा
जगतसिंहपुष्करस्नानसोदकदत्तभुग्विष्टित्यजनबखतसिंहस्वाऽग्रजमि-
लनसेनासज्जीकरणाजयसिंहतदभिमुखाऽऽगमनमरुराजानुजकूर्म-
राजकलहकरणाबखतसिंहपराभवनं तृतीयोऽमयूखः ॥ ३ ॥ २८४ ॥

प्रायोन्नजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

कंहिय मास बाहुल बिसद, प्रतिपद १ दिन अति प्यार ॥

सैत ७ रूप इकत करिय, कोटानृप श्रियद्वार ॥ १ ॥

* इच्छा ॥ २८ ॥ † स्वामी ‡ आधार § सलाह से ॥ २९ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, राणा जगतसिंह
का पुष्कर स्नान करके उदकवालों की देगार छोड़ना १ बखतसिंह का
अपने बड़े भाई से मिलकर सेना सजना २ जयसिंह का इनके सम्मुख आना
३ मारवाड़ के पति (अभयसिंह) के छोटे भाई (बखतसिंह) का जयसिंह से यु-
द्ध करना ४ और बखतसिंह का पराजय होने का तीजा मयूख ३ समाप्त
हुआ और आदिसे दोसौ घोरासी २८४ मयूख हुए ॥

१ कार्तिक सुदि एकम के दिन कोटा के राजा ने ३ नाथद्वार में २ सात स्व-

कोटाके राजाका सात स्वरूप प्रकट करना सप्तमराशि चतुर्थमयूख (३३११)

विठ्ठल १ अरु नवनीत प्रिय २, बहुरि द्वारकानाथ ३ ॥
 गोकुल ४ मथुरा ५ धीस गिनि, गोकुलचद ६ * सुगाथ ॥ २ ॥
 मदनमोहन ७ हु सत्त ७ मित, ए बल्लभकुल डण्ट ॥
 कोटानृप इक्षत करिय, अप्पन दहन १ अरिण्ट ॥ ३ ॥
 खरचि दम्भ इक लख १००००० मित, उच्छव रचिय अपार ॥
 रानहिं तत्र १ निमत्रदै, बुल्लयो विहित विचार ॥ ४ ॥
 तैंहैं राना कोटेस प्रति, बिरचि नेहमय बेन ॥
 माधव निज भानेज हित, अस्खी जैपुर लैन ॥ ५ ॥
 कोटेसहु तव रान प्रति, नय बैच आखिय नून ॥
 जब मरिहैं जयसिंह तब, अहैं पहुमि दुँरहूँन ॥ ६ ॥
 बुदिय मिलहिं उमेदकों, माधवकों जयनैर ॥
 पै जोलग जयसिंह प्रभु, बढहु न तोलग बैर ॥ ७ ॥
 कोटापति अरु रान दुव २, किय रहस्यै यह वत्त ॥
 इहिं तुम जावहु उदयपुर, रान करहु अनुरत्त ॥ ८ ॥
 रानाउति पीहर समुतैं, रहत कुंम्मसो राठे ॥
 इहिं रानहु कूग्म अहित, वर्ण बहिनि हित बुद्धि ॥ ९ ॥
 अप्पन पुर्वहि कुंम्म अग्नि, अब रानहु अरि आहि ॥
 यातैं कछु दीपहिं पटा, देहिं तैं देहिं सिराहि ॥ १० ॥
 यह विचारि निज बिप्र बह, दयाराम सवोधि ॥
 पठयो मतिगैति उदयपुर, समय देस हित सोधि ॥ ११ ॥

रूप इकठे किये ॥ १ ॥ ४ अष्ट कथा बाले ॥ २ ॥ १ प्रमाण १ पाप जलाने
 के लिये ॥ ३ ॥ १ नेता देकर उचित विचार से बुझाया ॥ ४ ॥ १ माधोसिंह
 ॥ ५ ॥ १ नीति के पचन कहे ३ निश्चय ही ४ उमेदसिंह के बुद्धी और माधव
 सिंह के जयपुर आवेगा ॥ ६ ॥ ७ ॥ ५ एकान्त में १ इस कारण ॥ ८ ॥ ७ पुत्र
 (माधवसिंह) सहित ८ कछवाहा जयसिंह से रूठ (क्रोधित हो) करदपिता पी
 पदिन (सुर्मा) पर हित की धृष्टि करके जयसिंह से कट है ॥ ९ ॥ १० जयसिंह
 के १ है १२ दीपसिंह को १३ तो ॥ १० ॥ १४ अपनी बुद्धि की गति से दया

तानि जाय रु *तकयो, नगर सलूमरि नाह ॥

जान्यो या बिनु होय नहिं, सब इहिं हथ सलाह ॥ १२ ॥

अकखी केसरिसिंहसों, बत्त यहै तब दिख ॥

बुंदीपति लघु पुत्र हित, पटा चहत हम अछिउ ॥ १३ ॥

यह उदंत कहि रानसों, बिहित दिवाबहु देग ॥

हैं हहे बाल न गिनहु, कलिह कसैंग तेज ॥ १४ ॥

सुनि यह केसरिसिंह सठ, मानि लोभ निज मित्त ॥

संभारपर उपकृत समय, चाहयो नेह न चित्त ॥ १५ ॥

॥ षट्पात् ॥

इहिं चुंडाउत अगग मुख्य भुव लोभ सोधि मन ॥

सजि दलेल मन साम प्रकट अहरि किंकर पन ॥

रोरै नाम लघु सुवन अप्प बुंदिअपुन रक्खयो ॥

पटा सहस पैतीस ३५०००लेरु अधिपति वह अकख्यो ॥

तिहिं लोभ अबहु उलटी तकत यह न पुरोहित अहरि

बिनु समय कछु न हम सन बनहिं कहि यहै रु उपहास किय

॥ दोहा ॥

दयागम यह सुनि दरित, इच्छि अवर आलंब ॥

दोलतराम सु व्यास द्रुत, मोध्यो दुख गिरि सबै ॥ १७ ॥

॥ षट्पात् ॥

पहिलैही यह व्यास छोरि कोटा किहिं कारन ॥

रहिय रान ढिग आय मंत्र नय चतुर महामन ॥

तबहि पुगेहित ताहि मिलि रु अक्खिय उदंत सब ॥

समयो दैन सहाय आहि बुधसिंह सुतहिं अब ॥

राम को समझा कर ॥ ११ ॥ *देखा ॥ १२ ॥ †शीघ्र ॥ १३ ॥ ‡वृत्तान्त ॥

§ उचित १ लोभ को अपना मित्र मानकर २ बहुबाण पर उपकार कर

समय ॥ १५ ॥ ३ रोड़सिंह नामक ४ दलेलसिंह को स्वामी कहा ॥ १६

५ करकर ६ अन्य आधार बाहा ७ दुख रूपी पर्वत का वज्र ॥ १७ ॥ १८ ॥

दौलतरामका दबीपसिंहको पटा दिवाना]समभराजि प्रथममयूज(१११५)

बिनु धन निबाहि सकन न बिभव यातैं रानहिं करि अरजो
कछु देहु पटा लघु भ्रात हित गिनि बिपत्ति कछहु गरजा ॥ ८ ॥
॥ दोहा ॥

द्विजवर दौलतराम सुनि, अकिखय रानहिं एह ॥
दीपसिंहदित दीजिये, कछुक पटा करि नेह ॥ १९ ॥

सु सुनि रान जयसिंहको, चित्यो नर प्रचढ़ ॥

अकखी वह करम अतुल, दिय मरुपहु जिहिं दह ॥ २० ॥

किये अहित यह कुंम्म का, बिगरहिं राज गिनालै
यातैं तुम उनसौ कहहु, कछहु कछु विधि काल ॥ २१ ॥

यह उत्तर जगतेस दिय, सो सुनि कुमार प्रताप ॥

अकखी घर आयेन कौ, क्यों नहिं रक्खत आप ॥ २२ ॥

सत्रुकोहु आपैं सदन, मानत अग्य महत ॥

सुपहु अप्प असे समय, कूगम आस कहत ॥ २३ ॥

यह कहिकुमार प्रताप , पटा हजार पचीस २५००० ॥

जैनकहुसौ बरजोग बनि, किय तयार बखसीस ॥ २४ ॥

नगर पटा बिच मुख्य लिखि, लाखोला अभिधान ॥

अवरहु वस्तु अनूप चउ ४, चित करिय पहुँचान ॥ २५ ॥

इक कूपान दिय २ खास इक, इक चामर ३ बग बेस ॥

इक सिरुपेच ४ उमेद हित किय तयार कुमरेस ॥ २६ ॥

सगतउत सुरतेस सुत, निढर उमेद सनाम ॥

किय तयार बुदीस प्रति, बघम भेजन काम ॥ २७ ॥

॥ षट्पात् ॥

यह कुमार अति जोर बढ्यो जुब्बन बय उब्बट ॥

ॐ अर्पकर प्रताप ॥ मारवाड के राजा को भी ॥ २० ॥ १ जयसिंह का २ बटा
॥ ११ ॥ ३ राणा जयसिंह क कुमार प्रतापसिंह मे कहा ॥ २२ ॥ ४ घर ५ आप
१ आप अष्ट राजा होकर ॥ २३ ॥ ७ पिता से ॥ २४ ॥ इनाम ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥

अगमि जनक अमात्य भेदि कति लिय मिलाय भेट ॥

भिलाड़ा पुत्र भिन्न बंधि अप्पन रजधानी ॥

दखत राज बिच डारि रहैं उद्धत अभिमानी ॥

यह सोधि रान जगतेस अब पकरन पुतहिं किन्न मत ॥

तिन दिनन भूप बुंदीसको उदयनैर यह बिप्र गंत ॥ २८ ॥

॥ दोहा ॥

नटत रान इम निदि हुत, उद्धत कुमर प्रताप ॥

सभर हित स्वच्छंद तब, लिखि पटा रु किय छाप ॥ २९ ॥

लिखि सुतको यह मतपन, सोचि रान जगतेस ॥

हे भट निज अनुकूल ते, इक दिन बुल्लि असेस ॥ ३० ॥

कहिय कैद मम सुत करहु, अनर्य प्रचारत एह ॥

निज निज सुत या ढिग रहत, तिनहिं पठावहु गेह ॥ ३१ ॥

ग्रह बिचही एते दिनन, करत गयो अपकार ॥

पै हम बिनु पैले नृपन, हुव अब रक्खन द्वार ॥ ३२ ॥

यातैं अब अज्ञान हुत, सेटहु गहि उमराव ॥

अरु जो नहिं तो आगि यह, सजलनदहन स्वभाव ॥ ३३ ॥

दृढ प्रपच इम रान करि, भटन सिक्ख दिय भाय ॥

इन निज पुत्र अनेक मिस, दिन्नै घरन पठाय ॥ ३४ ॥

सगताउत दारूनगर, पति सुरतैसै स नाम ॥

स्वसुतहिं अक्खिय ताहुनै, घरजावहु कछु काम ॥ ३५ ॥

यह उमैदसिंह सु कुमर, जो किय बेघस त्यार ॥

ताहूसौं इम पितु कहिय, जावहु गेह कुमार ॥ ३६ ॥

१ पिता के सचिव को पकड़ कर २ उमरावों को ३ विचार कर
४ गया ॥ २८ ॥ ५ शीघ्र ६ स्वतंत्र ॥ २९ ॥ ७ सबको बुलाए ॥ ३० ॥ ८
अनीति ॥ ३१ ॥ यह जलती हुई ९ अग्नि है जिसका १० जलाने का ही स्व
भाव है ॥ ३३ ॥ ११ रीति पूर्वक ॥ ३४ ॥ १२ सुरतसिंह १३ अपने पुत्रों से कहा

इहिँ कुमार मतिबल कछुक, जान्यो रान प्रपंच ॥
 अखिखय स्वामि प्रताप अव, जानि न छोरो रच ॥ ३७ ॥
 तदनतर इकदिन यहै, रान कुमार प्रताप ॥
 अलपसत्य रहि जनक की, परिखद पतो आप ॥ ३८ ॥
 उपबंन कृष्णाविलास नृप, बैठो गहन उपाय ॥
 इहिँ विच कुमार प्रताप यह, डोढी पहुँच्यो आय ॥ ३९ ॥
 प्रतिहारन अखिखय अरज, लीजै दुवचर पास ॥
 लै जानन अवर न हुकम, चतुर अप्पनय चास ॥ ४० ॥
 निज सत्यहिँ तँहँ रखिख तव, लै अनुचर दुवचसग ॥
 परिखद पंत प्रताप तँहँ, रानहिँ नमि रुचि रग ॥ ४१ ॥
 अप्प मिसल बैठिय उचेत, रचि सैन रु तव रान ॥
 सुभट च्पारि४ निज पुत्र सिर, डारिय भरत उडान ॥ ४२ ॥
 नाथनामलघु भ्रात निज, पुर बँधोर अधीस ॥
 रानाउत भारत बहुरि, नगर जाजपुर ईस ॥ ४३ ॥
 चुडाउत पुर देवगढ, पति जसवत३ स एव ॥
 देलवाढपुर पति बहुरि, झल्ला राघवदेव४ ॥ ४४ ॥
 ए भट रान अधीस की, सैन होत छल सोग ॥
 चढ परे प्रतिमल्ल चउ४, जानि कुमार अति जोर ॥ ४५ ॥
 तिनके परत प्रताप तव, जैनक गहन मत जानि ॥
 हो कितेक पै पितु हुकम, कहि छोरिय असि पानि ॥ ४६ ॥
 इन तथापि मूढन चउ४न, गहि दिखाय बल दिहि ॥
 नाथसिंह तस वाहु गहि, जानु मचक दिय पिहि ॥ ४७ ॥

॥ ३६ ॥ ३७ ॥ १ बुद्धि बल से ॥ ३७ ॥ २ पिता की १ सभा में गया ॥ ३८ ॥
 ४ पाग ५ पकड़ने के उपाय से ॥ ३९ ॥ ६ द्वारपालों ने ७ सेवक = दूसरों
 को लेजाने का हुकम नहीं है ९ नीति की खबर है ॥ ४० ॥ १० सभा में गया
 ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ११ बागौर पुर का पति ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ १२ पिता पकड़ता है
 यह जानकर १३ हाथ से तरवार छोड़दी ॥ ४५ ॥ १४ छुटने की ॥ ४७ ॥

कहिय पटा फैकत कुमर, मल्लन लरत *उमाहि ॥
 अज्ज कहाँ वह बल गयउ, होत निबल को †चाहि ॥४८॥
 कहि इम कुमरहिँ कैद किय, चउ४ भट कुवच प्रचार ॥
 सक नव अंक ९९ ‡सहस्य गत, §विसद तीज३रवि वारा ॥४९॥
 अगँ अनुचित कुमर करि, इहाँ उचित अवधान ॥
 पकरन जानत पहिल किय, खगग रु खेटकँ हान ॥ ५० ॥
 गहत अचानक इम कुमर, फुट्टिग हक्क अपार ॥
 डोढीपर निज सत्थ सुनि, भज्यो बिकल भय भार ॥ ५१ ॥
 कुमरँ जु कुमर तयार किय, बेघम भेजन वीर ॥
 सगताउत उम्मेद सो, धँप्यो सभा विच धीर ॥ ५२ ॥
 असि भारत मारत अरिन, रान लियउ नियरायँ ॥
 जिहिँ पिछितँ तिहिँ बपु जुगलँ २, करत खंड अतिकाय ॥ ५३ ॥
 ताहीको काका तबहि पिल्लयो रान प्रचारि ॥
 स नंति पुब्ब इक बार सहि, मरद सोहु लिय मारि ॥ ५४ ॥
 सुरतसिंह तब तस जँनक, रोकन पिल्लयो रान ॥
 तिहिँ लखि कुमर उमेद तजि, असिबँर नमिय असाँन ॥ ५५ ॥
 जानि धरम इहिँ असि तजिय, इहिँ मूर्ख किय एह ॥
 नमत बेर निज पुत्र सिर, कट्ठयो नूँतन नेह ॥ ५६ ॥
 कुमर प्रताप सु कैद करि, इम खिजि जनक अमान ॥

* उत्साह करके † चाह कर कौन निर्वल होता है ॥ ४८ ॥ ‡ पौप § सुदि
 ॥ ४९ ॥ १ सावधानी २ तरवार और ढाल का त्याग कर दिया ॥ ५० ॥ ३ हाक
 फूटी ॥ ५१ ॥ ४ कुमर प्रतापसिंह ने जिस कुमर को बेघम भेजने को तैयार
 किया था वह उम्मेदसिंह ५ दौड़ा ॥ ५२ ॥ ६ समीप ७ जिसको भेजते हैं उसी के श-
 रीर के दो टुकड़े करता है ॥ ५३ ॥ ८ नञ्जता पूर्वक, पहिले उसका एक चार सहकर
 ॥ ५४ ॥ ९ उस कुमर के पिता सुरतसिंह को ११ राना ने रोकने को भेजा
 १२ अष्ट तरवार छोड़कर १३ मान रहित नमा ॥ ५५ ॥ १४ नवीन स्नेह का काट
 दिया अर्थात् पुत्र उम्मेदसिंह को मार डाला ॥ ५६ ॥ १५ असाप (प्रमाण रहित)

पकरन वारे चउ४नकौं, मुख्य सचिव किय रान ॥ ५७ ॥

इतिश्री वशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम७ राशौ को-
टापतिदुर्जनशाल्यश्रीद्वारगमनसप्त ७ स्वरूपैकत्रकरणाबुन्दीन्द्रपुरो-
हितदयारामोदयपुरप्रेषणादीपसिंहार्थपटोपनामकनिर्वाहवसुप्रार्थन-
तत्सल्लूमरीशकेसरिसिंहाऽपहसनव्यासदोलतरामवाक्सहायविरेचन
राणाजगत्सिंहाऽनङ्गीकरणातद्राजकुमारप्रतापसिंहस्वीकरणापटावे-
धमप्रेषणाविचारणाद्यौद्धत्यधारणातद्राणाकुमारकाराक्षेपणातद्रटो-
म्मेदसिंहकुमाररणामरणाराणासोदरनाथादिसचिवचतुष्टयी ४ कर-
णा चतुर्था४मयूख ॥ ४ ॥ ॥ २८५ ॥

प्रायोच्चजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ चूलिकाआला ॥

नृप उमेद इत व्याह किय, मालव धर पुर गर्गराट पति ॥

श्लक्षा दलपतिकी सुता, चिमनकुमरि अभिधान महामति ॥ १ ॥

सक नव नव सत्रह१७९९समा, नवमी९राय बलच्छ लगन किय ॥

गुर्न३नासर रहि स्वसुर ग्रह, वेधम आनि मिलान बहुरि दिय ॥ २ ॥

पूतिदिन बुदिय लेन पट्ट, बढत भूप उम्मेद बलापति ॥

॥ ५७ ॥

श्रीवशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में कोटा के पति
दुर्जनशाल का नाथद्वारा से जानक सात स्वरूपों को इकट्ठा करना बुन्दी के
राजा के पुरोहित दयाराम को उदयपुर भेजना दीपसिंह के अर्थ पटा है
उपनाम जिसका ऐसे निर्वाह (खरब निषाहने) की प्रार्थना करना उसकी
सल्लूमर के पति केसरीसिंह का इसी करना व्यास दोलतराम के वधन की
सहायता करने को राणा जगत्सिंह का अस्वीकार करना उसको राणा के
राज कुमार प्रतापसिंह का स्वीकार करके पटा वेधम भेजने का विचार करना
आदि उद्धतता धारण करने से राणा का उस कुमार को कैद करना उस कुमार
के धीर कुमार उम्मेदसिंह का युद्ध में मरना राणा का संग भाई नाथसिंह
आदि चारों को सधिय करने का चौथा ४ मयूख समाप्त हुआ और आदि से
दोसौ विष्णुवासी २८० मयूख हुए ॥

१ नाम ॥ १ ॥ २ वैशाख १ सुनि ४ तीन दिन ५ शुक्राम ॥ २ ॥ ५ आठ पक्षा

सावन गत आसार के, के सित पक्खगं देजरकलौपति ॥३॥

॥ सोरठा ॥

सुनि बुंदिय यह सोर, चूक दलेल विचारिकें ॥

चूडाउत वह रौर, मारन बेघम मुकलिय ॥ ४ ॥

भोपसिंह तस संग, हरदाउत हडा दियउ ॥

जो पति धोवड़ दंग, सालम सुत हितकर कुटिल ॥ ५ ॥

दोउरन बेघम आय, द्विरद मत्त निज छोरि दिय ॥

जान्यौं कोतुंक पाय, सिसु उमेद अहे लखन ॥६॥

तबहि दगा बल ताहि, मारि रु बुंदिय मुकलहि ॥

इम सठ उभयर उमाहि, पहर तीन३ गज सँग फिरिय ॥७॥

सो सुनि लखन न आय, सानुकूल नृपकी नियति ॥

छत्र गये दुख छाप, मुह बिगारि दुवर सठ दुमन ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

जैपुर नृप जयसिंह इत, जिति मरुरथल जुद्ध ॥

अद्वितीय अप्पहिं समुक्ति, मान गहिय वनि मुँद ॥ ९ ॥

मद्य पान हित गिनि मुदित, निस दिन रचत अनंत ॥

निधुवन रुचि धप्पत नहिन, दम हुव आगन अंत ॥ १० ॥

निस रु दीह आसव नसा, रक्खत हृदय अरुढ ॥

छोरत नहि कामुक छगल, संजौं नारिन मूढ ॥ ११ ॥

अैसी बिधि अवसानके, आगम हुव कछवाह ॥

नामक पर्वत का पति बढ़ता है १ आचण की मेघ धारा बहे जैसे २ किधों शुक्ल पक्ष के द्वितीया के चन्द्रमा की कला बहे जैसे ॥ ३ ॥ ४ वह मलूमर के रावत का छोटा पुत्र रोड़सिंह ॥ ४ ॥ ५ सालमसिंह के पुत्र (दलेलसिंह) का हित करने वाला ॥ ५ ॥ ६ मस्त हाथी ७ तमाशा जान कर ॥ ९ ॥ ८ भेजे-गें ॥ ७ ॥ ९ भाग्य ॥ ८ ॥ १० मूर्ख बन कर ॥ ९ ॥ ११ मैथुन से १२ अंत समय का आगम हुआ ॥ १० ॥ १३ हृदय पर चढा हुआ १४ वह कामी बकरा १५ स्त्रियों रूपी स्त्रियों (चकरियों) को नहीं छोड़ता ॥ ११ ॥ १६ कछवाह के अन्त का ॥ १२ ॥

राजामल सिर राज्यकी, रक्खी निवहन राह ॥ १२ ॥
 वैदन सैन ओपधि बलन, अधिक ठानि आहार ॥
 उभय २ धटी ओदन अदन, बढ्यो कुम्भ डहि वार ॥ १३ ॥
 आगम सकल अनेगके, सठ एकात सुधाय ॥
 मोहन मेहन वृद्धि भुग्व, सेय देवा दगसाय ॥ १४ ॥
 वरज्यो जदपि चिकिरमकन, मन्यो तदापि न मदे ॥
 आगधत अदिरत अतुल, आसव सुरत अनद ॥ १५ ॥
 राजामल डक दिन कहिय, क्यों नृप करत कुजोग ॥
 अक्खी तुम छत हम अभय, भुगगत अव यह भोग ॥ १६ ॥
 हुव प्रमत्त जयसिंह डम, मन लागि मोहन मद्य ॥
 अवर कोन मम सम यहै, सोधि गरव गहि सैद्य ॥ १७ ॥
 ॥ रोजा ॥

इकदिन आगव मत्त होय कछवाह मूढ मति ॥
 उदयनैर लिखवाय पत्र पठयो रानों प्रति ॥
 मम आदेसैं अमोघैं चतुर जगतस विचारहु ॥
 वेघम जे बुधसिंह नद निज दम निकारहु ॥ १८ ॥
 सुनि यह कूरम कथितैं रान जगतेस भीरु बनि ॥
 दिय वेघम आदेस देस मम तजहु भूप भनि ॥
 यह सुनि भूप उमेदसिंह अरु दीप भात दुव २ ॥
 कछु दिन कठिन निकारि धरिय धरलैन चित्त छुव ॥ १९ ॥

१ घंटा मे पल घटाने की औपधिया क मेघन म घट्टम भोजन करके दा दो घंटी में २ अन्न ३ खाना ॥ १३ ॥ ४ सप शास्त्र १ कामदेव के एकान्त म दिखवा कर ६ मैथुन की रीति ७ लिंग की वृद्धि (घटाना) = आदि ९ औपधिया का खयन करके दिखवाया अर्थात् औपधिय खाकर मैथुन और लिंग की वृद्धि दिखवाई ॥ १४ ॥ १० वैश्यों न मना किया ता भी ११ यह मूर्ख नहीं माना १२ निरन्तर, मग्य और मैथुन के अत्यन्त आनन्द का आराधन (माधन) करता रहा ॥ १५ ॥ १६ १७ मैथुन १४ तुल्य (जीघ) ॥ १७ ॥ १८ मेरा हृकम १ पीछा नहीं किरने (खाती नहीं जान) वाला ॥ १८ ॥ १९ जयसिंह का कहा हुआ १८ कायर ॥ १९ ॥

सक ख अन्न वसु मोम १८०० अर्शित पंचमि ५ असाठ गत ॥
 कोटा जैनपद क्रमि ५ छोरि बेघम रन उद्धत ॥
 सुनि यह दुज्जनमल्ल भीरु कूगम भय भाखिय ॥
 निज ढिग बुल्लिय नाहिं दुहुँन मधुकरगढ राखिय ॥ २० ॥
 रहिय तत्थ अउ ४ मास भूप उम्मेद अनुजँ सह ॥
 मृगयादिक कांतुक अनेक रचि वीर महा मह ॥
 घाँटँ रुक्मि गिर घेरि भुंड तुपकन नृप भारे ॥
 अति प्रगल्भ आयुधन सद्धि मृगपति बहु मारे ॥ २१ ॥
 ॥ रुचिरा ॥

इत कूरम नृप रोग विवमि हुव देह विकसि कृमि पुंज परे ॥
 मास बहुत यह दुख सहयो अरु गूँद पैलल तँनु विकृत गरे ॥
 इक १ अंगुल परिमित लंबे कृमि रग्याम लैपन सब देह धमे ॥
 वर्ष १ लोहित २ पैल ३ मे ४ न खावन अस्थि ५ अंतर विविध वसे २२
 भम्म तलपै सोवन दुख भोजन नैक न पीडित निंद लहैं ॥
 जिम विकसत तरबूज पक्या इम विग्रह रंचन गाढ गहैं ॥
 सुग्राहि मूत्र तथा मल मोचन निजकृत दुरितन चितिकैं ॥

१ कृष्णपक्ष की २ देण में ३ गये ॥ २० ॥ ४ छोटे भाई
 दीपसिंह सहित ५ शिकार आदि ६ बड़े उत्तमव रचकर ७ घाटा गोक कर
 ८ शस्त्रों में बुद्धिमान् अथवा उस बुद्धिमान् ने शस्त्रों का साधन करके बहुत
 मिह मारे ॥ २१ ॥ ९ कछवाहों का राजा जयसिंह रोग वश हुआ जिसका
 शरीर फटकर उसमें १० कीड़ों के ११ समूह पड़गये सो कई मास तक यह
 दुःख सहा और १२ चरबी व १३ मांस १४ शरीर से १५ रक्तानि युक्त होकर
 गिरा १६ एक अंगुल के प्रमाण वाले १७ काले मुख के कीड़े सब शरीर में घुस
 गये वे कीड़े १८ चमड़ी १९ रुधिर २० मांस २१ चरबी नहीं खाकर २२ हड्डियों के
 भीतर घुसगये ॥ २२ ॥ २४ उस दुःख के पात्र (राजा जयसिंह) ने २३ भस्म की
 शय्या पर शयन करके उस पीड़ा से नींद नहीं ली २४ शरीर २५ वह राजा
 सोया हुआ ही मल मूत्र का त्याग करता था और २७ अपने किये हुए २८ पापों
 को २९ याद करता था

अनुज विंजय तिय मात सुनादिक मारिय ते सब दिष्टि पैं ॥ २३ ॥
 इम अति कष्ट विकल कूगम नृप मचित अघ भर्ग भूगि भज्यो ॥
 खखवसुससि १८०० बिक्रमसक इसगत बिसैंद चतुर्दसि १४ देहतज्यो
 हुव जैपुर घर घर हाहार्व भैतदपुर अति त्रास परघो ॥
 ईस्वारेसिंह तवहि पट्टप मुन देखि निगम विधि दाह करघो ॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥

इम उमेद नृप भाग बल, तजिग देह कछवाह ॥
 यह उदतै दिस दिस आहग, हुव अरि घग्न उछाह ॥ २५ ॥
 यह कथ सुनि कोटा अधिप, खासय मन्नि तजि खेद ॥
 मधुकर्गढतै अनुज जुन, बुल्ल्या निकट उमेद ॥ २६ ॥
 मधुकर्गढ मामत हर, हह्वा हरजन नाम ॥
 किल्लापति कोटेसको, जु हो भुजिंष्या जाम ॥ २७ ॥
 मुख्य सचिव बुदीसको, कोटापति वह किन्न ॥
 कोटा आय उमद नृप, हयन हर चउल्लिन्न ॥ २८ ॥
 लेत हयन कोटस लखि, अकखी भूपहि एहु ॥
 तुम हित हम रक्खन कैटक, लगै खरच सु देहु ॥ २९ ॥
 सुनि नृप निज भूखन दये, मोल लक्ख दुवर दम्म ॥
 इक १ किलगिय कैटक जुगर, करन जग भुव कैम्म ॥ ३० ॥
 लोभी दुज्जनसल्ल सठ, लखी बिपत्ति न रच ॥
 इम भूखन बुदीसके, लित्रै कपट प्रपच ॥ ३१ ॥

१ छोटे भाई विजयसिंह, माता और २ पुत्र आदि को मारे थे ये सब दीखने लग ॥ २३ ॥ ४ सख्य किय दूए पाप के मार का ५ बहुत भोगा ६ आश्विन मास के ७ शुक्ल पक्ष की ८ रात ९ जनान में १० घेद बिधि से ॥ २४ ॥ ११ वृत्तान्त ॥ २५ ॥ २६ ॥ १२ पासवान स्त्री का पुत्र ॥ २७ ॥ १३ अच्छे हेर का चार घोड़े लिये ॥ २८ ॥ १४ तुम्हार लिय मेना रखने हैं जिसका खरच जाँ सों दो ॥ २९ ॥ १५ मस्तक पर लगाने की एक जहाज बिलगा और हाथों के १६ दो कड़े दिये पृथ्वी के लने क अर्थ युद्ध का १७ कार्य करन को ॥ ३० ॥ ३१ ॥

तदनंतरै दैल इक सहस्र १०००, पठयो बुंदिय भीम ॥

आय रु तिहिँ लुटिय मुलक, भेद मचायउ भीम ॥ ३२ ॥

नृपति ईस्वर्गसिंह हुव, इत जैपुर लहि पट्ट ॥

श्रद्धाजुत करि जनकको, प्रेतकर्म विधि बट्ट ॥ ३३ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणो सप्तम ७ गणो भृशु-
दुम्मेदसिंहमालवगर्गराटपतिफलादलपतिसिंहपुत्रीप्रथमोदहनतन्मा-
रणादलेलसिंहविचारणाकूर्यगजमद्यमदमजनललनालोलुपीभवनोद-
यपुरदलप्रेषणाराणाहृद्वेन्द्रदेशनिष्कासनजयसिंहमरणादुम्मेदकोटा
५५ हूयनकोटेशतद्रूपणामार्गणसेनासमुच्चयनबुन्दीदेशविग्रहकण्ठाज-
यपुरेशेश्वरीसिंहपट्टप्रापणां पञ्चमो ५ मयूखः ॥ ५ ॥ ॥ २८६ ॥

प्रायोजनदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दाहा ॥

कोटापुर इत मंत्र किय, दुज्जनसल्ल उमेद ॥

इकत करि हड्डे अखिल, भाखिय संगरुँ भेद ॥ १ ॥

काह भट बेणीरामसौं, कोटापति कर जोरि ॥

गिनत तुम्हैं सब भूप गुरु, छल रु छोनिँ छक छोरि ॥ २ ॥

यातैं जैपुर जाहु तुम, बुंदिय लैन उपाय ॥

१ जिस पीछे २ सेना ३ अयंकर ॥ ३२ ॥ ४ पिना का ५ रीति के मार्ग से ॥ ३३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में भूपति उम्मेदसिंह
का मालवे में गागरुण के पति भाला दलपतसिंह की पुत्री से प्रथम विवाह
करना १ उम्मेदसिंह को मारने का दलेलसिंह का विचारना २ कछवाहों के
राजा (जयसिंह) का मद्य के नसे में डूबकर ज़िरों का लोलुपि होना और
उदयपुर पत्र भेजना ३ राणा का उम्मेदसिंह को देश बाहर निकालना ४
जयसिंह का मरना और उम्मेदसिंह को कोटा में बुलाना ५ कोटा के पति
का उम्मेदसिंह से भूषण लेना ६ सेना एकत्र करके बुन्दी के देश में उपद्रव
करना ७ उदयपुर के राजा ईश्वरीसिंह के पाट बैठने का पांचवां ९ मयूख स-
माप्त हुआ और आदि से दोसौ छियासी २८६ मयूख हुए ॥

९ युद्ध का ॥ १ ॥ ७ भूमि का घमंड छोड़कर ॥ २ ॥

कूर्म जो यह स्वीकैरै, तो लरनों न हिताय ॥ ३ ॥
 हम जावत श्रियद्वार पुनि, मिलहिँ रानसौँ तैत्थ ॥
 करहिँ न हित कछवाह तो, सज्जहिँ उभय सैमत्थ ॥ ४ ॥
 यह सुनि भट जैपुर चलिय, दुजनसल्ल श्रियद्वार ॥
 अन्नकूट सहिय समय, अधिक भाक्त उपचार ॥ ५ ॥
 ॥ हीरकम् ॥

पुनि रानहिँ पठयो दलँ अप्प मिलन आइये ॥
 माधर्व निज भागिनेय हित हु द्वदय लाइये ॥
 बुदिय पुर लन कोहु मत्र मिलि रु ठानि हैं ॥
 दुडाहर मदिनि पर सज्जि संमग तानि हैं ॥ ६ ॥
 यह सुन जगतेस रान कुच कगिय बेगही ॥
 कोटापतिके मिलाप नीति रानि के गही ॥
 उदयनगरके समीप सेनहिँ फरमानदै ॥
 नाहरमगराभधान यान तैं हैं मिलानदै ॥ ७ ॥
 कोटापति पौप पास प्रीति पत्र प्रेरयो ॥
 आवहु मिलि हैं इहाँहिँ जो तुम हित हेरयो ॥
 काटेमहु सुनत एह नाहरमगरा गयो ॥
 रानहिँ मिलि रीतिसहित मंत्र सहितै महयो ॥ ८ ॥
 अगौँ अमरेम रानकी पुत्रिय व्याहिबे ॥
 रौनाउति दुर्लभ गिनि चिंतित जस चाहिबे ॥
 निजकर जयसिंह कुँम्म कग्गर लिखा की सही ॥

१ कछवाहा ईश्वरीसिंह २ स्वाकाग करै तो लड़ना ३ हित नहीं है
 ॥ ३ ॥ ४ तदा ५ समर्थ ॥ ४ ॥ ६ पूजना ॥ ५ ॥ ७ पत्र ८ आपके
 भागजे माधवसिंह क हित का ९ भूमि १० युद्ध ॥ ६ ॥ ११ नाम १२ सुकाम
 ॥ ७ ॥ १३ पापी के पास (आगामि समय म धुंधी को दयावगा इससे यह
 विशेषण दिया है) १४ हित के साथ सलाह की ॥ ८ ॥ १५ राणा की पुत्री
 को १६ कछवाहा जयसिंह ने पत्र लिखकर १७ सही की

रानाउति पुत्र होहिं तुंठाहर ईस ही ॥ ९ ॥
 पहिलैं इतनी लिखाय रानहु तनयाँ दई ॥
 चिंतहु पट्टै नीति अप्प तथ्य न सब जो भई ॥
 जिह्वाहि जयसिंह पुत्र राज्य अखिल अंगम्यों ॥
 माधव हित कछु दयो न नति जुत तुमसों नम्यों ॥ १० ॥
 बुंदिय दुवश्हत्यर्न गाह छोरनहु न उच्चरै ॥
 अप्पन इहिं कारन दुवर सज्जित दलकों करै ॥
 दोउनर यह मंत्र थाप्प इकत पैंतना करी ॥
 बिप्र सु उत बेणिगम कूम्भ प्रति उच्चरी ॥ ११ ॥
 छिन्निय जयसिंह सोहि बुंदिय अब दीजिये ॥
 कूम्भ उपकार यहहिं कांटा सिर काजिये ॥
 राजामल जुन नरैसैं बिप्रहिं तब अकखई ॥
 बुंदिय हमरे पिचंडै क्यौं करि कढिहै गडै ॥ १२ ॥
 अक्खिय सुनि एह बिप्र तुर कैतरि कहिहै ॥
 दुंदर दल हंकि हड्ड जैरु मिर चहिहै ॥
 यह कहि द्वज आय बत्त हड्डनपति सों कही ॥
 सो सुनि बहुवान १ गनर सज्जिय पैंतना सही ॥ १३ ॥
 लबित धुजदंड मत्त हत्थिन सिर खुल्लये ॥
 बीरहु निज निज समस्त बंधन बैल बुल्लये ॥
 त्रंबक डक बज्जि बेग मिंघुन म्वर लगगये ॥
 पव्वय डगमग्गि भोग भोगिर्ग भंग भग्गये ॥ १४ ॥

१ इस रानावती के पुत्र हागा माही निश्चय जयपुर का पति होगा ॥ ९ ॥ २ पुत्री ३
 आपनी निचतुर हो सो विचारो ४ वह मृत्य नहीं हुई ५ जयसिंह के ज्येष्ठ पुत्र
 (ईश्वरीसिंह) ने ६ मष राज्य दवालिगा ७ नम्रता सहित ॥ १० ॥ ८ दोनों हाथों से
 पकड़कर ९ सेना को १० सेना एकत्र करी ॥ ११ ॥ ११ ईश्वरीसिंह ने १२
 हमारे पेट में है सो ॥ १२ ॥ १३ बड़े पेट को चीरकर १४ दुःख से धर्षण का
 जावै ऐसी सेनाको १५ सेना ॥ १३ ॥ १६ सेना बांधने के लिये बुल्लाये १७ बीर
 रस को बढ़ानेवाला राग विशेष १८ नाग के फण १९ भार से तूट ॥ १४ ॥

*मकुलि धर धूलि धुधि रुधि रु रथि ठकयो ॥
 चिक्कार लखि चड चेत दिग्गज गन सकयो ॥
 दिकपालनके कपाल नाटसालसे चुमे ॥
 बार सु मगरूर मडि हूरन हित के लुमे ॥ १५ ॥
 सागर सब लै हिलोर ओर ओर उज्झले ॥
 हाटकैगिरिक समरत शृग भग ठहै हले ॥
 कोटापति सेन रान सेन उभय २ यों बली ॥
 सो सुनि कछवाह भूप डकन बैल कै बली ॥ १६ ॥
 मडिप दाकुच रान सम्मुख मगरूरतैं ॥
 मानहु घन भद्र मास पाप पवन पूरतैं ॥
 राजामल कग्गर लिखि रान निकट पल्लयो ॥
 हइनके पेचमाहिं मानस तुम क्यों दयो ॥ १७ ॥
 जो हित हममों वनें सु आरन मन नां वनें ॥
 आवत हमहू हजर अप्पन सिग्दी मनें ॥
 माधव निज जामिंज हित बटि पहमि लाजिये ॥
 हइन सन भिन्न होय नैकहु न पतीजिये ॥

॥ दोहा ॥

यह देल अग्गहि मुक्कल्यो, राजामल सचिवेनैं ॥
 पुनि नृप ईश्वरिसिंह जुन, सम्मुख हकिय मेन ॥ १९ ॥
 इन गन रु कोटैस दुव २ बेग सु कैग्गर बचि ॥

*माम पर रज छा करी इम मना का नाग्रना दण्ड कर सीमली करके थिल स विशा
 आ क डाधिया का समुह छ तयुक्त हुआनहा निकलने वाला साछ 'कि' से
 मानों अथ समझा जाना है इमा प्रकार 'क' से किलने यह अथ सय जगह जा
 नमा आदिय) ॥ १५ ॥ सुमर पर्वन क शिपर २ सेना डकटा की ॥ १६ ॥ घमह से
 १ पवन के समुह स ५ मजा १ मन ॥ १७ ॥ १ आपका मस्तक परमानते हैं
 ६ बहिन का पुत्र १० विश्वास मत करा ॥ १८ ॥ ११ पत्र १२ सचिवा का पति
 ॥ १६ ॥ ११ यह पत्र बाबर

धाये सम्पुह स्वर्गचि धन, सेना अतुलित संचि ॥ २० ॥

नगर जाजपुरके निकट, जामोली इक गाम ॥

उत्तमि तँहँ भूपति उभय२, क्रिय चालीस मुकाम ॥ २१ ॥

सगताउत सावर अधिप, इंद्रसिंह अभिधान ॥

तिहिँ दब्बपो इक रानको, नगर देवली थान ॥ २२ ॥

ताहि तजन जगतेस तब, बहुत कड़ाई बत्त ॥

सगताउत मन्नी न सो, सुररि रह्यो जिम मँत्त ॥ २३ ॥

इहिँ रानाँ अब देवली, रचन लेन गढ गरि ॥

राजाउत भारत सहित, पठयो कटक प्रचारि ॥ २४ ॥

दलहिँ जात अब देवली, सुनि सावर पात पुँत्त ॥

सालम नाम सु सज्जि बनि, धरयो लरन गढ धुँत्त ॥ २५ ॥

दिन पंचक५ पहिलैं यहै, ब्याहयो सालम बाग ॥

कंकन मोचन हू न किय, हुव जुझन हमगार ॥ २६ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम७ राशाबुम्मे-
दसिंह १ दुर्जनशल्य २ मन्त्रणावेर्णागमभट्टजैपुरप्रेषणाकोटेशश्रीद्वा-
रगमनराणासमावहयननाहरमगराभय २ मिलनवेर्णारामेश्वरसिं-
हबिरसीभवनभट्टप्रत्यागमनराणा महारावसेनाभिनिर्वाणतदभिमुख
कूर्मगजाऽऽगमनदेवलीकुमारसालमसिंहसज्जीभवनतद्राणाससैन्य

१ एकत्र करके ॥ २० ॥ २१ ॥ २ सावर का पति ३ नाम ॥ २२ ॥ ४ मस्त होवे
जिसप्रकार ॥ २३ ॥ ५ इसकारण दबला नामक नगर लेने को ६ भारतसिंह
७ सेना भेजी ॥ २४ ॥ ८ सेना को देवली जाती हुई सुनकर ९ पुत्र १० अनग्र
॥ २५ ॥ २६ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में उम्मेदसिंह और
दुर्जनसाल का सलाह करना ? भट्ट बणाराम को जयपुर भेजना २ कोटा के
पति का नाथद्वारे जाकर राणा को बुलाना ३ नाहरमगरा नामक स्थान पर
दोनों का मिलना ४ वेर्णागम और ईश्वरीसिंह का परस्पर बिरस होना ५ भ-
ट्ट के पीछे आने पर राणा और महाराव का सेना सहित गमन करना ६ इन
के सम्मुख कछवाहा के राजा का आगमन ७ देवली में कुमार सालमसिंह का

भारतसिंहप्रेषणाशसन षष्ठो ६ मयूख ॥ ६ ॥ ॥२८७॥

प्रायोजनदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ मुक्तादाम ॥

गहघो जिहिँ अगग प्रतापे कुमार, वहै हुव भारतसिंह तयार ॥
दयो तस सग अभग अनीकै, सजे भट उद्धत चाहि सर्माकै ॥१॥
सिगाहि कहयो सबसौँ डम रान, लहो गढ घोर रचो घमसाँन ।
चल्पो सुनि भारतसिंह प्रचड, उमगत हकिय सेन अखड ॥ २ ॥
भयो दिक्पालन मोह भैयान, प्रकपत दिग्गज मुल्लिय पान ॥
मचकिय पन्नगवरी फैनमाल, भचकिय पक्षिय सूकर भाज ॥३॥
छछकिय अदिनतैं कटि धातु, लचकिय लोक कहैं हरि पातु ॥
सरकिय एम उदैपुर चेंक फरकिय हथिनयें बँहरक ॥ ४ ॥
करकिय ककटकौ कटिकैल्लि, ढगकिय पैँवय शृगन ढालि ॥
खगकिय खप्पर जोगिनि सग, ऋगकिय नैलन अग्नि दमग ॥५॥
घुगकिय अक्खर पक्खर घोर, थगकिय अच्छगि अँवर ओर ॥

सद्यः ज्ञाना ८ उम पर महाराणा का सेना सहित भारतसिंह का भेजने के
कथन का छठा ६ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ सिंघासी
२८७ मयूख हुए ॥

जिसने पहिले राधा के कुमार १ प्रतापसिंह को पकड़ा था वह भारतसिंह
तैयार हुआ २ सेना ३ युद्ध करना चाहकर ॥ १ ॥ ४ युद्ध ॥ २ ॥ ५ भयकर
६ घुजने हुए ७ शेषनाग का (यहा फनमाल शब्द के योग से शेषनाग का
ग्रहण है) भचक लगन से ८ घराह का ललाट पक गया ॥ ३ ॥ पर्वतों स धातु
की पिचकारयें छटने लगीं और मृत्पाक आदि लपककर कहने लगे कि हे पर
मेश्वर ० रक्षा करो ० इसप्रकार उदयपुर की सेना खली और हाथियों पर ११
इज्जाय डर्यो ॥ ४ ॥ १२ कवच की १३ कजियों की पत्तियें तूटने लगीं और १४
पर्वतों के शिखर खलायमान हाकर गिरने लगे और योगिनियों के साथ खप्पर
पजने लगे १५ घाघों की नालों का साथ १६ अग्नि का कण ऋजने लगे (दिग्गज
भाषा में दमग शब्द अग्नि और अग्निकण दोनों का वाचक है) ॥ ५ ॥ घोड़ों
की पाखरों का आकाश में घोर शब्द हुआ, अथवा नहीं उचुत होने (गिरने)
वाली पाखरों का भयकर शब्द हुआ १७ आकाश की ओर अप्सराएँ ठहरि

दरक्षिय छोनिये दारिम रीति, भरक्षिय खंड चउदह १४भीति ॥ ६ ॥
 घमंक्षिय घोग्न घुग्घगमाल, चमंक्षिय सेलन सोचि सचाल ॥
 छमंक्षिय अचछरि नेउर गैन, झमंक्षिय भूखन लकखन लैन ॥ ७ ॥
 टमंक्षिय त्रंविष बंविष बज्जि, ठमंक्षिय घंट मंतगन गज्जि ॥
 डमंक्षिय डाहल डिडिम लोल, ढमंक्षिय संहल मंहल ढोल ॥ ८ ॥
 द्रमंक्षिय दुंदुभि दिग्घ द्रमाम, धमंक्षिय धुज्जि रमातल धाम ॥
 उलट्टिय सेन कि सागर अंभ, पलट्टिय जानि पुंदर जंभ ॥ ९ ॥
 चलयो इम गन सहीपति चैक, लग्यो उडि पावक तोप ललक ॥
 लयो गढ देवलिका गग्दाय, धम्यो रन तोपन भुम्भि धुजाय ॥ १० ॥
 कही तहँ भागत सालम काज, मिलेँ गढछेगिलहो अंसु आज ॥
 यहै सुनि बीर न किन्न अघेर, कडाइय सालम जुझन केरा ॥ ११ ॥
 उदैपुरको दैल दुर्लभ लाय, इहाँ तुमसे भट पाहुन आय ॥
 नैकै हम जो तुमरी मनुहारि, लजै पितु मात लगेँ कुल गारि ॥ १२ ॥
 खरे तुमहू नैप जानत रुपाँत, करै सब स्वागत पाहुन आत ॥
 अत्रै इहिकारन धर्महि धारि, पधागहु म्वीकरि मो मनुहारि ॥ १३ ॥
 हुते हम सावरके पनि हँतै, कहाँ तिनकोँ सुख स्वर्ग मिलंत ॥

और दाडिम की भांति १ भूमि फटी २ भय से चौदह ही लोक चँके
 ॥ ६ ॥ ४ अपलता सहित १ भालों की कान्ति चमकी ५ आकाश में अ-
 प्सराओं के नूपुर बजे और उन अप्सराओं की लावों १ पंक्तियों में भूषण
 भमके ॥ ७ ॥ तासे और ७ नगारे बजने का शब्द हुआ ८ हाथियों पर
 शोभायमान घंट बजे ९ डाहल और डिडिम आदि देवी और भैरव के वाद्य
 १० अपलता से बजे ११ उस सेना के साथ अथवा शब्दायमान होकर १२
 मंदल (मांदल जो मृदंग के आकार होता है) और ढोल बजे ॥ ८ ॥ १३ बड़े
 नगारे १४ नोवतें बजी १५ मानों समुद्र के जल के समान सेना उलटी; मो मानों
 जंभासुर पर १६ हृद्र पलटा ॥ ९ ॥ १७ सेना चली १८ देवली के गढ को घेर
 लिया ॥ १० ॥ १९ भागतसिंह ने कुमार सालमसिंह को कहलाया २० प्राण २१
 विलंब नहीं किया और सालमसिंह ने युद्ध करने को कहलाया ॥ ११ ॥ २२
 सेना लाकर २३ तुमारी मनुहार नहीं करें तो ॥ १२ ॥ २४ प्रसिद्ध २५ नीति जानते
 हो २६ आये का सत्कार सभी करते हैं २७ स्वीकार करके पधारो ॥ १३ ॥ २८ खेद

परंतु कृपाकरिकें तुम आय, ततो मम बिन्ति मन्नि हिताय ॥१४॥
 गुरुं तुम आसिख अखड्ड एहु, सुपूत्रक स्वर्ग सभा सुख लेहु ॥
 कथा यह सालमसिंह कहाय, रुप्यो जिम अगैदको रनराय ॥१५॥
 रचो सुनि भारत तोपन रागि, हनी इन सेन घनी हलकारि ॥
 चलै पबिपात कि गोलक चंड, दिपै जिम मार उहै धुजदह ॥ १६ ॥
 गिरै गृह मडप फुटि लदाव, तप्यो पुर तोपनक तरकाव ॥
 नठे चहुँकोद निवानन नीर, परी जलजतुन दुस्सह पीर ॥ १७ ॥
 धिग्यो पुर देवलिका दल घोर, जम्प्यो दुहुँघोर प्रवीरन जोर ॥
 जैबूजजावलि तोप तुपक, चलै हुन चहै मचै धमचक ॥ १८ ॥
 चुदहन दहन बँटै बजार, उहै दैमकै बहु लव अंगार ॥
 जगत किरत बिजाजन पैटै गुँढी जनु लगिय राल गँगट ॥१९॥
 बनिकन आपनै लगि अलौव, दहै घन कानैन ज्यो तन दाव ॥
 जौ घन आदैन नेल रु तैल, विवागिय दीपक होत दूकूल ॥२०॥

के साथ १ दित क अरि ॥ १४ ॥ २ तुम यह हा मो यह आजीर्णद वो कि ३
 हे पुत्र स्वर्ग की मभा का सुख ला, जिसप्रकार यह कथा कहाई तिसीप्रकार यह
 १ युद्ध का राजा, अथवा युद्ध ही है वन जिसके ऐसा सालमसिंह ४ शरीर
 देन को स्वप्न हुआ ॥ १५ ॥ ५ भारतसिंह ने ६ यज्ञ पढ़ने के समान भयकर
 र गोलें चलते हैं आर मयूगों के समान उड़ते हुये वज्रादंश या मो पाते हैं
 ॥ १६ ॥ ७ आरों दिशा के जलाशयों का जल नष्ट हुआ ॥ १७ ॥ देवली
 नगर भयकर ८ मेना से घि गया और विशेष वीरों का यत्न दोनों आर
 जमा १० जीव ११ भयकर चलकर युद्ध हुआ ॥ १८ ॥ इन तोपों के चलने से
 आँकड़ा, दुकान १२ मार्ग और बजार में अग्नि के १३ अगारों क बहुत समूह
 उड़कर १४ भस्म हो गये जिनसे बजाया क १५ यज्ञ जलकर १६ गिरते हैं मो
 मानों १७ पतंग कनकावा) अथवा राख क १८ समूह में अग्नि लगी (यहाँ अ
 ग्नि का अध्यापार ऊपर के प्रकरण में हाता है) ॥ १९ ॥ इसप्रकार यन्त्रियों की
 १० व्यापार की गतिगा में २० अग्नि लगकर यह लूणोंवाले २१ वन का अ
 ग्नि लाय) जलावे लगे जलता है जिसमें घी २२ अन्न २३ रुई जलता है सो
 १ मानों दीपक ही हैं यज्ञ जिसके ऐसी दीवाल बना है और इस वजाला में
 काष्ठ क ऊपर और फूस की टपरियें अथवा हापरे (फूस के छाये पर जलते) हैं

जैरे कटछप्पर टप्पर ज्वाला, भगै जिम फग्गुन होगिय भाल ॥
 छिकै बहु अटन कंगुर छुटि, तरकत पत्थर छत्रिन तुटि ॥ २१ ॥
 परै प्रजरै बहु मंचे कपाट, घिग्घो पुर पावक दुग्गद घाट ॥
 जैरे संसिसालन ज्वालन जूह दैगै गृह अंगन अग्नि दुरूह ॥ २२ ॥
 द्रैवै जरि नागै रु बंगै अदब्धे, उदै लगि पावक पागद अटन ॥
 मनो गढको अघ मेटन मान, करायउ सालम अग्नि सनान ॥
 घने दिन भो रन तोपन घोर, छिकयो गढ गोलन मार दुश्चोर
 कढयोतब सालम खुलि कपाट, भुकयो रन वीर वजावत फाट ॥
 बजी सगताउतकी हतवाहै, चले कर ओदन ज्यो मिसु चाह ॥
 उदै हय खंधगिरै असवार, कटै भट छत्तिन छेदि कटार ॥ २५ ॥
 तरकत टोपनपै तरवारि, दिपै मनु देवल भल्लारि भारि ॥
 कटै फटि कैंकट बीरन अंग, तजै निरमोके कि भीमै भुजंग ॥ २६ ॥
 चटकत टोप समस्तक चीर, किधौ जगदीश प्रसाद कंगीर ॥
 उलटत अब्बनै तुटन तंग, पलटत के जिम एनै पलंग ॥ २७ ॥
 मारै गज सुंड़िन भंडन भुंड, रचै घन घुम्मत तंडव रुंड ॥

सो जैसे फाल्गुन मास में होली की भाल जलै तैसे जलते है १ बहुत बुरा
 कांगरे छूटकर वे छिकती है और छत्रियों से तड़ककर पत्थर तुट
 ॥ २१ ॥ बहुत से २ मंचे और कवाड़ जलकर गिरते हैं इसप्रकार नहीं
 की जावे तिस रीति के ३ अग्नि से वह पुर घिर गया ४ चंद्रशालाओं
 के ऊपर के मकानों में ५ अग्नि का ६ समूह जलता है और घर के च
 ८ कठिनाई से तर्कना में आवे ऐसा अग्नि ७ जलता है ॥ २२ ॥ वहां १०
 सा ११ रांगा जलकर १२ बहुत २ बढ़ता है और उसके अग्नि से पाग
 १३ आकाश में लगता है ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ १४ प्रहार १५ चावत
 पर बालक के हाथ चलै तैसे ॥ २५ ॥ १६ कवच फटकर बीरों
 निकसते हैं सो मानों १८ काला सर्प १७ कांचली छोडता है ॥ २१ ॥
 कटकर मस्तक सहित चीरें होती हैं सो मानों जगदीश के प्रसाद
 बडा फटता है (जगदीश के प्रसाद से भरहुए घड़े का चौफाड़ होकर
 ना प्रसिद्ध है) २१ तंग तूटकर घोड़े उलटते हैं और कितने ही घोड़े
 हरिष पर २३ पीता पलटते तैसे पलटते हैं ॥ २७ ॥ २४ बिना

पैरें दग ✽रत फदक्कत पुज, गिरें जिम सीतसमै पकि गुजारा २८।
 थक्कहिं अबर अच्छगि थद, भरक्कहिं भीरुका उडधट वद ॥
 पैरें कति पक्खर वगग पलान, मों भट छाकि रजोगुन माना २९।
 उरज्जत ॥ अवन गद्व अनेक, तरप्फत घायल मूढ कितेक ॥
 किलक्कहिं कालिय कूदि कगल, खलक्कहिं सोहित लाहित खाल ३०।
 छलक्कहिं घाय छडक्कन रत, मलक्कहिं सूग्न आज उमरत ॥
 न तर्कहिं कानर दग्हु नहि, ललक्कहिं बावन ५२ओ चंडमहि ६४॥ ३१॥
 उलटत हातियनतें भट आहिं, मनो निहग नट भगल मोंहि ॥
 उछटहिं आयु र तुटहिं तोन, सुलटहिं कत उचटहिं सान ॥ ३२ ॥
 दपटहिं बाजन जुटहिं दाव, मपटहिं ज्यो तरितो ममकाव ॥
 मटक्कहिं डक्कहिं डक्क भौंमागि, पटक्कहिं भूतनको रन रागि ॥ ३३ ॥
 अटक्कहिं पाय रकावन केक, गटक्कहिं गोदेन गिद्व अनक ॥
 खटक्कहिं हडनपें लागि खग, छटक्कहिं के उडि अवरमंगा ३।
 लटक्कहिं थक्कहिं रान अर्नाकें, सटक्कहिं के मठ घोर समी ३।
 बढ्या इम मालम बाजि उढाय, लगे हुंत भागतसिंहहिं जाया ३।
 कद्यो तुम माननय मो मनुहारि श्रीं दल सज्जि वनै उपकारि
 शरार वृत्त करन हैं जिसप्रकार शरद ऋतु में पकीहुइ । चिरसी गिरै नि
 प्रकार ✽ लाल नेत्रों के समूह बछलकर गिरते हैं ॥ २८ ॥ । बिना म
 ऽ पाग (कुसा) ॥ २० ॥ ॥ आता में १ कालिका २ रुधिर के न
 बहत दृष्ट शांतिम हैं ॥ १० ॥ ३ रुधिर ४ वज्रमस्त धारों का ॥
 कायर नहीं दायम हैं ६ वृत्त से भागते हैं ७ जहाँ केवल चौमठ की
 आवै यहा चौमठ जागनिय जानो, और पावन की सख्या स पावन सैरब
 मो ॥ ११ ॥ ८ उलटने हैं ९ भागल से (हाथी को फांदने के लिये नट
 लकडी (काष्ठ) पावने हैं उसका नाम भागल है) १० माधे ११ ध्यजा १
 ती है १२ रुधिर बढमा है ॥ १२ ॥ १३ घोड़ों को दौड़ात हैं १४ पि
 चमकै जैसे १५ प्राणिया को अघकर मुख में गिराल हैं ॥ ३३ ॥ १६
 (भेजा) १७ आकाश क मार्ग ॥ १४ ॥ १८ राणा की सेना १९ अघकर
 से भागते हैं २० शीघ्र ॥ २५ ॥ २१ दृढ पूर्वक ठहरे ॥ ३५ ॥

पितामह मोहि गिन्यौं सिमु बर्ग, दयो करुणाकरि दुर्लभ रवर्ग ॥ ३६ ॥
 बच्यो ऋग्विल जो मम आयु बहोगि, मिलौं तुमको सु घटी पल जोरि
 तज्यो तिहिं याविधि अकिख कुमार, पग्यो भट औरनपै रन प्यार
 दुर् हत्यन भागत खगन दाय, गयो बहु बैरिनके असु खाय ॥
 घनी अरि नागिन कंकन भागि, घने मदमत ममतंगन मागि ॥ ३८ ॥
 तज्यो प हलो वह कंकन चाहि, नयो बलि बंधिय अच्छरि व्याहि
 तज्यो इम सालम मानुज देह, लयो सुर विग्रह नूतन नेह ॥ ३९ ॥
 उदैपुगके बड बीर पचास ५०, हनै अरु अल्प गिनै उपहाम ॥
 परे निज बीरहु सत्रह १७ संग, मग्यो इम सालम रवर्ग उमंग ॥ ४० ॥

॥ दोहा ॥

रानाउत भागत वहे, इम रन सालम मागि ॥

रान अमल किय देवली, अप्पन विजय उचारि ॥ ४१ ॥

सगताउत सावर अधिप, मंद सु सुतहिं मगाय ॥

जामोली जगतेमकै, पामर लग्गो पाय ॥ ४२ ॥

तदनंतर कछवाह नृप, आयउ कटक अमान ॥

ग्राम नाम पडेग डिग, दिने मुदित मिलौन ॥ ४३ ॥

बुंदियतै यह सुनि विदित, करिय दलेलहु कुच ॥

कूगम ईस्वगिसिंहमौ, उतहि मिल्यो छक उच ॥ ४४ ॥

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे २ सप्तम ७ राशौ

अर्वाकी की जो मेरी ऊमर बर्चा है वह तुमको मिलो अर्थात् तुम जीते रहो मैं मरता हूँ यह कहकर सालमासिंह ने उस भारतसिंह को छोड़ दिया और वह चार युद्ध में प्यार करके दूसरों पर गिरा ॥ ३७ ॥ १ प्राण १ मस्त हाथियों को मागकर ॥ ३८ ॥ १ पड़िले का डोहड़ा २ फिर ३ मनुष्य शरीर छाड़ा ४ देव शरीर लिया नवीन स्नेह से ॥ ३९ ॥ ५ छोटों को गिनने से हमी है ॥ ४० ॥ ७ भागतसिंह ॥ ४१ ॥ ८ मूर्ख ९ नीच जामोली नामक ग्राम में जाकर राणा जगत्सिंह के चरण लगा १० जिसपीछे ११ प्रमाण रहित १२ मुकाम ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में राणा जगत्सिंह

राणाजगत्सिंहसेनानीभारतसिंहदेवलीयुद्धकराशावगपनीन्द्रमिह —
कुमारमालमसिंहमराठातज्जनकराणाचरापतनदेवल्युत्पुगकेत्वा
रोपणाकूर्मराजेश्वरीसिंहपण्डेरग्रामशिविरस्थापनतद्वल्लेखसिंहमिलन
१ प्रमो ७ मयूख ॥ ७ ॥ ॥२२८॥

प्रायोन्नजदेशीया प्राकृता मिश्रितभाषा ॥

॥ गगनागनम् ॥

राजामल कूरमनृप सचिव *तथ गो गनपै ॥
अक्खिय कर जोरि चढन कौनकाज घमसानपै ॥
यह मुनि जयसिंह लिखित लै रु गन बच्यो तहाँ ॥
अक्खिय इहि पत्रमौहि जो लखी सु अब हे कहाँ ॥ १ ॥
बुल्लिय सुनि कुम्भ सचिव जवनईस यह जानिकै ॥
अक्खिय लिखि पत्र भूप करहु जगठसुत मानिकै ॥
यों यह नृपता भई सु जवनइद फरमानमों ॥
लोपन तिहि को समर्थ विरचि बैर बलवानसों ॥ २ ॥
अप्पहु नृप नीति चतुर समय देम हिय लाइय ॥
किहि विधि जवनेस हितु समर साज्ज जय पाइये ॥
नार्थ जु निज अनुज ताहि तुम दपो सु पुनि पेखिये ॥
गृह गृह सबके यहैहि राजराति दृढ देखिय ॥ ३ ॥
अनुचर हस्ततो तथापि नृपसमते मव गवर ॥

सेनागत भारतसिंह का देखली में युद्ध करना १ साबर क पनि इन्द्रमिह के
कुमार मालमसिंह का मरना २ उसक पिता का राणा के अग्रणी म गिरना
और देखली में उदयपुर का निजान रोपना ३ कछवाडा के राजा ईश्वरीसिंह
का पंडेन नामक ग्राम में दरे लगाना ४ उसमें गलेजिमिह क मिलन का सात
वा ७ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दासी अटथार्सा मयूख हुए ॥२८॥
५ तथा राणा क पास गया ६ युद्धपर जयसिंह का लिखा हुआ पत्र ॥१॥ ७ ईश्वरीसिंह
का सचिव ८ बादशाह ने यह वृत्तान्त जानकर ९ इस प्रकार, या इसका अर्थ ईश्वरी-
सिंह बादशाह के हुक्म से राजा हुआ है ७ कौन समर्थ है ॥ २ ॥ बादशाह
से युद्ध सजकर ९ आपके छोटे भाई नाथसिंह को ॥ ३ ॥ १० ईश्वरीसिंह

अप्पाहिँ वहिकाय लग्न लैचले सु सठ बावरे ॥
 अब सम बिनता विचार हुकम धर्मगहि दीजिये ॥
 माधव हित रीति राखि कछु मिवाय भुव लीजिये ॥ ४ ॥
 रानहु सुनतहि इतीक गिान वौलण्ठ कछुवाहकों ॥
 राजामल इंद्रजाल बनि विमूढ तजि राहकों ॥
 अकिखय मर लखख ५००००० दैम्म पहुमि माधवहिँ दीजिये ॥
 सुनतहि द्रुत कुम्म सचिव लिखि पटा रु कहि लीजिये ॥
 टोंक नगरको समस्त पगनां सु लिखि योंदया ॥
 रानहु बनि मंद भागिनेय हेत वहही लयो ॥
 तदनंत यह उदंत सुनि अनिष्ट कोटेमहू ॥
 रानहिँ बहकयो विचारि तजिय तथ मुँद लेसहू ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

राजामल कूम्भ सचिव, माया वचनन मंडि ॥
 दिय माधव हित टोंक पुर, लग्न रान मत खंडि ॥ ७ ॥
 तदनु रान जगनेस अरु, कांटापति चहुवान ॥
 दुवरभूपन कूम्भ मिविरे, किन्नो मिलन प्रयान ॥ ८ ॥
 हो पहिले आवन उचित, कुम्महिँ रान महीप ॥
 पै तस पितु सुँव मेटनों, मन्थ्यों प्रथम महीप ॥ ९ ॥
 यातें रान अराहे अब, कानकें तखतग्वान ॥
 रतन छत्र छापितें चल्यो, जँहँ दल कुम्म मिलान ॥ १० ॥
 संग गपन कोटेमहू कूम्भ डेग्न कान ॥

सहित १ माधवसिंह के अर्थ ॥ ४ ॥ २ बलवान् ३ मूर्ख ४ रूपों
 की भूमि ५ ईश्वरीसिंह के सचिव ने ॥ ५ ॥ ६ भानजे के लिये
 ७ जिस पीछे ८ वृत्तान्त ९ प्रतिकूल १० हर्ष ॥ ६ ॥ १० माधवसिंह के अर्थ ॥ ७ ॥
 १२ जिस पीछे १३ कछुवाहे के डेरों पर ॥ ८ ॥ १४ ईश्वरीसिंह को १५ जयसिंह का
 शोक ॥ ६ ॥ १६ सवार होकर १७ सुवर्ण के खासे में १८ छादित (छाया हुआ)
 १९ जहाँ कछुवाहे की सेना के मुकाम थे ॥ १० ॥

मारवाहकेगजाकोईश्वरीसिंहकारूपयेपीछादेना]सप्तमरात्रि अष्टमयुक्त(१३३७)

निज निज भट अदर लये, कैलह जई रु कुलीन ॥११॥
 तँहँ कोटापतिके भटन, किय भटभीरै बिसेस ॥
 कीलनसहित सिरायचे, गिरे ठलाठला ठेस ॥ १२ ॥
 पिणवत यह कोटेस प्रति, कुम्भ मयउ प्रतिकूल ॥
 तिम रानहु अहितहि तक्रिय, मन फट्टिय सह मूल ॥१३॥
 इम रान रु कोटेस दुवर, कूरम डेरन पत्त ॥
 रान चित्त पलटयो समुझि, हुव कोटेस बिरत्त ॥ १४ ॥
 तीन३ सहँस कछवाह तँहँ, सज्जित पिबिख सिपाह ॥
 कोटापति सब सहि रह्यो, किन्नी इन जु कुराह ॥१५॥
 कछुक काल रहि सिक्ख करि, इम दुव २ डेरन आय ॥
 गान पैटालय कूरमहु, पुनि आयउ हित पाय ॥ १६ ॥
 अँह दूजे नृप रान अरु, मिलि कूरम अतिमोद ॥
 बिकैख्यो सँरित बनास विच, वारन जुद्ध बिनोद ॥१७॥
 बुल्लैयो नहिँ कोटेस तँहँ, पातँ अनैखि बिसेस ॥
 विनुहि सिक्ख कोटा गयउ, लुटत बुदिय देस ॥१८ ॥
 इत रानहि कूरम अधिप,अहरि साम उपाय ॥
 टाँक नगर लघुघात हित, अप्पि रु जैपुर आय ॥ १९ ॥
 रानहु पत्तन बनहडा, महिमानी इक मानि ॥
 किंतव कूरमनको ठग्यो, आयो गृह भय आनि ॥ २० ॥
 पट्पात्-मरुपतिसौं जयसिंह दैम्म गुनईस १९ लख लिय ॥
 ते अव ईश्वरिसिंह पिबिखें समय रु पछे दिय ॥

१युद्धजीतनवाले॥१२वीरों की भीखवा घकाघर्षा३मेखों सहित ठेकरे१७स भीड़ की टक्करसे॥ १२ ॥३ईश्वरीसिंह॥१३॥• विरक्त (पीति रहित) ॥ १४ ॥८ईश्वरी सिंह ने ० सजे हुए सिपाही दखकर १० कोटा के पति ने जो कुरीति की वह सप सदन फरके उपरहा ॥ १५ ॥११ राना के घेरे ॥ १६ ॥१२दूजे दिन १४पनास नदी म१५आधियों के युद्ध का कुतूहल१६देखा ॥१७॥१८कोटा के ईश को नहीं बुलाया१९आज करके ॥ १८ ॥ १९ ॥ १८ छुपी कछवाहा का ठगा हुआ ॥ २० ॥ १९ मारवाह के पति (अभयसिंह) से २० रुपये

इत कोटापति अनखि सेन बुंदिय सिर सज्जिय ॥

करि हड्डन एकत्त गुंमर धरि उच्च गरज्जिय ॥

बज्जिय निसान डाहल बिसम यह उदंत जग उज्झलिय ॥

संभर उमेद कोटेस सह क्रमत लैन बुंदिय बलिय ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

नागर द्विज गोबिंद निज, सेनापति कोटेस ॥

तबहि जोधपुर मुकल्यो, लैन मदति बल वेस ॥ २२ ॥

॥ पट्टपात ॥

द्विज नागर गोबिंदराम कोटेस सेनपति ॥

पठयो तब जोधपुर मंडि कैंगर सहाय मति ॥

यहै समय मरुईस लैन बुंदिय दल पिल्लहु ॥

सिर हड्डन आसान करहु कूरम अहि किल्लहु ॥

गोबिंद बिप्र यह पत्र गहि अभयसिंह अंतिक गयउ ॥

बहुदिन बिताय अवसर उचित भूपति प्रति हाजरि भयउ २३

॥ दोहा ॥

कछुक वैयाज मरु भूप कहि, सेन दयो नहि संग ॥

तरकि बिप्र अजमेर तब, आयो मुरारि अभंग ॥ २४ ॥

फकरुद्दोला नाम इक, सबल नवाव सिपाह ॥

पठयो जो गुजरात प्रति, सूबापति करि साह ॥ २५ ॥

जवन पीर जारति करन, आयो वह अजमेर ॥

तासौ मिलि गोबिंद तब, किय रहस्य हित केर ॥ २६ ॥

कहिय बिप्र इक लख १००००० तुम, हमसन रूपय लेहु ॥

संगचलहु चतुरंग सजि, लारि बुंदिय लै देहु ॥ २७ ॥

१ घमंड २ चहुवाण उम्मेदसिंह, कोटा के पति सहित ३ बुन्दी लेने को जाता है ॥ २१ ॥ ४ सेना की अधिक सहायता लेने को ॥ २२ ॥ ५ पत्र ६ सेना भेजो ७ उपकार ८ कछवाहे रूपी सर्प को कीलो ९ समीप गया ॥ २३ ॥ १० मिस ११ क्रोध करके ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ १२ एकान्त वार्ता ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥

यह अगीकरि मिच्छ वह, भयउ सहाय अमग ॥

साहिपुरप सीसोद पुनि, सजि उमेद हुव सग ॥ २८ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

द्विज तव लिखि कोटा पठयो दलै, इततैं हम आवत रन उज्ज्वल

गुज्जर धर सूबापति संगति, पुनि उमेद नृप साहिपुरापति ॥ २९ ॥

उततैं तुम दोऊर नृप आवहु, चह लरन चतुरग चलावहु ॥

दुज्जनसल्ल उमेद भूप दुवर, हह्जनपति सुनि लरन सज्ज हुव ३०

॥ दोहा ॥

खुगली पट्ट नैय धिंज्ज खम, वरस चउदह १४ बेस ॥

निहर सज्पो उम्मेद नृप, दुपहर जेठ दिनेस ॥ ३१ ॥

रैसा रसातल बोरि दिय, केनकनैन बुध कूर ॥

अव उमेद किरिगैज इहि, सज्पो उधारन सूर ॥ ३२ ॥

रैसा दीपकुमरी सहित, कोटा मातहिं रक्खि ॥

सानुजै भूपति सज्ज हुव, अवनि लैन निज अक्खि ॥ ३३ ॥

सक इक नभ वसु ससि १८०१समाँ, मिलि द्वादसि १२सुँचि मास

कोटापुर सज्जिय कटकै, निहर करन अरि नास ॥ ३४ ॥

इतिश्री वराभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणो सप्तम ७ राशौ रा-

णाशिविरकूर्मसचिवागमनमाधवसिंहार्थपचलक्षरौप्यकाऽऽर्घटोडन

१ अगीकार (मजूर) २ साहिपुरा का पति ॥ २८ ॥ ३ पत्र भेजा ४ साय ॥ २९ ॥ ३० ॥

५ शस्त्रविद्या ६ म चतुर ७ नीति चतुर ८ धातुजवाला ९ क्षमा रखनेवाला

१० उपेष्ट मास के दुपहर का सूर्य ॥ ३१ ॥ ११ बुधसिंह रूपी द्विगणपति (द्विगण-

कुस) ने १० भूमि को पानाल में डुपो दी थी जिसको फिर १२ पाराह अवतार

की भौंति उम्मेदसिंह १३ चढार करने (निकालने) को सजा ॥ ३२ ॥ १४

पाहिम १५ छोटे भाई सहित १६ अपनी भूमि लेना कह कर ॥ ३३ ॥ १७ सम्यक्

१८ आपाद १९ सना सजी ॥ ३४ ॥

श्रीधनभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में राणा के डेरे पर
कछवाहे के सन्धिय का आना और माधवसिंह के अर्घ पाषाण रूपों के मूल्य

गरदेशलिखनराणानिवेदनतन्मायाजगत्सिंहमोहनतत्पूर्वजयपुगशि-
विरागमनकोटेश्वरदुर्मनीभवनबुन्दीदेशधाटिपातनाऽनुकोटाऽऽग—
मनकूर्मराजजनकनीतमरुदण्डद्वयप्रत्यर्पणमहारावसहायार्थगोविं-
दरामयोधपुरप्रैषणसाहिपुरेश्वरादिसहिततत्प्रत्यागमनबुन्दीविजया-
र्थहृद्वेन्द्रसेनसंचयनमष्टमो ८ मयूखः ॥ ८ ॥ ॥ २८० ॥

प्रायोन्नजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ भुजङ्गप्रयातम् ॥

सटां धूनि कै सिंह उम्मेद सज्ज्यो, गदा लै कि दुज्जोधैपं भीम गज्ज्यो
बिडोजा मनो जंभेपं छोह छायो, लग्यो लंक कै अजनीको लडायो
किधौ कुंडलीपै बली पन्नगासी, रिंसानो कि अंधारपै तेजरासी ॥
किधौ सिंधुके सूनूपै संभु तंड्यो, मनो चंडपै कालिका कोप मंड्यो २
जटाजटै बीरभद्रसै जग्ग्यो, महासेन कै क्रौंचको लैन लग्यो ॥
फटाटोप कै रागपै नाग किन्नो, कुंवेलाश्व कै धुंधुपै बाव दिन्नो ॥३॥

(हाँसिल) काटाकनगरका देश लिखकर राणा की नजर करना ? उसकी इन्द्र-
जाल में रानाका ठगा जाना २ राणा जगत्सिंह का पहिले ईश्वरसिंह के डंग
आना ३ और कोटा के पतिका उदास होकर बुन्दी का देश लूट पीछे कोटे जाना
४ ईश्वरीसिंह का, पिता (जयसिंह) के लिये हुए मारवाड़ के दंड के काय
पीछे देना ५ महाराव का सहाय के अर्थ गोविन्दराम को जोधपुर भेजना ६
शाहपुरा के पति सहित उसका पीछा आना ७ बुन्दी को विजय करने के
अर्थ हाडो के इन्द्रका सेना संचय करने का आठवां ८ मयूख समास हुआ
और आदि से दोसौ निवासी २८ मयूख समास हुए ॥

१ उम्मेदसिंह खपीसिंह गरदन के केस धुजाकर सज्जित हुआ, किनां गदा
लेकर २ दुर्योधन के ऊपर भीमसेन ने गर्जना की ३ मानों जंभासुर पर इंद्र क्रो-
धित हुआ किनां लंका के ऊपर ४ अजनी का पुत्र (हनुमान) लगा ॥ १ ॥ किनां
५ सर्प के ऊपर बलवान् ६ गरुड़ किधू ८ अंधेरे पर ९ सूर्य ने ७ क्रोध किया
किनां ससुद्र के १० पुत्र (कामदेव) पर शिव ने ११ गर्जना की, मानों चंड नाम-
क दैत्य पर कालिकाने क्रोध रचा ॥२॥ १२ मानों शिव की जटा के जूट से १३ वीर
भद्र उठा किनां १४ स्वामिकार्तिक १५ क्रौंच नामक पर्वत को लेने लगा अथवा
बडा सिचाण पत्नी क्रौंच पत्नी को लेने लगा किनां गिरनारी राग पर सर्प ने १६
फण का आटोप (झूठ) किया किनां १७ कुवलाश्व नामक राजा ने १८ धुधु राक्षस

कि जो हैहयाधीमर्षे रामकुप्यो, किधौ राम लकेसके आँजि उप्यो ॥
 रच्यो चाप गाडीव टकार रज्यो, गज्यो के गुंढाकेस राधेय गज्यो ॥४॥
 सज्यो कन्ह के साहगोरीसे सत्यै, मुग्घो लगरी जानि जैचद मत्यै ॥
 धक्यो सोखिवे सिंधु घातापि ध्वसी, अरघो ब्रह्मपै वालि ज्यो इद्रअसी ॥
 बलाधीसे भुलौन यो भूप बह्व्यो, चमू संकुली भेद ज्यो मेघ चह्व्यो ॥
 लगे सान कम्भान धारा लो धारी, भ्रमासक्त दज्जै भरै फूल भारी ६
 लौगे गौय नोवसिपै घाय लगौ, भराजातेठ्ठे सप्यैके दर्प भगौ ॥
 पताका खुली मत हत्योन मत्यै, मजे डाकिनी प्रेत बेताल सत्यै ७
 घुरा टोप सन्नाह विंकात धारै, डचै चाप धाँधाँ निसानाँ उतारै ॥
 दगाँवोन आरुढ के तोप दगौ, जैटा ज्वालकी माल ज्यो उँज जगौ ८
समै कैल्पको भो डिग्यो रतैतान्, भयो दीहके भैसके बेस भानू ॥

पर दाव दिया ॥ ३ ॥ किधा कार्तवीर्य (सहस्रार्जुन) पर १ परशुराम ने
 प्राण किया किना राघव के २ युद्ध में रामचन्द्र को भावमान हुए किना गाडी
 व धनुष की टकार करके को भावमान ३ अर्जुन ने ४ कर्ण को मारा अथवा
 दबाया ॥ ४ ॥ ५ किना गोरीशान के साथ पृथ्वीराज का काका कन्ह सज्ज
 त हुआ ६ किना पृथ्वीराज का सामंत लगरीराय कलोज के राजा जयचंद्र पर
 युद्ध किना समुद्र को सुखाने के अर्थ ७ घातापि गजस का मारने वालो
 (अगस्त्य ऋषि) कोषित हुआ अथवा ८ इन्द्र के अशषाला वालि नामक पद-
 रा का राजा ब्रह्म राक्षस से अष्टा ॥ ५ ॥ इसप्रकार ९ आढायला नामक
 पर्यंत का पति भूमि लेने को यद्वा और जैसे ११ भादवा का मेघ चढ़े तैसे सेना
 १० भरगई १२ सकलीगर साण को भनकाने लगे जिस से अग्निकण कड़कर
 १३ साय को फेरनेवाला सकलीगर जलने लगा ॥ ६ ॥ १४ लड़ी लगकर
 (निरंतर प्रहारों से) नोषत पर घाई लगी १५ अथवा लडो ऐसा कहकर नोष
 तो पर घाई लगी १६ भार से पीड़ित होकर १७ शेषनाग का घमड़ भगा
 (यद्वा भार से पीड़ित होने के सपथ से शेषनाग का ग्रहण है) ॥७॥ १८ युद्ध का
 घुर लींचनेवाले धीर टोप, कवच धारण करने लगे १९ दिशा दिशाओं में धनु
 पों को खैंचकर निशाना उतारने लगे २० शरणाँ पर चढ़ीहुई कितनी ही
 तोपें दगती हैं सो मानों ज्वालामाला की २१ शिखा २२ कार्तिक माम में जग-
 ती है ॥ ८ ॥ २३ प्रलय का समय होकर २४ सुमेरु पर्वत ढिगा और दिन के
 २५ नक्षत्रेश (चंद्रमा) के रूप से २६ सूर्य होगया, कितने ही शत्रुधारी

धरें कुंकुमी चैल के सस्त्रधारी, नचैं मोद के व्याहिबे स्वर्गनारी ॥ ९ ॥
 बनें पिछि बेतंडे होदे बिसाली, रचैं जीन बाजीन के पंखराली ॥
 धुजादंड हत्थीनपैं बैशा बहे, मनौं सैलके शृंगपैं ताल ठहे ॥ १० ॥
 लची मेदनी राग सिंधून लगगे, भ्रमैं भुम्मियां भुम्मिकों छोरि भग्गे
 परी त्रास मेवास आवास पंती, बढी यौ बलाधीसकी जोर बंती ॥ ११ ॥
 घुरैं गज्ज दंती खुलैं सज्ज घोरे, डकेती रचैं चारके हत्थ डोरे ॥
 जरी आपकैं तोप जंजीर जाली, करैं पिक्खि उच्छाह काली कंपाली
 ॥ दोहा ॥

जंगर टोप बाहुलैं जटित, हुलसि सूर अंसि हत्थ ॥
 सजिय सेन बुंदिय सुपहु, सह कोटेस समत्थ ॥ १३ ॥
 ॥ षट्पात् ॥

गज मत्तन गैरदाय मिलिग बिरुदाय महाउत ॥
 पालकाप्य आगम प्रभाव जैव पाव दाव जुत ॥
 नट कछनी कछि निडर मल्ल रन निपुन महाबल ॥

१ केसर के रंग के रवस्त्र करते हैं और हर्षकरके ४ अम्पराओं को व्याहने के लिये
 नाचते हैं अथवा वीरों को विवाहने को हर्ष करके अम्पराएं नाचती हैं ॥ ९ ॥
 ५ हाथियों की पीठ पर बड़े हांदे कसते हैं और घोड़ों पर जीण और ६ पा-
 खरों की पंक्ति लगाते हैं, हाथियों पर ध्वजा दंड के ७ घांस बहे सो मानों
 पर्वत के ८ शिखर पर ताड़ के वृक्ष ९ खड़े हैं ॥ १० ॥ वीर रस का सूचक
 सिंधवी राग लगकर १० भूमि चलायमान हुई भोमियं भ्रमकर भूमि को छांडकर
 भागे ११ लुटेरे और चोरों के स्थानों में त्रास पडकर वह त्रास उनके घरों में
 १२ प्राप्त हुई, इस प्रकार १३ आडाबला के पति के जोर की १४ घाती बढी ॥ ११ ॥
 १५ हाथी गरजना करके घूमे और घोड़े सज्जित होकर खुले जो १६ चाकरो के
 हाथ में १७ डोरों से बंधे हुए कूदने लगे १८ शांभा युक्त करके तोपों को जंजी-
 रों की जाली में जड़ी जिनको देखकर कालिका और १९ शिव उत्साह करते
 हैं ॥ १२ ॥ २० कवच (जगड़) टोप और २१ बाहुत्राण (दस्तानों) से जड़े हुए
 वीर २२ तरवारें हाथ में लेकर हर्ष युक्त होते हैं ॥ १३ ॥ मस्त हाथियों को २३
 घेरकर उनको बिरुदाकर महावत मिले २४ पालकाप्य सुनि के किए हुये शा-
 स्त्र (हस्त्यायुर्वेद) के प्रभाव से उन महावतों के पग दाव और २५ शीघ्रता से युक्त

आडपेच रचि अतुल अग भसमी धरि उज्जल ॥
 त्रयरेख अलिक नांगज तिलक करि मनहुँ पिसाच कुल ॥
 इमपाल गयउ बिकराल इम वारिन ढिग डकैत बहल १६
 लागि दुकच्छ लगोट कठिन बजरग तग कमि ॥
 दड औचि दस बीस फैंकि मुद्गर बिद्या बसि ॥
 भपन विविध बनाय अग उछटाय औँड भरि ॥
 प्रान त्रान कारन पुकारि केसव प्रनाम करि ॥
 गंजबाग हत्थ निहंभर गुमर आयउ सिर गौरव अलप ॥
 मौरुत प्रजात बदर मनहुँ मदेर पर तिनिय मलप ॥ १५ ॥
 इम कलौप हुँत आय अक्खि विरुदन आधोरन ॥
 फोजों नौयक फीलै फते अप्पहु जस जोरन ॥
 जय व्यजंक भंजकै कपाट बंक गढ गजक ॥
 अब तेरे सिंग पार भार रक्खिय रन रजंक ॥
 आरुँहि मलगि ।वरुदाय इम भट मिलाय लिय मदभरन ॥
 कहि जैनक नाम बुल्लिय कुसल कुभत्थल अप्पलि करन १६
 फुरत अग फटकारि रग रज मारि रुमालन ॥
 अति मेवँक आमलन जाल मडिग जगलन ॥

हैं १ छलाट म नीन रेखायाला २ सिंदूर का मिलक किये हुए ३ महाबत
 ४ हाथियों के ठाणों में " घारी तु गजबबने त्यमर " ५ कूदते हुए ६ बहल
 गये ॥ १५ ॥ ७ घमड भरकर = प्रशा की रक्षा के लिये परमेश्वर को प्रशा
 म काके ८ बड़ा अक्रुश हाथ में लेकर १० घमड से भर हुए ११ थोड़े भार
 से हाथी के मस्तक पर आये सा मानों १२ पवन के १३ पुत्र (इन्द्रमान्) ने १४
 मंदराचल पर मलगली ॥ १५ ॥ १५ हाथी के कलावे पर १६ शीघ्र आकर
 १७ महाबतों ने उन हाथिया की स्तुति की १८ सेनाप्रा के पति १९ वे हाथी!
 यश को जोड़ने के लिये विजय देना २० जयक प्रकाश करने वाले २१ कैंबाओं को
 तोड़ने वाले २२ युद्ध में प्रीति करने वाले २३ बंधकर २४ हाथियों को २५ पिता का
 २६ हाथों से ॥ १६ ॥ २७ जामाघमान शरीर को २८ अत्यंत काले २९ आम
 छों से और ३० अगल से ३० जाखी (विशेष) रबी

कंठ विचित्र कुरुहेंद बहुगि हरिताल विथारिय ॥
 जंगी अंडुक जोरें दोर डुंगर पय डारिय ॥
 त्रिपदीन गंत नद्विध अतुल लागि कलाप जेवर लसिय ॥
 कुंथ डारि गुंडन सैन्नद्ध करि क्रम धरत हादन कमिया ॥१॥
 सकल हेति सिर सज्जि छिप्र आलापि लुगायउ ॥
 दैदै विरुद दुँरुह घोर धन गज्ज धुगायउ ॥
 बारी बाहिर बाक हाँक बल अचल डगाये ॥
 बढि चरखिन बारुद ज्वाल विकगल जगाये ॥
 हिंजीर लंब अंचन हुलसि बल अमान हरवत बढिय ॥
 मानहुँ अपुव मेचैक मुँदिर कज्जलगिरि जंगम कटिया ॥२॥
 भद्रै १ मंद २ मृग ३ भव्य मिश्र ४ चउ जाति महाबल ॥
 बसाँ लोभ अति वेग सरत उछटावत शृंखल ॥
 बाल पोतै अरु विकै कलैभ मक्कुन अतिकायक ॥
 जूहनाँह जव जोर सज्ज हुव समर सहायक ॥
 गज्जित अनेक उद्धत गुमर बहु सज्जित मंदकल बलिय ॥

१ कपालों पर विचित्र २ हींगलू और हरताल फैलाया ३ चड़े जंजीर ४ जोड़ कर ५ पर्वत के समान फैलाव वाले पगों में डाले ६ रस्सों से तुलना रहित ७ शरीर को ८ बांधा और ९ कलावा लगाकर जेवर से भूषित किया १० झूल (गदरा) डालकर ११ पाखरो से १२ सज्जित करके क्रम पूर्वक १३ रस्सों से छोटे कमे ॥ १७ ॥ उन होदों में सब १४ शस्त्र सजकर १५ शीघ्र १६ खंभों से खोले और १७ कठिनाई से तर्कना में आवे ऐसी स्तुति करके १८ मेघ के समान भयंकर गर्जना करते हुए हाथियों को १९ ठाणों से बाहर २० छोटे घावों से क्रोध दिलाने के बल से निकाले २१ लंबी जंजीरों को २२ अप्रमाण बलवाले २३ अपूर्व काले २४ मेघ अथवा २५ चलते हुए कज्जल के पर्वत निकाले ॥ १८ ॥ २६ भद्र आदि चारों जाति के बलवान् शुभ हाथी २७ हथिनियों के लोभ से २८ सांकल को उडाते हुए वेग से २९ चलते हैं उन हाथियों में कितने ही ३० छोटे ३१ बड़े ३२ तुरत के पैदा हुए ३३ पाठा ३४ मुकने (बिना दांतवाले) ३५ चड़े शरीरवाले ३६ जूथनाथ (यूथ के पति) वेगवाले और बलवान्, युद्ध में सहायता करनेवाले मज्जित हुए, निरंकुश घमंड से गर्जना करनेवाले अनेक बलवान् ३७ मस्त

गभीरवेदि परिणत गजब चतुरगन रच्छक चालिय ॥ १९ ॥
 कतिक ँपाल अतिकोप कतिक उपबाह कुलाचल ॥
 ईसादत अनेक बढिग घुम्मत समीर बल ॥
 भरत प्रवृत्ति पटान मौर करटन भननकत ॥
 अरु कंदुक जिम उडत भाट अंदुक भननकत ॥
 फटाकरि सुडि बमथुन फुहरि पच्छिन नभ छिरकत प्रकट ॥
 बुदीस सेन भ्रैग ति बढिग कमठानन तजि पीनकैट ॥ २० ॥
 अदि फन जिम आटोप रचत पुक्खर सिर रक्खत ॥
 दग लघु दीरघ दिष्टि चत्तत मोचाफल चक्खत ॥
 बगर कैनक विखान जटित अति जेव जवाहर ॥
 आधोरन आसनन बीतें मारत हकत बर ॥
 चूलिका हरित चित्रित रुचिर अच्छिंकूट पीत रु अरुन ॥
 बुदीस हुकम हकिय विविध तोर जोर बौरन तरुन ॥ २१ ॥
 नील हरित निज्जान कतिक कैरटन कलमासन ॥
 कतिक अवग्रह कपिस अधिक रोहित कति आसन ॥
 अति कडार औरच्छ विसद वादिस्थ विराजत ॥

हाथी सञ्चित हुए १ अकुश वहीं माननेवाले और गजब करनेवाली
 निरक्षी घात करनेवाले सेना के रक्षक हाथी बने ॥ १९ ॥ २ कितने
 ही पुष्ट हाथी ३ सवारी के पर्वत ४ लगे दातों वाले ५ पवन के समान
 चलवाले ६ पटों से ढाण का प्रवाह करता हुआ ७ गडस्थलों (कपोलों) पर
 ८ अमर बढते हुए ९ गेद के समान उखती है १० सुड के जलकणों की
 फुहार से आकाश में पक्षियों को छिड़कते हैं ११ पुष्ट (मोटी) कमरवाले ख
 भालों (खर्भा) को छोड़कर १२ आगे बढे ॥ २० ॥ १३ सर्प के फण के समान
 १४ सुड के अग्रभाग का मस्तक पर छत्र किये हुए छोटे नेत्र और लघी
 १५ दृष्टिवाले १६ फलवृक्ष के फल को खानेहुए १७ सुषण के पैगड १८ दाता
 में जडेहुए १९ महावर्तों के २० अकुश लगान और पैरों से हलने से भेट चख
 ते हैं २१ कानों के मूलभाग हरे रंग से रगेहुए २२ नेत्रों के भाग पीले और
 लाल रंग से रगे हुए २३ बड़े प्रताप और बलवाले तरुण हाथी ॥ २१ ॥ २४
 नेत्रों के पास नीला और हरा रंग २५ कपोलों पर काजा रंग २६ छलाट पर
 काजा और पीला मिखाहुआ रंग २७ पीतवान पर पीला २८ कुभस्थल के

पीत अरुन प्रतिमान लखन *सुरगुरु †कुज लाजत ॥
 ‡विदुदेस हरिन पालास बनि §वातकुंभ नील रू विसद ॥
 ‖दीस संग हरवल बढिग ¶मातंगप इम अगत मद ॥२२॥
 +तलपन पीन रू तुंग छजत -रीढक पर छादित ॥
 कच्छा रेसम कठिन नद्ध होदन घन नादित ॥
 भुकि कतिकन भंडाल कतिन मेघाडंग कसि ॥
 सिंहासन कति सज्ज लंब हिंजार अवर लसि ॥
 डाकन अमान निठिन डगत अगत जंग अमरख फलक ॥
 उम्मेद हुकम घुम्मत अतुल इंकिय इम हथिन दलका ॥२३॥
 मिलि अनेक मंदुरन प्रीति मंडिय हय पालन ॥
 फलक खेह फटकारि देह फटकारि दुमालन ॥
 दै खलीन विरुदाय अस थप्पलि कर ओपित ॥
 जंगी पक्खर जीन ऐचि तंगन आरोपित ॥
 गजगाह मंडि चित्रित गहर लहरदार लूमन ललित ॥
 आनिय तुरंग कंपन अरिन कृत कैजाक कंपन कलित ॥२४॥
 गौरुत रूप गजगाह उडत मानहुँ उरगारिन ॥
 पय नेउर रव प्रचुर ललित मंडत बहु लासन ॥
 खुगासान ताजिक तुखार भाडेज भुम्मि भवे ॥

नीचे का भाग स्वेत * पीले रंग से बृहस्पति और † लाल से मंगल लज्जित होता है ‡ कुंभस्थल के बीच का भाग काला और हरा § कुंभ का अधोभाग, नीला और स्वेत ॥ हाथियों के पति ॥ २२ ॥ + बिछोने मोटे और ऊँचे - पीठ पर छाये हुए शोभा पाते हैं, रेसम के गुच्छे ? दृढ़ बंधे हुए ? भंडे ३ छायावाले होदे ४ लंबी जंजीर ५ दूसरे हाथियों के शोभायमान है ६ साँटमारों के क्रोध दिलानेवाले प्रहारों से कठिनाई से डिगते हैं ७ क्रोध की ॥ २३ ॥ ८ हयशालाओं में ९ लगाम देकर १० कंधे धापल कर ११ शोभायमान करके १२ आरोपण किये १३ युद्ध करनेवाले भंग में १४ प्रसिद्ध ॥ २४ ॥ १५ पाँखों के रूप से गजगाव उडते हैं १६ सो मानों गरुड़ उडता है १७ बड़ा शब्द १८ नृत्य १९ उत्पन्न

वनायुज रु वाल्हीक जात काबोज महांजव ॥
 केकान गोजिकानहु कतिक प्रोढहार धावन प्रबल ॥
 हाजरि हडद नृप अगग हुव पलटत पलै न लगत पैला ॥ २५ ॥
 आजानेय अनेक पारसीकहु विनीत पय ॥
 पंचभद्र जय पूर अष्टमगल सुलाभ अथ ॥
 चैकवाक जवचपल मल्लिलोचन अछेह मन ॥
 कति किंपाह कांकाह पीत खुंगाह सुद मन ॥
 आलालै कपिले वेलैलाह अरु हांलक सानै हैंलाह हय ॥
 पगैल कुलाहैं उकनैह पुनि वारुखान अति रय सु वय ॥ २६ ॥
 सुलभ लाट अरु सीस कध मणिबध कयितै क्रम ॥
 देस नाभि दिव्य देस भांति मुख त्रिक उत्तम ध्रम ॥

१ उत्पन्न २ घड़े घगवाले ३ कितने ही गोजिकान के घोड़े
 ४ गल पर्वक दौड़ने में निपुण ५ पलटने में नेत्रों के पलकों की भां
 ति ६ चण भी नहीं लगत ॥ २५ ॥ ७ मार्ग में शिवा पाये हुये कित
 ने ही सुदर घोड़े ८ चारों पैर और ललाट जिसका श्वेत होवे उस घोड़े को
 पञ्चमगल कहते हैं ९ चारों पैर, ललाट कंसवाली मद्दू और पालछा जिस
 घोड़े का श्वेत होवे उसको अष्टमगल कहते हैं और मतान्तर से मद्दू के स्थान
 में श्वेत छाती को अष्टमगल मानते हैं १० लाभ के अर्थ ११ पीले रंग के
 घोड़े के, नेत्र और पैर श्वेत होवे उसका नाम चक्रवाक है १२ वेग में चल
 १३ महुवा रंग के घोड़े के चरण और मुख श्वेत होवे उसको मल्लिलोचन अ
 थवा मल्लिकाक्ष कहते हैं १४ कुमेत १५ श्वेत (नुकर) और पीले १६ श्याम
 वर्ण के (लकड़ा) १७ नीले १८ नीले पीले मिले हुए रंग के अथलख १९ पीला
 और श्वेत अथलख २० पीले और हरे रंग के अथलख २१ सुवर्ण के अथवा कमल
 के रंग के २२ विविध विविध रंगवाले अर्थात् अनेक मिले हुए रंगवाले २३ काच
 के समान कान्तिवाले २४ काळे घुटनोंवाले २५ पीले और लाल रंग के अथल
 ख २६ समवे २७ अत्यन्त वेगवान् और श्रेष्ठ अथवावाले ॥ २६ ॥ २८ गले का
 मणिपर्ण २९ कहे हुए क्रम से ३० नामी के स्थान पर और ३१ हृदय के स्थान
 पर ३२ शोभापमान है मुख पर तीन ३३ भवरी जिनके

रंध्र जंठर गल्ल रुचिर विहित आवर्त्त विराजत ॥

चन्द्रकोस जुत चपल लखत नञ्चत मन लाजत ॥

कति इन्द्र पदम लच्छन कतिक चक्रवर्ति चिन्तामनिक ॥

हुव सज्ज दवत छोनिय हयति' फवत माल यालन फैनिक २७

इक्क बिजय आवर्त्त बहत इक्क सुकल महाबल ॥

इक्क कुसुम आमोद इक्क चंदन भव उज्जल ॥

इक्क लोहित इक्क असित इक्क सारंग सेत इक्क ॥

पिंग इक्क इक्क पीत इक्क पालास एत इक्क ॥

खुरअग्ग भुम्मि सज्जित खनत बलि गज्जत ऊरध वेदन ॥

चहुवान राज आयसं चलिय सहंसन हय जव जय सदन २८

दिपत पैरुख चउ४ दह रंग कालिक रंद वाग्ग १२ ॥

१ घोड़े के कुच्छि (कुँख) और नाभी के मध्य प्रदेश का नाम रंध्र है २ पेद पर भाले पर सुन्दर और ४ उचित ५ बालों की अवस्थिति शोभा देती है ६ जिस घोड़े के ललाट में दो भवस्थि होती हैं उसको चन्द्रकोस कहते हैं ७ जिस घोड़े के कंठ में दक्षिण तरफ दो भ्रमरियां होवें उसको इन्द्र कहते हैं और जिसके कंधे के एक ओर एक भ्रमरी होवे उसको पद्म कहते हैं ८ जिस घोड़े की नासिका पर एक अथवा दो भ्रमरी होवे उसका नाम चक्रवर्ति है ९ कंठ के मणि-यें पर भ्रमरी होवे उसको चिन्तामणि अथवा देवमणि कहते हैं १० भूमि को दबाते हुए ११ ते (वे) घोड़े १२ सर्पों की माला के समान जिनकी केशवाला शोभा देती है ॥ २७ ॥ ॥ १३ बिजयमणि नामक भ्रमरी (भ्रमरी) वाला जो थापे पर होती है १४ धारण करता है १५ भ्रमरी विशेष १६ सुगंध में पुष्प की गन्धवाला, जिसका ब्राह्मण वर्ण मानते हैं १७ सुगंध में चंदन की गंधवाला जिसका क्षत्रिय वर्ण मानते हैं १८ लाल रंग वाला १९ काले रंगवाला (लकड़ी) २० अनेक (चित्र विचित्र) रंगवाला २१ श्वेत (नकरा) रंग वाला २२ पीतल के समान पीले वर्णवाला जिसका नाम विशेषकर सोवन कलश रक्खा जाता है २३ सामान्य पीले रंगवाला २४ हरा रंगवाला २५ कर्पूर (अवलख) रंगवाला २६ सज्जित हुए पीछे अगले खुर से भूमि २७ खोदनेवाला २८ ऊँचा मुख करके गाजनेवाला २९ आज्ञा से ३० वेग के धौर जय के घर ॥ २८ ॥ (ऊपर के दोनों छन्दों में शुभदायक घोड़ों के लक्षण कहे हैं ३१ एक पुरुष (जबदा, परस) ऊँचे शोभायमान हैं ३२ काले रंग की चार दाढ़ें ३३ दांत

अगुल मत १०० बंपु उच्च कुच्च संगर जयकारह ॥

वीससत्त २७ मुख निहित करन अगुल खट ६ केतक ॥

चाप उपम चालीस अष्ट ४८ मित कध उपेतक ॥

चउवीस २४ पिष्टि आपत रुचिर कलित तीस ३० अगुल कमर
बालाधि प्रलव चालीस वसु ४८ चैल धुनाय ढारत चमर १२९१

चउ ४ दीरे ४ चउ ४ रत्त च्यारि ४ सुच्छमें चउ ४ उन्नत ॥

च्यारि ४ ईस्व नैत च्यारि ४ च्यारि ४ आर्यंत मुनीन मत ॥

मुख १ भुज २ केस ३ निगाँल ४ सेफे १ जीह २ रु ओठ ३ कैंकुद ॥

कंगन २ पुच्छ ३ पयोकोष्ठ ४ प्रोथ १ सेंफर २ गोधि ३ तथा गुंद ४ ॥

दुप १ कान वसे ३ अतैर दुहुन ४ कैंत १ उदर २ जानुक ३ कैंकुद ॥

मुख १ खध २ जानु ३ पमुलि ४ महित लच्छन हयन मचात मुंद ४ ॥ ३० ॥

कति किसोर अति जोर कतिक जुव्वन छक डकत ॥

१. अगुल का ऊँचा शरीर २ युद्ध में ३ जय करनेवाला ४ सत्ताईस अगुल लया
५ उपम मुख ६ अगुल के गान ७ केतकी की कली के समान ८ धनुष की उपमा
पाछे अडतालीस अगुल क प्रमाणवाले लये ९ ४८ महिन १० चालीस अगुल लयी
पीठ १० पिदित ११ पालछा लया १२ पल्लता से अथवा पल्लता हुवा, पालछे को
हिलाकर चमर करनेवाला ॥ २१ ॥ शुभदायक घोड़े क १३ चार अग लये १४
चार अग लाल १५ चार अग पतले १६ चार अग उठे हुए १७ चार अग छोटे
१८ चार अग रुके हुए १९ चार अग मोटे चाहिये सो २० बालिहोत्र बनानेवाले
मुनियों के मत से कहें हैं "इन अगों को आगे यथाक्रम से स्पष्ट बताते हैं"
मुख, भुज, केस २१ गला य चार तो लये होने चाहिये और २२ खिंग, जीभ,
आठ २३ तालुवा ये चार अग लाल होना शुभ है २४ दानों कान, बालछा, २५ पैरों
के गाँधे (मोड़े) ये चार अग पतले चाहिये २६ फुरणा (नासिका) २७ खुर (धुम)
२८ ललाट २९ गुदा य चार अग उठे हुए होयें ३० दोनों कान ३१ पासे का
हाथ (पीठ की लयी हुई) ३२ दानों कानों के पीछ का अमर (छेदी) य चार
अग छोटे होयें सो उत्तम है ३३ कूँव (पान्थी, तार पेट) ३४ छुटने ३५ मद्ध, ये
चार अग लुके हुए और मुख, कंधा, घुटना, पाँसली ये चार अग बड़े (लये)
होना ३६ पूज्य हैं और य उपरोक्त घोड़ा क लक्षण ३७ हर्ष कराते हैं ॥ ३० ॥
घोड़ों के कितने ही यद्ये यौवन अवस्था के छक में यद्ये यत्न से कदते हैं

प्रोथं वज्रत पवमानं हुलसि अंबुगं बलि हंकत ॥

धोरित^१ बलिगत^२ धाव इमहि प्लुति^३ अरु उत्तेरित^४ ॥

उत्तेजित^५ पुनि अटत पंचधारन मग प्रेरित ॥

भारत फुलिंग नालन अपटि अतुल प्रसारत उड्डयन ॥

चातुरि मलंग धारत चपल पातुरि गति डारन पयन ॥ ३१ ॥

रजत पत्त खुर रजत ललित अयं पक्क नाल लागि ॥

थित जिम देवल थंभ चरन अति दृढ लगै न चंगि ॥

पुठे गरद प्रपीन रुचिर छतिय परिणाहित ॥

कंध कुटिल कोदंड सजव धंज कसत समीहित ॥

मारत मलंग सेनन मुकुट एनन जव पारत अलप ॥

उम्मेद नृपति अगल अटत मानहु नट भगल मैलप ॥ ३२ ॥

१ फूरणे २ पवन के जोर से चजते हैं और प्रसन्न होकर ३ आकाश में बह कर चलते हैं ४ ऊपर कही हुई घोड़े की पांचों गतियों का नाम धारा है उन पांचों धाराओं में प्रेरणा किये हुए ४ फिरते हैं "उपरोक्त पांचों गतियों की संक्षेप व्याख्या यह है कि चतुराई युक्त सीधी गति (आदम और दुड़की) को धोरित कहते हैं और खाटे स्थलों में अगले शरीर को समेट कर मुख टेढ़ा करके चलता है उसको बलिगत कहते हैं शरीर के अगले और पिछले दोनों अंगों को उछाल कर (चौकड़ी भर कर) दौड़ता है उसको प्लुत कहते हैं उत्तेरित जिसका दूसरा नाम आस्कंदित है, इसमें घोड़ा वगांध होकर न तो कुछ सुनता है और न कुछ देखता है जिसको लौकिक में पट्टी या सरपट कहते हैं, उत्तेजित जिसका दूसरा नाम रोचत है जो मध्यवेग से गोलाकार फिरने को गोलकुंडा कहते हैं" वे घोड़े दौड़ कर नालों से ६ अग्निकण उड़ाते हैं और तुलना रहित ७ उड़ान फैलाते हैं ॥ ३१ ॥ ८ चांदी के पत्रों से ९ शोभायमान खुंग में सुंदर पक्के १० लोहे की नाल लगी हुई और ११ मंदिर के थंभ के समान जिनके चरण जो दृढ़ता के कारण कभी १२ झूल कर (फिसल कर अथवा ठोकर खाकर) नहीं लगते जिनके १३ पुष्ट और गोल पुठे १४ सुंदर चौड़ी छाती १५ धनुष के समान १६ टेढ़ा (झुका हुआ) कंधा १७ समाधित (एकाग्रचित्त) होकर १८ वेग के साथ १९ शोभा बनाते हैं २० सेनाओं के मुकुट वे घोड़े मलंग लगाकर २१ हरिणों के वेग को न्यून करते हैं २२ आगे खलते हैं २३ जैसे भागल से नट मलंग लगावे तैसे लगाते हैं ॥ ३२ ॥

नव *चेरिन नखराल घलत घुम्मर नचि घेरिन ॥

फेट लगत जिन फाला फिरत इत्थिय चकफेरिन ॥

तीप कनीनिय तरल सगल सच्चे मुख सोहत ॥

मजु पसम मखतुल मुकु *विग्रह छवि मोहत ॥

रपं जोर लोन संगर रचक भचक पाणि अहि भुम्भ भर ॥

चरनन नमाय मारत मचक लचक जानि हिंडोले लर ३३

चरखन तोप चढाय चित्र मडिग तिन चारन ॥

सनि आनन सिंदूर पूर सज्जिय गढ पारन ॥

दिपत लव धुजदड जाह र्थतक जिम हल्लत ॥

इक निमेन अनेहे अट्टनवएफैर उगल्लत ॥

विथुरात ज्वाल लालिय बिखम अरि छतिन सालिय उपिते ॥
आलिये अनेक नालिये अतुल कालिय जिम चालिय कुपित ३४

कुभीनेस आनत किनीक मकर रु मइदे मुख ॥

कैरभ सैरभ कति कोले वदन धारत रीस रुख ॥

इकत खिन दरवल्ल हांत दुद्धर नर हल्ले ॥

अचत टुखे गन अगग पिठि मारत गज टल्ले ॥

अर्धपिंड गिलत धटिका उभयवलि दगे न पव्वय वचत ॥

*नवीन लौहिया के समान नखरे करनेवाले † मलग में ‡ स्त्रियों के नेत्रों की पुतली के समान चपल § मुख मचने और सीधे शोभायमान ॥ रेसम के समान सुंदर जिनके शरीर के केस और काच की छविवाले x शरीर से १ मोहित करते हैं २ थग के पक्ष से ३ युद्ध में ४ टक्कर लते हैं और भूमि और वायु पर मचक (टक्कर) पाड़ते हैं ५ होंदे की लज ॥ ३३ ॥ ६ तापों के चाक-रों ने ७ तापों के मुख को सिंदूर में भिजाकर ८ यमराज की जिन्हा जैसी ९ नेत्रों के पक्ष लगने जितने समय में अग्नि की नहीं सहन योग्य ललाई १० फैलाती है ११ शाश्वत १३ तुलना रहित तोपा की १२ अनेक परीक्षायों ॥ ३४ ॥ १४ फण किये हुए सर्प के मुखवाली १५ सिंहमुखी १६ ऊँट के मुखवाली १७ केसरीसिंह के मुखवाली १८ सूयर के मुख को धारनेवाली १९ आगे से पैलों प्रका समूह खैचता है २० जाड़े का गोला २१ दस सेर के (शास्त्र में पाँच सेर

हंकिर्य दलैल उप्पर हलक रव चट्ट चक्रन रचत ॥३५॥
 सब अनीक इस सज्जि अप्प हयराज अरोहिय ॥
 लिय कोटैसहिं तार सार अक्खिय रन सोहिय ॥
 घुरि नोवति घनघाय कलह त्रंबक जय कारन ॥
 बजि कजाक बड बाक हार प्रतिहार हजारन ॥
 संक्रमि अनेक उद्धत सुभट तरिन बैठि चम्मलि तरन ॥
 बुंधसिंह सुवन आदेस बस लगिय मग्ग बुंदिय लरन ॥३६॥
 चम्मलि तट मिलि चक्र पंति छादित जल पोतन ॥
 क्रीडा बहुविध करत सूर छेकत जव स्रोतन ॥
 उडुपन कति आरूढ तिरत कति भेल तंडन ॥
 कतिक आरि बंदूक रचत कुंभीरन खंडन ॥
 दल भीर नीर बलि बलि दुर दिस मरजादन लोपत महत ॥
 सजि सेतु मनहुं दसकंध सिर बंदर जल अंदर बहत ॥३७॥
 अवधिरोज उम्मेद दीप सोदर लछमन दुति ॥
 कोटापति कपिरोज निडर सुग्रीव रचत बुति ॥
 सजि अंगद सिवसिंह बैरिसल्लोत देव सुर्व ॥
 पवन पुत सुखसिंह महासिंहोत धीर ध्रुव ॥

तोक रु प्रयाग नल नील तिम मिलि हंकिर्य जय जंग मन ॥

बुंदिय बिदेहतनया अरथ हठि दलैल रावन हनन ॥ ३८ ॥

का नाम धृती है) १ पहियों के शब्द रचती हुई ॥ ३५ ॥ २ आप
 (उम्मेदसिंह) घोड़े पर चढ़ा ३ युद्ध के बड़े वचन ४ द्वारपालों की ५ नावों
 में २६ चामल नदी को २७ उम्मेदसिंह के हुक्म के आधीन ॥ ३६ ॥ ८ नावों
 से ९ पानी के प्रवाह को १० कितने ही छोटी नावों पर चढ़ ११ अल्ले (नाव विशेष)
 १२ नाव विशेष १३ मगरों का १४ सीमा [ढावों] को ॥ ३७ ॥ १५ उम्मेदसिंह
 है सोतो रामचन्द्र है १६ छोटा भाई दीपसिंह लक्ष्मण है १७ कोटा का महाराज
 सुग्रीव निडर होकर १८ स्तुति करता है १९ बैरिसल्लोत देवसिंह का पुत्र अं-
 गद के समान सजा २० हनुमान २१ बुन्दी रूपी सीता के अर्थ २२ हठवाले
 दलैलसिंह रूपी राक्षस को मारने के लिये ॥ ३८ ॥

तरि इम चम्मलि तोय कटक आरुहि केकानन ॥
 हफिय रन हुसियार वीर वेधत खंग बानन ॥
 चोलुक कति चहुवान जोध कूरम कति जइव ॥
 कति सीसोद कवध भटन मडिय घन भइव ॥
 कोतुक ग्रनेक खुरलिय करत रन दुर्गूह पडित रजिये ॥
 बुधसिंह सुवन अतिजोर वल सठ दलेल उप्पर सजिय ॥३९॥
 चलत रेनु रवि ठकि चक्र चकिन वियोग बनि ॥
 कुभीनेस कसमसत भोग फटत इत भनि ॥
 दिग्गज गन डगमगत जगत सकर समाधि जिम ॥
 उदयि नार उच्छलत तुर्गे गिरि इलत शुर्गे तिम ॥
 जिम फल अनार केन रद जंगध इम भीरुन जल उत्तरिग ॥
 दिस दिस जिहान मडिग दुमन प्रलयकाल सधम परिग ४०
 प्रत्यागेम रवि पवन फिरत लागि लागि बल फेटन ॥
 भुड गजन मडाल भुकत फहरात भुपेटन ॥
 वन जतुव इतवेग रहत थकि थकि जिहि अतर ॥
 चलिंग चक्र इम चढ दबि निज ओर्धे दिगतर ॥

भप सुनि अपार गन भुम्मियन जित तित बढि भज्जन जिकर ॥
 पक्खर न मात गेलन पडुमि नभ न मात सेलन निकैर ४१

१ चामल नदी का जल उतर कर २ सेना ३ घोड़ों पर चढ़ कर ४ बाणा से पक्षियों को
 घेघन करते हुए ५ फितने ही सोलखी ६ यादव ७ राठोड़ ८ शस्त्राभ्यास के खेल
 ९ कठिनाई से तर्कना में भावै ऐसे युद्ध के पद्धति १० शोभायमान हुए ११
 चलवान् सेना ॥ ३६ ॥ १२ सर्प (दोष) १३ फण फटने से खेद के घघन [हाय]
 कह कर १४ ऊँचे पर्यंतों के १५ शिखर १६ जाने का १७ दातों से कुचलने से पानी
 उतरना है ऐसे १८ कायरों का जल (पराक्रम) उतरा ॥ ४० ॥ १९ उछटा गमन
 २० सना फी फेट से २१ मूढ़ २२ घन के जीयों का घेग हत होकर २३ इस प्रकार
 भयकर सेना बली २४ अपने समूह से २५ भूमि के मार्गों में पाखरें नहीं
 समाती हैं और २६ आकाश में माखों के समूह नहीं माते हैं ॥ ४१ ॥

निज हठ कच्छप निर्दुर दत्थ बासुकिं छवि छावत ॥

तिम मंदरं तंकाट भिंदुर करवाल भ्रमावत ॥

दल कोटापति दितिंज अदिति संभव दल अप्पन ॥

उद्यम गति अनुसार थोक सम्मलि फल थप्पन ॥

जागरं बिथारि गंद अरि जनन कहि कहि गुन आगर कथन
चहुवान इंद्र नागर चढिय मजु बुंदिय सागर मथन ॥ ४२ ॥

प्रलय पौन परमान दिपत हंक्रिय दल दुद्धर ॥

मिलिय आनि मग मध्य कतिक परं भट निवेदि कर ॥

सक इक नभ बसु सोम १८०१ मास आसाठ पक्ख सित ॥

तिथि द्वादसि १२ दल तुंग हलिय रन मत्त लारन हित ॥

छिति अप्प लैन रस बीर छकि द्रुत सुकाम इक १ बीच दिय
बड अंतरीपे जलजाल बिधि नृपवर बुंदिय बिंठि लिया ४३ ॥

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमः पाराशौ कोटेश
सहितहल्लेन्द्ररावगडुम्मेदसिंहसज्जीभवनसेनासौभाग्यविजयाभिनि-

१ अपना हठ है सोही कठोर कच्छप है २ हाथ है सोही बासुकि सर्प की शोभा
पाते हैं ३ वज्र रूपी पतरवार को भ्रमाता है सोही ४ मंदराचल रूपी ४
संथनदंड (रई) है कोटा का पति है सोही ७ दैत्य है "कोटा का पति शत्रुशा-
ल उम्मेदसिंह से छीनकर बुंदी को अपने वश में करलेवैगा इसकारण उसको
दैत्य लिखा है" ८ उम्मेदसिंह की सेना है सोही अदिति के पुत्र (देवता) हैं
चलने के अनुसार (बुंदी पर चलता है सोही) समुद्र के मथने का उद्यम है
और सेना का शामिल होना ही मथन के स्थल का स्थापन करना है, शत्रुओं
में ९ जागरण रूपी १० रोग फैलाकर ११ गुणों के समूह का (अपनी सेना
के गुणों का) कथन कहकर चहुवाणों के इंद्र (उम्मेदसिंह) रूपी १२ परमेश्वर
बुंदी रूपी १३ समुद्र के मथने को चढा ॥ २४ ॥ १४ कठिनाई से धर्षणा की
जावे ऐसी सेना चली १५ शत्रु (दलेलसिंह) के उमराव खिराज देकर १६ शत्रु
पक्ष १७ अपनी भूमि लेने के अर्थ, जल के समूह में १८ बड़े टापू के समान
बुंदी को घेर ली ॥ ४३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में कोटा के पति सहि-
त हाडों के इन्द्र रावराजा उम्मेदसिंह का सज्जित होना १ विजय करने वाली

जसेरसिंहके युद्धका वर्णन] सप्तमराशि दशममयूख (११५५)

र्यागागजहयनालीयन्त्रसुभटादिवर्णनचर्मगवतीलघनमार्गेक१प्रपा-
तकरणादिगन्तरातइप्रसरणाबुन्दीवेष्टननालीयन्त्ररणापारम्भणनव
मो ९ मयूख ॥ ९ ॥ ॥ २९० ॥

प्रायेन्नजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ पट्पात् ॥

धकि पावकं धमचंक जाल तोपन जजीरित ॥

जपि जपि क्रदनं जाप पुर सु तपि तपि हुव पीरित ॥

परत वंप प्राकार गिरत कपिसिर उडि गोल्न ॥

वरत द्वार बाजार मार मारुत मक मोल्न ॥

बिखरत गंवात्त जालिप बहुल मरत सौधं मडप मपट ॥

मानहुं बिनास भावक मचिग लकापुर पावकं लपट ॥ १ ॥

डिगि पव्वय कटि कूट तपिग उन्नत तारागढ ॥

बढिग माल बिकराल रचिग सगर रावन रेंड ॥

नेरै परिग हटनारि सकल पुरजन अति त्रासित ॥

जरत गेह बढि ज्वाल् प्रबल् बारूद प्रकासित ॥

छिज्जत नियान पानिय छिनकि हुव धूमित वस१०मित हैरित ॥

सौभाग्यवती सेना का निकलना १ हाथी, घोड़े, तोपें, सुभट आदि का वर्णन
३ चामल नदी लाधकर पीय म एक मुकाम करना ४ दिगन्ता तक भय फैला
कर बुन्दी को घेरना ५ तोपों के युद्ध का प्रारम्भ होने का नवमा ९ मयूख स-
माप्त हुआ और आदि से दो सौ निबै २६० मयूख हुए ॥

जजीरों से जड़ी हुई तोपों की जाल (समूह) से २ युद्ध में १ अग्नि जला १
रोने के पवन कह कहकर ४ पीछा युक्त हुआ और गोलों से ५ धूलकोट ६ चूना
से बना हुआ पक्षा कोट ७ कागरे उड़ उड़ कर गिरने लगे ८ पवन के झकोलों
से ९ झरोखे १० बहुत जालियें ११ महल और घुमटे अग्नि की झपेट से गिर
ते हैं सो मानो १२ प्रलय का भाव मचकर लका में १३ अग्नि की ज्वाला लगी
॥ १ ॥ १४ पर्वत के शिखर फटकर ढिगे और १५ कंचा १६ तारागढ (बुदी के
गढ का नाम तारा गढ है) तप गया १७ रावण के समान पृष्ठ से १८ नगर में
१९ दश ही दिशाएँ धूम युक्त होगई

रुकि जीह दंत*संकट रहत इम बुंदिय दला आवरित ॥२॥
 कटि गोलन परि कूट गिरत जित तित पुनि ऽगोपुर ॥
 गृह ॥ चत्वर शृंगाट प्रचुर प्रासाद तप्यो पुर ॥
 सिंहद्वार संजवन जरत कुट्टिम घन ज्वालन ॥
 बीथी बिपणि बजार दहत अंगार दवालन ॥
 अपवरक कोस अवसधि अटज जगत चंद्रसालन ज्वलन ॥
 होत्रीय काय मानन दहत छवि अलात रचि उच्छलन ॥३॥
 आथरवन आताप मचत फुल्लिंग महानस ॥
 तपि कटाह जिम तेल मनुज कुकत दुख मानस ॥
 आवेसन बैपनी अनेक सिलगत प्रतिश्रय ॥
 पाकपुटिन फलपटु लगत जिम अग्नि सहालय ॥
 गतिर्का बहुल गोसालगृह गंजा पक्कवशा घोखंगन ॥
 मंदुरा चतुर सिलगत अमित जगत द्वार वेदिन ज्वलन ॥४॥

*जैसे दांतों के घेरे से जीभ रुकजाती है तैसे सेनामे बूंदी १ घिरगई ॥ २ ॥ १. घरवा-
 जों के ऊपर के शिखर गिरकर ऽशहर के द्वार गिरते हैं ॥ घर का चौक १ अतुष्यथ
 (चोहटा) २ बहुत ३ महल और नगर तप गया ४ प्रथम प्रवेश करने का द्वार (सिंहपोल)
 ५ सम्मुख चार द्वारवाली चौपाइ ६ छोटे घर ७ बहुत अग्नि से जलते हैं ८ गलिये
 ९ व्यापार की गलियें, बाजार १० दीवारें बहुत अंगारों से जलती हैं ११ बीच
 का घर १२ भंडार १३ औषधिशाला में १४ आश्चर्य उत्पन्न करानेवाला अ-
 ग्नि जलता है इसी प्रकार १५ सब से ऊपर के मकानों में भी १६ अग्नि जल-
 ता है १७ होमालय (अग्निशाला) के शरीर के १८ प्रसाध (सदृश) १९ शोभा
 के साथ अग्नि उछलता है ॥ ३ ॥ अथर्ववेद सम्बंधी (अथर्ववेद में मारण
 मोहन आदि संताप होता है तैसे) अथवा शान्तिगृह में २१ रसोई में २० अ-
 ग्नि कण मचे अथवा रसोई में अग्नि कण उड़ते हैं जैसे शान्तिगृह से उड़ने
 लगे २२ दुःख के मन से कूकते हैं २३ शिल्पशाला (कारीगरों के घर) २४
 नाइयों के घर २५ सभा का स्थान २६ कुंभशाला अर्थात् कुम्हार के आच(भ-
 ट्टी)में भाँलें उठें ऐसी २७ बड़े स्थानों में भाँलें उठती हैं २८ तंतुशाला (जुलाहों
 के घर) २९ गडवां रहने के घर ३० मदिरागृह (कलाओं के घर) ३१ भीलों के
 घर ३२ अहीरों के घर ३३ हथशाला ३४ गजशाला (फौलखाना) ३५ द्वार

गृह अरिष्ट यत्र गृह बेस मडप अगन वट ॥

लागि वासोक अलाव चवत एंडूक चटचट ॥

उत्तरग पुनि अरर थम छत्रिन थहरावत ॥

परिधे बिटके प्रघाशी लगत पावक लहरावत ॥

नैसा रु पटल बैलामिन निकैर इन्द्रकोस दंतक अतुल ॥

प्रघावे बहुरि जालके प्रथिते मजरत इम गेहन बिपुल ॥५॥

कति सह अन्न कुंसूल निकैर सोपान निसैनिने ॥

जरत साजभजीने उडत वनि छार सु नैनिने ॥

पेटा पुनि सपुटक कतिक बर सिल्प करडक ॥

कडेन मुसल कलिजे भति बाहुले चप भडक ॥

इत्यादि सकल गृह उपकरेन दगि अलाव पावक दहत ॥

दगं जन त्रमित यह लखि दुर्गे तहखानन कानने चहत ॥

के बाहर के अघोर आग्न म जलते हैं ॥५॥ १ सूर्यकागृह जापा का घर)
२ तल का घर, उत्तम मडप और आगने का ३ मार्ग ४ शयन के घर में ५
अग्नि शगकर ६ भीमें (दीवार) चटचट करती हैं ७ द्वार के बाहर लगी
हुई काष्ठ की घाघिये/कपाट जलत हैं और छतरियों के धमे घुजत हैं ८ कवा-
डा क रोदने का काष्ठ अगशा (भागल अथवा भागल) ९ घरों में पक्षिया के
पातने क अर्थ काष्ठ क बनाये हुए घरा में ११ बाहर के द्वार में १२ अग्नि श-
गकर लहराती है "अग्नि शब्द पुल्लिङ होने पर भी लोकलुडी से स्त्रीलिङ लि-
खा जाये गा अशुद्ध नहीं है" १३ पाग्मोत (चोकट) अथवा छावणा १४ छजे
(छाजे) १५ खपरळा क आधार बक काष्ठों (मियाणों) १६ के समूह अथवा कू-
टागार (नय के ऊपर के मकानों क समूह) १७ माथा १८ खूदियें १९ कराले
वा खिडकिय २० जालिय, घरों म इसप्रकार बहुत २१ प्रसिद्ध जलती हैं ॥ ५॥
२२ अन्न के भर हुए कोठे २४ सीढियें (जीने) २५ नीसरनिषा के २६ समूह २७
काष्ठ की पनी हुई पुनलिय जलकर २८ अष्ट नेत्रवाली स्त्रियों के नेत्रा में चट-
ती हैं अथवा उन अष्ट नेत्रवाली पुनलियों की मस्मि होकर चटती है २९ पेढियें
(सपूक) ३० दिन्वे ३० कितने ही अष्ट कारीगरी के टोकरे (खखे) ३१ ऊँ की
मूसल ३२ चटाइयें ३३ बहुत प्रकार के ३४ भाखों [मिटी के पात्रों] के समूह ३५
इनको आदि लेकर घर की सय ३६ सामग्री को अग्नि का समूह जलकर वह
अग्नि जलाती है ३७ नगर के लोक बरकर ३८ घुसने के लिये तहखाने और ३९ नन

तुरु देवल पुर तौल काल कचमाल कंदंबित ॥
 जरत बिपंचिन जाल नागदंतन अवलंबित ॥
 मंचं बहुरि प्रतिमंचं सुघट बिष्टर सिंहासन ॥
 बिखरत बोथिन बीच परत आलये चहुँ पासन ॥
 त्रैपु नाग द्रवत अतिसय तपित पारद उडत अकास पथ ॥
 जुत तूल राल गंधक जरत करत तोप कल कल अकथं ॥७॥

॥ दोहा ॥

इम तोपन आताप अति, बुंदिय नगर बिहाल ॥
 सठं दलेल अति भय सहित, कैलि वह मन्थ्यो काल ॥ ८ ॥
 तारागढ चढिगय त्वरित, अंतर्हपुर जुत एह ॥
 इम उमेद भूपति अतुल, मंडयो गोलन मेह ॥ ९ ॥
 साहिपुरप जुत सेनैपति, इततै वह द्विज आय ॥
 जंग कठिन लखि तिहि जवन, लिय गुजरात पलाय ॥१०॥

॥ सचरङ्गागद्यम् ॥

यारीति रावराज उम्मेदसिंह बैरिनके बिडारिबेको बुन्दी बि-

को चाहते हैं ॥ ६ ॥ वृत्त १ देवालय [मंदिर] २ नगर और नलाव ३ कास-
 मर्द [वृत्तविशेष] अथवा राज ४ केशों के समूह "यहां यदि कालक चमा-
 ल, एक पद किया जावे तो इसका अर्थ अश्लील होजाता है क्योंकि केशों के
 साथ काला शब्द लगाने से गुह्य स्थान के केशों का बोधक होजाता है जैसे राजा,
 रात्रि, निद्रा, परिणत आदि शब्दों के साथ महा शब्द के लगाने से विरुद्ध
 अर्थ होजाता है सो ऐसा प्रयोग उत्तम कवि नहीं करते हैं" ५ उपरोक्त वस्तु-
 ओं का समूह और ८ खूंटियों पर ६ लटके हुए ६ बीणाओं के ७ समूह १०
 मांचे ११ बड़े मांचे (डैला) १२ अष्ट घड़े हुए बाजोट जलकर १३ गलियों में
 बिखरते हैं १४ घरों के चारों ओर १७ बहुत तपने से १५ कथीर १६ सीसा
 बहता है और १८ पारा आकाश के मार्ग उडता है १९ रुई सहित राल, गंध-
 क जलता है और २० कहा नहीं जासके जैसा तोपें कोलाहल करती हैं
 ॥ ७ ॥ २१ उस युद्ध को ॥ ८ ॥ २२ जनाना सहित ॥ ९ ॥ २३ सेनापति
 गोविंदराम ब्राह्मण २४ उस गुजरात के सूबेदार यवन ने २५ भागकर गुजरात

टिल्लीनी ॥

अरु ताकदार तोपनकों लगाय महाप्रलयके माफिक माग दीनी ॥

अच्छे बारूदके उडान वज्रपातसे गोले गिरन लगे ॥

अरु तारागढके ऋषाकारकगुरेनकों कलापमँकिरन लगे ॥११॥

जिन तोपनके ईकलाप कुलटानाधिकाके समान सोभित भये ॥

अरु गोलदाजनकों जार जानि पूर्वानुरागके प्रभाव समीप लये ॥

जिनके अद्भुत अंगकी आगि ऐसी कि उदरमें नमावें यातैं
आननकी ओर उफनाय कढै ॥

सो समीपके सवनकों वचाय दूरके दुर्ग दाहिवेकों बढै ॥१२॥

जिनकों आहार पचेतैं अपने स्वामीकों आनद नाहि आवैं ॥

अरु धमन कियेतैं बिट बिदूमकन सहिन नायक मोदपावैं ॥

जे खिन खिनमें गर्भाधान धारिकैं प्रसृतिकालको बिलब
नाहिँ करें ॥

परन्तु जिनके बालक कुपुत्र यातैं होतही जनक जननीकों छोरि
वैरिनके रुदमें बसिवेकों कूदिपरैं ॥१३॥

जिनकों बत्तीस बत्तीस३२ जार भोगैं तथापि अल्प साधन जानि
रति जगके विजयकी पताका उडावैं ॥

अरु तृप्तिके अभाव बडे बैलनके जोट जीति बैढे हत्थीनके
टल्ले खावैं ॥

आगि देवेवारोही जनाइवेवारी दाई ताकों जलदीसूँ जनाइवेमें
वधिरताकी बखसास करें ॥

ऐसी उनमत्त जानि कितनेक दरितैरदाईनके संदोहँ जनायवे
ली ॥ १० ॥ * कोट १ कागरी फ समूह १ गिरने लगे ॥ ११ ॥ § समूह
पिखरने लगे १ पाहिजे की प्रीतिरकामदेव की अग्नि १ मुख की तरफ ॥ १२ ॥
४ छपाट (कै) ४ कामी पुरुष के सखा १ पासक जनने के समय में ७ पिता =
माता को ९ समूह में ॥ १३ ॥ १० अग्नि देने (पसी पताने) वाला ११ यह-
रेपन की १२ डरनेवाले १३ समूह ॥ १४ ॥

की होंस न धरें ॥ १४ ॥

जिनके *आनना आरक्तमानों बन्धिके वमनहीसों यह रंग धरें
अरु आलस ऐसे कि अपनी सज्जापर सूताई आधार बिहा-
रादिक कर्म करें ॥

जे बलिष्ठ ऐसी कि जंगी काग्तूम बिनाई मही होय जायें ॥
अरु जंगी काग्तूसकरि जरायुथेलीसों जुद्धी पुत्र उपायें ॥ १५ ॥
जिनकी तीखी नजरिके कटाक्ष लागें गढ़ पर्वत आदि जगम
हू लोटी पैं ॥

अरु चंडवेगं चिरवेग ऐसी कि संप्रयोगं सूरिनतें कामकल-
हकों जीति जीति गर्जना करें ॥

ऐसी तोपनके फेर पर फेर जारी भये ॥

अरु पत्तनके प्राकारकों दुर्बाजू छेकि छेकि गोले आडअद्रिते
अंतर बिहार करन गये ॥ १६ ॥

तारागढ़के प्राकार कपिसिर धंजन समेत अहराय तूटन लगे ॥
कैधों आखंडलके असिनिसों उत्तुंग अद्रिनके कूट फूटन लगे ॥
या रीति तोपन बुन्दीके वरणाकों वेधि घनै घंटापथनके समा-
न पंथ कीनै ॥

अरु रावराजा उम्मेदसिंह महाराव दुर्जनताल हल्लेको हुकम दे
बारिबाह बीजुरीसे खेटक खंग लीनै ॥ १७ ॥

* मुख † लाल ‡ अग्नि के उगलने से § गर्भ पटकनेवाली १ उल्ब
(आवळ) रूपी थेली से ॥ १५ ॥ २ जड़ भी ३ अंधकर वेग ४ बहुत ठहरने
वाली ५ रत करनेवाले ६ चतुरों से ७ नगर के कोट को ८ आडाबला ना-
मक पर्वत में ॥ १६ ॥ तोपों के इस रूपक में कुलटा नायिका के साथवाले श-
ब्दों में श्लेष है परन्तु अश्लील होने के कारण हमने उनका अधिक विवरण
छोड़ दिया है और यथार्थ में इनका अर्थ भी सीधा है ९ कंगुरे १० कोट सहि-
त ११ इन्द्र के १२ वज्र से १३ ऊँचे पर्वतों के शिखर १४ कोट को १५ चौड़े मा-
र्ग (राजमार्ग) १६ मेघ और बिजुली के समान १७ ढाल १८ तरवार ॥ १७ ॥

दक्खिनकी तरफसों सज्जीभूत सेना समेत दोऊ२ नरेस पत्तन में पैठि चन्द्रहास चलाये ॥

अरु पच्छिमकी तरफसों साहिपुराके*अधिराज उम्मेदसिंह कोटा को कटकेस गोविंदराम†तोरनकों तोरि हमगीरइरोलनके मुड हलाये दोऊ२ तरफसों‡वरूथिनी बढि भीतरके भटनपैं महाकाल रूप ॥महलाग्रनकी मार दीनी ॥

तिनकों दबते देखि दल्लेखसिंह तारागढ सों एक हजार १००० सखे सूरवीर भोजि सहरके स्वकीय सिपाहनकी भीर कीनी ॥१८॥

तिनमाँहिंसों कितेक बडूकनके चलाक गृहस्थनके गेहनके ऊँचे अट्टनकों अरोहि पैलेनको पहिचानि गोलीनतैं गजब करन लगे ॥

अरु सेस जे असेस धाराधरहीसों धापिबेको सकल्प सखे करि पैलेनकी ऐतनामें पैठि अश्वमेध अध्वरके फलके उपमान आपुनैं अडाल अधिनैकों अगदकी रीति धरन लगे ॥

चिरकालसों बिछुरे मित्रनके माफिक कितनेक अछूती अनीके लाडा छातीसों छाती भिराय मिलन लगे ॥

अरु परस्परके प्रहरने प्रपात असित अबुदसे अज्मेलनपैं मिलन लगे ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

ससि अवर वसु इक १८०१ सैमा, बिक्रम सक गत बेर ॥

झुदिय पुर बाजार बिच, झरिग बाढ आसि झेर ॥ २० ॥

॥ मुक्तादाम ॥

अमावसि सावन मास अनेहैं, मच्यो इम झुदिय खगगन मेह ॥

* पति † सेनापति ‡ नगर के द्वार को § सेना ॥ तरबारों की १ अपने २ सहायता ॥ १८ ॥ ३ छतों पर चढ़कर ४ तरबार से ५ सेना में ६ यज्ञ के ७ पैरों को ८ बहुत समय से ९ शास्त्रा के प्रहार १० काले मेघ जैसे ११ ढालों पर खेलने लगे ॥ १९ ॥ १२ सम्बन्ध ॥ २० ॥ ११ समय

छई नभ गिहनि चिल्हनि छैति, घुमंडत गूदन चंचुव घैति ॥२१॥
 लगी लुभि घुम्मन अच्छरि लैन, गुह्यो रस भाव बिभावनगैन ॥
 रच्यो इत तंडव नारद रारि, भुक्क्यो ऋषि वहाँ महती भनकारि २२
 उडे सिर भेलत उद्धहि ईस, बहै इत चंडियके भुज बीस ॥
 चटक्कहि रत्त खिलै चउसठि६४, बबक्कहि बावन५२ गावन गंडि॥२३॥
 चुरैलिनि मंडत फालन चाल, लगावत डाइनि घुम्मरताल ॥
 बजै लागि खग्गन खग्गन बाढ, गिरै भट भीरु भजै तजि गाढ ॥२४॥
 उमेद दिनेस रच्यो खग खेल, दुरयो सठ घुग्घुब दुग्ग दलेल ॥
 फबै असि खुप्परि टोपन फारि, बहै जनु सब्बुव तंति विदारि ॥२५॥
 किरै कटि हड्डन खंड करकि, भरै उडि धारन बूर भरकि ॥
 कटै सह सत्थिन जानुव जंघ, सु ज्यौ गज सुंडिन खंडन संघ ॥२६॥
 फदक्कहि कट्टहि कालिक फिफ्फ, भचक्कहि टोप कपालन भिफ्फ ॥
 उडे सिर फुटत भेजन ओघ, मनौ नवनीत मटक्किय मोघ ॥२७॥
 मचक्कहि रीढक बंके अमाप, चटक्कहि ज्यौ मिथिलापुरं चाप ॥
 धसै कठि लोचन सौनित धार, चढै सिसु मच्छ बिलोम कि बैर २८
 कटै गल म्वास बजै बिकरार, धमै धमनी जनु लगि लुहार ॥

१छत्रो२चांचघाल कर॥२१॥३शृंगार रस के भाव अनुभाव गुण (रस के अनुकूल मन का विकार होवै उसको भाव और भाव के जनानेवाले को अनुभाव कहते हैं, यहां अमरकोशकारने (विकारो मानसो भावो) लिखा है जिसका रसतरंगिणी कार खंडन करता है) विभाव उद्दीपन को कहते हैं ४ आकाश में ५ नृत्य ६ नारद की घाणा का नाम है ॥ २२ ॥ उडे हुए मस्तकों को शिव ७ ऊपर ही भेलते हैं ८ रक्त पीकर ९ चौसठि योगनियं प्रफुल्लित होती हैं १० एकत्र होकर (गांठ बंधकर ॥ २३ ॥ ११मलंगों से (फांदने, कूदने से) १२तरवारों का तरवारों पर लगकर बाढं बजता है॥२४॥ १३गढ में छिपगया॥२५॥ १४जाड़ी जंघा को सक्थि (साथल) और पतली को जंघा कहते हैं सो साथल, घुटना और जंघा कटती हैं १५समूह ॥ २६ ॥ १६कलेजे और फेंकरे १७कपालों को भेदन करके १८मक्खम की मटकी फूटी ॥ २७ ॥ १९ पीठ का हाड २० जनक राजा की पुत्री (तिरहुत देश) के धनुष २१ छोटी मच्छी पानी में उलटी चढ़े जैसे ॥ २८ ॥ २९ धमनी (धमण)

कटै हिय छतिप फटि किवार, सु ज्यौं ँहद लोहित कजं सुदार २९
 परै कटि अत अपुर्वै प्रकारि, फनी गन जानि टिपारन फारि ॥
 परै छुटि सधित प्रान अपान, मनौ पय पानिय लोन मिलान ॥३०॥
 बने फटि हाँच कढे रद बहू, किधौ घृत ढब्बिय रंक कंवहू ॥
 गिटै रसना कटि मगन घास, चढै नचि नागिनि ज्यौं पय आम ३१
 लगै दूग मुच्छ फरफत लोन, मनौ उरभी वैनसी मुख मीन ॥
 छलै छैत रत छछकन छुटि, फवै जनु गँगारि जावक फुटि ॥ ३२ ॥
 झुकै आसि मत दुहत्थन मारि, मनौ रँजकालि सिला पट मारि ॥
 छुटै फटि पेटिप लेटिप लंब, तनै पट जानि कुँबिंद कदब ॥ ३३ ॥
 मचै रव टोप उडै फटि मत्थ, अलाबुव जानि अतीतन हत्थ ॥
 कटै दूग लगि कौनीनिय काल, मनौ कुँब लोहित भौरन माल ३४
 चलै फटि ढाल बकतर चीर, सु ज्यौं तरु ताडन पत्त सैमीर ॥
 धसै हिय गोलिए गावत गित, मनौ पटवा बटवा बिच बित ॥ ३५ ॥
 गटै फटि कोचै करी रननकि, भरै धैन वादन ज्यौं मननकि ॥
 घटै दम मत बकै छकि घाय, मनौ मद पामर जीह जहाय ॥ ३६ ॥
 कटै बैपु छकि वरच्छिन जाँत, तँगाध्वज अगग कि गैज्ज प्रपात ॥
 लगै निकसै छकि पँटिस जाल, मनौ परतीयनके कर जाल ॥ ३७ ॥

१ जलाशय (दह) में राल कमल ३ अष्ट रानि मे ॥ २९ ॥ ४ अपूर्व रीति से ५ सपों का समूह १ मिल हुए २ आस और १२ आस की सधि छुटती है ३ लवण (नमक) मिलाने से दूध और पानी फट जायें जैसे ॥ ३० ॥ ८ मुख फटकर पडे दन्त दीखते हैं सो मानों दरिद्री ने दिन्ने में कोठियें रखी हैं १० आगों के समूह को जमि निगलती है सो मानों सर्पियों १ कबा दूध पीती है ॥ ३१ ॥ २ मछी पकडने का काटा मछी के मुख में डलका १ घायों से रुधिर १४ जावक का घड़ा ॥ ३२ ॥ १५ घोषियों की पत्ति १ लकी पड़ी हुई १० अलाहों के समूह बख फैलाने हैं ॥ ३३ ॥ मानों जोगियों के हाथ से १८ तूँव गिरते हैं १६ नेत्रों की काखी पुतली २० लाख कमल में ॥ ३४ ॥ २१ पवन से ताक वृक्ष का पत्र फटै जैसे ॥ ३५ ॥ २२ कबख की कबी २३ कासी आदि धातु का घाँस ॥ ३६ ॥ १४ शरीर की २४ समूह २१ पाँस वृक्ष का अन्न मेघ की २० गर्जना से भूमि से निकले जैसे २८ फटारी २९ परकीया नापिकाओं के हाथ जाखियों से कवै जैसे (परकीया नापिका अपना

सुहैं फटि हड्ड चटच्चट संधि, चटकत प्रात गुलाब कि गंधि ॥
 उठैं विनु मत्थ किते तनु *तुंग, थेइ थेइ नच्चत थुंगत थुंग ॥ ३८ ॥
 बबकत ढाच किते कन बैन, मनौ बड बकर टकर मैन ॥
 गिरैं बररकत पंसुलि गात, मनौ कठछप्पर पत्थर पात ॥ ३९ ॥
 छुटैं ऽपल जानु कटैं नल हड्ड, मनौ रद बवारन बंगर बड्ड ॥
 लटकत पाय रकावन रुक्कि, मनौ तप सिद्ध अधोमुख भुक्कि ॥ ४० ॥
 मलंगत छत्तिनके क्रम मप्पि, मनौ नट पट्टरि पाय मल्लापि ॥
 छुटैं घन घायक सायक सोक, उडैं सरघा गन ज्यौं तजि ओक ॥ ४१ ॥
 छके कति वृत्तं फिरे सुधि छोरि, बनें जनु बालक भभेद भोरि ॥
 गिरैं सर बिद्ध घनें सिर तत्त, मनौ सरघाने तजे मधुछत्त ॥ ४२ ॥
 सरैं घन संगिन भिन्न सरीर, कुमागिनके जनु उंज कैरीर ॥
 बकैं बहु प्रेत मिल गल बत्थ, किधौ रन मल्ल अपूर्व कत्थ ॥ ४३ ॥
 जगावत हाक रचावत जंग, लगावत भैरव नट्ट मलंग ॥
 घसैं चढि डाकिनि के मृतछत्ति, मनौ कि विद्वंसक कौं नित्य मत्ति ॥ ४४ ॥
 अटैं पय इक १ किते छक ओप, किते इक १ नैन लखें भरि कोप
 करैं कटि जीह किते अँअ कूक, मनौ कि परींगिर प्रेगित मूक ॥ ४५ ॥
 महँदी का हाथ दिखा कर लाल रंग के संकेन से जार को अपना रजस्थ
 ला होना जनाकर उसके आने का निषेध करती है ॥ ३७ ॥ # ऊँचे ॥ ३८ ॥
 † कितनों के मुख से अवाच्य शब्द निकलते हैं सो ‡ बड़े कामी बकरे की ट-
 कर में, अथवा बड़े बकरे की टकर में भी नहीं होवें ऐसे बकाई खाने के वच-
 न कहते हैं ॥ ३९ ॥ § मांस छूटकर छुटने सहित ॥ नली की हड्डियें नि-
 कलती हैं सो मानों - हाथी के बड़े दन्त बगड़ों सहित हैं ॥ ४० ॥ १ घाव
 करने वाले याण २ मधुमक्खी ३ घर छोड़कर ॥ ४१ ॥ ४ चक्राकार (गोल)
 ५ भाँभाभोली, भमल (बकर) खाने का बालकों का खेल विशेष ६ मधुम-
 क्खियों के छोड़े हुए ७ मुबाल के छाते हैं ॥ ४२ ॥ ८ बरकियों से बहुत छि-
 दे हुए शरीर चलते हैं सो मानों ९ कार्तिक मास में लड़कियों के बहुत छिद्र
 बाछे १० घड़े हैं ॥ ४३ ॥ ११ मरे हुए १२ की छातियों को डाकिनियें घिसती हैं १३ कामी
 पुरुष को मस्त स्त्री ॥ ४४ ॥ १४ बकाई खाकर स्पष्ट नहीं बोले जानेवाले अवाच्य
 शब्द का अनुकरण है १५ दूसरे का वाणी से प्रेरणा किया हुआ गूँगा मनुष्य ॥ ४५ ॥

क्रमें इक१ ओठ किते इक१ कान, घने मुख अद्भ रचै घमसान ॥
 किते इक१ हत्य किते गत केस, बनें बहुरूप मनो नव बेस ॥ ४६ ॥
 मिलै रसना कटि नक्कुट मूल, फवै भुजगी कि लगी तिलफूल ॥
 किते कर टेकि उठै रन रत, मनो मदछाकन पामर मत ॥ ४७ ॥
 रहै कति गिद्धनको गेल लाप, कहै कति हू रव भैचत हाय ॥
 बकै कति मात पिता तिय बैन, गिरै कति मोहिते उच्छलि गेन ४८ ॥
 श्रव घन सावनको इत तुष्टि, बैरूथ घटा इत आयुध बुद्धि ॥
 बहै पुर बुदिय सोनै वजाग, वपां जनु जोहि सरस्वति धार ॥ ४९ ॥
 गिरै जल बहल गग सु गाथ, पुर रित्रय असुव जामुन पोथ ॥
 बही इम बेनेय पतन बीच, मिलै बहु मुक्ति जहाँ लहि मीचै ५० ॥
 बन्पां रन बुदिय सावन अद्भ, दुँरघाँ असि ज्वाल भयो पुर वैद ॥
 चुहटन लगिय लुत्थन लुत्थि, वयागिग दटन वटन बुत्थि ॥ ५१ ॥
 समकुँल रुड परे खिलि खड, ठरे वनिजारनके जनु टड ॥
 डडकत डौडल के डमरूक, घुगवत घाय घने जनु धँक ॥ ५२ ॥
 रटै सिर मार अटै कति रुड, मिटे कति जोर फटै कति मुड ॥

१ किते हैं १६ आघे मुखवाले युद्ध करते हैं १ भाँड १ नवीन स्थाग करे जैसे ॥ ४६ ॥
 ५ जीम कटकर १ नामिका के मूल से मिलनी है मा मानों ० तिल के फूल से लगी
 हुई सर्पिणी जो मा देती है युद्ध में प्रीति करनेवाले ॥ ४७ ॥ १६ गले से लगा कर १०
 शब्द ११ बुद्धि होकर १२ आकाश में उछल कर गिरते हैं ॥ ४८ ॥ १३ इधर
 आयण भास का मघ १४ प्रसन्न होकर वर्षा करता है १५ सेना रूपी घटा इध-
 र शस्त्र परसानी है १६ इधर बहता है सो १७ वही मानों सरस्वती की लाल
 धारा वही ॥ ४९ ॥ पादलों से जल गिरता है सोही ओष्ठ पश्याली गंगा है
 पुर की झिया के कज्जल युक्त नेत्रों से आँसू बहते हैं सोही रयाम वर्णवाली
 १८ यमुना नदी का १९ जल है २० इस प्रकार मगर में श्रियणी वही २१ मृत्पु सेकर
 जिस त्रिवेणी में मुक्ति मिलती है ॥ ५० ॥ २२ दोनों ओर की तरवार की
 उवाला से पु २३ वृष हो गया ॥ ५१ ॥ अस्तक रहित शरीरों के टुकड़े होकर
 २४ अथकाश रहित (मरे) पक्षे सो मानों २५ टाँडा (बाखरा) पड़ी है २६ और व
 और देवी आदि के बाण बजते हैं २७ घुघुओं (खल्लुकों) के समान कितने ही

बैरें सिर मंगि भैरें हर बैल, छकैं कति छोह हकैं रन छैल ॥५३॥
 लगैं कति कंठ लरथैर पाय, जगैं कति प्रेत ठगैं भट जाय ॥
 लखैं कति हूर चखैं मिलि लाह, नखैं नभ फूल रखैं गिनि नाह ॥५४॥
 किरैं कहूँ कोच खिरैं लागि खगग, फिरैं कति मत्त भिरैं जनु फगग
 चिरैं सिर बाढ गिरैं अति चोट, धिरैं नद सोन तिरैं कहूँ घोट ॥५५॥
 जरैं उडि अगि भैरें असि जोर, ठरैं भट केक टरैं जिम ढोर ॥
 दंरैं कति कुपि धरैं धक दाव, भैरें कति भूरि करैं मृत भाव ॥५६॥
 मरैं थकि स्वास परैं कहूँ मूढ, अरैं कहूँ हूर बैरें नवऊढ ॥
 रैंरैं हरि केक लरैं धकि रोस, हरैं जिय केक सरैं तजि होस ॥५७॥
 फटैं धर प्रेत बँटैं सिर फाँक, लँटैं मन केक कटैं उर लाँक ॥
 खुलैं कहूँ नैन डुलैं कहूँ खगग, भुलैं कहूँ उँड फुलैं मुख भगग ॥५८॥
 छुलकत घायन रत्त छछक, उरज्झत केस बनैं अकवक ॥
 न्हकत तंतिन सिंधुव तार, दहकत भूतल देत दरार ॥ ५९ ॥
 भनंकत पक्खर बेधित बंट, घमंकत घुग्घर घंटन घंट ॥
 बढी कुणापावलि उग्र बखान, मनौ बड पैतन दिग्घ मसान ॥६०॥

घाय बोलत हैं ॥ ५२ ॥ कितनेही मस्तकों को-शिव १ अपनाकर (बरणीकर-
 के) मांगकर बैल भरते हैं २ रणरसिक क्रोध में छककर आगे बढ़ते हैं ॥ ५३ ॥
 उनमें कितने ही ३ लुढ़कते हुए चरणों में शत्रुओं के कंठ से लगते हैं, कि-
 तने ही प्रेत उठते हैं और वीरों को ठगते हैं ४-आकाश-से पुष्प डालकर ५
 उनको अपना पति मानकर रखती हैं ॥ ५४ ॥ तरवारें लगकर कहीं पर क-
 वच ६ गिरते हैं ७ रुधिर की नदी में धिसे हुए कहीं पर ८-घोड़े तिरते हैं
 ॥ ५५ ॥ बल पूर्वक तरवारों के पड़ने से अग्नि उड़कर जलती है जिससे कि-
 तने ही वीर गिरते हैं और कितने ही ९ पशु (गड) के समान टलते हैं, कितने
 ही क्रोध करके धक के साथ दाव देकर १० विदारण करते (काटते) हैं "द्वि-
 दारणे" इस धातु से यह शब्द बना है- ११ बहुत ॥ ५६ ॥ १२ मूर्छित होकर
 कितनी ही अप्सराएँ हठ करके १३ नवीन बर करती हैं १४ कितने ही वीर वि-
 ष्णु भगवान् को रटते हैं १५ चेत को छोड़कर चलते हैं ॥ ५७ ॥ १६ धड़ १७ बाँटते हैं
 १८ मन मुढ़कर १९ लंक (कमर)-२० ऊपर झूलते हैं ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ २१ मुरदों
 की पांक्ति २२ बड़े नगर के २३ बड़े शमशान ॥ ६० ॥

गवाक्षेन जालिनके पट डारि, रही रन बुदिय नारि निहारि ॥
 वढी घन मार मची हथबाह, रुक्म्यो गवि जपेत बाह सिराह ॥ ६१ ॥
 अरयो नृप छोनिय लैन उमेद, खिंज्यो इम देत दलेलहिं खेद ॥
 बढे गढ सम्पुद्ग छेकि बजार, मिली तह सञ्जु हजारन मार ॥ ६२ ॥
 चले सर चढे चटवृत चार्प, मचावत पखन सोक अमाप ॥
 बहै बरछी असि तोमर तोम, बनें नर कातर लोमबिलोम ॥ ६३ ॥
 उरज्ज्मत अत्र कटारन तारि, गही जनु नागिनि अकुस डारि ॥
 लगे खैर खजर पजर लीन, मनो प्रतिलोमें धसै जल मीन ॥ ६४ ॥
 चलै फटि पात गदा सिर चीर, मनो तरबूज हनें कर कीर ॥
 चलै तजि म्याँन छुरी पैल चाह, मनो पिचकारिन बारि प्रवाह ६५
 मरप्पर चिलहनि गिद्धनि झुड, मरारत चचुन अँचत मुड ॥
 किलोलत स्यार सिंघागन ककै, नचै बहु डाकिनि प्रेत निसंक ॥ ६६ ॥
 घनें हननकत घोटैक घुम्मि, भिरै कति भिन्न गिरै छकि भुम्मि
 कुसाँ गल छुटत तुटत तग, भभक्कत मारुत पोर्येन भग ॥ ६७ ॥
 परै प्रजैर जर जीन पलान, किते कबिकै बिनु लेत उडान ॥
 बहे पुर तहिने रैत रु वार, धपी बढि बायिने बीथिन धार ॥ ६८ ॥
 मनो यह दुग्ग छुधातुर पाय, दये बलि मानव संभर गाय ॥
 समाकुल लुत्थिन बुत्थिन बैट, चढै पैल चिक्कन हट्ट चुहट्ट ॥ ६९ ॥
 सहयो घन चौरनको दुख जीय, लगे अव बुदिय भूपति हीय ॥

१ कराखा की जालियों पर बल डालकर प्रशंसा का वचन कहता हुआ ॥ ६१ ॥
 १ भूमि लेने को ४ फाँच करके ॥ ६२ ॥ २ भयंकर बाण ३ धनुष खींच कर ४ भातों
 का समूह ॥ ६३ ॥ ५ आँतों में ६ कटारी की लारियों ७ मानों सर्पिणी
 को अकुल डालकर पकड़ी है ११ तीक्ष्ण खजर शरीर में लीन होता है सो
 मानों १२ बलटा ॥ ६४ ॥ १३ मांस की बाह से ॥ ६५ ॥ १४ गीतियों १५ डीप
 (पक्षी विशेष) ॥ ६६ ॥ १६ छोटे १७ याग १८ कुरमों को खीरता हुआ ॥ ६७ ॥ १९
 लगाम बिना २० छस दिन २१ कधिर और जल २२ गली गली में ॥ ६८ ॥ २३ गड
 को भूख से पीड़ित २४ समुद्रों का बलिदान २५ भर गये २६ मार्ग २७ मांस
 और चरबी ॥ ६९ ॥

घनें दिन भुगि बियोगेज भार, कियो जनु सोनित रंगसिंगार ७०
दलेल लखी तपकी तरवारि, धुज्यो छत दुग पलायन धारि ॥

सुन्यो यह जैपुर जामिप भार, कियो निज मंत्रिय भ्रात तयार ७१

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशौ पूर्व-
नालीयन्त्रयुद्धकरणातदनुगोपुराऽऽरविदारणाबुन्दीप्रवेशनतुमुत्तर-
णारचनदलेलसिंहतारादुर्गाऽऽरोहणातदुदन्तजैपुरश्रवणां दशमो १०

मयूखः ॥ १० ॥

॥ २६१ ॥

प्रायोन्नजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

जैपुर नृप ईस्वर जबहि, सुनि यह बुंदिय सोर ॥

सजि दल दुद्धर मुकल्यो, दैन सहाय सजोर ॥ १ ॥

राजामलको इक अनुज, भ्रात नाम सिवदास ॥

सेनापति खत्री सु करि, पठयो समर प्रयास ॥ २ ॥

राजामल निज अनुज सन, किय तब मंत्र इकत ॥

कहिय अगग जयसिंह नृप, मोसन भयउ विरत ॥ ३ ॥

यह लखि मंद दलेल इहिं, मत्र हमहिं निकम्म ॥

अब्द लार देतो अयुत १००००, दिनें ते नहिं दैम्म ॥ ४ ॥

तीन ३ बरस पाई तबहि, अप्पन बिपति अछेह ॥

१ वियोग से उत्पन्न हुआ भार २ लाल रंग का ॥ ७० ॥ ३ गढ़ के होते हुए भागना
४ बिचार कर धूजा ५ बहिनोई पर ६ अपने मंत्री राजामल के भाई को ॥ ७१ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, प्रथम तोपों से
युद्ध करने पीछे शहर के द्वार के कबाड़ तोड़ना १ बुंदी में घुसकर भयकर
युद्ध करना २ दलेलसिंह का तारागढ़ पर चढ़ना ३ जयपुर में इस वृत्तान्त के
सुनने का दशवां १० मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ इक्कानवे
२९१ मयूख हुए ॥

६ ईश्वरीसिंह ने ॥ १ ॥ ७ युद्ध के परिश्रम ॥ २ ॥ ८ मुक्त से ९ प्रतिकूल
(नाराज) ॥ ३ ॥ १० प्रतिवर्ष (सालियाना) ११ रुपये ॥ ४ ॥

मगेहू दम्भ न मिले, अपटु नटयो सठ एह ॥ ५ ॥

यातैं अषहि दलेल कौं, दैन सहाय न अच्छ ॥

पहिलैं तुम बरवाड़ पुर, प्रबिसहु मारि बिपच्छ ॥ ६ ॥

॥ सौरठा ॥

सुनि खत्रिय सिवदास, अग्रज हिंतु निदेस यह ॥

आनि प्रथम जय आस, लारन लौन बरवाड लगि ॥ ७ ॥

॥ षट्पात ॥

अगौ पुर बरवाड बीर इक भयउ महाबल ॥

रामसिंह रठोर जाहि अक्खत जग रुंठल ॥

ताके कुल सिवसिंह भयो रन दान घुरधर ॥

इहुन मुहुकमहँरन सजिय तासन बहु सगर ॥

इन हनि अनेक रठोर भट ग्राम चपारि४ तस दब्बि लिय ॥

यह लखि कवध सिवसिंह इहिँ कलहँ घोर प्रारभ किया ॥

॥ दोहा ॥

जो मुहुकमसिंहोतको, ग्राम परैं हग तास ॥

ताहि प्रजारत लुटितो, बहुनन बिगचि विनास ॥ ९ ॥

१ मूर्ख ॥ ५ ॥ २ शत्रुओं का ॥ ६ ॥ ३ राठोड़ कहते हैं (इस रामसिंह के नियम था कि भोजन के समय नगरा बजाना उसका शब्द सुनकर जितने दीन इकट्ठे होने तिनको भोजन कराये * पीछे आप भोजन करता इसी कारण से उसका नाम रामसिंह राठोड़ प्रसिद्ध होगया था और यह उदयपुर के महाराजा यह जगत्सिंह के समय मेवाड का सेनापति था) ॥ ७ ॥ मोक्षसिंह के ४ वंशवालों ने १ उस शिवसिंह से ६ युद्ध ॥ = ॥ ७ जल्लाकर ॥ ८ ॥

* रामसिंह के इस कार्य की प्रशंसा का एक दोहा राजपूताना में प्रसिद्ध है वह नीचे लिखा जाता है

रामे भूनाई रघी, मारुपर मेवाड ॥

रोट फटके तेयरभ, पड़ो धूषळा पहाड ॥ १ ॥

इसमें कवि उल्लेख करता है कि राठोड़ रामसिंह ने मेवाड की भूमि में रतोई (रसोबटा) की रचना की जिसमें रोटियों के फाटकने से जो रमी उठी उसीसे मानों प्रमात के समय पर्वत धूषळे दीप्तते हैं ॥

हहूँ तब मुहुकमहरन, अति साहस इहिँ जानि ॥
 बेटी अप्पैहिँ बैरमें, मंत्र सबन यह मानि ॥ १० ॥
 जाई जुगियगमकी, जड़ सालमकी जाँमि ॥
 सिवसिंहहिँ व्याही सबन, दोऊर दिस हित धामि ॥ ११ ॥
 नृप कूगम जयसिंह पुनि, अतुल कपट रचि आड ॥
 दियउ कहि सिवसिंह यह, लियउ छिन्नि बरवाड़ ॥ १२ ॥
 जयसिंहहिँ अब जानि मृत, इहिँ सिवसिंह कबंध ॥
 लिन्नोँ पुर बरवाड़ लरि, बसि करि कुम्भ प्रबंध ॥ १३ ॥
 राजामल यातै अनुजै, रोक्यो बुंदिय जात ॥
 पठयो इत सिवसिंह पर, बुल्लयो तँहँ यह बात ॥ १४ ॥
 तुम सिवदास तयार हुव, बुंदिय दैन सहाय ॥
 मगहि मध्य बरवाड़ पुर, जावहु ताहि छुराय ॥ १५ ॥
 इहिँ कारन सिवदास अब, सजि दल प्रबल सिपाह ॥
 गो पहिलै बरवाड़ गढ, दिन्नोँ तोपन दाह ॥ १६ ॥
 इत बुंदिय संगर अतुल, सज्ज्यो संभगवार ॥
 नगर जिति लिन्ने निकट, प्रासादन प्राकार ॥ १७ ॥
 दक्खिन दिस महलन निकट, भैरव नामक द्वार ॥
 तासोँ कछु पच्छिम तरफ, कोटा दल रखवार ॥ १८ ॥
 द्विज नागर गोबिंद वह, लरत हुतो हठ लगि ॥
 कनपट्टिय गोलिय लगिय, परयो स्वामि हित पगि ॥ १९ ॥
 मरत बिप्र खिजि नृप उभय, लंब निसैनिन लाय ॥
 घटिय इकै जावत रजनि, लिन्नै महल छुगय ॥ २० ॥
 अब इक तारागढ बच्यो, जँहँ दलेल भय जानि ॥

१ हठी २ देवै ॥ १० ॥ ३ बहिन ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ४ छोटे भाई को
 ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ५ युद्ध ६ चहुवाण उम्मेदसिंह ७ महलों का कोट
 ॥ १७ ॥ १८ ॥ ८ सेनापति ॥ १९ ॥ २० ॥

उमेदासिंहकाजय और दलेखसिंहका भागना]सप्तमराशि एकादशमयूख(३३७१)

तिहिं सिर पुनि दह्ला त्वरित, पंथुल रच्यो असि पानि ॥२१॥

॥ पट्टपात ॥

लौलै खेटेक खगग कटक पञ्चय पर हकिय ॥

नृप उमेद रहि मध्य समुख हनुमत जिम हकिय ॥

अधिरोहिनि दिय जाय भये कगुर कगुर भट ॥

सु लखि दलेल शृगालो भज्यो नारिन जुत लंपट ॥

नैनवा मगग आतुर लगिय खुल्लि द्वार पच्छिम अरर ॥

अधार मास सावन अमा भुकि पुनि लगिय मेघम्बर २२

जिन नारिन सतखनन अक्के पिक्कखन अकुलावत ॥

जिन नारिन जैव जोर पवन परसन नहिं पावत ॥

इक्क महल सन अन्य जात जिनको श्रम लगगहिं ॥

कुचन ओट लचकान भार मानहुं कैटि भगगहिं ॥

जिन पय प्रसून पखुरि गहत रस बिलास मृदुपन रजिग ॥

ते तिय दलेल नौयक सहित फारन बिच फटत भजिग ॥२३॥

॥ दोहा ॥

मेक मरितें दुबलानपुर, जिम तिम लधि दलेल ॥

प्रात होत लहि नैनवा, मन्प्यो बपु जिय मेल ॥ २४ ॥

पतनी इक्क दलेलकी, दासा जन दस १० मौन ॥

बन बिच भज्जत थकि रहिय, गय डूजे २दिन थान ॥ २५ ॥

दुज्जनसल्ल उमेव इत, बुदिय अमल बिथारि ॥

भंडे अप्पन गहि दिय, बिजय पैंताका धारि ॥ २६ ॥

कोटापति अब लोभ करि, अनुचित जो किय अंत्य ॥

१ बडा ॥ २१ ॥ २४ को ल ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

सो पिकखहु नृप*राम सब, अधरम अनैय अनत्य ॥ २७ ॥

पहिलें इहिं कोटापुरहिं, भूपतिसौं छल भिन्न ॥

मुल्ल दम्म दुवलकख २०००००के, कटक किलंगिय लिन्ना २८।

तैसीही अब तकिके, अंगमि बुंदिय अन्न ॥

नृप उमेद प्रति यह कहिय, तुमतेँ राज दवै न ॥ २९ ॥

पुर लोहितको परगनाँ, इमकहि भूपहिं अप्पि ॥

अवर देस लिन्नाँ अखिल, थानाँ अप्पन थप्पि ॥ ३० ॥

केसव पुर पट्टनि परंम, बहुरि बरुंधनि नाम ॥

ए दुवर पुर ब्रजनाथ हित, करिय भेट छल काम ॥ ३१ ॥

बुद्ध नृपति किय पुण्य ते, ग्रामादिक दिय नाहिं ॥

इम बिसासघातक भयउ, कोटापति छल माहिं ॥ ३२ ॥

लरन अंत लुट्टिय सहर, इक्क १ पहर धनवंत ॥

साहिपुरप उम्मेद लिय, दुवर गज द्रव्य अनंत ॥ ३३ ॥

देव सुवन सिवसिंह वह, बैरिसल्ल कुल जात ॥

लरि जिहिं पंच ५ दलेल्लेके, गज लुट्टे बडगाँत ॥ ३४ ॥

कोटापति सिवसिंहसौं, छिन्ने ते गज पंच ५ ॥

आदर बिनु सठ सिक्ख दिय, रक्खी कानि न रंच ॥ ३५ ॥

साहिपुरप कोटेससौं, इक दिन अक्खिय एह ॥

तुम निलज्ज अनुचित तकत, नीति धरम तजि नेह ॥ ३६ ॥

हम जानी बुंदीस सिर, करहिं छत्र कोटेस ॥

इम बिचारि आये इहाँ यह जस सुनन असेस ॥ ३७ ॥

शुद्धब्रजदेशीयाभाषा ॥

*हे राजा रामसिंह सब १ अनीति और अनर्थ देखो ॥ २७ ॥ २ हाथों में पहनने के कड़े और १ मस्तक पर लगाने की किलंगी ॥ २८ ॥ ४ बुंदी के स्थान को दबा कर ॥ २९ ॥ ५ उम्मेदसिंह को देकर ६ सब ॥ ३० ॥ ७ उत्कृष्ट (उत्तम) ८ छल करके ॥ ३१ ॥ ९ राजा बुधसिंह ने ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ १० देवसिंह के पुत्र ११ दलेल्लसिंह १२ बड़े शरीरवाले ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ १३ संपूर्ण ॥ ३७ ॥

मनोहरम्-दोस निज तानेको उतागिबेकी बेर तुम,
 लीने मगि कटंक किलगी यातें बालहो ॥
 तिनहिं विकाय फोज राखी सो तुमारी नाहिं,
 जातें जग जीति मन मानत निहाल हो ॥
 प्रति उपकारक उमेद नृप जानों नैर,
 कोटा निज खोवहु कहावत नृपालहो ॥
 जो तुम कहेंहु स्वामि धर्म न धरोगे तो ब,
 दुर्जनके साल नहिं सज्जनके सालहो ॥ ३८ ॥

प्रायोजनजवेशीया प्राकृर्तामिश्रितभाषा ॥

दोहा—सुनि यह कोटापति सचिव, चारन भूपतिराम ॥
 बुल्लयो साहिपुरेस सौ, कैसें कहहु कुनाम ॥ ३९ ॥
 सेनानी गोविंदसे, लगगे बुदिय अर्थ ॥
 खाच दम्भ लखन परयो, क्यों तुम बदेत अकथ ॥ ४० ॥
 यह सुनि साहिपुरेस तब, गो निज नगर रिसाय ॥
 कोटापति बुदिय बिभव, लुट्यो अखिल अघाय ॥ ४१ ॥
 भट मोहनसिंहोत निज, नगर पल्लायत नाह ॥
 तारागढ रक्खयो तबहि, रूपसिंह हित राह ॥ ४२ ॥
 पुनि किसोर्सिंहोत भट, अनतापुर पै अजीत ॥
 ए दुवर किल्लादार किय, पैटु रन धरम प्रतीत ॥ ४३ ॥
 अवरहु निज रक्खे सचिव, निबहन गज्य असेस ॥
 अप्पुन लै बुदिय बिभव, कोटा गय कोटेस ॥ ४४ ॥

१ दुर्जनसाल के पिता श्रीमसिंह ने बुढ़ी छान ली थी उस दोष को उतारने के समय २ कहे और किलगी मांग ली ३ दम्भेदसिंह को पीछा उपकार करने वा ला जानो ४ जिन कोटा के कारण राजा कहलाते हो उस कोटे को मत खोओ ५ इस कहने पर भी ६ अर्थ ॥ ३८ ॥ ७ शाहपुरा के पति से बोला ॥ ३९ ॥ ८ सेनापति ९ अर्थ १० झूठ बोलते हो अथवा नहीं कहने योग्य बात कहते हो ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

इत खत्रिय सिवदास लिय, पुर बरवाड़ छुराय ॥
दियउ कहि रठार वह, जैपुर अमल विधाय ॥ ४५ ॥

पञ्चमटिका ॥

बरवाड़ समर सिवदास ठानि, जैपुर नरेस यह उचित जानि ॥
धूलापुर पति कूरम दलेल, बुल्लयो राजाउत मंत्र मेल ॥ ४६ ॥
कहि उचित ताहि बुंदिय सहाय, पठयो दलेल ढिग समय पाय ॥
वह तबहि नैनवा नगर पत, भिंटां दलेल हित विविध वत्त ॥ ४७ ॥
अकखी पुनि ईश्वरिसिंह राज, दिल्लीपुर जावत कछुक काज ॥
जवनेस हितु काम सु सुधारि, बुंदीपर अँहँ दल बिथारि ॥ ४८ ॥
वँहँ तब अप्पन अमल तथ, हड्ड सु उमेद गहि करहिँ हत्थ ॥
पै जोलौ आवँ न कछवाह, तोलौन उचित अव समर चाह ॥ ४९ ॥
पूगँन अबहि इम बीर होय, दुस्सह उमेद कोटेस दोय ॥
दोऊ दलेल यह मंत्र चाहि, बहु मास रहे पुर नैनवाहि ॥ ५० ॥
इत जैपुर पति दिल्लिय प्रपत्त, सेयो सुरतान जु विविध वत्त ॥
बुंदिय पुर बिग्रह बहुरि अक्खि, लियसाह हुकम करि सबन सक्खि ॥
इम रहत कुँम दिल्लिय अभंग, सेवंत साह अँवनिय उमंग ॥
इत अभयसिंह मँरु देस राय, किय चिर निवास अजमेर आय ॥ ५१ ॥
मम जनक पुँव यह नगर लिन्न, यह चिंति मरुप तँहँ वास किन्न ॥
कूरम इत दिल्लिय कपट धारि, इक मंत्र साह छुन्नँ विचारि ॥ ५२ ॥
राजामल मंत्रिय निज सिखाय, दक्खिन दल लावन दिय पठाय ॥
यह तबहि पत्त दक्खिन अनीक, किय साम बिगचि हितकथ कितीक ॥
का बैभव लेकर १ जयपुर का अमल करके ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ २ दलेल
सिंह हाडा के पास ३ मिला ॥ ४७ ॥ ४ बादशाह मे ॥ ४८ ॥ ५ परन्तु ॥ ४९ ॥
६ कछवाहा और हाडा दोनों दलेलसिंह ॥ ५० ॥ ७ जाकर ८ साची
॥ ५१ ॥ ९ कछवाहा ईश्वरीसिंह १० श्रुमि के उत्साह से ११ मारवाड़ देश का
राजा १२ बहुत दिन तक ॥ ५२ ॥ १३ पहिले मेरे पिता ने ॥ ५३ ॥ १४ दक्षि-
ण (मरहठों) की सेना लाने को १५ सेना में ॥ ५४ ॥

लिय रामचव पडित मिलाय, सध्या रागाजिय पुनि सुभाय ॥
मरहठ उभयर इम लियउ फोरि, करि नेह दैन किय इम्म कोरि
१००००००० ॥ ५५ ॥ //

इत नृप उमेद बुदिय बिचारि, कोटेस लुब्ध अनुचित अकारि ॥
इमरोहि द्रव्य सन रचिय जुद्ध, लिय बहुरि भुम्मि रचि कपट लुब्ध ५६
तसमांत उचित नहिं पर सहाय, लोई बं इमहिं भुजबल दिखाय ॥
उम्मेदनृपति यह मत्र लाय, अजमेर गयउ बुदिय बिहार्य ॥ ५७ ॥
मरुधर नरेस सेन किय मिलाप, महिपाल उभय रहि हित अमाप ॥
इत उदयनैर जगतेस रान, वुदी छुटी सु निरुख्यो निदान ॥ ५८ ॥

इतिश्री वशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणो सप्तमः श्लोक-
सिंहसहायार्थजैपुरपतिसचिवखत्रुपटङ्गराजामल्लाऽनुजशिवदासस-
ज्जीकरणातदग्रजसम्मतिवरवाडपुरपोधनतार्ज्जवानकथनद्वेन्दुबुन्दी
विजयकरणाकोटेशसनापतिमरणातारादुर्गाऽधिरोहणपारोपणपला-
यमानदलेलसिंहनयनपुरगमनकोटेशबुन्दीवैभवलुण्ठनसर्वाधिकार
स्वीकरणनृपार्थलोहितप्रान्तसमर्पणतत्प्राप्तिसाहिपुरेश्वररुशत्युपाल
म्भदानमहारावकोटागमनाशिवदासवरवाडविजयनकूर्मभाजधूलाधि-
१ श्रेष्ठरीति स ॥५४॥ २ रूपये ३ लोमी नेहक्रिया ५ ला न ॥२५॥ ६ इसकारण
७ अथ ८ बुन्दी छोडकर ॥ ५७ ॥ ९ स १० कारण दला ॥५८॥

आवशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायण के सप्तमराशि में, दलेलसिंह की स-
हाय के अर्थ जयपुर के पति (ईश्वरीसिंह) का अपन सचिव, खत्री उपदकवाजे
राजामल के छोटे भाई शिवदास को तयार करना १ उसके यह भाई की
सलाह से बरवाड युद्ध करने का कारण कहना २ हाथों के राजा का बुन्दी विज-
य करना और कोटा के पति के सेनापति का काम आना ३ तारागढ़ आदि
पर नीसरनियें लगाना और दलेलसिंह का भागकर नैयबे जाना ४ काटे क
पति का बुन्दी का वैभव लूटकर सय पर अपना अधिकार करना ५ उम्मेदसिं-
ह के अर्थ लोहितपुर का परगना देना ६ जिस के प्रति साहपुर के पति (उमेद
सिंह) का खिलकर उपाख्य (खोखला) देना ७ महाराव का कोटे जाना
शिवदास का परवाड को जीतना ८ कछवाहों के राजा (ईश्वरीसिंह) का पुला

पतिदत्तेलसिंहनयनपुरप्रेषणमालम्याश्वामनजायमिहिदिल्लीगमनम
रूपत्यजमेरा ११ गमनेश्वरीसिंहगजामलदक्षिणप्रेषणरजतमुद्राकांठि
निवेदनप्रतिज्ञानश्रीमन्तसचिवगणेश १ रामचन्द्र २ मेलनहठेन्द्र-
कोटासहायलज्जापापणातद्बुन्दीत्यजनाजमेरगमनधन्वेशसमागम-
नमेकादशो ११ मयूखः ॥ ११ ॥ ॥२०२॥

प्रायोव्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभषा ॥

॥ दोहा ॥

उदयनैर जगतेस इत, जान्यो समय नवीन ॥
बुंदिय दहून छिन्नि लिय, हे जैपुर बल हीन ॥ १ ॥
यातैं भुव उद्यम करन, उचित काल अब आय ॥
भागिनेयें हित दीजिये, हुंढाहर बटवाय ॥ २ ॥
यह बिचारिं कोटेम प्रति, पुनि पठये लिखि पत ॥
जीतैं जैपुर जंग जुरि, अब हम तुम अनुरत ॥ ३ ॥
सोधी दुर्जनसल्ल तव, उनकें गाढ न रंच ॥
पहिलैंही फीके परे, परि परि रान प्रपंच ॥ ४ ॥
यह बिचारि पच्छा लिखिय, रचहु कुंच तुम रान ॥
पीछैंही हम आतहैं, जुरि जितहिं घममान ॥ ५ ॥
यह दल बंचि बिचारि तव, निज भट रान बुलाय ॥

के पति दत्तेलसिंह को नैणवे भेजना मालमसिंह के पुत्र (दत्तेलसिंह) को
आश्वामन देना (विमासना) ९ जयसिंह के पुत्र (ईश्वरीसिंह) का दिल्ली
जाना १० मारवाड़ के पति का अजमेर आना और ईश्वरीसिंह का राजामल को
दक्षिण में भेजना ११ क्रोड़ रुपये देने की प्रतिज्ञा का बोधकराना १२ श्रीम.
न्त के सचिवराणजी और रामचन्द्र को मिलाना २१ हाटों के इन्द्र (उम्मेद-
सिंह) का कोटा की सहायता से लज्जा पाकर उसका बंदी छोड़कर अजमेर
जाकर मारवाड़ के पति से मिलने का ग्यारहवां ११ मयूख समाप्त हुआ और
आदि से दोसौ बानवै २६२ मयूख हुए ॥

॥ १ ॥ १ समय २ भानजे (माधवसिंह) के अर्थ ॥ २ ॥ ३ पत्र ४ प्रीतियुक्त हो-
कर ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥ ५ युद्ध ॥ ५ ॥ ६ पत्र बांधकर

मदाराणा और माधवसिंहकी जैपुर पर चढाईमसमराणि मादशमयूख(३३७७)

मरहठन ढिग मुक्कलन, दुवर तयार किय *दाय ॥ ६ ॥

इक्क सलूमरि पुर अधिप, केसारि सुवन कुवेर ॥

बखतसिंह काका बहुरि, किय तयार छितकेर ॥ ७ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

हुलकर हित कगार लिखवाये, कोटि १००००००० दम्म तिहि
दैन कहाये ॥

लिखिय मल्लार भरोस तिहारै, अब हम जैपुर बिजय निहारै ॥ ८ ॥

रामचन्द पडिन हम फोरहु, राणाजी सन पुनि हित जोरहु ॥

कूम तुमहि दैन जो करिहै, तासौं द्विगुन द्रव्य हम भरिहै ॥ ९ ॥

कगार हम लिखवाय दये कर, बखतशकुवेरदोहुपठये बैर ॥

दोऊरतब दक्खिन दल पत्ते, अवसर पाय मिले अनुरत्ते ॥ १० ॥

राणाजी सध्या सुत तत्यह, जया नाम सब रीति समर्थह ॥

बदलि पग्घ तासौं बखतेसह, मित्र भयो जिम भनद महेसह ॥ ११ ॥

यह सुनि रान सेन साजे दुडग, माधव जुत हकिय जैपुर पर ॥

नागोर पै बखतेस कबधह, अप्पन पुत्रिय स्वसुर हुतो वह ॥ १२ ॥

बिजयसिंह बाँको सुत व्याहो, स्वीय सुता तातै हित चाहयो ॥

इहि कारन जगतेस रान अब, सस्य जैन नागोर कटके सब ॥ १३ ॥

कनक मुल्ल रूपय दुवर लक्खन २०००००, पठयो बखतसिंह
पहँ हितपन ॥

अक्खिय खरच एह अवधारहु, एतनो निज मम भीर प्रचारहु ॥ १४ ॥

दुमैति लुब्ध बखतेस बचि दल, पुँट लयो रु नहिँ पठयो बैल ॥

अरीति पूर्वका॥१॥॥हित के लिये॥॥२॥पत्ररूपये॥॥३॥मल्लार॥॥४॥॥५॥ओष्ठसेना म
गये॥अनुकूल ॥ १० ॥ ८ समर्थ [यहा स्थार्थ में 'ह' प्रत्यय किया है सो अन्य
स्थानों में भी ऐसाही जानना] ९ कुवेर १० शिष से ॥११॥११माधवसिंह स-

हित १२ नागोर का पति बखतसिंह राठोड १३ महाराणा जगतसिंह की पु
त्री का स्वशुर था॥१२॥१४बखतसिंह का पुत्र१५राणा जगतसिंह की पुत्री १६
सेनासहिता॥११॥१७सुवर्ण१८धारण करो१९अपनी सेना मेरी सहाय पर२०भेजो
॥१४॥११खोटी बुद्धियाला२०खोमी२१सुवर्ण तो खेळिया और२१सेना नहीं भेजी

रान पचीस सहस्र २५००० दल रज्जिय, सेन सहस्र दस १००००
माधव सज्जिय ॥ १५ ॥

इम हजार पैंतीस ३५००० अनीकन, रान बहुरि माधव इच्छत रन
क्रिय दरकुंच उदयपतन तजि, सब कूरम सीमा पहुँचे सजि ॥१६॥
टोडा नगर परगन अंतर, माधव रान मिलान दये वर ॥
हो दिल्लिय तबतैं कूरम पति, यातैं अवर सेन पठयो अति ॥१७॥
हेमराज शबखसी दलकंठ सु, अरु भलायपति सुत जसवंत सुर ॥
नागरचाल ईस पुनि नारव, सुभट नाम सिरदार ३ जोर जब ॥१८॥
इत्यादिक जैपुर भट आये, रान समुख सजि कपट रचाये ॥
जान्यौं कछु दिन अंतर पारैं, तो नृप ईश्वरिसिंह पधारैं ॥१९॥

॥ दोहा ॥

कगर् पठयो कूरमन, रान निकट छल रक्खि ॥

महिपति तुम माधव अरथ, अवनि दिवावहु अक्खि ॥२०॥

॥ षट्पात् ॥

॥ अगैं नृप जयसिंह राज माधवहित अप्पिय ॥

अब नृप ईश्वरिसिंह ताहि मेटन मति थप्पिय ॥

॥ यातैं नहिँ अनुकूल सुभट हम सब कूरम सैन ॥

अप्पहु औंस अप्प सोहि करिहैं प्रतीति पन ॥

बिनु खरच नाहिँ कारज वनैं देहु खरच सब स्वीय करि ॥

इम अब अधीन तुमरे हुकम गहि हैं ईश्वरिसिंह लरि ॥२१॥

छल प्रपंच यह मंडि पत्र पठयो कछवाहन ॥

बंछि रान मतिमंद मन्नि लिय सत्य मुदित मन ॥

१ शोभित हुआ ॥ १५ ॥ २ सेनाओं से ३ कछवाहे की सीमा पर

॥ १६ ॥ ४ माधवसिंह ने और राणा ने मुकाम किया ५ अन्य ॥ १७ ॥

६ सेनापति ७ उणिगारा का पति नरुका ॥ १८ ॥ १९ ॥ ८ पत्र ९ भूमि

॥ २० ॥ १० माधवसिंह को दिया ११ ईश्वरीसिंह से १२ आज्ञा १३ सब

को अपना बनावै ॥ २१ ॥

दम्मे अयुत १०००० प्रतिदीहँ कुम्मे सेनहिँ करि दिन्नै ॥
 कपटी कूरम कटक लुठिँ दस १० दिन तक लिन्नै ॥
 दिय पत्र बहुरि दिल्लियनगर बुल्लिय ईस्वरिसिंह हुँत ॥
 आमेर पट्ट जावत अबहि रानाँ आयउ अनुज जुत ॥ २२ ॥
 यह सुनि ईस्वरिसिंह साह सैन सजव सिक्ख लाहि ॥
 करि आयउ दरकुच गुमरँ अति बल विसेस गहि ॥
 निज दल सम्मलि होय पत्र पठयो रानाँ प्रति ॥
 अगँ भो वह वचन कपोँ सु चुकत अब हुँमति ॥
 मत्रिय इतँ सु मरहट्ट दल राजामल सब फोरि लिय ॥
 इक्क न मलार फुट्टिय अतुल हुलकर राय उपाय दिया ॥ २३ ॥
 पादाकुलकम् ॥

रान सुभट हुलकर मिलवाये, बैलि सध्या सुत मित्र बनाये ॥
 रान सहाय करन तिन धारी, सो राजामल सबहि बिगारी ॥ २४ ॥
 रान सुभट दोहूँ निकसाये, मुहबिगारि निरखत भुँव आये ॥
 पुनि खत्रिय ले सब मरहट्टन, चलिय गन सिर कुँच कटटन ॥ २५ ॥
 कोटा मुलक लुट्टतहि आये, दुजनसल्ल नहिँ इत्य दिग्वाये ॥
 इम हुँत आय रान दल घेरयो, फैनपति मानहु कुँडल फेरयो ॥ २६ ॥
 पट्टपातु-सक इक नभ वसु सोम १८०१ माघ मेचँक पख अंतर ॥
 मरहट्टन दिय मार रान विटिय रचि संगर ॥
 धमि तोपन धमचक्र भुम्मि भोगेन हगमगिय ॥
 म्हाडे अरुन प्रजारि मुह गोलन म्हागमगिय ॥

१ रुपये २ प्रतिदिन ३ कछुवाहों की सेना को ४ लोन करके
 ५ शीघ्र ६ तुम्हारे छोटे भाई (माधवसिंह) सहित ॥ २२ ॥ ७ बावशा
 ८ से शीघ्र ९ घमड़ १० कुर्मनि ११ राजामल ने इधर मरहठों की सेना को ॥ २१ ॥
 १२ राणा के हमराहों ने १३ फिर ॥ २४ ॥ १४ भूमि की तरफ नीचा देखते
 हुए ॥ २५ ॥ १५ शीघ्र आकर १६ राणा की सेना को १७ सपों के पति (शेषना-
 ग) ने ॥ २६ ॥ १७ यदि १८ शेष के कणों पर १९ उदयपुर के निशान का रंग लाया है

गज हय सिपाह उड्डिय गरद प्रबल अचानक भय परिग ॥
 भंपत सिचान खरकोन गति मेवारन मद उत्तरिग ॥ २७ ॥
 ॥ दोहा ॥

आय अचानक अरध निस, मरहठन दिय मार ॥
 भीत रान व्याकुल भयउ, बैलि किय साम विचार ॥ २८ ॥
 यह उदंत मरहठ सुनि, रुचि बस छंडिग रोस ॥
 साम बिरचि किय रान सिर, दम्म लक्ख बाईस २२०००००
 नृप कूरम अरु रान पुनि, मरहठन मिलवाय ॥
 कियउ साम दोऊरनकै, रस हित कछुक रचाय ॥ ३० ॥
 माधवहूके मिलनकी रामचंद्र किय वत्त ॥
 सो हुलकर मन्नी नही, रक्खयो पृथक विरत्त ॥ ३१ ॥
 माधवहू यह सुनि कहिय, मैं ढुंढाहर राज ॥
 कैसैं ईश्वरिसिंहसों, सदै मिलन समार्ज ॥ ३२ ॥
 माधव रान बिगारि मुंह, तदनु उदैपुर पत्त ॥
 मरहठन जुत कुम्म नृप, घल्ली बुंदिय घत्त ॥ ३३ ॥
 सहर देस लौ किय सकल, अमल दलेल अधीन ॥
 तारागढ भो नहिं तबहि, बिंटयो जाय बलीन ॥ ३४ ॥

॥ पट्टपात् ॥

धमि तोपन धमचक्क कोट तारागढ कंपिग ॥
 दुवरकोटा भट देखि जानि परबल यह जंपिग ॥
 हम हड्डे बड बीर कढहिं फहरात फतूहैन ॥
 भग्गे जिम निकसैं न प्रबल लगगत कलंक पन ॥
 जो जानदेहु संजुत रखैत तो कवि कीरति पहिहैं ॥

१ तीतर पक्षियों की भांति २ मेवाड़वालों का ॥ २७ ॥ ३ पुनि ॥ २८ ॥ ४
 रूपये ॥ २९ ॥ ५ मरहठों ने दोनों राजाओं को मिलाकर ॥ ३० ॥ ६ जुदा रक्खा
 ॥ ३१ ॥ ७ माधवसिंह ने भी ८ राजा ९ सभा में ॥ ३२ ॥ १० मुख ११ जि-
 स पीछे १२ ईश्वरीसिंह ने ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ १३ कहा १४ ध्वजा उड़ाते हुए १५ सामग्री सहित

नांतरि कहुँ न हूँ मरद अहूँ पजर कहुँ ॥ ३५ ॥
 सुनि हुलकर दिय बचन रखत सजुत तुम जावहु ॥
 कहुँदिन कूरम जोर नहिँ बुदिय तुम पावहु ॥
 अजितसिंह अरु रूप तवहि कोटेस सुभट दुवर् ॥
 सजि बल खुल्लि निसान निकसि कोटा अध्वग हुव ॥
 लुट्टिप दलेल बुदिय सकल बुद्धसुतहिँ चाहत निरखि ॥
 कूरम समेत दक्खिन कटक दिन दुवर्दक्खिप लुद्ध लखि ३६
 जुत दलेल कछवाह तंदनु लै दल मरहठन ॥
 कोटा बिटिय जाय रुद्धि लुट्टत मग रहन ॥
 ग्राम सगत पुर जाय अप्प उत्तरि चम्मलि तट ॥
 लिय पत्तन गरदोप सेन सकुलि बट उब्बट ॥
 बज्जिय निसान ब्रबक बिखम दुसह फेर तोपन दगिय ॥
 अंदर अलाव मच्चिय मनहुँ लकापुर बदेर लगिय ॥ ३७ ॥

॥ हीरकम् ॥

दक्खिन दल लै दुँरुह कूरम इठ हेरयो ॥
 कोटापुर जाय घोर धैतन घन घेरयो ॥
 द्वैरवट दल बटि अप्प चम्मलि दिस तहँपो ॥
 अह सु दल पुव्वओर जाय जोर मडयो ॥ ३८ ॥
 तोपन धर्मचक्र कोट लोपन पुर लगयो ॥
 गोलन गजवीन सोर सकुलि देव दगयो ॥

१ शरीर पड़े पीछे ॥ ३५ ॥ २ सामग्री ३ रूपसिंह ४ भाग ५ चम्मे-
 दसिंह को देखना चाहते थे ६ लोभ देखकर ॥ ३६ ॥ ७ जिम पीछे ८ मार्ग
 के बुझा और कोटा के दोनों राहों (राज्या) को ९ पुर को घेर लिया १० मार्ग
 और बिना मार्ग में सेना भरकर ११ अग्नि १२ हनुमान की लगाई हुई ॥ ३७ ॥
 १३ कठिनाई से लड़ना में आवे ऐसी सेना लेकर १४ घातों से १५ गर्जना की
 ॥ ३८ ॥ तोपों के १६ युद्ध में कोट और पुर का लोप होने लगा १७ गजब करनेवाले
 गोखों ने १८ बारूद भरी हुई १९ अग्नि लगाई

कच्छप फटि पिठ्ठी नाग रीढक बररक्यो ॥
 दंतुलि तुटि कोल भोल भंभट भुकि भक्यो ॥ ३६ ॥
 अतल रु बितलादि लोक ओदकि भय भग्ये ॥
 दिग्गज डगमग्गि सोच मोचन मद लग्ये ॥
 फोजन घन फेर भुम्मि जोजन दुवर ठंकई ॥
 ओजन भट भीर जंग मोजन हठि हंकई ॥ ४० ॥
 टोलन पवि पात डोल गोलेन गढ बिगरे ॥
 गज्जन पुर सोध गोख छज्जन छटके परे ॥
 मंडप फटि के लदाव खंभन गन उच्छटे ॥
 थंभन थहराय ओक ओकेन अति उप्पटे ॥ ४१ ॥
 उद्धत गढ खंड फेर गोलेन लागि बिखरे ॥
 बज्जन कटि पंचजानि पब्वय फटि के परे ॥
 कोट रु कपिसीस ओट उद्धत छवि गैने ॥
 चोटन पर चोट लोट लगगत पुर लैनमे ॥ ४२ ॥
 गोपुर परिकूट अट्ट पट्टन परि बट्ट के ॥
 कापथ अतिपथ होत चम्मलि तट घट्टके ॥

१ शेषनाग की पीठ (सांकल की हड्डी) तूटी २ वराह की दंतुली तूटकर ३ वह उस भग
 डे (युद्ध) के भालों से झूटकर ४ गिरा (बैठ गया) ॥ ३६ ॥ ५ भय से डरकर भागे ६ शौच
 (बिष्टा, लाद) और मद छोड़ने लगे, फौजों के अधिक फैलाव से आठ कोस भूमि
 ढक गई और वीरों की भीड़ पराक्रम के साथ युद्ध की लहरों में हठ करके चली
 ॥ ४० ॥ पर्वतों पर ७ वज्र पड़ने की ८ तरह गोलों से गढ बिगड़ने लगा उन
 तोपों की ९ गर्जना से नगर के १० महल, झरोखे और छाजे तूटकर पड़ते हैं
 कितने ही लदाव के गुंमज फटकर खंभों का समूह उछड़ता है और ११ घर घा
 में थंभे धुज धूज कर उपड़ते हैं ॥ ४१ ॥ फिर गोलों से गढ के टुकड़े हो
 कर उड़ते और बिखरते हैं सो मानों वज्र से १२ पांखें कटकर पर्वत फटकर गिर
 ते हैं कोट और १३ कांगरों की आड उड़कर १४ आकाश में शोभायमान
 कर उड़ते हैं ॥ ४२ ॥ १५ नगर के द्वार के आगे का कोट (पड़कोटा अथवा (घू
 घस) और १६ बुरजें गिरकर कितने ही १७ मार्ग होते हैं २० चामल नदी के
 किनारों के घाटों में १८ पगडंडियें (छोटे मार्ग) और १९ बड़े मार्ग होते

द्विपथ रु त्रिक ओ चतुष्क रीति सु सब लुप्पई ॥
 कुट्टिमं ढिग छत्ति आनि छत्तिन मिलि उप्पई ॥ ४३ ॥
 अगन घर अंगि सोर सगर अति उच्छरै ॥
 जगन अतिजोर वोर दगन गढ बिगरै ॥
 अंदर अकवकि लोक बदर भय ज्यौं दुरे ॥
 मदिं पुर तूटि आनि चम्मलि जल के धुरे ॥ ४४ ॥
 डंबर उडि खेह अंक अबर सब लुकये ॥
 ध्यान सु सिव छुट्टि तान अच्छरि गन चुकये ॥
 चम्मलि जल छिज्जि मीन सम्मलि घन आवटे ॥
 दुगर डगमगि पक्क उंबर गति के फटे ॥ ४५ ॥
 सागर जल सेतु छोरि लोपन भुव लगगये ॥
 कोपन इम कुंम्म सेन तोपन दव दगगये ॥
 सगर दुव० मास मडि कूरम इम अंकुरयो ॥
 सत्यदि मरदठ पिक्खि दुज्जनसल सक्कुरयो ॥ ४६ ॥
 ॥ दोहा ॥

राजाजी सध्या सुवन, जया नाम अति जोर ॥

नगर में १ दो मार्ग, तिरपटा और चौहटे (थोपड़ के बजार) की सब रीतियें
 मिटगई ३ ऊपर की छत नीचे की छत से मिलकर २ नौच (घुनियाद) में
 मिलकर ४ शोभित हुई ॥ ४३ ॥ ५ बारूद की वह अग्नि उस युद्ध म घरों
 के चौकों में अत्यन्त लखली और उस बलवान् युद्ध के फैलाव में ६ आभय
 युक्त गढ विगडने लगा, भीतर के लोक घबराकर जिसप्रकार लका में हनु-
 मान् के भय से छिपे थे तिसप्रकार छिपने लगे ७ किलने ही मकान तूटकर
 चामण के जल में ८ घुळ (मिल) गये ॥ ४४ ॥ खेह के लखकर ९ छाजाने
 से आकाश में १० मूर्ध छिपगया अथवा मूर्ध और आकाश सब छिपगये, शि
 व की समाधि छूटकर अप्सराओं का समूह तान झुकगया, चामण का जल
 छीज कर मच्छियों के साथ बहुत जीव ११ लखे १२ पर्यंत बिखर पके हुए ऊ
 मर वृक्ष के फल के समान फटे ॥ ४५ ॥ १३ मर्यादा छोडकर १४ कोप के साथ
 कछबाई की सेना ने इसप्रकार अग्नि जलाई १५ लखा हुआ १६ बुर्जनसाख स-
 कुषा ॥ ४६ ॥ राजाजी नामक सिधिये का १७ पुत्र

ताकै इक१ गुटिका लगिय, घन रन मंडत घोर ॥ ४७ ॥
 यह लखि कुम्म दलेल सौं, चवि दक्खिन हितचाहि ॥
 पंच५ ग्राम जुत कापरनि, दंग दिवायउ ताहि ॥ ४८ ॥
 दक्खिन जोर दलेल लखि, दियउ कापरनिदंग ॥
 पुर पट्टनि पुनि सौंक्रमै, अपिय राज्य उमंग ॥ ४९ ॥
 तब पट्टनि लिप दक्खिनिन, किय त्रि३भाग बनि कंत ॥
 इक१इक१ हुलकर संधिया, इक१विभाग श्रियमंत ॥ ५० ॥
 संवत दुव नभ धृति समय १८०२, मेचक माधव मान ॥
 पट्टनि यम कोटा प्रधान, गिल्यो गिनीमन घास ॥ ५१ ॥
 ग्वाल सुंगभि गजपाल गज, चक्कि रंजक पर चेल ॥
 जमी देत कर्षुकै जिमहि, दिय यह दंग दलेल ॥ ५२ ॥
 मरिगै याहि रनके समय, चुंडाउति नृप मात ॥
 कोटा मध्यहिं दाह किय, पर भय जानि प्रपात ॥ ५३ ॥
 मृतक कर्म निज मातको, किन्नौं लघु सुत दीप ॥
 हो पुंकर मरुभूप सह, मिलि उम्मेद महीप ॥ ५४ ॥
 दीपकुमारि अरु दीप दुवर, सोदर भगिनी भ्रात ॥
 सह आलिय रानी सहयो, पुर कोटा दुख पात ॥ ५५ ॥
 कोटा इम कूरम दई, मरहठन जुत मार ॥
 महाराव सठ भीत मन, सम्मुह भो नहिं रंवार ॥ ५६ ॥
 रूपय सोलह लख१६०००००लिय, मरहठ रु कछवाह ॥

१ गोली ॥ ४९ ॥ २ उस जया को ॥ ४८ ॥ ३ नगर ॥ ४९ ॥ ४ पति बनकर उसके ४ तीन
 बंट किये ॥ ५० ॥ ५ वैशाख वदि ७ कोटा के युद्ध में ॥ ५१ ॥ जिसप्रकार
 ८ गज का ग्वाल ९ हाथी को महावत ११ पराये बख्त को १० घोड़ी १२
 भूमि का कर्सा, भूलकर और को और की देदेवै तिसप्रकार यह १३ नगर दले-
 लसिंह ने दिया ॥ ५२ ॥ १४ मरी १५ उम्मेदसिंह की माता १६ शत्रुओं के भय
 का पड़ना जनाकर ॥ ५३ ॥ १७ दीपसिंह ने १८ मारवाड़ के राजा के साथ ॥ ५४ ॥
 ॥ ५५ ॥ १९ गीदड़ ॥ ५६ ॥

च्यारि४००००००लक्ष पुनि बरस प्रति, लौ नै किय दम राह ॥
इम कोटा करिराजको, मद दिप कुंम्म उतारि ॥

कियउ कुच्च निज निज घरन, दुव२दल विजय बिचारि ॥५८॥

इति श्री वशभास्करे महाचम्पूके उत्तगायणो सप्तमः श्लो समा-
धवसिंहराजा जगत्सिंहजयपुरविजयार्थनिस्सरणादिल्लीत ईश्वरीसिंहा-
ऽऽगमनसराजामल्लदक्षिणासैन्यराणावेष्टनदण्डद्रव्यनयनकूर्मराजबु-
न्दीविजयकरणाकोटेश्वरमुभटनिष्कासनाऽनन्तरकोटायुद्धकरणारा-
णाजिपुत्रजयाऽभिधानगुटिकाक्षतप्रापणातच्छुल्कीभूतपट्टनिपुरप्रभृ-
तिनिवसथनिवेदनद्वेन्द्वमातृमरणाकोटातोदमद्रव्यग्रहणातच्चतुर्थांश-
हायनिकरस्थापन द्वादशो १२ मयूखः ॥ २९३ ॥

प्रायोन्नजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

इत पुखर उम्मेद नृप, माता मरन उदत ॥

सुनि सब सद्धिय वेदबिधि, मन्नि धरम दढ मंत ॥ १ ॥

खरच भीरं नृपकै बहुत, विपति सकै न निबाहि ॥

प्रभु सभर तउ धरम पटु, करै सु अनुचित काहि ॥ २ ॥

मिलै जबाहि सब संत्यकौ, अप्प असन तब लेत ॥

१ दढ के मार्ग से ॥ ४७ ॥ २ यहे हाथी का ३ ईश्वरीसिंह ॥ ४८ ॥

श्रीवशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में माधवसिंह सहित
राणा जगत्सिंह का जयपुर को विजय करने के अर्थ निकलना १ दिल्ली
से ईश्वरीसिंह का आना २ राजामल्ल सहित दक्षिण की सेना का राणा को
घेरकर दंड के रुपये लेना ३ ईश्वरीसिंह का बुन्दी विजय करके कोटा के पति
के हमरायों को निकालने पीछे कोटा में युद्ध करना ४ जया नामक राजाजी
के पुत्र के गोली लगना और उसके सूँफ (रिसवत) में पाटणपुर आदि ग्राम देना
५ उम्मेदसिंह की माता का मरना ६ कोटा से दूध के रुपये लिये जिसके चतु-
र्थांश का वार्षिक कर (खिराज) स्थापन करने का बारहवा १२ मयूख सम्पूर्ण
हुआ और आदि से दोसौ तिरानये २९३ मयूख हुए ॥

४ पुत्तर मयूखान्त ॥ १ ॥ (सकवाई) उम्मेदसिंह ॥ २ ॥ सप्त साय कोट भोजन

दुवर दुवर दिन लंघन बनें, दुल्लैं तदपि न चेत ॥ ३ ॥

॥ षट्पात् ॥

असन बैर सह सत्थ पति चोसर परिजावत ॥

जो व्यंजन सब अत्थ सोहि निज अत्थ लगावत ॥

मोहित सुभटन चित्त विंत्त अप्पत्त दित जोरत ॥

स्मेर सुमहिं जिम भुंग सुभट इम नृपहिं न छोरेत ॥

सब रतन फुट्टि घन घात जिम सूचीमुख कछु उव्वरिये ॥

ते भट उमेद भूपहिं अतुल रहत विंदि सहिदुहि घरिया ॥

भट प्रयाग अरु तोक बहुरि कल्याण आत त्रय ॥

बीर भवानीसिंह तिमहिं मजबूत धरम दय ॥

सूर धीर सिवसिंह वैरिसल्लोत महांदल ॥

इत्यादिक बड वीर नृपहिं सेवत मन उज्जल ॥

सब धन निवेदिं सद्धत हुकम बातर्जात जिल राम तट ॥

पिक्खै न हानि अप्पन प्रथित रक्खै हिय पतिकाम रट ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

अैसे भट नृप डिग रहिय, अवर न विपति प्रैपात ॥

तदपि भूप धीरज अतुल, सूर धरम सरसात ॥ ६ ॥

पर सहाय अनुचित परखि, तजि बुंदिय चहुवान ॥

सूर निकसि अैसे समय, बंधत लैन विधान ॥ ७ ॥

॥ षट्पात् ॥

मरुपतिहू अजमेर भिंदि भूपहिं करि अहर ॥

१ तोभी मन नहीं डुलता ॥ ३ ॥ २ भोजन के समय ३ सब के अर्थ ४ धन देता है ५ सुगंधि के कारण पुष्प को अमर नहीं छोड़े जैसे उमराव राजा को नहीं छोड़ते हैं ६ हीरा घण की चोट से बच जाता है जैसे कुछ सुभट राजा के पास बच रहे ॥ ४ ॥ ७ भेट करके ८ जैसे हनुमान रामचन्द्र के पास ९ प्रसिद्ध १० स्वामी के काम का ही स्मरण है ॥ ५ ॥ ११ आपदा पड़ने से अन्य नहीं रहे, तोभी ॥ ६ ॥ ७ ॥ १२ मिलकर

वमेदसिंहका कुदनकुमरी को व्याहना] सप्तमराशि-अयोध्यामयूख (१३८७)

समुख जाय सनमान बिरचि आन्यो डेरन बैर ॥
सहं भोजन सह वास बिहित रचि हेत घढायउ ॥
उभय^२ मिलन आनद पुराय^१ जस जगत पढायउ ॥
वय अप्प जवपि सोलह^{१६}वरस अक्खि तदपि छोरन अजस ॥
सिखपो चुदान खुरली सु घर रठोरहिं मृगया^१दिरस ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

मरुपतिकैं उमराव इक, ऊदाउत रठोर ॥
वखतरिं हे रन पट्टु विदित, रासि नगर सिर मोर ॥ ९ ॥
अक्खी तिहिं मरुईस सौं, कन्या सुभ मम गेह ॥
बुंदीसहिं व्याहन उचित, अप्प करहु हित एह ॥ १० ॥
अभयसिंह अक्खिय सुनत, तनयां बुल्लहु अत्थ ॥
बुंदीसहिं इम व्याहिं हैं, सुभ मुहूर्त हित सत्थ ॥ ११ ॥
वखतसिंह सुनि बुल्लई, तनया अप्पन तत्थ ॥
परिनाई कहि धन्वर्पति, सभर नृपहिं समत्थ ॥ १२ ॥
सवत दूग नभ धृति^{१८०}२सैमा, रांध तीज^३ अवदात ॥
इम रानिय कुदनकुमरि, व्याहयो नृप बिख्यात ॥ १३ ॥
इत दलेल कूरम उभय^२, दे मरहठन सिक्ख ॥
गुमर जोर जेपुर गये, तोर विजय रन तिक्ख ॥ १४ ॥
सुत खत्रिय सिवदासको, नदराम अभिधान ॥
बीरन जुत मेटन बिघन, रक्ख्यो बुदिय थान ॥ १५ ॥
इत सभैर यह व्याह करि, आयो नगर भनाय ॥
माता सन हित जुत मिल्यो, करन जोरि नत काय ॥ १६ ॥

१ अष्ट २ साध ३ वसंत ४ पश्चिम घण्टा ५ वसने घर म वा वस सुपख (बहुर) ने शक
बिया सीखी थी सो ६ शिकार में राठोख को दिखलाई ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥
यहां बुलायो ॥ ११ ॥ ८ मारवाह के पति ने ॥ १२ ॥ ९ विक्रम के शक में
१० वैशाख सुदि तीज के दिन ॥ १३ ॥ १४ ॥ ११ नामा ॥ १५ ॥ १२ वमेदसिंह ॥ १६ ॥

सस्सू यह जयसिंहकी, नृप बुधसिंह कलत्र ॥
 पलटी जो नय तजि प्रथम, तिहिं मंड्यो दित तत्र ॥ १७ ॥
 दुलहनि दुल्लह अंग अति, लिन्नै निलय वधाय ॥
 कछुदिन रखे मोद करि, मेटन वह अघ माय ॥ १८ ॥
 तदनुं मात सन सिखर किय, बुंदिय सिर नृप सज्जि ॥
 दुलहनि रक्खिय तत्थही, रस उज्जल दित-रज्जि ॥ १९ ॥
 कोटाधीस सहाय सन, पहिलै बुंदिय पांय ॥
 यातैं नृप बिक्रम अतुल, सज्ज्यो पृथक रिसाय ॥ २० ॥
 हिंडोली दरकुंच करि, दिन्नै आनि मिलान ॥
 मैना बारह खेटके, आनि मिले छक आन ॥ २१ ॥
 दुवर्जीवाँ धनुही करन, दुवर्दुवर्पिठि निखंगै ॥
 कंठि कटार बैलि बंसुरिय, सिर धवपत्त किलंग ॥ २२ ॥
 बाँयुहिं बा अरु किमहिं का, अंकहिं बुलत आँक ॥
 भजत तरत तरि पुनि भजत, लौफि उडि चित्रक लाँकै २३
 संगके अरु सल्लहके, गुंगाके बल गात ।
 दामाँके अरु देवके, जग्गूके कुल जात ॥ २४ ॥
 मैनाँ कुल इत्यादि मिलि, इम हुब हाजरि आनि ॥
 पहुमी सिर सज्ज्यो नृपति, मन रन उच्छव मानि ॥ २५ ॥

१ स्त्री २ नीति छोड़कर ३ किया ॥ १७ ॥ ४ आघ (आदर) ५ घर में ६ बुधसिंह से बदल गई थी वह पाप मेटने के लिये ॥ १८ ॥ ७ जिस पीछे ८ माता से ९ शृंगार रस से शोभायमान दुलहन को वहीं छोड़ी. अथवा दुलहन को वहाँ छोड़कर शृंगार रस की सर्जना की ॥ १९ ॥ १० बुन्दी पाई थी ११ जुदा ॥ २० ॥ १२ मुकाम १३ बारह खेटों के मैने ॥ २१ ॥ १४ हाथों में दो प्रत्यंचा के धनुष (धुरी) १५ भाँधे (तरकस) १६ कमर में कटारी १७ और बंसी १८ एवं मस्तक पर धोकड़ा (वृक्ष विशेष) के पत्तों की किलंगी ॥ २२ ॥ १९ पवन को २० आँक के घुत्त को २१ नीचे झुक कर उड़ते हैं २२ चीत्ते के समान कमरवाले ॥ २१ ॥ २३ ऊपर कहे हुए पुरुषों के कुल में उत्पन्न ॥ २४ ॥ २५ ॥

हिंडोली पुरकी प्रजा, जुगल स्वामि सिर जोय ॥
 सैन्य दम्भ सोलह सईस १६०००, नजरि किन्न नंत होय २६
 नयपटु सबन बिसासि नृप, किय बुदिय सिर कुच्च ॥
 बजि सिंधुव ढाहल बिसम, इम हं किय मन उच्च ॥२७॥
 नंदराम इततै निकसि, सईस पच ५००० सिख सग ॥
 पहुमी बबत पकरन, अब्भ घसत उतैमग ॥२८॥
 बियदल आवत बीचडी, मिलिग आनि ताजि मोह ॥
 गज्जरके घरियार गति, लग्यो बज्जन लोह ॥२९॥

इति श्री वराभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमः अंशः भूभृदु-
 म्मेदसिंहश्रीपुष्करद्वितीयो २ ढाहकरणादलेखसिंहसहितकूर्मरा-
 जजयपुरगमनखत्रिशिवदाससुतनन्दरामबुदीस्थापनहृन्दिमणायन-
 गराऽऽगमनसपत्नजनन्यभिवादनतत्रैवराज्ञीनिवासनस्वयबुन्दीविज-
 यार्थसज्जीभवनाहिंडोलीनगरसेनाप्रपतनद्वावश १२ खेटमैयासार्थ
 स्वामिचरणपतनविजयार्थप्रस्थानबीचडीग्रामसीमाशत्रुसैन्यमिलन
 त्रयोदशो १३ मयूख ॥ १३ ॥ ॥२९४॥

प्रायोन्नजदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

१ माये परदत्तसिंह और धर्मेदसिंह दो स्वामी देखकर २ नीति सहित कपय
 ३ भुक्तार ॥ २६ ॥ २७ ॥ ४ आकाश को ५ मस्तक से बिसता हुआ अर्थात्
 जिसका मस्तक अण्डाकार से लगा हुआ ॥ २८ ॥ ६ ग्राम का नाम है ॥ २९ ॥

श्रीवराभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, ऋषि धर्मेदसिंह
 का पुष्कर में बसरा विवाह करना १ दलेखसिंह सहित ईरवरीसिंह का जय-
 पुर जाना २ शिवदास खत्री के पुत्र नन्दराम को बुन्दी में रखना ३ धर्मेदसिंह
 का मणाय नगर में आकर अपनी सातेही माता को नमस्कार करना ४ वहाँ
 राणी को रख कर अपनी बुन्दी को विजय करने को सब होना ५ हिंडोली
 में सेना का पड़ाव होकर बारह लेखों के मीलों का स्थानी के घरों में गिरना
 ६ विजय के अर्थ गमन करके बीचडी नामक ग्राम में शत्रु सेना से मिलने
 का तैयारी १६ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसी चौरानमें २९४
 मयूख हुए ॥

॥ चटकप्लुत ॥

दुव२ सेन बग्ग लीनी, *कलि कोप अंख कीनी ॥

फन सेसनाग फुट्टे, दिगदंति दंत तुट्टे ॥ १ ॥

बरकी बराह दह्वा, गिलि अंग कुम्म ठह्वा ॥

दिगपाल कंप लग्गे, पुट इन्द्र१४ भीति भग्गे ॥ २ ॥

सब सिंधु सेतु लुप्पे, कलि जानि वीर कुप्पे ॥

सिवकी समाधि जग्गी, नवमाल आस लग्गी ॥ ३ ॥

कइलास छोरि काली, चढि सिंह संग चाली ॥

चउसठि६४ चौंकि आई, घन मंडि नच्च घाई ॥ ४ ॥

दुवपंच५२ बीर दोरे, जैव डाकिनीन जोरे ॥

कलिंकार मोद पग्गे, महती बजान लग्गे ॥ ५ ॥

गुन अच्छरीन गाये, अति मोद भुंड आये ॥

नभ गिद्धनीन छायो, रवि रेनुमें लुकायो ॥ ६ ॥

चहुवान बाजि नक्खे, लखि आखु जानि तैक्खे ॥

किलकार बीर बज्जी, समसेर मार सज्जी ॥ ७ ॥

काटि टोप जात भीके, जिम पत्र जोगनीके ॥

तरवारि धार धप्पै, अरि केनै स्वर्ग अप्पै ॥ ८ ॥

कर धूप भूप धायो, इत नंदराम आयो ॥

बिथुरी कैजाक बानी, मिलि बीर धीर मानी ॥ ९ ॥

बिबि^{१६} २ ओर तीर बज्जे, लखि भीरु नीर लज्जे ॥

* युद्ध में † दिशाओं के हाथियों के ॥ १ ॥ १ भूमि के चौदह पुट (लोक) हर कर भागे ॥ २ ॥ २ समुद्रों ने मर्यादा छोड़ी ३ युद्ध जानकर बीर कोपेनवीन मुंडमाला की आशा लगी ॥ ३ ॥ ४ ॥ ४ वेग ६ युद्ध करानेवाला (नारद) हर्षित हुआ और ७ बीणा वजाने लगा ॥ ५ ॥ ८ आकाश ॥ ९ ॥ ९ घोड़े ढाले (उठाये) १० चूहे को देख कर ११ ताखा नाग ॥ ७ ॥ १२ टोके जाते हैं (निरन्तर प्रहार को दिगल भाषा में भीकना कहते हैं) १३ कितने ही शत्रुओं को ॥ ८ ॥ १४ खड्ग विशेष हाथ में लेकर १५ युद्ध की वाणी (दिगल भाषा में युद्ध का नाम कजिया है जिस संबंधी) ॥ ९ ॥ १६ दोनों ओर

बरछीन वेध लगै, परि सूर *मुक्ति पगै ॥ १० ॥
 घट के कटार कटै, मुख सूर नूर बटै ॥
 फवि सेल पार फुटै, छक लोह प्रान छुटै ॥ ११ ॥
 फटि घाय छिछि हलै, जलजत्र जानि चलै ॥
 सिख नदरामके जे, लखि *ओदकै कलेजे ॥ १२ ॥
 फटि इकोच गात फटै, जिम केलि गम्भ कटै ॥
 गहि *कुत नाभि गेरै, धमनीन मूल हरे ॥ १३ ॥
 उलटत सांदि आली, हय होत केक खाली ॥
 मग ओर खेह दुल्ले, जम स्वर्ग बट्ट खुल्ले ॥ १४ ॥
 गजमत्य फेट फुटै, जिम गोत्र कूट तुटै ॥
 परि भीरु सोक कूई, परभोग ज्यो असूई ॥ १५ ॥
 गति हीन केक फोके, मन जानि सजमीके ॥
 तजि प्रान जात मच्छी, तरु डुई जानि पच्छी ॥ १६ ॥
 सुधि भुल्लि केक बकै, जह जानि सीधु छकै ॥
 कटि जात अत हीसौं, जिम पाप जैन्हवीसौं ॥ १७ ॥
 तरवारि भाँ चलकै, जिम सपिकै सलकै ॥
 हुब रत्त रत्त अगे, रजतत्व जानि रगे ॥ १८ ॥
 दविजात केक श्रेणी, नैर अस्व ती कि ऐनी ॥

*मुक्ति पाते हैं ॥ १० ॥ ११ ॥ *कुहारा डरे ॥ १२ ॥ इकधर फटकर शरीर फटते हैं मानों
 ॥ केल घृच का गर्भ कटता है - भाला लेकर नाभि में घुसेद्यते हैं सो १
 मानों नाभियों (नसों) का मूल हरेते हैं कि कहा से निकली हैं ॥ १३ ॥ * स-
 वारों की पत्ति ३ पमराज ने स्वर्ग का मार्ग खोल दिया ॥ १४ ॥ ४ पर्यता के
 पोखर ५ रूप (कूप) में १ जैसे दूसरे के ऐहवर्ष भोगने से असूया करनेवाला
 पड़े तैसे ॥ १५ ॥ * इन्द्रियों को रोकनेवाले का सच्छी (घृणा के साथ) अर्था-
 त् शरीर की घृणा करके प्राण जाते हैं = टूट (बिना पत्तों के घृचमूल) को
 पछी छोड़े जैसे ॥ १६ ॥ जब मनुष्य ६ मय में छके जैसे १० हृदय से ११
 गंगा से ॥ १० ॥ १२ क्रान्ति १३ विषुव (बिजुली) १४ रगरेज ने अथवा रजो
 गुण में रगे हैं ॥ १८ ॥ १५ अरथ जाति के पुरुष से १६ सुंगी जाति की श्री

मिलि प्रेत डाकिनीसों, हिय मँडि गाढ हीसों ॥ १९ ॥
 कुच तिकख तास गहूँ, जिम विदकैं सु बहूँ ॥
 कति जोगिनीन छीकैं, बढि जीत लोभ हीकैं ॥ २० ॥
 सुहि पुँव्व भिंटनेमैं, जनु देत पुष्टि प्रेमैं ॥
 कति लै रु संड लेटैं, प्रतिसँभ जानि भेटैं ॥ २१ ॥
 उदघृष्ट केक सजैं, कति पीड़िते न रज्जैं ॥
 इम मत्त प्रेत सोहैं, मिलि च्यारि४भाँति मोहैं ॥ २२ ॥
 भुव गाम बीचड़ीकी, हुव रत्त रत्त हीकी ॥
 भिरि नंदराम भज्ज्यो, लखि खत्रि नीर लज्ज्यो ॥ २३ ॥
 सिख तास संम्मुहाये, सँलभा कि दीप धाय ॥
 तिन्ह तकि भूप 'नीरे, परि बीच खग्ग 'पीरे ॥ २४ ॥
 हठ लगि हड्ड मारैं, दुव हत्थ खग्ग भारैं ॥
 कटि बग्ग बाजि फेरैं, हठि नंदराम हेरैं ॥ २५ ॥
 भजिकैं छिप्यो सु खत्री, जिम सेन लाव पँत्री ॥
 सिख हड्ड दोहु२सज्जे, बिकराल बाढ बज्जे ॥ २६ ॥
 अति जंग संकुँल्यो वहाँ, अवमर्द दोन२क्यो वहाँ ॥
 तरवारि केक तुटैं, घरियारि जानि फुटैं ॥ २७ ॥

दृश्य जावे (जैसे कास शास्त्र में शश, मृग, अश्व इन तीन प्रकार के पुरुष और
 मृगी, बड़वा, हस्तिनी ये तीन प्राकर की स्त्रियें लिखी हैं जिन की व्याख्या
 दूजी और तीजी राशि में विस्तार पूर्वक कर दी गई है) १ मसल (कुचल) कर
 ॥ १९ ॥ २ उस डाकिनी के ३ बड़ा बेधन करते हैं ४ केवल लोभ करके
 अथवा हृदय में जीतका लोभ करके ॥ २० ॥ ५ प्रथम मिलाप में ६ नपुं-
 सक ७ शय्या पर ॥ २१ ॥ ८ घर्षण (रगड़ना) ९ पीड़ा देते हुए तृप्त नहीं होते
 इन उदघृष्ट और पीड़ित आदिका विषय तीजी राशि में लिख आये हैं अस्ती-
 क्षता के कारण अधिक लिखना नहीं चाहते ॥ २२ ॥ २३ ॥ १० सन्मुख हुए
 ११ मानों दीपक पर पतंग दौड़े १२ समीप १३ तरवार से पीड़ित किये ॥ २४ ॥
 ॥ २५ ॥ १४ शिकरे से लबा पक्षी ॥ २६ ॥ दोनों ने १५ अवकाश रहित, पीड़ाकरि

निकसत नैन गोटे, फदकै कि भेके छोटे ॥

कति चाप अँचिं भरिँ, जिम काल ढाच फारिँ ॥ २८ ॥

बिच तास भाल ठढा, सुहि जानि तिक्ख दढा ॥

फटि पेट अत दीसी, पल्लटी कि पन्नगीसी ॥ २९ ॥

चउ ४ फार दीय मन्ने, जिम कंज च्यारि ४ पन्ने ॥

फटि कालखँज खुले, फवि ज्यो पलास फुल्लले ॥ ३० ॥

सर लीन तुँद कूपी, विल जानि नाग रूपी ॥

इम भूप जग मड्यो, सिख द्वात खग्ग खड्यो ॥ ३१ ॥

अँवसिद्ध केक लज्जे, मुख अग्ग भीत भज्जे ॥

तिन पिडि हड्ड धाये, त्रय इकोसलौं भजाये ॥ ३२ ॥

॥ दोहा ॥

राजामल सोदँ सुवन, नदराम गय भज्जि ॥

सिख कितेक सम्मुद्ध मरे, नैठे कति जँल लज्जि ॥ ३३ ॥

सानुकूल नृपकी निधँसि, लग्गे लोह न अग ॥

अरि आहव भज्जे भरकि, जिम लखि धाज कुलर्ग ॥ ३४ ॥

नागर द्विज नृप श्रुत्य इक, नदराय अभिधान ॥

सोहु सूर सम्मुह भयो, किन्नो हद घमसाँन ॥ ३५ ॥

मारे सिख विक्रम अमित, जुरयो विविध जयकार ॥

लग्गे वभन वीरकै, सत्त७कूपान समार ॥ ३६ ॥

युद्ध किया ॥ १७ ॥ १ मैहक २ धनुष को १ खँचकर जैसे ४ यमराज ५ युद्ध
कायता है ॥ २८ ॥ ६ उस धनुष के धीच में तीर लगा है सोही मानों यम-
राज की तख्ती बाढ़ है ॥ २९ ॥ ७ कमल है ८ फलेंजा ॥ १० ॥ ९ पेट की ना-
भी में बाण घुसते हैं सो मानों पिल में सर्प घुसता है १० सिक्खों के समूह
को काटा ॥ ३१ ॥ ११ अचक्षिष्ट (बाकी के) ॥ ३२ ॥ १२ राजामल के भाई का
पुत्र १३ नाठे (भाग) १४ पराक्रम को लजाकर ॥ ३५ ॥ १५ आग्य १६ युद्ध
से १७ यमक फर १८ सिखाय को देखकर कुलग पक्षी भगै जैसे ॥ ३४ ॥ १९
युद्ध ॥ २० ॥ २० जय करनेवाला २१ तरवार २२ मार (ग्रहार) सहित ॥ ३६ ॥

सोधि खेत नृप घायलन, लये नृजानन डारि ॥
 बुंदिय आप रु भटन जुत, प्रबिरयो अररन फारि ॥ ३७ ॥
 उदयराम पकरयो बनिक, लये अयुत दैम दम्म ॥
 बैठो नृप बुंदिय तखत, करि निज हत्थन कैम्म ॥ ३८ ॥
 संबत दुव नभ धृति १८०२ समय, सावन तीज ३ बलच्छ ॥
 असिबर बल किन्नौ अमल, अधिपति बुंदिय अच्छ ॥ ३९ ॥
 सुनि कछवाह दलेलसौ, अकखी मम दल संग ॥
 मारहु जाय उमेदकौ, जुरहु बडे बल जंग ॥ ४० ॥
 सटि दलेल सुनतहि नटयो, किन्न अरज करजोरि ॥
 मंडहु तुम अप्पन अमल, मै बुंदिय दिय छोरि ॥ ४१ ॥
 ताके कैर लिखवाय तब, कैंगर कैरम लीन ॥
 नैनवा रु करडरनगर, रक्खे ताँस अधीन ॥ ४२ ॥
 अवर देस अप्पन करन, गिलैन अजीरन ग्रास ॥
 बुंदियपर पिल्लियँ बिकट, पँतना सहँस पचास ५०००० ॥ ४३ ॥
 नाम नरायनदास इक, खत्री रन हमगीर ॥
 राजामल सिवदासको, भ्रात सज्यो बरवीर ॥ ४४ ॥
 तिहिँ करि कूरम सेनपति, पठयो बुंदिय लैन ॥
 संग दये उमराव सब, उद्धत जे रन अँन ॥ ४५ ॥

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणो सप्तमः श्लोकः दृष्टेन्द्र

१ डोलियों में २ कवाड़ तोड़कर ॥ ३७ ॥ ३ दड के दश हजार रुपये ४ अपने हाथों से कार्य करके ॥ ३८ ॥ ५ शुक्ल पक्ष की ६ श्रेष्ठ तरवार के बल से ॥ ३९ ॥ ७ मेरी सेना साथ लेकर ॥ ४० ॥ ८ अपना अधिकार ॥ ४१ ॥ ९ दलेल-सिंह के हाथ से १० पत्र लिखाकर ११ कछवाहे ईश्वरीसिंह ने लिया १२ दलेलसिंह के आधीन रक्खे ॥ ४२ ॥ १३ अजीर्ण के ऊपर ग्रास (निवाला) गिटने के लिये भयंकर १५ सेना १४ भेजी ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ १५ युद्ध के स्थान में अनम्र ॥ ४५ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, हाडा क्षत्रियों

सपत्नसैन्यवीचहीयुद्धकरणाखत्रिनन्दरामपत्न्यापनविजयिरावराट्स्वपु
रप्रवेशनदत्तेलसिंहबुन्दीत्यजनपुन कूर्मराजपुतनाप्रेषणा चतुर्दशो १४
मयूख ॥ १४ ॥ ॥ २९५ ॥

प्रायोन्नजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ मुक्तादाम ॥

सज्यो अत्र कूरम भूपति सैन, लगे भट घुम्मन बुदिय लैन ॥
बन्पो समयो यह दुस्सह आय, जहाँ फटि वाल तजै निज भाय ॥ १ ॥
पिता सुतको पतिको निज नारि, तजै वह बैस वनी भयकारि ॥
जनै जननी जु गिनै सग ठीक, वहै नर आहि न मध्य १०००००००
०००००००००० अनीक ॥ २ ॥

वहै नर आतम सर्विंद धन्य, वहै नर जो न ततो मृग वन्य ॥
वहै नरही गुन तीनन ३ ईस, वहै अवनीसनको अवनीस ॥ ३ ॥
वहै जिम कूट तथा डक सैर, वहै सब ओर न सुद्ध अपार ॥
वहै नर तीन ३ अवस्थन एक, वहै सँवघाँ सित धारन तेक ॥ ४ ॥

के इन्द्र का शत्रु सना स पीण्डी नामक ग्राम में युद्ध करना १ नन्दराम का
भागना २ जयपाये हुए रावराजा का अपने नगर में प्रवेश करना ३ वल्ले-
सिंह का पुन्दी छोड़ना ४ फिर कछुवाहों के राजा का सेना भेजने का चौद-
हवा मयूख १४ समाप्त हुआ आदि से दोसौ पिचानयें १९५ मयूख हुए ॥
१ सेना २ अपनी माता को ॥ १ ॥ ३ वार्ता ४ भयंकर, माता के जन्म दिये हुए
सभी मनुष्यों की गणना कीजाये तो यह ठीक मूल में लिखी हुई सख्या
होती है (पुराणों के मत से इस ससार के सम्पूर्ण मनुष्यों की यह सख्या है)
तो तो सभी इस सेना में नहीं ५ है (यदिशक्त सख्या के सभी मनुष्य
एकत्र होते तो यह ब्रह्मज्ञानी पुरुष भी मिल जाता) ॥ २ ॥ १ यह आत्मज्ञा-
नी पुरुष धन्य है और जो वह आत्मज्ञानी पुरुष नहीं है तो उसके बिना अन्य
पुरुष तो ७ वन के पशु हैं = वही आत्मज्ञानी पुरुष सत, रज, तम तीनों गुणों
का पति है ९ यह राजाशा का राजा है ॥ ३ ॥ १० इस भाषा की रचना में
११ सार (तत्व, स्थिर अंश) रूप वही है १२ यह सप ओर व्याप्त है १३ भूत,
वर्तमान, भविष्यत्, तीनों अवस्थाओं में यह एक रूप है १४ यह सप ओर
स्वत घारा का १५ फल है ॥ ४ ॥

वहै नरही सब कृत्रिम सकिख, वहै यह मोघे रह्यो बिच रकिख ॥
 वहैहि वहै गुनको नहिं जोग, वहै बिखई यह अन्न्य सु भोग ॥५॥
 वहै अँज इष्ट अनादि अनंत, गुनत्रय नारियको वह कंत ॥
 वहै नहितो भव नाहक पाय, बिगारत बालिस जुव्यन माय ॥ ६ ॥
 वहै डक १ रुंधंत नाहक नारि, वहै सठ अन्नहिंको खैयकारि ॥
 वहै पैय मात बिगारनहार, वहै रहि व्यर्थ करें भुँव भार ॥ ७ ॥
 भयो नर नारि न लँछन एह, नहीँ कुच मुच्छन सुंदर देह ॥
 हुते नहिं याबिधि के भट हाय, बडे मरनीक तथीपि बँलाय ॥८॥
 कह्यो हम ह्याँ कछु बोधे बिचार, सुयो वह बीर गिनै सब सार ॥
 कहा मरनो अरु जीवन तीस, कहा सुख दुख सबे इक १ मास ९
 वहै हि गिनै निजही सब वत्त, यहै रन तो भल होवहु अँत ॥
 परंतु न हे इम कैरम बीर, गिने सुख अँच्छरि म्वर्ग सगीर ॥ १० ॥

वही मनुष्य? इस जगत् का साक्षि रूप है वही हमरनाशवान् (भूते) संसार को रख
 रहा है १ वह ब्रह्म ज्ञानी ब्रह्मस्वरूप आप ही आप (स्वयं ज्योति) है, उसमें किसी
 गुण का योग नहीं है ४ वह भोग करनेवाला है और यह अन्य जगत् उसका
 भोग है ॥५॥ ५ अजन्मा [जिसका कभी जन्म नहीं होता है] ६ तीन गुण रूपी
 स्त्रियों का वह ७ पति है = वैसा ब्रह्मज्ञानी नहीं है तो यह समार पृथा पाकर
 १ वह सूर्ज माता का जीवन वृथा बिगाड़ता है ॥ ६ ॥ वह सूर्ज वृथा एक स्त्री
 को १० रोकता है ११ वह सूर्ज अन्न का नाश करनेवाला है १२ वह सूर्ज माता
 के दूध को बिगाड़नेवाला है १३ पृथिवी पर व्यर्थ भार करता है ॥ ७ ॥ यह नर
 होगया है १४ स्त्री का चिन्ह नहीं है, नहीं तो स्त्री ही है, इसके कुच नहीं हैं १५
 मूँछों से देह सुन्दर है परन्तु पुरुष नहीं है खेद की बात है कि १६ इस सेना में
 इसप्रकार के आत्मज्ञानी वीर नहीं थे १७ तो भी बडे मरनेवाले १८ बलाय थे
 (वन पशु विशेष जिसका अत्यन्त क्रोधी होना प्रसिद्ध है और राजपूताने में
 उसको बूट और बागड़ भी कहते हैं और फारसी में आफन (आपदा) का ना-
 म बलाय है) ॥ ८ ॥ १९ ज्ञान २० सब में सार रूप २१ उस आत्मज्ञानी के मरना
 जीना क्या है २२ एक सरीखे हैं ॥ ९ ॥ २३ वह सब बात को अपनी ही जा-
 नता है तो यह युद्ध भी २४ यहाँ भले ही होवे २५ कछेवाहा ईश्वरीसिंह के
 वीर इसप्रकार के नहीं थे २६ अप्सराओं के साथ स्वर्ग में शरीर का सुख

रु एहहि केवल सूरन धर्म, सुही तिन्ह रक्खि कसे दृढ बर्म ॥
 सजे भट करम मानज सूर, खंगारज नाथज पानिप पूर ॥ ११ ॥
 कल्याणज पुनमल्ल कुलीन, द्वितीयरहु कुंभज भ्राजि अदीन ॥
 जथा बनबीर चतुर्भुज जात, घने सिव ब्रह्मज ईष्टप्रघात ॥ १२ ॥
 सजे बलिभद्रज सेखेंज सत्य, घने सुरतानेज संध समत्य ॥
 नरुज र कुंभज अच्छरि नाह, कढे इन्ह आदि बहे कछवाह ॥ १३ ॥
 सज्यो दलईस नरायनदास, लये सब सग जग्यो बल जास ॥
 चलयो दल जैपुरको तजि तैत, बढी रन जितहिं जितहिं बत ॥ १४ ॥
 खुली गजपिठि घुजा पचरंगै, चले हय मप्पत छोनि मलग ॥
 भई सठ आलिंध कालिय गेल, बडे हित उग्र चढे चलि बैल ॥ १५ ॥
 चलयो महेती गहि नारद लार, चले गन बावनपश्यो पैल प्यार ॥
 खली चउसठि६४मलगत चाल, चलयो गहि खप्पर खितरपाल ॥ १६ ॥
 चले गन डाकिनि जैछ चुरेल, पिसाच रु रक्खस गुह्यक गेल ॥
 चले कति डकत इकहिं पाय, चले कति दोउनेरभू धमकाय ॥ १७ ॥
 चले कति मढत नट कुंलद, चले कति चौकि हसे भटअट ॥
 चले गन गिहनि चिलहनि घोर, शृगाल रु कक मद्दा रन सोर ॥ १८ ॥
 गहक्किंध सेन सिंधा किय गोन, चलयो दल कुम्भ प्ररुद्धत पोन ॥

माननेवाले थे ॥ १० ॥ अरु १ धीरों का कवल यही धर्म है, सोही उनने रक्ख
 कर दृढ २ कवच कसे ३ कछवाहे धीर ४ मानसिंहोत (राजाघत) ५ पूर्य परा
 क्रमवाले ६ खंगारोत ७ नापाघत ॥ ११ ॥ ८ कल्याणोत ९ पूर्यमल्लो-
 त १० बूसरे कुभाघत ११ युद्ध में दीनता रहित १२ चतुर्भुजोत १३ कितने ही
 शिव ब्रह्म पोते जिनको युद्ध ही इष्ट है वे उस युद्ध में सजे ॥ १२ ॥ १४
 बलिभद्र के वश के बलिभद्रोत १५ सेनाघत १६ सुरताणोत १७ समर्थ समूह
 १८ नरुके १९ कुभाघत २० अप्सराओं के पति ॥ १३ ॥ २१ सेनापति २२
 राहा ॥ १४ ॥ २३ जयपुर की ध्वजा पाच रंग की है २४ भूमि को २५ सखियों
 सहित कालिका साथ हुई २६ शिवा ॥ १५ ॥ २७ महती नामक धीणा को २८ मास के
 प्यार से ॥ १६ ॥ २९ यत्न ३० एक पैर से कूबतेछुए ३१ दोनों पैरों से ॥ १७ ॥ ३२ कुलांड
 ॥ १८ ॥ ३३ प्रसन्नता की पोखी पोख कर ३४ स्थापनिये ३५ पथन को रोकती

अटै कति मंडि बरच्छिन वार, करै कति लच्छिन बेध कटार १९
 किते खुरलीपेट्ट सद्धत खग्ग, मिलै रचि केक तुपकन मग्ग ॥
 बनै कमनैतन पच्छिन बेध, सजै कति कुंतन केलि सुमेध ॥२०॥
 दिपै रसबीर गिनै तन देह, छुहे निज साहस देत न छेह ॥
 छलै छक हूर चहै कति छैल, चलै द्रुत मंडित कुंकुम चैल ॥२१॥
 मलप्पत बाजिन के मचकाय, धरातल दब्बत बेग धुजाय ॥
 चल्यो दल दुद्धर यौ दरकुच्च, उठावत दुग्गनको छक उच्च ॥ २२ ॥
 लग्यो भर भोग पलटन सेस, भयो गिलिअंगदरी कमठेस ॥
 तुटी लखि दह दयो किंरि तुंड, भरै रंद कपिग दिग्गजभुंड ॥२३॥
 उडे खुलि केतन कुंभिने कंध, डिगे डर डंकन भीरुन बंध ॥
 छिप्यो निस चंद रु बासर अक, चहै निस घूक तथा दिन चैक २४
 सुपै सुधि नाँ निस बासर संधि, बन्यौ तम तोमँ प्रैमा घन बंधि ॥
 चले इत सँदल मँदल चाँस, मिले इत बदल मँदल मास ॥ २५ ॥
 छल्यो इत पानिपँ ओ उत नीर, सहायक त्यों रसबीर सँमीर ॥
 घुरै इत नोबति ओ उत गँज्ज, इतै भुव पाय उतै नभ सज्ज ॥२६॥
 हुई कछवाहों की सेना चली १ निशानों (चिन्हों) को ॥ १९ ॥ २ शस्त्रा-
 भ्यास में चतुर ३ भालों से क्रीड़ा करते हैं ४ श्रेष्ठ बुद्धिवाले ॥ २० ॥ ५
 क्रोध में आये हुए ६ रसिक ७ केसरिया वस्त्र ॥ २१ ॥ ८ कितनेही घाड़ों
 को उडाते हैं ॥ २२ ॥ ९ भार से शेषनाग फणों को १० पलटने लगा ११ क-
 मठ अपने अंगों को गिट (समेट) कर कंदरा रूप होगया १२ बराह ने १३ दन्त
 तूट कर दिग्गज धूजे ॥ २३ ॥ १४ हाथियों के ऊपर १४ ध्वजा खुल कर उड़ी १५
 भय से १६ कायरों के बंध डिग कर डरे, रात्रि में चंद्रमा और १८ दिन में सूर्य
 छिपा, घूघू (उलूक) रात्रि को और १९ चकवा दिन को चाहने लगे ॥ २४ ॥ परं-
 तु दिन और रात्रि की संधि (संध्या) की सुधि नहीं रही इसप्रकार २० अंधेर
 का समूह २१ मेघ की क्रांति बांध कर रही २२ इधर तो शब्दायमान होकर २३
 मर्दल (वायु विशेष) २४ युद्ध की खबर देकर चले और इधर २५ भाद्रपद मास
 के बदल मिले ॥ २५ ॥ २६ सेना रूपी घटा में पराक्रम और मेघ की घटा में
 पानी बढ़ा और इनके सहायक सेना में वीर रस और मेघ में २७ पवन हुआ
 इधर नोबत का शब्द और उधर २८ गर्जना हुई और सज्जित होने को इधर

जैपुरकी सेनाका मेघके रूपकसे वर्णन] सप्तमराशि पचत्रयमयूष (१३९९)

इन्हें न चहैं रु उन्हें जग आस, बनें इत शस्त्र उतैं जलबाँस ॥
 इतैं बहुरग उतैं सित स्याम, लसैं इत ओ उत वेग ललामैं । २७ ।
 लसैं इत अग्र उतैं लहरून, दिपैं मुद सूर मयूरन दून ॥
 इतैं गजदत उतैं बक ब्रांत, इतैं उत दोरत अग्र दिखात ॥ २८ ॥
 इतैं उत पक्खर दंडुर बुल्लि, इतैं उत गिद्ध रु चातक फुल्लि ॥
 इतैं उत खग्ग रु विज्जुन ओघ, इतैं उत होत धरा नभ मोघा २९ ।
 इतैं उत ओज डेरम्मद भास, रजोगुँन बूँढनि ब्रात बिलास ॥
 करैं सर यों उत ऊँसर जुत, इतैं उत भूपन भभेन पुत ॥ ३० ॥
 कहैं इत लैन मही कछवाह, कहैं उत पिक्खिं हमैं वह चाह ॥
 कहैं यह नीति बियारनैं कत्य, कहैं वह अन्न प्रचारन अंत्य । ३१ ।

भूमि प्राप्त हुई और उधर आकाश प्राप्त हुआ ॥ २९ ॥ १ इस सेना को कोई नहीं चाहता था और मेघ की आशा सत्कार करता था, इधर अस्त्रा का और उधर जल का २ निवास है अथवा जल ही वस्त्र है सेना में अनेक रंग हैं और उधर ३ स्वेत और काला रंग है और इधर उधर दोना और ४ सुन्दर वेग शोभायमान है ॥ २७ ॥ इधर सेना का ५ अग्र भाग और उधर लहरें शोभित हैं, सेना में वीरों को और मेघ म मयूरों को ६ इन दोनों को हर्ष शोभा देता है अथवा इन को बुगुना हर्ष शोभा देता है, सेना में हाथियों के दंत और मेघ में वक (गुगला) पक्षियों का ७ समूह है जो दोनों ओर आगे दौड़ते दीखते हैं ॥ २८ ॥ इधर पाखर और उधर दादर (मैंडक) चोलते हैं और इधर ग्रीध और उधर चातक फूलते हैं इधर तरवारों का और उधर विजुलियों का समूह है, इधर सेना से दूक कर पृथ्वी नहीं दीखती और उधर मेघ से दूक कर आकाश नहीं दीखता ॥ २९ ॥ इधर १० पताक्रम और उधर ११ मेघज्योति का प्रकाश होता है और इधर १२ रजागुण (रजोगुण का रंग लाल है) और उधर १३ वीरपट्टी (सावण की छोफरी) का विभास है इधर बायों की वर्षा होती है और उधर १४ ऊँसर भूमि में परसता है १५ इधर राजाओं के पुत्र हैं और उधर १६ ब्रह्मा का पुत्र (इन्द्र) है ॥ ३० ॥ इधर कछवाहा भूमि लाने को कहता है और उधर इन्द्र पृथ्वी १७ देखने की चाह कहता है अथवा हम को देखते ही वह भूमि चाहना करती है, यह (कछवाहा) तो नीति १८ फैलाने की यार्ता कहता है और यह (मेघ) अन्न का प्रचार करने के १९ अर्थ कहता है ॥ ३१ ॥ इधर तो भूमि को ये अपनी कहते हैं और उधर बहुत घुमड़ कर

कहैं इत है सब अप्पन भुम्मि, कहैं उत अप्पन है धन घुम्मि ॥
 कहैं इतहैं रवि ठंकन हार, कहैं उत बहल ज्यों न बिथार ॥ ३२ ॥
 कहैं इत चाप चढावन बत्त, कहैं उत सज्जित आयत अत्त ॥
 इतैं रज अद्रि उडावन बाद, कहैं उत रक्खहिं संवर साद ॥ ३३ ॥
 कहैं इत मंडहिं गोलिन गान, कहैं उत सूक करें करकान ॥
 कहैं इत बानन छावन देस, कहैं उत बुंदनतैं न बिसेस ॥ ३४ ॥
 कहैं इत आयुध बुद्धि अनल्प, कहैं उत बुद्धि करें हम कल्प ॥
 इतैं प्रभु कुम्भ उतैं सुरईस, इतैं उत सज्जित छोनियँ सीस ॥ ३५ ॥
 बढे दैल बहल यों रवि बाद, सु सोनित संवर मंडन साद ॥
 दिपे^{१४} प्रविसे इत बुंदियदेस, अरे बिथुरे उत भुम्मि असेस ॥ ३६ ॥
 बन्यौं इम कूरम सेन प्रयान, सुन्यौं नृप बुंदिय धर्म समान ॥
 उँयो रनपैं जिम व्याह उछाह, सजे मनवंचित जानि सनाह ॥ ३७ ॥

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशौ बु-

मेघ अपनी कहता है सेना कहती है कि मैं खेह से सूर्य को ढकनेवाली
 और मेघ कहता है कि तुमारा १ विस्तार बादलों के समान नहीं है ॥ ३२ ॥
 इधर २ धनुष चढाने की बात कहते हैं और उधर मेघ कहता है कि यहाँ ह-
 मारा धनुष ३ लंबा है, इधर तो ४ पर्वतों की रजी करके उडाने का बाद (हठ)
 करते हैं और उधर ५ जल का कीचड़ करके उनकी (पर्वतों की) रक्षा करना
 कहते हैं ॥ ३३ ॥ सेनावाले कहते हैं कि गोलियों का गान करेंगे और मेघ
 कहता है कि ६ गड़ों (ओलों) से बाधिर कर देंगे, इधर देश को वाणों से छा-
 दित करना कहते हैं और उधर मेघ कहता है कि वे बाण बुंदों से विशेष नहीं
 हैं ॥ ३४ ॥ इधर ७ बहुत शस्त्रों की वर्षा करना कहते हैं और उधर वृष्टि क-
 रके < प्रलय कर देना कहता है, इधर तो ९ कछवाहा (ईश्वरीसिंह) स्वामी है
 और इधर १० इन्द्र स्वामी है, इधर उधर दोनों ११ पृथ्वी पर सज्जित होते हैं
 ॥ ३५ ॥ इसप्रकार १२ सेना और बादल दोनों बाद करके रुधिर और पा-
 नी का १३ कीचड़ करने को चढे १४ सेना तो बुंदी के देश में प्रवेश करके
 शोभित हुई और मेघ हठ करके संपूर्ण भूमि पर १५ फैल गया ॥ ३६ ॥ १६
 युद्ध पर उदय हुआ (उठा) १७ कवच ॥ ३७ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वार्ण के सप्तम राशि में, बुन्दी विजय करने

न्दोविजयार्थकूर्मराजकटकनिस्सरणास्तनयित्नुसहाऽऽधिकपाभी-
मननतद्बुदीशश्रवणात्साहवर्द्धन पञ्चदशो १५ मयूख ॥१५॥२६६॥

प्रायोन्नजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

लौ बुदिय नृप प्रसभ लागि, खमर्ग पताकन खुलि ॥

अबलोजुत अनुजा अनुज, कोटा सन लिय बुलि ॥ १ ॥

दीपकुमरि अरु दीपहरि, तब बुल्ले छक तोर ॥

रानी भल्लिय सह रुचिर, जय रन जुव्वन जोर ॥ २ ॥

कोटापति नृप वित्त लौ, दूनो गरव दिखाय ॥

मन अरि उप्पर मित्र बनि, लिय बुदिय छक लाय ॥ ३ ॥

सो लखि नृप कृतघन समुक्ति, उदासीन रहि अर्थ ॥

भुजवडन लिय अप्प भुव, सजि असु त्याग समन्थ ॥ ४ ॥

गजब कार कोटेस गनि, भयकारक अब भूप ॥

सिर उठाय मूढ न सकत, रव तोरे अहि रूप ॥ ५ ॥

अतंहपुर सजुत अनुज, बुल्ले नृप इहि बेर ॥

कोटापति कछुहु न कहयो, सकित मन गिनि सेर ॥ ६ ॥

तिनहु आय भिँट्यो त्वरित, निज प्रभु घात निसक ॥

रुचि उँपेत भूपति रहयो, आतपत्र धरि अक ॥ ७ ॥

अँह सोलह १६ भुगयो अधिप, रहि सूरन गति राज ॥

के अर्थ कछवाहों का राजा की सेना का निकलना १ उसका मेघ के साथ
अधिकता का अभिमान २ उस को पुन्दी में सुनने से बत्साह पढ़ने का पन्द्र-
हवा १५ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोस्रो छिनये २९ मयूख हुए ॥
१६ ठ लग कर १७ आकाश मार्ग में १८ संहित छोटी बहिन और छोटे भाई ॥ १ ॥
५ दीपसिंह के ॥ २ ॥ ३ ॥ १ पछा ७ प्राण छोड़ने को ॥ ४ ॥ ८ गजब कर-
नेवाला ९ दन्त तूटे हुए सर्प के सहश ॥ ५ ॥ १० जनाना सहित ११ बुद्धाये १२
सिंह रूप जानकर ॥ ६ ॥ १३ मिला १४ रुचि सहित १५ छत्र सहित १६ भाई
को गोदि में लिया ॥ ७ ॥ उस राजाने बीरों की गति से रह कर १७ सौलह

सबल सज्यो दिन सत्रहम१७, सञ्जुन विसम समाज ॥ ८ ॥
 असित भद्र पंचमि५ दिवस, चल्लयो अरि चतुरंगे ॥
 सत्तमि७ दिन भूपति सुन्यो, जामिनि सुतैं जंग ॥ ९ ॥
 रहसि निवेदिय नाजरन, दासिन जुत द्रुत दाय ॥
 जगि पहिलैं रानिय जैप्यो, जग्गे अद्रिन लाय ॥ १० ॥
 सिंहनि अक्खिय सिंहसों, कित सोवहु अव कंत ॥
 जिन हत्थिन कुंभन जलज, ते आवत घुमडंत ॥ ११ ॥
 जिनहित लंघन लंघिकैं, खदो ओर न मंसं ॥
 सहजैं ते आवत सुनैं, बांरन भद्रन वंस ॥ १२ ॥
 लंबी हत्थल लंकैं तनु, उँछट परक्खहु आज ॥
 भूख न कहुहु भावते, रोसिल्ले मृगराज ॥ १३ ॥
 जिन कुंभन नख नाहके, वनैं घटा जिम बीज ॥
 हम कोतुक वह पिक्खिहैं, खुल्लहु रंचैंक खीज ॥ १४ ॥
 ईतर मृगन अपराधपैं, नयन उधारत नाहिं ॥
 त्यौंही जो यह तकिहो, यौंही तो नह अँहिं ॥ १५ ॥
 भूख निकासहु भोनेतैं, गंजि गंजन वल गह्व ॥

दिन तक राज्य भोगा और सत्रहवें दिन शत्रुओं के विषम समूह पर सजा
 ॥ ८ ॥ १ सेना २ रात्रि में सोते हुए ने ॥ ९ ॥ ३ एकान्त में ४ शीघ्र
 रीति पूर्वक ५ रानी ने कहा ॥ १० ॥ ६ रानी रूपी सिंहनी ने राजा रूपी
 सिंह से कहा ७ हे पति ८ जिन हाथियों के कुंभस्थलों में मोती हैं वे घुम-
 ड कर आते हैं ॥ ११ ॥ जिन भद्र जाति के हाथियों के कारण उपवास कर-
 के अन्य ९ मांस नहीं खाया है वे भद्र जाति के १० हाथी सहज में आते सुने
 हैं ॥ १२ ॥ लंबी हाथल और पतली ११ कमर की १२ फुरती और दान की
 आज परीक्षा करनी है सो १३ हे प्यारे क्रोधवाले सिंह अब भूखे मत रहो
 ॥ १३ ॥ जिन हस्तियों के कुंभस्थलों में पति के नख घटा में बिगुल के समा-
 न बनते हैं वह खेल हम १४ देखेंगी सो १५ कुछ क्रोध करो ॥ १४ ॥ जिसप्रकार
 तुम १६ अन्य मृगों के अपराध पर नेत्र नहीं खोभते हो उसीप्रकार जो इनको
 १७ देखोगे तो ये वैसे ही तो नहीं १८ हैं ॥ १५ ॥ बड़े बलवान् २० हाथियों
 को मार कर १९ घर से भूखे को निकासो.

बमेदसिंहका पीछी तैयारी करमा] ससमराभि पोडमपूज (११०३)

कुम्भे सान तिकखी करहु, देहारे घसि दह ॥ १६ ॥
 टुकै तरच्छु चित्रक बहुल, इत सिंव स्वान अधप्प ॥
 सरमँ भरोसैं जियत सब, अब दग खुल्लहु अप्प ॥ १७ ॥
 रंमनीके मुनि बेंच रुचिर, अँद गुंमर अलसात ॥
 सिंह कह्यो जगि सिंहनी, होवन देहु प्रभात ॥ १८ ॥
 होत होत यह बत्त हुव, कुकवाँकुन ध्वनि कान ॥
 उठ्यो तजि गलबाँह अब, चढ सँरभ चहुवान ॥ १९ ॥
 इत रानिय बज्जत मुनै, गँरुत गिद्धनिन गैरै ॥
 बुछी अब देर न बहिनि, चित तुम रक्खहु चैन ॥ २० ॥
 देनहार गज कालिकन, गूँद पलन अब गाँह ॥
 तिहिँ मम कतहिँ नैक तुम, सज्जन देहु सनाह ॥ २१ ॥
 बीरनके बहुविधि बेपा, लाभ जयारुचि लेहु ॥
 असिमुट्टि रु इयपिट्टि अब, पतिकौ पावन देहु ॥ २२ ॥

और हे सिंह ! कुम्भस्थल रुपी साँख पर बाहों को घिस कर तीखी करो ॥ १६ ॥ बहुत
 ३ 'मेडिये (व्याली) ४ अबनेसरे (बघेरे) अर्थात् छोटे सिंह ५ बीते (गाँव), कुसे झूले हैं
 और ये सब ७ केसरी सिंह (बबरी नाहर) के भरोसे पर जीवित रहत हैं इसकारण
 अब ८ आप नेत्र जोखो ॥ १७ ॥ ९ प्यारी (की) के ऐसे अधिकारक १०
 बचन सुनकर ११ अँद और घमड में आलस्य करते हुए (यहाँ अँद और गु-
 मर ये दोनों घमंड बाँधी पर्याय शब्द हैं जो अत्यन्त घमंड दिखाने को एकार्थ
 बाँधी दो शब्दों का प्रयोग किया है जो काव्यों की शैली है कि जिसकी अ-
 धिकता दिखानी होवे वहाँ एकार्थबाँधी दो शब्द देते हैं और व्याकरण का भी
 यही मत है कि 'बीप्सायां मे' बीप्सा में एकार्थबाँधी दो शब्द होते हैं यथा
 ॥ श्लोक ॥

शौखे शौखे न माशिकर्ष, मौक्तिक न गजे गजे ॥

देखे देखे न बिदासअन्वर्न न वने वने ॥ १ ॥

सिंह ने कहा कि हे सिंहनी प्रभात होने दे ॥ १८ ॥ १२ सुगों के बोकने का
 ११ शब्द हुआ १४ चहुवाण (बमेदसिंह) रूपी भयकर सिंह उठा ॥ १९ ॥ रा-
 नी ने १६ आकाश में प्रीतिधियों के १५ पंक्त बजते हुए सुने १७ बरबी (मीजी)
 और मांस को १८ मयकर भोजन के अर्थ कालिकाश्यों को हाथी देनेवाले सेरे
 पति को कवच पहनने दे ॥ २१ ॥ १९ बरबी का ॥ २२ ॥

इम रानिय इत गिद्धनिन, अकख्यो बिहित बितास ॥

इत कर अँची मुच्छ नृप, पैंगि रसबीर प्रकास ॥ २३ ॥

॥ षट्पात् ॥

गहत मुच्छ चहुवान फाँक दारिम भुव फटहिं ॥

भुव फटत अति भार अतल बितलादि उलटहिं ॥

अतल आदि उलटंत पान कच्छप अहि छोरहिं ॥

पान तजत पाताल वारि उच्छलि जग बोरहिं ॥

जल तल उफान बुद्धत जगत भग्गहिं लोक प्रपंच भुव ॥

प्रकटहिं कंटाह भग्गत प्रलय भगहि मुच्छ बुधसिंह सुव २४

॥ निशशाणी ॥

कान भनक तबतँ परी चढि कुंम्म चलाया ॥

तबतँ संभर तंडि कै सिर अँभ लगाया ॥

लाह जरूरी लगिकै संध्या क्रम लाया ॥

साँवित्री जप इक सहस्र १००० रस भक्ति रचाया ॥ २५ ॥

नित्य निवेरयो प्रातको धन बिप्र धपाया ॥

सेनासाँ रन सज्जको आदेश लगाया ॥

सोर नकीबौ संकुले चहुँओर चलाया ॥

फटे कंगर देसमें फिरि दूत फिराया ॥ २६ ॥

१ उचित विश्वास २ वीर रस में प्राप्त हो (भीज) कर ॥ २३ ॥ अब यहां कवि छत्प्रेक्षा करते हैं कि उम्मेदसिंह के मूँछ ग्रहण करते ही दाहिम की फाँक के समान ३ भूमि फटेगी और भूमि के फटने से ४ अतल बितल आदि नीचे के लोक उलटेंगे उनके उलटने से शेषनाग और कमठ पराक्रम छोड़ेंगे जिससे पाताल से ५ जल उछल कर ६ संसार को डुवोवेगा ७ नीचे का जल बढने से संसार डूबकर ८ भूमि का लोक रचना मिटजावेगी ९ ब्रह्मांड के नाश होते ही प्रलय होवेगा इस कारण है बुधसिंह के पुत्र मूँछ को मत पकड़ो ॥ २४ ॥ १० कछयाहा ११ उम्मेदसिंह ने १२ गर्जना करके १३ आकाश में मस्तक लगाया १४ लाभ १५ गायत्री के ॥ २५ ॥ १६ ब्राह्मणों को १७ हुकम दिया १८ शब्द भरा १९ पत्र बंदे २० दूतों ने फिरकर उन पत्रों को फिराये ॥ २६ ॥

झडे बाहिर गहिकैँ धुजवड *झुकाया ॥
 फूल झराया सानपैँ असि वाढ चिराया ॥
 सिल्लहखानाँ खुल्लिकैँ बर हेति वढाया
 टोप बकतर ओप के दसतान दिपाया ॥ २७ ॥
 कैतौँ छ्छादन कुकुमी रन मोद रंगाया ॥
 केतौँ अछ्छरि चाहिकैँ सिर मोर बनाया ॥
 ब्रव ब्रह्मे ॥ कल्लरे बर बव बजाया ॥
 सहनाइन लग्गी ललक सिंधू सुनवाया ॥ २८ ॥
 हहोतीं हाजरि भई कटिवधं कसाया ॥
 हूँ सूरौ सत्यही बैर साज बनाया ॥
 यौ जावक लग्गेचरन यौ लंगर लाया ॥
 यौ नेउर पग अँकुरे यौ मक्कुर्न आया ॥ २९ ॥
 यौ अहोर्क उल्लसे यौ दस दिपाया ॥
 यौ आहुँत विमान के यौ बैजि मैगाया ॥
 यौ रागौन पाया प्रेमद यौ सिंधुन छाया ॥
 यौ कोर्नैन लाया करन यौ मुँडि मिलाया ॥ ३० ॥

झडे किये (झिगल भापा मे अधिक ऊँचे करने को झुकाना कहते हैं) ॥ तरवार के
 घाट धीरते समय अग्निकण सडै वसको फूल कहते हैं सिलहखानह खोलकर अष्ट
 शस्त्र पाटे ॥ १० ॥ ॥ कितनों के छेसर के रंग के बस्त्र ॥ युद्ध के तासे बजे ॥ धीर रस
 को बढ़ानेवाला सिंघवी राग सुनाया ॥ १८ ॥ २५ हा अजहत् स्वार्था लक्षणा से
 हाडोती के धीर जानना चाहिये १ कमरघषा बाधा ४ अप्सराओं और धीरों
 ने साथ ही १ अष्ट साज बनाये (यहाँ 'या' शब्द से इधर अर्थ जानो) ५ इधर
 हूँ के बरखों में जावक लगाया और इधर धीरों ने पैरों में युद्ध से नहीं भाग
 ने की प्रतिज्ञा के लगर पहिने इधर अप्सराओं के पैरा में नेबर लगे (यजे) और
 इधर धीरों के ८ जघाआख लगा (यहाँ प्रथम अप्सरा और पीछे धीरों का सज
 ना यथाक्रम से जानना चाहिये) ॥ २९ ॥ इधर ६ लहंगा (घागरा) और इधर
 १० कबच शोभित हुए ११ इधर विमान संगवाये और इधर १२ घोडे मगवाये
 १३ रागों से १४ हर्ष पाया १५ सिंघवी राग (बडा राग) १६ हाथों में सितार
 बजाने की नखिलपे (मजराफ) लगाई १७ लङ्ग की मुँठ ॥ ३० ॥

यों बीणा गन अगगहे यों तेग तुलाया ॥
 यों रसना आरोप यों कटिबंध कसाया ॥
 यों कुंकुम कुच लगि यों दूँढ छत्तिन छाया ॥
 यों कंचुक मंडे कुचन यों बँच्छ बनाया ॥ ३१ ॥
 यों बँलपावलि हत्य यों दसतान दिपाया ॥
 यों मँदल भुजबंधसों सँय सज्ज सुहाया ॥
 हार दवाली दोउं२घाँ उर अंतर आया ॥
 यों मुख बीरी आप यों गंगोदँ अचाया ॥ ३२ ॥
 यों मंडे नथ नैक यों धकि कोप धमाया ॥
 यों दृग रेखा अँजनी रँजगुन यों छाया ॥
 पिँजूसन ताँटंक यों यों कुंडल पाया ॥
 सोभा सिर सीमँतँ यों यों टोप लगाया ॥ ३३ ॥
 यों कैवरीन प्रसून यों तुररेन झुकाया ॥
 यों लग्गे मन मोहँ यों मन मोहँ बिहाया ॥
 नेउर पक्खर नाद त्यों बिबिँ२ ओर बढाया ॥
 तिकख० कँडच्छा सज्ज यों सितँ भल्ल सजाया ॥ ३४ ॥

१ आग्रहे (ग्रहण किये) २ कटिमेलला (कर्धनी) लगाई ३ कुचों पर कंसर लगाई
 ४ छातियों पर कवच छाये ५ अप्सराओं ने कुचों पर कंचुकी (कांचली) रबी
 और इधर बीरों ने यख (छाती) का बनाव किया ॥ ३१ ॥ ६ चूड़ियों (कंकड़ों) की
 पंक्ति ७ मादलिया (स्त्रियों के भुजों का भूषण विशेष) ८ हाथों में भुजबंध
 सुहाये (यहां सामान्य हाथ शब्द के कहने में भुजबंध के योग से भुज जानो)
 ९ पङ्कतला १० दोनों ओर छाती पर आये अर्थात् अप्सराओं की छाती पर
 पतखे लगे ११ गंगाजल पिया ॥ ३२ ॥ १२ नासिका में, इधर बीरों ने क्रोध
 यक्त होकर श्वास प्रश्वास सेना के फुलाये १३ काजल की १४ रजोगुन १५ टो-
 टीपीदा १६ १७ माथा बुधये दोनों स्त्रियों के कानों में भूषण हैं इधर बीरों ने कुंडल
 ने टोप लगाये ॥ ३३ ॥ १ (केशपाश कराकर) शिर शोभा लगाई और बीरों
 बीरों को बरने का मन में जेसपास में झूल लगाके १९ इधर अप्सराओं ने
 स्नेह छोड़ा २० दोनों ओर २ (स्नेह) लगाया २० और इधर बीरों ने घर से
 तीखे कटाक्ष २३ तीखे भावे ॥ ३४ ॥

यों खोदम१६ शृंगार यों *उपचार विधाया ॥
 यों मन छाया भिन्न यों रनपै †उफनाया ॥
 यों छक पाया उरबसी यों नृप उमगाया ॥
 यों रभा हुलसी इतैं बल पित्त्यल पाया ॥ ३५ ॥
 यों मन फुलकी मेंनका यों अमर उम्हाया ॥
 यों सु घृताची यों प्रयाग सुराग रचाया ॥
 एतय सुकेसी सज्ज यों मरजाद मुदाया ॥
 यों बरघोसा नच्चि यों खग तोकें तुकाया ॥ ३६ ॥
 यों हरखादत अच्छरिन बेल भूप बनाया ॥
 गज बेंडे इभपाल गन बिहंदार मिलाया ॥
 अंग गरही मजिकें रन रग लगाया ॥
 यप्पे कुभ सुबोल दे कुंरुबिंद चढाया ॥ ३७ ॥
 मडि कलम जगालकी हरिताल मिलाया ॥
 जग हवदे डारिकें गुंड साज सजाया ॥
 बधि बरतों मिर सिंरी धरि धूप धुमाया ॥
 मोदक गज मिलायकें जल देगन पाया ॥ ३८ ॥
 इभ चाकर मांकर टछट उडि आसन आया ॥
 बैरी बाहिर लैनकों आलान छुराया ॥
 करि अगैं करिणीनकों रचि डोंक डगाया ॥

*सौजह प्रकार से देवपूजन किया। इतर अप्सराओं के मन में कामदेव छाया
 और † इतर बीर युद्ध पर पड़े। जमेदसिंह २ पृथ्वीसिंह ॥ ११ ॥ ३ अमरसिंह
 ४ भेड प्राप्ति ५ मुरजादसिंह ६ इधित हुआ ७ तोकसिंह ने ॥ ३१ ॥ ८ इधित
 (पसल) ९ सेना १० महाबतों के समूह ने ११ स्तुति करके १२ अष्ट बचन कहकर
 दिगुलू बगाया ॥ ३७ ॥ १३ हाथी की पाखर १४ रस्सों से १५ मस्तक का प्रपञ्च
 बांधकर १६ धूप देकर धूम युक्त किया १७ लहसुनों के ॥ ३८ ॥ १८ हाथियों
 के पाकर बहरा की भांति कूदकर १९ ठाण के बाहर लेने को २० लमों में
 जोड़े २१ इधनियों को आगे करके २२ छोटे बाघों से क्रोध दिखा कर डिगाये

यों बुंदीस अनीकैमें गजराज चलाया ॥ ३९ ॥
 मिलि हयपाँलक मँदुरन तिम हयन तुकाया ॥
 खेह गरही कट्टिकैँ दुति देह दिपाया ॥
 कबिकैा देत कुरंग गति छबिकैा छक छाया ॥
 रविकैा मन रिभवायकैँ पबिकैा जव पाया ॥ ४० ॥
 मीनन पलट मिटायकैँ जर जीनन भाया ॥
 खीनं न गति पीन न पैसम जैव हीन न जाया ॥
 पक्खर अंग प्रसारिकैँ क्रम तंग कसाया ॥
 राह पैरोंके लाहकों गजगाँह भुकाया ॥ ४१ ॥
 वाह चहूँ धौँ उच्चरी गति थाह न गाया ॥
 दीप कनोती चाँप दुति खंधों बलखाया ॥
 काले व्यालैँ गति जालके लटियाल लगाया ॥
 कटोरे खुर तौरके खुरतारैँ सुहाया ॥ ४२ ॥
 दसमी१० के द्विजैराजतैँ जिम राहु जुराया ॥
 हाटकके गल हल्लरे भल्लरि भहनाया ॥
 छोरि दुबग्गों मोरिकैँ करडोरि भित्ताया ॥
 नक्खी पायन नेउरी मग सोर मचाया ॥ ४३ ॥
 बाजी ए नृप वंटिकैँ सब बीर सजाया ॥
 अप्प चढे हय हंजपैँ करकंज तुकाया ॥

१हसप्रकार२सेनामें ॥ ३९ ॥ १घोड़ों के चाकरों ने ४हयशालाओं में ५लगाम देते ही
 ६ हरिण की भाँति ७शोभा के ८सूर्य का मन प्रसन्न करके ९चक्र का वेग ॥ ४० ॥
 १० जिन की गति क्षीण नहीं है ११शरीर के बाल मोटे नहीं हैं १२जितका वेग
 हीन नहीं है ऐसे (पवन) के पुत्र १३पंखों का लाभ लेने के राह से १४ गजगाव
 लगाये ॥ ४१ ॥ १५चौतरफ दीपक के समान कनोती और १६ धनुष की टेढ़ के
 समान भुका हुआ कंधा १७काले सर्पों के समान अयाल १८ कटोरे के समान
 खुरों पर चाँदी के १९खुरताल शोभित हुए ॥ ४२ ॥ २०चन्द्रमा से ॥ ४३ ॥ २१
 हंज नामक घोड़े पर उस्मेदसिंह चढे २२ कमल रूपी हाथों में ॥ ४४ ॥

नाथाउत पित्तल अरथ मृगडान मिलाया ॥
 अमरसिंह रठोरको नटराज चढाया ॥ ४४ ॥
 भूर भवानीसिंहको दिव्यार दिवाया ॥
 प्रहरनकाज प्रयागको खगराज खुलाया ॥
 तोक महासिंहोतको भूपटैत मिलाया ॥
 मुहुकमहर मगजादको जयनाद दिखाया ॥ ४५ ॥
 इत्यादिक हय दटिकै नृप वीर बढाया ॥
 सोदरजुत सुँढातको कोटा पहुँचाया ॥
 दुडारे दल ढाहिवे दल अप्प बनाया ॥
 वे०वे०तुंगस बधिकै कमनेत कसाया ॥ ४६ ॥
 वे०वे० खग वलग कसि कर धूप घुनाया ॥
 वे०वे० चाप वजायकै सिर अम्भ लगाया ॥
 केक तुपको धारिकै अणु मारि उढाया ॥
 सेल वग्छो सज्जिकै अच्छी गति आया ॥ ४७ ॥
 अच्छे बाँजि उडायकै मन आँजि मिलाया ॥
 वेँडागग अलापिया अँडा छक छाया ॥
 वदीजैन रसवीरमे भट छाक छकाया ॥
 ज्यो गिरिनागी गानपै सिर नाग उठायो ॥ ४८ ॥
 कै जुव्वन वष व्याहपै नायक दरखाया ॥
 जानि मितपेच रकको नवही निधि पाया ॥
 अँक उदैगिरि आत कै बाँरिज विकसाया ॥
 पिक्खि मतगज यूँल कै सहज चलाया ॥ ४९ ॥

१ प्रहार करने (शत्रुआँका मारने) के अर्थ ॥ ४५ ॥ २ जनाने को शतराज (भार्ये)
 ॥ ४६ ॥ ४ सुन्दर चढाया देहे खड्ग कसकर ५ दाय मे खड्ग क्षिया ६ आकाश में मस्तक
 लगाया ॥ ४७ ॥ ७ घाटे ८ युद्ध मष्टफालराराग (सिंधवीराग) १० भाट लोगो ने ॥ ४८ ॥
 ११ कृपण दरित्री को १२ सूर्य क उदय होन पर माना १३ कमल फूले १४ सोनों हाथियों

उत्तरके पवमानतैं घन जानि घुराया ॥
 जानि दिवाकरै जेठमें बहु ओज बढाया ॥
 इक्खत जिम हिमकर उदै अंबुधि उफनाया ॥
 सोलह १६ बेर कि सुक्रमें तपनीय तपाया ॥ ५० ॥
 पावक मारुत पायकैं हेतिनं हुलसाया ॥
 कामंदक मग लगिकैं बल भूप बढाया ॥
 ज्यों करिणीके जालपैं सुंढाल सुहाया ॥
 अंधक अगौं आनिकैं सिव जानि सजाया ॥ ५१ ॥
 गोबिंदन कर लैनकों जिम कैह कसाया ॥
 जानि जटासुर जंगपैं भुज भीम बजाया ॥
 कै गजकेतन कदनकों कपिकेतु कुपाया ॥
 ज्यों लंघन जलरासिकों हंशुमा हुलसाया ॥ ५२ ॥
 कै रावन बध काजपै रघुराज रिसाया ॥
 कै बाहरै प्रह्लादकी नैरनाहर आया ॥
 जिमै एकाइक १ बिंदुतैं दस १० गुन दरसाया ॥
 बढि असैं रसबीरमैं चढि भूप चलाया ॥ ५३ ॥

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमः अंशः संभर

का समूह देखकर सिंह चला ॥ ४९ ॥ १ उत्तर दिशा के पवन से २ सूर्य ने ३ प्रता-
 प ४ चन्द्रमा को उदय हुआ देखकर ५ समुद्र बढा ६ अग्नि में ७ सुवर्ण
 को (सुवर्ण को सोलह बार तपाने से कुंदन होता है) ॥ ५० ॥ ८ अग्नि ९
 पवन को पाकर १० उवालाओं से प्रसन्न हुआ ११ कामंदक सुनि की कीहुई
 नीति के मार्ग लगकर राजा ने सेना बढाई १२ हथिनियों के समूह पर हार्थ
 शोभित हुआ १३ अंधक नाम असुर को आगे लेकर ॥ ५१ ॥ १४ गो
 पर्वत को हाथ में लेने के लिये १५ कृष्ण साजित हुए १६ भीमसेन ने १७ क
 का नाश करने को १८ अर्जुन क्रोधित हुआ १९ समुद्र का उल्लंघन करने के
 २० हनुमान उत्साहित हुआ ॥ ५२ ॥ २१ सहाय २२ नृसिंह २३ जिस प्रकार
 के अंक पर एक बिंदी लगने से दश गुना होजाता है ऐसे ॥ ५३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, चहुवायों के

उमेदसिंहके निकट घेराका आना] सप्तमराशि सप्तदशमयूज (१४११)

नरेरासज्जीभयनगाहिनीवीरवाजिवारणावर्णन पोढशो १६ मयूख
॥ १६ ॥ ॥ २९७ ॥

प्रापोन्नजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

कुम्भ कटक जयही सुन्पो, ढाठि हकत दमगीर ॥
आं तयही पित्यल अमर, भट आये नृप भीर ॥ १ ॥

॥ पदपात् ॥

जय कूरम जयसिंह दई बुदिय दलेल कँहँ ॥
तयहि नगर निम्मान छोरि पित्यल रानों पँहँ ॥
उदयनैर अति धर्म गयो निज बल नाथाउत ॥
सुपहु रान सग्राम जाहि रक्खयो सनेह जुत ॥
उमराव रवीय पदह १५ अधरं पालसोलि उप्पर प्रथित ॥
बैठारि उच्च आदर बिरचि हरख्यो नृप चालुर्क्य हित ॥ २ ॥
इक समय चालुम्प निडर पित्यल नाथाउत ॥
गहत सभाविय रान जप्पो बुद्धहि अधर्म जुत ॥
रैव प्रभु निंदा सुनन भीम उठ्यो पित्यल भट ॥
पटा सहँस पचास५००००छोरि हँपो बछित बट ॥
हुँन रान पहुँचि नैति जुत कहिय माफ करहु अपराध मम ॥
मन्त्री न तदपि पित्यल सुमति अक्खी तुम अकुसल अधम ३

का सज्जित होना? सेना के बीर और घोड़े और हाथियों के वर्णन का सौख्य
या १९ मयूख समाप्त हुआ और आवि से दोसौ सित्पानवै २६७ मयूख हुए ॥
१ कछयाह की सेना २ शीघ्र ३ उमेदसिंह की सहाय ॥ १ ॥ ४ राणा के पास
(उदयपुर) ५ अत्यंत धर्मवाला ६ अपने पन्द्रह उमरावों के नीचे और पारसो-
ली के ऊपर (इस समय सय से नीचे की पैठक आसीद के राखत की है पर
न्तु वस समय आसीद का ठिकाना नहीं पन्धा था तब से नीचे की पैठक पा
रसोली के राखकी थी) ७ प्रसिद्ध = सोलखी को हित सहित रक्खा ॥ १ ॥ ९
बुगसिंह को १० अपने स्वामी की ११ चाहे हुए मार्ग से यथा १२ शीघ्र १३ नम्रतर

*दुजनसल्ल कोटेस सुनत यह सचिव पठायो ॥
 लिखि कग्गर अति तल्लित बहुत सतकार बढायो ॥
 लिखी नगर निम्मान नाह इतही तुमरो घर ॥
 आवहु गिलहिं सु अन्न बंदि खैंहं वीरनवर ॥
 पित्थल सु बंदि उत्तर लिख्यो क्यों तुम दठ मंडन घन ॥
 सम जैनक हन्यों आटोनि रन बलि बुंदिय बैगिय बन ॥ ४ ॥
 अग्ग नगर आटोनि भीम सात्तम जव जुटिय ॥
 चालुक देवीसिंह तबहि असि धारन तुटिय ॥
 कोटापति पुनि किंतव बैर बुंदिय पर लायउ ॥
 हुवर कारन दल बीच मंडि पित्थल पहुँचायउ ॥
 सुनि दुजनसल्ल उत्तर लिखिय जानहु नहिं सम दोख जिय ॥
 सम जैनक हन्यों तुमरो जनक बुंदियसन पुनि बैर किय ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

नहिं रुचि तो आवहु नहिन, परिखंद विच मन पाम ॥
 रहिये घर लहिये रुचिर, पटा सहँस पंचास ५०००० ॥ ६ ॥
 इत्यादिक उत्तर लिखि रु, दुजनसल्लहित दिट्ठि ॥
 सचिव भेजि निज साम करि, बुल्लयो पित्थल निट्ठि ॥ ७ ॥
 अमरसिंह रठोर इत, रुटल राम कुलीन ॥
 कछवाहन बरवाढ लिय, निकस्यो तव छिंति छीन ॥ ८ ॥
 निज सुत पंचक ५ जुत निडर, स्त्रीजन अनुग समेत ॥

सहित ॥ ३ ॥ * कोटा के पति दुर्जनशाल ने १ मनोहर ३ हे नि-
 म्माण के पति १ मेरे पिता को आटोण ग्राम के युद्ध में मारा था और बुंदी से
 बैर किया था ॥ ४ ॥ २ कोटा का महाराज भीमसिंह और सात्तसिंह ३
 छली ४ पत्र में ५ मेरे पिता ने तुम्हारे पिता को मारा था और बुंदी से भी बैर
 उन्हीने किया था ॥ ५ ॥ ६ सभा में ॥ ६ ॥ ७ स्नेह दिखाकर अथवा स्नेह
 की दृष्टि से ८ पृथ्वीसिंह को बुलाया ॥ ७ ॥ ९ रामसिंह रोटला के कुल
 वाला १० भूमि छिनजाने से ॥ ८ ॥ ११ सेवकों सहित ॥ ९ ॥

वमेदसिंह के पास सुभदोंका आना] सधमराक्षि-ससदशमयूख (१४१३)

सहि बिपत्ति कोटा सहर, आयो नीति *उपेत ॥ ९ ॥
पटा सहस्र पैतीस ३५००० मित, करि हित बिय कोटिस ॥
इम रक्खे पित्यल अमर, दुवर छल तिमिर दिनेस ॥ १० ॥
ते भट दुवर बुदीसपर, कूरम इल सुनि आत ॥
तजि काटापतिके पटा, आये रन उमडात ॥ ११ ॥
जोधपुर पं गजरिंह सुवै, कुमार अमर रठोर ॥
मरन आगरा मडयो, तोरि साहको तोर ॥ १२ ॥
अमर भीरै आये तवाहि, बलू १ रु भाऊ २ वीर ॥
पातसाहके तजि पटा, छठि जुझन हमगीर ॥ १३ ॥
तिमहि रान अमरेस सुत, करन अनुज भट भीम ॥
गक्खि खुरुम मरनै रच्यो, सगर कासी सीम ॥ १४ ॥
सगताउत मान सु सुनत, छिम उदैपुर छोरि ॥
पहुँच्यो कासी भीमै पँह, मरयो साह दल मोरि ॥ १५ ॥
इमहि वीर पित्यल अमर, कोटा सैन करि कुञ्च ॥
सैमर बेर बुदीससों, आनि मिले छक उच्च ॥ १६ ॥
अमरसिंह रठोरकी, पतनीके गँद पूर ॥
दुखहु हुतो बहु दिननतै, सकयो तैदपि न सूर ॥ १७ ॥
उतरत चम्मलि आपगा, प्रिया भई गतमान ॥
सोहु अमर रठोर सुनि, न मरयो जग निदान ॥ १८ ॥
अभयसिंह जेठो तनय, पच्छो गेह पठाय ॥
अप्प च्यारि सुत जुत अडर, अमर स बुदिय आय ॥ १९ ॥
मुहुकमहर त्योंही मरन, मेटन अँघ मरजाद ॥

*नीति सहित ॥ ६ ॥ छल रूपी अन्धेरे के सूर्य ॥ १० ॥ सेना ॥ ११ ॥ १ पतिशगजसिंह का पुत्र ३ अमरसिंह ४ बादशाह के प्रताप को तोड़कर ॥ १२ ॥ ५ सहाय ॥ १३ ॥ ६ करगसिंह का छोटा भाई ७ भीमसिंह ८ युद्ध ॥ १४ ॥ ९ मोरसिंह १० शी-
घ ११ भीमसिंह के पास ॥ १५ ॥ १२ से १३ युद्ध के समय ॥ १६ ॥ १४ होग १५ तोभी ॥ १७ ॥ १८ नदी १९ युद्ध के कारण ॥ १८ ॥ १९ ॥ १८ पाप

सूर तुपक सजि पंचसत ५००, आयो *नद्वत नाद ॥ २० ॥

सब भट हिय लाये सुपहु, बहु अदरि बुंदीस ॥

साहित प्रीत वंटी सिलह, सज्ज्यो जैपुर सीस ॥ २१ ॥

नाथाउत पित्थल निडग, सज्यो न बपु †सन्नाह ॥

अक्खी इच्छहु जो ‡जियन, लेहु वहे यह लाह ॥ २२ ॥

सत बारह १२०० इम सेन सजि, सादी पैदग समेत ॥

उडहानिके तट अमरपुर, खजि चिंत्यो रन खेत ॥ २३ ॥

सजि बुंदिय उत्तर तरफ, हंक्यो नृप हुसियार ॥

पहुमी छाई पक्खरन, सेलन गगन प्रसार ॥ २४ ॥

कोस तीन ३ उपपर कटक, मिले उभय २ रन मोद ॥

उत्तर दक्खिनके अरे, पाउस जानि पयोद ॥ २५ ॥

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमऽाशौ बुन्दी
न्द्रसहायार्थचालुक्यपृथ्वीसिंहकबंधाऽमरसिंहहृदयर्पादसिंहाऽऽगम
नसेनाऽभिनिर्वाणं सप्तदशो १७ मयूखः ॥ १७ ॥ ॥ २९८ ॥

प्रायोन्नजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ मुक्तादाम ॥

उयो रसबीर छयो नृप अंग, चलयो अब सम्मुह लौ चतुरंग ॥

चलयो भट पित्थल संकित सेस, चलयो सुत च्यारि ४ नतैं अमरेसैं ॥ १ ॥

चलयो मरजाद नमावत नाग, चले भट सोदर तोग १ प्रयाग २ ॥

* गर्जना करता हुआ ॥ २० ॥ २१ ॥ † शरीर में कवच नहीं पह-
ना ‡ जो जीना चाहो सो कवच पहनने का लाभ लो ॥ २२ ॥ १ सवार २
पैदलों सहित ३ नदी का नाम है ४ क्रोध करके ॥ २३ ॥ ५ आलों के फैलाव
से आकाश छाया ॥ २४ ॥ ६ सेना ७ वर्षा समय में ८ मेव ॥ २५ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, बुन्दी के इन्द्र की
सहाय के अर्थ सोलंखी पृथ्वीसिंह, राठोड़ अमरसिंह और हाडा मरजादसिं-
ह का आना और सेना के सम्मुख जाने का सप्तहवां १७ मयूख समाप्त हुआ
और आदि स दोसौ अठानवै २९८ मयूख हुए ॥

९ वीर रस उदय होकर १० पृथ्वीसिंह ११ अमरसिंह ॥ १ ॥ १२ मरजादसिंह

भवानियमिंह चल्पो भट भूप, खुमान चल्पो रन रावन रूप ॥२॥
 चल्पो हरदाउत देविमृगेस, चल्पो सगताउत त्यों अचलेस ॥
 चले भट भारत अर्जुन चड, उदैहरि चालुक ओज अखड ॥ ३ ॥
 चल्पो नर नाहर नाहर वीर, चल्पो नवलेस हठी हमगीर ॥
 चल्पो भट कर्ण महारन चाहि, अजीत चल्पो कछवाह उमाहि ४
 चले इन्ह आदि बडे वर वीर, धपावन सत्रुन खगगन धीर ॥
 चल्पो डम बुदिय भूपति चैक, वितडन पिठि खुली बहरक ॥ ५ ॥
 अहवर भो रज अर ओध, मच्यो बडि धैवात बन्यो रवि मोध ॥
 भयो नितैचारन आनंद भुलि, डरे डिगि चकिपे चकहु डुलि ॥ ६ ॥
 चले इत गारहसे १२०० रन रीस, पिले उत गजिज हजार पचीस
 २५००० ॥

तज्यो भैव मोह भैज्यो कग तेग, उठे भट राजिपे वाजिय बेग ॥ ७ ॥
 धमधमि भुमि धुजी हय धीर, धमधमि धुधर पक्खर भार ॥
 डमडमि डाहल डिडिम डक, ठमठमि सिंधुर घट ठमक ॥ ८ ॥
 नरायन पिक्खिय बुदिय नौह, कह्यो जुर पाहि गडो कछवाह ॥
 इती कहतै दुहुँघाँ उमराव, मिले ति मिले पैय सकर भाव ॥ ९ ॥

१ राजा का वमराव खुमानसिंह ॥ २ ॥ ३ देवीसिंह ४ बबयसिंह ॥ ५ ॥ ६ मनुष्यों
 म सिंह रूप, नाहरसिंह ६ चक्र (सेना) ७ हाथिया की पीठ पर ८ ध्वजा खुली
 ॥ ९ ॥ १० आकाश म ११ रज का समूह छागया जिससे १२ अधेरा होकर सूर्य १३
 डकगया और उस अधरे से झूलकर १४ निशाचर को आनंद हुआ १५ चकवा
 चकवी झूलकर डरे और पास पासके हटगये ॥ १६ ॥ १७ ईश्वरीसिंह ने भजे
 १८ समार स मोह छोडा और हाथा में १९ खड्ग लिये २० धीरों की और घाड़ों
 की पालियें बेग के साथ उठी ॥ २१ ॥ २२ घोड़ों की गति से भूमि धुजा, डाहल
 आदि बैताल और योगिनिय आदि के साथ भजे २३ इस्तिथों पर घट भजे यहा
 ठमठमि धमधमि आदि अनुकरण के शब्द हैं जिनको व्याख्या करना अना-
 वश्यक है किन्तु ये शब्द ही व्याख्या है ॥ २४ ॥ २५ माराणदात्र खट्ठी ने २६
 बुदी के पति (वमेदसिंह) को देखते ही कहा कि २७ ये दोना आर क उमरा-
 व जैसे २८ दूध और सकर मिले तिस रीति से मिलगये ॥ २९ ॥

बज्यो असि हड्डन अड्डन बाढ, गंज्यो भय भीरुन बीरन गाढ ॥
 दपटत लकखन भकखन दाय, अपटत तंक्खनकों भूमकाय ॥१०॥
 लकल्लकि छुट्टिय वान विथार, धकढकि घायन सोनित धार ॥
 भगजभगि आयुध भौ भगमगि, धगद्धगि उट्टिय खग्गन अंगि ॥११॥
 कटक्कटि कं'कट बं'कट बाढ, खटक्खटि खावन डाकिनि डाढ ॥
 चटच्चटि उच्छटि हड्डन संधि, गटग्गटि गिद्ध वपा चंय बंधि ॥१२॥
 खनक्खनि टोपनपै खुरतार, मनब्भनि गोत्तिन ध्वान भयार ॥
 भपजभपि सेनैन पच्छति भुंड, लपल्लपि लुट्टत सिंधुर सुंड ॥१३॥
 भमंभमि मार दुधारन भाट, धमंधमि सेलन ठेजन घाट ॥
 लसै असि कुंभनै फांक चंलाव, बढै रदं सव्वुवै तंति वनाव ॥१४॥
 भुजांतैर होत कटारन भिन्न, खिचै परि पंजर खंजर खिन्न ॥
 कढै खैर तोमर दंसन दारि, फवै पृथुरोम कि जालिय फारि ॥१५॥
 चलै चमकै असि ओज अपार, छपाकैर बाल कला छविदार ॥
 लटक्कहिं लुत्थिनपै लागि लुत्थि, उछट्टहिं कट्टहिं बुत्थिन बुत्थि ॥१६॥
 हड्डियों के ऊपर तरवारों का आडा बाढ बजा और कायरों पर भय और वीरों
 पर गाढ नै?गर्जना की, खाने के लिये लाखों दौड़ते हैं और रघोड़ों को भूमका
 कर दौड़ाते हैं ॥ १० ॥ ३ कांपते हुए बाणों का फैलाय छुटा और घावों से
 धक धक रुधिर बहने लगा. ४ शस्त्रों की क्रान्ति चमकने लगी और तरवारों
 की ५ अग्नि प्रज्वलित होकर उठी ७ तरवारों के पाढ से ६ कवच कटकट कर-
 ने लगे, खाने के लिये डाकनियों की डाढ़ें खटकने लगीं और हड्डियों की जोड़ें
 खुलने लगीं ८ चरबी का समूह जोड़कर ग्रीधनियें खाने लगीं ॥ ११ ॥ १२ ॥
 ९ गोलियों का भयंकर शब्द होने लगा १० सेन (सिचाण) पक्षियों के ११ पंखों
 के समूह भप भप करने लगे और हाथियों की सूँड़ें लप लप करने लगीं
 ॥१३॥ दुधारे खड्गों की मार मची और भालों के धकेलने से घाव हुए १२ हा-
 थियों के कुंभस्थलों की चारेंकरती तरवारों का चलना शोभा देता है और
 तांत से १४ सावुन कटे जैसे १५ दांत कटते हैं ॥१४॥ कटारों से १६ छालियें फटती हैं
 और खंजरों से लीण हुए अस्थिपंजर खिचते हैं १७ तीखे भाले १८ कवचों को फो-
 डकर निकलते हैं सोमानों जाल को चीरकर १९ मच्छी शोभा देती है ॥१५॥ १९ द्वि-
 तीया के चंद्रमा की कला को विदारण करनेवाले खड्गों का ओज चमकता है ॥१६॥

उत्तटकिं घोरनतै भट आय, खैमै मंड जानि कधूतर खाय ॥
 छुत्तकहिं छिछि ह्वकहिं घाय, छुटै जलजत्रं कि जावक छाया ॥ १७ ॥
 चलै टिकि जानुनै के पयभिन्न, स्तनधय केलि कि अगन किन्न ॥
 किते भुव लुटत जात अचेत, खिचै जनु कोटिस डेलन ग्वेत ॥ १८ ॥
 परे कति ऊरध हत्य प्रवारि, किधौ हरि मंदिर वंदन कारि ॥
 ववक्त के गिरि बैकर वेग, मनो नमि गौत रिक्तात महेस ॥ १९ ॥
 अटक्त पाय रकावन डँढ, लटक्त जानि अंधोमुख सिद्ध ॥
 कटै गिर अँधभफिरै धूमकारि, कुलाल कि चँकहिं भड उतारि २० ॥
 यरथर कातर कप कुडार, चिना तिय ज्यो नर पास तुँसार ॥
 उडै फटि पेट फटक्त अत, करडनतै कि भुजग कढत ॥ २१ ॥
 वनै वटके भट के रन वाद, सु ज्यो अँटके जगदीश प्रसाद ॥
रचै दुव २ हत्यनके मसि वाग, किधौ कर ग्वत्तिपै कैठ कुठार २२
 १ आकाश मकराना कुलाल खायेतैसे जावक का कुठारा चले जैसे ॥ १७ ॥ कितने
 ही कट टूट चरणोंवाले ४ घुटना के पल चलते हैं सो मानों घर के चौक में बृष
 पानेवाला पाला मीठा करता है, कितने ही अचेत होकर भूमि पर लोटते जाते हैं
 सो मानों खेन के टुकड़ा (हला) पर चापर (लोष्टभदन) लिचती है ॥ १८ ॥ कि
 तने ही ० ऊचे शाय करके पड़े हैं सो माना विष्णु भगवान के मंदिर में १०
 नमस्कार करते हैं ११ पकरे की भांति कितने ही गिरकर अघाच्य शब्द यो
 क्षते हैं सो माना १२ नमस्कार करके शिष को प्रसन्न करने हैं (यज्ञ विध्य-
 म करके दक्ष के भेष पर पकर का मस्तक रखकर फिर जीवित किया तब दक्ष
 प्रजापति ने पकरे के मुख से शिष की स्तुति करके शिष को प्रसन्न किया था
 इस कारण अब भी लौकिक में पकरे की योली से शिष की स्तुति करत है)
 ॥ १९ ॥ १३ नीचे लटकते हैं सो मानों १४ नीचा मुख करके सिद्ध लटकते हैं
 यज्ञे हुए मस्तक १० आकाश म १६ चक्र के आकार किरते हैं सो मानों १८
 चाक के ऊपर से १७ कुठार भाटा (मिट्टी का पात्र) उतारता है ॥ २० ॥ बुरी
 भांति कायर ऐम कापने हैं जैसे चिना खीयाला पुरुष पौष मास की १९ ठंड
 में कांपता है, पट फटकर आग उछलती है सो मानों २० टिपारों से सर्प निक
 लते हैं ॥ २१ ॥ युद्ध म हट परने टुकड़े टुकड़े होते हैं सो मानों जगदीश के प्र
 साद कार १ फलश फटता है, कितने ही दोनों हाथों से तरवार का चार करते
 हैं सो माना दोनों हाथ से २२ आती २३ काष्ठ पर कुठार चलाता है ॥ २२ ॥

सैरैं क्षतजात छिदे उर सैंकि, नैमात रजोगुनकी लहरैं कि ॥
 गुंठी दृग ओर कलैं दृगलैरु, किधौं अलि कामलै कोरैक लैरु २
 धसैं कडि के दृग सोनित धार, बनैं पृथुरोमन वारि बिहार ॥
 सिंचानक अंतहि लै नभ जात, अचानक गोत गुठी सम खात ३
 दिसा बिदिसान निसानन नद, भनैं जनु घोर बलाहक भद ॥
 तुटी लागि टोप बजैं तरवारि, मनौं हरि मंदिर झल्लरि झारि ॥ २५ ॥
 भई हलमल्ल चलचल भुमि, घटयो बल नाग निसासन घुमि ॥
 रचैं धनु सिंजिनि बेग विसाल, किधौं रन थंभत जंभत काल २
 मचैं घन लोहित फुटत मत्थ, हसैं लखि जुगिनि खप्पर हत्थ ॥
 समप्पतैं हेरि सबै गन सीस, अपूरव द्वार बनावत ईस ॥ २७ ॥
 थेइथेइ घुममत डाकिनि मत्त, तमासन प्रेत मलंगत तत्त ॥
 किते रंस पान पिसाच कंठ, रसैं कति लोहित तुंद भरंत ॥ २८ ॥
 करैं कति आमिखनैं अनुरांग, बनावत के मुख मेदैं बिभाग ॥

बरछी से छानी छिद कर २ रुधिर चलता है सो मानों शरीर में रजोगुण लहरें नहीं ३ समाने के कारण बाहर निकलती हैं ४ गोली नेत्रों में लगकर नेत्र निकालती है सो मानों ५ अंगर ६ कमल की ७ कली को लेकर निकलता है ॥ २३ ॥ नेत्र कटकर रुधिर की धार में ऐसे घुसते हैं जैसे ८ मच्छी बिहार जल में होवे ९ बाज पत्नी आंत लेकर आकाश में जाता है और ५ ग (कनकौवा) के समान अचानक गोत खाता है ॥ २४ ॥ दिशा दिशाओं १० नगरों का शब्द होता है सो मानों भादवा के महीने में ११ मेघ का धंकर शब्द होता है, टोप के ऊपर लगकर तूटी हुई तरवार बजती है सो मानों विष्णु भगवान् के मंदिर में झालर बजती है ॥ २५ ॥ १२ अत्यन्त से अथवा बहुत लोगों के मिलकर चलने से भूमि १३ चलायमान होगई १४ र निश्वासों से घूमकर १४ शेष नाग का बल घट गया, धनुष से खिचकर १ प्रत्यंचा बड़ा बेग रचती है सो मानों यमराज युद्ध में खड़ा होकर १५ उब (जमुहार्ह) लेता है ॥ २७ ॥ मस्तक फूटकर अत्यंत लोहू मचता है जिस को खकर डाकिनियें हसती हैं और शिव के सब गण मस्तक हेरकर शिव को देते हैं ॥ २७ ॥ कितने ही प्रेत १८ स्वाद लेकर रुधिर पीते हैं और कितने रुधिर से १९ पेट भरकर खेलते हैं ॥ २८ ॥ कितने ही २० मांस से २१ प्यार करते और कितने ही २२ चरबी आदिका बंट करते हैं,

करैं मृदुःकीकस जिम्मन केक, अहारता कोशिक मास अनेक २९
खरे कति घस्मर शुक्रहिं खातु, भये रन दुर्लभ सत्त ७ हि धातु ॥
रचैं सिव हास नचैं भयकार, जचैं जिप बुदियको जयकार ॥३०॥
ब्रह्मब्रह्म ततिन सिंधुव सह, मच्यो रन अगन यों अवमह ॥
गहकहिं चक्रखहिं गिहनि गोद, बपा लहि मडत कक विनोद ॥३१॥
निकासत चिलहनि चचुन नैन, गहैं हिय सेन गहकत गैन ॥
किलोलहिं स्वार सैवा किलकारि, चखैं पल मडल मडल चारि ॥३२॥
उठी रन अगन खगन अगिग, लसी अटवी नव ज्यो दव लगि ॥
जरैं गजहालन तालन जूह, जरैं गजसुहि तमालन जूह ॥ ३३ ॥
कटे पप कुभिं न तिंदुव तत्त, जरैं गज उन्नत पडप जत्त ॥
वरैं हय बालधि तेजन तबैं, जगैं लटियाल कि दर्भ कैदब ॥३४॥
सिखा बलि सूरनकी तैन गुच्छ, मलीमंस कास सुदहिय मुच्छ ॥

१. कितने ही कोमल हड्डिया का भोजन करते हैं अनेक घृष्ट निवाले खाते हैं ॥२९॥
२. कितने ही भक्षण शील (पशुत खाने वाले) खड़े खड़े ही वीर्य ही खाते हैं
३. इस युद्ध में इन घस्मरों को खाता ही धातु दुर्लभ होगई, वैद्यक के मत से ये
४. धातुपे हैं "स्तन्य रजस्य मारीषा काले भवति गच्छति ॥ शुक्रमासमव स्नेहो
५. य सा सकीर्त्यते वसा ॥ स्वेदो दन्तास्तथा केशास्तथैवोजस्य सप्तमम् ॥"
६. भयकर रीति से नाचते हैं और जीष से धुरी का जय होना ३ मागते हैं
७. ३० ॥ ४ इसप्रकार का पीडाकारी युद्ध मन्वा ॥३१॥ गीदह और गीदहणियें
८. किलोलें करती हैं ९ कुत्ते ७ चारों ओर फिरकर मास खाते हैं ॥ ३२ ॥ युद्ध के
१०. शौकमें तरवारों से अग्नि लगी सो यन म लाय लगने के समान शोमायमा
११. न जुड़ जहां ८ हाथियों के भड़े जलते हैं सोही तादृष्ट्यों का समूह जलता है
१२. और हाथिया की सुइ जलती है सोही ६ तमाल पृष्ठों का समूह जलता है
१३. ॥ ३३ ॥ १० हाथियों के कटे हुए पग जलते हैं सोही ११ तीव्र घृष्ट हैं १२ ऊ
१४. ये हाथी जलते हैं सोही जलनेवाले पर्वत हैं १३ घोड़ों का बालछा जलता है
१५. सोही १४ पांसा का १५ घटा (समूह) है और घोड़ों की पांसे (केसवाण्डियें) जलती
१६. हैं सोही १९ बानका समूह जलता है ॥३४॥ १७ धीरा की चोटिय जलती हैं सो
१८ घास के फूले हैं, हाथी मूछ जलती हैं सोही २० कास (तृषविशेष) का १९
कचरा जलता है

जरैं छंगणावलि खेटंक जाल, बरैं असिकोसँ पृथग्विध व्याल ॥ ३७ ॥
 दहैं हुँ सृष्टुच्छद छलि दुँकूल, किरैं चिनगी सुहि पान कुकूल ॥
 जरैं तहैं तोमर ते त्वचिसार, तचैं गंवलावलि रूप तुखार ॥ ३८ ॥
 प्रजारिय भूपति यागति अग्नि, भिली रैनरंग मिली भगमार्ग ॥
 अपूरव फैलिय ज्वाला अलात, बचैं तूनके जलके जरिजात ॥ ३९ ॥
 अनूरुहिँ आतुर अक्खिय अंक, चढे रन बुंदिय जैपुर चैक ॥
 तुरंगम रुक्कहु खंचि खलीन, कुतूहल पिक्खहु वीर बलीन ॥ ४० ॥
 दिसा बिदिसान कूसानु दिखाहिँ, मच्यो दव ग्रीखम मँदव माहिँ ॥
 निहारहु हात अनीकैन नास, तपैं भुव तक्कहु चक्र तमास ॥ ४१ ॥

॥ प्रतिलोमाऽनुलोमाद्विम् ॥

तुँदे नर रीस रवीसँम लाल, तुले हयें जेम हले सु कराल ॥
 लराँक सँ लेहँ सजे यह लेतु, ललाँमँ स वीर मरीन देतु ॥ ४० ॥

२ ढालें जलती हैं सोही जलने वाले १ छायाँ (ब.डों) की पंक्ति है ३ तरवारों के म्यान जलते हैं सोही ४ नाना प्रकार के नर जलते हैं ॥ ३९ ॥ ७ वस्त्र जलते हैं सोही मानों ६ भोजपत्र के ५ वृक्ष का जलना है और पवन से अग्निकण ८ गिरते हैं सोही ९ तुष की अग्नि उड़ती है १० यहां भाले जलते हैं सोही मानों ११ घाँस जलते हैं और वन की अग्नि में जलनेवाली १३ रोजों की पंक्ति के समान १४ घोड़े १२ जलते हैं ॥ ३८ ॥
 राजा उम्मेदसिंह ने इस प्रकार की अग्नि लगाई सो १५ उस रणरंग में चमकती हुई आनंद पूर्वक ठहरी अपूर्व रीति से उस उवाला के १६ अगाँ फैले जिनसे १७ तृण (मुख में तृण लेने) वाले वचते हैं और १८ जल (पराक्रम वाले जलते हैं ॥ ३७ ॥ १९ सूर्य के सारथि अनूरु से २० सूर्य ने कहा पि २१ सेना २२ लगाम खँच कर घोड़ों को रोक, बलवान् वीरों का तमासा २३ देखेंगे ॥ ३८ ॥ दिशा दिशाओं में २४ अग्नि दीखती है सो २५ ग्रीष्म ऋतु के समान भादवा के महीने में अग्नि लगी २६ सेनाओं का नाश होता है सं देखो और भूमि तपती है जिसका और सेना का तमासा देखो ॥ ३९ ॥
 (आधे छंद को सीधा पढ़कर उसीको उलटा पढ़ने से पूर्ण छन्द होजाता है और उसका अर्थ बदल जाता है सो आगे बताते हैं) मनुष्य २७ पीछा युक्त होकर क्रोध में २८ सूर्य के समान लाल हुए और जैसे २९ घोड़े उठाये तैसे ही भयंकर चले ३१ सो (वे) ३० लड़नेवाले ३२ स्वाद लेकर यह आनंद लेते हैं और वे ३३ सुन्दर ३४ शरीरों को देते हैं इस छन्द में "तुद व्यथने" इस धातु से

अस्मत्सजातीयेष्वेव प्रसिद्ध गीतनामक मरुदेशीय छंदोनाम्ना
त्रिकूटबद्धम् ॥

उम्मेद भूपति अगमै रसबीर सकुलि रगमै बरबीर बारहसै १२००
प्रवीरन चँक लौ चहुवान ॥

जयनैर सम्मुह जोरसों मिलि खगग मारिय भोरसों बर गुमर
असिवर संसर लागि भर कुनर छरैतर हुनैर हत कर जबर खँग सर
गजैंग जय धर अडर भैर मिलि कचरधैन कर अमरपुर मचि देवर
दग्वैर उदग पर मिलि भुखर पलचर खंचर चय और खपर खरभर
पहर डक वजि टकर धग्पर घोर डम धैमसान ॥

कैर वाम तोक प्रयागठै अमरस दकिखैन भाग ठै मरजाद
पित्यल अँग मडिय बीच अप्पन बाजि ॥

विरुदालि वदिनै वित्यैर अतिवेग सम्मुह उप्परे वजि कँटक

तुदाशब्द बना है जिसका अर्थ पीड़ित होना है और "लिङ्ग आश्वादाने" इस
धातु से लेह शब्द बना जिसका अर्थ स्वाद खाना है ॥ ४० ॥ "प्रथकर्ता
(सूर्यमल्ल) कहते हैं कि यह हमारी (चारण) जाति ही में प्रसिद्ध ऐसा मरुमा
पा का गीत नामक त्रिकूटयुद्ध छंद है" राजा उम्मेदसिंह अपने शरीर में १
वीररत्न २ नरकर ३ युद्ध में बारह सौ वीरों की ४ सेना लेकर उस चहु-
बाण ने ५ जयपुरबाजों के सम्मुख ६ मिदकर ७ प्रभात से तरवार चलाई
जहा ८ श्रेष्ठ घमड़ के साथ ९ युद्ध में १० कद छगकर छोटे मनुष्यों के ११
अत्यन्त छल को १२ हुनर (इल्म) से मिटाकर १३ बड़े तीक्ष्ण बाणों के १४ नि-
रतर प्रहार से जय को धारण करके निर्भय १५ वीरों से मिलकर १६ शत्रु-
भा का कवच धारण किया १७ अमरपुरा के युद्ध में १८ दखबड (शीघ्रदौड़)
मचकर और उदर के ऊपर १९ शब्द करते हुए मांस खानेवाले मिलकर २० आ-
काश में बिचरने वालों का समूह २१ अछा और दबी के खप्परो की खड्गभट्ट
होकर भूमि पर एक पहर टकर पजकर इस प्रकार का २२ युद्ध हुआ राजा क २३
वाम हाथ को तोकसिंह और प्रयागसिंह हुए और अमरसिंह २४ दाहिनी
ओर रहा, इसीप्रकार मरजादसिंह और पृथ्वीसिंह २५ आगे रहकर पीछे में
२६ अपना (उम्मेदसिंह का) घोड़ा रहा २७ माटों की विरुदाधली फैली और
गर्व से सम्मुख उठ २८ सेना को दण्ड देनवाली रथक (टकर) हुई

दमनक रचक धमचक अटक दैक तक मुलक अकबक अछक
छक भट ललक अति धक तुपक चलि इक सलक इक टक
गरक रँग भक फरक बहरक चमक खुर सुचि भमक चकर्मक
किलक डक लागि अजक चउ४ चँक पुलक सक कर घमक प-
खरक अरक रज ढक आजि ॥

अतिमोद जुगिनि उँल्लसैं हर देवि नारद त्यों हसैं डरदेत लेत
डकार डाकिनि प्रेत हेत प्रसार ॥

कमनैतैं तीरन तानिकैं पखरेतैं बेधत पानिकैं बुधतैनय हित
जय प्रणय नय बय छपय रनसुम अभय अतिसंय विषय चय भुव
बल्यै बिसमय प्रलय मय भय समय निरदय उदय रवि नयनि-
लयै अतिरंय अजय खँयकर अखय जय अँय उभय संय पय हृद-
य अपचय कटय भट रंमय निचय हय गय मार हीन सुमार ॥

१ युद्ध में २ अटक नदी के जल पर्यंत का देश घबराकर अर्थात् बादशाही देश तक घब-
राहट पहुँचकर, और आर्यावर्त की सीमा भी अटक ही है अछक छकेहुए वीरों
ने ललकार करके ३ अत्यन्त क्रोध से बहकर ४ बंदूकों की निरन्तर सलक की
(बहुत बंदूकों के एक साथ चलाने को सलक कहते हैं) ५ गहरे रंग में डूबी
हुई ६ ध्वजायें उड़ी और ८ चमक के समान घोड़ों के खुरों से ७ अग्नि च-
मकी और कालिकाओं की किलकारी होकर उनके वाद्य बजे, प्रसन्नता में
संदेह करके अथवा प्रलय का संदेह करके रोमांच होकर १० चारों दिशाओं
में ९ अचैन फैला और घोड़ों की पाखरें बजकर ११ युद्ध की रज से सूर्य ढक
गया, योगिनियों अत्यन्त हर्ष से १२ फूलती हैं इसीप्रकार महादेव, पार्वती
और नारद मुनि हसते हैं, डाकिनियों भय देनेवाली डकारें लेती हैं और प्रेतों
से स्नेह १३ फैलाती हैं १४ बाण चलानेवाले तीरों को खँचकर १५ पराक्रम
करके १५ पाखरोंवालों को बेधन करते हैं १७ बुधसिंह के पुत्र (उम्मेदसिंह)
को विजय प्राप्त कराने के अर्थ नीति के वचन कहते हैं और १६ छुड़ खपी
पुष्प के १८ अमर २० अत्यन्त निर्भय होकर २१ देशों के समूहवाले २२ श्रुति
मंडल पर प्रलयमई निर्दय समय का संदेह कराकर सूर्य के समान उदय हुए
बे वीर २३ नीति के घर २४ बड़े वेगवाले २५ पराजय का नाश करनेवाले और
२७ आगे आनेवाले शुभ भाग्य से २६ अक्षय विजय करनेवालों ने २८ दो-
नों हाथ, पग और हृदय की २९ हानि (नाश) करके वीरों के ३० समूहों को

तेंगी रचै कति तेहरी किमु अंदि लघित केहरी फटि मत्थ मे
जन जुत्य फैलत नूतन कि नवनीत ॥

छिकि टोप बाहुल उच्छटै कटिकालि ककैटकी कैट भट गरट
मिलि थट पुरट छट पट कुघट घट परि अवट कट कैट कपट
ठट अति झपट रन अंठ उबट बट रट बिकट रैहचट पलट नट
गति उलट मँटपट उछट खँगमट निपँट अघ दट दा ट दिय
मिलि निकट प्रतिभट रपट मचि रन प्रकट रजबट जुरत चाहत
जात ॥ ४१ ॥

॥ अन्त्यानुपासिनी गेला ॥

बुद्धी जैपुर उलटि वीर आप तिँ अखारै ॥

गायक सिंधू तोर ग्राम आलाप उचारै ॥

भुम्भि मचकै कटक भार फन नाग पसारै ॥

काटे और हाथी घोड़ों के समूह ता बिना गिनती (बेसुमार) मारे १ कितने
ही घोड़ तीन तीन मलग लेते हैं सो २ मानों ३ पर्वत को बल्लघन करता हु
आ सिंह मलग (छलागें) भरना है और मस्तक कटकर भेजों (मस्तिष्क) का
समूह फैलता है सो मानो नदीन ४ मयलन फैलता है, टोप कटकर ५ दस्ता
ने (पाहुआण) उछलत हैं ७ कवच की ४ कडियों की पक्ति कटती है = वारों
के अत्यन्त समूह मिलकर (यहा अधिकता दिखाने के कारण गरट और थट
दोनों एकार्थ वाची शब्दों का प्रयोग किया है) अथवा समूह की भीड़ मिल
कर ० सूर्य की कानिवाले (कसरिया) वस्त्र शरीर पर घुर घाट से पड़े हैं
११ हाथियों क कुभस्थल कटकर १० लड़ा में गिरते हैं और कपट के किनारे
से अत्यन्त झपटकर अर्थात् कपट से दूर भागकर युद्ध म मार्ग और बिना
मार्ग निरतर १२ फिरते हैं ११ भयकर दौड़ से नट की भांति पलटकर और
बढ़कर १४ शीघ्र दौड़ से १९ तरवार की आट से ११ पलट पाप को दधानेवा-
ली दपट देकर वे वीर समीप लेकर शीघ्रदौड़ मचाकर युद्ध में १७ रजोगुण के
मार्ग को प्रकट करके विजय को चाहते हुए जुड़ते हैं ॥ ४१ ॥ १८ ते (वे) युद्ध के
आलाप पर आये १९ गानेवाले सिंधवी रागनी के ग्राम में उच्च स्वर से आलाप
लेते हैं "सगीत में स्वरों के समूह को ग्राम कहते हैं वे तीन हैं। यथा ॥ पद्मजग्रामो
मवेदादौ, मध्यमेग्राम एव च ॥ गान्धारग्राम इत्येतत्, ग्रामत्रयमुदाहृतम् ॥ १ ॥

ऐरावततैं सुप्रतीकें लग चीह चिकारैं ॥ ४२ ॥
 दहकि दहकि दौलेय राज किरिराज पुकारैं ॥
 लवणोदकसों सुद्धनारें लग बढन बिथारैं ॥
 बल सूदनसों बामदेव लग अजक उसारैं ॥
 बड़वामुखसों ब्रह्मलोक लग सोक सम्हारैं ॥ ४३ ॥
 इम हड्डे कूरन अभंग बल जंग बिथारैं ॥
 बज्रैं आयुध निसिंत बाढ अरि गाढ उतारैं ॥
 फूटैं सिर तरबूज फाँक कटि लाँक कुढारैं ॥
 हथिन मत्थैं चन्द्रहास दुवर हथिन झारैं ॥ ४४ ॥
 सुंढादंडन खंड खेरि अहि रूप उतारैं ॥
 के उद्धत संग्रहि कलापें हठि दंत निकारैं ॥
 सेकिम मालाँकार सोभ अति जोर उषारैं ॥
 आधोरैं धुम्में अचेत कपि ज्यों ड्रुम कारैं ॥ ४५ ॥
 कुंभनतैं गजभद्र केक मुँताहल डारैं ॥
 मानों मेघक बारिबाह डिगि सीकंर डारैं ॥
 चउसठ्ठी ६४ मारैं मलंग बावन ५२ बबकारैं ॥
 हाक हकारैं केक जानि गज मार गँलारैं ॥ ४६ ॥

१ पूर्व दिशा के दिग्गज (दिशा को धारण करनेवाले हाथी) से लेकर २ ईशान दिशा के दिग्गज तक (क्रम से, ऐरावत १ पुंडरीक २ वामन ३ कुमुद ४ अञ्जन ५ पुष्पदंत ६ सार्वभौम ७ सुप्रतीक ८ दिग्गजों के नाम हैं) ॥ ४२ ॥ ३ जल जल कर कमठ ४ बराह ५ लवणोद से लेकर, शुद्धजल के समुद्र पर्यन्त समुद्र के सात भेद (लवणोद, क्षीरोद, दधिमंडोद, घृतोद, शुद्धोद, इक्षुरसोद, स्वादु उद अर्थात् शुद्धोद) हैं ६ पूर्व दिशा के स्वामी इन्द्र से लेकर ७ ईशान दिशा के स्वामी शिव तक [पूर्व दिशा से क्रम पूर्वक ईशान दिशा तक के स्वामियों के नाम [इन्द्र, अग्नि, यम, नैऋत, वरुण, वायु, कुबेर और शिव हैं] ८ पाताल से ॥ ४१ ॥ ९ तीक्ष्ण १० लंक [कमर] ११ खड्ग ॥ ४४ ॥ १२ हाथी का कलावा पकड़कर १३ मूँठ को १४ माली की भाँति १५ महावत १६ काले वृत्त से चंद्र गिरै तैसे ॥ ४५ ॥ १७ मोती १८ श्याम १९ मेघ २० जलकण (बुद् २१ गर्जना ॥ ४६ ॥

फुट्टें बकतर *सिंगिफेट बपु बेधि बिहारें ॥
 टकरनतैं नागोद टोप बैल खगन बिदारें ॥
 रुके पाय रकाव जोर सादी सिसकारें ॥
 सच्चे कच्चे लखन सूर अति परख उधारें ॥ ४७ ॥
 कर तुट्टें जैसैं पृंदाकु फन पच उफारें ॥
 अत्रावलि उरफैं कटार जनु बडिसे विसारें ॥
 छुरिका छत्तिन छेदि छेदि मस्कर छविमारें ॥

॥ ४८ ॥

बुदी जैपुर लाज बाद परि उभय २ महारें ॥
 अमरपुरेकी सीम अंत नर कुंशाप निहारें ॥
 लोडित लवी छछक छूटि प्रेतन जेक पारें ॥
 सोपक भय दायक दुँसार घायकें घट सारें ॥ ४९ ॥
 सरिता भो वह सपैराय जल सौनितें धारें ॥
 बुदी जैपुर तैट बिलद घैंट विकट किनारें ॥
 फुल्लि कुसेसैय हृदय फाँक छवि अंतुल अपारें ॥
 उँतपल गन लोचन अनूप हुव विकेंच हजारें ॥ ५० ॥
 डंदिदिरेँ उप्पर अनेक गुटिका गुजारें ॥

* सिंगवाल पशुओं की फेट से (पहा सिंगि की जगह साग-
 पाठ होता बरछी स यखनर के फूटने का सधय अच्छा होता है) १ पेट का कवच
 (पेटी) २ तरवारों के मल से ३ घाँटों के सवार ॥ ४७ ॥ ४ सर्प ५ मच्छी पकड़ने
 का काटा ६ घास की शोभा को ॥ ४८ ॥ ७ मुरदे ८ रुधिर की ९ यैन (आराम)
 भय देनेवाले १० घाण ११ दोना और फूटकर १२ घाव करनेवाले होकर श-
 रीर को घेघन करते हैं ॥ ४९ ॥ १३ यह युद्ध नदीरूप हुआ जिस में १४ रुधिर
 है सोही जल हुआ जहा बुदी और जयपुर ही लगे १५ किनारे (दावे) हैं और
 ये किनारे ही भयकर १६ घाट हैं अथवा कटे हुए शरीर हैं सोही भयकर घा-
 ट हैं और हृदय की चौर हैं सोही १७ तुलना रहित अपार फूले हुए १८ शत
 पत्र कमल हैं, कटे हुए नेत्र हैं सोही २० वपमा रहित २१ फूले हुए हजारों
 २२ नील कमल हैं (कितनों ही के मत से सामान्य कमल का नाम श्री वत्पहा
 है) ॥ ५० ॥ उन कमलों के ऊपर २२ अमरों रूपी अनेक २३ गोक्षिय शब्द

गजन दंत कटि कटि गिरैं सु करहाट कितारैं ॥
 तंबैरस कुंभीर तुल्लय बलवान बिहारैं ॥
 बाजी गन अँवहार बेस मिलि तास मभारैं ॥ ५१ ॥
 सुँडि पतित अँकुस समेत बनि बडिँस बिसारैं ॥
 जिँरह गिरी आनाय जानि पल कर्दँस पारैं ॥
 कटि कटि उहुत कालखंज सुहि कमठ सिधारैं ॥
 बुक्का चँय दहुर बिँडंवि बहु फदक बिथारैं ॥ ५२ ॥
 अँत्रावलि अँलगर्द रूप संचय संचारैं ॥
 जलँनीली निभ सिचँय जाल इत तिरत अपारैं ॥
 जत्थ जलौँका जूहकी सु धर्मनी छवि धारैं ॥
 गँडक संचय अँगुलीन बनि चपल बिहारैं ॥ ५३ ॥
 हत्थ निहँका निकर होय करि चलत किँतारैं ॥
 कटे तिलक बिचरैं कुलीरैं श्रुति सीप सुढारैं ॥
 संख नख रु संबूँक संख कौकस अँनुकारैं ॥

करती हैं और हाथियों के दंत कट कट कर गिरते हैं सोही १ कसल के जड़ों की पंक्तियां हैं २ हाथी हैं सोही बलवान् ३ मकरों के रूप से बिहार करते हैं और घोड़े हैं सोही ४ घड़ियाल (मगर विशेष) के रूप से हैं ॥ ५१ ॥ अँकुश सहित ५ पड़ी हुई हाथियों की खुँडें हैं सोही ६ मच्छी पकड़ने के काँटे को झुलाती हैं ७ कवच हैं सोही ८ मच्छी पकड़ने की जाल और साँस ही ९ कीचड़ है १० कलेजे कट कट कर उड़ते हैं सोही कच्छप चलते हैं ११ बूकों (गुड़दों) का समूह ही मँडरु का १२ अम कर (छलांग) फैलाते हैं ॥ ५२ ॥ आँतों की पंक्ति है सोही १३ जल सर्पों का १४ समूह चलता है, यहां १५ बलों के अपार समूह तिरते हैं सोही १६ शैवाल (काँजी) के सदृश हैं १७ सरेहुए पुरुषों की नाड़ियों (नखें) तिरती हैं सोही १८ जलौक्यों (जोक्यों) की शोभा धारण करती हैं, कटी हुई अंगुलियों के समूह ही १९ छोटी अच्छियें चपल बन कर चलती हैं ॥ ५३ ॥ कटे हुए हाथों के समूह ही २० पंक्तियों करके २० गोह (गोहीली) के समान चलते हैं और कटी हुई तिलियें (उदरस्थ मांस पिंड) ही मानों २२ केकड़े फिरते हैं २३ कटे हुए कान तिरते हैं सोही सीपें हैं, उस मुँह में नख हैं सोही २४ साँखूल्या और २५ हड्डियें हैं सोही शंख के २६ सदृश हैं

अतिथि चूर सिंकता अनूप नर सूर निहारै ॥ ५४ ॥

आवरणक आवर्त रूप अटि चक्र उधारै ॥

धूम लहरि उठै अनेक अति बात इसारै ॥

कुभ करीके चक्रवाक ध्रुव पीतन धारै ॥

छेदी गिरत हंयच्छटा सु सारस सचारै ॥ ५५ ॥

चामर बनि चैकाग रूप बैक टोप बिहारै ॥

घन कारडैव गेंजन घट गिरि गिरि गुजारै ॥

उंचचूल सु आंटी कपाल मंगू किलकारै ॥

गज अगुलि कटि कटि गिरी सु सिखरी व सुडारै ॥ ५६ ॥

कातर वीरेण तव केक कडि लागि किनारै ॥

शूगाटके करसूके सघ विच देत विहारै ॥

ऊँरु पतित सिधुमार आभ गैल उँद अपारै ॥

घुटैक घन सैलक सोभ धर पातित धारै ॥ ५७ ॥

अथवा छोटे शस्त्र, सामूह्य और शंखा का अनुकरण दृष्टिमें करती हैं
 "लुद्रशदा . दादनखा" इत्यमर ॥ घोर पुरुष हैं वे ? दृष्टियों के चूरे को ही
 वपमा रहित २ रेत निहारते हैं ॥ ५४ ॥ ३ रुधिर में तिरती हुई छावें ४
 चक्राकार (गोल) फिरकर भ्रमि पटकती हैं, ५ यहा घुम (घुमा) है सो ही ६
 पपन के इसारे से छहरें लटती हैं ७ हरताल से रगेष्टण हाथियों के कुमस्पल
 हैं सो ही निश्चय ही पीलेपनको धारण करनेवाले ८ चक्खे हैं, वस पुढ मे
 कटी हुई ९ घोड़ों की गरदनें गिरती हैं सो ही सारस १० बहाते हैं ॥ ५५ ॥
 चमर है सोही ११ इस बनते हैं और १२ बुगलों के रूप से टोप पहार करते हैं
 १३ हाथियों की घटा गिर गिर कर पजती है सोही मानों १४ पतक (जलज
 न्तु विशेष) बोलते हैं १५ ध्यजाओं के घल्ल हैं सोही १६ आटी नामक पक्षि
 विशेष हैं और कटे हुए कपाल हैं सोही १७ जलमूर्ग बोलते हैं कटी हुई
 हाथियों की अगुलियं गिरी हैं सोही श्रेष्ठ रीति के १८ काकड़े के शंक हैं ॥ ५६ ॥
 कितने ही वायर १९ कास (तृण विशेष) के समूह के समान इस युद्ध रूपी
 नदी से निकल कर किनारे जागते हैं २० सिंघाड़ों के समान २१ पत्तों का
 समूह २२ शोभा देता है २३ पड़ी हुई जघा है सोही २४ भूस (मगर विशेष की
 शोभा देती है २५ और कटे हुए गले (कठ) ही अपार २६ जलमानस (जल मायासि
 या) है पृथ्वी पर २७ पड़े हुए २८ घुटने २९ कमल के मूल (कद) की शोभा धरते हैं ॥ ५७ ॥

निडर पराक्रम पृथुल नाव नय मंगे निहारैं ॥
 लंबे केतन बरदवान पवमान प्रसारैं ॥
 प्यारे दुल्लभ प्राण रूप आंतर कर डारैं ॥
 वीर निर्धामक रस बिसेस सुहि पार उतारैं ॥ ५८ ॥
 उठैं घायल लंपन भग्ग बुदबुद अनुकरैं ॥
 मज्जा मेदं अनेक ओघ डिंडीरं दिकारैं ॥
 औसी दुस्तर आपगाँ सु हुव स्रोतं हजारैं ॥
 बुंदी जैपुर उभयर वीर तिहिं तिरन बिचारैं ॥ ५९ ॥

॥ दोहा ॥

औसी दुस्तर आपगा, बढे तिरन बर वीर ॥
 इत उतके आदव अडर, धाराधरं कर धीर ॥ ६० ॥

॥ पट्टपात ॥

इत पित्थल चालुक्य असह कूरम प्रताप उत ॥
 इत कबंध अमरेस उत सु जदव दलेल द्रुत ॥
 इत प्रयाग चहुवान सुरत उत कुम्म सुमंतह ॥
 इत मरजाद असंक उत सु कूरम जसवंतह ॥

इत तोक बिजय कछवाह उत इत उत कुम्म अजीत दुवर

इस युद्ध रूपी नदी के तिरनेको निर्भय पराक्रम है वही १ बड़ी नाव है और नीति है सोही उस नाव का २ मस्तक है ३ सेना में लंबी ध्वजा है सोही उस नाव का बरदवान (मस्तूल) है जिसको ४ पवन फैलाता है अत्यन्त प्यारे प्राण हैं सोही उस नदी की उतराई के ५ तर सें डालते हैं "आंतरस्तरपण्यंस्था" दित्यमरः॥ वीर रस ही उस ६ नाव का खेवटिया है सोही उस नदी के पार लगाता है॥५८॥ घायलों के ७*मुख से भाग उठते हैं सोही उस नदी में बुदबुदों के ८ अनुकरण करनेवाले हैं ९ अस्थिगत धातु और (मींजी, सार) १० चरबी का समूह ही ११ फेन (भाग) दीखते हैं ऐसी दुस्तर १२ नदी की हजारों १३ धाराएँ हुई ॥ ५९ ॥ १४ खड्ग हाथों में लिये ॥ ६० ॥ १५ सुरतसिंह १६ श्रेष्ठ बुद्धिमान् ॥ ६१ ॥

* क्रिया आकर फिर विशेषण दिया जावे उसको समाप्तपुनरात्त दोष कहते हैं परन्तु क्रिया के पीछे फिर अनेक विशेषण व अनेक उपमा दी जावे वहां यह दोष मिटजाता है सोही यहा जानना चाहिये.

इत देव हृद हम्मीर उत हरखि कुम्म हमगीर हुव ॥ ६१ ॥

॥ दोहा ॥

हृद भवानीसिंह इत, उत माधव कछवाह ॥

इत सगताउत अचल उत, सकर कुम्म सिपाह ॥ ६२ ॥

चपारि *अमर रठोर सुत, अच तिनको अभिधान ॥

इत भैरव अगद अचल, उत कछवाह अमान ॥ ६३ ॥

इत कवध नवलैस उत, भट कूरम भूपाल ॥

इत सन मान कवध उत, अर्जुन कुम्म अचल ॥ ६४ ॥

अडर सिवाईसिंह इत, रनपडित रठोर ॥

अभयसिंह कछवाह उत, मिले उभय २ भट सोमोर ॥ ६५ ॥

इत सु भट बुदीसको, जुद्ध निपुन जगगम ॥

उदयसिंह परमार उत, कुपित भिरयो जय काम ॥ ६६ ॥

उभय उभय इत्यादि जुरि, अनी अमर उमराव ॥

किन्नो रन रविमल्ल कवि, वरनै बिरुद बढाव ॥ ६७ ॥

॥ पञ्चटिका ॥

चालुक वर पित्यल जग चाह, नाथाउत पुर निम्मान नाह ।

पैसठि ६५ पैदाति सादी पचीस २५, सजि चलिय कुम्म परताप सीस ६८

उततै प्रताप हय सत १०० उपेतै, खिजि आयो सम्मुह बीर खेत ॥

पित्यल उर मारिय बान पच ५, रन बीर यहहु सक्यो न रच ॥ ६९ ॥

मारकै सिर मारिय मंडलग्ग, कटि टोप कछुक सिर खगिँय खग

तस सुभट इहाँ इक वार किन्न, कर सव्य सार्गद सु करिय भिन्न ७०

दै जात चलिय पित्यल कृपान, सिर भिन्न होय अरि भुव संघान

॥ ६२ ॥ * अमरसिंह राठोड के चार पुत्र † नाम ॥ ६३ ॥ ‡ इधर से

॥ ६४ ॥ सोमोड (मुकुट) ॥ ६५ ॥ १ सूर्यमल्ल कवि स्तुति को बढ़ाकर वर्णन करते

हैं ॥ ६७ ॥ २ पैदल १ सवार ॥ ६८ ॥ सौ घोड़ों ४ सहित यहा (अजइत्थार्या

क्षत्रिया से घोड़ों के सौ सवार जानना चाहिये) ॥ ६९ ॥ ५ मारनेवाले पर १

क्षत्रिय लाया ७ छसा ८ मुजबब सहित बाम हाथ काट डाला ॥ ७० ॥ ९ सोया

पुनि हनि प्रतापके सुभट सत्त७, आयो उडाय हय इत उगता ७१॥
 हयखंध लेग आरिय प्रताप, हय गिगत भयो पचगाँ आप ॥
 हय हीन तिमहि कर सव्य हीन, पुनि हनिप कुम्भ भट नव ८
 प्रवीन ॥ ७२ ॥

इहिँ बिच प्रताप आरिय कृपान, पित्तल कटयो सु तिल तिन प्रमान
 सन्नाह लयो नहि प्रथम सूर, पानिप दिखाय तेसाहि पूर ॥ ७३ ॥
 सन्नह १७ अरी तेरह १३ स्वभट सत्थ, सजि डँटलाक पहुँच्यो समथ
 रठोर अमर जहव दलेल, खिजि खिजि इत गंडयो वीर खेत्त ॥ ७४ ॥
 तेतीस ३३ पैदल इत कृति २० तुरंग, उत सत १०० क सद्धि ६० अनु-
 क्रम अमंग ॥

लखि कडिय परस्पर वाह वाह, बाहहु तुम वाहहु नैव सिपाह ७५
 भिरि प्रथम रचिय सेलन भचक, रँमि दाव धाँव कावन रचक ॥
 इम फिरत बाजि दोउन २ उडानि, हुवर भंड दंडभूत चक्र जानि ७६
 ननुँ कै दिनेसँ अरु जामिनीस, गरदाय फिगत हाँटक गिरीस ॥
 आवर्त उँदधि जिम हुवर जिहाज, बलि किंयु कपोत पर उभय
 २ बाज ॥ ७७ ॥

हुवर पत्र बाँतचक्र कि धिरंत, कन्या कि उभय कुंदियँ फिरंत ॥
 हुवरलँहुव जानि नट सिर दिखाय, इम फिरिय वीर बाजिन उडाय ७८
 अमरेस मुक्ति तोमँर अमंग, जहव हय वेधयो निडर जंग ॥

। ७१ ॥ १ घोड़े के कंधे पर २ पैदल ३ बाज हाथ से ॥ ७२ ॥ ४ कवच
 ५ पराक्रम ॥ ७३ ॥ ६ अपने वीरों के साथ ७ चाहता था उस लोक में =
 स्वार्थ ॥ ७४ ॥ ८ पैदल १० यहाँ लक्षणा से सवार जानो ११ सौ पैदल आर
 साठ सवार इस अनुक्रम से १२ नतीन ॥ ७५ ॥ १३ दाव खेल कर १४ दौड़
 १५ कुम्भार के चाक पर दो मटके हाँवें इस तरह ॥ ७६ ॥ ११ अथवा निश्चय
 ही मानों १७ सूर्य और १८ चन्द्रमा १९ सुमेरु पर्वत को घेरकर फिरते हैं
 २० समुद्र के अग्नि [चक्कर] में दो जहाज २१ मानों एक कवच पर दो बाज हैं
 ॥ ७७ ॥ २२ पवन के गोंद में दो पत्ते घिरे २३ नृत्य विशेष २४ गैद ॥ ७८ ॥ २५ भाला

हय गिरत अं पर आरुहि दलेल, मारघो कवधूँ उर सुंभर सेल ७२
 सहि सेल अमर हनि सत्रु सत्त७, मारघो दलेल आसिवर उमत्त ॥
 जहवहिं मारि अगँ जगाम, भिटघो भटेभ सीसोद रयाम ॥ ८० ॥
 दोउन२ कृपान आरिय दुइहत्थ, मंडमाल मध्य गय उभय२मत्थ॥
 अरि नैवेँपचीस२५निज भट उपेत, रठोर गयो निउँजँर निकेत८१
 इत भट प्रयाग इक्क१ हि अभग, सुरतेस उत सु हय सडि६० सग॥
 मिलि उभय२जग मडिय अमान, बदि वाह वाह सिव किय बखाना८२
 पटुँ प्रथम तुपक आरिय प्रयाग, अरि दोय२हनिष तिम आखु नाग।
 डकगैय बाजि पुनि तुपक डारि, कटि हिंतु कालनाँ गिनि निका८३
 सुरतेम निकट पहुँचपो प्रयाग, फिरि मडल खेल्यो हेति१ फाग ॥
 जेजे भट पिँछे सुरत जत्थ, तेते प्रयाग सय हनिष तत्थ ॥ ८४ ॥
 इम फिरत इह हेवर उताल, जिम अनिलँ अगितन बिपिन जाल
 तिय मृगियँ सुरत जिम नर तुरग, इम सुरतँ इह दळ्यो अभग८५
 आघात खगग दंद अनूप, किय बहुत कुम्म आलकत कूप ॥
 खट६ सुभट सुरत पिछे खिँसाय, पैते प्रयाग पर रन रिसाय ॥ ८६ ॥
 अभिमन्युलख्यो खट रथिन आँजि, विफुरयो प्रयाग इम दपटि बाजि।
 दुव २ मारि चपारि ४ घायल गिराय, खट६ असि प्रहार तिनकेहु
 खाय ॥ ८७ ॥

सुरतेस सीस हं किय सजोग, मानहु लखि जिहँगे मत्त मोर ॥

१ दूसरे घोड़े पर चढ़कर २ सुभट न ॥ ७९ ॥ १ अष्ट तरवार
 से वन्मत्त होकर ४ चला ५ धीरा का पति क्षीपोदिया श्यामसिंहा से
 मिला ॥ ८० ॥ ६ शिष की सुयमाला में ७ स्वर्ग में गया ॥ ८१ ॥ ८२ ॥
 ८ चतुर ९ पूरे को सर्प मारै तैस १० घोड़े को ललकार कर ११ तरवार ॥ ८३ ॥
 १२ शस्त्रों का फाग सुरतसिंह ने १३ भेजे ॥ ८४ ॥ १४ पवन से तृणों के धन में
 अग्नि फिरै तैस १५ सुगी जाति की स्त्री अश्व जाति के पुरुष से जैसे दयजाती
 है तैसे १६ सुरतसिंह को हाराने दपाया ॥ ८९ ॥ १७ अलते के रूप कर दिये अल-
 ते का रंग लाल होता है १८ सिटाकर १९ पूगे ॥ ८९ ॥ २० युद्ध में ॥ ८७ ॥ २१ सर्प

इक १ जवन आनि इहिँ बिच उमाहि, बेधयो प्रयाग सित संगि बाहि ८८
 इहिँ संगि सहित घोटैक उडाय, कट्यो सु भिच्छ पुनि पिहुल काय
 यँहँ सुरतसिंह किय खगग वाग, मारयो प्रयाग मूड जानि मार ॥ ८९ ॥
 दुँढत जिहिँ द्वारे कँक ठँक, नहिँ मिलिय बुत्थि पलचरन नैक ॥
 अवसिँठरहिय नहिँ लैन अगिग, लुत्थि सु प्रयाग गय अर्सिन लगिग ९०
 हनि पंच ५ च्यारि ४ घायल बिंधाय, पत्तो प्रयाग निँजैर निकाय ॥
 मरजाद सु मुहुकम अन्ववाँय, सतपंच ५०० पैदग साँदी सजाय ॥ ९१ ॥
 इत चलिय पिकिख जसवंत बीग, धुर धर भलायपति कुमर धीर ॥
 वहहू सजि खट सय ६०० अश्ववार, हमगीर पैदिक त्यौही हजार
 १००० ॥ ९२ ॥

मरजाद सीस धारत मरोर, आयो राजाउत रचत रोर १ ॥
 मरजाद मत्थ तकि तीर तीन ३, दपटाय बाँजि कछवाह दीन ॥ ९३ ॥
 मरजाद सुभट इक नाम मान, कूरम हय मारयो दै कृपान ॥
 जसवंत अपर हय चढि जरूर, समसेर हन्यो वह मान सूर ॥ ९४ ॥
 कूरम निज जद्वन सुभट दोय २, हड्डा भिर हूँले कृपित होय ॥
 दै चक्र दुहुँन २ मरजाद बिँटि, भालन प्रहार किय भिँटि भिँटि ॥ ९५ ॥
 हुन हड्डु दुहुँन २ तोमर बिँडारि, जद्वन गयो मरजाद जैरि ॥
 रठोर बहुरि पिल्लयो रिसाय, खग भारि हड्डु लिय सोहु खाय ॥ ९६ ॥
 पठये इम कूरम दस १० सिपाह, लिन्ने ति मारि लागि बिजय लाह ॥
 हड्डा सुमेरु पठयो बहोरि, दिन्नो कृपान तिहिँ खंध दोरि ॥ ९७ ॥

को देखकर १ तीक्ष्ण वरछी खलाकर ॥ ८८ ॥ २ घोड़ों ३ बड़े शरीर
 वाले को ४ शिव ने कामदेव को मारा जैसे ॥ ८९ ॥ ५ दोनों साँसाहारी
 पक्षि विशेष हैं ६ साँस खानेवालों को ७ जलाने को अवशिष्ट [बाकी] नहीं
 रहा = तरवारों के लग गया ॥ ९० ॥ १० देवताओं के ११ स्थान [स्वर्ग] में
 गया १२ मुहुकमसिंह के वंश में १३ पैदल १४ सवार ॥ ९१ ॥ १५ पैदल ॥ ९२ ॥ १६
 १७ घोड़ा दौड़ाकर ॥ ९३ ॥ १ = मानसिंह ने १८ दूसरे घोड़े पर ॥ ९४ ॥ २०
 बढाये वा भेजे ॥ ९५ ॥ २१ हजम कर गया ॥ ९६ ॥ ९७ ॥

उपवीत उत्तरि मरजाद *अस, बैठौतनुत्र भिदिमृष्टिबस॥
 इहिं घाय भयो ईसभर अचेत, खिन धरिय मोह डारि परिय खेत ९८
 तजि मोह बहुरि विनुही तुरग, जसवंत हिंनु किय उछि जग ॥
 पुनि मारि अट्टक कूरम प्रवीर, सुतो संतल्प संगर सधीर ॥ ९८ ॥
 इम खाय सत्रु एकोनबीस १९, बैलि करिय चेत घायल बतीस ३२
 विटिय तब अच्छरि डारि बाँहि, मरजाद पंत इम नाकमाँहि १००
 चोरासी ८४ निजभट रहिय खेत, सतदोय २०० भये घायल सु चेत ॥
 इत तोकसिंह मिलि छोई अग, उत विजयसिंह कूरम अभंग १०१
 दुव २ दपटि बीति रीतिन दिखाय, दुव २ करत वार असि घाय दाय
 २ न चत्वर दुव २ जयखभ रूप, दुव २ स्वामि धर्म धर भटन भूप १०२
 २ व २ द्विरैद इक धेनुक दिखात, दुव २ सिंह जानि इक बैस्त आत
 २ हैं तोक चड असिवर चलाय, गति वज्ज विजैय दिन्नौ गिराय १०३
 इत अजित अजित कछवाह दोयै २, हथिपार मार मिलि मत्त होय
 गोलिन लागि दोउन २ हय गिरत, व्है पदिकै जुरे बलवत हर्त १०४
 आतौपि उभय २ जिम जुरत जुद्ध, कौधो चरनायुध उरमि क्रुद्ध ॥
 जिम ओटि नखर खैरकोन जग, दैत्ताय कक जैनु अतुल दग १०५
 भिरि इम प्रवीर बनि छिन्न भिन्न, करि किति दुहुँन २ दिवै बास किन्न
 इत देवसिंह हड्डा उदार, हरदाउत सत्रुन गिलनहार ॥ १०६ ॥
 हम्मीर कुम्भ सिर बिरचि हाक, जग कतल करत आयो कजाकै
 * कवे में कयच पट फट कर पीठ की हड्डी में चण्डबाण मूछा ॥ ९८ ॥ २ बिना
 घोड़े ३ से ४ रणशय्या ॥ ९९ ॥ ५ पुनि [फिर] ६ गया ७ स्वर्ग में गया ॥ १०० ॥
 ८ ओष ॥ १०१ ॥ ९ घोड़ों को १० युद्ध के चौक में ११ समराधों या वीरों के
 राजा ॥ १०२ ॥ १२ दो हाथी एक १३ हथनी पर १४ एक बकरे पर १५ विजयसिंह
 को ॥ १०६ ॥ १६ दोनों अजितसिंह १७ बैदय १८ खेद है (घोड़े मरजाने से खेद
 के यत्न कहे हैं) ॥ १०४ ॥ १९ चलिह पक्षी २० कुक्कुट (सुरगे) २१ खू और नखों
 से २२ तीतर पक्षी लड़े जैसे २३ ग्रीच २४ मानों ॥ १०५ ॥ २५ स्वर्ग में ॥ १०१ ॥
 २६ युद्ध में

मिलि उभय२भाद्रपद सुदिर मान, आसार हेति वरखत अमान १०७
 हम्मीर इहाँ करि असि प्रहार, वह देव न राख्यो अश्वचार ॥
 तब पदिक होय रचि नट मलंग, साँरसन भटकि अँच्यो सुसंग १०८
 पयचौर उभय२ इम बनि प्रवीर, दठ पुव्व जुरिग देव रु हर्मार ॥
 हलकारि खगग भारत दुर्दह्य, ललकारि होत पुनिलुत्थि बत्थ १०९
 तुष्टिय लागि दोउन२ असि तनंकि, कट्टार तवहि आरिय अनंकि ॥
 छर्म मल्ल जुद्ध पुनि रचि अछेह, दुव२ बीर गिरे इम छोरि देह ११०
 ॥ पट्टपात् ॥

सुभर भवानीसिंह महासिंहोत उमँडि इत ॥
 उत माधव कछवाह छलिय, निज स्वामि विजय हित ॥
 खुरन अगग भुव खुंदि मुंदि पँन्नग सहस्र मुख ॥
 तुमुल भारि तरवारि रारि मंडिय रावन रुख ॥
 मिटि गुंमर पिठि कच्छप मुरकि डुरकि निठि सँकर ठविग
 भीरुन भटेस धिँकैरि भिरत दिँकैरि गन चिँकैरि दविग १११
 जिम आखंडेल जंभ सँव्यसाची राधासुंत ॥
 रँवामी तारकँ सूर भीम कीचक बल अद्रुत ॥
 पुनि हलँहेति प्रलंव सूनसाँयर अरु संवर ॥
 अंजनिनंदन अँल बज्जतुँडँ रु काकोदँर ॥
 मैनाँकस्वसा जित सुरमहिँपँ आजगवी अंधक अरन ॥

१ भादों के मेघ के समान २ शस्त्रों लुपी पानी ॥ १०७ ॥ ३ वोड़े को मार डाला ४ काट मंज-
 ला (कर्धनी अथवा कमरबधा) ॥ १०८ ॥ ५ पैदल ॥ १०९ ॥ ६ समर्थ ॥ ११० ॥ ७ शेषनाग के
 रावण की भाँति ८ घमंड मिटकर १० पराह ठहरा ११ कायरों को धिक्कार देकर
 १२ दिशाओं के हाथियों के समूह १३ चीत्कार शब्द करके दबगये ॥ १११ ॥
 १४ इंद्र और जंभासुर १५ अर्जुन और १६ कर्ण १७ स्वामिकार्तिक और १८
 तारकासुर भीम और कीचक १९ बलदेव और प्रलंवासुर २० समुद्र का पुत्र
 कामदेव और २१ शंकरासुर २२ हनुमान और २३ अक्षयकुमार २४ गरुड़ और २५ सर्प
 २६ पार्वती (देवी) और २७ महिषासुर, जैसे २८ शिव और अंधक असुर अडे

इहिं रीति रूपटि आइव अजिर वीतिं दपटि लग्गेत्तरन ॥ ११२ ॥
 क्रूरमको करवाल हइ मिल्लयो तोमर पर ॥
 कटत कुत असि कट्टि अनखि मारिय इहिं अवसर ॥
 क्रूरमको सिर कट्टि निडर किय रुद्र निवेदन ॥
 इम अक्षत रहि अप्प अरिन महिय उच्छेदन ॥
 वर वाजि नाव खेयक बलिय कुच्छेपक दिय बैलि करट ॥
 जय धारि फिरिग जानिय जगत भिरिग भवानियसिंह भट ॥ ११३ ॥
 इत सगताउन अचलसिंह क्रूरम उत सकर ॥
 इत प्रवीर जैवअस उत सु कुंस बंस भयकर ॥
 इत बुदिय धर औरर उत सु दुडाहर तालक ॥
 उदयनैर इत ओप उत सु जैपुर उज्जालक ॥

इत इक १० उत सु दस १० हय अधिप इत सिव रत्नक विष्णु उत ॥
 कलिकार फुरे हिय सुंम बिकासि निकसि जुरे कलिकार नैत ॥ ११४ ॥
 ॥ दोहा ॥

दस १० दस १० भेलि प्रहार दुवर, रहे ति घायल रग ॥
 आयु भयो बलवान यहँ, मेटी त्रिदिव उमग ॥ ११५ ॥
 इत भैरव अमरस सुत, रनकोबिंद रठोर ॥
 और अमान कछवाह उत, जैवी जुरिग अतिजोर ॥ ११६ ॥
 क्रूरम खग कवधकै, दिनों तमकि मदध ॥
 कटि बाहुलै कर अद्व कटि, बैठा लागि मरिगवध ॥ ११७ ॥

तैसे १ युद्ध के आगन (शौक) में २ घोड़े दौबाकर लड़न लगे ॥ ११२ ॥ ३
 पद्म ४ माले पर ५ माल फटते ही ६ शिष के भेट किया ७ आप (खुद)
 घायल रहित शत्रुओं को ८ काटना शुरू किया ९ कौचपक (खड्ग) से १० बलि
 दान (भोजन) दिया ११ काक पक्षियों को ॥ ११३ ॥ १२ लख क घश म(शीपा-
 दिया क्षत्रिय) १३ कुश के घशपाला (पुष्पाहा क्षत्रिय) १४ कपट १५ ताला
 १६ पत्तिया के आकार से हृदय फूलकर १७ पुष्प होगय १८ युद्ध करनेवाले धाना-
 रद से १९ स्तुतियोग्य ॥ ११४ ॥ २० स्थगकी ॥ ११५ ॥ २१ युद्ध चतुर २२ शत्रु अथवा शत्रु
 (लघु) करके २३ यगवान छुड़े २४ अतिपल से ॥ ११६ ॥ २५ स्ताना २६ पौखे तक ॥ ११७ ॥

अैसेही इक अंस पर, खाय उभय२ तस खग्ग ॥
 मास्यो कुम्भ अमानकोँ, इम रहोर उदग्ग ॥ ११८ ॥
 पुनि कूरम भगवंत प्रति, जुग्यो मलंगत मत्त ॥
 दोउन२ असिबर छाक छकि, तजे कलेश्वर तत्त ॥ ११९ ॥
 इत कबंध नवलेश उत, भट कूरम भूपाल ॥
 अरै इच्छन जोरे उभय२, कर तिच्छन करवाल ॥ १२० ॥
 मानौ भद्व मेघमें, चपला जुग२ चमकाय ॥
 कौटके इम अमकाय दुव२, हुव बटके घन घाय ॥ १२१ ॥
 इमहि बीर सनमान इत, उत अज्जुन कछवाह ॥
 तिल तिल कटि पहुंचे तविप, लौ दुव२ अच्छरि लाह ॥ १२२ ॥
 अडर सिवाईसिंह इत, सूर अमय उत सज्जि ॥
 परे खेत घायल उभय२, रुहिरं छछकत रज्जि ॥ १२३ ॥
 इत भट सु बुन्दीसको, जयगाहक जगराम ॥
 उदयसिंह परमार सिर, धप्यो प्रसारत धाम ॥ १२४ ॥
 कुंत इक१ परमारको, खाय प्रहारिय खग्ग ॥
 किन्नौ प्रबल करोडियाँ, अरि सिर खंध अलग्ग ॥ १२५ ॥
 उदयसिंहकोँ मारि इम, बिंटयो जद्व वग्घ ॥
 देह छोरि दिय पल दुव, अच्छरि मंडिय अग्घ ॥ १२६ ॥
 ज्यौ संगर कनउज्जके, चंद लरयो असि चंड ॥
 इम जुटयो जगराम यँहँ, खंडन करि बपु खंड ॥ १२७ ॥
 इत्यादिक इत उत लरत, बुंदी सुभट विलेस ॥

१ कंधे पर ॥ ११८ ॥ २ शरीर ॥ ११९ ॥ ३ शीघ्र ४ नेत्र मिलाये ॥ १२० ॥
 ५ तरवारें (यहां लक्षणा से तरवार का ग्रहण है, नहीं तो एक बार में दो टुकड़े
 होजाने को डिंगलभाषा में कटका कहते हैं) ॥ १२१ ॥ ६ स्वर्ग में ॥ १२२ ॥
 ७ रुधिर की छछकों से शोभित होकर ॥ १२३ ॥ ८ तेज तथा अपना स्वरूप
 ॥ १२४ ॥ ९ आला १० आदों की एक जाति ॥ १२५ ॥ ॥ १२६ ॥ ॥ १२७ ॥

निय अति भारत बुद्ध सुख, दुपद्म चढ दिनेस ॥ १२८ ॥
॥ मुक्तादाम ॥

चल्यो इत भुपति भारत खग, मरै अरि घायल डारत भग ॥
इतैउत घोर मरै अत्रमहं, इतैउत आवहि आवहि नह ॥ १२९ ॥
इतैउत मुडन छादित भुम्भि, इतैउत डोलत घायल घुम्भि ॥
इतैउत संकृलि लुत्थिन लुत्थि, इतैउत बाढ विखेरत बुत्थि ॥ १३० ॥
इतैउत खजर होत दुसार, इतैउत फुटत पट्टिस पार ॥
इतैउत होत तुपकन मग, इतैउत वेधत सेलन अग ॥ १३१ ॥
इतैउत तीरन ढकन गैन, इतैउत उद्धत सगितसेन ॥
इतैउत उग्र रचै रन रोर, इतैउत पात गदा अति जोर ॥ १३२ ॥
इतैउत चाप चट्टन चक, इतैउत धूपनकी धमचक ॥

॥ तचक १ मचक २ अन्तपानुपास ॥ १ ॥

इतैउत पा गति आयु म छुटि, इतैउत मुटिनै मारत मुटि ॥ १३३ ॥
इतैउत भोइन चुनत मुच्छ, इतैउत उद्धत गोदेन गुच्छ ॥
इतैउत अवन लगत लीह, इतैउत कातर कछरि जीह ॥ १३४ ॥
इतैउत तुटत मकुंलि सीस, इतैउत सूर रिभावत ईस ॥
इतैउत डाकिनि खाजत खेत, इतैउत पीनि प्रसारत प्रेत ॥ १३५ ॥
इतैउत डोलत अत्रन व्यालै, इतैउत फुटत कठ कपाल ॥
इतैउत धात सोनित धार, इतैउत कीकैस वृद्ध अपार ॥ १३६ ॥
इतैउत नैन उद्धत कटि, इतैउत बाहु फदहत वहि ॥
इतैउत टोप वरुतग टूक, इतैउत हूँव हरव हूक ॥ १३७ ॥

१ सुषोमद का युग्म ॥ १२८ ॥ २ पीडाकारी युग्म ॥ १२९ ॥ ३ अरगई ॥ १३० ॥ ४ कटारी भाषा के अग्र भाग स ॥ १३१ ॥ ५ आकाश को ७ परादियों से सेना = अथ ६ प्रहार ॥ १३२ ॥ १० पक (सेना) ११ तरवारों की १२ मुखों से अथवा अस्त्र की मृदा पर मृती मारते हैं ॥ १३३ ॥ १३ मस्तिष्क (मेजों) के समूह १४ घोड़ों की पट्टी ॥ १३४ ॥ १५ आकाश रहित १६ हाथ फैलाते हैं ॥ १३५ ॥ १७ आतों के सर्प १८ द्विधा के समूह ॥ १३६ ॥ १९ ह, शब्द अथवा हरो (अप्सरसों) का शब्द

इतैउत बावन गावनहार, इतैउत जच्छ जपै जयकार ॥
 इतैउत नारद अकखत वाह, इतैउत साकिनि देत सिराह ॥ १३८ ॥
 इतैउत बाँकि फिरै चउसहि ६४, इतैउत सूरन सज्ज समष्टि ॥
 इतैउत तंडव मंडत रुंड, इतैउत झुकत झुंडन झुंड ॥ १३९ ॥
 इतैउत बाहहु बाहहु बुल्लि, इतैउत तेगन आरत तुल्लि ॥
 इतैउत बाजिन बग तमाम, इतैउत कुदत गैवर ग्राम ॥ १४० ॥
 इतैउत पक्खर घंटन घोर, इतैउत अंगि सिलगत सोर ॥
 इतैउत बहलके अनुकार, इतैउत लोहित बुद्धत वार ॥ १४१ ॥
 इतैउत चाप सु बार्सव चाप, इतैउत गज्ज सु गज्ज अमाप ॥
 इतैउत सीकर गोलिन गोट, इतैउत दंतिन दंत बंकोट ॥ १४२ ॥
 इतैउत ओज इरममद धारि, इतैउत त्यों तड़ित तरवारि ॥
 इतैउत व्है लौहरू हरवल्ल, इतैउत घुग्घर दँदुर गल्ल ॥ १४३ ॥
 इतैउत बीर सु उत्तर बीत, इतैउत सूर समूर सुहात ॥
 इतैउत चातक घंटन आलि, इतैउत अँथि किरै कँरकालि ॥ १४४ ॥
 इतैउत कातर भोलि उदास, इतैउत हूर कृंषीवल आस ॥
 इतैउत जीगनै व्है चिनगीन, इतैउत स्याम घटा करटीनै ॥ १४५ ॥
 रच्यो नृप यों रन पाँउसरूप, धपावत सत्रुनतै निज धूप ॥
 लयो ढिग जाय नरायनदास, प्रहारन मार रची चहुँपास ॥ १४६ ॥
 ॥ १३० ॥ १ गान करनेवाले बावन भैरव ॥ १३८ ॥ २ समष्टि (समूह) ३
 नृत्य ॥ १३९ ॥ ४ हाथियों के समूह ॥ १४० ॥ ५ अग्नि १ सदृश ७ रुधिर वर-
 सता है सोही पानी है ॥ १४१ ॥ ८ इन्द्र धनुष, गोळे और गोळियाँ चलती
 हैं सोही ९ जलकण हैं १० हाथियों के दन्त हैं सोही वगुले हैं ॥ १४२ ॥ ११
 पराक्रम है सोही मेघज्योति हैं १२ तरवारें ही धिजुली है १३ सेना का अग्रभा-
 ग है सोही लहरें हैं १४ घुघरे हैं सोही मैडकों का शब्द है ॥ १४३ ॥ १५ धीर हैं
 सोही उत्तर का पवन है १६ घटाओं की पंक्ति ही खातक है १७ अस्थि (हाड) बि-
 खरते हैं सोही १८ झोलों की पंक्ति है ॥ १४४ ॥ १९ ऊँठों रूपी कायर उदास हैं
 २० अप्सराओं रूपी खेती की आशा है २१ अग्नि कण ही जुगुनूँ है २२ हाथी हैं
 सो ही काली घटा है ॥ १४५ ॥ २३ वर्षा रूपी युद्ध रचा २४ तरवार को ॥ १४६ ॥

मरे भट भूपतिके सत तीन ३००, भये सत पचक ५०० घायनखीन ॥
 भज्यो गज खत्रियको लखि भार, भयो तब कुदि रुहे' असवार ॥
 इते बिच कूरम विक्रम आय, दई तरवारि घने करि दाय ॥१४७॥
 भयो तिहिं हँजक हे पप भिन्न, तऊ रूपटाय हने अरि तिन ३ ॥
 भिरयो वह विक्रम आनि वहोरि, लयो नृप कूरमको सिरतोरि १४८
 यहै लखि कूरम भैरव आनि, जुरयो नृपते दल मारत जानि ॥
 महीपति उप्पर खगग भुमोच, खंग्यो कछु पसुलिपे कटिकोर्च १४९
 करी पुनि हज हयच्छट चोट, कढयो कछुपे नरुख्यो नृप घोट ॥
 चली नृपकी तपकी तरवारि, लयो वह भैरव मारत मारि ॥१५०॥
 इतेबिच कुम्म मिलयो महताप, दये सर च्यारि ४ चटवृत्त चाप ॥
 लगे नृपके दुवर दारित दसे, लगे हयके दुवर दाहिन असे ॥१५१॥
 रुख्यो नहिं रच तऊ नृप आज, चल्यो अरि मारत फारत फोज ॥
 तहौ पुरपीलेपती चहुवान, भिरे दुवर थान १ तथा सुरतान २ ॥१५२॥
 नरुईर त्यो हरनाथ ३ तृतीप, इन्है नृप रुक्मिय गाढ गरीय ॥
 उभैर चहुवानन मारिय खगग, करे तिनके सिर भूप अलग १५३
 तथा सहि नैरवकी तरवारि, लयो हरनाथहुको हय मारि ॥
 घनी इम जैपुर वीरन नारि, करी नृप जोगिनि ककन मारि १५४
 जहौ हरदाउत हू नगराज, लरयो नृपको भट बुधिय लाज ॥
 कडार डठी १ हू रह्यो नृप पास, लरयो सई दोलतराम खवास १५५

१घाटे पर चढा २विक्रमसिंह ने ३दाय (वेच) ॥१४७॥ ४हज नामक घोड़े का पैर
 कटगया ५चमेदसिंह ने (इस चरित्र में जहा जहाँ केवल नृप, भूप, पद्म, सभर,
 चहुँबाण शब्द आये तथा तथा बुदी के राजा चमेदसिंह को जानना चाहिये)
 ॥१४८॥ ६छोड़ा (झड़ का प्रहार किया) ७बुसा (बैठा) ८कयच कट कर ॥ १४९ ॥
 ९ हज नामक घोड़े के कंधे पर १० राजा का घोड़ा ११ मारते हुए को मार
 किया ॥ १५० ॥ १२ कयच फोड़कर १३ दाहिने कंधे पर ॥ १५१ ॥ १४पुर का
 नाम है १५धानसिंह ॥ १५२ ॥ १६ मरु के बगवाला १७भारी दबला से ॥ १५३ ॥
 १८ नरुके की १९विषया ॥ १५४ ॥ २० राजा का समराज २१ साथ ॥ १५५ ॥

तथा सठ भीरु भजे सतच्यारि ४००, रची इम जैपुरत नृप शरि ॥ १५६ ॥
 तथा सतच्यारि ४०० मेरे अरितत, परे पुनि घायल ठहे सतसत्त ७००
 नरायन खेत खरो अघ धोय, घनों दल क्यों न तहाँ जय होय ॥ १५७ ॥
 कढयो नृप बुंदियपै धक धारि, मरै तब कोन करै पुनि शरि ॥
 इतैं कछवाहन खोजिय खेत, लखयो रन अंगन चित्रि *उपेत ॥ १५८ ॥
 कहाँ तरफैं भट तुष्टत स्वास, लरै कहूँ लुत्थि करै कहूँ हास ॥
 बकै कहूँ घायल ठहे सुधि हीन, जिकै कहूँ जानुन कुकृत कीन ॥ १५९ ॥
 डरे कहूँ अन्नन डारत घीव, फिरै कहूँ नैन चले कछि जीव ॥
 करै कहूँ सुंड़िनके उपधान, रैटै हरिकौ रन तल्प सैयान ॥ १६० ॥
 लरै कहूँ मत्त परासुन ओट, डुरै कहूँ लेत कवृतर लोट ॥
 भरै कहूँ बायु करै उनमत्त, धरै कहूँ सीस कलेजन छत्त ॥ १६१ ॥
 गिरै कहूँ पाय पटछन भुम्भि, रहे कहूँ रुष्टि रकावन कुम्भि ॥
 लरै कहूँ भूतनतैं भरि बत्थ, करै कहूँ जावक जंत्रव मत्थ ॥ १६२ ॥
 परे कहूँ बीर अधोमुख भूरि, डुरै कहूँ गाफिल चट्टत धूरि ॥
 दबे कहूँ कुकृत हत्थिन हेठ, जरे कहूँ पव्वय ज्यो दबै जेठ ॥ १६३ ॥
 रहे कहूँ कुंजर कुंभन लागि, मनो जुवतीन अनन्यर्ज जग्गि ॥
 तिरै कहूँ सोनित व्याकुल जात, भिरै कहूँ भेदत गिद्धन गात ॥ १६४ ॥
 करै कहूँ दंतनतैं कटकट, जरै कहूँ जुगनिपै रंहपट्ट ॥
 पठै कहूँ कृष्ण कल्यो वह ज्ञान, भनै कहूँ सांख्य वनै भगवान ॥ १६५ ॥
 चखै कहूँ लोहित ओठन पैब्बि, डुरै कहूँ कंकन पंखन दब्बि ॥
 अटै कहूँ आतुर इच्छहि पाय, हटै कहूँ पीड़ित जंपत हाय ॥ १६६ ॥

॥ १५६ ॥ १५७ ॥ * आश्चर्य सहित ॥ १५८ ॥ † गिरै ॥ १५९ ॥ १ तक्रिया
 २ रणशय्या पर सोते हुए ॥ १६० ॥ ३ मृतक शरीरों की ओट में ॥ १६१ ॥ ४ जा-
 चक के ऊँहारे के समान ॥ १६२ ॥ ५ ज्येष्ठ मास में पर्वतों में आग्नि जलै जैसे ॥ १६३ ॥
 ६ हाथियों के कुंभस्थलों से लगकर ७ स्त्रियों से ८ कामदेव के जगने से ९ समूह
 ॥ १६४ ॥ १० धप्पड़ ११ गीता का ज्ञान १२ सांख्यशास्त्र के मत को कह कर
 स्वयं ब्रह्म बनते हैं ॥ १६५ ॥ १३ होठों को चबाकर लोह चखते हैं ॥ १६६ ॥

कहैं कहैं बैद्य बुलावन बत्त, चहैं कहैं अच्छरि को रसरत्त ॥
 झुलैं कहैं घोरनपैं मृत झुड, रुलैं कहैं तहव महत रुड ॥ १६७ ॥
 खिजैं कहैं चिलहनिपौ पलखात, लसैं कहैं फेरन मारत लात ॥
 गहैं कहैं स्नानन तोरत गूद, बसैं कहैं साकिनिकें हित ॥ सुंद ॥ १६८ ॥
 नटैं कहैं अतक दूतन भीत, गिनैं कहैं गीमत डाकिनि गीत ॥
 मिलैं कहैं प्रान अपानन मेल, सिटैं कहैं प्रीत निहागत सेल ॥ १६९ ॥
 लखैं कहैं नाक जुरावन बिक्रम, कटैं कहैं कापन तोमर तक्ख ॥
 नये कहैं दुल्लह चितत नागि, कहैं कहैं पुत्रहि पुत्र पुकारि ॥ १७० ॥
 दिगैं कहैं निट्टि गहैं हय पुच्छ, मिलैं कहैं उट्टि मगोरत मुच्छ ॥
 जकैं कहैं बाजि गलकत जीन, हलैं कहैं हथिय सुडि विहान ॥ १७१ ॥
 डुरैं कहैं आनक दुदुभि फुट्टि, डरैं कहैं केतन तेगन तुट्टि ॥
 गिरे कहैं पट्टिस खग कमान, गिरे कहैं खटैंक तोमर बान ॥ १७२ ॥
 गिरे कहैं बाहुल कंकट टोप, गिरे कहैं कोस उरगम ओप ॥
 गिरे कहैं गज क्रमेलक खड, ठरे वनिजारनके जनु टड ॥ १७३ ॥
 गिरे कहैं पक्खर बग खैलान, गिरे कहैं तुग खरे खग खीन ॥
 गिरे कहैं गुच्छ बनै गजगाह, गिरे कहैं प्रोथं वजावत बाह ॥ १७४ ॥
 गिरे कहैं गैवर मोहि अमाप, गिरे कहैं अकुस घट कलाप ॥
 गिरे कहैं पुंकर आसन कान, गिरे कहैं पेचैंक ओ प्रतिमान ॥ १७५ ॥
 गिरे कहैं कुतैल मुच्छ कुघाट, गिरे कहैं मुड रु तुडैं ललाट ॥
 गिरे कहैं नेत्र रदच्छदै लल, गिरे कहैं नक्र ध्वनिग्रंथ गल ॥ १७६ ॥
 *चत्प रचते हुए ॥ ११७ ॥ मांस खाने से १ गीदड़ों का खात मारते शोभा दते हैं ॥
 कुत्तों को ॥ साकिनियों के खिचे रसोईदार (पपरबी) घनते हैं ॥ ११८ ॥
 यमराज के दूतों को डरकर नटते हैं कि हम को मत खेजाओ ? भाला का शरीरों में घुसते हुए देखकर ॥ ११९ ॥ २ शरीरों से तीखे भावे ॥ १७० ॥ ११७१ ॥
 ३ ध्वजा, तरवारों से कट कर पड़ा है ४ कटार ५ दाल ॥ १७२ ॥ ६ दस्ताने ७ कषण ८ तरवारों के स्थान ९ सर्पों की शोभा से १० ऊँटों के दुकड़े ॥ १७३ ॥
 ११ लगामें १२ फुरणे बजाते हुए १३ घोड़े ॥ १७४ ॥ १४ योगर (सुड का अग्रभाग) १५ हाथियों के पूँछ का मूलभाग १६ हाथियों के दंतों का पीथ का भाग ॥ १७५ ॥ १७ सूँझों के फंस १८ मुख १९ लाल होठ २० नाक, कान और

गिरे कहूँ*काकुद जिम्भन जूह, गिरे कहूँ मल्लक दह समूह ॥
 गिरे कहूँ बीतन त्यों ऽकृक फाटि, गिरे कहूँ काकल कंठ कृकाटि १७७
 गिरे कहूँ कूर्पर खंडिक कंध, गिरे कहूँ जंत्रु भुजा मणिवंध ॥
 गिरे कहूँ अंगुल अंगुलि टूक, गिरे कहूँ ज्यौ करत्यों करसूक १७८।
 गिरे कहूँ पंसुलि रीठक तोम, गिरे कहूँ पुष्पस कालिक कलोम
 गिरे कहूँ नाभि पुंरीतति गंज, गिरे कहूँ फुल्लि फवेहिय कंज ॥ १७९ ॥
 गिरे कहूँ त्यों त्रिक सत्थिन संघ, गिरे कहूँ जानु जुदे जुग २ जंघ
 गिरे कहूँ पिंडिय गोहिरं फुटि, गिरे कहूँ एडिय घुंटेकं तुटि १८०।
 लख्यो कछवाहन यौ रन थान, धरे सब घायल खोजि नृजान ॥
 निकारिय सल्ल जथा सुखकार, चिकित्सक बुल्लि रच्यो उपचार १८१।
 मरे तिनके बिधिसों किय दाह, बनै तिम प्रेतक्रिया निरवाह ॥
 दिवावत यौ जय दुंदुभि डक, चल्पो अब बुंदिय जैपुर चक्र ॥ १८२ ॥
 बिथारत बँटन अप्पन आन, उठावत सत्रुन सीम अमान ॥
 जँपो नृप कूरम अकखत जोध, कथंचित्त भोजु समावत क्रोध ॥ १८३ ॥
 महाबल जो जयके छक मत्त, प्रसारत ओदैक बुंदिय पत्त ॥
 पुरी पुनि भंड रुपे पचरंग, दिसा बिदिसान सुन्यौ यह दंग १८४।
 भयो मन मोदित कूरम नौह, स्वसेनैहिं अप्पिय वाह सिराह ॥

गला ॥ १७९ ॥ * तालुआ और जीभों का समूह † दन्त और दाढ़ों का
 समूह ‡ गले के दोनों पसवाड़े § गला १ कंठमणि २ गरदन का ऊँचा भाग
 ॥ १७७ ॥ ३ हाथ की कुहनी ४ गले की मंघि (हसली की हड्डी) ५ घुँचा ६ अंगुठा
 ७ नख ॥ १७८ ॥ ८ समूह ९ फेफरा १० कलेजा ११ तिल्ली १२ आंतों के समूह
 १३ माकड़ी का हाड और साथलों का १४ समूह (घुटनों के ऊपर के
 भाग को साथल और साथल के ऊपर के भाग को जाँघ कहते हैं) १५ पिंडु-
 लियों और पादग्रन्थि (गिरिये) १६ घुटने ॥ १८० ॥ १७ बैद्यों को बुलाकर
 १८ इलाज ॥ १८१ ॥ १८२ ॥ १८ सागों में २० ईश्वरीसिंह की जय हुई (जय
 शब्द पुल्लिङ्ग है जिसको यहां लोकर लुही से स्त्री लिंग लिखा है) २१ अत्यन्त
 प्रयत्न से हुआ उस क्रोध को मिटाते हैं ॥ १८३ ॥ २२ भय फैलाते हुए बुन्दी
 में गये २३ युद्ध ॥ १८४ ॥ २४ कछवाहों का पति (ईश्वरीसिंह २५ अपनी सेन

करे गज बाजि पटा बखसीस, गिन्यो * जयसिंह ज अप्पहिं ईस १८५
 दये सब भूपनको जयपत्र, लिखी वह इह भज्यो तजि छत्र ॥
 सु आवहिं जो तुमरी भुव माहिं, ततो हेत कहहु रक्खहु नाहिं १८६
 लई इम बुदिप कुम्म बहोरि, जिला गढ कोट सजे बलजोरि ॥
 फिरयो सब देस नरायनदास, लाग्यो कैर लैन सैन हुलास १८७
 इतैं अय जो हुव भूप चरित्र, सुनौ नृप राम रचौ वह चित्र ॥
 पचास सहस्र ५०००० नमैं असि कारि, कह्यो नृप पूरव फोजनि
 कारि ॥ १८८ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणो सप्तम ७ राशौ बुन्दी
 न्द्रकूर्मकटककलहकरणाकूर्मप्रतापसिंहीयसप्तदश १७ स्वर्कायत्र-
 योदश १३ सुभटसहितचालुक्यपृथ्वीसिंह १ शूरसप्तक ७ सहिनया-
 दवदल्लेजसिंह १ मारकस्वसुतत्रय ३ सुभटपञ्चविंश २५ त्युपेतक-
 वन्धाऽमरसिंह २ सपवनशत्रुपञ्चक ५ सहितइहप्रपागसिंह ३ स्व-
 चतुरशीति ८४ भलापपुरीयेकोनविंशति १९ सुभटयुतइहमर्पाद-
 सिंह ४ तोकसिंहप्रहतकूर्मविजयसिंह ३ स्वनामसजातीय ४ स-
 युतकूर्माऽजितसिंह ५ सकूर्महम्मीर ४ इहदेवासिंह ६ सम्भरभवा
 नीसिंहाऽऽक्रान्तकूर्ममाधवासिंह ५ काबन्धत्रिकाक्रान्तकूर्माऽमान
 को * जयसिंह के पुत्र ने अपने को बुन्दी का पति जाना ॥ १८५ ॥ १
 शीघ्र ॥ १८६ ॥ २ हासिज १ सेना सहित ४ प्रसन्न होकर ॥ १८७ ॥ ५ वस्मेर्दासिंह
 का १ राजा रामसिंह ७ वसका बिश्राम रचता हूँ सो सुनो ॥ १८८ ॥
 श्रीवंशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायण के सप्तमराशि में बुन्दी के इन्द्र का कछवाहे
 की सेना से युद्ध करना, कछवाहे प्रतापसिंह के सत्रह और अपने तेरह सहित सो-
 लखी पृथ्वीसिंह का, और सात बीरों सहित यादव दल्लेजसिंह को मारने वाले
 अपने तीन पुत्र और पन्चीस बीरों सहित राठोड अमरसिंह का, यवन सहित
 पाँच शत्रुओं के साथ हाहा प्रपागसिंह का, अपने बीरासौ और भलाप नगर के
 वस्तीस बीरों सहित हाहा मर्पादसिंह का, कछवाहे यिजयसिंह को मारकर तोक-
 सिंह का अपने ही नामवाले और अपनी जातिवाले अजितसिंह का, कछवाहा ए-
 म्मीरसिंह सहित हाहा देवासिंह का, कछवाहा माधवासिंह को मारने वाले चहु-

सिंह ६ भगवत्सिंह ७ भूपालसिंह ८ उर्जुनसिंह ९ प्रमारोदयसिंह
 १० यादवव्याघ्रसिंह ११ सहितभट्टजगराम ७ बुन्दीद्राक्रान्तकूर्म
 विक्रम १२ भैरव १३ चाहुवाणस्थान १४ सुरतानाऽऽदिसप्तशत ७००
 सुभटमारणाद्वादशशत १२०० सुभटक्षतप्रापणाद्भजहयचरणकर्तना
 ऽनन्तररावराशिनरसरणाकूर्मकटकविजयीभवनबुन्दीप्रविशनमष्टा
 दशो १८ मयूखः ॥ १८ ॥ २९९ ॥

प्रायोब्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

नर समुद्र तरि नृप कठिय, अलप सत्य रहि संग ॥
 कोस तीन३ पहुँचत क्रमिय, तजि असु हंज तुरंग ॥ १ ॥
 असि तुपकन बपु भिन्न अति, बलि इकश्चरन विहीन ॥
 नृप त्रय३ कोस निबाहयो, कठिन हंज हय कीन ॥ २ ॥
 भूपहु अंग बिराल्य करि, सहिय अग्नि उपचार ॥
 सस पलभोजी रति रहि, विगचिय प्रात बिहार ॥ ३ ॥
 गिरिन संधि अंतर कियउ, पूरव ओर प्रपान ॥
 ठंबिय इंद्रगढ नगर छिग, चित्त निडर चहुवान ॥ ४ ॥
 इंद्रगढाधिप देव प्रति, कहि पठई नरनाह ॥

बाण भवानीसिंह का, कछवाहा अमानसिंह, भगवत्सिंह, अर्जुनसिंह का
 भारनेवाले राठोड़ अमरासिंह के तीन पुत्रों का, पँवार उदयसिंह और याद
 व व्याघ्रसिंह को भारने वाले आठ जगराम का, तथा बुन्दीश के मारे हुए कछ
 वाहे विक्रमसिंह, भैरवसिंह, चहुवाण धानसिंह और सुरताणसिंह आदि मा
 त सौ वीरों का मरना, और बारह सौ सुभटों का घायल होना, हंज नाम
 घोड़े का पैर कटे पीछे रावराजा (उम्मेदसिंह) का निकलना, कछवाहे की सेन
 का विजयी होकर बुन्दी में प्रदेश करने का अठारहवां मयूख समाप्त हुआ और
 आदि से दोसौ नव्यानवै २६६ मयूख हुए ॥

१ हंज नामक घोड़े ने प्राण छोड़ा ॥ १ ॥ २ पुनि ॥ २ ॥ ३ लाल निकाल कर
 अग्नि से सेकने (तपाने) का इलाज किया १ रात्रि में खरगोस का मांस खा
 कर रहा ॥ ३ ॥ ४ पर्वतों की संधि में ७ ठहरा ॥ ४ ॥ ८ उम्मेदसिंह ने ॥ ५ ॥

हय हमरो गतप्रान हुव, हो जिहिँ लरन उछाह ॥ ५ ॥
 ततो पठवहु देव तुम, खासा हय इक खुलि ॥
 अवर न चाहै हमहु *इन, भुजन कुमाई भुलि ॥ ६ ॥
 सुनि यह दव सिटाय सठ, त्रिसिन चुरायउ चेत ॥
 यह न जानी हम अनुग, तउ इक अश्वहि लेत ॥ ७ ॥
 हम अधर्म अहरि अधम, जैपुर गिनि बरजोर ॥
 पछी यों कहि सुकलिय, मूढ तजहु भुव मोर ॥ ८ ॥
 जिम तुम खोई निज पहुमि, विनु मति दर्प बढाय ॥
 तिम हमरी खोवन तकत, अश्व लेन पैँ आप ॥ ९ ॥
 निहु येन सुनि सहि नृपनि, लिखी अवन कछु लैहि ॥
 जो तुम यह खायो जहर, दैहैं लहर कबैहि ॥ १० ॥
 हम कहाय नृ बर कगिय, कोटा सीम प्रपान ॥
 चन्नलि लधि मुकाम किय, ग्राम रानपुर थान ॥ ११ ॥

॥ पञ्चटिका ॥

रन सिनु तगि चहुप्रानराय, कछुमाह भटन असिबर चखाय ॥
 गिरि पारिपात्र दोनिन बिहारि, उपनँहि घाय बपु सल्लय टारि ॥ १२ ॥
 हम होय इदगढ पुर ममीप, देवहिँ नटाय नृप बमदीप ॥
 उल्लधि सरित चम्मलि अमान, कोटांग रानपुर दिय मिलान ॥ १३ ॥
 अरु सुभट अल्प नृप सग आय, रन दुसह कोन असु तजि रहाय ॥
 अब मिलिय आनि सब अनुग अत्य, अवरहु अनेक सुनि रन समत्य ॥ १४ ॥
 उत कुम्म भटन लहि विजय जग, बुदिय प्रवेस किय अति उमग ॥

* राजा तथा तुम्हार पति है तोभी ॥ ६ ॥ † हर घर ‡ सेवक हैं तोभी ॥ ७ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥
 ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥
 (परिक्रमा) की जाये हमको पारिपात्र कहते हैं [इसी कारण चित्रकूट को पारिपात्र कहते हैं] ३ पर्वणों की सधि जिनको राजपूताने में खाद्रेष मोहल कहते हैं ४ पाटा बाधने आदि बाधा का इलाज ॥ १२ ॥ ५ कोटा के पर्वत में ॥ १३ ॥ ६ प्राण छोड़ने को कौन रहे ७ सेवक ८ युद्ध में समर्थ सैनिक ॥ १४ ॥

जिन रचिय *अग्रध थिर नृपहिं थपि, आयत्त बिरचितिन इमन अपि
कोटेस इहिं तु पुनि यह कहाय, तुम चतुर नीति अद्वरि ॥हिताय ॥
बुधसिंह मनु हित करुन लौहिं, सत दोष २०० दम्म हम नित्य
देहिं ॥ १६ ॥

मध्यस्थ होय तुम साम लाय, तिहिं देहु कुम्भ नृप पय लगाय ॥
कोटेस लुब्ध सुनि पाप प्रीत, मंजार पाय पय होत सीत ॥ १७ ॥
स्वीकारि यहैहु जड़ छन्न साम, दिनप्रतिलिय मासन दिसत २०० दाम
नृप अतिक पठये तेहु नाहिं, उलटी खिल बचन बुद्धि आईहिं ॥ १८ ॥
कोटेस बहुरि किय यह कुकर्म, इम कोन कोन अखहिं अधर्म ॥
इत सुनिय रान जगतेस बत्त, बुंदीस सूर रन रचिय रत्त ॥ १९ ॥
दुव २ बेर कूरमन फोज फारि, बरछो गति प्रविश्यो बहु विदारि ॥
करवाँल झारि हद रारि कोन, बलि कठिय जानि हय पय बिहीन २०
अब ग्राम रानपुर धाम आईहिं, छत छाम तदपि नति नाम नाहिं ॥
हय हंज जो किं पय भिन्न ठहै न, छो रें न हनत तो सत्रु सैन ॥ २१ ॥
मन मित्र बाँजि बिनु अब नरेस, बाँछत कछु दुर्मन हय बिसेस ॥
यह सुनत रान हिय मोद आय, भूपहिं सिराहिं बीरत्व भाय ॥ २२ ॥
हय खास नाम जिहिं होनहार, साखति चार्माकर सजि सुठार ॥
सिरुपाव उच्च इक १ रुचिर रंग, तरवारि खास इक १ तास संग ॥ २३ ॥
उम्मेद नृपति हित दिय पठाय, स्वीकारिय नृपहु गिनि हित सुनाय
इम होत सरदारितु मज्झ आय, दकै गगन उभय २ निर्मल दिलाय ॥ २४ ॥

* आघ, उन उम्मेदसिंह के आघ करनेवालों को † अपने आधीन किये ‡
दंड देकर ॥ १५ ॥ § से ॥ हितार्थ १ बुधसिंह के पुत्र के अर्थ २ करुणा
करके ३ रुपये ॥ १६ ॥ ४ ईश्वरीसिंह के पैरों लगादो ५ लोभी ६ चिल्ली को
७ दूध ठंडा होता मिला ॥ १७ ॥ ८ मंजूर करके उम्मेदसिंह के ९ पास १०
ठगने की बुद्धि है ॥ १८ ॥ १९ ॥ ११ तरवार चलाकर १२ घोड़े को बिना पैर
जानकर ॥ २० ॥ १३ है १४ घावों से दुर्बल है तोभी १५ नाम मात्र भी नअना
नहीं है १६ याद ॥ २१ ॥ १७ घोड़े बिना ॥ २२ ॥ १८ जिसका नाम आगे होने
वाला है १९ सुवर्ण की ॥ २३ ॥ २० स्वीकार किये २१ जल और आकाश ॥ २४ ॥

॥ षट्पात् ॥

गराजि मेघ उग्घरिय भरिय नैत्र नीरै निवानन ॥
 पितरन कैव्य पँजोय विरचि नृप निर्गम विधानन ॥
 पुनि कुलदेविय पूजि सद्धि कतिथै व्रत सजम ॥
 अथ आगम हेमंत किन्न अगहन मृगया क्रम ॥
 आखेट थानकोटेसके कति मृगराज विहीन किय ॥
 सद्धि परस्मिन् आयुध सकल रानपुर सु इम नृप रहिय ॥ २५ ॥

॥ दोहा ॥

ईडगिया उपटक इत, रामसिंह रठोर ॥
 हो जो तव पुर वनहडा, सुनि नृप विक्रम सोर ॥ २६ ॥
 ताके ही इक १ पुत्रिका, बखतकुमरि अभिधान ॥
 ताको रचि सगपन त्वरित, सभर हितुँ सँयान ॥ २७ ॥
 पठयो डोला रानपुर, सचिव सुभट दै सग ॥
 उपर्यम करन उमेदसों, जानि वीर वर जग ॥ २८ ॥
 सचिव भटन तव प्रीति सह, अरहि रानपुर आय ॥
 कन्या वह बुदीस कैहँ, प्रथितै दई परिनाय ॥ २९ ॥
 कन्याके काकाहुकी, वि२ सुता रूप बिसाल ॥
 रान १ रु माधवर एहु दुवर, व्याहे पूरब काल ॥ ३० ॥
 सगे उचित यातै समुक्ति, परनि नृपहु मुद पात ॥
 सक गुन नभधृति १८० ३लगन सुम, दोजि२सँहा अँवदात ॥ ३१ ॥
 रग्यो नहिँ शृंगार रस, अवहि वीर अनुसारि ॥
 वहुरि वढ्यो मन बप्पकी, धरनी पर धक धारि ॥ ३२ ॥

१ नवीन २ पानी ३ आख का अक्ष ४ पहुँचा कर ५ वेद विधि ६ कार्तिक मास में,
 इन्द्रियों के रोकने का व्रत ७ शिकार ८ शिकार के स्थान ९ सिंहा के चिन्ता ॥ २५ ॥
 ॥ २६ ॥ १० नाम ११ चट्टयाण से १२ बुद्धिमान् ॥ २० ॥ १३ विवाह ॥ २० ॥
 १४ शीघ्र ही १५ प्रसिद्ध ॥ २९ ॥ ३० ॥ १६ मृगासिर १७ सुदि ॥ ११ ॥ ३२ ॥

दुलहनि कोटा मुकलिय, जत्थ अनुज^१तिय^२जामि^३ ॥

अप्पन मन रन उम्महयो, इच्छत जय आगामि ॥ ३३ ॥

॥ पट्पात ॥

बुंदियपुर बुधसिंह सुतहिं सुनि बहुरि चलावत ॥

कोटापति लागि लोभ कहिय इम भुम्मि न आवत ॥

हम उद्यम यह करत हेत मरहठन सम्मलि ॥

बिनु बल जैहो लाल निहि लैहो यह चम्मलि ॥

दे इष्ट सौह इम अक्खि हुत बुंदीसहिं रक्खयो बराजि ॥

सतदोय^{२००}दम्म कछवाह सैन भेट होत यह लोभ भजि ॥ ३४ ॥

॥ दोहा ॥

बंधु बर्ग उमराव निज, अजबसिंह अभिधान ॥

कोइलपुर पति भोजि करि, अटकयो नृप प्रस्थान ॥ ३५ ॥

॥ पट्पात ॥

माधानी अजबेस आय भूपहिं इम अक्खिय ॥

गिनत अप्प रन सुगम चंड अस्सि बर नहिं चक्खिय ॥

अप्पन परिकर अलप दुसह जैपुर वह दाहत ॥

सिंहन आगसं सैसहिं चिन्ह अनुचित असु चाहत ॥

यातैं न तुमहिं जावन उचित कोटापति यह हित धरत ॥

दढ मंत्र बुल्लि दक्खिन दलन जतन लैन बुंदिय करत ॥ ३६ ॥

सुनत एह गिनि सत्य भूप कोटेस भरोसैं ॥

जान्यौं काका करत महत उद्यम यह मोसैं ॥

तो इनकी अब देखि बहुरि बनिहै सु बिचारहिं ॥

१ जहां बहिन थी २ आगे आनेवाली जय की इच्छा करता हुआ ॥ ३३ ॥

हे लाल ४ भगकर यह चामल नदी कठिनाई से लगे ५ रुपये ६ से ॥ ३४ ॥

उम्मेदसिंह के गमन को रोका ॥ ३५ ॥ ८ भयंकर खड्ग ९ परगह १० सिंहों के

अपराध करके ११ खरगोस १२ जाना चाहै सो अनुचित है १३ सेनाओं के

॥ ३६ ॥ १४ मुझ से बड़ा उद्यम

बभेदसिद्धका चारण हो दान दना] मसमराधि एकोनविंशमयुग्म (१४४६)

सुमिरी यह न सपान कुहकं निज काम निकाहिं ॥
नृप रद्विष होत उद्योग लखि मास सत्तविनु भुव जतन ॥
मृगया प्रसक्त कोटा मुलक गजत सिंह बराह गन ॥३७ ॥

॥ दोहा ॥

मधुकरदुर्गा मुकाम किय, ग्रीखम अत नरेस ॥
महँडू चारन दान तँदँ, बरनी कित्ति बिसेम ॥ ३८ ॥
अमरपुरगेके जगको, काव्य जयामति ठानि ॥
गीत छद मरु वानि गत, नृपहिं सुनायो आनि ॥ ३९ ॥
सुनत भूप बखसीस किय, रीम्कि तरल हयराय ॥
खास जरिय पोसाक पुनि, कुँडल कटर्क सुभाय ॥ ४० ॥
सनमान्यो कविराव कहिं, डेरा तास पधारि ॥
भयो बहुरि इत्थिय हुकम, नूतन काव्य निहारि ॥ ४१ ॥
सो गज बुदिय तखत जब, अप्प बिराजे आनि ॥
तब दिन्नो यह अत्य दम, भावी लिखिय बखानि ॥ ४२ ॥

॥ पट्टात् ॥

मक वेद ख वसु सोम १८०४ मास सावन तदनंतर ॥
मंसरोरगढ सीम रमिग आखेट भूप बर ॥
पुनि भदव सित पच्छ आय बेघम एकादसि ११ ॥
भयो जानि दुरभिच्छ बिपति चिंतत दिन दुवबसि ॥
दरियाव नाम गजराज निज उदयनैर बिक्रय करन ॥
मुक्कल्पो पुरोहित रवीय तब दयाराम द्विज धर्मधन ॥ ४३ ॥

॥ दोहा ॥

जाय पुरोहित उदयपुर, गज बिक्रय तँदँ ठानि ॥

१ उली (उग) रशिकार म आसक्त ॥ ३७ ॥ २ मधुकर गढ ४ चारणों की एक शाखा का नाम है ५ बस चारण का नाम है ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ६ अपल घाटा ७ मोती ८ फड़े अच्छी रीति से दिये ॥ ४० ॥ ९ नवीन ॥ ४१ ॥ १० यहाँ ॥ ४२ ॥ ११ जिस पीछे १२ बेधने को १३ धर्म हा है धन जिसक ॥ ४३ ॥

दम्न सहँस दुव२००० मुल्लके, पठये समय प्रमानि ॥ ४४ ॥
 जिलु भुव सोलह १६ बरसतैं, मुकतैं आपति भार ॥
 अब अलुहि कति दिन टिकहिँ, दम्न तैं दोय हजार २००० ॥
 ॥ पदपात् ॥

सावन सूको गयउ बेर दुवअलप लुट्टि घन ॥
 ज्यौही भद्व जात पोर हाकार उट्टि घन ॥
 हड्डातिय मेवार तंग आदन दुव देसन ॥
 वनिष आनि इहिँ बेर निट्टि निरवाह नरेसन ॥
 नृप तबहि चिति आपति धरम र्वाय भटन गजुन राजय ॥
 मन जोर पैठि बुंदिय मुलक गैनोलीग लुट्टि लिय ॥ ४५ ॥
 ॥ दोहा ॥

गैनोली बैसु लुट्टि इम, अति विपत्ति चहुवान ॥
 तदनु दुग्ग रनथंभकी, सीमा करिय प्रयान ॥ ४७ ॥
 नगर नाम खंडारि डिग, कछुदिन विगचि मुकाम ॥
 कोटापतिको लोभ सुनि, ठग मन्वों अघ ठाम ॥ ४८ ॥
 उत सु पुरोहित उदयपुर, दयाराम अभिधान ॥
 पुँवहि रान अधीनहो, लैनिदेस चहुवान ॥ ४९ ॥
 आत जात नृप डिग रहयो, रवासि धरम भनि भाव ॥
 तातैं बेचन संग तस, दयो हुतो दरियाव ॥ ५० ॥

इतिथी वराभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणो सप्तम ७ रासौ बु-
 न्दीन्द्रहयमरणाष्टदुर्गणाविचरणाकृदिन्द्रगढाऽऽगमनाऽवयाचनदेव-

॥ ४४ ॥ १ अनावृष्टि (दुर्मिच्छ) में २ ते (ये) ॥ ४५ ॥ ३ अल विना ॥ ४६ ॥ ४ घन
 ५ जिस पीछे ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ६ पहिले से ही ७ उम्मेदसिंह की आज्ञा लेकर
 ॥ ४९ ॥ ८ दरियाव नामक हाथी ॥ ५० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में बुन्दी के पति का घोड़ा
 मरने से कोमल चरणों से चलकर इन्द्र गढ़ आना? घोड़ा मांगना और देवसिंह

सिंहनेतिकथनहृद्धेन्द्रराणापुरनिवसनतदनुकूलबुन्दीजनकूर्मकर्तक
 नियमनबुन्दीन्द्रनिमित्तमुद्राशतहय२००महारावपापणारावराजाऽर्थ-
 राणाहय १ पट २ खड्ग ३ प्रेषणाघनाऽत्यय १ हेमतऽर्त्वागमनभूसु-
 त्तीयो ३ द्वहनकोटेशन्तोष्यमवारसम्भरमधुकरदुर्गकालक्षेपणास
 म्प्रदा १ कविदानचारणादानप्रभुमैसरोडदुर्गप्रान्ताऽऽखेटकीहनतेघद्व
 मपुराऽऽगमनदुर्भिक्षपतनविक्रयाऽर्थदरियावगजोदयपुरप्रेषणाविपद्व-
 र्मधरधरेशगैणोलीपुरलुण्टनराणास्तम्भदुर्गप्रान्तखण्डारिपुरकिञ्चि
 त्रिवसनकोटेशकोटिकपविवोधनमेकोनविंशोमयूख ॥ १९ ॥ ३००॥

॥ प्रापोन्नजदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ पट्टपात् ॥

दयाराम द्विज सहित राने डकदिन रहस्य किय ॥

साहिपुर पं सीमोद बीर उम्मेदहू बुल्लिय ॥

स्वीपै सुमट पुनि च्यारि४ प्रथम भारत१ सेनापति ॥

दुरग अग देवलिप दठन जिहि किय सालम हंति ॥

देवगढ अधिप जसवत२ पुनि सगाउत चौडा जनन ॥

का नटना २ हाडा के राजा का राणपुर में निवास करना ३ उम्मेदासिंह के
 अनुकूल बुन्दी के लोगों को कछवाहों का कैद करना ४ उम्मेदासिंह के कारण
 दोसौ रुपये रोज कोटा के महाराय का पाना ५ रावराजा के अर्ध महाराजा
 का घोडा, बस्त्र और खड्ग भेजना ६ मेघों के मिटे पीछे हेमनक्तु के
 आगमन म मृपति का तीसरा विवाह करना ७ कोटेश के उद्यम
 के समय में बहुयाण (उम्मेदासिंह का मधुगढ म समय बिताना ८
 दान नामक वारण को दान दकर राजा का मैसरोड गढ के प्रान्त म शि-
 कार खेलकर यहा से घेघमपुर आना ९ दुर्भिक्ष पडने से दरियाय नामी हाथी
 को बेचने के अर्थ उदयपुर भेजना १० आपेधर्म को धारण करके मृपति का गै-
 णोलीपुर को लटना ११ रणस्थल गढ के प्रान्त म खण्डारपुर में कुछ ठहरना १२
 कोटा के पति का ठगपन जनाने का बलीसया १३ मयूख समाप्त हुआ और
 आदि से तीनसौ मयूख ३०० हुए ॥

महाराणा जगत्सिंह ने २ एकान्त सलाह को ३ पति ४ उम्मेदासिंह को भी
 बुलाया ५ अपने उमराव ६ नाश ७ यश म

पतिदेखवाड़ झल्ला *प्रथित राघवदेव३ निसंक रन ॥ १ ॥
॥ दोहा ॥

रायसिंह४ झल्ला बहुरि, नगर सादड़ी नाह ॥
इन जुन रान रहरय किय, चित जैपुर जय चाह ॥ २ ॥
॥ पट्टपात् ॥

कहिन रान कोटेस किंतव दुवरेर बदलि गय ॥
अब पुनि इकत होन चवहि पठवाय दूत चय ॥
बंचकको बिसवास करन काको चित चाहत ॥
दयाराम सुनि करिय अरज करजोरि उमाहत ॥
प्रतिअब्द आत श्रियद्वार वह अन्नकूट सदन समय ॥
तब चलन तथ अप्पन उचित माधव सहित निहारि नग ३
हरि प्रतिमाके अगग तबहिं कोटेसहिं अकखहिं ॥
तुम बंचक चलबुद्धि मित्र भावहि दन रक्खहिं ॥
जो अब इकत होत ततो हरि इष्ट सर्पथ करि ॥
सदा साम लिखि देहु अब न डरपहु कूरम अरि ॥
छंद इम लिखाय कोटेसको पुनि प्रसन्न मरहठु करि ॥
खंडुव मलार हुलकर तनय बुल्लहु समर सहाय वरि ॥४॥

॥ दोहा ॥

दयाराम इम अरज करि, थप्पो यह दठ मंत्र ॥
सुपहु रान सुनि र्वीकरिय, सुभटन सहित रवतंत्र ॥ ५ ॥

॥ सोरठा ॥

तदनंतर नृप राँन, देवकरन काँहँ दूर करि ॥
पंचोली सु प्रधान, नाम भवानीदास किय ॥ ६ ॥

*प्रसिद्ध ॥ १ ॥ २ ॥ १ ठग २ कहता है ३ दूतों का संसूह भोजकर ४ उस ठग का ५ प्रतिवर्ष ६ माधवसिंह सहित ॥ ३ ॥ ७ श्रुति के आगे = सौजन (शपथ) ८ पत्र १० अपना करके ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥

॥ षट्पात् ॥

इत जैपुर पहिलैहि मरिग खत्रिय राजामल ॥

*कोविद केसवदास हुतो सुत तास मत्र बल ॥

तब नृप ईश्वरिसिंह किन्न वह सचिव सिरोमनि ॥

पिसुन नरन तिहिं पिछि भूप प्रति इम चुगली भनि ॥

हेनृप अमात्य केसव कितव मन्त्रें तुमहिं न मत्र मद ॥

याके उमेद माधव अरथ छन्नै आवत जात छंद ॥ ७ ॥

सुनि यह ईश्वरिसिंह मूढ तत्व न पहिचानिय ॥

काकन कथित विधाप इस मारन मत मानिय ॥

खत भूटे लिखि खलन नृपहिं दिन इक बताये ॥

मूरख सच्चे मन्नि गढे ओगुन बहु गाये ॥

केसव सु मंत्रि बुलवायकें कुनृप तास अपहास करि ॥

अकली कुमलि ए दल लखहु सुनि केसव लिय नैन भरि ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

अकली केसव अबहि नृप, निश्चय करहु निर्दान ॥

जो ए दल मेरे लिखे, लेहु ततो मम प्रान ॥ ९ ॥

कूरम तब निश्चय करिय, निकसे पत्र असत्य ॥

बिनु आगस जो मारतो, होतो ससचिव हत्य ॥ १० ॥

तदपि कुंम्म लिय सचिवपन, केसव करिय वकील ॥

पठयो दक्खिन नन्ह पैहं, सिखई मन्नि कुसीलै ॥ ११ ॥

नैट्टानी उपटक इक, हरगोविंद स नाम ॥

किपउ सुमाहब बनिक वह, कूरम नृप हित काम ॥ १२ ॥

* चतुर १ उम्मेदसिंह और माधवसिंह क छिये २ पत्र ॥ ७ ॥ ३ कहना करके ४ दुष्टों ने ५ ये पत्र ॥ ८ ॥ ६ इनका कारण ॥ ९ ॥ ७ बिना अपराध ८ सचिव सहित मारा जाता ॥ १० ॥ ९ तो भी ईश्वरीसिंह ने १० सिखाई हुई बात मानकर ११ खोटे स्पृहावाले ने ॥ ११ ॥ १२ नाटकीय उपटक (पदवी) पाखा वैरय ॥ १२ ॥

॥ षट्पात् ॥

पुत्ती इक^१ तिहिं गेह रूप जुब्बन गुन मँती ॥

बत्ती बय छबि तास पास कूरम नृप पत्ती ॥

कँती सम सुनि कढिग छेकि पंच^५ ढि सर छत्ती ॥

दुत्ती दासिय भोजि प्रेमपासिय गर घत्ती ॥

लंपटहिं काम जुत्ती लगत रत उँती चिर चंड रँय ॥

सुत्ती समीप चाही सुँनक कुत्ती जिम कँती समय ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

मगन पुब्ब अँनुरागमैं, लगन मिलन द्रुत लगि ॥

कुम्म पुरंदर^{१५}कै किरी, अंदर बम्महँ अगि^{१७} ॥ १४ ॥

दूतीजन पठवाय द्रुत, सौम उपाय प्रसारि ॥

आनी नृप ढिग अंगना, बानी बिनय बिथारि ॥ १५ ॥

राजकाज भुल्लयो रसिक, छई मदन सिर छाँह ॥

१ उस हरगोविंद के घर में उसकी पुत्री रूप, यौवन और गुणों में २ मस्त थी उस की अवस्था और शोभा की ३ वार्ता कछवाहों के राजा (ईश्वरीसिंह) के पास ४ प्राप्त हुई (पूरी) ५ वह वार्ता सुनते ही तरवार के समान कामदेव के पांचों ६ बाण [यथा “द्रवणं शोषणं बाणं तापनं मोहनाभिधम्॥ उन्मादनं च कामस्य बाणाः पंच प्रकीर्तिताः”] छाती को छेदकर निकल गये ७ दूती दासी का भेजकर प्रेम की पासि गले में द्याली इस लंपट के ८ कामदेव की जूती लगते ही ९ रत क्रीड़ा में उस चिर धेग (बहुत समय तक रखलित नहीं होने वाला) और १० भयंकर वेगवाले ने जैसे ११ कुत्ता, कुत्ती को १२ कार्तिक मास के समय में चाहै तैसे उस हरगोविंद की पुत्री को समीप सुलानी चाही ॥ १३ ॥ १४ पूर्वानुराग (मिलने से पहिले की प्रीति) में मस्त होकर १५ कछवाहों के इन्द्र के १६ गिरी १७ जैसे अहल्या के कारण इन्द्र और ब्राह्मण (गौतम ऋषि) में गिरी थी तैसे अथवा अहल्या के कारण इन्द्र के और सरस्वती के कारण ब्रह्मा के आप की अग्नि पड़ी थी बोही अग्नि ईश्वरीसिंह के पड़ी अर्थात् उक्त दोनों स्त्रियों से व्यभिचार करने के कारण दोनों देवों को आप से खिन्न होना पड़ा था तैसे ही ईश्वरीसिंह को भी इसी कारण प्राण देना पड़ा १८ अग्नि ॥ १४ ॥ १९ मिलने का २० उस स्त्री को २१ विशेष नम्रता की बाणी फैलाकर ॥ १५ ॥

कूरम डारी कठ अब, बनिक सुताके बाँह ॥ १६ ॥
 रंति जु तिय नृपदिग रहत, प्रात जात निज गेह ॥
 दिन बिच तिहि देखैं विनाँ, दुमन रहैं थकि देह ॥ १७ ॥
 प्यारीकों दिन बिच प्रकट, जो बुल्लें निज पास ॥
 जनक तास तो जानिकैं, बिरचै राज्य विनास ॥ १८ ॥
 बिनु देखैं निमिख न बनें, देखन दुल्लभ दीह ॥
 पातैं विरचि उपाय इक, लोपी लज्जा लीह ॥ १९ ॥
 जैपुर पिक्खन षंपाज करि, प्यारा पिक्खन काज ॥
 बनवाई महलन बुरज तुगनकी सिरताज ॥ २० ॥
 जातैं सब जैपुर नगर, दिछि परत अध आय ॥
 तक्कें प्यारिय जाय तहँ, छन्न मदन इम छाया ॥ २१ ॥

॥ षट्पात ॥

सक कृत नभ वसु सोम १८०४ बिसद बाहुल पड़िवा १ पर ॥
 दरसन दित कोटेस गयउ श्रियंद्वार उमंगि अर ॥
 करन रान अनुकूल पैत लिखि भेजि उदैपुर ॥
 बुल्लिय माधव सहित धरा सगैर थमन धुर ॥
 सुनि पतैं रान माधव सहित मुदित होय आयहु मिलन ॥
 गुन ३ कोस एह सम्मुह गयउ मिलिय प्रीति अनुकूल मन २२

॥ दोहा ॥

तीन ३हि नृप नयैरीति तकि, रचि मिलाप पटु प्यार ॥
 हरिमदिर एकतैं हुव, करन मंत्र श्रीद्वार ॥ २३ ॥
 कहिय रान कोटेस प्रति, बचन तुमारी मोघें ॥

॥ १६ ॥ १ राशि म वह स्त्री २ उदास ॥ १७ ॥ ३ वस स्त्री का पिता ॥ १८ ॥ ४
 दिन में ५ सीमा ॥ १९ ॥ ५ भिम ७ ऊँचापन को ॥ २० ॥ ८ मीचे ॥ २१ ॥
 कार्तिक सुदि एकम १० नाथद्वार ११ शीघ्र १२ पञ्च १३ युद्ध करके १४ पञ्च १५ २२ ॥
 १५ नीति की रीति को देखकर १६ इकठ्ठे ॥ २३ ॥ १७ मूडा

उभय२ वकीलन भेजि हम, आये निज निज दंग ॥ ३५ ॥

॥ पट्टपात ॥

रान वकील खुमान १ प्रेम १ माधव वकील दुव २ ॥

नगर कालपी जाय सेन दक्खिन सम्मलि हुव ॥

दुवहि लक्ख २०००००० दै दम्म तुष्ट हुलकर मत्तार किय ॥

जैपुर समर सहाय तनय खहुव तस मंगिय ॥

सुनि यह मत्तार सुत सज्ज करि रन सहाय लागि मुक्कलन

रागाजि रामचद्र २ सु तवहि अक्खिय उचित सहाय नैन ३६

रामचन्द्र हम कहिय धरहु श्रुति कथ मत्तार धुव ॥

अर्पण पति श्रीमत अगग जयसिंह मित्र हुव ॥

जैपुर सन हित करन वचन तिन दिय कूरम कर ॥

वह तुम मेटत अज्ज धनिय कूंत भुल्लि लोभ धर ॥

ईस्वरीसिंह सम्मलि सबहि दै पति किंकर तुम रु हम ॥

समुक्काय रान माधव सबन दब्बहु अरिन प्रचड दम ॥ ३७ ॥

धेकि हुलकर यह सुनत मुष्टि असिवर कर मडिग ॥

अधर कप अकुंरिग तानि मुच्छन घन तडिग ॥

कहिय अगग जयसिंह लिखित हत्यनै करि अप्पिय ॥

रानाउति भवै पुत थिरसु जैपुर पति अप्पिय ॥

जयसिंह वचन यह रक्खि हम माधव सिर छत्रहिं धरत ॥

लगगत यहै न अच्छी तुमहिं कुटिल लुब्धिं अनुचित करत ३८

राजामल कर कवले बहुत चक्खिय तुम स्वाननै ॥

जातै अटकत जंग विरचि नय हीन बिधानन ॥

१ अपने अपने नगरों में ॥ ३५ ॥ २ रुपय देकर ३ प्रसन्न ४ सहाय देना
व्यर्थ नहीं है ॥ ३६ ॥ ५ कहना सुनो ६ अपना ७ स्वामी के कार्य को प्रयत्न
कर ८ भयकर दण्ड से ॥ ३७ ॥ ९ कोपित होकर १० ढोठ में कप होनेलगा ११ गर्ज
ना की १२ अपने हाथों का किया लेख १३ राखावति से खपजा हुआ पुत्र १४ लो
भी ॥ ३८ ॥ १५ आस (निवाला) १६ कुत्तों ने १७ नहीं करने योग्य कार्य करके

तुम जावहु तिन संग हम सु माधव सहाय हुव ॥
 कहि इम अक्खिय कुच्च धमकि आनक निसान धुव ॥
 दल सुभट पंचप मरहठ मिलि दुहुँ२ दिस रिस मोचन करिय
 परगनाँ पंचप माधव अरथ दैन अक्खि हित अनुसरिय ॥३६॥
 रामचंद्र प्रति कहिय बहुरि हुलकर मल्लारहु ॥
 बंठि दिवावत अवनि कछुक माधव हितकारहु ॥
 तिम बुंदिय रहि है न लगि संभर हित लेंहैं ॥
 अब बरजहु जो एस देस तिलमत्त न देंहैं ॥
 यह मन्नि सबन पठये तबहि निज वकील जैपुर सँजव ॥
 साँहस मिटाय सामहिँ करन समुझावन कूरम कितव४०॥
 ॥ दोहा ॥

रामराय१ मुनसी निज सु, रामचंद्र पठवाय ॥
 निम्मराज२कटकया यह सु, पठयो हुलकर राय ॥ ४१ ॥
 तिन जाय रु कूरम नृपहिँ, बुंदिय छोरन अक्खि ॥
 पंचप परगनाँ अनुज हित, बंठिदैन रस रक्खि ॥ ४२ ॥
 इत हुलकर अप्पन तैनय, खंडू नामक बीर ॥
 पठयो माधव राँन प्रति, हित सहाय हमगीर ॥ ४३ ॥
 ॥ षट्पात् ॥

सजि अनीकै दरकुंच चलिय खंडुव मलार सुँव ॥
 बजि आनक बंबीलै भचकि बिखरिय दरार भुव ॥
 काकोदर फन फटिय कोल दंतुलि बगरक्खिय ॥
 मुररक्खिय वपु कमठ चोट रीठैक चररक्खिय ॥

१ नगार बजाकर २ दोनों ओर का क्रोध छुड़ाया ॥ ३९ ॥ ३ भूमि ४ चहु-
 वाण (उम्मेदसिंह) के ५ तिल मात्र ६ शीघ्र ७ हठ छुड़ाकर मेल करने के
 लिये ८ ईश्वरीसिंह टंग को समझाने को ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ९ अपने पुत्र को
 १० माधवसिंह और राणा जगत्सिंह के पास ॥ ४३ ॥ ११ सेना १२ मलार का पुत्र
 १३ बंबी (नगार) १४ शेषनाग के १५ पीठ

गढगढन बत्त फुट्टिय सहज बढि विचार भूपन बिदित ॥

मल्लार सुवन जावत लरन माधव रान सहाय दित ॥ ४४ ॥

डम खहुव दरकुच्च आय कोटा मिलान दिय ॥

महाराव लखि समय जाय सम्मुह बधाय लिय ॥

चारन भूपतिराम मुख्य निज सचिव सग करि ॥

दिय अनीक तिन सत्य धीर सुभटन ढरोल धरि ॥

पुनि मिलिय आय नृप रान पहुँ बुदीसहु तँहुँ बुझि लिय ॥

सजि सेन लरन माधव सहित तजि मेवार प्रयान किय ४५

इति श्री वशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणो सप्तम ७ राशौ बुन्दी
अपुरोहितदयारामसहितराणाचतुर्म् ४ त्रिमन्त्रासचिवदेवकर्ण १
भवानीदास २ पण्वर्त्तनजयपुरसचिवमरणापैशून्यप्रेरितप्रभुप्रज्ञाके
शवदासगौणाऽधिकारप्रापणनट्टाग्युपट्टिवशिग्धरगोविन्दमुख्यस
चिचीभवनतत्पुत्रीश्वरीसिंहमतङ्गमियुनपरस्त्रीपुरुषसङ्गदोषगर्त्तपत
नधर्मनिगडत्रोटनराणा १ माधवसिंह २ कोटेश ३ श्रीद्वारसमागमननारा
यणनिलयरापथरासनमहाराष्ट्रसाधनसाधकजगत्सिंह १ माधवसिंहा
२ऽधिकारिगमनतन्महाराष्ट्रसम्मिलनराणाञ्जि १ रामचन्द्र २ मल्लार
॥४४॥ १ मुकाम २ सेना ३ युद्धा लिय ॥ ४५ ॥

श्रीवशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में, बुदी के राजा के
पुरोहित दयाराम सहित महाराणा का चार मंत्रियों से सलाह करना और
देवकरण को दूर करके भवानीदास को प्रधान बनाया १ जयपुर के सचिव
(राजामल) का मरना और चुगली करन वाला की प्रेरणा की वृद्धि से स्थानी
का केशवदास को छोटा अधिकार देना और नाटानी पदवी वाले बनिये
हरगोविन्द का सचिव होना २ वस हरगोविन्द की पुत्री और दाधी रूपी
श्वरीसिंह इन दोनों का, परस्त्री से पुरुष के और पर पुरुष से स्त्री के संग
के दोष से, धर्म रूपी जजीर को तोड़ कर स्वर्द्धे में गिरना ३ राणा जगत्सिंह,
कदयादा माधवसिंह और कोटा के पति का नाथद्वार में मिलना और ईश्वर
के मन्दिर में सौगन करना ४ मरहटा के साधन के अर्थ राणा जगत्सिंह और
माधवसिंह के अधिकारिया का जाना और उन का मरहटों से मिलना ५

३ वाक्यविसरीकरणापुनस्सम्मिलनपक्षद्वय २ दूतजयपुरप्रेषणाहुल्य-
करपुत्रखण्डूराणासहायगमनकोटासैन्यसहितबुन्दीन्द्रतरसम्मिलन
विंशो २० मयूखः ॥ २० ॥ ३०१॥

प्रायोन्नजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ पट्पात ॥

सक कृत नभ वसु सोम १८०४ मास फरगुन पख उज्जल ॥
नृप माधव उम्मेद सहित खंडुल चढि सव्वल ॥
रान कटक सब संग लहि रु दरकुच्च चलायउ ॥
अति गरुर जनु गरुर अहिन उप्पर उफनायउ ॥
उततैहु सुनत कछवाहको चहं कटक सम्मुह चलिय ॥
दिस दिसन बत्त फुटिय दुसह खंड चउहद १४ खल भलिय ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

नटानी उपपद बनिक, हरगोबिंद चैसूप ॥
चउ४ अवयव दल लौ चलयो, भिरन उदैपुर भूप ॥ २ ॥

॥ षट्पात ॥

दगि तोपन लागि लाय मचिग हुव २ दल मिलि संगर ॥
इत मेवारन मुकुट इत सु ठंकन हुंढाहर ॥
राजमहल पुर सीम भीम प्रतिभट भट भिंटन ॥
हय उठाय हरवल्ल वढिग हुव २ दिख अरि भिंटन ॥

राणजी, रामचन्द्र और मल्लार के वाक्यों का परस्पर अर्थ करना और पि
सामिल होकर मरहठों के दोनों पक्षों का अपने बकीलों को जयपुर भेजना
हुलकर के पुत्र खंडू का राणा की सहाय पर जाना और कोटा की ले
सहित बुन्दी के पति के सामिल होने का वीरबा २० मयूख ललाष्ट हु
और आदिसे तीनसौ एक ३०१ मयूख हु ॥
१ सेना सहित २ मानों गरुड ३ भयंकर सेना ॥ १ ॥ ४ सेनापति ५ हाथ
घोड़े, रथ, पैदल, इस चार अंगोंवाली सेना को लेकर चला ॥ २ ॥ ६ ३
७ भयंकर शत्रुओं के ८ वीर मिलने को

जिम विप्र निमंत्रन सुनि चलत इमहि अगिजे जाठर जगिय॥
 साकिनी प्रेत खेचर सकति लाभ असन आवन लगिय॥३॥
 खेत्रपाल खिलखिलिय मिलिय नारद महती रैव ॥
 काली गन किलकिलिय मिलिय बनि सदृस आनि भव॥
 पिलिय अग्र दुवर दलन मिलिय असि बाढ बाढ भरि ॥
 गिलिय गोद गिद्धनिन खिलिय खूबिय हिय अच्छरि ॥
 बढि अधिकार छादित बिंषत व्यवहित विरचि पतंग पट्ट ॥
 लुट्टिय डरोल हुलकर भटन कूरम कटक बहीर बहु ॥ ४ ॥
 हय उठाय हुलकर समेत दड्डनपति हंकि य ॥
 अतिबल तेग उताल भरत टोपन भननकिय ॥
 कतिक मारि भुव छाप डारि ढेहूर दुडारन ॥
 पोखे नृप पल्लवरेन बेहुल पल्ल मेदै बिथारन ॥
 असि बाढ चकिख डक बेर अरि लग्गे प्रतिभंग नीर लजि॥
 मिलि मिलि सिचान आवत मनहु पागवतें गन भरकि भजि ५
 जिम पारंद मिलि अगि पिक्खि निज कटक होत इम ॥
 सेनापति गज सहित बनिक मढयो अगव तिम ॥
 बुल्लपो रे निरलज्ज भजत मुच्छन भुँह धारत ॥
 बनिक बैन यह सुनत फिरे कूरम अति आरत ॥
 लिय सबन बिंढि पुनि बनिक गज पै न लगत अगै चरन
 जोगिंद चित्त सबिकल्पं जिम रहिय रुक्कि पिक्खत मरन ६।

१ जहराग्नि॥२ महती नामक शीशा का काव्व कर ३ इन कटे हुआ के तुल्य
 (परापर) ४ शिव ५ नरधारा के बाढ पर तरवारें ६ प्रफुल्लित हुए आकाश से स्वर्ग
 प्रभु को लुट्टादिया ॥ १० ॥ १० अस्थिपजर (हाडों के पिंजर) ११ माम आनेवालों का
 १२ बहुत १३ मास और चार्या कैलाकर १४ उलट मार्ग १५ कपोलों का समूह
 ॥ ४ ॥ १६ अग्नि से पारा लड़े जैसे १७ मुख पर १८ पीछित १९ परन्तु २० योग शा-
 स्त्र में दो प्रकार का समाधि लिखी है जिन में एक तो सबिकल्प समाधि है
 जिस में अद्वैत का भान होने पर भी वैत भासता है, जैसे बिस्वा विष्णु, शिव
 आदि देव का अधिष्ठान करके समाधि लगाई जाती है वस योगी का चित्त वस

तिमिर घोर तत मध्य पार अप्पन भट भान न ॥
 माधव के दलमाँहिं पिक्खि पचरंग निसानन ॥
 जैपुरके तिन्ह जानि रान दल भजिग भीत अति ॥
 कोटा दल पुनि भजिग सहित चारन सेनापति ॥
 तँहँ भयउ सौर कोटा भजिग सुनि पित्थल बुल्लयो सु चहि
 हम भुजन आहि कोटा अखिल तिन ठहँ भग्गो न कहि ७
 कोकिँलपुर पति कुमार भटन पित्थल चूडामनि ॥
 महाराव उमराव विदित बुल्लयो अंगद बनि ॥
 चारन मग्गनहार भज्यो कारज अचिज्ज नहिं ॥
 पै हम हड्डन पपन आर्डडुंगर अवलंबहिं ॥
 यह अक्खि सेन भज्जत मुरयो जिम अनिमिष उलटे उँदक
 भपटाय बाजि पँबि जिम परयो हुँढाहर सिर धारि धक ८।
 भजत सेन लखि सजव पिठि लग्गिय जैपुर दल ॥
 मुरि पित्थल तिम मध्य खग्ग भारिय रचि मंडल ॥
 जिम बिरेकँ औषधिय उदर इम मथिय सत्रु सब ॥
 कतिक कंपि लकतकँत कतिक छकत बकत बँब ॥
 सँव्थापसव्य करि श्राद्ध बिच जजमानहिं जिम करत द्विज ॥
 तिम किय अनेक परबस कुमार समर बिथारिय नाम निज ९
 जिम नर तिम सँलोठ गिरत हैवर तिम गैवर ॥

देव को छोड़ कर आगे नहीं बढ़ता, और दूसरी निर्विकल्प समाधि है जो चैत-
 न्य स्वरूप पर ब्रह्म में लगाई जाती है सोही मोक्ष का साधन है ॥ ६ ॥ १
 बिस्तार के २ माधवसिंह कछवाहे की सेना में ३ राणा की सेना ४ कोटा की
 सेना भगी ५ पृथ्वीसिंह ६ सब कोटा हमारे भुजों पर है ॥ ७ ॥ ७ कोयला
 पुर के पति का = आडाबळा नामक पर्वत लटकता है ९ मच्छी १० उलटे
 पानी में ११ वज्र के समान ॥ ८ ॥ १२ चक्र (गोलकुंडा) १३ दस्त लाने वाली
 दुपई पेट को मथै जैसे १४ धूजकर देखते हैं १५ अवाच्य शब्द (कलराने का
 शब्द) १६ सव्य और अपसव्य ॥ ९ ॥

जिम तोमर तिम ग्वग बिदासि भारत कुमार बर ॥
लटकत उरभि रकाच कसिक भटैकत प्रमत्त गति ॥
खटकत हड्डन बाढ मनहुँ चटकत गुलाब तौति ॥
घुम्मत अचेत घायन कतिक कतिक आय पायन परिय ॥
कछवाह कटक सब अजय सुवै गजवैमिह गह्वरि करिया ॥०॥
तुष्टि तुष्टि सिर उडत कढत सैर फुटि बकत्तर ॥
रुहिर छिछि नभ चढत बढत कलकल धर अंबर ॥
काली खप्पर भरत फिरत सिन नञ बिसारद ॥
महती तुवा सिर लगाय घुम्मत इत नारद ॥
पित्यल अनीक फारत बढिग मरद उतारत गजन मद ॥
डाकिनि डरात फारत वदेन किलकारत भैरव भयैव ॥१॥
घनै रिपुन रैमनीन भारि ककन कुवैसै किय ॥
घनै रिपुन रैमनीन बिब बटन पखौन दिप ॥
घनै हयन घन घाय कियउ मँदगे सोदागर ॥
घनै गजन सिर फारि रंग मुँतिन किय आगर ॥
भुजबड भीरि बासुकि उरग मर्दर असि गहि उच्च मन ॥
पित्यल कुमार नागैर कियउ डुंढाहर सागर मथन ॥२॥
पहर डकडम कुमर लरिग धारन धपाय धक ॥
फट्टिग सिर चोफार बदन चोफार लोह छक ॥
मनहुँ बीर विधि परखि हरखि अँद्वैत छाप दिप ॥

१ पावले होकर फिरने हैं २ पक्षि ३ अजयसिंह के पुत्र ४ गजय करने वाले
सिंह ने ॥ १० ॥ ५ पाण ६ रुधिर की ७ कोलाहल ८ नृत्य में निपुण ९ महती
मामक नारद की चीखा का १० मुख ११ भयकर ॥ ११ ॥ १२ स्त्रिया के १३
छोटा (विषयापन का) वेस १४ बहुत शत्रुओं की स्त्रिया को घायों पर पाँघने
के अर्थ भीष पाँघने की हथौड़ी में १५ पश्चर दिये युद्ध में १६ मोतियों के १७
घेर (समूह) १८ मदराचल रूपी तरवार को लेकर १९ विष्णु ने ॥ १२ ॥ २०
प्रसा ने परीक्षा करके २१ ऐसा दूसरा धीर नहीं है एसी छाप दी

इम सोभित छकि कुमर परयो पलचार दान प्रिय ॥
 आयुहि समथ अरु थिर रहिय बीरनिंद बपु विष्फुरिय ॥
 अच्छरि उमाहि आइय बरन चउमुख लखि लाजित मुरिय ॥३॥
 इम हुलकर १ बुंदीस १ उभय २ कूरम दल अंतर ॥
 भारत खगगन भूपटि दपटि बिथुरात दिगंतर ॥
 इत पहिले दल भजिग ताहि सुनिके जैपुरपति ॥
 करि आयउ दरकुंच गजब डारत सबेग गति ॥
 इत बहुरि हड्ड १ हुलकर १ असिन दल सन्नुन पुनि ठिल्लि दिय ॥
 तैंहँ परिय रति बिसतारि तँम दुवधिस मुररि मिलान दिय ॥१४॥

॥ दोहा ॥

स्वत खोजि बुंदीम नृप, हेरिय पित्थल जाय ॥
 सिविका धरि आनिय सिविर, बैद्यन कथित विधाय ॥१५॥
 हुलकर हड्ड दुहूँन २ पुनि, कियउ मंत्र मिलि रँति ॥
 अप्पन जीत भजंत अरि, प्रभु अबुकोसँ प्रपति ॥ १६ ॥
 अब आवत जैपुर नृपति, सजि पुनि कटक प्रसारि ॥
 यातैं नहिँ रहनोँ उचित, मुरि चल्लहु मेवार ॥ १७ ॥
 कहि यह मातहि कुंच करि, चलि हुलकर १ चहुवान २ ॥
 सब भोजन जुत साहिपुर, दिन्नै आनि मिलान ॥ १८ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पके उत्तरायणे सप्तम ७ राशौ हड्ड-
उम्मेदसिंह १ कूर्ममाधवसिंह २ हुलकरखण्डू ३ कोटो ४ दयपुर
 १ प्राण २ शरीर पर चारनिद्रा (सूछा) बढी ३ चार सुखवाला (ब्रह्मा)
 जानकर पीछा फिर गई [ब्रह्मा सबका पिता है इस कारण] ॥ ११ ॥ ४ सेना
 ५ तरवारों से शत्रुओं की सेना को हटा दी ७ अधेरा फैलाकर झुकास किये ॥ १४ ॥
 ० डेरे में १० बैद्यों का कहना करके ॥ १५ ॥ १ रात्रि में २ यह ईश्वर की दया से ३
 जय प्राप्त हुई है ॥ १६ ॥ १४ सेना का विस्तार ॥ १७ ॥ १५ उम्मेदसिंह १ सुकाम ॥ १८ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, हाडा उम्मेदसिंह,
 कछवाहा माधवसिंह, हुलकर खडू और कोटा व उदयपुर की सेना का हुंदा-

५ कटकहुगढाहडगमनकूर्मसैन्यसहितसचिवहरगोविन्दाऽभिमुख्य
 प्रपतनवाशिष्ठीसरिदुपकयठराजमहलपुरसीमासद्वरभवनधुदीन्द्र १
 हुलकर २ प्रहरणपरपत्तायनाऽनन्तरगोनर्दीयोक्तचित्तद्वितीय २ वृत्ति
 प्रथम १ वृत्तिनिष्ठकोटो १ दयपुर २ पृतनाकान्दिशीकीभवनमहा-
 रावबन्धुकुमारप्रत्पटनप्रचुरशस्त्रपुद्गलपूतीकरणाऽनन्तरकूर्मराजाऽ
 ऽगमनतत्समस्तपरपक्षमेवपाटसाहिपुराऽऽगमनमेकविंशो २१ मयू-
 ख ॥ २१ ॥ ३०२ ॥

प्रापोन्नजदेशीया प्राकृतीमिथितभापा ॥

॥ दोहा ॥

यद् उदत्तं थियद्वार सय, सुनिय रानं जगतेस ॥

पठयो कटक सहाय पुनि, वल्ल निज निकट निसेस ॥ १॥

तखत १ रान जयसिंह सुव, वावा निज पट्ट वीर ॥

पुनि कूसाज १ भिंडरपुर प, सगताउत घुर धीर ॥ २ ॥

दृष्ट में जाना १ बछ्याहे की सेना सहित सचिव हरगोविन्द का समुन्न आ-
 ना २ पनास नदी के समीप राजमहल की सीमा में युद्ध होना १ बुन्दी के
 राजा और हुलकर के शास्त्रों से शत्रुता के भागने के पीछे पतंजलि मुनि की
 पतंजल योग सूत्र में) कटो हुई द्वितीय थिस वृत्ति के समान उदयपुर की
 सेना का और प्रथम वृत्ति के समान कोटा की सेना का भागना (पतंजलि
 मुनि ने योगसूत्र में चित की पांच वृत्तियाँ कही हैं जिन से द्वितीय वृत्ति का
 नाम 'विपर्यय' है इस का अभिप्राय मिथ्या ज्ञान होना है और प्रथम वृत्ति का
 नाम 'प्राण' है जिस का अभिप्राय प्रत्यक्ष ज्ञान होना है) अर्थात् उदयपुर की
 सेना तो माधवसिंह का पाथ रंग का निशान देखकर जयपुर के निशान की
 आंति से भागी और उदयपुर की सेना को भागती हुई देखकर कोटा की से-
 ना प्रत्यक्ष ज्ञान होने से भागी, महाराय के भाइयों के कुमार का फिर फर प
 हुलकर शास्त्रों से शरीर का पवित्र करने पीछे फछवाहों के राजा (ईश्वरीसिंह) का
 पाना और उस के सप शत्रुओं का मेवाड म दाहपुरा नगर में जाने का इ-
 क्षोभ ११ मयूख समाप्त हुआ और आदि से तीनमौ दो ३०२ मयूख हुए ॥
 १ वृत्तान्त ॥ १॥ १ राणा जयसिंह के पुत्र राजवत्सिंह को १ श्रीछपुर का पति ॥ १॥

रायसिंह ३ भल्ला बहुरि, नगर सादड़ी नाह ॥

पुनि बुंदीस पुरोहित सु, दयाराम ४ चित चाह ॥ ३ ॥

॥ पट्पात ॥

इम चपारि ४ न करि मुख्य रान * पृतना पुनि पिछिय ॥

सजव साहिपुर आय मुदित निज दल सह मिछिय ॥

उततैं ईस्वरिसिंह पिठि दब्बत द्रुत आयउ ॥

भिल्लहड़ा पुर लुटि कहर मेवार मचायउ ॥

धनवंत बनिक कारा पटकि कुप्पि नगर श्रीदंत करिय

बाटिका मनहुँ अहिबल्लरिन चपल आनि बस्तन चरिय ॥ ४ ॥

मेवारन किय मंत्र सुनत यह बत नीति सह ॥

कटक प्रचुर कछवाह अलप अप्पन अनीक यह ॥

हुलकर १ कोटा २ एहु उभय २ बिस्तर बिनु आये ॥

बित्त रहित बुंदीस अवनि हित प्रसभ अमाये ॥

यातैं न संपरायहि उचित रहिहै अवनि लैरैं न तिल ॥

सकुटुंब सकल नृप जुत करहि कुंभिलमेरु नियास किला ॥

तखतसिंह यह सोधि जान लग्गो कूरमें प्रति ॥

सुनि यह खंडुव साम अर्नखि कुप्प्यो हुलकर अति ॥

बुल्लयो पुनि भुज ठोकि सजव आये संगैर भ्रम ॥

अब जो साम उपाय ततो तुम माहि नहिं हम ॥

सुनि तखतसिंह हुलकर कथित दयाराम तैं मुकलिय ॥

अकिखय वहै न नैय समयपेटु समुभावहु कहि प्रचुर प्रिय ॥

॥ ३ ॥ * फिर सेना भेजी † शीघ्र १ कैद में २ लक्ष्मी हान ३ बाढ़ (बर्गीची) में ४ नागरबेल को ५ बकरो ने चरी ॥ ४ ॥ १ अपनी सेना ७ दिन विस्तार के ८ धन रहित ९ भूमि के अर्थ १० नहीं समावै ऐसा हट किया १ युद्ध १२ लड़ने से भूमि तिलमात्र नहीं रहैगी १३ महाराणा सहित १४ निद्रा य ही गहन प्रदेश कुंभलगढ़ में जाकर बसेंगे ॥ ५ ॥ १५ ईश्वरीसिंह के पा १६ क्रोध करके १७ युद्ध के भ्रम से १८ हे समयचतुर यह (युद्ध करने की) १९ नीति नहीं है २० बहुत प्यारी बातें कह कर ॥ ६ ॥

मराराणाका कछवाहोंसे सधि चाहना] सप्तमराशि धार्मिकमयूष(११९०)

तवहि जाय *भूदेव कहिय छुंदीस पुरोहित ॥
तुम दिखिष तिय जार कुमर खडुव चितहु चित ॥
अवसर कोष इहाँ न स्वामि साहुव कुल रानाँ ॥
तुरकनतैं तिन बेर खुट्टि सब गयउ खजानाँ ॥
सज्जहि जु अज्जरनकुम्भसह तो तुम दिगहु अनीकामित ॥
कछुदिन बिहाय देल इक करि बहुरि सत्रु जितहि बिदित ॥
॥ दोहा ॥

बिरुदावत इम फुल्लि सठ, सुनि दिल्लिय तिय नाम ॥
बुल्लयो हमहिं तटस्थ करि, करहु बिप्र सब काम ॥ ८ ॥
॥ पट्पात् ॥

सुनि सैत्वर यह बिप्र आनि अक्खिय तखतेसहिं ॥
हुलकर सम्मत आहि मिलहु तुम कुम्भ नरेसहिं ॥
तवहि जाय तखतेस अरज कूरम प्रति अक्खिय ॥
मरहठन आदेस कहहुं इहिं दिन किहिं नक्खिय ॥
तसमांत धारि खडुव कथित तुम भुव हम पैते जारन ॥
तिहिं हेतु आहि यह दोस तैस नृप लुट्टहु मेवार नन ॥ ९ ॥
नैति पूरव यह सुनत कुम्भ अनुकंपै बिहरि किय ॥
भिल्लहडापुर बनिंक धनिक पकरे ति छोरि दिय ॥
उपालभै लिखवाय पत्र पठयो रानाँ प्रति ॥
किय पछो दरकुच गगद रवि ठकि मुदिरै गति ॥
सुचि पक्खचैत विक्रम सैकग पच गगन बसु चद १८०५मित

ब्राह्मण ने दिखी रूपी स्त्री के घपपति तुम्हारे पति के कुल वाले राणा थे
कछवाहे के साथ सेना पोछी है सेना एकत्र करके ॥ ७ ॥ किनारे (अलग) रखकर
॥ ८ ॥ सीमा है ५ ईश्वरीसिंह से ९ कुम्भ ७ किसने खाजा है इस कारण ६ खडू
त कहना करके १० तुम्हारी भूमि में हम लड़ने को प्राप्त हुए ११ यह दोष
१२ का है ॥ ८ ॥ १२ नम्रता पूर्वक १३ दया १४ घनबावू बनियों को पकड़े
ते छोड़दिये १५ भोजन १६ मेघ के समान १७ शुक्ल पत्र १८ विक्रम के शक

नृप किय प्रवेस जैपुरनगर मेवारन आक्रमि सुदित ॥ १० ॥
॥ रोला ॥

जगतसिंह इत रान खास इक रूपमल्ल १ हय ॥
साखति पुरट समेत रुचिर कुल जात मनोरय ॥
इक खासा तरवारि १ भूप संभर दित भेजिय ॥
रान सचिव भट लै रु पहुँचि बुंदिय अनीक प्रिय ॥ ११ ॥
भिंडरपुर प खुसाल १ तखत जयसिंहरान सुतर ॥
नगर सादड़ीनाह रायसिंह ३हु विचार जुत ॥
दयाराम ४ पुनि द्विजनि दडुबुन्दीस पुरोहित ॥
आये ए नृपअंग सचिव च्यारि ४हु नय सोदित ॥ १२ ॥
इन हय १ असि १ करि नजरि वीरपन विरुद द्विथारिय ॥
प्रीति सहित सुनि बचन लैन भूपति अवधारिये ॥
स्वीकरि पुनि निज सुभट वीर बुंदिय दिस पिछिये ॥
तिन आय रु निज विखय ठोकि कूरम चरै ठिलिय ॥ १३ ॥
हो हाकिम यह बनि क सचिव जैपुर कुल बंधव ॥
थानसिंह थू उचित लैन पटु दैनपटु न लैव ॥
सो निकरयो करै लैन नियंति बल नृपदलै पिकरयो ॥
लिन्नो पकरि निलज्ज सपथे बंदन तब सिकरयो ॥ १४ ॥
कारा सहि कति काल दम्भ पुनि तीस सहस ३०००० दिय ॥
तब छोरयो वह असित जानि दुल्लभ मन्नत जिय ॥

मे प्राप्त अर्थात् वैक्रमीय १ घेरने से प्रसन्न होकर ॥ १० ॥ २ सुवर्ण की
३ सुंदर कुल में उत्पन्न, मन के वेगवाला ४ उम्मेदसिंह के अर्थ ५ बुन्दी
की सेना में ॥ ११ ॥ ६ भीडर का पति कुशालसिंह ७ तखतसिंह ८ द्विज-
न्मा (ब्राह्मण) ९ उम्मेदसिंह के आगे १० शोभित ११ ॥ १२ ॥ विचार किया १३ भेजे १४
अपने देश में १५ नौकरों को ॥ १३ ॥ १६ जयपुर के सचिव के कुल का भाई १७
थूकने के (धिकार के) उचित १८ लेने में चतुर १९ देने में लेश मात्र भी चतुर
नहीं था १९ हासिल लेने को २० भाग्य के बल से २१ उम्मेदसिंह की सेना
ने देखा २२ सौगन करना और नमस्कार करना ॥ १४ ॥

कोटा के राजा का राणा से मिलने से नटना] सप्तमराशि द्वाविंशमयुक् (१४६०)

विन बुंदिय सब बिखय अमल बसु ८ मास अगोहो ॥

नृप भट बहुरि निकासि मुलक कूरम दल मोहयो ॥ १५ ॥

॥ सोरठा ॥

इत पुनि रान बिचारि, गोवरधन गोस्वामि प्रति ॥

मुदित मंडि मनुहारि, पठये दल श्रियद्वार पहुँ ॥ १६ ॥

तुम बल्लभ कुल दीप, बुल्लहु पैहँ कोटेस अब ॥

मिलि हम उभय २ महीप, रंमत धर्म मग सचैगहि ॥ १७ ॥

गोस्वामिय लिखि पैत, बुल्लयो तव कोटेस हुत ॥

आपो निष्ठिन अंत, जानि रान सम्मत विफल ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

रान कहाई मिलनकी, नटयो तवहि कांटेस ॥

कहिय बदलि तुम सार्भ किय, सदिय कुम्भ नरेस ॥ १९ ॥

मिलनमैहु रस नहिँ तुमहु, करत अल्प सतकार ॥

अरधी विनु आदर रहित, मिलत कोन मतिदार ॥ २० ॥

इति श्री वशभास्करे महाचम्पू के उत्तरायणो सप्तमऽराशौ शीर्षोद-
तखतसिंह १ कुसालासिंह २ मल्लारायसिंह ३ द्विजदयाराम ४ सचिवचतु-
ष्टय ४ सहितराणा सैन्यसहाया ५ र्यसाहिपुरा ५ गमनकूर्मराजमेदपाटप्र-
विशनमिल्लहडापुरल्लुरतनतद्वलविदुतोदयपुरसचिवसामविचारणाकु-
पितहुलकरखण्डनुनयनजायसिंहिकुच्छामनतत्त्वपुरप्रतिप्रविशनद्वे

१ देश में ॥ १५ ॥ २ पत्र ३ राजा ने ॥ १६ ॥ ४ आप के धर्म के मार्ग में ५ चलेंगे ॥ १७ ॥
६ पत्र ७ यहाँ ॥ १८ ॥ ८ मेला करके ॥ १९ ॥ ९ धन की याचना करने वाले
के बिना न्यून आदर से कौन १० बुद्धिमान् मिलता है ॥ २० ॥

अर्धशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, शीर्षोदिया तख-
तसिंह कुशाखसिंह, माला रायसिंह, ब्राह्मण दयाराम, इन चारों सचिवों के
सहित, राणा की सेना की सहायता के अर्थ शाहपुरा में आना १ कछवाहां
के राजा का मेवाघ में प्रवेश करके मल्लहडा पुर को छूटना २ उस के सेना
से दूर कर दयपुर के सचिव का साम सपाय करने से कोपे हुए खड्ग की
प्रार्थना करना और जयसिंह के पुत्र के क्रोध को मिटाना और उस का क्षुध

न्द्रोपायनीभूताब्धरूपमल्ल १ कान्तकृपाणा २ पुरस्सरराणा चतु ४ स्सचि
वबुन्दीशशिविराऽऽगमनगृहीतनिवेदितोपायनसम्भरस्वभटबुन्दीविष
यप्रेषणानट्टाणि स्थानसिंहनिग्रहणातद्वशद्वयग्रहणाबुन्दीमात्ररहित
देशस्वीकरणाराणाऽनुनीतश्रीद्वारगोस्वामिगोवर्द्धनमहारावाऽऽह्वयन
कोटेशतन्मिलनाऽल्पसत्कारसूचनं द्वानिःशो २२ मयूखः ॥ २२ ॥ ३०३ ॥

॥ प्रायोव्रजदेशीयाप्राकृतीभिश्चितभाषा ॥

॥ हरिगीतम् ॥

* तसमात अब तुम रान भुंदिय तुल्य अदर जो करो ॥
तबही मिलौ रु बहोरि जो नहि साम कूरमसौ धरो ॥
पहिलौहि दै हरि अगग बचन रु फुटि जैपुरमें मिले ॥
तसमात नाहिं बिसासहै तुम इष्टसौहै सबै मिले ॥ १ ॥
सुनि रान तब कुछ घटि बुंदिय तुल्य अदर स्वीकरयो ॥
अब अप्प सम्मुह इक १ गदिय बैठिहो १ यह उच्चरयो ॥
हम मैथ हथ लगायहैं २ लघु खास कगार मंडिहैं ३ ॥
अबतैं सनेह बहैं जु अप्पन सो कदापि न खंडिहैं ॥ २ ॥
कोटेस तब सुनि एह रानहिं मेल स्वीकरि बुल्लये ॥

करके अपने पुर में प्रवेश करना ३ हाडा की भेट करने को रूपमल्ल नामक
घोड़ा, सुन्दर तरवार, आदि सहित राणा के चार सचिवों का बुन्दीश के डेरे
पर आना और नजर किये हुए नजराने को लेकर उममेदसिंह का अपने वीरों
को बुन्दी के देश में भेजना ४ नाटाखी थानसिंह को पकड़ कर उस से दंड के
रुपये लेना और एक बुन्दी को छोड़ कर देश को अपना करना ५ राणा की
प्रार्थना से नाथद्वारे में गुसाई गोवर्धनलाल का कोटा के महाराव को बुलाना
और राणा से मिलने में अल्प सत्कार होने की कोटा के पति की सूचना क-
रने का बाईसवां २२ मयूख समाप्त हुआ और आदि से तीनसौ तीन ३०३
मयूख हुए ॥

* इस कारण से १ हे राणा १ बुन्दी की बराबर आदर करो तो १ इस कार-
ण से २ इष्टदेश के सौजन्य ॥ १ ॥ ३ बुन्दी से कुछ घटकर ४ आदर स्वीकार
किया ५ आप ६ मस्तक के हाथ लगाकर मुजरा करेंगे ७ खास रुक़्के में अपने
को छोटा लिखेंगे ८ कभी नहीं लूटेगा ॥ २ ॥ ९ मिलना स्वीकारकरके बुल्लये

तब रान पुनि श्रियद्वार आय मिले रु मत्रहु खुल्लये ॥
 रु सदैव सम्मलि होनके पुनि पत्र दोउनर मढये ॥
 चढि गाम ढिकोला दुहुनर रंकाव जाय रु छढये ॥ ३ ॥
 तब ही जु साहिपुरा चैमू सु समस्त जाय मिली तहाँ ॥
 बुंदीस डेरन रानर खड्गवर भीमनदर गये जहाँ ॥
 तब इद्रगढर खतोतिर बलवनिर आदि तीनर मिलायकै ॥
 पुनि रानसौ मिलि भूप बैठिय इकर गदिप आयकै ॥ ४ ॥
 घटिका उभैर हि सभा रही मनुहारि मोदमई भई ॥
 पुनि पान गंध निवेदि सर्वन सिक्ख डेरनको दई ॥
 खड्ग रु माधवर तत्थही पल्लटाय पंग्घ सखाभये ॥
 पुनि तत्थतै चढि सर्वही गुल्लगाम पारइलौ गये ॥ ५ ॥
 खारी नदी तट दै मिलान सबै घने दिन वहाँ रहे ॥
 तब कुम्भ वीरहु सज्जवहै दरकुंच सम्मुह उम्महै ॥
 त्रयर कोस अतर दै मिलान यहै कदाइय रानपै ॥
 क्यों बैन चुकी करारके पुनि सज्जहुव घमसानपै ॥ ६ ॥
 तुम धात नाथ पटा जु पावत सोहि माधवको मिलै ॥
 घर रीति चुकि रु अप्प क्यों अब कोल बैन कहे गिलै ॥
 तब रान अक्खिय अप्प जानत रीति घरघर भिन्नहै ॥
 तुमरे पिता जयसिंह राज्य सबैहि याकँहँ दिन्नहै ॥ ७ ॥
 हम किछ नाथ प्रसन्न ज्यो तुम त्योहिँ माधवको करो ॥
 निज तात महित पत्र अक्खर लुपि लोभ न अहरो ॥
 इहिँ रीति होत जवाब जानि रु कुपि खड्ग उच्चरी ॥
 रन काज मोहि बुलायकै अब सामकी तुम जो धरी ॥ ८ ॥

१ घोड़ों से उतरे अर्थात् मुकाम किया ॥ १ ॥ २ सेना ३ भीमसिंह का पुत्र महाराज बुर्जनशाह ॥ ४ ॥ ५ दो घड़ी ६ इन्द्र ७ पगड़ी पहन कर ८ भासका नाम है ॥ ९ ॥ ८ मुकाम ॥ ९ ॥ ७ ॥ ८ नाथसिंह को हमने प्रसन्न किया जैसे तुम माधवसिंह को प्रसन्न करो १० तुमारे पिता जयसिंह के खिलाे हुए

तुमतेहिँ संगर सज्जि तो हम प्रीति रीति बिगारिहँ ॥
 कछवाह *हिँतु नतो लरो हरवल्ल हम असि भारिहँ ॥
 तँहँ रान बत्त †कुबेरा ‡ओ तखतेसर तँ यह अक्खई ॥
 अब अप्प साम करो न हयौ रन बुद्धि खंडुवकी भई ॥ ९ ॥
 तब रान आदि समस्त फोजन सज्ज जुज्जनकी करी ॥
 रननंकि तंतिन सिंधवी भननंकि पक्खर घुग्घुरी ॥
 सुनि कुम्म सत्रुन सज्ज होत विचारि खंडुव भीरकौ ॥
 जय जानि संसय सुक्कल्यो हरनाथ †नारव बीरकौ ॥ १० ॥
 कहि मास कत्तिय ‡मग्ग ‡वा हमहू उदैपुर आयहँ ॥
 अरु अप्प माधव ‡ओ उमेद ‡दुहून ‡लाय मिलायहँ ॥
 तँहँ नम्रताजुत पिक्खि बुंदिय हह भूपहिँ अप्पिहँ ॥

‡सलक्ख १०००००० रूप्य देस माधव अत्थ दै थिर थप्पिहँ ॥११॥

यह बत्त नारव आयकै नृप रान आदिनतँ कही ॥
 कोटेरा ताडि सिराहि बुंदिय स्वायँ हाकिमकी चही ॥
 सुनि एह दुजनसल्लकौ तब बीर खंडुव निंदयो ॥
 इहिँ रीति दोउनकै ‡विरोध बिसेस बैनन व्है भयो ॥१२॥
 दुरभिच्छ कारन सेनमँ मन ‡घास रूप्य ‡को विकै ॥
 अरु अन्नकीहु महर्घताकरि लोक निठिनकै टिकै ॥
 बलि नित्य दम्म हजार बारह १२००० रानकै वयमँ लगै ॥
 पुनि होत साम जबाब जो निमटैहि जावनकी थँगै ॥ १३ ॥
 कोटेसके दलकेन तत्थ अनीति मंडि मरोरतँ ॥
 तन सकंट जाय रु रानके दल माँहिँ लुटिय जोरतँ ॥
 तब कुम्म बैन कहे जु मन्नि रु रान अक्खिय है भलै ॥

॥ ८ ॥ * सोकुबेरसिंह ॥ ९ ॥ † नरुका ॥ १० ॥ ‡ मार्गशिर सं १ माधवसिंह के अर्थ ॥ ११ ॥ ‡ नरुके ने ३ अपना हाकिम रहने की ४ वचनों का ॥ १२ ॥ ५ महंगाई सेवखरच में ७ठहरे ॥ १३ ॥ ८ सेना वालों ने ९ घमंड से १० घास के गाडे

तव देहु पै अबतैहि हाकिम तत्थ * मामक मुकलै ॥ १४ ॥
 यह वत्त कूरम स्वीकरी तव गन आयस त्यों दयो ॥
 नगरी वसी पति चौडवसिय मेघ १ बुदिय भेजयो ॥
 टोढा महाजन टेकचद १ पठाप रान खुसीभयो ॥
 यह जानि माधव १ मित्र खडुव १ कुच दीउन २ को ठयो ॥ १५ ॥
 करि कुम्म इडुम्मन रानतै निज धाम रामपुरा लयो ॥
 कति दीह खडुव तत्थ रहि पुनि वर्णके ढिग पुगयो ॥
 इत कुच ईस्वरिसिंह हू निज धाम जैपुर त्यों किये ॥
 कांटेस भेजि वकील अखिय मोहि बुदिय दीजिये ॥ १६ ॥
 तव लौ वकीलहि संग कूरम रबीय पत्तन सचरयो ॥
 रु कही तजा अब रान संगत तो करै तुम उच्चरयो ॥
 नहितो वं कत्तिय मासमै तुमैतहु सगर जोरिहै ॥
 पहिलै करी जिम धूमि तोपन नैर चम्मलि बोरिहै ॥ १७ ॥
 कांटेस १ रान १ रु भूपै १ ए ३ इत उप्परे गुल्लगामतै ॥
 पुग धुधरी तट दै मिजान रहै निसा सुख सामतै ॥
 तैह जा पुरोहित रानके ढिग हो सु सभर मंगयो ॥
 तव दयाराम जु विप्र रानहु भूपको दिततै दयो ॥ १८ ॥
 निज विप्र लौ दुव २ हड्ड भूपति नदगाम गये तवै ॥
 बुदीस चम्मलि वारही रहि सगतपुर गढमै जवै ॥
 तैह सचिव हरजन हड्डको सिविका समप्पिय संभरो ॥
 अरु देसमै तहसील कारन सिक्ख ताहि दई खरी ॥ १९ ॥
 अचलेस १ माधानी सदित तव देस हरजन १ सचरयो ॥
 सीलोरपुर ढिग कुम्म सुभटन जाय रन तिनसौ करयो ॥

* हमारे ॥ १४ ॥ † कुम्म ‡ मेघसिंह को ॥ १५ ॥ कछबाहे जयसिंह ने राणा
 सयामसिंह को § वदास करके १ पाप (पिता) के पास ॥ १६ ॥ २ अपने पुर में
 गया ३ राणा का साथ छोड़ दो तो ४ अथ ॥ १७ ॥ ५ उम्मेदसिंह ६ उम्मेदसिंह
 ने पुरोहित दयाराम को मांगा ॥ १८ ॥ ७ कोटे का उपनाम है ८ उम्मेदसिंह
 ने पालखी दी ॥ १९ ॥ ९ माधवसिंहोत हाथा

अचलेसके *गुटिका लगी पर दोहु२ सत्रुन नाँजये ॥
 पुनि फोज जैपुरतैं चली तब छोरि भूपतिपैं गये ॥ २० ॥
 सक बेद नभ बसु सोम १८०४ भद्रव कृष्णअष्टमि ८ जंगभो ॥
 पुनि भूप आन उठाय जैपुर सैन बुंदिय संगभो ॥
 रन काज भूप बहोरि बीर दलेल १ नाहर मुक्कले ॥
 रन आय बुंदिय किन्न पै बपु घाय दोउन२ कै छले ॥ २१ ॥
 तबही सगतपुर बुल्लिकैं उपनाह दोउन२ कै कियो ॥
 आसोजमें सुत ईडरोचिय कै भयो सु नही जियो ॥
 इत ज्येष्ठ सालमनंद दिल्लिय छोरि जैपुर पुगगयो ॥
 भट ताहि कूरम रक्खि बुंदिय सीम माँहिँ पटा दयो ॥ २२ ॥
 पुनि मैगमें नृप कुम्म बुंदिय आय दीह घने रहयो ॥
 कोटेसकेर वकीलतैं यह बैन परिखदमें कहयो ॥
 हम संग दुरजनसल्ल होय रु भ्रात माँधवपैं चलो ॥
 यह नाँहिँ तो रन सज्ज होय रु लैन हम कँहँ मुक्कलो ॥ २३ ॥
 कोटेस यह सुनि इक्कठो निज सेन पत्तनमें करयो ॥
 लगवाय बाहिर मोरचे गढ जाल तोपनको जरयो ॥
 उत एह माधवहू सुनी तब छोरि रामपुरा सँरयो ॥
 दल संग लै निज भीत व्है कढि नैर कररावन परयो ॥ २४ ॥
 इत कुम्म बुंदिय दोहु२ भ्रातन माँहिँ हित बिसतारयो ॥
 परताप १ कौं रु दलेल १ कौं इक १ थाल भोजन-कारयो
 सु दलेल ठीक गिनी न छोरिय अन्न आमय व्याजतैं ॥
 पुनि कुंच दुंदुभि बज्जयो नृप कुम्मको रन साजतैं ॥ २५ ॥

*गोली लगी परंतु † नहीं जीते ॥ २० ॥ २१ ॥ १ इलाज ॥ २२ ॥
 मृगशिर मास में ३ ईश्वरीसिंह ४ सभा में ५ हमारे भाई माधवसिंह ६
 ६ हम को युद्ध के अर्थ कोटे बुलाने को किसी को भेजो (इसकी नाँ
 करने पर युद्ध करने को हम कोटे आवेंगे) ॥ २३ ॥ ७ चला ८ पुर का न
 है ॥ २४ ॥ ९ कराया १० रोग के मिस से ॥ २५ ॥

सुनि ताहि फोज बहीरसो सब *नंदगाम दिसा चली ॥
 अरु कुम्भहू किय बिष्णु पूजन अप्पि पुष्पन अजली ॥
 तिहिबेर दिल्लिय साहके फरमान लगिय बेगही ॥
 तुम कुम्भ आवहु छिपे द्यौ लरनो इराननतैं सही ॥ २६ ॥
 इक साह अहमद है पठान जु साहनानदर मारिकैं ॥
 ईरानपति वनि लघि अटक रु आत इत धक धारिकैं ॥
 तसमांत आवहु आतही रनथभ दुग्गहि पायहो ॥
 अरु जित्ति अहमदसाहकोँ दिल्लीस तोरें बढायहो ॥ २७ ॥
 तजि नंदगामहिँ वचि जो हुँत कुम्भ दिल्लिय त्यों चढयो ॥
 परताप१ ओर दलेल१ सोदर दोहु२ संगहि लैं बढयो ॥
 मथुरा गये तब रोगको मिस कैं दलेल तहाँ रहयो ॥
 पहिलैंहि अन्न तज्यो हुतो अब प्रान छोरनही चढयो ॥ २८ ॥
 गगोदै मिट्टिय पान कैं रु थिभूति बिप्रन दैदई ॥
 भल रीति देह दलेलनैं तजि तत्यही मति सो लई ॥
 परताप अग्रज तास जुत कछवाह दिल्लिय पुगयो ॥
 अरजी निवेदि रु तत्य इठ रनथभ आवनको लयो ॥ २९ ॥
 तब साह दैहैं नदैहैं यो कछुहू न कुंम्भहिँ उच्चरयो ॥
 तँहैं कुम्भ अक्खि वजीरसो इठ सोहि पावनको भरयो ॥
 सुनि कुंम्भहितु वजीर अक्खिय नाँहि अप्प भरोसहैं ॥
 चलिहो न जो तुम तो कहा यह साहके सिर दोसहैं ॥ ३० ॥
 यह अक्खि अहमदसाह साहतैनुज सण वजीरवहै ॥
 किय कुञ्ज कुम्भहिँ छोरि जोरि अनीकैं जुज्जन वीरवहै ॥

भकोटे का तर्फी पुष्पाजलि देकर अर्थात् पुष्प चढाकर १ शीघ्र ॥ २९ ॥ २ नानादरशाह को
 मारकर ३ इस कारण ४ प्रताप ॥ २७ ॥ ५ शीघ्र ६ करके ॥ २८ ॥ ७ गंगाजल
 ऐश्वर्य ८ दलेलसिंह के यन्त्रे भाई सहित ॥ २६ ॥ ९ ईश्वरीसिंह स कुछ नहीं
 कहा ११ ईश्वरीसिंह से कहा कि कुछ आप के ही भरोसे पर नहीं है ॥ ३० ॥
 १२ दिल्ली के यादशाह के पुत्र अहमदशाह के साथ १३ सेना

तब कुम्भ *रवीय अमात्य सों कथ गेह चालनका कही ॥
 सुनि मंत्रि अक्खिय संग चलहु गेहकी न अवे रही ॥३१॥
 तब कुम्भ संगहि कुच्चकें दलें पिठि जावन अहम्यो ॥
 दरकुंच हंकि मुकाम यों सतलंजके तटपें परयो ॥
 तँहँ कुम्भ हितुँ वजीर चिंतिय आदितैं मम बेगहे ॥
 गहि याहि दंडहिँ बेगही अब नाहिँ यँहँ जयनेरहे ॥ ३२ ॥
 सुहि कुम्भ भीरु निसीर्थमें सुनि छोरि डरनकाँ भज्यो ॥
 दरकुंच रति रु दीह कैं जयनैर लौ रु दुरयो लज्यो ॥
 परताप सालामनंद संगहि आय जैपुरमें मग्यो ॥
 अरु जो नरायनदास खत्रिय लै हलाँहला सो मग्यो ॥३३॥
 यह बीर खत्रिय अगगही दुवबीस२२ संगर जित्यो ॥
 संधा न भाजनकी हुती पर स्वाभि संग भज्यो गयो ॥
 तस लाज लै बिख आतही तिहिँ बीर बिग्नह छोग्यो ॥
 सुनि कुम्भ सोच घनों लयो पर काकतैं बल नाँ ठयो ॥३४॥
 सुतसाह अहमदसाह साहडरानतैं इत संजुरयो ॥
 यह जानि दिल्लिय ईसनैं निज हत्थ करंगर अंकुरयो ॥
 सुनि पत्र दक्खिन देसमें श्रियमंत अंतिकें सुकल्यो ॥
 तुम भीरँ आवहु ह्याँ इरानिन देस दिल्लियको दल्यो ॥३५॥
 श्रेयमंत नन्ह जु बंचिकें इक लक्ख १००००० वीहिनि लै चढ्यो
 बजि बंबे आनक ल्यों अचानक घोरैं कोसनलों बढ्यो ।
 हयके चलाचल लौ तरारन व्योमैं धारनकाँ धरैं ॥
 धुमडी घटा अनुकार बारैन गज्ज डारन विथरैं ॥ ३६ ॥

*अपने १ सचिव से ॥ ३१ ॥ २ सेना के पीछे ३ से ॥३२॥ ४ आधी रात्रि में ५ दि
 खाकर ॥ ३१ ॥ ३ इस के युद्ध से नहीं भागने की प्रतिज्ञा थी परन्तु यहां स्वा
 के साथ भगा ७ शरीर को छोड़ा ॥ ३४ ॥ ८ बादशाह का पुत्र ९ जुड़ा (युद्ध कि
 १० पत्र लिखा ११ श्रीमंत के पास भेजा १२ सहाय ॥ ३५ ॥ १३ सेना
 शब्द १५ आकाश १६ घोड़ों की गति को १७ सदृश १८ हाथी ॥ ३६ ॥

उडि धुलि धोरनि अकं धूरि चक्रचक्रिय बिच्छुरे ॥
 लागि अदि घुम्मन भुम्मि के गज जानि मैगल अकुरे ॥
 चडि सग गायकवां १ ओ परमार २ सज्जित सधिया ३
 इठदार हुलकर ४ घुसल्या ५ मतिवार कन्नेलकी क्रिया ॥ ३॥
 तजि नेर पुण्णिम सज्जि यो श्रियमत उत्तर हकयो ॥
 भुव भीर पक्खर छाया सेलन ओध अवर ढकयो ॥
 दग्कुच उत्तरि नम्मदा तिमही अवंतिर लघये ॥
 अरु हे जु रामपुराहि माधव बुलि सगहि ते लये ॥ ३८
 असवार पचहजार ५००० सौ तव कुम्म सम्मलि यो भयो
 तँह कुम्म डेरनपे मलार प्रधान नन्हहि ले गयो ॥
 जयसिंह मडित पत्रकी समुक्काय वत्त निवेदई ॥
 पुनि नेर छुदिय लैनकी तिहि बुद्धि दुद्धरके दई ॥ ३९ ॥
 गज १ वाजि २ माधव भेट किन्न सु ले रु सगरपे छल्यो ॥
 इत कुम्म केसवदास खत्रिय नन्ह सम्मुह मुक्कल्यो ॥
 तिहि साम ईस्वरिसिंहसौ श्रियमत स्वीकृत कारयो ॥
 दरकुच कै पुनि लागि चम्मलि सेन अगग प्रचारयो ॥ ४०
 इम जाय जैपुर सीममें नगरी निवाइय उत्तरे ॥
 रु वकील छुदियभूपके ढिग हे तिन्ह चलेतेकरे ॥
 लिखि पत्र सग दये रु भूपेहि वेग आनहु यो कह्यो ॥
 तव छिपे चारन दैन आय प्रपान भूपतिको चह्यो, ॥ ४१ ॥
 दलें नन्हके रु मलारके सब पुँव प्रीति निवेदये ॥
 तव चाहि भूप सिराहि चारनको रु चालनको भये ॥

१ स्वर्धरदिगज ३ गायकवाड (भरहठों की जाति विशेष) ४ युद्ध की क्रिया से -
 तुर ॥ ३९ ॥ भाषा के समूह से आकाश दफगया १ दलैन ॥ ४० ॥ १९ ॥ ७ बड़ा
 मेला स्वीकार ६ कराया ॥ ४० ॥ १० बिदा किये ११ वस्त्रेवसिंह को ११ यो
 १३ दान नामक चारण ने ॥ ४१ ॥ १४ पत्र १५ प्रीति पूर्वक

सक पंच अंबर अठ इक १८०५ रु चैत उज्जल द्वादसी १२ ॥
 रविवार नाडिय पिंगलार जलतत्वपै जब उल्लसी ॥ ४२ ॥
 क्रम पंच दक्खिन अंगिके तब दे रु भूपति है चढ्यो ॥
 तजि नैर मधुकरदुग्गकों धक धारि बुंदियपै बढ्यो ॥
 तहँ पोदैकी १ तजि बाम दक्खिन ओर सुद्धि उत्तरी ॥
 करि उद्ध सुंढि रु कन्नपै धरि गज्जि सम्मुह भो कैरी २ ४३
 दिस सांत बुल्लिय फिकरी ३ अनुकूल पिंगलिका ४ १६ ॥
 इम सौन बुंदिय लैनके बनि प्रीति भूपतिकों दई ॥
 तब लंघि चम्मलि संभरी दरकुंच उत्तर हंकये ॥
 सुनि आत तात मलार १ खंडुव उल्ल १ सम्मुह द्वैरगये ४४ ॥
 त्रय ३ कोस पै मिलि जाय प्रीति बढाय सम्मलि लै मुरे ॥
 श्रियमंतहू मिलिके प्रबोधिये बंव जित्तनके घुरे ॥
 सुंत साह अहमदसाहनै इत जंग सन्नुनतै रच्यो ॥
 हरिमंथ आष्ट्रके राव त्यों तरकाव तोपनको मच्यो ॥ ४५ ॥
 अतलादि भूपुट धुज्जिके फनमाल पन्नग चंपयो ॥
 अति चंड गोखन तापतै ब्रह्मंड भोखन कंपयो ॥
 रु बजीर संगैर होत माहिं निमाज कारन उत्तरयो ॥
 मनसूर तोपन स्वामिनै डहँ स्वामिद्रोहं रजू करयो ॥ ४६ ॥

॥४२॥ १ दाहिने चरण के घोड़े पर १ शकुनचिड़ी (रूपारेल) ४ सुंढ को ऊंची करके
 कान पर धरकर ५ हाथी गर्जना करके सामने हुआ ॥४३॥ ३ शान्त दिशा में ७ फेकरी
 (स्यालनी) बोली (इसके बोलने के शकुनों का यह क्रम है कि जिस वार में
 बोले उस वार को पूर्व दिशा में रखकर दिशा दिशा प्रति उलटे क्रमवार से
 रखते जावें अर्थात् पूर्व से अग्नि, दक्षिण आदि सो जिस वार में जिस दिशा
 में बोले वहां क्रूर वार का क्रूर फल और शान्त वार का शान्त फल मानते हैं
 ८ कोचर पत्नी ९ शकुन १० उम्मेदसिंह ११ पिता मलार और पुत्र खंडू
 ॥ ४४ ॥ १२ समझाया १३ बादशाह का पुत्र १४ चनों का १५ भाइ में तड़कने
 का १६ शब्द होवे तैसे तोपों का शब्द हुआ ॥ ४५ ॥ १७ युद्ध होते समय
 १८ मनसूरअली १९ तोपों के पति (दरोगे) ने ॥४६॥

दल तोप रवीय बजीरकों हनि अप्प तैत्थ बजीरभो ॥
 सुतसाह अहमदसाह यह लखि काल चित रु धीरभो ॥
 कहि माफ आगंसहै परतु अबै इरानिनकों हनों ॥
 सुनि यो सहादत पुत्तहू मनसूर जग रच्यो घनों ॥ ४७ ॥
 बहु बार तोपन मार दै रु इरानको दल जितयो ॥
 हुतही महानव लधि अहमदसाह भीरु भज्यो गयो ॥
 सुतसाह अहमदसाह तव जयपाय दिल्लिय संवरयो ॥
 मनसूरकोंहि वजीर दिल्लिय ईसह तवही करयो ॥ ४८ ॥
 पुनि साह चितिय जे भयो मरहठ कपो अब बुल्लनै ॥
 पठवाय कर्गर मडि अक्खिय नाँ वं आवहु द्वयो घनै ॥
 मिलनोहि होष हजूर तो दल तुच्छ लै यैह आवनो ॥
 नहि तो लगे तुमरे ति दम्महि लै रु दक्खिन जावनो ॥ ४९ ॥
 श्रियमत कर्गर बंघि जो दल तुच्छकी नहिं स्वीकरी ॥
 व्यप सेन दम्म लगे ति लै करि देस जावन अहरी ॥
 तव साहनै दुववीस लख २२००००० लगे ति रूपय मुक्कल ॥
 दलमाहिं नन्ह निवेसैंहु तव देस चालनके चलै ॥ ५० ॥
 तैंह नन्ह हितु मलार अक्खिय वत्त बुदिय भुल्लई ॥
 अरु भुलि माधवकों कहा तुम सौं क जैपुरतैं लई ॥
 सुनतैहि ईश्वरिसिंहपै तव नन्ह कर्गर मुक्कल्यो ॥
 तुमनै कहा सिंभु जानि पुब्ब कुमार खहुवकों छल्यो ॥ ५१ ॥
 सुनि पैत ईश्वरिसिंह धुज्जि रु पुब्ब वत्त सु स्वीकरी ॥
 रु लिखी भई पढ़िले सुही तवतैंहि है मम अहरी ॥

१ तोपां के चल से अपने बजीर को मारकर २ तथा आप बजीर होगया समय
 ३ बिचार कर ४ अपराध ५ महावतला का पुत्र ॥ ४७ ॥ १ बड़ी नदी को ७
 गया ॥ ४८ ॥ ८ यत्र ९ अथ १० जितने रुपये लगे हों वे लेकर ॥ ४९ ॥ ११ ते
 (वे) ११ आज्ञा ॥ ५० ॥ १२ से १४ यत्र १५ पाछक जान कर पाहिजे ॥ ५१ ॥ १६ यत्र

जु उमेद १ माधव १ सों कही सु मही भलो तुल लीजिये
 हरि सों हैं है सुहि अप्प मन्नि रु कुंच दक्खिन कीजिये
 सुनतोंहि यह तब नन्ह आयस कुंच दुंदुभिको दयो ॥
 रु कही नैरेसहिं हंकि मंडहु आन देस मिलयो गयो ॥
 सु कही मलारहु भूप संभर भुम्मि चालतही लहो ॥
 यह व्है न तो हमसंगहैं जयनैर जितन उम्महो ॥ ५३ ॥
 सुहि मन्नि मंत्र उमेद १ माधव १ नन्ह सम्मतिही चढे ॥
 दल भार ओकन ओक ओकन लोक सोकनमें चढे ॥
 कुसलेसनाम भूलायके पति खास हैं पठयो तवे ॥
 पति जानि माधवकों रु अक्खिय अप्पके वसहैं सबे ॥ ५४ ॥
 सु लयो रु सत्यहि सर्व हंकि य लंघि जेपुर गाम के ॥
 लखि लख १००००० दक्खिन सेनकों अरि आदके ढिग धामके
 दलके प्रयान अमान हत्थिन दान पद्धति सिंचई ॥
 बढि फैन गैलन भीति सैलन रीति कंदुककी लई ॥ ५५ ॥
 दल भेट मारुत फेटलै प्रतिमग्ग हारुत भग्गयो ॥
 बन जंतु घोरन ओर ओरन प्रान छोरन लग्गयो ॥
 करि यों प्रयान मिलान आनि वनासके तटपैं करयो ॥
 तह भूप डेरन आय हुलकर नेह नूतन विस्तारयो ॥ ५६ ॥
 सिरुपाव दोय मैहर्घ ओ हय खास दोय २ निवेदये ॥
 पुनि भूप परिकर सर्वकों सिरुपाव उच्च दये नये ॥
 रु कही चलो हम सत्य संघ स्वदेस आनि विथारिहैं ॥
 न बनै जु तोहु समर्थहैं ततकाल जैपुर मारिहैं ॥ ५७ ॥
 पुनि कुंचकै कढि नैर बाविपैं सीम बुंदिय संचरे ॥

१ ईश्वर के सौगन ॥ ५२ ॥ २ उन्मेषसिंह से कहा ॥ ५३ ॥ ३ घर घर में घोड़ा ॥ ५४ ॥ ५ म
 हाथियों के डाण से मार्ग सींचे गये ६ पर्वतों ने उगैद की ॥ ५५ ॥ छेना की फेट से
 पवन ६ हाहाकार शब्द करके भगा १० मुरास ११ नवीन ॥ ५६ ॥ १२ म
 (चंद्रमूल्य) १३ सब परगह को १४ सत्य प्रतिज्ञा वाले हैं सो ॥ ५७ ॥ १५ नगर

मरहट्ट लुट्टन इद्रगढ लाखि श्रील पुरब त्पाँ टरे ॥
 दरसाल दम्म हजार सोलह १६००० बजधरगढपै करे ॥
 ति चढे हि हायन पचपतै, नहिँ देव दक्खिनके भरे ॥ ५८ ॥
 तसमात बासवदुग्गको मरहट्ट लुट्टन उम्महे ॥
 सु उमेद १ माधव १ जानि हैर तिन्ह अह्म आनि खरेरहे ॥
 श्रियमत आन दई रु अक्खिय कोल दम्म दिवायहै ॥
 अरु नाहिँ स्वीकृत एह तो हनिकै हमै दल जायहै ॥ ५९ ॥
 हम रोकि सर्वन दोहु २ सत्यहि आनि डेरन पुग्गये ॥
 तहँ दम्म बासवदुग्गके दसही हजार १०००० चढे दये ॥
 रु कराय माफ हजार सत्तरि ७०००० भूप ताहि बचायकै ॥
 लक्खेरिका पुर सोम किन्न मुकाम सर्वन आयकै ॥ ६० ॥
 तबही तहाँ सन बाघ सतुव स्वीय वीर मल्लारनै ॥
 पठयो वहे पुर लैन भूपति आन फेरन कारनै ॥
 तहँ कुम्म हाकिम हे तिन्है जुरि जग संतुवतै करयो ॥
 मुरि बाघ सतुव जो उदत मल्लारनै सब उच्चरयो ॥ ६१ ॥
 सुनतैहि हुलकर खिजि छुदिय भूपतै कहि मुक्कली ॥
 नहिँ सिक्ख सुभटन देहु तुम हम सैन जैपुरपै दली ॥
 यह अक्खिकै श्रियमतसौं द्रुत सिक्ख सगरको लई ॥
 सुनि निदि" कुम्महिँ नन्हहु खिजि सिक्ख जैपुरपै दई ॥ ६२ ॥
 अरु दैन सत्य विसास नन्ह उमेद डेरनपै गयो ॥
 विसवास भूपहि प्रीति पूगव वैन मजुल छुल्लपो ॥
 बैल वीर बीस हजार २००००तै तुम संग एह मल्लारहै ॥

गाम है १ धनवान लोग पूर्व दिशा को चलेगये २प्रतिवर्ष ३ इन्द्रगढ पर ४पा
 वर्ष से ५ देवसिंह ने ॥ ५८ ॥ ६ इस कारण ७ इन्द्रगढ को ८ रुपये ९ सन
 मको मारकर जावेगी ॥ ५९ ॥ १० घृसान्त (हाल) ॥ ६० ॥ ६१ ॥
 १ ईश्वरीसिंह की निन्दा करके ॥ ६२ ॥ १२ मनोहर १३ सेना

सुहि लै रु अप्पहिं भुम्मि अप्पहिं कुम्म कैठ कुठारहै ॥६३॥
 यह अक्खि दै गज बाजि भूपहिं नन्ह हंकनकों भयो ॥
 रु मल्लारहु तिय गोतमा जुत पुत्र दक्खिन भेजयो ॥
 यह गोतमा मरहठ पुंगव भोजराज सुता हुती ॥
 जामातकों सुत हीन जिहिं सब द्रव्य दै रु रची बुती ॥६४॥
 तब गोतमा सु मल्लार व्याहिय जो पतिव्रतमें रही ॥
 तिहिं तास चूरिय चूनरी बल तै इती प्रभुता लही ॥
 सु पतिव्रता १ अरु पुत्र खंडुव १ नन्ह संगहि मुक्कले ॥
 पुनि लै हजार असी ८०००० चमू चढि नन्ह दक्खिनकों चले ॥६५॥
 तब तीन ३ हठ १ मल्लार १ माधव १ नन्हके पहुँचानकों ॥
 हुव संग पट्टनि चम्मली तट दिन्न आनि मिलानकों ॥
 तँहँ नन्ह केसवदास खत्रिय बुद्धि कुम्म अमात्यकों ॥
 तस हत्थ हुलकर हत्थ दै कहियाहि ठिल्लि न ब्रात्यकों ॥६६॥
 यह सुंद्र पै इहिं बुद्धि बिपिन बुद्धि दैन समत्थहै ॥
 अरु तूहु पँज्ज तँतोपि यासन प्रीतिलायक अत्थहै ॥
 सुनि यों मल्लारहु अक्खई हम स्वामि उँक्त सचेतहैं ॥
 इहिं भूप पै तिहिं कुम्म दैन कही सु मूढ न देतहैं ॥ ६७ ॥
 तसमार्त तास अमात्य जो यह कुम्म सम्मति भिन्नहै ॥
 अबही ततो पतिके कहै हम लाय छतिय लिन्नहै ॥
 परं पत्र यासन लेखि देहु समस्त बुंदिय छोरिबे ॥

१आपको भूमि देवेगा २यह मल्लार कछवाहेरूपी काष्ठ पर कुठार है ॥६३॥ ३मल्लार की स्त्री का नाम है ४उत्तम मरहठे ५जमाई को, जिस भोज पुत्रहीन ने वस्तुति ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ७ कछवाहे ईश्वरीसिंह के सचिव को बुलाकर ८इस संस्कार हीन (शूद्र) को ठेलना (हठाना) मत अर्थात् दूर मत करना ॥ ६६ ॥ ६७ यह (केशवदास खत्री) शूद्र है परन्तु यह १० ब्राह्मणों को बुद्धि देने में ११ समर्थ है १२ तू भी शूद्र है १३ इस कारण भी १४ इससे १५ स्वामी के कहने में १६ परन्तु इसका राजा १७ ईश्वरीसिंह ने ॥६७॥ १८ इस कारण १९ परन्तु २० इससे

सुनि एह केसवदास लिखि दिय नेह नूतन जोरिवे ॥ ६८ ॥
 सु मलार भूपहिं दिन्न ओ सब नन्हकों पहुँचायकैं ॥
 लक्खेरि पत्तनही बहोरि मुकाम मडिप आयकैं ॥
 लिखि देल उदैपुर १ जोधपुर २ कोटा ३ हुलकर प्रेषये ॥
 सब सेन भेजहु अत्य छिन्नहिं श्रीलं जैपुर देसये ॥ ६९ ॥
 लक्खेरिका बिच रक्खि निज भट आन भूपति मढई ॥
 करि यों चढे सब कुच कैं खुरघात छोनिये खडई ॥
 मग माँहि बुडिप ग्राम आयउ तेहु भूपतिके करे ॥
 दरकुच सज्जित सेन कैं जयनेर सम्मुह उत्परे ॥ ७० ॥
 कहलासलौ यह बतवहै सिवहु जरद्वय आरुहे ॥
 डमरूकं डाकिनि लौ भजी सुनि प्रेत इकिय सामुहे ॥
 कलिकार मोदित व्है हसे किलकारि जुगिनि उच्छली ॥
 गहकाय गिहनि गोदको चहकाय चिल्हनिहु चली ॥ ७१ ॥
 डगमगि सैलन सानुतें वनजतु गैलन बिखरै ॥
 फनमाल पेंत्रग पट्टरी सन नचि भू नट उछरै ॥
 लहरै हिंडोरन झोक निंदत नीर सिंधुन सेतु भै ॥
 बिथुरै मवासन आसपासन बास नासन हेतु भै ॥ ७२ ॥
 रु कवध रंखस नारि सन्निभ नारि कच्छपकी धसी ॥
 कलिका अगतियेयकी फटै तिम दंतुली किरिकी नसी ॥

॥ ६८ ॥ १ पत्र २ भेजे ३ घनघान् ॥ ६९ ॥ ४ मृमि खुदी

॥ ७० ॥ ५ पैल पर चढे ६ बाय विशेष ७ युद्ध करानेवाला (नारद) =
 प्रसन्नता की पोली पोल्कर ॥ ७१ ॥ ८ हिलतेहुए पर्वतों के शिखरों से
 वनजतु १० मार्गों में बिखरते हैं ११ शेषनाग की फणमाळा खूबी नट नाचकर
 उछलता है, हिंडोरे के झोकों की निन्दा करती छुई समुद्र की लहरें किनारों
 को १२ भय करती है, आसपास के मेयासों (घोर और लुटेरों के घरों) में बा-
 म के नाश करने का भय होता है ॥ ७२ ॥ और जैसे रामचंद्र के युद्ध में कय-
 ध नामक १३ राखस की गरदन शरीर में घुस गई थी तिसके १४ सदस्य कमठ
 की (द्वन शरीर में घुस गई १५ अगस्त्य पुष्प की फली फटै तैसे १६ पराह की

भय बैग कं पित छागें ज्यों दिगनाग त्यों मद मोचये ॥
 भटभर्ग भासत आत्मभू भट सर्गनासत सोचये ॥ ७३ ॥
 खुर धूलि धुंधरि नाहिं प्राचिय त्यों अवाचिय सुज्झई ॥
 तिमही प्रतीचिय ओ उदीचिय भान बीचिय उज्झई ॥
 पंवमान थकिय अक ठकिय चक चकिय बिच्छुरे ॥
 पहुमी सुरकिय सत्त ७ खंड फिराव चकिय त्यों फुरे ॥ ७४ ॥
 सुरलोक कुकिय रासैं रुकिय तान चुकिय अच्छरी ॥
 जिय भीरु मुकिय क्यों बचैं सब नीर सुकिय मच्छरी ॥
 इम सेन हंकत सत्रु संकत केस कंकतके भये ॥
 प्रतिभा अमंकत बाजि डंकत भुम्भि डंकत हल्लये ॥ ७५ ॥
 भट कुंकुमी करि चैलके प्रभु गैल जितन उम्मेहैं ॥
 कति बाजिराजन भारि तौजन भाजि आजिनकाँ चहैं ॥
 कति उच्चरैं सिर कुंमको धनुं खेत्र लोष्टैं विधायहैं ॥

दंतुली फटी, जैसे १ सिंह के भय से २ बकरी कंपै तैसे दिशाओं के हस्ता
 धुजकर मद छोड़ने लगे और वीरों का तेज देखकर ३ ब्रह्मा ४ संसार के
 नाश का शीघ्र सोच (चिन्ता) करने लगे ॥ ७३ ॥ घोड़ों के खुरों की धूल से
 धुंध होकर ५ पूर्व ६ दक्षिण ७ पश्चिम और ८ उत्तर दिशा नहीं दीखी
 और इन दिशाओं ने सूर्य की ९ किरणों को छोड़ दी तथा सूर्य की किरणों
 ने इन दिशाओं को छोड़ दी १० पवन थककर ११ सूर्य छिप गया और १२
 चकवा चकवा बिछड़ गये, भूमि के सातों खंड मुड़कर १३ घरटी के समान
 फिरने लगे ॥ ७४ ॥ स्वर्ग लोक में कूक होकर १४ लूट्य रुक गया और अप्स-
 राएं गाना श्रुत गईं, जिसप्रकार सम्पूर्ण जल भूख जाने पर १५ मछली नहीं
 बच सकती इसप्रकार १६ कायरों ने जीव छोड़े, इसप्रकार सेना के चलने से
 शत्रु डरकर जैसे १७ कांगसी (कंधी) में केस होवैं तैसे होगये, उस सेना के
 वीर १८ बुद्धि को चमकाते हुए, घोड़ों को कुदाते हुए और भूमि को ढकते हुए
 चले ॥ ७५ ॥ कितने ही वीर १९ केसरिया २० वस्त्र करके स्वामी के साथ श-
 वुओं को जीतने को उत्साह युक्त हुए, कितने ही २१ घोड़ों को २२ चाबक
 मारकर दौड़कर २३ युद्ध चाहते हैं, कितने ही कहते हैं कि युद्ध क्षेत्र में २४
 कछवाहे (ईश्वरीसिंह) के मस्तक को २५ धनुष से २६ ढकल (मिट्टी के ढेले) के
 समान २७ करेंगे और कितने ही कहते हैं कि युद्ध रूपी भ्रमर (अभि) में जय-

कति यों कह रन भौरमें जयनेर नाव भ्रमायेंहैं ॥ ७६ ॥

कहुँ उच्चैरें मम बैल ईश्वरिसिंह पिष्टि श्रीरोहिहै ॥

कहुँ सिंहको न कहंत ओगुन चित्रकारनकोहिहैं ॥

कहुँ सिंहनी जयसिंहकीहु भज्यो तरच्छुहि यों बदै ॥

कहुँ यों पलायन मासदै बल जंत्र रुक्मिणि दुर्मदै ॥ ७७ ॥

इम बीर बुल्लत बीर खुल्लत सेन पिल्लत संचरे ॥

उनियार नागरचारमें गलवै नदीतट उत्तरे ॥

दखिनीन तहैं सेन जे नरूकन गाम ते सब लुटये ॥

तिनमाँहि फूलइता बच्यो नृपके प्रताप न वहाँ गये ॥ ७८ ॥

परिन्यो नरेस अमात्य हरजन इहु पुत दलेलवहाँ ॥

तसमात फूलइता बच्यो नृप कानि रक्खिय मेलवहाँ ॥

बनइटा जाय मुकाम किय पुनि कुच करि उनियारतैं ॥

राजाउतनके ग्राम लुटत बीर हंकि बियारितैं ॥ ७९ ॥

कति दंडि छडत मान खंडत आन मंडत अप्पनी ॥

टोडा१ रु मालपुरा२रु टोंक३ छुराय माधव क्यो धनी ॥

यह जानि ईश्वरिसिंह अक्खिय जे दये ति दये सबैं ॥

सुनि यों मलार कहाय पच्छिय नाँ बिसास रह्यो अबैं ८०

पुर रूपी नाब को भ्रमायेंगे ॥ ७६ ॥ कोई कहता है कि ईश्वरीसिंह को मेरे बैल की पीठ पर १ चढाकेगा, कहीं पर कहते हैं चित्राम का सिंह कुछ पराक्रम नहीं करता यह सिंह का दोष नहीं किन्तु यह दोष २ बितेरे का ही है अर्थात् ईश्वरीसिंह केवल चित्राम का सिंह है, कहीं पर कहते हैं कि जयसिंह की सिंहनी ने ३ घघरे (दोगले) सिंह का ही सेवन किया है, कहीं पर कहते हैं कि ४ मांसभोजियों को मांस देकर ५ सेना रूपी यष्टी से उस (ईश्वरी सिंह) को दुर्मद को रोकेंगे ॥ ७७ ॥ इसप्रकार बोलते हुए और ६ बीर रस को खोलते हुए सेना को बढ़ाकर बीर ७ बल्ले ८ नागरपाल देश में उणिपारा नामक नगर में ९ तहाँ से दक्षिणिया ना॥७८॥ १० वम्मदसिंह की अदब से ॥७९॥ ११ माधवसिंह को बहा का स्वामी (माछिक) किया १२ चार परगने माधवसिंह को और घुरी का राज्य वम्मदसिंह को पहिले दिये थे वे अब भी दिये

तब कुम्भ *कग्गर मुक्कले चहुवान भूपहिँ फोरिबे ॥
 ति उमैद बंघि रु नाँ मुरघो पट्ट जंग दुद्धर जोरिबे ॥
 पुनि कुंच मंडि रु पिप्पलूपुर जाय बाहिनि उत्तरी ॥
 उमराव तीन३न आयकै तँहँ भीर माधव की करी ॥८१॥
 जगतेस१ लंबपुरेस ज्ञान२ तथा सिवापुरको धनी ॥
 पुनि ल्यौहि जालम२ डोडरीपति उल्लस्यो बढती अनी ॥
 खंगार बंसिय कुम्भके उमराव बंधव तीन३ये ॥
 असवार पंद्रहसै१५०० लियेँ मिलि तत्थ माधवके भये ॥८२॥
 पुनि पिप्पलू सन कुच्चकै बढि सैन जैपुर त्यौ सरी ॥
 तँहँ बोधिपादपके तरै इक घात संभरतै टरी ॥
 तस छिन्न कल्प हुती जु साख सु तुष्टि भूपतिपै चली ॥
 लखि ताहि हड्डनको सिरामनि बाजि फैकि कढयोबली ८३
 द्विज दान भोजन ता निमित्त अनेक आदरतै करे ॥
 सब सेन सम्मलि हंकि कैं पुनि जाय फागिय उत्तरे ॥
 चढिकै तहाँ सन दूसरेदिन दबि जैपुरकी मही ॥
 पुर नाम लावलदान जाय मुकास मंडिय वेगही ॥ ८४ ॥
 रहतै घनै दिन बितये तँहँ मंत्र जित्तनको भयो ॥
 दल भीर च्यारि हजार४००० तत्थहि रानको द्रुत पुगगयो ॥
 तिहिँ माँहि सालम रानबंसिय संभु१ भारत भ्रातहो ॥
 रु भबानिदास प्रधान पुत्र गुलाब२ कायथ जातहो ॥ ८५ ॥
 पुनि मेघ३ बेघम नाह भूप उमैद४ साहिपुरा पती ॥
 जसवंत५ देवगढेस त्यौ बिथुरात आहव उन्नती ॥
 इम आदि लौ दल रानके भट भीर हुलकरकी भये ॥
 पुनि द्वैहजार२००० कबंधके भट आनि तत्थहि पुगगये ॥८६॥

* पत्र ॥ ८१ ॥ १ लांबा नामक पुर का पति २ ज्ञानसिंह ३ खंगारोत ४ ईश्वरीसिंह के ॥ ८२ ॥ ५ पीपल के वृक्ष नीचे १ तूटी हुई ७ घोड़ा दौड़ाकर ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ६ मेघसिंह ९ कुच में १० जोधपुर के राजा

तिनमौहिं मालिक दूधर भर सेर १ मेरतिया जथा ॥

मनरूप २ सचिव रु ऊदहर कलरूपान १ सेर ४ उमैर तथा ।

तैंहँ अप्प अप्प बियारि आयस ठारि डेरन उत्तरे ॥

इम पिक्खिं सूरन आनि दूरन पुव्वही मनतैं बरे ॥ ८७ ॥

इतिश्री वशभास्करे महाचम्पू के उत्तरायणो सप्तम ७ राशौ रा
गाबुन्दीसत्कारदेश्यकोटासत्कारोररीकरणपुन श्रीद्वारमहारावस-
हितमिलनाऽनन्तरजगत्सिंह १ दुर्जनशल्प २ छिड़ोलानिवसथशिविर
न्यसनखगडू १ पेटभूपद्वय २।३ रावराट्शिविराऽऽगमनतदनुखगडू
१ माधव १ मैत्रीविधानाऽखिलसैन्यनिर्यागाखारीनदीतटप्रपतनतव
भिमुखकूर्मराजागमनश्रुतसामखगडूकोपकाचणतत्सम्मत्तिसर्वस-
न्तद्धीमवनकूर्मराजाऽऽगामिकार्तिकसानुजविभाग १ बुन्दीक्षपजन
लिखितहुलकरकरदापननिन्दितमहारावशीर्षोदसेनाऽन्तराट्गाज्ञाकट
लुगटनरागाचुगडाउत्तमेघसिंह १ वणिकटेकचन्द २ बुन्दी १ टोडा
२ प्रेषगारुष्टखगडू १ माधवसिंह २ रामपुरप्रतिगमनज्येष्ठजायसिंहि

॥ ८६ ॥ १ मद्र (वमराव) २सेरसिंह १ अपना ४हुक्म देकर ५इसप्रकार धीरों
को देखकर युद्ध होने से पहिले ही अप्सराओं ने आकर मन से उन
को घरे ॥ ८७ ॥

श्रीवशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, राणा का बुन्दी
के सत्कार के बराबर कोटा का सत्कार स्वीकार करना, जिस पीछे नायबारे
में महाराव से मिलने के अनन्तर राणा जगत्सिंह और महाराव दुर्जनशाल
का दीकोला नामक ग्राम में डेरा करना १ खंझ सहित दोनों राजाओं का
रावराजा के डेरे पर आना और जिस पीछे खडू और माधवसिंह का मिश्र
होना २ सय सेना का घडा से निकलकर खारी नदी के किनारे मुकाम करना
और उसके सम्मुख कछयाहों के राजा का आना ३मिलाप होना सुनकर को
प की इच्छावाले खडू की सलाह से सय का सज्जित होना ४राजा ईश्वरीसिंह
का आगे आनेवाले कार्तिक मास में अपने छोटे भाई का घट और बुन्दी
छोड़ने का लिखित (तहरीर) हुलकर के हाथ में देना ५ निन्दा युक्त महाराव
का बदयपुर की सेना के भीतर घास के गांजे लूटना ६ राणा का ईच्छावत
मेघसिंह और चैरय टेकचन्द को बुन्दी और टोडे भेजना ७ क्रोधित खडू और

जयपुरप्रविशतन्महारावबुन्दीमार्गगाराणाभूपत्रय३धुंधरीग्रामाऽऽ
ममनहड्डेन्द्रपुरोधीदयारामाऽऽनयनग्रामसगतपुरसम्भरेशसचिवह -
रजनोपयोगिनीशिविकासमर्पणातत्स्वामिदेशरणाकरणावराड्द्वि-
तीय २ राइयाऽऽत्मजोङ्गमनसुभटोकृतसालमिप्रतापसिंहकूर्मराजबु
न्द्यागमनकोटा १ रामपुर २ जयविचारणप्रताप १ दलेल २ सो
हार्दकरणातदनुजान्नत्यजनप्राप्तयवनेद्रपत्रेश्वरीसिंहदिल्लीगमनदलेल
सिंहमथुरादेहत्यजनकूर्मेशरणास्तंभदुर्गप्रार्थनतदनङ्गीभवनेरानोप
मानप्रत्यन्तेन्द्राऽहमदशाहयुयुत्सुसपरिकरदिल्लीशकुमाराऽहमदशाहक
रतोयाऽभिमुखनिर्याणसरिच्छतद्गुशिविरसंस्थापनयवनसचिवकूर्म
बन्धनविचारणातद्रपत्यक्तवाहिनीवैभवसहड्डप्रताप १ खत्रिनाराय-
णदास २ प्रदुतेश्वरीसिंहस्वपुरसमाविशनप्राप्तदिल्लीशदोर्लिविपत्रसि
तारेश्वरसचिवराजनन्होत्तरदिगाऽऽगमनमाधवसिंहतत्सङ्गसाधनजर

माधवसिंह का रामपुर पीछा जाना और जयसिंह के बड़े पुत्र (ईश्वरीसिंह
का जयपुर में प्रवेश करना ८ उससे महाराव का बुन्दी मांगना और राणा
सहित तीनों राजाओं का धुंधरी नामक ग्राम में आना ९ उम्मेदसिंह के पुरो
हित दयाराम को लाना और सगतपुर नामक ग्राम में उम्मेदसिंह का सचिव
हरजन के उपयोगी पालखी देना और उसका स्वामी के देश में युद्ध करना
१० रावराजा की दूसरी राणी के पुत्र होना ११ सालमसिंह के पुत्र प्रतापसिंह
को हमराव बनाकर राजा ईश्वरीसिंह का बुन्दी आना और कोटा व रामपुर
को जीतने का विचार करना १२ प्रतापसिंह और दलेलसिंह दोनों भाइयों
में मित्रता करना और दलेलसिंह का अन्न छोड़ना १३ जिसपीछे दिल्ली के
बादशाह का पत्र आने से ईश्वरीसिंह का दिल्ली जाना दलेलसिंह का मथुरा में
शरीर छोड़ना और ईश्वरीसिंह का रणथंभ नामक गढ़ मांगना और उसका
अस्वीकार होना १४ ईरान [म्लेच्छ देश] के पति अहमदशाह से युद्ध करने
की इच्छावाले उसके उपमान परगह सहित दिल्ली के पति के पुत्र अहमदशाह
का निकलकर शतद्रु नदी के पास डेरे करना और दिल्ली के वजीर का
कछवाहे ईश्वरीसिंह को कैद करने का विचार करना १५ उसके भय से सेना
को और वैभव को छोड़कर हाडा प्रतापसिंह और खत्री नारायणदास सहित
भागेरुए ईश्वरीसिंह का जयपुर में घुसना १६ दिल्ली के बादशाह के हाथ का
लिङ्गा हुआ पत्र पाकर सितारे के पति के सचिव नन्ह का उत्तर दिशा में

पुरजनपदनिवाहिनगरदक्षिणाएतनाप्रपतननन्ह १ मल्लार २ वर्णाहूत
हूतबुदीन्द्राऽऽगमनयवनद्वय २ शतद्रुयुद्धभवननालीयत्राध्यक्षमनसूर
स्वसचिवमारगापरसैन्यपलायनयवनेशमहाराष्ट्रागमवारगाव्ययव्रव्य
द्रम्मद्वाविंशति २२ लक्षप्रेषणातिरस्कृतकूर्मराजनन्हप्रस्थानतत्परि-
करेन्द्रगढलुगटनविचरणाकुपितोम्मेदसिंह १ माधव १ दक्षिणात्य
वारगानृपदेशाध्यक्षशत्रुरगाकरणातन्नन्हबुन्दीन्द्रशिविराऽऽगमनतत्स
हायमल्लारप्रतिप्रेषणास्वयंदक्षिणागमनोम्मेदसिंह १ माधवसिंह २
सहायीभूतहुलकरोदयपुर १ योधपुर २ कोटा ३ सैन्यसमाऽऽवहन
कूर्मजपनदलुगटनटोडा १ मालपुर २ टोडा ३ नयनसमाहूतसैन्यत्र
य ३ सामिलनं त्रयोविंशो २३ मयूख ॥ २३ ॥ ३०४ ॥

प्रायोन्नजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

नगर लदानाही सुन्पों, साह मुहम्मद नास ॥

सक सर नम वसु ससि १८०५समा, मेचक सावन मास । १ ।

आना १७ उसके साथ माधवसिंह का आना और जयपुर के देश निवाई
नाम नगर में दक्षिण की सेना का मुकाम करना और नन्ह और मल्लार के
पत्र से बुलाये हुए बुन्दी के पति का आना १८ दोनों यवनों का शत्रु नदी
पर युद्ध होना और लोगों के अकसर मनसूरअली का अपने बजीर को मारना
और शत्रु सेना का भागना १९ बादशाह का मरहटों की सेना का आना
रोकपर लगे हुए खरथ के पाईस लाख रुपये भेजना २० ईरबरीसिंह का
तिरस्कार करके नन्ह का गमन करना और उसकी परगह का इन्द्रगढ को
लूटने को जाना और जोध युक्त उम्मेदसिंह और माधवसिंह का दक्षिणियों
को रोकना २१ उम्मेदसिंह के देश के अधिकारियों से शत्रु के युद्ध करने के
कारण नन्ह का बुन्दी के पति के धेरे पर आना और उसकी सहाय पर मल्लार
को भेजना २२ नन्ह का दक्षिण में जाना और उम्मेदसिंह माधवसिंह की
सहाय पर हुलकर का उदयपुर, जोधपुर, काटा की सेना को बुलाना २३
कछवाहे के देश को लूटना और टोडा, मालपुरा और टोंक को प्राप्त करके
गुवाई हुई तीनों सेनाओं के सामिल होने का तीसरा २३ मयूत्र समाप्त हुआ
और आदि से तीनसौ बार १०४ मयूख हुए ॥

१ दिल्ली के बादशाह मुहम्मद का मरना २ कृष्ण पक्ष ॥ १ ॥

ताको सुत बैठो तखत, अहमदसाह अनूप ॥

वह मनसूरअली सचिव, रखयो पुनि अघरूप ॥ २ ॥

॥ षट्पात् ॥

तिनहि मुकामनतैं मलार निज भट गंगाधर ॥

सहस्र अट्ट ८००० दल संग दै रु पठयो जैपुर पर ॥

तिहिं जाय रु जयनैर द्वार अरैरन तोमर हनि ॥

बुलवाये प्रतिबीरैं भीरु अब समुख होहु भनि ॥

कोटके निकट मालिन कुटिय बाटिन सहित प्रजारि दिय ॥

कूरमहु तुंग प्रासाद चढि यह चरित्र आतुर लखिय ॥ ३ ॥

तब नृप ईश्वरिसिंह कटक पिल्लयो तिन उपपर ॥

सेखाउत सिवसिंह बिदित निकस्यो बीरनवर ॥

यह कूरम निज असन बेर दुंदुभि बजवावैं ॥

लकखन रंक जिमाय प्रीत ओदन तब पावैं ॥

तिहिं खुल्लि अरैर जयनैरके सजैव बाजि सम्मुह कियउ ॥

मरइठ भटन जयकारैं मिलि दुसह मार खग्ननदियउ ॥ ४ ॥

सीकरपतिको लोह कटक दक्खिन सिर बज्ज्यो ॥

घरिय दोय २ घमसाँन भुकति गंगाधर भज्ज्यो ॥

पंच ५ कोस पहुँचाय मुख्यो प्रतिमँग सेखाउत ॥

जाय निवेदिय विजय नृपहिं बंदीनैं बिरुद नुत ॥

अरु कहिय जो न आपुन चढहु तो सत्रुन सैन दारिहैं ॥

नृप कहिय जेठ अप्पन मिल रु संगर बहुरि सुधारिहैं ॥ ५ ॥

१ पापी को ॥ २ दरवाजे के किवाड़ों पर भाले मारकर ३ शत्रुओं को ४ हे कायरों ५ ब
गीचियों सहित मालियों की झूकड़ियों जला दी ६ ऊँच महल पर ७ गीड़ित होकर ॥ ३ ॥

८ अपने भोजन करते समय ९ नगरा १० अन्न ११ कपाट खोलकर १२ शीघ्र

१३ जय करनेवाला ॥ ४ ॥ १४ युद्ध १५ उल्टे मार्ग (पीछा) आकर ईश्वरीसिंह को

विजय निवेदन किया १६ भाट लोगों से स्तुति को सुनता हुआ १७ से १८

भरतपुर के जाट ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

पठये यह कहि भरतपुर, कग्गर जट्ट समीप ॥ ✓

आयहु सूरजमल इत, महत जुड महीप ॥ ६ ॥ ✓

गहिय ढिग लौ बैठिहैं, तुमहिं बीर अति आघ ॥ ✓

हिम दक्खिन सिर होहु अब, दुपहर जेठ निदाघ ॥ ७ ॥

इम कग्गर हुत बचिकैं, चढिग जट्ट रविमल्ल ॥ ✓

जयपत्तन दरकुंच जँव, आयो कटक उमल्ल ॥ ८ ॥ ✓

नगर लदानाँतैं कियउ, इत सब दलन प्रयान ॥ ✓

सावन उज्ज्वल भूत १४ सक, मिक्षि सर नभ धृति १८०५ मान ॥ ९ ॥

इठ पूरब हुलकर रचे, बगरू नगर मुकाम ॥ ✓

तँहँ सन लियउ मलार तब, दसहजार १०००० दमदाम ॥ १० ॥

रानकँटक अतर गयउ, पुनि दक्खिन दलरार्य ॥

भिन्न भिन्न सब भट किये, मोदित डेरन जाय ॥

साहिपुरेसहिं आदिदै, सबहि रान उमराव ॥

इक्क १ इक्क १ हय नजरि करि, झुल्ले लरन बढाव ॥ १२ ॥

तेदनतर मरुधर कटक, पहुँच्यो हुलकर नाथ ॥

अमयसिंह भट बर आखिलें, सबोधे हित साथ ॥ १३ ॥

खासा दुव २ हय दुव २ हँपी, साखति पुरैंट समान ॥

चारु करैंसु विनीतैं चउ ४, पीनै रु रँजत पलान ॥ १४ ॥

त्पोहि क्रमेर्लक दिग्घ तनु, भौरबाह पंचास ५० ॥

॥ ६ ॥ दक्षिणियों रूपी १ घरफ के ऊपर २ ताप (घाम) अथवा ग्रीष्म ऋतुका

॥ ७ ॥ १ सूर्यमल्ल ४ शीघ्र ॥ = ॥ ५ शुकुल पक्ष ॥ ९ ॥ ६ दक्ष के रूपये ॥ १० ॥

७ राधा की सेना के भीतर गया देशी प्राकृत के मतानुसार 'ए' और 'ई' को

'इय' और 'औ' और 'ब' को 'उब' होता है सा कव रचना में उपयोगी होने के

कारण ग्रहण किया है ८ सेनापति मलार ॥ ११ ॥ १२ ॥ ९ जिसपीछे १०

सबको ११ मिम्रित किये ॥ १३ ॥ १२ घोड़िया १३ सुर्बण की १४ सुन्दर

ऊँट १५ ओष्ठ शिखा पायेहुए १६ पुष्ट १७ बाँकी के ॥ १४ ॥ १८ यन्त्रे शरीरवाले

ऊँट १६ भारवरदारी के

मरुपति एते ५८ मुकले, प्रिय सखे हुल कर पास ॥ १५ ॥
 ते सब अंत्य निवेदये, सेरसिंह १ मनरूप २ ॥
 इक १ इक हथ पुनि अप्पने, अप्पे मे २ ॥ १६ ॥
 तिनहि मुकामन पंचसत ५००, कोटा के पासवार ॥
 आये सम्मलि आहुरन, चिंतत बिजय पुंचार ॥ १७ ॥
 अखयराम १ कायथ अरु, नगर नागद १ नाथ ॥
 माधानी मोहन कुलज, जोध २ मुख दल साथ ॥ १८ ॥
 तिनहूको सनमान किय, हुल कर डेरन जाय ॥
 इक १ इक घोटक अप्पये, प्रचुर प्रीति उन पाय ॥ १९ ॥

॥ रुचिरा ॥

तहँ माधव इक कपट बिथारिय अग्रज परिकर फोरनकों ॥
 कन्ह १ वकील बहुरि गोगाउतर मिलि कूरम मन मोरनकों ॥
 प्रतिउत्तर समुझै तिम कंगर जैपुर सचिवन नाम रचे ॥
 दै चर हथ कहिय अग्रज चर इनहिं लखैं तब मोदमचे ॥ २० ॥
 यहसुनि चर दल लहि जैपुर गंत जानि परायन हथ परयो ॥
 ईश्वरसिंह हु लखि तिन पत्रन व्है अति आकुल सोक करयो ॥
 जिन अभिधान लिखे उन पत्रन तिन प्रति अखिय तुमहु पढो ॥
 हरगोबिंद प्रमुख सुनि बुलिय उन छल किय तुम लरन चढो ॥ २१ ॥
 ईश्वरसिंह सु सुनि गहि मोन रु जट्ट सहित दल लरन सजे ॥

१ लखा (मित्र) ॥ १५ ॥ २ यहाँ निजर किये ॥ १६ ॥ ३ युद्ध करने को ॥ १७ ॥ ४ माधोसिंहों
 लाडा ॥ १८ ॥ ५ घोड़ा ६ बहुत प्रीति पाकर ॥ १९ ॥ ७ बड़े भाई (ईश्वरीसिंह की)
 परगन को फौजने के लिये माधवसिंह ने एक कपट रचा ८ कछवाहों का
 मन मोदने के लिये ९ उनके पहिले के भेजे हुए पत्रों के उत्तर समझे जावें
 ऐसे जयपुर के सचिवों के नाम १० पत्र रचे ११ हलकारे के हाथ १२ ईश्वरीसिंह
 का नौकर देख लेवै तब हर्ष होवै ॥ २० ॥ ११ गया १४ पैलों के हाथ में
 १५ जिन के नाम १६ आदि ॥ २१ ॥ भरतपुर के जादे सहित लड़ने का
 १७ सेना सजी

मरहटाता जैपुर पर सेना भेजना] सप्तमराशि चतुर्विंशत्ययूख (३४१)

हेल हयन वारन गन दृष्टितै बंबक त्रबंक बहुल बजै ॥
 इत वगछव सुधसिंह सुवन नृप समुद कबधन सिविर गयो ॥
 मारन मुदित मिले नति पूरब घोटक इकशइक१ भेट भयो ॥ २२ ॥
 इत पडित पहुँच्यो गगाधर पुनि पुर अँरन सेल दनै ॥
 पुरजन पकरि सहर बढिरागत बिदित बिहारिय मुडि धनै ॥
 ईश्वरिसिंह सु सुनि सज्जित करि तीस सईस ३०००० निज क-
 टक चढ्यो ॥

संगहि जट अधिप रविर्मल्लहु बादिनि गाँहिनि दकि बढ्यो ॥ २३ ॥
 सक सर नभ वसु ससि १८०५ सम्मित सैम भद असित गत दो/
 १७५१ जि२ दिना ॥

किरि रैद तुष्टि छुष्टि सत्य रु नृप वैसुमति फुटिय समय विना ॥
 हाक प्रचुर दिस दिस प्रतिदौरन हयन हजारन जूँहजुरे ॥
 असह अवानक अनउपमानक घन रँव आनक निकैर घुरे ॥ २४ ॥

इतिश्री वराभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणो सप्तम ७ राशौ लदायापु
 रसम्बिदितगिविरसमस्तसैन्यदिल्लीशशाहमुहुम्मदमरगाशमनशूरस-
 चिवतकुमाराइमदशाहयवनेन्दीभवनमल्लाराष्टसहस्र८०००सैन्यसहि
 तसेनापतिगङ्गाधरजयपुरप्रेषणातत्तोरणा सरतोमरप्रहारयाबाक्षाऽऽर

१घोड़ों का हिसना २हाथियों के समूह की गर्जना ३ नगारे और ४ तासे बहुत
 चजे ५ हर्ष सहित ६ राठोड़ों के डेरे गया ॥ २१ ॥ ७ किवाड़ों पर आले
 मारे ८ शहर से बाहिर आपेहुप पुर के मनुष्यों को पकड़ कर प्रसिद्ध मुहन
 कराके निकाल दिये ९ सूर्यमल्ल १० शत्रुजा को मर्दा करनेवाली सेना को लेकर
 ॥ २१ ॥ ११ समा (घर्य) पराक्रम छटकर १२घराह के दत्त सूदे १३भूमि द्वारपालों की
 १४ बहुत हाक १५ हजारों घोड़ों के समूह जुड़े नहीं सहाजावे ऐसा १६वर्मान
 रहित अथानक १७मेघ की गर्जना के समान नगरों का १८समूह यजा ॥ २४ ॥

श्रीवराभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, लदाना नगर में
 सय सेना का खेरा करके दिल्ली के बादशाह मुहम्मद का मरगा सुनना और
 शूर व सचिवों का वस के कुमार अहमदशाह को बादशाह करना १ मल्लार का
 ग्राठ हजार सेना सहित सेनापति गगाधर को जयपुर भेजना और उस का

मादिप्रज्वालन जायसिंहितत्सहायाऽर्थरववंशीयसेखाउतशिवसिंहनि
 स्सारणातत्तुमुलरणागङ्गाधरपलायनसेखाउत्तप्रतिगमनरवयंनिष्कस-
 नौचितनिगदनकूर्मराजभरतपुरपत्रप्रेषणातदधीशजट्टेन्द्रसूर्यमल्ला-
 ऽऽनयनगदिकास्पृक्तदुपवेशनस्वीकरणविदितवर्णादूतसूर्यमल्लजय
 पुरागमनसचसूमल्लार १ बुन्दीन्द्र २ माधवा ३ दयपुर १ योधपुर २
 कोटा ३ सैन्यबगरूपुरप्रपतनतद्वद्वयोद्वरणाहुलकरसर्वसार्यसै-
 न्यमुख्यसम्मननमित्रमरुराजप्रेषितहयकरभादिद्रव्यमल्लाराङ्गीकर-
 णाभूतसिद्धभविष्यस्वागतोचितकोटाकटकाऽऽगमनमाधवसिंहप्रति-
 वचनव्यंजककौहक्यपत्रजयपुटभेदनप्रेषणातत्सदूतपरप्रत्यक्षीभव-
 उजायसिंहिवञ्चकविवेचनमोहनहरगोविन्दादिपारवाञ्चक्यप्रकटीकरण
 समानकालाऽधिकरणाहट्टेन्द्र १ गङ्गाधरसंगतमरुसैन्यशिविर २ जय
 पुरा २ ऽग्राऽगमहयोपायनपुरकवाटध्वंसननागरमुण्डनाक्रन्दन ३ ग्रहा
 नगर के द्वार के कपाटों पर भाला मारना २ बाहर के बाग आदि को जलाना
 और जयसिंह के पुत्र का उनकी सहाय के अर्थ अपने वंशवाले सेलाचत शिव-
 सिंह को भेजना ३ उसके भयंकर युद्ध से गंगाधर का भागना और सेलाचत
 का पीछे आकर ईश्वरीसिंह के बाहर निकलने की उचित घाती कहना ४
 ईश्वरीसिंह का भरतपुर पत्र भेजना और वहाँ के पति जाटों के राजा सूर्य-
 मल्ल को बुलाना ५ गादी को छूते हुए बैठने के स्वीकार के पत्र को जानकर
 सूर्यमल्ल का जयपुर आना ६ सेना सहित मल्लार, उम्मेदसिंह, माधवसिंह और
 उदयपुर, जोधपुर, कोटा की सेना का बगरूपुर में मुकाम करना और वहाँ
 से दंड के रूप में लेना ७ हुलकर का सब के साथ सेना के मुख्य सरदारों को
 सन्मान करना और मल्लार का अपने मित्र मारवाड़ के पति के भेजे हुए
 घोड़े, ऊँट आदि द्रव्य को स्वीकार करना और आगे आये हुएओं का आदर
 सिद्ध करके आगे के उचित सत्कार के लिये कोटा की सेना में आना ८ मा-
 धवसिंह का, प्रति उत्तर जाना जावै ऐसा छल का पत्र जयपुर भेजना और
 वो उसके दूत से प्रत्यक्ष होकर जयसिंह के पुत्र (ईश्वरीसिंह) का उस ठग के
 विचार से मोहित होना और हरगोविन्द आदि का शत्रु का छल प्रकट करना
 ९ एक ही समय में हाडाओं के राजा (उम्मेदसिंह) और गंगाधर के साथ
 मारवाड़ की सेना के डेरों में और जयपुर के आगे आना, हाडा के तो घोड़ा
 नजर होना और गंगाधर का पुर का कवाड़ों को तोड़ना १० नगर के लोगों

श्रवणा ४ जट्टसूर्यमल्लाऽनूनेश्वरीसिंहाऽरात्पनीकाऽभिमुखनिस्सर
णावतुर्विरो २४ मयूख ॥ २४ ॥ आदित ॥ ३०५ ॥

। शुद्धजजदेशापापमाकृतभापा ॥

॥ मनोहरम् ॥

वायन५२ वरनेतै सरस्वतीको सरवरव,
वेदिजाको बस्त्रज्यो दुसासनके करतै ॥
छद् छप्पईतै ज्यो प्रपचित प्रसर पुज,
वीज प्रमधातै बेरे बुद्धै वारिधरतै ॥
वारिधितै वीचि मारतडतै मरीचि मित ॥
तरल तरंगा स्रोत गगा गिरिवरतै,
गोतमतै न्याय राजराजतै ज्यो राय असे
कूरम कटक कढ्यो जैपुर नगरतै ॥ १ ॥
आगतही पडित प्रधान तते गगाधर,
फारसे चखाप लोह मुरयो तजि खेतुहै ॥
लागो पीठि कैरम विनाश्रम विजय जानि,

का सुदन करना, उनका रोना और पकड़ना सुनकर जाट सूर्यमल्ल के साथ
ईश्वरीसिंह का शत्रु सेना के सम्मुख निकलने का चाँपीसवा २४ मयूख हुआ
और आदि से तीनसौ पाग १०५ मयूख हुए ॥

अब आगे छोटी वस्तु से बड़ी वस्तु के निकलने की उपमा देते हैं कि वायन
ज्यों (अक्षरों) से सरस्वती का सूर्यस्य (ससार भर की सम्पूर्ण विद्या
निकला जैसे शौर बुद्धशासन के हाथ से १ ब्रौपवी का वस्त्र निकला जैसे और
छप्पय छद् से २ रपाष्ट्रया प्रस्तार का समूह निकला जैसे "छप्पय छन्द का
प्रस्तार बहुत बड़ा होता है" ४ पृथ्वी से सम्पूर्ण वस्तु का धीज निकला जैसे
मेघ से ५ शरीर और जलकण निकले "जैसे मेघ से मच्छी मँवक आदि अस-
ह्य जीवा की पृष्टि होती है" समुद्र से ६ लहर निकलें जैसे और सूर्य से ७
किरणें निकलें जैसे, हिमालय पर्वत से ८ चपल तरंगवाली गगा की धारा
निकली जैसे, गोतम मुनि से न्याय (न्यायशास्त्र) और जैसे, ९ कुपेर से १० धन
निकला जैसे जयपुर नगर से कछवाहे ईश्वरीसिंह की सेना निकली ॥ १ ॥
बिना ही श्रम विजय मिलना जानकर ११ कछवाहा ईश्वरीसिंह पीठ खग

२/१,
५

✓ * जट्टन समेतु सज्ज संगर सचेतुहैं ॥

बड़िस बपाके लोभ लीन महामीन जैसे,
डोरि अँचिवेतैं नीर तीर आनि लेतुहैं ॥

जैपुरनरेस आनि डारयो यों मल्लारपैं ज्यों,
डाकिनिके डेरा डारको डारि देतुहैं ॥ २ ॥

आवत सुनत हुंढाडरको कटक इत,
अपर अनीक हिय पंकज खिलतुहैं ॥

बुंदीपति १ माधव २ मल्लार ३ असवार होत,
सिसकतु सेस अंग कच्छप गिलतुहैं ॥

सिधू राग लागैं खँचि खगैं अनुरागैं आनि,
हाडे तानि बागैं बढि आगैंको मिलतुहैं ॥

नयन गुलाबी आबी छत्रननैं छाबी भूमि,
एडिनकी दाबी नाँ अँगूठन मिलतुहैं ॥ ३ ॥

बान नभ अट्ट भू १८०५ समान सकृद्विक्रमके,
भद्व चउत्थी ४ स्याम भालन मिलनको ॥

नैर बगरूके खेत पंचों ५ सेन सज्ज करि,
मंडयो मंगरूर हंकि सभुह मिलनको ॥

आसिक अर्नाके बाँद अच्छरि बनीके फन,
फोरत फनीके धार धारन मिलनको ॥

हाडा छत्रधार १ और माधव २ मल्लार ३ लागे ॥

✓ * जाटों सहित युद्ध पर सचेत होकर सजा सो + कांटे (काटिये) में लगाई हुई
चरबी के लोभ से लगनेवाला + बड़ा मच्छ खँचने से जैसे जल के किनारे
आजाता है तैसे गंगाघर खपी काटिये ने जयपुर के राजा को मल्लारके पास
ऐसे ला डाला जैसे डाकिनिके डेरों पर बचे को ला डाल देते हैं ॥ २ ॥ १ शत्रु
की सेना के २ प्रीति करके गुलाब से (लाल) नेत्रों की रेशोभा ४ छाई हुई ५
जिस भूमि को एही से दबाई वह अँगूठे को नहीं मिलती अर्थात् पीछे पमन-
हीं लगते ॥ ३ ॥ ६ कृष्णपत्त ७ घमंड ८ ओषनाग के ९ छत्र धारण करनेवाला

राहुब्देकें कूरम कैलानिधि गिलनकों ॥ ४ ॥
 चढत चमूकै चोंकि चडी चढकाय गन,
 गिद्धि गढकाय खगे खेवपाल खिल्लैपैं ॥
 तरल तुखार सार पक्खर अपार नाद,
 प्रचुर प्रसार जो न भूतकार झिल्लैपैं ॥
 घुमहि घटाले हड्ड हलकरवाले बीर,
 झाले भुज भाले चाले दीठि मन मिळीपैं ॥
 कूदत कैलावा नागपेच लपटावा देत,
 कूरमपैं कावा देत दावा देत दिळीपैं ॥ ५ ॥
 प्रथम मिलाप रचि तोपनको ताप,
 कपिलेसँ कैसो माप बाप कालको बिथारयो त्यों ॥
 करकि कराल सोरभाल विकराल कैलि,
 फौजन बिसाल ज्वालमाल जग जारयो त्यों ॥
 गोजनके गोन पीलुँ मत्ते पोन पैत्ते करि,
 तीनों३ भौन तत्ते करि प्रलय प्रसारयो त्यों ॥
 नालिनको नाद यों निहारयो बगरूके जग,
 मदरको मारयो ज्यों पयोनिधि पुकारयो त्यों ॥ ६ ॥

॥ घनाक्षरी ॥

परत पलीते घोर जाम जुगर बाते छूटि,
 फैरनपैं फैर नर हैवैर मरत जात ॥
 सिलगत सोर ओर ओर जातवेदँ जोरि,

(राजा) १ कछवाहे रूपी चन्द्रमा को ॥ ४ ॥ २ फूलकर (प्रसन्न हाकर) ३
 चपल घोड़े ४ तरवार ५ हाथियों के कंधों पर हो हो कर कूदते हैं ६ गोल
 छुवा ॥ ५ ॥ ७ कपिलदेव के आप के समान ८ काश का भी पिता "अवि-
 कता घताने में बाप को घताने की लोकोक्ति है" ९ अथवा १० लपी छलांगों से
 ११ मस्त हाथियों को पथन के १२ पक्ष के समान परके १३ तोपों का शब्द १४ मंद
 राग का मारा हुआ १५ समुद्र ॥ ६ ॥ १६ दो प्रहर १७ घोड़े १८ अग्नि के

जिलेह जैलूमी जंबूदीपकी जरत जात ॥
 जंग बगरूके घोस कोसन पहुलि रुंधि,
 धूम धीरवीकी धुंधि धूसर परत जात ॥
 सँकसी करि मूर जैसमकसी तोप लँकसी गज,
 मकसीपर लौलै काल चकसीसी करतजात ॥७॥
 गान नव गोले घमसानन उढानन लौ,
 धानन किंसानन त्यों प्रानन लुनत जात ॥
 दाहन दुसह अवगोहन विजय वेद,
 चंड कछवाहन सिपाहन चुनत जात ॥
 दगि दगि दाँव ताव अतुल अँलान लगि,
 अगि इकतार आर भारसी भुनत जात ॥
 ताँकै तिन तोपन अवाजन सुनत त्योंही,
 तोपनके ताकेहूँ अवाजन सुनत जात ॥ ८ ॥
 प्रापोन्नजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ मुक्तादाम ॥

रची बगरू इम तोपन रारि, अगे अँय गोल्हक पावक आरि ॥
 भये कैचमाल मई सब भोन, गिरै बहु वारन गोल्हान गोन ॥ ९ ॥
 उहँ वर हैवर त्यों असवार, बहँ जम मग कि नैर बजार ॥

अल से १ घोडा २ घोडा की सामग्री (सजावट) ३ शब्द ४ सूरज का
 साँची करके ५ सलख (संलुख) ६ लाखों रुपयों के हाथियों को अथवा का-
 ले हाथियों को "तोप, बंदूक का निशाना काले रंग का ही करते है" ॥ ७ ॥
 ७ नवीन युद्ध में १ कर से लोक धान को काटे जैसे १० प्रायों को काटती है ११
 शीघ्रता से विजय का थाह लेती हुई १२ अग्नि १३ तुलना रहित अग्नि का समूह
 १४ निरन्तर १५ उन तापों को देखते हैं सो १६ उन तापों को ताक (मिस्त) में आये
 हुआ की आवाज (शब्द) मात्र ही सुनते हैं कि वह भी थे ॥ ८ ॥ १७ लोहे के गोले
 १८ सर्व भर कचनार मय (लाल) होगये (कचनार का रंग लाल होता है अथवा
 मरनेवाले मनुष्यों की अधिकता से सब भूमि केशों की मालामई होगई) गोलों
 के चलने से बहुत १९ हाथी गिरते हैं ॥ ९ ॥ इसी प्रकार अष्ट २० घोड़े और घोड़ों

उहैं दगि गोर कलाकल अर्ध, गिरैं सुनि गज्जत गैबिमानि गंभ१०
 हलैं भुव पन्नग सांस हजार, मचैं किंरि तुड मचकन मार ॥
 नचैं जिम मारुत बारिधि नाव, भयो इम छोनिय तडव भाव ॥ ११ ॥
 भये जड जोगिय छुट्टि समाधि, बढयो सब ओर प्रजागर व्याधि ॥
 भन्यो विधि लोकें यनावन भार, करी हरिसों द्रुत जाय पुकार १२
 लगेँ श्रेय गोलक मडत लोप, उहैं ध्वजदड मयूगन ओप ॥
 धरत्थर भूजिम पोमि'नि नीर, सैंर जिम ग्रीखम तप्त सैंमीर ॥ १३ ॥
 उहैं हय श्रेय भ्रमैं गति चक्र, मनो इन्ह पच्छन कट्टिय सैंक्र ॥
 रचैं बहु खेल मजगत रुड, बनैं चँतुरी परि मुडन मुड ॥ १४ ॥
 छिकैं गज मत्त चिकैरिन मारि, देरी गिरि सन्निभं होत दरारि ॥
 उहैं बहु सूर गरूर अघाय, विनाँ श्रम दूरन लुवत जाय ॥ १५ ॥
 कडैं जित गोलैंक बेग बिथार, बनैं तित आयतैं पथ बजार ॥

फ सवार उबते हैं, जम का माग बढ़ता है सो माना नगर का बजार बढ़ता है, पारुद कलाकल करके १ आकाश में उबता है सो गर्जना सुनकर २ ग-
 भिषियों के १ गर्भ गिरते हैं ॥ १० ॥ शेष के मस्तक के हजारों पर भूमि हिलती
 है और ४ पाराव की तुष्टा पर मचका की मार लगती है, जिस प्रकार ५
 पवन से ६ समुद्र में नाव नचै तिस प्रकार ७ भूमि के नयने का भाव हुआ
 ॥ ११ ॥ समाधि छूटकर योगी दूर्ध्व होगये (ज्ञान शक्ति नहीं रही) चारों ओर
 ८ जागरण का राग बधा "बिता के कारण निद्रा नहीं आवै उसका नाम
 प्रजागर है" ब्रह्मा ने ९ लोक बनाने का भार कहा और १० शीघ्र जाकर
 बिष्णु से पुकार करी ॥ १२ ॥ ११ छोड़े के गोळे लगकर नाश करते हैं और
 मयूरा की शोभा से भयजा दंड उबत हैं, जैसे पानी में १२ पद्मिनी (कुसुदिनी)
 घूँजै तैसे भूमि घूँजती है और ग्रीष्म में १३ चलै ऐसा १४ गरम पवन चलाता
 है ॥ १३ ॥ छोड़े उडकर १५ आकाश में गोलाकार फिरते हैं सो मानों १६
 इन्द्र न इनकी पालें काटछाही हैं "इन्द्र ने घोड़ों की पालें काटीं सो कथा
 पुराणों में सविस्तर है" ऊँड छूट कर कई खेल करते हैं और मस्तक पर मस्तक
 पडकर १७ चतुररियें (चँतरियें) घनती हैं ॥ १४ ॥ मस्त हाथी १८ बीस मार मार
 कर छिदते हैं और १९ पर्वत की गुफा के २० सदृश दरारें होती हैं, अपार घमंड
 बाजे पट्टत वीर उबते हैं और बिना ही परिभ्रम अप्सराओं के जा खुमते हैं
 ॥ १५ ॥ ११ गोले जिधर घेग फैलाकर निकलत हैं वधर ही १२ बाँडे लगे बजार बन-

गहँ भुव तोप चरखन *चक्र, लगेँ कलि गोलक देत ललक ॥१६॥
जगैँ कति पुंज पताकन ज्वाल, कगैँ जिय माइत होरिय आल ॥
मच्यो बगरूपुर †उल्लुक् मेह, गिरैँ बहु ‡शोध ॥ अटालक गेह ॥१७॥
हरैँ नचि थेइन *पन्नगहार, डरावत डाकिनि जेत डकार ॥

अनंतहिँ नागिनियाँ उचरंत, कहो किस सेक घमंकत कंत ॥ १८ ॥
नही परिरंभन स्पृष्टक आदि८, नही उपगूहन ओर अनादि ॥

ललाटक आदिक चुंबन८ नाँहि, नवीन वनेँ रसना रन नाँहि ॥१९॥

॥ वननाँहि१ रननाँहि२ अन्त्यानुप्रासः१ ॥

नककखँहिँ लै८नख अप्पत नाह, उठैँ नहिँ क्यौँ रति केलि उछाह
न गढक आदि८ बनेँ रदनोदँ, सनेँ किस नाथ घनी तिय मोदा२०॥
नवहैँ परिरंभन आदिहिँ च्यारि४, नक्यौँ तब दुख लहैँ हम नारि
कही यह नागिनि सेसहिँ कथ, बयो तब नागँ प्रिया भरि बत्थ२१
इतैँ भुव बुंदियको अधिराज१, उतैँ दृढ जैपुर भूपति१ आज ॥

लरैँ दुव२ सज्ज चमू रचि लैप, धुजैँ इहिँ कारन अप्पन धाम२२
सुन्यौँ इमनागिनि संगर सोर, रही चुप रुद्धिष सोहँन गोर ॥

कहैँ रसना जिस दोय हजार२०००, परैँ तिय नागिनिकौँ दुख प्यार
जाते हैं; तोपों के चरखों के *पाहिधे श्मि से गडते हैं और ललकार करते हुँगे
गोले निकलते हैं ॥ १६ ॥ कितने ही ध्वजाओं के सखूह जलते हैं सो मानों †
पंघन से होली की झाल जगती है, बगरूपुर में ‡अंगीरों (निर्धूम अग्नि)
की वर्षा हुई जिससे बहुत बहल ॥ छतें और घर गिरे ॥ १७ ॥ × शिव
नाचते हैं १ शेषनाग से सर्पिणियाँ कहती हैं ॥ १८ ॥ २ आलिङ्गन ३ वात्स्या
यन कृत काम सूत्र में स्पृष्टक आदि आठ प्रकार के आलिङ्गन लिखे हैं जिस
का वर्णन अश्लील होने के कारण हमने छोड़ दिया है ४ चुंबन भी वहीं पर
आठ प्रकार के लिखे हैं ५ कटिमेखला का पजना अथवा लहँग का नाड़ा खोलने
का युद्ध ॥ १९ ॥ ६ नखझल भी काम शास्त्र में आठ प्रकार का लिखा है सो हे
पति काख में लेकर नखचार क्यौँ नहीं देते ७ वहीं पर गूढक आदि आठ प्रकार
के दन्त कृत हैं ८ हे पति आपकी बहुत स्त्रियों को कैसे मारें ॥ २० ॥ ९ सुजाँ
में भीड़ना ये परिरंभ भी काम सूत्र में चार प्रकार के लिखे हैं १० शेषनाग ने
कहा ॥ २१ ॥ ११ पंक्ति रच कर ॥ २२ ॥ १२ मैथुन का भय (अन्यसंभोगिता
का दुःख) मिटा अथवा मूर्छा का भय मिटा १३ प्यार के कारण ॥ २३ ॥

गहर्हि *सूकरिका इत बुल्लि डिगे किम दंतुलि टारत हुल्लि ॥
 नह्यो तब तुड टिकै नहिं कोल, बद्यो सुहि कुम्म दुली प्रति बोला ॥
 भये अधलोकहु यों श्मर भीत, बनै ब्रह्मंड मनो धिपरीत ॥
 अरे इम हैर दल खगगन खेरि, लयो मरहट्टन कूरम घेरि ॥ २५ ॥

॥ पट्टपात ॥

दगत छई दुहुँरओर तोप पट मदन बितानन ॥
 आतप हुव तपि अक चक हुव स्वेदित आनन ॥
 इहि अतर आसार मुदिर उज्झलि अति मडिय ॥
 बहि सुख सीतल बात खेद आतप भव खडिय ॥
 दुव २ घटिय होय दाता जलद गाढ कृपनपन पुनि गडिय ॥
 पहुँ राम तदिन बगरू पहुँमि बाहि रुदिर सम्मलि बडिय ॥ २६ ॥

॥ दोहा ॥

मरहट्टे रुक्त मुँदिर, जुरे बहुरि जुझार ॥
 इक ऊँचे थल पर चढे, माधव ३ दह २ मलार ३ ॥ २७ ॥
 तोप तहाँ सन त्रिगुन खँट ६।१८, माधवकी चलवाय ॥
 कूरमपतिके गज निकट, गोले लागिय जाय ॥ २८ ॥
 गो इतनै रवि चैरमगिरि, साँय समय बिँधाय ॥
 भीमनिर्सी आगम भयो, दिम दिस तिमिर दिखाय ॥ २९ ॥

धराह की ली किमठने भी जिसकी ली (कमठी) से वही थपन कहा ॥ २४ ॥
 श्मर से ॥ २५ ॥ मोम के १ पट्टा के तने छुए ढेरों में १ मूर्य तपकर २ घाम (गरमी)
 दुई जिससे सेना के मुख पर पसीना होगया इसी बीच में मेघ ने चकल कर
 १ महुत मेघ धारा धरसाई जिस से शीतल पवन चलकर उताप से उत्पन्न हुए
 दु म को मिटाया ८ उस मेघ ने दो घड़ी तक दानीपन काके फिर कृपणता
 करी (पछ होगया) ९ हे प्रभु रामसिंह उस दिन बगरू की भूमि में पानी
 और १० छधिर सामिल ही रहा ॥ २३ ॥ ११ मेघ के रुकते ही ॥ २७ ॥ १२
 अठारह (छ को तीन से गुणा करने से १८ होते हैं) ॥ २७ ॥ २८ ॥ १३ सूर्य अस्ता-
 पल पर गया १४ संध्या समय १५ करके १६ भयकर रात्रि का ॥ २६ ॥

फिर नकीव तब दुवर दलन, अक्खिय रोकहु जंग ॥
 मन सूरन सो सुनि मुरे, आयासित लखि अंग ॥ ३० ॥
 बुद्धि तिमिर करि सबन नहि, लखो ढेरन राह ॥
 लरत हुते तत्थहि रहे, तजि तजि तुरंग सिपाह ॥ ३१ ॥
 तीन३ तीन३ दिनको असन, रख्यो कतिन लगाय ॥
 तिहिं करि भूखे तृप्त हुव, सूर१ सपति२ समुदाय ॥ ३२ ॥
 बगडोरि बाजीनकी, गहि गहि करन कराल ॥
 सज्जहि रहि बैठे सबन, कट्यो जामिनि काळ ॥ ३३ ॥
 माधवहू इक ग्राममें, रहि कर्पुक गृह रति ॥
 बदलि नाम तापैं बचे, बितई निंद विपत्ति ॥ ३४ ॥
 कवच१सेभ१उपधान२कर२, पहुमि३पृथुल पल्लयंक३ ॥
 सुतो तैं जयसिंह सुवै, असि४ काँमिनि४धरि अंक ॥ ३५ ॥
 सोवन१ न्हावन१ असन१की, कहाँ केगिँका तीन३ ॥
 बुंदीसहु इक खेत विच, खिनँदा कीनी खीन ॥ ३६ ॥
 हुलाकरके पहुँची हठन, इक१रावटी आनि ॥
 बिती कठिन विभावरी, चटकन हुव चढ़कानि ॥ ३७ ॥
 नित्य नियम मंड्यो नृपति, उट्टि सबन सन अगग ॥
 एते विच पिकख्यो अडर, माधव आवत मगग ॥ ३८ ॥

॥ पट्टपात् ॥

सक गुन नभ धृति१८०३समय मित्र माधव खंडुव हुव ॥
 बदली दोउन पगध धरि सु रखी डब्बन धुर्व ॥

१परिश्रम सहित ॥ ३० ॥ २ वर्षों के अंधेरे से ३ तहाँ ही ४ घोड़ों से चतर कर
 ॥ ३१ ॥ ५ भोजन ६ कितने ही लोगों ने ७ घोड़ों के समूह ॥ ३२ ॥ = हाथों में
 ९ रात्रि का समय ॥ ३३ ॥ १० करसे के घर में रात बिताई ॥ ३४ ॥ ११ हाथ
 हैं सो ही तकिया हुआ १२भूमि ही बड़ा पलंग (सेभ) १३सुत १४खड्ग रूपी स्त्री
 को अंक में लेकर ॥ ३५ ॥ १५ढेरा (तंबू) १६ रात्रि बिताई ॥ ३६ ॥ १७ रात्रि
 ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ १८ निश्चय

इहिंदिन बह उग्यासि कुंम्म आयउ धारन करि ॥
जपि नृप हिंतु जुहार इक तर तर गय उत्तरि ॥
द्विज दयाराम पठयो नृपति पुच्छन कछु कछवाह पैह ॥
तिहिं जाय लखिय जयसिंह सुव चव्वत बह मउठ तैह ॥ ३९ ॥
॥ दोहा ॥

औसोहू आवत समय, घोर मचत घमसान ॥
भूपति हू निज भूखकाँ, बेत मोठ बलिदान ॥ ४० ॥
इतहु हह नृप नित्य करि, वैश्वदेव करवाय ॥
जथालौम लौ अन्न अरु, सज्ज्यो कवच सुभाय ॥ ४१ ॥
इहिं अतर जैपुर अधिप, चढयो घमजुत चंड ॥
अभ्रमुपति पर इद सम, बैठो सजि बेतह ॥ ४२ ॥
इत उमेद १ माधव २ अरहि, हय चढि सम्मलि होय ॥
हुलकर ढिग आये हुलसि, दलौहिं प्रचारत दोय ॥ ४३ ॥
नृप मलार हरवल्ल बहै, जपपुर सम्मुह जंग ॥
कुंत अमात असव्य कर, फेरत तरल तुरंग ॥ ४४ ॥
परे पलीते तोप परि, अतुल दगी अरराय ॥
बौसव केधौ बज लौ, घल्लै अदिन धाय ॥ ४५ ॥
॥ षट्पात् ॥

तोपन लगत अग्नि व्यालै शीढक बररकिय ॥
दररकिय किरि' दह कमठ खुप्परि कररकिय ॥
पृतनौ बिचकरि पंथ कढत गोले सक सक करि ॥
मनहुँ संघ मँयूर धसत कानैन केकाधरि ॥

१ पगसी २ माधवसिंह ३ अमेवसिंह ४ से जुहार करके ५ सुने हुए
मोठ आवता था ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ५ जैसा मिला तैसा ॥ ४१ ॥ ६ पेरा-
वत पर इह बैठे तैसे ७ हाथी पर बैठा ॥ ४२ ॥ ८ शीघ्र ही ९ सेना को ॥ ४३ ॥
१० भाला ११ दाहिने हाथ में ॥ ४४ ॥ १२ मानों १३ इह ने बल लेकर पर्वतों पर १४
बोद लगाई ॥ ४५ ॥ १५ योचनाग की पीठ १६ बराह की दाढ़ १७ सेना में १८ मयूरों
का समूह १९ वन में २० केका नामक बाघी को बाराह करके

सल्लार पिछि कोटा चधुप हो मोहनसिंहोत भट ॥
 वह जोध नागदहपुर अधिप गोला लागि गय बिदित वट ॥४६॥
 ऐसे कठिन अनेह कठिय माधव मल्लार कहँ ॥
 हम किहिँठोर रहैं सु त्वरित सुनि दिय उत्तर तहँ ॥
 देखहु वह बुंदीस वीर किहिँ ठोर बिहारत ॥
 ललित सेक नहिँ लाल इहाँ निकसत असु आरत ॥
 मेरेहि कहैं रहनों जु मत आनि रहहु तो मम उंदर ॥
 सुनि यह सिटाय माधव सलज हुव प्रदोष पंकज कहँ ॥४७॥
 ॥ दोहा ॥

इत तंते गंगाधर सु, दूजीर अनिय बनाय ॥
 पैलीघाँ सन उडि परिय, जैपुर दल बिच जाय ॥ ४८ ॥

॥ पट्टपात ॥

गंगाधर हय गरक करे कूरम दल अंतर ॥
 रिठिन बज्जिग रिठ भीम गज्जिग रज्जिग भर ॥
 फटत टोप चोखार कटत करिकी तरबूजन ॥
 खर खुरतारन खुदत धरनि धारन लागि धूजन ॥
 भयकार मुंड मुंडन भिरत रुंड फिरत बन बन्दि रुख ॥
 आमरी दसा भीरुन भई सिद्धा सूरन समर सुख ॥ ४९ ॥
 तंतेकी तरवारि बिखम जैपुर दल बग्गी ॥

१ उचित मार्ग (स्वर्ग) को गया ॥ ४६ ॥ २ समय में ३ सुंदर पीछित होकर प्रा-
 निकलते हैं ४ मेरे पेट में ५ सुन्ध्या समय के जुलम से ६ कमल होवें ते-
 ॥ ४७ ॥ ८ परली तरफ से ॥ ४८ ॥ ९ निरन्तर प्रहारों पर प्रहार १० भयंकर
 गजना करके धीर ११ शोभायमान वा रजो गुण युक्त हुए १२ तीखी खुरताव
 से खुद कर १३ घोड़ों की दौड़ से भूमि धूजने लगी १४ बन में आगि फिरे ति-
 प्रकार रुंड फिरते हैं १५ ज्यांतिष में आमरी दशा दुखदाई मनीजाती है १६
 कायरों की हुई और १७ सिद्धा दशा सुखदाई मानते हैं सो युद्ध में वीरों व

तद्विते जानि अति तेज सुदिर् भद्रव भगमग्गी ॥
 घेरघो रचि घमसान तुमुल दुव २ पहर कैहर तप ॥
 नैक ढिगन नन दियउ ईश्वरीमिह अनेकप ॥
 कूरमन तबहि यह छल करिय दल नकीव मुकलि द्वैतहि ॥
 म्हाडे रुपाय दीरघ वये करहु मुकाम मुकाम कहि ॥ ५० ॥
 तहि १ कहि २ अन्त्यानुमास १ ॥

॥ दोहा ॥

यह लखि हुलकर कटक भव, जानी कुम्भ न जाय ॥
 सउचादिक वपु कर्म सब, भट सु निबेरहु भांय ॥ ५१ ॥
 तब तनाय इक १ रावटी, तजि कटिबध मलार ॥
 नित्य नियम वपु कर्म निज, विरचन लागि तिहि बार ॥ ५२ ॥
 पौराणिक द्विज बुलि पुनि, इद्रदत्त अभिधान ॥
 व्यासासन बैठारि तिहि, सुनत भागवत गान ॥ ५३ ॥
 और पर भटन उतरन समय, अखिख्य दूतन आय ॥
 उतरयो नहि कूरम अधिप, जानै हम भजिजाय ॥ ५४ ॥
 हुलकर तब सुभटन कहिय, उतरहु कोउ न अज्ज ॥
 कूरम हम जान्यो किंतव, लेस न धुल्लत लज्ज ॥ ५५ ॥
 ततेको मुकलि तबहि, रोक्यो जैपुर राह ॥
 इतनै दुदुभि बज्जि और, कलि चलिप कछवाह ॥ ५६ ॥
 सुनत एह हुलकर सु पहु, हुतहि उधारे देह ॥
 तुरग चढ्यो पेटगेह तजि, मंडत आयुध मेह ॥ ५७ ॥

मुखदाता दुई ॥ ४६ ॥ १ विजुली २ भादवा के मेघ में ३ जुलम या क्रोध
 से तप कर के ४ ईश्वरीमिह की सवारी के हाथी को ५ शीघ्र ॥ ५० ॥ ६
 शरीर के कार्य ७ शीति पूर्वक ॥ ५१ ॥ ८ कमरबधा ओलकर ॥ ५२ ॥ ९
 पुराण पांचने वाले इद्रदत्त १० नाम के ब्राह्मण को बुलाकर ॥ ५३ ॥ ११ अन्य
 धीरों के ॥ ५४ ॥ १२ छुछी ॥ ५५ ॥ १३ शीघ्र ॥ ५६ ॥ १४ बेरा छोड़कर ॥ ५७ ॥

॥ नराचः ॥

चढ्यो मलार लौ तुखार नोहजार ९००० नचचते ॥
 धंषे प्रवीर तानि तीर जंग धीर जचचते ॥
 बजे निसान स्वान जे दिसा दिसान बित्थरे ॥ ५८ ॥
 चमंकि पारि चिकरी डिगे रु दिक्करी डरे ॥
 हजार पंच ५००० सेन देस क्लेस काज मुक्कली ॥
 रुमापुंरी समीपलों गये ति लूटते बली ॥
 हजार अंक ९००० है त्रियें मलार उप्परयो इतैं ॥
 जितैं जितैं चलात खात खगगतैं तितैं तितैं ॥ ५९ ॥
 बुलैं नकीब इक्कसै १०० हुलैं हराल इक्कदै ॥
 तुलैं तुरंग तक्खरे धरा धुजात धक्कदै ॥
 उमेद १ माधवेसरहू सजे दुंरूह सत्थव्है ॥
 करिध्वजाभ कुंम्मपै पिले प्रचारि पत्थव्है ॥ ६० ॥
 करीनके कैलाप के कैलाप केतुके खुले ॥
 चले सैमगग खूब खगग सेन अगग संकुले ॥
 खिचैं कमान बीच वान दंडितुंडैं दंतव्है ॥

नौ हजार नाचते हुए घोड़े लेकर मलार बहा और धैर्य के साथ युद्ध में जचे
 (ठहरे) हुए धीर दौड़े वहां नगरों के रेशव बजकर दिखा दिखाओं में फैल गये
 जिससे १ दिग्गज डरकर पीछे मार अपने स्थान से हट गये ॥ ५८ ॥ पांच
 हजार सेना हुंदाहुंदा देश में क्लेश फैलाने को भेजी गई जिसके धीर लूटते
 हुए ४ सांभर पुर तक पहुंच गये और इधर मलार भी नौ हजार ५ घोड़े लेकर
 उठा सो जिधर जिधर वह गया उधर उधर तरवार से शत्रुओं को भक्षण ही
 करता गया ॥ ५९ ॥ ललकार के साथ अगली सेना को बहाते हुए सौ नकी-
 ब बोले और ७ ताते (चपल) घोड़ों को उठाकर भूमि को धक्के देकर धुजाने
 लगे जहां उम्मेदसिंह और माधवसिंह भी = काठेनाई से तर्कना में आवै
 इस प्रकार सज कर मलार की साथ हुए सो मानों १० ईश्वरीसिंह रूपी १
 कर्ण पर ११ अर्जुन के समान ललकारते हुए बड़े ॥ ६० ॥ १२ कितने ही हाथियों
 के समूह पर १३ ध्वजाओं के समूह खुले १४ सभी खड्ग खूब चले और सेना
 के अग्रभाग में भर गये जहां १५ यमराज के मुख के दंत होकर कमानों के

करें कटार केक पार ॥ देवदार कतवैं ॥ ६१ ॥
 मरें तुरंग फेट भंग पच ॥ रंग भटके ॥
 खिरें खिलीन खग खीन दुंदुभीन खंडके ॥
 कटैं कपाल भिन्न भाल अखि लाल उच्छटैं ॥
 बटैं बिसाल घोष गाल जेजु जाल त्यों फटैं ॥ ६२ ॥
 कुकैं हुकैं फुकैं कलेज कुम्भ के रुकैं लुकैं ॥
 सुकैं करीन दान तान गान अच्छरी चुकैं ॥
 छिकैं चिकैं किरोट केक ओट घोटकी टिकैं ॥
 थकैं जकैं हकैं कितेक बाढ बन्हिकैं सिकैं ॥ ६३ ॥
 जगै प्रकोप ग्रह ओप केक तोप त्यों दगैं ॥
 भगैं बिसाल सोर भाल दीपमालसी लगैं ॥
 जचैं सु मल्ल जंग के तुरंग तापमें तैंचैं ॥
 रचैं बकारि रारि के डकारि डाकिनी नचैं ॥ ६४ ॥
 गजैं गरुर पुर सुर कुर नुर के तजैं ॥

बाण म बाण खिंचते हैं और कितने ही बीर ॥ अप्सराओं के पति होकर
 कटार पार करते हैं ॥ ६१ ॥ जयपुर के कई पथरगे डहे घोषों की फेट से तूट
 कर गिरते हैं और लज्जा से कटकर कई जंगलों और कई नगरों के टुकड़े
 गिरते हैं, कपाल कटते और ललाट से भिन्न होकर लाल नेत्र छलते हैं और
 लकी गर्दनो के टुकड़े होते हैं और इसी प्रकार गाल और १ हंसुली की हड्डी-
 यें कटती हैं ॥ ६२ ॥ २ कई कछपाटे कूकते कई हूकते कई कलेजों को फूंकते
 और कई छुपते हैं इस जगह ३ हाथियों के दान सुल कर अप्सरायें गाने में
 तान झुकती हैं कई झुकट छिद कर मस्तक से झिगते हैं और ४ घोषों की
 भाड में टिकते हैं कितने ही धक्कर गिरते हैं और कई आगे बढ़कर ५ तरवार
 की धार रूपी अग्नि में सिकते हैं ॥ ६३ ॥ ६ सूर्य की उपमा के समान बीर
 लोग कोप में जलते हैं त्योंही तोपें चलती हैं तहा बारूद की बड़ी ज्वाला
 प्रव्यक्षित होती है सो दीपमाळा के समान दीखती है कई मल्ल युद्ध की
 याचना करते हैं सो घोषों की टाप में ७ जलते हैं अर्थात् पैदल होकर मल्ल
 युद्ध करते समय घोषों की टाप से मारे जाते हैं अथवा टाप में घोड़े जलते हैं
 कई बीर लखकार कर युद्ध करते हैं और डाकिनियर्ष डकार डेकर नाचति

सजै रजै भजै न नीरके अनीरके भजै ॥
 तनै प्रहार लुथि लार मार मार के भनै ॥
 घनै घुमाय घोर घाय बायमत्तसे वनै ॥ ६५ ॥
 थपै प्रयान प्रान केक ज्ञान कौनपै जपै ॥
 बिसार ज्यौ अपार बेग धार सम्मुहें धपै ॥
 छवै छलंगि छोनि है दुसार संगि गे दवै ॥
 फवै अगोट चंड चोट ढाल ओट के डवै ॥ ६६ ॥
 सनकि चौकि चिल्हनी भनकि गिडनी भूमै ॥
 खंमैं घटाग खाग भोगभाग नागके नमैं ॥
 करै अनेक दाव केक पाव अगगही परै ॥
 भरै प्रेमून भूरि भीर वीर अछरी बरै ॥ ६७ ॥
 मिलै अभीत जंपि जीत पीलुं वीतें दे पित्त ॥
 खिलै सपान खेचरी भयान भूचगी मिलै ॥

हैं ॥ ६४ ॥ कई वीर पूर्ण घमंड से गर्जना करते हैं तहां कायर लोग नृर
 छोड़ते हैं कई वीर खजेहुए ? शोभित होते हैं और २ पराक्रम वाले नहीं
 भगते किंतु पराक्रम हीन भगते हैं प्रहारों को ३ फैलाकर लोगों के साथ
 कई मुंड मार मार करते हैं [यहां लोथ के साथ मुंड का ऊपर से अध्याहार
 होना है] बहुतेरे घोर घावों से घूमकर ४ घायले (बादी में आनेवाले, पवन
 लगकर शीत में आनेवाले) के समान धकते हैं ॥ ६५ ॥ कितने ही प्राणों का
 प्रयाण होते समय उनके ५ कानों में गीता शास्त्रोक्त ज्ञान सुनाते हैं इसी
 प्रकार तरवारों के अपार बेग को झूलकर उन (तरवारों की ६ धाराओं के
 सन्मुख ७ दौड़ते हैं, ८ छोड़े मलंग लगाकर शूभि को छाते हैं और बर्छियां
 से दोनों बाजू फूट कर ९ हाथी दबते हैं, आगे की भयंकर चोट से शोभित
 होकर कई ढालों की आड़ से ठहरते हैं ॥ ६६ ॥ चील्हे चौक कर डडती हैं
 और गिडनियें पंखों को बजा कर भ्रमती हैं, घटा की अग्नि (विजुली) लपी
 तरवारें १० चमकती हैं और शेषनाग के ११ फणों का भाग झुकता है, कई
 वीर अनेक दाव करते हैं और उनके पैर आगे ही पड़ते हैं १२ फूलों की बहुत
 भीड़ (बहुत फूल) परसती है और अम्बराएं वीरों को बरती हैं ॥ ६७ ॥ कई वीर
 विजय होना कहकर निर्भय होकर मिलते हैं तहां १३ हाथियों को १४ हलकर

स्वसैं नसैं अनेक सूर केक दुल्लसैं हसैं ॥
 घिसैं कितेक नाक केक नाक जायकैं बसैं ॥ ६८ ॥
 थरथरी थिराहु पिक्ख तेगकी तरत्तरी ॥
 वरव्वरी लगैं न जास फग्गकी चरच्चरी ॥
 छगच्छगी छक्क डह कोल्लकी डगडगी ॥
 म्मगज्जगी दव्वंगि दग्गि नाकल्लों टंगटगी ॥ ६९ ॥
 खरीखरी अर्घाय खाय के परे करी करी ॥
 घरीघरी घुमाय जाय डाकिनी डरीडरी ॥
 लजेलजे लुकैं लुमाय मीरु के भजे भजे ॥
 सजेसजे सिपाह लेत मारदैं मजे मजे ॥ ७० ॥
 बटेबटे पिसाच बुँक फिप्फरे फटे फटे ॥
 कटेकटे गहैं कलेज नाँ गहैं नटेनटे ॥
 सेंचीसची भिरैं सम्हारि बैहिनी वचीबची ॥
 नचीनची फिरैं निहारि जुगिनी जचीजची ॥ ७१ ॥

यहाते हैं सोते हृष्टों पर जेपरिया (देवा की मास खानेवाली दासिया)
 प्रसन्न होती हैं और भूचरिया (देवी की दासिया विशेष) भयानक होकर
 मिलती हैं अनेक शूर सिमफते और मरते हैं और कई प्रसन्न होकर हसते हैं
 कितने ही भूमि पर नासिका को घिसते और कितने ही १ स्वर्ग में जाकर
 पसते हैं ॥ ६८ ॥ तरघारों की तहातह को देखकर २ भूमि धुजने लगी जिस
 तहातह की घरायस काग की ३ बडेहर (गेहर) भी नहीं लगती रुधिर की
 पिचकारिया छिड़कने लगी और ४ पराह की दाह द्दिलने लगी ५ दायाग्न लग
 कर म्मगम्माहट करने लगी जिसको देखने को ६ स्वर्ग पर्वत ७ टगटगी लगगई
 अर्थात् अनिमेष होकर देखने लगे ॥ ६९ ॥ योगिनियें खड़ी खड़ी गिरे हुए
 १ बहुत हाथियों को खाकर = तृप्त होने लगी घड़ी घड़ी में घूमकर मारे जाने
 के भय से हाकिनियें डरी डरी जाने लगी कितने ही कायर जीने के लोभी
 होकर भगने लगे और कई लज्जित होकर छुपने लगे सजेहुए सिपाही मार
 देकर मजा लेने लगे ॥ ७० ॥ फटेहुए फेफरों और १० भूकों (गुरदों) को विशाख
 घाटने लगे और फटेहुए (धीरों के) कलेजों को लेने लगे किंतु देने में इनकार
 करनेवालों (कायरों) के कलेजे नहीं लेत ११ बची हुई सेना ११ इकट्ठी होकर

धकेधके लरात लोह छोहमैं छकेछके ॥
 थकेथके गिरैं कुंथाल ढालतैं ठकेठके ॥
 कठे कठे किरंत कलोमैं बँकत्र के बढेबढे ॥
 गढेगढे गडंत गिद्ध लुत्थिपैं चढेचढे ॥ ७२ ॥
 मिचीमिची अनेक अंखि सोनैमैं सिचीसिची ॥
 भिचीभिची भुजा भ्रमंत अंतरी इचीइची ॥
 कुपेकुपे जुरैं कितेक रंगमैं रुपेरुपे ॥
 लुपेलुपे लखात पाप धारतैं धुपेधुपे ॥ ७३ ॥
 अनीअनी अरैं घटा कि घुम्मरी घनीघनी ॥
 जनीजनी लुभात आत अच्छरी बनी बनी ॥
 भईभई भनैं विभिन्न को करैं दईदई ॥
 नईनई रचंत रारि जोध जे जईजई ॥ ७४ ॥
 मुरेमुरे मरैं कुमोति देखिवे दुरेदुरे ॥
 बुरेबुरे बजंत बंब ढोलके दुरेदुरे ॥
 हिलेमिले बढैं कितेक खीजमैं खिलेखिले ॥
 झिलेझिले झुकैं अनेक संगितैं सिलेसिले ॥ ७५ ॥

मल्ल कर भिड़ने लगी तहाँ याचना करती हुई योगिनियां नाचती हुई फि
 ने लगीं ॥ ७१ ॥ १ क्रोध में उफने हुए वीर बढ बढ कर मस्त्र लड़ाने लगे और थ
 हुए वीर ढालों से ठकेहुए २ बुरी तरह से गिरने लगे निकषी हुई ३ तिलि
 और कटेहुए ४ मुख विखरने लगे और लोथों पर चढेहुए गिद्ध गाढे गडने लगे ॥ ७२ ॥
 मिथेहुए अनेक नेत्र ५ रुधिर में सिंचने लगे भिची हुई भुजाओं में भ्रमती हुई ६ आं
 ७ मिचने लगीं कई वीर युद्ध में रुपकर कोप करके जुड़ने लगे तहाँ तरवारों व
 धाराओं से धुप कर पाप लुपेहुए दीखने लगे ॥ ७३ ॥ सेना की अणी से अण
 (अग्रभाग) अड़ती है सो मानों ८ घुमडी हुई घटाएं जोर से भिड़ती हैं प्रत
 क अप्सरा ९ दुलहिन बन बन कर आती है सो विवाह की घात हो चुकी ऐस
 कहती है और १० कई कटे हुए दैव दैव पुकारते हैं विजय पानेवाले वी
 नया नया युद्ध रचते हैं ॥ ७४ ॥ पीछे मुड़नेवाले कई ११ छुप छुप व
 देखने के लिये बुरी तरह से मरते हैं १२ लुडकतेहुए ढोख और नगारे बुरे व
 यजते हैं, कितने ही क्रोध में १३ फूले हुए वीर हिल मिल कर बढते हैं और १
 वरिष्ठों से बिधे हुए कई वीर ठहरते ठहरते झुकते हैं ॥ ७५ ॥ महार रूप

त्रसेत्रसे फिरै मलार राहुके घसेघसे ॥
 लसेलसे लखै तमास धुज्जटी हसेहसे ॥
 कहेकहे जुरै कितेक चडिका चहेचहे ॥
 बहेबहे फिरै वषा सु गिद्धनी गहेगहे ॥ ७६ ॥
 झटकि इक इककों पटकि वजूजों परै ॥
 खटकि खगों खुप्परी अटकि पंगघ उत्तरै ॥
 दरकि छत्ति बेखि यों भरकि जैपुरे भजै ॥
 करकि सधि कैकटी वरकि बाढ के वजै ॥ ७७ ॥
 लचकि सेस संकुली भचकि मुष्मि बिखरै ॥
 मचकि पिठि कामठी गचकि पकमें गिरै ॥
 सिलगि सोरकी सिखा फुलिंग फैलते वेंमें ॥
 मनोज्ञ मुड मालिका रचै रु कालिका रमें ॥ ७८ ॥
 खिरत दत कर्त के करत हतै दिगंगजी ॥
 गिरंत शृग मेरु की भरत स्वास भौभजी ॥
 कूपीट खीन के धुनीन कोपके कूसानुवहे ॥

राहु के घसेघसे कई पुरुष १ घरेघरे फिरते हैं २ बल्लास युक्त होकर ३ शिव
 हसते हुए तमासा देखते हैं चंडी के बाहे हुए ऊपर कहेघरे कई वीर जुद्धते
 हैं गिद्धनियों से गद्दीहुई ४ मज्जा बही बही फिरती है ॥ ७६ ॥ एक दूसरे को
 झटका देकर बल के समान पड़ते हैं खोपरी पर ५ तरबार खटक कर उसके
 अटकने से ६ पगड़ी बतरती है इस प्रकार देखने से छाती फट कर जैपुरघाले
 बमक कर भगते हैं ७ कषय की संधि कटक कर तरबार की धारा के बजने
 से तूटती है ॥ ७७ ॥ शेषनाग के पीठ की ८ इष्टी खचक कर अथक जगने
 से भूमि बिखरती है ९ कमठ की पीठ बमक कर १० कीचख में गिरती है
 बारूद की ज्याखा सिलग कर फैलते हुए ११ अग्नि कणों को १२ चगलती है
 १३ शिव के अर्थ सुंदर मुडमाखा रचकर काली कीया करती है ॥ ७८ ॥ १४
 पतियों के दंत खिरने से १५ दिशाओं की हथनियां १६ खेद करती हैं स्वास
 भर कर गिरते हुए वीरों ने मेरु पर्वत के शिखरों के गिरने की १७ क्रांति धारण
 की अथवा सुमेरु के शिखर गिरने से उस सुमेरु की समा (वेधसभा) भगी
 उस युद्ध में जगी हुई २० अग्नि के कोप से कई १९ नदियां १८ पानी से खीख

दुरघो बितान धुंधि भानु दीह सीतैभानुव्हे ॥ ७९ ॥
 रजोमई तमोमई भँटालि भीर भू भई ॥
 बिमान जाल देवतान ताल रीभिके दई ॥
 धसै छुरी दुसार बीर पार नीर धारसी ॥
 स्वसै उतंग के परे मतंग भुल्लि सारसी ॥ ८० ॥
 समुद्र सत्त७ लै हिलोर ओरओर उप्फनै ॥
 भनै सिराह चंद्रभाल काल कल्पको बनै ॥
 अनंत माँहिं अंत लै उडंत चिल्ह चंगव्हे ॥
 हनंत हत्थ अंग के भनंत मत्थ भंगव्हे ॥ ८१ ॥
 बितंडे बाँटिकान दंतै हस्तिदंत उप्परै ॥
 किरै सु कुंभ कोहले पैलांडु घंट नंकरै ॥
 कटंत सुडि ककैरी प्रवृत्ति पाँथ पीनके ॥
 किंलासनास ईषिका रु आलु अंखि कीनके ॥

होगई. धुंधि के १ फैलने से सूर्य छुपकर दिन का २ चंद्रमा का समान
 होगया ॥ ७९ ॥ ३ पीरों की पंक्ति की भीड़ से भूमि पर धूल और अंधेरा
 छागया. बिमानों के ४ खन्डों में से देवताओं ने प्रसन्न होकर ताली बजाई
 पीरों की छुरियां जल की धारा के समान दोनों तरफ पार होती हैं कितने ही
 पड़े हुए ऊँचे ५(*) हाथी ६ प्रसन्नता की(†)बोली भूलकर सिसकते हैं ॥ ८० ॥
 सातों समुद्र हिलोरे लेकर चारों दिशाओं में उफनने हैं ७ शिष प्रशंसा
 करते हैं और ८ प्रलय का समय बनता है ९ आकाश में आँत लेकर चिल्लें
 १० पतंग (गुड़ी) होकर उड़ती हैं. हाथ अंगों को काटते हैं अथवा कितने ही
 कायर छाती कूटते हैं और कई सक्षक कटे हुए भी घोलते हैं ॥ ८१ ॥ ११ हाथियों
 रूपी १२ बगीचों में हाथियों के दन्त उखड़ते हैं सोही १३ भूले होकर उखड़ते हैं
 १४ कुंभस्थल गिरते हैं सोही कूष्मांड (कोळे) हैं १५ घंटा है सो ही काँदे हैं, सुडें
 कटती हैं सोही १७ पानी की पिलाई हुई पुष्ट १६ काकडियों हैं १८ कंकोड़ों

(*), लीलावती में गणेश को मतमानन लिखा है और शारदी नाममाला में हाथी का नाम मतग लिखा
 है यथा—'मतङ्ग, कुजर' करी ॥

(†) डिंगल भाषा में हाथी की प्रसन्नता की बोली का नाम सारसी है और मतांतर से सुड के इधर उधर
 पलेटा लगाने को भी सारसी कहते हैं.

कटिल्ले कर्णिकावली भटा हँदावली भये ॥

अरिष्ठके अपठ्ट वृंद क्लोमै कद उन्नये ॥

बनें अरी पलास कान अंदु नागबल्ली ॥

कलेज पीलुपर्णिका कसेर तोरई करी ॥ ८३ ॥

बनात यों अनेक प्रेत साक व्यंजनावली ॥

कुंपान या प्रकार मारकी मलारकी चली ॥

कहैं कितेक हाय माय गाय काय के गहैं ॥

लहैं कैषाय लाय के घुमाय घाय के सहैं ॥ ८४ ॥

चहैं बै आय जैपुरेस गैपुरेसैं साँकरैं ॥

मलार भीमसेनकी गलार गजि को लरैं ॥

इतैं प्रबुद्ध रामभूप क्रुद्ध जुद्ध यों मच्यो ॥

सुनौ समस्त प्रीति कै उतैं जु रीतिकैं रच्यो ॥ ८५ ॥

(फलविशेष) के समान हाथियाँ के लेखा के गोखों का नाश होता है और आख की पुतलिया ही आख हैं ॥ ८२ ॥ १ सुड के अग्र भागों की पक्ति ही करेलों की पक्ति है २ हृदयों की पक्ति है सोही बैंगन हैं ३ लहसुन के समान ४ अक्षुषा का अग्रभाग है ५ तिल्ली ही जमीकन्द है ६ हाथियों के कान ही अरुह (धरवी) के पत्ते हैं ७ जजीरें ही नागरबेलें हैं ८ कलेज ही पीलुपर्णी (वाल की बेल) हैं और हाथी की पीठ की लकी हुई (रीठ या पांस का हाड) ही तोरही (तुरह, तोरमी या तोरों) है ॥ ८१ ॥ इस प्रकार कई प्रेत ६ भोजन के पदार्थों की पैकिमया बनाते हैं मल्लारका १० खड्ग इस प्रकार की मार के साथ बना तहाँ कितने ही 'हायमाता' और कितने ही 'मैं तेरी गड हू' ऐसा कहते हैं और कई धीर शरीरों को पकड़ते हैं और कई धीर अग्नि के ११ कटुपपन को सहते हैं और कितने ही घाब सहते हैं ॥ ८४ ॥ ११ इस्तिना पुर के पति (दुर्योधन) रूपी जयपुर के पति को १२ अग्र सकलार्ह में लिया तब वहाँ भीमसेन रूपी मल्लार को गर्जना को द्वाकर फौन लई अर्थात् कोई नहीं खड़ा सका १४ है बुद्धिमान् राजा रामसिंह इधर तो कुछ हाकर इस प्रकार का युद्ध मचा और उधर (दूसरी ओर) जिस प्रकार युद्ध मचा सो प्रीति पूर्वक सुना (इन छंदों में प्रायः 'लरीलरी गरीगरी, धके धके, थके थके' आदि एक-अर्थ वाली दो दो शब्द आये हैं जो अपने अपने विषय की अधिकता पताने के लिये बीप्सा के अर्थ में हैं) ॥ ८५ ॥

॥ षट्पात् ॥

उत जैपुर मग रुक्मि त्वरित तंते गंगाधर ॥

उद्धत बगगन औंचि हंकि सम्मुह दिय *हैवर ॥

†मंडलग्ग भारि मार लुत्थि पर लुत्थि बिलगिगय ॥

मित्र मित्र मनु मिलिय बहुत सहि सहि ‡बिरहगिगय ॥

तरवारि तरकि बज्जत §तुमुल भरकि मुंड भेजा कढत ॥

भीरुन अनार कन जिम ¶उदक उतरि उतरि बीरन चढत ॥८६॥

पुनि पुनि कंपत पहुमि बाढ पुनि पुनि रन बज्जत ॥

पुनि पुनि छुटत प्रान गिरत पुनि पुनि भट गज्जत ॥

पुनि पुनि भिरत पटैत किरत पुनि पुनि भारि कंकट ॥

निज जय पुनि पुनि भनत बनत पुनि पुनि बट उब्बट ॥

पुनि पुनि कपाल फुटत पिहुल भरै आलुक पुनि पुनि मयउ ॥

आमेरनृपति अंधक उपम गंगाधर गंजन गयउ ॥ ८७ ॥

सीकरपति सिवसिंह तमकि आयउ इरोल तब ॥

मध्य जट्ट रविमल्ल ओट चंदोल कुंम्म अब ॥ - ३७

सेखाउत सिर प्रथम धार भारिय गंगाधर ॥

अतुल तुमुल उल्लसिय हसिय नारद हर हरहरै ॥

फुल्लिगै कुपित अंखिन फुरत जुरत मत्त दुवर सिंह जिम ॥

असि भारि रचिय सेखाउतहु पुरुखारथ पारथ प्रतिमै ॥८८॥

॥ दोहा ॥

* घोड़े † मण्डलाग्र (खड्ग) ‡ बिरहाग्नि § भयंकर ¶ दांडिम के कणों के समान
 कायरों का पानी उतर कर बीरों को चढता है ॥ ८६ ॥ १ कवच गिरते हैं २ मार्ग
 और बिना मार्ग ३ बहुत कपाल ४ भार ५ सर्प (शेष) को ६ अंधक राक्षस रूपी
 आमेर के राजा ईश्वरीसिंह को मारने के लिये ७ शिष रूपी तांत्या गंगाधर
 गया ॥ ८७ ॥ ८ क्रोध करके ९ सूर्यमल्ल जाट बीच में होकर १० ईश्वरीसिंह इन
 की आँख में चंदोल में (पीछे) डुआ ११ अट्टाहहास्य करके १२ अग्निकण १३
 अर्जुन के सदृश ॥ ८८ ॥

लागी सीकर नाहकैं, तीन३ कठिन तरवारि ॥
 सुभर गिरे घायल त्रिसय३००, मेरे सहि६० बहु मारि ॥८९॥
 न लखिसक्यो घन अंतरित, अक्कहुँ पहुँच्यो अरत ॥
 तब मुरि मुरि मट उत्तरे, सिविरैन निर्जन समस्त ॥ ९० ॥
 कमलपत्र लागि सकुचन, धूकन मडिय घोर ॥
 सायकृत्य विधान सब, रचन लगे दुहुँ ओर ॥ ९१ ॥
 हुलकर १ माधव २ दह ३ हू, करि कालोचित कर्म ॥
 उट्टि बहुरि लौलै अंसन, मिले कहन रन मर्म ॥ ९२ ॥
 कति मरदह प्रसारको, विचरे पुर्वबहि वीर ॥
 मग जैपुर तिन कौ मिली, आवत रसति अधीर ॥ ९३ ॥
 ताकी सग जु हे तिनहि, आने गहि दल अत ॥
 हुलकर सन अकरूपो हुलसि, आपन रसति उदत ॥ ९४ ॥
 जब हुल १ जे रसति जन, आने अननि उतारि ॥
 अवन १ नक्के २ तिनके सरिसै, बह्नि रु दिन्न बिडारि ॥ ९५ ॥
 करन बध मग रसति क्रम, इत मज्जार किय एह ॥
 पच सहस्र ५००० दल उत पिल्लो, खुरने बिधारत खेह ॥ ९६ ॥
 सभरपुर लग तिहि सजव, दुठाहर लिय लुटि ॥
 हम जैपुर जनपद असह, फोजन हारव फुटि ॥ ९७ ॥
 इत बगरु निसै आगमन, हुलकर पैर छल हेरि ॥
 कूरम नहि कडिजानको, दियउ छवीनै फेरि ॥ ९८ ॥

॥ ८९ ॥ १ मघ से छायाहुआ २ सूर्य भी उस युक्त को नहीं देख
 सका और अस्ताचल को पटुआ ३ चरों में ४ अपने सब लोगो सहित
 ॥ ९० ॥ ११ ॥ ५ समय के उचित कार्य ६ भोजन ॥ ९२ ॥ ७ लख काष्ठ
 (घास लकड़ी) आदि लाने को ८ पहिले ही गये थे ॥ ९३ ॥ ९ वृत्तान्त
 ॥ ९४ ॥ १० रसद लानेवाले छोको को गादियों से उतार कर लाये ११ क्रोध सहि-
 त कान और नाक काट कर निकाश दिये ॥ ९५ ॥ सेना १२ भेजी ॥ ९६ ॥ १३ देश में
 १४ हाहाकार शब्द ॥ ९७ ॥ १५ राशि के आने पर १६ शत्रु का छल देख कर
 १७ ईश्वरीसिंह नहीं भागजाये इस कारण ॥ ९८ ॥

जामिक जन जागत रहे, सेन इतर रहि सोय ।

इहिँ अंतर अंभून उफनि, तूटन लगगे तोय ॥ ९९ ॥

पानी बुटल उदयपुर, आनि चमकिय अंक ॥

कालोदित उठि कृत्य करि, चढे बहुरि हुव चंक ॥ १०० ॥

॥ षट्पात् ॥

हुलकर इत हय चढिय व्यूढ कंकट करि निज बल ॥

उत जैपुर अधिराज चढिग गजराज चलाचल ॥

ए उत्तर मुख अडर वे सु दक्खिन मुख ओपत ॥

खुंदि धरनि खर खुरन उरन आयुध आरोपत ॥

भरि बाढ बाढ दव गाढ भगि छिति उल्लुक्क लागि उच्छलन
गांडिव बजाय डारिय गजब जैनु पांडव खांडव ज्वलन ॥ १०१ ॥

॥ दोहा ॥

तंतेकोँ करि मुख्य तँहँ, समर भूँ परीस ॥

इक्क अनी चंदोली पर, पर्व कछवाह ॥ १०२ ॥

जैपुरपति चंदोव गरजि, मखिस्यो मैचुर सिपाह ॥ १०३ ॥

गंगा-

॥ षट्पात् ॥

गगाधर धसि गयड काटि चंदोल नरुकन ॥

किन्नै टूकन टूक कुंत असि सर बंदूकन ।

कतिक बचे भजि कढिय उदधि कूरम दल अंतर ॥

मकर अगग जिम मीन त्रसित तिम लखत दिगंतर ॥

१ पहराघत २ अन्य ३ मेघ बड़ कर ४ जल गिरने लगा ॥ ९९ ॥ ५ उदयपल पर ६ अंक (सूर्य)

७ उदय समय के कार्य ८ चक्र (सेना) ॥ १०० ॥ ९ व्यूह रचना करके १० कषय युक्त की ११ चलते हुए पर्वत के समान हाथी पर १२ अंगारे (निर्धूम, अग्नि) १३ भागों अर्जुन ने खांडव बन से १४ अग्नि डाली ॥ १०१ ॥ १५ पीछे की सेना पर ॥ १०२ ॥ १६ नरुका १७ बहुत सिपाहों से ॥ १०३ ॥ १८ कछवाहे के समुद्र रूपी सेना में मगर (घड़ियाल) से १९ मच्छी डर कर जावे तैसे.

मरहठोंका सूर्यमल्ल जाटसे युद्ध] सप्तमराशि पंचविंशभयूक्त (१५१७)

कूरम हरोल केतन द्विरद जिहिं आगें कटिगय सजवें ॥

तते तुरग तते तमकि भयो अरिन बिच प्रलय भवें ॥१०४॥

॥ दोहा ॥

सेना अतर व्यूह बिच, लुट्टे सकट सलील ॥

मारे तोपन कानमैं, कठिन अपोमय कील ॥ १०५ ॥

मथपो कटक तते मरद, मनु गोपी दधि मट्ट ॥

कूरम लखि बुल्लपो चकित, जय हरोल सन जट्ट ॥१०६॥

॥ पट्टपात् ॥

तबहि जट्ट रविमल्ल पलटि आयो सहाय पर ॥

जिम गज सकट जानि चपल पन आनि चक्रधर ॥

अडर भरतपुर ईस तिमहि हक्यो रन तंडत ॥

महत आयुध मेह खूब खडन अरि खडत ॥

अति जोर हरत मरहठ असु रोर करत खगराज रंथ ॥

बिहैनन प्रहार लघु तूल विधि गगाधर सु पलाय गय ॥१०७॥

॥ दोहा ॥

सहो भलैही जट्टनी, जाय अरिष्ट अरिष्ट ॥

जिहिं जाठर रविमल्ल हुव, आमैरैनको इष्ट ॥ १०८ ॥

॥ पट्टपात् ॥

सूरजमल्ल सजोर मुरारि मारे मरहठे ॥

मिलत धंधु फन मोटि नांग आतुर गति नष्टे ॥

१ आगे की सेना में निधान के हाथी धे जिन से भी आगे बढ गये २ क्षीप्र गगाधर
तते के ताते घोडों को लींचकर ४ शिव ॥ १०४ ॥ ५ लीला (खेल) सहित ६ छे-
हे की कील ॥ १०५ ॥ ७ ईश्वरीसिंह ने चकित होकर सूर्यमल्ल जाट को हरावल
से ७ बुलाया ॥ १०६ ॥ ८ बिष्णु भगवान् ९ गर्जना करता हुआ १० प्राण
११ मय १२ गरुड क बेज से १३ पालय के प्रहार से लुच्छ १४ रुई की मांति १५
भाग गया ॥ १०७ ॥ १६ जाटनी तु मे १७ क्षतिकारक (जापे के घर) म जाकर भलै ही
१७ दुख सहा कि जिस के १८ खबर म १९ सूर्यमल्ल २० आमैरवालों का इष्ट हुआ
॥ १०८ ॥ २१ जैसे फलों के साथ बिष्णु भगवान् की फेट होते ही २२ काखी नाग

परे कुणाप पंचास५० अठ उत्तर सत१०८ घायल ॥
 दीनों दक्खिन ठेलि तुमुल कीनों रिस तायल ॥
 भय टारि नरुकन थप्पि थिर पुनि कूरम चदोल पर ॥
 हरवल्ल अप्प आयउ हुलसि मिहिरमल्ल गहि जय गुंमर ॥ १०६ ॥
 ॥ दोहा ॥

बहुरि जट्ट मल्लार सन, लारन लग्यो हरवल्ल ॥
 अंगद व्है हुलकर अर्यो, मिहिरमल्ल प्रतिमल्ल ॥ ११० ॥
 रदन मध्य रसना रहत, इम संकट कछवाह ॥
 अंतर चाहत साम अब, लेत न रन जय लाह ॥ १११ ॥
 ॥ षट्पात् ॥

धरनि फेट धसमसत कंपि कसमसत कुंलाचल ॥
 दिस दिस लोहित लिपत दिपत जुज्झत दोऊरदल ॥
 इहिं अंतर आसार प्रचुर पुनि रचिय पयोदन ॥
 चहलपहल चतुरंग देहल पानिय चहुं४कोदन ॥
 बुल्लयो मल्लार तहँ दुवर नृपन पर अप्पन नहिं सुधि परत ॥
 तुम अलप सत्थ मम ढिग रहहु भटन भिन्न रक्खहु लरत ॥ ११२ ॥
 ॥ दोहा ॥

बुंदियपति१ यह सुनि बचन, सत१०० सादियँ लिय संग ॥
 हरजन२ ईतर अनीकलै, रक्खो भिन्न रुपि रंग ॥ ११३ ॥
 हयसत१०० रक्खे माधव२हु, लौ इतरन जय लीन ॥

आतुर होकर भागा तैसे भगे १ सुरदे २ भयेकर युद्ध ३ क्रोध में तपाहुआ ४
 सूर्यमल्ल विजय का ५ घमंड करके ॥ १०९ ॥ ६ सूर्यमल्ल से प्रतिमल्ल के स
 मान लड़ने लगा ॥ ११० ॥ ७ दांतों के घेरे में जीभ रहे तैसे ईश्वरीसिंह सेना के
 घेरे में रहा ८ मन में ९ साम उपाय (मिलाप) ॥ १११ ॥ १० पुराणों के मत
 से जिस पर्वत का पृथ्वी के चारों ओर घेरा है उस का नाम कुलाचल है १
 रुधिर से पोती हुई दीखती है १२ बहुत मेघ धारा १३ मेघों ने १४ सेना पार
 से भीष कर तर होगई १५ पानी का भय १६ चारों दिशाओं में हुआ ॥ ११२ ॥ १
 सवार १८ अन्य सेना को लेकर ॥ ११३ ॥

सिवाईरहु सिवन्नहदर, कुम्म पृथक रन कीन ॥ ११४ ॥
 लंब१ सिवा१ अरु टोडरी१, अधिप मिले त्रय३ आनि ॥
 तिन्ह गोगाउत प्रेम३ लै, पृथक जुरघो असि पानि ॥ ११५ ॥
 एक१ इह कूरम उभय२, अनुक्रम बटि अनीक ॥
 स्वामिन हुलकर सग करि, मढ्यो पृथक समीक ॥ ११६ ॥
 ध्योहि उदपुर१ जोधपुर१, कोटा३ के दल३ कुद ॥
 भिन्न भिन्न रहिकै भिरे, जैपुरपति सन जुद ॥ ११७ ॥
 हुलकरदिग दुव२ भूप रहि, तुमुल रच्यो गहि तेग ॥
 पानी आयुध पैज करि, बुहन लग्गे बेग ॥ ११८ ॥
 भीजी पग्य सु दूर करि, दै अधिक पट टोप ॥
 हुक्का पीवत हुलकरहु, कलह खरो अति कोप ॥ ११९ ॥

॥ मत्तमृगेन्द्र ॥

खेल सतरजकी सारि अनुकारं मल्लार१ निज बीर अगै बढावै ॥
 हह१ प्रतिमल्ल हरवल्ल रचि हल्ल हमगीर वरनीर बुंदी चढावै ॥
 हह सामंतहर नाम हरजन२ सु नृप सचिव लै सेन इक ओरजुज्झै ॥
 मेघ आसार भंगकार अंधार मिलि अप्पन रु पार नहि नैक सुज्झै १२०
 सिवाईसिंह१ कछवाह सिवन्नहदर माधवामात्प इक ओर जुटै ॥

१ शिवन्नहदर के वंश बाला ॥ ११४ ॥ २ लांघा और सेंघा ये दोनों नगरों के नाम हैं
 ३ प्रेमसिंह ॥ ११५ ॥ जुदा ४ युद्ध रचा ॥ ११६ ॥ ११७ ॥ ५ होठ (प्रतिज्ञा) करके
 ॥ ११८ ॥ ६ रुल बल्ल का ॥ ११९ ॥ जैसे सतरज के खेल में एक प्यादी के
 घूसरी का जोर बना रहता है तब यह आगे बढ़ती है (जोर बना रहने से अगली
 प्यादी मारी नहीं जाती) इसीके ७ सहश मल्लार ने अपने धारों को आगे
 बढ़ाये हाथा उमदसिंह ८ उद्यत मल्ल होकर हरोल में (आगे) हिम्मत के
 साथ हल्ला करके बुंदी को भेंट नीर चढाता है और सामंतसिंह के वंश बाला
 हरजन नामक हाथा उमदसिंह का सचिव सेना लेकर एक ओर लड़ने लगा
 ९ मेघ धारा से १० भयकर अधरा होकर अपना और पराया कुछ नहीं दीखा
 ॥ १२० ॥ ११ माधवसिंह का भेरी शिवन्नहदरपोता सवाईसिंह कछवाहा भी

तीन ३ कछवाह खंगारह लैरु इत गोगैहर प्रेमर करवाल कुट्टें ॥
 रान जगतेस कटकेस इत संभु १ अरु साहिपुर भूप उम्मेदर रूपे
 सांचिवि गुलाब ३ अरु देवगढ कंत जसवंत ४ पुनि बेघम पं मेघ ५
 कुप्पे ॥ १२१ ॥

जोधपुर सेनपति सेर १ अरु सेर २ मनरूप ३ कल्याण ४ समसेर भारा
 यों अखैराम १ कोटेस कटकेस रन मेस मन सेस फन पेसिं डारें ॥
 कुंत असि हत्थ मिलि बत्थ कति सत्थ गति पैत्थ तैति मत्थ सि-
 व अत्थ अप्पें ॥

भीम अनुकौरि गज पारि धक धारि कति मारि तरवारि थिर
 रारि थप्पें ॥ १२२ ॥

नीर अरु छीर निर्भ धीर कति बीर हमगीर मिलि तीरं करि भीरटारें
 काल बिकराल कति ज्वाल दग लाल अरि साल भरि फाल ग-
 जडालें डारें ॥

भीरु भय देत गिलि गोदें पल लेत अति हेत करि खेत बिच प्रेतनञ्जै
 एक आर लड़ने लगा तीन १ खंगारोत कछवाहो को लेकर २ इधर गोगावत
 प्रेमसिंह ३ तरवार मारने लगा राणा जगतसिंह के ४ सेनापति शंभुसिंह और
 शाहपुरा का राजा ५ उम्मेदसिंह ये दोनों इधर खड़े हुए ६ राणा के सचिव का
 पुत्र गुलाबसिंह और देवगढ का पति जसवंतसिंह ७ बेघम का पति मेघसिंह
 ये सब क्रोधित हुए ॥ १२१ ॥ जोधपुर की सेना का पति शेरसिंह दूसरा
 मनरूप और कल्याणसिंह ये सब तरवार मारने लगे इसी प्रकार कोटा के पति
 का सेनापति अखैराम युद्ध में ८ मैदों के समान होकर अपने मन से शेषनाग
 के फणों को ९ पीसने लगा १० भाले और तरवारें हाथों में लेकर ११ कितने
 ही बाथों के साथ मिलकर १२ अर्जुन की भांति १३ माथों की पंक्ति १४ शिव
 के अर्थ देते हैं और कितने ही भीमसेन १५ सदृश हाथियों को गिराकर क्रोध
 करके तरवार मार कर स्थिर युद्ध को स्थापन करते हैं ॥ १२२ ॥ कितने ही
 वीर हमगीर होकर पानी और दूध के १६ सदृश मिलते हैं और १७ बाणों
 से भीड़ को हटाते हैं कितने ही भयंकर काल के और अग्नि के समान लाल
 नेत्र करके शत्रुओं के साल होकर १८ मलंग लगाकर १९ हाथियों की ध्वजा-
 ओं को गिराते हैं अत्यंत स्नेह करके २० मज्जा और मांस लेकर प्रेत युद्धक्षेत्र

ग्रास तजि आस जिय स्वास हिय लास करि खास रन रास न-
र नास मज्जे ॥ १२३ ॥

शोर चहुँधओर अति घोर वरजोर रचि सोर तंचि दोर भटमोर सज्जै
रोहँ घलि दोह मलि कोह कैलि छोह छलि जोहँ संदोहँ बहु
लोह बज्जै ॥

इहँ कहँ गिह बलि सिह लागि लिह विनु सक पैल पंक बिच
कंक कुहँ ॥

सैन दुवर जैन जय जैन मुररै न रन औन कति बैन थकि नैन मुहँ १२४
एह बिच जोहँ करिसेहँ भुव नेह पुनि मेहँ बिच मेह विनु छेह बुढयो
बंधि घन पाज गुरु गाज खप काज ब्रजराजपर जानि मुरराजै रुढयो
जोहँ श्रुति धारि नृपरमै दुरितैरि अति वारि करि रारि तरवारि रुकी
प्रोषिपद मास इम बारिद बिलास पैल्लास नव ग्रास मय आस
मुंकी ॥ १२५ ॥

॥ दोहा ॥

भरमै यों तँहँ प्रचुर भर, परयो अचानक आय ॥

मैं नाथते हूँ ग्रास को छोड़ कर जीव की आशा से हृदय के भीतर आस ?
नृत्य करता है और युद्ध के आस नृत्य में मनुष्यों का नाश होता है ॥ १२३ ॥
अथर्व पत्र पूर्वक ९ चारों दिशाओं में अथर्व चक्र ३ बारुद में जलकर
धीरों के मुकुट दोह सजाते हैं ४ घेरा घाल कर दोह को मेल कर ५ युद्ध में
कोलाहल करके, क्रोध में चक्राल कर १ जोषों (धीरों) के ७ सनूह बहुत
शक्ति प्रजाते हैं ८ बहुत गिह तैयार हुए ९ पक्षिदान को हैं और १० मास
के कीचड़ में निठर फक पछी कूटते हैं दोनों सेना की ११ पक्षि जय लेने के
अर्थ युद्ध से नहीं मुक्तती और कितने ही धीर १२ मार्ग में यत्न थक कर नेत्रों
को पद करते हैं ॥ १२४ ॥ इतने में १३ स्वाद खेकर १४ भूमि की सेक पर १५ शक्तों
की वर्षा में अच्छे मेह परसा सो मानों मेघ की पाज पाष कर १६ पछी गर्जना
से नाश करने को ब्रजराज पर १७ इन्द्र ने क्रोध किया सो हे १८ पाप के शत्रु
जा १९ रामसिंह सुगो कि अत्यंत १० पानी से तरबारों की लड़ाई रुक गई इस
कारण २१ भादवे में मेघ के बिलास से २२ मास की आशावालों ने गरीब
रास के समय आशा २३ छोड़ी ॥ १२५ ॥

सूरन सैय अरु हयन पय, भये चलत जड़ भाय ॥ १२६ ॥
 रोकि रैटक तब दुवर कटक, पत्ते सिविरन निठि ॥
 श्रमित भटन छोरी सजर्व, असि मुठि रु हय पिठि ॥ १२७ ॥
 छठ्ठी६ दिवस बिताइ इम, बहुरि बिताई रति ॥
 दक्खिन दल सप्तमि७ दिवस, सजन लगे पुनि सँति ॥ १२८ ॥
 एह सुनत आमैरपति, व्याकुल किन्न बिचार ॥
 मरहठन रोकी रसति, मंडयो प्रसभ मलार ॥ १२९ ॥
 जनक लई संधा करि जु, देय सु बुंदी नाँहि ॥
 गंगाधरको सुलक दै, मोरहु अप्पन माँहि ॥ १३० ॥
 कूरमपति यह मंत्र करि, खत्री केसवदास ॥
 दम्म बहुत तंस संग दै, पठयो तंते पास ॥ १३१ ॥
 राजामलसुत जाय तँहँ, गंगाधर लिय फोरि ॥
 दई सौँक छन्नै दुलभ, माया करि मन मोरि ॥ १३२ ॥
 अरु अक्खी तुमरे लगे, फोज खरच जे दम्म ॥
 दैहँ नृपतिनतैं द्विगुन, करहु साम हित कम्म ॥ १३३ ॥
 बुंदीकी बत्त न बदहु, भरि धन सकट सुभाय ॥
 कुंच करावहु कटकके, हुलकर पति समुभाय ॥ १३४ ॥
 गंगाधर यह सुनि गयो, खर जैर जूती खाय ॥
 कस्यो मलारहिँ कुम्म पति, बहु धन देत सिटाय ॥ १३५ ॥
 अब न सुनहु उम्मेदकी, लेहु अतुल बैसु लाह ॥
 जग कहिहँ हुलकर जबर, दंढ्यो जैपुर नाह ॥ १३६ ॥
 हुलकरकी यह सुनत हुव, बिगरि बुद्धि बिपरीत ॥

१ हाथ ॥ १२६ ॥ २ युद्ध करना १ खेरी में कठिनाई से प्राप्त हुए ४ शीघ्र ॥ १२७
 ५ ससि (घोड़े) ॥ १२८ ॥ ६ ठठ ॥ १२९ ॥ पिता (जयसिंह) ने ७ प्रतिज्ञा कर
 ली वह बुन्दी = देने योग्य नहीं है १ रिसवत देकर ॥ १३० ॥ १३१ ॥ १३२ ॥ १
 हितकार्य ॥ १३३ ॥ ११ ओष्ट रीति से छकड़े भर कर ॥ १३४ ॥ १२ धन क
 जूती खाकर वह गधा गया ॥ १३५ ॥ १३धन का लाभ ॥ १३६ ॥ १३७ ॥

भल्लारका ईश्वरीसिंहसे संधि करमा] सप्तमराशि-पंचदिशमयूक्त (१५२१)

धरन लाग्यो गनिका धरम, जानी अप्पन जीत ॥ १३७ ॥
सो सुनि दैसत २०० सुभट पति, बालकृष्ण द्विज बीर ॥
हुलकर सपन निकाय को, जामिके जपे धीर ॥ १३८ ॥
पुण्याके दलबिच प्रकट, करि करि गुमर मलार ॥
किम कहि आये नन्हतै, लोभी कितव मलार ॥ १३९ ॥
कैसी संधा करि चलिय, कैसो मत्र विधाय ॥
संधाकौ तुमकौ संतत, है धिक हुलकर राय ॥ १४० ॥
क्यों घन लक्खन करज क्रिय, रचि दल बीस हजार २०००० ॥
क्यों माधव उम्मेदकौ, बुल्ले बिनुदि विचार ॥ १४१ ॥
चलि दक्खिन प्रभु नन्हसौं, नीचै करिहो नैन ॥
तते बभन सठ तुमहि, लोभ देत कछु लैन ॥ १४२ ॥
कातरपन ताको कह्यो, धागहु नन धरि धीर ॥
वह पूरबिया यह कहत, बज्रहि सिराहयो बीर ॥ १४३ ॥
मन गो पलटि मलारको, लागत बचन प्रतोद ॥
ततेकौ बुल्लि रु त्वरित, बुल्लयो लारन बिनोद ॥ १४४ ॥
सुनि गगाधर वह कितैव, तजिहै बुंदिय देस ॥
च्यारि ४ भ्रनुज हित परगनै, दैहै कुम्म नरेस ॥ १४५ ॥
बुंदीसहि बुलवाय पुनि, ताके डेरन जाय ॥
इक १ तखत दुवर बैठिहै ३, सैम सतकार विधाय ॥ १४६ ॥
टीका उचित निवेदिहै ४, कहि कहि नृप उपटंक ॥
तो अप्पन दल कुंचहै, नहि तो जग निसंक ॥ १४७ ॥
सच्ची अखि निहारि तब, तंते असित विसैस ॥

१ घायन के घर का २ पहरायत घोडा ॥ १३८ ॥ ३ घमंड ॥ १३९ ॥ ४ प्रतिज्ञा
५ सलाह करते हो ६ प्रतिज्ञा को ७ निरतार ॥ १४० ॥ १४१ ॥ १४२ ॥ ८
कायरपन ९ सेना मे बस की प्रशंसा की ॥ १४३ ॥ बचन रूपी १० व्यापक
लगने से ११ बुलाकर ॥ १४४ ॥ १२ हे ठग १३ माधवसिंह के अर्थ ॥ १४५ ॥
१४ बराबर का १५ करके ॥ १४६ ॥ १४७ ॥

अकखी केसवदाससों, करहु मलार निदेस ॥ १४८ ॥
 सुनि खत्री निज स्वामिकों, जबहि सुनाई जाय ॥
 हित माधव१ उम्मेद२को, करनाही अब न्याय ॥ १४९ ॥
 कोपत हुलकर बिनु करैं, अखिन धकत अलाव ॥
 रसति बंध पहिलैं करी, अब प्रानन पर दाव ॥ १५० ॥
 ईश्वरिसिंह सिटाय सुनि, भयो अमाससि भाय ॥
 गंधनकुल को ग्रास करि, उरग जानि अकुलाय ॥ १५१ ॥
 सबहि बत स्वीकृत करिय, जैपुरपति भय जानि ॥
 संधि बिधाय मलार सन, मिलन बिचार प्रमानि ॥ १५२ ॥
 अकखी केसवदाससों, सब उनकी स्वीकार ॥
 अब कहु अकखी अप्पनी, मानहु बत मलार ॥ १५३ ॥
 हुलकर१ अरु हम२ लोभकी, बत समझ करै३ ॥
 जो कहनी सु वकील जन, बदैँ परोक्षाहि बैन ॥ १५४ ॥

॥ षट्पात् ॥

अपने डेरन प्रथम हड्ड१ हुलकर२ दुव३ आवैं ॥
 पलटि पग्य मलार हमहि बड मित्र बनावैं३ ॥
 कुंच करनके काल बंबं पहिले तिन्ह बज्जैं४ ॥
 पिछैं हमहि चढाय चढहु इम वेहु न लैज्जैं ॥
 सुनि केसवदास मलार सन कहिय आनि कूरम कथितें ॥

हुलकर समस्त स्वीकार करि चाह्यो मिलन प्रसन्न चित ॥ १५५ ॥

॥ १४८ ॥ १४९ ॥ माधवसिंह और उम्मेदसिंह का हित १ नहीं करने से
 हुलकर क्रोध करता है २ नेत्रों में अग्नि जलती है ॥ १५० ॥ ३ अमावास्या
 के चन्द्रमा के समान ४ छछुंदरी को पकड़ कर ५ सर्प घबरावै तैसे छछुंद-
 री को पकड़ कर छोड़ देने से सर्प अंधा होजाता है और खाने से मरजाता है)
 ॥ १५१ ॥ ६ करके ॥ १५२ ॥ ७ हमारी कही हुई ॥ १५३ ॥ ८ रोबरू ९ पीठ
 पीछे कहै ॥ १५४ ॥ उनका १० नगारा पहिले बजै ११ लाजित नहीं होवें १२ ईश्व-
 रीसिंह का कहा हुआ ॥ १५५ ॥

मल्लारका ईश्वर...सहसे सचिकरना] सप्तमराशि पञ्चविंशमयूख (१५२१)

सप्तमि७ अष्टमि८ नवमि९ दसमि१० एकादसि११ विंती ॥

द्वादसि१२के दिन मिलन थप्यो हुलकर करि किंती ॥

बल सन तबू दूर तवहि इक१ कुम्भ तनायो ॥

मत्र केणिकौ२ पृथक मडि अप्पहु तँहँ आयो ॥

दे पिडि इक१ तकिया दरित पृथुल दिलीचा रुचिर पर ॥

परिखेव बनाप जयसिंह सुव बेंठो लौ छिग सुभट बर ॥ १५६ ॥

॥ दोहा ॥

इत डड्ड६ रु हुलकर२ उभय२, सुपहु भीरि सँनाह ॥

भितन जैपुर भूपकों, विदित चले चढि बाँह ॥ १५७ ॥

लये उदैपुर१ जोधपुर३, कोटा३के भट सग ॥

उभय हत्यमैं हत्यदैं, जीति पधारे जग ॥ १५८ ॥

॥ सचरणागद्यम् ॥

तसे गगाधर१ सेटू खडराह१ सतू बाउला१ तीनों३ही हुलकरके

उमराव हरोल भये ॥

अरु विजयके मदमत्त चोतरफ आतक डारत तमासगीर लोक-

नकों इटात गये ॥

प्रथमतो उदैपुर१ जोधपुर१ कोटा१की सेनाके सिरदार दोय२

दोय२ मल्लारनैं मिलिबेकौ अनुक्रमतैं पठाये ॥

तब साहिपुराधीस रानाउत उम्मेदमिंह१ देवगठनाथ चुडाउत

राउत जसवतसिंह२ बेघमपति चुडाउत राउत मेघसिंह३ सनवाह

पति सेनानी भारतसिंहको केनिष्ट सोदर रानाउत सभूसिंह ४

प्रधान भवानीदासको पुत्र गुलाबसिंह५ त्योंही रघ्पाँ पति दूदाउत

मेरतिया रठोर सेरसिंह१ उहाउत रठोर सेरसिंह२ कल्याणसिंह ३

१ ईश्वरीसिंह ने २ सलाह करने का खेग जुदा रघ्वा ३ केषल ईश्वरीसिंह की

पीठ से दषाछुआ एक तकिया लगा कर ४ पडे सुदर दलीये पर ५ सभा

॥ १५९ ॥ ६ कषय कस कर ७ घोयों पर खटकर ॥ १५७ ॥ ८ मल्लार

और उम्मेदसिंह दोनों हाथ में हाथ देकर ॥ १५८ ॥ ९ भय १० छोटा सगाभाई

भंडारी मनरूप४ तथा बखसी कायरथ अखैगम१ इत्यादिक
ईश्वरीसिंहतैं सत्कारसहित मिलि आये ॥ १५९ ॥

दोहा— तदनंतर नृप इह१ अरु, हुलकर२ करि दयजोरि ॥

प्रबिसे प्रतिसीरा बलजं, तरल तुरंगन छोरि ॥ १६० ॥

जुरत दिष्टि जै नृपतिहू, हुलसि उल्यो करि द्वेत ॥

सम्मुह पायंदाज तक, आयो विनैय उपेत ॥ १६१ ॥

मत्थै इत्थ लगाय मिलि, मोद पररूपर मानि ॥

इक दिलीचा ऊपरहि, इम बैठे त्रय३ आनि ॥ १६२ ॥

ईश्वरिसिंह१ प्रतीचि मुख, प्राची मुख ए दोय२ ॥

कछुक काल संलाप करि उठे द्रोह सब धोय ॥ १६३ ॥

मंत्र कैणिका माहि पुनि, प्रबिसे त्रय३ द्वय२ पास ॥

हुलकर१ कूरम२ इह३ अरु, तंतै१ केसवदास२ ॥ १६४ ॥

हुंदीपति प्रति उच्चरिय, जैपुर भूपति जत्थ ॥

दूर रहो कछु कालतो, मंत्र रचै इम अत्थ ॥ १६५ ॥

तब नृप बुल्लयो करत तुम, मरहट्टी संलाप ॥

मैं अबोधैं अनर्धोत मैं, निर्धैरक मंत्रहु आप ॥ १६६ ॥

अकिख यहै रू तत्थहि रह्यो, संभरराज रवतंत्र ॥

केसव१ कुम्म१ मलार१ किय, मरहट्टी त्रिच मंत्र ॥ १६७ ॥

तदनुं पगध निज कुंकुमी, लैकैं हुलकर ईस ॥

हीरनके सिरपेच जुत, धरी कुम्म नृप सीस ॥ १६८ ॥

॥ १६९ ॥ १ कनात के २ कोट में घुसे ३ अपल घोड़ों को छोड़कर ॥ १७० ॥

४ नम्रता सहित ॥ १७१ ॥ १७२ ॥ १ पश्चिम दिशा में मुख करके रहा

और ये दोनों पूर्व दिशा में मुख करके साम्हने बैठे वार्ताकाय ॥ १७३ ॥ ७

मंत्र करने के देरे में ८ तीन राजा और दो पासवान (सास रहने वाले)

॥ १७४ ॥ ९ यहां ॥ १७५ ॥ १० मरहट्टी भाषा में वार्ता करते हो जिस में ११

नहीं समझता १२ और इस भाषा को नहीं पढ़ा १३ निर्भय सलाह करो

॥ १७६ ॥ १७७ ॥ १४ जिस पीछे १५ केसर के रंग की ॥ १७८ ॥

मरहठोका बछ्याहोसे फिर पिगाह सप्तमराशि पञ्चविंशमपुख (१६२७)

हुलकर सिर अपनी धरी, त्योंही कूरम राय ॥

घरिय रक्खि दोउन वई, ढञ्चन माई धराय ॥ १६९ ॥

मराय१ धराय२ अन्त्यानुप्रास ॥१॥

इतर कुसुभी१ कुम्म२ धरि, घिसद१ पगघ मझार ॥

मंत्र निलय बिच मित्र हुव, इम दुवर मुदित अपार ॥ १७० ॥

च्यारि४ परगन माधवाई, बुदी नृपहि दिवाय ॥

हुलकर कूरम इत्यको, लिन्नो पत्र लिखाय ॥ १७१ ॥

बहुरि चन्ने उठि सिक्ख करि, हुलकर१ अरु चहुवान२ ॥

कूरम पापदाज तक, चल्पो तबहु पहुँचान ॥ १७२ ॥

इम प्रविसे दोऊर अढर, निज निज डेरन आय ॥

कहि पठई दूजे२ दिवस, कुम्महि हुलकर राय ॥ १७३ ॥

अब बुंदीपतिके, अरय, भेजहु टीका भूप ॥

सुनि यह लिय जयसिंह सुव, पुनि अभिमान अनूप ॥ १७४ ॥

पादाकुलकम् ॥

कूरम पच्छी एइ कहाई, भिंटन तुम आवे यँहँ भाई ॥

तबतो वे आवे तुम पिछेँ अब उमेद आवन इम इच्छेँ ॥ १७५ ॥

सुनि इह१र हुलकर२इठ साहयो, बेर इक१आवन निरबाहयो

तुमहि उचित आवन अब ताँतै, दिवस भयो इक१राह दिखाँतै ॥

यह सोइस दुहुँओर बढयो अति, पृथक तनाय यूँल बुन्दीपति ॥

रहयो तहाँ कूरम मग हेरत, टरत जात दिन टेरत टेरत ॥ १७७ ॥

बीच भयो तते बिसटाली, घरबिधि बत्त कुम्म श्रुति घाली ॥

कुम्म कही सुनिये गंगाधर, अब जो तुम आनहु यँहँ सभर १७८

तब भवदीर्घ हितुपन जानै, मझारहु उचितहि जो मानै ॥

॥ १७९ ॥ ईश्वरीसिंह ने तो १ कसूमख (कसूबे के रंग की वृक्षी पगड़ी बाँधी) रखेत

३ सलाह के स्थान में ॥ १७० ॥ १७१ ॥ १७२ ॥ १७३ ॥ १७४ ॥ ४ हे भाई ॥ १७५ ॥

॥ १७६ ॥ ५ इठ जुदाईबेरा तनबा कर ७ बुलाते बुलाते ॥ १७७ ॥ ८ अपाका

गंगाधर दुहुँ २ और खिसानों, इत उतके संकुच अकुलानों ॥ १७९ ॥
 अंबुज मनहुँ तराँनि अर्द्धोदय, अरध कपाट खुल्यो जिम आलय ॥
 सोवत कछु कछु जगत स्वप्न सम, बानिके बँयससंधि बनितोपम ॥
 तंते रह्यो पंच ५ दिन अैसेँ, कहैं तोरि हित इत उत कैसेँ ॥
 गंगाधर कर जोरि छठे ६ दिन, अकखी नृपहिँ सुनहु संभर डन ॥ १८० ॥
 मेवक अरज मन्नि हित सत्यै, इक आसान करहु मम मत्थै ॥
 जैपुरपति केवल हठ जानै, प्रीति रीति नहिँ जड़ पहिचानै ॥ १८१ ॥
 बहुरि तुम्है निज सिविर बुलावत, उत्तर ताको मोहि न आवत ॥
 अकखी नृपति जाय हम आये, लुप्पि ताहि क्यौं पुनि हठ लाये ॥ १८२ ॥
 उचित नाहि पुनि पुनि जीवन अब, बरजत हुलकर आदि सुंमति सब
 यह सुनि विप्र नयन जल आयो, द्यूत ठग्यो सो दान दिखायो ॥ १८३ ॥
 निर्गहनतैँ श्रुति स्वपच निकासी, परयो कि हरिन किशतैँन पासी
 तंतेकोँ इस देखि दुखित तब, अधिपति हृदय सदयतैँर भो अब ॥ १८४ ॥
 दयाराम १ निज दुल्लि पुरोहित, चारन महडू दान १ ज्ञान चित ॥
 भेजे दुव २ हुलकर ढिग भूपति, अकखी द्विज तंते सकुचल अति ॥ १८५ ॥
 पुनि कूरम ढिग हमहि पठावत, यह द्विज नम्र दुखित अकुलावत ॥
 कूरम हठ लखि हम हठ साहैं, दुखित द्विज लखि जावन चाहैं ॥ १८६ ॥
 कहिय रुचत तुमहीं अब कैसी, तंते तकत दीनता औसी ॥
 सुनि हुलकर उत्तर तब दिन्नोँ, जावहु जो कितवन हठ किन्नोँ ॥ १८७ ॥

१ सकाँच से ॥ १७९ ॥ ३ आधा सूर्य उदय होत समय २ कमल
 होवै तैसे ४ घर ५ बनाव ६ बालपन के जाने और यौवन के आने की
 संधि में अर्थात् बय संधि के बनने पर ७ स्त्री के समान ॥ १८० ॥ ८ हे
 चहुवाणों के पति ॥ १८१ ॥ १८२ ॥ ९ अपने खेरे पर ॥ १८३ ॥ १० अष्ट बुद्धिवाले
 ॥ १८४ ॥ ११ गले से १२ वेद को १३ चाँडाल ने निकासा अर्थात् जैसे चाँडाल
 अपने गले से वेद का उच्चारण करके (अधिकारी नहीं होने के कारण) अथवा
 अवदरत्नावली में होम के धूम को निगरन लिखा है सो चाँडाल होम करके
 संकट में पड़े तैसे १४ भीलों की पास में १५ अत्यन्त दयावान् ॥ १८५ ॥ १८६ ॥
 ॥ १८७ ॥ १८८ ॥

मरहठाका ईश्वरिसिंहसे सधि करना] सप्तमराशि पञ्चविंशमयूत (३५२०)

यह सुनि द्विज १ चारन १ जुग २ आयो, नृपकों हुलकर * कथित सुनायो
सुनि चहुवान सेन निज साजी, कसि कटिबध चलयो चढि
बाजी ॥ १८९ ॥

सग भये हुलकर भट सारे, बाढव पर दल सिंधु बिहारे ॥
ढुढारे पिक्खन जन आये, धन्य धन्य कहि बिरुद बढाये ॥ १९० ॥
इम कूरम डेरन तोरन गय, प्रबिसन लग्गे तत्थ चढे हँय ॥
तबहि द्वारपालन कर जोरे, अक्खी अरज जात नहिँ घोरे ॥ १९१ ॥
यह तोरन डोढी करि मानहु, अगग बहुरि डोढी नहिँ जानहु ॥
पाउसँ १ रन २ कारन दुवरपाये, पाँतै रँखत पुखत नहिँ लाये ॥ १९२ ॥
अगग ईश्वरिसिंह बिराजत, जवनी ओट बीच नहिँ राजत ॥

बिराजत १ हिराजत २ अन्त्यानुपास १ ॥

जावत तुरग चढै दग जुनि हँ, तो सकोच पररपर घुरिहँ ॥ १९३ ॥
अंतर द्वार गिनहु डहिँ पाँतै, त्यागहु महाराज हय ताँतै ॥
सुनि नृप रीति निपुन तजि बाजी, प्रबिस्पोद्वार लिपेँ भट राजी १९४
जैपुरपति भट अलप सत्थ जँहँ, तक्कयो नृप सम्मुह परिखद तँहँ ॥
इक १ ज सर्वत १ कलायपति कुमर, अरु दलेल २ धूलापुर ईश्वर १९५
मरईश्वर १ अन्त्यानुपास ॥ १ ॥

तिम हरनाथ ३ नरूका राउत, अजितसिंह ४ कूरम सेखाउत ॥
सुभट निकट इत्यादि छसानहि, जैपुरपति उठ्यो नृप जातहि १९६
पायदाज अवधि सम्मुह सँरि, रीति उचित दुवर हत्थ मत्थ धरि
सभा प्रबिसि अप्रतिहत सासन, बैठे उभय २ एकही आमन १९७ ॥
* कहना ॥ १८९ ॥ † बाण्डू का सेना रूपी समुद्र पर बबयाग्नि रूप से चला
॥ १९० ॥ १ बाहर के द्वार पर २ घाँसे पर चढा हुआ जाने लगा ॥ १९१ ॥
३ इस द्वार को ४ वर्षा के और युद्ध के कारण ५ पुष्ट सामग्री ॥ १९२ ॥ १
कनात की आड़ पीछ में नहीं देखती है ॥ १९३ ॥ ७ भीतर की डोढी ८
वीरा की पत्नी ॥ १९४ ॥ १९५ ॥ १९६ ॥ ६ चला कर १० नहीं रुकनेवाले
हुकम से ॥ १९७ ॥

पान१ रु अतर२ निवेदि परस्पर, किय संलाप घटी इक१ हितकर
 उठि करि सिक्ख भूप पुनि आयो, पहिलैं जिम कूरम पहुँचायो ॥१८॥
 तंते तदनुं पठापो हुल्लकर, कूरम प्रति अक्खी तिहिं देरवर ॥
 अब टींका नृप कुम्भ पठावहु, पुनि बुंदीपति डेरन आवहु ॥१९॥
 सुनि टींका पठयो तब कूरम, इक्क१मंदासृग इक्क१ तुरंगम ॥
 इक१ सिरुपाव इक्क१मनि भूखन, पठये दै इम संग सचिव जन २००
 तिन टींका नृप अत्थ निवेदिय, संभर नाथ बिहसि रवीकृत किय ॥
 दैन लागे बसुं कूरम दासन, सो नलयो रु गये जिम सामन ॥२०१॥
 दुजे२ दिन कूरम भूम बाधन, संभर सिविर गयो हित साधन ॥
 अगगै रीति मिलनकी अक्खी, पद्वति सोहि अत्थ मिलि रक्खी २०२
 दुव२ सिरुपाव दोय२ द्य दिन्नै, इक१ इकही जैपुम्पति लिन्नै ॥
 मानिकराम व्यास नृपको तब, हुल्लयो हित अर्पित रक्खहु सब २०३
 तोहु न हत्थ द्वितीयन२ घल्लयो, अतर१ पान२ लाहि कूरम चल्लयो ॥
 हुल्लकर डेरन जाय मिल्यो पुनि, सुनत मत बुंदीन बिरुद धुनि ॥२०४॥
 हितपूरब बैठे इक१ आसन, सुख सह होन लग्यो संभासन ॥
 कूरम तत्थ करार न राख्यो, लोभ उदंतै समजैहि भाख्यो ॥२०५॥
 ॥ दोहा ॥

कूरम नाम मल्लूक१ इक, पंचायण कुल जात ॥

आमैर पै अरधयो वहै, बखसि गाम बसु ब्रौत ॥ २०६ ॥

बुंदीपुर आयत्त पुर, गैनोली अभिधान ॥

सहित परगन सो दयो, थिर कूरम तिहिं थान ॥ २०७ ॥

॥ १९८ ॥ १ जिस पीछे २ दहबड (जीव) ॥ १९९ ॥ ३ हाथी ॥ २०० ॥ ४ घन
 ५ कछवाहे के सेवकों को ६ ईश्वरीसिंह की आज्ञानुसार कुछ न लेकर पीछे
 गये ॥ २०१ ॥ ७ मिटानेवाला ॥ २०२ ॥ ८ स्नेह के साथ नजर किये हुए ॥ २०३ ॥
 ॥ २०४ ॥ ९ स्नेह पूर्वक १० लोभ की वार्ता सम्मुख नहीं करने का करार किया
 था सो नहीं रक्खा लोभ का ११ वृत्तान्त १२ खबर ही कहा ॥ २०५ ॥ १३ आमैर
 के पति ने १४ धन का समूह ॥ २०६ ॥ १५ बुन्दी नगर के अधीन पुर ॥ २०७ ॥

ताकी बत्त मल्लार सन, कूरम कहिय बहोरि ॥

रक्खी सोहि मल्लूक हित, अवनि आर दिय छोरि ॥ २०८ ॥

सुनि मल्लार अक्खी कुपित, किन्नो तुमहि करार ॥

बत्त समत्ताहि लोभकी, क्यों ब करत छल्लकार ॥ २०९ ॥

बसुमांति बुदिय देसकी, लेसहु तुमहि मिलौन ॥

कोबिंद रहत करारमै, ठेले दह ठिलौन ॥ २१० ॥

अतर १ पान २ यह अक्खि दै, कूरमको दिय सिक्ख ॥

सुनहु राम नृप यो रही, प्रपितामहकी तिकख ॥ २११ ॥

इति श्री वशभारकरे महाचम्पूके उत्तरायणो सप्तमः राशौ उम्मे-
दसिंहचरित्रे सजद्वसूर्यमल्लकूर्मराजपरसेन्याऽभिमुखनिस्सरणाकृतप-
लायनव्यासगगाधरतद्भुल्लकारनिकटाऽऽनयनमहारणार्चनमेघाऽऽसा-
राऽन्तराऽपिनालीयन्त्रचननतद्दिन ४ निर्यागपथास्थितसर्वकाक्षक्षे-
पगामाधवाऽऽदियथाप्राप्तमकुष्ठाद्यशनद्वितीय २ दिनयुद्धभवनको-
टामटपोधसिंह १ मरणागगाधरयोधनप्रकटीकृतप्रपातमिषकर्मराज-
निस्सरणाविदिततद्भुल्लकारो १ उम्मेद २ माधव ३ सज्जीभवनेश्वरी
सिंहाऽवरोधनगगाधरजैपुरमार्गाऽवरोधनतद्देशलुट्टनाऽऽर्थपचसहस्र
५००० सैन्यप्रेषणाभटप्रतिभटद्वहत्समिद्धिरचनतन्ते १ सेखाउत १

॥ १०८ ॥ १ लोभ की बार्ता अथ सम्मुख क्यों करते हो ॥ २०९ ॥ २ नृप
३ अतर ॥ २१० ॥ १११ ॥

श्रीवशभारकरे महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में उम्मेदसिंह के चरि-
त्र में, जाट सूर्यमल्ल और ईश्वरीसिंह का युद्ध की सेना के सम्मुख निकलना १
व्यास गगाधर का भागकर उनको भुल्लकार के समीप लेजाना २ महा युद्ध का
रचना और मेघ घाग में भी तापों का चलाना ३ इस दिन घोड़ों की डोरें
लिये पथास्थित समय पिताना ४ माधवसिंह आदि का मिथ गया जैसा मोठ
आदि को भोजन करना ५ दूसरे दिन युद्ध होकर कोटा के भट पोधसिंह का
मरना और गगाधर के युद्ध प्रकट करने से सुखाम करने के सिध से ईश्वरीसिं-
ह का निकलना ६ इस के विदित होने पर मल्लार, उम्मेदसिंह, माधवसिंह का
सज्ज होकर ईश्वरीसिंह को रोकना ७ गगाधर का जयपुर के मार्ग को रोकना
और ईश्वरीसिंह के देश लूटने के अर्थ पाच हजार सेना को भेजना ८ भट

सक्षतीकरणाद्वितीय २ दिनसमापनपुनःपष्ठी ६ दिनयोधननिगृही-
तजयपुरप्रसारजननासाऽऽदिकर्त्तनतदऽनोऽन्नाद्यशनवस्तुलुण्टनप्रे-
षितपुननासम्भरपुरपर्यन्तजयपुरजनपदनिर्द्धनीकरणांगगाधरनारव
मारणानात्तीयन्त्राऽवरुद्धीकरणातत्सहायजटसूर्गमल्लयोधनतन्तेपलाय
नतृतीय ३ दिनसमापनत्रस्तकूर्मराजहुलकरकथितस्वीकरणाजय-
सिंहप्रस्तबुन्दीत्यजनमाधवाऽर्थदेशचतुष्टय ४ विसर्जनाऽन्योऽन्य
शिविराऽऽगमनहुलकर १ कूर्म २ मैत्रीमण्डनबुदीश १ जयपुरेश-
२ यथामर्यादोपायनमिथानिवेनदग्रहणमल्लारपुनर्लब्धजायसिंहिभ
र्त्सनं पञ्चविंशो २५ मयूखः ॥ २५ ॥ ॥ २०६ ॥

प्रायोब्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ षट्पात् ॥

द्वे दिन बजि प्रथम कुंच दुंदुभि हुलकर दत्त ॥

बजि जैपुर वल बीच हुव सु बादन कोलाहल ॥

पहिलें चलि कछवाह लग्यो निज पत्तन पदति ॥

और प्रतिभटों का बड़ा युद्ध करके तंते गगाधर का सेलावत (सीकर के राय
राजा) को घायल करना और द्वितीय दिन का समाप्त होना ९ फिर छठ के
दिन युद्ध होकर जयपुर की रत्नद लानेवाले लोगों को पकड़ कर नाक आदि
काट कर उनके छकड़ों से शस्त्र आदि भोजन की वस्तु को छटना १० भेजी हुई
सेना का सांभर नगर तक जयपुर के राज्य को निर्धन करना ११ गगाधर का
नरुकों को मारकर तोषों में कीलें लगाना और उनकी सहाय पर सूर्यमल्ल का
युद्ध करके गगाधर के भागने पर तीसरे दिन का समाप्त होना १२ डर कर
कछवाहों के राजा का हुलकर का कहना स्वीकार करना १३ जयसिंह की
ली हुई बुन्दी को छोड़ना, माधवसिंह के अर्थ खार देना और ईश्वरीसिंह,
मल्लार और उम्मेदसिंह का परस्पर डेरों में आना १४ हुलकर और ईश्वरीसिंह
का मित्र होना और बुन्दी के पति व जयपुर के पति दोनों का सूर्यादा पूर्वक
भेट देना लेना १५ फिर जोश करनेवाले जयसिंह के पुत्र (ईश्वरीसिंह) को
मल्लार के धमकाने का पच्चीसवां २५ मयूख समाप्त हुआ और आदि से तीन
सौ ३०६ मयूख हुए ॥

१ बाघों (बाजों) का २ अपने पुर के मार्ग

मरहटोंका वमेदसिंहको बुद्धी दिखाना। सप्तमराशि पहाँचमयूक्त (१५१३)

मनि जिम उरग गुमाय नम्पो न करै फन उन्नति ॥

खट वसु तुरग ससि १७८६ सक गिल्यो जयसिंह सु बुद्धिप जहर ॥

शिवरीसिंह तस सुत असह लई, घुम्मि ताकी लहर ॥ १ ॥

दोहा—ढुढारे इम दुढि रन, गजे प्रसभ गलार॥

सत्प कियो सकल्य निज, माधव१ हह्मर मलार ३ ॥ २ ॥

॥ सचरगागद्यम् ॥

या रीति जैनक जयसिंहनै सधा करि स्वीय करी अचला ईश्व-
रीसिंह आतंकते छोरि आयो ॥

अरै बुद्धीके दुर्ग तारागढमें नरूके कछवाह सिपाह रक्षक र-
क्खेहे तिनको कढापवेको तिनके स्वामि नारव लदाना नगर ना-
थ कुमार१ तथा हरनाथसिंह२ इनके उभय२को अर्गे करि लेजा-
यवेको उदत हुलकरसौ कहायो ॥

तब जैपुरपतिके प्रस्थानके समय ए दोऊ२ नरूके कछवाह
लार लेवेको मल्लारनै बुलाये ॥

अरु वे आवेस अधीन होय न आये तब सत्तसय ७०० सौदी
स्वकीय सेनाके संगडी पानिप करि मेरिबेको पठाये ॥ ३ ॥

जहाँ मरहठनको जोरदार जयी जानि जैपुरको जोध जुग२सा-
इमी सूबेदारकी सग भयो ॥

जब जयके मदमत महिमडल मडन उम्मेवसिंह१ माधव२मल्ला
र३ कुघ करि देवगाँव बघेरा आनि मुकाम दयो॥

तहाँतै सेना रैखत रसालेको तो टोहानगरकी राह चलायो ॥

अरु इन तीन३नके अभयसिंह धैन्वधराधीस तीर्थगुरु पुढकर
राज हो तासौ मिलिबेको उत्साह आयो ॥४॥

॥ १ ॥ २ ॥ १ पिता २ प्रतिज्ञा फरके ३ मूसि ४ अरु ५ नरूका ६ वृत्तान्त ७
हुकम के आधीन ८ सवार ९ पलात्कार से ॥ ३ ॥ १० वेशगाय और बघेरा
दोनों जुवे खुवे गाँव हैं परन्तु दोनों एक ही स्वामी के अधिकार में होने के
कारण दोनों का नाम शामिल होते हैं १ सामग्री (सामान) २ मारघाट का पति

॥ दोहा ॥

हुलकर१ कूरम२ हड्ड नृप३, सेन अलप लौ संग ॥

पैते पुक्खैर तित्थगुरू, मरुपति मिलन उमंग ॥ ५ ॥

अभयसिंह चिरँकालतैं, हो पतनी जुत तत्थ ॥

मिलि तासौं बगरू बिजय, अक्खयो सबन समत्थ ॥ ६ ॥

सुता नृपति जयसिंहकी, नाम विचित्रकुमारि ॥

लाये परगनाँ अनुजँ तस, किय मंगल हित कारि ॥ ७ ॥

महिमानी करि मुदित मन, रठोरन अधिराज ॥

हुलकर१ सालर्क१ हड्डनृप१, बुल्ले३ जिम्मन काज ॥ ८ ॥

राजगढेस किसोर१निज, भ्रात सहित मरुपाल१ ॥

माधव१ संभर१ च्यारि४ मिलि, किय भोजन इक१थाल९

हुलकर१मरुपति१के हु हो, पैगघ सखापन अगग ॥

सोहु जिमायो रक्खि ठिग, सम्मदँ पुरि समग्ग ॥ १० ॥

विनैस्यो बाजेराय तब, मद्य तजो मल्लार ॥

अभयसिंह पायो इहाँ, प्रैसभ मंडि अति प्यार ॥ ११ ॥

इक१इक१गज दुव२दुव२अरब, इक१इक१ बैर सिरुपाव ॥

इक१ इक१भूखन नगजटित, दिय तीन३न करि चाव ॥ १२ ॥

लौ तिन तीन३हि मरुप जुत, आये पुनि अजमेर ॥

अभयसिंह निंदा इहाँ, किन्नी सोदँर केर ॥ १३ ॥

बखतसिंह मामकँ अनुज, पहिलैँ दिल्लिय पत्त ॥

जवननँ दल्ल हमसन लारन, आनत सुनियत अत्त ॥ १४ ॥

२ पुष्कर १ गये ३ तीर्थगुरु ॥ ५ ॥ ४ बहुत समय से ५ छी सहित
 ॥ ६ ॥ ६ उसके छोटे भाई माधवसिंह के परगने ॥ ७ ॥ ७ राठोड़ों का पति =
 अपने साले माधवसिंह ॥ ८ ॥ ९ ॥ ९ पाघ बदल भाई पन १० हर्ष से पूरित
 होकर ११ समग्र अथवा मार्ग सहित (रीति पूर्वक) ॥ १० ॥ १२ बाजेराव मरा
 तब १३ अत्यंत स्नेह से हठ करके ॥ ११ ॥ १४ घोड़े १५ श्रेष्ठ ॥ १२ ॥ १६ स-
 होदर (सगेभाई) की ॥ १३ ॥ १७ मेरा छोटा भाई १८ यवनों की सेना ॥ १४ ॥

वनें जग तो वेगही, हुलकर करहु सहाय ॥

सुनि मल्लार स्वीकार किय, बहु सतकार बढाय ॥ १५ ॥

तदनु तीन३ अजमेर तजि, लग्गे बुदिय राह ॥

बिचतैं पलटि भनायपुर, गो सभर नरनाह ॥ १६ ॥

ही सपत्न जनर्ना१ तहाँ, अरु ऊदाउति नारि२ ॥

मिलि तिनसों पच्छो मुखो, बुदी बिलसन धारि ॥ १७ ॥

मिलि माधव१ मल्लार २ सन, पुनि किय सैजव प्रयान ॥

तीन३न सरित बनास तट, दिन्नैं आनि मिलान ॥ १८ ॥

उज्ज्वल पख इसमास तँहँ, बुद्धे जलद कराल ॥

चढी सरितकी ओट करि, पलटे पच्छे खाल ॥ १९ ॥

दल विच जल गलधर्न बढि, विथरघो डेरन बोय ॥

पानी१पवन२ तुपारं३ करि, मरे मनुज सत दोय२००॥२०॥

दूजे२दिन आवाँ नगर, पत्ते जल भय पाय ॥

टोढा त्यों पठयो जु बल, मिल्यो सु तत्थहि आय ॥ २१ ॥

सुखतैं रहि नवरत्न९ सब, तीन३न बितये तत्थ ॥

अष्टमि८ दिन मल्लार इक१, मगायो महमर्त ॥ २२ ॥

॥ पदपात् ॥

दूतन दिस दिस दोरि हठन हेरयो इक१ कासर ॥

तीन३ तीन३ बल बक्र पँटल गति सग पिठिपर ॥

अरुन अंखि अतिकोप दिपत उँलमुक दमकावत ॥

स्वास नैस सननकि धरनितल पयन धुआवत ॥

॥ १५ ॥ १ जिस पीछे ॥ ११ ॥ १० ॥ २ शीघ्र ॥ १८ ॥ १ आहिबन मास मर्पकर
४ मेह वरसा ५ नदी के पानी की रोक से नाखे पीछे बुडे ॥ १९ ॥ १ गले पर्यंत
७ ठंड से ॥ २० ॥ २१ ॥ ८ मदमस्त ॥ २२ ॥ ९ महिष (भैंसा) १० पीठ पर छाये
हुए तीन तीन बलवाले टडे सींग ११ अगीरे के समान आँखें चमत्का हुआ
१२ नाकों से रबास बजकर

नहि सहन महन ओरन नैदन गैवला जानि उद्धत अरिय ॥
मानहु बिहाय कालहिँ कुपित संजमनी सन उत्तरिय ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

आन्पों अडर लुलाय वह, देवी हित बलिदैन ॥
भारी असि हुलकर भूपटि, लगी जैनमत लैन ॥ २४ ॥

॥ षट्पात् ॥

सिंगन लागि समसेर तरकि तुड़ी हुलकर कर ॥
तब जरंत गुन तोरि चल्यो दारुन छुटि दुद्धर ॥
देखत यह हय दपटि भूपटि संभर असि भारिय ॥
सिंगन जुगल समेत बंस सह पिठि बिदारिय ॥

अरराय मंह सु इम खाय असि पाय उलटि कटि खुलि परयो ॥

हुव लखि अचिञ्ज महहृ दल इत देविय बलि अदरयो २५

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणो सप्तम ७ राशावुम्मे-
दसिंहचरित्रे प्रस्थापितकूर्मराजमल्लारो १ म्मेद २ माधव ३ पुष्करा-
ऽऽगमनमरुराजाऽभयसिंहमिलनाऽनन्तरत्रय ३ प्रत्यागमनदृष्टभक्षाय
पुरबुंदीन्द्र १ सहितहुलकर २ कूर्म ३ वाशिष्ठीतटप्रपतनाऽकाला-
ऽऽसारवर्षाशिविरसंप्लवनमितमानवमरणासर्वसैन्याऽऽवापुर्निवस-

१ अपने से बड़े किसी अन्य का नाद सहन नहीं करता इसी कारण मानों
२ दोनों सींग ऊपर अड़े हैं ३ यमराज को छोड़कर क्रोधित हो ४ यमराज
की पुरी से उतरा है ॥ २३ ॥ ५ भैंसा ६ जैनियों के मत (अहिंसा धर्म) को
लेने लगी अर्थात् उस भैंसे का कधा नहीं कटा ॥ २४ ॥ ७ वह भैंसा रस्सी
तुड़ा कर ८ दोनों सींगों सहित ९ पांसे के हाथ सहित १० माहिष ॥ २५ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में उम्मेदसिंह के चरित्र
में ईश्वरीसिंह का प्रस्थान कराकर मल्लार, उम्मेदसिंह, माधवसिंह का पुष्कर
आना १ अभयसिंह से मिले पीछे तीनों का पीछा आकर भणायपुर को
देख कर बुन्दी के पति सहित हुलकर और कछवाहे (माधवसिंह) का बनाम
नदी के किनारे सुकाम करना २ बिना समय मेघ धारा के वर्ष ने से ढेरों में
जल भर कर धोड़े मनुष्यों का मरना और सब सेना का जांबां नामक नगर में

कछवाहाका कार्तिमे बूरी छोड़नेका करार] सप्तमराशि सप्तविंशमयूष(३६३०)

नाऽऽश्विनोत्तरनव ९ रात्रपूज्यपूजनविधानबुन्दीन्द्रतिरस्कृतमल्लारम
गडलाग्रमहामहिषनिपातनविश्वेश्वरीबलिनिवेदन षष्ठिशो २६ मयूष
॥ २ ॥ ॥३०७॥

प्रापोन्नजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

किन्नो सुदिय तजनको, कतिप बिसेव करार ॥
यो बहु दिन आवाँ रहे, माधव१ हङ्कर्मनार३ ॥ १ ॥

॥ पदपात ॥

कन्या६ को रवि भुगि अस तुल७के लिय पद१५ ॥
प्रतिदिन सीत प्रगल्भ होत बालन विनु दुस्सह ॥
आवाँपुर इहि काल हङ्क१हुलकर२ अरु माधव३ ॥
दीपे अमा३० करि दान अन्नकूटक किय उच्छव ॥

धव१ छव२ अन्त्यानुप्रास १ ॥

मिलि तत्य विप्र गगाधर१ सु खत्री केसवदास२जुत ॥
करि मत्र आनि भूपहिँ कहिय सुनहु बतबुध सिंह सुत॥२॥
पादाकुलकम् ॥

कासी विच सुरजन नृप संभर, रचिप राजमदिर निर्काय बर॥
सो पंडित सूरजनारायन, मगत रहन काज द्विज नुंति मन॥३॥

यन१ मन२ अन्त्यानुप्रास १ ॥

वह आलये निज काम न आवे, पुराय बहै जो वह द्विज पावै॥

निवास करना १ आश्विन के शुक्ल पक्ष में नवरात्रि में पूजन योग्य (देवी)
पूजन के उचित बुन्दी के पाति का मल्लार के खड्ग का तिरस्कार करनेवाले
महिष को मारना और देवी के पखि देने का चण्डीसर्वा २६ मयूष समाप्त
हुआ और आदि से तीन सौ सात १०७ मयूष हुए ॥

१ कार्तिक सुदि पक्ष में २ इस काण्व ॥ १ ॥ सूर्य ने १ कन्या संक्रांति को ओ-
गकर ४ प्रपक्ष ५ क्षिपों के दिन ० वीशाखी की अमावास्या का दीपदान करके
॥ २ ॥ ७ चतुर्थाष्ट ८ अष्ट मध्य (मकान) ९ स्तुति के मन से ॥ ३ ॥ १० स्थान

मुनि नृप कहिय पुण्य तीरथ थल, है नहिँ *देय विचारि
लखहु भल ॥ ४ ॥

भूरजनारायन द्विज †उद्धव, अद्वितीय तिन दिनन हुतो यह ॥
खट ६ नास्तिक ‡प्रतिभट बनि खंडै, मत खट ६ आस्तिक दृढ
करि मंडै ॥ ५ ॥

सौत्रांतिकन^१ समूत उग्वारै, बैभाषिकन^२ सजोर बिठारै ॥
योगाचारन^३ लखत उडावै, माध्यमिकन^४ मिलि गरब गुमावै^६
जैनन^५ जाल राहु गति प्राप्तै, लोकायतिकन^६ मुंडि निकासै ॥
व्यास^१ अर^२ बेदांत विचारन, गोनर्दीप^२ योग अवधारन ॥७॥
दूजो कपिल^३ सांख्य विच सोहै, मीमांसा जैमिनि^४ मति मोहै
द्विज पर अपर न्याय विच गोतम^५, वैशेषिक वादी कणाद^६
सम ॥ ८ ॥

कासी विच पंडित यह असो, करै बाद जासो बुध कौसो ॥
अगौ यह तंते गंगाधर, गोन्हावन कासी तीरथ बर ॥ ९ ॥
जवनन जानि गहन दल प्रेस्यो, पंच^५कोसि अंतर तिन हेर्यो
तंते तब सूरजनारायन, रक्खयो सरन छिपाय प्रीति पन ॥१०॥
पुनि छन्नै दक्खिन पहुँचायो, यह उपकृत तंते उर आयो ॥
पुनि राजामल मित्र सु पंडित, अग्र रह्यो हित दुहुँन^२ अखंडित ॥११॥
जब जयसिंह नगर बुंदिय लिय, सातमसूनु अंत्य पुनि अप्पिय
तबहिँ राजमंदिर तीरथ थल, मित्र द्विजहिँ दिन्नै राजामल ॥१२॥

* देने योग्य नहीं है ॥ ४ ॥ † ब्राह्मण के कृष्ण में जन्म लेनेवाला ‡ छःहों
नास्तिकों का शत्रु होकर खडग करता था, इन छहों नास्तिकों के नाम छठे
छन्द में बताते हैं ॥ ५ ॥ १ दिगंबर, २ चार्वाक ये छहों भेद नास्तिकों के
हैं, अथ छाने छः आस्तिक बताते हैं १ वेदान्त के विचारने में दूसरा वेदव्या-
स ४ पतंजलि के सन्धान योग का धारण करता है ॥ ७ ॥ ८ ॥ ५ पंडित ॥ ९ ॥
१ पकड़ने को सेना अजी ७ काशी की पुण्य भूमि की सीमा पांच कोस की है
॥ १० ॥ ८ उपकार १ वह पंडित राजामल का मित्र था ॥ ११ ॥ १० सात-

तबतैं रही बिप्रकौ वह भुव, अत्र उम्मेव लई बुदिय धुव ॥
 केसव१ अरु गगाधर२ यातैं, बुल्ले नृपहिं दिवावन बातैं ॥१३॥
 पक्षपात इनको नृप जान्यौ, पुनि वह तीरथ थान प्रमान्यौ ॥
 द्विज वह पात्र कक्षो बुदीपति, पै किम होय *अवेप दैन मति१४
 तब दोउन२हुलकर प्रति अक्खी, रहैं टेक यह प्रभु तब रक्खी
 सुनि मलार बुल्लयो जिनकी भुव, तिनके दपैं चिनौ न मिलैं
 धुव ॥ १५ ॥

तब दोउन२ छनैं छल किन्नौ, हुलकर नाम पत्र लिखि लिन्नौ
 ताहीकी भेदा मुद्रित करि, पठयो बल पडित हित अनुसरि॥१६॥
 तिहिं बुध लखि हुलकर दल आयो, बहुरि राजमदिर अपनायो
 नृप यह कैथ चिरकाँल माँहिं सुनि, जब जानी तब छिन्निबयो
 पुनि ॥ १७ ॥

भट सेदूखड़ाइ सु हुलकर, बुदियपुर अगहि पठयो वर ॥
 तिहिं करार अवसेस न धारयो, क्रूरम झडा तोरि बिहारयो ॥१८॥
 सभर बहरकं मडि सुहाई, फेरी पुर उम्मेद दुहाई ॥
 जैपुर सचिव तत्पहो जाकैं, धूगत संतत परी वर धाकैं ॥ १९ ॥
 ॥ सचरगागद्यम् ॥

झडा तूतही जैपुरके सूरवीर बुन्दी हे तिननैं अपनी चढी तलब
 को लैयो विचारयो ॥

अरु बनिक जादूबास नाटानीको भानेज आमैर अधीस ईश्वरी-
 सिंह उहाँ अमात्य रक्खयोहो तापैं त्रास डारयो ॥

तब वह बनिक घरके सूरनतैं घवराय बनिताके बख धरि छनैं
 मसिह के पुत्र दखेकसिंह के अर्थ ॥ १२ ॥ ११ ॥ * नहीं देने योग्य सें देने की
 बुद्धि कैसे होती है ॥ १४ ॥ १५ ॥ १ हुलकर की छाप लगाकर १ पत्र ॥ १६ ॥
 वमेदसिंह ने यह शक्यायमुक्त समय पीछे सुनी ॥ १७ ॥ करार के दिन वाकी
 हैं सो नहीं मोया ॥ १८ ॥ चहुवाय की पत्रा अनिरन्तर समय ॥ १९ ॥ ६ स्त्री के

कहि आवाँनगर गयो ॥

अरु खत्री केसवदाससौं अपनी आपत्तिको उदंत कहत भयो ॥ २० ॥
कही सेटूखइराड करारके दिन अठ्ठ ८ *अवसेसहै † तथापि आभैर
ईसको भंडा तोरिढारयो ॥

अरु यह जानि अपनै सूरबीरन बढ्यो हक लैयेकौं मोमें त्रास पारयो

यह सुनतही खत्री केसवदास मलारतैं रुठि चलयो ॥

तब नीठिनीठि पच्छो मनाय हुलकरनै सुतर सवार तत्कालही
बुन्दी मुकलयो ॥ २१ ॥

तानैं जाय नगरमैं बहोरि कछवाइनको केतन रुपायो ॥

यह देखि चोतरफके लोकनके बुंदी आपबे मैं संदेह आयो ॥

तदनंतर करारके दिन पूरे होत आवाँ नगरतैं पृतनाको प्रया-
न भयो ॥

अरु उँज्ज अहर्गर्गनके अवदांत अर्द्धकी अष्टमी ८ के अह द्रंग
दुबलान मिलान दयो ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

दूजे दिन दुबलानतैं, किन्नौं सबन प्रयान ॥

संभरकौं हुव सकुन सुभ, थिर रक्खन निज थान ॥ २३ ॥

बाम दिसा रहि राजसुक१, बुल्लयो मोदित बानि ॥

लावक१ कँकर२ चकोर३ ए, अग्रेसर हुव आनि ॥ २४ ॥

॥ षट्पात् ॥

ताम्रचूड़२ हुव बाम बाम बुल्लिय प्रसन्न खर३ ॥

गंधैनकुल४ पुनि खैनक५ बाम हुव भोलि^२६ मधुर स्वर ॥

गहकि बाम गोमौयु ७ बाम सारस ८ बँलि बुल्लिय ॥

॥ २० ॥ * बाकी है † तोभी ॥ २१ ॥ १ भंडा २ सेना का ३ कार्तिक
मास की ४ आधे शुक्ल पक्ष की ५ दिन ६ मुकाम ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥

७ राजसुआ नामक पक्ष विशेष ८ लावा और तीतर आंग को बोले ॥ २४ ॥

९ मुरगा १० छलुन्दरी ११ बूहा १२ ऊँट १३ शृगाल (गीदड़) १४ पुनि

सवली९ टिटिभे१० सुखद बाम बुल्लि रु हित खुल्लिय ॥-
गोवैत्स११पुष्पसूची१२ बहुरि एहु पच्छिं हुव२ बाम हुव ॥
दिस सव्य भयो पौरावत१३हु देन भूपहितधाम धुवा॥ २५ ॥
॥ दोहा ॥

बापस१४ बुल्लिय बाम पुनि, बुल्लिय बाम तुरग१५ ॥
बाम वग्घ१६ मृगराँज१७बलि, हुव तरच्छु१८ हित सग॥२६॥
॥ पट्टपात् ॥

फेट१ विहग अपमंठप भयउ अपसव्य कपिंजर२॥
पिंगैलिका३ अपसव्य भैरद्वाज४हु विहग बर ॥
दक्खिन हुव पुनि दहिके५ भौस६ दक्खिन रेवं भासत ॥
सलिल पूर अपसव्य कलस७ अतिल्लाम प्रकासत ॥
दिस बाम हितुं दक्खिन सरल तारा उत्तरि पोदकिंये१ ॥
सुभ सकुन होत इत्यादि सब चाहवान भूपति बलिय॥२७॥
॥ दोहा ॥

हुलकर१ माधव२ हहु नृप३, इके सँत्वर तत ॥
पुर बुदिय प्राकारके, बाहिर डेरन पैत ॥ २८ ॥
॥ पादाकुलकम् ॥

नृप तद्दिन भोजन निर्ममाये, बुदिय विप्र सबहि जिम्माये ॥

१ टीटोटी २ पच्छि विशेष ३ पच्छि विशेष ४ पची ५ कपोत भी पाम
दिशा में हुआ ॥ २५ ॥ १ पाथ (सिंह विशेष पधेरा) ७ सिंह और चीता
बाया हुआ ॥ २६ ॥ ८ फट नामक पची ९ दाहिना हुआ १० आतक (पापीछा)
११कोचर पची दाहिना हुआ१२भरहुल (पच्छि विशेष १३अग्नि (लाय) १४ग्रीव
१५शब्द से शोभित हुए१६दाहिनी ओर जल पूरित चहा१७पाम दिशा स द
क्षिण दिशा में१८फाली घिटी सीधी उत्तरी और१९शकुनबिडी (रूपारेक) भी
दाहिनी उत्तरी तारा और पोदकी आदि जितने शकुन यहाँ लिखे हैं इनका
वर्णन 'वसंतराज' नामक शास्त्र में यहाँ विस्तार से लिखा है उतना
यहाँ नहीं लिखा जासकता इस कारण पाठक लोग यहाँ देखें वहसटीक छपग-
या है ॥ २७ ॥ २० ग्रीव २१ डेरों में पहुँचे ॥ २८ ॥ २९निर्माये (नवाये)

हुलकर पुनि नारव हरनाथहिं, कहि कहहु किल्ला सन साथहिं २१

॥ दोहा ॥

नारव दिय चाही नही, भट कछनकी बत ॥

बाहिर प्रीति दिखाय बलि, पठयो अनुचर तत ॥ ३० ॥

ताकी संगहि बाउला, संतू दिय मल्लार ॥

तारागढ पर जाय ते, बुल्ले कछन विचार ॥ ३१ ॥

किल्लाके सुभटन कहिय, हम निकसन जय वैंहिं ॥

नारव हरनाथहिं लखहिं, बहुरि चढयो हँक लैंहि ॥ ३२ ॥

तब संतू पच्छो सुरघो, कहिय मल्लारहिं आय ॥

नारव यह बैचक निपट, भटनन कहत जाय ॥ ३३ ॥

दिन्नी संतुव संग तब, हुलकर तुपक हजार १००० ॥

इन जाय रु हरनाथ वह, खिन्नो पकरि लवार ॥ ३४ ॥

तिनकी संगहि कैद तब, नारव किल्ला जाय ॥

भीतरके कहे सुभट, खल परतंत्र खिसाय ॥ ३५ ॥

माँहिं बीर उम्मेदके, रखे विजय विथारि ॥

आयो संतुव पुनि अधर, संभर आन प्रसारि ॥ ३६ ॥

सित कतिप द्वादसि १२ दिवस, कह्यो कूगम सत्य ॥

रखे हहु नरेसके, सबठाँ सुभर समत्य ॥ ३७ ॥

भंडे संभरके गहे, पर केतन करि पात ॥

आन फिरी उम्मेदकी, दिस दिस विजय दिखात ॥ ३८ ॥

॥ पादाङ्गुलकम् ॥

तेरसि १३ दिन अभिषेक मुहूरत, मन्थ्यो सबन श्रेय गँगाकन मत

बेणाराम भट्ट कोटा सन, आयो करन बेद विधि सासन ॥ ३९ ॥

१ नरुके हरनाथसिंह को ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ २ चही छुई तनखा ॥ ३२ ॥ ३
बहुत दग है ॥ ३३ ॥ ४ लवाळी (बहुत झूठ बकनेवाला) ॥ ३४ ॥ ५ नीचे
॥ ३५ ॥ ३६ ॥ १ शत्रु की ध्वजा को गिराकर ॥ ३८ ॥ ७ ज्योतिषियों के मत से

राहित अथर्व त्रयीके पाठके, ग्रानै संग विप्र बुध आठक ॥
सम्मुह जाय भूप वदन किम, उन सिराहि मंगल आसिख दियं०
॥ दोहा ॥

लौ गुरु डेरन गाय नृप, वारसि रत्ति विताय ॥

प्रात चढत रवि इक १ पंहर, प्रविस्पो नगर सुभाय ॥ ४१ ॥

हुलकर १ माधव २ सग हुव, जेपुर सचिव समेत ॥

चहुयानन पति डम चल्पो, निज अभिषेक निकैत ॥ ४२ ॥

मडयो वनिकेन नगर मनि १, वसन २ कैनक ३ विसतार ॥

भिरह टागि धृति १८ बरसको, किय छुदिय शृगार ॥ ४३ ॥

इतिश्री वशभारकरे महाचम्पूके उत्तरायणी सप्तम ७ राश्याबुधमे-
दसिहचरित्र आयापुरसर्वनिवसनकार्तिकव्यत्ययनगगाधर १ केश
वदास २ शास्त्रिगिगेमशि मूर्धनारायणराजमन्दिरदापनकथनतद्वु
न्दीन्द्राऽनूरी करणतन्ते १ खत्रि २ काँइकपतदर्पणमल्लारसेटूबुदीमे
पणतदकालकर्मकेतनत्रोटनबुन्दीन्द्रध्वजाऽऽरोपणपलाइतनट्टाणि
शागिनेपोस्तकुपितकेगवदासनिरसरणहुलकरतदनुनयनपुन पुरज-
यपुरपताकीकगशासमयान्तमर्वप्रभ्यानदृष्टशुभशकुनबुन्द्याऽऽगमन

॥ ३६ ॥ १ तीनों देहों का ॥ ४० ॥ ४१ ॥ २ अपन अभिषेक के स्थान में ॥ ४२ ॥

३ पनियों ने ४ यहाँ और ५ सुबर्ण को कैला कर ॥ ४३ ॥

श्रीपद्मभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में धमेदसिह चरित्र
में सषका आया नगर में टहर कर काली पिलाना और गंगाधर पकेशवदास
का शास्त्रि शिरामणि मूर्ध नारायण के अर्थ राज मंदिर देने को कहना और
बुन्दीपति के धस्दीकार करने पर लगे गंगाधर और खत्री केशवदास का उस
को छत्र से देना मल्लार का अपने हमराय मेहू खैराखा को बुन्दी मेजना और
उमका बिना समय बछपाहे की ध्वजा तोड़ कर बुन्दी के पति की ध्वजा
रोपना ७ भागे छत्र नाटाली के भानजे के कहने पर क्रोध करके निकले हुए
केशवदास का हुलकर का पीछा जाना और बुन्दी नगर को फिर जयपुर की
ध्वजा युक्त करना ८ फार के समय के अंत पर सष के गमन समय शुभ श
कुनों को दायकर बुन्दी आना ९ मल्लार का यल पूर्वक नरुके को गड से

मल्लारबलात्कारंदुर्गनारवनिस्सारणसूच्यूलसम्भरविजयकेतुस्थाप
नसंप्रदायगुर्वागमनकार्तिकशुक्लत्रयोदशी १३ दिनद्वितीय २ प्रहर
मुखसाहित्यसहितप्रभुपुरप्रविशनं सप्तविंशो मयूखः ॥ २७ ॥३०८॥

प्रायोन्नजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

इस उमेद अधिपति लखत, निज पुर रुचिर निकेत ॥

पहुँच्यो अग्न प्रजानकों, दिष्टि प्रसादहिँ देत ॥ १ ॥

जहाँ समरखंधी हन्यो, नृप नारायणदास ॥

वहै थान अभिषेकको, राजमहल आवास ॥ २ ॥

तिहिँ मंदिर नृप जायकै, निज कटिवंध निवारि ॥

किय विधान विप्रन कथित, वेद निकेत विचारि ॥ ३ ॥

अथसंक्षिप्तोऽभिषेचनविधिः ॥

तिल सरिसव संभारतै, पहिलै नृपहिँ न्दवाय ॥

अधिपति जय उच्चार किय, गणक १ पुरोहित राय २ ॥ ४ ॥

तदनंतर द्विजवर उभय २, जीवन १ भित्तुवराम १ ॥

इतरासन बैठे नृपहिँ, स्वजन दिखाये ताम ॥ ५ ॥

नृप तिन जनन बिसासि अरु, बंधन सुरभी छोरि ॥

संभरपति बुल्लयो अभय, विप्रन उचित बहोरि ॥ ६ ॥

निकाल कर बहुबाण की ऊँची ध्वजा को स्थापन करना २ संप्रदाय के गुरु के
आगमन से कार्तिक छुदि तेरस के दिन दोपहर के आदि में सब सामग्री सहित
राजा के पुर में प्रवेश करने का सप्ताह सवा २७ मयूख समाप्त हुआ और आदि
से तीन सौ आठ १०८ मयूख हुए ॥

१ दृष्टि से प्रसन्नता देता हुआ ॥ १ ॥ जहाँ पर बुन्दी के राजा नारायणदास
ने २ समरखंधी नामक यवन को पहिले समय में मारा था ॥ २ ॥ ३ वेद
का स्थान ॥ ३ ॥ अब संक्षेप से अभिषेक की विधि कहते हैं ४ सरसों (धान्य
विशेष) ५ सक्कह से ॥ ४ ॥ ५ दूसरे आसन पर ७ तहाँ अपने लोकों को दि-
खाये ॥ ५ ॥ ८ गौ का बंधन छोड़ कर ९ बहुबाणों का राजा उममेदसिंह ॥ १ ॥

पुनि तँहँ सांकी साति किय, पुरोहित स उपवास ॥
 बिसद माल उपर्बात इहिँ, भूखन सोभित भास ॥ ७ ॥
 उचित मत करि बेदि लिखि, बिधिवत होम बिधीधि ॥
 पढेँ पचप गन नाम तिन्ह, सुनहु राम नरराय ॥ ८ ॥
 शर्मवर्म१ अरु स्वस्त्ययन२, आयुष्य३ अभय४ नाम ॥
 स्वापराजित५ जु पचम सु, ए पच५हि प्रभु राम ॥ ९ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

कलस बहुरि सँपातवान किय, पुरट मय रु सुदर दरसन प्रिय ॥
 नृप-सितभूखन लेप माल्य लहि, तँदनु वन्हि सँन दक्खिन दिस
 रहि ॥ १० ॥

देख्यो नन्हि निमित्त बिचारन, उठयो प्रसन्न सिंग्या करि धारन ॥
 स्नानसाल पुनि नृपहिँ आनि द्विज, सौरभतैल न्दवायो नृप निज ॥ ११ ॥
 ॥ दोहा ॥

सोध्यो पर्वत अग्रकी, मिट्टितैँ नृप मैथ्य ॥
 नौकु अग्रकी मृत्तिका, लाई श्रैवनन तत्थ ॥ १२ ॥
 हरिमदिरकी मृत्तिका३, नृप उमेद मुख लाय ॥
 डईध्वज थल मृत्तिका४, घीवाँ दिन्न लगाय ॥ १३ ॥
 राजर्ध्रजिरकी मृत्तिका५, हिप लाई करि खड ॥
 गजैरद उहृति मृत्तिका६ सोये दुवर भुज दड ॥ १४ ॥

१ इन्द्र की शान्ति की ॥ ७ ॥ २ करके ३ हे राजा रामसिंह सुनो ॥ ८ ॥ ९ ॥
 ४ घड़े को धारा युक्त किया (अर्थात् घड़े से राजा पर जल डाला) ५ सोने
 का ६ हीरों का आभूषण ७ जिस पीछे ८ अग्नि से ॥ १० ॥ ९ अग्नि का
 शङ्खन देखा १० ज्वाला धारण करके उठा ११ स्नान करने क महसूस में १२
 सुगंधिवाले तैल (हृत्त्र) से ॥ ११ ॥ १३ राजा के मस्तक को १४ घड़े के घाम
 ल की मिट्टी १५ कानों के लगाई ॥ १२ ॥ १६ बपावतु में इन्द्रधनु खड़ा होवै
 उस स्थल की अपवा वर्षा के निमित्त यज्ञ किया होवै उस स्थल की मिट्टी १७
 गरदन के लगाई ॥ १३ ॥ १८ राज्य के आगन (बोक) की १९ हाथी के वाग से

मिट्टी ७ आनि तैय्यागकी, मोधी पिट्टि समरत ॥

नदि संगमकी मृत्तिका ८, लाई उदर प्रसगत ॥ १५ ॥

नदी कुल दुवरे मृत्तिका ९ पंखुलीन दुहुँ ओर ॥

मिट्टी १० गनिका द्वारकी, लाई कटि नृप मोर ॥ १६ ॥

गजसाजाकी मृत्तिका ११, ऊँ उभयरे सुधराय ॥

गोसाजाकी मृत्तिका १२, दुवरे नलकालेन लाय ॥ १७ ॥

आनि मंडुरा मृत्तिका १३, पंडो जुगलरे परदारि ॥

रथ अरिउद्धृत मृत्तिका १४, ले दुवरे चरन सुधारि ॥ १८ ॥

सर्व अंग पुनि सर्व ए १४, मिश्रित करि लिपटाय ॥

पंच ५ गैठय घटतैं बहुरि, दीनों रनान कराय ॥ १९ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

भद्रासन बैठो पुनि भूपति, लगे पढन द्विज वेद महामति ॥

चपारि ४ बरन गैत्र सचित्र चपारि ४ जँहँ, करन लगे अभिसिक्त
भूपकैहँ ॥ २० ॥

भूरव १ दिस रहि दयाराम द्विज, सँघृत कनक घट १ सिंच्यो नृप निज ॥
हरदाउत नाहर २ दिक्खन २ रहि, सिंच्यो रंजन दुग्ध कलस २
गहि ॥ २१ ॥

पटु गोविंद ३ बनिक रहि पच्छिम ३, सिंच्यो सँदधि ताम्र घट ३ लै तिम ॥
रहि उत्तर ४ हरजन ४ दासी सुत, सिंच्यो लै मिट्टी घट ४ जल
जुत ॥ २२ ॥

उठी छुई ॥ १४ ॥ १ तलावकी ॥ १५ ॥ २ नदी के किनारों (ढावों) की कमर के
३ लगाई ॥ १६ ॥ ४ जवाओं के ५ पैरों की नलियों के लगाई ॥ १७ ॥ ६ हथ
शाखा की ७ दोनों पीछियों के ८ रथ के पहिये से उठी छुई ॥ १८ ॥ ९ मिला
कर १० घृत, दूध, दही, खाँड और सहत (मधु) इन के सानिल का नाज
पंचेजव है ॥ १९ ॥ ११ लिहासन पर १२ घ्राणणादि चार वर्क से उत्पन्न १३
अभिषेक युक्त ॥ २० ॥ १४ घृत से अरेहुए सुवर्ण के घड़े से १५ नाहरसिंह
दूध से अरेहुए १६ चाँदी के कलश से ॥ २१ ॥ १७ दही से युक्त ताँबे के घड़े से

रक्खहु*बन्दि सिसदस्पन उच्चरि, पुनि छिज घटसपातवान करि॥
 राजसूय अभिसेक मत्र कहि, सिंच्यो नृपहि पुरोहित हित चहि २३
 पुनि व्है वेदीमूल पुरोहित, आय नृपति छिग सुभ सति सोहित ॥
 सत१०० छिदक सपातवान घट, लै पुनि सिंचिय नृपहि विहित
 बेट ॥ २४ ॥

सैवौषधि१ जल पुनि सिर सिंचिय, गंध उदक अभिसेक बहुरिकिय॥
 तदनतर बीजा३भिसेक हुव, पुष्पन४ सिंच फलन५सिंच्यो धुव२५
 रत्नन६ पुनि कुसजलन७ सिंचि द्विज, बहुरि कुसन मार्जित किय
 नृप निज ॥

ऋग१वेदी पुनि विप्र मुदित मन, नृप सिर कठ लगायो रोचन २६
 च्यारि४ वग्न जल बहुरि रीति करि, सरित१ तड़ाग२ कूप३ जल
 ४ घटमरि ॥

कल्पित ठानि च्यरि४सागर जल, सिंच्यो नृपहि निगम मारग भल
 गंगा१अरु जमुना२गिरि निर्भर३, इत्यादिक जल पूरि कलस बर
 सिंच्यो नृपहि समोद समस्तन, दास भाव पुनि करन लगे जन२८
 काहू सचिव छत्र१ गहि लित्रौ, काहू चमर२ मोरछल३ किन्नौ ॥
 वेत्र लौकुट४ कतिकन कर धारे, बदिनै नाना बिरुद बिथारे ॥२९॥
 भई सख नउचति गान ध्वनि, द्विजन सिराझो नृपहि बेद भनि॥
 कनक कलस पुनि गैराक धारि कर, सिंच्यो नृपहि अखिख म-
 त्र त्र ॥ ३० ॥

॥ २२॥ पयज्ञ करने वाले धृष्टद्युम्न ने कहा कि ४ अग्नि रक्षा करो यह
 कहकर फिर ब्राह्मण ने १ घड़े को धारा युक्त किया ॥ २३ ॥ १ वृद्धित मार्ग
 से ॥ २४ ॥ २ सप्त औषधियों से युक्त १ सुगंधि के जल से ४ पीजों का अभिषेक
 ॥ २५ ॥ ५ छात्रों के जल से १ अभिषेक ७ मोरों से ॥ २६ ॥ ८ चारों सनुओं
 के जल की कल्पना करके ९ वेदमार्ग से ॥ २७ ॥ १० पर्वतों के झरोके का ॥ २८ ॥
 ११ घेत की छकड़ी (छड़ी) १२ आठों ने ॥ २९ ॥ १३ ज्योतिषी ने ॥ ३० ॥

प्रायःसंस्कृतशब्दमात्रामिश्रितभाषा ॥

ते कछु वृत्तन विविध बनाये, सुनहु राम नृप नृपन सुहाये ॥
सिंचहु सब सुर तोहि नरेश्वर, ब्रह्मा बिष्णु २ तथैव महेश्वर ॥ ३१ ॥

रेश्वर १ हेश्वर २ अन्त्यानुप्रासः १ ॥

वासुदेव १ अरु संकर्षण २ पदु, प्रद्युम्न ३ रु अनिरुद्ध ४हु सिंचहु ॥
इंद्र १ अग्नि २ यम ३ निर्ऋति ४ पासी ५, पवन ६ धनद ७ कैलासवि-
लासी ८ ॥ ३२ ॥

ब्रह्मा ९ सेस १० दस १० हि दिकपालक, रुक्महु तोहि भूप अरिपालक ॥
रुद्र १ धर्म २ मनु ३ दक्ष ४ रु रुचि ५ सुनि, श्रद्धा ६ भृगु ७ अत्रि ८ रु
वशिष्ठ ९ मुनि ॥ ३३ ॥

सनक १० सनंदन ११ सनतकुमार १२हु, पुलह १३ पुलस्त्य १४ मरी-
चि १५ तथा पैहु ॥

कश्यप १६ अरु अंगिरा १७ प्रजापति, ए सिंचहु नृप तोहि महामति ३४
अग्निष्वात्त १ प्रभाकर २ ज्यौंही, पुनि क्रव्याद ३ बर्हिषद ४ त्यौंही ॥
राज्यपापु रु उपहूत ६ सु काली ७, अग्नि पितर सिंचहु मणिमाली ३५
लक्ष्मी १ बेदी २ सची ३ रुयाति ४ पुनि, अनसूया ५ रमृति ६ संभूति ७
हु सुनि ॥

क्षमा ८ प्रीति ९ सन्नति १० रवाहा ११ तिम, स्वधा १२ एहु मातर सिं-
चहु इम ॥ ३६ ॥

लक्ष्मी १ क्रिया २ कीर्ति ३ धृति ४ पुष्टि ५हु, मेधा ६ बुद्धि ७ सांति ८ ब-
पु ९ तुष्टि १०हु ॥

लज्जा ११ सिद्धि १२ तथा बसु १३ यामी १४, अरुंधती १५ लंबा १६
नृप नामी ॥ ३७ ॥

मानु १७ मुहूर्ता १८ विश्वा १९ साध्या २०, मरुत्वती २१हु बहुरि आराध्या

१ कुछ छन्दों में २ देवता ३ इसी प्रकार ॥ ३१ ॥ ४ वरुण ५ कुबेर ॥ ३२ ॥
॥ ३३ ॥ ६ प्रभु ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ७ आराधन की हुई

सकल्पा२२इत्पादि१०वर्मतिथि, सिंचहुसंभर तोहि सुजसप्रिय ॥३८॥
दिति१ दनु२ अदिति३ अरिष्टा४ अरु मुनि ५, कद्रू ६ क्रोधवशा ७
माधा८ मुनि ॥

निनता९ सुरभि१० रु कपिला११ काला१२, इतिमुख सिंचहु क
श्यप बैला ॥ ३९ ॥

पुनि बहुपुत्र सुपुत्रा भामा१, कद्रु विजय तव बहुरि सयामा१ ॥
विजय कृशाश्व बधू१ विरचहु उत, सुप्रभा१जपा२प्रदर्शना३जुत ॥४०॥
तिनको पुत्र१हु विजय बढावहु, सिंचहु भूप तोहि दित लावहु ॥
भानुमती१रु विशाला२रूप्यो पुनि, मनोरमा३रु बाहुदाख्या४मुनि४१
सिंचहु इती अरिष्टनेमि तिय, पार्थिव तोहि बढावहु दित हिय ॥
बहुला१ त्योंहि रोहिणी२ राधा३, अनुराधा४ऐंदी५हतबाधा ॥४२॥
मूल६ रु दुव२आपाढा८ ज्योही, अभिजित९ श्रवणा १० धनिष्ठा
११ त्योंही ॥

वरुणा तारका१२ भाद्रपदा१४ दुव२, रेवती १५ रु दलभ १६ भर-
णी१७ ध्रुव ॥४३॥

विजय विथारन काज तोहि पहु, सुधामयूख प्रिया ए सिंचहु ॥
मृगी१हरि२रु मृगवर्मा३सुरभा४, पूता५कपिला६दध्द्रा७सुलभा८ ॥४४॥
स्वेतभद्रचरिका१ पुलस्त्य तिय, इती सोहि सिंचहु पुहवीपिय ॥
इयेनी१अरु भासी२कौची३तिम, धृतराष्ट्री४पचमी सुकी५तिम ॥४५॥
दिनकर सूर अरुनको ए तिय, सिंचहु इह तोहि करि दित हिय ॥
आयति१निपति२रात्रि३निद्रापहु४, सब संस्थान हेतु ए सिंचहु ॥४६॥
सेना१उमा२तची३रु बनस्पति४, धूमोर्गा५ गौरी६ शिवा७निरति८
ज्योत्स्ना९ बुद्धि १० नंदिनी११वत्सया १२, आनृक्या१३हु तेरही १३

वर्म की स्त्रिया ॥ ३८ ॥ १ इत्पादि २ कश्यप की स्त्रिया ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥
३ हे राजा ४ पीडा मिटानेवाली ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ५ चंद्रमा की स्त्रिया ॥ ४४ ॥
४५ ॥ ६ सूर्य के सारथि ७ स्थिति के कारण ॥ ४६ ॥

सदया ॥ ४७ ॥

इती कालके आवपत्र जानहु, ते तव सिर अभिसेचन तानहु ॥
 अत्रि१ सासि२ कुज ३ बुध ४ गुरु ५ कवि ६ सनि ७ तम ८, सिंचहु ए
 ग्रह नव ९ आहिक १० सम ॥ ४८ ॥

स्वायंभुव १ स्वाराचिष २ औत्तम ३, तामस ४ रैवत ५ चान्द्रप ६ छेम
 वैवस्वत ७ सावर्णि ८ दक्षसुत ९, ब्रह्मसुत १० हु, गनु धर्म सुत ११हु
 नुत ॥ ४९ ॥

रुद्रपुत्र १२ पुनि रौच १३ भौत्य १४पहु, ए मनु तोहि चतुर्दश १४सिंचहु ॥
 विश्वभुक १ हु विश्वप २ चित्र ३हु सुनि, बहुरि सुशात ४ सुमुख विभु
 ५ त्यों पुनि ॥ ५० ॥

मनोजव ६ हु ओजस्वी ७ बलि ८ जुत, एकतम ९ हु अंतिक १०पुनि
 वृष ११ नुत ॥

कूतिधामा १२ रु दिविस्पृक १३ सुचि १४ पहु, देवपाल ए चउदह १४
 सिंचहु ॥ ५१ ॥

अरु रैवंत १ कुमार २ रु बर्चा ३, वीरभद्र ४ नंदी ५ हु सुवर्चा ॥
 स्वर्चा १ सुवर्चा २ अन्त्यानुप्रासः १ ॥

पुरोजवाख्य ६ विश्वकर्मा ७पहु, सुरन मुख्य तोकों ए सिंचहु ॥ ५२ ॥
 आत्मा १ हु असुमान २ दक्ष ३हु जिम, हविष ४ गविष्ठ ५ प्राणा ६पटु ७
 ऋत ८ तिम ॥

सत्य ६रु आह्य १० नरेत् सुवजस, सिंचहु देर अंगिरस ए दस १० ॥ ५३ ॥
 क्रतु १ रु दक्ष २ वसु ३ सत्य ४ काल ५ मुनि ६, संचमान ७ धृतिमा-
 न ८ मनुज ९ पुनि ॥

विश्वेदेव काम १० जुत दस १० मित, दंड नृपति सिंचहु ए करि हित ५४
 मृगव्याध १ रु सर्प २ रु निर्ऋति ३ जिम, अजैकपात ४ रु आहिर्बुध ५

॥ ५४ ॥ १ सञ्जय क. २ राहु ३ केतु ॥ ५४ ॥ ४. समर्थ ५ स्तुति योग्य ॥ ५४ ॥ ५० ॥

६ देवों की रक्षा करनेवाले ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ७ शुद्ध यशवाले राजा ॥ ५१ ॥ ५४ ॥

तिम ॥

पुष्पकेतु ६ बुध ७ भरत ८ मृत्यु ९ पङ्क, किंकिशि १० स्यात्तु ११
रुद्र ए सिंचहु ॥ ५५ ॥

भावनः -- २सुजन्मसुजनः ४जिम, पाजरु व्यसुतदसुवर्णवर्णः ७तिम
प्रमन ८दल ९मात्र १०ऋतु ११ए पङ्क, भृगु अभिधान देवता सिंचहु ५६
म ११ मरु २ पाया ३ अपान ४ इम ५ हय ६, नारायण ७ रु जगद्धित
८ रन ९ वय १० ॥

दिविष्ट्रष्ट ११विभुचिति १२तर्को पङ्क, इते साध्य संज्ञक सुर सिंचहु ५७
धाता १मित्र २अर्घमा ३दृगजग, पूपा ४गक्र ५अंश ६वरुणा ७रु अग ८ ॥
त्यष्टा ९ विवस्मान १०, सविता ११ पङ्क, विष्णु १२ बहुरि वारह १२
रवि सिंचहु ॥ ५८ ॥

एकज्ज्योतिः १द्विज्ज्योतिः २जया, त्रिज्ज्योतिः ३चतुर्ज्योतिः ४पुनितया ५
पञ्चज्ज्योतिः ५ एकशक्र ६हुभल, इन्द्र ७विशक्र ८त्रिशक्र ९ महाबल १०
प्रतिसकृत १० रु मित ११ सम्मित १२ अमित १३ हु, ऋतजित १४ स-
त्यजित १५ रु सुपेया १६पङ्क ॥

इवेनजित १७ रु अतिमित्र १८ मित्र १९ जिम, पुरुजित २० धाता २१
अपराजित २२ तिम ॥ ६० ॥
ऋत २३कृतवान २४ विधृ २५ धुम २६ज्योर्दी, वरुणा २७ विदारणा
२८ ईदश २९ त्योर्दी ॥

अन्यादश ३० एतादृश ३१ जानहु, क्रीडन ३२ मुनि ३३ अमिताशन ३४
मानहु ॥ ६१ ॥

शक्ति ३५ महातेजा ३६ हु सरभ ३७ जुत, महापशा ३८ क्षिप ३९ धा-
तुरुप ४० नुर्त ॥

भीम ४१ सहयुति ४२ अतिउक्त ४३ सुनय, अनाधृष्य ४४ अपु ४५

॥ ५९ ॥ १ नाम ॥ ५९ ॥ २ हे प्रसु १ साध्य नामवाले ॥ ५९ ॥ ६८ ॥

॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ४ स्मृतियोग्य ५ अष्ट नीतिवाले ॥ ६२ ॥

बास४६ काम४७ जय४८ ॥ ६२ ॥
 पुनि विराट४९ इंद्र मित्र पहु, नव जलधि४९मित मरुतगन सिंचहु
 चित्रांगद१ रु चित्ररथ२ जैसैं, चित्रसेन ३ वीर्यवान तैसैं ॥ ६३ ॥
 ऊर्णापु४ अनघ५ उग्रसेन६ पुनि, सोम७ सूर्यवर्चा८ लृप्ताप९सुनि
 दिविश्चित्र१० धृतराष्ट्र११ कीर्णो १२ जिम, कलि १३ अंगिरा १४
 दुराघ१५ हंस१६ तिम ॥ ६४ ॥

वृषपर्वा१७ नारद१८ पर्जन्य१९ हु, हाहा२० हूहू२१ विश्वावसु२२
 ताम्रक२३ सुरुचि२४ हु गंधर्वन गन, ए नृप सिंचहु तोहि मोद
 मन ॥ ६५ ॥

आहूती१ रु शोभयंती२ जिम, वेगवती३ अरु आप्नुवती४ तिम ॥
 ऊर्क५ रु वेकरि६ बभ्रु७ अमृतरुचि८, भू९ रुट१० भीरु ११ शोचयं-
 ती१२ सुचि ॥ ६६ ॥

भिन्न जाति एते अच्छरि गन, सिंचहु तोहि नरेस कितिधन ॥
 अनुत्तमा१ रंभा२ विश्वाची३, मनोवती४ मेनका५ घृताची६ ॥ ६७ ॥
 सहजन्पा७ रु स्वरूपा८ जैसैं, सुकेसी६ रु पर्णाशा१० तैसैं ॥
 क्रतुस्थला११ पुंजिकस्थला१२ पुनि, प्रम्लोचा १३ रु पूर्वचिती १४
 सुनि ॥ ६८ ॥

सामवती१५ रु पंचचूड़ाख्या१६, अरु उर्वशी१७ अनुम्लोचाख्या १
 चित्रलेखिका१९ विद्युत्पर्णा२०, तिलोत्तमा२१ रु सुगंधि २२ रु-
 सुवपु२३ अदृश्यलक्ष्मणा२४ हेमा२५, मिश्रकेशि२६ अमिता २७
 आहेमा२८ ॥

आहेमा१ आहेमा२ अन्त्यानुपासः १ ॥

१ उनचास की गिनती वाले ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ रगन्धर्वों का समूह ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ कीर्ति
 ही है धन जिस के ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ४ श्रेष्ठ वर्ण (रंग) वाली ॥ ६९ ॥ ७० ॥

रुचिका२९ सुनृता३० सुबाहु३१ जैसैं, सरस्वती३२ रु सुबोधा३३
तेसैं ॥ ७० ॥

बहुरि पुढरीका३४ रु मुदारा३५, सुगधा३६ रु सरसा३७हु घृता ॥
कामला३८रु सूनृतालासा३९ज्यौं, वासोली४०रु दंसपादी४१त्यौं॥७१॥
मुमुखा४२ रतीलासा४३ इति पद्व, अच्ली तोहि अच्छरी सिंचहु
दैतपराज प्रल्हाद१ विगोचन२, धन्वी बाण३तथा कीरतिधन ॥७२॥
इत्यादिक लौ दैतप विष्णु जल, सिंचहु तोहि हड्डभूपति भल ॥
विप्रचित्ति१ आदिक सब दानव, सिंचहु तोहि मन्त्रजित मानवा७३।
हृत्प१ प्रहंस२ व्यास३ पुरुषादन४, पौरुषेय५ शैलेंद्र६वध७ रसन८
विद्युत९ सूर्य१० सुकेशी११ मखदा१२, सिंचहु ए आद्यराक्षस
तहा ॥ ७४ ॥

बलि सुसिद्ध१ मणिभद्र२ सुमन३ जिम, नदन४ अरु कडूति५ शख
६ तिम ॥

मणिमान७ रु बसुमान८ मदरस९, पिंगाक्ष १० रु प्रथोत ११ म-
हाजस ॥ ७५ ॥

चतुर१२ भीम१३सर्वानुभूति१४यम, पद्मचद्र१५अरु मेघवर्गा१६सम॥
भूतिमान१७ केतुमान१८ त्यौं बर, श्वेत१९ विपुल२० त्यौं भव्य२१
प्रभाकर२२ ॥ ७६ ॥

मौलिमान२३ प्रद्युम्न२४ जयावद, कुमुद२५ बलाहक२६ यक्ष २७
पक्ष सह ॥

विजयाकृति२८ बलाहक२९सु बीर३०हु, पद्मनाभ३१ शतजिह्व३२
सुगध३३ हु ॥ ७७ ॥

रहु१ धहु२ अन्त्यानुपास १ ॥

हिरण्याक्ष ३४ पद्व पौर्यामास, सम सिंचहु राजरुद्र ए सत्तम ॥

शख१ रु पद्म२ मकर३ कच्छप४जिम, कुद५मुकुद६ रु महापद्म७

१मेष्ट नत्रोपासी ॥ ७१ ॥२ वरु म ॥ ७१ ॥३मनुष्यों को सखाइ में जातनवाछा
॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥

७ तिम ॥ ७८ ॥

नील८खर्व९ए आय महानिधि, सिंचहु नव९हि बिचारि बेदविधि
एकवक्त्र१सूचीमुख२ज्योही, छगल३विषाद४ उलूखल५ त्योही ७९
दुष्पूग६ ज्वलनांमारक७ पुनि, कुंभमात्र८ उपवीर ९ पांसु१० पुनि
चक्रखध११ रु अकर्ण१२ महासन, पात्रपाशि१३ विपुलक१४ ओ
रकंदन१५॥८०॥

बहुरि वितुंड१६ प्रतुंड१७ इती पहु, तोहि पिखाच जातीहू सिंचहु ॥
पुनि नाना मुख बाहु सिरोधर, दांत बिबुध अट्टाल सून्यघर॥८१॥
तेहु चतुष्पद पर शिवके गन१, सिंचहु तोहु हहु धरनीधन ॥
महाकाल२ नरसिंह३ अग्न करि, सब मातर३ सिंचहु सुभ जल
आरि ॥ ८२ ॥

अहस्कंद१ नामक त्रिशास्त्र२ सह, नैगमेय३ ए सिंचहु गुहग्रह ॥
डाकिनि१योगिनि१खेचर१ भूचर१, सिंचहु तोहि समस्त नरेश्वर८३
गंधकुमार१ विष्णु२ अरु अरुड३ हु, अरुणि४ महाखग्न विनत ५
गरुड६हु ॥

संपाती७ जुत ए सुपर्णा सब, सिंचहु नृप उम्मेद तोहि अब ॥८४॥
शेष१ अनंत२ बासुकि३ रु बामन४, कुंभ५ अंजनोत्तम६तत्तक७गन
सुपर्णारि८ ऐरावत९अहिबर, महांपद्म१०कंबल११रु अश्वतर१२॥८५॥
महानील१३ धृतराष्ट्र१४ बलाहक१५, एलापत्र१६ खड्ग१७ कर्को-
टक१८ ॥

महाकर्ण१९ गंधर्व२० सनस्विक२१, पुष्पदंत२२ नहुष२३ रु पद्म
२४ कुलिक२५॥८६॥

खररोमा२६ रु कुमार२७ धनंजय२८, शंखपाल२९ अरु पाणि३०
गरल मय ॥

उमैदसिहकाराज्याभिषेक] सप्तमराशि अष्टाविंशत्युक्त (१५१५)

इत्यादिक सब आय नाग वर, सिंचहु तोहि मदीप धर्मधर ॥८७॥
ऐरावत१ अरु कुमुद२ पद्म३ जिम, पुष्पदत्त ४ बामन ५ अंजन ६
तिम ॥

सुमतीक७ अरु नील८ डते पद्म, सुभटौ तोहि महागज स्वखहु ८८
विधिहस१ रु गिवटपभ२ प्रीति धरि, उच्चैश्रवा३ हय रु धन्वतरि४
कौस्तुभ११ रंख१ चक्र१ त्रिगिखाख्य२ हु, वज्र३ रु नंदक४ अस्त्र२
समारूपहु ॥ ८९ ॥

अवनिप तोहि सचिकै ए सब, विजय विथागहु तावकीन अब ॥
वृद्धशाखा १ तप १ यम १ दम १, सत्य १ दान १ मख १ ब्रह्मचर्य१
शम१ ॥ ९० ॥

आयु१ रु चित्रगुप्त१ ए जेते, सिंचहु तोहि कहे श्रुति लेते ॥
दंड१ रु पिंगल२ मृत्यु३ काल४ पद्म, अतक ५ बालखिल्य ६ जय
मंडहु ॥ ९१ ॥

दिग्गो च्यारि४ सुगभि१पुनि ज्योही, सब गायन जुत सिंचहु त्योंही
व्यास१ नाकुभंवर२ रामन३ पराशर४, देवल५ पर्वत६ भार्गव७ तप
पर ॥ ९२ ॥

जात्रालि८ जमदग्नि९ योगेश्वर१०, कण्व११ कुशारणि१२ वेदवाह
१३ वर ॥

शुचिश्रवा१४ गाधेय१५ रु वर्द्धन १६, शूलकलष १७ अत्रि १८ रु
कात्पायन१९ ॥ ९३ ॥

विदूथर२० रु एकतर१ वलाक२२ द्वित२३, गौतम२४ भरद्वाज२५
कुटिमृद२६ त्रित२७ ॥

शांडिल्य२८ रु मौडल्य२९ रु गालन३०, वृद्धदश्व३१ रु इभसुत ३२
सारगव ३३ ॥ ९४ ॥

॥ ८८ ॥ १ नामवाले ॥ ८९ ॥ १ तुम्हारी ॥ ९० ॥ ६१ ॥ ३ घाल्मीकि ॥ ९१ ॥
४ पाञ्चनखा ॥ ९२ ॥ ९४ ॥

यवक्रीत३४ जयजानु३५ घटोदर३६ रैप३७ आत्मधामा३८ जैमि-
नि३९ बर ॥

कुंभज४० दुंदु४१ रु मृदु४२ शुचि४३ तपमय, इधमबाहु४४ मृष ४५
बहुरि महोदय४६ ॥ ९५ ॥

एते मुनि अभिसेक रक्खि रति, सिंचहु तोहि उमेद महीपति ॥
पृथु१ दिलीप२ दुक्खंत३ भरत४ अथ, मुन५ ककुत्स्थ६ युवनाश्व७
जयद्रथ८ ॥ ९६ ॥

अनेना९ रु मांधाता१० ज्यौही, शत्रुजित११ रु मुचकुंद१२ हु त्योंही
पुरूरवा१३ इक्ष्वाकु १४ रु यदु १५ पुनि, अंबरीष १६ नाभाग तथा
मुनि ॥ ९७ ॥

भूरिश्रवा१७ महाहनु१८ पुरु१९ जिम, वृहदश्व२० रु सुद्युम्न२१ भू-
ष तिम ॥

भूरिद्युम्न२२ तथा प्रद्युम्न२३हु, संजय२४ पुनि इतिमुख नृप सिं-
चहु ॥ ९८ ॥

परजन्यादि मेघ१ नाना तरु२, ओषधि३ रत्न४ अनेक बीज५ बैरा॥
पुरुष अभ्रमेयांग१ भूत सर५, भू१ जल२ तेज३ अनिल४ अरु अं-
वर५ ॥ ९९ ॥

मन१ बुद्धि२ रु अव्यक्तात्मा१ पहु, एहु तोहि हड्डन पति सिंचहु ॥
रूपभौम १ अरु शिलाभौम २ जिम, पातालाख्य ३ नीलवृत्तिक-
४ तिम ॥ १०० ॥

पीत५ रक्त६ सित७ असित८ भौम सब, अभिसिंचहु इत्यादि तो-
हि अब ॥

जंबू१ शाक२ क्रौंच३ कुश ४ पुष्कर५, प्लक्ष ६ शाल्मली ७ देहु
स्वाम्य बर ॥ १०१ ॥

१ अगस्त्य ॥ ९५ ॥ २ दुष्यन्त ॥ ९६ ॥ १० ॥ १ इत्यादि ॥ ९८ ॥ ४ (अष्ट) ॥ ९९ ॥
॥ १०० ॥ १०१ ॥

उत्तर कुरु१ ऐगवत२ अघर्द्धत, केतुमाल३ भद्राश्व४ इलाहृत५ ॥
 त्यों हारवर्ष६ किंपुरुष७ भारत८, रम्भ्य९ खड सिंचहु हित धारत १०२
 इद्रदीप१ कसेरु२ तथा पुनि, ताम्रवर्णा३ रु गभस्तिमान४ सुनि ॥
 नागदीप५ सौम्य६ गधर्व७हु, बरुणा८ अभय९ ए द्वीपहु सिंचहु१०३
 हेमकूट१ हिमवान२निपध३गिरि, नील४श्वेत५अरु शृगवान६फिरि
 मेरु७ गभमादन८ महेंद्र ९ जिम, माल्यवान १० अरु मलय११ स-
 ह्य१२ तिम ॥ १०४ ॥

पुण्डितवान१३गिरि ऋक्षवान१४सुनि, विंध्याचल१५गिरि पारियात्र
 १६ पुनि ॥

इत्पादिक सव पुण्य गद्दीधर, सिंचहु तोहि मद्दीपति सभरा॥१०५॥
 नरु१ यजु२ राम३ अथर्व४ चपारि४ श्रुति, सिंचहु तोहि प्रसन्न
 पाप नृति ॥

इतिहास१ धनुर्वेद२ आयु३ पहु, पुनि गधर्व४शिल्प५ उपवेदहु १०६
 गित्ता१ कल्प२ व्याकरण३ ज्योती, ज्योतिष४ छद५निरुक्त ६हि
 त्योंही ॥

सिंचहु अग वेदके ए खट६, तोहि भूप उम्मेद विहित बेट ॥ १०७॥
 ए खट६ अग रु वेद चपारि४१० पुनि, मीमांसा११ स्मृति१२ न्याय
 १३ तथा सुनि ॥

अरु पुराणा१४विद्याहु चतुर्दस१४, सिंचहु ए नृप तोहि महाजस१०८
 पाचरात्र१ अरु वेद पाशुपत, कृतात पचक५ सारूप४ योग५मत ॥
 विविध शास्त्र इत्पादि नरेश्वर, सिंचहु तोहि दिव्य जल घट कर
 गायत्रो१ गगा२ गाधारी३, जप बुल्लहु महाशिवा४ नारी५ ॥
 सुर१ दानव२ गधर्व३ यक्ष४ पुनि, राक्षस५ पन्नग६ मुनि७ मनु८
 गो९ सुनि ॥ ११० ॥

देवनकी माता१० पुनि ज्यौही, देवनकी पतनी११ सब त्योंही ॥
 हुम१२रु नाग१३ दैत्य१४ रु अच्छरि मन१५, अस्त्र१६ शस्त्र१७ सा-
 जा१८ अरु बाहन१९ ॥११॥

ओषध२० रत्न२१ काल२२ अवयव२३जिम, रथानक२४पुण्य आ-
 यतन२५ सब तिम ॥

जीमूत२६रु जीमूतविकार२७हु, उक्त अनुक्तविजयविसतारहु११२
 लवणोद१ रु दुग्धोद२ घृतोदक३, दधिमंडोद४ तथा मद्योदक५ ॥
 त्योदक१ द्योदक२ अन्त्यानुप्रासः ॥

इक्षुरसोद६ रु सुदोदक७ बर, गर्भोदक८ सिंचहु ए सागर ॥११३॥
 बहुरि च्यारि४सागर निज जल करि, सिंचहु तोहि कनक मय
 घट भरि ॥

प्रयाग१नैमिष२प्रभास३पुष्कर४, उत्तरमानस५तथा ब्रह्मसर६ ॥११४॥
 नंदकुंड७ गयशीर्ष८ पंचनद९, कालोदक१० रु स्वर्गमार्गप्रद११ ॥
 त्योंहि अमरकंटक१२ भृगुतीरथ१३, कलिकालाश्रम१४ अग्निती-
 र्थ१५ अथ ॥ ११५ ॥

गोतीर्थ१६रु तृणाबिंदुकृताश्रम१७, जंबूमार्ग१८रु तंडुलिकाश्रम१९
 स्वर्ग२० कपिल२१ तीरथ अरु वातिक२२, त्यों आगस्त्य२३महा-
 सर२४ खंडिक२५ ॥ ११६ ॥

अंगद्वार२६ कुमारीतीरथ२७, कुशावर्त२८विल्वक२९ अघहरकथ
 नील१ रैवत२ रु अर्बुद३ पर्वत३०, शाकंभरी३१ सुगंधी३२ मुनि
 मत ॥ ११७ ॥

कुब्जाम्रक३३ भृगुतुंग३४ रु कनखल३५, धारा३६ कुभा३७ कं-
 पिलाश्रम३८ भल ॥

अज्ञतुंग३९ अरु चमसोद्वेदन४०, अश्वगंध४१ कालांजर४२ विन-
 शन४३ ॥११८॥

रुद्रक४४ अग्नि४५ केदार४६ मोच४७ जिम, महालय४८ रुद्रदरीआ-
श्रम४९ तिम ॥

नंदा५० ससितीरथ५१ रवितीरथ५२, वासवतीरथ५३ नासत्यक
५४ अथ ॥ ११९ ॥

वरुणा५५ वायु५६ वैश्रवणा५७ तीर्थ पुनि, दुहिगा५८ ईश५९ यम६०
अनल६१ तीर्थ सुनि ॥

विरुपारूपतीरथ६२ पवित्रजिम, धर्मतीर्थ६३ अरितीर्थ६४ हुतिम १२०
॥ रुचिरा ॥

ऋषि६५ वसु६६ साध्य६७ मरुत६८ आदित्यक६९ रुद्र७० अगिरस
७१ तीर्थ जिते ॥

विश्वेदेवतीर्थ७२ भृगुतीर्थ७३ रु प्लक्षप्रस्रवणा७४ सकल तिते ॥
मानससर७५ बाराहसगेवर७६ सालिग्राम हरोवर७७ ॥

कामाश्रम७८ रु सपूर्व० सुपुत्रा८० त्पोहित्रिकूट=१ महावरद्वार१२१
चिद्रकूट८२ क्रतुसार८३ विष्णुपद८४ कापिल८५ वासुकि८६ तीर्थ
महा ॥

सिंधूतम८७ सूर्यारक८८ कुंभक८९ पुडरीक९० अविमुक्त९१ तद्वा
तपोद्वार९२ सिंधूदधिसगम९३ गंगासागरसगम९४ ॥

अच्छोदक९५ रु बिंदुसर९६ मानस९७ फल्गुतीर्थ९८ सु मनोरमद्वार९९
लोहित्यक९९ कुभावसुंद१०० पुनि धर्मारण्यक१०१ पुनि नमने ॥

वस्त्रापथ१०२ रु छागलोपक१०३ तिम वदरीपावन१०४ मळ्यमने
वन्दितीर्थ१०५ अरु मेषतीर्थ१०६ नृप द्वार सप्तऋषितीर्थ१०७ जुपै ॥

पुष्पन्यास१०८ कार्गश्व१०९ हसपद११० अश्वतीर्थ१११ मणिमय
११२ सुपै ॥ १२३ ॥

॥ हीरकम् ॥

दिविका ११३ अरु ह्रदमार्ग११४ स्वर्गाविंदु११५ सिष्टजो ॥

॥ ११९ ॥ १२० ॥ १२१ ॥ १२२ ॥ १२३ ॥

आहल्लक११६ ऐरावत११७ करवीर११८हु इष्ट जो ॥

भोगयश११९ वणिक१२० नागम१२१ ऋणमोचनकारुण१२२हु ॥

पापमोचनिक१२३ उद्वेजन१२४ संपूज्यारुण१२५हु ॥ १२४ ॥

कारुण्यहू१ ज्यारुण्यहू२ अन्त्यानुप्रासः १ ॥

देवब्रह्मसर१२६ धृतसर१२७ दधिरारवर१२८ नाम जे ॥

सिंचहु इत्यादि सकल तीरथ सुख धाम जे ॥

मंडहु जप ए नरेश मेटहु अधसर्वकों ॥

तावकं विधराय तेज खंडहु अरि वर्गकों ॥ १२५ ॥

॥ हरिगीतम् ॥

गंगा१ रु न्हदिनी२ न्हदिनी३ सीता४ रु चक्षु५ नदी जथा ॥

तिम कांचनाक्षी६ सुप्रभा७ रेवा८ रु सिंधु९ न्हदा१० तथा ॥

अघओघ अंकुस पावनी११ विमलोदका१२ पुनि जानिये ॥

क्षिमा१३ रु शोण१४ रु तर्ष१५ सरयू१६ चंद्रभागा१७ यानिये ॥ १२६ ॥

धूमा१८ सरस्वति१९ ओघनादा२० गंडकी२१ रु इरावती२२ ॥

पीता२३ विशाला२४ मानसी२५ रंभा२६हु सुख मुहावती ॥

केशा२७ सुवेशा२८ देविका२९ रु सिवा३० विभागा३१ पावनी ॥

यमुना३२ देवन्हदा३३ बितरता३४ कौशिकी३५पुनि सुनि मनी१२७

चर्मखवती३६ रु विदर्भिका३७ कुंती३८ रु अच्छोदा३९ धुनी ॥

तपती४० रु निर्विधपा४१ तृतीया४२ वंदना४३ श्रुतिमें सुनी ॥

सुरसा४४ रु इक्षुमती४५ अवन्ती४६ धूतपापा४७ गोमती४८ ॥

पुनि शोणा४९ इक्षुकि५० वेदसाता५१ बाहुदारु५२सरस्वती५३॥१२८॥

इपेनी५४ रु पश्चांशा५५ कुमुद्वति५६ वेदघुर्घुरदा५७ तथा ॥

पुनि सदानीरा५८ त्योंहिं बेणुमती५९ रु देवस्मृति६० तथा ॥

भंदाकिनी६१ रु पलाशिनी६२ रु पिसाचिकी६३ पुनि पिप्पली६४॥

तृपिका६५ दशाखा६६ सिंधुरेखा६७त्योंहिं करतोया६८भली ॥१२९॥

१ नामक ॥ १२४ ॥ २ तेरा ॥ १२५ ॥ १२६ ॥ १२७ ॥ ३ नदी ॥ १२८ ॥ १२९ ॥

दूजी२ कुमुद्वतिका६६ शिनीवाली७० कुहू७१ पुनि मजुला७२ ॥
 चित्रोपला७३ अरु चित्रवर्णा७४ शुक्ति७५ मीला७६ वाकुला७७ ॥
 तापी७८ कपू ७९ अमला८० पयोष्णी८१ मदगा८२ निषधावती ८३
 वेणा८४ सिता८५ दूजी२ कु निर्विध्या८६ रु भीमा८७ दुर्गती ८८ १३० ॥
 तोया८९ रु वैतरणी९० महागोरी९१ रु गोदा९२ मगला९३ ॥
 नृममा९४ रु भीमरथी९५ रु जन्म९६ कृष्णवर्णा९७ सज्जला ॥
 पुनि तुगभद्रा९८ हू तेरगिनि मदगा९९ रु भयकरा १०० ॥
 यात्या१०१ रु कावरी१०२ रु कृतमाला१०३ हू सुक्तिद सबरा ११३ ॥
 पुनि ताम्रपर्णी१०४ पुष्पभद्रा१०५ उत्पलावती१०६ मद्रनी १०७
 त्रिदिवाला१०८ अरु वशधीरा १०९ लागुली११० सुभगा घनी,
 सुकुलावती१११ ऋपिका११२ रु ऋपिकुल्या११३ रु वरवेगा ११४
 क्षया ११५ ॥
 दूजी २ पयोष्णी ११६ मदवाहिनि ११७ कालवाहिनि ११८ त्यों
 दया ११९ ॥ १३२ ॥
 व्योमा १२० रु देवी १२१ त्यों २ विराला १२२ कपला १२३ रु
 सुवाहिनी १२४ ॥
 दूजी२ रु करतोया१२५ रु वेत्रवती१२६ सुभद्रा१२७ हू गिनी ॥
 ताम्रा १२८ रु अरुणा १२९ सुमकारा १३० अद्रिका १३१ रु हिर-
 र्गमई १३२ ॥
 पुनि२ सुपू ~~दूसरी डपमा १३४ रु अश्ववती १३५ नई ॥ १३३ ॥~~
~~आलोकिका १३६ रु मायगा १३७ भासी १३८ रु सध्या १३९ रूप जे ॥ १३४ ॥~~
~~आलोकिका १३६ रु मायगा १३७ भासी १३८ रु सध्या १३९ रूप जे ॥ १३४ ॥~~
~~आलोकिका १३६ रु मायगा १३७ भासी १३८ रु सध्या १३९ रूप जे ॥ १३४ ॥~~
 १३५ दूजी२ रु नीलोद्वतकरा १३६ ॥
 नवा १३७ सुनदा १५० अघहरा १३४ ॥
 यदि सब यें हैं आयकें ॥

दका राज्याभिषेक]

अष्टमराशि-एकोनविंशमयूज (१५१५)

बुन्दीप्रविष्टद्वेन्द्राऽभिषेकविधिवर्णनमष्टाविंशोमयूख ॥
प्रादित ॥ ३०६ ॥

प्रायोद्वजवेशोयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

३ गगन धृति १८०५ सकसमय, बाहुल्य पक्ख बलच्छ ॥

तेपति तिथि १३ नृपकै भयो, अभिसेचन इम अच्छ ॥ १ ॥

ने किन्नो जिन जिन तिलक, अभिसेचनके अत ॥

म सन तिन नामन कहाँ, सुनहु राम छितिकत ॥ २ ॥

प्रम पुरोहित निज तिलक, किन्नो भितुव १ नाम ॥

नंतर उपदेस गुरु, विरच्येके १ इक १६७ ॥ ३ ॥

तिलक मल्लार ३ बिदोहा ॥ ५ छवाह ॥

गद्दि सहित, सबको इम सतकार ॥ ४ ॥

करि विविध, किय प्रसन्न मल्लार ॥ २५ ॥

॥ सचरणगद्यम् ॥

कुल दीक्षा ही सोतो गोरवामि गोपीनाथनै मत्र

मिटार्इ ॥

ज दीक्षा ले र रनपडित महारावराजा उम्मेदसिंह

वरतै बुदी कढार्इ ॥

ही देस १ मै जपश्रीरगनाथ काहिवेको हुकम

महुगछापन ३ मै प्रीतिपूर्वक श्रीरगनाथ नामधेयें

२६ ॥

गौ अपनै पिता पितामहादेवकी दान करी पृथ्वी

हाथी ॥ २९ ॥ २० अपन करके ३ घोडा ॥ २९ ॥ २४ ॥ २५ ॥

॥

समस्त संप्रदाननकों खोजि खोजि बुलाय दीनीं ॥

अरु अपनी आपत्तिमें सूरबीर सुभटादिक समस्त स्वामिधर्मी
सेवामैं रजू रहे तिनकों ग्राम १ गज २ बस्त्र ३ बाजि४नकी बख-
सीस कीनीं ॥

उनके अभिधानें रावराजेंद्र रामसिंह सुनिबेकों सावधानी करिये ॥

अरु प्रपितामहके बितरण बारिधिकों विद्वज्जनबानीके तरंडें
करि तरिये ॥ २७ ॥

॥ दोहा ॥

हड्डा हरजन१ सचिव हित, दै सिविका गज दास ॥

हिंडोली पुरसों दयो, पटा सहँस पंचास ५०००० ॥ २८ ॥

देव नति सिवसिंह सुत, भारत२ हित बुंदीस ॥

पत्तन१खेड़ा२सों पटा, दयो सहँस चहँस ४३ ॥ २९ ॥

अमरसिंह रठोर सुत, अभय३सिंह हित धितिसो ॥

पटा सहँस छत्तीसको ३०००, पुर अलोद ४००० ॥ ३० ॥

नाथाउत पित्थल तनय, जयसिंहहि४ चहुँक भयो ॥

पटा हजार पचीस२५००० जुत, नगर दयो नयो ॥ ३१ ॥

बंधु भवानीसिंह५ भट, महासिंह हर हेतु ॥

बीसहजार२०००० पटा दयो, धोवड़ा२५००० ॥ ३२ ॥

सेरसिंह६ सामंतहर, हड्डा अरथ अनूप ॥

पटा सहँस धृति१८००० जुत दयो, भजनेरी६पुर ॥ ३३ ॥

हरदाउत हिंदू सुतज, नाहर७कों हित संग ॥

पटा सहँस पंद्रह१५००० सहित, दियउ पगाराँ७ दंग ॥ ३४ ॥

तोक८ महासिंहहि९ हित, प्रथित दिखावत प्यार ॥

१ दान लेनेवालों को २ नाम ३ दान रूपी ४ समुद्र को विद्वान् लोगों
वाणी रूपी ५ नाव से ॥ २७ ॥ २८ ॥ ६ देवसिंह का पोता ७ पुर ॥ २९
॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ८ विदित

उम्मेदसिंह का जागीर देना]

सप्तमराशि एकोनत्रिंशमयूख (३५९०)

द्रग जैतगढ सों दयो, पटासु पति १० हजार १०००० ॥ ३५ ॥

दसरथसिंह ६ प्रपाग सुत, महासिंह सु कुलीन ॥

अष्ट सहेस ८००० को तिहि पटा, सुहरनि ९ पुर समदीन ॥ ३६ ॥

मुहुकमहर मरजाद सुत, भट नगराजन अत्य १० ॥

पच सहेस ५००० को दिय पटा, नगर मोठसम १० सत्य ॥ ३७ ॥

बुल्लि सिवाईसिंह ११ भट, अमर कबधज ताहि ॥

पचसहेस ५००० को दिय पटा, चंद्रवाट ११ पुर चाहि ॥ ३८ ॥

पचोली माथुर प्रथम, मयाराम १२ कायत्य ॥

दियउ गाम बहु द्रव्य जुन, सह सिरुपाव समत्य ॥ ३९ ॥

पटा रयाम धात्रेय १३ हित, दै मिति तीन हजार ३००० ॥

तारागढ निज दुग्गको, किन्न सु किछादार ॥ ४० ॥

महडू चारन दान ४१ हित, संभर प्रीति प्रकासि ॥

सहेस पंच ५००० के ग्राम दिय, ठाकरिया १ बरवासि २ ॥ ४१ ॥

स्वीय भट्ट जगराम सुत, बुल्लि भवानी १५ गाम ॥

मुद्रा दोय हजार २००० मित, दयो सहेमपुर गाम ॥ ४२ ॥

इत्यादिक सब सेवकन, दै धन धाम उदार ॥

करन विदा मल्लारको, बलि किय चित्त बिचार ॥ ४३ ॥

इति श्री वशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मे-
दसिंहचरित्रे पुरोधः १ सम्प्रदायगुरु २ मल्लार ३ माधव ४ आदि-
रावराणमाङ्गल्यतिलकाऽऽदिकरणाह्वेन्द्रहरि १ कुलदेवी २ पूजन
पूर्वकविहितप्रासादप्रवेशनहुलकर १ कूर्म २ प्रभृतिगन्
भूषण ३ बस्त्रा ४ ऽऽदिनिवेदनतत्त्वस्वरिविरले ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

॥ १४ ॥ ३५ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

आवशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मे-
दसिंहचरित्रे पुरोधः १ सम्प्रदायगुरु २ मल्लार ३ माधव ४ आदि-
रावराणमाङ्गल्यतिलकाऽऽदिकरणाह्वेन्द्रहरि १ कुलदेवी २ पूजन
पूर्वकविहितप्रासादप्रवेशनहुलकर १ कूर्म २ प्रभृतिगन्
भूषण ३ बस्त्रा ४ ऽऽदिनिवेदनतत्त्वस्वरिविरले ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

गज १ हय २ भूपणा ३ वम्ब्रा ४ ऽऽदिससैन्यमल्लारसत्करणासमाप्त
 रामानुजसम्प्रदायव्यवहारमुद्रा ऽऽदिश्रीरंगाभिख्योल्लेखनपूर्वपुरुषद
 त्समर्पणास्वपरिकरसुभट १ सुसचिव २ सुभृत्या ३ ऽऽदिमेदिनीमुख
 बितरणातन्मननमेकोनत्रिंशो २९ मयूखः ॥ २९ ॥ ॥ ३१० ॥
 प्रायोन्नजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

इहिं अंतर मरुपति अनुज, बखतसिंह छक छाय ॥
 दिल्ली सन लहि जवन दल, अग्रज दबन आय ॥ १ ॥
 अभयसिंह आतुर तबहिं, पठये बुंदिय पत्र ॥
 संभरें सहित सहायकों, आवहु हुलकर अत्र ॥ २ ॥
 हुलकर हड्ड नरेस प्रति, अखिखप पत्र उदंत ॥
 सुनि बुंदिय धैव सज्ज हुव, सह मल्लार हुलसंत ॥ ३ ॥
 जननिन १ रानिन २ हू तिहित, दिन्नै कटक पठाय ॥
 गंगराड १ कोटानगर २, बंसबहाल ३ बनाय ४ ॥ ४ ॥
 सज्जि अप्प हुलकर सहित, किय बुंदिय सन कुच्च ॥
 मरुपतिसौं सत्वर मिले, उभय २ करन जय उच्च ॥ ५ ॥
 रामपुर सु माधव गयो, बुंदियतैं इहिं बेर ॥
 ए दुव २ मरुपति भीर इम, आये पुर अजमेर ॥ ६ ॥

का हाथी, घोड़े, आशुपण, बल्ल आदि नजर करना २ उनको अपने अपने डेरों
 में भेजकर सबको ओजन कराना ३ हाथी, घोड़े, शूषण, बल्ल आदि से सेना
 सहित मल्लार का सत्कार करना ४ रामानुज सम्प्रदाय को ग्रहण करके व्यवहार
 की छाप में अरिग का नाम लिखाना ५ अपने पुरुषाओं के दान को देकर अपनी
 परगह के उमराव, श्रेष्ठ कानदार, श्रेष्ठ सेवक आदि को भूमि आदि देने के
 स्मरण कराने का उन्तीसवाँ २९ मयूख समाप्त हुआ और आदि से तीनसौ
 दश ३१० मयूख हुए ॥
 १ मारवाड़ के पति (अभयसिंह) का छोटा भाई २ दिल्ली से ३ यड़े भाई को
 दबाने आया ॥ १ ॥ ४ चहुवाण उम्मेदसिंह सहित ॥ २ ॥ ५ पत्र का वृत्तान्त
 कहा ६ पति ॥ ३ ॥ ७ उनको बुलाने को सेना भेजी ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥

बखतसिंह सम्मुह बहुरि, तीन३न किन्न प्रयान ॥
 रक्खि निकट पैर दल दयो, सभर नगर मिलान ॥ ७ ॥
 तँहँ हुलकर कछु रीति कहि, रठोरन समुझाय ॥
 अग्रज१कै अरु अनुज२कै, दिनों साम कराय ॥ ८ ॥
 दूजे२ दिन इक बत्त हुव, बुदिय कटकबिहान ॥
 सुपहु राम दिजे श्रवन, नय मति धर्म निधान ॥ ९ ॥

॥ पादाकुलकम्

अगै इक१ सकरगढ स्वामी, बुदिय भट रानाउत नामी ॥
 तिहि सिवसिंह मडि रन राउत, बकर पुर पँ इन्हों कन्हाउत ॥ १० ॥
 सो सि१सिंह हुतो नृप सत्यहि, अरिसुत राजसिंह गय तथहि ॥
 करत प्रात सध्या बुदियपति, सिवसिंह सु निजनाथ रक्खि रति ॥ ११ ॥
 डेगसन सँभर ढिग आवत, राजसिंह वह मिल्यो रिसावत ॥
 हनि सिवसिंहहि तुपक झारि खल, गो भजिराजसिंह मारवदँल ॥ १२ ॥
 साहिपुराधिप अनुज सहोदर, हो सिरदारसिंह मरुपति भर ॥
 कन्हाउत तस सन गझो तव, यह उदत बुदीस सुन्यो अब ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

उठि उघारे देह नृप, सध्या तजि गहि सगि ॥
 हय अरोहि हम्प्यो मनहु, अँग पग इद उमगि ॥ १४ ॥
 चलन लागे भट सग निज, तिनको सपथ दिवाय ॥
 अप्प पटी दै अश्वको, लिय कन्हाउत जाय ॥ १५ ॥
 सत्य सहित पिक्खतरह्यो, रानाउत सिरदार ॥
 राजसिंह कन्हाउत सु, मारयो सभरवार ॥ १६ ॥

१ शत्रु की सेना को समीप रख कर २ सामर में मुकाम किया ॥ ७ ॥ ३ मिखाप
 ॥ ८ ॥ ४ प्रभात समय ॥ ९ ॥ ५ पाकरा नामक पुर के पति ६ कान्हावत शाखा
 के शीपोदिया छत्रिय को ॥ १० ॥ ११ ॥ ७ धर्मसिंह के पास ८ मारवाड
 की सेना में ॥ १२ ॥ ९ साहपुरा के पति धर्मसिंह का छोटा सगा भाई
 १० मारवाड के पति का सम्राट ॥ ११ ॥ ११ पर्वत पर ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥

इम रिपु हनि बगछी चुवत, आयो पुनि निज अैन ॥
रहयो लखत रठोरको, चित्र लिख्योसो सैन ॥ १७॥

॥ षट्पात् ॥

यह कराल उद्घोष उठ्यो पृतना त्रय३ अंतर ॥
दुव२ दिस दुंदुभि बजिज भीरु गय भजिज दिगंतर ॥
हड्ड१ कबंध२न हयन जंग पक्खर जब डारिय ॥
सुनि हुलकर यह सोर भयो उपदेसक भारिय ॥
नृप अभयसिंह१ उम्मेद १ नृप सधुभाये दुव२नीति सन ॥
कहि देसकाल आगम कलित कियउ राम करि हित कथन१८

॥ दोहा ॥

तदनंतर दक्खिन गयउ, रवि दरकुंच मलार ॥
निज पत्तन बुंदिय तरफ, आयउ संभरवार ॥ १९ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

हरदाउत नाहर मग अंतर, महिमानी मंडिय बिधिसौं बर ॥
नगर पगगराँ थंभि नृपति तब, जिम्मि गोठि आयउ बुंदिय अब २०
माघ बैलच्छ पच्छ जय मत्तो, दक्खिन द्वार होय पुर पत्तो ॥
घर घर मंगल गान भयो घन, लग्गे लोग बधाई बंटन ॥ २१ ॥
पिच्छै सन जननी दुव२ आई, पतनी तीन३ सुहाग सुहाई ॥
यहरानिन पतिकी हित आवरि, किन्नी बिधिजुत नजरि निछावरि२२
अब उमेद नृप नीति जमाई, गई प्रजा सु बुलाय बसाई ॥
मैनन तैय उपद्रव मेटिय, बारह१२ खेट दबाय स्वबस किय ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ १७ ॥ १ भयंकर हाकरतीनों सेनाओं में ३ बिदित ॥ १८ ॥ ४ चहुवाण (उम्मेदसिंह)
“हम ऊपर लिख आये हैं कि प्राचीन समय में सांभर नगर में राज्य करने के
कारण चहुवाणों को संभर, संभरी, संभरीक, संभरेश, संभरिया, संभरवार,
संभरवाल आदि कहते हैं” ॥ १९ ॥ २० ॥ ५ शुक्लपक्ष ॥ २१ ॥ ६ स्नेह की
पांक्ति से ॥ २२ ॥ ७ मैनों का चोरी करने का उपद्रव ८ खेड़े (ग्राम) ॥ २३ ॥

बुदिय नागर बिप्र इक१, सरबेश्वर अभिधान ॥
 चोरे चोरन दम्भ तस, सहस सत्त ७००० परिमाण ॥ २४ ॥
 कुतवाज सु बंसु चोर जुत, खोज्यो भूपतिराम ॥
 छन्नै नृपहि निवेवैयो, छत्रमदल सुख धाम ॥ २५ ॥
 सो धन सभर रूपात करि, सरबेश्वर हित दीन ॥
 श्रील सेठ यह नीति लखि, लगे बसन हित लीन ॥ २६ ॥
 चोरन१ जारन दुसद दुख, धर्म धग्न१ सुख पूर ॥
 राज्य बिगारे कितव जन१, कपन लग्गे कूर ॥ २७ ॥
 जब बुदिय जयसिंह जिय, कति सठ सेवक तैथ ॥
 रसना रत घासहि रहिय, न हुव बुद्ध नृप सत्य ॥ २८ ॥
 ते अब दुद्धर नृपहि तकि, जूम अंराल हलात ॥
 भीत आय हाजरि भये, बुदी मँडल व्रत ॥ २९ ॥
 मोरै वृद्ध प्रपितामहहु, मिलि आये तिन माहि ॥
 कहत सकुचि रविमँल कवि, हम सांगस हम अँहि ॥ ३० ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

सुनहुँ राम महिपाल धर्मधन, स्मृति जाको बरजत अगँ सन ॥
 पुरुषवनको अनुचित पद मै दिय, करहु माफ अपराध यहैकिय ३१
 हाजरि सब इम बसीभूत हुव, धामचढ उम्मेद तपत घुव ॥
 फगुन असिन माहि तदनंतर, कोटा गय उम्मेद धैरावर ॥ ३२ ॥

१ नाम द्वागों ने उसके रुपये चोर लिये ॥ २४ ॥ ३ चोर सहित धन को ४ हे
 राजा रामसिंह ४ राजा की नजर किया ॥ २५ ॥ ६ घनवान् सेठे ॥ २६ ॥ ७
 छली मनुष्य ॥ २७ ॥ ८ तथा कितने ही मुख्य सेवक ९ जिन्हा में आस की
 प्रीति करके १० राजा युवसिंह की साथ नहीं हुए ॥ २८ ॥ ११ पाकी (देही)
 पूँछ को हिलाते हुए १२ भय से १३ कुत्तों के समूह बुन्दी में आकर हाजर
 हुए ॥ २९ ॥ ग्रन्थकर्ता (सूर्यमल्ल) कहते हैं कि १४ मरे १५ सूर्यमल्ल कवि कहते
 परमाता है १६ इस कारण हम अपराध युक्त १७ हैं ॥ ३० ॥ १८ हे राजा राम
 सिंह १९ धर्मपात्र ॥ २० ॥ २० सूर्य २१ अग्रज ॥ ३२ ॥

(३१७४)

वंशभास्कर

उम्मेदसिंह के चरित्र में

महाराव सन मिलि हित किन्नौ, बहुरि आय बुंदिय रस लिन्नौ ॥
दुज्जनसल्ल सु केहक असूई, बुंदिय लेत पग्यो दुख कूई ॥ ३३ ॥
जानी इन अक्खी सुहि किन्नी, जैपुर दडि पहमि निज छिन्नी ॥
अब उमेद बुंदिय भुगै नन, ऐसे मंत्र रचहि मिलि अप्पन ॥ ३४ ॥
इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमः अंशः ॥ ३५ ॥
दसिंहचरित्रे सहायीकृत दिल्लीसैन्यज्यायोजयनिनीपुकबन्धवखतसि-
हाऽऽगमनतन्निरोधाऽर्थधन्वेशाऽभयसिंहाऽऽहूतदृष्ट १ हुलकरा २६-
जमेरगमनमल्लारवखतसिंहनिवारणाशातितसम्भेशसुभटशंकरग-
ढस्वामिश्रीपौर्वाशिवसिंहवपुर्वैरोजिहर्षपुर्वकर्णपतिकन्हाउत्तराज-
सिंहधन्वध्वजिनीशरणासम्पादश्रुतशात्रवसमात्तशक्त्येकाकिबुन्दी-
न्द्रतन्मारणाशमितैतद्वाहिनीद्वय २ विरोधहुलकरदीक्षागमनरावरा-
गिनजपुरप्रविशनचौराद्युपद्रवाऽपाकरणापरिथितप्रजाप्रत्यागमनमि-
लितमहारावपुनःप्रभुबुन्दीप्रविशनकोटेशकौहक्यकलनं त्रिंशो ३०
मयूखः ॥ ३० ॥ आदितः ॥ ३११ ॥

१ ठग २ असूया करनेवाला "गुणेन दोषारोपोऽसूया" अथवा "परगुणेषु दोषावि-
ष्कारे" दूसरे के किये गुण में दोष लगाने का असूया कहते हैं ३ दुःख के
कुएँ में गिरा ॥ ३३ ॥ ३४ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमः अंश में उम्मेदसिंह चरित्र में
दिल्ली की सेना को सहायक करके बड़े भाई को जीतने की इच्छावाले राठोड़
बखतसिंह का आना १ उस को रोकने के अर्थ मारवाड़ के पति अभयसिंह
के बुलाने से हाडा (उम्मेदसिंह) और हुलकर का अजमेर जाना और मल्लार
का बखतसिंह को मना करना २ चहुवाणों के पति के उमराव शंकरगढ के
स्वामी शीषोदिया शिवसिंह को पिता के वैर की इच्छा से मारनेवाले याकर
के पति कान्हावत राजसिंह का मारवाड़ की सेना की शरण लेना सुनकर-
शत्रु को वश में करके बरछी से अकेले बुन्दीश का उसको मारना ३ इन दोनों
सेनाओं के विरोध को मिटा कर हुलकर का दक्षिण में जाना ४ रावराजा का
अपने पुर में प्रवेश करके चोरों के उपद्रव को मिटाना और गईहुई प्रजा का
पीछा आना ५ महाराव से मिलकर फिर प्रभु (उम्मेदसिंह) का बुन्दी में आना
और कोटा के पति की इन्द्रजाल की गणना का तीसवां ३० मयूख समाप्त
हुआ और आदि से तीन सौ ग्यारह ३११ मयूख हुए ॥

फोटा के राजा का रामचन्द्र को बहकाना] सप्तमराशि-रुकमिंश मयूख (११७६)

॥ गीर्वाणभाषा ॥ इन्द्रवशा ॥

एवं समालोच्य सधीसखैस्समं कोटेश्वर सज्जनशल्यभूपति ॥
दालेलिङ्गप्रतिनैनवासित प्रीतिच्छदम्प्रेषितवान्स्वदोर्लक्षिम् ॥१॥
तरिमन्तुन्तन्धमेन लेखित कूर्मादपोऽनुरहस्यकोविदा ॥
भा रावराजन्द्र तथाऽभिप्रेचनं कर्तुं समुद्युक्तधियो वय स्थिता ॥२॥
श्रीमन्तनन्दाब्धिकुमारिकेश्वर घोगाभिसम्पातशताद्बधूर्वहम् ॥
कार्यं पुरस्कृत्य कृपाणापाणाय श्रेयो गमिष्याम उपायपद्धता ॥३॥
सन्नद्ध सेना मदवन्मतङ्गजामुत्फुल्लसत्पोथलसत्तुरङ्गमाम् ॥
राणाञ्जिसध्यासुतदण्डनायका धूल्युत्करातर्हितकञ्जवान्ववाम् ॥
आकर्ण्यमाकर्णितकाण्डकार्मुकाञ्चिस्फारसन्त्रस्तसपत्नसञ्चयाम् ॥
आनद्धकान्तापसवर्मचाहुता चाक्वक्ववच्चन्द्रकचन्द्रकाज्मलाम् ॥
सन्देशाङ्गाङ्कितगृहीतनिश्चया विरुपातयानाऽऽसन २सन्धिश्चित्र
हाम् ॥

इस प्रकार मन्त्रियों के साथ पिशाच फाँके फोटा के पति सज्जनों के बाल रूप राजा न "फोटा के महाराज का नाम दुर्जनशाल था परन्तु हम्मेदसिंह के बिरुद्ध कार्य करने से कयि न सज्जनशल्य लिखा दे" नैयया नगर म स्थित दखेलसिंह के पुत्र कृष्णसिंह को अपने हाथ का लिखा प्रीति पत्र भेजा ॥ १ ॥ उस प्रथम ने उस म वृत्तान्त लिखा कि हे राघवाजेन्द्र तुम्हारे अभिवेक करने में कल्याण आदि मय पूर्व गुप्त भेद जाननेवाले हम, अच्छे प्रकार से दस्तखिस्त होकर स्थित हैं ॥२॥ रुपाकुमारिका क्षेत्र के पति नन्दा नामवाले श्रीमन्तको, कि जो भयकर महाराजाले युद्ध रूप रथ की धुरा को धारण करने वाणा है कार्य में आगे करके, हाथ म तरवार धारण करके सपाय से कल्याण को प्राप्त होवगे ॥ ३ ॥ मस्त हाथियोंवाली और फूलेहुए फुरनों (नासिका)वाले उत्तम घोड़ों वाली सेना को सज्जर, कि जिसमें सिंधिया का पुत्र राणाजि सेनापति हैं और जिसने धूलि के समूह से सूर्य को ढकदिया है ॥ ४ ॥ धनुष का कान तक खींचकर टकार करने से भयभीत किया है शत्रुओं के समूह को जिसने फौजवाद के कवच और दस्ताना बांधे सुवर्ण के आकाशोंधी देनेवाले चद्रमा युक्त ढालोंवाली ॥ ५ ॥ हथकारों के कथन से निश्चय करनेवाली प्रसिद्ध यान, आसन, सभि, विग्रह, वैभ और आश्रय इन नीति के छहों गुणों के विशाल

द्वेधाऽऽश्रयोऽल्ललासविलासवैभवां सङ्ग्रामवित्सदि१ निपादि २
सौभगाम् ॥६॥

शौण्डीर्यसन्दानितशूराशत्रवां प्राप्तापडत्तीणाविविक्तमन्त्रणाम् ॥

प्रेखोलदुच्चूलितवैजयन्तिकां धारारयोद्धूतसमस्तसागगाम् ॥ ७ ॥

शाकतीक१याष्टीक२विनोदबन्धुरां नैस्त्रिशिक ३ प्रासिक४धन्वि५दु-
र्द्वराम् ॥

प्रोद्दण्डदुस्फोट१कुठार२पट्टिशां३जेष्णाम् उम्मेद१मल्लार२यामल्लाम्
॥ ८ ॥ इतिकुलकम् ॥

तूर्णा व्यतीत्येषदहर्गणान्वयं निर्जित्य संरूपे बुधसिंहजाऽन्वयम् ॥

दास्याम उन्मार्जितसर्वकण्टकं बुन्याऽऽधिपत्यं भवते निरंकुशम् ॥

ईर्ष्यापरः सालमनप्ररिच्छदं क्षिप्रं लिखित्वेति स भीमनन्दनः ॥

श्रीमन्तमन्त्रिणयथ रामचद्रकेऽलेखीद्वितीयं२दलमात्तकिल्वपः१०

॥ अनुष्टुब्बुग्मविपुला ॥

पुण्येशाऽमात्ययोर्वाढं रामचन्द्र१मल्लार२योः ॥

वैभववाली और युद्ध को जाननेवाले घोड़ों के सवार और हाथियों के सवारों के ऐश्वर्यवाली ॥ ६ ॥ पराक्रम से वीर शत्रुओं के समूह का बांधनेवाली तीसरे के कान में सलाह को नहीं जाने देनेवाली कंपित वस्त्र की ध्वजावाली (विजय करनेवाली सेना का झंडा ही खुला रहता है) और अग्ने प्रवाह के वेग से समुद्रों को कंपायमान करनेवाली ॥ ७ ॥ परछी और लाठी से लड़नेवालों से सुंदर, तरवार, भाला और धनुष धारण करनेवालों से दुस्तर और उग्र घाव करनेवाले कुठार और कटारियोंवाली, ऐसी सेना से उम्मेद-सिंह और मल्लार दोनों को जीतेंगे ॥ ८ ॥ थोड़े मास बिताकर शीघ्र युद्ध में बुधसिंह के वंश और इनकी उपासना करनेवालों (सम्बन्धियों) को जीतकर सब कांटे उखेड़ कर अंकुश रहित बुन्दी का स्वामीपन आपको देंगे ॥ ९ ॥ ईर्ष्या में तत्पर होकर सालमसिंह के पोते को ऐसा पत्र शीघ्र लिखकर उस पाप को ग्रहण करनेवाले भीमसिंह के पुत्र ने इसके आगे श्रीमन्त के मन्त्री रामचन्द्र को दूसरा पत्र लिखा ॥ १० ॥ पूना के स्वामी के मन्त्रि रामचन्द्र और मल्लार में जैसे एक हथनी पर दो हाथियों के विरोध होवै तैसे पहिले इन दोनों

कोटा के राजाका रामचन्द्र को बहकाना] सप्तमराशि एकत्रिंश मयूख (३५७७)

अजायत पुरा धेरं करेश्वामिभृगोर्यथा ॥ ११ ॥

तदात्तोच्य महाराय पूर्वस्मिन्नलिखद्वलम् ॥

निन्द्य कृतं मत्तारेणार्पितोन्मेशाय बुन्दिका ॥ १२ ॥

शवेद्यदि मदायता तदायता वय तव ॥

कूर्मार्थाखिलगजान स्यामाऽऽज्ञाकारिणो वयम् ॥ १३ ॥

एतच्छ्रुत्वा दत्तोदन्त कोटाऽधीश्वरलेखितम् ॥

लिलेख नन्दमन्त्रीत्य रामचन्द्रस्तदुत्तरम् ॥ १४ ॥

आत्मनोऽय स्यतन्त्रत्व पञ्ज रूपापयितु ननु ॥

अयुस्तामकरोन्नीर्मेत्तारो मातृशासित ॥ १५ ॥

न भोक्तुमुचितो बुन्द्या स्कन्धवारम्मनोरमम् ॥

देवानाप्रिय उम्मदसिंहानाम्भोग्यमस्थिभुक् ॥ १६ ॥

उदयदङ्गपृथ्वीभुजगार्त्सिंहमत विना ॥

कार्येऽस्मिन्नाऽस्मदादीना श्रीमतोऽनुसरेद्वच ॥ १७ ॥

राणेश्वरविभित्तुस्त्व नन्हे लेखय तद्वलम् ॥

बुन्द्या काटेडधीनार्या प्रीता स्म इति सत्वरम् ॥ १८ ॥

मं हुआ ॥ ११ ॥ इस बात को विचार कर महाराय ने पहिले (रामचन्द्र) का पत्र लिखा कि उम्मदसिंह को बुन्दी देने का कार्य महार न निन्दा के योग्य किया है ॥ १२ ॥ वह बुन्दी जो मेरे आधीन होवे तो कछवाहे आदि हम सब राजा निश्चय ही तुम्हारे आज्ञाकारी होकर तुम्हारे आधीन होंगे ॥ १३ ॥ कोटा के पति के लिलेख इस पत्र के पृष्ठान्त को सुनकर नन्ह के मन्त्रि रामचन्द्र ने उस का उत्तर इसप्रकार लिखा ॥ १४ ॥ वम नीच मूर्ख और शूद्र महार ने अपनी स्यतन्त्रता प्रसिद्ध करने को निश्चय ही यह कार्य अयोग्य किया है ॥ १५ ॥ जैसे सिंहों के भोगने योग्य को कुत्ता भोगने योग्य नहीं होता तैसे रमणीय राजधानी बुन्दी को भोगने योग्य मूर्ख उम्मदसिंह नहीं है ॥ १६ ॥ चवपपुर की पृथ्वी को भोगनेवाले राणा जगत्सिंह की सलाह के बिना इस कार्य में हम लोगों के वचन अमिन्त (नन्ह) नहीं मानेगा ॥ १७ ॥ महाराणा को भेदने (को डन) की इच्छावाले तुम यह पत्र नन्ह के नाम लिखाओ कि यह बुन्दी काटा डन की इच्छावाले तुम यह पत्र नन्ह के नाम लिखाओ कि यह बुन्दी काटा के पति के शांति आधीन होने में हम प्रसन्न हैं ॥ १८ ॥ शीषोद ने पत्र से और

शीर्षोद्धवर्णादूतेनाऽप्यस्माकं सम्मतेन च ॥

कभिष्पत्येव पुण्येशो बुन्दीन्दौर्जनशल्लिपकीम् ॥ १९ ॥

वर्णादूतं विदित्वैवं रामचदेणा चालितम् ॥

राणादीन् सम्मते नेतुं तच्चक्रे भैमिरुद्यमम् ॥ २० ॥

॥ उपजातिः ॥

इतस्तु बुन्दीपतिरात्तधर्मा चाणक्यः कामन्दकश्चाक्यवर्मा ॥

शर्माऽऽश्रयोऽर्थिब्रजदत्तभर्मा स्वाध्यायसाध्याऽयमहायकर्मा ॥ २१ ॥

वृद्धश्रवाः सन्बलगोत्रपालस्तथा तपस्तप्ततयाऽनुपेतः ॥

अशीर्णपादो ह्यपि धर्मराजो राजाऽपि दोषाकरताविहीनः ॥ २२ ॥

श्रीदोषस्वर्गः सबलोऽपि सौम्यः शिवोऽविरुपात्तपुराऽध्वग्नः ॥

हमारी सलाह से पूना के स्वामी बुन्दी का निश्चय ही दुर्जनशाल की (तुम्हारी) करेंगे ॥ १९ ॥ ऐसे रामचन्द्र के भेजे हुए पत्र को जानकर भीमसिंह के पुत्र ने महाराणा आदि को अपने पक्ष में लाने का वह उद्यम किया ॥ २० ॥ इधर वह बुन्दी का पति (उम्मेदसिंह) धर्म का ग्रहण करनेवाला, चाणक्य और कामन्दक के वचन रूपी कषच वाला, ब्राह्मणों के आश्रयवाला और याचकों के समूह को सुवर्ण देनेवाला, वेद और पुराणों के पठन पाठन से सिद्ध होनेवाली शुभदायी विधि की सहायता से कर्म करनेवाला ॥ २१ ॥ और वृद्धों की सुनने वाला (इन्द्र) होने पर भी बल और गोत्र का पालन करनेवाला था. यहां बल और गोत्र शब्दों में श्लेष है, अर्थात् इन्द्र पक्ष में बल (दैत्य) और गोत्र (पर्वत) इन का वह भेदन करनेवाला है और बुन्दीन्द्र के पक्ष में बल (सेना) और गोत्र (कुटुंब अथवा जाति समूह) जिनकी यह पालना करनेवाला है और इसीप्रकार तप को काटने से अनुपेत [युक्त नहीं] है, अर्थात् तप करनेवाला है और वह इन्द्र तपस्वियों के तप को काटनेवाला है. अशीर्णपाद होकर भी धर्म राजा है अर्थात् धर्म के चरण तो युग युग प्रति क्षय होते जाते हैं और इनके चरण अक्षय हैं और राजा होने पर भी दोषाकर अर्थात् दोषों की खान नहा है. राजा नाम चन्द्रमा का है सो दोषाकर अर्थात् रात्रि को करनेवाला है ॥ २२ ॥ कुबेर होने पर भी निधि रहित है अर्थात् कुबेर तो लक्ष्मी का संचय करनेवाला है और यह उड़ानेवाला है कुबेर पक्ष में स्वर्ग निधि और राजा पक्ष में स्वर्ग छान्दे मनवाला अर्थात् कृपण. बलवान् होने पर भी सौम्य है, शिव होकर भी

कोटा के राजाका रामचंद्र को बहकाना सप्तमराशि एकत्रिंशमयूख (३५७६)

अभीष्टमेनोऽपि निररतजाड्यो दग्ध मेजे पुरुषोत्तमोपि ॥ २३ ॥
अनूनवाणः कमनोऽपि साङ्ग सत्यप्रियो भास्वदतीक्ष्णाली १० ॥
यद्यप्युदागे दृढमुष्टिदग्धोऽपि विगोचनोऽप्यञ्जनन्तमपि ॥ २४ ॥
अनेकदशोपि सपर्शुपाणि सत्स्पर्शकायोऽपि न चक्रिशत्रु ॥
अनाश्रयाश शुचिः परेव साक्षादजिह्वागो भूमिभुजङ्गमोगी १६ ॥ २५ ॥
प्रचण्डमहण्डजितारिपक्ष पाङ्गुगपदशक्तित्रयः तत्त्वदत्त ॥

विरूपाक्ष [क्रूर दृष्टिवाला] नहीं है तीन नेत्र होने से शिव का नाम विरूपाक्ष
नै और पुत्र तथा यज्ञ की रक्षा करनेवाला है [शिव त्रिपुर के और दक्ष क यज्ञ
क नाश करनेवाले हैं] अभीष्टमेन होने पर भी मूर्खता नहीं है अर्थात् इच्छा-
नुसार माननेवाला मूर्ख होता है और यह दृष्ट का माननेवाला बुद्धमान है
पुरुषोत्तम होने पर भी दूर का नेत्रन नहीं करता है "पुरुषोत्तम" श्रीकृष्ण क
पक्ष में दूर [गङ्गा] और पुरुषा में उत्तम उम्मेदसिंह के पक्ष में दूर [मय] वाची
है ॥ २३ ॥ कामदेव होकर भी अनून [चटुत] वाणोंवाला और अङ्ग सहित है
[कामदेव पंच वाणवाला और अंग रहित है सत्यप्रिय होकर भी भासनर्शाल
[भ्रेष्ट वक्ता] है और उधर युधिष्ठिर सत्यप्रिय होने पर भी अश्वत्थामा के वध
क अर्थ मूठ घोषनेवाला था अथवा अप्रिय वक्ता था उदार होने पर भी दंड
देने में दृढमुष्टि [कृपण] है सूर्य होकर भी उत्तम अनेक घोड़ों वाला है [सूर्य
केवल सात घोड़ोंवाला ही है] ॥ २४ ॥ पर्शुपाणि होकर भी अनेक कवचधारि
या [चत्रियों] वाला है पर्शुपाणि अर्थात् परशुराम तो चत्रिया का नाश कर
नेवाला था और यह परेसी (शस्त्र विशेष) हाथ में रखनेवाला होकर भी चत्रि-
या को रखनेवाला है स्पर्शकाय हाकर भी चक्री का नाश नहीं है अर्थात् स्पर्श
काय गरुड] तो चक्री [मय] का शत्रु है और उम्मेदसिंह स्पर्श सवृष शरीर-
वाला होकर चक्री [विष्णु] का शत्रु नहीं है शुचि होकर भी आश्रय का नाश
करनेवाला नहीं है अर्थात् शुचि [अग्नि] तो आश्रय का नाश करता है और
यह शुचि [पवित्र] आश्रय की रक्षा करता है भोगी होने पर भी अजिह्व (स-
रल) है अर्थात् सर्प भूमि का पति नहीं होने पर भी सकलाति [देहा खलनेवाला]
है और यह सीधा होने पर भी भूमि रूपी वेश्या को भोगनेवाला पति है [वे-
श्या के पति का नाम भुजंग है] ॥ २५ ॥ शास्त्र विहित उचित अथवा दक्ष से
शत्रु पक्ष को जीतने वाला सन्धि विग्रहादि कहीं गुण और प्रभुशक्ति, मंत्र शक्ति,
उत्साह शक्ति इन तीनों शक्तियों का सम्य में निपुण, अपराध करनेवाले दुष्टों

कृतापराधान्विनियम्य दुष्टान् राज्यं चकारापरकार्तवीर्यः ॥ २६ ॥

व्यतीत्य वीरः शिशिरं१ वसंतं२ तथैव चोष्णोपगमं३ गुणज्ञः ॥

प्राप्तासु वर्षासु४ परोपकारी व्यधत्त बुन्ध्यां विविधान्विनोदान् ॥ २७ ॥

अनोकुहैरंकुरितैस्तृणौघैस्तत्राडशैलो रुचिगे वभूव ॥

जाताः सनसा हरिता हरित्काः शृंगारशालिन्यवनी रराज ॥ २८ ॥

अजंकुनोदग्निगुहारधारा कादम्बिनीकालहरित्कडारा ॥

ववर्ष वातोच्छतदम्बुवागननल्पकल्पप्रकटप्रसारा ॥ २९ ॥

चिरायमभूविरहोपघाती पानीयपानीयपुगःपपाती ॥

तापं तडित्वास्तपनस्य तज्जर्जन्नप्लावयद्भूमिमतीव गर्जन् ॥ ३० ॥

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मेदसिंहचरित्रे सहायीभूतमहाराव नयनपुरबुन्द्युद्धगणपत्रप्रेषणादालेलि कृष्णाऽनुनयनतदनुमल्लारस्पर्द्धिरामचन्द्रोपयोगिकरणाप्राप्ततत्पत्रराणाऽऽदिसम्नेलनोद्यमनबुन्दीद्वर्षतुविनोदविहरणामेकत्रिंशो मयूखः

को विरोधता स दमन करके सानों दूले कार्त्तवीर्य ने राज्य किया ॥ २६ ॥ उस वीर ने शिशिर, वसन्त और उसीप्रकार निश्चय ही ग्रीष्म को बिनाकर परोपकारी वर्षा के प्राप्ति होने पर गुणों को जाननेवाले उस [उम्मेदसिंह] ने बुन्दी में नाना प्रकार के विलास किये ॥ २७ ॥ तहां वृक्षों के अंकुशों से और तृणों के समूहों से आडाबला नामक पर्वत मनोहर हुआ सब दिशा हरी होकर शृंगार युक्त भूमि शोभायमान हुई ॥ २८ ॥ जिसने उत्तरदिशा को भूषित की है ऐसी काले, हरे और पीले रंग की और पवन से उछलते हुए जल के समूहवाली प्रलय के समान अधिक है प्रत्यक्ष विस्तारजित्ता ऐसी उदार धारावाली मेघमाला वर्षा ॥ २९ ॥ बहुत समय संपृथ्वी पर उत्पन्न होनेवाले विरह का नाश करनेवाले आगे आगे अत्यन्त पानी गिरानेवाले, ग्रीष्म के संनाम को डरानेवाले मेघ ने बहुत गर्जना करके भूमि को डुवाई ॥ ३० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायण के सप्तम राशि में, उम्मेदसिंह चरित्र में महाराव का सहायक होकर नैणवापुर में बुन्दी दिलाने का पत्र भेज कर दलेलसिंह के पुत्र कृष्णसिंह से प्रार्थना करना ? जिस पीछे मल्लार की बराबरी करनेवाले रामचन्द्र को उपयोगी करना और उसका पत्र पाकर राणा आदि को मिलाने का उपाय करना २ बुन्दीन्द्र का वर्षा ऋतु में विनोद पूर्वक

॥ ३१ ॥ आदित ॥ ३१२ ॥

प्रायोन्नजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

इम पाउस आगम उदित, अतुल अन्न आसार ॥

अकूरन भुव अच्छदिय, किय पूरन कासार ॥ १ ॥

पैंहँ अगँ गुनगोरि दिन, होतो उच्छव पूर ॥

बुद्ध सद्गोदर जोधेके, बूझत वह हुव दूर ॥ २ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

अब सावन अबदात तीज ३दिन, उच्छव किय विख्यात हइ ईन ॥

रानीजनन सुघाटि सुहाई, पारवती प्रतिमा बनवाई ॥ ३ ॥

बहुबिधि भूषन बसन बनाये, प्रीति उपेत ताहि पहिराये ॥

दै पटु सग अलंकृत दासी, नाम तीज वह प्रकट निकासी ॥ ४ ॥

गई जैतसागर तेंडाग तट, भूपहु पत तैंत सब लै भट ॥

इक ओर देवी ससंदै जैंहँ, भूप सभा इक ओर बनी तैंहँ ॥ ५ ॥

वारसुदर्शिन नटन बनायो, अतुल मेघ आलाप उठायो ॥

बैलि तैंहँ घटिका दोयर् बिताई, पुनि देवी महलन पधराई ॥ ६ ॥

तदनु नरेम सेवकन हित हिय, मादकं वस्तु मेघ बिनु बटिय ॥

त्योही कुसुमै नार किलंगी, सोभित अतर पान तिन सगी ॥ ७ ॥

दै इम सबन चढयो बुदीपति, आयो महलन मन प्रसन्न अति ॥

विहार करेन का इकतीसवां ३१ मयूख समाप्त छुआ और आदिसे तीनसौ
बारह ३१२ मयूख हुए ॥

१ मेघधारा से २ भूमि को छाई ३ तलाव ॥ १ ॥ ४ बुधसिंह के सगे छोटे ५

५ जोषसिंह के रूपने से गुनगोरि का वटसय मिटगया ॥ २ ॥ ६ शुष्कपक्ष की

७ हाडा चत्रिया के पति ने ८ अष्ट डोळ (आकृति) की ॥ ९ ॥ ९ सहित १० भूप

यों से युक्त ॥ ४ ॥ ११ तलाव के किनारे १२ तहा प्राप्त हुआ १३ देवी की सभा

॥ ५ ॥ १४ वेदयाओं ने नृत्य किया १५ तुलना रहित मेघराग का १६ पुनि ॥ ६ ॥

१७ नष्ट की वस्तु १८ बिना मद्य (दारु) के बुन्दी के राजाओं म यत्मान महाराव

रघुवरसिंह के सिंघाय केषल बुधसिंह ने ही मद्य पिया था १९ फुला के ॥ ७ ॥

दूजे दिनहु यहै विधि ठानी, पच्छे चढत परयो धन पानी ॥ ८ ॥
 पहुँच्यो निठि निजालायें संभर, फुटि तड़ागं चल्यो डहिं अंतर ॥
 बिक्रम सक खट नभ वसु वसुमति १८०६, अतुल बिर्गव अचानक
 भो अति ॥ ९ ॥

॥ दोहा ॥

सावन बिसद चउत्थि ४ तिथि, रति घटिष दुवर जात ॥
 जल न जैतसागर किल्यो, उडिय सेतु अररात ॥ १० ॥

॥ षट्पात् ॥

अति जैव फुटिय रोतुं मनहुं तोपन गन छुटिय ॥
 के लगगत सैतकोटि कूट पब्दय जनु तुटिय ॥
 बुरजन ब्राज उडाय फोरि कोसन फटकारे ॥
 मगबिच बिटंप मिले सु हीनैवलकल करि डारे ॥
 निम्नहु निवान मुंदिय सकल बिकल नैक रुकि रुकि रहैं ॥
 प्राकार पँथुल अटकै न जल तो पँतन बहु जन बहैं ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

इम फुटत सर सेतुको, सुन्यो अचानक रँवान ॥
 कछुक काल अचिरज रह्यो, पुनि किय सवन प्रमान ॥ १२ ॥
 प्रात ताल असो लख्यो, हुव सब वैभव हानि ॥
 मानहुं बनिक धनाढ्य घर, लुट्यो रंकन आनि ॥ १३ ॥
 जोधसिंह जिहिं मध्य थित, बूढ्यो अगग प्रमत्त ॥
 जो सब अंग उपांग जुत, कढ्यो तरुँडैक तत्त ॥ १४ ॥

१ मेघ का तथा अत्यन्त ॥ ८ ॥ २ अपने महल में ३ तालाब फूटा
 ४ शब्द ॥ ९ ॥ ५ अरड़ाट शब्द करके पाळ लूटी ॥ १० ॥ ६ अत्यन्त वेग से
 ७ पाळ = मानों वज्र लगने से पर्वतों के शिखर लूटे ९ समूह १० मार्ग में
 जो वृक्ष आये उन्हें त्वचा ११ (छाल) हीन करदिये सब १२ गहरे जलाशयों
 को १३ मगर १४ बड़े कोट से १५ नगर के ॥ ११ ॥ १६ शब्द ॥ १२ ॥ १७ मानों ध-
 नवान बनिये के घर को ॥ १३ ॥ १८ नाथ ॥ १४ ॥

लिन्नी बुदिय जानि इत, उदयनैर जगतेस ॥
 पठये पत्र उमेद प्रति, लिखि हित बिहित बिसेस ॥ १५ ॥
 अकखी हमहु प्रसन्न अति, अब इहून अधिराज ॥
 अरैहि इहाँ सन आयहै, टाँकाके सब साज ॥ १६ ॥
 कोऊ कोबिद सचिव निज, भेजहु सत्वर अत्थ ॥
 हिप उपज्यो कछु पुच्छि हम, ससय तजहिँ ममत्थ ॥ १७ ॥
 नृपति पुरोहित सुक्कल्यो, दयाराम मुनि एह ॥
 पहुँचि विप्र तव दुवर नृपन, सधयो सरस सनेह ॥ १८ ॥
 अभयसिंह मरुभूपको, इत आयउ अवसान ॥
 निज भट सब बुझे निकट, होत कलेवर हान ॥ १९ ॥
 अकखी अब मम जात अँसु, इत सोदर बखतेस ॥
 मोछतही होवन लग्यो, अगँ धन्व नरेस ॥ २० ॥
 सो सठ अब मेरे मरत, नागोरहिँ रखै न ॥
 मारि बिडारहिँ मम सुतहिँ, लहहिँ जोधपुर अँन ॥ २१ ॥
 रामसिंह मम पुत्र यह, है कुपुत्र मति हीन ॥
 यासौं तुम सब पलाटिहो, रहिहो नहिँ अधीन ॥ २२ ॥
 कुल कुठार कटक यहै, पापी खल पहिचानि ॥
 तुमहु कदाँतक रक्खिगहो, कूर नृपहिँ मम कौनि ॥ २३ ॥
 तातैं जो अवरहि त कहु, तो पहिलैं कहि देहु ॥
 याहि दिवावहु ईतर कछु, वाहि जोधपुर एहु ॥ २४ ॥
 नहिँ तो जो अब ईहिँ मिलैं, पिच्छैं सोहु मिलैं न ॥
 पुच्छन यह धुँल्ले तुमहिँ, अब मुहि बहत अँचन ॥ २५ ॥

१वचित ॥ १५ ॥ १शीघ्र ही ॥ १६ ॥ ३चतुर ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥
 समय ॥ २६ ॥ ७ प्राण ८ सगामाई ९ मेरे होते ही आगे मारपाव का पति होने
 लगा था ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ १०मुखी राजा को ११मेरी अवस्था से ॥ २३ ॥ १२इ-
 स को कोई अन्य परगना दिला दो १३यसतसिंह को ॥ २४ ॥ १४रामसिंह को
 इस समय मित्रता है सो भी पीछे नहीं मिलेगा १५ बुलाये हैं ॥ २५ ॥

मेरतिया उपटंकि इक, दूदाउत रहोर ॥
 बुल्लयो सुनि रघुपौरप, सेरसिंह भट मोर ॥ २६ ॥
 हम हाथिन ठिहैं भुजन, घल्लैं अद्रिन वत्थ ॥
 खंडैं दक्खिन खग्ग वल, मंडैं रन बिनु मत्थ ॥ २७ ॥
 तिन जीवत कातर वचन, नन अक्खहु नग्नाह ॥
 कुलकुठार भवदीय सुत, तदपि करहि निरबाह ॥ २८ ॥
 अधम तऊ यह कुमर पै, जो यह कन्या होय ॥
 सोपै भुग्गहिं जोधपुर, हम छत त्रास न होय ॥ २९ ॥
 यह सुनि नृप बुल्लयो बहुरि, इतर भटन सन एस ॥
 कैसी भासत सबनकाँ, अक्खहु मोहि असेस ॥ ३० ॥
 चंपाउत रहोर तहैं, नगर आउया ईस ॥
 कुसलसिंह बुल्लयो, सुनहु, इक मन धन्व अधोस ॥ ३१ ॥
 ऐसी भासत कुमरकी, करिहै नीचन संग ॥
 उचितनको आदर घटैं, रंगैं अनुचित रंग ॥ ३२ ॥
 सोतो हम सहिहैं सबहि, पै डेरन परवाय ॥
 दुदुंकारि रु कहैं हमहि, ततो रह्यो नहिं जाय ॥ ३३ ॥
 यह उदंत हुव जोधपुर, सुनहु भूप चहुवान ॥
 अभयसिंह तजि तनु तंदनु, कियउ महाप्रस्थान ॥ ३४ ॥
 रामसिंह बैठो तखत, कुलहिं कलंकित कार ॥
 जानतहे ताकाँ जगत, वहहि लयो आचार ॥ ३५ ॥
 इक ठंढी अंत्यज अधम, अभी नाम अधरूप ॥
 वह बाँदक कंडोलको, मित्र कियउ मरुभूप ॥ ३६ ॥

१ रियाँपुर का पति २ मौड़ (मुकुट) ॥ २६ ॥ २७ ॥ ३ कायर वचन ४ आप का पुत्र
 ॥ २८ ॥ ५ परन्तु ॥ २९ ॥ ६ दूसरे उमरावों से ७ कैसी दीखती है ॥ ३० ॥
 ८ हे मारवाड़ के पति ॥ ३१ ॥ ९ धिक्कार देकर निकालदेवें तो ॥ ३३ ॥
 १० जिस पीछे शरीर छोड़कर ११ स्वर्ग गया ॥ ३४ ॥ १२ करनेवाला ॥ ३५ ॥
 १३ ढाढी विशेष १४ ढोली १५ मारवाड़ के पति ने ॥ ३६ ॥

भगिनी ताकी भाँवैती, नाम सुरूपाँ नारि ॥

रानिन पर पटराँगिनी, करि रखी गृह द्वारि ॥ ३७ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

दिन विपरीत जोधपुर केरे, ताँते विधि औसे नृप हरे ॥

सूरिनको सतकार नरखै, सूरन सैन अनुचित जह अकखै ॥ ३८ ॥

नहिँ सचिवन दासन सनमानै, अरु बालिस नीचन द्वित आनै ॥

मरुपति मित्र मृत्यु जब पायो, सुनि टाँका मल्लार पठायो ॥ ३९ ॥

गो तिहिँ सग मत्त इकश्वारन, परिणत प्रवत्त श्रवत मद धारन ॥

अभयसिंह सुत कोतुक आयो, सो गज निज गज सग लारायो ४०

हुलकरके इभतै निजे हारयो, तब सठ मारन ताहि बिचारयो ॥

तोप दगाप हनहु इहिँ अरुखो, जगू बिप्र निठि कहि रखयो ॥ ४१ ॥

बखतसिंह नागोर धराधन, निज धोत्री पठई कछु कारन ॥

बुद्धि रु तास बसन उतराये, बुद्धि धरि सेकिँम छँगल चराये ॥ ४२ ॥

चपाउत वह कुसल इक दिन, आयउ मभा जानि रामहिँ ईन ॥

तास पिछि इक दास पठायो, अधोवैल करि सैन कढायो ॥ ४३ ॥

तू बपु खैव कहो पुनि तासो, बहै न तव विक्रम लघु स्वासो ॥

सो पें दुम्सह कुसल रहो सहि, अभयसिंह आदेश चित्तचहि ॥ ४४ ॥

बहु अनुचित इम अधम वनाई, कवि लोलैहु कहत अलसावै ॥

सुनहु राम सभर अरुँस्वामी, बियरी इम मरुपति बदनार्मा ॥ ४५ ॥

बखतसिंह सुनि मोद बढ़ावै, लैन जोधपुर दाव लगवै ॥

१ उसकी पहिन २ रुचिकारक (रूपवती) ३ पटरानी ॥ ३७ ॥ ४ पहितों का धारों ५ से

॥ ३८ ॥ ६ मूर्त ॥ ३९ ॥ ७ हाथी ८ तिरछी घात करनेवाला अथवा पक्षीपुई कमर का

॥ ४० ॥ ९ अपना हाथी ॥ ४१ ॥ १० नागोर का राजा ११ अपनी धाय को १२

घोनि में १३ मूला घरकर १४ उस मूले के पसे यकरे को चराये ॥ ४२ ॥ १५

रामसिंह को स्वामी जानकर कुशलसिंह सभा में आया १६ घोवती ॥ ४६ ॥

१७ तू छोटे लिंगवाला है १८ कुसे से भी छोटा १९ कुशलसिंह २० अभयसिंह का

छुकम ॥ ४४ ॥ २१ कवि की जिह्वा भी २२ प्राणनाथ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥

॥ ४६ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तमयणो सप्तम ७ राशानुम्मे-
दसिंहचरित्रे पितृव्यकल्पवनगतगुणागौरीमहोबुन्दान्द्रावणाश्रा-
मशुक्लप्रथमशिवादिनोत्सवस्थापनतदपरदिवसराष्ट्रयात्राऽनन्त-
रजैतसागरमहातडागजलसेतुलोदनराणाजगत्सिंहविहितवर्णादूतवुं-
द्याऽऽगमनाऽवगतदलोदन्तरावराट्पुरोहितद्वारामोदयपुग्प्रेषणाध-
न्वधरेशाऽभयसिंहमहापरिणामव्याधिवर्द्धनत्वकुपुत्रसमयसामन्त-
स्वीकरणाऽकरणा निश्चयनसेरसिंहसर्वसहनाऽङ्गीकरणाकुशलसिं-
होचिताऽनुचितनिवेदनकावन्धराजकायत्यजनतत्तनुजरासमिंहपट्टपा-
पणातदुचिताऽनादरणांत्यजनसहचरीभवनपरिभावकपीलुमारणा-
विचारपितृव्यकधात्रेयीविवस्त्रीकरणाकुशलसिंहाऽधोवस्त्रकर्त्तनप्रति
पुरुषतन्निन्दाप्रसरणां द्वात्रिंशो ३२ मयूखः ॥ ३२ ॥ ३१३ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, उम्मेदसिंह चरि-
त्र में, काका के मरने से गयेहुए गुणगौर के उत्सव को बुन्दी के पाति का सा-
वन मास की शुक्लपक्ष की तीज के दिन उत्सवस्थापन करना ? उसके दूसरे
दिन सखूह के गये पीछे षडे तलाव जैतसागर के जल का पाल को तोड़ना २
राणा जगत्सिंह के उचित पत्र का बुन्दी में आना जानकर पत्र के उत्तर में
रावराजा का पुरोहित दयाराम को उदयपुर भेजना ३ मारवाड़ के पाति अ-
भयसिंह को कालरोग के बढ़ने पर अपने कुपुत्र के समय (राजापन के समय)
का स्वीकार, न करने के विचार से अपने उमरावों को बुलाकर निश्चय करना
४ शेरसिंह का सब सहन करने को स्वीकार करना और कुशलसिंह का उचि-
त अनुचित निवेदन करना ५ राठोड़ों के राजा का शरीर छोड़ना और उस
पुत्र रामसिंह का पाट पाना ६ उसका उचित लोगों के अनादर का करना और
अन्त्यज लोगों का साथ करना ७ अनादर करनेवाले हाथी को मारने का वि-
चार और काका की धाय को नग्न करना ८ कुशलसिंह की धोती (धोवती) काट
ने से मनुष्य ९ प्रति उस की निन्दा फैलाने का बत्तीसवां ३२ मयूख समाप्त हुआ
और आदि से तीनसौ तेरह ३१३ मयूख हुए ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

इत बुन्दीस मल्ल डक धारथो, सहर सितारा गमन बिचारथो ॥
 सग लयो निज दीपेसहोदर, भजनेरीपति सेरसुभट बर ॥ १ ॥
 हहा पुनि नाहर ३ हरदाउत, अरु दलेल ४ हरजन अमात्य सुत ॥
 इत्पादिकन सहित नृप हकिय, सुनि प्रपान दिस दिस अरि सकिय २
 नृपहि चलात कोटेस निवारथो, तउ न रुक्यो छल तास निहारथो ॥
 सक खट नम धृति १८०६ भइ बिसद तैंहँ, बुदिय राखि सचिव
 हरजन कैंहँ ॥ ३ ॥

पति सभर चल्थो दक्खिन प्रति, रहि बेघम इकरति महामति ॥
 दरकुचन इम पत्त अवतिप, आद्व अपरपत्तग तत्थहि किय ॥ ४ ॥
 हके पुनि लगगत नवरत्ते ९, अष्टमि ८ दिन रेया तट पत्ते ॥
 तैंहँ दक्खिन पति चोकीदारन, मग्यो कर वह सरित उतारन ॥ ५ ॥
 सुनि नृप कहिय डम न कर देहैं, जव उन अक्खिय पार न जैंहैं
 तव तिन्ह भूप पिटाय विडारे, पोतन करि निजतत्रे पधारे ॥ ६ ॥
 श्रीओकार १ ईस दरसन करि, माधाता २ जुत पूजि पयन परि ॥
 रेवा नदि पुनि लधि वडे रैंय, पत्त नगर बुरहानपुराव्हिय ॥ ७ ॥
 जोतिजिंग सिव १ अरचन महिय, विश्वकर्म प्रतिमा २ दरसन किय ॥
 पुर अवरंगावाद गये सुने, गोदावरी बहुरि न्हाये धुनि ॥ ८ ॥
 आद्व १ वैन २ उपवास २ विहित सब, बिरचि अगग बुन्दीस चलिय तव
 उज्जै असित इम गय धरि नैंय धुर, बापगाँव नामक हुलकरपुर १
 पुणपापुर मल्लार हुतो तव, खडू नृप सतकार कियो सब ॥

१ दीपसिंह ॥ १ ॥ २ कामदार का पुत्र ॥ २ ॥ ३ मनाफिया ४ सुदि ॥ ३ ॥ ५
 युक्तिमान् ६ दूमेरे पक्ष में गयेष्ट ॥ "ज्योतिष में शुक्लपक्ष को द्वितीय मानते हैं"
 ॥ ४ ॥ ७ नर्मदा के किनारे ८ नदी उतारने का ॥ ९ ॥ ६ निकाल दिये १० नावों
 का १ ॥ अपनेआधीन करके ॥ ११ ॥ २ वेग से १ ॥ बुरहानपुर नाम का ॥ ७ ॥ १४ नदी में
 ॥ ८ ॥ १५ सुदन १ ॥ कार्तिक यदि में १ ॥ नीति क धुरको धारण करके ॥ ९ ॥ १८ पूना में

(३५८८) उमेदासिंहका तीजका उत्सव करना] सप्तमगाशि-द्वान्त्रिंशभयूख

सम्मुद्र जाय बधाय रु लिन्नै, हय सिरुपाव निवेदन किन्नै ॥१०॥
 सुदित रची दिन प्रति सहिमानो, दुलभ सिकार अनेक दिखानी ॥
 अहं कति रहत मलारहु आयो, बिबिध हेत मिलि दुहुँन बढायो ११
 बुंदियै खबरि गई नृपपै तब, सचिवन अगै दुखित प्रजा सब ॥
 हरजन धन छिन्नत नन हारै, बनिकन दै अभिसाप बिगारै ॥१२॥
 चोरनतै मिलि द्रव्य चुगवै, खोसि खोसि सबको बसु खावै ॥
 सुनि उदघोसै कियो नृप निश्चय, निकस्यो सत्य तबहि मंड्या नय
 भजनेरीपति सेरसिंह भट, हरजनको पकरन पठयो भट ॥
 तिहिँ आय रु माहुँदा पत्तन, हड्डा घेरिलयो वह हरजन ॥ १४ ॥
 कोटेसहिँ तिहिँ तबहि कहाई, भजनेरी पँ गहत सुहिँ भाई ॥
 अप्पहि दये संग इनके हम, करहु सहाय स्वदासन हे छम ॥१५॥
 कोटापति सुनि करि त्वरितार्ह, पृतनाँ दैन सहाय पठार्ह ॥
 जो पहुँचै न इते बिच करि जय, गहि हरजनहिँ सेर बुंदिय गय १६
 तारागढ काँराबिच डारयो, बंधन लहि तब दर्प विसारयो ॥
 बापगाँव मल्लार जुझजित, निज कन्या उपयम मंडिय इत ॥१७॥
 बुन्दीसहु बहुधन खरच्यो जहँ, लगनकाल इक बत्त सुनी तहँ ॥
 अगहन मास बिसद अह, तज्यो छत्रपति साहू बिप्रैह १८
 हुलकर घर अति सोक तास हुव, सुता बिवाहि चलन चिंत्यो धुव
 अर्जुन बापगाँवहि नृप रक्खिय, हरजन पुत्र अरज यह अक्खिय १९
 द्वैरदिन सिक्ख मोहि नृप दीजै, त्वरित आनि मिलिहौँ दिन तीजै २०
 द्वैरदिन सिक्ख ताहि तब दिनीँ, कछु न संक भजिजावन किनीँ २०
 इत हड्ड १ रु हुलकर २ अँनुरत्ते, पहिलैँ दुव २ पुण्यापुँर पत्ते ॥

॥ १० ॥ १ कितने दिन ॥ ११ ॥ २ बुन्दी की ३ झूठा लेख ॥ १२ ॥ ४ धन
 ५ हाका ॥ १३ ॥ १४ ॥ ५ कोटा के पति को ७ भजनेरा का पति ८ हे समर्थ
 ॥ १५ ॥ ९ शीघ्रता १० सेना ॥ ११ ॥ ११ कैद में १२ बिवाह ॥ १३ ॥ १३ दिन
 १४ शरीर ॥ १८ ॥ उमेदासिंह ने अपने १५ छोटे भाई दीपसिंह को बापगाँव
 में ही छोड़ा ॥ १९ ॥ १६ शीघ्र ॥ २० ॥ १७ प्रीति सहित १८ पूनामें

राजा और हुल्लकरका सितारे जाना] सप्तमराशि-तयार्क्षिणमपूष्य (३१८६)

होतहैं सचिव सदासिव हितमय, नन्ह पिठव्यक सीमा जित नैय२१
सभरपति सम्मुह वह आयो, दिन दस१० रक्खि सनेह दिखायो ॥
इन हरजन सुत बापगाँव रहि, जनकहिँ सुनि पकर्यो विरोध चहि२२
नृपं अनुजहिँ फोरन किय दुर्नय, फुट्यो नहिँ तब भजि कोटा गय ॥
इत संभर१ हुल्लकर१ पुण्या सन, पत्ते उभय२ सितारा पत्तन॥२३॥
हहहिँ आत सुनत हरखायो, सम्मुह नन्ह कोस इक१ आयो ॥
ढेरा काफरखोह दिवाये, पुनि महिमानी साज पठाये ॥ २४ ॥
साहू भूप मरयो विनु सतति, पृथुल राज्य किम रहै बिना पति॥
साहू पितामही तारा तँहँ, अरु प्रधान श्रीमत नन्ह जँहँ ॥ २५ ॥
मत्र विचारि पनालागढ सन, राम बुलायउ सभा नंदन ॥
अगँ नृप सिवराज कर्ण निभ, भूखन कविहिँ दये बावन५१ईभरह
संभा हुव ताको लघु सोदर, दिन्नो जाहि पनालागढ बर॥
ताकै सुत यह रामनाम हुव, सो अब कियउ सितारापति ध्रुव २७,
राजाराम१ बहुरि सभरपति१, मिलिवाये दुव२ नन्ह महामति ॥
बैठे दुव२ इक१ तखत बरव्वर, चले दु२आर मोरछल१चामर२८
ढोले त्रय३पुनि नन्ह मँगाये, राजाराम विवाह रचाये ॥
साहू पट राम इम बैठो, इत इक लरन घूसल्या पैठो ॥ २९ ॥

॥ दोहा ॥

कहि अगँ श्रीमत द्विज, बाजेराय प्रधान ॥

रघू नाम भट घुसल्या, पठयो हिंदुस्थान ॥ ३० ॥

तिहिँ जैनपद गुडवान१ अरु, खानदेस२ लिय जिति ॥

हाकिम पडित भासकर, रक्खयो तँहँ करि किति ॥ ३१ ॥

पच्छो पुनि दक्खिन गयो, मृत सुनि वाजेराय ॥

१काका २ नीति से ॥ २१ ॥ ३ राजा के छोटे भाई खेरसिंह को ॥ २२ ॥ २३ ॥
॥ २४ ॥ ४ पञ्चा ॥ २५ ॥ साहू की ५ दादी संभा का ६ पुत्र ७ सदृश ८ हार्थी
॥ २९ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ९ देश ॥ ३१ ॥

साव रह्यो श्रीमंत सुत, नन्ह न जानै न्याय ॥ ३२ ॥

नन्ह हुकम लै छन्न तब, कतिक पिसुन भट और ॥

खानदेस गुड़वानमें, आये बनि बरजोर ॥ ३३ ॥

तत्थ रघू भट भासकर, मार्यो इन करि जंग ॥

अप्पन थानाँ रक्खि तँहँ, पारयो द्वेस प्रसंग ॥ ३४ ॥

बत यहै सुनि घुंसल्या, तबतै धरत बिरोध ॥

अब आयउ श्रीमंतसों, जुद्ध रचन सजि जोध ॥ ३५ ॥

हुलकर पति तँहँ बीच परि, दोउरन बैर मिटाय ॥

आनि रघू श्रीमंतकै, दिन्नों पयन लगाय ॥ ३६ ॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणोत्तममराशासुम्मेदसिंहच-
रित्रे बुन्दीन्द्रसितारापूःप्रस्थानतिरस्कृतमहाराष्ट्रमहिममेकलजोल्लङ्घन
प्रतितीर्थस्नानप्रत्यर्चाऽर्चनविहितविधेयसम्भरेशमल्लाराऽधिष्ठानबाप
ग्रामप्रविशानखण्डूसन्मुखाऽऽगमनाऽऽदितस्त्वरणाश्रुततदुदन्तहुल
कराऽऽगमनहृद्वेन्द्रहरजनाऽमात्यदेशदुःखश्रवणाप्रेषिततत्सनाभिसेर
सिंहवश्यवेष्टनहरजनाऽऽहूतकोटाकटकपूर्वभजनगरीभर्तृनिगृहीतबुं
दीपुटभेदनतारादुर्गप्राकारप्रवेशनोम्मेदसिंहहुलकरसुताविवाहबहुव
सुवितरणातत्तत्त्यक्तेच्छमण्डलमर्दकशीर्षोदसितारास्वामिसाहूश्म-

१ बालक ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥

इति श्री वंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में उम्मेदसिंह के
चरित्र में बुन्दीन्द्र का सितारा नगर को प्रस्थान करना, मरहटों की महिमा
का तिरस्कार करके नर्मदा को उल्लंघन करना, करने योग्य हरेक तीर्थ में
स्नान और हरेक मूर्ति का पूजन करके रावराजा का मल्लार के स्थान बापगांव
में प्रवेश करना, खंडू का सन्मुख आने आदि से उसका सत्कार करना, रा-
जा के समाचार सुनकर हुलकर का आना, हृद्वेन्द्र का हरजन के दिये देश
के दुःख को अमात्यों से सुनकर अपने भाई सेरसिंह को भेजकर हरजन को
पकड़ने के लिये घेरना, हरजन की बुलाई कोटा की सेना के आने से पहिले
भजनेरी के पति (सेरसिंह) से पकड़े हुए (हरजन) को बुन्दी नगर के
तारागढ़ के किले में कैद करना, उम्मेदसिंह का हुलकर की बेटी के विवाह में

ददेछमिहका कोटे जाना] सप्तमराशि—चतुस्त्रिंशमयूज (१५६१),

शानसदनसमासादनश्रवणपैष्यर्षाव्यपकरणाव्याजनीताऽवसरद्वार
जनिकोटाऽऽगमनप्रहृष्टपुरापापुरसदाशिवसत्कृतमल्लारोऽश्मेदरसिता
रासम्प्रापणाश्रीमन्तसन्मुखाऽऽगमनपनालापतिरामराजाऽधिपत्याऽ
भिषेचनतहुन्दीन्द्रसम्मिलनतदेकाऽऽसनसन्निविशिननन्हरामराव-
विवाहनमहाराष्ट्रमराडनसितारेशसुभटरणारसिकरघूपूर्वाऽपमानमूच
नतत्कुपिततयोधनाऽऽगमनमल्लारतद्विग्रहपरासनरघूश्रीमन्तचरणपा
तन त्रयस्त्रिंशोऽश्मयूज ॥ ३३ ॥ आदित ॥ ३१४ ॥

॥ मायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा—हरजन पुत दलेल इत, कोटा जाप प्रमत्त ॥

पठये लिखि नृप यनुज प्रति, बापगाँव इम पत्त ॥ १ ॥

अप्प रहहु मम सग अरु, कोटा आवहु दीप ॥

तो बुदिप पुर तग्वत धरि, मन्ने तुमहिं महीप ॥ २ ॥

दीपसिंह ए पत्र हुतै, पठये अप्रज पास ॥

लाखि तिन्ह मद दलेलको, सुपहु तज्यो विसवास ॥ ३ ॥

॥ पट्पात् ॥

नगर सितारा नीच हट्ट नाहर हरदाउत ॥

निज नृप सम्मति विनुहिं जानि अप्पहिं सु बुद्ध जुत ॥

पट्टत प्र-प देना, वहाके सुमल्लमानों के महल को मारनेवाले सीसोंदिया सि-
तारा के स्वामी माहका घरघट में घर करना (मरना) सुनना, पिता के क्रण
को शूर करने के मिस से अरसर पाकर हरजन के पुत्र का कोटे आना, सदा
शिष से सत्कार किये हुए मल्लार और अश्मेदसिंह का पूजा देखकर सिता
रे जाना, श्रीमन्त का सन्मुख आना, पछाना के पति रामराजा का राज्या-
भिषेक होना, उससे बुन्दी के राजा का मिलना, मरहटों के महम सितारा के
स्वामी के सुभट रणारसिक रघूके पूर्ण अपमान को सुचित करना, उसका कु-
पित होकर युद्ध करने को आना, मल्लार का उसके बैरको मिटाना, रघूको
श्रीमन्त के चरणों में गिराने का तेजीसर्वा मयूज समाप्त हुआ ॥३१॥ और आदि-
से तीन सौ चौदह मयूज समाप्त हुए ॥३१॥

॥ १ ॥ १ दे दीपसिंह ॥ २ ॥ २ श्रीघ ॥ ३ ॥

हुलकर प्रति किय अरज अग्न नभ वसु सत्रद १७८० सक ॥
 टोडा लिय जयसिंह डारि मिच्छन पर ओदक ॥
 आवाँ १ पुरी रु दुन्नी १ उभय २ थान लये हमरेहु तव ॥
 टोडा सु दिन्न तुम माधवहिँ तो बखसहु मम भुवहु अब ॥४॥

॥ दोहा ॥

कुप्यो हुलकर सुनत यह, सोर रहयो पुर छाया ॥
 अकखी नृप कहते हमहिँ, तो बनतोहु उपाय ॥५॥
 हम सन भिन्न प्रेबुद्धहै, बिगराई निज वत्त ॥
 भनि इम नाहरतैं भयो, बुंदियभूप विरतैं ॥६॥
 अगैं नन्ह अमात्य इत, रामचंद्र अघरत्त ॥
 रानहि सम्मलि लैनकोँ, पठये कोटा पँत्त ॥ ७ ॥
 हुत विश्वेश्वरनाम द्विज, निज वकील कोटेस ॥
 उदयनैर पठयो तबहि, फोरन रान नरेस ॥ ८ ॥
 तानैं भिलि जगतेसको, लिन्नोँ मन पलटाय ॥
 दक्खिन देस प्रधानपैं, दिय इम पत्र लिखाय ॥९॥
 दै बुंदिय उम्मेद हित, अनुचित हुलकर कीन ॥
 करहु कथित कोटेसको, तो हम सर्व अधीन ॥ १० ॥
 जोलोँ ए दल दूत लै, निकसैं नैर बिहाय ॥
 तोलोँ अक्खिय रान प्रति, दयाराम द्विजराय ॥ ११ ॥
 कोटेसहिँ जानहु कुहक, मिल्यो सु जैपुर माँहिँ ॥
 सुनिहो रंचक दिननमें, है तुमतैं हित नाँहिँ ॥ १२ ॥
 सु सुनि रान चलमति कहिय, कछु दिन परख बिधाय ॥
 दक्खिन पत्र पठायहँ, तोलग देहु धराय ॥ १३ ॥
 भँसरोर पति स्वसुरहो, चुंडाउत भट लाल ॥

पल्लतसिका जोषपुर पर जोर देना] सप्तमरात्रि-षट्पल्लिशमयूख (१५९१)

ता पैंहँ कृष्ण दलेल सुत, इत दिय पत्र उँताल ॥ १४ ॥

पत्र रावराजोपपद, रानीको लिखवाय ॥

सो ममढिग भेजहु स्वसुर, प्यारे अवसर पाय ॥ १५ ॥

इम लिखि पठयो उदयपुर, अप्पन बनिक बकील ॥

सोहु मिलायो रान सन, करि हट लाल कुँसील ॥ १६ ॥

लघुमँति पत्र लिखाय दिय, कृष्ण कथित परिमान ॥

जल कुँल्लया जिम रान मन, फेरयो फिरत अजान ॥ १७ ॥

बखतसिंह नागोर पति, इत सठ मडि मरोर ॥

दिल्ली दँल बुल्लयो बहुरि, दैन जोषपुर जोर ॥ १८ ॥

अरजी अहमदसाह सुनि, पुनि पठयो बल पुर ॥

जवन सलावतखान जहँ, सेनानी करि सूर ॥ १९ ॥

कूरम ईश्वरिसिंहकी, तनयो सन विख्यात ॥

रामसिंह मरुजाको, पहिलैं सगपन जात ॥ २० ॥

यातैं आवत जोषपुर, सुनि दिल्ली बल सोर ॥

कुम्हहिँ मरुपति भीरको, बुल्लयो गिनि बरजोर ॥ २१ ॥

तब कूरम आभैर पति, उत्तर पठयो एह ॥

फोज खरच भेजहु ततो, आवहिँ भीर सनेह ॥ २२ ॥

॥ षट्पात ॥

अगँ नृप करते सहाय सुनि विपति परस्पर ॥

फौजखरच लेते न जदपि होतो भर सगैर ॥

जामातौ सन कुम्ह मेटि रीति सु धन मागिय ॥

तव मरुभूप सनेमैं लक्ख १५०००० दंम्ह मन भरनौ दिय ॥

१ कृष्णसिंह २ गीम ॥ १४ ॥ १५ ॥ ४ पुरे स्वभावयाला ॥ १६ ॥ ४ बुल्ल
बुद्धिवाले (बदमाश) ने ५ नहर ॥ १७ ॥ ६ सेना ७ बुद्धाई ॥ १८ ॥ ८ सेना
९ सेनापति ॥ १९ ॥ १० घेदी से ११ बुद्धा था ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ १९ युद्ध
का भार १६ जमाई से १४ आभे सहित एक लाख अर्थात् छेव लाख

सजि तब अनीक जयसिंह सुव कोटा भेजिय कैंगरहिं ॥
 हम संग होय जवनन इनहु तो बुंदिय तुम बस करहिं २३
 यह कहाय करि कुंच चलयो मरुपति सहाय पर ॥
 मरुपतिसौं अति मोद मिल्यो तीरथगुरु पुंस्वर ॥
 नगर मेरता तदनु जाय दोउनरमिलान दिय ॥
 इत दिल्ली दल ईस उदयपत्तन दल भेजिय ॥
 हम संग होहु जगतेस नृप सह माधव सेवानुरत ॥
 अग्रजहिं मारि अप्पहिं हमहु तो अनुजहिं जैपुर तखत ॥ २४ ॥
 यह सुनि सज्जिय रान दोन दिल्ली दल सम्मलि ॥
 इत कोटा अधिराज कुम्म कंगर बंचिय बलि ॥
 हुव तयार तब हड्ड करन कूगम किंकर पन ॥
 बुंदिय लोभ विधाय रचन दिल्ली दलतैं रन ॥
 पुरजन कितेक कछु काम तैंह कोटाके गय उदयपुर ॥
 तिन कहिय जात कोटेस सजि जैपुर सम्मलि दल प्रचुर ॥ २५ ॥
 दयाराम द्विज तबहि रान यह सुनत सिराह्यो ॥
 अक्खिय हम सन हेत नाहि कोटेस निबाह्यो ॥
 यह सुनाय वे पत्र लिखे दक्खिन पहुँचावन ॥
 दिन्नैं ते द्विज इत्थ प्रीति बुंदियपर लावन ॥
 द्विज दयाराम ते दल संकल सहर सितारा झुक्कलिय ॥
 तब उभय हड्ड हुलकर तैंमकि कैंगर बंचत कोप किय ॥ २६ ॥
 ॥ दोहा ॥

पुनि मलार खिजि नन्ह पर, रुठि चल्लयो निज देस ॥

सुनत नन्ह अड्डो फिरथो, बुल्लयो विनय बिसेस ॥ २७ ॥

१ पत्र ॥ २३ ॥ २ पुष्कर में ३ जिसपीछे ४ पत्र भेजा ५ सेवा में प्रीति करके
 ६ ईश्वरीसिंह को ७ माधवसिंह का ॥ २४ ॥ ८ पति ९ बुन्दी का लोभ करके
 १० बहुत सेना ॥ २५ ॥ ११ सय पत्र १२ खिजकर १३ पत्र वाचते ही ॥ २६ ॥ २७ ॥

छमहु कोप मल्लार छर्म, सुनहु बत मम एक ॥

सचिव अष्ट८ यह मुख्यदे, अगँ बिहित बिबेक ॥ २८ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

श्रीपतिराव१ हुते सबमै ईने, प्रतिनिधिको उपपद पायो जिन ॥

तिन मुख अगँ मम प्रपितामह, विश्वनाथ१ बितये अनेक अह २९

वाला १ हुत्र पुनि विश्वनाथ सुत, तेहु रहे मुख अगग बिनय जुत ॥

श्रीपति सग पेसै रहिवे सन, तिनहिँ पेसवा कहन लागे जन ॥३०॥

वाजेराय३ भये वालासुत, माँमक जनक पेसवा नय जुत ॥

श्रीपतिराव मरे प्रतिनिधि जब, तुम पचन हमरो जस किय तब ३१

श्रीपतिकी तब मुख्य सचिव गति, वाजेरायहिँ दई छत्रपति ॥

अंक छाप जिम खनित उघारे, सो तुम सुनहु गद्यकरि सारे ॥३२॥

॥ सचरणागद्यम् ॥

श्रीसाहूराजाछत्रपति हर्षनिधान वाजेराय वालाजी पडितप्रधान

ए अक छापमै खुदाय हमारे पिता पेसवा वाजेराय छत्रपतिनै मुख्य

प्रधान कीनै ॥

अरु उनके देहातके अनंतर श्रीसाहूराजाछत्रपति हर्षनिधान

नन्हाजीवाजेराय पडितप्रधान ए अक सितारेश्वरनै छापमै खुदाय

दीनै ॥

तंदनतर जब छत्रपति साहू परलोक गये ॥

तब पनालागढसो पितृव्यक सभाके पुत्र राजाराम आयकै सि-

ताराके अधीस भये ॥ ३३ ॥

अब वेदी अक नईछापमै राजारामके नाम सहित खेनाये ॥

सो सब इत्यादिक अर्थपुदयके फल तुम पचननै प्रससापूर्वक

१ समर्थ ॥ २८ ॥ २ पति १ कायम मुकाम का ४ दिन ॥ २९ ॥ ५ आधीव
॥ रहने से ॥ ३० ॥ ४ मेरे पिता ॥ ३१ ॥ ७ खुदाकर ८ आगेवाले गद्य छन्द
से ॥ ३२ ॥ ९ पीछे १० जिसपीछे ११ काका ॥ ३३ ॥ १२ खुदाये १३ पेशव

मिलाये ॥

तुमहीनै हैदराबादके नवाब निजामनमुलककों जेर करि रुप-
येमें सिक्का अपने अंकको खुदाय जागीरी पटामें हैदराबादही
पछो उनकों दिवाय बंदगी सितारेकी कराई ॥

अरु गुजरातको मालिक दामा गायगवाले साठि हजार ६००००
सेनाको सिरदार फिराऊ भयो ताकों कैदकरि बंढलै रु गुजरात
कों अपने अधीन बनाई ॥ ३४ ॥

तुमारे प्रतापतैं इत्यादिक अभ्युदय देखि सबननै सितारेकों
कुमारिकेश्वर कह्यो ॥

तिनके रूठि गयें रामराजाके राज्यमें स्वामिधर्मी सचिव कोन
रह्यो ॥

असो आदेस श्रीमंतको सुनि हुलकरनें दयाराम द्विजके पठा-
ये दल दिखाये ॥

अरु कही कोटादिक कूर बुंदीससों बैर करैं सो पापिष्ठ पंडि-
त रामचंद्रके सिखाये ॥ ३५ ॥

॥ दोहा ॥

सुनत पत्र श्रीमंत करि, रामचंद्र पर रोस ॥

सज्जित हिंदुसथानपर, किन्नों हुलकर ईस ॥ ३६ ॥

कछुदिन पहिलैं नन्हसों, रामचंद्र कहि बत ॥

संध्याको अधिकार सब, छिन्नों पिसुन प्रमत्त ॥ ३७ ॥

निंदा बहुरि मलारकी, कहि कहि कितव कुठार ॥

अप्पहिं हिंदुसथानपर, हुव मालिक हुसियार ॥ ३८ ॥

१ इस शब्द का अपभ्रंश गायकवाड़ हुआ है अर्थात् ये लोग पहिले
गव्यों के चराने से गायकवाले कहाते थे ॥ ३४ ॥ २ जिस देश में वर्ण व्यव-
स्था है उसका नाम कुमारिका है ३ पत्र ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ४ खुगल ॥ ३७ ॥
५ बुरी भांति ॥ ३८ ॥

अब ताको यह कपट लखि, नन्ह दयो सु निवारि ॥

किय तयार मल्लार कैहँ, वलि विस्वास बधारि ॥३९॥

राजोरा सटवा १ तनहि, हुलकर निज उमराव ॥

दस हजार १०००० दल सगदै, पठयो अग सचाव ॥ ४० ॥

अम्खी तुम पहिलै चलहु, दव्वहु हिंदुसथान ॥

चातुरमास विताय हम, आवाहि कटक अमान ॥ ४१ ॥

तव सटवा दरकुच करि, लधि नगर उज्जैन ॥

आयो सुनि दिस दिस उठिप, ओदैक भूपन अैन ॥ ४२ ॥

इतिश्रीवगभारकरे महाचम्पूके उत्तरायणो सप्तम ७ राशिवुस्मेद सिंहचंगिरे कोटागतहारजनिदलेलसिंहबुन्दीन्द्रसोदरदीपसिंहभेदन पत्रलिखनदृष्टाऽनुजपेपितपत्रसितारासंस्थितरावराडमात्पविश्वास्त्य जननिजपुगाऽऽवा १ दूगयु २ दरगाहरदाउत्तनाहरसिंहमल्लारविज्ञापनकोपतत्तदनूरीकरणश्रुतैनद्वेन्द्रस्वभटकुत्सनसमवगतश्रीमन्ताऽमात्पपण्डितरामचन्द्राणाभेदनपत्रकोटेशविप्रविश्वेश्वरोदयपुरप्रे-पणाविभित्सुमायामूढराणाबुन्दीदुर्जनशल्यदापनपत्रलिखनप्रस्थित-तद्विजदयारामनिवारणादालेलिश्वशुरचूडाउत्तलालसिंहजामातृ-

१ पुनि ॥ ३६ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ २ भय ३ राजाओं के घरों में ॥ ४२ ॥

श्रीयशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में वुस्मेदसिंह के चरित्र में, कोटा में गये हुए हरजन के पुत्र दलेलसिंह का बुन्दी के पति के छोटे भाई दीपसिंह को फोड़ने का पत्र लिखना १ छोटे भाई के भेजे हुए उसके पत्र को देखकर सितारा में ठहरे हुए रावराजा का अमात्य का विश्वास छोड़ना २ अपने पुर साँपों और दूणों के निकालने की हरदाउत नाहरसिंह का मल्लार से अरज करना और उसका क्रोध सहित अस्वीकार करना सुन कर द्वेन्द्र का अपने उस उमराव की निन्दा करना ३ श्रीमन्त के अमात्य रामचन्द्र का राणा को फोड़ने का पत्र प्राप्त करके कोटा के पति का ब्राह्मण विश्वेश्वर को उदयपुर भेजना और उसकी माया में मूर्खराणा का दुर्जनशाल को बुन्दी देने की सम्मति का पत्र लिखकर भेजने में ब्राह्मण दयाराम का रोकना ४ दलेलसिंह के स्वशुर चूडा लालसिंह का जमाई के अर्थ राणा से रावराजा

हितराणां गवरात्पदपत्रलेखननागोरपुंशगच्छेद्वयस्वतमिदं नमदायदि
 हलीसैन्याऽऽवहयनतदुगीतयोधपुंशगच्छेद्वयसमिदं गवरात्पदपत्रलेखननागोरपुंशगच्छेद्वयस्वतमिदं नमदायदि
 राजाऽऽवहानानातसाऽर्हन्त १५०००० मृदागितजामानदयममाह
 तमहारावप्रस्थितजायसिंहिपुंशगच्छेद्वयसमिदं गवरात्पदपत्रलेखननागोरपुंशगच्छेद्वयस्वतमिदं नमदायदि
 तापुरपुतनापातनप्राप्तदिक्षाशमेनानापत्रगयाजिगमिपुंशगच्छेद्वयस्वतमिदं नमदायदि
 कोटेशशत्रुभावरात्पुंशगच्छेद्वयसमिदं गवरात्पदपत्रलेखननागोरपुंशगच्छेद्वयस्वतमिदं नमदायदि
 श्रीमन्तश्रुतैतदुदन्तकृपितयिमासुदन्तकर १ दद्वेन्द्रा २ अनुनयनजान
 रामचन्द्रकोहकयनन्हतदधिकारमहाराऽऽपरागवरात्पदपत्रलेखननागोरपुंशगच्छेद्वयस्वतमिदं नमदायदि
 स्थानागमनं चतुस्त्रिंशो ३४ मयूखः ॥ आदितः ॥ ३१५ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृता मिथ्यनभाषा ॥

॥ पादाकृतकस ॥

इत कोटापतिको बहिकायो, बुंदिय लग्न कृष्णा दह आयो ॥

ई घेरा तोपन रन मंडिय, खोम चंगरा कपिसिर कटु खडिय ॥ १ ॥

लग्गे कहन सेस दिग्गज गन, विरचहु बाहुज नाम विरचन ॥

के पदका पत्र लिखाना ५ नागोर पर के पति राटोद वल्लभासिंह का अपनी
 सहायको दिल्ली की सेना को बुलाना और वह सुनकर जोनपर के पति राटोद
 रामसिंह का अपने स्वसुर कदवाहा राजा (देवरासिंह) को बुलाना ३ जमाई में
 डेढ़ लाख रुपये लेकर कोटा के महाराज को बुलाकर जयसिंह के पुत्र का प-
 ण्कर क्षेत्र में जमाई में मिलना ७ दोनों राजाओं का मेलना नगर में मृत्यु
 करना और दिल्ली के सेनापति का पत्र पाकर राजा का जानेंका रुद्धा
 वाला होना और कोटा के पति का शत्रु भाव नुनका पहिले लिखे पत्रों का
 दयाराम को देना ८ उसका उन पत्रों को मितारापर भेजना और श्रीमन्त का
 उस वृत्तान्त को सुनकर कोप में जानेवाले हुल्लार और उम्मेदसिंह को नहीं
 जानें देना ९ रामचन्द्र का हुल्ल जानकर नन्ह का उसका अधिकार महार
 को देना और महार और अपने उसराव मटवा का हिंदुस्थान में आने का
 चांतीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ३४ ॥ और आदि से तीन सौ पन्द्रह
 मयूख समाप्त हुए ॥ ३१५ ॥

१ कृष्णसिंह २ जाम (बुरज) ३ कोट ४ कांगुरे ॥ १॥ ५ चत्रियों का नाश करो ६ हे ब्रह्मा

राजोरा का कोटा से दृष्ट छेला] सप्तमराशि-पञ्चत्रिंशमयुग (३५६६)

इनको बीज रहैं छिति जोलों, रचक चैन हमे नहिं तोलों ॥२॥
 दिस दिस यह कोलाहल अद्भुत, बुदिय इम बिटिय दलेल सुत ॥
 नहिं नृप-तदपि कव्यो अंतर दल, चालुक-कायथ-रहथ चलाचल
 ॥ पट्टपात् ॥

सोलंखो सग्रामसिंह १ जोराउर नदन ॥
 कायथ मोजीराम २ कहे अरि करन निकदन ॥
 मारे के रन अपर भारि निर्भर समसेरन ॥
 देग न किय दातेलिं भज्यो भीरुक तजि डेरन ॥
 नैनवा मगग लिय रुकि इन तव सु जाय कोटा रहिय ॥
 कोटेस हितु दे हुत कटक करहु भीर अब इम कहिय ॥४॥
 ॥ दोहा ॥

गो बुदिय तुमरे कहे, आयां रंखत लुटाय ॥
 बल विनु बैग न बाहुरत, संत्वर देहु सहाय ॥ ५ ॥
 दुजनसल उत्तर दयो, दिवस भीरके ए न ॥
 कहुक काल छनै रहहु, सटवा आत ससेन ॥ ६ ॥
 राजोरा दरकुच रचि, कोटा सन लहि दड ॥
 हुत पहुँच्यो अजमेर दिस, मंडत अमल अखंड ॥ ७ ॥
 खत्री केसवदासके, पठये सटवा पत्र ॥
 बखतसिंह सन बैर तुम, अनुचित करहु न अत्र ॥ ८ ॥
 क्रूरम प्रति केसव कहिय, बरजत तुमहिं मलार ॥
 जो चहिहैं अब जंग तो, ढहिहैं सब दुदार ॥ ९ ॥
 बरज्यो इत बखतेसहु, मरदहन भय मानि ॥
 लै बहु धन मरुपालसौं, बुल्लयो न लरन बानि ॥ १० ॥

॥ २ ॥ * उम्मेदासिंह नहीं था तोभी १ भीतर की सेना निकली २
 चपल ॥ ३ ॥ ३ नाथ ४ निर्भर (पट्टत) ५ दलेलसिंह के पुत्र ने ॥ ४ ॥ ६ सामग्री
 ७ शीघ्र ॥ ५ ॥ ८ सेना सहित ॥ ९ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ६ मारवाड के राजा से

सुनि तव ईश्वरिसिंहहु, सैटवा नाति सुनाय ॥
 कषों पुनि पुनि दिखिय कटक, बांलिस लेत बुत्ताय ॥ ११ ॥
 हुलकरको यह सुनि हुकम, तव नबाव डरि तत्त ॥
 सय्यद खान सलावतहु, पच्छो दिखिय पत्त ॥ १२ ॥
 कुम्हहिं जानि सहाय कर, रामसिंह मरुनाय ॥
 केसव हठि रोक्यो कलह, इहिं कारन अकुलाय ॥ १३ ॥
 सम्मति हरगोविंदकी, ले कबंध नृप राम ॥
 कुम्हहिं अखिय केसवहु, है यह स्वामि हराम ॥ १४ ॥
 माधव१ अरु उम्मेद२ सों, याकै प्रीति अजस्र ॥
 छन्नै आवत जात छद, घनें गये इम धंस्र ॥ १५ ॥
 कोउक पत्र फरेव करि, लिपि ताकी लिखवाय ॥
 तैसोही लिखि कुम्हको, दिनों विदित दिखाय ॥ १६ ॥
 सु लखि पत्र जयसिंह सुव, मन्नी सत्पहि मुँद ॥
 बुल्लि सभा अंतर बन्यो, केसव उपर कुद ॥ १७ ॥
 केसव अखिय जोरि कर, इतरनको छल एह ॥
 असु कीजै तनु अंतरित, निकसैं जो मम लेहैं ॥ १८ ॥
 मन्त्री तदपि न मातृमुख, सुनहु राम नृप हाय ॥
 करि हठ दिनों केसवहिं, पापी गँरल पिवाय ॥ १९ ॥
 बुल्ल्यो तँहें जयसिंह सुव, हे पाँसर मतिहीन ॥
 मिलि तँही मल्लारमैं, खर जैपुर किय खीन ॥ २० ॥
 च्यारि४ परगगन सोदरहिं, हड्ड२ हिं बुंदिय देस ॥
 किंतव दिवाये प्रसंभ करि, वाको फल सहि एस ॥ २१ ॥

॥ १० ॥ १ मल्लार के उमराव सटवाने बख्तासिंह को मना किया २ मूर्ख
 ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ ३ निरन्तर ४ पत्र ५ दिन ॥ १५ ॥ १६ ॥ १ सुत
 ७ मूर्ख ने द बुलाकर ॥ १७ ॥ शरीर से ६ प्राण दूर करे १० लेख ॥ १८ ॥ ११ तोभी
 उस मूर्ख ने नहीं मानी १२ जहर पिला दिया १६ १३ नीचा २० १४ हे ठग १५ हठ करके

जैपुरके राजाका मंत्री केशवको मारता] सप्तमराशि-पञ्चमिंशमयूक (३१०१)

कहाँ सहायक तब कुमति, मूरख वह मल्लार ॥
वाहि बचावन प्राण अब, बुल्लहु क्यों न लवार ॥ २२ ॥
सुनि अक्खिय केसव सुमति, स्वामि हनै जब दास ॥
त्रोता कोन द्वितीय२ तैंहैं, गिलत सिंह गज मास ॥ २३ ॥
केसव केसव ध्यान करि, पुनि पुनि बिरचि प्रनाम ॥
गहि भोजन पिन्नो गरल, रटि अच्युत हरि राम ॥ २४ ॥
लेत जहर आवत लहर, नील नहर यह भाखि ॥
बिनु आगस जो देत बिख, सो पावत श्रुति साखि ॥ २५ ॥
इम कवि इक१ घटिका अवधि, केसव छोरयो काय ॥
बहुल छिन्नि ताको विभव, लार्डि क्रूरम लाय ॥ २६ ॥
आपो जैपुर कुम्म इम, मंत्री पटु निज मारि ॥
सटवा यह बदनीति सुनि, विविध लिखिय विसतारि ॥ २७ ॥
सुनि हुलकर श्रीमतसों, अक्खयो यह अपराध ॥
ठठ पूरव लिन्नो हुकम, विरचन जैपुर बाध ॥ २८ ॥
हुलकर१ हड्ड २ रु नन्ह ३ पुनि, तजिग सितारा तत्त ॥
सक इय नभ धृति १८०७ चैत्र सित, पुण्यापत्तन पत्त ॥ २९ ॥
तनय स्वीय उपवीत तैंहैं, बलि निज अनुज बिवाह ॥
पुण्या किय श्रीमत प्रभु, अति दित उभय उछाह ॥ ३० ॥
महिमानी उम्मेदकी, बहु श्रीमंत बनाय ॥
प्रीति सहित अनुकूल पन, दिन दिन अधिक दिखाय ॥ ३१ ॥
रामचंदके कथित करि, सध्याको अधिकार ॥

॥ २२ ॥ १ रक्षा करनेवाला ॥ २३ ॥ केशवदास ने २ श्रीकृष्ण का ध्यान
करके ३ पात्र लेकर धिप पीगया ॥ २४ ॥ ४ उस नीले नखोंवाले ने यह कहा
'जहर खानेवाले के नख नीले होजाते हैं' ५ अपराध इवही पीछा पाता है
यह वेद की साक्षी है ॥ २५ ॥ ७ बहुत द कछवाहे ने लाय खगाई ॥ २६ ॥ २७ ॥
॥ २८ ॥ ६ पूना नगर में प्राप्त हुए ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥

भयो खालसै किन्न अब, ताकी अरज मलार ॥ ३२ ॥

॥ पट्टपात् ॥

सुनहु नन्ह हम अगग लियउ मालव जवनन सन ॥

तब पत्तन उज्जैन महाकालेस निकेतन ॥

परमार सु आनंद १ मै २ रु संध्या राखीजिय ३ ॥

तीनन ३ तजि हिय गांठि सत्य इहिं रीति संपथ किय ॥

इकश्चित्त स्वामि कारिज करहिं अरु जो होवहिं काल बसि ॥

तो तास सुतन जीवै सु जन हिय लगाय पालहिं हुलासि ॥ ३३ ॥

॥ दोहा ॥

यह करार जो भुल्लि अरु, चलिहै कुमति कुचाल ॥

ताहि महाकालेश्वरहु, प्रगट करहिं पैमाल ॥ ३४ ॥

हमरे हुव संधा यह सु, जानत तुमहु अजेय ॥

रामचंदके कथित करि, संध्या नहिं अपमेय ॥ ३५ ॥

रूपय पैसठि लख ६५००००० तब, दै मलार बिच रक्खि ॥

संध्या सन श्रीमंत लिय, सेनापति तिहिं रक्खि ॥ ३६ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

हुलकरको श्रीमंत कथित किय, संध्या जया लगावन निज हिया

नाम चमारगोंद तस पत्तन, आयउ ताहि मनावन अप्पन ॥ ३७ ॥

लौ तिहिं संग गये पुण्या जब, रचिय मंत्र हुलकर १ संध्या २ तब ॥

हिन्दुस्थान माँहि अप्पन दुव २, स्वामी नन्ह तयार करे हुव ॥ ३८ ॥

रहयो परंतु उहाँको बहुतर, बित्त हार्यनिक रामचंदकर ॥

जो न रहै अप्पन बस यह धन, तो करैहि वह दुष्ट दुष्टपन ॥ ३९ ॥

१ मंदिर में २ सोगन किये थे ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३ प्रतिज्ञा ४ अपमान (अनाद

करने योग्य ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ५ कहना ६ जया नामक सिन्धिया का ७ सिन्धि

के पुर का नाम चमारगोंदा था ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ८ अत्यन्त ९ वार्षिक (...

धन ॥ ३९ ॥

यह तब दुहुँन २ नन्हप्रति अक्खिय, आब्दिक कर अपनै कैर
रक्खिय ॥

श्रीमतहु यह अरज मन्नि लिय, हिंदुसथान अधीन दुहुँन २ किय ४०
॥ दोहा ॥

तवतै हिंदुसथानकी, खरनीको कर सब ॥

हुलकर सध्पाऽधीन हुव, आब्दिक वित्त अखर्व ॥ ४१ ॥

सिक्खदै न श्रीमत पुनि, सभर डेरन आय ॥

तरल निवेदे दस १० तुरग, करंठी दुव २ अतिकाय ॥

भूखन मनिन अनर्घ दुव २, दस १० सिरुपाव उदार ॥

दिन्ती बुदिय सिक्ख इम, करि सभर सतकार ॥ ४३ ॥

सक मुनि नभ वसु इंदु १८०७ संम, सावन पचमिऽस्याम ॥

बुदिय आयो कगि विजय, घरनीपति निज धाम ॥ ४४ ॥

इति श्री वराभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशबुद्धि
सिंहचरित्रे कोटेशपेरिरतदालेलिकृष्णसिंहबुन्दीवेष्टनरावराटसुभ-
टसोलखिसंग्राम १ कायस्थमोजीराम २ तदभिभवनकृष्णसिंहको
टासहायप्रार्थनदुर्जनशल्यतदनद्गीकरगाराजोरासटवावखतसिंहे २
श्वरीसिंह २ युद्धवारणश्रुतपेशून्यकूर्मराजखलिकेशवगरजदापनजा

१ साक्षाना जिराज २ अपने हाथ म ॥ ४० ॥ ३ अधीन ४ बहुत धन ॥ ४१ ॥
५ हाथी ॥ ४२ ॥ ६ अमूल्य ॥ ४३ ॥ ७ विक्रम के शक का सम्बत् ॥ ४४ ॥

श्रीवराभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के सप्तमराशि में बम्बेदसिंह चरित्र में
कोटा के पति की प्रेरणा से दशोलसिंह के पुत्र कृष्णसिंह का बुन्दी घेरना और
रावराजा के भट सोलखी सम्राटसिंह और कायस्थ मोजीराम का उस
के सम्मुख होना १ कृष्णसिंह का सहाय के अर्थ कोटा के पति की प्रार्थ-
ना करना और उसका अस्वीकार करना २ राजोरा सटवा का खतसिंह
और ईश्वरीसिंह का युद्ध रोकना और गुगली छुनकर फट्टवाहों के राजाका
दशदास को जहर देना १ यह वृत्तान्त जानकर हुसकर का जयपुर को

ततदुदन्तहुलकरजयपुरध्वंसिनीनन्हाऽऽज्ञानयनतदनुश्रीमन्त १ दह
 २ हुलकर ३ पुण्यापुराऽऽगमनकृततनयोपवीता १ऽनुजविवाहो २
 त्सवनन्हमल्लारवचनाऽनुकूलसन्ध्याजयासेनाऽधिकागऽर्पणमल्लार
 जया २ हिंदुरथानप्रेषणोरीकरणन्हबुन्दीन्द्रशिविरागमनतुरगदश
 क १० करटियुग २ मणिभूषणद्वया २ ऽऽदिनिवेदनराधराट्बुन्द्या
 ऽऽगमनं पञ्चत्रिंशो ३५ मयूखः ॥ आदितः ॥ १२६ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

कोटापति संकल्प सव, करे नियति प्रतिकूल ॥
 रामचंद्र सन हित रच्यो, मोघ भयो सु समूल ॥ १ ॥
 पलटायो जगतेस पुनि, सावधान हुव सोहि ॥
 बुंदी पठयो कृष्ण वलि, भजि सु पराजित मोहि ॥ २ ॥
 जैपुर सम्मलि पुनि जुरन, लग्गो करन प्रयान ॥
 वरज्यो सटवा कुम्भ तव, थकि बैठो निज थान ॥
 औसो अनुचित ईरखा, किन्नों जड़ कोटेस ॥
 न फल्यो उद्यम नीचको, सोक रह्यो अवसेस ॥ ४ ॥
 उदयनैर सन रान इत, दयाराम द्विज संग ॥
 पठयो टींका उपकरन, अनुसारि प्रीति उमंग ॥ ५ ॥

नाश करने की नन्हकी आज्ञा लेना और जिसपीछे श्रीमन्त, उम्मेदसिंह और
 हुलकर का पूना नगर में आना ४ पुत्र की जनेऊ और छोटे भाई का विवाह
 करके नन्ह का मल्लार के वचनों के अनुकूल मिन्धिया को जया नामक सेना
 का अधिकार देना और मल्लार व जया को हिन्दुस्थान में भेजना मंजूर
 करना ५ नन्ह का बुन्दी के राजा के डेरे आना और दश घोड़े, दो हाथी,
 जड़ाऊ भूषण आदि भेंट करना और रावराजा का बुन्दी आने का पैंतीसवा
 मयूख समाप्त हुआ ॥ ३५ ॥ और आदि से तीन सौ सौलह मयूख हुए ॥ ३१६
 १ भाग्य ने बलदे कर दिये २ निरर्थक ॥ १ ॥ ३ कृष्णसिंह को ॥ २ ॥ ३ ॥
 ४ बाकी ॥ ४ ॥ ५ सामग्री ॥ ५ ॥ ३

हाटक साखति उभय२ हय, भैदकल इक१ मातंग ॥

सूचीमुख सिरपेच इक१, दुव२ सिरुपाव सुरग ॥ ६ ॥

टीकाको यह साज दिष, दयाराम द्विज सत्य ॥

परपरा दसतूर पुनि, सुनिये राम समत्य ॥ ७ ॥

अगौं सुपहु सुभाड सुत, नृप नारायणदास ॥

रन रानाँ सग्रामकी, टारी दुस्सह त्रास ॥ ८ ॥

महूपुरप नवावको, डक्का भट लिय मारि ॥

सभरको सीसोद तब, बहु आसान बिचारि ॥ ९ ॥

॥ पावाकुलकम् ॥

प्रथम रान सग्राम भीर करि, बावरको बहु कटक हन्यो लरि ॥

च्यारि अगग चालीस४४घाय सहि, बिजय कियो बुदीस धर्म बँहि१०

इक्का मुगल यहै पुनि मारयो, अपने सिर उपकार बिचारयो ॥

भटन सहित यह मंत्र रान किय, बिनई पुनि बुदीसहिँ बुल्लिय ११

तुम हमतैं कछु भेट अउद प्रति, इच्छत लेहु रक्खि निज उन्नति ॥

रचि तब नर्म कछो सभर पहु, पट्टिस१खगग१ कोसं दुव२प्रेसहु१२

बैर तीन३ हायन बिच लैहैं, तब तुम पर हइन हित व्हैहैं ॥

भेजहु प्रथम बिजयदसमी१० दिन१, पुनि गुनगोरि३ दिवस२ आ-

हुँठ इन ॥ १३ ॥

बरसगठि दिन३ बहुरि पठावहु, तो हमदेत गिनैं तुमरो बहु ॥

यह नृप नर्म रान स्वीकृत किय, अवरहु प्रीति रीति हम बधिय१४

हाटर्क साज उपेतं इक१ हय, इक१ तरवारि मुष्टि तिहिँ मनिमय ॥

इक१ निखग इक१ विसिखासन, चीरा इक१ मूल मिति जास न१५

१ सुवर्ण की २ अस्त हाथी ३ हीरों का ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ ४ धर्म धारण

करके ॥ १० ॥ ११ ॥ ५ हसी करके ६ कटार और खड्ग के दो म्यान भेजो

॥ १२ ॥ ७ हे आहद नगर के पति अथवा आहद चत्रियों के पति "आहद

पुर में राज्य रहने के कारण शीपोदिया चत्रियों को आहद तथा आहद कह-

ते हैं" ॥ १३ ॥ १४ ॥ ८ सुवर्ण के साज ९ सहित १० धनुष ॥ १५ ॥

आसिः पट्टिसिः के कोसर सहित चहि, इकः सिरुपेच इतेऽ भेजन
कहि ॥

तबतैं चली रीति वह आई, सो रानहिं नहिं मिटत सुहाई ॥१६॥
दयाराम द्विज तत्थ रान अब, टैंका संग एहु पठये सब ॥
बुंदिय रान सचिव १ द्विज २ लाये, बिजयदसमि १० दिन नजारि
कराये ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

उज्ज अमावसि निस तदनु, चोकीदारन फोरि ॥
तारागढ सन कहि गयउ, हरजन वह छल जोरि ॥ १८ ॥
इत दक्खिन अब वे उभय २, सुनि नभ धृति १८०७ इसमांस ॥
हुलकर संध्या सज्ज हुव, लागि दिगाबिजय हुलास ॥ १९ ॥

॥ षट्पात् ॥

बिजयदसमि १० दिन बीर सेन हंकि य सागर सम ॥
संध्या तैंहुं हुलकरहिं कहिय कछु काम गेह मम ॥
मैं चमोरगौदा प्रवेशि वह करि द्रुत आवत ॥
अप्प चलहु इत अगग अवनिं सत्रुन अपनावत ॥
यह कहि जया सु गय निज नगर इत मलारहंकि य कटक
दिस बिदिस बत्त फुटिय दुसह रचहिं कोन दक्खिन रटकर २०
हुलकर सुत जुत हंकि लांघि चम्मलि इत आयउ ॥
पुंत्त सुनत बुंदीस जाय सन्मुह गृह लायउ ॥
अरु हय नभ धृति १८०७ अब्द मास अगहन पख उज्जल ॥
हुहुं नैनै नवा जाय बिंदि तोपन किय कंदल ॥
तब सठ दलैल सुत कृष्णा वह अंतहपुर तजि भज्जि गय ॥
हहु १ रु मलार २ ताकी तियन पठई पीहर बिरचि नय ॥२१॥

॥१६॥१७॥१८॥कार्तिक मास की रजिषीछे ॥१८॥३ आश्विन मास में ॥१९॥४ सिन्धि-
या के पुर का नाम है प्रभूमि ॥२०॥६ वृत्तान्त ७ युद्ध किया ८ जनाने को छोड़कर ११॥

हुलकरकाराजासहितजैपुरपरचढ़ना] सप्तमराशि-सप्तमिंशमयूख (११०७)

॥ दोहा ॥

नगर समीधी१ नैनवा२, करउर३ ए सब लिन्न ॥

तिनमें नृप बुन्दीस तब, अमल अप्पनों किन्न ॥ २२ ॥

इतिश्री वशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणो सप्तम ७ राशाबुम्मे
दसिंहचरित्रे कोटेशयत्ननिष्फलीभवनराणातिलकोपहारबुन्दीप्रष
णाहर्जनकारानिष्कसनमल्लारहिंदुस्थानाऽऽगमननयनपुरयुद्धकरणा
दालेलिपलायनबुन्दीन्दतद्भूम्युद्धरणा षट्त्रिंशो मयूख ॥ ३६ ॥
आदितः ॥ ११७ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा॥

॥ नि शास्त्री ॥

इम सुत भीरु दलेलका तजि तियन पैलाया ॥

ताके देस असेसमें नृप अमल विधाया ॥

पुनि हुलकर सभर सहित अमरख उफनाया ॥

खत्री केसव बैरपै जयनैर चलाया ॥

फट्टी पन्नग सकुली फन पलाटि फिराया ॥

खुल्ले नैन महेसके नव मात लुभाया ॥

लगगा बावन५२ संगही रन कोतुक आया ॥

॥ २२ ॥

श्रीवशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, वस्मेदसिंह चरित्र
में, कोटा के पति का यत्न निष्फल होना १ राणा का तिलक की सामग्री
बुन्दी भेजना २ हरजन का कैद से निकलना ३ मल्लार का हिन्दुस्थान में आना
“सामान्य रीति से सभी भारत वर्ष का नाम हिन्दुस्थान है परन्तु विशेष
करके भारत वर्ष के पूर्वी प्रान्त को हिन्दुस्थान कहते हैं” नैषाधा पुर में युद्ध
करना और दलेलसिंह के पुत्र कृष्णसिंह का भागना तथा बुन्दी के पति का
उसकी भूमि लेने का छत्तीसवा मयूख समाप्त हुआ ॥३६॥ और आदि से तीन सौ
सत्रह ३१७ मयूख हुए ॥

१ भागा २ किया ॥ १ ॥ ३ शेपनाग की सांकल (पीठ की छधी हड्डी) फट्टी
इनवीन मुचमाला का खोम लगने से शिख के नेत्र खुले यूद्ध का लेख देखने

जाल बनाया जुगिनी कर ताल बजाया ॥ २ ॥
 गिद्धनि चिलहनि गैनेमैं गन के गैहकाया ॥
 धूरि बिलरुगी भानुकैं सब भानु छिपाया ॥
 शृंग मचक्के मेरुके धर खंड धुजाया ॥
 हाक नकीबनकी मची दल डौक लगाया ॥
 सुनि आवत दक्खिन कटक कूरम अकुलाया ॥
 हुत कगूर बुंदीसपैं लिखवाय पठाया ॥
 छंडी छोर्निय रावरी हम साम बनाया ॥
 हुलकर सम्मलि होय क्यों अब दंड उपाया ॥ ४ ॥
 किन्नों प्रथम करार जो नहिं नैक मिटाया ॥
 अब कैसे अपराधपैं मल्लार कुपाया ॥
 केसव आयस नाँ किया इम मारि गिराया ॥
 दास तदपि आमैरका इनका न नसाया ॥ ५ ॥
 अगैं रंचक दोसपैं अतिदंड न गाया ॥
 समुझावहु तुम संभरी हुलकर हठ आया ॥
 एकाँकी अब अप्पका अवलंब बनाया ॥
 ए कगूर आमैरका सुनसीन सुनाया ॥ ६ ॥
 बिनय भरे सुनि बैन ए संभर सकुचाया ॥
 मंत्र बिरचि मल्लारतैं हिय गूढ खुलाया ॥
 हुलकर अकखी भूपतैं नहिं बैर सिवाया ॥
 दक्खिन निंदा अहरी बलि दर्प बढाया ॥ ७ ॥
 भारत केसवदासकों उन बैन लगाया ॥

को वाचन वीर संग हुए योगिनियों ने समूह बनाकर हाथ की ताली बजाई ॥ २
 गिद्धनियों और चील्हों के समूह १ आकाश में २ प्रसन्नता की बोली बोले
 ३ लगी ४ सूर्य की किरणों के धूलि लगकर सब ५ सूर्य को छिपा दिया
 ६ सेना को क्रोध दिलाया ॥ ३ ॥ ७ पत्र द भूमि ॥ ४ ॥ ६ केशवदास ने हुकम
 नहीं माना इस कारण ॥ ५ ॥ १० अकेले आपका ॥ ६ ॥ ७ ॥

जैपुरके राजाकायुद्धकी तैयारी करना] सप्तमराशि-सप्तभिःशमयूय (३६०९)

जिहिं वलतैं बुदी बहुरि चउ४ देस गुमाया ॥
सो हुलकर तेरो कहाँ अब अंतक आया ॥
औसैं कहि अपराध बिन पटु सचिव नसाया ॥ ८ ॥
ताहीके दड बोसपै इत में चलि आया ॥
मारनका नहि मत्र पै अति दर्प छकाया ॥
यातैं रूपय दडका लौहैं मनभाया ॥
बुदीपति मुनि बैन ए प्रतिबैन लिखाया ॥ ९ ॥
कूरम हम तुमरैं कहैं हुलकर समुझाया ॥
पै पिसुननकी मन्तिकै तुम दर्प दिखाया ॥
यातैं आयस नन्हका लहि कटक चलाया ॥
केसवदास विनासका इन ओगुन गाया ॥ १० ॥
मारनका नहि मत्र पै धन लैन धकाया ॥
प्रत्यागत इच्छैं नहीं एहू दठ आया ॥
यातैं अप्पहु अप्पहु वम दम्म सिवाया ॥
लौ तिनको टरिजाहिगे दल खरच दुखाया ॥ ११ ॥
ए कग्गर कूरम सुनत इत मत्र उपाया ॥
देनाँ दम्म न उचित करि लरनाँ चित लाया ॥
अक्खी हरगोबिंदसों रनही मन भाया ॥
बीरन बुल्लहु बेगही दल सर्जवें सुहाया ॥ १२ ॥
कूरम याकी कन्यका रक्खी करि जाया ॥
यातैं हरगोबिंदहु अवसर यह पाया ॥
बुल्लयो मेरी जेबमें दल लक्ख १००००० सजाया ॥
जब चाहैं तब लीजिये भट सगर भाया ॥ १३ ॥

१काल॥=१२वसर ॥६॥१शुगलों की४धमड १नन्ह का हुकम लेकर ॥१०॥१पीछा
जाना नहीं थाहता ८ आपसी ६ दड के रूपये ७ दो ॥११॥ १०शीघ्र ॥११॥ ११
हरगोबिन्द नादानी की कन्या को १२की ॥ १३ ॥

मरहठे मन भीरुहै जब बाजि उठाया ॥
 तबही पायन लगिहै ओदक अकुलाया ॥
 तुम आमैर अधीसब्दै सिर छल धराया ॥
 वे अनुचर द्विज दीनकी इत आत सिखाया ॥ १४ ॥
 भिच्छा मंगनहारका जिन ओदन खाया ॥
 ते प्रभुकों पहुँचै नहीं असि त्रास डराया ॥
 कहाँ जेठ दिनेकर कहाँ खद्योत खिसाया ॥
 कहाँ सिंह गजरिपु कहाँ किंखि दुब्बल काया ॥ १५ ॥
 कहि कहि हरगोविंद इम कूरम बहिकाया ॥
 हरिनारायन पुत्र निज पख १५ पुँब्ब सिखाया ॥
 सब जैपुर पतिके सुभट सुत संग दिवाया ॥
 सेखावाटी मुलकमें पहिलैहि पठाया ॥ १६ ॥
 अच्छे तोप तुरंग गन सब तथ्य चलाया ॥
 कूरम जब मंग्यो कटक मंडी तब भाया ॥
 मो ढिग लख १००००० अनीक है यह छँदा रचाया ॥
 दक्खिनका उत पत्रदै बैल बेग बुलाया ॥ १७ ॥
 आवैं जितनैं अंतरंगें इम दिवस गुमाया ॥
 इततैं हुलकर हड्ड नृप दरकुंच चलाया ॥
 जैपुरतैं तय३ कोसपैं निज दल उतराया ॥
 भिल्लि भल्लौनाँ कुंडपैं भंडाल भुकाया ॥ १८ ॥
 नट्टानी तब सचिव निज कछवाह बुलाया ॥

१भय से ॥१४॥ जिसने २भिच्छा आंगिनेवाले (ब्राह्मण) का ३अन्न खाया ४ज्येष्ठ मास
 का सूर्य ५जुगनू (आगिया). दुर्बल शरीरवाला ६वन्दर ॥१५॥ ७एक पक्ष पहिले
 ही ॥ १६ ॥ ८ सेना ९ इन्द्रजाल १०छल ११सेना ॥ १७ ॥ १२बीच में १३ ठहर
 कर (प्रसन्नता पूर्वक ठहरनेको ढिगल भाषा में भिल्लना कहते हैं) १४भल्लाना
 नामक कुंड पर १५भंडे खड़े किये (ढिगल भाषा में अत्यन्त ऊंचा करने को अथ
 वा खड़ा करने को भुकाना कहते हैं) ॥ १८ ॥ १६ नाटानी जाति का वैश्य

जैपुरके राजकाज हरखाकर मरेना] सप्तमराशि—सप्तत्रिंशमयूष (३११)

बुल्लयो तैं तव जेबमें दक्ष लक्ष १००००० बताया ॥
 वाकों कबहु यार अब अरि अतिक आया ॥
 बिनु उद्यम तेरे कहै दिन बीस बिताया ॥ १९ ॥
 बुल्लयो हरगोविंद तब तुम आखु लगाया ॥
 अतिन कष्टी-मम जेब ओ बल सब बिखराया ॥
 नटानी यह जपिकैं निज गेह पलाया ॥
 इत आमैर अधोसकों अब त्रास दबाया ॥ २० ॥
 हय अवर धृति १८०७ पोस बढि नवमी ९ दिन पाया ॥
 तास निसाके जाम जुग २ नृप निठि गुमाया ॥
 जानी बनिक बिरोधकैं भावी बिगराया ॥ २१ ॥
 छनैं गैरल अमत्र इक मतिमद मंगाया ॥
 सुतो ताको पान करि दुवर नैन मिचाया ॥
 काहू नहि जानी यहै नृपनैं बिख खाया ॥
 खात समैं इक पत्रमै इम अक लगाया ॥ २२ ॥
 सुनिये सभर प्रात जे अनुचरन उठाया ॥
 ईश्वर बेहं मिटैं नहीं जुग जुग जे गाया ॥
 प्याला केसवदासकों पीया सुहि पाया ॥
 औसैं लिखि आमैरपति इम बेरें बिदाया ॥ २३ ॥
 जानी सचिवन प्रात जब पुर द्वार लगाया ॥
 इत खडू हुलकर तनय नृप डेरन आया ॥
 अकखी चढि अप्पन चले भट लौ मन भाया ॥
 बाहिरतैं लखि आयहै पुर सुनत सुहाया ॥ २४ ॥

१ समीप ॥ १९ ॥ २ चूहे ३ अगा ॥ २० ॥ ४ उस दिन की रात्रि के दो पहर
 कठिनाई से बिताये ॥ २१ ॥ ५ जहर का ६ पात्र ७ मूर्ख ने ॥ २२ ॥ ८ हे
 शृङ्गाण रामसिंह सुनो ९ सेवकों ने १० लेख ११ जो विष का प्याला केसव
 दास को पिलाया सो ही पीछा १२ मिछा १३ शरीर छोड़ा ॥ २३ ॥ २४ ॥

सह खंडू नृप संभरी चढि तबहि चलाया ॥
 संग लये भट तीन सत३०० निज परख गिनाया ॥
 जैपुरके प्राकार ढिग रहि तुरग बिहाया ॥
 इक अटा चढिकै सकल पुर त्यों दग लाया ॥ २५ ॥
 जैसे जैपुर सिल्पमत जयसिंह बसाया ॥
 भेदी कोउक अंग ते कहि भिन्न बताया ॥
 यह कूरम सचिवन सुनो दुवर देखन आया ॥
 तब पुर दक्खिन द्वारका हुत अरर खुलाया ॥ २६ ॥
 सिविका हरगोविंद १ चढि बाहिर कढि धाया ॥
 बियाधर १ त्योंही बहुरि दुवर समुख चलाया ॥
 आय निकट बुंदीससों सब वृत्त कहाया ॥
 जैसी बिधि गर रतिमैं नृप गरल चढाया ॥ २७ ॥
 दोहूर सचिवनकों सुनत इन संपथ कराया ॥
 तब सखी गिनि सेनमैं यह वृत्त पठाया ॥
 सो सुनि हुलकर सैन लौ जैपुर ढिग आया ॥
 करि मुकाम प्राकार तट निज थूल तनाया ॥ २८ ॥

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मे
 दसिंहचरित्रे हुलकर १ हहेन्द्र २ जयपुरप्रस्थानप्राप्तकूर्मराजपत्ररावरा
 शमल्लाराऽनुनयनकथितकेशवदासवैरहुलकरजैपुरगमनमंत्रिहरगो-
 १कोट के पास रहकर थोड़ों से उतरे २ छत पर चढ़कर सब नगर देखा ॥ २५ ॥
 ३ नगर के उन अंगों को ४कपाट ॥ २६ ॥ ५ पालखी पर ६राजा ने बिष खाया
 ॥ २७ ॥ ७ सौगन कराये ८ वृत्तान्त ९ डेरा ॥ २८ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में उम्मेदसिंह चरि-
 त्र में, हुलकर और हाडा क्षत्रियों के इन्द्र का जयपुर पर गमन करना १ कछ-
 याहों के राजा का पत्र पाकर रावराजा का हुलकर से विनय करना २ कहे
 हुए केशवदास के वैर पर हुलकर का जयपुर जाना ३ मंत्री हरगोविन्द का
 पीठ पीछे सेना को निकाल कर जयसिंह के पुत्र को विश्वास देना ४ शत्रु

विन्दपरोक्षसैन्यनिष्कासन जायसिंहिविश्वसनज्ञातशत्रुसामीप्यसैन्य
रहितपीतगरत्नकूर्मराजदेहत्यजनबोधसिंहि १ मल्लारि २ जयपुर
वहिर्दर्शनजयपुरसचिवतत्सम्मिलनहुलकराऽऽब्धानप्राकाराऽध पृत
नापातन सप्तत्रिंशो ३७ मयूख ॥ ३७ ॥ आदित ॥ ३१८ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

पोस असित दसमी १० दिवस, हम जयपत्तन आय ॥
पुनि प्रवध अपनों करन, लिय बुदीस बुलाय ॥ १ ॥
अकखी तुम जावहु नृपति, लखि पुर राजनिकाय ॥
अतहपुर जुत अप्पना, जामिक देहु जमाय ॥ २ ॥
तब पुर अतर जाय नृप, धरि चोकी सब ठाम ॥
कहिय आय मल्लार प्रति, भये नृपहिं खट्ठ जाम ॥ ३ ॥
उचित दाह कछवाहको, अब न बिलब बिधेय ॥
इते काल रक न रहै, श्रुति अकखत सुहि श्रेय ॥ ४ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

सुनि हुलकरकछु सोक सहितहुव, जैपुर सचिव बुलाये वेदुवर ॥
हरगोविंद १ बहुरि विद्याधर १, तिनहिं कखो दाहहु नृप सत्वर ५
तब तिन अरज मल्लारहिं किन्नी, चोकी तुम अप्पन धरि दिन्नी ॥
कोस सबहि नहिं हत्य हमारै, किहिंठाँसन उपकरन निकारै ६

को समाप जामकर सेना रहित कछवाहे राजा का जहर पीकर शरीर छोड-
ना ५ बुधसिंह के पुत्र और मल्लार के पुत्र का जयपुर को याहर से देखना १
जयपुर सन्निधौ का उनसे मिलना और हुलकर को बुलाना और कोट के नीचे
सेना का पड़ाव करने का सैतीसवा मयूख समाप्त हुआ ॥ ३७ ॥ और आदि से
तीन सौ अठारह ३१८ मयूख हुए ॥

१ यदि ॥ १ ॥ २ राजमन्दिर (महल) ३ जनाना सहित ४ अपने पहरायत
॥ २ ॥ ५ राजा को मरे छः पहर होगये हैं ॥ ३ ॥ ६ वेद कहता है सो ही अष्ट
है ॥ ४ ॥ ७ दीघ ॥ ५ ॥ ८ खजाने ९ किस जगह से १० सामग्री ॥ ६ ॥

इन आखिरय हमसन लौ जावहु, नहिँ*निदेस किम कोस खुलावहु
 यह सुनाय निज कोसनतैं तब, सामग्री हुलकर पठई सब ॥७॥
 ताहि संग बनिक१ रु बिद्याधर१, लौ तब उभय२ गये पुर अंदर ॥
 राज्य बडो कछु काम न आयो, हुलकरतैं खंपन नृप पायो ॥८॥

॥ दोहा ॥

महलान बिच निष्कुट रुचिर, जयनिवास अभिधान ॥
 किन्न दाह कछवाहको, तिहिँ ढिग विहित विधान ॥ ९ ॥
 बिगरी ईश्वरिसिंह मति, बरस इक्क१ पहिलैहि ॥
 सुपहु राम सोपै सुनहु, नर कच्चे इम व्हैहि ॥ १० ॥
 भक्त भयो जयसिंह सुव, जैपुर गदिय पाय ॥
 खान१ नाम इभपाल इक, किन्नो सचिव बढाय ॥ ११ ॥
 जवन व्है उनमत्त भो, नृपको हेत निहारि ॥
 अति अनीति लग्गो करन, ४१ नारिन घर डारि ॥ १२ ॥
 कूरम आसव पान करि, इकदिन बुल्लयो वाहि ॥
 मंदिर श्रीगोविंदके, चित कछु मंत्रन चाहि ॥ १३ ॥
 बरज्यो इतरन तदपि तहँ, किन्नो कुम्म अजान ॥
 आधोरनके हथतैं, पानकरसको पान ॥ १४ ॥
 पुनि वासो गलबाहँ करि, फिरयो निरंकुस होय ॥
 जब आसव मद उत्तरयो, सोच्यो तब सठ रोय ॥ १५ ॥
 दिवाकीर्ति इक दैधिषैव, बारी संभुवर नाम ॥
 सोहु बढायो सचिव करि, दै सिविका गज गाम ॥ १६ ॥

*हुकम ॥ ७ ॥ १ सुरदे को ओढाने (ढकने) का वस्त्र ॥ ८ ॥ २ गृहवाटिका (घर का बगीचा) ३ नाम ४ उचित विधि से ॥ ९ ॥ १० ॥ ५ महावत को ॥ ११ ॥
 ॥ १२ ॥ ६ मद्य पीकर ७ उस महावतको बुलाया ८ सलाह करने की इच्छा से
 ॥ १३ ॥ ९ अन्य लोगों ने मना किया तोभी १० हाथी के महावत के हाथ से
 उस मंदिर में ११ मद्य पान किया ॥ १४ ॥ १२ नई १३ अविवाहिता (नातेवाली)

ईश्वरीसिंहेकेजनानेकामरनाविचारना] सप्तमराशि-अष्टाविंशमयूक (१११५)

अत्यज लोक अनेक इम, रक्खे ढिग पट्टु जानि ॥
 मरयो सु कूरम लौ गरल, यँहँ दक्खिन भय आनि ॥ १७ ॥
 *वारनारि इक रूप बैसु, मन्नी तिय करि मेल ॥
 सोहु जरी रचि सहगमन, जयनिवास भूद्वेल ॥ १८ ॥
 दूजेदिन हुलकर तनय, किन्नी खड्डव बत्त ॥
 कूरम गृह सुदर सुनत, पातुरि बहु गुन रत्त ॥ १९ ॥
 लाखि अच्छी तिनमाँहिँसो, चुनि चुनि कल्हि मँगाय ॥
 घर हम भुग्नन रक्खिहँ, गिनत समर्थ न न्याय ॥ २० ॥
 यह उदत अवगोध गत, सुनि पातुरि भय पग्गि ॥
 एकादसि बैसर जरी, एकादस ११ लहि अग्गि ॥ २१ ॥
 रानिनहु यह भय सुनत, इक गृह सोर विछाय ॥
 सबन विचारी उडनकी, करन प्रान विनु काय ॥ २२ ॥
 तव आतुर नाजर जनन, अक्खी बाहिर आय ॥
 जो न बनै संत्वर जतन, रानी जन उडि जाय ॥ २३ ॥
 आये हुलकर सग यँहँ, माधवकेहु वकील ॥
 बनिक कन्ह कोबिर्द बहुरि, कूरम प्रेम कुसील ॥ २४ ॥
 तिन यह सुनि बुदीस प्रति, अक्खुपो अनुचित कर्म ॥
 भूप सुनत अति कोप भरि, धरयो लरन भट धर्म ॥ २५ ॥
 ॥ षट्पात् ॥
 असनायित हरि अग मनहुँ विच्छिँय अँल मारिय ॥
 साँगर सापन असह अखि जनु कपिलेँ उघारिय ॥

स्त्री का पुत्र ॥ १६ ॥ १७ ॥ *वैश्या रूप ही है १ धन जिसके २ घर (सहजों) के पाग में ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ ३इत्तान्त ४जनाने में गया ५ एकादशी के दिन ॥ २१ ॥ ६ शरीर को विना प्राण करने के लिये ॥ २२ ॥ ७शीघ्र क्षपण नहीं होवे गा तो ॥ २३ ॥ ८ चतुर ९ छोटे स्वभाववाला ॥ २४ ॥ २५ ॥ मानों १० श्रुते सिंह के शरीर में ११ चीकू ने १२हक मारा किता १३ सगर के पुत्रों को श्राप देने को १४ कपिचक्षु ने नेत्र छोड़े, मानों कालिका ने शुभ असुर के ऊपर

काली मनहुँ कराल सुभ उप्पर त्रिमूल लिय ॥
 दलन जंभ दंभोलि पकरि पलट्यो कि संचीप्रिय ॥
 श्रीवत्सधर कि सिसुपालके अंतिम आगसँ उज्झलिय ॥
 हम भूप सुनत खंडुव अनय करखिँ मुच्छ बुल्लिय बलिय २६
 सुनहु वत्त मल्लार सल्ल मिच्छन उर अप्पन ॥
 पठये तुम पुण्येस धर्म हिंदुन दढ थप्पन ॥
 अनय अज्ज इक सुनिय तनय भवदीय कहत यह ॥
 नृप जैपुर पति नारि गेह डारहिँ करि अंगगह ॥
 सब ठाम लज्ज एकहि समुक्ति अव खंडुव वरजन उचित ॥
 उनमाँहिँ हमहु नहिँतो अवहिँ दडुन हिय तुमतेँ न हित ॥ २७ ॥
 ॥ दोहा ॥

हैं हमरी बेटी बहिनि. उनके आलये माँहिँ ॥
 त्योंही समझहु चतुर तुम, उनकी हम घर आँहिँ ॥ २८ ॥
 अज्ज बिपत्ति जु एक बिच, सो दूजे बिच सोहि ॥
 मनुजनको तब जब मरन, तो बर अवसर कोहि ॥ २९ ॥
 हम सिर तुम आसान किय, इन पर डारि चपेट ॥
 जो समुझहु कृतघन हमहिँ, तो बुंदिय वह भेट ॥ ३० ॥
 यह अनीति जो नीति करि, मन्नै हमहु प्रमत्त ॥

भयंकर त्रिशूल लिया, किना जंभासुर को मारने के लिये १ वज्र पकड़ कर
 २ इन्द्र पलटा, किधूँ ३ श्रीकृष्ण शिशुपाल के अंतिम ४ अपराध पर बोले
 “श्रीकृष्ण ने शिशुपाल की माता को वरदान दिया था” कि शिशुपाल हमारे
 सौ अपराध करेगा तब तक हम उसको नहीं मारेंगे सो बुधिष्ठिर के यज्ञ में
 एक सौ एक अपराध करने पर उसको मारा था इस प्रकार बुंदी का राजा
 (उम्मेदसिंह) खंडू की अनीति को सुनकर मूछ ५ खैचकर वह बलवान् बोला
 ॥ २६ ॥ ६ अपन यवनों के उर में सात हैं ७ पूना के पति ने ८ आज एक
 अनीति सुनी है ९ आप का १० आग्रह ॥ २७ ॥ ११ घर में. हमारे घर में १२ हैं
 ॥ २८ ॥ १३ मनुष्यों को. अवसर का मरना ही १४ अष्ट है ॥ २९ ॥ ३० ॥

अखिल दिखावै अगुलिन, विकस्य विकस्य कहि वत्त ॥ ३१ ॥

धरम चलावत नयधरन, तुम सहाय भुव लीन ॥

अधरम करि लैवो उचित, पाक दमन पदवी न ॥ ३२ ॥

सोदरतैंहु सखा अधिक, सो कूरम १ तुम १ मूर ॥

थातैं खडुव मात वे, तिनको तकत कूर ॥ ३३ ॥

नृपति अखि सखी निरखि, जानी यह मरिजाय ॥

दित करि हुलकर हड्डको, जिन्नों हृदय लगाय ॥ ३४ ॥

काल देस आलोच करि, चित्त धरम दृढ चाहि ॥

तरज्यो अप्पन पुत्रको, संभर नृपहि सिराहि ॥ ३५ ॥

इतिश्रीवशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणो सप्तम ७ राशाबुस्मेद-
सिंहचरित्रे कूर्मराजमरणज्ञानाऽनन्तरहृद्देन्द्रपूर्वकमहाराष्ट्रजाामिक
जयपुरदत्तगुप्तस्वोपहारहुलकरकूर्मराजदाहनतत्पूर्वाऽनाचारकथ
नेकवारस्त्रीतत्सहगमनमाल्लारिकूर्माऽन्त पुरलुट्टनमननश्रुततदुदन्तै-
कादश ११ भुजिष्याज्वलननिवसनसर्वराज्ञीजनवन्धिविशनविचार
गुप्ताज्ञाततद्वृत्तान्तहृद्देन्द्रोपाऽरुणीभवनमल्लारशिचिदानवाक्प्रतोदप्र

१नरुटा नफटा कहकर ॥३१॥ धर्मको चलावे और नीतिको धारण करने को बुद्धी
की श्रमि पीछी ली है ३ बुद्धापा ४ विगाहने की पदवी लेना उचित नहीं है ॥३२॥
५ सगे भाई से भी मित्र अधिक होता है सो ईश्वरीसिंह और तुम पाय, पदल
कर सखा हुए हो ६ इस कारण ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ७ विचार कर ८ समझाया ॥ ३५ ॥

श्रीवशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में, वस्मेदसिंहचरित्र
में, कछवाहों के राजा के मरने का ज्ञान हुए पीछे हृद्देन्द्र आदि का, मरहठों के
पहरायत रखना १ हुलकर का सामग्री देने से कूर्मराज का दाह होना और
उसके पहिछे के दुराचारों का कहना २ उसके साथ एक वेश्या का, सती होना ३
मल्लार के पुत्र का कछवाहे के जनाने को लूटने का विचार करने का वृत्तान्त
सुनकर ग्यारह पासवान जियों का अग्नि में प्रवेश करना और सप्त राखियों
का अग्नि में प्रवेश करने का विचार करना ४ यह वृत्तान्त, जानकर हृद्देन्द्र
का क्रोध में खाल होना और मल्लार को शिचा देने लपी बचनों के आशुत
से समझाये हुए हुलकर का हृद्देन्द्र को हृदय लगाना ५ अपने पुत्र कबू को

दाधितहुलकरहड्डेन्दहदयाऽऽश्लेषगारवपुत्रखण्डूतर्जनमष्टतिंशो मयू-
खः ॥ ३८ ॥ आदितः ॥ ३१९ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ पट्टपात् ॥

सुनि अकिखय मल्लार प्रविसि जैपुर बुंदियपति ॥
कूरम सचिवन कहहु मोद रक्खहु त्वासहु मति ॥
प्रकट जाय प्रेच्छन्न कुम्म नृप तियन कहावहु ॥
धन्य सती तुम धरम सोहु हम तियन सिखावहु ॥
कछु बोधहीन खंडुव कहिय आगसँ वखसहु मोहि यह ॥
निजनाथ मित्र सम सिर निडर सासन करहु सखीन सह ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

सुनि इम हड्ड नरेस तब, विरवासे सब जाय ॥
अक्खी डरहु न नैक अब, हम तुम संग सहाय ॥ २ ॥
तबहि पाय विस्वास तिन, प्रतिउत्तर दिय एह ॥
उपकारहि अपकार पर, नृप तुम किन्न सनेह ॥ ३ ॥
रवाँपतेय अब दंडको, मंगहिँ यह मल्लार ॥
कछुक घटावहु जतन करि, सोपै संभरवार ॥ ४ ॥
कोटि पंच५०००००००हुलकर कहे, लैन दम्म हठ लाय ॥
बुल्लयो तँहँ नृप करि विनय, जुलम सहयो किम जाया ॥
बहुत बेर दक्खिन दलनँ, कूरम दंडित कीन ॥
लखि श्रद्धा बसुँ लीजिये, इन्ह गिनि निवल अधीन ॥ ६ ॥

धमकाने का अड़तीसवाँ मयूख समाप्त हुआ ॥ ३८ ॥ और आदि से तीन सौ
उन्नीस ३१९ मयूख हुए ॥

१ डरो मत २ जनार्नी ज्योदी पर ३ बिना विचार से ४ अपराध ५ मैं तुम्हारे
पति का मित्र हूँ सो निर्भय होकर मेरे मस्तक पर आज्ञा करो ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥
६ धन ॥ ४ ॥ ५ ॥ ७ सेना ने दधन ॥ ६ ॥

जैपुरसे करोड रुपये देहलेना] सप्तमराशि-एकोनचत्वारिंशमयूख (३११६)

कारिज पर खरचत कलाँ, मूलहिँ रक्खि समगं ॥
 अर्थ घटुनकी रीति यह, अक्खी बढन अगग ॥
 कला बढत पुनि मूलकरि, मूल मिटै सु मिटाय ॥
 जैसे रँजका मूल जुत, लयो न पुनि लहराय ॥ ८ ॥
 जातै पुनि वसु उप्पजहिँ, असो रक्खि उपाय ॥
 अक्खहु दम अढा उचित, इठ तजि हुलकर राय ॥ ९ ॥
 हम मन्त्रहिँ आसान यह, देखहु सकति उदार ॥
 कुँल्पा जल होय न कबहु, पूरन पारावार ॥ १० ॥
 तब निहारि भूपति विनय, काल १ देस १ अरु काज १ ॥
 दम्भ कोटि इक १००००००००० दढके, रक्खे हुलकर राज ॥ ११ ॥
 तीन ३ अस श्रीमंतके, चोथो ४ निज करि चित्त ॥
 ऐसे क्रम आमैर सन, बंटन मग्यो बित्त ॥ १२ ॥
 कतिक दम्भ मनि गन कतिक, भुखन कतिक नवीन ॥
 करि किम्मत गज हय कतिक, दढ माँहिँ तब दीन ॥ १३ ॥
 बारी समुव १ खान २ बेलि, पीलैपाल पकराय ॥
 दम्भ घटे तिनमें दये, हरगोबिंद कहाय ॥ १४ ॥
 कीलितै तब दोऊन २ करि, लौ लक्खन इठ लागि ॥
 कोटि अक १००००००० पूरन कियउ, प्रकट लोभ बस पगि
 इत माधव कछु अध्वभैव, खेद उदैपुर टारि ॥
 पत्तो पत्तन रामपुर, पाय परगगन व्यापारि ॥ १६ ॥
 निज पतनी रठोरि लिय, दोहँद लच्छन धारि ॥

१ कार्य पर १ व्याज (सूद) खरच करने हैं १ समग्र ४ वन में चतुर खोकों की ॥ ७ ॥ मूख रहने से ही व्याज बढ़ता है और मूख के मिटने से व्याज (सूद) उसके साथ ही इस तरह मिटजाता है जैसे ५ राजके (घास विशेष) को मूल सहित ले खेने से फिर ६ हरा नहीं होता ॥ ८ ॥ ९ ॥ उनहर के पानी से ८ समुद्र नहीं भरता ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ ९ कितनेक तो रुपये ॥ १३ ॥ १० पुनि ११ महावत को ॥ १४ ॥ १२ कैद करके ॥ १५ ॥ १३ मार्ग से पैदा हुआ ॥ १६ ॥ १४ गम्

कूरम उद्धव तास क्रिय, अष्टमऽ मास उतागि ॥ १७ ॥
 याँत हुलकर संग इत, आयो नहिँ कछवाह ॥
 कन्ह१ रु प्रेम१ वकील दुव२, लखन पठाये लाइ ॥ १८ ॥
 ॥ पदपात ॥

ईश्वरिसिंह निपात सुनत हुलकर दंत मुकलि ॥
 बुल्लिय माधव बेग बंचि पत्र सु आयो चन्ति ॥
 संगानेर समीप रह्यो कति दिन मुकाम करि ॥
 बारह१२ दिवस बिताय गयो जयनैर गर्व भरि ॥
 सुनि आत कटक जयपुर सहित बुंदियपतिः हुलकर वन्ति ॥
 जदव नरेस३ खंडुव४ सजव हथिन चढि सम्पुह हलिया ॥ १९ ॥
 ॥ दोहा ॥

जदव नृप गोपाल जँहँ, नगर करोली नाह ॥
 मंत्र करन मल्लार सन, आयो मिलन उछाह ॥ २० ॥
 बह१ अरु खंडुव इक१ इमँ, बैठि चले तिहिँ बेर ॥
 प्रथम कहे ते२ रहि पृथक, फैलत फोजन फेर ॥ २१ ॥
 मिले परसपर मन मुदित, सबे विहित सतकार ॥
 इक१ अनेकँप आरुहे, माधव१ अरु मल्लार२ ॥ २२ ॥
 कुम्भ कह्यो न मुहूर्त अब, प्रविसैं नहिँ पुर पोरि ॥
 अब प्रविसहु हुलकर कहिय, संध्या आत बहोरि ॥ २३ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

इम कहि नगर प्रवेश करायो, निज महलन माधव नृप आयो ॥
 पहुँचावन मल्लार आदि सब, गर्ये जलेवचोक लागि ए तब ॥ २४ ॥
 चढे गजन डेरन पुनि आये, बलि उत्तरि कटिबंध बिहाये ॥

१ उत्सव ॥ १७ ॥ २ लाभ देखने को ॥ १८ ॥ ३ पत्र भेज कर ॥ १९ ॥ २० ॥ ४ एक हाथी पर ॥ २१ ॥ ५ उचित एक हाथी पर माधवसिंह और मल्लार चढे ॥ २२ ॥
 ७ फिर जया नामक सिंधिया आता है ॥ २३ ॥ २४ ॥ ८ कमरबंध खोले

जैपुरसे मरहठोंका दह लेना] सप्तमराशि-एकोनचत्वारिंशमयूख (३६२१)

हुलकर निज बुल्ले जौमिक जन, माधव अमल कियो जयपत्तन २५
दोहा-सध्या पुनि रागाजि सुत, सजि दुद्धर बहु सैन ॥

जयपत्तन आयो जया, अति जव छेकत अैन ॥ २६ ॥

॥ गीतिका ॥

सुनिकै जया जयनैर आवत दह १ कूरम २ हू चढे ॥

दलमै नकीवन दोरि आरव जान सम्मुहके पढे ॥

सह भूप जहव १ पुत्र खडुव २ लै मलार १ हु सकम्प्यौ ॥

इम च्यारि ४ चक्कन चालतैं भय च्यारि ४ चक्कनमैं भ्रम्यौ २७

मुदपाय मुत्तियडुगरी तक जाय सम्मुह ए मिले ॥

सब पुच्छि मगल माँहि माँहि बहोरि पत्तन त्यों पिले ॥

अरु चदपोरि मुकाम अप्पन दै जया तँहँ उत्तरयो ॥

पुनि मते मित्त मलारतैं दैम बित्त बटनको करयो ॥ २८ ॥

तवही मलार पचीस लकख २५००००० लये ति'बोड २न बंटये

श्रियमतके पुनि पचसप्रति लकख ७५००००० दक्खिन प्रेरये ॥

अरु जैपुरेस दुहून २ सौं महिमानि जिम्मनकी कही ॥

सुनिये महीपति राम जो इक १ हाँ चही इक १ नाँ चही ॥ २९ ॥

हा-हुलकर १ बत्त सु अहरिय, पै संध्या १ किय नाँहि ॥

बुल्लयो जैपुर देत बिख, मि'ठी कहि खिनमाँहि ॥ ३० ॥

देखि रीत बुदीसकी, आरंभत तुम एह ॥

पै हहे अकपट प्रथितैं, गाढ कुदैंक यह गेह ॥ ३१ ॥

लकर ने जयपुर के लजानों पर अपने १ पहरायत रक्खे थे सो बुलाविये
॥ जयपुर में ॥ २५ ॥ ३ मार्ग को ॥ २१ ॥ ५ सम्मुख जाने के ४ शब्द पडे ६ चला
चतुरगिणी सेना के चलने से ८ चारों दिशाओं में भय फैला ॥ २७ ॥ ६
अ अपने १० मिश्र मलार से जया ने ११ दह के घन को घाट लेने के
त्रये कहा ॥ २८ ॥ १९ते (वे) ॥ २९ ॥ १३ मीठी बातें कहकर ॥ ३० ॥ १४
एकपट रहित प्रसिद्ध हैं १५ जयपुर का घर बड़ा बड़ी है ॥ ३१ ॥

॥ षट्पात् ॥

सोदैर १ कहँ जयसिंह अगग हौलाहल अप्पिय ॥
 मारे पुत्र २ रु मात ३ तदपि पप्पिय नन तप्पिय ॥
 मानँ हनिय मारुफ १ जलधि बिस्वास निमज्जत ॥
 हुंढाहरके ढोल बिदित याही गति बज्जत ॥
 तातँ न हमहि निश्चय तुलत स्वागत हम मन्न्याँ सकल ॥
 कछु बित्त तुरग पुनि भेट करि कुंच करावहु छोरि छला ३२।
 तदनंतर मरहट्ट द्रंग अंतर दूजे दिन ॥
 क्रैय बिक्रय कछु करन बहुत प्रबिसे संका विन ॥
 तिनकी बंधन तोरि इक्क १ बड़वाँ पुर आई ॥
 सो सेखाउत सठन छन्न गृह बंधि छपाई ॥
 लाखि ताहि खुल्लि लावन लगे उन तव भारिय खग अँरा
 यह हक्क मचिग पत्तन अखिल अरु द्वारन लग्गे अँरर ॥३३॥
 सुनत सोर गहि सजव लोक पत्थर असि लट्टन ॥
 पुरके मिलि मिलि प्रचुर लगे मारन मरहट्टन ॥
 हे जन च्यारि हजारि ४००० च्यारि तिनके विभाग करि ॥
 अस तीन ३ असुदीन भये लवँ इक्क १ घाय भरि ॥
 बाहिर गये ति पुरजन बहुत भजत हनँ दक्खिन भटन ॥
 बुंदीस कटक आय रु बचे करि कितेक अतिजैव अटना ३४
 ॥ दोहा ॥

आनत बाँमी अप्पनी, दक्खिन लोक अदोस ॥

१ सगे आई विजयसिंह को १ जहर दिया था २ तो भी पापी ४ तृप्त नहीं हुआ ५ मान
 सिंह ने ६ विश्वास रूपी समुद्र में डूबते हुए को ॥३२॥ ७ जिस पीछे ८ नगर में
 १० लेन देन को ११ घोड़ी बंधन तुड़ाकर शहर में चली आई १२ शीघ्र तरवार
 चलाई १३ दरवाजों के किवाड़ लगगये ॥ ३३ ॥ १४ तीन पांती के मारे गये १५ एव
 पांती के घायल हुए १६ शीघ्रता से भगकर ॥ ३४ ॥ १७ अपनी घोड़ी लाने में

जैपुरसे फिरमरहटोंका दहलेना] सप्तमराशि-एकोनषट्पारिशमयूक्त (११२१)

अपराधी जैपुर जनन, रच्यो *अलीकहि रोस ॥ ३५ ॥
मनुज समर्थनके मरत, तक्कयो माधव प्रास ॥
भावी निज चिंतत भयो, सतत डारि निसास ॥ ३६ ॥
हुलकरराज समीपहो, कुम्भ सचिव इहि काल ॥
पान बचन पायन परयो, बनिक सु कन्ह बिहाल ॥ ३७ ॥
देखि ताहि हुलकर सद्य, खुदिय सचिव बुलाय ॥
अक्खी सभर पास इहि, धरहु जिवावन जाय ॥ ३८ ॥
दक्खिन जन नहिंतो दुमन, अब आयसं इच्छै न ॥
हुंढत जन हुंढारके, इनत फिरत रुकिहै न ॥ ३९ ॥
मयाराम१ कायत्य तब, दयाराम२ द्विजराज ॥
पत्ते लौ बुंदीस प्रति, कन्ह जिवावन काज ॥ ४० ॥
संध्या कुंप्पित एह सुनि, बिरचन जैपुर बाध ॥
बहु माधव थप्पिय बिनय, अप्पिय तब अपराध ॥ ४१ ॥
प्रचुर वित्त लिय दंड पुनि, अरु पठई कहि एह ॥
यैह भेजहु घायल अखिल, दाह करहु मृत देह ॥ ४२ ॥
जन हजार१००० घायल जबहि, दर्ल पठाय सब दिन ॥
तिन सहस्र३००० कुशार्पन त्वरित, कर्म उचित विधि किन्न ४३
गढके गोलदाज इक१, दिन्नी तोप दगाय ॥
निज रुचिसों कि निदेससों, जानी सो नहि जाय ॥ ४४ ॥
फुरत बंन्दि पेर फोजमै, लग्यो गोलक लोलै ॥
बहुरि तास विग्रह बख्यो, कूरम चुक्यो कोल ॥ ४५ ॥
कुच तबहि दुवर सेन करि, संध्या१ हुलकर१ सत्य ॥

* झूठा कोष रचा ॥ ३५ ॥ १ निरतर ॥ ३६ ॥ २ माधवसिंह का कामदार ॥ ३७ ॥ ३ दया सहित ॥ ३८ ॥ ४ हुकम नहीं चाहते ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ५ सिंधिया कोपित हुआ
बनाय करने को ॥ ४१ ॥ ७ फिर दंड का बहुत घन किया ॥ ४२ ॥ ८ सेना में भेज
दिये ९ सुरवां का ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ १० अग्नि लगाते ही ११ पराई (मरहटों की)
सेना में १२ चपल गोला लगा ॥ ४५ ॥ ४६ ॥

भंक्रोर जाय रु भये, संगर रचन समत्थ ॥ ४६ ॥

धुजिज तबहि जयनैर धँव, संध्या१ हुलकर१ पास ॥

गोलंदाजहिँ लै गयो, आतुर नम्र उदास ॥ ४७ ॥

बुल्लयो इहिँ किय हुकम बिजु, है मम दोस यहै न ॥

दोऊ२ तुम सागस दमन, नमनै कियेँ हित नैन ॥ ४८ ॥

बिनय पिक्खि दोउ२न बहुरि, दुव लक्ख२०००००हि लिय दम्म ॥

आगसँ किन्नों माफ वह, करिय कुंच जय कम्म ॥ ४९ ॥

आयो तब करि सिक्ख इत, निजपुर संभर नाह ॥

टींका जैपुर मुक्कलिय, रक्खि सनातन राह ॥ ५० ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशात्रुम्मे
दसिंहचरित्रे बुन्दीशकूर्मशुद्धान्तत्रासध्वंसनकोटि १००००००० दम्म
कूर्मदण्डदापनरामपुरेशमाधवसिंहपत्नीरट्टाडिदोहदलक्षणासीमन्ते
स्सवकरणाप्राप्तमल्लारपत्रतज्जयपुराऽऽगमनराज्यप्रापणाऽनन्तरस-
न्ध्याजयाऽऽगमनकूर्मगृहभोजनानङ्गीकरणावडवानिमित्तबहुलमह
राष्ट्रजनमरणातत्क्रुद्धहुलकर १ सन्ध्या२ पुनर्दण्डनयनकूर्मनिजना
लीयन्त्रप्रेरकतन्निवेदनपुनर्नीतलक्षद्वय २००००० दम्मदक्षिणासैन्य

१ जयपुर का पति ॥ ४७ ॥ तुम दोनों २ अपराधी को दंड देनेवाले हो ३ हित है
नेत्रों से मैंने नमस्कार किया है ॥ ४८ ॥ ४ अपराध ५ जय करने को ॥ ४९ ॥ ५०

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, उम्मेदसिंह चरि-
त्र में बुन्दी के पति का कछवाहे के जनाने के त्रास को मिटाना और कछवा-
हा का दंड के क्रोड़ रुपये देना १ रामपुरा के पति माधवसिंह की स्त्री राठो-
का गर्भ के आठ मास का उत्सव करना २ मल्लार का पत्र पाकर उस (:
यसिंह) का जयपुर आना और राज्य पाये पीछे जया नामक सिंधिया का अ-
ना ३ कछवाहे के घर में भोजन करने का अस्वीकार करना और घोड़ी के
रण बहुत मरहटों का मरना, उस क्रोध से हुलकर और सिंधिया का
दंड लेना ४ कछवाहे का अपनी तोप को चलानेवाले को नजर करना, फिर
छात्र रुपये लेकर दक्षिण की सेना का गमन और रावराजा का बुन्दी
कर टीकाकी सामग्री जयपुर भेजने का उनचालीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥

मनसूरअलीकाफुरकाबादपरचढ़ना] सप्तमराशि-चत्वारिंशमयूज (३१२५)

प्रस्थानरावराहुबुद्ध्याऽऽगमनतिलकोपहारजयपुरप्रेषणमेकोनचत्वारिंशो ३९ मयूख ॥ ३९ ॥ आदित ॥ ३२०॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा॥

॥ पादाकुलकम् ॥

इत मनसूरअली अभिधानक, अहमदसाह बजीर अचानक ॥

पठयो कटक रचन घमसैनन, इनन फुरकाबाद पठानन ॥ १ ॥

नवलराय कायथ सेनानी, तिहिं द्रुत जाय रारि तब तानी ॥

वगस खानमुहुम्मद बीबी, गज्जै उतहु धरै न गरीबी ॥ २ ॥

अबलापन नहिं नैक उधारै, राज्य फुरकाबाद सम्हारै ॥

नवलराय तिहिं सन किन्नो रन, नारि सबल बस तदपि भई ननाश ॥

कायथ तब करि सपथै सधि किय, वै विसास दल तास लुट्टि जिय

धीधी तिहिं दुवर्मास टारि बलि, किन्नो आनि बजीर हितु कलि ॥ ४ ॥

नवलराय कायथ इन्पो तब, सहस पचास ५०००० कटक लुट्टयो सब

लाखि यह भीरु बजीर पैलायो, अति आतुर दिखिय पर आयो ॥ ५ ॥

कछु रूपय तिहिं दैन कहाये, बलि सहाय मरइष्ट बुलाये ॥

राजा जुगलकिसोर १ भट्ट जन, बहुरि दिवान रामनारायन १ ॥ ६ ॥

ए दुवै लैन दक्खिनिन आये, सन्ध्या १ हुलकर १ सग सिधाये ॥

भूति अवेरि जानि बीबी भय, प्रविसी जाय कमाऊ पब्बय ॥ ७ ॥

लाहि बजीर सैन खरच एहु तब, बीबी बिटन उतहि गये सब ॥

रामसिंह इत धन्वधरापति, इकदिन कहिय लैन सिर आपति ॥ ८ ॥

भट्ट रठोर सभा जब आवत, तिनके लोचन मोहि डरावत ॥

लगत बुरे मोको सठ सारे, कैसी बिधि अब जाय निकारे ॥ ९ ॥

और आदि से तीन सौ बीस ३२० मयूख हुए ॥

१ नामवाला २ पुष्ट करने को सेना भेजी ॥ १ ॥ २ ॥ ३ कृपण ४ तोमी ॥ ३ ॥ ५ सौगन

करने ६ बजीर से युद्ध किया ॥ ४ ॥ ७ भागा ॥ ५ ॥ ८ ऐश्वर्य अवेर

कर कमाऊ का पर्वत ॥ ७ ॥ ८ बजीर से १० मारवाड़ का पति ॥ ८ ॥ ९ ॥

ठहो अमिय कह्यो बनि संखी, तुमरे जनकै यहै इन्ह अखी ॥
 चैपाउत कुसलेस कह्यो तब, यह सुत अधम भयो तोहू अव १०
 जब डेरन परवाय हमारे, दुदुकारहिं तब कढहिं निकारे ॥
 सुहि इनको करि बेग बिडारहुँ, व्है विलंब तो इन करि हारहु ॥११॥
 अनुगँ पठाय अनयँ सुहि धारयो, डेरन पारि कुसल दुदुकारयो ॥
 और चढि तब नागोर गयो यह, मन्थ्यो सुनि बखतेस मंहामह ॥१२॥
 सम्मुह पठयो विजयसिंह सुत, जिहिं लिय कुसल बधाय विनय जुत
 कथन यहै बखतेस कहायो, आये तुम सु जोधपुर आयो ॥१३॥
 बढ्यो तबहि दोरहुँ दिस बिग्रह, चाहै करन परस्पर निग्रह ॥
 रामसिंह सन सबहि रिसाये, इतर भटहु निज निज घर आये ॥१४॥
 इक १ बदल्यो न सेर १ दूदाउत, रहयो अनादरहु सहि राउत ॥
 सेना बहुरि उभय २ दिस सज्जिय, बंब पंगव आनक रन बज्जिय १५
 चलत बेर मृत सेर तुरंगम, किय सब अरज दैन हय नृप सैम ॥
 बुल्लयो मरुप उचित तुमरे हय, हेरहु रँजक कुलालन आलय ॥१६॥
 भीष्म धुर धोरी अँचत भर, सेर सुपै सहि भो अग्रेसर ॥
 जान्यो नृप मतिमंद न जानै, पै हम स्वामिधर्म पहिचानै ॥१७॥
 चले उभय पुनि कटक खेत चढि, पटके बाजि भटन हरि हरि पति
 हल्लिय आलुक भोग हजार, धुज्जिय पहुमि तुरंगम धारा ॥१८॥

१साक्षी बनाकर २तुन्हारे पिता ने ॥१०॥ ३निकालो ॥११॥ ४नौकर को भेजकर
 ५वही अनीति की ६कुशलसिंह को धिक्कार दिया "हिंगलभाषा में धिक्कार देकर
 अनादर पूर्वक निकालने को दुदुकारना कहते हैं" ७शीघ्र चढकर वरुतसिंह
 ८बड़ा उत्सव माना अथवा बड़ा उत्सव करके इसका मान किया ॥१२॥
 ॥१३॥ ९कैद ॥१४॥ १०नगारे, मर्दल और ढोल बजे ॥१५॥ ११चलते समय
 सेरसिंह का घोड़ा मर गया तब १२ राजा रामसिंह से घोड़ा देने की अर्ज की
 इस पर १३ मारवाड़ का राजा बोला कि तुमारे उचित घोड़ा तो १४ घोब
 और कुम्हारों के घर में हेरो ॥१५॥ १५ भीष्म की धुर को धारण करनेवाला
 (खिंचनेवाला) धोरी, वीर शेरसिंह उसको भी सहकर १६ आगे हुआ ॥१७॥
 १७ शेषनाग के फणों का हजार हिला अर्थात् हजार फण हिले १८ घोड़ों व

दसन लगे तुटन दिगदतिन, तुमुल राग सिंधुव हुव ततिन ॥
 कंकट फटत बाढ करवाँलन, मुढन खोजि रचत हर मालन ॥१९॥
 रुढ नचत कति रविहिँ रिम्भावत, आयुध ताजि बथन कति आवत
 कतिकन फटत हृदय कलेजे, भिदत मत्थ कल्लत कहूँ भेजे ॥ २० ॥
 अखि तिरत सोनित कहूँ अच्छी, मनहु श्रोत बिच रोहित मच्छी।
 सायक कहूँ लागि नामि सुदावत, पिहैल लट्टि कैलहुव छबि पा-
 वत ॥ २१ ॥

एडी कटि कटि कहूँक उछटत, फाँक नागरगकं जनु फटत ॥
 ओठ कहूँक कटि कटि भुव आवैं, बिँव मनहु असि घन बरसावैं २२
 कहूँक दत गिरि रोचि प्रकासैं, भूमि मनहु हीरें गन भासैं ॥
 नयन गडी कहूँ मुच्छ निहारैं, मीन बर्दने बनसी छबि मारैं ॥२३॥
 इत कहूँ रीढक भिन्न उलटत, कंदली छदन दह जनु कटत ॥
कहूँक भरत करतै करमनै कुल, महिला जनन ऊरु जनु मजुल २४
 दौड से भूमि घूर्जी ॥ १८ ॥ दिग्गजों के दात तुटने लगे, ताँतों में भपकर
 सिंधवी रागिणी हुई २ तरवारों की धाराओं से १ कबच फटे, महादेव मुडों
 को खोज कर माला धमाने लगे ॥ १९ ॥ कई रुँढ नथकर सूर्य को प्रसन्न कर
 ते हैं और कई धीर साख त्याग कर बाहुयुद्ध करते हैं और कितनों ही के
 हृदय और कलेजे फटते हैं एष कह्यों ही के मस्तक फूट कर भेजे निकलते हैं
 ॥ २० ॥ कितने ही सुदर नेत्र ३ रुधिर में तिरते हैं सो मानों जल के प्रवाह
 में धलाल मच्छी तिरती है कहीं पर नामि में तीर लगकर शोभा देता है सो
 मानों ६कोवट्ट (घापी) में १ मोटी छाठ शोभा देती है ॥ २१ ॥ कहीं पर पटियाँ
 कट कर उल्लसती हैं सो मानों उभारंगी की फाँकें फटती हैं, कहीं पर होठ कटर
 कर भूमि पर गिरते हैं सो मानों ६ तरवार रूपी मेघ दमूगे बरसाता है ॥२२॥
 कहीं पर दन्त गिरकर १०प्रकाश करते हैं सो मानों भूमि पर ११हीरे दीखते हैं
 नेत्रों में गडी हुई मूँके दीखती हैं सो मानों मच्छी के ११मुल में काटा शोभा
 देता है ॥ २३ ॥ कहीं पर कई धीर १३ पीठ कट कर चलते हैं सो मानों १४
 केल के दंड पर से पत्र फटते हैं, कहीं पर हाथों से १५पुष्टे कटते हैं "मणियंघा-
 दाकनिष्ठ करस्प करमो यहि" इत्यमर॥ सो मानों १६अधियों की सुदर जघायें

लोला कहूँक पुरीतति लोहित, सलिल अरुन अलगर्द कि सोहित
 अवनि लसै धर्मनीगन ऐसे, कुवलय नाल घनात्यय कैसे ॥२५॥
 अंखि कतिक भुव लसतगिरी इम, रुचिर कोकनदकी पखुरी जिम।
 बिच ताराचल असित विराजत, लखत मरंद मत्त अलि लाजत२६
 भुव कहूँ लोमै१ कलेजा२ भासत, पाँउस जनु छत्राक प्रकासत ॥
 लोटत सिर कहूँ छत्र बिलाये, ढवतनै जनु नारेल दुराये ॥२७॥
 उरभी कहूँक सिखा कटि असै, जालअसित रेशम भव जैसै ॥
 भिरि कहूँ टोप बजत असि भारी, झल्लरि हरिमंदिर जनु झारी॥२८॥
 संचर छुरिका धसत सुहानी, पिचकारिन छुटत जनु पानी ॥
 लोहित फलक तिरत कहूँ डोलत, कमठ बिसेस कि सलिल कि-
 लोलत ॥ २९ ॥

गार निकसि पाँटिस छबि पावत, दह मनुहुँ जम लपन दिखावत॥

१ ॥ २४ ॥ कहीं पर रुधिर में १ चपलता युक्त २ अंते पड़ी हैं सो मानों
 ताल पानी में ३ जल के साँप शोभा देते हैं अथवा कटी हुई जीभ और अंते
 ही जल सर्प हैं भूमि पर ४ नाड़ियाँ ऐसी शोभा देती हैं मानों ६ शरद
 ऋतु में ५ श्वेत कमल (गडूल, नीलोफर) की नालियाँ हैं ॥ २५ ॥ कटेहुए फई
 नेत्र भूमि पर ऐसे शोभित होते हैं मानों सुंदर कमलकी पंखुडियें हैं उन कटे
 हुए नेत्रों में ६ श्याम रंग की चपल ८ नेत्रों की पुतलियाँ विशेष शोभती हैं
 जिनको देखकर १० पुष्परस से मस्त भँवरे लज्जित होते हैं ॥ २६ ॥ पृथ्वी पर
 कहीं ११ तिल्ली और कलेजे पड़े हुए दीखते हैं सो मानों १२ छत्रोटे (वर्षा ऋतु
 में उगनेवाली ढालें, छत्राक) दीखते हैं। कहीं पर छत्रों का नाश होकर मस्तक
 लुढ़कते हैं सो मानों लुढ़काये हुए नारियल १३ नहीं ठहरते हैं ॥ २७ ॥ कहीं
 पर शिखाएं (चोटियाँ) कट कर ऐसी उलभी हैं मानों १४ काले रेशम की बनी
 हुई जाली है। कहीं पर टोप से भिड़ कर तलवार ऐसी बजती है जैसे विष्णु
 के मंदिर में झालर बजे ॥२८॥ १५ छुरी चलकर घुस कर ऐसी शोभती है मा-
 नों पिचकारी से पानी छूटता है, कहीं पर लोह में तैरती हुई १६ ढालें फिर
 ती हैं मानों जल में कछुए आदि क्रीड़ा करते हैं ॥ २९ ॥ १७ कटारी पार निकल
 कर ऐसी शोभा देती है मानों यमराज १८ अपने मुख में दाढ़ दिखाता है कहीं

पञ्चतसिंहऔररामसिंहकायुद्ध] सप्तमराशि-चत्वारिंशमयुक्त (३१२६)

सरपूरन कहूँ गिरत सराश्रय, उडत कि पिच्छं छोरि सिखि आश्र-
य ॥ ३० ॥

खगग कहूँक हङ्गन खटकावैं, बढई तरु कि कुठार बजावैं ॥
दसन अटकत तेग दुधारी, कहैं बन जनु कूर कषारी ॥ ३१ ॥
कहूँक देत सिरसों सिर टफर, दुवर उडत जनु भिरत पृथ्वर ॥
कहूँ गुटिका गन धसत कपालन, जनु सिरैघा प्रबिसत मधुजा-
लन ॥ ३२ ॥

दमकत इलौ तनुत्र विदारैं, शृगर्पति बाल कला छवि मारैं ॥
तोमर धसत कुंजरन तिकखे, सैलन बेध बेगुं जनु सिक्खे ॥ ३३ ॥
जुष्टे इम नागोर जोधपुर, धोरी कुसल सेरैं अँचत घुर ॥
खोजन चपाउतहिं खिजायो, अरिदल मध्य सेर धसि आयो ॥ ३४ ॥
इक १ जवूर लग्यो पाके उर, फारि कढ्यो सु दुसह रीठेंक १
फुर २ ॥

इहिं छँत मोह लहत दूदाउत, आयउ कहि उततैं चंपाउत ॥ ३५ ॥
तीरों से अरेछुर १ भाषे ऐसे गिरते हैं मानों मयूर अपने आश्रय से १ पूछेंछोड
कर बढते हैं ॥ ३० ॥ कहीं हड्डियों पर तलवारें खटकती हैं सो मानों खाती
शृच पर कुठार यजाता है, १ कबचों में दुधारे लख अटकते हैं सो मानों घर
छाने के काष्ठों के बेचनेवाला मूर्ख बन काटता है ॥ ३१ ॥ कहीं पर मस्तक से
मस्तक टफर मारते हैं सो मानों दो निरंकुश ४ भीड़े भिद्यते हैं कहीं गोखियों
के समूह कपालों में बसते हैं सो मानों ५ मधुमक्खियों १ छत्ते में घुसती
हैं ॥ ३२ ॥ कबच फाटकर ७ तरवार चमकती है सो मानों द्वितीया का
८ चन्द्रमा शोभा देता है ६ हाथियों के शरीरों में तीखे भाँखे घुसते
हैं सो मानों १० घास के शृच पर्वतों को फोडना सीखते हैं ॥ ३३ ॥
इस प्रकार नागोर और जोधपुरवाले लखे जिनमें घुर को खँयनेवाले धोरी
कुशलसिंह और ११ सेरसिंह थे जिनमें सेरसिंह क्रोध करके चापावत
कुँछीसिंह को हरेने के लिये शत्रु की सेना में घुस आया ॥ ३४ ॥ जिसकी
छाती में नहीं सहने योग्य एक जबूर का गोला लगा सो १२ पीठ और १३
दाँव को फोडकर निकल गया १४ इस घाव से द्वादश सेरसिंह मूर्छा को
प्राप्त होगया उस समय लख से निकलकर चापावत कुशलसिंह आया ॥ ३५ ॥

दाउत १ पाउत २ अन्त्यानुपासः १ ॥

*सुज्जमल्ल तब सेर सहोदर, बुल्लयो कुसलहु आत भ्रात दर ॥
सावधान हुव सेर यहै सुनि, पकरि खग्ग सम्मुह हंक्को पुनि ॥३६॥
दुहुँन २ धीरता मिलत दिखाई, नागफेन मनुहारि बनाई ॥

तदनु सेर बुल्लयो रन तंडत, सुच्छ कंचन उद्धत कर भंडत ॥३७॥

अब इत आवहु कुसल अखारैं, जहर जरैं न तुमहिं वह जारैं ॥

बीज दुसह अग्गैं तुम बाधे, अब चक्खहु तिनकैं फल आयें ॥३८॥

भूपटिसेरै इम कहि असि भारिय, फारि टोप भरतक सब फारिय

छोहित कुसल साँगे इत छुट्टिय, फवत सेर छत्तिय लागि फुट्टिय ॥३९॥

बेरै दुहुँन २ तिहिं बेरै बिहाये, पुंण्यलोक इच्छित तिन पाये ॥

सुभट मेरै दुहुँओर पंचसत ५००, घायल परे अट्टसत ८०० युस्मत ४०

सेर कहिय अग्गैं मरुपति सन, प्रबिस्सो त्रिदिव निवाहि वंहे पन ॥

कैलि इम बखतसिंह जय किन्नाँ, लागि हठ आनि जोधपुर लिन्नाँ ॥४०॥

बैठि तखत जय पेटह बजाये, साज बहुरि रनकाज सजाये ॥

हुव यह रन नव नभ धृति १८०९ हाँयन, पाप राँम क्रिय हारि प

लोयन ॥ ४२ ॥

जिहिं ढिग इक्क पुरोहित जग्गुव १, हठी द्वितीय २ खीमसर पति १

हुव ॥

मरहठन सन नृपहिं मिलावन, अब क्रिय दुहुँन २ कमाऊँ आवन ॥४३॥

तब शेरसिंह के छोटे भाई * सूर्यमल्ल ने कहा कि हे ओष्ठ भाई ! कुशल
सिंह आता है यह सुनकर शेरसिंह सावधान हुआ और खड्ग लेकर सन्मुख
चला ॥ ३६ ॥ १ अमल की २ जिसपीछे ३ युद्ध में गर्जना करता हुआ ४ सूछों
के केशों को हाथ से ऊंचे करता हुआ शेरसिंह बोला ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ यह कहकर
५ शेरसिंह ने दौड़कर तरवार चलाई ६ क्रोधित कुशलसिंह की ओर छी ॥ ३९ ॥
६ उसी समय ८ दोनों ने शरीर छोड़े १० स्वर्ग ॥ ४० ॥ ११ स्वर्ग में गया
१२ युद्ध में ॥ ४१ ॥ १३ विजय के होल १४ संवत् में २१ पापी रामसिंह
१६ भागा ॥ ४२ ॥ १७ पर्वत का नाम है ॥ ४३ ॥

जया१ मल्लार२ गये सम्मुद्र जब, आन्यो३सिविर रामसिंहहिं अब
 सध्याको तैं कुमति सुहाई, छुट १ मरुपसन किप मित्राई ॥४४॥
 पगध पलटि कहि तब सुख पैहैं, हुत जब तुमहि जोषपुर देहैं ॥
 इत जगतेस रानके आमय, बढ्यो अतीव असाध्य जैराबय ॥४५॥
 कुमर प्रताप हुतो कैरा तब, इहिं भाइक भट च्यारि ४ मिले अब
 नाथ१ रान जगतेस सहोदर, कल्ला राघवदेव२ पापपर ॥ ४६ ॥
 भारतसिंह३ रान दैल स्थायी, देवगढप जसवत४ हरामी ॥
 झुल्लिय चउ४ अब मग विचारहिं, किय अप्पन तब कैदकुमारहिं
 कारारमैहि प्रतापकैहु सुन, राजसिंह अभिधान कुमर हुव ॥
 आयो गनकोहि शवसाने न, पै सराय अपनैहु प्रानन ॥ ४८ ॥
 सो नृप होय बैर अनुसरिहैं, कुलजुत कैदन अप्पनों करिहैं ॥
 वीहि छन्न यातै निज अप्पहु, यिर यह नाथ भूप करि थप्पहु ॥४९॥
 बैर विचारि यहै च्यारिन४ बलि, साहिपुरप५ पचम५ जिय सम्मलि
 सोचि रान जगतेस यहै सुनि, पठयो हुकम विचारि नीति पुनि५०
 जो तुम स्वामिधर्म दित जानत, पंच५हि भट मम हुकम प्रमानत
 जांजुत तो चढि चढि घर जावहु, रहि नहि अंत्य विरोध स्वावहु५१
 कहनु तिन पठयो दैल यह कहि, चढि चढि घरन गये तब पच५हि
 तदनु वसु ख धृति १८०० राक निकम कृत, मास जेठ जगतेस
 रान मृत ॥ ५२ ॥

* छेरे में १ मारपाय को पति से ॥ ४४ ॥ † श्रीम १ रोग २ वृद्धावस्था
 से ॥ ४५ ॥ ‡ कैद में ४ पाहिले कुमर प्रतापसिंह को पकड़ा था वे ५ राणा
 जगतसिंह का सगा भाई नाथसिंह ६ परम पापी ॥ ४६ ॥ ७ सेनापति
 ॥ ४७ ॥ ८ कैद में ही ९ सुत १० नाम ११ फौज राणा का ही अन्त नहीं
 आया है परन्तु अपने प्राणों का भी सन्देह है ॥ ४८ ॥ १२ नाथ १३ कुमर
 प्रतापसिंह को १४ भायासिंह को ॥ ४९ ॥ ५० ॥ १५ जल्दी से १६ यहा
 ॥ ५१ ॥ इनको निकाबने को १७ सेना सेजी १८ जिसपीछे ॥ ५२ ॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमः अंशः ।
 चरित्रे दिल्लीशसचिवप्रेषितसैन्यसेनानिकायस्थनवलरायफुरकाबाद
 पतिवङ्गसयवनसुहुम्मदखानबीबीयुद्धकरणाकृतसमकायस्थतद्विभव
 लुण्ठनदत्तमासद्वया २० अन्तर्बीबीनवलरायमारणाहारितरणाविभवयवने
 न्द्रसचिवमनसूरअलीपलायनदत्तवाहिनीव्ययवसुदिल्लीशहलकर १ सं-
 ध्या २५५० हानप्रदुतबीबीकमाऊपर्वतप्रविशेनदक्षिणसैन्यतद्वेष्टनमरुपति
 रामसिंहस्वभटचम्पाउत्तकुशलसिंहनिष्कासनतन्नागोरेशवखतसिंह
 सम्मिलनभ्रातृज १ पितृव्यक २ महारणाभवनसोढस्वामितिरस्कृतिसेर
 सिंह १ कुकृत्यकुपितकुशलसिंह २ मरणाविजितवखतसिंहयोधपुरप्रभूभ
 वनपलायितरामसिंहकमाऊकुण्डजनजया १ मल्लार २ प्रार्थनकृतमैत्रीभा
 वसंध्यामरुपसहायाऽङ्गीकरणनिष्कासितदुष्टभटमहारुणाराणाजग
 त्सिंहमरणा चत्वारिंशो मयूखः ॥ ४० ॥ आदितः ॥ ३२१ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया माकृती मिश्रितभाषा ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, उम्मेदसिंह के च
 रित्र में, दिल्ली के वजीर के भेजे हुए सेना सहित सेनापति कायथ नवलराय
 का फुरकाबाद की मालिक बंगस यवन सुहुम्मदखान बीबी से युद्ध करना
 और मिताप करके कायथ का उसका वैभव लूटना १ दो मासबीचमें देकर
 बीबी का नवलराय को मारना, युद्ध का वैभव छोड़कर बादशाह के वजीर
 मनसूरअली का भागना २ सेना के खरबका धन देकर बादशाह का हलकर
 और सिन्धिया को बुलाना और बीबी का भागकर कमाऊ पर्वत में जाना ३
 दक्षिण की सेना का उसको घेरना ४ मारवाड़ के पति रामसिंह के उमराव
 बाँपायल कुशलसिंह को निकालना और उसका जागोर के पति वखतसिंह
 से मिथाना ५ भतीजे और काका के पडा युद्ध होना और स्वामी के तिरस्कार
 को क्षमा करनेवाले शेरसिंह और कुकृत्य से कोपेहुए कुशलसिंह का मरना ६
 विजय किये हुए वखतसिंह का जोधपुर का पति होना और भागे हुए
 रामसिंह का कमाऊ पर्वत को घेरनेवाले जया और मल्लार से प्रार्थना कर
 ना ७ सिन्धिया का मित्रता करके मारवाड़ के पति की सहाय स्वीकार करना
 ८ दुष्ट उमरावों को निकालनेवाले राणा जगत्सिंह का मरने का चाखीसवां
 मयूख समाप्त हुआ ॥ ४० ॥ और आदि से तीन सौ इक्कीस ३२१ मयूख हुए ॥

॥ पादाकुञ्जकम् ॥

यह सुनि बुंदिय सोक उपजिय, जामे च्यारि४ नउबति न बजिय॥
 इत भट सलूमरिप चुडाउत, राना करन कुमारहिँ राउत ॥ १ ॥
 कारा जाय प्रतापहिँ कक्षिय, बहु भय सुनत भाहकन बक्षिय ॥
 सो अब रान उदैपुर स्वामी, नैय जुत भयो छत्रधरि नामी ॥ २ ॥
 जेर कियो परताप जनके जब, ताको खान पान सदन तब ॥
 अमरचव पूरविया इक९ द्विज, निकट वहे रक्खयो सेवक निजा३।
 सेवा जिहिँ तनमन धन सखी, अतर किन्न घरी नाहिँ अखी ॥
 अब नृप होय प्रताप बिप्र वह, सचिव मुख्य किय अतुल प्रीति सह४
 सिविका१ गज२ ताजीम३ समाप्पिय, धिर सु बिप्र ठाकुरकहिँ थाप्पिय
 मन्नत बंदि निर्लप सेवन मति, अमरचव बसि रान मयो अति ॥ ५ ॥
 बलि वे ग्राहके च्यारि४ बुलाये, लेस खिज्यो नहिँ हृदय लगाये ॥
 इकदिन अंध्र अंध्र घुमडे अति, कहिय प्रताप तबहिकाको प्रति६
 सुनहु जनके सासन अनुसारी, मचक जाँनु जिहिँ किन तुम मारी॥
 सो रीढेक सधिग अब सल्लत, घन जब होत तबहिँ दुख घल्लत ॥ ७ ॥
 यह नृप सहज सरलपन अकखी, रिस गिनि नाथ हृदय धरि रक्खी
 आतुर सठ नाइक अकुलायो, स्वीये नगर बग्योर सिधायो ॥ ८ ॥
 सक नव नभ धृति १८०९ समय होत सठ, हिय भय धारि बिरचि
 अनुचित हठ ॥

पुत्र भीम जुत नाथ पैलायो, अतिजय नगर सावडी आयो ॥ ९ ॥

१ पहर २ कुमार प्रतापसिंह को राणा करने के लिये ॥ १ ॥ ३ कैद में जाकर ४
 कुमार को पकड़नेवालों को ५ नीति युक्त ॥ २ ॥ ६ प्रतापसिंह के पिता को कैद
 किया तब ७ ब्राह्मण ॥ ३ ॥ ४ ॥ ८ कैद घर (जेलखाने) में सेवा की जिसको
 मानकर ॥ ५ ॥ ९ पकड़नेवालों को १० आकाश में ११ मेघ १२ नाथसिंह ॥ ६ ॥
 १३ पिता की आज्ञा के साथ चलनेवाले १४ घुड़ने की १५ पीठकी सन्धि में
 गई हुई ॥ ७ ॥ १६ सीधेपन से कही १७ अंध्र १८ अपने नगर बागोर गया ॥ ८ ॥
 १९ भागा ॥ ९ ॥

तैंहँ टिक्यो न करि पुनि त्वरितार्ह, देवलिया पहुँच्यो गरदाई ॥
उम्मट घैर तदनंतर आयो, व्याहन सगपन तत्थ विधायो ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

उम्मटकी कन्या उभय, परनि पिता१ अरु पुत्र२ ॥
बुंदी पुर आये बहुरि, तत्कत नृपहिँ तनुत्र ॥ ११ ॥

॥ षट्पात् ॥

सँक नव नभ धृति १८०९ समय श्रामँ श्रावन यँदँ आये ॥
देवपुरा लग समुख जाय बुंदीस बधाये ॥
चलन दँम्म सत चारि ४०० दये संभर नृप दिनप्रति ॥
बारह१२ बासरँ रक्खि विदा क्रिय बखसि बाजि कति ॥
तब नाथ१ भीम२ जनका दु तनय आये दुवर बुँढार इत ॥
माधव१ नरेस बखतेस२ जँहँ हे सम्मलि कछु काज हित ॥

॥ दोहा ॥

बखतसिंह१ मरुईस अरु, माधव१ जैपुर ईस ॥
मरहठन भेटन अमल, उभय२ मिले अवनीस ॥ १३ ॥
मालपुरा सन इक१ मिजल, भूपोद्धाव तँडाग ॥
पँहु कछवाह१ कबंधपति२, जत्थ मिले जय लाग ॥ १४ ॥

॥ षट्पात् ॥

सूनु सहित सीसोद नाथ तिन प्रति प्रयान क्रिय ॥
सुनि माधव१ बखतेस२ जाय सम्मुह बधाय लिय ॥
तदनु मरुप बखतेस छली तत्थहिँ वपु छोरयो ॥
न्याय रहित सठ नाथ मिलत माधवँ मन मोरयो ॥

१ शीघ्रता २ कुमर प्रतापसिंह को जहर देने की इच्छावाला ३ नरसिंह
गढ़ ॥ १० ॥ ४ उम्मेदसिंह को रक्तक देखकर ॥ ११ ॥ ५ आवण मास में ६
बुन्दी की चलन के ७ दिन ॥ १२ ॥ ११ ॥ ८ तलाव ९ ग्रभु ॥ १४ ॥ १० पुत्र
सहित ११ मारवाड़ के राजा छली बखतसिंह ने वहीं पर शरीर छोड़ा
बाधसिंह ने १२ माधवसिंह के मनको मोड़ दिया

कछवाह कहिय सीसोद मन करहिं तुमहिं मेवारपति ॥
 परताप नहिं नृपता उचित गरहु ताहि तुम पुब्बगति ॥ १५ ॥
 अग्न रान जगतेस अति, कूरम पाधव काज ॥
 कोटि १००००००० दम्भ निज स्वरचक्रिय, रोकन जेपुर राज ॥
 ऊरुज हरगोविंदके, कहैं सु उपेकृत गलि ॥
 कूरम नृप कुतघन भयो, जैन उदैपुर धलि ॥ १७ ॥
 वरजपो जदपि झलाय पति, कुसलसिंहकछवाह ॥
 मन्त्री तदपि न मदमति, अघ हिय धारि थाह ॥ १८ ॥
 नाथ भीर कूरम नृपहिं, सुनि भारत जसके ॥
 राघवदेव उमेद ४ ए, मिले आनि दृढ मन ॥ १९ ॥
 कनक छत्र धरि नाथ सिर, चामर बिछा दु ॥
 मिलि इतने गना मुलक, लूटन लगो आय ॥ २० ॥
 बखतसिंहके मरत इत, विजयसिंह अवनिस ॥
 तखतजोधपुरको लह्यो, सुभग छल धरि सीस ॥ २१ ॥
 घाड़ी बरस उमेद नृप, रबीय सहोदर दीप ॥
 परिनायो सावर नगर, मडि उछाह महीप ॥ २२ ॥
 सगताउत सगतेसकी, कन्या अनुप कुमारी ॥
 दुल्लहनि दीप बिवाहि तब, आयो निलय पधारि ॥ २३ ॥
 इत बुदीस उमेदकी, संतत सुहागिनि नारि ॥
 ऊदाउति रानिय लयो, दोहैदलछन धारि ॥ २४ ॥
 ताके अष्टम मासको, उच्छव मडि अनत ॥
 समरसिंह नृप कुल सकल, किय इकत मतिमत ॥ २५ ॥
 तदनतर नव ख धृति १८०९ सक, माघ त्रयोदसि १३ सेत ॥

१ जैसे पहिले पकड़ा था तैसे फिर पकड़ लो ॥ १५ ॥ १६ ॥ २ वैश्य श्रवणकार
 मूलकर ॥ १७ ॥ १८ ॥ ४ मारतसिंह और जसवतसिंह ॥ १९ ॥ ५ सुवर्ण का
 ६ स्वेत चमर ॥ २० ॥ ७ भूपति ॥ २१ ॥ ८ दीपसिंह को ॥ २२ ॥ ९ अपने
 घर ॥ २३ ॥ १० निरन्तर ॥ २४ ॥ २५ ॥ १२ शुक्ल पक्ष की

अजितसिंह नेपकै कुमार, ध्रुव सुभ अंक उपेत ॥ २६ ॥
जातकरम तब तास करि, निगम उक्त रचि न्याय ॥

नांदीमुख मुख श्रावण, लखन दिन लुटाय ॥ २७ ॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मे-

दासिंहचरित्रे कुमारप्रतापसिंहराणापट्टपापणानिजसेवकविप्राऽमरच-
न्दसचिवीकरणस्वामिपितससुतपितृव्यकनाथसिंहबुन्द्या ऽऽगमनबुन्दी
तृकमृत्युभ्रान्तपलायजयपुरजनपदरथकूर्मराजमाधवसिंह १ कबन्ध-
शसत्कृतनाथसिंहनाम्मिलनकृतकुक्कुत्पमरुपाऽजितसिंहिमरणाजायसिं-
राजबखतसिंहनानासिंहसहायार्थोदयपुरदापनाऽऽयुगमनश्रुतैतद्वार-
हिकृतघनीभवचतुष्टयनाथसिंहसहायीभवनच्छत्रचामराऽऽदितदर्पणा-
तसिंहाऽऽदिनदपाटलुण्टनवाखतसिंहिविजयसिंहयोधपुरगहिकोपविश-
राणाऽऽदिऽनुजदीपसिंहसावरपुरेशशीर्षोदिसाक्षिसिंहकन्योद्वहनगावराह-
नबुन्दी

उम्मेदसिंह के ॥ २६ ॥ २ आदि ॥ २७ ॥

१ राजावंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, उम्मेदसिंह के चरित्र में, कुमार प्रतापसिंह का राणा के पाट को पाना और अपने सेवक ब्राह्मण अमरचन्द को सचिव करना २ अपने पकड़नेवाले चारों उमरावों को विश्वासना और राणा से मृत्यु का सन्देश देनेवाले काका नाथसिंह का पुत्र सहित आगकर बुन्दी आना ३ बुन्दी के पति से उत्कार किये हुए नाथसिंह का जयपुर के देश में स्थित कछवाहे राजा माधवसिंह और राठोड़ राजा बखतसिंह से मिलना ४ पाप करनेवाले मारवाड़ के पति अजीतसिंह के पुत्र (बखतसिंह) का मरना ५ जयसिंह के पुत्र (माधवसिंह) का कृतघनी होकर नाथसिंह की सहाय के अर्थ उदयपुर देने का स्वीकार सुनकर भारत सिंह आदि चारों का नाथसिंह की सहाय होना और उसको छत्र चमर आदि देकर राणा के राज्य मेवाड़ को लूटना ६ बखतसिंह के पुत्र विजयसिंह का जोधपुर की गद्दी पर बैठना और बुन्दी के पति के छोटे भाई दीपसिंह का सावरपुर के पति शीर्षोदिया शक्तिसिंह की पुत्री से विवाह करना ७ रावराजा की राणी ऊदावति का गर्भ धारण करना और उनके आठ मास (आगरणी) का महोत्सव किये पीछे उसके राज कुमार अजीतसिंह के जन्म का इकताली

भार्ई दीपसिंहका कोटे जाना] सप्तमराशि-वाचस्पतिशमयूख (१६३७)

राइयूदाउत्तिदोददलक्षणाधरगातत्सीमन्तमहोत्सवाऽनुष्ठानसमयान्त
तद्राजकुमाराऽजितसिंहोद्गमनमेकचत्वारिंशो ४१ मयूख ॥ ४१ ॥
आदित ॥३२२॥

प्रापो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

तदनंतरं सक ख ससि धृति १=१०, बिसद चतुर्दसि राधं ॥

सोदर दीप सिकार गय, विरचि भ्रात हित बाध ॥ १ ॥

॥ षट्पात् ॥

मृगयाँ मिस प्रच्छन्न प्रात कढि दीपें सहोदर॥

कोटा गय चल बुद्ध अप्प १ इक १ इण्ड १ अनुचर ॥

कोटापति सुनि सचिव फल्ल मदनेस पठायो ॥

लैबेको नटि दीप नगर तबतो नहिँ आयो ॥

कायत्य अखैराम सु बहुरि आय याहि पुर लैगयउ ॥

पुनि जाहि कुमर पदवी महल दुजन सल्ल रक्खत भयउ ॥

इत यह सुनि बुदीस लैन निज सचिव पठाये ॥

तबहु दीप नटि तिनहिँ तरजिँ पच्छे पहुँचाये ॥

गागरनीपुर अभयसिंह रहोर सुता सुनि ॥

परनि ताहि हुत जाय दीप आयउ कोटा पुनि ॥

बुदीस हिँतु नाइक बिमन कछु दिन तत्थ अतीत करि ॥

गो पुनि संवाम पुर इदगढ देव कथिते दढ चित्त धरि ॥३॥

॥ दोहा ॥

अभयसिंह रहोरको, देवसिंह हो भौम ॥

सर्वा मयूख समाप्त हुआ ॥४१॥ और आवि से तीन सौ चारस १२२ मयूख हुए ॥

१ जिस पीछे २ बैराख सुवि ३ भार्ई से विरोध करके ॥ १ ॥ ४ शिकार के
मिस से ५ दीपसिंह ६ काला मदनसिंह को भेजा ॥ २ ॥ ७ घमकाकर ८ पुत्री
९ से १० वदास ११ यिताकर १२ स्त्री सहित १३ देवसिंह का कहना ॥३॥ १४ यहिनोई

पतनीके परतंत्र तिहिं, किन्नों अनुचित काम ॥ ४ ॥

पत्तन कोटा दीप प्रति, पठये यागति पत्र ॥

तुमकों बुंदिय होंस जो, आवहु तो द्रुत अत्र ॥ ५ ॥

तुमरे उप्पर तनकहु, अग्रज अनुकंपा न ॥

संत्र करन हमसों मिलहु, थप्पहिं ज्यों नृप थान ॥ ६ ॥

ए कग्गर सुनि इंद्रगढ, पहुँच्यो दीप प्रमत्त ॥

अग्रज हितु बिरोध इम, तद्वयो बालिसँ तँत ॥ ७ ॥

करि अनिष्ट बुंदीसको, देवसिंह धरि देस ॥

पठयो जैपुर दीपकों, विग्रह रचन विसेस ॥ ८ ॥

सुनि माधव जैपुर सुपहु, आवत दह उमाहि ॥

पठयो सम्मुह दीपके, सचिव मुख्य हरसाहि ॥ ९ ॥

कूरम गदिय कोन पर, बैठारयो सविनोद ॥

पटा हजार पचास ५०००० को, दयो नगर उकड़ोद ॥ १० ॥

आवत अंतरद्वारतक, चामर तास चलाय ॥

इम बुंदीपतिको अनुज, रक्खयो जैपुर राय ॥ ११ ॥

॥ पट्टपात् ॥

तदनंतर नभ चंद्र अठ अचला १८१० मित हायन ॥

माधवँ दिल्लिय दंग पत्त वनि प्रीति परायन ॥

सासन अहमदसाह दयो करि सोहि दिखायो ॥

कछु बासरँ तँहँ कहि सिक्ख लहि आलय आयो ॥

रघुनाथराय श्रीमंत सुत नन्ह अनुज जँवनेस जुत ॥

मग माँहिं मिलत सम्मति रचिय हरगोविंदहिं गहन द्रुत ॥ १२ ॥

१ स्त्री पराधीन ॥ ४ ॥ २ बुन्दी की चाहना है तो ॥ ५ ॥ ३ कृपा नहीं है ॥ ६ ॥ ४ मूर्ख ने ५ तहाँ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ६ भीतर की डोही तक ॥ ११ ॥ ७ माधवसिंह ८ प्राप्त हुआ ९ दिन १० वादशाह सहित ११ जयपुर के सचिव हरगोविन्द को शीघ्र पकड़ने के लिये ॥ १२ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

दिल्लिय गमन कुम्म जब किन्नो, बुदियपुर कग्गर तव दिन्नो ॥
कोऊ भट मम सग पठावहु, हितमें नृष अंतर जिन लावहु ॥ १३ ॥
तव भगवतसिंह माधानी, पठयो भूपति प्रीति प्रमानी ॥
वडे दिल्लिय माधव घर आयो, रक्खयो सचिव लोभ कछु छापो १४

॥ दोहा ॥

सिंह भयो नहिं लोभ सो, सिक्खदई खिजि साह ॥
हरगोबिंद अमात्यहु, लग्गो जैपुर राह ॥ १५ ॥
रक्षक ताकी सगहो, माधानी भगवत ॥
नन्ह अनुज मगमें मिलत, अमरख किन्न अनंत ॥ १६ ॥
पकरन हरगोबिंदको, बिटयो कटक बियारि ॥
भूप सुनहु भगवत भट, तहैं मारी तरवारि ॥ १७ ॥
मारि बहुत मरहठ भट, जित्यो दुद्धर जग ॥
कुम्म साचेव गहन न दयो, आन्पों जैपुर दंग ॥ १८ ॥
“इत सध्या १ हुलकर १ उभय २, अचल कमाऊ छोरि ॥
जट्टनके कुभेरगढ, लग्गो लरन बहोरि ॥ १९ ॥
खडू हुलकर पुत्रके, गोली लागिय मृत्य ॥
ततकालहि अकुलाय तिहि, तेज्यो कलेवर तथ ॥ २० ॥
लौ तव ताके बैरमें, कोटि इक दम दम्म ॥
दिल्लोपर दोऊ २ चढे, करन नन्ह जेपु कम्म ॥ २१ ॥
जवनईस सत्वर जबाहि, सुनि यह अहमदसाह ॥
मरहठन सम्मुह चल्पो, सजि निज कटक सिपाह ॥ २२ ॥

१ पत्र ॥ १३ ॥ २ साधोसिंहोत हाछा ३ हरगाथिन्द को वही रक्खा ॥ १४ ॥
॥ १५ ॥ ४ कोष ॥ १६ ॥ ५ सेना का विस्तार ॥ १७ ॥ १८ ॥ ६ पर्वत ॥ १९ ॥
७ मस्तक में ८ शरीर ॥ २० ॥ ९ दूध के रुपये १० नन्ह के विजय की कामना
से ॥ २१ ॥ ११ यादशाह १२ क्षीम ॥ १२ ॥

॥ पट्पात ॥

सक नभ ससि धृति १८१० समय प्रचुर लै दल दिल्लिय पति ॥
 सन्ध्या हुलकर समुख अनखि हंकयो सत्वर गति ॥
 मिलत सेन दुव २ मचिंग कलह दारुन करवाँलन ॥
 लुत्थिन लुत्थि बिलागि ठंकि छोनिय गज ठालन ॥
 चलि चउँ ४ प्रकार आयुध चपल बज अचल जिम रीठ बजि ॥
 दक्खिन अनीक जित्यो दुसह भीरु गयउ जवनेस भजि २३

॥ दोहा ॥

अहमदसाह पलाय इम, पच्छो दिल्लिय पत ॥
 खानकलीज हराम खल, पकरयो स्वाँमि प्रमत्त ॥ २४ ॥
 नयन फोरि जवनेसके, कारा पटकयो कूर ॥
 आलमगीर स नाम इक १, साह कियो बनि सूर ॥ २५ ॥
 अग्गहि खानकलीज इहिँ, लित्राँ नादर बुल्लि ॥
 अंध बंध अहमद कियो, खल विरोध अब खुल्लि ॥ २६ ॥
 मरहठे दब्बत मुलक, दिल्लिय पत्ते दोरि ॥
 कछु दम दम्म कलीज दै, किन्नों साम बहोरि ॥ २७ ॥
 अंबर ससि धृति १८१० अब्द इम, कितवँ कलीज कुचाल ॥
 गद्दी आलमगीरकों, बैठारयो मति बाँल ॥ २८ ॥
 कछु सिवाय धन भेट करि, निलज कलीज नवाव ॥
 मरहठे दुव २ मुकले, जेर करन पंजाब ॥ २९ ॥
 मारकेँ नादरसाहको, अहमदखान पठान ॥

१ बहुत सेना लेकर २ तरवारों से ३ हाथियों के निशानों से
 अथवा हाथियों के गिरने से भूमि ढकगई ४ मुक्त, अमुक्त, मुक्तामुक्त, और
 यन्त्रमुक्त, ये चारों प्रकार के चंचल आयुध चल कर ५ पर्वत पर ॥ २३ ॥
 ६ भगकर ७ अपने स्वामी (बादशाह) को ॥ २४ ॥ ८ कैद में ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥
 ९ छली १० बुद्धि में बालक ॥ २८ ॥ २९ ॥ ११ नादरशाह को मारनेवाला

उत्तरे वह उत्तरे अटक, आयो कटक अमान ॥ ३० ॥

जिहिं जनपद पंजाबमै, लिन्नो अमल जमाय ॥

हाकिम निज धरि बाहुरयो, इतको अमल उठाय ॥ ३१ ॥

तिनसों मरहठ्ठन तवहि, रची जाय द्रुत रारि ॥

उत किन्नो दिल्लिय अमल, थाना अपर बिहारि ॥ ३२ ॥

कतिक नगर पञ्चायके, लुट्टि सहित लाहोर ॥

मरहठे जय मत्त मन, आये जैपुर ओर ॥ ३३ ॥

मिलन काज मल्लारसों, नय पट्ट हृद नरेस ॥

बुदीसन करि कुच्च बलि, पत्तो जैपुर देस॥ ३४॥

माधव१ इह२मत्तार३ अरु, सध्या४विहित बिबेक ॥

मिलि च्यारिनिष्ठ सम्मलि रहत, कष्टे दिवस कितेक ॥३५॥

हरजन पुत दलेल तँहँ, हो जैपुरपति तत्य ॥

लाय हृदय नृप१ ताहि जौ, आयो निजय समत्य ॥ ३६ ॥

नृप माधवर गो जयनगर, हुल्लकर३ दक्खिन देस ॥

रक्षोरन उपपर चलयो, सध्या४ कुपित बिसेस ॥ ३७ ॥

इति श्री वशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशे ॥ १५ ॥

चरित्रे बुन्दीन्दाऽनुजदीपसिंहनिष्कसनतत्कोटागमनगागरणीशरठ्ठे

डाडभया शकने द्विष्टे न ते देव इति विनाशेन ब्रह्म

गासत्कृतद्वन्द्वेऽनुजदिल्लीगतकूर्मराजमाधवसिंहप्रत्यागमनाऽन

॥ ३० ॥ १ देश मे ॥ ३१ ॥ २ अन्य धाने निकाख कर ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४

३३३ ॥ ३५ ॥ ४ छुन्दी ॥ ३६ ॥ ३७ ॥

श्रीधरभास्कर महाशय के पतरायण के सप्तमराशि में, उम्मेदसिंह में, युन्दी के पति के छोटे भाई दीपसिंह का निकल कर कोटे जाना और गरगी के पति राठोड़ अमरसिंह की पुत्री से विवाह करना १ इन्द्रगढ़ के देवसिंह का फोरे हुए चित्त से दीपसिंह को जयपुर भेजना और हाथों के के छोटे भाई का सत्कार करके दिल्ली गये हुए कछवाहे राजा का पीछा आना २ इस के पीछे आनेवाले सचिव हरगोविन्द को पकड़ने

न्तराऽऽगच्छत्सचिवहरगोविन्दनिग्रहणानिमित्तश्रीमन्तनन्हालुजरघुना
 थराययुद्धकरणाजितयुद्धमाधासिंहडुमगवन्तसिंहहरगोविन्दजयपुरा
 नयनत्यक्तकमाऊगिरिहुलकर १ संध्या २ जट्टदुर्गकुम्भेरवेष्टनत-
 त्समरमल्लारपुत्रखड्गदूषणानीतकोटिदम्भ १००००००० तद्वैरोद्धर्तज
 या १ मल्लार २ दिल्लीशाहमदशाहविजयकलीजखानस्फोटितनय
 नयवनेशकारालैपणातदगदिकाऽऽलमगीरोपवेशनदत्तदमदव्यदाक्षि
 णसैन्यपञ्जावप्रेषणापरास्तीकृतनादरघनदिल्लीशाहीनीकृतपञ्जा
 वहुलकर १ संध्या २ जयपुरजनपदाऽऽगमनहृद्रेन्द्र १ कूम्भेन्द्र २
 तत्सन्मिलननीतिहारजनिदलेलसिंहरावराडबुन्द्याऽऽगमनमाधवसिं
 हजयपुरप्रविशनमल्लार १ दक्षिणगमनस्वमित्ररामसिंहसहायीभूत
 संध्याजया २ तद्योधपुरदापनार्थसज्जीभवनं द्विचत्वारिंशो ४२ मयू-
 खः ॥ ४२ ॥ आदितः ॥ ३२३ ॥

— प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ षट्पात् ॥

कारण श्रीमन्त नन्ह के छोदे भाई रघुनाथराय का युद्ध करना और
 युद्ध जीतनेवाले माधोसिंहोत हाडा भगवंतसिंह का हरगोविन्द को अयपुर
 लाना ३ कमाऊ पर्वत को छोड़कर हुलकर और सिन्धिया का जाट के कुम्भेर
 गढ़ को घेरना और उस युद्ध में मल्लार के पुत्र खड्ग का मरना ४ उस के चैर में
 फोड़ रुपये लेकर जया और मल्लार का दिल्ली के पति अहमदशाह को विजय
 करना ५ कलीजखां का बादशाह के नेत्र फोड़कर कैद करना और उसकी
 गद्दी पर आलमशाह को बिठाना ६ दंड का धन देकर दक्षिण की सेना का
 पंजाब में भेजना और नादरशाहके मारनेवाले को हराकर पंजाब को दिल्ली-
 शा के अधीन करके हुलकर और सिन्धिया का जयपुर के देश में आना ७ हाडों
 के इन्द्र और कछवाहों के इन्द्र का उनसे मिलना और हरजन के पुत्र दलेल
 सिंह को लेकर रावराजा का बुन्दी आना और माधवसिंह का जयपुर प्रवेश
 करना ८ मल्लार का दक्षिण में जाना और अपने मित्र रामसिंह का सहायक
 होकर जया नामक सिन्धिया का उसको जोधपुर देने के अर्थ सज्जित होने का
 बयालीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ४२ ॥ और आदि से तीन सौ तेईस मयूख हुए ॥

सिन्धियाजीजोधपुरपरचढ़ाई] सप्तमराशि-अध्याहारिणमयूख (३९४३)

रूपनगर नृप राजसिंह जय देह त्याग किय ॥
सूनु ज्येष्ठ सामतसिंह तब तास तखत लिय ॥
अनुज बहादुर बहुरि भ्रात सामत निकारघो ॥
लिन्नी गदिय छिन्नि छत्र अप्पन सिर धारयो ॥
सिरदारसिंह निज सुत सहित नृप सामत बिपत्ति सहि ॥
लिय तबहि आय सध्या सरन राम मरुप जिम दीन रहि ॥१॥
॥ दोहा ॥

तक नभ ससि धृति १८१० समयही, उदयनैर इत एह ॥
रान प्रतापहु रोगवस, तजत भयो निज देह ॥ २ ॥
तब जो करामाहि हुव, राजसिंह सुत तास ॥
सो नृप भो दस१० बरस वय, पै नहि नीति प्रकास ॥ ३ ॥
॥ पट्पात ॥

रूपनगर नृप संसुत सग सामतसिंह १ अब ॥
त्योही मरुपति रामसिंह१ दोउन२ इम लौ तब ॥
सध्या सेनहि सज्जि चल्पो इनके अरि मारन ॥
दोउन२ निज भुव दैन विदित निज किति बिचारन ॥
सुनि एह बहादुरसिंह इत विजयसिंह सम्मलि गयउ ॥
मेरता नगर दुव२ दल मिलत सक सिव धृति सगर भयउ ॥४॥
॥ दोहा ॥

विजय बहादुर१ उभय२ उत, इत सामत१ रु राम ॥
संध्या३ दुहुँन२ सदाय कर, कलि मढयो जय काम ॥ ५ ॥
॥ सारङ्ग ॥

संध्या जया ओ विजैसिंह रठोर, यौ मेरता खेत जुट्टे बडे जोर ॥

१ बहा पुत्र रछोटे भाई बहादुरसिंह ने ३ मारवाड के पति रामसिंह की भाति
॥ १ ॥ २ ॥ ४ कैद में ॥ ३ ॥ ५ पुत्र सहित ६ युद्ध छुड़ा ॥ ४ ॥ ७ युद्ध रचा
॥ ५ ॥ जया नामक सिन्धिया और जोधपुर के राजा विजयसिंह राठोड ने

ारी मच्यो सेसके सीसपै भार, भो*कुंडली सो। फटा डारि फुंकार ६
 बाराहकी दहमें पीरवहै पूर, होनै लग्यो †कामठी पिठिको चूर ॥
 कंपे सबै ‡दिक्करी ×चिक्करी पारि, धुज्जी ॥ धरित्रीहु भै कल्पको धारि ७
 आदित्य आभा गई धूलितैं ठंकि, लोकेस अठ्ठां परे सोकमें संकि ॥
 घाँयाँ बढ्यो धूमकी धार अंधार, उलंघिबे सेतु लग्गे अकूपार ८।
 चाँ सस्त्र संबाहिनी बाहिनी बेग, दोऊर मिली ओ चली उज्जली
 तेग ॥

आकर्षाँ अँचे करैं चाप टंकार, सन्नद संधा करैं जुष्टि जुज्झार ९
 फट्टै गिरैं तुंड मूर्द्धा अलीकांऽऽलि, कट्टै कट्टै नेत्र ओ उच्छट्टै पौलि
 भ्रूपक्ष्म ओ कूर्प बुट्टै मनो मेह, लोल्ला करैं के कटी नासिका लेह १०
 छोनी छबै गँल्ल ओ संखके तोम, सोहै गिरे रत्तमें मासुरी लोम ॥
 तुट्टै उट्टै तालु त्यों दह ओ दंस, कट्टै कूँकाटी कहीं कंधरा अंस ११

मेड़ताक खेत में इस प्रकार बड़े बल से युद्ध किया और शेष के मस्तक पर चडा
 भार मचा. वह * सर्प † फणों को धारण करनेवाला. बाराह की दाढ़ में पूर्ण
 पीड़ा होकर ‡कमठ की पीठ का चूर्ण होने लगा और §दिशा के सब द्वाधी
 ×चीख मारकर धूजे, ॥ पृथ्वी भी १ प्रलय का भय करके धूजी ॥ ७ ॥ २ सूर्य
 की क्रांति धूलि से ढक गई, आठों लोकपाल भय भीत होकर शोक में पड़े
 धुएं की धारा से ३ दिशा दिशाओं में अंधेरा बढगया और ४ समुद्र भी सी
 सा लांघने लगा ॥ ८ ॥ इस प्रकार ५ शस्त्रों से अंगों को मर्दन करनेवाली
 दोनों सेना ६ घटा के वेग से चली जहां उज्जली तरवार चलने लगी ७ कान
 तक खँचे हुए धनुष टंकार करते हैं और सज्जित हुए वीर युद्धकरके नहीं भगने
 की वा विजय की ८ प्रतिज्ञा करते हैं ॥ ९ ॥ मुख ९ मस्तक १० ललाटों की
 पंक्तियां फट कर गिरती हैं, नेत्र कट कर निकलते हैं और ११ कानों के अग्र
 भाग उछटते हैं १२ भौंहें और १३ कुहनियां मेघ के समान वरसती हैं, कितनी
 ही कटीहुई १४ जिन्हाएं नासिका को १५ चाटती हैं ॥ १० ॥ १६ गाल और १७
 ग्रीवा के १८ समूह से भूमि ढकती है और रुधिर में गिरे हुए १९ मूखों के केश
 शोभा देते हैं इसी प्रकार तालुआ, दाढ़ और २० दांत तूटकर उड़ते हैं, कहीं
 पर २१ गले का मणिया (घांटी) गर्दन और २२ कंधे कटते हैं ॥ ११ ॥

केते चिरैं कंकटी खगकी धार, जुज्मार केते करैं पाग कटार ॥
 कहैं कहां वीर मातंगके दंत, फटैं कहां पेट ओ उच्छटैं अंत ॥२॥
 नचैं कहां विष्णुरे घुम्मि के रुड, जचैं कहां घुंज्जटी मालकों मुड ॥
 डोलैं कहां डाकिनी रत्तसों मत्त, मौडैं कहां जुगिनी रत्तसों गत्त ॥३॥
 जुटैं कहां जोध के मल्ल संग्राम, फुटैं कहां फीलमें कुत उदाम ॥
 कुक्कैं कहां भोरुवै सेस कंकाल, हुक्कैं कहां हायकें घाय बेहाल ॥४॥
 दगैं कहां लोपकों तोप बदूक, लगैं कहां उच्छलैं फाल मईक ॥
 चक्खैं कहां गौद गिद्धी बड़ी चाह, अक्खैं कहां साकिनी वाह
 वाह ॥ १५ ॥

कुहैं कहां एकही पायतैं रुड, मुहैं कहां नैन के भू गिरे मुड ॥
 वज्जैं कहां माधुरी नारेंदी बीन, पुज्जैं कहां कालिका लैं बपा
 पीन ॥ १६ ॥

फेरैं कहां भूपहे" छत्रकी छाँड, गेरैं कहां अच्छरी कठमें बाँड ॥

कितने ही १ कवच धारण करनेवाले खड्ग की धारा से चिरते हैं और कई घोषा
 फटारों को पार करते हैं, कहीं पर वीर लोग रक्षाधियों के वत निकालते हैं और
 वहाँ पर पेट फटकर आते उछलती हैं ॥ १२ ॥ कितने ही को घित रुड घूम कर
 नचते हैं और कहीं पर मुंडमाणा बनाने को ३ शिख मस्तक मांगते हैं कहीं
 पर डाकिनिया रक्त से मत्त होकर फिरती हैं और कहीं पर योगिनियाँ ४
 शरीर से शरीर को रगड़ती हैं ॥ १३ ॥ कितने ही वीर कहीं पर मल्लयुद्ध
 करते हैं, कहीं पर ५ द्वाधियों में ६ रुकावट रहित आगे फूटते हैं, कितने ही
 कायर ७ आसिय पजर बाकी रह कर झुकते हैं और कहीं पर हाय हाय कहके
 व्याकुल होकर झुकते हैं ॥ १४ ॥ कहीं नाश करने को बदूकें और तोपें चलाती
 हैं जिनके लगने से कहीं पर ८ मैदक की छलांग के समान उछलते हैं कहीं
 पर गिद्धनिया पड़ी चाह से मांस खाती हैं और कहीं पर साकिनिया प्रथसा
 करती हैं ॥ १५ ॥ कहीं पर रुड एक पैर से कूदते हैं, कितने ही मुड ६ श्रुमि
 पर गिरतेहुए नेत्र बंद करते हैं, कहीं पर १० नारद की मधुर घोषा बजती है
 और कहीं पर पुष्ट मज्जा लेकर वीर लोग काली को पूजते हैं ॥ १६ ॥ कहीं पर
 राजा छत्र की छाह में ११ घोड़े फेरते हैं, कहीं पर अप्सराएं वीरों के कंठ में
 मुज डालती हैं, कहीं पर वीर आगे बढ़कर तलवार मारते हैं और कहीं पर

मारैं कहीं अगगवहै खगग सामंत, हारैं कहीं उच्चैरैं दंत हाहंत ॥ १७ ॥
 भूमैं कहीं कुंभिके कंठसों जाय, घुमैं कहीं वीर के तीरके घाय
 रंगैं कहीं जोध के रत्तमें मुच्छ, मंगैं कहीं प्रेतनी गोदके गुच्छ ॥ १८ ॥
 गैमर्थ चोफार फटैं कहीं तत्त, मानो जगन्नाथके भक्तके पत्त ॥
 बज्जैं कहीं वृत्त सारंग बिरफार, उडैं कहीं सोरके जोर अंगार ॥ १९ ॥
 खज्जूरिसे तुट्टि भंडे भुकैं लोल, जंगी बजे गोभुंका भरिका डोल ॥
 हुल्ले फिरैं निड्डिकैं भिन्न वेतंडे, फल्ले फिरैं फेरंधी कोक फेरंडे ॥ २० ॥
 बानैत केते भैरैं भूतको बत्थ, सोहैं घनैं मारते संकुत्ते सत्थ ॥
 कटैं कहीं उच्छैटैं चौर ओ छत्र, पापी छुकैं भरवी लौहिताऽमत्र ॥ २१ ॥
 यों मेरता खेत मंड्यो महाजुद्ध, जुट्टे भले दक्खिनी कालसे क्रुद्ध ॥
 संध्या जैया आत यों दत्त गो दोरि, नवखा विजैसिंहकी फोज भू-
 खाति ॥ २२ ॥

दौ मार रट्टोर डारे घनैं कुट्टि, ओ तोपखौना खजाना लये लुट्टि ॥
संध्या यहै जंग जिते बडे जोर, भज्जयो विजैसिंह गो दुंग नागोर ॥ २३ ॥
 हारैहुए १ खंद से हाहाकार करते हैं ॥ १७ ॥ कहीं पर वीर लोग हाथियों के
 कंठ से जा लगते हैं, कहीं पर बाणों के घावों से घूमजाते हैं, कहीं पर ३ ऊधिर
 से बूछें रंगते हैं और कहीं प्रेतनिषां ४ चरवी के समूह मांगती हैं ॥ १८ ॥ उस
 युद्ध में कहीं पर ५ हाथियों के मस्तक चार फांक होकर पड़ते हैं सो मानों जग
 न्नाथ के भात के ६ पात्र फूटते हैं, कहीं पर गोलाकार हुए ७ धनुष का ८
 शब्द होता है और कहीं पर बारूद के चल से अंगारे उड़ते हैं ॥ १९ ॥ कहीं
 पर खजूर के समान ९ चपल भंडे तूटते हैं और कहीं युद्ध संवधी १० गोमु
 खे (बाघविशेष) ११ नौवत और ढोल बजते हैं १२ कटेहुए हाथी हलने से नीठ
 फिरते हैं और १३ गीदड़नियां (स्यालनियां) १४ वृक (भोड़िये) और १५ गीदड़
 फूलेहुए फिरते हैं ॥ २० ॥ कितने ही बानाबंध (युद्ध से नहीं भगने की प्रतिज्ञा)
 का चिन्ह रखनेवाले) श्रुतों को बाधों में भिरते हैं और १६ भरेहुए (अवकाश
 रहित) बहुत साथ को मारतेहुए शोभा पाते हैं, कहीं पर चक्कर और छल कटकर
 गिरते हैं और देवी १७ लोह से भराहुआ पात्र पीकर तृप्त होती है ॥ २१ ॥
 १८ दत्ता नामक जया सिन्धिया का भाई मारता हुआ गया ॥ २२ ॥ १९ विज
 यसिंह नागोर के गढ़ में भाग गया ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

विजयसिंह मरुभूर भजि, गयो नगर नागोर ॥

जाय बहादुरदुख्यो, रूपनगर रहोर ॥ २४ ॥

प्रथम विजयसिंहहिं दमन, जया तवहि बरजोर ॥

तोपन जाल कराल रचि, गढ विंद्यो नागोर ॥ २५ ॥

इति श्रीवराभारकरे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशाशुम्भेदसिंह
चरित्रे रूपनगराऽधिराजसामंतसिंहस्याऽनुजबहादुरसिंहसविप्रहविस्त
रणाकलुषिकुहककनिष्ठनिष्कासितसमून्वयजसन्ध्याजयाशरणाऽऽ
सादनमेदपाटेगराणाप्रतापसिंहमरणात्तत्पुत्रराजसिंहोदयपुरपट्टपाप
णासरामसिंह १ सामन्तसिंह २ जया ३ योधपुर १ रूपनगरो २ द्वर
णाऽर्थप्रस्थानश्रुतेतत्सनहादुरसिंह १ मरुविजयसिंह २ समुखाऽऽ
गमनभेरतानगमहाऽऽयोधनविरचनलुण्ठितवैरिविभवजयाजयाऽनु
ष्ठानपत्तापितविजयनागोरदुर्गप्रविशनम्क्षानमुखबहादुरसिंहरूपनग
राऽऽगमनपरिथतपाणिपीडनजयानागोरकोट्टाऽऽवरणीभवन त्रिच
त्वारिंशो ४३ मयूख ॥ ४३ ॥ आदित ॥ ३२४ ॥

॥ २४ ॥ १ दृढ देनेको ॥ २५ ॥

श्रीविशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, उम्भेदसिंह के चरि
त्र में, रूपनगर के पति सामन्तसिंह और छोटे भाई बहादुरसिंह का सविप्रह बह
ना और पापी छत्तीछोटेभाईक निकाशेपुत्र सहित यबे भाईका सिन्धिया जया
का शरण लेना १ मेघाढ के पति राजा प्रतापसिंह का मरना और उसके पुत्र
राजसिंह का उदयपुर का पाट पाना २ रामसिंह और सामन्तसिंह सहित
जया का योधपुर और रूपनगर के निकालने के अर्थ गमन चुन कर बहादुर
सिंह सहित मारवाड के पति विजयसिंह का समुखा आना ३ मेघता नगर म
घहा युद्ध करना और शत्रु के धैमघ को लूटकर जया के जय करने से भागकर
विजयसिंह का नागोर के गढ में प्रवेश करना और मन्त्री मुख बहादुरसिंह
का रूपनगर में आना ४ एही दृष्टांते हुए जया का गमन करके नागोर को
घेरने का तियाक्षीसथा मयूख समाप्त हुआ ॥ ४३ ॥ और आदि से तीन सौ
बाईस ३२४ मयूख हुआ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा—छुदी नृप उम्मेद इत, रामानुज मत धारि

देस बिथारी रीति दृढ, संप्रदाय अनुसारि ॥ १ ॥

प्रतिमा इक १ श्रीरंगकी, दक्खिन हिंतु मँगाय ॥

सिव धृति १८११मित सकसुक्रबदि, एकादसि ११तिथि पाय २

मंडिर महलनमाँहिँ रचि, सिल्प बिबिध मत संकत ॥

बिरचि प्रतिष्ठा निगम बिधि, बह थप्पी अति भक्त ॥ ३ ॥

तबतँ यह श्रीरंगको, अतुल पट्ट उच्छाह ॥

जेठ असित एकादसी ११, होत राम नरनाह ॥ ४ ॥

याहि बरस १८११ को उज्जँ सित, छट्ठी ६ बासर पाय ॥

भूप भुजिँष्याहू जन्यो, सुत गुमानजुत राँय ॥ ५ ॥

नाम तास सिवसिंह दिइ, जातकं द्विजन बिचारि ॥

तदनंतर जो दुष्ट हुव, सुनहु भूप हित धारि ॥ ६ ॥

सक जगती धृति १८१२माघ सित, सुँक्र बार रँसर दीह १३

ऊदाउति रानिय जन्यो, कुमर बहादुरसीह ॥ ७ ॥

अजितसिंह १ अरु यह कुमर, सोदर दुव २ सु कुमार ॥

बाल छँपाकर जिम बढत, दिन दिन अधिक उदार ॥ ८ ॥

बिजयसिंह मरुपाल इत, रूँढ नगर नागोर ॥

संध्याको संकट सहत, कछु न जनावत जोर ॥ ९ ॥

बरस इक १ घेरा रह्यो, तोपन लग्गो ताप ॥

संध्या नहिँ जावत सह्यो, दुपहर जेठ दिवाँप ॥ १० ॥

व्याकुल तब बखतेस सुत, चूक बिचारिय चित्त ॥

॥ १ ॥ १ से २ प्रमाणवाले सम्बत् में ३ ज्यैष्ठ बदि ॥ २ ॥ ४ नाना प्रकार
समर्थ मतों से ॥ ३ ॥ ५ बदि ॥ ४ ॥ ६ कार्तिक सुदि ७ दिन द राजा की
सखान स्त्री ९ गुमानराय ॥ ५ ॥ १० जन्म ॥ ६ ॥ ११ ज्यैष्ठ मास १२ कामदेव
दिन (तेरस के दिन) को ॥ ७ ॥ ११ द्वितीया के चन्द्रमा के समान ॥ ८ ॥
नागोर में घिरकर ॥ ९ ॥ १५ सूर्य ॥ १० ॥

बिजैसिंहफाछलखेसिन्धिपाफोमारना]सधमराशि-चतुअत्वारिंशमयूख(३६४६)

दुवर् *इदे पडिहार दुत, बुल्ले दे घहु तिवित ॥ ११ ॥
 अगो सन इदे रहत, मरु जनपदके माहि ॥
 चूक करनमें जे चतुर, न करै मरतहु नाहि ॥ १२ ॥
 पावै मरुपतिके पटा, विनु सेवा रहि गेह ॥
 काम परै जब चूकको, अप्पै तव निज देह ॥ १३ ॥
 करै यहहि सेवा कठिन, जब तव सभव होय ॥
 इतर काल कहैं घरन, खिजे देत असु खोय ॥ १४ ॥
 अगो जिन सुमियाणगढ, विजड जवन लिय मारि ॥
 मरत ठरे नहि नैक मन, विरच्यो चूक विचारि ॥ १५ ॥
 अभयसिंह मरुईसको, पुनि निज आयस पाय ॥
 पीलू लखपति दक्खिनी, दुवर् दिय मारि गिराय ॥ १६ ॥
 कोलो हम या गति कहैं, इदनको आचार ॥
 जे रचि वाजी जीवकी, खेल्हे अजब खिल्हार ॥ १७ ॥
 तिहि कुलके दुवर् धीर तव, इदे बुल्लिय अर्थ ॥
 कह्यो इनहु संध्या कुटिल, तिन प्रति धन्वपै तैय ॥ १८ ॥
 सुनत जपाकी सेनमें, उभयर् वनिक वनि आय ॥
 वनिज विथारयो वचकन, विपणि बजार बनाय ॥ १९ ॥
 दुवर् हि लरे पुनि इक दिन, समुक्त क्रीत हिसाब ॥
 कल्पित कछु अपराध करि, खिजि खिजि होत खराब ॥ २० ॥
 वकत परस्पर जैन वनि, उभयर् तित्यगर आन ॥
 पलटत पायन धौतपट, होत पदखैन हान ॥ २१ ॥
 सिथिल पैघ सिरतै सरकि, उरमी कठन आय ॥

* ईदा शाखा के पडिहार चतुरिंश तं घन ॥ ११ ॥ † मारवाड देश में ॥ १२ ॥
 ॥ १३ ॥ § अन्य समय १ प्राण ॥ १४ ॥ २ सुमियाणा में ॥ १५ ॥ ३ दुकान
 ॥ १६ ॥ १७ ॥ ४ यहा बुलाये ५ मारवाड के पति ने ६ तथा ॥ १८ ॥ ७ ठगों
 ने ८ दुकान ॥ १९ ॥ ९ कय करने (मोछखेने) का हिसाब समझने को ॥ २० ॥
 १० घोवती ११ जूतियों का दान (प्रहार) ॥ २१ ॥ १२ डीली १३ पघड़ी

कलम गई गिरि कानतैं, मुख गल स्वास न माय ॥ २२ ॥

इक कहैं कहिहौं अबदि, गिनि रखी मैं गूढ ॥

* मोदक खावत मात तब, माखो † उंदुरु मूढ ॥ २३ ॥

जपैं ‡ इतर तेरे जनक, छली § जिनोदित छोरि ॥

मक्खी दस १० घृत माँहितैं, नक्खी जियत निचोरि ॥ २४ ॥

गहत इक पत्थर गडयो, दैबैकोँ करि दाव ॥

खैंचत बिटपन इक खिजि, घल्लत गालिन घाव ॥ २५ ॥

जिम तिम बिरचत करि जतन, अधोबाँत उतसर्ग ॥

लखि इत उत बिहसन लगे, बल दक्खिन भट बर्ग ॥ २६ ॥

इक मारत मुठ्ठी उछरि, खिजि इक दंतन खात ॥

संध्याकी डोढी गये, लरत प्रहारत लात ॥ २७ ॥

धौतबसन अंतर दुहुँन २, कछि कछि दढ कोपीन ॥

दुव २ असिधेनु देरायँ तँहँ, लरन भये इम लीन ॥ २८ ॥

लरत बनिक कौतुक लखत, उलटयो कटक अपार ॥

प्रहसन रूपक जिम प्रचुर, प्रकटयो हास्य प्रचार ॥ २९ ॥

स्मित १ कति जन कति जन हसित २, बिहसित ३ कतिक बनात

॥ २२ ॥ * लड्डू खाते समय † चूहे को ॥ २३ ॥ ‡ दूसरा कहता है कि तेरे पिता ने § जिन (अर्हन्त) के कहने को छोड़कर अर्थात् अर्हन्तों के कहे हुए अहिंसा धर्म को त्यागकर ॥ २४ ॥ ? वृत्तों को ॥ २५ ॥ २ अपशब्द (गुदा के पवन) का निकालना ३ दक्षिण की सेना के ॥ २६ ॥ २७ ॥ ४ धोती के भीतर ५ छुरियें ६ छुपाकर ॥ २८ ॥ ७ हास्य के नाटक के समान बहुत ॥ २९ ॥ रसतरंगिणी में हास्य रस के बारह भेद लिखे हैं सो हम भी रसतरंगिणी के सातवें तरंग के अनुसार लिखते हैं कि हास्य रस दो प्रकार का है जिन में एक तो स्वनिष्ठ (अपने आप हसना) और दूसरा परनिष्ठ (दूसरे का हसना) जो उत्तम मध्यम अधम पुरुषों में रहकर छः प्रकार का है। जिनमें छः प्रकार का स्वनिष्ठ और छः प्रकार का परनिष्ठ मिलकर बारह भेद हुए हैं। उत्तम पुरुषों में स्वनिष्ठ और परनिष्ठ दोनों में स्मित और हसित होता है। और मध्यम पुरुषों में स्वनिष्ठ, परनिष्ठ, बिहसित और उपहसित होता है।

कतिक करत बक्रोष्टिका४, कति अतिहास५जनात ॥ ३० ॥
 अट्टहास६ कतिकन उदित, आच्छुरितक७ कति अग ॥
 कतिकन अवदसित८ रु कतिन, परि उपदसित९पसग ॥ ३१ ॥
 कहूँ दग बिकसन सकुचन, ओठ फुरकनहु उप्पि ॥
 बढयो प्रेमथदेवत विसँद, रस सध्या दत्त रूपि ॥
 करत दतधावन करम, जया पँटालय जत्थ ॥
 कोतुक यह अकख्यो कतिन, तासों जाय रु तत्थ ॥ ३३ ॥
 बनिक लरत देखे बहुत, मुष्टी मल्लकें मार ॥
 पै इक रारि अपुव्व प्रभु, दरसनीय निज द्वार ॥ ३४ ॥
 देखत जन पकरत उदर, दुरसद इसन दुखात ॥
 कोतूदत्त यह लखनको, जुरे छुँ नहिँ जात ॥ ३५ ॥
 सध्याके सिर यह सुनत, अतकं छायो आय ॥
 बुल्लयो तब बुल्लहु बनिक, निराखि निवेरैं न्याय ॥ ३६ ॥
 इस भाखत सँहसन अनुर्ग, दभिन लाये दोगि ॥

तथा अधम पुरुषों में स्वनिष्ठ और परनिष्ठ, अपहसित और अतिहसित होता है इनमें थोड़े से कपोल फूलने, दन्त नहीं दीखने और नेत्रों के प्रान्त से अच्छी तरह देखने को स्मित कहते हैं कपोलों का फूलना और थोड़े स दातों का दीखना, इस हास्यको हमित कहते हैं । समय के अनुसार जिस हास्य में वस्त्रम शब्द होवे, मुख का सुकड़ना और मुख पर लाली दीखे, उसको विहसित कहते हैं नासिका फूलना, देवी हृष्टि होना गरदन का सुकड़ना और स्पष्ट शब्द होना इसको उपहसित कहत हैं । उद्धत होवे, नेत्रों से अश्रुओं का वदय होवे, मस्तक झिलता होवे, अत्यन्त स्पष्ट शब्द होवे, उसको अपहमित कहते हैं । अत्यन्त उद्धत, बहुत आसु आवे, बहुत अत्यन्त शब्द होता होवे पासमें होवे उसको पकड़लेवे, हाथ से ताक यजावे जिसको अतिहसित कहते हैं ॥ ३० ॥ ३१ ॥ यहा कहीं तो लक्ष्य से हास्य को बताया है और कहीं लक्ष्यसे बताया है सो पाठक जोग जान लें १ शिव है देवता जिसका और २ श्वेत है रंग जिसका ऐसा हास्य सिन्धिया की सेना में खड़ा हुआ ॥ ३२ ॥ ३ दातण (दत्तन) करता था ४ खेरे में ॥ ३३ ॥ ५ दन्त मारकर ६ देखने योग्य ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ७ काख ॥ ३६ ॥ नौकर ॥ ३७ ॥

लातन नख दंतन लारत, झुकत गये भंभोरि ॥ ३७ ॥
 अति समीप जावत अटक, प्रतिहारने किय पूर ॥
 रारि तदपि अदभुत रचत, दंभी न रहे दूर ॥ ३८ ॥
 कहत इक अपराध करि, मारत यह पुनि मोहि ॥
 इतरै कहत संध्या अधिप, करत न्याय सबकोहि ॥ ३९ ॥
 तू सठ तोलत छद्म तकि, लुट्टि अजानन लेत ॥
 धौटिकादिक मनके धरत, दीनन ऊनित देत ॥ ४० ॥
 पुनि कहि इम दंतन पयन, लरे नखन रिस लाय ॥
 तालिन दै संध्या तकै, गालिन देत गिनाय ॥ ४१ ॥
 कहि छुरिन जावत निकट, दई जया उर दोरि ॥
 गटकत हिय कालिक गई, फोरी पंजर फोरि ॥ ४२ ॥
 देत समय बुल्ले दुवरहि, होत अचानक हाक ॥
 कहिये संध्या न्याय करि, को हममाहिं कजाक ॥ ४३ ॥
 भाखि यह रु सत्वर भजत, मारयो इक १ असि मार ॥
 कढिगो इक १ रोवत कुहंक, इक्खहु यह अंधार ॥ ४४ ॥
 ॥ षट्पात् ॥

कोलाहल हुष कटक मरत संध्या कुल इनके ॥
 भये रुदनके राग छिपै दुंदुभि छत्तिनके ॥
 बिजैसिंह मरुईस सुनत किय मोद सिवायो ॥
 अभयसिंह सुत अधम पिहुल आतुर दुख पायो ॥
 सक दुव मृगांक बसु इक १८१२ समय धिठन इम छल बेस धरि ॥
 मरुपाल^{३३} साल संध्यामय सु कहुयो इंदन जतन करि ॥ ४५ ॥
 १ द्वारपालों ने निकट जाने से बहुत रोका २ तोभी ॥ ३८ ॥ ३ अन्य ॥ ३९ ॥
 ४ छल ५ पंचसेरी आदि ६ कमती ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ७ हृदय और फलेजे को
 निगल कर शरीर को हलकेपन से फोड़कर गई ॥ ४२ ॥ ८ युद्ध करनेवाला
 छली हममें कौन है ॥ ४३ ॥ ९ शीघ्र १० छली ॥ ४४ ॥ ११ शीघ्र १२ बहुत
 १३ मारवाड़ के पति को १४ ईदा चत्रियों ने ॥ ४५ ॥

विजैसिंह का सिन्धिया से संधिकरना] सप्तम राशि-पञ्चत्वारिंशमपूज (३१५३)

॥ बोहा ॥

जया तनय जनकू जवहि, पट्ट जनकको पाव ॥

बिंदि रक्षो नागोर बलि, तोपन रारि, रचाय ॥ ४६ ॥

इति श्री वशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणो सप्तम ७ राशावु-
म्मेदसिंहचरित्रे बुन्दीश्वरनिगाऽऽलपरचितसुमन्दिरश्रीरङ्गप्रतिष्ठाप
ननिजराइयूदाउत्तपौरसराजकुमारबहादुरसिंहोद्गमनकुमारशिवसिंहभु
जिष्वाजठरजन्मप्रापणनागोरदुर्गस्थरष्टोडविजयसिंहव्याकुलीभवन
तत्प्रेषितकृतवाशिग्वेशेन्दोपटङ्गिप्रतिहारद्वय २ जयामारणाप्राप्तजन
काऽधिकारतत्पुत्रजनकूनागोररगारवन चतुश्चत्वारिंशो ४४ मयूख.
॥ ४४ ॥ आदित ॥ ३२५ ॥

प्रायोवजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ रोला ॥

विजयसिंहको बिंदि कैलइ जनकू व्याकुल किय ॥

करि तब सधि कवध दम्भ दसलक्ख १००००००० दड दिय ॥

जनक लपो अजमेर अब सु पच्छो डरि अप्प्यो ॥

बलि सभरपुर घट थान दायादैहिं थप्प्यो ॥ १ ॥

निर्लय जयाके नाम विविध मजुल वनवाये ॥

मेरता १ रु नागोर २ लैरजि बहु दम्भ लगाये ॥

१ फिर नागोर को घेरा ॥ ४६ ॥

श्रीवशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में, उम्मेदसिंह के च-
रित्र में, बुन्दी के पति का अपने मण्डलों में पनाये हुए अष्ट मन्दिर में, औरण की
प्रतिष्ठा करना और अपनी राणी जवावलि के वर से राजकुमार बहादुरसिंह
का जन्म होना १ कुमार शिवसिंह का दासी के पेट से जन्म पाना २ नागोर
के गढ़ में स्थित राठाड़ विजयसिंह का व्याकुल होना और सब के भोजे
पनिषो के पेशवाले ईवा पक्षीवाले दो पक्षिहारों का जया को मारना ३ पिता
का अधिकार पाकर उसके पुत्र जनकू का नागोर में युद्ध रचने का चमालीसवा
मयूख समाप्त हुआ ॥ ४४ ॥ और आदि से तीन सौ पक्षीस १२९ मयूख हुए ॥
२ युद्ध में १ भाई (दायभाग पानेवाले) रामसिंह को ॥ १ ॥ ४४ मकान ५ सुन्दर ६ धूजकर

करि जनकू अब कुंच अनखि पच्छो मुरि आयो ॥

रूपनगर सन रारि बिरचि रहोर दबायो ॥ २ ॥

सकुचि बहादुरसिंह मन्नि अतिबल मरहइन ॥

आनि मिल्यो डर आनि प्रकट दिखराय नम्रपन ॥

रूपनगर खाली कराय सामंतहिं दिन्नौ ॥

याहि कृष्णागढ अपि कुंच जनकू पुनि किन्नौ ॥ ३ ॥

काका दत्ता संग बहुरि समसेरबहादुर ॥

सुत बाजेरायसौ एह जनम्यौ जवनीउर ॥

इन दोउनर जुत उलटि धैप्यो जनकू दक्खिन धर ॥

छुंदिय आवत भूप जाय सम्पुह लायो घर ॥ ४ ॥

सबको करि सतकार मंडि मंजुल महिमानी ॥

संभर दिय पुनि सिक्ख बिहित हित मय कहि बानी ॥

कोटापति इत कुमति अधिक चक्खी आकूती ॥

बाजीकरण विनोद आनि मंडन रत ऊती ॥ ५ ॥

तास नसा करि तबहि खेदहुव देह खपावन ॥

अतिजगती धृति १८१३ अब्द श्रामं वरखा ऋतु आवन ॥

बेलर्क कृष्णाबिलास व्याधि करि देह बिहायो ॥

सचिव भल्ल मदनस बेग तब अजित बुलायो ॥ ६ ॥

द्विज इक दानतिराय द्रंग अनता पठयो हुत ॥

विष्णुसिंह नांती सु अजित बुल्लयो पित्तल सुत ॥

याकौ तब द्विज एह लैघुहि अनता सन लायो ॥

अब्द पचास५० अवस्थ लृढ गहिय बैठायो ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ २ ॥ १ बहादुरसिंह को ॥ ३ ॥ २ सुखलमारी के उदर से ३ दौड़ा (शीघ्रता से गया) ॥ ४ ॥ ४ सुन्दर ५ घोड़े के समान मैथुन करने को वैद्यक में बाजीकरण कहते हैं ६ फ्रीड़ा ॥ ५ ॥ ७ श्रावण मास ८ कृष्णाबिलास नामक भाग में ९ अजितसिंह को ॥ ६ ॥ १० पोता ११ पृथ्वीसिंह का पुत्र १२ शीघ्र ही ॥ ७ ॥

अग्नेजोकोफालकोटरीमेंकैदकरना] सप्तमराशि-पञ्चमस्वारिशमयूक्त (११५५)

इत सन्ध्या उज्जैनतैं, यह सुनि दत्ता आय ॥

कोटा बिटिय अनख करि, सेना अयुत १०००० सजाय ॥ ८ ॥

बुल्लयो हमरे हुकम बिनु, अजितसिंह हुव ईस ॥

अप्पहु यातैं दंड अब, श्रीमतहि गिनि सास ॥ ९ ॥

मुदा बारह लक्ष १००००० मित, दिव्री तब सहि दह ॥

दक्खिनको फैलो दुसह, असो तंदर अखड ॥ १० ॥

आयो इत उत्तरि अटक, उद्धत कटक अमानैं ॥

मारक नादरसाहको, अहमदसाह पठान ॥ ११ ॥

सक अतिजगती धृति १०१२ समा, व्यापत समय बसत ॥

किन्हीं जिह्म मथुरा कतल, इत्पा पर सठ इतैं ॥ १२ ॥

आतप कैतर पुनि गयउ, मोखम लगगत गेह ॥

मनुज हजारन मारिकैं, ओतु सुनन जुत एह ॥ १३ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

पुर मकसूदाबाद १ ललामक, मुहि मुरसिदाबाद १ जुग २ नामक ॥

बगदेस अतर तदासक, जवन सिराजुद्दौला सासक ॥ १४ ॥

जिह्म इग्नेज जमत इत जानैं, पुनि करि अमल बढत पहिचानैं ॥

सचिव कोहु तैस पुर ढाका सन, धुंत अछुत लै भज्यो बहु धन १५

सुपै रह्यो अग्नेजन सरनैं, बल जिनको सब सिर जग बरनैं ॥

इत्पादिक हेतुन नबाव यह, सजि पैठो कलकत्ता साग्रह ॥ १६ ॥

जिति पुर सु सहसन सेनाजुन, दुर्ग फोर्टेबिलियैम १ जिन्नो हुत ॥

पुर जिह्म रस चउ ससि १४६ मित पाये, जे अग्नेज प्रबलपकराये १७

अति सैकट कारा ते अटके, पै माये न तदपि तैंह पटके ॥

॥ ८ ॥ ६ ॥ १ प्रताप ॥ १० ॥ २ अयाप ॥ ११ ॥ ३ परम हिंसा
४ कुल ॥ १२ ॥ ५ गरमी (घूष) से कायर ६ मिल्ही ७ कुत्तो सहित ॥ ११ ॥ ८
वहाँ का रहमेवाला ९ हाफिम ॥ १४ ॥ १० उसका कोई सचिव ११ वह धूर्त
अहता घन लेकर भगा ॥ १५ ॥ १६ आग्रह सहित ॥ १६ ॥ १७ कलकत्ते के किले
नाम है ॥ १७ ॥ १४ वधे सकड़े (लग) कैद घर में धाले, परन्तु उसमें नहीं

इहिँ*संकट कैदी व्याकुल अति, गुन रवि १२३ मित दबि मरे
कौटगाति ॥ १८ ॥

जियत बचे तेईस२३ प्रीत जिम, मंदराज यँहँ सुँदि सुनी इम ॥
तब कर्नेल क्लेब१साहब तह, सज्जि लारन नवसत१०९गोरनसह१९
सत पंद्रह१५००मित अवर सिपाइन, हुत आयोअहिँतन हियदाइन
आश्रम ससि बसु ससि १८१४ सक आगम, समर रच्यो सुँचि ४
गिम्ह२ समागम ॥ २० ॥

कलकता जिति सु अरि काढे, बलि नबाब उत्तर दँल बाढे ॥
सत अयुत७००००बल सह अग्रेसर,सज्यो नबाब पँलासी संगर२१
भिरत भज्यो सु कँल तोपन करि, लखो बिजय अंग्रेज अतुल लारि
अमल कंपनीको तादिनँ उत, देस बँग विच कछुक जम्यो हुत२२
॥ दोहा ॥

इंद्रगढाधिप देव इत, पाप कुमाय प्रमत्त ।
नृपके सोदर दीप पँहँ, पठये जैपुर पत्त ॥ २३ ॥
यह उँदंत तिनमँ लिख्यो, अब डरि भूप उमेद ॥
अँप्पहि लैन अमात्यकौ, भेजहि लखि हुत भेद ॥ २४ ॥
मनहु मनायँ मति सुँमति, रक्खहु धीरज रंच ॥
विन्नति हम दक्खिन बिखँय, पठई नीति प्रपंच ॥ २५ ॥
कछु बँसु नजरि निवेदिकँ, लौ श्रीमंत निदेस ॥
अप्पहिँ हम करिहँ अँरहि, बुंदीनगर नरेस ॥ २६ ॥

माये तो भी उसमें जवरी से डाले * इस सकड़ाई में १ एक सौ तेईस अंगरेज
कीड़ों की तरह दबकर मरगये ॥ १८ ॥ २ प्रभात समय ३ खयर ॥ १९ ॥ ४ शत्रु-
ओं के हृदय जलाने को ५ आषाढ षकृष्णपक्ष, यह मरुभाषा के रोम से गिम्ह
हुआ है जिसका अर्थ पाप है और पाप का रंग श्याम है ॥ २० ॥ ७ सेना उत्तर
दिशा में बढाई ८ आगे होकर ९ पलासी नामक नगर में ॥ २१ ॥ १० काख रुपी
तोपों से ११ उस दिन १२ बंगाले में ॥ २२ ॥ २३ ॥ १९ वृत्तान्त १४ आपको ॥ २४ ॥
१५ हे बुद्धिमान् १६ देश में ॥ २५ ॥ १७ धन १८ शीघ्र ही ॥ २६ ॥

मरहठोंका जैपुरका भोमदुर्गजेना] सप्तमराशि-पञ्चत्वारिंशमधूख (३११७)

भावी बसि ए भूपके, पाये दूतन पत्र ॥

नृप उमेद देवहिं गिन्यों, ए सुनि पाप ॥ अमल ॥

॥ गीतिका ॥

इत सकरी धृति १८१४ अन्द लगगत सेन दक्खिनतें चली ॥

रघुनाथ १ मालिक नन्ह सोवर ओ मलार २ बढे बली ॥

दल आत बुदियके समीप नरेस सम्मुह जातभो ॥

महिमानि दे इक १ रति रक्खि रु वेव पत्र दिखातभो ॥ २८ ॥

रघुनाथ पल मलार संजुत वचिकें नृपके कह्यो ॥

तुम ईस मारहु देवसिंहहि पाप पापिय ज्यो चह्यो ॥

करि कुच यो कहि वक्खिनी जयनैर छोनिंय सचरे ॥

गढ भोष नामक बिंटे कोपन जाल तोपनके जरे ॥ २९ ॥

कछवाहके भट ते भजे सब भोमदुर्गहिं छोरिकें ॥

इन आन मडिय अप्पनी ततकाल जो गढ तोरिकें ॥

पुनि टोंक पत्तन घेरि घत्तन देस जैपुरको दल्यो ॥

कछवाह माधव भूप सो सुनि आजिकों नहिं उज्जल्यो ॥ ३० ॥

इति श्रीवशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणो सप्तम ७ राशायुग्मे-
दसिंहचरित्रे जयावैरनिमित्तजनकूदशिङ्गतविजयसिंहदमदम्मलक्ष्म-
शक १०००००० सहिताऽजमेरद्वङ्गमहाराष्ट्रनिवेदनसम्भरपुरविभाग
रामसिंहाऽर्पणामेता १ नागौर २ सन्ध्यासद्धानिर्माणनप्रास्थितजनकू-
रूपनगरभारक्षेपणातत्पुरसामन्तसिंहीयकरणावहादुरसिंहाऽर्यकृष्णा

॥ पाप का पात्र ॥ २७ ॥ २८ ॥ । माखिक हो सो २ जयपुर की मूर्ति में गये
॥ २९ ॥ ३ गुह्य को ४ नहीं पढा ॥ ३० ॥

श्रीवशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, चम्मेदसिंह के चरित्र
में, जया के वैर के कारण विजयसिंह को दख देकर जनकू का दखके दशा लाख
रुपयों सहित अजमेर नगर मरहठों की भेट करना और रामसिंह को गढ में
सामर पुर देना १ मेड़ता और नागौर में सिंधिया के मकान बनाकर गमन कर
के जनकू का रूपनगर पर भार डालना और उस पुर को सामन्तसिंह का

गढदापनबुन्दीदक्षिणायियासुससैन्यसन्ध्याभोजनकोटेशदुर्जनशल्य
मातुलानीमत्तमृत्युपापणसचिवाऽऽदितत्पट्टाऽनतेशाऽजितसिंहबन्धन
तन्निमित्तसन्ध्यादत्तद्वादशलक्ष १२००००० कोटादण्डद्रम्मसमुद्धर
णालङ्घितकरतोयानादरषाहमारकपठानाऽहमदपाहकुमारिकागमन
मथुरामहापुरीप्राणीमात्रप्राणवियोजनसोदरदीपसिंहसम्बन्धिदेवसिं
हविरचितवर्णादूतबुन्दीन्द्रदर्शनसमल्लारनन्हाऽनुजरघुनाथरायोदगाग
मनदर्शितदेवसिंहदलसम्भरेशतत्सन्मनननीतभौमदुर्गमहाराष्ट्रजयपु
रदेशदलनं पंचचत्वारिंशो ४५ मयूखः ॥ ४५ ॥ आदितः ॥ ३२६ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

नृप उमेद करउर नगर, इत गय अवसर पाय ॥

देव१ रु दोलतसिंह१ दुव२, इहाँ जैनक सुत आय ॥ १ ॥

नैति जुत लग्गे नृपति पय, बैठे मिसल बिचारि ॥

कहयो भूप तुम हित करत, स्वामि धरम अनुसारि ॥ २ ॥

इंद्रगणेश्वर देव इह, बुल्लयो अनृत बनाय ॥

करके बहादुरसिंह को कृष्णगढ देना २ दक्षिण की इच्छावाले सिन्धिया का
सेना सहित बुन्दी में भोजन करना और कोटा के पति दुर्जनसाल का भांग
(माजुम) में महन होकर मरना ३ सचिव आदि का उसका पट्ट (मिरपेच)
“प्राचीन काल में पांच आमली के सरपेच को राज्य चिन्ह मानते थे” ३ सचिव
आदि का उसका पट्ट अणता नगर के पति अजितसिंह के बांधना और उसके
कारण सिन्धिया के दिये दंड के वारह लाख रुपये कोटा से लेना ४ अटक नदी
लांघ कर नादरशाह के मारनेवाले पठान अहमदशाह का आर्यावर्त में आकर
मथुरा में प्राणी मात्र के प्राणों का वियोग करना (मारना) ५ छोटे सगे भाई
दीपसिंहके सम्बन्धी देवसिंह के रचेष्ट पत्रों को बुन्दी के पति का देखना और
मल्लार व नन्ह के छोटे भाई रघुनाथराव का उत्तर दिशा में आना ६ देवसिंह
के पत्र दिखाकर चहुवाणों के पति का उनका सन्मान करना और भोसगढ
को लेकर मरहठों की सेना का जयपुर के देश को पीसने का पैतालीसवां
मयूख समाप्त हुआ ॥ ४५ ॥ और आदि से तीन सौ छहस १२६ मयूख हुए ॥

१ पिता और पुत्र ॥ १ ॥ २ नञ्जता सहित ॥ २ ॥ ३ झूठ बोला

सेवक हम प्रभुके सकल, करें हुकम मन काय ॥ ३ ॥

॥ मनहस ॥

सुनिकैं इतेक नरेस वे देल खुलिकैं,
 उनको दये उनके लिखे सब खुलिकैं ॥
 तिन्ह वचि देव सिटाय नाँ कछु खुलियो ॥
 तब भूप कुप्पि निदेस मारनको दयो ॥ ४ ॥
 रु कही दयो हँय नाँहि सो हम भुलये ॥
 तुमनै तथॉपि विरोध बीज इते बये ॥
 कहि यों हन्यो वद देव सोक सँभारतैं ॥
 पकरयो सु दोलतसिंह खग निकारतैं ॥ ५ ॥
 करि कैद बुदिय दुग ताकँहँ प्रेसयो ॥
 अरु अप्प इंदगढारूप पत्तनमैं गयो ॥
 निज आन मडिय रक्खि हाकिम वहाँ भले ॥
 उनके वैधूजन नैनवा सब मुकले ॥ ६ ॥

॥ अमरावली ॥

नृपनै हम पत्तन इंदगढारूप लयो, रहिकैं कछु बासर केतन गडि
 दयो ॥

पुनि लैन परगनकों पैंतना पठई, भट ता बिच सुख्य सु तोक
 भयो बिजई ॥ ७ ॥

ध्वजिनीं यह बुदिय आन रचत फिरैं, भट कोउ न तासन सत्रु
 दकालि भिरैं ॥

सुनिकैं यह खतउली पति आतभयो, नृपके दलपैं सहँसा रतिवा
 ह दयो ॥ ८ ॥

वजि हक ललक बढी धमचक मची, निसमैं चउसटि ६४ अचानक

॥३॥ १पत्र मगाकर २हुकम ॥४॥ पहिले ३ घोडा नहीं दिया था सो तो ४तोभी
 ५शोक करते हुए को ॥ ५ ॥ ६ इंदगढ नामक पुर में ७ स्त्रीजन ॥ ६ ॥ ८ कुछ
 दिन रहकर ९ ध्वजा रोप दी १० सेना ॥ ७ ॥ ११ सेना १२ अचानक ॥ ८ ॥

आय नची ॥

तजि निंद रु तोकहु लै समसेर चल्पो, सु मनो बड़वानल सागरपै
उभल्यो ॥ ९ ॥

उमछ्यो जनु कन्ह कुसस्थलके रनपै, पटक्यो बैपु सत्रुनकी सम
सेरनपै ॥

हनुमंत किलंकहिँ लैन मलंगि बढ्यो, कपिलेश्वरके मुखतै जनु
साप कह्यो ॥ १० ॥

इम तोक रजोगुनमैं छकि रंग रूप्यो, लखिकैं तिहिँ खँतवली
दल जात लुप्यो ॥

बखतावर त्यों सुहुकम्म कुलीन बली, भट सम्मुह जाय रची धम
चक्र भली ॥ ११ ॥

बेनु घोटक दोउनर की तरवारि बही, कबलों सु कही नृप राम
न जात कही ॥

तरकैं समसेर बिदारि बकतरकों, उछटैं सिरतुटि निरंतर अंबरकों
फटि टोप गिरे बिखरे दसतान दिपैं, लगि लोहित छुटि छुछन
छोनि लिपैं ॥

बरछीन कितेक महाबल बेध करैं, कमनैत कितेक कलंबन प्रान
हैं ॥ १३ ॥

तरवारि तनुत्रनमाँहिँ दुरैं दमकैं, चुभि भइ बलाहकैं ज्यों न्हादिनी
चमकैं ॥

उछटैं गल गाल रु भाल कपाल कहैं, बिनु मस्तक केक कबंध
कराल अटैं ॥ १४ ॥

भिरिकैं इम संहारि सत्रुनके भट के, बखतावर १ तोक २ बनें बट-
के बटके ॥

॥६॥ १ कन्नोज के २ शरीर को शत्रुओं की तरवारों पर पटका ॥१०॥ ३ युद्ध में
४ आतली की सेना ५ छुलवाले ॥११॥ ६ बिना घोड़ों के ७ आकाश में ॥१२॥
दक्षिण की ८ भूमि १० वायों से ॥१३॥ ११ कवचों में १२ मादधे के मेघ में १३ बिजुली

राजाक[इदगढ परकिसेआदिषनाना]सप्तमराशि-षट्चत्वारिंशमयुक्त(३६६१)

गिरितैं हुवर बुंदियकी पतनां बिगरी, पहुँची मजि सभर भूपति पै
सिगरी ॥ १५ ॥
पुनि हह्मनके पति सेन घनी पठई, द्रुतही तिहिँ बुदिय आन फिरा
य दई ॥
कर लैन लगे फिरि हाकिम बुदियके, दठ मोर्ध भये सब सधुन
के हियके ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

अनघोरा१ अरु ढीपरी२, लै रु अमल निज कीन ॥
ग्राम इदगढके सकल, किय इत्यादि अधीन ॥ १७ ॥
ग्राम ढीपरी माँहिँ गढ१, बधयो नृप रन बट्ट ॥
त्योहिँ इदगढ अद्रिपर, रच्यो दुर्ग चतुर्दर ॥ १८ ॥
कृत्रिम इक१ आयत कियउ, महलन मध्य निवान ॥
बलि बिम्भासनि देविगिरि, सुभग रचे सोपान४ ॥ १९ ॥
सँदानित पुनि देव सुत, दोलतसिंह जु कीन ॥
तारागढ तँहँ असु तजे, आमये कछुक अधीन ॥ २० ॥
नृपति पठाई नैनवा, याकी मात रु नारि ॥
याकै तँहँ हुव पुत्र इक१, सोहु मरथो गँद धारि ॥ २१ ॥
द्रुत नृप बुँल्लयो देवको, भक्तराम तब धात ॥
दयो कृपाकरि इदगढ, जाहि अब्द त्रय जात ॥ २२ ॥
कछु यह हम भावी कह्यो, बलि क्रमतैं अब बत ॥
इम नृप लीनों इदगढ, घल्लि धँत पर घत ॥ २३ ॥
वेद इहु धृति१८१४ अब्द बिच, मौधव माधवँ मास ॥
खतोली पतिहु दयो, इम नृप दैल सिर प्रास ॥ २४ ॥

१ सेना ॥ १५ ॥ २ व्यय ॥ १६ ॥ १७ ॥ ३ पर्वत पर ४ श्री बुरजा
(पार बुरजवाला) ॥ १८ ॥ ५ यनाया हुआ मोटा (पगथिये) (सीढियें) ॥ १९ ॥ ७ कैद
८ प्राण ९ रोग के अधीन ॥ २० ॥ १० रोग ॥ २१ ॥ ११ शीघ्र बुलाया ॥ २२ ॥
१३ घात पर घात ॥ २३ ॥ १४ असन्त ऋतु १४ वैशाख मास में १५ सेना पर ॥ २४ ॥

तोक महासिंहोत तँहँ, जैतगढाधिप जोध ॥

तिल तिल तेगन तुट्यो, रचि बहु सन्नुन रोध ॥ २५ ॥

अपराधीको मारि इम, नृप आयो निज नैर ॥

जैपुर पर मल्लार इत, बंध्यो दुद्धर बैर ॥ २६ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणो सप्तम ७ राशाबुम्मेद-
सिंहचरित्रे बुन्दीशकरउरदंगगमनसमाहृतदर्शिततत्पत्रेन्द्रगढेशदेव-
सिंहमारणातदीयतनुजदोलतसिंहदुर्गकाराक्षेपणातस्त्रीजननयन -
पुरप्रेषणारावराजेन्द्रगढगमनतद्भूमिशासनाऽर्थससैन्यतोकसिंहप्रेष-
णाखतोलीशतत्सौप्तिकरचनतोकसिंहबखतावरसिंहमरणाबुन्दीपुत-
नापलायनपुनःप्रेषितभटदेवसिंहदेशस्वीकरणाढीपरी १ न्द्रगढ २ च
तुरदुर्गनिपाना ३ दिविन्ध्यवासिनीगिरिसोपानादिसमनुष्ठानसन्दा-
नितदोलतसिंहकाराकलेवरहानजाततत्पुत्रनयनपुरमरणावराड्बु-
न्द्याऽऽगमनमल्लारजयपुरवैरबन्धनं षट्चत्वारिंशो ४६ मयूखः ॥४६॥

आदितः ॥ ३२७ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

१ जैतगढ का पति ॥ २५ ॥ २६ ॥

श्रीवंशभास्करमहाचम्पूके उत्तरायण के सप्तमराशिमें, उम्मेदसिंह के चरित्र में
बुन्दी के पति का करवर नगर में जाना, मंगायेहुए उसके पत्र दिखाकर इन्द्र-
गढ के पति देवसिंह को मारना १ उसके पुत्र दोलतसिंह को गढ में कैद करना
और उसकी स्त्रियों को नैणवा पुर में भेजना २ रावराजा का इन्द्रगढ जाना
और उसकी श्रुति को आधीन करने के अर्थ अपनी सेना सहित तोकसिंह
को भेजना ३ खातोली के पति का उस पर रतिवाह देना और तोकसिंह व
बखतावरसिंह का मरना ४ बुन्दी की सेना का भागना और फिर भेजेहुए
वीरों का देवसिंह के देश को लेना, ढीपरी और इन्द्रगढ में चार बुरजोंवाला
गढ, जलाशय, विन्ध्यवासिनी के पर्वत पर स्तिष्ठियें आदि करना ४ कैद किये
हुए दोलतसिंह का कैद में मरना और उसके जन्मेहुए पुत्र का नैणवानगर में
मरना ५ रावराजा का बुन्दी आना और मल्लार का जयपुर से वैर करने का
छियालीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ४६ ॥ और आदि से तीन सौ सत्ताईस
मयूख हुए ॥ ३२७ ॥

जनकूकोराजाकामहिमानीदेना]सप्तमराशि-सप्तचत्वारिंशमयूक (३११३)

॥ षट्पात् ॥

अकखी माधव अगग हमहु जैपुरपति व्हैहैं ॥
तवहि रामपुर तुमहिं दुवैर दि हुलकरपति वैहैं ॥
बरस सत्त७ गय बित्ति दगर कूरम नहि दिन्नैं ॥
पातैं हुलकर सज्ज कटक जैपुर पर किन्नैं ॥
माधव नरैस सुनि भीत मन दम्भ लक्ख ग्यारह११००००००दये
बनि नम्र परगन जुत बहुरि ए दुवैर पत्तन अप्पये ॥

॥ दोहा ॥

पत्तन चन्द्राउतनको, रामपुरा१ सह देस ॥
जो लिन्नो जयसिंह सो, किन्नो हुलकर पेस ॥ २ ॥
टोक नगरके प्रात ढिग, दूजो२ रामपुरा१ सु ॥
कहिपत रायवसतको, वह दिन्नो डरि आसु ॥ ३ ॥
दुवैर पुर जनपदं सङ्गित दै, तव भेट्यो इम त्रास ॥
दक्खिनको दल टारि विय, माधव माधव मास ॥४॥

॥ हरिगीतम् ॥

सक बान चन्द्र भुजग भू १८१५जपनैर यो जनकू बढयो ॥
सन्ध्या जया सुत सेन सज्जि रु देस दक्खिनतैं चढयो ॥
गोदावरी नदि लघि त्यों अवैरग पत्तन लघयो ॥
झुरहान पत्तन लघि बेग मिलान मेकलजा दयो ॥ ५ ॥
अोकार ईसहिं पुज्जि यो जनकू अवतिष उत्तरयो ॥
गढ भैसरोर मुकाम वै दरकुच दकत जो परयो ॥
सुनि एह बुदिय भूप तथहि जायकै हित मढयो ॥
महिमानि जिम्मत जाहु यो कहि नैर लावनको भयो ॥६॥
तैंहैं इदगढपति देवकी तिष पत्र बिन्नति मूकली ॥

१ दोनो रामपुरे ॥ १ ॥ २ ॥ ३ शीघ्र ॥ ४ ॥ ५ देश सहित ४ माघसिंह ने
५ वैशाख मास में ॥४॥ ६ इपर ७ अवरगाथाद ८ नर्मदा नदी पर ॥ ५ ॥ ६ ॥

अरु यों लिखी तुम अह छोनिये लेहु पियैखहु जो भली ॥
 तैंहिं बचिकैं जनकू कहे कटुबैन बुंदिय भूपसों ॥
 हमरो सहाय बनायकैं तुम निक्खसे दुख कूपसों ॥ ७ ॥
 हमरो निदेश लयैं बिनां तुम ईष्ट अप्पन नां करो ॥
 उनकाँ ब अप्पहु इंदगढ निज राज्य प्रभुपन जो धरो ॥
 सुनि हड्ड बुल्लिय पेसवा तुमरे जु प्रानन ईसहै ॥
 तिनकाँ सुनाय करी कही सुनि रावरी इत रीसहै ॥ ८ ॥
 करनां तुम्हैं हितमाँहिं अहितहि तो ब हम घर जायैं ॥
 तुम सज्जि आवहु जंगकाँ अब हड्ड हथ दिखायैं ॥
 आयो यहै कहि भूप बुंदिय साज संगरके भये ॥
 सुनि यों मलार^१ रु नन्ह भ्रात^२ निवारि दोउन^३काँ दये ९
 जनकू जया सुत कुंच कै तब पत्त जैपुर बेगही ॥
 कछु दम्म माधव दंड दै डरि नम्रता गति के गही ॥
 पुनि सुक्रतालन जीवखाँ सन जायकैं जनकू लरयो ॥
 नहिं तथ मिच्छ रुदिल्लसों मरहड्ड भार सह्यो परयो ॥ १० ॥
 लय^३ अब्दसों रनथंभ गिरि इत फोज दक्खिनकी लरैं ॥
 बिच साहके भट सज्ज ते नहिं दुर्ग छोरन अदरैं ॥
 लरतैं परंतु छतीस^{३६} मास बिताय व्याकुल वे भये ॥
 खंडारि जैपुर दुर्ग ही ढिग तथ कैंगर प्रेसये ॥ ११ ॥
 कछुवाह सेवक साहको इम ताहि हम गढ अप्पिहैं ॥
 मरिजाहिं पै मरहड्डकाँ रनथंभमैं नहिं थप्पिहैं ॥
 तुम छन्न आवहु रतिमैं हम दुर्गतैं कहि जायैं ॥
 पचरंग केतर्न कुम्म भूपतिकोहि अथ रुपायैं ॥ १२ ॥

^१आधी श्रुमि ^२अच्छी देखो सो लो ॥७॥ ^३अपना चाहा हुआ (अला), ^४अपने राज्य का स्वामीपना चाहते हो तो ॥८॥ ^{१०} ॥ ५ पत्र भेजा ॥११॥ ^६कछुवाहा बादशाह का सेवक है इस कारण ७ राजि में छुप कर आओ द ध्वजा ॥१२॥

रनयभमेजैपुरकाअधिकारखेना] सप्तमराशि-सप्तचत्वारिंशमयूष (३९६५)

खडारि मुख्य अनोपासिंह हुतो पचेवरिको धनी ॥
 खगार बसिप वचि जो दैल रति गो सजिके अनी ॥
 लखि साह सेवक ताहि तब रनयभ अतर लौगये ॥
 तिहिं झारि खगन नन्द वीर भजाय बाहिरके दये ॥ १३ ॥
 कटि साहके भट वर्ग दिखि जाय छैत निधेदपो ॥
 इम वान भू धृति १८१५ पोस सित रनयभ कूरमके गयो ॥
 सभार खान १ रु पान २ के तैंहैं कुम्भ सचित के करे ॥
 बारूद १ सीसक २ वित्त ३ रक्खि तहाग जीरणा उदरे ॥ १४ ॥
 ॥ दोहा ॥

बहुरि दुग्ग रनयभ ढिग, जपपुर छवि अनुसार ॥
 निज नामक माधव नगर, रच्यो विविध बिसतार ॥ १५ ॥
 हुलकर पैंहें पठयो हुकम, सुनत एह श्रीमत ॥
 दुर्गा लेहु रनयभ हुत, अब करि जैपुर अत ॥ १६ ॥
 तते वह पठयो तबहि, वै हुलकर दैल सग ॥
 गगाधर दरकुच गति, जितन आयो जग ॥ १७ ॥
 जनपदे नागरचाज जिहिं, कैमि पतन कक्कोर ॥
 कीनों जैपुर कटकसों, जुद्ध तुमुल बरजोर ॥ १८ ॥

॥ पट्पात ॥

अतिजव हयन उठाय धरयो पैरदल गगाधर ॥
 मढ्यो आयुध मेह दुरयो बढि खेह दिवौकर ॥
 खुदि पहुमि हय खुरन दुरन लग्गे सागर जल ॥
 लग्गे पैंवय गुरन मुरन अतलादि महीतल ॥
 काहुको भयो नहिं जय कलहैं पै बहु भट कटि कटि ॥

१ खगारोत १ पञ्च ३ सेना सजकर ४ सीतल ॥ १३ ॥ २ यहु वृत्तांत (हाल) अरज किश
 ६ सामग्री ॥ १४ ॥ ७ सहश ॥ १५ ॥ ८ शीघ्र ॥ १६ ॥ ४ सेना ॥ १७ ॥ १० देवा ११
 पाकर ॥ १८ ॥ १२ शत्रु की सेना में १३ सूर्य १४ पर्वत १५ युद्ध में

इम पहुमि लुत्थि छादित मनहु, बनिजकार टंडा ठरिग ॥१९॥

॥ दोहा ॥

सुभट मरे रन पंचसत ५००, इत उतके अँनुरत्त ॥

घाय दुसह लग्गे घनैँ, गंगाधरके गैत्त ॥ २० ॥

जैपुर बड उमराव जुग२, परे भिन्न तजि प्रान ॥

सत्यासी ८७ तिनके सुभट, मरे इतर छकि मान ॥ २१ ॥

जोधसिंह१ अभिधान इक१ नाथाउत कछवाह ॥

मिसल दाहिनीको मुकुट, चोमू पत्तन नाह ॥ २२ ॥

बगरूपति दूजो२ बहुरि, कूरम चतुरभुजोत ॥

रन गुलाबसिंहहु रह्यो, बाम मिसल उद्योत ॥ २३ ॥

ए२ उमरावन अग्रणी, जैपुरके गिरि जात ॥

भये न सम्मुह इतर भट, दुर्मन भाव दिखात ॥ २४ ॥

इत तंते गंगाधरहु, घन खगन सहि घाय ॥

तब मुरखो दक्खिन तरफ, करन अनारमय काय ॥ २५ ॥

समाँ अष्टि धृति१८१६ प्रमित संक, लगगत ऋतु हेमंत ॥

अग्रहनमैँ ए कुम्म दुव२, हुव गतप्रान लरंत ॥ २६ ॥

इत गंगारधकोँ मुरखो, सुनि हुलकर मल्लार ॥

जैपुर पर हंकयो जबहि, पहुँ रचि कटक प्रसार ॥ २७ ॥

॥ षट्पात् ॥

दक्खिनधरको थंभ चढ्यो हुलकर जैपुरपर ॥

दरकुंचन करि दोर अँवनि दब्बत डारत डर ॥

जैनपद नागरचाल प्रथम बिंटयो उनियारा ॥

भयो चकित भोमीसँ धरनि फुटत हय धारा ॥

मानों१बनजारों की बादल पड़ी है ॥१६॥२प्रीति युक्त शरीर में ॥२०॥ ४अन्य-
५ इज्जत में छक कर ॥ २१ ॥ ६ नाम ॥ २२ ॥ २३ ॥ ७ उदासीनता ॥ २४ ॥ ८
शरीर को नैरोग्य करने को ॥ २५ ॥ ९ सम्बत १० विक्रम के शक का ॥ २६ ॥
११प्रभु ॥२७॥ १२पहिली, १३नागरचाल देश में १४ शेषनाग १५घोड़ों की दौड़से

राजाकाहुकरकेसमीपपरवाहजाना]सप्तमराशि-सप्तचत्वारिंशमयूक्त (३१६०)

सिरदारसिंह *नारव नमित सियन जोरि लग्गो पयन॥
 तिहिं दहि गमन अगों कियव हुलकर लागि जैपुर अयन२८
 कुसथल मृत फतमल तास हुव रतनसिंह सुत ॥
 ताको इक लघुपुत्र नाम विक्रम सादस जुत ॥
 जगतसिंह रठोर हिंतुं सहसा रचि सगर ॥
 छिन्नि नगर बरवाड भयो पति अप्प बधि घर ॥
 इहिंहेतु आय मल्लार इत तोपन ताप चलायकें ॥
 रठोर अमल पच्छो रचिय गो कछवाह पलायकें ॥ २९ ॥
 ॥ दोहा ॥

दक्खिन १ जैपुर २ बैर सुनि, जगतसिंह अभिधान ॥
 सुत कवध सिवसिंहको, बैठो लौ निज थान ॥ ३० ॥
 तब क्रूरम रतनेस सुत, राजाउत करि रारि ॥
 छिन्नि नगर बरवाड लिय, दिय रठोर निकारि ॥ ३१ ॥
 यार्ते हुलकर भीर करि, वह कछवाह भजाय ॥
 जगतसिंह बरवाड पुर, बहुरि दयो बैठाय ॥ ३२ ॥
 सक रस ससि वसु ससि १८१६ बरस, आम बलच्छ सहर्ष ॥
 हुलकर सन बुदीसहू, गो कछु करन रहस्य ॥ ३३ ॥

इतिश्री वशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणो सप्तम७ राशावुम्मेद
 सिंहचरित्रे माधवसिंहपूर्वप्रतिजातरामपुरद्वय २ मल्लारोपायनीकरण
 सन्ध्याजनकृदग्निगमनसम्मुखप्रस्थितरावराटूतन्मिलनप्राप्तदेवसिं-
 हपत्नीविज्ञापिपत्रसन्ध्यादह्नेन्दकुत्सनतत्कुन्दबुन्द्यागतबुन्दीशसमिदीह

* नरुका १ हाथ जोड कर १ मार्ग ॥ २८ ॥ २ से ३ इस कारण ४
 भागगया ॥ २९ ॥ ५ नाम ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ६ मास ७ सुदि ८ पौष ॥ ३३ ॥
 श्रीवशभास्करमहाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, वुम्मेदसिंह के चरित्र
 में, माधवसिंह का पहिले के दियेष्ट दोनों रामपुरों को मल्लार की भेट कर-
 ना और जनकू नामक सिंधिया का उत्तर दिया में जाना १ सम्मुख जाकर राव
 राजा का वस से मिलना और देवसिंह की स्त्री की अरजी पाकर सिन्धिया का

नश्रुतैतद्रघुनाथराय १ मल्लार २ युयुत्सुद्वय २ निवारणनीतजयपुरद
मद्रम्मजनकूशुकताल युद्धविजयनरुहिल्लनजीवखानपलायनदिल्लीश
दुर्गेशदुर्गरक्षस्थम्भकूर्मराजनिवेदनजयपुरदक्षिणाविरोधवर्धनश्रीम
न्तशासितहुलकरगङ्गाधराऽऽदिपुरतःप्रेषणातज्जैपुरसैन्यसमायोधन-
माधवसिंहमुख्यसुभटनाथाउतयोधसिंह १ चतुर्भुजोतगुलाबसिंहा २
ऽदिमरणाक्षतक्षुणागंगाधरदक्षिणाऽदिगमनश्रुतैतहुलकराऽगमनत
न्नारवसरदारसिंहदमनराजाउतविक्रमोद्धृतवरवाड़पुररठोड़जगतसिंहा
ऽऽर्पणासम्मतमल्लारमन्त्रणाबुंदीन्द्रवरवाड़पूर्णमनं सप्तचत्वारिंशो४७
मयूखः ॥ ४७ ॥ आदितः॥३२८॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ पञ्चटिका ॥

लिय अजितसिंह १ पट्टप कुमार, लघु पुत्र बहादुर २ बहुरि लार ॥
बुंदीस मिल्यो बरवाड़ जाय, सम्मुह मल्लार आयो सुभाय ॥१॥
करि उभय २ रहे दिन दुव २ सुकाम, तँहँ सुनिय सुद्धि पंजाब धाम ॥

हाडों के पति को धमकाना १ उससे कुछ होकर बुन्दी में आये बुन्दी के पति
को युद्ध की इच्छावाला सुनकर रघुनाथराव और मल्लार का युद्ध की इच्छा
घाले उन दोनों को रोकना ३ जयपुर से दंड के रुपये लेकर जनकू का
शुक्रताल के युद्ध में विजय करना और रुहिल्ला नजीवखान का भागना ४
दिल्ली के बादशाह के गढ़ के पति कारणतभंवरको कछवाहे राजा (माधवसिंह)
को देना और जयपुर और दक्षिण का विरोध बढ़ना ५ श्रीमन्त के हुकम
पाये हुए मल्लार का गंगाधर आदि को आगे भेजना और उसका जयपुर की
सेना से युद्ध करना ६ माधवसिंह के मुख्य सुभट (उमराव) नाथाउत योधासिंह
और चतुर्भुजोत गुलाबसिंह आदि का सरना और घावों से क्षीण गंगाधर का
दक्षिण आदि में जाना ७ यह सुनकर हुलकर का आना और उसका नरुके
सरदारसिंह को दंड देना ८ राजाउत विक्रमसिंहके लिये बरवाड़ पुर को राठोड़
जगतसिंह को देने और मल्लार से सलाह करने को बुन्दीन्द्र का बरवाड़ जाने
का सैंतालीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥४७॥ और आदि से तीन सैं अट्ठाईस
मयूख हुए ॥ ३२८ ॥

१ श्रेष्ठ रीति से ॥ १ ॥ २ खबर

सजि सेन खानअहमद पठान, उल्लधि अटक आया *अमान॥२॥
पजाव अमल अप्पन जमाय, दक्खिनके हाकिम दिय उठाय ॥

यह सुनत किन्न हुलकर प्रयान, चढि सग भयो नृप चाहुवान॥३॥
सिसु जानि सिखावन सुतन नीति, लायो सु दिखावन राजनीति
वय सप्त७ वरस जेठो कुमार, लघु पुत्र अब्द चउ४ बेस धारा॥४॥
तिनको पुनि बुदिय सिक्ख दिन्न, मल्लार सग नृप गमन किन्न ॥

मल्लार चट्सू आदि नेर, लुट्टे जैपुरके बिरचि बैर ॥ ५ ॥
पजाव अमल मढत पठान, जयनेर छोरि किय उत प्रयान ॥

इक बंधु महासिंहोत तत्थ, किय तुपक मारि निस बिच अनत्या॥६॥
सुहरनिपति दसरथसिंह सुप्त, किन्नो प्रयागमुत प्रान लुप्त ॥

खोज्यो वह मारक सुनत भूप, सु मिल्यो न भज्यो परित्रासकूप७
करि तदनु दह१ हुलकर२ प्रयान, पुर कोटपुत्तली दिय मिलान ॥

किय सेन पठानन सोस सज्ज, श्रीमत बिजय रन करन कज्ज ॥८॥
गाजुहीखाँ इत व्है हराम, मारयो प्रभु आलमगीर नाम ॥

यह सुनत मुलक पजाव छोरि, इत नादर्रदन आयो सु दोरि ॥ ९ ॥
तव त्रास निजामनमुलक पाय, मरदह सकल बुद्धे सहाय ॥

जित तित हुतो सु दक्खिन अनीके, सब दिल्लिय आयो चहिसमीके
उततै सु खानअहमद पठान, आयो सबेग दिल्लिय अमान ॥

सुनि हुलकर अक्खिय नृपहि एह, भुव करत रंग तुम जाहु गेह११
गो बुदिय तव सभर नृपाल, आयो मल्लार दिल्लिय उताल ॥

संकरदा पत्तन लुट ठानि, सज्ज्यो पठान सन जंग जानि ॥ १२ ॥

* प्रमाण रहित ॥ २ ॥ ३ ॥ १ बाखक जानकर अपने पुत्रो को नीति
सिखाने के लिये ॥ ४ ॥ ५ ॥ १ जयपुर को छोड़कर २ भाई ३ अनर्थ ॥ ६ ॥
४ सोतेष्टुय को ५ मारनेवाले को ॥ ७ ॥ ६ जिसपीछे ७ मुकाम किये ॥ ८ ॥
८ नादरशाह को मारनेवाला ॥ ९ ॥ ९ यह पदवी है १० सेना ११ पुत्र
॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥

जनकू३ हु जयासुत सुनत आय, दत्ता३ हु सैन आयो सजाय ॥
 संभासुत४ आयो बहुरि सूर, *जव मंडि लरन संध्या जरूर ॥ १३ ॥
 अरु सउ कलीज निज धर्म हीन, आलीगोहर दिलीस कीन ॥
 दै पुनि मरहठन कोटि १००००००० दैम्म, किय तिन सहाय निज
 विजय कैम्म ॥ १४ ॥

दिल्ली दल१दखिन दल२दुरंत, मिलि इक१ सज्यो अवबिरचि मंत
 बज्जिग निसान जिततित बिसेस, सज्जिग प्रवीर दल दव्वि देस१५
 हुव बिबिध तोप सज्जित हरोल, लहरात धुजा फहरात लोल ॥
 अंगराजमुखी कति लंबमान, बाराहमुखी कति वर विधान ॥ १६ ॥
 बिखंधारमुखी कति तैति बिसाल, करिरोज मुखी कति अति
 कराल ॥

सिंदूर लैपन लोहित सुहात, दगि प्रलय काल ततखिन दिखात१७
 कति कांत लोहमय पृथुलकाय, सुभ रीति सुलवमय कति सुहाय
 किय सबल धातुमय सज्ज केक, इम पुनि गुबार संचय अनेक१८
 आरूढ निर्दुर चरखन असेस, बिकराल ज्वाल जनु काल बेस ॥
 अंगार बमत खिन खिन अपार, हुव सज्ज छार गढ करनहार१९
 मिलि दगत दिसा दैवत मिटाय, सैतकोटि नाद सज्जित सिटाय ॥
 दुवसत २०० हरोल जिन्ह बेलदार, कुदाल हथ मग सुंदकार२०
 सत दुव२०० कुठारधारक सु अगग, सेटत तरु रोधक रचत मग ॥

*वेग रचकर ११। सूर्ख कलीजखां १दिल्ली का पति किया २रूपये ३काम ॥ १४।
 ४दूर है अन्त जिसका ५संतदनगारे ॥ १५ ॥ ७चपलदसिहमुखी ९लंबे प्रमाणवाली
 ॥ १६ ॥ १० सर्पमुखी ११ लंबी पंक्तिवाली १२हस्ती के मुखवाली १३सिंदूर से
 शोभायमान लाल मुखवाली ॥ १७ ॥ १४ सुन्दर लोहे की १५ बड़े शरीरवाली
 १६ तांबे की १७ तोप विशेष (गुबारा) ॥ १८ ॥ १८ कठोर चरखों पर १९ मानों
 ॥ १९ ॥ २० दिक्पालों सहित दिशाओं को मिटाती है; अथवा दिशाओं की मूर्ति
 को मिटाती है २१ वज्र का शब्द २२ मार्ग साफ करनेवाले ॥ २० ॥ २३ रोकने

ते तोप खिनहु अटकन न वेत, लौजात ॥ अद्रिसिर ॥ मलप लेता २१।
भुव धसत चक्र चरखन ॥ भयार, त्रिसती ३०० इम तोपन हुव तयार
दुव २ दलन लख १००००० घोटक दुख, सत्वर फिराक भैति
भाति समूह ॥ २२ ॥

जरजाल सज्ज पंखराल जीन, नखराल चाल रेंप फाल लीन ॥
नतगोधिं चपल चपलां समान, केतक कलीन उपमान काना २३।
खुर रजतपत्तं कृत नटन खेल, मनु ससिं कलंक खुरतार मेल ॥
प्रतिक्रमन खेह उद्धत अनूप, धरनी कि रच्छक न देत धूप ॥ २४ ॥
जे वैद्य पराजय रोग जाल, अरु विजय सिद्धि साधन उताल ॥
अरि पवन पिदिख जित्तो असेस, पालहु जिन सेवत पालवेस २५।
धुनि सीस लखत जिन फांद धाप, प्राकार रचन छोरत धंराप ॥
लाखि जिन मलग तिरछी लजत, कुलटा कटाच्छ हारन तजत ॥ २६ ॥

घाले घृचां को ५ पक्ष फ ऊपर १ कूटन हुए ॥ २१ ॥ १ भयङ्कर दोनों सेनाओं
में १ कठिनाई से तर्कना में आयें ऐसे लाख घोड़े तयार हुए जिन घोड़ों
के समूह शीघ्रता के साथ २ भाति भाति से फिरते हैं ॥ २२ ॥ १ जरी की
जाणियां और ४ पावरोंवाले जीनों से सजे हुए नखरावाली चाल में और
५ वेग के साथ फांदने में लीन ६ झुके हुए छलाटवाले और ७ विजली के
समान चपल और केतकी की कली के समान कानवाले ॥ २३ ॥ ८ चाड़ी के
पत्रोंवाले खुरों से नाचने या खल फाते हुए और जिनके खुरों से खुरताल का
मेल है सो मानों ६ चक्रमा से कलक का अथवा राहू का मेल है १० उन घोड़ों के
चलने से उपमा रहित खेह उठती है सो मानों भूमि अपने ११ रत्नकों (घोड़ों)
को धूप देती है ॥ २४ ॥ जे (घोड़े) १२ पराजय (हार) रूपी रोग समूह के वैद्य
और विजय रूपी सिद्धि के शीघ्र साधनेवाले १३ शत्रु देखकर सम्पूर्ण पवन
को जिन्होंने विजय किया है १४ सर्प भी पाछ (केसवाली) के घेस में जिन
की सेवा करते हैं ॥ २५ ॥ १५ मस्तक घुनकर जिसको देखते हैं उसीको दौड़कर
फांद जाते हैं १७ वे भूमि के पति (घोड़े) १६ कोट की रचना को छोड़कर फांद
जाते हैं जिनकी मलग देखकर कुलटा श्री मिरछी कटाच्छ डालने में लजित
होकर छोड़ती है अर्थात् मिरछी कटाच्छ की शीघ्रता छोड़नी है ॥ २६ ॥

छेकत दयाल उड्डान आनि, जावत सहयो न भुव कंप जानि ॥
 कसि कसि अराल कोदंड कंध, व्यर्थी करंत ज्या जेरबंध ॥२७॥
 बिच ग्रीव हेम शृंखल बिराजि, सोहत सुहि लरतक छविहिं साजि
 मिलि यालन जूग लंबमान, बहु भल्ल अजब सुहि डक्क १ वान २८
 गुन होत सिथिल ज्यों गति गहीर, त्यौं त्यौंहि खिचत यह जानि
 तार ॥

हृद छवि कलाप पृथु बालहरंत, सोहत हय धन्वी इम समरत २९
 बर नेत्रेच्छादिनी दिय बखानि, जवनी जजि सालिग्राम जानि ॥
 बजि प्रोथन प्रबिसत गंधवाह, दुरिजात पराजित जनु सैदाह ॥३०॥
 स्वचरन समेटि मलपत सुहात, जनु टारि मेदिनी मर्मजात ॥
 आवर्तत फिरत कति अति उताल, जलनिधि अर्नाक सुहि भ्रमन जाल

१ भूमि का कंप (धूजना) सहन नहीं हाने के कारण मानों दया करके उड़ने जाते हैं, धनुष रूपी २ टेढ़े कंधे को खांच खांच कर जेरबंध रूपी ३ प्रत्यंचा को व्यर्थ करते हैं ॥ २७ ॥ गरदन के बीच में ४ सुवर्ण की सांकल शोभा देती है सोही उस धनुष की ५ मूठ शोभायमान है और याल का लंबा ६ जूड़ा (केसपास) है सो बहुत भालोंवाला अपूर्व बाण है ॥ २८ ॥ गंभीर गति में ज्यों ज्यों ७ प्रत्यंचा ढीली होती जाती है त्यौं त्यौं ही ८ मानों वह तीर खिचता है ९ बड़ा बालछा (पूछ) है सो ही उस धनुष का पूर्ण शोभावाला १० भाथा है ११ इस प्रकार के धनुषवाले सब वे घोड़े शोभायमान हैं ॥ २९ ॥ प्रशंसा करके श्रेष्ठ १२ उजाली (नेत्रों के ऊपर का वस्त्र) “यथार्थमें इस का नाम अंधारी है परन्तु विरुद्ध लक्षणासे लौकिक में उजाली कहते हैं” लगाई है सो मानों सालिग्राम की पूजा में १३ कनात लगाई है, उन घोड़ों के १४ फुरणों (नासिकाओं) में घुसकर १५ पवन बजता है सो मानों वह पवन पराजित हो कर १६ दाह युक्त छिपता है “यहां बजने के कारण सदाह लिखा है अर्थात् कूकता हुआ छिपता है” ॥ ३० ॥ १७ अपने चरणों को सिमेटकर छलांग लेते हुए ऐसे शोभा देते हैं मानों १८ भूमि के मर्म स्थानों को घचाकर जाते हैं कि कहीं इस के चोट नहीं लग जावे कितने ही घोड़े शीघ्रता पूर्वक १९ गोलकुंडा (चक्राकार) फिरते हैं सो ही २० सेना रूपी समुद्र में अभियों का समूह है ॥ ३१ ॥

मरहटोकापादशाहसेयुक्त] सप्तमराशि-अष्टचत्वारिंशमयुक्त

(३३१७)

पलटत दराज गति बाज पूर, जम जैनक दर्प दारक जरूर ॥
 आवृत वपु रोमन छवि अखर्व, सेवत कि चित्त रय पढन सर्व ॥३२॥
 दिल्ली१रु सितारा२मिलि दुरूहें, जिन किय तयार इम बाजि जूहें
 सतदोष२००द्विंद किय सज्ज सग, अडुंक प्रलव अँचत अभग ३३
 वारिधि जिहाज जिम लगत वात, हके इम पयपय भुव हलात ॥
 गतिमद भरत मद अवर गात, विजयाऽभिसिक्त कटकाहिबिनात
 पृथुकुभे सिरी करि पिहितें पीन, कचुकि उरोज जनु थगितें कीन
 रन नगर उच्च अँटाल रूप, अतिसय बिसाल उच्छ्रैय अनूप ॥३५॥
 दुव२कुभ कुभ सिखरक दिपत, मंजुलध्वज ललित केतुमते ॥
 जिन रक्खि वाम दक्खिन जरूर, मँतहि सिखाय टरिजात सूर ३६
 घुम्मत घुमडि घन सघन घोर, जावत मिटात पैवमान जोर ॥
 सुडा फटकारत नभ सुहात, जिहिं त्रास सकि सिसुमार जात ३७
 भननकि भ्रमर कुभन भ्रमत, किय पँत्रभगि तिय कुच कि कत ॥
 पूर्ण लयी गति से घाड़े पलटते हैं सो अवश्य १ यमराज के पिता का घमड़
 मिटाते हैं २शरीर के केशों की अमरियों की इयड़ी शोभा है सो मानों सब के
 कथन म वे चित्त के वेग को धारण करती है अर्थात् चित्त का वेग छोड़ से
 आगे नहीं बढ़ता इसीकारण अमरी रूप से उसी शरीर में गोलाकार फिरता
 है ॥ ३२ ॥ ४ कठिनाई से तर्कना में आवै ऐसे ५ घोड़ों का समूह ६ हाथी ७
 लयी जजीरें ॥ ३१ ॥ पवन लगने से ८ जैसे समुद्र म जहाज बिलेतैसे पग पग
 प्रति भ्रुमि को हिलाते हुए बले ९ अधम अथवा पिछले शरीर से मद मद
 मद (जल) भरता है सो मानों सेना का १० विजय होने का अभिषेक करता
 है ॥ ३४ ॥ ११ बड़े और पुष्ट कुम्भस्थलों को सिरी (मस्तक सूषण) से १२ हके
 हैं सो मानों कांचली से कुर्बोंको१३हके हैं युद्ध रूपी नगरकी१४जुरजें अत्यन्त
 लयी और उपमा रहित१५कची हैं ॥३५॥ दोनों कुंभ फलक हैं सो तो सुमेरु
 पर्वतके शिखर हैं और सुदर१६ध्वजा है सो ही उसके ऊपर का केतुमान नाम
 का छत्र विशेष है१७सारथिको सिक्काकर१८सूर्य वाया वहिना रखकर दलजाता
 है॥३६॥१९पवनका ॥३७॥२०मानां पति ने स्त्री के कुर्बों परकस्तूरी आदि छेपन

पच्छिन हटात बमथून पूर, गज्जत गुमैल मंडत गूर ॥ ३८ ॥
 आटोप रचत अंगुलि उठाय, काकोदर भोग कि काल काय ॥
 भासत कलाप ग्रीवा प्रभान, मंदरगिरि वासुकि धेर मान ॥ ३९ ॥
 दोलायमान श्रवर्नन दिखात, गिद्ध कि जटायु पच्छिन हलात ॥
 अंदुक प्रलंब जो वहे न अंग, मारैं भलंगि बाजिन मलंग ॥ ४० ॥
 जंजीर जबर जिनके सुहात, पद्धति हल पद्धति रचत जात ॥
 साजि डार्कदार हुव बिंठि संग, मारत बहु वेशुक रचि मलंग ॥ ४१ ॥
 दुति स्याम मुक्त कंच दरस देत, पब्बय रहेकि गरदाय प्रेत ॥
 बारूद बिहित चरखी बिसाल, जे करत डरत मग चिंत जाल ॥ ४२ ॥
 मग मत्त चरन डारत मरोर, अदभुत दिखात गति ओर ओर ॥
 बारूद पूर्ण जिम चलत बान, इम चलत स्वरै जिततित अमान ॥ ४३ ॥
 इकनिमिख निवर्तन अंतराय, देजोरन बनत निकटहि दिखाय ॥
 पच्छिम सन पूरव पलटि जाय, वहे बायु लेत नैर्ऋत निराय ॥ ४४ ॥
 सत दुव २०० इम जंगम अदि सज्जि, बल हुव तयार रनतूर बज्जि

की रचना की है १ सुंड के जल कणों से २ गुस्से (क्रोध) में होकर ॥ ३८ ॥
 ३ सुंड के अग्रभाग का उठाकर मस्तक पर टोप वा छत्र करते हैं सो मानों
 ४ काले शरीरवाला सर्प कृण करता है ५ गरदन पर कलावा दीखता है सो
 ६ मंदर नामक पर्वत के वासुकि सर्प के घेरे के समान है ॥ ३९ ॥ ७
 हिलते हुए द कान दीखते हैं सो मानों जटायु पक्ष हिलाता है जिन के शरीर
 पर लंबी ८ जंजीर नहीं होवे तो मलंग लगाकर १० घोड़ों की मलंग को दवादे-
 वें ॥ ४० ॥ जिनके बड़े जंजीर, हल (लांगल) के मार्ग के समान ११ मार्ग करते
 जाते शोभा देते हैं १२ सांडमार सज्जित होकर उनको घेर कर साथ हुए सो
 मलंग लगाकर १३ भाले मारते चले ॥ ४१ ॥ उन सांडमारों की १४ केश रहित
 काली क्रांति दीखती है सो मानों पर्वत को प्रेत १५ घेर रहे हैं १६ बारूद की
 बनी बड़ी चरखियों से डरकर मार्ग में १७ आश्रय करते हैं ॥ ४२ ॥ जैसे बारूद
 का १८ भरा हुआ बाण स्वतंत्र होकर जाता है तैसे १९ स्वतंत्र होकर हथर
 उधर जाते हैं ॥ ४३ ॥ २० पलटने में वे हाथी एक निमेष से २१ दूसरा निमेष (क्षण)
 नहीं होने देते और समीपही दीखते हैं २२ वायु दिशा में होकर नैर्ऋत दिशा
 को २३ समीप लेते हैं ॥ ४४ ॥ २४ सेना में तयार हुए ॥ ४५ ॥

जवनन कुरान पढि किय निमाज, जुरिहकिय आरुहि बाजिराज
रव वजीर निजामनमुलक सत्य, सब साह सेन सज्जिग समत्य ॥
इत हुव मल्लार १ दत्तार २ तयार, सभा ३ सुत जनकू ४ रन सिंगार ॥ ४६ ॥
जल गग न्दाय करि दान जत्य, पढि बिष्णुकवचदस नाम पैत्य ॥
साजि यों वनि दिल्लिय दल सहाय, लहि काल चले कर मुच्छ
लाय ॥ ४७ ॥

इततै दरकुचन भरि उडान, पहुँचपोहि आय दिल्लिय पठान ॥
दलकों पुर बाहिर कडत देर, नहिँ मिलत भई बल अपर नेर ॥ ४८ ॥

इतिश्री वशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणो सप्तमः श्राशावुस्मेद
सिंहचरित्रे रवसुतद्वय २ सन्धि १ यान २ विग्रहा ३ ऽऽदिशिशिक्ष
पिपुबुन्दीन्द्रवरवाडपुरगमनसम्मुखसमागतमल्लारसम्मिलनश्रुतप
ठानअहमदपादप्राप्तपजावप्रस्थितहुलकरसम्मतपस्थप्रेषितपुत्रराव
राट्सदप्रयाणन्यक्कृतजयपुरजनपदलुण्टनहुलकरसहायीद्वेशमुप्त
शिविरस्थसुभटसुहरगीशदशरथसिंहसनाभिशस्त्रमरगाकोटपुतलीसै
न्यशिविरस्थापननवावगाजुहीखानस्वामिदिल्लीशाऽऽलमगीरमारण

१ सजी ॥ ४९ ॥ २ अर्जुन के दश नाम ॥ ४७ ॥ सेना को नगर से कहते
देर लगी परन्तु ३ सेना रूगी दूसरे नगर में मिलते देर नहीं लगी ॥ ४८ ॥

श्रीवशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, उस्मेदसिंह के चरित्र
में, अपने दोनों पुत्रों को सन्धि, यान, विग्रह आदि सिखाने की इच्छावाले
बुन्दीन्द्र का बरवाड़ पुर में जाना और सामने आये हुए मल्लार से मिलना १
अहमदशाह पठान को पजाप में आया हुआ सुनकर, हुलकर की सलाह से
पुत्रों को घर भेजकर रावराजा का हुलकर के साथ जाना और जयपुर देश
का अनादर करके लूटना २ हुलकर के सहाई हर्षेन्द्र के घेरे में सोते हुए अपने
वमराष सुहरणवाले दशरथसिंहकाअपने सापेधामाईके लश्करसे मरना और कोट
पुतलीमें सेना का घेरा होने पर नयाय गाजुहीखाका दिल्ली के स्वामी पादशाह
आलमगीर को मारने की खबर सुनना ३ इस कारण से पजाप को छोड़कर
अहमदशाह का दिल्ली के मार्ग को लेना ४ बुन्दी के पति को बुन्दी भेजकर

समाकर्णितैतत्पुक्तपञ्जाबा ऽहमदपाहदिल्लीसरणि समासरणबु-
न्दीप्रेषितबुन्दीन्द्रलुण्टितसङ्करदापुरमल्लार १ जनकू २ दत्ता ३ ऽऽ
दिदिल्लीसहायीभवननिवेदितमहाराष्ट्रोपायनीभूतदम्भदम्भकोटिगाजु
दीखाना ऽऽलीगोहरदिल्लीगढिकोपविशनसज्जितसकलपुरप्राकार
पिस्पर्शयिषुपठानपुतनाप्रश्लेषणमष्टचत्वारिंशो ४८ मयूखः ॥ ४८ ॥
आदितः ॥ ३२९ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

लहलहमजनूँको ललित, तक्रिया बाहिर तत्थ ॥

मंडि मरन दुव दल मिले, सखन झारि समत्थ ॥ १ ॥

सक रस ससि बसु ससि १८१६सिसिर, आगम उदित अनेह
संकरैपँहँ पठयो सैमर, न्यूँता नूतन नेह ॥ २ ॥

पुतना इम मिलतैँ प्रथम, लग्गी तोपन लाय ॥

रसनाँ इक १ सततीन ३०००रँव, जे किस बरने जाय ॥ ३ ॥

॥ भुजङ्गप्रयातम् ॥

दग्यो तोप संदोह छोनी दरारी, बढ्यो धूम आवाज घाँघाँ बिथारी ॥
फँहँ लोल गोला कँरी कुंभ फुटैँ, पताकानके पुंज टुटैँ बिछुटैँ ॥ ४ ॥

और संकरदा पुर लूटकर मल्लार, जनकू, दत्ता आदि का दिल्ली का सहाय
होना, मरहठों की भेट के दंड के कोड़ रुपये नजर करके गाजुदीखाँ का आली
गोहर को दिल्ली की गादी पर बिठाना ५ सब का सज कर पुर के कोट से
पठानकी सेना को पीसनेकी इच्छावालोंका सेनासे मिलने का अड़तालीसवाँ
मयूख समाप्त हुआ ॥ ४८ ॥ और आदि से तीन सौ उनतीस ३२९ मयूख हुए ॥

॥ १ ॥ १ समय २ शिव के पास ३ युद्ध का ४ नवीन स्नेह से ॥ २ ॥ ५ सेना.
ग्रंथकर्ता कहते हैं कि मेरी एक ६जिह्वा से ७ तीन सौ तोपों के शब्द क्योंकर
कहेजावें ॥ ३ ॥ तोपों के द समूह के चलने से भूमि फटी और उन तोपों का
धुआँ बढ कर ६ दिशा दिशाओं में आवाज फैली शोभायमान चपल गोलों
से १० हाथियों के कुंभस्थल फूटते हैं और ध्वजाओं के समूह तूटकर गिरते हैं ॥ ४ ॥

बनें फैरपै फैर ज्यों बैक्यबादी, गिरें चोटसैं लोट साँदी निसादी ॥
उडैबाजि आयास धारा बिसौरै, बिमानावली बीच आयास डारै ॥५॥
जगैं घोर अंधारमै सोर ज्वाला, मनोँ भइके अइमें बिज्जुमाजा ॥
इलैं सेसको ज्यों फँटाको हजार १०००, सिँवैं स्योँ मही कान्त
कल्पाभिसारा ॥ ६ ॥

लगैं चोटपै चोट मातगें लोटैं, उडै पँति जोटैं बचैं कोन ओटैं ॥
घनें घुम्मि घाँघाँ झुकै हथि घोरे, बनें ज्वालमाला अकूपार बोरे ७
कछू काल दे तोप यों रारि किन्नी, लरे फेरि लैं खग है बग लिन्नी ॥
धमकी धरा बाढकैं बाढ बज्ज्यो, बढयो बीरको भीरुको नीर लज्ज्यो ८
मिले दुग्ध पानीय ज्यों जोध मते, कला ऐँदवीसे चले काल कते ॥
कटैं कुँभै बाहिय सुडा कलावा, कदौँ रुड घुम्मै अटैं देत कावा ९

१ शास्त्रार्थ करनेवाले के पा नैपायिक के बचनों के समान तोपों के फैर होते हैं जिनकी चोट से २ घोड़ों के सवार और ३ हाथियों के सवार लुडवते हुए गिरते हैं घोड़े अपनी पाखों धाराओं (गतिधों) को झुलकर ४ आकाश में उड़ते हैं सो ५ यिमानों की पक्ति में अम पटकते हैं ॥ ५ ॥ उस भयंकर अंधारे में बारूद की आग जलती है सो मानों भादों (मादवे) के ६ सज्ज मेघ में बिजुली का समूह चमकता है "यहाँ सामान्य तैयारी आर्द्र शब्द के कहने पर भी बिजुली के संबंध से मेघ का ग्रहण है" ज्यों शेषनाग के ७ कणों का हजार (हजार कण) हिलता है स्यों भूमि = भीजती है और १० प्रलय के समान ८ लोह (शस्त्र) चलता है अर्थात् लज्ज चलते हैं ॥ ६ ॥ चोट पर चोट लगने से ११ हाथी खोटते हैं और १२ पैदलों के जोड़े उड़ते हैं सो किसकी आँख में पड़े बहुत घूम कर ठाम ठाम हाथी घोड़े झुकते हैं और १३ अग्नि रूपी समुद्र में डूबोए हुए बनते हैं अर्थात् जलते हैं ॥ ७ ॥ कुछ समय तोपों से इस प्रकार युद्ध करके फिर तरवारें लेकर धीरों ने घोड़ों की पागों उठाई जिससे भूमि घूजनेलगी और बाढ़ पर बाढ़ बजनेलगा वहाँ धीरों का पराक्रम बढनेलगा और कायर लज्जित होनेलगे ॥ ८ ॥ मस्त धीर पानी और वृष के समान मिलगये और १४ इन्द्र सबधी (वज्र वा बिजुली) की भाँति काल रूपी लज्ज चले अथवा द्वितीया के चन्द्रमा की कलावाले (उज्जल और टेढ़े) काल के समान लज्ज चले हाथियों के १५ कुभस्थल, लखाट के अवोभाग शृंख और कलावे कटते हैं और कहीं पर रुड घुमते और फिर कर गोखकुटा लगाते

छिकें *कंधरा जीन बाजीन छुट्टें, फबैलीन जालीनमें । संगि फुट्टें॥
उडै अस्थि । संघात के ओर ओरें, छले मेघ मानों घनै । प्राव छोरें १०
कट्टें उच्छट्टें टोप जाली करकैं, फटै पेट नागोद फैलै फरकैं ॥

कट्टें नैन छोरें नै लग्गी कनीनी, लसै पैटपदी फूल ज्यों संगलीनी ११
बरककैं भरै कंधरा अंस बाहा, उडै मूर्ध मज्जा दहीसार आहा ॥
दिपै बीर सुंडिज्ज जुज्भैं दिखावैं, परै सस्त्रमें सस्त्र छेटी न पावै १२
व्यवच्छेद धन्वीनके दंस बेधैं, नमंती जुरै कोटि द्वैधौ २ निसेधैं ॥
तकैं सूरहू दूरवेधी तमासा, उडै बाँज के बाँजके मान आसा १३।
गिनै लैरतकैं सत्रु वडै दूर गँवपा, लहै अँचि नीरें सुपै मग्नि लँवपा
निहारो बडै चापमें रीति नँवपा, सुनैही बनें भीरु सँवपा १४
वज्रै पँत्रणा सोक त्यों भै बिथारै, मँहातूणाकी पूर्याता दीप्ति मारै

हैं ॥ ६ ॥ * घोड़ों के कंधे कटकर जीन खुलते हैं और कवचों में लीन होकर
फूटीहुई । बछियां शोभती हैं। कितने ही । हड्डियों के समूह चारों ओर
उड़ते हैं सो मानों मेघ बढकर बहुत । पत्थर (ओले) बरसाता है ॥ १० ॥
टोप कट कर उछलते हैं और कवच कड़कते हैं, १ पेट का कवच (पेटी) फटकर
पेट फैलता और फुरकता है। नेत्र की पुतली को नहीं २ छोड़कर नेत्र निकलते
हैं सो फूल के साथ में ३ भ्रमर की शोभा लेती है ॥ ११ ॥ ४ गरदन ५ कंधा
और बाहू कटकर गिरते हैं ६ मस्तक का भेज उड़ता है सो ही दप्रशंस योग्य
७ मक्खन है वीर लोग ८ पराक्रम को युद्ध करके दिखाते और प्रकाशित होते
हैं और छेटी नहीं पाकर शस्त्र पर शस्त्र पड़ते हैं ॥ १२ ॥ १० धनुषधारियों
के छोड़े हुए बाण ११ कवचों को काटते हैं और धनुष की दोनों कोदियां
(नोकें) नम कर मिलती हैं जो १२ दो होने (जुदायगी) का निषेध करती हैं और
लोक १३ दूर से बेधन करने का तमाशा देखते हैं और १४ कितने ही छोड़े १५
सिकरे (पत्ती विशेष) के बलकी आशासे उड़ते हैं ॥ १३ ॥ १६ धनुष की मूठ तो
शत्रु को दूर मानती है और १७ प्रत्यंचा उनको खँच कर १८ छेदन करने के
योग्य मानकर समीप लेती है। धनुष में यह १९ नवीन रीति देखो कि २० सुनते
ही कायर बायें दाहिने होजाते हैं अर्थात् सन्मुख नहीं ठहर सकते ॥ १४ ॥ ज्यों
२१ बाणों की सनसनाहट बजती है त्यों भय फैलता है और २२ बड़े भाँधे की

हसैं कर्तरी सिंजकों आनि ज्यो ज्यो, तितिच्छूटै दुष्टतैसाधु त्यों त्यों
नछोरैं तऊ तामसी वृत्ति धारैं, ज्यका कुप्पि ताकों तवें दूर डारैं ॥
परैं हीन सग्राह के चर्म पती, भली जो बिनाँ अघि दौलेय भंती १६
वहैं मूल १ छूरी २ इली ३ त्यों वरच्छी ४, छवैं साजभी पति ज्यों
तीर ५ पच्छी ॥

दिपैं भू खेंलूरी बनी कोस द्वैरद्वै, हलैं मत्त घाँघाँ खरैं रुढ व्हैव्है १७
महा तीरमें प्रेत आलाप मारैं, नचैं जोगिनी लौन भैरों उतारैं ॥
हसैं डाकिनी साकिनी घुम्मि हलैं, घनी रासमें घुम्मरी घेर घलैं १८
जगी ज्वाला ज्यों कर्तके दत जारैं, मरी यों डरी दिग्गजी चीह मारैं
अमो इडुको रूप आदित्य धारयो, चिके चैकक चक्कीन हाहा
उचारयो ॥ १९ ॥

फवैं खगग लग्गे वजे टोप केरैं, घरघारी मनो प्रातकी घात घोरैं ॥
पूर्णता प्रकाश करती है ज्यों ज्यों १ तरवारें आकर २ प्रत्यया को कादती हैं त्यों
त्यों दुष्ट से ३ चमाशील साधु दले इस प्रकार वे धनुषवाले तरवारवालों से
दहत हैं ॥ १९ ॥ तोभी ४ तमोगुणी वृत्ति को धारण करके वे तरवारोंवाले
धनुषवालों को नहीं छाड़ते तब ५ प्रत्यया साधु के समान क्रोध करके उनको
दूर डाल देती है मूठ से हीन होकर ६ दासों की पक्षिया पड़ी हैं सो मानों
बिना ७ पैरोंवाले सुंदर ८ कछुओं की तरह हैं जिस प्रकार शूल, छुरा,
तरवार और घड़ी चलती है तिसी प्रकार हठिद्वियों की पक्ति के समान पाण
रूपी पच्ची घाते हैं यह भूमि दो दो कोस तक १० शस्त्राभ्यासकी भूमि (सखाड़ा)
बनकर जोमती है जहां पुर दिशा दिशाआ में मस्त होकर खड़े हुए रुक
चलते हैं ॥ १७ ॥ प्रेत ११ घड़े वध स्वा से गाते हैं, योगिनियां नाचती हैं
और भैरव उन पर नौन (निमक) उतारते हैं डाकिनिया और शाकिनिया
घूमकर हसी के साथ चलती हैं और नृत्य में पल्लवरी घूमर का घेर घालती हैं
॥ १८ ॥ जली हुई ज्वाला ज्यों ज्यों १२ पनियों के दंतों को जलाती है त्यों त्या
डरी हुई दिशा की हथनिया मरी मरी कहकर चीखे मारती हैं सूर्य ने १९
अमावास्या के चंद्रमा का रूप धारण किया अर्थात् सूर्य नहीं दीक्षा जिससे चक्र
(मूख) कर १४ चक्रवा चक्रियों ने हाहाकार किया ॥ १९ ॥ तरवारें लगने से
कटे हुए टोप बजकर ऐसे शोभा देते हैं मानों घणियां बजानेवाला प्रभातकी

मचे कोप १ उच्छाह २ थापी न मावैं, तथाहास २ वी भेच्छ ४ सोभावतावैं २०
 विधाता बढी सृष्टितैं दर्प छड्यो, मनो मोति विक्रय बाजार मंड्यो
 कुंहु रत्तिमैं भंपि गिद्धी किलोलैं, दुबे सिंधु अंधार जे भोर डोलैं २१
 घने बान जोधानके उद्ध चारैं, मनो पूजिवे अच्छरी फूल डारैं ॥
 बहैं मारपैं मार बिस्फार बानी, भयंकार आचार मंडैं भवानी ॥ २२ ॥
 बनें बावरीकुंभ बानैंत बुल्लैं, सतीकेरं नारेर वहे खीज खुल्लैं ॥
 अनी प्रान के जानके होत सूनी, पुकारैं बढो रे बढो यों चैमूनी २३
 मरे रे मरे भीरु कुक्कैं पलावैं, खरे रे खरे वीर अक्खैं टिकावैं ॥
 अरैं संगि के संगितैं अग्र अरैं, जुरे वैदुषी कोटि द्वैरतिक्ख जैसैं २४
 घने वीर सुत्तेनको भीरु घावैं, बकैं जीत भोरे बनीमैं बनावैं ॥
 बिदूँ दारि दंतीनैं बेधैं वरच्छी, अंधो वहे चलैं अस्त्रकी रेल अच्छी २५

घड़ियाल बजाता है. वीर रस मचकर उसका स्थायी उत्साह नहीं समाता इसी प्रकार हास्य और शीघ्रभत्स रस भी शोभा दिखाते हैं ॥ २० ॥ ब्रह्मा ने बढी हुई सृष्टि का ३ घमंड छोड़ा और सृष्ट्यु के ४ बेचने का बाजार रथा प्रनष्टचंद्रा अमावास्या की रात्रि में भंप लेकर गिद्धनियां किलोलें करती हैं और ९ अंधेरे रूपी समुद्र में डुलकर अग्नि रूप फिरती हैं ॥ २१ ॥ बहुत से वीरों के बाण ७ ऊपर चलते हैं सो मानों उन वीरों का पूजन करने को अप्सराएं फूल छालती हैं, मार पर मार होकर = धनुष के शब्द की चाणी पढती है अर्थात् धनुष का शब्द होता है और देवी रक्त पीने का भयंकर आचार रचती है ॥ २२ ॥ बानाबंध ६ पागल स्त्री के घड़े के समान होकर सोलते हैं और १० सती के हाथ के नारियल रूप होकर क्रोध करते हैं "पागल स्त्री मटका और सती का नारियल ये दोनों शीघ्र नष्ट होजाते हैं" सेना के प्राण जाने से वह सूनी होती जाती है और ११ सेनापति 'बढो बढो' पुकारते हैं ॥ २३ ॥ कायर 'मरे मरे' कहकर १२ भगते हैं और वीर लोग 'खड़े रहो खड़े रहो' कहकर उन्हें टिकाते हैं. १३ एक वरच्छी का अग्रभाग दूसरी के अग्रभाग से ऐसे मिलता है जैसे शाल्मार्थ करनेवाले तीव्र १४ पंडितों की दो कोटि जुड़े ॥ २४ ॥ कई सोते (कटे) हुए वीरों को भगनेवाले कायर छूंदते हैं और अपनी बनी हुई आपत्ति में भोले स्वभाववाले बककर जीत बनाते हैं १५ हाथियों के १५ पीतघानों (कुंभस्थलों के मध्यभागों) को विदारण करके बरछियां बेधती हैं सो १७ नीचे को १८ दधिर की उत्तम धार पड़ती है ॥ २५ ॥

सुदी नारि वक्षोज बैर में बिसाला, मनो बित्थरी लंब मानिक्य
माला ॥

लगे सुडिपै स्याह के सैल हल्लै, किधों कन्ह कालीयपै घूम घल्लै २६
भये रंग १ कुल्हू १ भये लौडि २ भाले २, बलीबैद ३ भो बीर ३ जी ४
इच्छु ४ जाले ॥

किते पत्ति घोरेनकों मुड मारैं, मनो धेनु ऊधन्य बच्छा अहारैं २७
कहों अच्छरी सूरकों मंडि माली, बनावैं गरैं बाँह गावै बिसाली ॥
कहों भिन्न कुभीन लोही छछक्कैं, किधों तिंदुतै फाल फुल्लिंग
तक्कैं ॥ २८ ॥

मनंकार भैकार 'भेरी बियारैं, घटा भइकी जानि निर्घोस डारैं ॥
कहों टोपकों खडि खडों खटक्कैं, गुलाबी कली प्रात मानों च
टक्कैं ॥ २९ ॥

छिदे केक कुंभीनतैं कैगणा छुटैं, ति ज्यों बाततैं तालतैं परगण तूटैं ॥
कहों कुब बुककेनकों 'मोडि तोरैं, मनो मूपमें मूंद निबू निचोरैं ३०
सो ही खीके १ कुचों के भीतर मानों मानिककी लयी माला कैली है हाथी की सुड
पर कितने ही कालेरग के २ भाखे झिलते हैं सो मानों काखीनाग पर श्रीकृष्ण
३ घूमर लगाते हैं ॥ २९ ॥ यह ४ युद्ध ही कोलह (घापी) हुआ जिसमें भाखे तो
५ लाठ हैं और बीर रस इस कोलह में चलनेवाला ६ पैल और ७ जीव ही इच्छु
(गर्जों) के समूह हुए ८ कितने ही पैदल घोडों के मस्तक की टक्कर मारते हैं सो
मानों ९ गौ के स्तनों को बछड़ा पीता है ॥ २७ ॥ कहीं पर शूरों को अक्सराए माला
युक्त बनाकर गलवाई डाल कर लये स्वर से गाती हैं और कहीं कटे हुए १०
हाथियों से लोह की पिचकारियां बजती हैं सो मानों ११ तीव्र वृक्ष से अग्निकण
उड़ते हुए धाखते हैं ॥ २८ ॥ १२ नौबत भयकारी शब्द फैलाती है सो मानों
भादों की घटा गाजती है कहीं पर टोप को काट कर १३ खांडा (सीधी तलवार)
खटकता है सो मानों प्रभात समय में १४ गुलाब की कली खटकती है ॥ २९ ॥
कई हाथियों से कटे हुए १५ कान छूटते हैं सो मानों पवन से तारवृक्ष के १६ पत्ते
तूटते हैं कहीं पर कोधित हुए बीर बुकों गुरदों को तोड़कर १७ मसजते हैं सो
मानों १८ दाल में १९ रसोईदार नीयू निचोड़ता है ॥ ३० ॥ कहीं पर बैठे हुए
बीर बहुत धावों से घूम रहे हैं और कहीं पर दौड़ कर खोप से खोप खगती है

कहीं बीर बैठे घने घाय घुम्में, भपट्टे कहीं लुत्थितें लुत्थि भुम्में
 अहारें कहीं अँचि गोमायु अंती, प्रहारें मनो पन्नगी मार पंती ॥३१॥
 कट्टे डाकिनी लिप्त लोही कलेजो, रंगे पट्ट ज्यों मट्टतें रंगरेजी ॥
 हबककैं कहीं घाय बुल्लैं हजारैं, मनो तेगके ताप आक्रंद मारैं ३२
 बिनोदैं कहीं कंक बुल्लैं बनावैं, मनो बंदि ईरानको जै मनावैं
 तमंके ईत संग दिल्ली सितारे, उमंगे उतें मिच्छ ईरानवारे ॥३३॥
 दुहूँओर यों हथ अच्छे दिखाये, घने हथि त्यों सत्ति ओ पत्ति घाये
 सितारा रु दिल्ली थके दैव सारैं, मची आन ईरानकी भान मारैं ३४
 छक्यो लोह संभा तैने १ देह छुट्यो, तथा बीर दत्ता २ पखो तेग
 तुट्यो ॥

जपानंद३कै जोरकै घाय लग्गे, भिदे दक्खिनी ए३घने हारिभग्गे ३५
 अछूती अनी इक्क मल्लार १ कट्यो, बली देस ईरानको जोर बढ्यो
 दुरयो भजिजकै खान गाजुहि दिल्ली, पराजै भयो जुद्धकी हौंसपिल्ली
 ॥ दोहा ॥

पुनि तजि खान कलीज तजि, आलीगोहर साह ॥
 दुव सरनागत जट्टको, लागि भरतपुर राह ॥ ३७ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

मिले अवर दिल्लीपतिके तब, सत्रुनमाँहिं नवाब सुभट सब ॥

इक हाफिज रहमुल्ला १ सठ, बिरचि हराम सुजादोल्ला २ हठ ॥३८॥

कहीं पर १गीदड़ आंत को खँचकर खाते हैं सो मानों मयूर २ सपों की पंक्ति
 को मारता है ॥ ३१ ॥ कहीं डाकिनियां लोहू से लिपे हुए कलेजे ऐसे निकाल
 ती हैं जैसे रंगरेज रंगेहुए वस्त्रों को माट से निकालता है कहीं पर हजारों
 घाय 'हबक हबक' बोलरहे हैं सो मानों तरवार के ताप से ३ कूकते हैं ॥ ३२ ॥

कहीं ४ घिलास करते हुए कंक पत्ती बोलते हैं सो मानों ५ भाद लोग ईरा-
 न का जय मनाते हैं इधर दिल्ली और सितारा के १ साथियों ने क्रोध किया
 और उधर ईरान के यवन उत्साह युक्त हुए ॥ ३३ ॥ ७ सत्ति घोड़े ८ पैदल ९
 भाग्य के आधीन होकर १० क्रांति ॥ ३४ ॥ ११ संभा का पुत्र ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥

ईसतीस अहमदखान का जयपाकर बंदना] सप्तमराशि-पचाशमयूक (३९८३)

बहुरि नजीमुद्दोला ३ वालिस, पुनि सादुल्लाखान ४ मिलन मिस ॥
अहमदखान पठान मर्हि इम, जुलमी मिलि सब भये दास जिम ३९
इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशात्रुम्मेद
सिंहचरित्रेऽहमदशाहखाविजयनसम्भासुत १ दत्ता २ वीरशय्याशय-
नजनकू ३ क्षतप्रापणासपरिकरमल्लार ४ निष्कसनकान्दिशीकक-
लीजखानभरतपुरजट्टशरणाग्रहणाद्विजयहमुत्तुल्ला १ नवाबसुजाउ-
द्दोला २ नजीमुद्दोला ३ सादुल्ला ४ऽऽदिदिल्लीशपरिकरसपत्नपठा-
नपाहभेदोपायविषयीभवनमेकोनपचाशतमो ४९ मयूख ॥ ४९ ॥
आदित. ॥३३०॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृतो मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

दत्त विगरयो दिल्लीसको, मरहठन गत मान ॥

बचपो इक १ हुलकर बली, जित्यो अहमदखान ॥ १ ॥

॥ षट्पात् ॥

जित्यो अहमदखान साह नादरको मारक ॥

दिल्ली दक्खिन दंडि बढ्यो निज जय बिसतारक ॥

अंतरवेदी आदि बिखय मडत अप्पन बस ॥

मविस्पो पूरबमर्हि रचत स्वाधीन हुकम रस ॥

गगा रु जमुन बिच गपउ जब कलह बिजय कोतुक करत ॥

१ मूर्छ ॥ ३९ ॥

अधिशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में उम्मेदसिंहके चरित्र
में अहमदशाह का युद्ध में विजय होना और सभा के पुत्र दत्ता का मारा
जाना १ जनकूका बागल होना और परगह सहित मल्लार का निकलना २
कलीजखान का भाग कर भरतपुर में जाट का शरण लेना ३ हाफिजरहमुत्तुल्ला,
नवाब सुजाउद्दोला, नजीमुद्दोला, सादुल्ला आदि दिल्ली के पति की परगह
का शत्रु पठान अहमदशाह के भेद उपाय से उसके बश में होने का वनवासर्षा
मयूख समाप्त हुआ ॥४९॥ और आदि से तीन सौ तीस १३० मयूख हुए ॥
॥ १ ॥ १ मारनेवाला ३ देश

भूपाल प्राच्य हाजिरि भये सब अधीन हित अनुसरत ॥२॥

॥ दोहा ॥

आलीगोहर साह इत, तुरकन पति हत तोर ॥

आहवै जय ईरानको, जानि भयो गत जोर ॥ ३ ॥

संध्याकौ संग्रामतैं, इत मल्लार उठाय ॥

भिसैकनको आचरि भनित, दिनें घाय दबाय ॥ ४ ॥

पठयो कगर् नन्ह प्रति, दुतैं लिखि दक्खिन देस ॥

इहाँ पराजय अप्पनौं, सबविधि भयउ असेस ॥ ५ ॥

॥ षट्पात् ॥

सुनत तमकि श्रीमंतसेन पठयो बहोरि सजि ॥

सेनानो निज सूनु रच्यो विश्वासराव १ रजि ॥

निज काका पुनि निडर धीर चीमा १ अभिधानक ॥

भट दोउन २ सिर भीर अरपि दिय हुकम अचानक ॥

अँर जाहु पुत्र काका उभय २ दलहु जंग ईरान दल ॥

सत्तरि हजार ७०००० तुम संग भट खंडहु गाढ असेस खल ६

सुनि चीमा १ विश्वासराव १ दुव २ लै दल दुद्धर ॥

मुदित चले मरहट्ट अवनि मिच्छन भैर उद्धर ॥

नाना रंग निसान उदित बज्जिग ध्वनि आयत ॥

कुंभिन नाना केतु खुल्लि हंकिप खेटायत ॥

पक्खर प्रसार छादित पहुमि प्रैचुर कुंत अंबर पिहितैं ॥

आवाज मुलक फुट्टिय असह बढत सेन संगर विहितैं ॥७॥

नागराज फन फटत कमठ दढ पिठि करकत ॥

गिरत मार तजि गह्ण दह्ण बाराह बरकत ॥

१ पूर्वदिशा के राजा । २ युद्ध में श्वैश्यों का कहा करके । ३ पत्र प्रसीध ॥ ४ सेना पति ७ अपने पुत्र को किया दप्रीति करके ५ चीमा नामवाला १० शीघ्र । ११ यवनों के भार से भूमिका उखाड़ करने के लिये । १२ खेटा (युद्ध) करनेवाले । १३ बहुत भालों से । १४ आकाश को ढका । १५ युद्ध करने को ॥ ७ ॥ शेषनाग के फण फटकर कमठकी दढ

ढरि दिग्गज डगमगत लगत नेपथु लोकेसन ॥

छुट्टिग छितिपेन महल देहल फट्टिग सब देसन ॥

मेवास त्रास सकित दुमद हेरत सब आलोचि हिय ॥

चतुरग प्रचुर दक्खिन चढत किहि सिर कोप कृतात किय ८

गिरिन चूर मिलि आव धूरि अंवर सर्कुलि थट ॥

मिटि दुग्गम मेवास वनत पहर बट उच्चट ॥

अति अज्ञात झरि अग्निं लगि फैलत हय नाजन ॥

तरु तालन तुंगेख ढह्यो जावत गज डोलन ॥

वजि मैहु १ वंवर २ प्रतिवाँदका ३ पटह ४ विजय मर्दल ५ पंथाव ६ ॥

रस वीर बढत सिंधुइ रुचिर गग अतुल आलाप रं ॥ ९ ॥

फौजन लगि लगि फेट मुरत प्रतिहत रय मैरुत ॥

मिच्छन थर थर मुलक होत घरघर डर हँरुत ॥

बन्प सैव दल बीच रहत थकि थकि डत रहँस ॥

मैहुरै सजिल मिजाप तकत चढेल पकै तस ॥

पठि तूटी, भार पडने से गाढ छोडकर पाराह की दाढ तूटी, दिशा के हाथी
हरकर हिलने लगे, लोकपालों को १ कप होने लगा २ राजाओं से महल छूटने
लगे, दशा दिशाओं में ३ भय फैल गया, इस सेना की आस से शंका होकर
४ लुटेरों के घरों में उदासीनता हुई और अपने हृदय में सब लोग यह धियारेने
लगे कि दक्षिण की बहुत सेना चढती है सो ५ पमराज ने किस पर कोप
किया है ॥ ८ ॥ पर्वतों का चूर्ण होकर ७ पत्थर पिसकर उनकी धूलि के
समूह से आकाश ८ भर गया, चारों ओर लुटेरों के ९ दुर्गम घरों का नाश
होकर मार्ग और अमार्ग सीधे होगये, घोड़ों की नाखें खगकर अत्यंत १०
अग्नि झडी, तालवृत्तों की ११ उचाई के समान १२ हाथिण के झडे गिरने लगे
१३ बाघ विशेष, नगारे, १४ मागलिक पाजे, पटह नामक पाजे, मर्दल और
१५ दोल पजकर पीर रस यद्दा और सुंदर सैधयी रागिनी के पडे आलाप
का १६ शब्द हुआ ॥ ९ ॥ फौजों की फेट खगने से १७ पवन का धेग रुकने
लगा, म्लेच्छों का मुलक घूजकर भय से घर घर में १८ हाहाकार शब्द हुआ
धम के १९ जीव २० हतवेग होकर थक थक कर सेना के बीच में रहने लगे जिस
२१ सेना के आगेवालों को पानी मिखाता है वसी के पीछेवालों को २२ कीचड

संतनुतनूज रन तल्प सम नभ सुहात तोमर निकरै ॥

कौ नभ निखंग रक्खिय कुपित श्रीमंतहिँ रन करन सरा ॥१०॥

॥ दोहा ॥

मरहठन दल इम अमित, मत्थ घसत ब्रह्ममंड ॥

हिंदुसथान प्रविष्ट हुव, अरिगन हनन अखंड ॥ ११ ॥

अहमदखान पठान इत, बढिगो अंतरवेद ॥

दिल्लिय पहुँचे दक्खिनी, खलन प्रसारन खेद ॥ १२ ॥

दिल्लियपुर प्रविस दुसह, मरहठे छक मत्त ॥

आलीगोहरकोँ अटकिँ, छिँतिप भये धरि छत्त ॥ १३ ॥

नन्ह पित्तव्यक १ सूनुरसन, मिल्यो आनि मल्लार ॥

अक्खिय.दिल्लिय करहु अब, सुद्ध धरम अनुसार ॥ १४ ॥

सुगलनके तब सब महल, धीरन लिन्न धुपाय ॥

गंव्यपंच ५ जल गंग करि, दिय दिल्लिय छिरकाय ॥ १५ ॥

बाँस्तुकर्म अरु हँवन बलि, सुँरपूजन करि सूर ॥

धारि निर्गम हिंदुन धरम, मेरयो दिल्लिय पूर ॥ १६ ॥

ग्रीखम ऋतु सुनि ससिधृति १८१७ग, इम बनि दिल्लिय ईस ॥

दल सज्जित किय दक्खिनिन, रचि सत्रुन सिर रीस ॥ १७ ॥

अहमदखान पठान उत, बहुदिन अंतरवेद ॥

रह्यो अमल अप्पन रचत, भूपन डारत भेद ॥ १८ ॥

दिल्लीपति इत दक्खिनी, हुव सो सुनि हुसियार ॥

मिलता है १ भीष्म की शरशय्या के समान भालों के रसमूह से आकाश
शोभित होता है किधौं वह आकाश भालों से ऐसा दीखता है कि
मानों श्रीमन्त ने क्रोध करके आकाश को ३ भाधा बनाकर उस में भाले
रूपी बाण रक्खे हैं ॥ १० ॥ ४ सब ॥ ११ ॥ १२ ॥ आलीगोहर नामक
षादशाह को ५ रोककर ६ आप दिल्ली के राजा हुए ॥ १३ ॥ नन्ह के
७ काका के ८ पुत्र से ॥ १४ ॥ ९ पंचगव्य से ॥ १५ ॥ १० नांगल (बास
करने का मुहूर्त) ११ होम १२ देवपूजन १३ वेद के अनुसार ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥

पलटयो अहमदखान पुनि, कुल हिंदुन खय कार ॥ १९ ॥
 सप्त चद धृति १८१७ मान सक, माघ सिसिर लहि मेल ॥
 मकर अरोहत अहिमकर, आपे तुरुक अठेल ॥ २० ॥
 पटनासख १००००० पठानकी, दिल्लीकी दुव २००००० लख
 जाय मिली सब इकजुरि ३०००००, तमकि उठावन तंख ११
 ॥ पादाकुलकम् ॥

बढि इततैं बिस्वासराव १ बलि, चीमार अरु जनकू ३ मजार ४ बलि ॥
 नैन मिलत असिबर करि नगगे, ज़रन खान अहमद सन लगगे ॥ २२ ॥
 ॥ पञ्चद्वयम् ॥

मिलि इततैं मरहठ जातैं रन बित्यरयो, उततैं अहमदखान नखिख
 हय उप्परयो ॥
 बादी प्रतिवादी कि व्याकंगन १ न्याय २ के, कल्पक रचि रचि को
 टि भिरे पटु भायके ॥ २३ ॥

॥ चञ्चला ॥

यौ इरान १ दक्खिनी १ मिले चलाय द्वै २ अनिक ॥
 सखके प्रहार घोर बित्यरे मच्यो समिक ॥
 उँतमग उच्छटैं कटैं कपाल भूरि भाल ॥
 केक भिन्न व्है गिरैं सिपाह के भिरैं कराल ॥ २४ ॥
 अच्छरीनके छपे विंतान रूप लैं विमान ॥

॥ १९ ॥ १ मकर सक्रान्त पर थडा २ टड नहीं करनेवाला (सूर्य) ॥ २० ॥
 ३ ताबे (घोड़े) उठाते हुए ॥ २१ ॥ २२ ॥ इधर से मरहठों के ४ समूह
 ने मिल कर युद्ध फैलाया और उधर से अहमदखा घोड़े उठाकर थला
 सो मानों ५ व्याकरण और १ न्याय के बादी और प्रतिवादी ७ कल्पना का
 हुई कोटि रचरच कर दचतुरता की रीति से भिड़े ॥ २३ ॥ इस प्रकार ईरानी
 और दक्षिणी दोनों सेनाओं को थलाकर मिले सास्त्रों के घोर प्रहार फैलकर
 १ युद्ध हुआ जिसमें १० मस्तक उछटनेलगे कपास और ११ बहुत लजाट कटनेलगे
 कितने कट कर गिरने लगे और कई सिपाही मय कर युद्ध करनेलगे ॥ २४ ॥
 अप्सराओं के विमान १२ अक्षुप्त की तरह छागये चाल्हें, गिद्ध और मिथान

चापसों रहे किलोलि चिल्ह १ गिद्ध २ त्यों सिचान ३ ॥

जुगिनीनकी जमाति आनिकै नची जरूर ॥

साकिनीनके समूह उल्लसे सिराहि सूर ॥ २५ ॥

सिंहकों अरोहि कालिका रु बैलकों महेस ॥

आय संगही खरे बनें तमासगीर बेस ॥

दान सुकि दिक्करी करंत चिकरी पुकारि ॥

सेस ओ बराह कुम्भ होसकों रहे बिसारि ॥ २६ ॥

रत्तमैं भरे कंबंध मत्त के फिरैं उताल ॥

भूमिके तनूज जानि आनि ए नचैं बिसाल ॥

काचकी चुरी समान होत खंड खंड केक ॥

उल्लटैं प्रहार भीरु ही फटैं हटैं अनेक ॥ २७ ॥

कालखंज १ उच्छटे कटे गिरंत प्लीह २ क्लोम ३ ॥

होत खग्ग अंगिमैं सुमार हीन प्रान होम ॥

जो तजैं अनेक भीरु भजिजबो विचारि जंग ॥

ज्यों निमग्न बारि प्रान प्रानकों गहैं तरंगें ॥ २८ ॥

पक्षी वत्साह से किलोलें करने लगे. योगिनियों की जमात निश्चय ही नालगी और शाकिनियों के समूह वीरों की प्रशंसा करके हर्ष युक्त हुए ॥ २५ ॥ कालिका सिंह पर और महादेव पैल पर १ चढ़कर आये और साथ ही धिक्क तमासवीन बनकर खड़े रहे २ दिशाओं के हाथी मद सुखकर मार कर पुकारने लगे. शोषनाग, बाराह और कच्छप चेत झूलगये ॥ २६ ॥ का धिर में भरेहुए कई मस्त ४ कंबंध (विना माथे के क्रियावान् धड़) शी से फिरनेलगे सो मानों कई ५ पृथ्वी के पुत्र (मंगल) आकर नाच करते हैं कई वीर काच की चूड़ी के समान दूर दूर होते हैं और ६ कई कायरों से वक्षट होते हैं और हृदय फट कर हटजाते हैं ॥ २७ ॥ ७ कलेजे वक्षट और कटेहुए ८ निस्सी और ९ फेफरे गिरते हैं १० खड्ग रूपी अग्नि में गणना रहित प्राणों का होम होता है अनेक कायर युद्ध से भगना विचार १२ जीव छोड़ते हैं जो १३ पानी में डूबता हुआ प्राण की रक्षा के लिये वसी पानी की लहर को पकड़ता है ॥ २८ ॥

*प्रोथ१ त्यों हय च्छटा२ कटैं निगाल३ इकश्य४ पीने ॥
 होत अग हीन है गिरैं विभग तग१ जीन२ ॥
 खगगघात द्वार वहे चलैं अनेक रत्त खाल ॥
 बप्प माय उच्चैरैं फिरैं अनेक भै विहाल ॥ २९ ॥
 मद्र केक भीरु भजिज यों टरैं सदै न मार ॥
 ज्यों कपीस मालकोसमें कंकार१ ओ पंकार२ ॥
 केक बीर इत्यकों भले दिखात खगग आनि ॥
 षड्ज अंत्य मूर्च्छना बिजावली बनात जानि ॥ ३० ॥
 टकरैं अमाप चाप वानको वनैं विरतान ॥
 कालको निदान लैन जंघा लगे प्रवीर कान ॥
 के चलै कृपान१ सगि२ कुत३ त्यों छुरी४ कटार५ ॥
 कंकटी कराल सूर छिन्नवहे गिरैं कुडारैं ॥ ३१ ॥
 इत्यदै मैही कितेक घुम्मिकें उठै इकत ॥
 छाक कापिसायनी मनो गमार लौ छकत ॥
 कालसे कराल खात के फिरैं छुटे कलबैं ॥
 वैक्र विव चक्र के चलैं मनो कि सक सबैं ॥ ३२ ॥

भ्रमनेगरदनकठ और सुष्ठु कमर, इन अंगों से हीन होकर कटेछुप घोड़े और
 विशेष भगदुप तग और जीन गिरते हैं तरबारों के घावों के द्वारा दधिर के
 अनेक नाले चलाते हैं तथा भय से अनेक लोग बेहाल होकर 'पाप' 'मा' ऐसे
 बच्चारते फिरते हैं ॥२९॥ इस प्रकार कई मूर्ख और कायर भगकर ऐसे टलजाते
 और मार नहीं सहते हैं जैसे रहनुमान के मत के मालकोष रांग में ३५
 और ४५ वम स्वर टलजाते हैं कई वीर तरबार के अच्छे हाथ ऐसे दिखते
 मानों ५५ वज स्वर की अतिम मूर्च्छना बिजावली रागिनी को बनाती है ॥३०॥
 प्रमाण रहित धनुषों की ७ टकार होकर बाणों का ८ दितान बनाता है और
 इस समय का कारण पूछने को १० प्रत्यक्षा वीरों के काशों से लगती है कितने
 तलवार, धरछी, भाला, छुरी और कटार चलाते हैं जिनसे ११ कवच धारण क
 रनेवाले भयकर वीर कटकर १२ छुरी भाति गिरते हैं ॥ ३१ ॥ कितने ही
 १३ भूमि पर हाथ देकर घुमते हुए छठकर चलाते हैं सो मानों १४ मय की
 लेकर गवार छकते हैं कई १५ याण छूटकर काल के समान भयकर होकर
 फिरते हैं और कई १६ टेढ़े बिजवाले चक्र चलाते हैं सो मानों इद्र का १७ यज्ञ है ॥३२॥

उत्तमंग^१ कंधरा^२ गिरैं अतीव बाहु^३ अंस^४ ॥

बंसपिठि पंसुली लगी मनोँ कि पत्र बंस ॥

तेगके प्रहार केक रत्त^५के^६ रचंत ताल ॥

सीसवहै सरोज तत्थ कुंतलावली सिवात्त ॥ ३३ ॥

धीर के करीनेतैं मलंगि अंग यों धरंत ॥

कूटतैं कि केहरी नटी कि तेहरी करंत ॥

बस्त्रहीन वहै किते दुरैं करीने पाय बीच ॥

नाथ श्रावकीनेके मनोँ कि थंग भोन नीच ॥ ३४ ॥

व्यंजनावली पिसाच भूद के करैं बिसाल ॥

पाहुनी बुलात न्योँति जुगिनीन खेत्रपाल ॥

छुटिजात केनके गुमान वान पोन छेहि ॥

लब्धवर्णा अंग ज्योँ कुँकाव्य छिन्न भिन्न व्हैहि ॥ ३५ ॥

होत सूर सोगुनेँ उछाहमाँहिँ दै प्रहार ॥

देन लैन भिन्न पै^७ बहैं कि बावनावतार ॥

होत अंग हानि पै कितेनके रुकै न पाँनि ॥

बहुत १ मस्तक २ गरदन, भुज और ३ कण गिरने हैं और ४ पीठ की हड्डी के लगी हुई पंसुली गिरती है सो मानों ५ बांस के लगा हुआ पत्ता गिरता है तलवार के प्रहार से कई ६ रुधिर के तालाव बनते हैं जिन में मस्तक तो ७ कमल और ८ केशों की पंक्ति शैवाल (मैंवाल) है ॥ ३३ ॥ कई धीर लोग ९ हाथियों से ऐसे कूदते हैं जैसे १० पर्वत से सिंह और तीन छलांग मारती हुई नटी कूदती है कई बस्त्र हीन होकर ११ हाथियों के पैरों में छुपते हैं सो मानों १२ जैनियों के देवता १३ मरुतों के धंभों के नीचे स्थित हो रहे हैं ॥ ३४ ॥ १५ रसोई पकानेवाले कई पिशाच १४ भोजन के पदार्थों की बड़ी पंक्ति बनाते हैं खेत्रपाल न्योँता देकर योगिनियों को पाहुनी बुलाते हैं बाणों के पवन को १७ छूते ही १९ कड़्यों के घमंड ऐसे छूट जाते हैं जैसे १८ पंडित के आगे १६ छोटा काव्य छिन्न भिन्न हो जाता है ॥ ३५ ॥ प्रहार देने में धीर लोग सौगुने उछाहवाले हो जाते हैं जैसे देने और लेने में बावन अवतार के २० पैर बढ़ते हैं अंग की हानि होने पर भी कितनों ही के २१ हाथ ऐसे नहीं रुकते जैसे द्यूत (जुए) के खिलाड़ी हारने में भी मिठास जानकर

जानि द्वारिमैं मिठास द्यूतके खिल्द्वार जानि ॥ ३६ ॥

अद्वफार व्है गिरें किते तुंखार खगग ऊंति ॥

बंदि लेत धात हैर मनो कि वप्पकी बिभूति ॥

केतु रंत लिप्त के करीनपैं करै प्रकास ॥

लाखरग भास राधमासमैं मनो पलास ॥ ३७ ॥

ढाकिनी कितीक बीर अत्र लेत कठ डारि ॥

मालिनी बिडारि ज्यों प्रमत्त लेत माल धारि ॥

के प्रवीर धीर कष्टि सत्रुको नये प्रकार ॥

चित्रकार बुद्धिमैं करैं ति चित्र चित्रकार ॥ ३८ ॥

प्रकार१ प्रकार२ अन्त्यानुपास ॥ १ ॥

के गदा प्रहारकैं इनैं सकोप मत्थ ईष्ट ॥

लोहकार कूटपैं मचैं मनो कि लोह रिष्ट ॥

प्रेत के प्रेतप गोदको सिरात बँक पोत ॥

लेत के प्रवीर व्याहि अच्छरी उतारि लोन ॥ ३९ ॥

रगमोहि बिदि के अनदि बिदि देत रग ॥

पिक्खि जंग जो रहयो अनूरु रुक्कि के पतगें ॥

खेलन से नहीं रुकते ॥ ३९ ॥ १ कितने ही घोड़े तख्तार की २ क्रीडा में ऐसे आधे कटकर गिरते हैं जैसे पिता के ईश्वर्य को दो भाई घाट लेते हैं कई हाथियों पर ४ रुधिर से पुती हुई ध्वजाएँ प्रकाश करती हैं सो मानों ५ वैशाखमास में लाखरग से ढाक प्रकाशित होता है ॥ ३७ ॥ कितनी ही ढाकिनियाँ बीरों की आँतें कठ में ऐसे डाल लेती हैं जैसे मस्त मालिनियाँ फूलों की माछा ६ नि काल कर धारण कर लेती हैं कई धीर वीर शत्रु को नवीन रीति से काटते हैं सो ७ चितरे की बुद्धि में दक्षिणाम करने का आश्चर्य कराते हैं ॥ ३८ ॥ कितने ही गदा का प्रहार ८ इच्छानुसार मस्तक पर करते हैं सो मानों १० लुहार की ११ पेरन पर १२ लोह सुझरों का निरंतर प्रहार होता है कई प्रेत १३ तपे हुए मांस को १४ मुख के पवन से ठहा करते हैं और कई बीरों को अप्सराएँ नोन (निमक) छतार कर व्याह लेती हैं ॥ ३९ ॥ १५ युद्ध में कई १६ भाट प्रसन्न होकर १७ नमस्कार करके शायसी देते हैं अर्थात् प्रशंसा करने हैं, जिस युद्ध को १८ सूर्य १९ अरुण नामक सारथि को रोक कर देख रहा है कई तरवार

केक तंग मारदैं हरैं करीन उत्तमंग ॥
 तोरि शृंग मेरुके चलैं मनौं कि धारगंग ॥
 के प्रसन्न गूदतैं अघाय होत गिद्ध कंक ॥
 त्यों प्रछन्नद्वारके प्रवेस खर्व व्है निसंक ॥
 हत्थि घाय फारमें दुरैं कितेक भीरु हंत ॥
 ब्रध्नको उगान जानि चोर ज्यों दूरी बसंत ॥ ४१ ॥
 कुब्ज १ अंध २ खज ३ व्है नचैं पिसाच हास काज ॥
 साकिनी बढाय दंत के करैं बिरूप साज ॥
 ईसंके दिये गयेहु सीस के कहैं उतारि ॥
 नाथ लेहु धारि नैंक जुद्धदंतको निहारि ॥ ४२ ॥
 सैद्य स्वीय रत्त डारि टोपमें कितेक सूर ॥
 होय नम्रगाँत आत मात कालिका हजूर ॥
 होत सैत्व छोरि एकवारके किते महीप ॥
 दीपिका करैं न तैलहीन ज्यों दूसा प्रदीप ॥ ४३ ॥
 दोय २ प्रेत अंतलै फिरैं कडोंक घेर देत ॥

मारकर हाथियों के मस्तक काटते हैं सो मानों सुमेरु का १ मस्तक तोड़ कर
 गंगा की धारा चलती है ॥ ४० ॥ कितने ही गिद्ध और कंक २ मांस से तृप्त
 होकर प्रसन्न होते हैं जैसे खिड़की के द्वार में ४ छोटे शरीर वाला शंका
 राहित प्रवेश करता है तैसे वे मांसभोजी पक्षी मृतक हाथी आदि के शरीरों में
 प्रवेश करते हैं कई कायर घायल हाथियों के घावों में ऐसे छुपते हैं जैसे वसूय
 का उदय होना जानकर चोर ७ गुफाओं में घुसते हैं ॥ ४१ ॥ कई पिशाच
 हास्य करने को कुब्ज, अंध और ६ खोड़े होकर नाचते हैं कितनी ही शाकि
 नियां दांत बढ़ाकर कुरूप साज बनाती हैं, १० शिव के हृदय पर (मुंडमाला में)
 गयेहुए भी कई मस्तक कहते हैं कि ११ हे नाथ हमको उतार कर कुछ १२ दांतों
 का युद्ध भी देख लो “क्योंकि खाली मस्तक केवल दांतों का ही युद्ध कर सक-
 ता है” ॥ ४२ ॥ कई वीर अपना १३ तुर्त का रुधिर टोप में ढालकर १४ झुककर
 कालिका माता के सामने आते हैं. कई राजा एक ही बार में १५ पराक्रम छो-
 ड देते हैं जैसे तैल से हीन १६ दीपक में १७ बत्ती प्रकाश नहीं करती ॥ ४३ ॥

खेतकारं लट्टिवे लगै जरीब जानि खेत ॥
 जगमै मलंग केक मल्ल व्है लगात जोध ॥
 रंग माहिं रंग लै करें कितेक जोध रोध ॥ ४४ ॥
 सत्रुकंठ दत दै पिबत रक्त केक गूर ॥
 गड्ढरी पछारि सारदूल ज्यों घनें गरूर ॥
 मेघवहै मिले अनीक द्वैर प्रकोप वार्त मेल ॥
 खगग त्यों कटारर कुत३ सगि४ बान५ बुंद खेल ॥ ४५ ॥
 के करीन अग लीन सखके करै प्रकास ॥
 भानु अधकारमै करें अनेक जानि भांस ॥
 सोरकी सिखा सिलगिग जोरकी सु गज्जि जात ॥
 औरकी कहों कितीक घोरैकी घटा दवात ॥ ४६ ॥
 होत जग यों लही समस्त दक्खिनीन द्वारि ॥
 उद्यमी कहा करै न दैव भद्र आनुसारि ॥
 विरैथरे घुमडिकै इरान मिच्छ जे बनाय ॥
 खीजमै भये गये घनें अरीन प्रान खाय ॥ ४७ ॥

कुण्डलिका

कहीं पर आत लेकर दो पेट घेरा देते फिरते हैं सो मानों ? खेती करनेवाले
 लाटने के लिये खेत में जरीब लगाते हैं कई युद्ध में मल्ल होकर कूदते हैं और
 २युद्ध में ३ प्रयासा पाकर कई धीर दूसरों को रोकते हैं ॥ ४४ ॥ कई धीर शत्रु
 के कंड में दात लगाकर पेसे रक्त पीते हैं जैसे ४ सिंह पड़े घमंड से मेड़ को
 पछाड़ कर रक्त पीता है क्रोध रूपी ९ पवन के मिलने से मेघ रूप होकर
 जैसे दोनों ५ सेना मिली तैसे ही तलवार, कटार, भाला, धरछी और पाणों
 की ७बूदों से खेलें ॥ ४५ ॥ कितने ही ८ हाथियों के अगों में लीन हुए शत्रु
 प्रकाश करते हैं सो मानों अधकार में अनेक ९ सूर्य १० प्रकाश करते हैं
 पारुदसे अग्नि खगकर जोरकी गर्जना करती है सो और की क्या कह ? ११ मय
 कर घटा की गर्जनाको दयाती है ॥ ४६ ॥ इसप्रकार होते हुए युद्ध में दक्षिणिया
 की द्वार हुई सो १२भाग्य शुभ नहीं हो तो उद्यमी क्या करे १३ इरान के म्लेच्छ
 जीतकर घुमड कर १४ कैले और क्रोध में होकर बहुत शत्रुओं के प्राण जाग

पानिप करि जुझो प्रबल, इम दक्खिन ईरान ॥
 करन अजय दूरीकरण, करन विजय मतिमान ॥
 करन विजय मतिमान, रंग कुरुखेत जंग रुचि ॥
 रुचिधर अहमदखान, जयो हुत अरि कृपान सुचि ॥
 न सुचि भजे मरहठ, न सुचि भजे स्यानिप करि ॥
 निप करि लये बधाय, गये अच्छरि पानि पकरि ॥ ४८ ॥

॥ दोहा ॥

चीमाके सिरको चटकै, खोजि कँटक रन खेत ॥
 हारयो करि आयास हर, हारयो तँदपि न हेत ॥ ४९ ॥
 जया तनय संध्या जिमहि, जनकू अमरख जगि ॥
 न मिल्यो रंचक पँलचरन, गो तरवारिन लगि ॥ ५० ॥

॥ षट्पात् ॥

तनय नन्हके तिमहि बीर बिस्वासराव बढि ॥
 नकखे तुरग निसंक पाने पकरहु पठान बढि ॥

*ऊपर कहीहुई रीति से १ पराक्रम करके २ हाथों से पराजय को दूर करने और
 ४ विजय करने को दक्षिणी और ईरानी दोनों बुद्धिमान प्रबलता पूर्वक ऐसे ल
 जैसे बुद्धिमान ५ कर्ण और ६ अर्जुन ने कुरुक्षेत्र के ७ युद्ध क्षेत्र में दुरुचि पूर्वक यु
 किया था ८ क्रान्ति को धारण करनेवाले अमदखान ने तरवार रूपी १० अग्नि
 में शत्रुओं को होम करके जय किया, इधर मरहठों ने भी ११ शृंगार रस
 सेवन नहीं किया और १२ बुद्धिमानों करके १३ मृत्यु से नहीं भगे "माघ काव्य
 टीकाकार ने शुचि शब्द का अर्थ मृत्यु लिखा है" जिनको स्वर्ग में १४ फल
 बंधाकर देवताओं ने बधा लिये और वे मरहठे अप्सराओं के १५ हाथ पकड़
 गये ॥ ४८ ॥ चीमा के मस्तक के १६ टुकड़े को १७ सेना के युद्धक्षेत्र में हेर
 शिव १८ परिश्रम करके थक गये १९ तोभी उस (मस्तक के टुकड़े) से स्नेह
 ही छोड़ा अर्थात् उसके नहीं मिलने पर भी हेरते ही रहे ॥ ४९ ॥ २० मां
 खानेवालों को कुछ नहीं मिला ॥ ५० ॥ २१ घोड़े डाले अर्थात् शत्रु की सेना
 घोड़े उठाये, यहां विरुद्ध लक्षणासे घोड़े उठाये ऐसा अर्थ होता है ॥ २२ हाथों

* ग्रन्थकर्ता (सूर्यभल्ल) के मत से कुण्डलिया छन्द में दोहे के अन्तिम चरण को पलटाने में अर्थ
 नहीं होवे तो उसको पुनरुक्ति मानते हैं जिसका ही उदाहरण यह कुण्डलिया है ॥ ४८ ॥

होरी । जेम हुरिपार निडर झारी अंसि नागिनि ॥
 करी बहुत लरि कुमर दुजन तिथ दुसह दुहागिनि ॥
 सुरलोक सँव्य अच्छरि सहित गधर्बन गीत सु गयो ॥
 श्रीमत सुवन हारि न समुझि तरवारिनि तिल तिल भयो ५१
 ॥ दोहा ॥

गमराव १ नारुव २ रघुव ३, बाला ४ अंयक ५ बीर ॥
 रामचद ६ अवा ७ रतन ८, सखाराम ९ हमगीर ॥ ५२ ॥
 इत्यादिक उमराव सब दक्खिनके तजि देह ॥
 नाक गये बधन नैवल, नाक कँलत्रन नेह ॥ ५३ ॥

इतिश्रीधंशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायणो सप्तम ७ राशिवुम्मे
 दसिंहचरित्रेलवधजया ऽहमदखानसमस्थलीसविशननिवारितजनकू
 क्षतमल्लारपराजपत्नदक्षिणाप्रेषणश्रीमन्तनन्हसुतविश्वासराव १ पि
 तृवपकचीमा २ मुख्यसप्ततिसहस्र ७०००० सैन्यप्रेषणातवालीगोह
 रनिग्रहणादिल्लीशुद्धसस्करणाश्रुतेतदहमदखानाऽऽगमनदिल्ली १ रान
 २ सैन्यपमहाराष्ट्रसैन्यमहाराणाभवनससामन्तविश्वासराव १ चीमा
 २ जनकू ३ मरणापवनजपसवर्द्धन पञ्चाशत्तमो ५० मयूख ॥ ५० ॥
 आदित ॥ ३३१ ॥

पठानों को पकड़ा ऐसा कहकर १ इली की दिनों में फारा (गेहर) खेले
 मैले २ नागणी रुगी तरवार १ शस्त्रों की क्षिपों को ४ अप्सरा को पार्ह
 तरफ लेकर ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५ स्वर्ग में ६ नवीन ७ स्वर्ग की क्षिपों से ॥ ५३ ॥

श्रीधंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में, उम्मेदसिंह के च
 रित्र में जय पाकर अहमदशाह का अन्तरवेद में जाना और जनकू के घाव
 बिटाकर मल्लार का हारने का पत्र दक्षिण में भेजना १ श्रीमन्त नन्ह का पुत्र
 विश्वासराव और काका चीमा को मुख्य करके सत्तर हजार सेना को भेजना और
 वस्का आलीगोहर को पकड़कर दिल्ली को शुद्ध काना सुनकर अहमदशाह का
 आना २ दिल्ली और ईरान की सेना का एक होकर मरहटा की सेना से पकड़
 करना और वसराचों सहित विश्वासराव, चीमा, जनकू का मरना ३ प
 य नों की जय होने का पचासवा मयूख समाप्त हुआ ॥ ५० ॥ और आदि से तीस

॥ प्रायौ ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

पहिलैं जिम हुलकर प्रथित, बच्यो आयु बल एक ॥
जाय भरतपुर जट्कै, किन्नो घायन सेक ॥ १ ॥
छोरि कलीजहु भरतपुर, सुनि मल्लारहिं आत ॥
गयो हैदराबाद भजि, आलये निज अकुलात ॥ २ ॥
क्रिय स्वागत मल्लारको, मुदित जट्ट रविमल्ल ॥
रखतँ द्रव्य सब नजरि करि, ठब्ब्यो दक्खिन ठँल ॥ ३ ॥
तब हुलकर कछु दिवस तँहँ, रहि रचि कटक नवीन ॥
भंडअटेरपुरादि सब, लूटि भदावर लीन ॥ ४ ॥
पुनि मगके गुरु लघु नृपन, दंडत बिजय दिखाय ॥
गागरनी अभमल्ल गढ, जव करि बिछ्यो जाय ॥ ५ ॥
कछुक शरि रटोर करि, दयो उचित पुनि दंड ॥
परि पायन मल्लारके, सद्धयो हुकम अखंड ॥ ६ ॥
हुलकर बहुरि प्रयान करि, कोटा जनपद आय ॥
दिन कछु घाँट मुकुददर, रह्यो मुकाम रचाय ॥ ७ ॥
अहमदखान पठान इत, दक्खिन जिति दुरंत ॥
आलीगोहर साह पुनि, क्रिय दिल्लिय तिय कंत ॥ ८ ॥
मुख्य वजीर नबाब करि, लखनेऊ नगरेसँ ॥
मुगलन राज्य जमाय गो, लंघि अटक निज देस ॥ ९ ॥
इत दक्खिन श्रीमंत सुनि, स्वीय पराजय सोर ॥
चढि सत्वर अप्पुन चलयो, जवननँ डारन जोर ॥ १० ॥

सौ इकतीस ३३१ मयूख हुए ॥

१ प्रसिद्ध ॥ १ ॥ २ अपने घर ॥ २ ॥ ३ सूर्यमल्ल जाट ने ४ सामग्री ५ दक्षिण की
ढाल को रक्खा ॥ ३ ॥ ४ ॥ ६ बड़े छोटे ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ कोटा के देश में ८ मुकुं
दरा के घाटे में ॥ ७ ॥ ८ दिल्ली रूपी स्त्री का पति ॥ ८ ॥ १० लखनेऊ नगर का
पति ॥ ९ ॥ ११ यवनों पर ॥ १० ॥

श्रीमत्केपुत्रमाधवरायकागदीपैठना] सप्तमराशि एकपचाशमयूख (३६६७)

पट्पात् ॥

संध्या जनकू पट्ट दयो कदारराव १ कैंहँ ॥
 अरु दत्ताके पट्ट धरयो माइजि२ प्रवीर तैंहँ ॥
 क्रम सन नाती१ पुत्र२ अडर राणाजीके ये ॥
 दासी औरैस दुवर२ हि सचिव धन मन करि सेये ॥
 राजि सग सुभट इत्यादि सब क्रम प्रपच जितन करयो ॥
 श्रीमन्त नन्ह विरचन बिजय दिछिय उप्पर उप्परयो ॥११॥

॥ दोहा ॥

दक्खिनके विपरीत दिन, हुकम बिगारन हार ॥
 दैइव डगरेजन उदित, करत अवहि करतार ॥ १२ ॥
 करत मिजल श्रीमत कछु, बढि बपु रोग बिसेस ॥
 प्रानन तजि परलोक गत, साइ सुत सचिवैस ॥ १३ ॥
 तब मरहठन मुरि तखत, निज प्रभुके तिर नाय ॥
 सुत जेठो श्रीमतको स्वरूपो माधवराय ॥ १४ ॥

॥ रुचिरा ॥

बुल्लयो इत बुदीस नृपति निज दीप अनुज जयनैर रह्यो ॥
 अपकृत तास सकल बिस्मृत करि होय सदय अति हेत चह्यो ॥
 रूपय लक्ष१०००००पटा जुत रैनरस रसिक कापरानि नगर दयो
 परिखंद विरचि बुलाय बचन पटु अप्पि अभय हिय लाय लयो ॥१५॥

॥ हीरकम् ॥

जैपुर नृप माधव इत बारित कर जानिकैं ॥
 नौरव सिरदारसिंह बिंटीय द्रुत आनिकैं ॥

१ पोता २ पहला तो दासी (पासवान) का और दूसरा विवाहिता स्त्री का पुत्र ॥ ११ ॥ ३ भाग्य ॥ १२ ॥ ४ सचिवों का पति ॥ १३ ॥ १४ ॥ ५ बुलाया ६ दीपसिंह को ७ अपकार सय द भूखकर ८ युद्ध के रसका रसिक १० सभा करके ११ हृदय से लगा लिया ॥१५॥ १२ खिराज नहीं देना जानकर १३ नरु का

कारण रनथंभ अगग दक्खिन जयनैर ए ॥
 हमरो हमरो उचारि कुप्पिग रचि बैर ए ॥१६॥
 जैपुर उमरावन सैन माधव तब यों कही ॥
 दक्खिन सन मेल कोउ मम भट न करो सही ॥
 नारव सिरदार तदपि हुलकर पति भिंटयो ॥
 सम्मुह कर जोरि गो रु रक्खन निज भू नयौ ॥ १७ ॥
 मन्नि सु अपराध कुप्पि कूरम अब आयकैं ॥
 बिंटिय उनिवार मार तोप मचकायकैं ॥
 संबत धृति अट्ट अवनि १८१८ पाउस गत कालमें ॥
 बिहल हुव नारव इम संगर बिकरालमें ॥ १८ ॥
 रन करि कछु काल बहुरि नारव भय संधिकैं ॥
 माधव महिपालके पय लगिगय सैय बंधिकैं ॥
 दै कछु दम दैम्म स्वामि आयस सिर रक्खयो ॥
 हो तुम असुनाथ दास हैं हम इम अक्खयो ॥ १९ ॥

॥ चुलिआला ॥

उदयनैर नृप रान रान इत, राजसिंह दिय छोरि कलेवर ॥
 सह अंतहपुर पुर सकल, तैंहैं संहसा हुव त्रास घोरंतर २०
 सोलह आदिक तब सुभट, अंतहपुर प्रच्छन्नद्वार गत ॥
 रानिन प्रति बिन्नति रचिय, मंडि उचितव्यवहारधर्म मत २१
 अक्खिय नृप परतापको, अन्वैय किय ईकलिंग नष्ट अब ॥
 बुच्छत हम यातैं प्रकट, सोलह १६ अरु बत्तीस ३२ प्रमुख सब २२

१ रणथंभ (रणतभंवर) के कारण ॥ १६ ॥ २से ३ तोभी ४ अपनी भूमि रखने
 को नमा ॥ १७ ॥ ५ उणिगारा को घेरा ॥ १८ ॥ ६ हाथ बांधकर ७ दंड के रुपये ८
 आज्ञा ९ प्राणनाथ ॥ १९ ॥ १० अचानक ११ अत्यन्त घोर ॥ २० ॥ १२ उमराव
 १३ जनानी ज्योही पर जाकर ॥ २१ ॥ १४ वंश १५ मेवाड़ के राजा के इष्टदेव
 का नाम एकलिंग महादेव है १६ आदि “मेवाड़ में बड़े दरजे के उमरावों
 की गणना सोलह और दूसरे दरजे के उमरावों की गणना बत्तीस है” ॥ २२ ॥

कुमरअजितसिंहकाजैपुरकेसहायावैजाना] सप्तमराशि-एकपंचाशमयूक्त (३११६)

जो रानिय आधान जुत, हो कोउक तो कैल निहारहिं ॥
 यह नहि तो अरिसिंहकों, बैठारन हम पट्ट बिचारहिं ॥२३॥
 उत्तर तब अवरोध सन, प्रकट सुनि रानीन पठायउ ॥
 नहि दोहैदलच्छन छिपत, क्यों तुम यह सदिग्ध कहायउ ॥२४॥
 सुभठन यह उत्तर सुनत, रान प्रताप केनिष्ठ भ्रात तब ॥
 गहिय पति अरिसिंह किय, परिपाटी व्यवहार सखि सब ॥२५॥
 अरिसिंहहु तब अरज यहै, पठई नृप परताप तियन प्रति ॥
 तुम धारत आधान तो, रचक नहिं मम राज्य माहिं रति ॥२६॥
 राज्यसिंह सतति रहत, मोहि मात सब दासहि जानहु ॥
 नृपता यह मम जोग्यनहिं, पटु अण्णहु नहिं छेद प्रमानहु ॥२७॥
 पठई रानिन अखिख पुनि, अब तुम नृप अरिसिंह उदयपुर ॥
 करहु नाहिं सदेह कछु, धरहु राज्य अधिकार भार धुर ॥२८॥
 इत माधव जयपुर अधिप गिनि बिगरे मरदह लोभ गहि ॥
 उनको हो निज ढिग अमल, किय सु देस स्वाधीन उचित कहि ॥२९॥
 सैत्वर यह कैटु बच सुनि, जयपुर सिर मरदह सजे जब ॥
 पठयो छुंदिय पत लिखि, स्वरित दैरित कछवाह भूप तब ॥३०॥
 करन भीर यह कैलहै, एतना निज मम पास पठावहु ॥
 मरदहन सन मत्र रचि, वा उनको यह कोप उठावहु ॥३१॥
 संभर पति हम पत्र सुनि, अजितसिंह निज पुत्र भेजिदिय ॥

सहस्रपच ५००० दल सग करि, कुम्भे कथित स्वीकारसकल किय ॥३२॥
 सक बिक्रम धृति १८१८ समय, कुमर अजित हम बीर सिलह करि ॥

१ गर्भ सहित २ समय देखे ॥२३॥ ३ जनाने से ४ गर्भ छिपा नहीं रहता ५ सदेह युक्त ॥ २४ ॥ ६ राणा प्रतापसिंह का छोटा भाई ७ परस्पर का ॥२५॥ ८ प्रीति ॥ २६ ॥ ९ हे माताओं १० आप भी चतुर हो सो ११ छल मत जानो ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ १२ शीघ्र १३ कहुई बात सुनकर १४ सरकर ॥ ३० ॥ १५ स मय है ॥ ३१ ॥ १६ कछवाहे (माधवसिंह) का कहना ॥ ३२ ॥

९ हायन बय बिच निडर, भीर गयो जयनैर हरख भरि ॥ ३३ ॥

ने माधव अति जव समुख, अगग रीति सब लोंघि रु आयउ ॥

१० य हुंगरि वार मिलि, बिबिध सद्धि सतकार बधायउ ॥ ३४ ॥

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमः शराशावुम्मेद
सहचरित्रे आयुर्बल्लाऽवशिष्टमल्लारभरतपुराऽऽगमनतद्भीतकलीज
खानहैदराबादपलायनरवीकृतजट्टोपायनलुण्ठितभदावराऽऽदिदेशद-
ण्डितगागरणीशाऽभयसिंहहुलकरकोटाजनपदमुकन्दरघट्टपतनप
ठानाऽअहमदखानाऽलीगोहर्दिल्लयर्पणासुजाउद्दोलावजीरीभवनाऽअहमद
खानेरानगमनश्रुतस्वपराजयजनकू १ दत्ता ९ स्थानाऽऽपन्नकेदाररा-
व १ माहजि २ सहितदिल्लीविजयाऽर्थप्रस्थितश्रीमन्तमरणात्तत्सुतमा
धवरायपितृपट्टप्रापणाबुन्दीन्द्रसमाहूतसोदरदीपसिंहाऽर्थकापरणिग
रदानकूर्मराजमाधवसिंहमल्लारमिलनसाऽऽगसनारवसरदारसिंहनग
रणिगारारेवेष्टनतच्चरणपतनदण्डद्रव्यनिवेदनशीर्षोद्दराजोदपुरेशराणा
राजसिंहमरणापितृव्यकाऽरिसिंहतद्गद्दीनिविशानज्ञातनिर्बलमहाराष्ट्र-

१ वर्ष ॥ ३३ ॥ ३४ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशिमें उम्मेदसिंह के चरित्र
में आयुर्बल के बाकी होने से मल्लार का भरतपुर आना और उसके भय से
कलीजखाना का हैदराबाद भागना १ जाट की दी हुई भेट को स्वीकार करके
भदावर आदि लूटकर गागरनी के पति अभयसिंह का दंड देकर हुलकर का कोटा के
देश, मुकन्दरा के घाटे में मुकाम करना ७ पठान अहमदखाना का आलीगोहर
को दिल्ली देना और सुजाउद्दोला का वजीर होना २ अहमदखाना का ईरान
में जाना और अपना पराजय सुनकर जनकू और दत्ता के स्थानापन्न केदार
राव और माहजी सहित दिल्ली को विजय करने के अर्थ प्रस्थान किये हुए
श्रीमन्तका मरना और उसके पुत्र माधवराव का पिता का पाट पाना ४ बुन्दीश
के बुलाये हुए सगे भाई दीपसिंह के अर्थ कापरण नगर का देना और कछवाहे
राजा माधवसिंह का हुलकर से मिलने के अपराध से नरुके सरदारसिंहके नगर
उणिगारा को घेरना और उसके चरणों में पड़कर दंड का धन नजर करना ५
शीर्षोदियों के राजा उदयपुर के पति राणा राजसिंह का मरना और उसके
काका अरिसिंह का गद्दी बैठना ६ मरहठों को निर्बल जानकर जयपुर के पति

जैपुरके राजा का कुमार को लिखत देना] सप्तमराशि-द्विपचाशमयूज (३७८१)

जयपुरेशतद्देशस्वीकरणश्रुतैतत्सज्जदक्षिणासेनाऽऽगममाधवसिंहबुन्दी
सहायप्रार्थनरावराणामहाराजकुमाराऽजितसिंहजयपुरप्रेषणसमुखा
ऽऽगतजायमिहितत्सन्मननमेकपञ्चाशत्तमो ५१ मयूख ॥ ५१ ॥

आदित ॥ ३३२ ॥

प्रापो वज्रदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

अजितसिंह मिलि कुमर इम, माधव सन सह मोद ॥

पहुँच्यो डेरन आनि पहु, विरचत लरन विनोद ॥ १ ॥

किय अपुव्ये माधव कहिय, बुदिय पति यह वत्त ॥

सुनि रन पट्टप रणीप सुत, यहँ पठयो अनुरत्त ॥ २ ॥

कारन पाय विसेस कछु, दक्खिन दत्त किय देर ॥

माधव सुनि रक्खयो मुदित, कुमर दह नृप केर ॥ ३ ॥

क्रीडा बहु आखेट क्रम, दिन दिन सहज दिखाय ॥

सम्मुह रक्खयो तखत सिर, पुनि महत्तन पधराय ॥ ४ ॥

दयाराम तहँ दह द्विज, किय विव्रति करजोरि ॥

जयहरि लिय लिखवाय जब, नृप सन लिखित निहोरि ॥ ५ ॥

सुत वहँ जु समप्पिहँ, इम तुमको कछवाह ॥

धरहि अर्क दायाद धुव, चिति रावरी चाह ॥ ६ ॥

लयो जनक तुमरे लिखित, उचित दैन अब एह ॥

नृप सभर अनुकूल गिनि, सद्धु विहित सनेह ॥ ७ ॥

का धनका देश लेना यह सुनकर सज्जदक्षिणा की सेना का आना ७ माधव-
सिंह का बुन्दी से सहाय की प्रार्थना करना और रावराजा का राजकुमार
अजितसिंह को जयपुर भेजना ८ जयसिंह के पुत्र का उसके सन्मुख आकर
सन्मान करने का इकावनया ५१ मयूख समाप्त हुआ ॥ ५१ ॥ और आदि से
तीनसौ पत्तीस ३३२ मयूख हुए ॥

॥ १ ॥ १ अपूर्व २ अपने पाटवी पुत्र को ३ प्रीति करके भेजे ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ शि-
कार ५ तखत के ऊपर सम्मुख ॥ ४ ॥ ६ जयसिंह ने ७ राजा बुधसिंह से ॥ ५ ॥
८ किसी भाई को गोद रख लेवेंगे ॥ ६ ॥ ९ तुम्हारे पिता ने १० उचित ॥ ७ ॥

हो मुहुकमसिंहोत तँहँ, निठर हड्ड नगराज ॥

आश्रित कूरम ईसके, करन स्वामि जय काज ॥ ८ ॥

बुल्लपो सोहु बिलंब अब, न करहु हित पहिचानि ॥

जैपुरपति यह सुनि सजैव, अप्प्यो लिखित सु आनि ॥ ९ ॥

दक्खिन कटक बिलंब लखि, जानि सबन बिनु जोर ॥

राजकुमारहिँ सिक्ख दिप, माधव कूरम भोर ॥ १० ॥

जाय पटालयँ जैनक जिग, किय कुमार सतकार ॥

अक्खिय हित बिच अंतर न, इत उत गिनहु उदार ॥ ११ ॥

इम कहि इक १ गेज दुवर अरब, दुवर सिरुपाव सु राज ॥

नग भूखन इक १ रुचिर नव, किन्न नजरि हित काज ॥ १२ ॥

अरु दलेल उमराव निज, धूलापुरप समत्थ ॥

लछमन ताको पुत्र लघु, पहुँचावनि दिप सत्थ ॥ १३ ॥

दयाराम तँहँ अरज किय, कूरम प्रति पटु प्यार ॥

किय तुम भेट कुमारकी, संभरपति सतकार ॥ १४ ॥

नियम गिन्यौँ हित भाँहिँ नहिँ, यातँ यह दुव एह ॥

पै अब संभर भूपतँ, अर्द्धलिखावहु लेहँ ॥ १५ ॥

जयपुरके दफतर जनहि, लिय माधव लिखयाय ॥

सुनहु राम छितिपाल सो, सुनिबे योग्य सुभाच ॥ १६ ॥

॥ रोला ॥

संभरपतिके समुह कोस इक १ आवहिँ कूरम ॥

कुमर समुख अधकोस सु पुनि आवहिँ सनेह सँम ॥

कूरम डेरन हड्ड जात तोरन लग आवहिँ ॥

कुमरहि पायंदाज अंत रहि मिलि लै जावहिँ ॥ १७ ॥

नृपति परस्पर द्वैरहि मिलत मस्तक कर आनै ॥

॥ ८ ॥ १ शीघ्र ॥ ९ ॥ १० ॥ २ डेरे जाकर ३ पिता के जैसे ॥ ११ ॥ ४
घोड़े ॥ १२ ॥ १३ ॥ ५ बुन्दी के राजा को देने का सत्कार कुमर को दिया ॥ १४ ॥ ६
लेख में, राजा से कुमर के आधा लिखवाओ ॥ १५ ॥ १६ ॥ ७ से द द्वार तक ॥ १७ ॥

सत्कारपाकर कुमर का पीछा बुझी आना] सप्तमराशि दिपशाशमयूख (१७०३)

कुमर होय अति नम्र यहहि आचारै प्रमानै ॥

जानु जोरि नृप जुगल २ रहै इक १ तखत बरबबर ॥

बैठै सनमुख कुमर इक १ तखतहि हित तत्पर ॥ १८ ॥

चमर मोरछल होय उभय २ भूपन ऊपर जहँ ॥

कुमर दास कै रखिख रहै तस पिठि खरो तहँ ॥

पानदान सन पान भूप निजहथ उठावहिँ ॥

कुमरहिँ अप्पहिँ नृप सु भेलि दुव २ हथिन पावहिँ ॥ १९ ॥

अग लगावहिँ अतर उभय २ नृप उभय २ करनै करि ॥

कुमर अग कर इक १ अतर लावहिँ हित अनुसरि ॥

पायदाज प्रदेस अवधि भूपहिँ पहुँचावहिँ ॥

कुमरहिँ गहिष छोरि सिक्खदे सिविर पठावहिँ ॥ २० ॥

इक १ गज दुव २ सिरुपाव अरब दुव २ भूपहिँ अप्पहिँ ॥

कुमरहिँ दुव २ सिरुपाव अस्व दुव २ दे हित यप्पहिँ ॥

इक भूवन जिहिँ अर्घ अर्घ भूपहिँ हित धारहिँ ॥

कुमरहिँ ता सन अह अर्घ दे मोद बिथारहिँ ॥ २१ ॥

कूरम इनके सिविर आत इम एहु करै सब ॥

लीनी यह लिखवाय रवीय दफतर माधव तब ॥

संवत धृति धृति १८१८ समय माघ पादुर पंचमि ५ दिन ॥

इम बुद्धि निज नैर आय प्रविरयो कुमरन इन ॥ २२ ॥

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मे
दसिंहचरित्रे हनुगजकुमारजयपुरमुखनिवसनमाधवसिंहजयसिंहले

१ ऊपर लिखा हुआ आचार (दानों हाथ मस्तक के लगाना) २ बुढ़ने
मिनाकर ॥ १८ ॥ ३ कुमर का नौकर हाथ में स्वरुपर ४ अपने हाथ से
॥ १९ ॥ ५ दोनों हाथों से ६ सेरे भेजेगे ॥ २० ॥ ७ जिसका मूल्य (कीमत)
देवेंगे और उससे आधा कुमर को देकर ॥ २१ ॥ दसुवि १ कुमरों का पति ॥ २२ ॥

श्री वंशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायण के सप्तमराशि में, वंशेदसिंह के परिश्र
में, हाथों के राजकुमार का जयपुर में सुख से निवास करना और माधवासि
ह का जयसिंह के लिखाये बुद्धि के लेख को पीछा देना १ बुद्धी के पति के

श्वितबुधसिंहलेखप्रत्यर्पणबुन्दीन्द्रसत्काराऽर्द्धरीतिराजकुमारसत्कार
लेखजयपुरलेखमन्दिरलेखनप्रीतिपूर्वककृतरवसुभटसार्थाऽजितसिं
हबुन्दीप्रतिप्रस्थापनं द्विपञ्चाशत्तमोऽयमयूखः ॥ ५२ ॥ आदितः ३३३

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा॥

॥ दोहा ॥

संबत नव ससि धृति १८१९ समय, माधव कोउक काज ॥

आयो गढ रनथंभ तँहँ, बुल्लयो संभरराज ॥

सचिव तास आये समुक्ति, गो बुंदियपति तत्थ ॥

पुर खंडारि समीप दुवर, सुपहु मिले हित सत्थ ॥ २ ॥

संभरनृपके कुम्भ सन, सुभट मिले इकसहि ६१ ॥

उभय२ मिलत नृप अरिनको, नूर गयो सब नहि ॥ ३ ॥

दिय लिय गज तुरगादि सब, किय कछु दीह मुकाम ॥

इत बुंदिय नृप अंगनाँ, मुख्य गई सुरधाम ॥ ४ ॥

पहिलौ सक खट ख धृति १८०६ पर, लहिप्रतिपद१ बैसाख ॥

ईडरपतिजा भोगिनी, मरी सु मेचक पाख ॥ ५ ॥

पुनि सत्रह धृति १८१७ साल पर, अगहन मेचक पाय ॥

ऊदाउति गतअसुँ भई, छट्ठी६ दिन गर्द छाये ॥ ६ ॥

अब बसु ससि धृति १८१८ अब्दके, पुण्ड्राम१५ चैत अनेह ॥

महिषी हड्ड महीपकी, दिय अल्लिय तजि देह ॥ ७ ॥

खबरि तास खंडारिही, पहुँची संभर पास ॥

नृप हुव लखि अनुचित निर्यति, अंतर कछुक उदास ॥ ८ ॥

सत्कार से आधी रीति राजकुमार के सत्कार की जयपुर के दफतर में लिख
वाना २ प्रीति पूर्वक अपने उमराव को साथ करके, बुन्दी के कुमार अजितसिं-
ह को पीछा बुंदी भेजने का बावनवां ५२ मयूख समाप्त हुआ ॥ ५२ ॥ और आदि
से तीन सौ तेतीस ३३३ मयूख हुए ॥

१ माधवसिंह २ बुलाया ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ स्त्री ॥ ४ ईडर के पति की
पुत्री ५ छोटी रानी ॥ ५ ॥ ६ कृष्णपक्ष ७ गतप्राण द रोग छार ॥ ६ ॥ ६
समय १० पादवी राणी ॥ ७ ॥ ११ भाग्य के ॥ ८ ॥

सिंधियाकाविजैसिंहसेदहलेना] सप्तमराक्षसिपचाशमयूक्त (१७०५)

सुपहु दुहुँन२ तत्थहिँ सुन्पोँ, अब दक्खिन देल आत ॥
 केदार१ रु माहजि२ क्रैमिग, घल्लन सध्या घात ॥ ९ ॥
 सुनि माधव जपपुर गयउ, आयउ स्वपुर उमेद ॥
 दिस दिस मचि दक्खिन दहल, भूपन सिखवत भेद ॥ १० ॥
 ॥ रोला ॥

इत सध्या उज्जैन आय मालव निज बस क्रिय ॥
 अपन दोष२ रहि तत्थ दाव मरुधर जित्तन दिय ॥
 विंति जयाको बैर चढ सजि कटक चलाये ॥
 यैहँ सब नृपन वकील ईष्ट सद्धन हुत आये ॥ ११ ॥
 इम सबेग अजमेर पत रन खुल्लि पंताकन ॥
 बिजयसिंह सन बिजय लौन कय मत्र कैजाकन ॥
 यह सुनि मरुधर ईम भीरु बुदिय पुर भूपति ॥
 बुल्लयो दे दल विहित महि मन्न जुज्झन मति ॥ १२ ॥
 इत अति धृति धृति१=१९अब्द, असित सुचि छट्ठि६अरक जुत
 भूप भुजिष्यो वहरि जनिंग सयामसिंह सुत ॥
 वलिँ मरुपति दल बीच हड्ड हकिय सहाय हित ॥
 मम्मूह आयउ बिजयसिंह चाहत प्रमोद चित ॥ १३ ॥
 दिय डेग बुदीस सूरसागर तढागँ तट ॥
 दक्खिन दलकी देर भनत भूपाल तिमहि भट ॥
 यैहँ वकील अजमेर भेजि मरुजा साम सन ॥
 अठ्ठलकख दै दम्म द्रोह मिट्टयो मरहठन ॥ १४ ॥
 तव दब्बन दुढार चलयो दक्खिन देल सत्वर ॥
 लुट्टिय पुर मोजाद चारु आपनँ धन चैत्वर ॥

१ सेना २ चले ॥ ९ ॥ १० ॥ २ याक्षित साघने के छिये ॥ ११ ॥ ४ युद्ध की पताका
 खोलकर ५ युद्ध करनेवालों ने ६ पन्न पेरकर बुलाया ॥ १२ ॥ ७ आपाठ यदि ८
 अर्थात्धार सहित ९ दासी (पासघान स्त्री) १० जना ११ सुनि ॥ १३ ॥ १२
 तबाव के किनारे ॥ १४ ॥ ११ सेना शीघ्रचली १४ बिकी का बजार १५ चौहटा

स्वीय पितृव्यक सुता बुल्लि ईडरपुर सन यँहँ ॥
 उदयकुमारि अभिधानँ मरुप व्याहन संभर कँहँ ॥ १५ ॥
 अतिधृति धृति १८१६ आषाढ नवमि९ अवदताँ लग्न पर ॥
 बुंदीसहिँ सबिनोद दई दुलहनि बिबाहि बर ॥
 रक्खयो निज आवास नृपहिँ सनमानि पक्ख त्रय३ ॥
 हुव प्रतिदिन मुद दुहुँन२ दोजि२ सितपक्ख चँदोदय ॥ १६ ॥
 पुँटभेदन मोजाद इत सु कोटेस सचिव गय ॥
 अखैराम कायत्थ मिलन मरहटन अघ मय ॥
 संध्या माहजि श्रवर्न पिसुन पूरे अवसर लहि ॥
 संभर मरुप सहाय होन कारन अनेक कहि ॥ १७ ॥
 दै कछु छन्नै दम्म मोरि जित तित माहजि मन ॥
 बुंदिय उप्पर बेग प्रथितँ आन्याँ कराय पन ॥
 कटक अचानक सुररि चाहि हहून दंडन चित ॥
 अनी बिबिध उम्महिय मुँदिर भद्व लहरू रित ॥ १८ ॥
 द्रंग आत दक्खिनन सुनत मरुधर तजि संभर ॥
 आयो बुंदिय औरहि सज्यो दुद्धर चहि संगर ॥
 पुटभेदँन प्राकार सज्जि चाहत अरि आगम ॥
 मानहु चातक मत्त सघन घन भद्व समागम ॥ १९ ॥
 चित माहजि लहि चाह दोरि इत बैपु दक्खिन दल ॥
 बुंदिय सँहसा बिंठि कियउ तोपन कँलकलकल ॥
 अखैराम दँल अपि सजव बुल्लयो कोटेसहिँ ॥

१ अपने काका की पुत्री को बुलाकर २ नाम ३ मारवाड़ के राजा ने ॥ १५ ॥
 ४ सुदि ५ अपने महलों में ६ शुक्लपक्ष की द्वितीया के चन्द्रमा के उदय के स-
 मान ॥ १६ ॥ ७ मोजाद नामक पुरु में ८ उस चुगल ने माहजी सिंधिया के
 कान भरे ॥ १७ ॥ ९ विदित १० भादये के भेष की लहरों के समान ॥ १८ ॥
 ११ शीघ्र १२ नगर के कोट को ॥ १९ ॥ १३ दक्षिण की सेना रूपी शरीर से
 दौड़कर १४ अचानक १५ अत्यन्त कोलाहल १६ पत्र देकर कोटा के पति को

सत्रसल्ल देल सुनत चल्यो दच्चत द्रुत देसहिं ॥ २० ॥
 अनतापुरपति अजित प्रथम जो हुवकोटापति ॥
 पट्ट तैस यह पाय आय बुदिय रन किय अति ॥
 संध्याके भरि श्रवन वन्यो जयकार तास बल ॥
 जिह्मग लहि देखा जानि आखु मारत मारत अल ॥ २१ ॥
 इम मादजि अपनाप बेढि माधवईर बुदिय ॥
 संध्याको सावार्त सौरको कूल ज्यलन किय ॥
 दक्षिण १ पूरव २ दुव २ द्वि तरफ तापन मचि तोपन ॥
 कुल गोहन भौकार लगे कोपन रंय लोपन ॥ २२ ॥
 थाल सल्लिले गति थरकि मही दुगर डगमगत ॥
 अतल वितल बसवाने लजि सुतलप पय लगगत ॥
 बनि बनि प्रानन पिबुन वीररस बाढत नारद ॥
 धमि धमि तोपन धूम सहज छावत घन सारद ॥ २३ ॥
 तुष्टत निज सिर त्वरिते सूर न चहैं रु चहैं सिव ॥
 इत मारन अगि अतुल उत सु हिसन अनिच्छ इव ॥

शीघ्र बुझाया १ अत्र सुनत ही ॥ २० ॥ २ अजितसिंह ३ इस (शुशाल) ने
 वस (अजितसिंह) का पाट पाकर वस सिन्धिया के यल से ४ जय करनेवाला
 हुआ ५ मानों सर्प को पूरे को पकड़ा हुआ जानकर ६ बिच्छू ७ डक मारता है
 सर्प के मुख में चूहा होने के कारण अपने मरने का भय छोड़कर बिच्छू वस
 सर्प के डक मारता है ॥ २१ ॥ ८ माधवसिंह हाहा के बशावाला चुन्दी को घेर
 कर ९ सिन्धिया रूपी शत्रु के १० किनारे में आग लगाई "यहा सिन्धिया
 की अति प्रयत्नता दिखाने को वात्सार्थ में साधात और सौर दोनों एका-
 र्थवाची शब्दों का प्रयोग किया है" गोशों के समूह ११ कोट का १२ को
 ध के घेग से छोप करने लगे ॥ २ ॥ थाल में मरेहुए १३ जल की माति १४ वा
 स करनेवाले लाजित होकर १५ सुतल के पति के पैरों लगते हैं १६ प्राणों की
 चुगली करके १७ शरद ऋतु के पहल ॥ २३ ॥ १८ शीघ्र तूटे हुए अपने मस्तकों
 को वीर नहीं चाहते और मुदमाल करने को शिष चाहते हैं, इधर (चुन्दीवा
 के) शत्रुओं को मारने में तुलना रहित हैं और उधर हिंसा करने में १९ इच्छा
 रहित की भांति हैं

काली खप्पर कतिन गोद गत तदपि नैटन गहि ॥
 पीवनदेत न पलल करहु उपवास पचन कहि ॥ २४ ॥
 सुगंभि पराग समान खेह रवि मधुप दगन खिरि ॥
 अंधी करत अनूरु सहित कर्दम बिधाय किरि ॥
 तारागढ सिर तोप लौन कचमाल उतारत ॥
 बंदी गिदनि बुलि सूर गति गिरिहि^१ सिंगारत ॥ २५ ॥
 अंक गलिन जिम अटत तिमिर^२ फारत गोले तिम ॥
 तोप अदितिके तनुज करहि संख्या पावन^३ किम ।
 देत निसैनिन दोरि सूर आरोहत कपिसिर^४ ॥
 इतके असि आघात^५ बहि डारत तिन्ह बाहिर ॥ २६ ॥
 तकि तकि छिदन तोपदार बधत अगु गोलन ॥
 पवय^६ तिनके पात झुकत घुमन झुक झोलन ॥
 धमकि खनकत धूजि पृथुज बलभिन पर खप्पर ॥
 बिथुरत जरि बाजार छार टप्पर कठछप्पर ॥ २७ ॥
 भीरुन मुख छबि भाँति नटत जल दंग निवानन ॥

१ कालिका के खप्पर में गया हुआ वीरों का माँ में २ नृत्य करके उसको रुधिर नहीं पीने देता है सो मानों उससे कहेशा है कि यह रुधिर पाचन (हजम) नहीं होवेगा सो उपवास कर ॥ २४ ॥ ३ वमन्तऋतु के पुष्प रज के समान धूलि सूर्य रूग ४ अमर के नेत्रों में खिरकर ५ सूर्य के सारथिको अंधा करती है और रुधिर है खां वराह को ६ कीचड़ सहित ७ करता है = केसो की झाला को काटती है "लुञ्छेदने" इस धातु से, लोन का अर्थ काटना है ८ ग्रीधों रूपी भाटों को बुलाकर १० बुन्दी के पर्वत तक वीरों की तरह शृंगार कराता है ॥ २५ ॥ ११ जैसे सूर्य १२ अन्धेरे को फाड़ता है तैसे गोले गलियों में फिरते हैं १३ तोप रूपी अदिती के पुत्र (देवों रूपी गोलों) की संख्याको कैसे १४ पास करे हैं अर्थात् जैसे देवताओं की गणना नहीं होसक्ती तैसे ही गोलों की गणना भी नहीं होसक्ती १५ कंगुरों पर चढ़ते हैं १६ तरवारों के प्रहारों से ॥ २६ ॥ १७ पर्वत १८ उन गोलों के पड़ने से १९ बड़ी मियालों (घरके छाने के बक्र काष्ठ) पर ॥ २७ ॥ २० कायरों के मुख की शोभा नष्ट होवे तैसे नगर के निवाशों का जल नष्ट होता है

सोदागर रसवीर रच्यो विक्रय इम प्रानन ॥
 विराहिनिके उर विविध भये तपि तपि भुवमंडल ॥
 के जिम मनि रविकात फरस ग्रीखम दाहक फल ॥ २८ ॥
 अष्ट रु गोपुर उडत थभ मडप थहरावत ॥
 गगन गिद्ध गति ग्राव लोल चढत रु लहरावत ॥
 माघ त्रयोदसि १३ असित अक ससि धृति १८१९ सक अंतर ॥
 माहजिको मिलवाय सज्यो बुदिय इम सभर ॥ २९ ॥
 सुनि यह दैन सहाय कटक पठयो कूरमपति ॥
 कहयो हहु जय करहु हेतिबल करहु सत्रु हति ॥
 पामंडहेडापुरप होय कूरम सेनानी ॥
 राजाउत द्वारकादास आयो अभिमानी ॥ ३० ॥
 साहिपुरप उम्मेद थोहि पठयो सहाय दल ॥
 सुत लघु मालिमसिंह विरचि सेनेसे महाबल ॥
 विजयसिंह मरुराज जदपि बुदिय गन जान्यो ॥
 भेजि तदपि न भीर मूढ कृतघन पन मान्यो ॥ ३१ ॥
 १६ ॥ इत हहु भूप कटिवध न खोलत ॥
 पलपै विच प्राकार भटन ललकारत डोलत ॥
 सुत हुव पृथ्वीसिंह भूप जैपुरपतिके जैह ॥
 तास वधाई जग होत आई बुंदिय तैह ॥ ३२ ॥
 उच्छव ताको अतुल सुनत सभर नरेस किय ॥
 मरन मडि रन तुंमल बहुत दिन किय निसंक हिय ॥

१ वीर रस रूपी सोदागर ने इसप्रकार प्राणों का २ व्यापार रचा १ विरहिणी
 स्त्रियों के हृदय के समान भाति भांति से ४ अथवा जैसे ग्रीष्म ऋतु में सूर्यकान्त
 मणि का फल फल (विछोना) दाहनेषाखा होवे तैसे ॥ २८ ॥ २ बुरजें और
 शहर के दरवाजे ४ आकाश में ग्रीधों की भांति चपल पत्थर चढ़कर छहराते
 हैं ७ रूप्य पत्त ॥ २९ ॥ ८ जयपुर के राजा माघसिंह ने ९ शत्रुओं के बल से
 ॥ ३० ॥ १० उम्मेदसिंह ने ११ सेनापति करके ॥ ३१ ॥ १२ कोट पर ॥ ३२ ॥ १३ भयंकर

जान्यौं तुटत नाहिं नैर बुंदिय माहजि जब ॥
 अहारि साम उपाय पत्र पठयो नृप प्रति तब ॥ ३३ ॥
 कोटापतिको कैथित मन्नि संगर यँह मंड्यो ॥
 अप्प मिलहु अब आय छुद साँहस हम छंड्यो ॥
 सुनि नृप अरि कृत साम चिति नय मिलन बिचारिय ॥
 माधानी भगवंत दुग्ग रखयो रखवारिय ॥ ३४ ॥
 अक्खिय हमकाँ मारि नगर अरि लैन बिचारहिं ॥
 तो भाई मरि तुमहु देहु पुनि सूबेदारहिं ॥
 माहजि हितु मिलाप कियँ नृप निकसि यहै कहि ॥
 आयउ तौरन अवधि समुख संध्याहु तौर सहि ॥ ३५ ॥
 हथजोरी करि हुलसि जाय बैठे परिखद दुवर ॥
 साँपराध संध्या समेत इहुन बिनोद हुव ॥
 करन जोरि तब कहिय नम्र माहजि आंगस निज ॥
 सुनि हित जुत संभरहु बिकंच किन्नै दग बोरिज ॥ ३६ ॥
 अक्खिय तुम कोटेस कुटिलको कयौं न इष्टै किय ॥
 सुनि जोरे तस सयँन पिक्खि पुनि नृप बुद्धिय प्रिय ॥
 खरनीके कछु दम्म चढे आदिक गिनि दिन्ना ॥
 हित अन्योन्य बढाय बिदा मरहठन किन्ने ॥ ३७ ॥
 याहि बरस १८१९ बुंदीसकेर सिरदारसिंह सुव ॥
 ईडरपतिजाँ उदयकुमारि रानी औरैस हुव ॥
 चैत्रमास सुख असित पक्ख संगत अष्टमि दिन ॥
 उच्छव तिहिं दिन अतुल बहुरि बिरचिय इहुन ईन ॥ ३८ ॥

युद्ध ॥ ३३ ॥ १ कहना मानकर २ तुच्छ हठको ३ शत्रु के किये हुए मिलाप को नीति से विचारकर ॥ ३४ ॥ ४ द्वार पर्यन्त ५ प्रताप को सहकर ॥ ३५ ॥ ६ सभा में ७ अपराधी ८ सिन्धिया सहित ९ अपना अपराध १० प्रफुल्लित किये ११ नेत्र कमल ॥ ३६ ॥ १२ अनुकूलता (चाहाहुआ) अर्थात् भलाई १३ दोनों हाथ जोड़े १४ परस्पर ॥ ३७ ॥ १५ ईडर के पति की पुत्री के १६ उदर से १७ कृष्ण पक्ष १८ बहुत १९ हाडाओं के पति ने ॥ ३८ ॥

साहजालमकाभग्रेजोकोसेखादेना] सप्तमराशि-त्रिपचाशमयूख (३७११)

कोटिसह आनन विगारि अतिसय सिटाय हिय ॥
 अखेराम सठ सचिव सहित कोटा प्रवेस किय ॥
 विजयसिंह मरु ईस बुल्लि इत इह मदीपति ॥
 दीपकुमरि निज बहिनि ताहि व्याहिय मजुल मति ॥३९॥
 सक कृति धृति १८२०मित समी रांध अवदात दसमि १० दिन
 अति हित करि उच्छाह लगन सहिय कबंध हैं ॥
 साज प्रकृति धृति १८२१ समय तीज ३ फगुन सुदि बासर ॥
 ईडरपति लघु सुता दीप सोदर व्याहो वर ॥ ४० ॥
 जोधपुरहि यह विजयसिंह मरुपाल व्याह किय ॥
 नाम भवानकुमरि बहिनि उच्छव करि व्याहिय ॥
 याहि वरस १८२२ श्रीमत माधवहु देह बिदायो ॥
 पट्ट नरायनराव अनुज ताको तब पायो ॥ ४१ ॥
 तिहिं काका रघुनाथराव पर बैर विधारिय ॥
 तानै भजि तब सरन इगरेजन द्रुत धारिय ॥
 सक इहिं १८२१ कथित समीप साह आलम ४९१ बिह्ली पति
 दिय ईधन अर्थ तीन ३ सूबा सहाय मति ॥ ४२ ॥
 बंगाला १ रु निहार २ तथा उह्नीसा ३ ए त्रय ३ ॥
 इनमै तब अग्रेज भये हाकिम जमात जय ॥
 सूबा त्रय ३ सिर साह रुद्ध निज गति जब जानी ॥
 इस्तमरारी अकि दर्द इनको दीवानी ॥ ४३ ॥
 प्रथम रुहेला सचिव नजीबुद्दोलाके भय ॥
 दिह्लौतैं भजि साह वर्ग अतर बचिवे गय ॥
 कछु होयन तहँ कटि मरघो सुनि कथितैं रुहेला ॥

१ सुख पिगावकर २ अछ बुद्धिवाली ॥ ३६ ॥ ३ सम्भव ४ बैराज सुदि ५
 राठौडा के पति ने ६ दिन ७ लम्मेदासिंह का सगा भाई दीपसिंह ॥४०॥४१॥
 दस दहेदुए सम्भव के समीप ॥४२॥ अपनी गति रुकी हुई जामी जब ॥४३॥
 १० यगाले में ११ कुछ वर्ष १२ नजीबुद्दोला रुहेला को मरा सुनकर

लहि मरहठ सहाय बिस्यो दिल्लिय लाखि बैला ॥ ४४ ॥

नजफखान जिहिं नाम जवन सो किय वजीर जब ॥

सक लिपि अंतर ननहु अधिक प्रभु राम २०३१४ इहाँ अब ॥

सिवप्रसाद मुनसी जु आहि अधुना अंग्रेजन ॥

जिहिं दुव २ ग्रंथ बनाइ बिदित किन्ने छापा सन ॥ ४५ ॥

जिनमें इक भूगोल आदि हस्तामल १ जानहु ॥

तहँ इन्ह सूबा तीन ३ मिलन सूचित १८२१ सक मानहु ॥

ताहीनै इतिहासतिमिरनासक २ प्रबंध किय ॥

तामैं पावन पट्ट साह आलम ३९१४को सक लिय ॥ ४६ ॥

सो हय दुव बसु सोम १८२७ कितो अंतर अब इक्खहु ॥

ओरनमें इहिं रीति परत अंतर प्रभु पिकखहु ॥

मुद्रित किय इक १ ग्रंथ बिदित पंडित बंसीधर ॥

सो भारतवर्षीय आदि इतिहास ३ नाम पर ॥ ४७ ॥

तामैं बैठन तखत साल आलम ४९११ सन १९११ ॥

सो हय दुव बसु सोम १८२७ प्रमित जानहु १८२७ ॥

बढि १ घटि २ अंतर विविध लेखकारहि इहे १८२७ ॥

है तैस दोस न हमहिं लेख अनुसार लिखावत ॥ ४८ ॥

परि इम वत्त प्रसंग अन्यठामहु कहि आये ॥

वर्तमान अब वृत्त सुनहु प्रभु सबन सुहाये ॥

॥ जट्ट जवाहिरमल्ल याहि हायन १८२१ प्रकुप्पि अब ॥

लुट्टी दिल्लिय जाय साह धन कोस सहित सब ॥ ४९ ॥

अगग जनक रविमल्ल मरयो दिल्लिय रन अंतर ॥

प्रवेश हुआ २ समय देखकर ॥४४॥ ३ सम्भवतों के लेख का अन्तर सुनो ४ है
हैस समय में अंगरेजों का ॥४५॥ १ भूगोल है आदि में जिसके ऐसा हस्तामल
अर्थात् भूगोलहस्तामल ७ ग्रन्थ ॥४६॥ देखो ॥४७॥ ६ है भूपति १० लिखनेवाले
१ इसका दोष हमको नहीं है क्योंकि हम लिखेहुए के अनुसार लिखते हैं
४८ ॥ १२ वृत्तान्त १३ इसी वर्ष में ॥ ४९ ॥ १४ इसका पिता सूर्यमल्ल १५ युद्ध में

बुन्दान्द्रकाचौरोंकाउपग्रचमिदाना] सप्तमराशि-त्रिपचाशमयूत्र (३७१३)

ताको बैर विधाय करिय यह जट्ट जवाहर ॥

इत मेवारे भटन सठन तसकरपन धार्यो ॥

बुदिय जैनपद बीच विविध वसु हरन विथारयो ॥५०॥

कुप्पि तवहि बुदीस सेन सज्जिय तिन उप्पर ॥

लये पकरि सीसोद झारि असिबर निज तसकर ॥

निवसथ टहला १ मगटला २ टिटहरा ३ के पति ॥

कन्हाउत ए कैद किये अवरहु सांगस कति ॥ ५१ ॥

मुडित डही मुच्छ करि रु डारे काराघर ॥

परयो पयन सगताउत स्पामपुरेस जोरि कर ॥

सु सुनि रान अरिसिंह सचिव पठयो निज बुंदिय ॥

कन्हाउतन छुरान काज उपाय सन तिन किय ॥ ५२ ॥

सुनि नृप तिनकी अरज चोर कैरा बाहिर किय ॥

अध्वामित सबसौंहि दम्भ दमके अलुब्ध लिय ॥

तानै भोई १ अरिसिंह कथित करि दुष्कर कीनी ॥

एक इहि २ नहि लोभ धर्म रीतिहि चित चीनी ॥ ५३ ॥

३ १ बीखरनि २ नैर बैकरपुरा ३ दि सब ॥

सदन लागे सभरेस अदिस नमू तब ॥

इम सभर उम्मेद मुलक तसकर सब मेटिय ॥

कल्लिजुग विच नैय धर्म कर्म पाईव नृप ज्यो किय ॥ ५४ ॥

दोहा-अमरगढप १ बकरपुरप २, कन्हाउत इन्ह आदि ॥

सगताउत पुरबीखरनि १, झमोला २ ३ ३ दि प्रमादि ॥ ५५ ॥

तदनतर खहराडके, मैनेन किय अति मान ॥

लुट्टन बुदिय देस लागि, थिर उज्जर १ किय थान ॥ ५६ ॥

१ बैर करके २ योरपन ३ बुन्दी के देश में ४ घन ॥ ५० ॥ ५ अपने चौरों को
६ ग्राम ७ अपराधी ॥ ५१ ॥ ८ कैद में ॥ ५२ ॥ ९ कैद से १० दण्ड के रूपसे ११
लोभ रहित ॥ ५३ ॥ १२ बाकरा १३ नीति १४ बुध्दि १५ के समान ॥ ५४ ॥
॥ ५५ ॥ १६ खैराट प्रदेश के सीपों ने १७ कजड़ (शून्य) ॥ ५६ ॥ ५७ ॥

हिंडोर्लापुर आनि किय, मिलि मैनेन अति रारि ॥

चैनसिंह हम्मीरहर, नत्थू सुत लिय मारि ॥ ५७ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मे
सिंहचरित्रे निजदुर्गरास्तम्भगतकूर्मराजमाधवसिंहहृद्रेन्द्राऽऽवह
नप्रीतिजिगमिषूम्मेदसिंहविपद्रमित्रसम्मिलनकौर्मसृगयाऽदिखेल
विरागिनजमहिषीभल्लीराज्ञीमृत्युश्रवणश्रुतागच्छदक्षिणसैन्यमा-
वसिंहजयपुरप्रविशनबुन्दीन्द्रबुन्द्यागमनसन्ध्याकेदारराव १ माह
जे २ मालववशीकरणाविचारितयोधपुरेशविजयसिंहविजितीकर-
णाऽजमेरद्रङ्गाऽऽगमनसहायार्थाऽऽहूतहृद्रेन्द्रगमनधन्वेशसन्ध्यादण्ड
म्माऽष्टलक्ष ८००००० निवेदनजयपुरजनपदाऽऽगतमाहजिमोजाद
गरलुण्टनरावराणमरूपतिपितृव्यकेडरपुरेशरठोड़रायसिंहसुतोदयकु
मारीयोधपुरविवाहनकोटेशसचिवकायस्थाऽक्षयराममोजादपुराऽऽगम
श्रावितमरूपतिसहायकारणाबुन्दीन्द्रदत्तप्रच्छन्नद्रव्यकायस्थमाह-
जेबुन्द्यानयनश्रुतैतत्सज्जीभूतबुन्दीन्द्रस्वपुराऽऽगमन्समागतकोटेश
त्रुशल्यसहितसन्ध्वेशहृद्रेशसङ्ग्रामसुखाऽनुभवनकूर्मराजस्वसुभ

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायणके सप्तमराशिमें, उम्मेदसिंहके चरित्र
में, अपने गढ़ रणस्थंभ में गये हुए कछवाहों के राजा माधवसिंह का हाडों के
पति को बुलाना और प्रीति की इच्छावाले उम्मेदसिंह का आपदा के समय
मेघ से मिलना १ कछवाहे का शिकार आदि खेलना और राधराजा का अप
ने पाटली राणी भाली का मरना सुनना २ दक्षिण की सेना का आना सुनकर
माधवसिंह का जयपुर में प्रवेश करना और बुन्दी के पति का बुन्दी आना ३
सन्धिया केदारराव, माहजी का मालवा देश को आधीन करना और जोधपुर
के पति विजयसिंह को जीतना विचार कर अजमेर नगर में आना ४ सहाय के
प्रर्थ बुलायेहुए हृद्रेन्द्र का जाना और मारवाड़ के पति का सिंधिया को दंड
में आठ लाख रुपये देना ५ जयपुर के देश में आयेहुए माहजी का मोजाद
गर को लूटना और रावराजा का मारवाड़के पति के काका ईडरपुर के पति
रठोड़ रायसिंह की पुत्री उदयकुमारी को जोधपुर में विवाहना ६ कोटा के पति
सचिव कायथ अक्षयराम का मोजादपुर में आना और मारवाड़ के पति
की सहाय जाने का बुन्दीन्द्र का कारण सुनाकर छाने धन देकर कायस्थ का
माहजी को बुन्दी लाना सुनकर सज्ज होकर बुन्दी के पति का अपने पुर में

टद्वारकादाससाहिपुरेशोम्मेदसिंहरवकनिष्ठसुतमाक्षिमसिंहबुन्दीसहा
यार्थप्रेषणाकृतधनमरुपतिकिमप्यप्रेषणायुध्यद्रावराहजयपुरेशपुत्रपृथ्वी
सिंहोद्भवश्रवणाज्ञातदुर्गदुर्गतवमाहजिसमाहूतबुन्दीन्द्रसम्मिलननता
ऽऽदिकद्रव्यतत्प्रस्थानहृद्देन्द्रभोगिन्यौरसकुमारसरदारसिंहोद्भवनस
म्भगराजस्वभगिनीदीपकुमारीरठोदराजविजयसिंहविवाहनसम्भर-
दीपसिंहस्वाऽग्रजराइपनुजाभवानकुमारीपोधपुरोद्भवनश्रीमन्तमाधव
रायमरणातदनुजनारायणरावश्रीमन्तीभवनपितृव्यकरघुनाथरावनि
ष्कारानतदिंगरेजशरणाभरतपुरेशजट्टजवाहरमल्लदिल्लीलुगटनसी
मासमीपमथराणासामन्तबुन्दीदेशविरोधनरावराटूतत्सर्वनिग्रहारा-
णाऽरिसिंहप्रार्थनामुक्तदुष्टम्वाधानीकरणमैणागणबुन्दीदेशलुगटन
हिंडोलीशहम्मीरवरीहृद्वैनसिंहमारणा त्रिपञ्चाशत्तमो५३ मयूख ॥

आना७ चापेष्टण कोटा के पति शत्रुशाल सहित सान्ध्या के पति और हाथों
के पति का सम्राट के सुख को अनुभव करना ८ कछवाहों के राजा का अपने
वमराव द्वारकादास और शाहपुरा के पति वम्मेदसिंह का अपने छोटे पुत्र
मालमसिंह को पुन्हीं की सहाय में भेजना और किये उपकार को मूखनेवाले
मारवाड़ के पति का कुछ नहीं भेजना ९ उस युद्ध में रावराजा का अजपुर के
पति के पुत्र पृथ्वी सिंह के जन्म को सुनना और गड का नहीं मिथना जानकर
माहजी का पुत्र की पति को घुलाकर मिथना ६ सालाना खिराज लेकर उस
का जाना और बुद्ध की छोटी राणी के वदर से कुमार सरदारसिंह का जन्म
होना १० चहुवाणों के राजा का अपनी पहिन दीपकुमरि को राठौड़ों के रा-
जा विजयसिंह को व्याहना और चहुवाण दीपसिंह का अपने पडे भाई की
राणी की छोटी पहिन भवानकुमारी से जोधपुर में विवाह करना ११ श्रीम-
न्त माधवराव का मरना और उस के छोटे भाई नारायणराव का श्रीमन्त
होना, काका रघुनाथराव को निकालना और उसका अगरेजों की शरण लेना
१२ भरतपुर के पति जाट जवाहरमल्ल का दिल्ली लूटना और सीमा के समीप
रहनेवाले राणा के वमराओं का बुन्दी के देश में विरोध करना, रावराजा का
उन सपको पकटना और राणा अरिसिंह की प्रार्थना से उन दुष्टों को छोड़कर
स्वाधीन करना १३ मैणा के समूह का बुन्दी के देश को लूटना और हिंडोली
के पति हम्मीरसिंह के यशवाले चैनसिंह को मारने का तिरपनवा ५३ मयूख
समाप्त हुआ ॥ ५३ ॥

५३ ॥ आदितः ॥३३४॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ शैला ॥

तब संभर नृप तमकि सेन मैनेन सिर सज्जिय ॥

बैरिन भ्फारन बाढ गाढ रैव पखाव गरज्जिय ॥

हरिणा निजकवि ग्राम लंघि घेरयो द्रुत ऊमर ॥

मैने द्वैसत २०० मारि थान किन्नों तरऊपर ॥ १ ॥

पुनि खेड़ा लिय घेरि दुष्ट तँहँ हनिय इकसत १०० ॥

बहुरि लुहारी बिंदि अडर लुट्टी रन उद्धत ॥

सजव कुपि च्यारिसत ४०० मारि मैने जय मंडिय ॥

गँहोली पुनि ग्राम खुंदि खग्नन सब खंडिय ॥ २ ॥

दारिम रंग दुँकूल सत्य धवपत्त किलंगिय ॥

दुवर गव्याँ कोदंड जुरत दुँडु करि जंगित ॥

बंसुरि भयदं बजात पिठि दुधर धरत निखंगन ॥

डारत फोजन फारि मारि कटार तुरंगन ॥ ३ ॥

इम मैने रन करत हनिय द्वै सत २०० गडो ॥

आयो बुंदिय बिजय मंडि बंदिषे जस बोलिए ॥

मैनेनके सिर मैनेनके सिर दये करंडेन ॥

बधाई गवावत लायो पुरलग तिन रंडेन ॥ ४ ॥

और आदि से तीन सौ चौतीस मयूख ३३४ हुए ॥

१ बड़े शब्द से ढोल बजा २ आप के कवि (सूर्यमल्ल) का ग्राम ॥ १ ॥ ३ शीघ्र
४ गाढोली ॥ २ ॥ ५ दाड़िम के रंग के वस्त्र ६ मस्तक पर धोकड़ा वृक्ष के पत्तों
की किलंगी ७ दो प्रत्यंचा के धनुष ८ मैणों के लड़ाई करने का साङ्केतिक
शब्द है ९ भयंकर १० भाथे ११ घोड़ों को कटारियों से मारकर ॥ ३ ॥ १२
भाटों की यश की बोली करवाकर उन मैणों के मस्तकों को १३ मैणियों के म-
स्तकों पर १४ टोकरो (छबलियों) में भरवाकर १५ उनकी रांडों को बुंदी लाया ॥ ४ ॥

करडन१ नरडन२ अन्त्यानुपास १ ॥

सकृत् प्राकृति धृति समय१८२२ भयो यह रन *सरदागमा
सेवन सब सीमार लगे रचि सनैति समागम ॥

याहि वरस१८२० के माघ मास द्वादसि१२मे चक्र जुत ॥

दीपसिंह के भयो नाम सुरताणासिंह सुत ॥ ५ ॥

करि अंगै कोटेस कथित माहजि यह रन किय ॥

नायाउत उद्योतसिंह तव अरिन मिलन किय ॥

रनकिय१ लनकिय२ अन्त्यानुपास ॥ १ ॥

नगर पगारौ छोरि रवामि मन्नं मगहटन ॥

सकृत् होय किय समर लूटि लीनें कछु रंठन ॥ ६ ॥

पाको काजा बखतमिह मन्थ्यौ तव भूपति ॥

दयो पगारौ ताहि मडि सनमान महामति ॥

अव सु विकृति धृति१८२३ अक्टू माहि उद्योत सु अ

नगर पगारौ लैन भूप प्रति कथन कहायो ॥ ७ ॥ १८ ॥

बुदीपति तव कुप्पि सुभट पठये तिहि मारन ॥

माग्ले आनि बजार मध्य कहि तिन अघ कारन ॥

याहि विकृति धृति१८२३ अक्टू माहि हुलकर बपु छो

तव तस नाती मालराव इंदोर तखत लिय ॥ ८ ॥

सुनि यह टोका साज भूप पठयो तह हित घन ॥

दुवर इय दुवर सिरुपाव इक१ गज इक१ मनि भूख

सकृति धृति१८२४ मित साल मालरावहु हुलकर मृत

तव ताको दायद नाम तककू गदिय धृत ॥ ९ ॥

रूपय अतिकृति लखख१५०००००० दये श्रीमत अरथदुत ॥

* शरद ऋतु के आने पर १ नम्रता सहित सुख से आना २ कृष्णपक्ष
सहित ॥ ५ ॥ ३ राष्ट्रों (देशों) को ॥ १ ॥ ७ ॥ ४ पाप करनेवाला ५ चसके
प्राप्ति ॥ ८ ॥ ६ पुत्र ॥ ९ ॥

इम गदिय इंदोर लही तक्कुव सु मंत्र जुत ॥

रूपनगरपुर सुता भूप सामंतसिंह घर ॥

नाम किसोरकुमारि इत सु व्याहो नृप सोदर ॥ १० ॥

संकृति धृति १८२४मित साक बिरचि उच्छव बहु दिन तक
व्याह बहादुरसिंह कियउ यह दुलहि पितृव्यक ॥

याहि साल १८२४ बिच नृप सपत्न जननी कछु गद लहि ॥

बंसबहाला पतिजा बपु दिय छोरि व्याधि सहि ॥ ११ ॥

बुंदीपति मासुरि बिहीन बनि प्रेत करम किय ॥

द्विजन सु भोजन दान दै रु निर्गमोक्त सहि लिय ॥

संकृति धृति मित याहि साल इत जट्ट जवाहर ॥

जैपुर ऊपर जोर दैन मंडयो डारन डर ॥ १२ ॥

याको भ्रात सु अग्न नाम नाहर कछु कारन ॥

प्रायो जैपुर सरन नारि निर्ज बिपति निवारन ॥

माकै ही इक १ युवति रूप गुन अधिक अपूर्व ॥

ताहि जवाहर जट्ट लैन तक्कयो कासुकं जब ॥

हिं तब जैपुर आय सरन कूरम पतिको लिय ॥

माधव नगर निवाई को परगना ताहि दिय ॥

गहरसिंह बिताय काल कछु तथ गयो मरि ॥

ताहि जवाहर कहिय लैन ताकी वह सुंदरि ॥ १४ ॥

प्रो सुनि माधव ताहि भरतपुर लग्यो पठावन ॥

बुली तब जट्टनिय उचित है नहिं मम जावन ॥

मोको वह गृह डारि कूर रक्खहिं बनितो करि ॥

१. पूजा का सगा भाई दीपसिंह ॥ १० ॥ २. दुलहन के काका ने ३. रोग ४.
पिता के पति की पुत्री ॥ ११ ॥ ५. डाढ़ी मूछों के बालों बिना (चौर) होकर
का कहाहुआ ७. भय डालने को ॥ १२ ॥ ८. अपनी स्त्री की ९. यौवन
१. स्त्री १०. कामी ॥ १३ ॥ ११. माधवसिंह ने ॥ १४ ॥ १२. स्त्री करके रक्खेगा

जगहामल घोर विजयसिंह का पुष्करमें मिलना] सममराशि चतुःपचाशमयूख(१७१६)

याते भेजहु नाहि सती जानहु हित अनुसारि ॥ १५ ॥

तबहि भरतपुर मंडि पत्र माधव पठवायो॥

याको आवन उहाँ डेष्ट नहि नैक सुहायो ॥

जट्ट जवाहरमल्ल सु सुनि पठयो प्रतिउत्तर ॥

मम बधव मैदिलाहि तुम सु चाहत रक्खन घर ॥ १५ ॥

यह सुनि जैपुर ईस मन्नि अभिसाप असह मति ॥

निकसाई वह नारि गई बिख खाय उचित गति॥

इहि कारन अब अतुल बैर गहि जट्ट जवाहर ॥

जैपुर उत्पर जोर दैन सज्जे दत्त दुद्धर ॥ १७ ॥

विजयसिंह यह जानि जट्ट जैपुर चदि आवन ॥

आयो पुष्कर अरहि मिलन अरु मंत्र वनावन ॥

उदयपुर आमेर ज्योहि बुदिय मडैजिम ॥

नि सतकार रवकर लिखि दर्ल पठयेइम ॥ १८ ॥

दल बखसि जवाहरमल्ल अडर अति बल हो तुम जब ॥

आगरा छिन्नि दबि दिल्लिय प्रदेसर सब ॥

अब हमसौ तुम आय मिलहु पुष्कर विधाय बल ॥

इफक तखत बैठिहै जेर करिहैं अरि मडल ॥ १९ ॥

इम सकृति धृति १८२४ अब्द बचि दत्त जट्ट जवाहर ॥

उंजज पुर्णिमा १५ दिवस मिलन आयो हुत पुष्कर ॥

मरुपति ताके सिविर प्रथम पहुँच्यो लहि सासन ॥

सिर कर धरि समकाल उभयर बैठे एकासेन ॥ २० ॥

चमर मोरछल छत्र लगे होवन दोउन पर ॥

पुनि मरुपतिके सिविर जट्ट दीर्घित गय दुद्धर ॥

॥१५॥ १ त्रिप २ रबी को ॥१६॥ ३ झूठा दोष ॥१७॥ ४ जाट का ५ श्रीधरराघर
७ अपने हाथ से पत्र ॥१८॥ ८ सेना रचकर ॥१९॥ १० कार्तिक की पूर्णिमा को
एक समय में दोनों माथे के हाथ लगाकर १२ एक गद्दी पर बैठे ॥२०॥ १३ घमट

*समताको सतकार कियउ । पूरव जिम मरुपति ॥

पलटि पग्य रहोर जह हुव सुहृद कुसंगति ॥ २१ ॥

तदनु जोधपुर नाह पल पठये जयपत्तन ॥

मिल याहि गिनि तुमहु मिलहु बैठहु इक आसन ॥

तब कूरमपति तमकि एह पठयो प्रतिउत्तर ॥

मित्र होय किम मुद्ध जह जैपुरको किंकर ॥ २२ ॥

सेवन आत सदैव पिक्खि हमरे परवानाँ ॥

मम समताके मित्र रावराजा१ तुम२ रानाँ३ ॥

सु सुनि जह दिय पल ओलि जैपुर लिखि आडी ॥

दोय२ परगना देहु हमहिं खोहरी१ पहाडी२ ॥ २३ ॥

रचहु न तो अब राखि तुमहिं दंडन हम तककत ॥

सुनि पठयो निज सेन कुम्भ अक्कहिं रज्ज उकत ॥

तब माउंडा खेत मिले जह रु जैपुर देल ॥

फैलिय हेतिन फाग राग सिंधुन कोलाहल ॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणो सप्तमः । शाबुम्मे
संहचरित्रे बुन्दीन्दमैशाविजयप्रस्थानतद्ग्रामोमर, खंडा २ लु
री ३ गड्डोल्या ४ऽऽदिविध्वंसनहतनवशत ९०० मैशागणापुनःरव
। ५ऽविज्ञानसोदरदीपसिंहकुमारसुरतायासिंहोद्भवसंभरराजचालु
नाथाउत्तोद्योतसिंहमारणातत्पितृव्यकबखतसिंहपगारांपुगऽर्पणा
राघर कांपहिले के माफिक१मित्र२खोटी संगति से अर्थात् चत्रियों सं जा
के मित्र होने की संगति नहीं है ॥२१॥२२॥३आडी ओली (पत्रकी आधुर्दा)
॥२३॥ ४सूर्य को ५ सेना ६ शस्त्रों का फाग ७सिंधवी (बडा) राग का ॥२४॥
वंशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायणके सप्तमराशिमें, उम्मेदसिंह के चरित्र में
दी के पति का सैन्यों को विजय करने को गमन करके उन के गाम ऊमर,
१, लुहारी, गाडोली, आदि का नाश करना और वो सौ सैन्यों के समूह
मारकर अपने पुर में प्रवेश करना १ सगे भाई दीपसिंह के कुमार सुरताण
ह का जन्म होना और चहुवाण राजा का सोलंखी नाथाउत उद्योतसिंह

हुलकरमल्लाररावदेइत्यजननप्तृमात्तरावतदधिकारप्रापणबुन्दीन्द्र —
 टीकोपाख्यतत्सत्कारप्रेषणमालरावमरणाऽन्तरवत्ताऽतिकृतिलक्ष
 २५०००००० द्रुममत्तदायादहुलकरतच्छुलकरपुरेन्दोरगधिकोपविशन
 बुन्दीन्द्राऽनुजदीर्घसिंहरूपनगराऽधिराजरठोडसामन्तसिंहसुताकिशो
 रकुमारीविवाहनरावराट्सपत्नजननीमरणात्तत्प्रेतक्रियाऽनुष्ठानपूर्वोद
 न्तविरुद्धवैरजट्टेन्द्रजवाहरमल्लजयपुरजिगीषुभवनपुष्करक्षेत्राऽऽगत
 मरुपतिविजयसिंह १ समाहूतजवाहरमल्लसजातीयनृपसमसत्का
 रसम्मिलनकृतजट्टतिरस्कारजयपुरसैन्य १ जट्टसैन्य २ माउगडाप्रा
 मरहसम्मिलनं चतुःपञ्चाशत्तमो ५४ मयूख ॥५४॥ आदित ३३५॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

कैटकस्य कछवाहको, बुलापुर पं दलेल १ ॥

लघु सेना छमन २ जुत लम्घो, खडन महव खेल ॥ १ ॥

दल बखसी गुरुसाहि १ द्रुत, सचिव बीर हरसाहि २ ॥

का मारना १ वर के काका खलसिंह को पगारा पुर देना, छुलकर मल्लारराव
 का मरना और पति मालराव का उस का अधिकाइ पना ३ बुन्दीन्द्रका उस
 को टीका नामक सत्कार भेजना और मालरावके मरे पीछे पच्चीस लाख रुप
 ये देकर उसके पुत्र तक्कू का हुलकर के पुर इंदोर कीगद्दी पर बैठना ४ बुन्दी
 के पति के छोटे भाई दीपसिंह का रूपनगर ५ पति राठोड सामन्तसिंह की
 पुत्री किशोरकुमारी से विवाह करना और रावराजा की सौतेली माता का
 मरना, उस की विधि पूर्वक क्रिया करना ४ पहिले वृत्तान्त के कारण वैर घ
 कर जाटों के पति जवाहरमल्ल का जयपुर को जीतने की इच्छावाला होना
 और पुष्कर क्षेत्र में आये हुए मारवाड़ के पति विजयसिंह का जवाहरमल्ल
 को बुलाकर अपनी जाति के राजाओं के परावर सत्कार करके मिलना ४
 जाट का तिरस्कार काके जयपुर की और जाट की सेनाओं का माउडा ५
 के युद्ध क्षेत्र में मिलने का चौपनर्वा मयूख समाप्त हुआ ॥५४॥ और आदि
 तीन सौ पैंतीस ३३५ मयूख हुए ॥

१ सेनापति १ पति ॥ १ ॥ ३ फौजखुशी

एहु खरे खत्री उभय२, चंडे करन रन चाहि ॥ २ ॥

इततैं जट्टहु उप्परयो, तोपन बिरचत ताप ॥

भट फिरंगि डारत भयो, समरु कापिल साप ॥ ३ ॥

॥ भ्रमरावली ॥

करकि करकि कोप तरकि तरकि तोप,

लरकि लरकि लोप करनलगी ॥

करखि करखि कति परखि परखि पति,

हरखि हरखि सति हरन लगी ॥

संमर लखन आय अमर गगन छाव,

भ्रमर सुमन भाव निकर जुरे ॥

सरजि सरजि सोक लरजि लरजि लोक,

बरजि बरजि ओक दिगन दुरे ॥ ४ ॥

बढिग त्वरितैं वीर पढिग दैरित पीर, ^{बढिग}

चढिग सरितैं सीर रुदिरैं रची ॥

सिलत उरन सेल मिलत फुरन भेल,

ठिलत खुरन ठेल मलप मची ॥

पिलत धुरन पेल भिलत छुरन भेल,

खिलत सुरन खेल लखन लगे ॥

१ भयंकर युद्ध करने की चाह से ॥२॥ २ कपिलदेव का आप ॥ ३ ॥ कोप सहित गर्जना कर करके तोपें चल चल कर ३ गिरा गिरा करलोप करने लगीं ४ तलवारें खेंच खेंच कर ५ पैदलों की परीक्षा कर करके प्रसन्न हो हो कर ६ शक्ति हरने लगी ७ देवता ७ युद्ध देखने को आ आ कर और आकाश में छा छा कर ८ गुप्तां पर भ्रमरों की भांति उनके १० समूह जुड़ गये १२ लोग धूज धूज कर ११ लोक उत्पन्न कर करके १३ घर छाड़ छाड़ कर दिशाओं में घुस गये ॥४॥ वीर बड़े और १५ डरनेवाले पीड़ा के वचन बोले १६ चढी हुई नदी के समान १७ धीरकी धारा चली भाले छातियोंको फोड़ते हैं १८ घोड़ोंके फुरने मिलते हैं और खुरों की टक्करों से हटाते हुए मलंग लेते हैं १९ आगे (धुर) वालों की प्र- त पर भेजते हैं और २० छुरियों से भिल जाते हैं सो प्रसन्न होकर २१ देवता

हराखि हराखि हूर पराखि पराखि पूर,
कराखि कराखि सूर रखन लागे ॥ ५ ॥
गहत गँवरि गैल बहत गिरिस बैल,
सहत भरन सैल कहत फटै ॥
चहत भटन चैल दहत मनु कि तैल,
महत फवत फैल अगनि अटै ॥
त्रिश्कसि त्रिश्कसि तेग विकसि विकसि बेग,
निकसि निकसि नेगं असुन लहै ॥
रपटि रपटि रौजि मपटि मपटि औजि,
दपटि दपटि बौजि गजन गहै ॥ ६ ॥
सँरत जहर सूक टरत अँहर टूक,
करत कँहर कूक ककुपँ करी ॥
खिसकि खिसकि इत्य चिसकि चिसकि मत्थ,
सिसकि सिसकि सत्थ दुरत देंरी ॥
छलत विसिखे छाँय छलत त्रिसिखे घाय,

गहि ॥
१२ ॥

खैल देखते हैं "देवता शब्द श्री लिंग है परतुल्य रूप से पुष्टिग लिखा जा
है" चापसराय प्रसन्न हो हो कर १ पूर्ण परीक्षा कर करके वीरों को खैल खैल
कर रखने लगी ॥ ५ ॥ २ पार्वती को साथ में लेकर ३ महादेव बैल पर चढ़ते हैं
जो वीरों के भाले सएते हैं और अपना कटना कहते हैं फिर मरे हुए वीरों
५ वस्त्र तैल के समान जलते हैं और बड़े कैलाश से ६ शोभित होकर
अग्नि फिरती है ७ तीन तीन तलवारें कस कर ८ प्रफुल्लित हो हो
१० भाँसे शीघ्र पार निकल निकल कर प्राण लेते हैं वीरों की ११ पार धर्त
दौड़ कर १२ युद्ध में शीघ्र शीघ्र १३ घोड़े दौड़ा दौड़ा कर हाथियों की
हैं ॥ ६ ॥ १४ रोपनाग चलायमान होकर टलता है और १५ अचमरों
को काटता है १६ इस छलम से १७ दिशाओं के हाथी फूट मारते जो
सज फिसल कर, भाये वृक्ष वृक्ष कर साथवाले कई सिसक स
युकाओं में घुसते हैं कई १९ पायों को खाकर चढ़ते हैं और १२ ॥ १६ जोड़ा (पति
नामक रानी १६ मिरनार

कलत निसिख काय भटनकिते ॥
 पकरि पकरि पाय जकरि जकरि काय,
 नैकरि नकरि लाग जपत जिते ॥ ७ ॥
 भचकि भचकि सुंड लचकि लचकि सुंड,
 मचकि मचकि सुंड उछटि कटें ॥
 भरकि भरकि भेट खरकि खरकि खेटें,
 धरकि धरकि पेट फलक फटें ॥
 खटकि खटकि खगग चटकि चटकि अगग,
 लटकि लटकि अगग मुखन भरें ॥
 अटकि अटकि इद्व गटकि गटकि गिद्व,
 छटकि छटकि बिद्व विसिख धरें ॥ ८ ॥
 भटकि भटकि घुम्मि भटकि भटकि भुम्मि,
 पटकि पटकि भुम्मि घुटन घसैं ॥
 बटकि बटकि गुंड मटकि मटकि तुंडें,
 रटकि रटकि सुंडें हुलसि इसैं ॥
 विरचि विरचि बान मिरचि मिरचि मान,

गलते हैं जो १ तीखे जिशूल कई चारों के शरीरों में घुसते हैं तथा कई व
 औरों के पैरों को पकड़ पकड़ कर और २ शरीरों को बांध बांध कर ह
 हों करके घोलते हैं ॥ ७ ॥ मस्तकों की टक्कर लगा लगा कर, हाथियों
 डों को नमा नमा कर सुंड मचक मचक उछलते फिरते हैं मिछने से
 लों पर कड़के (शब्द) होकर पेट में धकधकी लगकर ५ ढालें व
 ता है ६ तरबारों के खटके हो हो कर और ७ अग्रभागों के टुक
 ८ भाग लटक लटक कर मुखों से झड़ते हैं गिद्व ९ बहुत अटक अ
 * १० घेघेहुए कई गिर गिर कर भी ११ बाणों को धारण करते हैं ॥ ८ ॥
 फिर फिर कर कई बहुतों को खेंच खेंच कर लगते हैं और
 पटक पटक कर १२ घुटनों से रगड़ते हैं १३ तरवार आदि के म्यान
 १४ मटका मटका कट दौड़ दौड़ कर वा टक्करें लगा लगा
 गिरों के कई १५ समूह हंसते हैं १६ बाणों को रचरच (चला
 के १७ समान कानों के टुकड़े टुकड़े गिराने लगे वा

जवाहरमहल भौरजैपुरके राजाका युद्ध] सप्तमराशि-पंचपञ्चाशमयुद्ध (३७२५)

किरचि किरचि कान किरन लगे ॥
 ललकि ललकि लाल मलकि मलकि दाल,
 खलकि खलकि खाल फिरन लगे ॥ ९ ॥
 मनकि मनकि मोर सनकि सुरभि सौर,
 मनकि गुटिन भौर भमन लगे ॥
 तरस रंघद खेत परस रंघद प्रेत,
 दरस भंघद देत दमन लगे ॥

॥

॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

जयपुर दल अरु जट दल, रचि कछु तोपन रारि ॥
 अचि मिले पुनि असिन इम, कूकि कूकि धारन मारि ॥

॥ प्रवृत्ति ॥

सचिव मुखप खत्री दरसाहि १, शरु वखसी गुरुसाहि २ उमाहि ॥
 मिलि अधिवीर जट बहुमारि, तूटि गिरे मारत तरवारि ॥ १२ ॥

॥ पट्टपात् ॥

धूलापुरप दलेल ३ सुपहु कूरम सेनानी ॥
 अति जैव हयन उठाय मिल्यो जटन बिच मानी ॥
 सिविका दल समान करे बहु अरि नारिन कर ॥

१ गिरौलगे और १ क्राध में छाक हुप लालकाट कर करके ३ पतल
 (युद्ध में) पट पट कर ४ नाते पडा पडा कर धा पट पट कर फाई ॥
 लगे ॥ ९ ॥ ६ गुच्छों पर मनवार कर करके १ बसत भलु म मनरो ३ बाटस
 शान् होये तैसे ७ गाली रूपी भ्रमर भ्रमने लगे और युद्ध जेहोई (अर्जुन)
 को देनेवाले प्रेत स्पर्श करने से धुजा धुजा कर ६ बेग के स ॥ १० ॥ ६ वैशाख
 देकर दल देनेलगे ॥ १० ॥ ११ तलवारों को पेशकर ॥ १२ ॥ १३ जोड़ा (पति
 १३ वीरों के पति ॥ १२ ॥ १४ धूला पुर का पति बल्लेनामक रानी १५ निरन्तर
 वेग से १७ पाखली के हाथे के समान (शूरियों)

सिर ताको लहि सुभग हुलासि किन्नों भूखन ढेर ॥

संकर्मि निसंक तोपन समुख कातर बैच रंच न कही ॥

भल भल दलेल जयनैर भट रन विच बनि तिल तिल रहयो १

॥ दोहा ॥

लछमन ४ याको पुत्र लघु, राजाउत रचि रौस ॥

अधिक उथपिय अरिन असु, सिवहिँ समापिय सोस १२

॥ पादाकुलकम् ॥

साँवलदास वंसि सेखाउत, नाम गुमान ५ वंदि विरुदन नुत ॥

सो बढि नगर पचाहर स्वासी, निडर लरयो मस्तक विनु नामी १

सीकरपति सिवको कनिष्ठ सुत, जुरयो तिनहिँ बुधसिंह ६ दरख

उर दुंदुभि करि बहु अरि नारिन, तन गिनि बँपु लग्गो तरवारिन

सेखाउत अंफनु पत्तन पति, नवलसिंह ७ भज्ज्यो दिखात नति।

सेखाउत सिवदाससिंह = पुनि, धानुंती पति परयो खग्ग धुनि १

सेखाउत मुंडरा गाम ईन, रघुनाथ ९हु तुट्यो तरवारिन ॥

इंटावा पति तिम नाथाउत, नाहरसिंह १० परयो रन राउत ॥ १६ ॥

महासिंह ११ कलमंडा नायक, सुरतानोत परयो घन घायक ॥

जयपुरके इत्यादि सुभट बहु, परे बिहाय देह संगर पैहु ॥ १९ ॥

खग्गन अमित जट्ट भट खाये, भीरु बचे तिन्ह मारि भजाये ॥

छिज्जत कटक्क जट्ट पय छुट्टे, तेगैन पिक्खि सिपाहन तुट्टे ॥ २० ॥

पमरू रहयो फिरंगी सम्मुह, तोप तडित् आरत अरि भूरुह ॥

व ने प्रसन्न होकर चलाकर कायर वचन ॥ १३ ॥ १४ ॥ ४ भादों के

योग्य ॥ १५ ॥ ५ शिवसिंह का ६ छातियों रूपी नगारे ७ शरीर को ॥ १६ ॥

सेखाकर ॥ १७ ॥ ६ पति ॥ १८ ॥ १० बहूतों को मारनेवाला ११

॥ १२ तरवारों से सिपाहों को तूटे हुए देखकर जाट

ने सामान्य रीति से फिरंगी लिखा है नहीं तो यह फरास

चुली से १५ शत्रुओं रूपी वृक्षों को गिराकर

जाटजवाहरमल्लकाभागना] सप्तमराशि-पञ्चपथाशमयूक्त (१७२७)

गोलन क्रम कटक गिरायो, प्रभुहिं भरतपत्तन पहुँचायो ॥२१॥

॥ पट्टपात ॥

तखत १ छत्र २ अरु तोप ३ कोसै ४ लुट्टे कछवाहन ॥

भरतनैर गय भजिज जट्ट मरवाय सिपाहन ॥

जिते क्रूरम जोध नाग जट्टन गिनि नाहर ॥

समरू ठे न जु सग जाय पकरैहिं जवाहर ॥

संकृति भुजग ससि १८२४ मान सक हेमंतक यह जगहुव

जयनैर विजय जट्टन भजन भई विदित आवाज भुवा ॥२०॥

इति श्रीवशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणो सप्तम उराशावुम्मे-

दसिंहचरित्रे जयपुरसैन्य १ जट्टजवाहरमल्ल २ माउगहामालाऽभि-

सम्प्राताऽनुष्ठानमाधवसिंहसेनानीसपुत्रदत्तेज १ सचिवखत्रिहरसा-

हि २ गुरुसाहि ३ सुभटसेखाउतगुमानसिंह ४ बुधसिंह ५ऽऽदि-

मरणा जट्टेन्द्रपत्तायनहतश्रीसामन्तफिराङ्गिसमरूसमायोधनकूर्मराज

विजयवर्द्धनचक्रकोशाऽऽदिजट्टवैभवतुगटन पञ्चपञ्चाशत्तमो ५५

मयूख ॥ ५५ ॥ आदित ॥३३६ ॥

प्रायो व्रजदेगीया पाकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा

१ कछवाहे की सना की गिराकर अपने स्वामी को भरतपुर पुगाया ॥ २१ ॥

२ खजाना ३ भरतपुर ४ जाट को हाथी जानकर, सिंह रूपी कछवाहे खड़े ५
हेमन्त ऋतु में ॥ २२ ॥

श्रीवशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, चम्पूदसिंह के
अमे जयपुर की सेना और जाट जवाहरमल्लका मावछा के क्षेत्र में युद्ध।
माधवसिंह के सेनापति पुत्र सहित दत्तेजसिंह, सचिव खत्री इक्ष ३ चाटव
गुरुसाहि, सुभट सेखाउत गुमानसिंह, बुधसिंह आदि का सहनोई (अर्जुन)
के पति का हतभी होकर भागना फिरगी समरू का युद्ध ॥ १० ॥ वैशाख
राजा का विजई होमा और छत्र, खजाना आदि जाट ॥ २ ॥ १३ जोड़ा (पति
वशभास्करमयूख समाप्त हुआ ॥ १५ ॥ और आदि से तीन नामक रात्री १६ निरन्तर

इहि रन देन सहाय इत, बडो तनय बुंदीस ॥
पठयो जेपुर *पुब्बही, मारन जइ मदीस ॥ १ ॥

॥ पट्टपातू ॥

राजकुमार रनगाँहि नौहि माधव जावन दिय ॥
जाग भई पुनि जानि काल अवसर उछव क्रिय ॥
नौहरगढ आनैर आदि निज दुर्ग दिखाये ॥
नागा सहल सिकार निरचि अति लाड बढाये ॥
पुनि माघ विसद पंचमि दिवस सहि ६० गजन आरुहि संभट
बुंदीस कुमार जुत फाग विधि मंडिय डारि गुलाल थट ॥ २ ॥
कूरम नृप पुनि कहिय सुलि बुंदीस पुरोहित ॥
राजकुमारहि रक्खि रहत व्याहन मेरो चित ॥
अंक फलाय अधीस जुता लौलंगन दिखावहि ॥
बनि हस रवसुर बिबाहि चतुर कुमारहि पहुँचावहि ॥
द्विज दयाराम सुनि क्रिय अरज है अतुलित भवदीय हित ॥
पै इस न होय उपयग प्रथम बुंदिय सैन व्याहन उचित ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

रहि तदनंतर सिसिर ऋतु, फगुन खेलत फाग ॥
कूरमपति संभर कुमार, अति मंडिय अलुंराग ॥ ४ ॥
बैलि मधु मास वसंत बिच, बहुविध हरख विधाय ॥
कुमारहि लाड अनेक करि, रक्ख्यो कूरम राय ॥ ५ ॥

पतिकृति धृति १८२५ हौयन लगत, पुरिगाम १५ चैत्रिक पाय ॥

ही ॥ १ ॥ १ समय "यहां समयवाची दो शब्द वीप्सा अर्थ में है,
य पर वा बहुत बेर उत्सव किया है" २ जयपुर के गढ का
कर ५ उमराओं सहित ॥ २ ॥ ५ गोद लेकर ७ आप का
५ से ॥ ३ ॥ १० प्रीति ॥ ४ ॥ ११ पुनि १२ चैत्र १३
५ मास की

कुमरसजितसिंहकाकृष्णगदमेंविवाह] सठमराशि-पदपचाशमयूख (३७२६)

कूरमपति लहि राग कछु, *विग्रह दिन्न बिहाय ॥ ६ ॥

ताको सुत जेठो तबहि, पित्यल बैठो पट्ट ॥

अजिनगिह दित सिक्ख अव, दिन्नी तिहिं विधि बट्ट ॥ ७ ॥

इक१ नग भूगन द्विद इक, दुवर हप दुवर सिरुपाव ॥

कारि इम नजरि कुमारकी, मेन्पो गिनहु दित भाव ॥ ८ ॥

॥ पट्टपात् ॥

अजितसिंह बुदीसकुमर इम चलिय सिक्खकरि ॥

सगानर मिकार खिलिह दकिप रहस धरि ॥

रहिय चट्टसुध रत्ति बहुरि दरकुच विरचि हुत ॥

बुदी आपठ वीर समर पडित भट सजुत ॥

परि जनक पचन मडिय मनति कुसल पुच्छि आसिख कहिय

अभिमन्यु लखत हरिभाम इम गुरु प्रमोद भूपहु गदिय ९

॥ दोहा ॥

तदनु कुमर उपयम उचित, लखि नृप लगन लखाय ॥

पठयो व्यादन कृष्णगढ, बहुल वरात बनाय ॥ १० ॥

अतिकृति धृति१८२५ सक आगमन, सद्धयो लगन सुद्वार ॥

तीज३ राध अवदात तिथि, उदित बार अगार ॥ ११ ॥

सुपहु बडादुरसिंहकी, कन्या सुज्जकुमारि ॥

अजितसिंह बुदीस सुत, नैवल विवाहिय नारि ॥ १२ ॥

॥ पट्टपात् ॥

दपति नल१ दमपति२ पुँअ१ पाँटलि२ नितैत प्रिय ॥

*शरीर छोड़ दिया ॥ १ ॥ ७ ॥ १ कहा ॥ ८ ॥ २ बेग (शीघ्रता) से ३ घाटस
म राग को रहा ४ पिता के पैरों में पड़कर ५ श्रीकृष्ण के सहिनोई (अर्जुन)
की नाति ॥ ९ ॥ ६ जिस पीछे ७ विषाह के उचित ८ बहुत ॥ १० ॥ ८ वैशाख
छवि १० मंगलवार ॥ ११ ॥ ११ सूर्यकुमारी १२ नवीन ॥ १२ ॥ १३ जोड़ा (पति
और स्त्री) १४ जैसे पुत्र नामक राजा १५ पाटली नामक रानी १६ निरन्तर

मनहु सचीर मघधान १ कन्है १ रुकमिनि २ मिलाप क्रिय ॥
 बासवदत्ता २ वैच्छगज १ गिरिजा २ गंगाधर १ ॥
 अर्वा^१निसुता २ रघुइंद्र १ दुलहि संज्ञा २ रु दिवाकर १ ॥
 रोहिनि २ सुधागु १ पंचे^१पुशरति १ पिलिपि^१ल्ला २ वैकुंठ^१पति १ ॥
 रठोरि २ हड्ड २ रमनि^१य रमन इम मंडिय अनुरा^१ग अति ॥ १३ ॥
 ॥ दोहा ॥

भ्रात भुजिष्या जठर भव, स्वीय नाम संग्राम ॥
 सोहु सुता सिरदारकी, व्याहो संगहि वाम ॥ १४ ॥
 अभयकुमारि अभिधान यह, जननि भुजिष्या जात ॥
 इम बिबाहि आये उभय २, बुंदिय विदित बरात ॥ १५ ॥
 ॥ पट्टपात्र ॥

याहि १८२५ बरस इत सुकै मास मरूपति जेठो सुत ॥
 फतेसिंह अभिधान गयो व्याहन कोटा दुत ॥
 महाराव तनया सु रान जगपति तनय जा ॥
 हड्डि दुलहनि हत्य रुचिर गहि दुल्लह^१राजा ॥
 आयो सु तदनु बुंदिय नगर नृप रक्खिय अति लाड करि ॥
 बासर बिताय पंद्रह १५ प्रमित बिदा करिय हित अमित धरि १६
 याहि बरस १८२५ आसाढ बिसैंद अष्टमि ८ रविबासर १ ॥
 सुपहु भुजिष्या भूनु नाम सिवसिंह बीरबर ॥

१ इन्द्र और इन्द्राणी २ श्रीकृष्ण और रुक्मिणी ३ राजा वत्सराज और उसकी
 राणी वासवदत्ता ४ शिव और पार्वती ५ सीता और ६ रामचन्द्र ७ सूर्य और
 सूर्य की स्त्री संज्ञा ८ चन्द्रमा और रोहिणी ९ पांच भाणोंवाला (कामदेव),
 और रति ११ श्रीविष्णु भगवान् और १० लक्ष्मी का मिलाप हुआ तैसे
 राठोड़ी और हाडा १२ दुलहन १३ दुलहे की १४ प्रीति रची ॥ १३ ॥ १५
 पासवान के उदर से जन्म पानेवाला ॥ १४ ॥ १६ नाम ॥ १५ ॥ १७ ज्येष्ठ
 मास में १८ राणा जगतसिंह की पुत्री की पुत्री १९ बींद राजा ॥ १६ ॥ २०
 शुक्लपक्ष की २१ आदित्यवार २२ राजा की पासवान का पुत्र

राजाराजसिंहकेकृत्रिमपुत्ररतनसिंह] सप्तमराशि-पदपञ्चाक्षमयूख(६७३१)

मरुपति बिजय खवासि सुता भ्राव्हय पञ्चावति ॥
 जाय नगर जोधपुर परनि आयो जिम रतिपति ॥
 मेवार मुलक इत दद मविलौन दुरित फल समय लहि ॥
 अरिसिंह रान सैन भेंट अखिल फुट्टे कछुक फरेव कहि १७
 ॥ दोहा ॥

उद्धत गिनि अरिसिंहको, मिलि सुभटन किय मंत्र ॥
 काहूको इक १ भानि सिसु, सो किय रान स्वतंत्र ॥
 रानी मल्लिके उदर, राजसिंह सन जात ॥
 रतनसिंह अभिधान यह, किन्ना इम विरुपांत ॥ १९ ॥
 मल्ला भट जसवत १ निज, गोघुदा पुर नाह ॥
 तनया व्याडिय अंग तस, राजसिंह हित राह ॥ २० ॥
 सुत ताको यह थपि सिसु, रतनसिंह रचि नाम ॥
 मातामह जसवत १ हुव, करन मूढ अघे काम ॥ २१ ॥
 ॥ पदपात्र ॥

गोघुदापति मल्ल मिल्यो जसवत १ मदमति ॥
 सगताउतन सैमेत पाप मुहुकम २ भिंडर पति ॥
 देवगढप जसवत ३ सूर्नु राघव १ निज सजुत ॥

१ नाम २ कामदेव ३ उपपन्न ४ पाप का फल ५ राणा अरिसिंह से ६ सप्त
 षमराज ॥ १७ ॥ १८ ॥ ७ राणा राजसिंह से हुआ ८ (*) नाम ॥ १९ ॥
 ९ पुत्री ॥ २० ॥ १० नाना ११ पाप का कार्य ॥ २१ ॥ १२ मूर्ख १३ सगताउतन सहित
 १४ पुत्र १५ राघवदेव सहित

(*) मेवाड़ के इतिहास वीरविनोद में लिखा है कि राणा राजसिंह का देहान्त हुआ तब राणा काछी
 को गर्भ था परन्तु अरिसिंह के मय से उसने गर्भ होने से नहीं फरदी, जिसपीछे रतनसिंह का जन्म हुआ
 तब उसको गुप्त रखकर रतनसिंह का नाना गोघुदा का राजा जसवतसिंह गोघुदे ले गया और मेवाड़ के कई
 उमराव सरदार उन में मिलगये, यहां तक उन सरदारों को कोई अश्वम नहीं था परन्तु वह रतनसिंह बालपन
 में ही मर गया तब उन सरदारों ने अरिसिंह की क्रूरता के कारण किसीके बालक को छाकर रतनसिंह के
 नाम से रख दिया और रतनसिंह का मरना प्रसिद्ध नहीं किया यह मेवाड़ के उन सरदारों का अश्वम हुआ ॥

फतेसिंह चहुवान ४ दंग कुटार ईस दूत ॥

वेधम पुरेस भट मेघ ५ बलि अंगमर ए पंच ५ हुव ॥

वय बाल जाय किन्नो अधिप धरि गढ कुंभिलसंग भुव
॥ दोहा ॥

देवपुग हो तहँ बनिक, किल्लादार वसंत १ ॥

सोहु मिल्यो सिसु माहिं लठ, दानि धर्म करि दंत ॥ २ ॥

समरसिंह गाउल नृपति, दिल्लिय जाय उदग्ग ॥

भंगिनी पृथ्वीराजकी, पृथा विवाहयो अग ॥ २४ ॥

तब ताके दायज दिये, एहु बनिक चहुवान ॥

रहे हुकम अनुगत सदा, अब पलंट अघवान ॥ २५ ॥

जहँ रानाँ अरिसिंहनँ, धरे दम्भ दृति लखख २०००००० ॥

तेहु न दिन्नँ द्रोह तकि, प्रबला दंधि परपख ॥ २६ ॥

रायसिंह १ भल्ला तुभट, नगर सादड़ी नाह ॥

देखवाड़ पति फल्ल पुनि, राघवदेव २ सचाह ॥ २७ ॥

पत्रन सन ए दुव २ सिले, भट लहि कहु रिनुं भेट ॥

उभय २ रहे अरिसिंहमै, सत्तूमरि १ रु आमेट २ ॥ २८ ॥

॥ पट्पात् ॥

उदासीन भट ईतर रहे प्रकटन अनिमिख बसि ॥

कपटबाल ले संग सुभट उत्तके आयुध बसि ॥

१ कोठारिया नगर का पति ॥ २२ ॥ २ उस वैश्य की जाते है श्वेद है ॥ २१ ॥
४ (*) पृथ्वीराज की बहिन ॥ २४ ॥ ५ हुकम के आमीन ६ पापी ॥ २५ ॥ ७ अनु
का पक्ष ॥ २६ ॥ ८ सत्ता ॥ २७ ॥ ९ पत्रों से १० रत्नसिंह ले भेट (नजराना
अर्थात् फांज खर्च) ॥ २८ ॥ ११ अन्य वसराव तटस्थ रहे १२ सनय के वध होकर
अथवा निरंतर देखने रहकर

(*) हम ऊपर लिख आये हैं कि राउल समरसिंह और पृथ्वीराज चौहाण के समय में सौ वर्ष का अन्तर
है इसकारण समरसिंह का पृथा से विवाह करना सर्वथा मिथ्या है, यह मिथ्या क्या कपोलकल्पित नवीन
रचित पृथ्वीराजरासा के कारण प्रसिद्ध हुई है ॥

उदयनैर दिप आनि घेर तोपन कराल घन ॥

फैरन पर रचि फैर ज्वाले व्याकुल किय पुरजन ॥

तुष्टत निपान फुष्टत निलय गढन गाढ छुष्टत गहन ॥

प्राचीनवरहि पुत्रन मनहु तजिय वेंन्हि विटपन दहन ॥२९॥

इतिश्री वशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणो सप्तम ७ राशावुम्मे
दसिंहचरित्रे जह्मराकुर्मविजयसहायार्थबुन्दीन्द्रपूर्वप्रेषितराजकुमा-
राऽजितसिंहजैपुरनिवसनयुयुत्सुतन्माधवसिंहाऽवरोधनजट्टनयाऽन-
न्तरनानाविलासविलासन द्विजदयारामकुमारवर्धश्वशुरीभावितुकाम
जायसिंहिसम्बोधनसमनन्तरतच्चैत्रपूर्णिमा १५ माधवसिंहमरणापृथ्वी
सिंहजयपुरगहिकोपविरानविहितव्यवहारौम्मेदसिंहिवुन्द्यागमनराधा
ऽवदातवृत्तीया ३ सदासेविभ्रातृसग्रामसिंहमहाराजकुमाराऽजितसिंह
कृष्णगढविवाहनशुक्रमासलग्नमकराजविजयसिंहकुमारफतहसिंहको

१ अग्नि से २ उपजलाशय (छेली आदि निधान) ३ मकान ४ प्रचेताओं ने मा-
नां वृक्षों को जलाने को अग्नि छोड़ी (यह कथा भागवत में इस प्रकार है कि
प्राचीनपार्हि के पुत्र प्रचेता तप करने को गये थे तप पीछे से नारद के वपदेश
से प्राचीनपार्हि भी वन में तप करने को बलागया इस कारण देश में अरा-
जकता हाकर संपूर्ण पृथ्वी को वृक्षों ने ढक ली, तदनंतर प्रचेता जय तप
करके पीछे आये तप अग्नि फैलाकर वन वृक्षा को जलाया) ॥२९॥

श्रीवशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में वम्मेदसिंह के
चरित्र में, जाट के युद्ध में सहाय देने के अर्थ बुन्दी के पति के पहिले भेजे
हुए राजकुमार अजितसिंह का जयपुर में रहना और वस युद्ध की इच्छावाले
को माधवसिंह का रोकना १ जाट से विजय हुए पीछे अनेक प्रकार के विखा-
स करना और ब्राह्मण दयाराम का कुमार के श्वशुर होने की कामनावाले ज
यसिंह के पुत्र (माधवसिंह) को समझाना २ वस सम्बत् के पूर्ण हुए पीछे चैत्र
मासकी पूर्णिमा को माधवसिंह का मरना और पृथ्वीसिंह का जयपुर की गद्दी
पर बैठना ३ उचित व्यवहार के साथ वम्मेदसिंह के पुत्र का बुन्दी आना और
पैशाख सुवि तौज को सदैव सेवा करनेवाले भाई सग्रामसिंह और महा-
राज कुमार अजितसिंह का कृष्णगढ बिसाह करना ४ ज्येष्ठ मास के लग्न पर
मारवाड़के राजा विजयसिंह के कुमार फतहसिंह का कोटा के पति की पुत्री से

देशसुताविवाहनभोजिप्येयबुंदीन्द्रकुमारशिवसिंहभोजिप्येयीधन्वेश
 वाखतसिंहिसुतोदहनभेदपाटदेशस्वामिसामंतविग्रहवर्द्धनरागाराज
 सिंहव्याजपुत्ररत्नसिंहकुम्भिलमेरुदुर्गप्रकटीभवनगोधुन्देशभल्लाजस
 वंतसिंह १ खकुलसहितभिण्डरेशसगताउत्तमुहुःकर्मसिंह २ सपुत्र
 देवगढेशचुण्डाउत्तजसवन्तसिंह ३ कुठारेशचाहुवाणफतेसिंह ४ वेघ
 मेशचुंडाउत्तमेघसिंह ५ दुर्गाऽध्यक्षवशिग्वसन्तगमा ६ ऽऽदिच्छद्व-
 शिशुप्राकट्यसेवनसादड़ीशभल्लारायसिंह १ देलवाड़ेशभल्लाराघवदे
 व २ प्रच्छन्नशिशुस्वामित्वरवाकरखोदयपुरचमूवेष्टनततोपरगाराखा
 रिसिंहव्याकुलीभवनं षट्पञ्चाशत्तमो ५६ मयूखः ॥ ५६ ॥
 आदितः ॥ ३३८ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

इत हुलकर तककू अडर, आयो हिंदुस्थान ॥

आगम पख फगुन असित, सक अतिकृति धृति १८२५माना ॥

तककू पँहँ बुंदीस तव, सब टाँका बिधि साजि ॥

विवाह करना और बुंदी के पति के दासीसुत शिवसिंह का मारवाड़ के पति
 वाखतसिंह के पुत्र (विजयसिंह) की पासधान की पुत्री को विवाहना ५ मेवाड़
 देशमें स्वामी और उमरानोंमें विरोध बढ़ना, राणा राजसिंहके झूठे पुत्र रत्न-
 सिंह का कुम्भिलमेर के किले में प्रसिद्ध होना ६ गोघुंदा के पति भाला जसव-
 न्तसिंह, अपने कुल सहित भींडर पुर के पति लगतावत मुहुकमासिंह, पुत्र
 सहित देवगढ के पति चुंडाउत जसवन्तसिंह, कोठारिया के पति चहुवाण
 फतहसिंह, वेघम के पति चुंडाउत मेघसिंह, और किलेदार बनिया वसन्तरा-
 म आदि का छलवाले बालक को प्रकट करना ७ सेवा करने को सादड़ी के
 पति भाला रायसिंह, देलवाड़े के पति भाला राघवदेव का छिपेहुए बालक
 का स्वामीपन स्वीकार करना = सेना से उदयपुर को घेरना और उस तोप
 युद्ध से अरिसिंह के व्याकुल होने का छप्पनवां ५३ मयूख समाप्त हुआ ॥ ५६ ॥
 और आदि से तीन सौ सैंतीस ३३७ मयूख हुए ॥

१ फागण षदि ॥ १ ॥

राजाका अपने सन्तानोंको बिबाहना] सप्तपराशि-सप्तपंचाशमयूष (१७३५)

पठई कुल पहिरावनी, *बलि भूखन १ गजर वाजि ३॥ २ ॥

॥ षट्पात् ॥

याहि वरस १८२५ बिच अजितसिंह धुन्दीस कुमारहु ॥

सुनि जैनपद निज सोर वित्त लुट्टन मैनन बहु ॥

चढ्यो कुपित चहुवान जैनक आदेस पाय जई ॥

वारह १२ खेटन विंति ताप दिय अतुल उग्र तई ॥

करि कैद अखिल तैसकर कुमति कैराविच डारिय कुमर

जय द्विरद बधि आजान भुज धन्य धन्य हुव संकल धर ३

॥ दोहा ॥

इद्रकुमरि १ अरु नजकुमरि २, जननि भुजिष्या जात ॥

दुहिता निज धुन्दीस दुवर, व्याहिय इत बिख्यात ॥ ४ ॥

अजितसिंह मरु ईसको, सुत लघु हो जु किसोर ॥

सुभमति तास खवासि सुत, जैतसिंह १ रन जोर ॥ ५ ॥

बुद्धि राजगढसन विदित, वाहि अतुल उच्छाह ॥

दुहिता नजकुमरि सु दई, रचि बिबाह हित राह ॥ ६ ॥

नगर करोली नृप तनय, कुसलासिंह दासेय ॥

सुत ताको जयसिंह २ सो, पुनि बुल्लयो प्रभु प्रेय ॥ ७ ॥

इद्रकुमरि ताकई दई, अखिल सिद्धि अवधौन ॥

दायज द्रव्य अनेक दिय, चित्त उदधि चहुवान ॥ ८ ॥

वहुरि बहादुरसिंह १ अरु, स्वीय कुमर सिरधार २ ॥

गंगराँह व्याहे उभय २, लगन रीति इक १ लार ॥ ९ ॥

*पुनि ॥ २ ॥ १ अपने वेश में २ मैनों के बहुत धन खेने का ३ पिता के हुकम से ४ सखों को घेरकर ५ चोरों को ६ कैद में ७ जय रूपी हाथी का ८ सुजों रूपी हाथी पाँवने के छमे से बांधकर ९ सय भूमि में ॥ ४ ॥ पासवान माता से १० उत्पन्न ॥ ४ ॥ ५ ॥ ११ पुत्री ॥ ६ ॥ १२ दासी का पुत्र १३ स्वामी का प्यारा ॥ ७ ॥ १४ सय सन्तोषोग्य (पांडित) साधकर ॥ ८ ॥ १५ गर्गराट ॥ ९ ॥

पृथ्वीसिंह३ मदन भल्ला सुत, सत्रुसल्ल मन्न्यो सु मोद जुत ॥
सत्रुसल्ल विनु सुत वपु तजि दिय, तब तस अनुज गुमान पट्ट
लिय ॥ २६ ॥

पृथ्वीसिंह भल्ला सुत जालम४, यह ठेहैं जाहिर अब आलम ॥
ताकै कछु कोटापतिसौं तब, अनख भई सु रह्यो न तथ्य अब २७
छोरि गुमानसिंह कोटा पति, उदयनैर आयो प्रपंच मति ॥
सु अरिसिंह रानहु सनमान्यो, अतिहित जाय समुख पुर आन्यो२८
तखतसिंह जयसिंह रान सुव, ताके सुत अज्ञात नाम हुव ॥
ताकी सुता व्याहि जालम कहैं, इम सनमानि रान रक्खिय तैंहें२९
दयो राज्य उपटंक मुदित मन, पुनि पैर चित्ताखेड़ परगन ॥
सो जालम यैंहें रान सहायक, लौ मरहठ कटक रन लायक ॥३०॥
छोरि अवंति स्वामि हित छायो, अगरचंद महता जुत आयो ॥
अगरचंदको जनक अगग जव, बीकानैर नृपहिं बिंख दै तब ॥३१॥
मांडिलगढ तिय जुत भजि आयो, ताको सुन यह रान बधायो ॥
इत रानहु रन हित कंठि बंधी, रक्खे जवन सहैंस खट६,०००'संधी
॥ दोहा ॥

आये दैल उज्जैनतैं, सुनि मरहठ सहाय ॥

पुरतैं रानहु पिल्लयो, दल निज जितन दाय ॥ ३३ ॥

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मेद
सिंहचरित्रे हुलकरतक्कूदागमनबुन्दीन्द्रतत्सत्करणमहाराजकुमारा
अजितसिंह १ मैणागणविध्वंसनरावराड्भौजिष्येयीसुताद्वय २ भौ-

१ छोटा भाई ॥२६॥२ संसार में ॥२७॥२८॥ ३ जिसका नाम मालूम नहीं हुआ ॥२९॥
४ राज की पदवी ५ श्रेष्ठ ॥ ३० ॥ ६ पिता ७ जहर ॥ ३१ ॥ ८ मांडलगढ में
९ कमर बांधी १० सिन्ध देश के यवन ॥ ३२ ॥ ११ सेना १२ सेना भेजी ॥३३॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायण के सप्तमराशि में, उम्मेदसिंह के चरि-
त्र में, हुलकर तक्कू का उत्तर दिशा में आना और बुन्दी के पति का उसका
सत्कार करना १ महाराज कुमार अजितसिंह का युद्ध में मैनों को मारना

रतनसिंहकोलेकरउमरावका[विधवा] सप्तमराजा अष्टपचाशमयूख(७३१६)

अप्येयरठोहजैतसिंह १ यादवजयसिंह २ विवाहनराजकुमारबहा
रसिंह १ शरदारसिंह २ गर्गराटोदाहनाऽनन्तरकुमारद्वय २ दाय
भाजनव्यासमाणिक्यरामपरस्परभित्तुकपञ्चक ४ समानसन्मन
च्छलवाल्सेनावेष्टनव्याकुलराणाऽरिसिंहश्रीमन्तसहायप्रार्थनक
जाजालमसिंह १ वशिष्ठगरचन्द्र २ प्रेषणाज्ञाततद्विज्ञापिपत्रश्रीमन्त
द्वारापूराधव १ यवनदोला २ ऽरिसिंहसहायप्रस्थापनकल्लाजाल
मसिंहप्रपितामहाऽऽगमाऽऽदिपूर्वोदन्तवर्गानवशिष्टगरचन्द्रजनकम-
हापापत्वसूचनसमाप्तश्रीमन्तसहायराणाऽरिसिंहस्वसैन्यप्रेषणा सप्त-
पञ्चाशत्तमो ५७ मयूख ॥ ५७ ॥ आदित ॥३३८॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ हरिगीतम् ॥

पुर सलूमरि पति भीम धात पहाड १ लै दल निक्खस्यो ॥

अरु कतैसिंह २ हु चोडहर आमेटपुर पति उल्लस्यो ॥

घाणोर पति रठोर वीरमदेव ३ सगहि सज्जयो ॥

रठोर अक्खयसिंह ४ तिम वधनोर पुर पति गज्जयो ॥ १ ॥

और रावराजा की वो पासधान की पुत्रिया की पासवानिये राठोड जैतसिंह
और जादव जयसिंह को विवाहना २ राजकुमार बहादुरसिंह और सरदा
रसिंह को गर्गराट पुर में विवाह करने पीछे भाईयट देना और व्यास माणि-
कराम को परस्पर पाच पाचकों में परापर मानना ३ मूठे (करेपी) बालक
की सेना से घिर कर राणा अरिसिंह का श्रीमन्त से सहाय के अर्थ प्रार्थना
करना और काला जालमसिंह और महता अगरचन्द को भेजना ४ इन की
अरजी जानकर श्रीमन्त का मर हठा रघू और दोलामिया को अरिसिंह की
सहाय में भेजना ५ काला जालमसिंह के प्रपितामह के आनेआदि पहिले वृत्ता
न्त का कहना और अनिये अगरचन्द के पिता के महापाप की सूचना करना
७ श्रीमन्त की सहाय पाकर राणा अरिसिंह का अपनी सेना भेजने का स
साधनवा ५७ मयूख समाप्त हुआ॥५७॥ और आदि से तीन सौ अक्षतीस३३८
मयूख हुए ॥

१ पहाडसिंह ॥ १ ॥

वनहड़ापति नृपरायसिंहहु ५ रानबंसिय उज्जल्यो ॥
 उम्मेदद साहिपुरेस भूप सुजानबंसिय उज्जल्यो ॥
 बिंकोलि पति सुभकर्ण ७ त्यों परमार असिंवर संग्रह्यो ॥
 बलि चौडबंसिय भैंसरोर पुरेस मानहु ८ उम्महयो ॥२॥
 इत्यादि सूर सिपाह सधिन लै उदैपुरतैं कहे ॥
 सह झल जालमासिह दक्खिन वीर वे उततैं बहे ॥
 दुहुँ और आत अनीक लाखि सिसुंको सहायक लै भजे ॥
 चितोरको कछु भेद सौं लहि दुगमें दह ठे सजे ॥ ३ ॥
 दोला मियाँ १ मरदह राघव २ ए उदैपुरमें रहे ॥
 छलबालके प्रतिपाल जे ~~तिनके नैन~~ क भये चहे ॥
 इहिं बीच माहजि ~~सन्~~ संधिया पहुँच्यो अवंतिर्य आनिकैं ॥
 तिहिं जानिकैं ~~सिसु~~ पँच्छके भट भीर लैन प्रमानिकैं ॥४॥
 चित्तोरे ~~सिसु~~ उंरुज सुरतसिंहहि दे रु लै सिसुंको चले ॥
 सुनि आय सम्मुह संधिया इन्ह लगयो सु चहे फले ॥
 तिन बाल माहजि अँकमें धरि हो सरण्य यहै कही ॥
 सुनि यौ उदैपुर देनकी इहिं बत माहजिहू चही ॥ ५ ॥
 दोला १ रु राघव १ हे उदैपुर वहाँ यहै तिनमें सुनी ॥
 सिसुपक्ष लगिय संधिया अव सेन सज्जहु सोगुनी ॥
 हम जायकैं छल मंत्रमें तिहिं लै रु सत्वर मारिहैं ॥
 गहि बाल जो अरि रावरो तिहिं कैद आलय डारिहैं ॥६॥
 दह मंत्र राघव १ रान ५ कै इत यौ उदैपुरमें भयो ॥

१ श्रेष्ठ तरवार पकड़ी २ मानसिंह भी ॥ २ ॥ ३ सेना ४ रत्नसिंह को ॥३॥
 छल से बनाये हुए बालक रत्नसिंह की ५ पालना करनेवाले ६ उज्जैन में ७
 रत्नसिंह के पक्ष के उमराव = सहायता ॥ ४ ॥ ६ वैद्य १० रत्नसिंह को ११
 गोद में रखकर ॥ ५ ॥ १२ बालक (रत्नसिंह) के पक्ष पर १३ माधजी को शीघ्र
 मारेंगे ॥ ६ ॥

सब दच्छं दूतन भेजिकें यह जानि माइजिहू लयो ॥
 दोला१ रु राघव२ के कुटुब हुते अवतियमें जहाँ ॥
 करि कैद पुत्र कलत्र कोपित संधियाहु सज्यो तहाँ ॥७॥
 यह जानि ये अरिसिंहको दँल लै उदैपुरतें चले ॥
 खुरतार वाजिन मार मत्थ हजार आलुकेके हले ॥
 फहरात लोहित रंग केतन मत्त हथिनपैं धरे ॥
 बट१ अब२ जवु३ कदव४ ज्यों कुंमुदादि अदि४नपैं खरो ॥८॥
 डगमगि सैलैन शृंग त्यों भैर भग तुटन के लगे ॥
 सब अने सकत सैन दकत नैन सकरके जगे ॥
 चढि मिह कालिय सग चालिय गैन गिद्धनि बित्यरी ॥
 पहुँची अवतिय यों चमू अरु हल्ल कितनको करी ॥ ९ ॥
 उततैहु माइजि सज्ज वहे सिंघुपच्छके भट लै चढयो ॥
 जिम जेठ सूरज ताव यों तरकाव तोपनको बढयो ॥
 हुहुँ ओरके रन वाजि कुँजर औंभमें उडन लगे ॥
 खिलैं सोक गोवन तोकैं घायल घुम्म लैन धन लगे १०
 नैनलगे१ धनलगे२ अन्त्यानुपास ॥ १ ॥
 अतलादि भू पुट वदै थरथर नीर सिंघुनतैं छल्यो ॥
 दिगधेनुं च्यारि४हु ऐनलौं चिकि फेन आननमें फल्यो ॥

१ दक्ष (चतुर) २ उडजैन में शस्त्रियों को ॥७॥४ये (१घु और दोखा) दोनों अरि-
 सिंह की सेना लेकर ५सर्प (हजार फाँों के सम्बन्ध से यहा शेषनाग जानना
 चाहिये) ६ लाल रंग की ७ ब्रजायें ८ जैसे थे चारों वृक्ष सुमेरु के शिखर ९
 कुमुद आदि पर खड़ा हैं तैसे ॥ ८ ॥ १० पर्वतों के शिखर ११ बार से १२ स्थान
 ॥ ९ ॥ १३ रत्नसिंह के पक्ष के समराधों को लेकर १४ हाथी १५ आकाश में
 १६ पाकी के गोळा की शोक से १७ बालक (रत्नसिंह) के पशुन घायल वा घा
 यखा के समूह घूमने लगे ॥ १० ॥ १८ दिशा की हथिनियें (दिग्गजों की स्त्रियें)
 "यह युद्ध दक्षिण में हुआ इससे चार दिशाकी हथिनियों को कष्ट होना सिखा
 और वसर आदि चार दिशा की हथिनियें इस कष्ट से बाहर रहीं" १९ हरिण

चउसष्टि६४ जुगिनि जंग चत्वर रास मंडत रंगमें ॥

महती बजावनहारहू कलिकार घुम्मत संगमें ॥ ११ ॥

आखाढ मारुत खेह सम्मित धूम छादित लोक भो ॥

तम थोक रोकन ओक ओकन कोक कोकिन सोकभो ॥

जल बाँत पोमिन पात ज्यों भुव सेसके सिरपै नचै ॥

कालीय पन्नग भोगपै जदुनाथ तंडव ज्यों रचै ॥ १२ ॥

हनुमान पावक लंक ज्यों दिष ज्वाल ज्यों नभ वित्थरै ॥

नगरी अवंतियमें हु मानव जूह रक्खस ज्यों जरै ॥

सिंघा नदी लागि तोय तुटन नक्र अख गन आवटे ॥

जिम लोह कँपर तैलमें गन पूँपके खग लाँवटे ॥ १३ ॥

इस होत लोलन जंग गोलन सेन माहजिकी लँची ॥

छेलबालकी तब फोज होय हरोल शारि भली रची ॥

कछुकाल तोपन ज्वाल यों रचि बग्ग बाजिनकी लई ॥

दुहुँ२ और धीर प्रवीर मिलि भट धीर सस्त्रनकी भई ॥ १४ ॥

के समान चकित होकर, मुख में आग होने लगे, चौसठ ही योगिनियों ने उस युद्ध के चौक (क्षेत्र) में युद्ध में आकर नृत्य रचा महती नामक वीणा को बजानेवाला और युद्ध करानेवाला नारद मुनि उसके साथ से घूमने लगा ॥ ११ ॥ आषाढ के ६ पवन से राज बड़े जिसके ७ सदृश धूम से लोका छागया उस अंधेरे के समूह ने घर घर को रोक दिया जिससे १० चक्रवा चक्रवियों को शोक हुआ जैसे पानी में ११ पवन लगने से १२ पद्मिनी (कुसुमोदनी) हिलै तैसे शेष के सस्तक पर भूमि नची अथवा कालीनाग के १३ फणों पर १४ श्रीकृष्ण ने नृत्य किया त्यों नची ॥ १२ ॥ जिसप्रकार हनुमान ने लंका में १५ अग्नि लगाई तिसप्रकार आकाश में अग्नि फैली उस अग्नि से उज्जैन में राजाओं के समान मनुष्यों का १६ समूह जलने लगा और १७ सफरा नदी का पानी तूटकर मगर मच्छ ऐसे उबले जैसे तेल से भरे लोहे के १८ कड़ाह में १९ पुर्वों का समूह अथवा २० लावा पत्थी उबले ॥ १३ ॥ इसप्रकार २१ चपल गोलों से युद्ध होते माहजी (माधोराव) सिंधिया की सेना २२ भागी तब २३ रत्नसिंह की सेना ने आगे होकर अच्छा युद्ध किया २४ घोड़ों की बाँ

परिसिंशौरकृत्रिमरतनसिंहाकायुध] सप्तमराशि-सप्तपचाशमयुग (३५४३)

उल्लवालको दल सधिया लहि बीच सज्जनके भयो ॥
 वरमाल लै ततकाल अरैर जाल अछरि को छयो ॥
 कटि मुड १ तुंड २ कलाप ३ कठ ४ ललाट ५ के किरने लगे ॥
 बलिं मत्त पीवन रत्त फेरवै फेरवै फिरने लगे ॥ १५ ॥
 गट अचि कानन देत वानन लेत मानन सोधिकै ॥
 अति कोप छुटत रोष फुटत टोप सजुत गोधिकै ॥
 तगरारि बाहुले लगि होत उपेदे मंदिर मल्लरी ॥
 नस जाल लुप्त देह दारिद्र्य जानि अर वल्लरी ॥ १६ ॥
 उल्लटे तुंगारै प्रहारत असवार लंग्घ उच्छट ॥
 फगै कलोज न फिफ फलत द्वार छत्तिनके फटै ॥
 घंटके वने बटके लगे कटके उडै भट के नये ॥
 लटके पर अटके रकावन रूप के नटके भये ॥ १७ ॥
 कटि धार मारत भद्र वारन मत्त मुत्तिप उच्छलै ॥
 घन कैल्पके घग्का महा जग्का मनो करको चलै ॥

वठाई ॥ १४ ॥ १ रतनसिंहा की सेना का लेकर सिन्धिया आशुषो के पीछ में
 घुणा उस समय तुरत परमाला लेकर अप्सराशा का समूह २ आकाश में
 छागया घटा कितने ही मस्तक ३ मुग, हाथियों का कलावा, कठ, ललाट ४
 गिरने लगे ५ फिर मस्त होकर अधिर पीने को ६ श्याल (गीदड़) ७ त्यालनिया
 (गीदड़निया) किरने लगी ॥ १५ ॥ धीर लोग कान तक खँचकर पाण छोड़ते हैं सो
 धेर पर प्राणा को देखते हैं अत्यन्त कोप से छूटे हुए ८ बाणों से टोप सहित
 ९ ललाट फटते हैं १० दस्तानों पर लगकर लप्यार ११ विष्णु के मंदिर की माल
 र के समान पजती है १२ कटे हुए शरीरों से १४ आकाश की बेल के समान १२
 नखा का समूह लटकता है ॥ १६ ॥ प्रहार होने से १५ छोड़े चलते हैं और सवार
 १६ ऊपर उल्लटते हैं छाती के कपाट फट कर फलजे और फेकर फैलते हैं कितने
 ही धीरों के १८ लङ्ग लगकर १७ शरीरों के टुकड़े होते हैं रकावों में लटक कर
 कई धीर मट के रूप के समान होते हैं ॥ १७ ॥ लखारों की मार से भद्र
 १८ जातिवाले हाथियों के मस्तक फट कर मोती छल्लते हैं सो मानो २०
 प्रलय के मेघ के घर से मोटी गङ्गा के २१ आले गिरते हैं मोलियों के

भहनात गोतिन ब्रात के ऋतुराजमें अलिंराज ज्यों ॥
 असि केक मारत झुंड भारत दबि तितिर वाज ज्यों ॥ १८ ॥
 छिकि पार तोमर तार लोहित धार हथिनतैं परैं ॥
 अरुनोदका रसकी नदी जनु मंदराचलतैं ढरैं ॥
 ध्वजदंड खंड उडैं अनेक मयूर सावन मास ज्यों ॥
 हय जीन ज्वालनमें जरैं दव जेठ पव्वय घास ज्यों ॥ १९ ॥
 फटि घाय सोनित गैनमें चढि जात जावक जंत्र ज्यों ॥
 भखि प्रेत वीरनके बसा गल औचि डारत अंत्र ज्यों ॥
 अति जोरतैं दुश्हुं ओर घोर कटार कंकटपै बजैं ॥
 हमगीर धीरनको बहैं तहैं नीर भीरुनको लजैं ॥ २० ॥
 असवार केक उडाय अव्वन हथि होदनपै अरे ॥
 पवमानके रय भानके हय मानसोत्तर ज्यों खरे ॥
 प्रसरैं फुलिंग भरैं सु पावक हेति हेतिनसों घसैं ॥
 लगि अंत लुबत पंसुली जनु नाग चंदनपै लसैं ॥ २१ ॥

१ समूह २ वसत ऋतु में ३ अमरों की भांति चलते हैं और कई तलवार मारकर
 समूहों को गिराते हैं और घाज पत्नी तीतर को दबावै तैसे दबाते हैं ॥ १८ ॥
 ४ भाले पार फूट कर हाथियों से रुधिर की धारा गिरती है सो मानों मंद-
 राचल से ५ अमरस की नदी चलती है, कई ध्वजा दंड फटकर आवण मास
 के मयूरों के समान उड़ते हैं और ६ उपेष्ट मास की अग्नि में जैसे ७ पर्वत
 का घास जलै तैसे घोड़ों के जीन अग्नि में जलते हैं ॥ १९ ॥ घाव फटकर १०
 जावक के फुहारे के समान ८ आकाश में ९ रुधिर उछलता है, वीरों की ११
 चरबी खाकर श्रुत गले में आंते डालते हैं दोनों ओर से बड़े बल से भयंकर
 कटार १२ कवचों पर बजते हैं जहां हमगीर और धीरों का पराक्रम बढ़ता
 और कायरों का लज्जित होता है ॥ २० ॥ कई सवार १३ घोड़ों को उड़ाकर
 हाथियों के होदों पर अड़ते हैं सो मानों पवन के १४ वेगवाले १५ सूर्यके घोड़े
 सुमेरु पर्वत पर खड़े हैं १६ शस्त्रों से शस्त्र घिस कर अग्नि गिरकर १६ अग्नि कण
 फैलते हैं अंत पंसुलि के लगकर ऐसी लटकती है जैसे चंदन पर १८ सर्प
 शोभते हैं ॥ २१ ॥

गिरि ढाल लोहित ताल चक्र कुन्ताल के निभ के भ्रमैं ॥
 तिनपै परै फटि तुंड के कटि मुंड जे कुट ज्यौं जमैं ॥
 निकसैं अलोहित सान लीढक लव रीढक तोरिकैं ॥
 मनु फारि सैल मजरी सँफगी उडैं जल छोरिकैं ॥ २२ ॥
 भट सत्य के दुव रहत्यलौ अरि मत्य यौं पटकैं गदा ॥
 सुँ मकी निकाग्न लट्ट मारनकी गँवारनकी अँदा ॥
 भट पान छुटत स्वास तुटत के गिरे द्विचकीमरैं ॥
 तुतरात बेन फिरात नैन किरीततें मृग ज्यौं करे ॥ २३ ॥
 कति भारि कतिनैकों निर्गय भिराय छत्तिनकों भिलैं ॥
 मनु मित्र हतैं हँवाल के चिरंकाज के बिछुरे मिलैं ॥
 गुटिका १ रु गोल्जक २ सिल्प कोषिद के क मडत चातुगी ॥
 विसिखा वजार बनायकै विधिसौ वसावत जेपुँरी ॥ २४ ॥
 बिहैरात गात डगात दतन हँत भुन हमे परैं ॥

ढाल गिरकर १ रुधिर के तलाय म २ कुम्हार के चाक के ३ स-
 दम भ्रमती हैं जिन पर कई फटेहुए ४ मुख्य और फटेहुए ५ मस्तक गिरते
 हैं सो ६ घड़ों के समान जमते हैं ८ सान से चाटी हुई तरवारें ९ लची
 पीठ को तोड़कर ७ बिना छोड़ लगे साफ निकलती हैं सो मानों १० शीघाल
 की मजरी को फाड़ कर जल को छोड़कर ११ मच्छी बहती है ॥ २२ ॥ कई बी
 रा के समूह दोनों हाथों से शत्रुओं के मस्तकों पर गदा पटकते हैं १२ सो ग्रामीण
 लोगों के मछी (घान्प विशेष) निकालने में लट्ट मारने की १३ तरह दीखते हैं
 वार लोग दबास लूटकर प्राण छूटते समय गिरकर हथकियां खेते हैं और
 तुलनाते हुए वधन मोलकर १४ शिकारी के आगे मृग के समान नेत्र फेरते हैं
 ॥ २३ ॥ कितने ही १५ तलवारें बजाकर १६ समीप लेकर छानियां भिबाकर
 भिलते हैं सो मानों १७ मिलने के हर्ष के अथवा वियोग के श्रेय के १८ दृष्टान्त से
 १९ बहुत समय के बिछड़े हुए मित्र मिलते हैं कई गोखियां और गोखे शिल्प
 विद्या के २० पद्धति होकर चतुराई रखते हैं और २१ गलिया और पाजार
 बनाकर २२ विधि पूर्वक विजय की पुरी बसाते हैं अथवा जयपुर के समान पुरी
 पसाते हैं ॥ २४ ॥ २३ बराबने शरीरों से और दातों से बराकर २४ बुझाये

पटु स्वाद हेरत क्षेत्रपालक नेत्र जे निकसे परैं ॥

उडिजात के बिनु पगध मस्तक लंब *मान सिखा धरैं ॥

खनि मालिनी जनु गैद खेख सपत्र सूरनके करैं ॥ २५ ॥

सरैं ईतिकारक कालभी तति रूप अंबर उल्लसैं ॥

भर भीतिकारक कालभी तति जंग गोलनकाँ ग्रसैं ॥

कति बंधप जानन पुंख बानन बात काननतैं करैं ॥

अपसव्य हथ संगठ्यकाँ तहँ सव्य कातर उच्चरैं ॥ २६ ॥

गज गौत ठेलन संगि सेलन ब्रांत पैठत यौ लसैं ॥

जनु बज्र संगहि बीजुरी धकि रयाम बहलमैं धसैं ॥

अरिसिंह^१ माहजि^२ के उभै^२ दल यौ अवंतिय आहुरे ॥

बल जानि सत्रुनको उदैपुरके लजे अब बाहुरे ॥ २७ ॥

॥ दोहा ॥

चम उदैपुरकी चली, जीवनतैं हित जानि ॥

संग लगे माहजि सुभट, प्रबल दिखावत पाँनि ॥ २८ ॥

मेवारे दल माहिँसौं, तुरग घुरे तहँ नोएन ॥

हुए वा हु हू करके भूत हंसत हैं चतुर क्षेत्रपाल स्वाद हेरते फिरने है जिनके नेत्र निकले पड़ते हैं कई मस्तक लम्बे * साप की (लंबी) चोटीको धारण किये हुए पगड़ी विना होकर उड़ते हैं सो मानों मालिन ९ पत्रों सहित ३ सूरण [कन्द विशेष] को १ खोदकर गैद खेखती है ॥ २५ ॥ ५ इति करनेवाली वृत्तीडि यों की पंक्ति के रूप से आकाश में ४ बाण चढ़ते हैं ७ दीरों को ८ भय देनेवाले ९ काल की पंक्ति के समान गोले युद्ध में उन्हें ग्रसते हैं कई १० मारने योग्य जानने के लिये बाणों के ११ पंख कानों से बात करते हैं और १२ प्रत्यंचा सहित १२ दाहिने हाथ को १४ बायाँ हाथ [बाँमे हाथ] पीछे रहने के कारण कायर कहता है ॥ २६ ॥ हाथियों के १५ शरीर को ठेलने के लिये १६ बर छिपो और भागों के १७ समूह घुसते हुए ऐसे शोभा देते हैं कि मानों वज्र के साथ धिजुली चलकर काले बहलमें घुसती है १८ उज्जैन में इस कारण माहजी और अरिसिंह की सेना लड़ी तहां उदयपुर की सेना लज्जित होकर १९ भागी ॥ २७ ॥ २० हाथ ॥ २८ ॥ मेवाड़ की भगी हुई सेना में से

जिम भेचक्र पच्छिम चत्तत, ग्रह गन पूरब गोन ॥ २९ ॥

॥ पट्पात् ॥

इक राघव१ मरहठ जवन दोला२ द्वितीय जैहँ ॥

भल्ला जालमसिंह३ चौड वसिय पहाड४ तैहँ ॥

साहिपुरप उम्मेद५ मान६ भट भैसरोर पति ॥

अकखैय७ चीरमदेव८ उभय२ रठोर मरन मति ॥

परमार सुभट सुभकर्ण९ पुनि ए मुरे दल भजत सन ॥

नव९सफर जानि अतिबल निडर गहरश्रोत किय प्रतिगमन१०

साहिपुरप उम्मेदसिंह१ असिवर हद कारिय ॥

खूय बिरचि रन खेल प्रचुर मरहठ प्रहारिय ॥

करि उज्जज सीसोद कुजहिँ तिल तिल मित तुष्टिग ॥

रविमडल बिच होय लाह सुरपुर सुख लुष्टिग ॥

तिमही पहाड२ भट चौड हर ईसैहिँ दैन न अहरिय ॥

बल फारि मारि मरहठ बहु कैलह सीस रज रज करिय ३१

॥ दोहा ॥

दोला१ राघव२ एहु दुव२, सत्रु बहुत सहारि ॥

पैथुल रारि बिच कटि परे, अतुल मारि तरवारि ॥ ३२ ॥

इक१ परमार कवध उभ२, टरे कछुक छैतवान ॥

मरहठन लिन्ने पकरि, जालमसिंह रु मौन ॥ ३३ ॥

नौ (*)घोड़े इस तरह पीछे मुड़े जैसे १ मपूर्ण तारा मडल तो पश्चिम को जाता है और वनमे से (†)नौ ग्रह पीछे पूर्व को जाते हैं ॥ २६ ॥ २ पहाडसिंह ३ उम्मेदसिंह ४ मानसिंह ५ अक्षपसिंह ६ मरहठ ७ गहरे ओते में = बलदे चले ॥ ३० ॥ ६ महुत १० तिल तिल माफिक १ स्वर्ग का २ शिव को मस्तक देना स्वीकार नहीं किया ३ पुच्छ में ॥ ३१ ॥ १४ पड युष् से ॥ ३२ ॥ १५ घायल १६ मानसिंह को ॥ ३३ ॥

(*)यहां धनहस्वार्थी लक्षणा से दोहों के सवार जानने चाहिये ॥

(†) नौ ग्रहों की सामान्य गति तो सपूर्ण तारा मडल के साथ पश्चिम में जाने की है परंतु विशेष गति से नौ ही ग्रह प्रतिदिन पूरब की ओर हटते जाते हैं ॥

विगरघो दल अरिसिंहको, जित्थो माहजि जंग ॥

सिसु पैरखी हरखे सुभट, आवन राज्य उमंग ॥ ३४ ॥

दंम्म लक्ख १००००० अरु बीस २० गज, तोप छतीस ३६ नवीन

लूटमाँहिँ माहजि लये, तुरग सढँस पुनि तीन ३००० ॥ ३५ ॥

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणो सप्तम ७ राशावुम्मे-

दसिंहचरित्रे ज्ञातससहायसमागताऽरिसिंहसैन्यछलवालसहिततत्प

क्षसुभटभेदोपायचित्तोड्डुर्गप्रविशनमाहज्यवन्त्यागमनश्रुतैतच्छलप

क्षसन्धपाशरणाग्रहणासाहजिदोला १ राघव २ पुत्रकलत्राऽऽदिनिय

हणातत्सहायराणाऽरिसिंहसैन्य १ सन्धपासहायच्छलशिशुसैन्य २

शिपातटमहारणाकरणासाहिपुराऽधिराडुम्मेदसिंह १ सलूमरीशभी-

माऽनुजपहाड़सिंह २ यवनदोला ३ महाराष्ट्रगधव ४ मरणापरमार

१ कबन्ध २।३ सक्षतीभवनफ़लाजालमसिंह १ चुंढाउतमानसिंह

२ कारान्यसनराणासैन्यपलायनच्छलपक्षसहायीभूतमाहजिविजय

१ रत्नसिंह के पक्षवाल ॥ ३४ ॥ २ रूपये ॥ ३५ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायणके सप्तमराशिमें, उम्मेदसिंहके चरित्र में सहाय पर आर्हदुर्ग और अरिसिंह की सेना को जानकर छलवाले घालक सहित उसके पक्ष के उमरावों का भेद उपाय से चित्तौड़ के गढ़ में घुसना १ माहजी का उज्जैन आना सुनकर उन छल पक्षवालों का उसकी शरण लेना २ माहजी का दोला और रघु के पुत्र और स्त्रियों आदिको कैद करना और उनकी सहाय पर राणा अरिसिंह की सेना और लिंघियाकी सहायता से रत्नसिंह की सेना का शफरा नदी के किनारे महा युद्ध करना ३ शाहपुरा के पति उम्मेदसिंह, सलूमर के पति भीमसिंह के छोटे भाई (*) पहाड़सिंह, यवन दोला और मरहटा राघव का मरना और पैवार और राठोड़ का घायल होना, फ़ाला जालमसिंह और चुंढाउत मानसिंह का पकड़ा जाना, राणा की सेना का भागना ४ छलपक्ष की सहाय करनेवाले माहजी का विजयपाना और शत्रु के डेरों का वैभव लूटने का अठावनवां अग्रस्र समाप्त हुआ ॥ ५८ ॥ और आदि से

(*) सलूमर के रावत भीमसिंह को महाराणा अरिसिंह ने जहर देकर नाहरमगरे में मार डाला तब उसका छोटा भाई पहाड़सिंह भीमसिंह के पाट बैठ गया इसकारण इस समय वह सलूमर का ही रावत था यहा सलूमर के पति भीमसिंह का छोटा भाई लिखा सो अनुचित है ॥

अरिसिंहकासिन्धियासे मिलजाना]सप्तमराशि-नवपचाशमयूष (१७४६)

मापगापरशिविरवैभवलुगटनमष्टपञ्चाशत्तमो ५८ मयूख ॥ ५८ ॥
आदित ॥३३९॥

॥ प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा-बदलै जालमसिंहकै, सठि सहैस ६०००० दै दम्भ ॥

मित्र इक्क मरहवने, टारयो कौद कुकम्भ ॥ १ ॥

चुडाउत छुट्यो न वह, भैसरोर पति मान ॥

छलसिसु जान्पो छिप्रही, रहिहौं व्है अब रान ॥ २ ॥

दोला १ राघव १ दुहुँशनके, लौनें सीस कटाय ॥

रोपे नगर अवति विच, सेलन अग्र चिपाय ॥ ३ ॥

उदयनैर उप्पर बहुरि, सज्जिय माहजि सेन ॥

उतकृति धृति १८२६ आखाढ बिच, लग्यो पत्तन लैन ॥४॥

रसना जिम संकट रँदन, जरि इम तोपन जाल ॥

संध्या खिजि बिंटिय शहर, करि रन दैमन कराल ॥ ५ ॥

भैसरोर पति मान तँहँ, विधि कछु कौद विहाय ॥

जामिक दिठि बचायकै, दुरयो उदैपुर जाय ॥ ६ ॥

बहुत काल घेरा रह्यो, भयो उदयपुर त्रस्त ॥

सधपाको घन बुँडि करि, विगरयो विभव समस्त ॥ ७ ॥

सेन खरच छलबाँलसों, मग्यो माहजि तत्थ ॥

वेहु उदयपुर उन कहिय, लेहु उचित तुम अर्थ ॥ ८ ॥

सुनिय रान अरिसिंह यह, अनख परस्पर होत ॥

कथित दड स्वीकरि कहिय, पकरि लेहु छलपोतै ॥ ९ ॥

तीन सौ उनचालीस ३३६ मयूष क्षुप ॥

१ रुपये २ कुकर्म ॥ १ ॥ ३ शीघ्र ही ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ४ दाँतों के घेरे में ५ दह देवों
को ॥ ५ ॥ ६ पहरायतों की नजर बचाकर ॥ ६ ॥ ७ मेघ की दृष्टि से ॥ ७ ॥ ८
रत्नसिंह से ९ अर्थ (घन) ॥ ८ ॥ १० सिंधिया ने कहा जितना ११ छलबाळ
(रत्नसिंह) को ॥ ९ ॥

जब माहजि पकरन जतन, किय सो सुनि तत्काल ॥
 किल्ला कुंभिलमेरु गय, सह परिंकर वढ़ बाल ॥ १० ॥
 दंड रान अरिसिंह दिय, भूखन दम्भ तुरंग ॥
 अवसेसन हित ओलि दिय, अल्ला जालम संग ॥ ११ ॥
 जालमकों माहजि जबहि, आयउ लौ उज्जैन ॥
 बरस याहि १८२६ ऋतु सरद बिच, सज्जित अतुलित सैन १२
 महाराव कोटा पुरप, नृप गुमान यह जानि ॥
 मोच्यो जालम दम्भदै, परिंकर स्वीय प्रमानि ॥ १३ ॥
 इत रक्खे अरिसिंहनै, संधी जवन सिपाह ॥
 चपारि लक्ख ४००००० तिनके चढे, हँक रूपय नैय राह १४
 फोरे कुंभिलमेरु के, फुट्टे संधिय नाहि ॥
 पै हक मंगन दंड किय, मुलक उदैपुर माहि ॥ १५ ॥
 दम्भ भये नहि दैनकों, तव अरिसिंह सिटाय ॥
 आयो व्याहन रीति कछु, संधिनकों समुझाय ॥ १६ ॥
 सुता बहादुरसिंहकी, परनि कृष्णागढ दंग ॥
 रान संकि तत्थहि रहयो, संधिन दंड प्रसंग ॥ १७ ॥
 तदनंतर मुनि नेत्र धृति १८२७, बुंदिय नगर नरेस ॥
 भयो उदास प्रवृत्ति सन, बढि बैराग्य बिसेस ॥ १८ ॥
 रोंध बिसद द्वादसि १२ रुचिर, रविबासर सुभ रूप ॥
 अजितसिंह जेठो कुमर, किन्नो बुंदिय भूप ॥ १९ ॥
 प्रथम पुरोहित किय तिलक, निज कर भितुवराध ॥

१ परगह सहित ॥ १० ॥ २ बाकी रहे जिनमें जालमसिंह को ओल (रुपयों के एवज की कैद) में दिया ॥ ११ ॥ १२ ॥ ३ छुड़ाया ४ अपनी परगह वाला जान कर ॥ १३ ॥ ५ तनखाह के ६ नीति के मार्ग से ॥ १४ ॥ ७ यहां लक्षणा से कुंभिल मेरुवालों को जानना चाहिये ८ छपद्रव ॥ १५ ॥ १६ ॥ ९ ढरकर ॥ १७ ॥ १० जिसपीछे ११ कर्म मार्ग से ॥ १८ ॥ १२ वैशाख सुदि ॥ १९ ॥

पुत्रको राजदेराजा का बान प्रस्थ होमा] मसमराशि-नवपचाशमयूख (१७५१)

बहुरि व्यास आसिख बिहित, रचि किय मानिकराम ॥ २० ॥
 निज कटिको असिबर नृपति, वधायउ निज हत्य ॥
 नृपता दे निज पुत्रकों, हुव बिरत मन तथ्य ॥ २१ ॥
 रक्खयो नगर बडोदिपा, निज परिकर व्यर्थ काज ॥
 श्रोजित पद अप्पुनै गहिष, तजिदिय पद नरराज ॥ २२ ॥
 ॥ घनाक्षरी ॥

जाके काज बिपति बिताई बहु कष्ट सहि,
 द्वैर द्वैर दिन माहिं मोटे जाठर दुसह दाह ॥
 मरन बिचारि मारि मारि तरवारि भारि,
 झडे पचरंग जग महे चहुवान नाह ॥
 जैपुरकों जीति नीति दुल्लभ दिखाई सब,
 भूपन दिखाई भूप आदि रजपूती राह ॥
 श्रीजित सहर बुदी अष्टर्म = उमेद मनु,
 कासी जानि लीनी तेंनुकासी जानि लीनी वाह ॥ २३ ॥

दोहा-इदगढप उमराव तैंहँ, भक्तराम श्रिभिधान ॥
 पुनि खतोली नगर पति, रतनसिंह चहुवान ॥ २४ ॥
 बलवनपति मालम ३ बहुरि, बैरिसल्ल भव बस ॥
 जपौहो भरतसिंह ४ जैंहँ, खेडानगर वतस ॥ २५ ॥
 दुर्गसिंह ५ मुहुकम कुलाज, अतरदा नगरेस ॥
 महासिंह गजसिंह ६ जिहिं, पुर जज्जाउर पेसै ॥ २६ ॥
 तिमहि भवानीसिंह ७ तैंहँ, धोवड पत्तन नाह ॥

॥ २० ॥ १ अपनी कमर का २ राजापन देकर ३ बिरक्त ॥ २१ ॥
 ४ स्वर्ष के लिये ५ अपना पद श्रीजित रक्खा ६ राजा का पद छोड़ दिया ॥ २२ ॥
 ७ पेट की = बस्मेदसिंह खी आठवें मनु ने ८ बुन्दी को ही काशी जान ली
 और राज्य छोड़ने में उस बुन्दी को १० लक्ष के समान जान ली सो प्रशंसा है
 ॥ २३ ॥ २४ ॥ २० ॥ ११ आधीन ॥ २१ ॥

भगवंत८ सु सीलोर पति, माधानी हित चाह ॥ २७ ॥
 सेरसिंह९ सामंत हर, भजनैरी पुर भान ॥
 महसिंह हर बीर पुनि, थानाँ पुर प खुमान१० ॥ २८ ॥
 तिम समुदसिंह११हु सुभट, सुहरनि पति बरवीर ॥
 नगर जैतगढ नाद पुनि, बाघसिंह१२ रन बीर ॥ २९ ॥
 भट खुसाल१३ सामंत हर, नगर नादनाँ ईस ॥
 मिसल दाहिनीके मिले, भट इत्यादि बलीस ॥ ३० ॥
 बाम मिसल उमराव बलि, सोलंखी जयसीह१ ॥
 नाथाउत निम्मान पति, पित्थल सुत नय लीह ॥ ३१ ॥
 नाथाउत बखतेस२ बलि, नगर पगागँ मोर ॥
 अभयसिंह३ अमरेस सुत, पति अलोद रठोर ॥ ३२ ॥
 इत्यादिक सुभटन नजरि, किन्न हय सिरुपाव ॥
 पठये टीका नृपन पुनि, सुनि यह बत्त सचाव ॥ ३३ ॥
 उदयनैर अरिसिंह१ नृप, पित्थल२ जयपुर ईस ॥
 विजयसिंह३ रठोर बलि, जनपद धन्व अधीस ॥ ३४ ॥
 कोटापुर प गुमान४ नृप, छत्र कितव छल जाल ॥
 इमहि करोली पुर अधिप, जहव मानिकपाल५ ॥ ३५ ॥
 बीकानैर अधीस बलि, सुरतसिंह६ नरनाह ॥
 रामसिंह७ नैषध अधिप, नरउरपति कछवाह ॥ ३६ ॥
 भूप बहादुरसिंह८ तिम, कृष्णागढप रठोर ॥
 गोरबंस अवतंस पुनि, सोपुर नृपति किसोर९ ॥ ३७ ॥
 इत्यादिक सब नृपनके, टीका गज१ हयराज२ ॥
 मनिभूखन३ सिरुपाव४ मिलि, सह आये सुभ साज ॥ ३८ ॥

॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ १ नीति के मार्ग में ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ २ उम
 ने ॥ ३३ ॥ १ भारवाड़ देश का पति ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ४ निषध देश का
 ॥ ३६ ॥ ५ मुकुट ॥ ३७ ॥ ३८ ॥

सुनि टौंका श्रीमतहू, दयो नरायनराव१ ॥
 हुलकर तछू१ सधिपा, माहजि२हू भल भाव ॥ ३९ ॥
 इम श्रीजित उम्मेद यँहँ, क्रिय नृप ज्येष्ठ कुमार ॥
 लयो महाराजोपपद, बहादुर१ रु सिरदार ॥ ४० ॥
 रक्खे कछु निज ढिग सुभट, नाम सुनहु जिन नाह ॥
 इक१ थाँनाँपतिको अनुजँ, विक्रम१ सुमनँ सिपाह ॥ ४१ ॥
 बैरिसल्ल कुल उद्धरन, सुभट नाम सोभाग२ ॥
 भट किसोर३ नाथाउत सु, अति जिहिँ रन अनुराँग ॥ ४२ ॥
 दयानाथ४ रासू५ दुव२हु, महासिंह कुल जात ॥
 वीर खुसाल६ निहाल७ वर, हर सामत सुहात ॥ ४३ ॥
 भड्ढा वीर दत्तेल सुन, चट्सिंह८ जय चोर ॥
 वीर सिगार्डसिंह९ बलि, अमरचंद रठोर ॥ ४४ ॥
 इह, खजूरीको बहुरि, दोलतसिंह१० स नाम ॥
 ए निज ढिग रक्खे सुभट, श्रीजित बिहित विरामँ ॥ ४५ ॥
 धुदिपतँ ईसान दिस, कोस इक्क१ मतिमान ॥
 सिव केदार निकेत तँहँ, रहन बिचारयो थान ॥ ४६ ॥
 महलनमें उम्मेद २०० नृप, मंदिर उमपर बनाइ ॥
 श्रीरग१ रु आनदघन२, प्रभु दिन्ने पधराइ ॥ ४७ ॥
 तिनके ढिग उत्तर४७ तरफ, नाना भुँकुर निकेत ॥
 रुचिर चित्रसाला३ रची, सब सुभ चित्र समेत ॥ ४८ ॥
 प्राची१ दिस तम दिष्ट पुनि, नाना दुँभन निवास ॥

॥ ३६ ॥ १ महाराजकी पदयो महापुरसिंह और सरदारसिंह ने की ॥ ४० ॥ १ छोटा भाई
 ३ श्रेष्ठ मनवाला ॥ ४१ ॥ जिसको युद्ध से बहुत उग्रता थी ॥ ४२ ॥ ४ विजय को
 चारनेवाला ॥ ४४ ॥ ६ वाचित ७ प्रताप को उपराम में ॥ ४५ ॥ ८ केदार नामक
 शिष का मंदिर ॥ ४६ ॥ १० ॥ १० काचमहल ॥ ४८ ॥ १० वस्त के नीचे १० माना
 भाँति के धुँधों का

क्रीड़ा उपवन नाम करि, विरच्यो रंगविलास ४ ॥ ४९ ॥
 ताके उत्तर ४१७ प्रांत पर, तीन ३ निलय किय तत्थ ॥
 अच्छवाट १५ अरु असन घर २१६, मुकुर महल ३१७ तिन मत्थ ५०
 तारागढ विच हरि सदन ११८, आयत कोसर २१९ निवान ३२०।
 बिष्णुसिंह २०१२२ नृप चरित विच, रचित कहे त्रय ३ थान ५१
 कृत गनेस घंटा ११४१२ कहिय, चौथी ४ ताहि चरित्र ॥
 नैव्य अंधो महल न निलय, दरनत सुनहु विचित्र ॥ ५२ ॥
 राजमहल प्रासाद सन, दक्खिन २१३ दिस थिर थान ॥
 तीन बनाये भूप तिन्ह, अब जानहु अभिधान ॥ ५३ ॥
 रुचिर निवकोराउला ११२। इक बहु महल उपेत ॥
 तस दक्खिन २१३ दूजो २ अतुल, जँहँ कुलदेवि निकेत २१३ ॥ ५४ ॥
 कहत राउला कूपको ३१४, तासों दक्खिन २१३ तत्थ ॥
 तीन ३ नमें प्रासाद तँति, सब अति उन्नति सत्थ ॥ ५५ ॥
 तिन्ह तोरँन बाहिर तहाँ, गोलहाबापिय पास ॥
 तीरथिया हयकी रची, प्रतिमा ११५ अँट प्रकास ॥ ५६ ॥
 सिव केदार समीप किय, तीजे ३ आश्रम वास ॥
 तँहँ विरच्यो उत्तर ४१८ तरफ, उपवन देवविलास ११६। ५७।
 तास ढिगहि सिखिको न २ तँहँ, रचित कुंड २१७ अभिराम ॥
 तासों लागि आवाँछ २१३ तट, धवल तुर्ग निज धाम ॥ ५८ ॥
 जो सिकारबुरज ३१८ हि बजत, आलय प्रचुर उपेत ॥

१ बगीचा ॥ ४९ ॥ २ मकान ३ काचमहल इन के ऊपर है ॥ ५० ॥ ४ मोटा
 ॥ ५१ ॥ ५ गणेशघाटी ६ नवीन ७ नीचे के महलों में ॥ ९२ ॥ ८ उन के नाम
 ॥ ५३ ॥ ९ मंदिर ॥ ५४ ॥ १० महलों की पंक्ति ११ ऊँचेपन सहित ॥ ५५ ॥ १२
 उनके दरवाजे के बाहर १३ बुरज पर चौड़े ॥ ५६ ॥ १४ शानप्रस्थ १५ बाग ॥ ५७ ॥
 १६ अग्नि कोण में १७ दक्षिण के किनारे १८ इवेत रंग का ऊँचा अपना महल
 ॥ ५८ ॥ १९ बहुत मकानों सहित

चम्पेदसिंहकेयनापेस्थामोंकापर्यन्त] सप्तमराशि-नवपंचाशमयूज (१७५५)

आमति१ जीवन२ अप्प इह, निबम्पो रुचिर निकेत ॥५९॥

तैंह गुलाबवाटी११९ तिमहिं, मारुति छत्री२१२० मजु ॥

कुल्पा३१११ घावन जटित किय, कूढ मिलित चित कजु६०

बहुरि मंदुग१२२ आदि बहु, थप्पे कति लघु थान ॥

वैखानस३तैंह वास करि, बिलास्यो निर्गम बिधान ॥ ६१ ॥

जो खवासि नृपकै निपुन, कही रूपरसराय ॥

तस नामहु इक१ वाग तैंह, चतुर रच्यो जस चाय ॥ ६२ ॥

सिव केदार समीप सो, बज्जहिं रूपविलास१२३ ॥

नदी दानगगा निकट, इत दक्खिन२३ तट आस ॥ ६३ ॥

वेघम नृप बुधसिंह१९९को, चौरा१२४ रुचिर रचाइ ॥

किन्नौ जस व्यय अतुल करि, मह१सह दान२मचाइ ॥ ६४ ॥

बुदीतैं चहुँ४घाँ विदित, मृगया घुरज महीप ॥

बिरची तिनमैं सुभ घुरज१२५, दिस मँची सब दीप ॥ ६५ ॥

बहुरी२१६ कोठा३२७ आदि इम, बहु पुर निकट१बनाइ ॥

दूर२हु भीमलता२२८ दि भुव, पटु मृगया रस पाइ ॥ ६६ ॥

सत्रुसल्ल१९६१ तजिकें सुपहु, व्यय औसी कारि बितैं ॥

काहूँ न रचे निलय, इम उदार चहि चित्त ॥ ६७ ॥

इतिश्री वराभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणो सप्तम ७ राशानुम्मे

१ बुद्धि पर्यन्त और जीवन पर्यन्त आप यहा २ सुन्दर मकान म (६) रहा

॥ ५६ ॥ ३ गुलाबवाड़ी ४ पत्थरों की जखी हुई नहर, ५ बहते हुए जलवाली

॥ ६० ॥ ६ हयशाखा ७ बस दानप्रस्थ ने ८ वेद धिधि से बिबास किया

॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६ बुधा ॥ ६३ ॥ १० वटसब साहित ॥ ६४ ॥ ११ शिकार की

१२ पूर्व दिशा में सब को प्रकाश करनेवाली है ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ १३ घम खरब

करके १४ मकान ॥ ६७ ॥

श्रीवराभास्कर महाचम्पूके उत्तरायणके सप्तमराशि में, चम्पेदसिंहके चरित्र

(६)रावराजा चम्पेदसिंह अत समय में केदारेश्वर में ही मूर्ख हो गये थे जिस के बाद उनको महलों में

ले गये परन्तु जब तक बुद्धि(होश)रही तब तक वे केदारेश्वर में ही रहे इसी कारण यहा आमति जीवन कहा है

दसिंहचरित्रे मित्रमद्वारापूष्पलालजालमसिंहकोरामोक्षणमाहजिवा-
 हिन्धुदयपुरवेष्टनचुण्डाउत्तमानसिंहकौतुकयान्तःपुरप्रविशनजातलु-
 लुप्सारुष्टमाहजिसपक्षच्छलडिम्भकुंभिलमेरुदुर्गगमनराणांऽरिसिंह
 माहजिदण्डद्रम्माऽर्पणखिलद्रम्माऽवधिपूष्पलालजालमसिंहसार्थीक
 रणादत्तद्रम्मकोटेशगुमानसिंहतन्मोक्षणसंधिभूत्यादव्यशङ्किताऽरि-
 सिंहबहादुरसिंहसुतोद्वाहनिमित्तकृष्णगढनिवसनरावराडुम्मेदसिंह
 महाराजकुमाराऽजितसिंहाऽर्थराज्याऽर्पणस्वयंश्रीजिदुपटङ्गधारण
 सर्वभूभृटीकोपाख्यव्यवहारप्रेषणस्वल्पसार्थसहितश्रीजित्केदारेश्वर
 स्थाननिवसनमेकोनपञ्चाशत्तमो ५९ मयूखः ॥ ५९ ॥

आदितः ॥ ३४० ॥

इतिश्रीमदखिलमहीभृन्मुकुटमल्लीमालयमकरन्दमद्यमत्तमिलिंद
 मुखरितचरणचिन्हिताऽऽरातिचूडबुन्दीपूर्विलासिनीविलासिचाहुधा
 गाचूडामणिभारतीभागधेयहृष्टोपटङ्गिमहाराजाऽधिराजमहारावराजे
 में, मरहटे मित्र का आला जालमसिंह को कैद से छुड़ाना और माहजी का
 सेना से उदयपुर को घेरना ? चुंडाउत मानसिंह का छल से पुर के भीतर
 जाना और लोभ से माहजी को कुछ जानकर पक्ष सहित छलवालक का कुं
 भलमेरु के गढ में जाना २ राणा अरिसिंह का माहजी को दंड के रुपये देना
 और बाकी के रुपयों की अवधि पर्यन्त आला जालमसिंह को साथ देना ३
 कोटा के पति गुमानसिंह का रुपये देकर जालमसिंह को छुड़ाना ४ सिन्धियों
 की तनखाह के द्रव्य से डरकर अरिसिंह का बहादुरसिंह की पुत्री के विवाह
 के कारण से कृष्णगढ में निवास करना ५ रावराजा उम्मेदसिंह का महाराज
 कुमार अजितसिंह के अर्थ राज्य देना और अपना श्रीजित् की पदवी धारण
 करना ६ सब राजाओं का टीका नामक व्यवहार भेजना और थोड़े साथ
 सहित श्रीजित् के केदारेश्वर स्थान में निवास करने का उनसठवां ५९ मयूख
 समाप्त हुआ ॥ ५६ ॥ और आदि से तीन सौ चालीस १४० मयूख हुए ॥

श्रीमान्सब राजाओं के मुकुटों में रहेहुए मोगरे के पुष्प संबंधी मकरंद (पुष्प
 रस) रूप मद्य से मस्त हुए अमरों से शब्दायमान चरण से चिन्ह युक्त किये
 हैं शबुओं के मस्तक जिन्होंने, बुन्दी पुरी रूपी स्त्री के विलासी, चहुवाणों के
 क्षिरोमणि, सरस्वती है दायभाग में जिनके अथवा सरस्वती से कर लेनेवाले

श्रीरामसिंहदेवाऽऽज्ञाप्रगीर्वाणागीरादिषट् ६ भाषावेरासुधुमुजङ्ग-
काव्याऽकूपारकर्णधारवीरमूर्तिचक्रिचरणारविन्दचञ्चरीकचारुचम-
त्कृतचेतनचारणचक्रचण्डाशुचण्डादानात्मजमिश्रणसुकविसूदर्यमल्ल
विहितवशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणो रावराहुम्मेदसिंहचरित्र
समयसमानाधिकरणकोदन्तवर्णन सप्तमो ७ राशिस्समाप्त ॥ ७ ॥

इति श्री नीतिनिपुण-शुद्धिविरारद-सज्जनशिरोमणि-हरिभ-
क्तिपरायण-धर्ममूर्ति-वीर-वदान्य-सोदाधारहठ-चारणकुलावतस
शापुहराप्रतोलीपात्र-सुयोग्यपितुरवनाडसिंहस्याऽऽत्मजेन, विदुष्या
शृङ्गारनामजनन्या प्राप्तप्रसवपालनबालशिक्षोपदेशेन, सुशिक्षितैरा-
ज्ञाकारिभिरात्मजै केसरीसिंह-किशोरसिंह-जोरावरसिंहै-विगत-
भाषाधिना, कविकोविदनिजमातुलकविराजश्यामलदासाऽऽप्त-
काव्यशिक्षेण, सन्तोषाऽऽदिसद्गुणसम्पन्न-विद्वच्छिरोमणि-परमवै-
अर्थान् पूर्ण विद्वान् हाहा पदवीवाले, महाराजाधिराज महारावराजेन्द्र श्री-
रामसिंहदेव की आज्ञा से, संस्कृत भाषा आदि छ भाषा रूपी गणिकाभा के
पति, काव्य रूपी समुद्र के केशर्तक (खेवटिए) वीरमूर्ति, विष्णु भगवान् के च-
रणारविन्द के भ्रमर, मनोहर अमत्कारिक युष्टिवाले, चरण गय के सूर्य, चण्डा-
दान के पुत्र, मिश्रण (मीशण) शाखा के अष्ट कवि सूर्यमल्ल के रचे हुए पञ्चाभा-
स्कर नामक महाचम्पू के उत्तरायण में रावराजा छम्मेदसिंह के चरित्रके समय
के घराघर है अधिकार जिनका ऐसे वृत्तान्तों के वर्णन का सातवा राशि
समाप्त हुआ ॥ ७ ॥

श्रीयुतनीतानिपुण-शुद्धिविचारद-सज्जनशिरोमणि हरिभक्तिपरायण धर्म
मूर्ति वीर उदार सोदाधारहठ शाखा के चरण कुल के मुकुट शाहपुरा के पोठ
पात्र (शाहपुरा के राज द्वार पर नेग 'दस्तूर' लेनेवालों में पात्र) सुयोग्य पिता
ओनाड़ (अनन्न) सिंह के पुत्र ने, पछिता शृंगार बाई नामक माता से पाया है
जन्म पालन और पालन की शिक्षा जिसने, अष्ट शिक्षा पाये हुए आज्ञाकारी
पुत्र केशरिसिंह, किशोरसिंह, जोरावरसिंह से मिल गई है आनेवाले समय में
होनेवाली मानसिक विन्ता जिसकी, पण्डित कवि अपने मामा कविराज
श्यामलदास से पाई है काव्य शिक्षा जिसने, सन्तोष आदि गुणों से युक्त

ष्णव-रामानुजसम्प्रदायिनः श्रीमदाचार्य-सीतारामाऽऽह्वयगुरोरासा-
दितसंस्कृतविद्येन, सूर्यवंशोद्भव-रघुवंशीय-राणोत्त-शाहपुराधिप-
राजाधिराजोपटंकिनाहरसिंहवर्म, आर्यदिवाकर-रविकुलशिरोरत्न-
रघुवंशीयगुहिलोत्त मेदपाटदेशाऽधिपोदयपुराऽधीश-सज्जनतादिसद्-
गुणसम्पन्न-महाराणासज्जनसिंहवर्म, तथातदुत्तराधिकारि महारा-
णा-फतहसिंहवर्म, भानुवंशभूषण-राष्ट्रकूटकुलाऽवतंस-मरुधराधिप
जोधपुरेश-राजराजेश्वर-महाराज-यशवन्तसिंहवर्मभ्यो लब्धाऽतीव
दान-मान-स्वर्णरचितपादभूषणाऽऽदिसत्कारेण, तथा तदुत्तराधिका-
रि-तत्तुल्यप्रीतिपुरःसरप्रतिपालकमरुधराधीशश्रीसरदारसिंहवर्मा -
भितेन, अधीतविद्यां सफलयितुं प्राप्तावसरेण, विद्वद्भिर्निजमित्रै-
र्लब्धसहायोत्साहेन, शाहपुरानिवासिना कविवर-बारहठ-कृष्णसिं-
हेन विरचितायामुदधिमन्थनीटीकायां सप्तमो राशिः समाप्तः ॥७॥

विद्वानोंके शिरोमणि परमवैष्णव रामानुज सम्प्रदायी श्रीमत् आचार्य सीताराम
गुरु से प्राप्त की है संस्कृत विद्या जिसने, सूर्यवंश में पैदा हुए रघुवंशीय राणा
उत्त शाहपुरा के पति राजाधिराज पदवीवाले नाहरसिंहवर्मा, और आर्यों के
सूर्य सूर्यकुल के शिरोमणि रघुवंशी गुहिल राजा के वंशवाले मेदपाट देश के
पति उदयपुर के स्वामी सज्जनता आदि सद्गुणों की समृद्धिवाले महाराणा-
सज्जनसिंह वर्मा, तथा उनकी गद्दी पर बैठनेवाले महाराणा फतहसिंह वर्मा,
और सूर्यवंश के भूषण राठोड़ कुल के मुकुट मारवाड़ भूमि के पति जोधपुर
के स्वामी राजराजेश्वर महाराजाधिराज जशवन्तसिंह वर्मा से पाया है
दान, बहूपन (पूज्यपन) और पैरों में सुवर्ण के भूषण आदि आदर जिसने,
तथा उनके उत्तराधिकारी उनके समान प्रीति पूर्वक प्रतिपालक मरुधराधीश
श्रीसरदारसिंह वर्मा का आश्रित, मिलगया है पढ़ी हुई विद्या को सफल कर-
ने का समय जिसको, पाया है अपने विद्वान् मित्रों से सहाय और उत्साह
जिसने, शाहपुरा के रहनेवाले ऐसे सुकवि बारहठ कृष्णसिंह की रची हुई
उदधिमन्थनी नामक टीका में सप्तम राशि समाप्त हुआ ॥७॥

॥ श्रीगणेशायनम ॥

॥ अथाऽष्टमराशिपारम्भ ॥

॥ शुद्धाऽपभ्रंशभाषा ॥

॥ गीतिः ॥

जयइ गणेशु गयागाणु१ बाणी२ हिमकुंवचद्रिमाधवला ॥

एइ करावहि कव ताह असटलु थवणु इउ करउ ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

रगासूरा मगाउज्जला जगावल्लहु अगामाणु ॥

अम्दारा गामउं जगा गुढकरिकवनिहाणु ॥ २ ॥

॥ गीर्वाणभाषा ॥

(अनुष्टुप्पुग्मविधुला)

तुरीपा४ य सदाऽपश्यज्जगत्स्वप्न२सुषुप्तिषु ॥

आत्माराम स्ववप्नार च्छेदानं नमाम्यहम् ॥ ३ ॥

(प्रायो ब्रह्मदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा)

(दोहा)

॥ संस्कृतअनुवाद ॥

जयति गणेशो गजाननो बाणी हिमकुन्दचन्द्रिकाधवला ॥

पते कारयत काव्य तयोःसदृशं स्तवनमहं करोमि ॥ १ ॥

रगासूरा मनस्युज्ज्वला जनवल्लभा अग्रमाणा ॥

यय नमामो ये गुहाकृतिकाव्यनिधाना ॥ २ ॥

गज के मुखवाले गणेश और चरक, मोगरा और चन्द्रिका के समान उज्ज्वल सरस्वती का जय होवे (सर्वोत्कर्षण वर्तताम्) ये ही काव्य कराते हैं जिनकी मैं समानता रहित स्तुति करता हूँ ॥ १ ॥ पुत्र में वीर, मन के उज्ज्वल, जनों के प्यारे और प्रमाण रहित, इनको मैं नमस्कार करता हूँ जो गुहाधना के काव्यों के खजाने हैं ॥ २ ॥ जो सदा जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति तीनों अवस्थाओं से तुर्यावस्था को देखते ये अर्थात् समाधि दशा में रहते ये जन ब्रह्मानन्द स्वरूप अशीषान नामक मेरे पिता को नमस्कार करता हूँ ॥ ३ ॥

मुनिदृगधृति१८२७मितसकसमय, अजितसिंह१९९।२नरनाह
छत्र धरयो निज जनक छेत, लहि भद्रासन लाह ॥ ४ ॥

भ्रातन संजुत भूपके, व्याह१ प्रजा१दिक वत्त ॥

कतिक भूत भावी कतिक, पीठिन क्रम जिम पत्त ॥ ५ ॥

घनाक्षरी-उपयम च्यारि४ कीनें भूपति अजितसिंह१९९।२,

तिनमें लहैं द्वै२ सुत नियति उदक ताम ॥

कृष्णागढ जाइ व्याही पहिलैं१ बहादुरकी,

कन्या रठुऊरि रानी मूरजकुमारि १९९।१ नाम ॥

राजाउत कित्तिसिंह दुहिता द्वितीय२ व्याही,

सो शृंगारकुमारि १९९।२ सतीमनि अज्ञाप धाम ॥

तीजी३ ताहि निर्गममें परनी बनायपुर,

सो अमानकुमारि १९९।३ दलेल सुता अभिराम ॥ ६ ॥

विष्णुसिंह राउलकी कन्या वंसबाटपुर,

बखतकुमारि१९९।४ नाम चौथी४ परन्यो विदित ॥

भूपतिकै रानी पहिली१में सुत जेठो१ भयो,

सो प्रताप२००।१ सिसुहि मरयो जो पाइ आयु मित ॥

सीसोदिनी आहाडी चतुर्थ४ रानी जंपी जास,

बिष्णुसिंह२००।२ दूजो२ चिरंजीव भयो पुण्य चित ॥

एक१ चंद्रशोभा१ ही खवासि जानें स्वांमी अंत,

राजाउति रानी २।१ संग होम्यो अंग हेरि हित ॥ ७ ॥

व्याह तीन३ कीनें भूप अनुज बहादुर१९९।३नें,

१ पिता के होते ही छत्र धारण किया २ सिंहासन का लाभ लेकर ॥ ४ ॥

सन्तान आदि की ४ पहिले हुई और कितनी ही आगे होनेवाली ५ प्राप्त ॥ ५ ॥

६ आनेवाले समय के भाग्यफल से ७ उर्सा मार्ग में ॥ ६ ॥ ८ बांशवाड़ ९

(बांसबहाला) १० थोड़ी आयु पाकर १० पति (अजितसिंह) के मरने पर ॥ ७ ॥

पाये सुत पचप रु सुता दुवर जस प्रकास ॥

झल्ल बखतेसकी सुता सो गर्गराटपुर,

पत्नी बडी१०पाही चदकुमरि१६११ अभिरुपा तास ॥

रठऊगि दूजी२ राजकुमरि१९६१२ विवाहो बीर,

वीकानैर भूप गजसिंहकी सुता जो आस ॥

सूरजकुमरि१९९१३ तीजी३ जादवी अमरदुर्ग,

भोग्वादिचद सुता परन्धो सबय १ भासर ॥ ८ ॥

ताही जादवीके रामसिंह२००११ बलवत२००१२ बलि,

दत्तपतिसिंह२००१३ चोथो८ सामतोंदिसिंह२००१४ सुत ॥

ताहीको द्वितीय२ नाम जीवन२००१४ बखाने जग,

जानो पचप पचमप कनिष्ठ सेरसिंह२००१५ जुत ॥

ताहीके सुनाहे २ तैंहैं ————— कुमरि१ जेठी१,

—————कुमार दूजी२ जे न परनी प्रेनुत ॥

भ्राता बलवत२००१२ सम थान डेरि हारयो हत,

इद१कों कै देतो व्याहि चद२कों कै जाइ उत ॥ ९ ॥

भूपति अजा१९९१२के भ्रात तजि३ सरदार१९९१३ व्याह,

च्यारि८ करि पाये सुत तीन३ सुता इक्क१ सह ॥

झल्ली नानतेकी बडी१ पतनी विवाहयो एह,

जोरावर कन्या अभेकुमरि१६९११ स नाम सह ॥

वीकानैरपुरकी विवाहयो वर दूजे२ व्याह,

नाम इद्रकुमरि१९९१२ अनद सुता महि मह ॥

१नाम२थी३भैरव है आदि में जिसके पेसा चन्द्र अर्थात् भैरवचन्द्र॥८॥ ४साम
न्तसिंह५विशेष स्तुति योग्य६भाई यलघन्तसिंह७जनका विवाह करने को परापर
का स्थान हरकर धक गया सो छेद की बात है कि यह इन्द्र को विवाहना चाहता
था कि चन्द्रको विवाहना चाहता था॥६॥ ७अजितसिंह के८भ्राता१९उत्सव रचकर

तीजी३ उनियारेकी नरुकी सरदार सुता,
बखतकुमारि१९९।३ नाम व्याही बिंद उक्त भेद ॥ १० ॥
बाधनवारेकी बहुरि, उदयभानुकुलधारि ॥

दोहा

अखयसिंह तनया बरी, चोथी४ सुबय कुमारि१९६।४ ॥११॥
जेठो१ सुत जेठी१ जन्यौं, ईश्वरिसिंह२००।१ सनाम ॥
दूजी२ दुव२ सुत इक१ सुता, तितय३ जन्यौं विधि ताम१२
क्रमकरि इह दूजो२ कुमर, देवीसिंह२००।२ उदार ॥
तीजो३ पृथ्वीसिंह२००।३ यह, भो वपसु सिसु गद भार १३
याहीकै इक१ अंगजा, जेठी१ सब३ तैं जोहि ॥
खूबकुमारि१ निज जनक खिन, सोपुर व्याही सोहि ॥१४॥
गोर राधिकादास नृप, जो परन्यौं जस जुत ॥
इक१ खवासि सरदार१९६।४कै, हुव ताकै दुव२ पुत ॥१५॥
नाम पहार१ सुरुप२ जे, जेठो१ अज्जहु आहि ॥
पहु अपहुं काका कहत, जथा कुलक्रम जाहि ॥ १६ ॥
दीप१९८।६ तनय सुरतान१९९।६ हुव, नगर कापरनि नाह ॥
बधू उभय२ तानैं बरी, लहयो प्रजा चउ४ लाह ॥ १७ ॥
प्रथम१ कूरमी१ रामपुर, राजाउत्ति२ द्वितीय२ ॥
नाम गुलाबकुमारि१ तस, हुव जेठी१इक१धीर्य ॥ १८ ॥
सो व्याही नरउर नृपहिं, ताके सोदर तीन३ ॥
औरस राजाउत्ति२ कै, प्रकटे सुनहु प्रवीन ॥ १९ ॥
सुत जेठो१ सामंत२००।१हुव, दूजो२सगत२००।२ स नाम ॥

१कहेहुप दिन ॥१०॥२राठोड़कुल("कर्मध्वज" इति पाठान्तरम्)॥११॥३बड़ी स्त्री
ने ४तहां॥ १२ ॥ ५ रोग के भार से बालक ही मरगया ॥ १३ ॥ ६ पुत्री० अपने
पिता के समय ॥ १४ ॥ १५ ॥ ८ आज भी है ९ हे प्रभु (रामसिंह) आप
भी उस को काका कहते हो ॥ १६ ॥ १७ ॥ १० कछवाही ११ पुत्री ॥१८॥१६॥

तिनको अनुज प्रयाग २००।३ दुव २, अनुज असुत मृत ताम २०
 नृपके भ्रात खवासि भव, जिहि सिवसिंह १ सुभाइ ॥
 बिजय सुता पद्मावती १, बरी जोधपुर जाइ ॥ २१ ॥
 तास अनुज सयाम २ बर, बरी कृष्णागढ दग ॥
 अभयकुमारि १।२ सरदारजा, निज अग्रज नृप संग ॥ २२ ॥
 अनुजन जुत अजमल १९९।२ के, पहु इम व्याइ प्रजा २ दि ॥
 गंदित भूत १ भावी ३ गिनहु, अब बत्तन २ क्रम आदि ॥ २३ ॥
 सूचित १८२७ सक अजमल १९९।२ इम, पायो बुदिय पट्ट ॥
 पद श्रीजित उम्मेद १९८।४ पहु, बढ्यो पुरातन बँट्ट ॥ २४ ॥
 तदनतर सूचित १८२७ सकहि, श्रीजित सावन मास ॥
 पतनी जुत पुष्कर गयो, न्हावन प्रीति प्रकास ॥ २५ ॥
 नगर कृष्णागढ पति गयो, श्रीजितको तँहँ लैन ॥
 आयो तब चहुवान इत, अधिप वडादुर अन ॥ २६ ॥
 महिमानी अति रचि मुदित, सनमानिय सह सत्य ॥
 मिल्यो रान अरिसिंहहू, हुतो सकुचित तत्थ ॥ २७ ॥

॥ चर्चरिका ॥

सिक्खकै चहुवान श्रीजित मग बुदियको लयो,
 होय जैपुर सीम आनि मिलान नासरदा दयो ॥
 राजसिंह हमीरदेव कुलीन नासरदा पुरी,
 कुम्भको कैटकेस हो सु मिल्यो रची हित चातुरी ॥ २८ ॥
 अहरी महिमानी ओ रहि रति सभर हंकयो,

१ बिना पुत्र मरा ॥ २० ॥ २ बिजयसिंह की पुत्री ॥ २१ ॥ ३ सरदा-
 रसिंह की पुत्री ४ अपने पछे भाई अजितसिंह के साथ ॥ २२ ॥ ५ कहा हुआ
 ६ अब आदि से क्रम पूर्वक वर्तमान वार्ता है ॥ २३ ॥ ७ प्राचीन मार्ग में चला
 ॥ २४ ॥ ८ स्त्री सहित ॥ २५ ॥ ९ घर ॥ २६ ॥ १० सिन्धी पत्नों की तनछाह
 देने के संकोच युक्त ॥ २७ ॥ ११ मुकाम १२ कहावत का सेनापति ॥ २८ ॥

मोदसौं दरकुंच मंडत आनि आश्रममें ठयो ॥
 यों उदैपुर देसमें अति दंद संधिनै कस्यो,
 दै जरीब समस्त ग्रामनमें चढ्यो हक जो भरयो ॥ २९ ॥

॥ दोहा ॥

इत सक मुनि दृग धृति १८२७ प्रमित, सप्तमि७ पोस मिलापा ॥
 अजितसिंह नृपकै भयो, पहिलैं कुमर प्रताप ॥ ३० ॥
 सकुचि रान अरिसिंह इत, रह्यो कृष्णगढ जानि ॥
 आये संधी उदयपुर, हैक निज लैन प्रमानि ॥ ३१ ॥
 बढो रान अरिसिंहको, सुत हम्मीर कुमार ॥
 सो गहि आन्यों निज निलय, विरचि अनीति अपार ॥ ३२ ॥
 तंदपि न हक रूपय मिले, संधी तब करि मंत्र ॥
 दै जरीब कर देसतैं, लग्यो लैन स्वतंत्र ॥ ३३ ॥
 अजितसिंह भुंदीस इत, पुनि सुनि सैनन दोर ॥
 सेना निज चतुरंग सजि, चढ्यो बिडारन चोर ॥ ३४ ॥
 सक मुनि लोचन धृति १८२७ समय, सित पख फगुन श्राम ॥
 नगर टाँकड़ा जाय निज, किन्नै कटक मुकाम ॥ ३५ ॥

॥ भुजङ्गप्रयातम् ॥

तहाँतैं चढ्यो संभरी पट्ट ताँजी, बढी सेन भेरीनपैं रीठ बाजी ॥
 भयो भारतें जंत्रको इच्छु भो'गी, बन्यों खीन वंशालीनतैं विप्रयोगी ॥ ३६ ॥
 १ बुन्दी में केदारेश्वर के मन्दिर पर जहाँ अपना आश्रम था इधर उदयपुर के
 देश में सिंधी यवनों ने २ उपद्रव किया ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३ अपनी तनखाह को
 ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ४ तोभी तनखाह के रुपये नहीं मिले ५ देश से हासिल लेने
 लगे ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ६ फाल्गुन सुदि ॥ ३५ ॥ वहाँ से चहुवाण (अजितसिंह)
 ७ पाटली घोड़े पर चढा तहाँ सेना बढकर ८ नौबतों पर निरंतर प्रहार हुए
 और भार पड़ने से १० शेषनाग ९ चरखी (घांसी) के सांठे (गन्ने) के समान
 होगया और चीख होकर ११ सर्पियाँ से १२ वियोगी होगया ॥ ३६ ॥

छटा मेलसौं सेल आकास छाये, मनौं संजमें डबम ठहरे न माये ॥
 रचैं चाप टकार सका रचावैं, मनौं पिंजनी तूल कुफु मचावैं ॥३७॥
 चमकै जुरी टोप सन्नाह आली, किधौं सग काँदबिनी रग काली
 रजै यौ ध्वजा मत्त दायीन राखी, सरुके खरे सखपैं जानि साखी ॥३८॥
 विजैकों नकीवावली अगग बोलैं, हिये हेत फुलैं रु हुलैं हरोलैं ॥
 लगे सग द्रम्हामि सिंधू लगावैं, जथा कोप उच्छाह थाई जगावैं ॥३९॥
 कुसामें तुले जात यौ वाजि' कधे, वडैं चाप चिल्लान ज्यो' एन बंधे ॥
 उहैं ओसकै छाँह उँचेष्ट होती, करैं कैंतरी दोड हलैं कनोती ॥४०॥
 जगैं धाँवपैं नाल फुल्लिंग ज्वाला, मनौं गोधैरी होत खद्योत माला ॥
 फवैं प्रोथ फुल्लेनमें स्वास फुककैं, किधौं ग्राम्पहुकर्का तैपेहीन कुकैं ॥४१॥
 एँदाक् तथा गौररु हत्य पोपो, परयो बैलकै नाँसमें नैथ पोपो ॥

आकाश में छाये हुए माले एसी शोभा देने लगे मानों १ यज्ञ में खड़े किये हुए
 दाम (दर्भ) नई समायें, धनुष की टकार करके भय रचाते हैं सो मानों २ रुई
 में पिंजण ३ क्षणकार करती है ॥ ३७ ॥ टोप और कवचों की जुड़ी ४ पक्ति
 चमकती है सो मानों सेना के साथ फाले रंगवाली ५ घटा चली है और
 मत्त हाथिया पर ध्वजा एसी जोभा देती है माना पर्यंतों पर सरुके ६ वृक्ष
 खड़े हैं ॥ ३८ ॥ विजय करने को ७ छड़ीदारों की पक्ति आगे बोलती है
 जिनके हृदय स्नेह से फूलकर दरोह को ८ आगे यहाते हैं ९ दमामी (डोली)
 साथ लगकर पड़े राग के दोहे लगाते हैं और प्रशंसा के योग्य रौद्र रस के
 स्थायी श्रोत्र और धीर रस के स्थायी वत्साह को जगाते हैं ॥ ३९ ॥ १० लगामों
 में हुले हुए ११ घोड़ों के कंधे ऐसे जाते हैं मानों १२ धनुष की प्रत्यक्षा में पड़े हुए
 १३ दुरिण जाते हैं अथवा धनुष की प्रत्यक्षा में दुरिणों को बांधने जाते हैं
 १४ ऊंची होती हुई धाया को देखकर अमक कर बडते हैं और हिलते हुए कान
 १५ कतरणी की पराणी करते हैं ॥ ४० ॥ १६ पत्थरों पर खुरताले लगाकर अग्नि
 कणों की ज्वाला बडती है सो मानों जुगनुषों (आगियों) की पंक्ति बडती १७
 दीखती है जले हुए फुरशों में खास चखता हुआ शोभा देता है सो मानों
 १८ बिना टिकड़ी (सुलके) का १९ ग्रामीण लोगों का हुका कूकता है ॥ ४१ ॥
 अथवा जैसे २० काछपेलिये के हाथ में पकड़ा हुआ २० सर्प फुंकार करै तैसे तथा
 जैसे धृपम (बैल) की २२ नासिका में २३ नाथ (नाककी रस्सी) पोई होवे

उदै अँकककौ चक्कै यौ सज्जि आयो लये बिंठि मैनाँ मनो
मेघ छापो ॥ ४२ ॥

॥ दोहा ॥

मैननके सब खैट इम, बिंठिलये नृप जाय ॥

सुनत वेहु सज्जित भये, बल खल अतुल बढ़ाय ॥ ३३ ॥

॥ षट्पदी ॥

कर मँक्खर कोदंड उभय^२ मक्खर गुन ओपित ॥

उपासंग दृढ उभय^२ पिष्टि पूरन आरोपित ॥

कटि अय कठिन कटार बंसन दारिमँ मसि रंगिय ॥

सिखिचंद्रक धवपत्र कालितँ सिर ललित किलंकिय ॥

अपिहितँ कपाल कैटा गरद कहिकहि दुडुवँ लरन किलँ ॥

बंसिय बजात अपसवँ^२ कर किलकारत आये कुटिल ४४

स्योस्यो करि सिव सुमिरि भये समूह मैनेन गन ॥

इततँ संभर भटन बाजि पटकिय मिलाय मन ॥

उततँ तीरन ओघ संमि इततँ घट सारत ॥

हनन सेन उत हक्क इत रु पकरन उच्चारत ॥

और वो कुत्तार करे तैसे करते हैं १ सूर्य के उदय होने ही इसप्रकार की २ सेना सजकर आया और जैसे मेघ छावे तैसे छाकर मैनों (मीणों) को घेरालिया ॥ ४२ ॥ ३ सख खेड़ों को घेरालिये ॥ ४३ ॥ उन मैनों के हाथ में ४ मस्कर [बांस] के धनुष और ५ बांस की ही दो दो प्रत्येक शोभायमान हैं ७ बाणों से भरे हुए पीठ पर दो दृढ ६ आधे लगेहुए ८ कमर में कठिन लोहे का कटार और १० दाढ़िम की स्याही में रंगे हुए ९ वस्त्र, मस्तक पर ११ मयूर के पंखों और धोकड़ा के पृत्तों के पत्तों की अथवा धावड़ा नामक पृत्तों के पत्तों की १२ लगाईहुई सुंदर किलंगियें १३ कपाल नहीं ढकें ऐसे गोलाकार बंधेहुए मस्तक पर कैटे जो १४ निश्चय ही १४ डूडू शब्द कहकर लड़नेवाले। खैराब के मीणों का युद्ध प्रारंभ करने का यह सांकेतिक शब्द है १५ दहिने हाथ से वंशी बजाते हुए वे कुटिल किलकारी करके आये ॥ ४४ ॥ १७ स्योस्यो नाम से शिव का स्मरण करके १८ मीणों का समूह १९ उधर से तीरों का समूह २० इधर से बरछियें

कटि रुढ मुढ सैय पय किरत गिरत घाप जाँवा जटित ॥
 खननकि बाढ आयुधखिरत फिरत तून जित तित फटित ४५
 उल्टाटिजात असवार पलटि तुँक्खार प्रवीरन ॥
 ए खडत तिन्ह अनखि जुलम मडत वे तीरन ॥
 जौम जुगल २ इम जुजिभ निबल अत्र खल सिर नावत ॥
 परे आनि नृप पयन सयनँ जोरत अकुलावत ॥
 पहु अजितसिंह यह रन प्रथम करि इम मैनन जेर किय ॥
 लुटवाय खेट वारह १२ लये वरस अढारह १८ वय बलिय ४६
 ॥ दोहा ॥

चोरी गोवध आदिके, मैनन लिखित कराय ॥
 सबके सत्त्र गिरागैँ, दिय कृपिकर्म लगाय ॥ ४७ ॥

इति श्री वराभारकरे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टमऽराशवजितसिं
 हचरित्रे सपत्नीकश्रीजिदुम्मेदासिहपुष्करस्नानभूपवहादुरसिंहतत्कृ
 ष्णगढाऽऽनयनश्रीजि १ दाया २ ऽरिसिंह २ सम्मिलननासरदामार्ग
 निजाऽऽश्रमाऽऽगमनबुन्दीन्द्रप्रथम १ महाराजकुमारप्रतापसिंहोद्भव
 नजातकृष्णगढराणाऽतिवासरुद्धतत्पट्टपुखहम्मीरसिंहसन्धुपाख्य
 वनर्षापह्निभूमिभागधेयनिग्रहस्वभृत्पाश्चापतेयाऽऽदानरावराडजित-
 शरीरा का पेचती है १ हाथ पग गिरते हैं २ प्रत्यक्षा में जड़े हुए ३ फटे हुए
 भाषे फिरते हैं ॥ ४१ ॥ ४ वीरों के घोड़े पलटकर ॥ ३८ ॥ ५ दो पहर पर्यन्त इस
 प्रकार लड़ कर ६ मस्तक मुकाकर ७ हाथ जोड़ कर ८ पारह खड़े लुटवाकिये
 ॥ ४१ ॥ ९ खती के काम में लगादिये ॥ ४७ ॥

श्रीषष्ठमास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टमराशि में, अजितसिंह के
 चरित्र में, श्री सहित श्रीजित् का पुष्कर स्नान करना और कृष्णगढ के
 राजा पहादुरसिंह का उसको कृष्णगढ लाना १ श्रीजित् का राणा अरिसिंह
 से मिथना और नासरदा के मार्ग से अपने आश्रम को आना २ बुन्दीपति
 के प्रथम राजकुमार प्रतापसिंह का होना और राणा का कृष्णगढ में अत्यन्त
 रहना जानकर उसके पाटवी पुत्र हम्मीरसिंह को रोककर सिंधी नामक पव-
 नों का शीपोदियों की भूमि का हासिल ले अपनी तनखा का धन लेना ३

सिंहपुनर्मैणागणाविध्वंसनशस्त्रन्यासपूर्वकस्तेषु १ गोवधा २ऽऽदिरो
धतल्लेखलेखनं प्रथमो १ मयूखः ॥ १ ॥ आदितः ॥ ३४१ ॥

॥ प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

अगँ बिबु अपराध जोरजुत, ग्राम सुहाके इक संगताउत ॥
इन्पाँ हड्ड तस बैर चिति यँहँ, तमकि भूप अव दल हंक्रिय तँहँ ॥ १ ॥
मानपुरा १ रु सुहा १ निवसथ दुवर, मारि बिडारि बिजय लिन्नोँ घुव
बहु सीसोद पकरि करि बिबु मद, आयउ पुर थानाँ निज जनपदा २।
तँहँ नरेस किय यह बिचार मन, इततँ नाँहिं रुकत मैनेँजन ॥
यातँ कहँक बिहित गढ बंधँ, इत तातँ चोरन चित रंधँ ॥ ३ ॥
बिलहटा १ मेवारं ग्राम जँहँ, पिकरूपो उचित बनायो गढ तँहँ ॥
रानाँ सन यह वत्त कहाई, इततँ रुकतँ न तेय उपाई ॥ ४ ॥
यातँ यह तुमरो निवसथ लिय, हम तँहँ दुष्ट दमन गढ बंधिय ॥
अपरं लेहु हमसोँ तुम या सम, कराहिं रुद्ध यातँ तँसकरक्रम ॥ ५ ॥
बिलहटा इम गढ बंधायउ, गढपति रक्खि रु बुंदिय आयउ ॥
बसु लोचन धृति १८२८ सक तदनंतरँ, एकादसि ११ ससि राधं चि
सद पर ॥ ६ ॥

गो नृप वंसबहाला व्याहन, सुहृदं जन्म्य सजि अतुल उच्छाहन ॥
राउल पृथ्वीसिंह सुता प्रिय, बखतकुमारि अभिधान व्याहि लिय
रावराजा अजितसिंह का फिर मैनों के समूह को नाश करना और शस्त्रों के
प्रहारों से नाश करके चोरी और गोवध आदि रोकने का उनका लेख लिखाने
का प्रथम १ मयूख सप्तास हुआ ॥१॥ और आदि से तीनसौ इकतालीस ३४१
मयूख हुए ॥

॥ १ ॥ १ ग्राम २ अपने देश में ॥ २ ॥ ३ ॥ ३ चोरी करनेवाले ॥ ४ ॥ ४ ग्राम
५ दूसरा ६ चोरों का बलना ॥ ५ ॥ ७ जिसपीछे ८ वैशाख सुदि ॥ ९ ॥ ९ बि-
घों को बराती (जनेती) सजकर १० नाम ॥ ७ ॥

लगन दिवस बिलहटा सिर द्रुत, चढे जाजपुरके रानाउत ॥
 सुनि श्रीजित चितिय विचारचित, बुदिय भूप गयो व्याहन हित ॥
 इत सु लैन बिलहटा आये, रानाउतन विरोध रचाये ॥
 नृप सधा विगैर सु न अच्छी, श्रीजित सोचि चढयो तब कच्छी ॥९॥
 श्रीजित सग चढी खिल सेना, मानहु सत्य हिमाक्षय मेना ॥
 परे जाय रानाउत दल पर, कतल मची जनु काल प्रलयकर ॥१०॥
 चलन लगे सर सगि तुपक असि, जगे फिरन गोमायु गिद्ध लसि ॥
 भेजा भचकि उडत आकासहि, लोल रचत कटुक जनु लासहि ॥११॥
 ओपित धनुख वान सधित इम, उत्तरकुरु विच अमरनदी जिम ॥
 ब्रह्मपुरी जिम पुख विराजत, सेलन पर सैपर्व सर साजत ॥१२॥
 भैल उदधिसगम गति भासै, ताहि लखत भीरुन गन त्रासै ॥
 तुपकै चलाय भरत इठि डेरत, गोमायु विच कि बीज कूखि गेरत ॥१३॥
 परत मरत कति मात पुकारत अकुलावत छुकत अति औरत ॥

१ बिलहटा घाम पर ॥ २ राजा की प्रतिज्ञा घोड़े पर चढा ॥ ३ अजितसिंह की
 बरात में गय पीछे ४ पाकी बर्षी जो सेना अजित (वन्मेदासिंह) के साथ बगी सो
 मानों हिमाक्षय के साथ मेना नामक उसकी स्त्री हुई ॥ १० ॥ तीर, परछी, बंदूक
 और तरवारें बलनेलगी ५ गीदूब शोभित होकर फूवने लगे, मन्तकों
 की टप्पर होकर आकाश में उठते हैं सो मानों ६ अपल गैद ७ नाच करते
 हैं ॥ ११ ॥ धनुष में सधान किया हुआ बाण ऐसा शोभा देता है जैसे =
 उत्तरकुरु देश में ८ गंगा नदी शोभा देती है "उत्तरकुरु धनुष के आकार देवा
 है" १० काशी पुरी के समान उस (गंगा रूपी) बाण के पक्ष शोभा देते हैं अ
 र्थात् पक्ष तो काशी पुरी है और गंगा के मार्ग में आनेवाले पर्वतों के समान
 ११ गाठों सहित बाण शोभा देता है अर्थात् तीर की गाठें ही पर्वत है ॥ १२ ॥
 १२ तीर की भाल (फळ) है सो ही गंगा का और समुद्र का समान दीखता है
 जिसको देखते ही पाप के समान १३ कापरी का समूह डरता है "यहां गंगा
 के योग से पाप की तर्कना ऊपर से की जाती है" १४ बंदूक को बलाकर हठ
 पर्यक पीछी भरते हैं सो मानों १५ करे (बीज डालने की बांस की नली) में से-
 ती का बीज डालते हैं ॥ १६ ॥ गिरते हुए और भरते हुए फितने ही लोग मा-
 ता माता पुकारते हैं और अत्यन्त १७ पीड़ित होकर कूकते हैं प्रेत नेत्रों रूपी

चकखत प्रेत नयन *शृंगाटक, निधरक रचत अछकछक नाटक १४
फटिफटि निकसिंछोम फहरावन, इंदपी मह रसना कि दिखावत ॥
ऊरध दोत बहत §असि अँसैं, जान्हवि धार मेरु सिर जैसैं ॥१५॥
प्रभु श्रीजित अरि बहु इम पागे, बनिजारन टंडा जनु ढारे ॥
मैननसहित अँधुत रानाउत, देखि हत्थ तजि रँखत भजे हुत ॥१६॥

॥ दोहा ॥

बहु सीसैक बारूद बलि, तुपक नालि जंबूग ॥
इत्यादिक सत्रुन सिविर, सकल छिन्निलिप सूर ॥ १७ ॥
बिल्लहटाके दुर्ग बिच, रखत बहै सब रक्खि ॥
पहुँच्यो आश्रम गढपतिहि, अप्पहु मरि यह अक्खि ॥
करि उपयम दुलहनि सहित, अजितसिंह इत भूप ॥
भैसरोरगढ कुंचकरि, आयो रूच्य अनूप ॥ १९ ॥
जो माहजि उज्जैन रन, गढयो चौडहर मान ॥
तिहिं महिमानौं प्रसन्न करि, रक्ख्यो तँहँ चहुवान ॥ २० ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

अँग रान जगतेस चौडहर, सलूमरीस कुबेर सहोदर ॥
लाल नाम सोलैह १६सम थप्प्यो, अरु तिहिं भैसरोरगढ अप्प्यो २१
भो नृप जब अगिसिंह छत्र धरि, तब बह लाल बुलायो अहरि ॥
* सिंघाड़े चखते हैं और पूर्ण तृप्त होकर निर्भयता से नाटक करते हैं ॥१४॥
पेट फटफट कर † तिल्ली बाहर हिजती है सो मानों ‡ कामी महिष (भैसा)
जीभ दिखाता है "कामी भैसा भैल के मूत्र स्थान को खँवकर जीभ निकाला
करता है" § तरबारें जंची होकर ऐसी बहती हैं मानों सुमेरु के शिखर से
गंगा की धारा बहती है ॥ १५ ॥ श्रीजित ने इस प्रकार बहुत शत्रु मारे सो
मानों जनजारों ने बालध ढाली है १ दश हजार २ सामग्री छोड़कर ॥ १६ ॥
३ शीपा ४ तोपें ॥ १७ ॥ ५ बिलहटा के किलेदार से कहा कि ६ ये सामान मर
कर देना ॥ १८ ॥ ७ विवाह न दुलह ॥ १९ ॥ ९ चूडाउत मानसिंह १० हठ करके
॥ २० ॥ ११ आगे १२ लालसिंह को सोलैह उमराओं के सुमान ॥ २१ ॥

राजाकापासपहालेव्याहकरबुदीआना] अष्टमराशि द्वितीयमयूख(३७१)

अकखी पुर बग्घोर पधारहु, मांमक नाथ पितृव्यक मारहु ॥२२॥
 पुरबग्घोर सुनत गो पारपी, थिगकरि द्रोह भिलनकी यापी ॥
 नाथ कहिय तुमरो बिस्वास न, पठवहु कहि आवहु मम पास न२३
 सिव इकलिंग लाल तव बिच दिय, कपटीपुनि अदर प्रवेसकिय ॥
 नार्थ करत सिध पूजन पायो, लाल तास सिर तोरि गिरायो २४
 ताको सुत यह भैंसरोरपति, मानसिंह अभिधान भाई मति ॥
 इहिं करि दूठ रख्यो नृप आवत, पुनि सु डरयो गढविच पधरावत
 ॥ दोहा ॥

सामग्री तव गोठिकी, दिक्षी सिंघिर पठाय ॥

गृह न दिखायो बहम बस, जिन इनके गढ जाय ॥ २६ ॥

सैरिता चम्मलि बभनी, दोउन२ सगम तथ ॥

अठोत्तरसत १०८ धेनु दिय, सभर नाह समथ ॥ २७ ॥

चढि प्रातहि दरकुच रचि, रनपटु सभर राय ॥

सक बसु दग धृति १८२८ सुकर्म, प्रविश्यो बुदिय आया २८।

इतिश्री वशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेष्टमराशावजितासिं
 हचरित्रे स्मृतपुरातनबन्धुवैरागवराण्मानपुरा १ मुहा २ आदेशाऽऽ
 दिशीर्पोहनिग्रहगणस्वराष्ट्राणापुराऽऽगमनरागाग्रामविलहटास्वदुर्गव
 न्धनतस्पर्द्धिग्रामनिविधिदिपुराणाऽऽनुनयनबुन्ध्यागतप्रस्थितरावराड्व
 शवहालापुरेशशीर्पोहराउल्लृथ्वीसिंहदुहितोबहनपश्चाद्वाणाउत्तसैन्य

१ बागोर में जाफर २ मेरे काका नाथसिंह का मारो ॥ २० ॥ २३ ॥ ३ छाखसिंह
 मे ४ नाथसिंह ॥ २४ ॥ ५ कायर ॥ २५ ॥ ६ डेरों में मेज दी ७ सदेह
 से ८ यह गढ़ कहीं इनके न बछाजावे ॥ २६ ॥ ९ चामख और चामखी नदी के
 संगम पर ॥ २७ ॥ १० छेष्ट मास में २८ ॥

श्रीवशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टमराशि में, अजितसिंह के च-
 रित्रमें, पहिले का भाई का वैर पाद करके राघराजा का मानपुरा और महुवा
 के पति शीपोदियों को पकड़ना और अपने देश धाणापुर में आना १ राणा
 के ग्राम विलहटा में अपना गढ़ बांधना और उसकी परावर का ग्राम निक्षय

विल्लहटावेष्टनश्रुतशात्रवश्रीजित्तत्समायोधनकृतविजयवाश्रमा ५५
 मनस्वीकृतचुण्डाउत्तमानसिंहसत्कारसम्भरेशरवपुरप्रविशनं द्विती-
 यो २ मयूखः ॥ २ ॥

आदितः ॥ ३४२ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

ऋतु पाउस अंतर *तदनु, नृपकौ कुमर प्रताप ॥

कृष्णगढप दौहित्र वह, गत हुव रोग अमाप ॥ १ ॥

तदनंतर याही बरस १८२८, सित दसमी १० इसमास ॥

पतनीजुत श्रीजित चल्पो, प्राचो तीरथ आस ॥ २ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

प्रथम गयो केसवपुरपट्टनि, न्हान १ दान २ किय तत्थ उचित भनि ॥

इसके अंत ग्रहन ससिके पर, सुबरन १ भूमि २ दये पुनि संभर ३ ॥

इंद्रगढाधिप भक्तराम जँहँ, आयो मिलन लैन संभर कँहँ ॥

प्रसभपुंब्ब करजोरि अरज करि, स्वीय निलय लौगो हित अनु-

सरि ॥ ४ ॥

तँहँ श्रीजित हुव २ रत्ति बिताई, पुनि ब्रजभूमि हंकि हुत पाई ॥

गिरि गोवर्द्धन दीपमाल दिन, न्हान २ दान २ किय कथित हहु ईन ॥ ५ ॥

ही छेले ने को राणा का विनय करना २ बुन्दी आकर प्रस्थान करके राधराजा
 का बांसवाड़ा पुर के पति क्षीणोदिया राजस पृथ्वीसिंह की पुत्री से विवाह
 करना और पीछे से राणाघतों की सेना का पीलहटा को घेरना सुनकर उन
 भयुओं से श्रीजित का युद्ध करना और विजय करके अपने आश्रम में आना २
 चुंडाउत मानसिंह का सत्कार स्वीकार करके राधराजा का अपने पुर (बुन्दी) में
 आने का दूसरा २ मयूख समाप्त हुआ ॥ २ ॥ और आदि से तीन सौ बियालीस
 ३४२ मयूख हुए ॥

*जिसपीछे ॥ १ ॥ १ आश्विन मास में २ पूर्वदिशा के तीर्थों की आशा से ॥ २ ॥ ३ आ-
 सोज छुदि पूर्णिमा को ॥ ३ ॥ ४ हठ पूर्वक अपने घर ॥ ४ ॥ ५ हाडाओं के पति ने ॥ ५ ॥

अरिसिंहकाफिरगीसमरुखेमिश्रताकरना]अष्टमराशि-तृतीयमयूख (३७१)

पुनि मथुरा करि उचित रीति सब, अतुल्य दान वृदावन किय अब
पुनि दरकुच कढामानिकपुर, सुरतटिनी न्हायो सभर भुर ॥ ६ ॥
करि उपवास १ दान २ बिधि मजुन, दरकुचन पहुँच्यो प्रयाग द्रुत ॥
बपन १ न्दान २ उपवास ३ दान ४ बिधि, करि अरु कूपन लयो का-
सी निधि ॥ ७ ॥

चेतसिंह कासीपुर भूपति, लैगो सम्मुह आय महामति ॥
तँहँ निज धाम राजमंदिर रहि, चतुर समस्त उचित सद्धि चढि ॥
अजितसिंह बुदीस भूप इत, आयो नगर इदगढ धरिहित ॥
तब सम्मुह कल्पानखेट तक, भक्तराम पहुँच्यो भट नायक ॥ ९ ॥
लैगो नृपहिँ बधाय निजालय, रक्खयो अति सतकारि निपुन नय ॥
तँहँ जेठो भट भक्तराम सुत, कुमर नाम सनमान विनय जुता ॥ १० ॥
ताहि झुलाय भूप इहून पति, अक्युत्थान दयो अद्वरि अति ॥
यह नवीन किन्नो नृप आदर, आयो रहि दिन पचपनिज नगर ॥ ११ ॥
उदयनैर इत सधी जवनन, हँक जिय चुकि मेवार मुलक सन ॥
छर्लामिसुमै न मिलो करि मानहिँ, लैन गयो ति कृष्णागढ रानहिँ ॥ १२ ॥
कछुदिन रान विसास न किन्नो, पुनि सधिनको आसय किन्नो ॥
तब अरिसिंह चलयो निज देसहिँ, स्वसुरहु गो पहुँचान नरेसहिँ ॥ १३ ॥
निजे जैनपद रानहिँ प्रविसायो, तब रहोर कृष्णागढ आयो ॥
इत जसवत देवगढ स्वामी, हुव छलबाल सहाय हरामी ॥ १४ ॥
पृथ्वीसिंह भूप कूरमपति, निज दौहित्र जानि रचि विन्नति ॥
सुत लघु सहित जाय जैपुर सठ, अरिसिंहहिँ मारन मढयो दठ ॥ १५ ॥
राजसिंह हम्मीरदेव हर, सेनापति फोरयो तँहँ सत्वर ॥
जट्टनको तजि कछुक अनख लहि, समरु हुतो फिरगी तत्यहि ॥ १६ ॥

१ गंगा नदी २ देव ॥ १ ॥ ३ सुहन ४ छस कृष्ण ने काशी रूपी निधि को ली
॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥
सिंह में ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ अपने देश में १० रत्नसिंह की सहाय ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥

सो पठयो अरिसिंहहिं मारन, कुप्पि चलयो समरु रन कारन ॥
 दै कछु दम्भ मिलाय ताहि लिय, रान१रु समरु२भये मित्रप्रिय१
 रान साम पंडेर ग्राम कारि, भरतपुरहि पुनि गोसु गर्व भरि॥
 इत अरिसिंह उदैपुर आयो, संधिनजुत निज अमल जमायो ॥१८
 भीम सलूमरि नाह हुकम लहि, चुँडाउत आयो किल्ला चहि ॥
 कछु छलकरि सिंसे सचिव डरायो, खाली गढ चितोर करायो१
 तदनु रान पठयो बुदिय दल, बिलहटा तुम लयो अप्प बल ॥
 रक्खन ताहि चित जो लावहु, तो पँहँ सेवन अनुज पठावहु ॥२०
 रुपय लक्ख१०००००० पटा तिहिं दैहँ, बिलहटाहु दत्त गिनि लैहँ
 यह सुनि नृप निज अनुज बहादुर, पठयो दै भट संग उदयपुर२
 काका अर्जुनसिंह रान तँहँ, पठयो सम्मुह सुनत हहु पँहँ ॥
 दै तिहिं पटा सुभट निज थप्प्यो, बिलहटासु तदपि नहि अप्प्यो२

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टम ८ राशावजि
 सिंहचरित्रे बुन्दीन्द्रमहाराजकुमारप्रतापसिंहदेहत्यजनश्रीजित्प्रा
 तीर्थयात्राप्रस्थानहृद्रेन्द्रेन्दगढगमनभक्तरामकुमारसन्मानसिंहाऽऽ
 ऋपुत्थानाऽर्पणानीतभृत्यादम्भसन्धियवनकृष्णगढगमनराणाऽ
 हमेदपाटाऽऽनयनजयपुरगतसपुत्रदेवगढेशचुण्डाउत्तजसवन्तसिंह
 णानिपातविचारणाफिरङ्गिसमरुमेदपाटप्रेषणातदरिसिंहमैत्रीकर

॥ १७ ॥ १८ ॥ १ सलूमर का पति भीमसिंह २ रत्नसिंह के सचिव ।
 ॥ १९ ॥ ३ जिसबीछे ४ पत्र ५ छोटे भाई को नौकरी करने भेजो ॥ २०
 ६ दियाहुआ गिन लेवेंगे ॥ २१ ॥ ७तो भी बिलहटा नहीं दिया ॥ २२ ॥
 श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टम राशिमें, अजितसिंहके चरि
 में, बुन्दीपति के कुमार प्रतापसिंह का मरना और श्रीजित का पूर्व दिशा
 तीर्थों को जाना १ हाडाओं के पति का इन्द्रगढ जाना और भक्तराम के
 मर सन्मानसिंहको ताजीम देना २ तनखाह के रुपये ग्रहण करके सिन्धीयव
 का कृष्णगढ जाना और राणा अरिसिंह को उदयपुर लाना ३ पुत्र सा
 जयपर गये हुए देवगढ के पति चुँडावत जशवंतसिंह का राणा को मा

राजाकायरगोशाकी शिकार करना] अष्टमराशि-चतुर्थमयूख (१७७५)

सलूममरीशचुगडाउत्तभीमसिंहचित्रकूटस्थछलपक्षनिष्कासनराणा
विल्लहटाऽर्थधुन्दीवर्गादूतपेपगारावराट्मोदरबहादुरसिंहोदयपुरप्र-
स्थापनतद्विल्लहटावर्जितपटोपटङ्गिग्रामादिपापणा तृतीयो३ मयूख ॥
॥ ३ ॥ आदित ॥३४३॥

॥ प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

इत धुन्दीस भूप रानिनजुत, इक दिन सैमक सिकार गयो हुत ॥
ताल जोधसागर उपवन जैहँ, ससयाहक हो आववाट तैहँ ॥ १ ॥
बनवाई बगुंरि ताके मुख, सह अथरोध रह्यो तहँ मह सुख ॥
घेस्यो दासिन बिपिन पिछि सन, उठि उठि आन लगे तब ससगन २
कछुक काल कौतुक इम किन्नो, अवरोधहिँ आपस पुनि दिन्नो
उपवन तम आपे बनिताजन, अप्प चल्पो पुनि इक्क अडर मन ३
वल्लभदास? अनोपराम दुव २, नाजर सग इतर कोउ न हुव ॥
खैर्य तुरग आरूढ नरेश्वर, उपवनेँ ओर चल्पो हकत अर ॥ ४ ॥
इक? गहिलोत गुलाब नाम सठ, लाल अनुज तैहँ किय अपुबब डठ
जामिकेँ दिष्टि बचाप रु आयो, धैर्य अतररहिँ बिसिख चलायो ॥ ५ ॥
फुटो वह कर वाम कलाई चहुवानहु तय सगि चलाई ॥

का बिचार करना आर सलूमर के पनि चुहावत भीमसिंह का चीतोड़ में
स्थित छलयाख के पक्ष को निकाजना ५ राणा का विलहटा के अर्थ धुन्दी पक्ष
भेजना और रावराजा का अपने सगे भाई बहादुरसिंह को उदयपुर भेजना
उसको विलहटा के बिना, पछा उपटक ग्राम आदि मिलने का तीसरा ३ मयूख
समाप्त हुआ ॥ ३ ॥ और आदि से तीसरी तिपाळीस ३४३ मयूख हुए ॥

१ खरगोशों की २ तलाब ३ पाग ४ खरगोशों को पकड़ने का ५ परधरों
को कोट ॥ १ ॥ ६ पागर (कदा) ७ जनाना सहित ८ घनको ॥ १ ॥ ९ जनाने
को आशा दी ॥ १ ॥ १० छोटे धाड़ पर बहकर ११ पाग की तरफ शीघ्र चला
॥ ४ ॥ १२ लाछिसिंह के छोटे भाई ने १३ पहरायतों की नजर बचाकर १४
थोकड़ों के घुँघों के भीतर रहकर १५ पाग चलाया ॥ ५ ॥

अरिकै भजत लगी सु पिछि पर, रीठक*गपटि धसी तिरछी धंग ॥
 परि पुनि उट्टि त्वराकरि लज्ज्यो, बाट सु ऊरुदण चढि भज्ज्यो ॥
 नृप हय खँबे रुक्मो सु कोट करि, पिछि लग्यो तव कूदि मल्लपभरि ७
 सजव गयो अरि दै तरु अंतर, उपवन त्यों गुजर्यो तन संग ॥
 याको आत लाल प्राणिधानैक, हो कालिक भृगुयाजव आनका ८
 ताको नृप कोउक डेलनै पा, कटवायो अग्नि दक्षिण कर ॥
 तास अनुज यँहँ बैर विचारिय, तनकि तीर संगर वार सागिय ॥ १॥
 बिरस सक वसुडण धृति १८२८ अचन, प्रसित नाय विम छत्रउपावन
 सीसोदक गहिलोत गुप्तावगु, प्रविषि प्रदोसकाँन तिहिँ वन पस १०
 बालिस नारि भूप कर बानहिँ, तिनिरे सहाय गयो निज आनहिँ ॥
 तदर्बु अलाय भनाय नगर दुव, २ छह नृपति संवव विदित दुव १२
 जनकै पितृव्यक जोध सुता जँहँ, भूहनि रन व्याही वृंरन कैहँ ॥
 ताकी धाइ पुँत्रसुत मति वर, पटु सुखरान नाम नय तत्पर ॥ १३ ॥
 नृप क्रिय सुकरूप सचिव गुज्जरवह, इम बुँदीस वितावत सुख अह
 पुनि लगगत नव दग धृति १८२९ संवत, आरवारै एकादमि १९
 संगत ॥ १३ ॥

राधर्मास अनदात पक्ष पर, पुर अन्ताय व्याहन गो संभर ॥
 अनुज बहादुर उदयनेर सन, औसु बुलाय संग तिय अप्पन १४
 इम दुल्लह सज्जित बरात जुत, पुर अन्ताय फलुदित पहुँच्यो हुन ॥
 चढि राजाउत सुतन चलाय, उभय २ कोस सन्नुह सब आय १५

*बांशे की हड्डी पर फिसल कर भूमि में ॥ ६ ॥ २ शीघ्रता करके ३ जया पर्यन्त ऊँचे
 मार्ग पर चढकर ४ राजा का घोड़ा छोटा या हस का राख ॥ ७ ॥ ५ बाग को दिला-
 सिह नामक ७ शिकार के लय स्थानों का ॥ ८ ॥ ८ अपराध पर ॥ ९ ॥ ९ मन्ध्या
 समय ॥ १० ॥ १० सूर्ज ने ११ अंगरे की सहाय से १२ जिस पीछे ॥ ११ ॥ १२ पिता
 (उम्मेदासिंह) के काका जोधसिंह की पुत्री १४ राजा जयसिंह को १५ उसकी धाय
 का पुत्र, अष्ट बुद्धिवाला ॥ १२ ॥ १६ दिन १७ मंगल वार ॥ १३ ॥ १८ वैशाख
 सुदि १९ शीघ्र बुलाकर ॥ १४ ॥ १५ ॥

कीरतिसिंह कलायनाथ सुत, बखतावर १ अभिधान प्रीति जुत॥
 अभयसिंह २ ईसरदा स्वामी, भैरवसिंह ३ सुहादप नामी॥ १६ ॥
 नृपहिं वधाप लोगये पत्तन, घरघर उच्छव अतुल भये धन ॥
 अध स्वसुर समुख न इमं आयो, पुनि दुल्लह तोरन पधरायो॥ १७ ॥
 नीराजन आदिक तदनतर, विधि करि व्याह लई दुल्लहनि घर ॥
 अध स्वसुर पदति बड पावन, कर्ष अरज इलकाव बढावन॥ १८ ॥
 अगै लिखत राजश्री ठाकुर, धाम नाम पुनि तदनु काम धुर ॥
 तुम जाभात अरज चित लातहु, महाराजपद पत्र लिखावहु॥ १९ ॥
 लखितहै नृपहु स्वसुर नति अति भिय, महाराज श्रीठाकुर पद दिय
 इम शृंगारकुमरि अभिधान सु, चल्पो व्पाहि बुदिय चहुवान सु२०
 स्वसुर पुरोहित कृपाराम कँ०, बहुधन १ कुँडल २ कटक ३ दये तहै॥
 पुनि दरकुच चल्पो छेकत पथ, सरित बनास बनहटा निबैसथा॥ २१ ॥
 अर्बुदजा इम लधि जुद्ध जय, प्रत्रिषो नागरचाल बडे रय ॥
 सुनि पुर नगर आत सभार पहु, सम्मुद्ध गो नारबै सिरदारहु॥ २२ ॥
 छि २ सिरुपात्र दुन २ हय इक १ भूखन, नृपकी नजरि निवादि
 मुदित मन ॥

निस डक १ रक्खि दई महिमानी, उनिपारेसँ प्रीति पहिचानी॥ २३ ॥
 पुनि वदि जेठ चउत्ति ४ चलायो, अतिजव दुर्ग नपनैपुर आयो ॥

॥ १९ ॥ १ स्वशुर अन्धा था इस्त कारण ॥ १७ ॥ २ आरती ३ पङ्क्ति
 पाने के लिय ॥ १८ ॥ ४ जिसपीछे मुख्य काम की यात्रा ५ तुम जमाई हो इम
 कारण ॥ १९ ॥ ६ नञ्जता ॥ २० ॥ ७ कानों से पहनने के मोती ८ कडे
 ६ ग्राम से॥ २१ ॥ १० (७) बनास नदी ११ नरुका ॥ २२ ॥ १२ छविपारा के पति ने
 ॥ १३ ॥ १३ नैणपा

(*) हम उपर लिख आये हैं कि अर्बुद (आब्) पथ से निकलनवाला बनास नदी परिषमवाहिनी
 होकर परिषम के समुद्र में अन्य नदियों में होकर मिलती है और यह बनास नदी कुंमलगढ के पास
 उनायड ग्राम के पास से निकल कर पूरवाहिनी होकर आमर नदी में और फिर जमुना, गंगा में होकर
 पूर्व समुद्र में मिली है ॥

दुलहनि स्वपुरतहाँसन भेजिय, व्याहन अप्प भनाय गमन किया ॥ २४ ॥
 उदयभान सम्मुख तब आयो, पुनि लहि काँल निलय पधगयो ॥
 नव दुवर धृति १८२९ सक जेठ दसमि १० दिन, असित पक्ष
 बुध वार छह इने ॥ २५ ॥

भूप दलेल सुता हुलसित हिय, बखतकुमरि अभिधान व्याहि लिय ॥
 पुनि पुष्कर आयो संभरपति, महादान किय न्हाय महामति ॥ २६ ॥
 करि पुनि कुंच कृष्णगढ आयो, पै निज रवसुर तत्थ नहिँ पायो ॥
 बिरदसिंह साँलक सम्मुख गय, अतिप्रवीन विद्या गुन आलय ॥ २७ ॥
 रहि कछु दिवस भाम पुनि हंक्रिय, दरकुंचन आयो पुर बुंदिय ॥

पुर बाहिर राजाउति रानी, तबलग रही प्रीति पहिचानी ॥ २८ ॥
 अब दुलहनि दुवर सहित नरेस्वर, किय प्रवेश बुंदियपुर अंदर ॥
 याहि बरस १८२९ कोटेश गुमानहु, व्याहन गोबेधम लंदलवहु ॥ २९ ॥
 मेघ तनूज प्रतापकुमारी, कोटा परनि गयो छलकारी ॥

कासी सन श्रीजित इत हंक्रिय, गयो जाय पितरन सद्गति दिया ॥ ३० ॥
 पुनि किय बैजनाथ सिव दरसन, बरदवान पहुँचयो प्रसन्न मन ॥
 ताके नृप मंडी महिमानी, श्रीजित कीरति सबन मुहानी ॥ ३१ ॥
 पहुँचयो पुनि बालेसुरबंदर, तँहँ मरहठ भटन संग्यो कर ॥

बढ्यो कलह तब सख प्रहारे, सत्रु मिपाह अट्टम मित मारे ॥ ३२ ॥
 पुनि हुन होय जिहाजपुर चलिय, बलि बेतरनी न्हाँन १ दान २ किय ॥
 नाभिगया पुनि पितर तृप्त करि, कटक होय गय जगदीस नगरि ॥ ३३ ॥
 प्रथम मारकंडेयार्थम जँहँ, इंद्रद्युम्न श्राद्धपुनि किय तँहँ ॥

बहुरि महोदधि न्हाय श्राद्ध करि, पुरुषोत्तम परसे पुनि श्रीहरि ॥ ३४ ॥

१ वहाँसे दुलहन को बुन्दी भेजा ॥ २४ ॥ २ समय पाकर घर में पधराया ३
 हाडाओं के पति ने ॥ २५ ॥ २६ ॥ ४ साला ॥ २७ ॥ ५ बहिनोई ॥ २८ ॥
 ॥ २९ ॥ ६ मेघसिंह के पुत्र प्रतापसिंह की कन्या ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ७ हासिल
 साँगा ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ८ मारकंडेय के आश्रम ॥ ३४ ॥

दिन दुव२ वेर नयन सुख लिन्नो, पुनि प्रयान कछुदिन रहि किन्नो ॥
 न्हाय स्वेतगगा अघ जालन, अतिजव होय अढारह१८नालन ॥ ३५ ॥
 आयो तेदनु रामगढ पत्तन, मिल्यो भूप ताकोहु मृदित मन ॥
 वहुरि होय कासी वैखानस, मुख्यो विंध्यवासिनी मानस ॥ ३६ ॥
 पुष्पदत्त जँई साप मुक्त हुव, किन्नो तँई वेवी दरसन छुव ॥
 तीरैयराज होय पुनि सत्वर, चित्रकूट सेवन करि सभर ॥ ३७ ॥
 होय ओढछा कासी आयउ, नरउर वहुरि मिलान लगायउ ॥
 रामसिंह कूरम नरउरपति, मिल्यो आय सम्मुह मजुल मति ॥ ३८ ॥
 श्रीजितनजरि तुपक इक१ किन्नी, महिमानोहु उचित बिधिदिन्नी ॥
 पुनि केसवपट्टनि मिलान दिय, कथित रीति तँई न्हान १दान२किय ३९
 एकादसि ११ नव दुव धृति १८२९ सक मित, आश्रम निज आयो
 भद्व सित ॥

घाहुल गो वेधम पुनि तपवँल, मातामही न्हाय गगजल ॥ ४० ॥
 बलि पुष्कर हित गमन विधायउ, अतिजव इकि कृष्णागढ आयउ ॥
 महिमानो रडोर भूप दिय, मन्नि ताहि पुष्कर मजन किय ॥ ४१ ॥
 है अजमेर स्वीय आश्रम बलि, अगहनमै आयो अतिजव बलि ॥
 सुत छुदीपतिके तदनतर, बिष्णुसिंह अभिधान भयो वर ॥ ४२ ॥

इतिश्री वशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणोऽष्टम ८ राशावजि-
 तासिंहचरित्रे भ्रातृकरच्छेदवैरोज्जिह्वीपुंशीर्षोद्भिगुल्फावसिंहबुन्दीन्द्रवा
 हुवाणवेधनतदन्धकारसहायपलायनसचिवीकृतगूर्जरसुखगामराव

॥ ३५ ॥ १ जिसपीछे २ पानपस्थ (उम्मेदसिंह) ३ मन ॥ ३६ ॥ ४ प्रयाग ॥ ३७ ॥
 ५ मुकाम ॥ ३८ ॥ ३६ ॥ ६ कार्तिक मास में ७ तपस्वी ८ नानी को ॥ ४० ॥
 ९ गमन किया १० स्नान किया ॥ ४१ ॥ ४२ ॥

श्रीवशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायणके अष्टमराशि में, अजितसिंह के अ
 रिभ्रम, भाई के हाथ फटाने के बैरको खेने की इच्छावाले क्षीपोदियागुल्फासिंह
 का बुन्दी के पति के भुज को पाण से बेचना और उसका अन्धेरे में भागना
 १ गूर्जर सुखराम को सखिय करके रावराजा का कलाप के पति राजावत

राङ्गलायपुरेशराजाउत्तकूर्मकीर्तिसिंहसुताविवह्नवर्द्धितश्रुग्म
त्काररवीकृतनारवशरदारसिंहस्वागतदुन्दीपेपितनवोदपरिर्णित —
भणायपुरभपरद्वोड़दलेलसिंहदुहितृकपुष्करनातगृहीतशालाविक -
दसिंहस्वागतद्वयूढरावराद्वुन्दीपविश्वनकोटेशगुमानसिंहवेद्यमउग्र -
तिचुण्डाउत्तशीर्षोदसिवाडमेघपौत्रीपरिणयनजगदीशऽवधिमेधित —
प्राचीतीर्थश्रीजित्वाऽऽश्रमाऽऽगमनाऽनन्तरगद्गोदकमानामर्द्यागनाप -
नकृष्णगढमार्गाऽनुष्ठितपुष्करस्नानपुनराश्रमाऽऽगमनायाऽगजकु -
मारविष्णुसिंहोद्भवने चतुर्थी ४ मयूखः ॥ ४ ॥

आदितः ॥ ३४४ ॥

प्रायो नजदेशीया प्राकृतामिथितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

सक नव दुव धृति १८२० पाम वद्धि, दादधि १२ संगत वार ॥

विष्णुसिंह बुंदीसके, प्रकटयो राजकुमार ॥ १ ॥

॥ सौरहा ॥

यह दोहित्र उदार, वंसवहालाधीसको ॥

अमरे अंस अवतार, अजितसिंह नृपके मयो ॥ २ ॥

श्रीजित तंदनु सप्रीति, गंगाजल उच्छ्रव किगड ॥

कछवाहे कीर्तिसिंह की पुत्री से विवाह करना और उवजुग का सम्मान यज्ञकर
नरु के सरदारसिंह के स्वागत को स्वीकार करने, दुन्दुप को दुन्दी भेजकर
भणाय के राठोड़ दलेलसिंह की पुत्री को विनाश कर, पुष्कर का स्नान करके
साले विरुदसिंहका स्वागत ग्रहण करके दो रानिमे व्याहृत रावराजा का दुन्दी
में आना २ कोटा के पति गुमानसिंह का वेद्यम के पति चुंडाउत सिवाड मेघ
सिंह की पोती परनना ३ जगदीश पर्यन्त के पूर्व के तीर्थ करके श्रीजित् का
अपने आश्रम में आना, जिसपीछे नांनो को गंगाजल से स्नान कराना और
कृष्णगढ के मार्ग से पुष्कर स्नान करके फिर आश्रम पर आना ४ रावराजा
के राजकुमार विष्णुसिंह के होने का चौथा ४ मयूख समाप्त हुआ ॥ ४ ॥ और
आदि से तीन सौ चवालीस ३४४ मयूख हुए ॥

॥ १ ॥ १ देव अंश ॥ २ ॥ २ जिस पीछे

निज कुटुब रचि नीति, कोटादिक एकत्र किय ॥ ३ ॥
 दोहा-अस्थिपालको जनन सब, बुदिय लिन्न बुलाय ॥
 पठये करि पहिरावनी, पुनि गगोदक पाय ॥ ४ ॥
 तदनतर फगुन असित, सक नव दुव धृति १८२९ मान ॥
 देस सम्हारन काज इत, किय अरिसिंह प्रयान ॥ ५ ॥
 बुन्दी जनपदके निकट, पुर सकरगढ नाम ॥
 आय तत्थ अरिसिंह नृप, किन्नौ कटक मुकाम ॥ ६ ॥
 श्रीजितपैंह पठई अरज, लिखि निजकर नृप रान ॥
 तुम अनिच्छहो राजश्रुपि, बिहित योग विज्ञान ॥ ७ ॥
 हम सेवक दरसन चहत, अधिक रहत जिय आस ॥
 मुनि श्रीजित गो द्विय हुलसि, सजब रान नृप पास ॥ ८ ॥
 आय समुख अरिसिंहहू, जोगो सिर्विर बधाय ॥
 त्यागी नहि बैठो तखेत, श्रीजित विधि समुक्ताय ॥ ९ ॥
 चोकाउप्पर भिन्न रहि, किय सँलाप सनेहु ॥
 अक्खिय तँहँ अरिसिंह हम, बिल्लहटा तजि देहु ॥ १० ॥
 ताहि सँटि बुदीससों, जेहु इतर तुम ग्राम ॥
 अथवा रूपय आयमित, श्रीजित कहिय सुधाम ॥ ११ ॥
 तदनु सिक्ख करि समरी, अप्पन आश्रम आय ॥
 अक्खिय हम बुदीससों, मिलहु रानसों जाय ॥ १२ ॥
 स्वीय सचिव इत रानहू, अमरचक्र अभिधान ॥
 बभन बुदिय मुकल्पो, पधरायन चहुवान ॥ १३ ॥

॥ ३ ॥ १ अस्थिपाल के घरा (सम्पूर्ण हाथियों) को ॥ ४ ॥ ५ ॥ २ देश के
 समीप ॥ ६ ॥ ३ हे राजश्रुपि तुम इच्छा रहित हो सो ॥ ७ ॥ ८ ॥ ४ बेरे में
 ५ गादी पर नहीं बैठा ॥ ९ ॥ ५ आसन पर जुदा रहकर ७ स्नेह से बात की
 ॥ १० ॥ ८ बदले में ९ अन्य १० आमदनी के माफिक ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥

अगँ कुमर प्रताप ढिग, काराँमें जगतेस ॥

सेवन रक्खयो विप्र सो, हंक्कयो दब्बत देस ॥ १४ ॥

अमरचंद्र कहि मुक्कलिय, अनय सुरथपुर आय ॥

मेरे सम्मुह दर्प तजि, आवहु संभरराय ॥ १५ ॥

दयो सुनत वारूदमैं, मानहु खदिर दयंग ॥

सजि तनुत्र निर्मोक्क सम, भो नृप कुपित भुजंग ॥ १६ ॥

हुकम पठायो विप्रपँहँ, रे कातर विपरीत ॥

सिंहनकी समता करत, फेरव होत फजीत ॥ १७ ॥

सु सुनि विप्र खिजि तव कहिय, है दर्पित वुंदास ॥

पहिलैं पिक्खहिं जाय तिंहिं, बहुरि दिखावहिं रीस ॥ १८ ॥

इम विचारि आयो सु द्विज, व्है सिविका आरूढ ॥

कोउन सम्मुह मुक्कल्यो, मन्नि भूप तिंहिं मूढ ॥ १९ ॥

॥ पट्टपदी ॥

संधी भट लिय संग बडे कमनैत बहादुर ॥

तोडे सिलगत तुपक पकरि प्रविसें वुंदिय पुर ॥

बँर्ष १ टोप २ दाहुलैं ३ न जटित सब अमरचंद्र जुत ॥

चितत रन मन चंड रुके गँजपारि आय हुत ॥

संधी तँथापि संतपंच ५०० लैं हठ करि द्विज परिखद गयउ ॥

अभिमन्यु तनयें जनु कलि कुमति तच्छक पर तंडत भयउ २०

॥ दोहा ॥

अमरचंद्र आसिख दयो, रखिख बडो मगरूर ॥

१ कैद में ॥ १४ ॥ २ अनीति ॥ १५ ॥ ३ खैर वृत्त की आग्नि (यह आग्नि तेज बहुत होता है) ४ सर्प की कांचली के समान कवच सज कर वह राजा सर्प के समान कुपित हुआ ॥ १६ ॥ ५ गोदड़ ॥ १७ ॥ ६ घमंडी है ७ जिसको पहिले जाकर देखोगे ॥ १८ ॥ ८ पालखी पर चढ़कर ॥ १९ ॥ ९ सिंधी यवनों को १० कवच ११ दस्ताना १२ हाथी पोल पर रोके १३ तोभी १४ सभा में गया १५ मानों कलियुग की कुमति से परीक्षित ने तच्छक नाग पर गर्जना की ॥ २० ॥

बीछट्टाकोटिपेअमरचन्दकाकटुवचनकरना]अष्टमराशि-पष्ठमपूज(३७=३)

उदघो नहिं भूपति अनखि, सु लाखि महाबल सूर ॥ २१ ॥

सचिवन सुभटन निहिकरि, विन्नति सैनति सुनाय ॥

कलह घटावन प्रसभैक्रम, दिन्नो नृपहिं उठाय ॥ २२ ॥

तदपि मिसल मरजाद तजि, बैठन लग्गो विप्र ॥

ढोढीगच्छक ओर तब, छाहि लख्यो नृप छिप्र ॥ २३ ॥

सैन समुक्ति बुदीसकी, तानै द्विज द्विग आय ॥

दै कर बगल उठाय हुन, दयो मिसल बैठाय ॥ २४ ॥

इतिश्रीवशभाकरे महाचम्पूके उत्तरायणोऽष्टम ८ राशावजित-
सिंहचरित्रे रावगाहाराजकुमारविष्णुसिंहोद्भवनश्रीजिह्मोदकोत्सव-
कग्याराणाऽगिसिंहम्बदेशाऽटनतच्छीजितसम्मिलनशीषोद्भवसचिवा
मरचन्द्रबुन्दीप्रेषणतदरुतदविप्रकटुप्रलपन पञ्चमो ५ मयूख ॥५॥

आदित ॥३७५॥

॥ गीर्वाणभाषा ॥ स्वागता ॥

तत्समीक्ष्य कुपितोऽमरचन्द्र कोपयन्निव नरेन्द्रमवोचत् ॥

ग्राममर्पयतु विह्वलितख्य सन्धिमेव भजतादरिसिंहम् ॥१॥

अन्यथा सपदि सन्ध्युपटङ्गे शस्त्रसुरियवनेस्तवमीभि ॥

॥ २१ ॥ १ नम्रता पूर्वक २ हठ के क्रम से ॥२२॥३ द्वारपाण की ओर क्रोध
करके देखा ॥ २३ ॥ ४ पगल में हाथ देकर ॥२४॥

श्रीवशभाकर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टमराशि में, अजितसिंह के
चरित्र में, रावराजा के राजकुमार विष्णुसिंह का होना और अजित का
गंगाजल का वस्त्र करना १ राखा अगिसिंह का देशाटन करना और अजितका
उनसे मिलना २ शीषोद का अपने सचिव अमरचन्द्र को घु-री भेजना और
उन प्राण्य का मर्म वेधनेवाले वचनों का कहने का पाचवा ५ मयूख समाप्त
हुआ ॥५॥ और आदि से तीन सौ पैंतालीस ३६५ मयूख हुए ॥

वम पात को देखकर क्रोध में आया हुआ अमरचन्द्र, राजा को क्रोध करानेवा
ले वचन बोला कि विह्वलित नामक ग्राम द्यो और सन्धि (मिलाप) करके
अगिसिंह (अङ्गरी) की सहा करा ॥ १ ॥ नहीं तो ये सिन्धी पदवीवाले वचन
शस्त्रविद्या में पंडित, केश पकड़ कर नीचा मुखा करके तुम्हारे राजापन द्यो

न्यङ्गनमय्य सकचग्रहमास्थं नीयते तव नृपत्वमपास्य ॥२॥

एवमादिभिरुन्तुदवाक्यैः क्रुच्छरासनविसृष्टकलम्बैः ॥

बुन्धधीशहृदयं परिभिद्य प्रस्थितस्सहसाऽमरचन्द्रः ॥ ३ ॥

कोपितस्तदनु संभरराजः पन्नगेश्वर इवाङ्घ्र्युपगृहः ॥

विप्रवाक्यकरणो हरिसिंहः कारकं प्रथममवममंस्त ॥४॥

तत्र शूरसचिवैर्नृपवर्यो बोधितः समयवेल्लनविद्रिः ॥

सन्धनीय उदयादिपुरेशो रावराडनुदिनं भवतेति ॥ ५ ॥

विप्र एव कुटिलो बलशंसी विग्रहं विग्रचयंगतदवादीत् ॥

स्वामिशासनमृतेऽनयमूर्ती राज्यभारकलितोद्धतदर्पः ॥६॥

गम्यतामवनिराडारिसिंहं सज्जनो ह्यनुचितं स न कर्ता ॥

सन्निशम्य सचिवोक्तमवाच्यं तज्जयिष्यति तमेव सरोपम् ॥७॥

एवमादिवचनैरवनीशश्चालितः सचिवयोद्धृभिरार्यैः ॥

कम्पयन्स दिगिभार्गावभूमिं लुम्पयन्नवटकापथशैलान् ॥८॥

दूर कर, शीघ्र लेजावेंगे ॥ २ ॥ इत्यादि क्रोध रूपी धनुष से छांड़े हुए बाणों के समान मर्म वेधन करनेवाले वचनों से, बुन्दीपति के हृदय को घायल करके वह अमरचन्द्र यकायक (अचानक) उठचला ॥ ३ ॥ जिसपीछे जैसे पैर से दया-या हुआ सर्प कुपित होवे तैसे चहुवाण राजा कुपित हुआ और वह अरिसिंह ब्राह्मण (अमरचन्द्र) का कहा करनेवाला, प्रथम कहनेवाले का करनेवाला अर्थात् जो पहिले कहै उसी को माननेवाला हुआ ॥ ४ ॥ तब समय की उलटा पलटी को जाननेवाले उमराव और कामदारों (अहलकारों) ने श्रेष्ठ राजा को समझाया कि हे रावराजा आपको उदयपुर के स्वामी से सदैव सन्धि (मिलान) करना उचित है ॥ ५ ॥ राज्य के भार से (सचिव होने से) आया है यड़ा घमण्ड जिसको, अपने पराक्रम को जनानेवाला, अनीति की मूर्ति, ऐसे कुटिल ब्राह्मण ने ही, बिना स्वामी की आज्ञा के लड़ाई को रचकर ऐसे वचन कहे हैं ॥ ६ ॥ हे महाराज आप अरिसिंह के समीप चलिये, वह सज्जन है सो अनुचित नहीं करेंगे, किन्तु अमात्य के कहेहुए वचनों को सुनकर क्रोध से उस (अमरचन्द्र) को ही धमकावेंगे ॥ ७ ॥ अमात्यों के कहेहुए इत्यादि वचनों से, राजा चलायमान होकर, दिग्गज और समुद्रों के साथ पृथ्वी को कंपाता हुआ, झड़े, कुमार्ग और पर्वतों का नाश करता हुआ ॥ ८ ॥ ऊपर को उड़ी हुई

छादयन् रविमुदयरजोभि सादयन् द्यस्वरैरतलादीन् ॥
 लहादयन् नतुलसेन्धवरागेर्नादयन् निजमटान्हरिगर्जम् ॥९॥
 पेषयन्नुपलपादपगुल्मान्पेषयन्स्वप्टनना युधि जेतुम् ॥
 श्लेषयन्भरमधीन्द्रफणाभि प्रेषयन्निखिलादिक्स्वतिर्भीतिम् १०
 स्पन्दयन्नधरकच्छपपृष्ठ स्पन्दयन्गिरिषु खानिजधातून् ॥
 नन्दयन्स हितवान्धववर्गान्क्रन्दयन्नाहिततत्स्करदुष्टान् ॥११॥
 जम्भयन्धनुरुदारकरेण रतम्भयन्विशिखविद्धविद्धान् ॥
 दारयन्नवनिदारकदष्टा कारयन्पलभुजा मुदमुच्चै ॥१२॥
 घोषयन्समरवादनवर्ष्पान्पोषयन्पथि समागतदीनान् ॥
 मोषयन्सिरुचाऽचिरभाभा शोषयन् गमनधूलिभिरब्धीन् १३
 साधयन्स्वजनसङ्गरवृत्तिं बाधयन्परजनाननकान्तिम् ॥
 सोऽरिसिंहशिविर तस्सेत्य रावराडजितसिंह इयाय ॥ १४ ॥

धूलि से सूर्य को ढकता हुआ, घोड़ों के खुरों से अतल आदि लोकों को
 दुःखी करता हुआ, अत्यन्त सिन्धवी रागों (पहरागों) से हर्ष कराता हुआ,
 आ, सिंहगर्जना से अपने धारों को नाद कराता हुआ ॥ ९ ॥ पत्थर, धूल और
 लताओं को पीसता हुआ, युद्ध जीतने के अर्थ अपनी सेना को चलाता हुआ
 शेषनाग के कणा से भार को भिलाता हुआ, सब दिशाओं में भारको भेजता
 हुआ ॥ १० ॥ मृमि से कच्छर की पीठ को रगड़ता हुआ, पर्वतों की आँनों में
 चस्पन्न होनेवाली पातुओं को पहाता हुआ, हित के साथ बान्धव वर्ग (सन्ध
 विर्यों के समूह) का आनन्द देता हुआ, शत्रु, और और दुष्टों को ढलाता हुआ
 ॥ ११ ॥ दहिने हाथ से घनुष को खींचता हुआ अथवा वह चदार, हाथ से घ
 नुष को खींचता हुआ, पाणों से छिदे हुए पक्षियों को रतम्भन करता हुआ
 सूत्रा की दाढ़ों को तोड़ता हुआ अथवा बराह की दाढ़ा को तोड़ता हुआ,
 मांसाहारियों को बहा हर्ष कराता हुआ ॥ १२ ॥ युद्ध के श्रेष्ठ बाजों को
 पजवाता हुआ, मार्ग में आपद्ग्रस्त दीनों का पोषण करता हुआ, तरवार की
 सुन्दर और चम्पल कान्ति को छुंकाता हुआ, खजने की धूलि से समुद्र को
 सुखाता हुआ ॥ १३ ॥ अपने लोगों की युद्धवृत्ति को साधता हुआ, शत्रुओं के
 दुष्ट की कान्ति को मिटाता हुआ, इसप्रकार वह रावराजा अजितसिंह
 अरिसिंह के देरे को चला ॥ १४ ॥

॥ मन्दाक्रान्ता ॥

आगच्छन्तं शिविग्मधुना बुन्दधीशं निशम्य,
द्रागङ्गागात्सभटसाचिवः सोऽपि राणोऽग्निसिंहः ॥
आनन्दोत्कं सुमिलनमबोभोद्वयोर्भूमिभर्त्ता-
व्रींश्चान्पानुभयत इतान्मेलयाञ्चक्रतुरतौ ॥ १५ ॥

॥ द्रुतविलाम्बितम् ॥

प्रथममिन्द्रगढाधिपतेः सुतो रणपटुः सनमानसमाढ्यः १॥
तदनु माधववंशमहार्णवोद्भवशर्मा भगवंतइति स्फुटः ॥ १६ ॥
अथ च धोवडपत्तनपात्मजः सन्निति भैरवभैरवभैरव ३ ॥
इतिमुखा अरिसिंहमहीभृताप्पजितसिंहभटा मिलिताः सुखम् १७ ॥

॥ उपजातिः ॥

अथाऽपरे तत्र सलूमरीशश्चुण्डाउतोभिमि १ उपेत्य पूर्वम् ॥
आमेटनाथश्च ततो द्वितीयो वीरः फतेसिंह उदारभावः १८ ॥
विज्जोलिशान्ता परमारजातिनीतिप्रपञ्ची शुभकर्णानामा ३ ॥
इत्यादयः सम्भविनः पृथक् तेऽरिसिंहवीरा मिलिता नृपेण १९ ॥

॥ शार्दूलविक्रीडितम् ॥

बुन्दी के पति का अपन डेरे आता हुआ सुनकर उमराव और मन्त्रियों सहित वह
राणा अरिसिंह भी शीघ्र सन्मुख आया, उन दोनों राजाओं का सुन्दर मिलाप
आनन्द का बढानेवाला हुआ और उन दोनों राजाओं ने दोनों ओर के वीरों
को परस्पर मिलाये ॥ १५ ॥ प्रथम तो इन्द्रगढ के पति का पुत्र, युद्ध से चतुर
सनमानसिंह, पीछे माधवसिंह के वंश स्त्री समुद्र से उत्पन्न हुआ चन्द्रमा के
समान भगवन्तसिंह, जिसपीछे धोवड़ा नगर के पति का पुत्र युद्ध में भैरव के
समान स्पष्ट भयङ्कर भैरवसिंह ॥ १६ ॥ इत्यादि अजितसिंह के उमराव आन-
न्द पूर्वक महाराणा अरिसिंह से मिले ॥ १७ ॥ अब दूसरी ओर के, सलूमर
का स्वामी चुण्डाउत भीमसिंह, दूसरा आमेर का पति बड़ा पराक्रमी वीर
फतेहसिंह ॥ १८ ॥ और तीसरा विज्जोलिया का पति पवार जातिवाला नीति
में चतुर शुभकर्ण, इत्यादि महाराणा अरिसिंह के मिलने योग्य उमराव अ-
जितसिंह से पृथक् पृथक् मिले ॥ १९ ॥ इस प्रकार जीतने में नहीं आये ऐसा

बुन्दीशोऽजितसिंहः एवमजितो भूपोऽरिसिंहस्तथा,
 रागोद्विष्टमितो मिथोऽमिलदिह श्रीचाहुवागेश्वर ॥
 स्मृत्वा तत्सचिवोक्तवाक्यकुलिरा नोपायन चाप्यदा
 न्नाङ्घ्रिस्पर्शमपि व्यधान्नवयमाऽहीन्दुः १८२९ प्रमाणे राके २०
 पञ्चम्या ५ सहितेऽवलक्ष्य राकले श्रामे तपस्याऽऽह्वये,
 सम्मिल्येत्यमुभारवयो विविशतु स्व स्व निचोलालयम् ॥
 मुद्रा कृष्णागढाऽधिपस्य सुतया गीर्पाहराङ्गपाऽनुजा
 भर्त्रे बुन्द्यधिपाय पञ्चशतक ५०० खाद्यै सम प्रेषिता ॥ २१ ॥
 राणाऽपि द्रविणा खग्वेन्द्रिय ५०० मिता मुद्रास्तथा प्रेषिता,
 पञ्चात्फाल्गुनशुद्धषष्ठद्विजसे चातुर्भुजो रावराट् ॥
 सुग्रामेव बलाऽऽलय पटगृह प्राप्तोऽरिसिंहस्य सो-
 भ्युत्थानादिविधेयरीतिरचनै सत्कारित स्वागते ॥ २२ ॥

॥ इन्द्रवज्रा ॥

पञ्चाद्रहोमन्त्रगादूष्यमागाद्रागाऽसनाढ्याऽमरचन्द्रयुक्त ॥

रामभूऽसनाम्ना सनवाढभर्त्रा राणाउतेनाऽपि तथा समेत ॥ २३ ॥

बुन्दी का पति अजितसिंह और तैमे ही शत्रुओं पर सिंह रूप राणा पक्षी
 को धारण करनेवाला अरिसिंह (अङ्गधी) दोनों परस्पर मिले, इस मिलाप में
 चहुवाणों के ईश्वर राघराजा अजितसिंह ने उस अमास्य (अमरचन्द्र) के वज्र
 रूपी वस्त्रों को स्वरण करके न तो राणा का नजराना किया और न चरण
 स्पर्श किया यह मिलाप सम्यक् अठारह सौ वनतीस १८२९ फाल्गुन सुदि पञ्च
 मी को हुआ, इस प्रकार दोनों मिलकर अपने अपने बेरों में गये और कृष्ण
 गङ्ग के अधिपति की पुत्री जो नीमोदिया (अरिसिंह) की राणी थी, उसने
 अपनी छोटी पहिन के पति बुन्दी के पति अजितसिंह के अर्घ्य मिटाई के साथ
 पाँच सौ रुपये भेजे ॥ २० ॥ २१ ॥ तैमे ही राणा ने भी पाँच सौ रुपये भेजे
 जिसपीछे फाल्गुन सुदि द्वादश के दिन बभ्रुवाण रावराजा जैसे इन्द्र, बलिराजा
 के स्थान पर प्राप्त होवे तैसे राणा अरिसिंहके बरे पर प्राप्त हुआ और ताजीम
 आदि वक्षित स्वागत से सत्कार पाया ॥ २२ ॥ जिसपीछे एकान्त में सत्काह
 करने के निमित्त, सनाढ्य जाति के प्रधान अमरचन्द्र, सनवाढ के पति राणा
 वत रामसिंह के साथ राणा अरिसिंह जुड़े बरे में गये ॥ २३ ॥

बुन्दीपुरीन्द्रो२ भगवंतसिंहं१ माधाणिदृष्टं समिदुप्रवीर्यम् ॥

सीलोरसद्वङ्गपतिं सुनीतिं सत्कोकिलग्रामपुरानिवासम् ॥ २४ ॥

वीरं द्वितीयं२ सनमानसिंहं२ इन्द्रेन्द्रसल्लोतपदोपटङ्गयम् ॥

श्रीभक्तरामस्य कुमारवर्यं संयोधिनं चेन्द्रगढाऽधिपस्य ॥ २५ ॥

दाधीचवंशध्वजमार्यवन्द्यं व्यासं तृतीयं३ द्विजमुच्चमन्त्रम् ॥

गोपालरामाभिध३माप्ततार्हं सैतत्रयं३ मंत्रगृहे निनाय ॥ २६ ॥

तत्र स्थितानां घटिका१ व्यतीता राणाऽरिसिंहेन सुगन्धतैलम् १॥

स्वर्णाभपर्णोत्तमवीटका२श्च स्तम्बेरमः१ स्वोच्छ्रयशङ्कितार्कः॥२७॥

॥ उपजातिः॥

निरस्तमूल्ये परिधानपूर्णे लोके स्फुटे ये सिरुपाव२वाच्ये२॥

तुरङ्गमौ२ द्वौ२ जितधातवेगौ मण्यादिभिः सञ्जटिता च भूषा१॥२८॥

इत्याद्यथाऽर्हाऽर्हणमुच्चमानैर्निवेदितं भूपतयेऽजिताय ॥

सत्कारितः सोऽजितसिंहवर्मा स्थूले स्वकीयं समुपाजगाम ॥ २९ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टम ८ राशावजित-

तहां पर बुन्दीपति आजतसिंह ने युद्ध में उग्र प्रतापी सीलोरनगर के पति को जो पहिले कोकिल (कोइला) ग्राम में रहता था उस माधोसिंहोत हाडे भगवन्तसिंह और ॥ २४ ॥ दूसरे वीर इन्द्रगढ के पति श्रीभक्तराम के पुत्र घोडा इन्द्रसल्लोत्त पदवीवाले सन्मानसिंह को ॥ २५ ॥ और तीसरे प्रामाणिक आर्यों के पूज्य बडी सलाह देनेवाले दाधीचवंश की ध्वजा व्यास गोपालराम इन तीनों को उस सलाह करने के डेरे में लिये ॥ २६ ॥ वहां पर एक घडी भर समय व्यतीत हुआ जिसपीछे राणा अरिसिंह ने, इत्र (अंतर) सुवर्ण के बरक लगे पान बीड़े, अपनी उंचाई से सूर्य को शङ्कित करनेवाला (इसकी उंचाई की आड से अंधेरा नहीं होजावे ऐसी शंका करानेवाला) एक हाथी असूल्य वस्त्रों से पूरित लोक में सिरुपाव के नाम से प्रसिद्ध दो सिरुपाव, वायुके वेग को जीतनेवाले दो घोड़े, और मणियों का जड़ाहुआ एक मूषण ॥ २७॥ २८॥ इत्यादि, बडे मान के साथ राजा अजितसिंह के भेट किये इसप्रकार सत्कार पाकर वह अजितसिंह अपने डेरे आया ॥ २९ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायण के अष्टम राशि में, अजितसिंह के

सिंहचरित्रेऽमरचन्द्रविल्लहटानिमित्तकटुतरभाषणाभविष्यत्सन्धियव
नश्चासोद्देशनकोपितरावराट् तत्पत्यागमनसचिवसुभटोक्तबुन्दीन्द्रा
याभैन्पसाधेयराङ्गरगढगमनसम्मुखाऽगताऽरिसिंहसम्मिलनसुभटा
दिमियोमेलनचरणाऽपिस्पर्शत्सम्भरोपायनाऽढौकनस्वस्वशिविर
विशनसपत्नीकरीषोद्वहृद्वेशाऽर्यमुद्रापञ्चशती ५०० प्रमुखस्वागतव
स्तुमेपणारावराट् द्वितीय २ दिनराणापटाऽऽलयगमनसत्रय ३ सद्य
२ भूपद्वय २ मन्त्रणाराणासुगन्ध १ पर्णा २ गज ३ बाजि ४ वस्त्र
५ भूषण ६ हृद्वेन्द्रनिवेदनतत्त्वसिविरागमन पष्ठो ६ मयूख ॥६॥
आदित ॥३४६॥

॥ गीर्वाणाभाषा ॥ इन्द्रवज्रा ॥

राणाऽरिसिंहोऽपि दिने द्वितीये २ बुन्दीन्द्रदौकूलनिवासमागात् ॥
सत्कारितोऽनेन च सर्वमावेस्तद्वसमुत्थानसुभाषणाद्यै ॥ १ ॥

॥ उपजाति ॥

चरित्र में, अमरचन्द्र का पीछहटा घाम के कारण अत्यन्त कटुए बचन कहना
और आगे आनेवाले समय में सिन्धी यवनों का भय देना १ रावराजा को
क्रोध करा कर उसका पीछा जाना और बुन्दी के पति का हमरायों और
मन्त्रियों के कहने से राणा की सेना से घिरेहुए शकरगढ में जाना २ सन्मुख आये
हुए अरिसिंह से मिलना और हमराव आदि को परस्पर मिलाना ३ वधुवाण
का राणा के चरणों का स्पर्श नहीं करके मजराजाना नहीं करना और दोनों का
अपने डेरों में जाना ४ स्त्री सहित राणा का हाथाओं के पति के अर्थ पांच
सौ रुपये आदि स्वागत(महमानी)के पदाथों का भोजना ५ रावराजा का दूसरे
दिन राणा के डेरे जाना और बुन्दी के तीन और वदयपुर के दो जनों सहित
दोनों राजाओं का सलाह करना ६ राणा का इध्र, पान, हाथी, घोड़े, वस्त्र, मू
पण, हृद्वेन्द्र को देना और उसके अपने डेरे में आने का छठा ६ मयूख समाप्त
हुआ ॥६॥ और आदि से तीन सौ छियालीस ३४६ मयूख पूर्ण ॥
दूसरे दिन राणा अरिसिंह भी बुन्दीपति के डेरे आये और अजितसिंह ने
भी वसी रीति से ताजीम, सुन्दर समापण आदि से खूब प्रकार से सत्कार
किया ॥ १ ॥ और प्रीति बढ़ाने के अर्थ बुन्दी के पति अजितसिंह ने एक बात

प्रीत्येधनायाऽकुरुताऽन्यदेकं बुन्दीश्वरो हस्तयुगे२ वसूनाम् ॥
 थेलीतिशब्दस्फुटबुद्धयमानद्वयं२ गृहीत्वा हयारिसिंहदेहात् ॥ २ ॥
 उत्तार्य तस्यैव च सेवकेभ्यो ददद्यथेन्द्रः कृतसत्रकायः ॥
 द्रव्यं सुखं घ्येयं मथाऽपि चव्यं ताम्बूलं२ मिदं पुरटप्रकाशम् ॥ ३ ॥
 निवेदयामास गजं१ सुदन्तद्वयं२ वियद्वर्शनघूर्णनेन ॥
 संकेतयन्तं समरेऽसुहानेर्मुष्णान्तु नाकीयसुखं यथेच्छम् ॥ ४ ॥
 ॥ इन्द्रवज्रा ॥

मदन्तकीलद्वयं२सेवनेन तिष्ठन्तु वा क्षेपयितास्मि नाके ॥
 सञ्चालयन्तं श्रवणौ विशालौ दाक्षाय्यसम्पातिरिवाऽऽत्मपत्नौ ॥ ५ ॥
 उपजातिः ॥

अश्वौ२तथा क्षिप्रगतौ हि वायोः पृष्ठस्थितत्वादिव निर्बलत्वम् ॥
 संसूचयन्तौ खरद्वेषणो न प्रसन्नवस्त्राणि३ तथा नवानि ॥ ६ ॥
 हीराद्यमूल्योत्तमरत्नभूषा४ मित्यादि संगृह्य च सम्भरेशात् ॥
 अथाऽऽज्ञया सैन्ययुतोऽरिसिंहः स्वयं निचोलालयमेष आयात् ॥ ७ ॥

यह की कि अपने दोनों हाथों में धन (रुपयों) की थेली जिसका स्पष्ट नाम है लेकर अरिसिंह के शरीर पर ॥ २ ॥ उतार (नोछावर) कर, राखा अरिसिंह के ही सेवकों को, जैसे इन्द्र यज्ञ समाप्त करके देवों तैसे दी, तिस पीछे सुख पूर्वक गन्ध लेने योग्य इत्र, चवाने योग्य सुवर्ण के चरक लगे हुए पान बीड़े ॥ ३ ॥ और श्रेष्ठ दो दांतोंवाला एक हाथी दिया, यह हाथी आकाश की ओर देखकर भक्तक घुमाता था सो मानों यह संकेत [इसारा] करता था कि युद्ध में मरकर स्वर्ग का पथेच्छ सुख भोगो ॥ ४ ॥ मेरे इन दोनों दांतों रूपी कीलों के सेवन से ठहरो तुमको मैं अभी स्वर्ग में फेंक देता हूं और यह संकेत करके अपने दोनों बड़े कानों को ग्रीध पत्नी संपाति की भांति दिखाता था ॥ ५ ॥ तैसे ही वायु के समान शीघ्र चलनेवाले और अपने से पीछे रहजाने के कारण वायु की निर्बलता की अपने तीखे होंसने से सूचना करनेवाले दो घोड़े और सुन्दर नवीन वस्त्र ॥ ६ ॥ हीरा आदि रत्नों से जड़ाहुआ उत्तम मूल्य का भूषण (सिरपेच) इत्यादि बहुबाण (अजितसिंह) से लेकर, सीख लेकर सेना सहित अरिसिंह अपने डेरे गया ॥ ७ ॥

अरि सिंहफाराजाकेसमीपदूतभेजा] अष्टमराशि सप्तमयूख (३७९१)

॥ इदमजा ॥

आगत्य च प्रेषितवान् स्वकीय दूत स यत्राऽजितसिंहभूष ॥
सदेशहारेण तदा यदुक्त तच्छ्रूयता रामधराऽधिनाथ ॥ ८ ॥

॥ उपजाति ॥

चुगडाउतो वेधमपुर्णधीश समाख्यया नाम सिवाइमेघ १ ॥
अन्यस्तथा शकरदुर्गनाथो२ राणाउत स्वामिविरोधचञ्चु ॥ ९ ॥
कन्हाउतो रामपुरश्च कोजू३स्तथा तृतीपो२ऽमरदुर्गभर्ता ॥
राणाउतश्चापि जल्लिघरीशो४द्वेपानुग साहसिकश्चतुर्थ ४ ॥ १० ॥
चत्वार४एते भवदीपपत्नान्निरस्तशङ्का गणायति नो नो ॥
वशेऽस्मदीये विनियोजनीया धूर्ता खलास्ते भवता निषम्य ॥ ११ ॥
श्रुत्वेति दूतोक्तमुदारसत्त्व श्रीरावराडाविरचीकयत्तम् ॥
चुगडाउतैर्वधमपत्तनेशे कृतोऽस्मदीयो बहुधोपकार ॥ १२ ॥
विस्मृत्य युष्माभिरतस्तदाग सम्मेलनीय स सिवाइमेघ ॥
वय हि मध्यपर्यपद दधानास्तमानयेम प्रसन्न पुरस्तात् ॥ १३ ॥
राणाउत शकरदुर्गनाथ १ कन्हाउतश्चाऽमरदुर्गदुर्गर्गी२ ॥

देरे आफर राजा अजितसिंह के पास अपना दूत भेजा, उस दूत ने जो
आकर कहा सो हे भूषति रामसिंह सुनो ॥ ८ ॥ वेधम का पति चुगडाउत
सिवाई मेघसिंह, दूसरा शकरगढ़ का पति राणापत, स्वामी से विरोध करना ही
है धन जिसके “व्याकरण में चञ्चु और चणप् प्रत्यय बन अर्थ में होने हैं”
॥ ९ ॥ तीसरा अमरगढ़ का पति, राम शब्द से पहिले है कोजू जिसके अर्थात्
कोजूराम कान्हाउत, चौथा वेध के साथ रहनेवाला हठी राणाउत जल्लिघरी का
पति ॥ १० ॥ ये चारों आपके पक्ष से निहर होकर हमको नहीं मानते हैं इस
कारण आप इन दुष्ट धूर्तों को पकड़कर हमारे पक्ष में करो ॥ ११ ॥ दूत के कहे
हुए ये वचन सुनकर पडे पराक्रमी श्रीरावराजा ने स्पष्ट कहा कि वेध के पति
चुगडाउत ने हमारे पर बहुत उपकार किये हैं ॥ १२ ॥ इस कारण आप भी उसके
अपराध को भूलकर सिवाई मेघसिंह के साथ मित्राप कर लो, हम पीछे में
पड़कर उसको पक्षात्कार (जघीसे) आप के सामने ले आयेंगे ॥ १३ ॥ और
शकरगढ़ के पति राणापत और अमरगढ़ के गढ़वाला [पति] काहाउत, ये

उभा२वमू नः शरणागतौ तद्वयं न तद्विप्रियमाचरामः ॥ १४ ॥
 अन्दाय यूयं कुरुत प्रकामं तौ जेतुमाजौ प्रततं प्रयत्नम् ॥
 जलंघरीशं यमने यदीच्छा चमूं प्रयच्छंतु न मेत्र पत्नः ॥ १५ ॥
 मत्कोट्टपालोऽपि गमिष्यतीतः सार्द्धं तथा केशवरामनामा ॥
 विजित्य तत्रत्यजनान् सलीलं निस्सारयिष्यत्युत नात्र चित्रम् ॥ १६ ॥
 श्रुत्वेति राणाः परिपंथिभावं गतोऽप्यस्मात्पुं त्वमरादिचंद्रम् ॥
 सम्प्रेषयामास जलंघरीशं चतुःसहस्रेणा४००००बलेन युक्तम् ॥ १७ ॥
 सकोट्टपालोऽपि नियोजितः संजगाम वेगादरिसिंहसिद्धयै ॥
 जलंघरीदुर्गनिवासिनो नृन्निस्सारयामास ददौ च दुर्गम् ॥ १८ ॥
 राणाउताऽचाऽपि पथाप्रतिष्ठं प्रवेशिता बुन्द्यवनौ सकांताः ॥
 पश्चादपृष्ट्वाऽजितसिंहभूपं राणा गतः शंकरदुर्गभूतः ॥ १९ ॥

॥ इंद्रवज्रा ॥

खैरूणासंज्ञं पुरमध्यसंस्थं दग्ध्वाऽगमत्सोऽमरदुर्गभूमिम् ॥

बुध्वेति बुंदीपतिमाप्तकोपं सर्वेऽवदन्यत्रगतस्स राणाः ॥ २० ॥

दोनों हमारे शरण आये हैं इसकारण हम दोनों का बुरा नहीं करेंगे ॥ १४ ॥ आप-
 उन दोनों को युद्ध में जीतने का उपाय शीघ्र करो और जलंघरी को [यहाँ
 अजहत्स्वार्था लक्षणा से जलंघरी के पति का ग्रहण है] कैद करने
 की इच्छा है तो इसमें मेरा पक्ष नहीं है ॥ १५ ॥ केशवराम नामक
 मेरा कोतवाल भी उस सेना के साथ जावेगा सो वहाँ के लोगों को
 लीला (सहज) से जीत कर निकाल देवेगा इस में कोई आश्चर्य नहीं है ॥ १६ ॥
 यह सुनकर राणा ने शत्रु भाव को प्राप्त होकर उस प्रधान अमरचन्द को चार
 हजार सेना के साथ जलंघरी भेजा ॥ १७ ॥ अरिसिंह की कार्यसिद्धि के
 अर्थ भेजा हुआ वह कोतवाल भी शीघ्र गया और जलंघरी के गढ़ में रहने
 वाले मनुष्यों को निकाल कर गढ़ दे दिया ॥ १८ ॥ और राणाउतों को प्रति-
 ष्ठा के साथ निकाल कर स्त्रियों सहित बुन्दी के देश में प्रवेश कराया पीछे
 राजा अजितसिंह से बिना पूछे ही, राणा शंकरगढ़ की भूमि से गया ॥ १९ ॥
 फिर मार्ग में आये हुए खैरूणा नामक ग्राम को जलाकर वह राणा अमरगढ़
 की भूमि में गया, इस बात को जानकर क्रोध में हुए बुन्दीपति को सब (व-
 मराध और सचिवों) ने कहा कि जहाँ राणा गया है ॥ २० ॥ वहाँ हम लोगों

॥ उपजाति ॥

गतव्यमस्माभिरपीति वाक्य निराकृत भूपतिनाऽऽतु मेति ॥

न स्म कदैवाऽनुचरास्तदीया एद्वागत नापि कुतोऽनुसार ॥२१॥

योग्योस्मदीयो भवतीति वाच ब्रुवन्नपीयाय भृशोक्त एभि ॥

यातेन तत्राऽमरदुर्गभूमि स्थित सर्मापेऽमरचद्वनाम्न ॥ २२ ॥

इतिश्री वशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणोऽष्टम ८ राशावजित
सिंहचरित्रे राणाबुन्दीन्द्रशिविरागमनगवराट् तद्देवसुधानीद्वयो २
तारगासुगध १ ताम्बूल २ गज १ बाजि २ वस्त्र ३ भूषा ४ऽऽदिनिवे
दनप्राप्तस्वपरत्यप्रेषितदूतराणावेधम १ शकरगढा २ऽमरगढजलिघ
रीशाऽदिनिग्रहणाऽर्थकयनहहृदतदनुगीकरणाजलिघरीविध्वसनाऽवो
धितबुदीशराणाऽमरगढगमनस्वसुभटसचिवनितातोक्तरावराट् तदनु
करणा सप्तमो मयूख ॥ ७ ॥

आदितः ॥३७७॥

॥ गीर्वाणाभाषा ॥ उपजाति ॥

को भी चलना चाहिय, इन वचनों का राजा आजतसिंह ने निषेध किया कि
एक वनक कमी अनुचर (नौकर) नहीं हैं जो वे तो धिना एहे ही गये और हम
उनके साथ लगे रहे ॥ २१ ॥ यह बात हमारे धोरण नहीं है, ऐसे वचन पोछता
हुआ उन वमराव और सचियों के अत्यन्त कहने से तदा अमरगढ की भूमि
में अमरचन्द के पास ठहरा ॥ २२ ॥

अश्विभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टमराशि म, आजितसिंह के चरि
त्र में, राणा का घुरीपति के डरे आना और रावराजा का [राणा] क शरीर प
र दो घन की धोलियों का नोछावर करना १ इत्र, पान, हार्य, घाड़, यज्ञ, भूपण
आदि नजर करना और राणा का अपने डेर आकर अपना दूत भेजकर बेधम,
शकरगढ, अमरगढ, जलिघरी के पति आदि को पकड़ने क अर्थ कहलाना
और हाहा के पति का उसको अस्वीकार करना ३ जलिघरी का नाश करके
बुन्दी के पति को बिना जतखाये राणा का अमरगढ जाना ३ अपने वमराव और
सचियों के अत्यन्त कहने से उनके सहश करने [अमरगढजाने] का सातवामयूख
समाप्त हुआ ॥७॥ और आदि से तीनऔ सैताखीस ३४७ मयूख हुए ॥

अत्रापि यातोऽमरचंद्रशर्मा पुरो नृपस्याऽस्य तथाप्यतुष्टः ॥

दृष्ट्वैवमाशु प्रजगाद बुंदीपतिर्मया गम्यत अद्य बुंदी ॥ १ ॥

श्रुत्वेतिभूपोऽप्यमरेन्दुना द्रागवीवदत्प्रेषित अद्य दूतः ॥

यदुच्यते तेन विधाय कार्यं तद्वम्यतां स्वं नगरं यथेच्छम् ॥ २ ॥

ततो गतौ स्वस्वनिकेतनं तौ संप्रेषणदूतमथोऽरिसिंहः ॥

उक्तं च तेन स्फुटमेत्य भूपं निवेद्यतां विल्लहटारुय आशु ॥ ३ ॥

ग्रामोऽस्मदीयस्तत एतु बुंदी निशम्य धीरोऽजितसिंह इत्थम् ॥

अलीलपत्तत्र तु दुर्गमेकं कृतं मया चौरनिरोधनाय ॥ ४ ॥

॥ इन्द्रवज्रा ॥

तद्वप्रदेशे स्वशयान्मयाऽपि क्षिप्त्वा शिलाऽयासभृता प्रसह्य ॥

तस्मात्क्षमध्वं बलचौरसंघादेशे वयं वोऽवनमाचरामः ॥ ५ ॥

ग्रामोऽपरस्तद्विगुणो यथेच्छं संगृह्यतां वा नियमो विधेयः ॥

एतावतो वित्तसमुच्चयस्य प्रत्यब्दमरित ग्रहणो न तुष्टिः ॥ ६ ॥

॥ उपजातिः ॥

श्रुत्वेति न स्वीकृत एषु पक्षो राणाऽरिसिंहेन कदाऽपि कोऽपि ॥

यहां अमरगढ़ में भी अमरचन्द्र शर्मा इस राजा अजितसिंह के सामने गया तो भी इसको देखते ही अप्रसन्न होकर बुन्दी के पति ने कहा कि मैं आज ही बुन्दी जाता हूँ ॥ १ ॥ यह सुनकर महाराणा ने भी अमरचन्द्र द्वारा शीघ्र ही कहलाया कि आज दूत भेजा है सो वह जो कहें उस कार्य को करके पीछे यथेच्छ अपने नगर को जाओ ॥ २ ॥ तिसपीछं दोनों अपने डेरे में गये तब अरिसिंहने दूत भेजा उससे राजाने स्पष्ट कहा कि हमारे विलहटा नामक ग्राम शीघ्र नजर करो तब बुन्दी जाओ, यह सुनकर धीर अजितसिंह ने कहा कि वहां पर तो मैंने चोरों को रोकने के अर्थ किल्ला बनवाया है ॥ ३ ॥

॥ ४ ॥ इस देश में दुष्ट चोरों का समूह होने के कारण मैंने इसके कोट की नीम में बड़े परिश्रम और हठ के साथ अपने हाथ से पत्थर डाले हैं इस कारण से क्षमा करो हम आपकी प्रीति चाहनेवाले हैं ॥ ५ ॥ इस से द्विगुण [दुगना] दूसरा ग्राम आपकी इच्छा होवे सो लेंवा कोई ऐसा नियम कर लेंवा कि प्रतिवर्ष इतने रुपये लेने से आप प्रसन्न होवेंगे ॥ ६ ॥ यह सुनकर राणा अरि

राणाकापीलहटामागनेपरराजाकाक्रोधितहोना]अष्टमराशि-अष्टममयूज(१७६५)

उक्त च नास्मत्कथनेन यद्भिः प्रदीयते सन्धिभिरात्तशस्त्रैः ॥ ७ ॥

निवेद्यता सवसथ स एवेत्येव वचो जातविवृद्धमन्यु ॥

श्रीरावराजाऽजितसिंहवर्मा तदा बभूव प्रजयाऽर्कचण्ड ॥ ८ ॥

ततश्च तद्वत्सर १८२९ एव चैत्राश्रिते दत्ते पूर्वशुद्धिनेऽवशिष्टे ॥

घटीत्रये ३ घोटसुखाऽनुभूत्यै बहिर्जगामोद्धतदर्परागाः ॥ ९ ॥

अर्वाधिरूढश्चहुवागाभूपोऽप्यगाच्च तत्रैव महेन्द्रकल्प ॥

इत्वा शरा द्वौ स्ववलेन युक्तौ तारागणौश्चन्द्रमसाविवान्यौ ॥ १० ॥

सुरैः सुरेशाविव शुद्धसत्त्वौ समुद्यता आगमनाप सद्यः ॥

तथाऽऽद्वेच्छू अमलायताक्षौ यथाऽऽगतौ दिग्विजयाप सज्जौ ॥

॥ मालिनी ॥

इतदिनपतिकान्त्यो सहस्रोऽसम्भविष्णु

स्तराणिज इव लोकेऽपर्वजन्पेकहेतु ॥

अपिच पदकुतोऽपि भ्रान्तिकुत्पण्डिताना

सिंह न इनमें से एक भी पात को स्वीकार नहीं की और कहा कि यदि हमारे कहने से नहीं देते हो तो उस गाम को अस्थधारी सिन्धियों से देना, इन वचनों से बड़े क्रोध में आया हुआ रावराजा अजितसिंह प्रलय के प्रचण्ड सूर्य के समान हुआ ॥ ७ ॥ ८ ॥ जिस पीछे उसी सम्बत् १८२९ म चैत्र कृष्ण प्रतिपदा के दिन दो पहर में (मध्याह्न में) तीन घड़ी दिन बाकी रहे यक्ष के साथ राणा घुड़दौड़ काने को बाहर गये ॥ ९ ॥ घोड़े पर चढ़कर इन्द्र के समान रावराजा भी यहाँ गया वहाँ दो खरगोशों को मारकर अपनी अपनी सेना के साथ जैसे तारागण के साथ चन्द्रमा होवे तैसे ॥ १० ॥ जैसे देवताओं के साथ इन्द्र होवे तैसे, निर्मल बड़े नेत्रोंवाले, दिग्विजय के अर्थ तैयार होवे तैसे युद्ध की इच्छावाले दोनों राजा डरे आने को तैयार थे ॥ ११ ॥ हत की है सूर्य की भ्रान्ति जिन्होंने उन दोनों का सगम असमय बाधा है, यमराज की भ्रांति लोकों में अपूर्वता का एक कारण है, देखो पदों में सगम किया है सो भी पण्डितों को भ्रांति करनेवाला है, क्योंकि भू धातु से इच्छुप् प्रत्यय दे-व में होता है सो पहा लोक में किया है यही भ्रांति करनेवाला है “ कौमुदी के कर्ता भी इसके समाधान में ‘निरुक्ताः कथय’ पड़ी लिखते हैं ” निम्न ही

मृगपतिरपि सद्गादित्र यातो मुधैकः ॥ १२ ॥

भवति विपुलतास्तौ ह्यर्थसङ्कल्पनातो

विविधबुधमनस्सु प्रत्ययानां तथाहि ॥

तदुभय २ नृपतिभ्यां क्षिप्रदेशान्तरित्वे

ॐपवहत इह बोधे द्वन्द्वलाभः प्रतिष्ठासू ॥ १३ ॥

इतिमतिशतकारी तत्त्वबोधैकहारी

सुरपुरपटुनारीकामनासम्प्रचारी ॥

सकलसकलधारी स्वर्विहारौपकारी

समजनि जनिताऽरिन्नातनिःशेषकारी ॥ १४ ॥

अवददमलबुद्धिर्बुन्ध्यधोशो महात्मा

भवितरि दिन एता बाभविष्याहं तु ॥

गमनमिह विधेयं तथ्यमाज्ञाप्य राज

न्निति विविधवचांसि प्रश्रुतान्यश्रुतानि ॥ १५ ॥

नरपतिररिसिंहः कारयामास नैवं

अजितसिंह रूपसिंह के साथ से अरिसिंह अकेला वृथा आया ॥१२॥ जैसे प-
ण्डितों के मन में विविध अर्थ की कल्पना से प्रत्ययों की विपुलता होती है,
तैसे ही इसके अर्थ की कल्पना से विपुलता होती है. बोध्य (जनाने योग्य)को
व्यवहार में लाने से दोनों का लाभ और प्रतिष्ठा होती है, जिसको दोनों
राजाओं ने दूसरे देश में फैक दिया है ॥ १३ ॥ इसप्रकार सैकड़ों मति (बुद्धि)
करनेवाला, तत्त्वबोध (ज्ञान) का हरण करनेवाला, स्वर्ग की चतुर स्त्रियों की
कामना का प्रचार करनेवाला, सम्पूर्ण रीति से, सगुण शिव को धारण करने-
वाला, तथा सब कलाओं से युक्त सबको धारण करनेवाला, जो जन्म से ही
शत्रु हैं उनके समूह को निरशेष (नाश) करनेवाला ॥ १४ ॥ निर्मल बुद्धिवाला
महात्मा बुन्दी का पति बोला कि मैं तो आगामि दिन [कल] को जाननेवाला हू
सो हे महाराज यहां पर ठीक आज्ञा देकर जाओ इत्यादि अनेक वचनों को
सुने अनसुने किये और न दोनों नेत्रों से राजा अजितसिंह को देखा. तिस
पीछे राणा के किसी सेवक क्षत्रा ने कठोर वचन कहा कि आगामि दिनमें तु-
म्हारा जाना कैसे होवेगा ॥ १५ ॥

न च नयनयुगेनाऽदर्शि भूपोऽपि तेन ॥
 तदनु परुषवाच क्षत्रिय कश्चिदूचे,
 कथमुत गमन स्वादागतोऽद्वि त्वदीयम् ॥ १६ ॥
 उदयपुरनरेशो निर्वलो बुध्यते किं
 तदनु च रणाशीला सन्धिन किं न दृष्टा ॥
 नयनपथमुपेतैर्दुस्सह भीरुदह
 त्वपि सति यवनैस्तैरावृतेऽधोदुकूले ॥ १७ ॥
 समलशमलमुक्ति चर्करिण्यस्यपि द्रा-
 गिति कटुतरवाग्भिस्तर्जयन्त स्वकीयम् ॥
 नहि नहि वचनाना पात्रमेपा धरारा-
 ङिति किमपि स नोचेऽद्वाऽर्गितदहश्च शृण्वन् ॥ १८ ॥
 निजनिलयमुपेत मुक्तपन्यानमारा-
 दुदयपुरनरेश प्राऽवदद्बुन्द्यधीश ॥
 भवति जिगमिपास्त श्रीमता मुक्तिमिच्छ-
 स्थित इह पुर एवाऽस्मीति चाऽन्यच्चकार ॥ १९ ॥
 यवननयप्रवृत्तो य शिर स्पर्शरूपो
 मुजरविति करेण क्रीयतेऽकारि सोऽपि ॥

॥ १६ ॥ क्या उदयपुर के राजा को तुम निर्बल जानते हो, क्या इन के स्वा-
 मिधर्मों सेवक सिन्धियों को नहीं देखे हैं, जिसको देखने से ही मय लगै ऐसे
 वन पथनों से जय धिराजावेगा तब हे कायर हाहा तू शीघ्र घोषती में सूत्र
 सहित पिष्टा कर देवेगा, इत्यादि बहुत ही कटु वचनों से धरानेवाले अपने
 मनुष्य को, उस अरिसिंह ने साक्षात् सुन कर भी यह नहीं कहा कि यह
 राजा ऐसे वचनों का पात्र नहीं है ॥ १७ ॥ १८ ॥ अपने डरे जाने के, अर्थ मार्ग
 को छोड़नेवाले उदयपुर के राणा से बुन्दी के पति ने समीप होकर कहा कि
 मेरी जाने की इच्छा है इसी कारण श्रीमानों की आज्ञा चाहनेवाला मैं आगे
 को बढ़ा हूँ, यह कह कर दूसरा काम यह किया ॥ १९ ॥ जो यवनों की नीति
 से प्रवृत्त हुआ है और मस्तक के हाथ लगा कर किया जाता है जिसको मुजरा

तदुपरि नहि दृष्ट्याऽदर्शि पृष्ठि विधाय

प्रचलितमतिवेगेनाऽरिसिंहेन मत्तम् ॥ २० ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणोऽष्टमः रा ^{भावजि}
सिंहचरित्रे राणाप्रासभयविलहटामार्गगारावराट् तद्विडवीतर ^{ने}
गाभूपद्वय २ विरोधीभावभजनबहिर्बाजिविनोदनसम्भरेशस्वप्रस्था
ननिमित्तशिष्टाचारआवणराणास्वदृष्टिपरिवर्तनतदेकतमारुन्तुदाऽऽ
युधिकभृत्यविश्लेषनश्रुततद्रावराट् क्रुद्धीभवनमष्टमो ८ मयूखः ॥ ८ ॥
आदितः ॥ ३४८ ॥

॥ गीर्वाणभाषा ॥

॥ भुजङ्गप्रयातम् ॥

ततः क्रोधसंज्वालिताक्षो महात्मा बभूवाऽजितो भूपतिर्भूतकम्पः ॥

यथा भीमसेनोऽभवद्वार्तराष्ट्रेनुवेन्द्रः प्रभुर्दृष्टदैतेष आदौ ॥ १ ॥

यथा यत्नपत्ने ध्रुवः पशुरामो यथा हैहयेन्द्रे लसदोस्सहस्रे ॥

यथा वासुदेवो हरिर्दामघोषो यथा चण्डिकादैत्यसम्प्राजि शुम्भे ॥ २ ॥

कहते हैं, वह मुजरा भी किया जिस पर भी दृष्टि नहीं दी और वह अरिसिंह
रावराजा को पीठ देकर मत्त के समान चला ॥ २० ॥

श्री वंशभास्कर महोचम्पू के उत्तरायण के अष्टमराशिमें, अजितसिंहके चरित्र
में, राणा का दृष्ट पूर्वक बिलहटा नामक प्रास मांगना और रावराजा का
उस के सदृश (बराबरी) दूसरा ग्राम देना स्वीकार करना १ दोनों राजाओं
का विरोध भावको प्राप्त होना और बाहर घोड़ों की क्रीड़ा करना २ रावराजा
का अपने घर (बुन्दी) जाने के निमित्त शिष्टाचार सुनाना और राजा का
अपनी दृष्टि को फेरना ३ एक शस्त्रधारी नौकर का मर्म बेधन करनेवाले
विरोध के वचन बोलना, और उनके सुनने से रावराजा के क्रोधित होने का
आठवां ८ मयूख समाप्त हुआ ॥ ८ ॥ और आदि से तीन सौ अड़तालीस ३४८
मयूख हुए ॥

तब तो क्रोध से प्रज्वलित नेत्रोंवाला महात्मा राजा अजितसिंह जीवों को
कंपानेवाला हुआ, जैसे दुर्योधन पर भीमसेन, आदिदैत्य वृत्रासुर पर इन्द्र,
सहस्रबाहु पर परशुराम, दमघोष के पुत्र (शिशुपाल) पर वसुदेव के पुत्र

तथाशक्तिहेति पुरोऽश्व प्रसार्याऽरिसिंहाऽभिवर्कं चचालाय वीर ॥
 स्वयं शक्तिघातेन युद्धप्रगल्भो भुवो पातयामास निष्प्राणाराणाम् ३
 नराकारमेघादिवोर्द्धाप्तशम्पा ततश्चैव वा चण्डधाम्नो मरीचि ॥
 यथा बन्धिकुण्डाच्च काली कराला तथा नि सृता शक्तिरुद्रिय राणा ४
 तत खड्गमाकृष्य वृन्दीनरेन्द्रे जिहिषौ शिरोऽरिप्रतीहार एक ॥
 भुजे साङ्गदे प्राऽहरत्स्वर्गापष्टया कराभ्या बलात्कारतो रावराज ॥
 तदाघातमद्गस्यदोऽसिस्तदीयश्च्युताऽध्वाछिनन्नाऽरिसिंहोत्तमाङ्गम् ५
 तथा वीक्ष्य तद्भाक्तरामि कुमारोऽहिनत्पात्यमान कृपायाने राणाम्
 ॥ आर्षा ॥

एव जति राणाजयसिंहसुतप्रतापमिहस्य ॥

पौत्रो दोलतासिंहः पुत्रो य इयामसिंहस्य ॥ ७ ॥

॥ गीति ॥

(श्रीकृष्ण) और दैत्यराज शुभ पर चरिहका ॥२॥ तैसे शक्ति (बरछी) शस्त्रबाला
 प्रचल वीर युद्ध में निपुण राजा अजितसिंह राणा अरिसिंह के मुण्य के आगे
 घाड़े को पढा कर अरिसिंह के सामने चला और बरछी की घात से प्राण रहित
 राणा को भूमि पर पटक ॥ ३ ॥ यह शक्ति (बरछी) जैसे मनुष्य के शरीर
 रूपी मेघ से विजृम्भी, प्रचण्ड सूर्य से किरण और अग्निकुण्ड से कराख उवाला
 निकलै तैने राणा को छद्द कर निकली ॥ ४ ॥ फिर खड्ग निकाल कर युन्दी का
 राजा, राणा का मस्तक काटना चाहता था, इतने में राणा के एक द्वारपाल
 छडीदार ने दोनों हाथा से बल पूबक सोने की [सुवर्ण की] छडी राधराजा के
 भुजपन्ध सहित हाथ ॥५॥ पर मारी ॥ ५ ॥ उस छडी की चोट से तरवार हाथ
 से छूट गई और राणा का मस्तक नहीं कटा, यह देखकर भाकिराम के कुमार
 सन्मानसिंह ने पड़े हुए राणा पर तरवार मारी ॥ ६ ॥ ऐसा होने पर राणा
 जयसिंह का पुत्र प्रतापसिंह का पोता और श्यामसिंह का पुत्र महाराज पदार्थ
 (१) मेवाड के इतिहास में लिखा है कि राणा आरसिंह के बरछी मारकर रावराजा अजितसिंह पासा किरा
 उस समय महाराणा के छडीदार न सोने की छडी राधराजा के सहाट पर मारी जिससे रावराजा अचेत
 होगया और घाड़े के हाने पर मस्तक लगगया उस मूर्छित दशा में राधराजा को घोटा छे मगा और इसी
 घेंट के कारण घाड़े ही समय पीछे रावराजा का देहत होगया

स महाराजोद्वङ्को तुमुलं युध्वाऽसिभिर्ह्यभूत्तिलशः ॥
 शम्भूसिंहश्च तथा सनवाडेशोऽत्र भारताऽवरजः ॥८॥
 एतौ२ नाकिनिकेतं प्राप्तौ राणाउतौ समं भर्त्रा ॥
 वैश्यश्छोगालालो३ऽनुजजः सचिवस्य कृष्णगढभर्तुः ॥९॥
 एतेषु हतेषु त्रिषु राणां त्यक्त्वा प्रदुद्रुवुश्चाऽन्वे ॥
 राणाप्राणाऽपध्नीं शक्तिं१ स्वामुज्जहार बुन्दीशः ॥ १० ॥
 अर्व्वतं२ च तदीयं नीत्वाऽगच्छत्स्वकीयशिविरभुवम् ॥
 श्रुत्वैतदमरचन्द्रो नेतुं कुणपानियाय सैन्ययुतः ॥११॥
 बुन्दीपृज्जम्बूरैर्न्यवर्त्ततसप्तसनाढ्यविप्रं तम् ॥
 तन्मारणकृतबुद्धिः पुनर्जगामाऽजितोभिमुखमेषाम् ॥१२॥
 द्वाभ्यां२ प्रसह्य रुद्धो दत्त्वा नृपभावसिंहशपथाऽऽदि ॥
 सीलोर१धोवडेद्भ्यां२ भगवन्त१भवानिसिंह२ नामभ्याम्१३
 प्रस्थापितश्च बुन्दीमेताभ्यां प्रसभमजितसिंहनृपः ॥
 सम्प्राप्तः स निशीथे स्वपुरि ससैन्योऽरिसिंहमाहृत्य ॥ १४ ॥

को धारण करनेवाला दौलतसिंह खड्ग से घोर युद्ध करके तिल तिल प्रमाण
 कटा, तैसे ही भारतसिंह का छोटा भाई सनवाड़ का पति शम्भूसिंह भी कटा
 ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ ये दोनों राणावत अपने स्वामी के साथ स्वर्ग स्थान को पहुँचे
 और कृष्णगढ के मन्त्रि के छोटे भाई का पुत्र वैश्य छोगालाल भी मारा गया
 ॥ ९ ॥ इन तीनों के मारेजाने पर और सब राणा को छोड़कर भागगये, तब
 बुन्दी के पति ने राणा के प्राण लेनेवाली अपनी बरछी को निकाली ॥ १० ॥
 और राणा के घोड़े को लेकर अपने डेरों की भूमि में गया, यह सुनकर अमर
 चन्द सेना सहित उन मृतक शरीरों को लेने को आया ॥ ११ ॥ तब बुन्दी की
 सेना के जम्बूरों से सेना सहित उस सनाढ्य ब्राह्मण को रोका और उसको
 मारने की बुद्धि करके अजितसिंह फिर सामने गया ॥ १२ ॥ जिसको सीलोर
 के पति भगवन्तसिंह और धोवड़ा के पति भवानीसिंह, इन दोनों ने राजा
 भावसिंह के सौगन आदि देकर हठ से रोंका और इन्हीं दोनों ने बलात्कार
 पूर्वक उसे बुन्दी पहुँचाया, इसप्रकार वह राजा अजितसिंह राणा अरिसिंह
 को मारकर सेना सहित आधी रात्रि के समय बुन्दी प्राप्त हुआ

तौ२ बुन्दीश्वरसुभटौ स्थित्वा तत्रैव वैभव स्वीयम् ॥

नेय नेय नेय यातौ त्यक्त्वा पटालयाऽन्यत् ॥१५॥

ते सन्धिनस्तु यवना गता क्वचित्दिने समाजोत्का. ॥

सुभटाश्च पूर्वमेव छलवालकपक्षपातिनो भिन्ना ॥ १६ ॥

अतएवाऽमरचन्द्रो बुन्दीसैन्ये गते समेस्य निशि ॥

अरिसिंहवपुरधिष्ठाप्यनृपान स्वे रुदन् ययौ शिविरम् ॥१७॥

दृष्ट्वेश्वरशिविराद्वि विलुगटय दृष्ट्वाऽऽदिका तदवशिष्टाम् ॥

अरिसिंहतनुं तत्पटसदने सस्थाप्य शोकमारेमे ॥ १८ ॥

राणा सप्तभुजिष्वा सत्यो मनभावनाऽदयस्तत्र ॥

तौर्यविनोदनवत्योऽतिष्ठन् रात्रौ सजीवमिव परित ॥१९॥

प्रातश्चित्पारोहे कुणाप मनभावनेदमुक्तवती ॥

यदि निजकृतकलमेतत्तदस्तु यदि चान्यथा प्रभो तर्हि ॥२०॥

त्वा वयमिव विलपन्त्यो भस्मीभूता भवन्तु तन्नार्थ. ॥

॥ १३ ॥ १४ ॥ वे दोनों बुन्दीपति के वसराव वहाँ ठहर कर, कैसे योग्य अपना वैभव लेकर, डेरे आदि अथ वस्तुओं को छोड़कर आये ॥ १५ ॥ वे सिन्धी यवन तो उस दिन सभा से इष्टलाभ के लिय कालक्षेप करने को (नमाज पढ़ने को) कहीं गये गये थे, और छलवाल (रत्नासिंह) के पक्ष के वसराव पहिले से ही छुदे थे ॥१६॥ इस कारण बुन्दी की सेना के बसे जाने पर अमरचन्द्र रात्रि में वहाँ जाकर अरिसिंह के शरीर को पालखी में रखकर स्वयं रोता हुआ डेरे में गया ॥ १७ ॥ और रावराजा की डेरे आदि ससृष्टि का लूटकर अरिसिंह के शरीर को उस डेरे में रखकर शोक करने लगा ॥१८॥ वहाँ पर मनभावना को आदि लेकर राणा की सात पतिव्रता पासवान स्त्रियाँ, नाच गान करती हुई जैसे राणा जाता होवे तैसे रात्रि में उस राणा को चारों ओर से घेरकर बैठी रहीं ॥ १९ ॥ प्रातःकाल में राणा के शरीर को चिता पर रखते समय मनभावना ने कहा कि, हे स्वामी यदि अपनी ही करनी का यह फल है तो ठीक ही है, नहीं तो जैसे हम आप को रोती हैं तैसे ही हे प्रायनाथ! जिसने बिना अपराध आप की यह दशा की है उसकी स्त्रियाँ भी ऐसे ही

येनैवेदृगवस्था प्राणेश्वर ते ह्यनागसो विहिता ॥ २१ ॥
 मनभावेनेत्यमुक्त्वाऽऽरुरोह चितिकां षडाऽऽलिजनसहिता ॥
 सह जग्मुरनुप्रेष्ठं साध्यः साल्हादमुच्चगायन्त्यः ॥ २२ ॥
 नवनेत्रेभकु १८२९सङ्ख्ये शक्रवर्षे विक्रमाद्वराभर्तुः ॥
 प्रतिपदि १ माघवशुक्ले मुहूर्त १ शेषेन्हि हङ्गपतिनैवम् ॥ २३ ॥
 शक्त्या हतोऽरिसिंहस्तदश्वमारुह्य बुन्दिकाऽगामि ॥
 बैखानसेन पित्रा स भर्त्सितो नयविदाऽनुनीतश्च ॥ २४ ॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणोऽष्टम ८ राशाव-
 । जेतसिंहचरित्रे रावराजराणाऽरिसिंहनिपातनतद्द्वारथस्वबाहुयष्टिप्र
 हरणभाक्तरामिखड्गराणाभेदनवैश्यदोलतसिंह १ शम्भूसिंह २ मरणा
 भूशभटोक्तसमात्तराणाद्वधृतस्वशक्तिसम्भरशत्रुन्द्यागमनभगवन्त-
 सिंह १ भवानीसिंह २ नेपवैभवानयनभीर्वमरचन्द्रकुणापस्वशिविरप्रा
 पणभुजिष्यासप्तक ७ राणासहगमनं नवमो ९ मयूखः ॥ ९ ॥

बिछाप करती हुई भस्म हाँओ ॥२०॥२१॥ मनभावन इसप्रकार कहकर छहों
 सखियों के साथ चिता पर चढ़ी. और वे स्त्रियों की पनिघ्नताएँ हर्ष के साथ
 उच्चस्वर से गाती हुई अपनेपति के साथ गई ॥ २२ ॥ इस प्रकार विक्रम राजा
 के सम्बन्ध अठारह सौ उनतीस १८२९ के चैत्र कृष्ण एकम के दिन दो घड़ी
 दिन बाकी रहे, इस प्रकार राणा को बरखी से पारकर, राणा के घोड़े पर
 चढ़कर हाडों का पति बुन्दी आया और उस रावराजा को नीति के जानने
 वाले वानप्रस्थ पिता (उस्मेदसिंह) ने धमकाया और नीचा दिखाया ॥२३॥२४॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायणके अष्टमराशिमें अजितसिंहके चरित्र
 में, रावराजा का राणा अरिसिंह को मारना और उनके द्वारपाल का अपने
 हाथ पर छड़ी की मारना १ भक्तराम के पुत्र का खड्ग से राणा को भेदन
 करना और एक वैश्य और दोलतसिंह व शम्भूसिंह को मारना २ उमरावों के
 बधृत कहने से राणा के घोड़े को लेकर, अपनी बरखीको निकालकर चहुँबाणों
 के पति का बुन्दी आना ३ भगवन्तसिंह और भवानीसिंह का लाने योग्य
 वैभव को लाना ३ कायर अमरचन्द्र का मृतक शरीर को अपने डेरे में लाना
 और सात पासवानों का राणा के साथ खनी होने का नवमां ९ मयूख समाप्त

आदित ॥३४९॥

॥ गीर्वाणभाषा ॥

॥ गीति ॥

सैन्ययुतोऽमरचन्द्रस्नार्तीय३ कर्म भूपते कृत्वा ॥
 गत्वोदयपुरमनुचितमेतदिति श्रावणावभृगाऽसौ ॥१॥
 काष्ण्यगढी तदाऽपासन्नप्रसवा तु मण्डिले दुर्गे ॥
 गत्वा सुत प्रसुपुत्रे मासद्वय२जीवितो मृत सोपि ॥२॥
 जननी तदाऽतिदुःखात्कृष्णागढ गतवती जनकवसतिम् ॥
 द्वेशाऽपा२वेकादश११सह जग्मुरुदयपुरेऽपि च भुजिष्या ॥३॥
 अन्या चेका१ महिषी पितृभवने श्रूयता कथा तस्या ॥
 राजसमुद्रसर्माप मोह्याख्ये भट्टियादवग्रामे ॥ ४ ॥
 आऽमरसिंहाद्वाणा परिणीता सर्व एव भट्टियाणी ॥
 ता सर्वा सह जग्मुर्निजपतिमङ्गे निवेश्य पार्ष्णिज्य ॥ ५ ॥
 तत्रत्यभट्टितनयामत एव विवाह्य सोऽरिसिंहोऽपि ॥
 न्यस्याऽत्रैव नवोढामित आयातो हतोऽजितेनैवम् ॥ ६ ॥

हुआ ॥ ६ और आद से तीन मी वमशोस ३४९ मयूक्त हुए ॥

अमरचन्द्र, राणा के तीसरे दिन का कृत्य करके सना सहित उदयपुर गया और उसने यह अनुचित सुनाया ॥१॥ उस राणा अरिसिंह की कृष्णागढवाली राणी समीप ही पाछक जननेवाली (पूर्णागर्भा) थी जिसने मांडलगढ में जाकर पुत्र जना सो दो मास का होकर मरगया ॥ २ ॥ तब अत्यन्त दुःख से उस पाछक की माता अपने पिता के घर कृष्णागढ गई, और उदयपुर में भी दो रात्रिया और ग्यारह पासवान स्त्रिय सती हुई ॥ ३ ॥ एक राणी पिता के घर में सती हुई जिसकी कथा सुनो कि राजसमुद्र के समीप मोही नामक ग्राम भाटी शाखा के यादव पत्रियों का है ॥ ४ ॥ बड़ा राणा अमरसिंह से लेकर सभी राणा घड़ाके भाटियों की पुत्रियों व्याहे थे सो सभी अपने अपने पतियों के साथ सतिया हुई ॥ ५ ॥ इसीकारण स उस गामवाले भाटी की पुत्री के साथ वह राणा अरिसिंह भी विवाह था सो विवाह करके उस नई दुःखदम को वहीं छोड़कर आया था और इसप्रकार अजितसिंह से माराग

सा सह जगाम मोहयामवगतपतिमृत्युयादवी साधवी ॥

निजकुलपरम्पराया न निरस्ता सा तथा कुम्भदृशा ॥ ७ ॥

॥ मत्तमयूरम् ॥

आगत्येत्यं सम्भरराजः खनिकेतं यद्यन्नीतं येन जनैनाऽरिहगिरिवम्
चेतोवेगं तस्य विना पट्टतुंगं तस्मै तस्मै तत्तददादुद्यदुदारः ॥ ८ ॥
भेदोपायैर्दानविमिश्रैरथ कोटाद्वाराऽध्यक्षान्धमाऽमितलाभी परिभिद्य
युद्धप्राक्तद्देशजिगीषोः पुनरासीद्बुद्धीभर्तू रोगविशेषो विस्फोटः ॥ ९ ॥
शान्तेऽप्यस्मिन्दैववशादायुरणिम्ना भागेऽतीते पञ्चभुवूर्ते दिवसस्य
पूर्णा १५ऽऽख्यायां काव्यक्षतिथौ माधवमासि त्यक्त्वा देहं स्वर्गमि ॥

यायाऽजितसिंहः ॥ १० ॥

श्रुत्वा राज्ञी तत्त्वथ शृङ्गारकुमारी १ शृङ्गाराख्या द्रंगभूजायाऽधिपपुत्री
दोहित्री चोम्मेदहरेः साहिपुरेशस्याऽन्यातन्वीभूपभुजिष्याशशिशोभा

या ॥ ६ ॥ वह पतिव्रता यादवी अपने पति की मृत्यु सुनकर मोही नामक
ग्राम में सती हुई ऐसे उस मृगनयनी ने अपने कुल की परम्परा को नहीं छोड़ी
॥ ७ ॥ इसप्रकार रावराजा ने अपने स्थान पर आकर, जिस जिस मनुष्य ने
अरिसिंह का जो जो धन लिया था, उस उस मनुष्य को, मन के वेगवाले
एक खासा घोड़े के सिवाय, वह वह द्रव्य उस उदार ने दे दिया ॥ ८ ॥
तिस पीछे पृथ्वी लेने का बड़ा भारी लोभी, आजितसिंह दान और भेद दोनों
मिले हुए उपायों से कोटा के द्वारपालों को अपने में मिलाकर उस देश को
जीतना चाहता था कि युद्ध से पहिले बुन्दी के पति आजितसिंह को शीतला
(चेचक) का रोग हुआ ॥ ९ ॥ वह रोग भी शान्त होगया था परन्तु प्रारब्ध
वश छोटी अवस्था में ही वैशाख शुक्ल पूर्णिमा शुक्रवार के दिन दस घड़ी
दिन चढ़े आजितसिंह शरीर को छोड़कर स्वर्ग गया ॥ १० ॥ तिसको सुनकर
भूलाय के पति की पुत्री और शाहपुरा के पति उम्मेदसिंह की दोहिती शृङ्गार
(†) इसवशभास्कर में रावराजा की मृत्यु चेचक (शीतला) के रोग से होना लिखा है इसमें हम नहीं कह
सकते कि किसका लिखना सत्य है क्योंकि मेवाड़ के इतिहासकर्ता कविराज श्यामलदास और वशभा-
स्कर के कर्ता सूर्यमल्ल दोनों ही पूर्ण सत्यवक्ता थे जिनमें मिथ्यात्व का दोष किसी पर नहीं लगा सकते
परन्तु निश्चय नहीं कि इस बात का सत्य इतिहास किसको मिला है ॥

अजितसिंहकीराखीपाकासतीहोना] अष्टमराशि-वशममयूष (१२७)

व्योमाऽग्नौभेन्दु१८३० प्रमिते विक्रमशाके पूर्णा१५शौके६ऽहन्धर
शिष्टेऽन्तिमयामे ॥

चित्राकूटे कीलकराखे हविराशे हुत्वा देह दे हि सहायान्निजभर्त्रा
अनुष्टुप्पुग्मविपुला ॥

पठ्या गत्वाऽर्द्ध-गव्यूर्ति केदारेश्वरसन्निधौ ॥

करवीर महाघोर ते ७ भर्त्रा सह जग्मतु ॥१३॥

तयोस्तु सहगामिन्योर्द्वाहाकारो महानभूत् ॥

अकाराडमरणो राज्ञो रुरुदु स्यावरा अपि ॥ १४ ॥

श्रीजित्तत्र महासत्त्व सर्वा आश्वासयत्तदा ॥

प्रकृती रावराजास्ता निर्नाथा बालभूभुज ॥१५॥

मनागुत्साहमानीता श्रीजिता सविदा स्वया ॥

अभिमन्यो मृते सेना यथा स्वा धर्मभूभृता ॥ १६ ॥

पुष्प शृंगारकुमारी नामक राखी और दूसरी चन्द्रशोभा नामक पासवान
गिन्य दोनो अग्ने पति अजितसिंह के साथ, विमल के सपत्न अठारह सौ तीस
१८३०में वंशाव्य सुदि एगिमा शुभवार के दिन एक पहरदिन पाकी रहे चित्त
पर चक्रके अग्नि की कराल उपाया में अपने शरीरों को होम करके सती हुई
॥११॥ १२ ॥ ये दोनो पुन्दी ने एक कोस पर केदारेश्वर के समीप घोरश्मयान
तक पति के साथ पैदल गई ॥ १३ ॥ इस प्रकार राजा अजितसिंह के अथा-
नक और बिना अगसर के मरने से और उन दोनों के सती होने पर बड़ा
भारी हाहाकार हुआ और स्थावर पदार्थ भी रोये ॥१४॥ तब बड़ा पर राज्य
की सम्पूर्ण प्रकृति (राज्य के शम) को बड़े पराक्रमी श्रीजित (वस्मेदासिंह)
ने विश्वास दिया और उस बालक राजा (विष्णुसिंह) की उस अनाथ प्रकृति
को अपने ज्ञान से गोढ़ा ना उरसाह दिया जैसे अभिमन्यु के मरने पर अपनी
सेना को युधिष्ठिर ने, वृषभन के मरने पर कर्ण ने, वधमण के मरने पर कुरुपति
(दुषाधन) ने, इन्द्रजित् और कुम्भकर्ण के मरने पर रावण ने, विशिरा के मरने पर
रघुपति ने, विरोचन के मरने पर प्रल्हाद ने, विश्रागद के मरने पर धनुषधारी
भीष्म ने आश्वासन किया तैसे यानप्रस्थ धर्म साधनेवाले श्रीजित् ने सम्पूर्ण
परिजनों का आश्वासन किया और ये सब लोग राजा विष्णुसिंह की वृद्धि की
इच्छा करनेवाले नगर में आये ॥ १० ॥ १५ ॥

कर्णेन वृषसेनेऽरते कुरुभर्त्रेव लक्ष्मणे ॥

दशरूपेनेव वा व्यस्वोरिन्द्राजित्कुम्भकर्णयोः ॥ १७ ॥

त्वष्ट्रा त्रिशिरसि प्रेते प्रल्हादेन विरोचने ॥

चित्राङ्गदे तथा पाण्डौ गाङ्गेयेनेव धन्विना ॥ १८ ॥

वैखानसेन विश्वस्ताः सर्वे परिजनाः पुत्रम् ॥

प्राविशन्विष्णुसिंहस्य क्षमाभृतो वृद्धिर्माप्सवः ॥ १९ ॥

एवं दैववशादाजन्स युष्माकं पितामहः ॥

एकविंशेऽथ प्रविष्टेऽब्दे जन्मतो विग्रहं जहौ ॥ २० ॥

दिष्टायत्तत्वाद्धारणायप्यसूना-

मल्पायुष्कत्वादीशितुर्बुद्धिकायाः ॥

बोद्धुंभूभारं सर्वमब्दद्वयान्त-

नायुः स्थानादेर्निर्मितिः क्वापि जाता ॥ २१ ॥

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तमराशिः ८ राशावजि-
तसिंहचरित्रे कृततृतीयाऽहकर्मऽमरचन्द्रोदयपुरगमनप्रसूतवृत्तपुत्रा-
राणाभोगिनीकृष्णगढगमनतदितरभोगिन्येकादशको ११ दयपुराऽ-
नलप्रविशततदन्याभट्ट्याणी १ पितृगृहज्वलनभरमीभवनविस्फोट--

॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ ऐ राजा रामसिंह ! इसप्रकार प्रारब्ध के वश से उस
आपके पितामह (दादे) ने जन्म से इस्सीसवां वर्ष लगते ही शरीर छोड़ा
॥ २० ॥ प्राणों का धारण करना दैव (भाग्य) के आधीन होने से और सप
श्रुति के भार को उठानेवाले (अजितसिंह) के अवपायु होने से इन दो वर्षों में
स्थान आदि नहीं बने अर्थात् राज्याधिकार मिलने से दो वर्ष ही आयु रही
जिसमें स्थान आदि का निर्माण नहीं हुआ ॥ २१ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टमराशि में, अजितसिंह के
चरित्र में, तीसरे दिन का कार्य करके अमरचन्द्र का उदयपुर जाना १ मराहुआ
पुत्रपैदा करनेवाली राणा अरिसिंह की छोटी राणी का कृष्णगढ जाना २ राणा
अरिसिंह की अन्य ग्यारह स्त्रियों का उदयपुर में सती होना ३ भट्टियानी का पिता
के घर में सती होना ४ शीतला (बेचक) के रोग से रावराजा अजितसिंह का

कामयरावराहऽजितसिंहदेहत्पजनसभुजिग्याचन्द्रशोभाराजाउत्तिरा
 ज्ञीसहगमनश्रीजित्सर्वसमाऽऽश्वासन दशमो १० मयूख ॥ १० ॥

आदित ॥ ३५० ॥

समाप्त चेदमजितसिंहचरित्रम् ॥

शरीर छोड़ना ५ पासवान चन्द्रशोभा सहित राजावती राखी का सती होना
 ६ श्रीजित का सप को आश्वासन करने का दशवां १० मयूख समाप्त हुआ
 ॥१०॥ और अजितसिंह चरित्र समाप्त होकर आदि से तीन सौ पचास ३५०
 मयूख हुए ॥

इति अजितसिंहचरित्र समाप्तम् ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथविष्णुसिंह२००१२चरित्रम् ॥

प्रायो व्रजदेशीयप्राकृता मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

अजितसिंह१९९१२ बपु तजत इम, हुव बुंदिय द्वाकार ॥

विजय प्रपंच सु हुव विफल, आयु नियति अनुसार ॥ १ ॥

जो कछु दिन पुनि जीवतो, पहु तो अबरसर पाड ॥

कोटादिक छिति निकटकी, खेतो रवभुज लगाइ ॥ २ ॥

सु नृप उदधि सूरत्वको, सन्नुन बर्दक सोक ॥

सुक्र ६ वार बैसाख २ सित, पुण्ड्राम १५ गो परलोक ॥ ३ ॥

अजितसिंह१९९१२के पट्ट अद, विष्णुसिंह२००१२वय वाल ॥

बैठापो श्रीजित१९८१४ विदित, भावित विधि भूपाल ॥ ४ ॥

सक नभ गुन धृति१८३० सुक्रमै, ससि२एकादसि११सरि ॥

विष्णुसिंह२००१२ नवएपल वय, बुंदी पहु हुव बीर ॥ ५ ॥

पंच ५ घटिय मध्यान्ह पर, अधिक जात अभिसेक ॥

सद्विय निज कुलरीति१ सह, विधि२ग्रह सुमद३ विवेक ॥ ६ ॥

प्रथम पुरोहित१व्यास२ गुरु३, इन्ह त्रिक३किय अभिसेक ॥

बलि गुरु३१२किय उपदेस विधि, कुसलानंद३१२हि एका७१

तिम इन तीन३न किय तिलक, श्रीजित११२रवकर बहोरि

माधानी२२१२६भगवंत१९९१२१५पुनि, किन्न तिलक विधि जोरि८

चारन१ भट्ट२न भेट किय, पहिलै१ हय१२ सिरुपाव २३१४

भेट बहुरि सद्विय भटन, भनियत सो क्रम भाव ॥ ९ ॥

॥ घनाक्षरी ॥

१ भाग्य के अनुसार है ॥ १ ॥ २ सर्नाप की भूमि ॥ २ ॥ ३ वीरता का लक्षण

॥ ३ ॥ ४ संस्कार विधि से ॥ ४ ॥ ५ ज्येष्ठ मास, सोमवार ६ साढ़े चार मास की

अवस्था में बुंदी का राजा हुआ ॥ ५ ॥ ८ श्रेष्ठ उत्सव ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ६ ॥

घोरे१सिरुपाव२ करे उपदा तवहि तथ,
 पहिलै पितृव्यक बहादुर१९६३३ओ सरदार१९९१४४॥
 पीछे सिवासिह५ पीछे समामादिसिह पीछे,
 माधव१९३२पिनोती भगवत७रीति अनुसार ॥
 इद्रगढ८ बलवनि९ जज्जाउर१० आंतरवा११,
 खेगा१२ धोवरा१३के भये नजर बिधेय वार ॥
 कोटापति१४ हूके द्वे२ तुरग सिरुपाव द्वे२ ही,
 आये भये भेट पुनि अहै बहो उपहार ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

किय उपदा सचिवादिकन, पुनि दम्भ१ रु सिरुपाव२ ॥
 अधसौध१न इम सद्धि अंग, सौध२न आन्यो सांव ॥११॥
 व्याह१ प्रजा२ नृप विष्णु२००१२ के, भांवी सब क्रम भाइ ॥
 कइत इकट्ठे जे जुदे, ठाँठाँ सभव ठाइ ॥ १२ ॥
 तँहँ तिय१ अट्ट८ खवासि२ प्रय३, सतति अट्ट८सुहात ॥
 पच५ रु सुत इक१ पुतिका, जँहँ ए रानिन जात ॥ १३ ॥

॥ पदपात् ॥

नगरी बीकानेर भूप आनद अके भव ॥
 सज्जा करि गजासिह१ धरत तँहँ छत्र धराधैव ॥
 सुता तास सिमु सैवय पद्मकुमरी२००११ स नाम पहु ॥
 व्यादयो प्रथम१ बिवाह बिहारे, धन१ पट१ भूखन३ बहु ॥
 बालहि भई सु१ पुनि कालबस, बलि दूजी२ जहाँनि बरि ॥

१ नजर २ काका ३ माधवसिह के बगवाखा ४ धचित समय ५ सामग्री
 ॥ १० ॥ ६ नीचे के मइलों में ७ पर्वत ऊपर के मइलों में ८ बबे को, ॥ ११ ॥
 ९ सन्तान १० आगे आनेवाले समय में ॥ १२ ॥ ११ इतने तो राखियों से
 हुए ॥ १३ ॥ १२ गोद लिया हुआ १३ नाम से १४ भूपति १५ विष्णुसिह के
 समान अवस्थावाली १६ देकर

रानी बिदेग्ध आनी रैमन कमन करोलिय किति करि१४

॥ रोला ॥

तुर समपाल तनूज पालमानिकप आदि२ पहु,

नगर करोलिय नाह ललित ताकी कन्या लहु ॥

अमृतकुमारि२००१२ अभिधान व्याह दूजे२ नृप व्याहिय,

अतुल त्याग बसु अपि अतुल जस रस अवगाहिय ॥१५॥

॥ घनाक्षरी ॥

कोटापति मंत्री कल जालम सुता सु तीजी३,

नानता नगर व्याही अजब कुमारि२००१३ नाम ॥

सोपुर नगर गोर भूपति किसोर सुता,

सुरहि कुमारि२००१४ चौथी४ रानी बरी अभिराम ॥

रानी भटियानी लाडकुमारि२००१५ मंगाइ डोला,

पंचमी५ बिबाही बीर भोज सुता बपु वाम ॥

डोला आनि कन्याको प्रयाग सिंह रानाउत,

सूरजकुमारि२००१६ सो बिबाही छहे उपपाम ॥ १६ ॥

॥ चूडालदोहा ॥

व्याही सप्तम७ व्याह बलि, डगडोलीस गुमान आइ इत ॥

आश्रय पाइ अधीसको, बिनत ठानि संबंध हेरि हित ॥ १७ ॥

नंदकुमारि२००१७ तस नंदिनी, बिधि संजुन सीसोदनीहु बरि ॥

नृप रानी आनी निलप, सप्तमी७ सु बुंहीहि व्याह करि॥१८॥

॥ घनाक्षरी ॥

कृष्णागढ द्रंग भूप अष्टम८ बिबाह बरि,

चतुर २ पति ने ३ सुन्दर कीर्ति करके ॥ १४ ॥ ४ शीघ ५ माणिक्यपाल ६ लछु
७ नाम ॥ १५ ॥ ८ झाला जानमसिंह की पुत्री ९ सुन्दर १० बाम अंग
११ बिबाह में ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥

कीनी चाम अगज प्रताप नृपकी कुमारी ॥
 स अमानकुमारि२००।८ स नाम प्रभु माता सती,
 आनी धरि अष्टमी८हु रानी रीति अनुसारि ॥
 कुंछि खनि जाकी रत्न दीपक प्रकास करै,
 आपसे उदार अहो टोटी रूप तैम टारि ॥
 पात्र१के सैनेह२के दसा३के परतन्नपे,
 भासकं सवन भासै धर्म१ नीति२ जस धारि ॥ १९ ॥
 अष्टम८ विवाह जिहि लग्न नृप कीनी एह,
 सोही लग्न साधि तव व्याह कीनी मर्म तात ॥
 प्रभुकी सवित्री१ प्रभु कविकी संवित्री२ पुनि,
 आई इक१ काल ऊठी पाई किति अवदात ॥
 सुदकुल आठ८ ए विवाह भये सभरकै,
 जिनमें छ७तोकै सुत पच५ सुता इक जात ॥
 दूजी२ सुत जेठ१२ इदसिंह२०११ रु अनुज२०१२ वैदी२,
 बाल्यहमै कुमर मरे ए विधिके विघात ॥ २० ॥
 ॥ चूडालदोहा ॥

इदसिंह२०११को जो अनुज, सूचित इह जहौनि२ जन्यौ सुत॥
 नामहु तास न परि सक्यो, सिंहेतम सो हुव देह हीन द्रुत २१
 क्रम तीजो३ इम नृपतिकै, तनय भयो बलदेवसिंह२०१३तह॥

१रामसिंह की माता २जिसकी ग्वान रूपी कुंख में ३आप (रामसिंह) जैसे दीप
 क रूपी रत्न ४ टोटी रूपी अन्धरे को टाकनेवाले, यह दीपक तो पात्र ५
 तेल और ६ घाटी (पत्नी) के परतन्त्र है, परन्तु यह रामसिंह रूपी दीपक
 धर्म, नीति और पश को धारण करनेवाला सप को ७ प्रकाश करनेवाला
 स्वतन्त्र दीप्तता है "यहा परन्तु शब्द के योग से स्वतन्त्रता का ग्रहण है"
 ॥ १६ ॥ ८ भेरे (सूर्यमल्ल) के पिता न ९ रामसिंह की माता और १० कवि
 (सूर्यमल्ल) की माता ११ बियाही हुई एक ही समय में आई, वज्रवत् कीर्ति
 पाई १२ बालक ॥ २० ॥ १३ अत्यन्त बालक ही शीघ्र मरणपा ॥ २१ ॥

जो चौथी४ रानी जनित, अनसु भयो सिसुभावमैंहि यह॥२२॥
 पट्ट अष्टम८ रानी प्रसव, अप्प भयो प्रभु राम२०१४ बंसइन ॥
 मितिक्रम अत्र चतुर्थ४मत, दीपित किय जिन नाम रत्ति दिन२३
 पंचम५सुत सप्तमि७प्रसव, हुव गोपाल२०१५सुवैध्वपथिक हुवा॥
 समुक्तावन तिहिँ प्रभु सु नय, धारी तँह प्रतिकूल बन्यौँ धुव२४
 आसापूरनि अंबिका, मंदिर ढिग कँगारांदि भटन मिलि ॥
 दिठिकैद तव तिहिँ दयो, खग्गाशदिक सब छिनि नर्म खिलि२५
 तास इवेली भेजि तिहिँ, पुनि सूचिय अब लेहु बंस पथ ॥
 कुंतलपतनी आदर करहु, करहु न गनिका संग निंद्य कथ ॥२६॥
 दिय प्रबोध प्रभु इम दुलभ, तदपि मूढ प्रतिकूल भाव तकि ॥
 करि मेहेन छेदन कुमति, छीवै रहयो अपकिति सुरा छकि ॥२७॥

॥ दोहा ॥

भई सुता इक१ भूपकै, तीजी३ औरस तौम ॥

सोहु मरी बिधिवस सिसुहि, न परि सक्यो तस नाम ॥२८॥

॥ षट्पात् ॥

सुंदरसोभा१ सुघरराय२ — क्रमसरंग३ सह ॥

कैमन खवासिनकोहु अवनिपतिकै हुव त्रिक३ यह ॥

तीजी३ बिधिकरि तत्थ लढयो सुत बिनयसिंह१ लहु ॥

पातुरिगन तिम प्रथित बिबिध पट्ट हुव नृपके बहु ॥

जिनमैंहि नयनसोभा१ जनित रूपकुमरि१२ कन्या रुचिर

संतान अट्ट८ लहि इन सहित सैमह तप्यो नृप सबन सिर २६

१ प्राणरहित ॥ २२ ॥ २ आप (रामसिंह) ३ वंश का पति, इस क्रम से चौथा है
 ४रात्रि और दिनको प्रकाशित किया ॥ २३ ॥ ५बुरे मार्ग का चलनेवाला हुआ
 ६ आपने श्रेष्ठ नीति धारण की ॥ २४ ॥ ७कृष्णसिंह आदिद्वन्द्वरकैद१हसी करके
 प्रफुल्लित होकर ॥२९॥ १०कुछछात्री का ॥२६॥ ११लिंग को काटकर अपकीर्तिरूप
 मध्य में छककर १२मस्त रहा ॥२७॥ १३तहां ॥२८॥ १४सुन्दर १५उत्सव सहित ॥२६॥

काका नृपको कथित वीर अभिधान बहादुर१९१३

तास तनय बलवत्त२००१२ प्रथित थित थान मोठपुर ॥

ज्ञानकुमरि२००११ अभिधान इक१ परन्धो भटयानिय ॥

अत्यहि होला आत स्याम तनया जग जानिय ॥

तस प्रसव तीन३ प्रकटे सुतहि जे धौकल२०१११ फतमल्ल२०११२ जह
तिन्ह अनुज भोम२०११३ तीजो३ तनय आयतिं दोहि प्रमत्त यह॥३०॥

॥ दोहा ॥

भटियानी सालम सुता, दोलतकुमरि२००११ सनाम ॥

बलवत्ता२००११नुज एक१ इम, व्याहो दलपति२००१३ वामा३११

सिंधु भयो मूर्खको, इक१ नारीव्रत एह ॥

रन सहाय खिञ्चिन खिरघो, तिल तिल दलपति२००१३ देहा३२१

सेरसिंह२००१५ याके अनुज, लहि होला इक१ नारि ॥

सुता बरी खुसहालकी, जो आनदकुमरि२००११ ॥ ३३ ॥

हुव ताके सुत दुवर संहज, जे जय२०१११ बिजय२०११२ सनाम ॥

जामिज वीकानैरके, रठोरन प्रभु राम२०११४ ॥ ३४ ॥

अनुज बहादुरसिंह१९९१३को, सूचित जो सरदार१९९१४॥

दग दुघारी थान तस, दुव० हुव कथित कुमार ॥३५॥

व्याही ईश्वरिसिंह२००११ तैंह, जेठे१ सुत चउ४ नारि ॥

अजब कवधज अगजाँ, प्रथम१ गुलाबकुमरि२००११ ॥ ३६ ॥

दूर्जा२ जादवमेघजा, फतैकुमरि२००१२ निज कीन ॥

तीजो३ ता२००१३ही नाम करि, चालुक नाथ कुलीन ॥३७॥

इनमैं ईश्वरिसिंह२००११को, जानी भूत प्रजा न ॥

१ गाठड़ा पुर २ भविष्यत् काण (आगे आनेवाले समय) में ॥ ३० ॥ ३१ ॥
॥ घन्तासिंह का छोटा भाई ॥ ३१ ॥ ४ वीरता का समुद्र ॥ ३१ ॥ ३३ ॥ १ साथ जन्मे हुए
(जोड़वा) २ आनेज ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ० अजयसिंह राठोड़ की पुत्री ॥ ३६ ॥ ३७ ॥
८ सन्तान हुई नहीं जानी

जान्योँ तनय खवासि जनु, इक१ लछमन१ अभिधान।३८।
 ईश्वर२००।१ को भ्राता अनुज, देवीसिंह२००।२ द्वितीय२ ॥
 जो व्याहो इक१ जादवी, धरि मह सुंदर धीय ॥ ३९ ॥
 विष्णुकुमारि२००।१ नाम जु विदित, जात प्रजा चउ४जास॥
 संभू२०१।१ अरु सिवदान२०१।२ सुत, ए जेठे१।२ दुवर२ आस ४०
 कन्या गोवर्द्धनकुमारि१, क्रम गोविंदकुमारि२ ॥
 मरी अनूठाँ ए उभय२, अप्पन विधि अनुसारि ॥ ४१ ॥
 इक१ खवासि भव अंगजा, इनकी अनुजा आहि ॥
 परिनाई तुम राम२०१।४ प्रभु, द्रंग जोधपुर जाहि ॥ ४२ ॥
 वृद्धिकुमारि१ अभिधान जो, सो परन्योँ सरदार ॥
 अत्थहि आय खवासि भव, नृप तखतेस कुमार ॥ ४३ ॥

॥ दोहा ॥

संभू२०१।२ तैं जेठो सहज, नाम तास ——— २०१।१ ॥
 सोहु कुमर दुवर वरस रहि, भयो कालके साथ ॥ ४४ ॥
 पंचम५ संकरसिंह२०१।५ पुनि, सो कनिष्ठ सिवदान२०१।२ ॥
 कछुक दिननके अंत करि, सोहु भयो अवलान ॥ ४५ ॥
 लावक गाँम इलेसकी, मुहुकमजा वह नारि ॥
 परनी संभूसिंह२०१।१ प्रथं, मानहु चंद्रकुमारि१ ॥ ४६ ॥
 सोलंखी रतनेसजा तखतकुमारि२ अभिधान ॥
 बरि आनी संभू२०१।१ बहुरि, दूजी२ पुर दुवलान ॥ ४७ ॥
 पुनि व्याही हम्मीरपुर, विष्णुसिंह वपुजात ॥
 आनंदादकुमारि३ इम, सुरतानोत सुनात ॥ ४८ ॥

॥ ३८ ॥ १ छोटा भाई ॥ ३९ ॥ २ हुए ॥ ४० ॥ ३ बिना विवाही ॥ ४१ ॥ ४२ ॥
 ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४ अन्त ॥ ४५ ॥ ५ लावा ग्राम के भूपति की ६ प्रसिद्ध ॥ ४६ ॥
 ॥ ४७ ॥ ७ पुत्री ॥ ४८ ॥

भूप धात पुर कापरनि, पति सामत२००१ प्रवीन ॥
 व्याह तीन३ विरचे विदित, तनय लहे तहँ तीन३ ॥ ४९ ॥
 पतनी यह परन्पौ प्रथम१ रूपनगर रठोरि१ ॥
 दूजी२ राजावति२ इम, वहहु वरी पटजोरि ॥ ५० ॥
 पुनि तीजी३ सिवराजपुर, पति कवध चदेले ॥
 दुहिता तस परन्पौ दुलह, मजु सवय लहि मेल ॥ ५१ ॥
 तीजी३कै जेठो, तनय, हुव बलदेव२०११ सनाम ॥
 दूजी२कै कृष्णा२०१२ रु विरुद२०१३, तनय भये दुव३ताम
 व्याह१ प्रजा२ भावी विदित, सूचे इह क्रमसग ॥
 वर्तमानमें देहु बलि, अत्र श्रधं श्रवन उमग ॥ ५३ ॥
 सूचित१८३० सक बुदी सुपहु, विष्णुसिंह२००१२ सिसुवेस ॥
 जनक छत्र धरि सीस जो, इम हुव भुव अखिलेस ॥ ५४ ॥
 इत पहिलै नृप अजित१९९१२नै, सीम अमरगढ माहि ॥
 अरिसिंहदिं परलोक दिष, बिलैइटा१ दिष नाहि ॥ ५५ ॥
 सुत जेठे१ अरिसिंहके, व्है अधिपति इम्मीर१ ॥
 संध्या हँपै पठये सचिव, बुदिय दब्बन वीर ॥ ५६ ॥
 ज्योही वेधम आदि जे, मिले कपटसिसु मध्य ॥
 दक्खिनको भर देन चाहि, बछे तिनकँहँ वेध ॥ ५७ ॥
 भीम सलूमरि नाहको, आता अर्जुन१ नाम ॥
 अपर बनिक२ ए दुव२ गये, माहजि कटक मुकाम ॥ ५८ ॥
 संध्या माहजि तिहिं समय, पूब करि बस प्राय ॥
 आवतहो अजमेर इह, इत पिकखन ठैपय१ आप२ ॥ ५९ ॥

॥४९॥५०॥ १ चन्दला राठोट ॥ ५१ ॥ २ तर्हा ॥ ५२ ॥ ३ सुनने में कान वा
 ॥ ५३ ॥ ४ बुन्दी की सय भूमि का पति ॥ ५४ ॥ ५ बीकानेर का नाम नहीं वि-
 पा ॥ ५५ ॥ ६ सिन्धिया के पास ॥ ५६ ॥ ७ रत्नसिंह ने ८ बार ९ मारने पो-
 य (मारनेवाहे) ॥ १० ॥ १० दूसरा ॥ ५८ ॥ ११ श्वरष और आमद देलने को ॥ ५९ ॥

तँहँ वकील ए रानके, पहुँचे विनय प्रसारि ॥

मोरयो इत कलु दम्म दे, बेघम मंडन रारि ॥६०॥

दरकुंचन तब नैनपुरे, आयो माहजि तन ॥

सचिव मुख्य सुखराम पँहँ, पठये बुंदिय पत्त ॥ ६१ ॥

बिल्लहटा१ बुंदीस लिय, अनुचित करि अति गर्व ॥

मारयो पुनि अरिसिंहको, यामैं ओगुन सर्व ॥ ६२ ॥

तुरगादिक अरिसिंहको, आयो विभव१ जितोक ॥

बिल्लहटा२ जुत देहु अब उनको है वह ओक ॥ ६३ ॥

धाइभ्रात सुखराम तब, नपयटु समय निहारि ॥

बिल्लहटा१ जुत रौन हय२, दिनों विहित विचारि ॥ ६४ ॥

कोटापति तनु त्याग किय, इत गुमान२०४२ लहिखेद ॥

पट्ट सु पायो तस तनय, उचितरीति उम्मेद२०५१ ॥ ६५ ॥

भल्ला जालमसिंह तिंहि, मुख्य सचिव किय तथ ॥

राज्यकाज प्रकट१ रु पिहित२, सब सोंपे तस हथ ॥ ६६ ॥

असह रोग उपदंस जुत, पडिलैं इक१ पननारि ॥

नंटन निपुन कोटानगर, आई लोभ विचारि ॥ ६७ ॥

नृप गुमान२०४१ अगौ नची, भाव१हाव२मह भास ॥

बिगरयो मन कोटेसको, न लखैं लोलुप नास ॥ ६८ ॥

मन्प्यौ नहिँ गनिका सु मँत, तदपि बुलाइ निकेत ॥

लागि कुकर्म उपदंसँ लाहि, इम हुव अब सु अचेत ॥ ६९ ॥

नृप गुमान२०४१को जो अनुज, सो तँहँ नाम सरूप२०४३

॥ ६० ॥ १ नैणवा पुर में ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ २ घोडा आदि ३ स्थान ॥ ६३ ॥ ४ नीति चतुर ने ५ राणा का घोडा ॥ ६४ ॥ ६ शरीर छोडा ॥ ६५ ॥ प्रसिद्ध और ७ गुप्त ॥ ६६ ॥ ८ आतसक गरमी सहित ९ वेश्या १० नृत्य में ॥ ६७ ॥ ११ अत्यन्त लोभी (काम का लोभी) ॥ ६८ ॥ १२ वेश्या ने राजा का वह मत स्वीकार नहीं किया १३ लोभी अपने स्थान पर बुलाकर १४ गरमी का रोग लिया

भेज्यो जालम फल्ल मनि, भूप होहु इनि भूप ॥ ७० ॥
 तब नृप मारयो वधि तिहिं, नीच गरल उपनाह ॥
 भूरिमायु दमनक भयो, साचिव फल्ल सचाह ॥ ७१ ॥
 रानिनपैहँ पठई अगज, इत जालम लिखि एस ॥
 तुमरे देवर नृप इन्पौ, वन्पौ चहत वसुधेस ॥ ७२ ॥
 सुनि रानिन क्रिय सूचना, जसकर्णहिं निज जानि ॥
 तकि कछु बिधि चाखेयें तुम, मारहु तिहिं खल मानि ॥ ७३ ॥
 सचिव मुख्य जसकर्ण सुनि, इम रानिन ओएस ॥
 उँपवन माँहिं सरूपर०४१२ वह, दुष्ट इन्पौ कहि द्वेस ॥ ७४ ॥
 अब उम्मेद२०५१ गुमान२०४१२, सुत कोटपपति हुव ताहि
 इक१ दिवस इकत लै, जालम कहिय सरादि ॥ ७५ ॥
 अहो अखिल प्रभुके अनुग, अरु प्रभु मानन ईस ॥
 पै अब इक१ अनुचित प्रवज, सचिव कुपित निज सीस ७६
 मोसौ यह जसकर्ण मिलि, बदत गुढ लजि बैष्ट ॥
 मारैं नृप उम्मेद००५१को, अप्यै अपरहिं पट्ट ॥ ७७ ॥
 जिहिं सठ काका रावरे, मारे विदित वकारि ॥

॥ ६६ ॥ १ राजा गुमानसिंह को मारकर तुम राजा होजाओ ॥ ७० ॥ २
 मल्लमपट्टी में जहर देकर १ पहा काळा जालमसिंह दमनक नामक गीदह
 के सनान द्वारा "पञ्चमन्त्र और हितोपदेश के सुहृद्देव में यह कथा है कि
 मजीवक नामक देश और पिंगलक नामक सिंह की यदती हुई मित्रता को
 फाटकर, दमनक नामक गीदह ने इनमें विरोध मढाकर पिंगलक से सजीवक
 को मरवाया, और इनके विरोध का आपने लाभ उठाया" ॥ ७१ ॥ ४ भूपति
 होना चाहता है ॥ ७२ ॥ ५ जसकरन नामक चापमार्ह को आपनर जानकर
 कहा कि हे चापमार्ह ॥ ७३ ॥ ६ आदेश (आज्ञा) ७ याग में लस
 को छुट्ट कहुकर मारा ॥ ७४ ॥ ८ जालमसिंह ने कहा ॥ ७५ ॥ ९ सख
 के सेवक हैं परन्तु आश्चर्य है कि १० आप के ऊपर सचिव जसकरन
 है ॥ ७६ ॥ स्वामिधर्म का ११ मार्ग छोडकर १२ दूसरे को पाट देंगे ॥ ७७ ॥

न गिनें सो *उचितानुचित, तुल्लि रह्यो तरवारि ॥७८॥
 बदत यहहि नृप मति बदलि, सजि भट कछुक स्वतंत्र ॥
 कुजस करन त्यों जसकरन, मारन मंडिय मंत्र ॥७९॥
 तकि खिन जालम झल्ल तिम, व्है जसकरन सहाय ॥
 कही तुमहिं मारन कुमति, यह नृप करत उपाय ॥८०॥
 यातैं तुम निकसहु अबहि, पुनि हम ओसर पाइ ॥
 नृपको कोप निवारिकैं, लै हैं बिदित बुलाइ ॥ ८१ ॥
 इम संजीवक^१ बैल यह^२, निकसायो डर डारि ॥
 भयो झल्ल^१ दमनक भरुज^२, पिंगल^१ नृप^२हिं निहारि ॥८२॥
 माहजि लोभ अधीन इत, सेना अतुल सजाइ ॥
 रान वकीलनके कहैं, लगगे बेघम जाइ ॥ ८३ ॥

सजाइ^१ मजाइ^२ अन्त्यानुप्रासः ॥

सक नभ गुन धृति^१ ८३०मित संमा, मलिन^२प्रौष्टपद^३मास ॥
 बेघम संध्या बिटिकैं, तोपन डारयो त्रास ॥ ८४ ॥
 सुनि यह इत बुंदीसके, बहुन सज्ज करि वीर ॥
 श्रीजित कहि सुखरामसों, भेजे बेघम भोर ॥ ८५ ॥

॥ राजसवतिका ॥

पट्टै राउत देव करयो पहिलैं निज तातपैं जो उपकार नयो ॥
 जन बुंदीके^१ आप निवाहे जथा दृढ चित स्वकीय^२न कष्ट दयो
 अपनैं घर जासों अहो पट्टै^१ अन्न^२को भोगह अल्पहि अर्थ भयो ॥

* उचित और अनुचित नहीं गिनता ॥ ७८ ॥ १ जसकरन को मारने का
 संत्र रचा ॥ ७९ ॥ २ समय देखकर ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ३ संजीवक नामक बैल के
 अनुसार-जसकरन को निकलाया ४ वह भाला जालमसिंह दमनक नामक
 गीदड़ हुआ ५ पिंगलक नामक-सिंह के समान राजा छम्मेदासिंह को देखकर
 ॥८२॥ ८३॥ ६ सम्वत् ७, भाद्रवा वदि ॥८४॥ ८५॥ ८६ चतुर राउत देवासिंह ने अपने
 पिता बुधसिंह पर १० अपने लोगों को कष्ट दिया ११ वस्त्र १२ थोड़े मूल्य का

[सिन्धियाकावेधमपतिसेदृष्टेना] अष्टमराशि प्रथममयूक्त (३८१६)

यह श्रीजित ईदीहित चित्त इहाँ प्रतिकारी बरूयै उहाँ पठयो ॥८६॥

॥ दोहा ॥

पाइ मेघै बेधम पतिहु, भट इतके निज भीर ॥

सजि गढ पुत्र प्रताप सहु, बिरच्यो सगर बीर ॥ ८७ ॥

रन सकट बहुदिन गद्दो, खिरन लगे गढ खढ ॥

जालम कोटा सचिव जघ, दै बिच ओढ्यो दह ॥८८॥

दम्भ लख खट ६०००००० बैन करि, हीन वित्त तँहँ होइ ॥

गढ सिंगौली १ रनगढ २, दये परगनाँ दोरइ ॥८९॥

संध्याकै अथलग सुपै, रहत उभयर प्रभु रामै २०१४ ॥

बली अरिन दव्ये बहुरि, धाम न आये धाम ॥९०॥

पुर बेधम इम हीन परि, दै दंम सूचित देस ॥

मेदि बिरोध रु किय मुदित, बुदिय कित्ति बिसेस ॥ ९१ ॥

श्रीजित इत बुदीसके, बीरन सवन बुलाइ ॥

सूची है उँतानसय, प्रभु तुमगे बिधिपाइ ॥ ९२ ॥

सुखरामहिँ किय निज सचिव, अजितसिंघ १९९१ तुम ईस ॥

तिहिँ मन्नहु प्रभु तुल्य तुम, सासन निबहहु सीस ॥९३॥

वीर भवानीसिंघ १ बलि, माधानी २२।२६ भगवत २ ॥

दुव २ तुम याके पास दुव २, मगमँ चलहु सुमत ॥ ९४ ॥

रैनु बहादुरसिंघ १९९२सौँ, अकिखप बहुरि उदग ॥

राज पितैठ्यक तुम रहहु, मगमँ याके अग ॥९५॥

१ खज्जा से हित चिन्तकर श्रीजित ने रजपकार का पलटा देनेवाली मेना बेधम भेजी ॥ ८९ ॥ २ सयाई मेघासिंह ॥ ८७ ॥ ४ दंड केला (स्पीकार किया) ॥ ८८ ॥ ५ घनहीन ॥ ८९ ॥ ६ इस समय भी ७ है स्वामी रामसिंह ८ स्थान पीछे बेधम के घर में नहीं आये ॥ ९० ॥ ९ दह में खुशना फिये हुए देश देकर ॥ ९१ ॥ १० सीधा सोनेवाला (ऊँचे हाथ पैर करके सोनेवाला) धर्यात अस्पन्त पादक ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ११ अपने पुत्र १२ हे राजा के काका ॥९५॥

मिलत न जैसो महतपन, करत राज्यको काम ॥
 तैसो लहि धात्रेय तिम, सचिव बढ्यो सुखराम ॥९६॥
 अतिहित जालम भल्ल इत, बुंदीपतिहिं *दिखान ॥
 माधानी२१२६ भगवंतकों, पुनि कोटा लैजान ॥ ९७ ॥
 दुवर सामंत रु सचिव दुवर, इक १ मरहट्ट अगल ॥
 कोटा रक्खिय माहजि जु, लैन अब्द कर लाल ॥ ९८ ॥
 सो पंचम ५ जालम सुहद, ए पठये कहि एह ॥
 कोटा १ बुंदिय २ नृपनकै, संधहु परम सनेह ॥ ९९ ॥
 नाथ १ नाम गैता नगर, ईसजु हिरदाउत्तर ० १२४ ॥
 दूजो २ भटवारेस भट, संभूर ईंदसल्लुत्तर २५ १२९ ॥ १०० ॥
 देवकरन १ ३ भूसुर सचिव, अरु कायस्थ निहाल २ ४ ॥
 इम पंचम ५ मरहट्ट यह, सुहद भल्लको लाल ॥ १०१ ॥
 मिले सचिव सुखरामसौं, ए सब बुंदिय आइ ॥
 पुनि लग्गे श्रीजित पयन, विनंत सनेह बढाइ ॥ १०२ ॥
 करिये इत १ उतर एक १ ता, सूचत इम हित सोधि ॥
 स्वीकृत किय श्रीजित सुन सु, पटु सुखराम प्रबोधि ॥ १०३ ॥
 भगवंतहिं पुनि तिन मनिय, कोटा पठवन कज्ज ॥
 सिकखदैन तिहिं श्रीजितहु, सामग्री किय सज्ज ॥ १०४ ॥
 दंती एक १ तुरंग दुवर, सिंचय १ बिभूखन सत्थ ॥
 दैन सिकख इत्यादि दै, ताहि विचारिय तत्थ ॥ १०५ ॥
 सो कृतघन भगवंत सुनि, छत्रै परिकर सज्जि ॥

॥ ९६ ॥ * दिखाने को ॥ ९७ ॥ १ देहा २ लाछा नामक मरहटे को सालाना
 खिराज लेने को कोटा में रक्खा ॥ ९८ ॥ ३ जालमसिंह के चार मित्र पहिले
 थे और पांचवां यह हुआ ॥ ९९ ॥ ४ भटवाड़ा का पति ५ इन्द्रसालोत ॥ १०० ॥
 ६ ब्राह्मण ॥ १०१ ॥ ७ विशेष नम्र ॥ १०२ ॥ ८ समझाकर ॥ १०३ ॥ १०४ ॥ ९
 हाथी १० बज्ज ॥ १०५ ॥ ११ किये उपकार को भूलनेवाला १२ परगह

हित दिखान कोटसकौं, गयो परोक्षहि भजिज ॥ १०६ ॥
 श्रीजित सूचित क्यों किंतव, अनुचित किन्नी एह ॥
 इहाँ विभव जो तस अखिल, गिनि भेजहु तस गेह ॥ १०७ ॥
 सरूप फलित सीलोरके, करजुत तबहि प्रकास ॥
 रह्यो विभव भगवतको, पठयो सब तिहिँ पास ॥ १०८ ॥

॥ घनाक्षरी ॥

आयो जवही तैं सँही तैं सु गिनि मुख्य आप,
 राख्यो भगवत पास श्रीजित सुद्व रीति ॥
 काज निज राज्यके जनाड सब ताकौं करे,
 पायो काहुँ न सो पटा दिय निपुन नीति ॥
 साठ्यकरि बुन्दी १ कोटा २ एक १ ता करन समैं,
 गाइ कछु गूढ हाड बुदी १ की कुजस गति ॥
 कोटा २ कौं दिखाइ निज पच्छको अहो कुटिल,
 भजि भगवत गयो चोग्लों मजत भीति ॥ १०९ ॥

इति श्री वंशभाम्करे महाचम्पूके उत्तरायणोऽष्टम ८ राशौ विष्णु
 सिंहचरित्रे विष्णुसिंहविवाहसन्ततिवर्णनसन्ध्याकथनविल्लहटाग्रामा
 दिराणवैभवप्रत्यर्पणधात्रीभ्रातृजसकर्णघातपस्वरूपसिंहविषदानमृ
 ताम्रजकोटापतिगुमानसिंहात्मजोम्मेदसिंहपट्टासादनभल्लजालमार्सि
 १ पीठ पीछे भगकर ॥ १०६ ॥ २ छत्ती ॥ १०७ ॥ ३ पकी छुई खेती ॥ १०८ ॥
 ४ हृदय के साथ ५ मित्र की भाति ६ शठता (मूर्खता) ॥ १०९ ॥

श्रीवंशभाम्कर महाचम्पू के उत्तरायणके अष्टमराशिमें, विष्णुसिंह के चरित्र
 में, विष्णुसिंह के विवाह और सन्तान आदि का कथन १ सिन्धिया के कहने
 से पीछहटा ग्राम आदि राणा के वैभव को पीछा देना कोटा के पति गुमान-
 सिंह का घायल भाई जशकरण से मारेजाने वाले अपने छोटे भाई सरूपसिंह
 से जहर से माराजाकर उसके पुत्र उम्मेदसिंह का पाट बैठना २ आकाश जा-
 लमार्सिंह का कोटा के राजा और मछी में दमनक नामा गीदड़ के समान भेद
 कराना ३ सिन्धिया का राणा हस्मीरसिंह के कथन से वेधम से युद्ध करके दंड में

हकोटापतितन्मन्त्रिमध्यदमनकशृगालसमभेदकरगारागाहयमीर—
सिंहकथनकृतबेघमयुद्धसन्ध्याप्रान्तद्वयग्रहणाकोटाबुन्दीपरस्परैकता
भवनं प्रथमो मयूखः ॥ १ ॥ आदितः ॥ ३५१ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा॥

॥ दोहा ॥

सुनिये इत पहिले समय, कोटा अधिप किसोर१०७५ ॥
जेठे दुवर सुत टारि जिन्हें, राज्य१ न दिय दिय रोरे२ ॥१॥
किय तीजो३सुत उचित कहि, राज्य विभागी राम१०८१३॥
तास अग्रजन संततिन, किय अब विग्रह काम ॥ २ ॥

॥ रोला ॥

अब माधानी२२१२६ देवसिंह१ रविमल्ल ज्येष्ठ१ जुत ॥
कुल किसोरसिंघुत ५ जुन रन धारि दर्प जुत ॥
कोटापति सन पलटि, रह्यो आटोनि नगर यह ॥
तापर जालम तमकि आजि जित्तन किष आग्रह ॥ ३ ॥
मूसामदत१ स नाम रक्खि इक जोध फिरंगिय ॥
तीससहस३००००मित ताहि दम्न सासिक धुव करि दिया॥
याकहँ पुर आटोनि भेजि अक्खिय अरि भंजहु ॥
आइ समुख अंकुरहिँ गैल ते पर तिम गंजहु ॥ ४ ॥
जाइ फिरंगिय जन्थ तोप वन्नन पुर त्रासिय ॥
सह कुटुंब वह देवसिंह निस अद्ध निकासिय ॥
सक नभ गुन धृति१८३०समय आइ तिम तिहिँ अनियारा॥
चिंतिय बिबिध प्रपंचदैन जालम उर आरा ॥५॥

दो परगने लेना और कांटा बुन्दी में परस्पर एकता होने का प्रथम १ मयूख
समाप्त हुआ ॥ १ ॥ और आदि से तीन सौ इकावन ३५१ मयूख हुए ॥
१ भय दिया ॥ १ ॥ २ रामसिंह को ३ बड़े आइषों की सन्तान ने ॥ २ ॥ ४ युद्ध
जीतने को हठ किया ॥ ३ ॥ ५ सन्मुख आकर खड़े होवे तो ॥१॥ ६ करोत ॥५॥

जालम उरै वह जत्य भयो पत्थर सम भासत ॥
 भेदक आरा आदि कुठ हुव बिकल प्रकासत ॥
 धात्रेय सु जसकर्ण प्रथम गय दग जोधपुर ॥
 तिहिँ बुलाइ इहिँ तत्य अधम धधिय जुग उहुरं ॥ ६ ॥
 जतन चलयो नन जत्य जाइ उभयर हि तव जैपुर ॥
 चुडाउत्तन चाहि रहे तिन्हँ वस धारक धुर ॥
 तिन्ह प्रति अखिय तत्य मेरि हमको हरोलपर ॥
 करहु अप्प निज काम दनहु परपच्छ चुडहर ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

चुडाउत्तन यहहि चहि, पाइ दुवहि निज पच्छ ॥
 चित्यो अब कूरम निचय, दलिहँ हम दमदच्छ ॥ ८ ॥
 सक ससि गुन वृति १८३ इत असित२, भोग तीज ३ तिथि भदइ
 रदुळरि श्रीजित रमनि, छोरयो वपु गद छद ॥ ९ ॥
 तदनतर छुन्दीसको, सचिव मुख्य सुखराम ॥
 कतिप ८ पुश्याम १५ दिन गयो, पट्टनि केसव धाम ॥ १० ॥
 पट्टनि घट तीजो ३ हुतो, सध्याकै तिहिँ काल ॥
 ताँतँ मल्ल सखाहु तँहँ, हो मरदइ सु लाल ॥ ११ ॥
 सो सम्भुद सुखरामकै, इक १ कोस लग आइ ॥
 लैगो पट्टनि समय लहि, परम प्रमोद दिखाइ ॥ १२ ॥
 असित२ मगमिर ९ दोजि२, दिन तदनु मिलन हित तत ॥
 जालम मल्लहु प्रीति जुत, पुर कोटा सन पत ॥ १३ ॥

१ हृदय २ भेदने (फाटने) बाजे करीत आदि भोठे (सीधता रहित) होगये
 ३ दद जुग पाया अथवा निर्भय होकर जुग पाया ॥ १ ॥ ४ धुर को धारण
 करनेवाले देवगद के चुडाउत के वषा में जाकर यह देवसिंह रहा ५ शशुर्षों
 को ॥ ७ ॥ १४ देने में चतुर कछवाहों के समूह से ॥ ८ ॥ ७ आदवा दश्रीजित की
 छी ने ८ रोग छाफर शरीर छोडा ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १० मृगशिर पदि ॥ १३ ॥

॥ पट्टपात्र ॥

सुनि सम्मुह सुखराम१ लाल मरहट्ट२ उभय२ गय ॥
 मिलि पुटभेदन प्रविसि आइ केसव हरि आल३य ॥
 सपथ करन तँहँ सचिव दुव२ हि लै कर तुलसीदल ॥
 लगे परसपर दैन बदत दोउ२ न इक१ मन१ बल२ ॥
 तजि संक बैरिसल्लोत२६।३ तँहँ खेरापति भारत कहिय ॥
 तुम भरुज फेरु दमनक तरह जुग२बंधहु तजि छव जिया१४।

॥ दोहा ॥

रानि१नसौँ रु सुरूप२०४।३।सौँ, जसकर्ण३ हु सों जेम ॥
 मिलि मारे नृप४ सह निखिल, तुम न मिलहु इह तेम ॥१५॥
 अखिखय सुनि जालम अनखि, समुक्ति करत हम सौँहँ ॥
 क्यों फुरकावत तुम कुटिल, भीरुनकी गति भाँहँ ॥१६॥
 इम अगहन९ वदि२ दोजि२ दिन, दुव२सचिवन हित रविख
 करे सपथ एकत्त१ के, दै केसव विच सखिख ॥१७॥

॥ पट्टपात्र ॥

गयो तदनु कोटेस सचिव जालम१कोटा चढि ॥
 दूजे२ दिन सुखराम२ गयो तथहि विनोद बढि ॥
 हुत उततैं भूदेव देव१ मरहट्ट लाल२ दुव२ ॥
 ग्राम दोसपुर अवधि आत सुनि समुह आतहुव ॥
 सक इंदु अग्नि धृति१८३।१गत समय तिथि चउत्थि४ अगहन९ असित२
 डेरा दिवाइ उपर्वन निकट हुलासि दिखायउ परम हित ॥१८॥

॥ दोहा ॥

बहु बर फल१ मिष्टान्न२ बहु, सतदुव२०० रूप्य३ सत्थ ॥

१ पुर में प्रवेश करके २ विष्णु के मंदिर में ३ सौगन करने को ४ दमनक नाम गीदड़ की तरह ॥ १४ ॥ ५ सब ॥ १५ ॥ ६ सौगन ॥ १६ ॥ ७ एकता के ॥ १७ ॥ ८ घाग के पास ॥ १८ ॥

कोटा और बुन्दी के प्रीति होना] अष्टमराशि-द्वितीयमयूज (१८१५)

सुखरूप सचिवकी रीति मित, पठये ढेरन तत्थ ॥ १९ ॥
 *परिखद गो तिथि पचमिय^५, सुखराम सु धात्रेय ॥
 महाराव उम्मेद^{२०}५१सों, मिलन भयो हितमेय ॥ २० ॥
 जे आदरके सुभट जँहँ, हे बुदिय सत्त सग ॥
 तेहु मिले कोटेससों, अपिहित विहित उमग ॥ २१ ॥
 छट्ठी^६ दिन परिखद बहुरि, गयो सचिव सुखराम ॥
 जुद्ध गज^१न मल^२न जहाँ, पिकखे कौतुक काम ॥ २२ ॥
 सुखरामहिँ पुनि सिख दिय, सप्तमि ७ दिन कोटेस ॥
 सिरुपेच^१ रु सिरुपाव^२ सह, हय^३ दिय खास सुहेस ॥ २३ ॥
 बहुरि मल^१ मरहट्ट^२ के, आलय क्रम सन आइ ॥
 दोउ^२नतैं सिरुपाव^१२ हय^३१४, प्रीति रीति मित पाइ ॥ २४ ॥
 पुनि सुखराम मुकाम किय, नगर नैनता आनि ॥
 तस सगहि पठपो तिलक, महाराव हित मानि ॥ २५ ॥
 वहहि लाल^१ मरहट्ट अरु, पुर गैतापति नाथ २ ॥
 जौ टाँका सुखरामसों, मिले चलन सब साथ ॥ २६ ॥
 दुव^२ तुरग सिरुपाव दुव^२, इक^१ गज भूखन एक^१ ॥
 बुन्दी आइ निवेदि यह, इन किय मनति अनेक ॥ २७ ॥
 नाथ^१ हिँ लाल^२हिँ नाम प्रति, इक^१इक^१हय^३१२सिरुपाव^३१४
 दै बुन्दियपति सिख दिय, सचिवन कथन स्वभाव ॥ २८ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

याही सक इक गुन धृति^१८३१अतर, परघो मार लखनेऊ ऊपर
 टेक अमोघ रुदिल्लन टोला, दुखित करघो सु आसिफुद्दोला २९
 तव नवाब समुचित लाखि आयक, किय अग्नेजस्वकीय सहायक

॥ १६ ॥ *सभा में स्नेह के साथ ॥ २० ॥ १ प्रसिद्ध और वरित्त समग से ॥ २१ ॥ २१ ॥
 २ अष्ट हसनवाला घोड़ा ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ ४ जिन का
 इठ साथी नहीं जाय ऐसे रुदिल्लों के समूह ने ॥ २६ ॥ २ वरित्त रक्षक देखकर

जब नबाब दिय मुख्य जिलाका, इनहिं बनारस नगर इलाका ३०
लखनेऊ पति प्रथम दबि लिय, दंग कासिका सो अब इम दिय
पट्टु कंपनी देस वह पायो, अमल बढत तवैत इत आयो ॥ ३१ ॥
इहि नबाब या १८३१ ही सकमें इत, फैजाबाद रहनसौं ताजि हित
पुर लखनेऊ रहन समुक्ति प्रिय, करि थिति सोहि राजधानी किय ३२
दोहा-चरन द्वारकाधीसके, इत परसन चहुवान ॥

याही सक अगहन ९ असित २, श्रीजित किय प्रथान ॥ ३३ ॥

दरकुंचन अजमेरु १ व्है, अरु श्रीपुष्कर २ न्हाइ ॥

अग चलात मरुईसके, सचिवन अटके आइ ॥ ३४ ॥

करी अरज रहोर नृप, रक्खत मिलन उमंग ॥

सुनि श्रीजित गो जोधपुर ३, सत्य अलप लै संग ॥ ३५ ॥

मरुप आइ सम्मुह मिलि रु, पुर लैगो पधराइ ॥

रहि कछु दिन पुनि सिक्ख लहि, पहुँच्यो सत्थाहिँ आइ ३६

तदनंतर हंकत सजव, दिय संचोर ४ मिलान ॥

धरनाधिर ५ दरसन कियउ, पुनि अविर्त प्रथान ॥ ३७ ॥

॥ पट्टपात् ॥

बाबगाम ६ अभिधान नगर पहुँचिय पुनि श्रीजित ॥

ताके नृप चहुवान नाम गजसिंघ ठानि हित ॥

महमानी बिधि मंडि मन्नि सम्मद सुचिमानस ॥

करे नजर हय दोइ २ ते न रक्खे वैखानस ३ ॥

भंभाम ७ होइ दरकुंच तिम आडेस्वर ८ विश्राम लिय ॥

बलिँ ईस जजर्न बरनाँ ९ बिरचि तीकड़ १० जाइ मिलान दिय ॥ ३८ ॥

१ अपने जिले का ॥ ३० ॥ २ काशी नगर ॥ ३१ ॥ १२ ॥ ३३ ॥ ३ मारवाड़ के राजा के

॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ४ निरन्तर गमन किया ॥ ३७ ॥ ५ उज्ज्वल मन से हर्ष रचा ६

वानप्रस्थ (श्रीजित्) ने ७ फिर ८ महादेव का पूजन करने को ॥ ३८ ॥

तीकढ१० सन करि कुच बढ्यो प्रातीच्य मग्ग बलि ॥
 नगर मोरवी ११ जात मिल्यो जद्व सन्मुह बलि ॥
 जाढेचा नृप वग्घसिंह रक्खन निस दठ किय ॥
 तदपि रद्धो नहिँ तव्य जानि मग मिजल अल्प जिय ॥
 कछु दूर वग्घ १ पहुँचाइकै कति दय १ आयुध २ भेट किय
 लो इक्क सक्ति तिनमाँदिसो जाइ टकार १२ मिलान दिया ३९
 चढि टकार १२ सन चलत इक्क जद्व मग अतर ॥
 राजकोट १३ पुर नाह बस जाढेच घुरधर ॥
 नाम कुभ किय नजर आइ सन्मुह सु न रक्खिय ॥
 तदनु बीरपुर १४ जाड सिँविर रचना दित अक्खिय ॥
 रहि रत्ति बहुरि इक्किय सजव इक्क १ मुकाम मग मध्य का
 रेवत १ गिरीस तीरथ रुचिर परसन पत्तो प्रीति धरि ॥ ४० ॥

॥ दोहा ॥

जूनगढ १५ डेरा बिरचि, अप्प चढ्यो गिरि आइ ॥
 रेवत १५ के सब पुन्ययल, पिबखे सम्मद पाइ ॥ ४१ ॥
 हनुमतधारा १ होइ द्रुत, अवार दरसन कीन ॥
 परसी ओघढपादुका ३, पुनि गिरि चढत प्रवीन ॥ ४२ ॥
 बहुरि दत्त आत्रेयके, कुढ ४ आचमि १ रु न्हाइ २ ॥
 परसी ताकी पादुका ५, अचर्त्त रूग सिर जाइ ॥ ४३ ॥
 पाढव छत्री ६ आइकै, तँहँ धन गुप्त चढाइ ॥
 न्हाइ अपस्मृति कुढ ७ पुनि, पत्तो डेरन आइ ॥ ४४ ॥
 जूनगढ १५ सन चढि सजव, दरकुचन चहुवान ॥
 सरित गोमती १६ जाइ किय, माघ ११ अमा ३० दिन न्हाण ४१

१ पश्चिम दिशा के मार्ग २ मिजल छोटी जानकर ३ परछी ॥ १६ ॥ ४ डेरा करवे क
 कहा ५ पर्वतों का पति (पर्वतराज) ॥ ४० ॥ १ हर्ष पाकर ॥ ४१ ॥ ४२ ॥
 आचमन करके ८ पर्वत के शिखर पर जाकर ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥

श्राद्ध सहित उपवास करि, डेरा तत्थहि रक्खि ॥
 ज्योतिर्लिंग शिव१ जजन किय, अप्प जाइ हित अक्खि ४६
 सनि७ वासर जुत माघ११सित१, तिथि चउत्थि४वट तत्थ ॥
 पूजि नागनाथेसर पुनि, आयो डेरन अत्थ ॥ ४७ ॥
 तिथि सप्तमि७ कुंज३ दिन तदनु, रामहड़ा१७ पुर जाइ ॥
 दूजे२दिन चढि पोत किय, सागर१८ गमन सुभाइ ॥ ४८ ॥
 मंज्जन संखुद्वार१९ करि, जात निसा इक१ जाम ॥
 द्वारकेस हरि २० दरस किय, किय तँहँ च्यारि४मुकाम ४९
 रवि१जुत द्वादसि१२माघ११सित१, पुनि चढि नाव पधारि ॥
 गोपीपल्लव१ न्धान हित, पहुँच्यो विहित बिचारि ॥ ५० ॥
 डेरन दिस सँसि२दिन सुरयो, घटिय पंच५ निस जात ॥
 कावाभिध तँहँ वन्य जन, घल्लत हुव मग घात ॥ ५१ ॥
 गहन दुर्पासन तुंगं गिरि, बिच कापथ अति घोर ॥
 श्रीजित सन कावन सरिसँ, रचिय तत्थ रन रोरे ॥ ५२ ॥

॥ षट्पात् ॥

लरि इच्छित कर लैन बिसम मम मंत्तुंकार वनि ॥
 कावनके अधिराज रचिय घमसान नगम्मानि१ ॥
 अदिन चढि दुहुँ२ ओर तुपक१ तीर२ सु भुकि भारत ॥
 हंकि य न गिनैत हड्ड६१ कलह सुभटन हलकारत ॥
 गोलि१न दुर्सार फुटत तुरग बान२बिसँत बिल उँरग जिम ॥
 चोटन सिपाह घोटँन गिरत पारवँत लोटन प्रतिम ॥ ५३ ॥

१ पूजन किया ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ २ मंगलवार ३ नाव में चढ़कर ॥ ४८ ॥ ४ स्नान
 ५ पहर रात जाने पर ॥ ४९ ॥ ५ आदित्य वार सहित ॥ ५० ॥ ७ सोमवार के
 दिन ८ कावा नामक वन मनुष्य ॥ ५१ ॥ १० दोनों ओर ऊँचा पर्वत ११
 बीच में बुरा मार्ग १२ क्रोध सहित १३ भयंकर युद्ध रचा ॥ ५२ ॥ १४ अपरा-
 ध करनेवाला १५ नगम्मानि नामक काबों (लुटेरों) के पति ने १६ उनको नहीं
 गिनकर १७ छुसते हैं १८ सर्प के समान १९ घोड़े २० कबूतर लोटने के सदृश ॥ ५३ ॥

अगँ श्रीजित अहर१ बहुरि सञ्चन रन रुक्किय२ ॥
 अगँ श्रावन५ श्राम१ मरन उत्तर४।७ घन मुक्किय२ ॥
 अगँ मारुति१ जाबवान बहुरि सु विरुदायउ२ ॥
 अगँ वनपति सरम१ बहुरि अल अलिय लगायउ२ ॥
 अगँ सुरेस विक्रम अतुल१ कर दधोचिकीकस लयो२ ॥
 इकल बराह सिंहन असह१ बलि कुंफुर गन घिंटयो२ ॥५४॥
 जदपि क्रोध१ लोभादि तजे बुदीपुर सगहि ॥
 सहसा तदपि मिलाइ दयो जुज्जन बिधि जगहि ॥
 कावन अनुचित कहिय पुण्य जंता फल१ पावहु ॥
 मत्तो२ दे सब हमहि अदल तरु होइ पलावहु ॥
 इहि पैसभ दुष्ट करि दुव२ अनिय सैलन चढि दुहुँ२ ओर सन
 मग दोनि चलत श्रीजित मुदित रन दुव२ दिसलग्गे करना॥५५॥
 गिरि दत्तक ढगमगत टोल टोलन लागि टक्कर ॥
 तुष्ट लघु तरु१ तंभे२ रुड डकत भरि डक्कर ॥
 आनि मिलत कति अर्सिन बहुरि भज्जत चढि पव्वय ॥
 पैति लगत तिन्ह पिठि जाइ मारत धारत जय ॥
 उत्तरि दुश्ओर अदिन रंहिर दवित दोनि बट्ट सु बहत ॥
 पाउस प्रभाव जनु बुद्धि जल चलि खालन तालन चहत॥५६॥
 अति साहस लखि अरिन तुपक श्रीजित अब मल्लिय ॥

आगे ही १ आषण मास था और फिर चत्तर दिशा का मेघ रुका आगे ही
 २ इन्मान था और फिर जायवान ने विरुदाया आगे ही ३ केसरीसिंह था और
 ४ फिर पिच्छ ने डक लगाया पहिले ही अतुल पराक्रम बाणाधर था और फिर
 ५ हाथ में बल्ल लिया ७ आगे ही सिंहों को असह होनेवाला एकल सुवर था
 और फिर कुत्तों ने घेरा ॥ ५४ ॥ व्याघ्रा के ६ माया (घन) १० बिना पत्तों का
 वृक्ष (मग्न) होकर भागो ११ इठ १२ पर्वतों पर १३ दोनों पर्वतों की छेटी (नछे)
 के मार्ग में ॥ ५५ ॥ १४ पर्यंत के दांतों ऊबे खमरे हुए परपर १५ ठूठ १६ तर-
 धारों से १७ पैदल १८ रुधिर १९ ताणायों में जाना चाहता है ॥ ५६ ॥

दैं पञ्चय पर दिष्टि' घात मालिक सिर घल्लिय ॥

सेस नगम्मनि१ आयु तास मित्रन गुटिका हुव ॥

भट तस छिग दुवर भेदि भक्खि काळिक प्रविसी भुव ॥

पहुँचे ति२ दह्दह१ हँवर पयन रय हत विमत निररत रटि ॥

मनु मद्य मत्त आये उभय२ आधोरन इभसन उलटि ॥५७॥

॥ दोहा ॥

इक्क१ ओर कावन अधिप, हुतो नगम्मनि१ तत्थ ॥

सो श्रीजित सय लखि सफल, भीरु भज्यो सह सत्थ ॥५८॥

तास पितृव्यकर अपर२ दिस, सज्ज हुतो रन सीर ॥

गोलि२न ओल२न गैव्य वह१, वरस्यो घन२ बिधि वीर ५९

भट चालुक खदिरोट तँहँ, निज हय गिगत निहारि ॥

कावन पति काका हन्पो, रचि दलेल अति रारि ॥ ६० ॥

॥ षट्पात् ॥

कावनपति काका सु हुतो गिरि सिर दक्खिन२३ दिस ॥

ताकै चालुक तुपक लगी नव९ घटिय जात निस ॥

आइ परयो सु अचेत उलटि अंधभुम्मि अधोमुख ॥

मनु पट्टी सन मलपि नटी उलटी रथकी रुख ॥

सिर तास कटि मारक सुभट कंडुक कौतुक करन लिय ॥

इम दह्दह१माघ११सित१मदन अह१३कावन सन रन विजय किय ६

॥ गीतिः ॥

कावन पतिको काका१ मरतहि खिल मंद भीरु भजि गये ॥

१हाष्टि २ कावों के मालिक पर ३ उस नगम्मनि की आयु घाकी थी जिससे कलेजा खाकर ५ हाडा के घोड़े के पैरों में ६ मारे ऐसा कहकर ७

॥ ५७ ॥ ८ हाथों को सफल देखकर ॥ ५८ ॥ ९ उसका काका १०

ओर ११ प्रत्यञ्चा (यहाँ लक्षणा से वाण जानने चाहिये) ॥ ५९ ॥ १२ खैरा

नामक देश सम्बन्धी (खैराड़ा) ॥ ६० ॥ १३ नीचे की भूमि पर १४ वेग

१५ मारनेवाले श्रेष्ठ वीर ने १६ गैद का खेल करने को ॥ ६१ ॥ १७ घाकी के

श्रीजित जस रन एका, पूरन ससि बिस्तरी जय पताका ॥६२॥
 *मृध दस१० सागस मारे, करि घायल बीस२० व्याकुल बिहारे
 तिन *कुणापनके न्यारे, मस्तक लै सग डेरन पधारे ॥ ६३ ॥
 हुजसि बिरचि रन हितको, अमराभिध१ सिलहदार श्रीजितको
 हक१ मरयो वह इतको, आहीर उदार समर समुचितको ॥६४॥
 बाकी लुत्थि१हु आनी, स्वतुरग कुसहालचद सोमानी ॥
 श्रीजितको सो मैनी, प्रधानहो किति यों तिहि पतानी ॥६५॥
 तीन३ मरे इत१के इय, चालुक्य दलेल१ सिवजि२ इनके बै२।
 तीजो३ तथा जया रये, गगाधर१३ अग्निहोत्रि भूसुरको ॥६६॥
 सत्त७मुभट गोलि१नसों, सायक२सों इक्क१।८इक्क१।९असिबरसों
 ए९घायल हुव तिनसों, श्रीजित लै सब सम्हारि सिबिरचलो६७
 बीट नगर पति यह सुनि, भूप फतेसिंह कुसल पुच्छनकों ॥
 दूत पठाइ रु पुनि पुनि, तूचो लेजाहु मो भट सहाई ॥६८॥
 सो नहि मन्नि रु श्रीजित, अक्खिप तुमरे कहाँ कहाँ रहिहैं ॥
 तदनतर सत्य सहित, रामहडा पुर मुकाम आइ परयो ॥६९॥
 तँहँ बीटपुर नृपतिके, भट रामहडेस आइ रु इम भनी ॥
 मस्तक तस्कर तंतिके, देहु व तुमरे न कामदे तासों ॥७०॥
 सुनि यह बिन्नति श्रीजित, दुष्टनके छिन्न सीस दस१० दिन्ने ॥
 रामहडा१ पतिसों दित, करि इम प्रतिपथ अब क्रम्यो प्रेक्षी ७१
 ॥ दोहा ॥

रामहडा१ पुर वैं चलो, इम निज आश्रम ओर ॥

काबन पुनि मग रन करत, रचिय अमगल गरे ॥७२॥

॥ ६१ ॥ * युद्ध में १ अमरापी १ सुरदों के ॥ ६१ ॥ १ अमरा नामका ॥ ६४ ॥
 १ छोप (मृगक शरीर) १ आकर पाया ॥ ६५ ॥ १ इसी प्रकार
 बेगयाला १ ब्राह्मण का ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ७ कही ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ८ रामहडा के
 पति नेक्षोरों की पक्षि के ॥ ७० ॥ १० पूर्व दिशा को बखा ॥७१॥११ भया ७२६

दुव२ घायल इत१के भये, इक१उतको धुर धाइ ॥
 आर३ चउदसि१४ माघ११सित, रहिय गोमती२ आइ ॥७३॥
 बुध४ पुणिणाम१५ दूजे२ दिवस, रक्खिय तत्थ मिलान ॥
 भयउ चंद्र उपराग तैंहैं, दये उचित सब दान ॥७४॥
 वह तत्थहि काबन अधिप, नम्र नगम्मनि१ आइ ॥
 श्रीजित अगैं जोरि सँय, परयो पाय खिनपाइ ॥ ७५ ॥
 अक्खी यह कुल पूरुखन, बिरचि अगग रन बाद ॥
 अर्जुनसे लुट्टे इहाँ, तबतैं यह मरजाद ॥ ७६ ॥
 अब सरनागत रावरे, इह सुनि उचित बिचारि ॥
 सत१०० सुदा१ सिरुपाव २ सह, दिय श्रीजित हित धारि७७
 नदी गोमती२ सौं तदनु, बाबाके मठ३ आइ ॥
 क्रमि दामोदर दरस१ किय, रान४ मुकाम रचाइ ॥ ७८ ॥
 श्राद्ध पिंड तारक५ बिरचि, दान निगम बिधि दत्त ॥
 जहव नृप जाड़ेवके, नयेनगर ६ पुनि पत्त ॥७९॥

पादाकुलकम् ॥

जाम जैनन जाड़ेवा जादव, नयेनगर६ जसकर्णा१ धराधव॥
 सम्भुह नाईसक्यो सु बालवय, सचिव आइ इक्क १ कोस
 जोरि सँय ॥ ८० ॥

तनि आदर लैगो पुर वह तब, महारूप१ अभिधान मुसादव॥
 रत्ति१रहि सु मानी महमानी, मानी बहुरि नआग्रह मानी८१
 महमानी१ ग्रहमानी२ अन्त्यानुप्रासः ॥१॥

जाँमि तत्थ जसकर्णा जनककी, साधन संजम रीति सनककी
 पुब्ब समय याको हुव सगपन, सहर जोधपुर रामसिंहसनद

१ मंगलवार ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ २ हाथ जोडकर ३ समय पाकर ॥ ७५ ॥ ७६
 ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ४ वंश ५ प्रपति ६ नहीं आ सका ७ हाथ
 ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८ बहिन ९ सनक मुनि के समान योग साधती थी ॥ ८२ ॥

मूढ बहुरि तिहिँ राज्य गुमायो, पति ओर न यानै तउ पायो ॥
 निज धाता १ दिन जवपि निहोरिय, तउ न अन्य व्याहन मन मोरिय ८३
 तव गंतदेस मूढ वह हो तँहँ, पठयो तस होलाहि राँम पँहँ ॥
 जुहि इहिँ व्याहि तथा जह जान्यो, पुनि लै बत यह धर्म प्रमान्यो ८४
 पति अपमान इहाँ मन पावत, सोदर घर ईम हमहिँ सुहावत ॥
 यह कहि नयेनगर वह आई, पति सगति बहुरि न तिहिँ पाई ८५ ॥
 तिहिँ महमानी प्रसभ तनायो, मत्री नहिँ पे दुख न मनायो ॥
 कच्छी इय जसकर्ण भेट किय, रचत प्रसभ तिनमें इक १ रक्खिय ८६
 नयेनगर ६ बल्लभकुल नामी, हे नत्येस नाम गोस्वामी ॥
 करि तिन्ह दरसन १ भेट २ जथा क्रम, दूजे २ दिनहि चढयो सु
 अरिक्म ॥ ८७ ॥
 बदि २ तँपरय १२ नवमी ९ जिहिँ बासर, पहुँच्यो पुर मोरवी ७
 धर्म पर ॥
 तास अधिप सूच्यो सु वग्घ तँहँ, करत सयो इठ पुनि भोजन
 कैहँ ॥ ८८ ॥
 महमानी श्रीजित गु न मन्त्रिय, लर्धामै चउ ४ काचपात्र लिय ॥
 दरकुचन बदि २ प्रयोदसी १३ दिन, आई गहो म्काम ८ अतिन ईन ८९
 घनाक्षरी ॥

जातघेर याही पुर कीनौड़ी मुकाम जव,
 चोरननै चोस्थो पल्लीवाल बहुरेको बैल १ ॥
 श्रीजित करायो सब रीति अब ताको सोध,
 जनन जनार्इ गहि राख्यो तिहिँ कूटगैल ॥

१ मूर्ख २ वस छी के आई आदि ने ॥ ८३ ॥ ३ गये छुप देवाबाले रामसिंह के पास
 ८४ ॥ ४ इस कारण आई का घर छुहाता है ॥ ८५ ॥ ६ शत्रुओं को
 दब देनेवाला ॥ ८७ ॥ ७ फाल्गुन ॥ ८८ ॥ ८ भेट (नजराने) में ९ व्रत (नियम) बाधों
 में छुप ॥ ८९ ॥ १० जाते समय ११ पर्वतों के संगम के मार्ग (नखे) में

औ हैं वह अजहु चलाइ मन नामी चोर,
 जामिके जमाइ फार फेरहु परिधि फैल ॥
 दाव रावरेमें परिजाइजो असइ दुष्ट,
 खूटिजाइ तोतो धनिकनको इतहु खैल ॥ ९० ॥
 सिबिरके जामिक जमाये गूढ श्रीजितनै,
 चितहि चलाइ पैठो रातिमें वहहि चोर ॥
 चालुक दलेलः खदिराटे गुटिका चलाइ,
 मारि सुहि लीनों महा चौरनको सिरमोर ॥
 लीनों सिर काटे सो दिखायो पुरलोकनकों,
 आइ तिन सूची यह सोही दुष्ट नहि ओर ॥
 पीछे दरकुंच धरनीधर ९ पधारि पंथ,
 व्है संचोर १० सहर जरूर पहुँचे जालोर ११ ॥ ९१ ॥
 दूजे २ दिन लागो मधु १ मासको असित २ आदि १,
 मानों इम जालोर ११ दि होला १५ १ फुल्लडोल १२ मह ॥
 जालउर ११ तैं चढि द्वितीया २ दिन धारि ज्व,
 अधवनीन पल्ली १२ पुर आये अपबुद्ध अह ॥
 भेजे तँह पत्र जोधपुरतैं विजय भूप,
 गेही व्है पधारो गेह थानि इहाँ पानिमह ॥
 मानी सोन मौनी दरकुंच मधु मेचक २ की,
 एकादसी ११ कीनी आइ पुष्कर १३ समस्त सह १९२।
 दरसन १ न्हान २ दान ३ तत्थ करि ताही दिन,

१ पहरायतों के २ समूह का घेरा ३ दुःख मिटजावै ॥ ९० ॥ ४ डेरे के पहरायत
 ५ खैराड़े सोलंखी ने गोली चलाकर ॥ ९१ ॥ ६ चैत मास के यदि पक्ष का
 प्रथम दिन ७ वह मार्ग चलनेवाला पालीपुर में ८ नहीं जानेहुए दिन में ९
 राजा विजयसिंह ने १० वानप्रस्थ से गृहस्थी होकर ११ यहाँ विवाह ठान (कर)
 के छरे जाओ १२ उस स्नानवाले ने वह बात नहीं मानी १३ चैत्र यदि ॥ ९२ ॥

मग्न कछु लघि मकड़ावली १४ करि मुकाम ॥
 दतधृति १८३२ सबतके चैत १ सित १ आदि १ घौंस,
 आये इम आपुनै बरोदिया १५ नगर नाम ॥
 रामनवमी ९ के दिन बुन्दी १६ आइ रच रहि,
 धारी रहिवेकी ठानि केदारेस ढिग धाम ॥
 बाग १ कुंड २ महुल बडे जव बनावेको,
 दीनौ आप सासन हजारन खरचि दाम ॥ ९३ ॥

आर्यागीति ॥

इहि विधि पच्छिम ३१५ वारी, जात्रा करि वानप्रस्थ ३ पनमें जानै ॥
 वसुधातल विस्तारी, निर्मल निज किति चद्रिका इक १ न्यारी ९४
 इति श्री वशमास्करे महाचम्पूके उत्तरायणोऽष्टम ८ राशौ विष्णु
 सिंहचरित्रे आठोण कोटाकटकपराजितकोटानिष्कासितकोटाबन्धु
 देवीसिंहधात्रीभ्रातृजसकर्णसहितजयपुरगमनश्रीजिद्राज्ञीराष्ट्रकूट
 तनुत्यजनकोटाबुन्दीमन्त्र्यैकमस्यकरणा रुहिल्लभीतलखनऊपतिन—
 ब्वाबस्वसहायायांगरेजकाशीपुरप्रदानत्यक्तफैजाबादलखनऊस्वरा—
 जधानीविधानकृतद्वारकाधीशदर्शनश्रीजित् (उम्मेदसिंह) बुन्दीप्र—
 स्थागमन द्वितीयो मयूख ॥ २ ॥ आदित ॥ ३५२ ॥

॥ प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

१ शीघ्र ॥ ६६ ॥ ६४ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के आष्टमराशिमें विष्णुसिंह के चरित्र
 में कोटा के राजवी, देवसिंह का आठोण में कोटा की सेना से हारकर, कोटा
 से निकाले हुए लक्षकर्म बायभाई सहित जयपुर जाना १ श्रीजित की श्री रा-
 ठोड़ी का शरीर छोड़ना और कोटा व बुन्दी के मंत्रियों का एकता करना १
 रुहिलों से धरारफर अपने सहायक अंगरेजों को लखनऊ के नबाब का, काशी
 पुर देना और फैजाबाद को छोड़कर लखनऊ को अपनी राजधानी करना ३
 श्रीजित (उम्मेदसिंह) का द्वारकाधीश के दर्शन करके पीछे बुन्दी में आने का
 दूसरा १ मयूख समाप्त हुआ ॥ २ ॥ और आदि से तीसरी बाब ३५२ मयूख हुए ॥

॥ दोहा ॥

जैता श्रीजित करन जब, पच्छिम३५ किय प्रस्थान ॥
 तब बुंदी पठयो तिलक, मरुपति विजय समान ॥१॥
 इक१ मनि भूखन इकक१ इम, दुवर२ दय दुवर२ सिरुपाव ॥
 इम टाँका पठयो इहाँ, समताँ रीति स्वभाव ॥२॥
 तिलक निवेद्यो आइ तिन, विष्णुसिंह२००१२ नृप अगग ॥
 दिन्नी दय१ सिरुपावदै, उनको सिक्ख उदग्ग ॥३॥
 भूत कथा कछु भाखिपत, पहु अब पाइ प्रसंग ॥
 जिम उदंत मेवार हुव, सुनिये तिम हित संग ॥४॥

॥ राजसवतिका ॥

अगगै उदैपुर रान संग्रामकै धात्री तनै नगराज मुसादव ॥
 केसरीसिंह सलूमरि सासक जो भन्योँ सो भट मुख्य हुतो जब
 बिग्रह ताँके तथा नगराज२कै बोलनमें बढतो परिगो तब ॥
 मूँछनवारी सिंवा कहतो इम राउतकोँ नगराज मरयो अब५॥
 राउतकी करि कानि तथापि कह्यो तस मानि करयो हित रानतो
 सोमरिबे लग्यो केसरीसिंह पटुत्व न पुत्रनमें पहिचानतो ॥
 गो जसवंतहु देवगढेस जहाँ हित पुच्छन संभव जानतो ॥
 केसरीसिंह कह्यो तब ताहि रह्यो अब रानकै तूही प्रधानतो६
 पाटव नाँ ममपुत्रनमें तिन मूँछनकी अब लाजहै तोकर ॥
 सो सुनिकै बिसवास बढाइ घरीक रह्यो जसवंत चलयो घर ॥
 पंथमें भाख्यो नहै निज पूत भरोचित योँ अब देत हमैं भैर ॥

१ पात्रा ॥ १ ॥ २ बराबर की रीति से ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ हे राजा रामसिंह ३ अब
 कुछ कथा गयेहुए समय की कहता हूँ ॥ ४ ॥ ५ धाय का पुत्र ६ मूँछोंवाली
 स्यालनी (गीदड़नी) ॥ ५ ॥ ७ अदब = पुत्रों में चतुर पना नहीं देखता था (अ-
 पने पुत्रों को चतुर नहीं जानता था) ॥ ६ ॥ ८ चतुरपन १० इन सूखों की ल-
 ज्जा तुम्हारे हाथ में है ११ अपने पुत्रों का भरोसा नहीं है इस कारण हमको

सगव्हे राउतके चर सो सुनि दोरि कही निजस्वामिसौं सखर॥७॥
 प्रानित सेसहो राउत पै सुनि दर्पको बेन कहयो जसवत सु॥
 पंढसौं ताकहैं पीछो बुलाइ धयो नहिं तोषस मो सुत धी वसु ॥
 जेठो१ कुबेर१ छमाजुत पै लहुरो सबसौं यह लाल अहो असु ॥
 रावरे लैन विधां रचिहै पुनि धोजिहोतो अब छीजिहो ज्यौं पसु॥८॥
 राउत बेन ए राउतके सुनि आयो निगूढ बिरोध सम्हारिकैं ॥
 राउत अत अनतर रान कुबेर गिन्यो तिहिंठाँ सतकारिकैं ॥
 भो अरिसिंह उहाँ जब भूप करयो जसवत सुमली विचारिकैं ॥
 केहरि मूनूनसौं यो कहयो तुम कटहु काल स्वगेह सिधारिकैं॥९॥
 साँझ हवेली सलूमरिको यह सासन राउत१ रान२को आवत॥
 राति सो काटी दुखी रहिकैं कहिकैं खल सो नृपको बहिकावत ॥
 लौ सब भ्रातन प्रातही लाल महा ठिग डयोढी गो सोक मचावत॥
 घेसैं दई नृपको अरजो क्रमिहै हम ह्वै प्रभुके पप पावत ॥१०॥
 संधके जावनको नहि सोक पै जैहैं अहो प्रभुको लखि जीवत ॥
 वज्रसे ए सुनि लालके बेन बढयो सबके मन धोका चढयो बत॥
 सोदर माँहि बुलाये सबे मिलवे लगी सीख तैंहैं छलके मत ॥
 स्यालैं सो मारिच चूरन लेस छुवाइकैं नैनन रोयो दृथा छत ॥११॥
 पहुँछैं घनी हिचकी भरि पार्ष कखो अब दासतो जावत गेहको ॥

मार देता है १ राउत केशरिसिंह के आकर ॥ ७ ॥ २ केशरिसिंह के प्राण
 कुछ ही पाकी थे तोभी ३ मार्ग में से जसवन्तसिंह को ४ कहा ५ हे बुद्धिमान
 मेरे पुत्र तुम्हारे भरोसे पर नहीं हूँ ६ परंतु यहा छोटा पुत्र लालसिंह ७ तुम्हारे
 प्राण छेने की आशय्य युक्त ८ विधि रखेगा ॥ ८ ॥ ९ जसवन्तसिंह, केशरिसिंह
 के ये वचन सुनकर निश्चय ही गुप्त बैर विचार कर आया १० केशरिसिंह को
 मेरे पीछे ११ केशरिसिंह के पुत्र से ॥ ६ ॥ १२ जसवन्तसिंह और महाराणा
 का हुक्म १३ यहा ठग लालसिंह १४ स्वामी के चरण छु (स्पर्श) कर ॥ १० ॥
 १५ घर जाने का १६ वह गीदख (ठग) मिरण का घृण धोखा सा नेत्रों के लगा
 कर बिना घाव रोया ॥ ११ ॥ १७ बहुत पूजने पर १८ पापी ने

नैक *विविक्त मिलेंतो निदान दिखाइ कहैं सुभ वैं प्रभु देहकों ॥
 भीत मनोवस सो सुनि भूप निगूढलै पूछे जनावत नेहकों ॥
 लंबे निसास कह्यो तब लाल मढ़ा ठिग छोरत अश्रुन मेहकों ॥२१॥
 जो प्रभु मंत्री करयो जसवंत सो वालिस रवामिसों द्रोह विचारत ॥
 पुण्यसों आपसो पाये प्रभू हम पाये सबै सुख यामें निहारत ॥
 पापिनी जीभतो काटीपरैं पर पापी स्वघातपै हाथप्रसारत ॥
 नाथके आनि पितृव्यक नाथ धनी करिहैं यों कहे हमें धारत ॥२३॥
 पायो हुतो हम लेख प्रमानको वृष्टिमें विलन्न सुतो विगय्यो गयो ॥
 सत्यकरैं हम रावरे सौह नतो सुरनाँ जो प्रबोध परयो गयो ।
 हेरतहे पुनि पैवो प्रमान डतेविच काढिही दैवो अरयो गयो ॥
 पेखिबो यार्ते चहयो प्रभुको रु कहयो प्रभुतो अब रूपात करयो
 गयो ॥ २४ ॥

यामें प्रमान लाखो वैं यहै जसवंतसों गूढ कहो तुम जाइकैं ॥
 पापी पितृव्यक वग्धपुरेस निपातहु नाथ बिसास बढाइकैं ॥
 जो तुम यों न करो जब तो हमरे तुमनाँ यों गिनैं हम ढाइकैं ॥
 एह करैं जसवंत तो आप कृपात्रन देहु हमें निकसाइकैं ॥२५॥
 दौसनकों अथवा दै निदेस निहारहु नाथ पितृव्य निपातिहैं ॥
 चामर १ छत्र २न लौबे चलयो मन जाको अहो अधमाधम साँमित ॥

* एकान्त † इस रीते का कारण दिखाएँ ‡ मन में भय दृष्ट कर
 १ एकान्त में लेकर ॥ १२ ॥ २ वह सूर्य ३ हमने इसीमें सब सुख पाये हैं ४
 आप को मारने पर ५ आप के फाका नाथसिंह को स्वामि बनावेगा ६ हलकारण
 हमको काढता है ॥ १३ ॥ ७ इसके प्रमाण का लेख (पत्र) पाया था सो
 तो वृष्टि में भीज कर बिगड़गया ८ कानों में ९ प्रसिद्ध किया गया ॥ १४ ॥ १०
 अब ११ गुप्त रीति से १२ पापी बागोर के पनि हमारे फाका १३ नाथसिंह को
 मारो १४ तुम हमारे नहीं हो ॥ १५ ॥ १५ चाकरो (हम) को हुकम देकर १६ ना
 थसिंह को मराहुआ देखो १७ नीच के सदृश

लालसिंहकानाथसिंहकोमारनेकोकपटरचना]अष्टमराशि-मूर्तिविमयुक्त (१८१६)

स्वामिको सासनही सिर लौ हम मारैं पिताहुको धार नही दित ॥
भीम कुबेर तेनैहू भन्यो यह काका कह्यो सुहि जान्यो असाकेत १६
मनस्वी हुतो अरिसिंह तथापि सिद्ध्यो सुहि केहरि नैतियकी सुनि ॥
आसु इवेली पठाइ इन्हैं चैलचेत न सोच्यो सुनी निहचै चुनि ॥
जो निज काका १ तथा जसवत परस्पर मित्रहे देरी सुपे पुनि ॥
देवगढेस गिन्यो बरल्यो नृप नदसौ मल्लियनाग जथा मुनि ॥ १७ ॥
सो जसवत हुतो मन सुद्धहि चित्तहु स्वामिसौ दोह न चाहत ॥
एक सलूमरि पै अनख्यो १ चहुर्यो दित नाथके साथ निबाहत ॥
लालके जालमैं यो उरभ्यो सकली अरिसिंह भली न समाहत
जालमैं कोटा रच्यो निधि जो सु उदैपुर भो उलटी भवगाहत १८
जसवत विनिक्त बुलाइ जहाँ अरिसिंह भन्यो मम काका अहो ॥
प्रतिकूल रहैं रु चहैं प्रभुता तिनको तुम गजि इनो १ कि गहो २ ॥
जसवत कह्यो प्रभु आप जहाँ कुछ दोह प्रतीति प्रमान कहो ॥
नहितो विपरीत पितृव्य नहे बहिके कहूँ क्यों गुरुहेत्या बहो १९
अरिसिंह कह्यो विनु मर्तुहु एह कह्यो हमरो तुम ज्योत्यों करो ॥
प्रतिकूल तुम्हें नहि जानिपरैं हम जानत यातैं कलेस हरो ॥
जसवत कह्यो हम मित्र जहाँ हम सामन मोहिको क्यों दे अरो
यह ओरको सोंपिकैं मेरो उदाँ ध्रुव सूचन जानिकैं कैरा धरो २०
सुनिकैं यह राउतकी अरिसिंह स्वपच्छमैं जानि सलूमरिके ॥

१ कुबेरसिंह के पुत्र भीमसिंह न भी कहा ॥ १९ ॥ २ अरिसिंह वीर था तोभी
३ केसरीसिंह के पोते की पात सुनकर ४ अक्षायमाम बिस्वामो महाराणा ने
५ मन्द नामक राजा से चायक्य मुनि पदला था जिस प्रकार ॥ १७ ॥ ६
नाथसिंह से स्नेह रखता था ७ जालमसिंह गाला ने कोटा में रबी थी यह
रीति ॥ १८ ॥ ८ जसवन्तसिंह को एकान्त में बुलाकर ९ आश्चर्य युक्त १० वदप
पुर का स्वामीपन ग्राहता है ११ यथा पाप लेते हो ॥ १२ ॥ १२ विना अपराध
है तो भी १३ कैद करो ॥ २० ॥

जसवंतसों भाख्यो नमानों जहाँ करिहैं न रवपच्छमें केहरिके ॥
 तनि व्याज बिसास यों सिक्ख दै ताकों बलिष्ठ सहायहुमें बरिके
 बलिं वा ठिगकों ठिग आप बुलाइ कहयो अरि१मारि तथा अरिके२
 मत आपुनो जो न चहैं मनसों सुहि सत्रुको पच्छ समाहनोहै ॥
 बलि बग्घपुरेसके संग बली व्है ठरैं उतकों सुपे ढाहनोहै ॥
 यह देवगढेसहु छद्दी अमात्य बनीपैं बिगार निवाहनोहै ॥
 तुममांहिसों जो फटि सूचैं तिन्हें दुखदाता सुपे दव दाहनोहै२२
 पहु रान बिसासके यों चउ पंच दुर्घाँ पटु लालके संग दये ॥
 जसवंतसों छानैं प्रेगोधि यों जे पहु वग्घपुराधिपपैं पठये ॥
 वह धर्म बिचच्छनैं नाथ अहो भयहीन हुतो तहैं सज्ज भये ॥
 पठई कहि भूपतिके पठये इह आपे करैं कछु मंत्र अये ॥२३॥
 वह बग्घपुराधिप नाथ उहाँ क्रम नित्यसमै सिवपूजा करैं ॥
 इहिं ताही समै ठिग आवनकी पठई कहिनोतो बिलंबपरैं ॥
 इक१लालकों आवनदेहु इहाँ छठ जानि यों नाथहु भाख्यो हँरैं
 सठ जान्यों मिल्यो यह ईष्टसमै बहुमें हम घातकक्यों उवरैं२४

१ केसरीसिंहवालों के पक्ष में तुमने निकाल देने की कही सो नहीं करेंगे २ झूठा विश्वास फैलाकर ३ बलवान ४ फिर उस ठग लालसिंह को पास बुलाकर ५ शत्रु (नाथसिंह) और उसके पक्षियों को मारो ॥ २१ ॥
 ६ शत्रु के पक्ष का कपड़ना है ७ बागोर के पति के साथ ८ छली ९ नाथसिंह को सूचना करदेवे तो १० दुःखदाई है जिसको भी अग्नि में जलाना है ॥ २२ ॥
 ११ देवगढ के राउत जसवन्तसिंह और बागोर के महाराज नाथसिंह, इन दोनों ओर से चतुर अर्थात् उक्त दोनों ओरवालों को यह छल नहीं जतलाने वाले को जसवन्तसिंह के छाने १२ समझाकर १३ बागोर के पति के ऊपर १४ चतुर १५ महाराजा के भेजे हुए ॥ २३ ॥ १६ इस कहने में तो बिलंब होता है परन्तु उसने शीघ्रता की, अथवा लालसिंह ने कहलाया कि आप से कहना है जिसमें बिलंब होता है १७ धीरे से कहा १८ अनुकूल (बाहादुर) समय ॥ २४ ॥

खिनमें तँहँ जाइ महाखलकी बलकी मनसुखपै तेग बही ॥
 सिर चाइत मूरको मानि मनो सिरपै सिवकी रुचि जाइ रही ॥
 सु महीप उमेद १९८।४ प्रभुत्य सभै क्रम प्रस्तुत ठाँ सभ वत्त कही
 अब जेपुर राज्य उदत इहाँ चहि सूचन सो पुनरुक्त बही ॥ २५ ॥
 दोहा—काका घातक सोहि करि, लघु१ गुरु२ संगत लाल ॥

भैसरोगव दे भये, कुहकँ सु रान कृपाल ॥ २६ ॥

जिम चमके जसवतकोँ, निजखिन पाइ निकारि ॥

भय विरहित अरिसिंहभो, भुव भीमहिँ निज धारि ॥ २७ ॥

भाखी जिम पहिलै भये, सहित रान समाम ॥

जगत२ पता३ अरु राजहँरि४, ते न बचे बिधि तारि ॥ २८ ॥

पचम५ अब लहि पट्टकोँ, भो अरिसिंह भुनाल ॥

सोपै जानहु प्रभु सुमति, क्रम सम भूतहि काख ॥ २९ ॥

॥ राजसवतिका ॥

केहरि१को सुत जेठो कुवेर२ नहो तँहँ भीम१सु हो तस नदन
 ताको पितृव्य छली इम तत्य महाखल लाल कहायो महामन
 जेपुर व्याही सुता जसवत सुही अबलव विचारि क्रियो सन ॥

१ रायराजा छमेदसिंह के राजापन के समय में क्रम पूर्वक २ प्रकरण
 के स्थान पर आगे की सभ बात कही है ३ अब यहा जपपुर राज्य
 का घृणान्त थाइ कर फिर इस बात को कहना चाहा है ॥ २५ ॥ ४ काका
 के मारनेवाले उस लाजसिंह को छोटे से बड़ा बनाया अर्थात् छोटे
 सम्राटों में था जिसको बड़े (सौख्य) सम्राटों में किया ५ उस दग पर राणा
 कृपालु हुआ ॥ २६ ॥ ६ अब से दूर हुआ, निश्चय ही सख्खर के राजत भी-
 मसिंह को अपना जानकर ॥ २७ ॥ ७ राजसिंह ८ तहाँ ये नहीं रहे ॥ २८ ॥
 ९ क्रम से १० भूत काख (गत समय) ही जानो ॥ २९ ॥ केजरीसिंह का बड़ा
 पुत्र कुवेरसिंह उस समय नहीं था, उस का पुत्र भीमसिंह ही था, जिसका
 काका लाजसिंह इस प्रकार ११ बीर कहलाया १९ वर्षों से

भीत उहाँ पहुँच्यों भयतैं सुत राघवदासकों सौँपि धरा धन ॥३०॥
 सूनुगुपाल पुरोगै समेत घनै भय सो जसवंत सुताधर ॥
 पुत्री समेत उभैरसुत पुत्रीके आपुनै जानि प्रधान वन्द्यों अर ॥
 यों अरिसिंह सलूअरि सासक भीम प्रधान करयो निजदे भर ॥
 आपुनै ओरँ गिन्यों नहि याहित पंचरु रानार ईचे न पररपर ॥३१॥
 याहितैं पीछैं विरोध उठयो सिसुं पै प्रकटयो वह रत्नसनामक ॥
 कुंभिलमेरु निवास करयो रुधरयो बटि अर्द्ध-धराधनधामक ॥
 व्हेगयो नास हजारनको रन दक्खिनर ॥३२॥ दुबरेवर विरामक ॥
 सो तिम पीछैं हन्यों अरिसिंह भयो नृप हम्म बढे भट भामक ॥३२॥
 जैपुरहो तबतैं जसवंत समार्थ्य पाइ सुतारु सुतासुत ॥
 रानीहू राखि पितौही प्रधान भुजा तस राज्यको भार दयो द्रुत ॥
 ओ इक १ बिप १ महावत २ इक १ उभैर भुज १ २ ए रु रह्यो सिर
 २ ३ राउत ॥

राज्यको काज सिसुंपजारानिप १ जो करैं सो सब या त्रिक ३ संजुत
 ए कछवाहनके उरमें नहिँ मावत तीन ३ जुते धुर नायक ॥

च्यारि ४ नकों डम कैद चहै दुरविधा बटि द्वैरे २ जथा दुखदायक ॥

१ अपने पुत्र राघवदास को देवगढ का ठकाना और धन देकर ॥३०॥ २ पाँहले
 गयेहुए अपने पुत्र गोपालसिंह सहित ३ पुत्री के घर (जयपुर) गया ४ अपनी पुत्री
 [माधवसिंह की राणी] और ५ पुत्री का पुत्र दोहिते पृथ्वीसिंह और प्रताप-
 सिंह सहित अपना जानकर ६ शीघ्र ७ दूसरे को अपना नहीं समझा ८
 इसीकारण मेवाड़ के पंच सरदार और राणा अरिसिंह परस्पर नहीं राचे [रंगे]
 ॥ ३१ ॥ ९ कृत्रिम बालक रत्नसिंह भी पैदा हुआ १० नाश करनेवाला ११
 हम्मीरसिंह राणा हुआ १२ धूर्त उमराव बढे ॥ ३२ ॥ १३ श्रेष्ठ आश्रय
 पाकर १४ बेटी और दोहितों का १५ पिता जसवंतसिंह को ही सचिव रखकर
 १६ शीघ्र १७ बालक सन्तानवाली रानी ॥ ३३ ॥ चारों का १८ दो भाग करके
 यथासंख्या से दुःखदायक कैद किया चाहते हैं जिनमें राजा पृथ्वीसिंह की

न्यारे नरेस प्रसू१रु नरेस२ ए भिन्न करें हंगकैद अभायक ॥
विप्र१३ रु मिच्छ१४ छली वजसों धरि कंारा करें निज कज
विधायक ॥ ३४ ॥

॥ दोहा ॥

दिष्टिकैद विच ए दु२घाँ, रानी१ अरु नृप२ रक्खि ॥
द्विज१ रु मिच्छ२ कंारा दुव२हि, सठ ठारहिँ सब सक्खि३५
नाँनाँ१ मत्री नृपति०को, सुत२ जुत ताहि निकासि ॥
कपोंन अमल अपनों करें, तेगन बल खल आसि ॥ ३६ ॥

॥ घनाक्षरी ॥

राजाउत१ नायाउत२ थभ राज्यके जे यिर,
प्रीत बनि अर्यपेँ दिखाइ इठवारी प्रीति ॥
रानी१ अरु राजा२ भिन्न भिन्न दुव२ ठाम रौहि,
नाँनाँ१अरु माँमाँ२द्वै२निकासिवो समुक्ति नीति ॥
विप्र१रु महावत२को भिन्न ठाँ निगढबाधि,
आपुनों सम्हारि राज्य टारहिँ अरिनईति ॥
अैसी सोचि कूरम विचरिँ निज दाव आयो,
जानै भाव आयो मुख्य रहिहैं सबन जीति ॥ ३७ ॥
मौधवमहीप लघुता१सों गुरुता२में जाइ,
आगैखुसहालीराम१ सो दिजे खँडेजवार ॥
मत्री करि मान्यो पुनि रानीसों कहयो मरत,

१माता और राजा का नजर कैद छुड़े करदेवें और खुशाखीराम बोहरा और
३फीरोजखा महायत को कैद करके विधान पर्वक अपना कार्य करें ॥ ३४ ॥ ५
नजरकैद ६ कैद ॥ ३५ ॥ ७ राजा के नाना देवगढ़ के रावत जहाचतसिंह को
पुत्र सहित निकाल कर ८ तरवारों के पख से ॥ ३६ ॥ ९ रोककर १०कैद करके
॥ ३७ ॥ ११ राजा माघवासिंह ने १२ खुशाखीराम आग्रय को छोटे से

याको बस दुर्ग^१ रु खजाना^२ नीति अनुसार ॥
 दूरकरि या^१कों नहिँ ओर^२ कों उचित दैवो,
 याँतै हुतो ताही के अधीन उक्त अधिकार ॥
 त्यों फीरोज^२ नाम सु महावत बढायो तानैं,
 द्रव्य कैर लावन हुतो सो तहसीलदार ॥ ३८ ॥
 राजसिंह ३ नामक हमीरदेव कूरमके,
 बंसमें हुतो जो लघुपंतिबिच बारगीर^१ ॥
 नासरदानैर दै बढायो सोहु माधवनैं,
 सेनानी बनायो स्वामिधर्मके समुक्ति सीर ॥
 माधवके सरत उतारयो अधिकार याको,
 पीछैं सब ओर लखी प्रसरी प्रजापैं पीर ॥
 सेखाउत पीछो लै मनोहरपुरहिँ सजे,
 सोहि तव सेनानी बहोरि कीनों गिनि बीर ॥ ३९ ॥

॥ दोहा ॥

स्वामिधर्मपन दर्प सठै, राखतहो यह राज ॥
 राजकाज बिगरत रहयो, लोपि बहहु वह लाज ॥ ४० ॥
 राजाउत वाहि न रुचत, देखि पट्ट दायाई ॥
 वह^३११ न रुचत राजाउतन, बहुरा^२ जुत लुँत बाद ॥ ४१ ॥
 कीरतिसिंह भूलायको, ईस जु पुब्ब अनेह^१ ॥
 बहुरी द्विज किय हीन बल, बैर बँहत अब एह ॥ ४२ ॥

बडा बनाकर १ गह २ हाखिल का धन लाने को ३ अपना भार आप उठाने-
 वाला छोटा नौकर था ४ सेनापति ॥ ३९ ॥ यह ५ सूख ७ राजसिंह
 स्वामिधर्मपन का धमड रखता था ॥ ४० ॥ ८ जयपुर के पाट के दायभागी
 होने के कारण राजावत उसको नहीं रुचते थे ९ बहोरा खुशालीराम सहि-
 त १० स्तुति के वचनों से राजावतों को नहीं सुहाते थे ॥ ४१ ॥ ११
 पहिले समय में १२ वह बैर रखता था ॥ ४२ ॥

पै अतिवृद्ध भलापपति, आयु वितावत अँन ॥

बखतावर१ तस सुत तकत, लहि खिन बैर सु लैन ॥४३॥

॥ घनाक्षरी ॥

विप्र बहुरा जो खुसहालीराम१ मारूपो बुध,
अहित भलापको हुतो जिहिँ प्रसभ आनि ॥

माधव मदीपतिकों गेरि निज सम्मतिमें,

कीनों सत्रुसाल२ तुल्य सुभट बढाइ कानि ॥

काका बखतावर१ को हो यह सतार२ कुमति,

जानैं तिय खीचि१३निपैं लाभ सु दुलम जानि ॥

पतिके नियोग लैं भलाप उपमेयपन,

पाइ राखी राखी खुसहालीराम द्विज पानि ॥ ४४ ॥

पिप्पलदा१ यातैं राजधानीकों बितरि पुरी,

सत्रुसाल द्विजनैं करयो इम भलाप साल ॥

दावि बलसों सो बलसों जो तिन दाव्यो देस,

किंति हरि कीनों विधि विधिसों तब विहाल ॥

माधवके मरन अनतर समय मत्त,

जैपुर प्रसारि बखतावर कुहक जाल ॥

ठानि बहुरेको पकराइवो स्वमति ठीक,

चितैं इनिहारिवो जथातथ अहित चाल ॥ ४५ ॥

राजाउत१ नाथाउत२ इनकै सदा विरस,

१घर में ॥ ४३ ॥ २ बहुरा १ खोटी बुद्धिवाला २ शत्रुशासक ३ भलाप के पति की जिसको उपमा लगे ऐसे शत्रुशासक अपने पति की धमाला छोकर खीची जाति की स्त्री ने खुशाखीराम द्राघ्यण के साथ में ६ राखी रक्खी (राखी बांधी) ॥ ४४ ॥ इस नारायण पीपलदा नाम राजधानी ७ देकर ८ खुशाखीराम ने शत्रुशासकको भलाप का शासक कर दिया, जिस देशको भलापपाकोंने बल से दबा लिया था उसको इसने बल से दबाकर ९ कीर्तिसिंह को विहाल किया १० बखतावरसिंह ने जयपुर में ठग जाळ फैलाकर ॥ ४५ ॥

हो तिम फल्यो सु लखो दिष्ट फल हाइ हाइ ॥
 ए उभैर कहूँक एक १ ओकहु वनत अन्य २,
 अैसे प्रभु राज्यको नसैवे लगै अनखाइ ॥
 नाथाउत चोमूपति पहिले समै अनखि,
 जैपुर बिहाइ करयो जोधपुर बास जाइ ॥
 चोमूँके ठिकानैं तब नारव प्रताप चाहि,
 बैठाख्यो नरुका राजगढ पुर वै बढाइ ॥४६॥
 एक १ सुरूप बैठक दुर्ठाम भई वादिनतैं,
 चोमूपति पीछैं आइ आपुनैं वहहि चाहि ॥
 बंछत भयो मन नरुकेको विगार करि,
 त्योंही जयनैरतैं निकास्यो भ्रम डारि ताहि ॥
 तुरगी कितेकनसों जट्टके निवासि तानैं,
 दिल्ली देखि बूडत समीपके सुहृद दाहि ॥
 लोलुपनैं द्वैहिधौं विचारिराख्यो लडु लोभ,
 जैपुरसों जानैं त्यों न जैपुरको जानैं जाहि ॥४७॥
 जैसे झल जालम भो कोटामैं महाकुहक,
 नारव प्रताप तैसे जैपुरको चिंति नास ॥
 अंतर १ मिलाइकैं भलायके कुमर १ आदि,
 बाहिर २ बढाइ मोघैं बहुतनकै बिसास ॥
 भूपतिको बियागुरु राजा जो बजत भट्ट,

१भाग्य के फल ले २ एक घर में भी ३ अपने स्वामी के राज्य को ४ छोड़कर
 ५ राजगढ के पति ५ नरुके प्रतापसिंह को बढाकर चोमूँ की बैठक पर बिठा
 दिया ॥ ४६ ॥ ७ उस प्रतापसिंह ने कितने ही सवारों से जाट के भरतपुर में
 रहकर ८ नजीक के मित्रों को जलाकर उस ९ लोभी ने १० दोनों ओर
 ॥४७॥ जैसे कोटा में झाला जालमसिंह १ महाछली हुआ तैसे १२ नरुके
 प्रतापसिंह ने जयपुर का नाश विचारा १३ झूठा

भेद्यो सो सदासिव मुसाद्वी करन भास ॥
 बाहीकों निमित्त राखि विप्र१ रु महावतरकों,
 कैद करिवेको फर हारयो पाइ अवकास ॥ ४८ ॥
 बात न रहत बध तीजे३के श्रवन बिसी,
 जानि सोही विप्र१ रु महावतर दवेली जाइ ॥
 अंतेउरहोढी जसवत३कों पिहित आनि,
 भूत१ भावी२ रानीको सुनायो सब समुझाइ ॥
 भट१ अरु राजाउत्तर नारव३ मिलि रु भये,
 रोधक हमारे१ रहिहैं जे राज्य विगराइ ॥
 जैपुरकी सीमामैं न चुडाउत राखिहैं७ जे,
 पुत्र१सों न तुम२कों मिलिहैं३ कैरा पटकाइ ॥ ४९ ॥
 सोहि सुनि गनी हठ आनि इन्ह सम्मतिसों,
 नारव प्रताप१ सीख दैकैं पठयोनिकेत ॥
 राख्यो भट विद्यागुरु२ ताहीके निलय रुँद,
 सगी तास सचिव३ कितेक रोके समवेत ॥
 पथहीसों पीछो मुरि आयो सुनि सो प्रताप,
 पैठन दयो न पुरमैं तब अँघउपेत ॥
 केते देग जैपुरके लूटि१ अपनाइ२ केते,
 दुष्ट गो निजालय अनेकनकों दुखदेत ॥ ५० ॥
 जैपुरतें कटक प्रताप पर भेज्यो जब,
 बाहिर१ तो सासन१ दिखैवो छलसों विचारि ॥

१ मुसाद्वी करना प्रकाश(प्रसिद्ध) फरके २ कारण ॥४८॥ ३ तीसरे के कान में
 सुसीद्धई ४ जनानी छाही पर राखत जसवंतसिंह को ५ छाने जाकर ६ हमारे कैद
 करनेवाले ७ कैद में छालकर ॥४९॥ ८ इनकी सलाह से इनरुके प्रतापसिंह को १०
 उसके घर भेजा ११ उसीके घर में यशरक्खा १२ उसीके साथ रोके १३ पाप सहित
 पापी को १४ अपने घर गया ॥५०॥ १५ प्रतापसिंह पर सेना भेजी १६ प्रसिद्ध में तब

घनाक्षरी-पायो पटा जैपुरको नारव प्रताप तासों,
 बहुरि विसेस पाई नित्य मुद्रा पचसत५०० ॥
 किर्तिसिंह कुमर झलायके प्रथम काल,
 वैर अरिसिंहको मिटाइदैंबो मढि मत ॥
 जैपुरही मंत्रमें लै चुड़ाउत्त जसवत,
 पत्र बुन्दी पठयो स्वसापति छितोस छत ॥
 राना रत्नासिंहको विवाहो कुल कन्या जाम,
 जाजपुरदेहैं लिखि प्रत्युत ए व्है मनत ॥ ९ ॥
 सालकको पत्र यह भूपति अजितसिंह,
 बचिकै पुरोहित पठायो दयाराम तस ॥
 पीछे नृप छोरघो देह यातैं मुरि मयाहीसों,
 आयो परकुलतैं बनास लघि बिप्र यह ॥
 सोहि पुनि श्रीजित पठायो नीति समुझाई,
 आयो अब जैपुर सुनायो तत्व प्रीति सह ॥
 पे अब स्वसा १ जुत स्वसापति २ अभाव पाइ,
 बदल्यो कुमार बखतावर विरोध वह ॥ १० ॥
 भूतहूमैं भूत यो विरोध बीज जानों जब,
 भूपतिनै इदगढ ईस १ इन्पौ पुत्र २ जुत ॥
 ताकी तिय जोधीनै झलायपति भाइनेज,
 लोभसों बुलाइ ताहि दैकें अर्द्ध ९ भूमि हुते ॥
 सध्याकहैं सेस इदगढकी अचनि अर्द्ध १,

१ रुपये २ पहिन का पति ३ बुन्दी का राजा अजितसिंह था तब
 राणा अरिसिंह को मार खाखने का वैर मिटादेना चाह्ता था ४ छलटे मंत्र हो
 कर जहाजपुर देवेंगे ॥ ९ ॥ ५ घनास नदी के परखे किनारे से ६ परन्तु अब
 पहिन सहित पहिन के पति का माया जानकर ॥ १० ॥ इस विरोध के बीज
 भूतकाय से भी भूतकाय में जानो कि ७ चम्पेदसिंह ने ८ भानेज को
 गीघ आधी भूमि दी १० बाकी की आधी भूमि सिन्धिया को देकर

अंतर२में सारे कछुवाहन अरुचि आनि,
 नारवसों नेह कै रची जिन कपट सारि ॥
 चुडाउत१ बिप्र२ रु महावत३ बिगारे चहि,
 पापिननैं लाख बीस २००००००० मुंदाको खरच पारि ॥
 आपनी१ पराई२ कछु न गिनी पकरि आँट,
 धूमिडारी धरनि खिजे गजकी धक्र धारि ॥ ५१ ॥
 जैपुर सुभट ऐसे राजगढदुर्ग जाइ,
 वासर कितेक लरे मोघैहि बिरचि व्याज ॥
 प्रत्युत दिखाइकै प्रतापको बलिष्ठपन,
 कूरमन कूरन बिगारयो निज स्वामि काज ॥
 दीसिबेलगी वं पुर१ देस२के प्रजादिकन,
 राखिहैं जो तीनों३ उक्त पहिले सचिव राज ॥
 नारवके सम्मत बिना तो निवहैन नैक,
 ऐसे उपद्रवमें अधीसको बिभव आज ॥ ५२ ॥

दोहा-नारव जैपुर आनिबो, करिबो तस अनुकूल ॥
 दुखटारिबो तब देसको, मान्यो मंगल मूल ॥ ५३ ॥
 सिसु समान हारे समुझि, रानी१ अरु नरराय२ ॥
 आंकारयो नारव इहाँ, दै दल सवन सहाय ॥ ५४ ॥
 नारव तब प्रतिभू चहयो, सेखाउत नवलैस१ ॥

पुर भलायको कुमर२ पुनि, नृप लिपिको दल लेस३।५५।

आज्ञा दिखाई नरुके प्रतापसिंह से स्नेह करके२बीस लाख रुपयों का १ खिजे हुए
 हाथी की धक्र को धारण करके ॥५१॥ ५२ ल करके कितनेक दिन४ झूठी लड़ाई लड़े
 वेजलटा प्रतापसिंह का बलवानपना दिखाकर७दूर अथवा झूठे कछुवाहों ने
 अथ पुर के और देश के प्रजा आदि को दीखने लगी कि ऊपर कहे हुए पहिले
 तीनों सचिवों को राखेंगे तो देशराज्य में नरुके (प्रतापसिंह)के बिना ॥५२॥५३॥१०
 नरुके को बुलाया ११ पत्र देकर ॥ ५४ ॥ १२ जनानत देनेवाला जामिन चाहा
 १३ राजा का लिखा हुआ छोटा सा पत्र ॥ ५५ ॥

बलेस १ ललेस २ अन्तपानुमास १॥

तब जैपुरतैं करि तिमहि, बुल्लपो नारव नीच ॥

बहुरा१ पठपो लैन बलि, बहु आदर२ मग बीच ॥ ५६ ॥

परघो बुल्लानों सच पैटुन, नारव इम जयनेर ॥

पुनि तदिष्ट करनौ परघो, वीसरि महुँरु वैर ॥ ५७ ॥

इति श्री वशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणोऽष्टमराशौ विष्णुसिंह
चरित्रे सलूमरेशकेसरिसिंहान्तिमसमयकुशलप्रश्नप्रयातदेवगढेशज
सनतसिंहवाक्कलहवर्द्धनतन्निमित्तकृतकुहककेसरिसिंहपुत्रलालसिंह
जसवन्तसिंहमेदपाटनिष्कासन १ जसवतसिंहजयपुरगमनराग्यारि
सिंहादेगनिहतवग्धोरपतिमहाराजनाथसिंहलालसिंहमहाभटपदमह
रा २ स्वपत्नसमानीतस्वपुत्री (जयपुरेशमाधवासिंहराज्ञी) दौहित्र
(जयपुरेशपृथ्वीसिंह) जसवन्तसिंहजयपुरसचिवीभवनकूर्मतद्विरोध
वर्द्धन ३ जयपुरामात्यमियोद्वपममैकासनहेतुचोमूँराजगढविद्वेषराज
गढेशनारवप्रतापसिंहजयपुरनिष्कासन ४ राजगढप्रयातजयपुरसैन्य
॥ ५६ ॥ १ चतुरों को २ इसप्रकार नरुक को जयपुर में बुल्लाना पडा इसका
थाहाहुआ ४ अग्राय और वैर झुलकर ॥ ५७ ॥

श्रीवशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टमराशि में विष्णुसिंह के चरित्र
में, सलूमर के पति केसरिसिंह के मरते समय आराम दूखने को गये
हुए देवगढ के पति जयवतसिंह में पचनों का विरोध पहना और उसी कारण
से केसरिसिंह के पुत्र लालसिंह का ठग बिथा करके जयवतसिंह को मेवाड़
से निकलवाना १ जसवतसिंह का जयपुर जाना और राणा अरिसिंह की आज्ञा
से लालसिंह का पागौर के पति महाराज नारायणसिंह को मारकर बड़े हमरावों
की पदवी देना २ रावत जयवतसिंह का अपनी पुत्री (जयपुर के राजा माध
वासिंह की राणी) और दौहित्र (जयपुर के राजा पृथ्वीसिंह) को अपने पक्ष में
लेकर जयपुर का सचिव हाना और फट्टाहों से उसका विरोध पहना ३
जयपुर के सचिवा का परस्पर द्वेष और समा की एक बैठक होजाने के कारण
ज्यों और राजगढ में द्वेष होना और राजगढ के पति मरुके प्रतापसिंह का
जयपुर से निकासजाना ४ राजगढ पर गई हुई जयपुर की सेना के हलधुक्
से मरुके प्रतापसिंह का थकथानपमा प्रसिद्ध होकर उसको जयपुर में बुल्लाने

छलयुद्धनारवप्रतापसिंहबलवत्त्वप्रथमतज्जयपुराब्धानंतृतीयो मय-
खः ॥ ३ ॥ आदितः ॥ ३५३ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा—इम प्रताप नारव वहै, आयो जैपुर अत्थ ॥

ईष्ट प्रसारयो आपुनौ, तिम विन्नति लखि तत्थ ॥ १ ॥

याकी सम्मति पाइ इन, कैद महावत१किन्न ॥

यातैं साहस दम्भ अर, लख सप्त ७०००००भरि लिन्न ॥ २ ॥

हे बहुरा२ को चहत हित, भट नाथाउत भीर१ ॥

अरु चह पटु२ इम उब्बरयो, नाविक जह दह नीर ॥ ३ ॥

कीरतिसिंह कुमार अरु, धूलापति रघुनाथ२ ॥

राजाउत दोउ२न, रच्यो सेस विरोधिन साथ ॥ ४ ॥

चुंडाउत जसवंत इक१, राउत देवगढेस ॥

राजगढेस प्रताप इत, आन्यो जैपुर एस ॥ ५ ॥

दोउ२न इन करवाइ दिय, मन इन दोउ२न मेल ॥

पै फुट्टे खप्पर प्रतिभ, खलन मिलन मय खेल ॥ ६ ॥

करि नारव प्रमुखन कथन, कारातैं खिल काढि ॥

गेह जाइ विद्यागुरुहि, लायो नृप ईभ चाढि ॥ ७ ॥

प्रथितै प्रताप प्रतापको, बढिगो इम जिहिं बेर ॥

कोऊ कछुहु सकैन कहि, जिन सिंह१हिं गजर जेर ॥ ८ ॥

का तीसरा मयूख खनासदृशा॥३॥ और आदि से तीनसौ तेपन१५३मयूख दृष्ट॥

१ नरुका प्रतापसिंह २ अपना बांछिन ॥ १ ॥ ३ दंड के रूपये शीघ्र ॥ २ ॥

४ वह चतुर भी था इस कारण ५ जैसे नाववाला गहरे जल से पर्व तैसे बच

गया ॥ ३ ॥ ६ बाकी के विरोधियों का साथ किया ॥ ४ ॥ ७ देवगढ़ के पति

ने = राजगढ़ के पति प्रतापसिंह को ॥ ५ ॥ ९ फूटेहुए खप्पर के सदृश ॥ ६ ॥

१० नरुके आदि का कहना करके ११ बाकी की कैद से निकाल कर १२ हाथी

पर चढ़ाकर राजा लाया ॥ ७ ॥ १३ प्रसिद्ध १४ प्रतापसिंह का प्रताप १५ बहुत

बुद्धे सिंह को हाथी दबालेवै जैसे “जिनः, अतिवृद्धे ॥ इति शब्दार्थचिन्तामणिः”

घनाक्षरी-पायो पटा जैपुरको नारव प्रताप तासौं,
 बहुरि विसेस पाई नित्य मुद्रा पचसत ५०० ॥
 कित्तिसिंह कुमर मल्लायके प्रथम काल,
 बैर अरिसिंहको मिटाइदेबो मढि मत ॥
 जैपुरही मत्रमें लौ चुडाउत्त जसवत,
 पत्र बुन्दी पठयो स्वसापति छितीस छत ॥
 राना रत्नासिंहको विवाहो कुल कन्या जाम,
 जाजपुरदेहें लिखि प्रत्युत ए व्हे प्रनत ॥ ९ ॥
 सालकको पत्र यह भूपति अजितसिंह,
 बचिकै पुरोहित पठायो दयाराम तस ॥
 पीछे नृप छोरघो देह यातैं मुरि मघाहीसौं,
 आयो परकुलतैं बनास लधि विप्र यह ॥
 सोहि पुनि श्रीजित पठायो नीति समुझाई,
 आयो अब जैपुर सुनायो तत्व प्रीति सह ॥
 पै अब स्वसा १ जुत स्वसापति २ अभाव पाइ,
 बदल्यो कुमार बखतावर धिरोध बह ॥ १० ॥
 भूतहूमैं भूत यो विरोध बीज जानों जब,
 भूपतिनैं हृदगढ ईस १ हन्यो पुत्र २ जुत ॥
 ताकी तिय जोर्धनैं मल्लायपति भाइनेज,
 लोमसौं बुलाइ ताहि दैकैं अर्द्ध ९ भूमि हुत ॥
 सध्याकहैं सेस हृदगढकी अवनि अर्द्ध ९,

१ रुपये २ पहिन का पति ३ बुन्दी का राजा अजितसिंह या तब
 राणा अरिसिंह को मार डालने का बैर मिटादेना चाहता था ४ छल्लटे मन्त्र हो
 कर जहाजपुर देखेंगे ॥ ९ ॥ ५ बनास नदी के परछे किनारे से ६ परन्तु अब
 पहिन सहित पहिन के पति का नाश जानकर ॥ १० ॥ इस विरोध के बीज
 भूतकाल से भी भूतकाल में जानो कि ७ अर्द्धसिंह ने ८ आनेज को
 भीम आधी भूमि दी १० बाकी की आधी भूमि सिन्धिया को देकर

घनाक्षरी-पायो पटा जैपुरको नारव प्रताप तासौं,
 बहुरि बिसेस पाई नित्य मुदा पचसत५०० ॥
 कितिसिंह कुमर झलायके प्रथम काल,
 बैर अरिसिंहको मिटाइदेबो मडि मत ॥
 जैपुरही मन्त्रमें ले चुडाउत्त जसवंत,
 पत्र बुन्दी पठयो स्वसापति छितीस छत ॥
 राना रत्नसिंहको विवाहो कुल कन्या जाम,
 जाजपुरदेहें लिखि प्रत्युत ए व्हे प्रनत ॥ ९ ॥
 सालकको पत्र यह भूपति अजितसिंह,
 वचिकै पुरोहित पठायो दयाराम तस ॥
 पीछें नृप छोरयो देह यातैं मुरि मग्राहीसौं,
 आयो परकूलतैं वनास लघि बिप्र यह ॥
 सोहि पुनि श्रीजित पठायो नीति समुझाई,
 आयो अब जैपुर सुनायो तत्व प्रीति सह ॥
 पे अब स्वसा १ जुत स्वसापति २ अभाव पाइ,
 बदल्यो कुमार बखतावर धिरोध वह ॥ १० ॥
 भूतहूमै भूत यो विरोध बीज जानौ जब,
 भूपतिनैं इदगढ ईस १ इन्पाँ पुत्र २ जुत ॥
 ताकी तिय जोधीनैं झलायपति भाइनेज,
 खोमसौं बुजाइ ताहि दैकें अर्द्ध ९ भूमि दुते ॥
 सध्याकहैं सेस इदगढकी अवनि अर्द्ध १,

१ रुपये २ यहिन का पति ३ बुर्दा का राजा अजितसिंह या तब
 राणा अरिसिंह को मार डालने का बैर मिटावेना चाह्य था ४ घलटे नम्र हो
 कर जहाजपुर देंगे ॥ ९ ॥ ५ वनास नदी के परले किनारे से ६ परन्तु अथ
 यहिन सहित यहिन के पति का नाश जानकर ॥ १० ॥ इस विरोध के पीछे
 मृतकाल से भी मृतकाल में जानो कि ७ अर्द्धसिंह ने ८ भागेज को
 गीम आधी भूमि दी १० बाकी की आधी भूमि सिन्धिया को देकर

जामाता१ सुता२ द्वे२ ठदरे न पीछें दिष्ट जव,
पीछो प्रतिकूल भयो जो खल रुषाजैरत ॥
इद्रगढ ईस देवासिंहको पिनांती इहिं,
दभसौं प्रकास्यो परलोकहुसौं नाँ डरत ॥ १६ ॥

पादाकुलकम् ॥

देवसिंह दोलतसिंह दुव२हि, बुदीपति मारे विरोध बहि॥
दोलतसिंह बंधूके मिसकरि, पीछें सुत हुव इहिं साहस परि१७
इद्रगढेस देव तिय जन सब, काढे नयननगरतैं जव तब॥
जिम यह छत्र बनें तिम बचक, राखि किमहु कहूँ पाप प्रपचका१८
अब भलाय यह ँपाज बनायो, दोलतसिंह तनर्यभव पायो ॥
पै हम करते प्रकट तबहि तो, याकह सुनि हनते अरि अहि तो१९
जुव्वन वय सत्रह१७ संम भो जव, इद्रगढेस रूपात हुव यह अब ॥
रतनसिंह प्रकटयो जिम रानाँ, वह सोलह१६बिच पाव१हि आनाँ२०
तिम ऐसहु झूठो प्रकटायो, बलि तिहिं कुदक भलाय बुलायो ॥
भूतहुमे४ पुनि भूत प्रमानहु, जया लेखैं वत्त सु हम जानहु ॥ २१ ॥
भागनगर१ दक्खिन२३ पुर मारुयो, अब हैदराबाद२ अभिलाख्यो॥
जाको पति दिल्लीससचिव जो, सठ गाजुहीखान नामसो ॥२२॥
जिहिं इत नादरसाह बुलायो, पुत्रहु तास नाम सुहि पायो ॥
अपराधी दिल्लीको सो यह, जट्टन सरन रहयो कछुदिन जह ॥ २३ ॥
वेचि वेचि भूवन१ मनि२ गन के, किय निर्घाह ठानि कैनकनके ॥

१जमाई २ भाग्य से ३ क्रोध से जलता है ४ पोता को छल से प्रसिद्ध किया
॥ १६ ॥ ५ दोलतसिंह की स्त्री के छल से इस एठ पर पुत्र हुआ ॥ १७ ॥ ६
छल ॥ १८ ॥ ७ छल ८ दोलतसिंह क पुत्र ने जन्म पाया है ९ दाशु रुपी
सर्प ॥ १९ ॥ १० वर्ष का ११ इन्द्रगढ का पति प्रसिद्ध हुआ ॥ २० ॥ १२ इसको
भी १३ अथ यह गये समय में भी गये समय की बात जानो १४ जैसी लिखी
हई मिली तैसी ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ १५ एक एक बिखेर कर ॥ २४ ॥

आलीगोहर तब दिल्लीपति, जट्टनपर आन्यों अमरख अति ॥२४॥
 जब सु नबाब निकास्यो जट्टन, जैपुर आइ रहयो सह निजजन ॥
 खरच गंठि निज तत्थहु खायो, बहुमनि १ मूखन २ * निचय बिकायो २५
 जैपुरपर तिम साह खिज्यो जब, ताहि कूरमन सिक्ख दर्ई तब ॥
 वह नबाब दक्खिन २ ३ तब आयो, पुन्यार्पति जिहिं रवभट बनायो
 पटा लक्खत्रय ३००००० दम्म प्रमानक, दिय बुंदेलखंड विच
 थानक ॥

असनमात्र सोपै लिखवायो, बिनुचाकरी पटा इम पायो ॥२७॥
 कछुदिन रहि कोटा अति आग्रह, आइ नबाब भूलाय टिक्यो वह
 कीरतिसिंह सोहु बहिकायो, बलि तँहँ तब सुं फितूर बुलायो २८
 संग नबाब बंधु १ लौ बल २ सह, मंडि भूलाय ईस अतिसय मँह ॥
 आइ समुह बैठाइ ताहि इभँ, निज हठ मानि फितूर १ सत्य २ निभ २९
 इम भूलाय उच्छव जुत आन्यों, जदपि तास विस्मय जग जान्यों
 भ्रष्ट तदपि ताजुत करि भोजन, सज्ज कर्यो भुवलैन प्रसभ सन
 कटक नबाबकोहु संगी किय, इंद्रगढस बंधु बलि बुल्लिय ॥
 रत्नसिंह खातोली २ पुरपति, कूंतक भीर भेजे निज भट कति ३१
 अवरहु कति निमहोला २ आदिक, मिले भीर तस खिलहु प्रमादिक
 जाइ इंद्रगढके भट १ परिजन २, मिले बहुत छल रवामी चहि मन ३२
 कृष्ण १९९ १ दलेल १९८ २ पुत्र मुहुकम १९४ ५ कुल, पुर करवर
 को लोभ दै विपुल ॥

मतिहत सोहु बुलाइ मिलायो, बढते ग्राम लैन बहिकायो ॥३३॥
 पहिलैं खल याकोहि पितामह, सालम १९७ १ रह्यो भूलाय भीतिसह

* समूह ॥ २५ ॥ १ पूना के पति ने अपना उमराव बनाया ॥ २६ ॥ २ रोटी खरच
 के लिये ॥ २७ ॥ ३ उस इन्द्रगढ के झूठे दावीदार को ॥ २८ ॥ ४ उत्साह
 (उत्सव) ५ हाथी पर ६ सत्य के सदृश ॥ २९ ॥ ३० ॥ ७ उस करतबी की सहाय
 ॥ ३१ ॥ ८ बाकी के बावले ॥ ३२ ॥ ३३ ॥

राजाउतन प्रीतिकरि रख्यो, उपकार सु चिंतहु मन अखर्यो३४
कृष्ण१९९।१ सु चिंति नैन नीचे करि, सगी भयो कुहंक मत अ-
नुसरि ॥

पहिलै देवसिंह माधानी२२।२६, तजि आटोंनि कढ्यो अभिमानी३५
आइ सु प्रथम दग उनियारा, दुर्ग ककोर रखि सुत१ दारा२ ॥
उनियारा सासक सिरदारहु, बिगचि प्रीतिसतकारयो जिहि बहु३६
पीछै गो यह दग जोधपुर, धात्रेपहि मिलि धरत भयो छुर ॥

उदयकर्ण धात्रेय तनै यह, तह सूचित जसकर्ण हुतो तह ॥३७॥
ए दुवर मिलि जैपुर पुनि आये, तँह प्रधान चुडाउत पाये ॥

तोलों जैपुर ठहरिसके दुवर, पीछै नारव कथन प्रबलहुव ॥३८॥

भट्ट सदासिव नृप बियागुरु, फैल्यो तास प्रपच उहाँ उर ॥

सम्मति चलन रुप्यो सीसोदन, देख्यो कहूँ ओर न अनुमोदन३९

देवसिंह१ जसकर्ण२ तबहि दुवर, हेरि उपाय झलाय आतहुव ॥

तँह फितूर सगी हुव तेह, कटक लोक कुहके खिल केह ॥४०॥

इम दससहस्र १०००० वधि बल अप्पन, सज्ज फितूर, भयो इत
सप्पन ॥

सुनि बुझैहु भेजि भट श्रीजित, इद्रगढेस सँव हित किय इत ४१

भक्तगाम सासक तँह अतिभट, भिगत सज्ज इच्छै रन प्रतिभट ॥

देवसिंह१ जसकर्ण२ चह्यो मन, पहिलै कोटा देस बिगारन॥४२॥

अरु नबाब कोटा जव आयो, पे तब आदर उचित न पायो ॥

॥ ३४ ॥ १ झूठे (ठग) के मत की साथ ॥ ३५ ॥ २ छुरी ॥ ३६ ॥ ३ कोटा का
घायभाई जोधपुर म था जिससे ॥ ३७ ॥ ४ नरुके प्रतापसिंह का ॥ ३८ ॥

५ विशाल (बहुत) ६ सपनी पुष्टि करनेवाला ॥ ३९ ॥ ७ इन्द्रगढ़ के झूठे
दायेदार की साथ ८ झुटका (झुटेरे) ९ पाकी के ठग ॥ ४० ॥ १० सर्पन
(चलन) ११ बालक का हित किया ॥ ४१ ॥ ४२ ॥

इहिं तिहिं अनख मंडि अनुमोदन, कोटादेश चलो तिय तोदन ४३
 यह सुनि सज्जि मदारावहु उत, जालम भल्ल सचिव निज संजुत
 प्रबिस्सो सिविर सजव कढि पुरतैं, यह बुंदिय सुनि हित अंकुरतैं ४४
 सुखराम जु धालेय मुसाहब, सजि गो भीर बाहिर्नी लै सब ॥
 एकशनिसाहि परयो त्रिच अंतर, प्रातहि जाइ मिल्यो हित तत्पर ४५
 सुखराम सु कोटस सराह्यो, बुल्लयो हद एक १२ त्व निवाह्यो ॥
 सचिव सचिव भल्लहु सतकारिय, बलि सत्रुन दिस चढन विचारि ॥ ४६ ॥

उततैं सज्जि फितूरहु आयो, बल नबाव बल मुख्य बनायो ॥
 संग नबाव सचिव जिहिं बल जुन, आयो देसहिं करत उपहुन ४७

कोटा दिष्टं बलिष्ट वन्यो जैं, ठहरि सक्यो न नबाव बल सु तैं
 पुन्यापति सन छिति इहिं पारि, लक्ष्मीतीन ३००००० दम्भनै ठकुराई
 जो बुंदेलखंड जैनपदमें, होनलगे बै विघ्न तस हदमें ॥ ४९ ॥
 यह ताहि सुंदि नबाव सचिव बड, सूचित देस गयो निज बल सह
 अमल करयो जिहिं जवहि जाइ उत, सिटिगो तबहि देव १९८१
 सुत छल सुत ॥ ५० ॥

मंगी धारि बिगारि सबै मुख, गही न तब सु गई फटि रुखरुख ॥
बलबिनुवैअलबिनुजिनविच्छिप.इमनवा.बदलविनुछलडच्छिप ५१

१ इस कारण २ पुष्टना करके ३ व्यथन (दुःखी) करना चाहत
 ॥ ४३ ॥ ४ डेरों में ॥ ४४ ॥ ५ धापभाई ६ सब सेना लेकर ॥ ४५ ॥ ७ बुन्दी
 के सचिव का कोटा के सचिव भावा ने सत्कार किया ॥ ४६ ॥ ८ नबाव की
 सेना का बल ९ व्याकुल ॥ ४७ ॥ १० कोटा का भाग्य बलवान हुआ ॥ ४८ ॥
 ११ रूपों की १२ देश में १३ अब ॥ ४९ ॥ १४ खबर १५ सूचना कियेहुए देश
 में १६ देवसिंह के पुत्र दोलतासिंह का वह छली पुत्र मिटगया ॥ ५० ॥ १७
 मांगीहुई घाड़ (लुटेरे) १८ जिधर मुख हुआ उधर १९ जैसे डक बिना बिच्छू
 होवे तैसे नबाव की सेना बिना होकर ॥ ५१ ॥

रत्नसिंहका कृष्णमदापावकासत्कारकरना] षष्ठमराशि-चतुर्थमयूख (३८' ७)

अनालेव इम होइ अचानक, भज्यो फितूर चकित मितै मानक ॥
देवसिंह^१ जसकर्या^२ दुमन हुवर, हुलकर तछू तत्र जाइ हुव ॥ ५२ ॥
नाणकै नित्य दुहुन कछु करि दिय, इक^१ ग्रामहु खिच्चि^१ ३३ न
भू अपिच ॥

जुग^१हिं रक्खि बनिता^१ सुता^२दि जेहँ, करतभये मालिक तक्कू
कैहँ ॥ ५३ ॥

जहमति दुग्या^१ १९८^१ दत्तेज^१ ११ ७^१ जु जायो, पुर सु करोली चकित
पलायो ॥

नृप मानिम्पपाल रखयो नन, सुमुखि करन बुदिय धियै सगपन ५४
जैपुर आइ टिक्यो सु कृया^१ १९८^१ जन, वह फितूर खातोली गय
अथ ॥

रत्नसिंह खातोली सासक, आइ समुख छल रवामि उपासक ५५
कुल निज मुख्य मानि वह कृत्रिम, आन्यो करि उच्छव पुरमै इष ॥
भाजन^१ इक^१ दुहुन किय भोजन, सिद्ध जतन तदपि न हुव सो जन ५६
महाराव उम्मेद^१ २०५^१ सुदित मन, सनमान्यो मुखराम प्रीति सन
इक^१ करेनु अरु ग्वाम तुरग इक^१, तिम सिरुपाव इक^१ इम दे
त्रिक^३ ॥ ५७ ॥

दिय महमानी तदनु सिक्ख सह, आयो बुदिय पाइ सुजस यह ॥
सवत लगत दत धृति १८३२ सम्मित, यह उदत हुव रार्ध^२ मास
इत ॥ ५८ ॥

महिर्पति भूत^१ इहाँलग मानहु, जुरत वर्तमान^२ सु अव जानहु ॥

१ यिना आचार^१ थोड़े घोषबाजा^३ आधीन ॥ ५२ ॥ १ रूपये ॥ ३ ॥ १ खुन्दी म पेटी का
सम्बन्ध करना जानकर ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ३ एक पात्र में ॥ ५६ ॥ ७ हाथी ॥ ५७ ॥
८ वैशाख मास में ॥ ५८ ॥ ६ हे राजा यहाँ तक गयेहु १ समय का वृत्तान्त

कुमर भलायको सु अब पातैं, बुंदी हि १ त न चहैं १ रु*बिघातैं २ ॥ ५९ ॥
 नृप बुंदीस पुरोहित जो निज, पठयो जैपुर दयाराम द्विज ॥
 सहित मिल्यो सु भलाय कुमरसन, मिलतहि नहि दीस्यो पहिलो मन,
 करि बाहिर १ हित लोकलज्ज करि, अंतर २ भयो सछद्म नयो अरि ॥
 चुंडाउत जसवंतसौंहु तब, मिल्यो विप्र सूच्यो आसय सब ॥ ६१ ॥
 राउत कह्यो रान रतनेसहिं, व्याहहु मेठहु बैर बिसेसहिं ॥
 कह्यो विप्र बुंदिय नहि कन्या, व्याहहिं तदपि अंकं लहि अन्या ६२
 पै तुम भुल्लि सबन भ्रम पारयो, विदित रानघर चलन बिसारयो ॥
 रानन रीति अबहु सब साहहु, व्याह इक्क १ अन्यत्न विवाहहु ॥ ६३ ॥
 कूरम नृप भवदीय सुतासुत, जामिन करहु २ रक्खि विच हितजुत ॥
 बिजयसिंह बलि मरुप मिलावहु ३, पंति असन फेला तुम पावहु ६४
 अग बचन किय सोहु सुमिरि उर, प्रभु १ रु पंच २ लिखिदेहु जा-
 जपुर ५ ॥

अरु रतनेस पच्छपाती अब, संपथ हमहि लिखिदेहु तुमहु सबा ६५
 सो इम रतनसिंह हम स्वामी, नरपति राजसिंह सुत नामी ॥
 महिप प्रताप पुंलसुत मानहु, जिम जगतेस प्रनैतिय जानहु ॥ ६६ ॥
 सुद्ध जैनन दुवर पक्ख सुदावहिं, हम तिन्हें फेलिं तुम लखत पावहिं
 यामैं होइ किमहु कछु अंतर, हम १ तुम २ बिच तो गंगा १ हरि २
 हर ३ ॥ ६७ ॥

उतके पंच देहु लिखि तुम यह ६, राघवदास रावरे सुतसह ॥

जानो, अब आगे वर्तमान वृत्तान्त जुड़ता है * विशेष घात करता है ॥ ५६ ॥
 ॥ ६० ॥ १ छल सहित ॥ ६१ ॥ २ राणा रतनसिंह को व्याहकर ३ और कन्या
 को गोद लेकर ॥ ६२ ॥ ४ राणाओं की रीति ५ एक व्याह दूसरी जगह करदो
 ॥ ६३ ॥ १ जयपुर का राजा आपका दोहिता है ७ जमानत देनेवाला (पतिभू)
 ८ मारवाड़ के पति को ९ पंक्ति में रतनसिंह का उच्छिष्ट भोजन करो ॥ ६४ ॥
 १० सौगन लिखदो ॥ ६५ ॥ १ पोता २ प्रनाती (पड़पोता) ॥ ६६ ॥ १ रवंश १४ उच्छिष्ट

मेवोदके उमरावोंका खनालेहके प्याहका प्रपंच करना] अष्टमराशि-चतुर्थमयुक्त (१८५६)

ए खट६ वत्त प्रथम हम इच्छे, परिनावाहिं रानहिं इन पिच्छे ॥६८॥
 तुम छिस्वर चालुक तव धरिधुर, पठयो बुदिय देन जाजपुर ॥
 सुमिरन है कि बचन बिसरायो, अब सुहि सत्य करन खिन आयो ६९
 रावत कछो जोधपुर १ जैपुर २, पुनि बुन्दी ३ अरु मुख्य उदैपुर ४ ॥
 सो बुन्दी ३ सूचित तीन ३ न सम, छितिप उदैपुर ४ पच्छ करन
 छम ॥ ७० ॥

जैपुर १ दैपुर २ अन्त्यानुप्रास १ ॥

तिन्ह सहाय हमरी सुधरै सब, ते किम अन्य सहाय चहै तब ॥
 पुनि जोलों ससय जन पावै, निजहु कोन तोलों परिनावै ॥७१॥
 को इनकों ठिल्लै इत क्रूरम १, कोन कबध २ धीर उत धूरम ॥
 जो बलिष्ठ इनके जुग २ जानहु, तुम १ हम २ जुग २हु क्यों तिम
 मानहु ॥ ७२ ॥

इन्ह २ सहायसाहस हम उज्झहु २ ३, वचि तुल्यरु तुल्यहिं क्योँ उज्झहु ॥
 आदिम कैथित तजहु त्रय ३ यातै, विरचाहि हम अतिम त्रय ३ वातै ७३
 मभुकी फेलि पतिविच पावहिं १, लेख जाजपुर देन लिखावहिं २ ॥
 सपथ लेख हम पच सम्प्राहिं ३, यह त्रिक ३ सिद्ध दिखावै अप्पहिं ७४
 सूचिय विप्र तवहिं व्है ससय, भेद भेद प्रतिभेद तनै भय ॥
 पे हम सिरहि भार जो पटकहु, इक १ तुम करहु तो न तहै कट-
 कहु ॥ ७५ ॥

मल्ल १ प्रमार २ कवध ३ रु समर ४, चउ ५ कुल मुख्य भटनमै नव ९ घर

॥ ६८ ॥ १ समय ॥ ६६ ॥ २ समर्थ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ १ पुर को
 धारण करनेवाला ॥ ७२ ॥ ४ इनकी सहायता देने का इठ छोड़ दो ५
 ऊपर कही हुई छः बातों में से आदि की तीन छोड़ दो, अन्त की तीन बातें
 हम करेंगे ॥ ७३ ॥ ६ स्वामी (रत्नसिंह) का उच्छिष्ट ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७ पदवाच
 ८ मेयाक के उमरावों में इन चार कुलों में जो ठिकाने मुख्य हैं साधों में
 देवबादा और गोर्धदा, पँधारों में बीभोल्या, राठोडों में बदनोर और वाघेराव,

रान सदा परिनै१परिनावै१, तुम पक्खी भट तेहु कहावै ॥ ७६ ॥
 त्यों पुनि इक्क१ सलूमरिकों ताजि, सब तुम रैन सहाय रहै सजि॥
 कति तन१ सौं धन२ सौं मन३सौं कति, यहहि पक्खे चाहत मत
 उन्नति ॥ ७७ ॥

तो असगोत्र कहे नव१तिनमै, व्याहहु प्रथम११पिसुनजिम विनमै
 पीछें करि स्वीकृतं त्रय३प्रत्यय, भर हम भुजनदेहु तोहु न न भय
 इह नृप तुम दोहित्र१रु अर्मकर, तुमरो कथन तास जननी तक३
 तोहुन तिन दोहु२न लै बिच तुम, सलिल मध्य रहि जिम सार
 स सुम ॥ ७९ ॥

इक१हमरोहि सहाय चाहत यह, तदपि दह६१भुज भर ओलैं तह॥
 चउ४ प्रत्यय ए सुनि चुंडाउत, पठये लिखि रु देवगढ जवं जुत८०
 पितापत्र राघव यह पायो, पुनि हुन कुंभिलमेरु पठायो ॥
 भिंडरपति सुहुकम्म सुरुष तह, सगतावत्त हुतो पंरिकर सह ॥ ८१ ॥
 दलैंतिहि संगी भटन दिखायो, इम कुडकन प्रतिपत्र लिखायो ॥
 व्याह १ जाजपुर २ दु२वहि बिहाये, अमकर फेलि १ सपथ २
 मनभाये ॥ ८२ ॥

दुव २ लिखि ठिगन बिधेय रक्खि दुव२, हित बहु लिखि इम छंद
 भेजत हुव ॥

कृष्ण१ प्रमार जु बैघमवासी, पठयो पुव्वहु दु२दिसु उपासी॥८॥

अहुबाणों में बेदला, कांठारिया और पारलोही ये उमराव तुम्हारे (रत्नसिंह
 के) पक्षवाले हैं ॥ ७६ ॥ १ रत्नसिंह की ॥ ७७ ॥ २ जिस कारण से, चुगली
 करनेवाले ३ विशेष नमैं ४ आपके स्वीकार किये हुए सुबूत ॥ ७८ ॥ ५ यहाँ
 जयपुर का राजा तुम्हारा दोहिता और बालक है उस बालक की माता तथा
 ७ कमल का फूल ॥ ७९ ॥ ८ विश्वास ९ शीघ्र ॥ ८० ॥ १० परगह सहित ॥ ८१ ॥
 ११ पत्र, साथ के उमरावों को दिखाया १२ ठगों ने, उत्तर में पत्र लिखाया
 १३ रत्नसिंह का उच्छिष्ट खाना और सौगन खाना ॥ ८२ ॥ १४ पत्र ॥ ८३ ॥

रत्नसिंहका कृत्रिम पम प्रकट हो जाता] अष्टमराशि चतुर्पमयूक्त (१८९१)

बुद्धि सोऽहि पठयो तिन बुद्धिय, पुनि प्रत्यय हित मुख्य बधु प्रिय॥
 सगताउत्त बिजेपुर सासन, बखतबधु सिवनाथरमिलत मन ॥८४॥
 जैत पउत्त रु अचल तनय जो, दयो प्रमार सग गतदय जो ॥
 इतको बिप्र रहयो जैपुर उत, दुवर सूचित आये बुद्धिय द्रुत ॥८५॥
 दोउरन साचिवहि पत्र दिखायो, सुखराम सु पिक्खत छल पायो॥
 जो विविक्त श्रीजित पुनि जान्यो, पुनि सम्मत सुभटन पहिचान्यो ॥८६॥
 कपट जानि रक्ख्यो समुचित कहि, सगताउत्त इहाँ सिवनाथहि ॥
 कृष्ण प्रमार सग पठयो द्विज, नत्यनाम बिसासपात्र निज ॥८७॥
 कछुदिन रक्खि देवगढ तिनकँहँ, पठये कुभिलमेरु कूतक पँहँ ॥
 भिडर आदि भटहु तब भोनन, हे रु नहे तँहँ इच्छितहो नन ॥ ८८ ॥
 भूप कृतक भेजे दुवर भिडर, किय मुहुकम्म सोहि मिस छल कर॥
 तिहि निज पक्ख भटन मत लौ तँहँ, करि सुहि जिए पठये दोउर
 न कँहँ ॥ ८९ ॥

प्रथम विवाहन न इम जाजपुर, कथित करन सुहि जुग अघ
 अकुर ॥
 वषाह जाजपुर रक्खि सेस बलि, छलिन पुच्छ जिम पठये पुनि छलि ९०
 ए उभयहि बुन्दी जब आये, द्विज प्रमार मतिमुष्ट दिखाये ॥
 श्रीजित प्रति सुखराम मुसाहब, अरज करि रु छल जानि प्रकट
 अब ॥ ९१ ॥

पत्र पुरोहित दयाराम प्रति, सुहि जैपुर पठयो छल सम्मति ॥
 अरु सूचिय निश्चय भो अब इम, रान रतन कुलवर्जित कृत्रिम ९२
 ॥८४॥ निर्दय सुखना किये छुट ॥८५॥ इयकान्त में ॥८६॥ ४ ठाक है पछ कह कर
 ॥८७॥ कृत्रिम (रत्नसिंह के पास १ अपने घरों पर थे ॥ ८८ ॥ ७ छेले ॥ ८९ ॥
 ८ पाप जड़ा होकर ९ मेवाड़ के हमरावों में रत्नसिंह का प्रथम विवाह
 कराना और जहाजपुर का देना बाकी रखकर (अस्वीकार करके) १० छल करके
 ॥९०॥ ११ ठगई हुई बुद्धिवाले दीले ॥९१॥ १२ कुछ रहित और फरेबा है ॥९२॥

ओर न कोहु सुता जिहिं अप्पै, इम अप्पन बंचेन थिति थप्पै ॥
 प्रासैन फेलि लिखन सत्य सपथ^२, अंगीकरत एहि दुव^३ ते अथ^४ ॥
 पुनि नटिजाइ तहाँ को प्रत्यय^१, कै खल करै ओडि कुल अत्यय
 पापकरन अवाधि न पापिनकै, अत्यज फेलि त्याग नहि तिनकै^{१४} ॥
 कूट सपथ बंचक क्यों न करै, धी अपरन बंचन सपथ धरै ॥
 दल बंचत यातैं अब हे द्विज, न करहु तुम सगपन सम्मति निज^{१५}
 महाकितव मज्जहु मेवारन, कितव भाव दढ हुव बहु कारन ॥
 यातैं स्वीकृत कछुहु न अक्खहु, राउत फंद टारि पय रक्खहु^{१६} ॥
 जो जैपुर पहिलो हित जानहु, तो इतसोंहु अधिक पुनि तानहु ॥
 इम द्विज प्रति सुखराम कहाई, हुत मेवारन सिक्ख दिवाई^{१७} ॥

॥ दोहा ॥

सगताउत सिवनाथ^१सों, नगर बिजैपुर नाह ॥

छप्पासिंह^२ प्रामार कुल, पहिलैं कथितै सिपाह ॥ ९८ ॥

हित बैहिरादर इन दुहु^३न, रुचिमित कछु दिन रक्खि ॥

बुंदीसन दिय सिक्ख बलि, उचित जथागमै अक्खि ॥ ९९ ॥

दयाराम बुंदीस द्विज, जैपुर इत खिन जानि ॥

बुंदी पठवन तिलक बिधि, पुच्छिय उचित प्रमानि ॥ १०० ॥

भेजैं अब अब इम भनत, कछवाहन चिरैं कीन ॥

बिच बिच पारे बिघन बहु, नियँति नवीन नवीन ॥ १०१ ॥

१ ठगने को २ उच्छिष्ट भोजन करना और सौगन करना ३ स्वी-
 कार करते हैं ॥ ९३ ॥ ४ क्या विश्वास है ५ कुल का नाश ६ अत्यज
 का उच्छिष्ट खाना ॥ ९४ ॥ ७ झूठे सौगन, ठगनेवाला क्यों नहीं करेगा ८
 दूसरों की बुद्धि ठगने को ॥ ९५ ॥ ९ ठगपन ॥ ९६ ॥ १० फैलाना ॥ ९७ ॥ ११
 पहिले कहे हुए ॥ ९८ ॥ १२ बाहर के आदर से १३ फिर आता यह कहकर
 ॥ ९९ ॥ १०० ॥ १४ विलंब १५ भाग्य ने ॥ १०१ ॥

इति श्री वशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणोऽष्टमराशौ विष्णुसिंह
 द्वचरित्रे नारवप्रतापसिंहपट्टातिरिक्तजयपुरराज्यप्रतिदिनपञ्चशतमु-
 द्राग्रहणोद्भगढात्रिमपतिप्रादुर्भवन १ दिल्लीन्दयवनाप्रसत्तिनिष्का-
 सितहैदराबादनव्वावगाजुद्दीखाभरतपुरजयपुरनिवासाप्राप्तिहेतुप्राप्त-
 बुन्देलखण्डपुण्यपत्तनपतिसुभटीभवन २ उक्तनव्वाबसहायससैन्य-
 कृत्रिमदायादेन्द्रगढाक्रमणकोटाजनपदलुगटन ३ प्राप्तबुन्दीसेनास-
 हायकोटापतिशत्रुसम्मुखगमनश्रुतस्वदेशोपद्रवनव्वाबगमनहेतुकृत्रि-
 मदायादपलायन ४ मेदपाटकृत्रिमराणा रत्नसिंहबुन्दीविवाहहेतुमे-
 दपाटसुभटयत्नकरणातत्कैतवप्रादुर्भावबुन्दीशास्वीकरण चतुर्थो म-
 यूख ॥ ४ ॥

आदित ॥ ३५४ ॥

॥ प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

उक्त रान हम्मीर इत, भो जु उदैपुर भूप ॥

श्रीवशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायणके अष्टमराशिमें, विष्णुसिंह के चरित्र
 में, नरुके प्रतापसिंह का पट्टा के सिंहाय जयपुर के राज्य से पाँचसौ रुपये
 नित्य लेना और इन्द्रगढ के करेयी पति का प्रकट होना १ हैदराबाद के नवा
 य गाजुद्दीखा का दिल्ली के बादशाह की अपसन्नता से निकाछा जा-
 कर, भरतपुर और जयपुर में नहीं ठहरने देने के कारण बुन्देलखण्ड का प्रान्त
 पाकर पूना के पति का सम्राय होना २ इस नवाय को सहायक करके कित्तुरी
 दाधीदार का सेना लेकर इन्द्रगढ पर आना और कोटा का देश छुटना ३ को
 टा के पति का बुन्दी की सहायक सेना पाकर पाटुणों के सम्मुख निकलना
 और अपने देश में चिह्न सुनकर नवाय के बलोजाने के कारण छली दाधीदार
 का भागना ४ मेवाड़ के कृत्रिम राणा रत्नसिंह का बुन्दी सम्पन्न करनेका
 मेवाड़ के सम्रायों का उपाय करना और उनका छल प्रकट होजाने के कारण
 बुन्दी से अस्वीकार करने का चौथा ४ मयूख समाप्त हुआ ॥४॥ और आदि से
 तीन सौ चौपन ३५४ मयूख हुए ॥

वय सैसव सो भय बहैं, रहैं समय अनुरूप ॥१॥
 कछु दूरहु पुरतैं निकसि, उपवन१ मृगपार२ अैन ॥
 सह भोजन३ मह संक्रमन४, क्रीडा कछुहु करें ॥२॥
 कृत्रिम रानाँ रत्न करि, सब पलटै साँमंत ॥
 तातैं रक्खत त्रास तिन्हैं, हास विलासहु दंत ॥३॥
 शक्र१ सलूमरि पुर अधिप, अपर२ कुरावड़ ईस ॥
 भीम१ रु अर्जुन२ नाम भट, इच्छैं दुवर सु अधीस ॥ ४ ॥

॥ घनाक्षरी ॥

सासक सलूमरिके केहरी मरत कछो,
 देवगढ नाह जसवंतहिँ बलिँ सुगइ ॥
 मेरे सुत मूढ माने तिनमें लघुहु लाल,
 काढिदैहैं केतो खल तोकइ१ कै जेहँ खाइ ॥
 कुहकसों कुहक पिताजो कही सोही करि,
 नाथहिँ निपाति अरिसिंह उर ईष्ट आइ ॥
 राउतके तैनय अचानक यों राउतकों,
 काढ्यो उत्तमर्ण१ अधमर्ण२ ज्यों सब विकाइ ॥५॥
 देवगढ दुर्ग सो पै ताकै रहतो न तहँ,
 जेठे१ जसवंत सुत राघव प्रगल्भ जब ॥
 देवगढदुर्गमें रह्यो सो लरिवेकों दँच्छ,
 सम्मत पिताको पाइ स्वीयभट सज्जि सब ॥

षाळक अवस्था ॥ १ ॥ २ बाग और शिकार के स्थानों में ३ उत्सव में जा
 ॥ २ ॥ ४ उमराव ५ हास्य विलास का नाश अपवा खेद है ॥ ३ ॥ दूसरा
 ४ ॥ ७ पीछा बुलाकर ८ छली से, छली के पिता ने ९ अनुकूल १० राउत केशरी
 गह के पुत्र ने राउत जसवंतसिंह को ११ ऋण देनेवाला (यहोरा) १२ ऋण लेनेवाले
 (रिघे) को ॥५॥ १३ जसवंतसिंह का बड़ा पुत्र रौघवदास बुद्धिमान १४ दक्ष (चतुर

अर्जुनसिंहका सन्ध्याके सालेकोमारना] अष्टमराशि-पंचममयूज (१८९१)

तापें उदैपुरतैं अनीक भीम१ अर्जुन२नैं,
भेज्यो तैंहैं केते भनैं तेहू आये भात तब ॥
पैन जय पायो चक्र प्रैत्युत पक्षाघो मरिवो,
न भट मानैं व्हाँ कियाको फल दोइ कब ॥ ६ ॥

॥ राजसवतिका ॥

सोलह१६ वीरनमें अरिसिंहके पच्छभो एक१ सलूमरिको पति१।
अर्जुनसिंह कुरावड ईम२ बतीस३२नमें रहयो मुख्य महामति ॥
काज बढो इक१ यानैं करयो स्मृतिमें न फुरयो सो कथा क्रम
समति ॥

है कथनोय सो जात कह्यो इम ओरहु ठाँ कम तूटी कथाकति७
बैठयो उदैपुरको वलतैं जब माइजि संध्या महाबल जाइकैं ॥
भो पुरमाहिं मदा दुरभिच्छ व्हाँ प्राभृत लीजै कह्यो भय पाइकैं
मदप सालके माइजिको बिलसैं परनारिन नित्य बुलाइकैं ॥
साइस बात बिगारिदै सो उत१की इत२ साइस ऊपर आइकैं॥८॥
बाहिर माइजिके बेलमें लहि अर्जुन१ कोउक मित्र पटालैय ॥
ओरहि आप अजसैं उहाँ दमैं देखो कहैं सु चहैनहि निर्दय ॥
रत्न१के पच्छमें राचिरइयो वह सालक सन्धाको आगम अंत्यय ॥
एक उपायन को न उपाय भयो जिहिं अगग बिसेस छयो भय ॥९॥

१ भीमसिंह और अर्जुनसिंह दोनों माई ९ सेना बखटी आगी ॥ ६ ॥ ३ इस
समय यह ठिकाना सोलह समराधा में है ४ कथा के क्रम के साथ याद
महीं आया ५ यह कहने योग्य है इस कारण कहा जाता है ६ इसप्रकार अन्य
जगह भी किननी ही गया सूटगई है ॥ ७ ॥ ७ सेना से चदपपुर को घेरा जब
८ भेट ९ माइजी का साला १० दह की बार्ना ११ इठ करके ॥ ८ ॥ १२
सेना में १३ अर्जुनसिंह १४ किसी मित्र के खे भ१५निरन्तर१६दह देना कहे
सो १७ कितूरी राणा रत्नसिंह के १८ शास्त्र का नाश करनेवाला तथा दह
के आगम की १९ भेट (फोजखरब) देने का कोई उपाय नहीं हुआ ॥ ९ ॥

जानिकैं अर्जुन लंपट जाहि निसागम नारिको बेस बनाइकैं ॥
 पूगिबो सीखि छली पहिलैं जिम लज्जित त्यों तैममें तँहँ जाइकैं ॥
 ठानि प्रमादी महाठिगनैं नखरेसों निरंतर प्याले पिवाइकैं ॥
 संहारि ताहि पैटालय स्वीय अतिखर आइ परयो मिस पाइकैं ॥१०॥
 लोटि कबूतर लोटनलों सु पिचंडमें व्याजके मूल प्रसारिकैं ॥
 ज्यों निज प्रान प्रयान जनाइ रहयो अति आतुरवहै छल रारिकैं ॥
 दीनों स्वकीयन दांननसों जठराख्य तदीय प्रतीकहि जारिकैं ॥
 एकही दाहनको उपचार बन्यो दृढ प्रत्यय सत्य उबारिकैं ॥११॥
 आदिम जामिनि जाम गये पहिलैं पहिलैं पटुछत्यै सबै करि ॥
 स्वोदर दाहत स्वीय सखाहु लख्यो बिधिसों बिलख्यो बिधिसों
 लरि ॥

हारिकैं दाह अनंतरहु जिम अंग थके तिम नैन पलैं जँरि ॥
 रीति घटी खट ६ सेस रही तब निंद लही छलैंसिंधु वहै तरि ॥१२॥
 हारवँ भो अरुनोदय होतहि स्वामिको सालक काहु दन्यो कहि ॥
 स्वामिनी अन्न तज्यो सुनिकैं ब्रत मारनहारके मारनको बहि ॥
 माहजि कोपि तहाँ तियतंत्र उठाइ फँटा जिम पुच्छ दव्यो अहि ॥

१ सन्ध्या समय स्त्री का वेश करके २ अन्धेरे में, लज्जित स्त्री के समान जाकर ३ उसीके छेरे में उसको मारकर ४ अपने छेरे में शीघ्र आकर ॥ १० ॥ ५ लोटन कबूतर के समान लोटकर ६ पेट में मिसकी पीड़ चलाकर ७ अपना प्राण जाना जनाकर ८ घबराकर ९ अपने सेवकों ने दांतुली से १० उसके पेट के ११ अवयव (हिस्से) को जलाया १२ एक जलाने का इलाज ही १३ सत्यता को बचाने का विश्वास हुआ ॥ ११ ॥ १४ रात्रि की पहिली प्रहर जाने से पहिले १५ उस चतुर ने सब कार्य किया १६ उसका पेट जलाते समय उसके मित्र ने भी देखा १७ विधि (रीति) से लड़कर विधि से रोया १८ नेत्रों की पलकें बन्द करके १९ बाकी २० उस छल के समुद्र को तिरकर ॥ १२ ॥ २१ सूर्य उदय होते ही हाहाकार शब्द हुआ २२ माहजी की स्त्री ने २३ नियम धारण किया २४ फण

उच्चर्यो जंबुक १ ज्यों अरिसिंह मराइ मयैदरन भोगें कितीमहि १३

॥ घनाक्षरी ॥

रैनैपच्छी भाला देलवारापति राघोदेव १,
 आदिक उदाँ हे किते तेहु सो सुनत आइ ॥
 बोले धूर्त चुहाउत अर्जुन जुवति बेस,
 मारे होइ मोघ तोके लेहु हमरे कटाइ ॥
 हो हंरि खिज्यो १ रु सिर ठोकर प्रहार पायो २,
 लैनलागो सपथँ उदैपुरको अपनाइ ॥
 ताँके मित्र आइ तँहँ संध्याके सुमट सूची,
 होत प्रभु कोप क्यों अनागसपै हाइ हाइ ॥ १४ ॥
 साँकके अंतरही अर्जुन उदर सूख,
 चालन लगे अति असाध्य न रुके विचारि ॥
 दानादिक कृत्य अवसानके सब कराइ,
 जठर तदीय हम दान्नसों राख्यो जारि ॥
 जामहु गई न राति ओर सब ठाँ निज बै,
 दाहिहु चुके तब भुँधा तो लेहु सिरदारि ॥
 स्वामिनीके सोदरतो सूतेसमै सभवत,
 मयछाके कोऊ गो निसीथें पीछें खल मारि ॥ १५ ॥
 हाकाभो जहाँलौ सब ताँके पास हे हमहु,
 दासहीके डेराहै पखो सो कहु सेसदम्भ ॥
 भौनविनु लोटत रह्यो सो सबराति भुव,

१सिंहोंको मराकर ॥ १३ ॥ २रत्नसिंह के पक्षवाले ३अर्जुनसिंह ने स्त्री का बेस करके
 ४मूठ होवे तो ५ हमारे मस्तक कटया लो ६ क्रोध किया सुषा सिंह या और ७
 सौगम ८ अर्जुनसिंह के मित्र ने ९ दोष रहित पर ॥ १४ ॥ १० अन्त समय के
 ११ दातुलियों से १२ अथ १३ मूठ होवे तो मस्तक कटा लो १४ आपकी स्त्री
 के भाई को तो १५ आधी रात पीछे ॥ १५ ॥ १६ अर्जुनसिंह के पास १७ बिना बेत

भूलिहु न आनों नाथ हेलनमें तास भ्रम ॥
 राम२०१४ प्रभु असैं व्है निरागस बचिहु रहयो,
 सहारि सपत्नकों दिखानों उदासीन सम ॥
 भार उपकारकेसों स्वामीकों नमाइ भयो,
 बंचकता१ बीरता२में तैसो को पुरोगतम ॥ १६ ॥
 ईस अरिसिंह सीस औबेदयो आगस न,
 बित्त जो लयो सो दयो दंडमें डरि बिसेस ॥
 औसी ठानि अर्जुन कुरावड़के चुंडाउत्त,
 पायो दाह दुख न गुमायो पै प्रभु प्रदेस ॥
 राघव१ सु माख्यो जसवंत२ सु बिंडारयो रान,
 आदरयो सलूमरि१ कुरावड़२ जुग२हि एस ॥
 पीछैं रान मारयो सो अंजा१९१२नै यों उदैपुरमें,
 वर्तमानमें है अब हम्मीराख्य बंसुधेस ॥ १७ ॥
 द्रंग इत जैपुर कही जो दयारामद्विज,
 बनि न सकी सो जसवंतसों उचित बात ॥
 सो तजि उपाय तब भेजिबे तिलक साज,
 सूची कूरमनसों दुहुँ२घाँ हित दरसात ॥
 जैपुरपैं दिष्टनै प्रकोप करिराख्यो जब,
 यातैं माँहिँ माँहिँ मचे पंचनमें उतपात ॥
 नारव प्रतापसे बिराजैं जहाँ बंचक तो,
 क्यों न परैं ताही ठाम घरघर घोर घात ॥

१ अपराध में २ हे प्रभु रामसिंह ३ अपराध रहित ४ शत्रु को मारकर
 ५ उपकार के भार से ६ अत्यन्त अग्रणी ॥ १६ ॥ ७ अपराध नहीं आने
 दिया ८ उस राघवदास को मारा ९ निकाहा १० बुन्दी के पति अजितसिंह
 ने अरिसिंह को पीछे मारा ११ हम्मीरसिंह नामक राजा ॥ १७ ॥ १२ भाग्य १३ ठग

सधन बिगारिबेकों राजगढवारो सोहि,
 चोर१कों जगायै गृहस्वामि२कों जगावै चाहि ॥
 औसी कछु मोहिनी मचाई कुँहकेस उहाँ,
 जाहि वहिकावै सो स्वकीय करि मानै जाहि ॥
 फोरि बहुरे१कों बखतावर२पै हारै फद,
 बधि हित ता१सों बहुरे२को गहिवो निवाहि ॥
 रानी१कों रुठाई नाथाउत्तरन निकारै नीच,
 तिन१सों प्रतारै चुडाउत्तरन मन मुधाहि ॥१९॥
 मित्र बहुरे१सों जसवत२की मति मुराइ,
 ताहि द्वार ता१सों नृपमाता२की मुराइ मति ॥
 गूढजै निदेस ता१को विप्र२ गहिवेकों गढ,
 माहि रहिवेकों गाढ कूरम बुलाइ कति ॥
 राजागार द्वार सब ओरके कराइ रुद्ध,
 गोपुर जराइ सब पत्तनके गूढगति ॥
 राजाउत्त तीन३हि जलबचोक सज्ज राखि,
 जपी कहि ज्यों न जाइ यों रहो प्रबुद्ध अति ॥ २० ॥
 जिनमें प्रवीर धूलाधीसँ रघुनाथ१ जानों,
 नदैन दलेलको जो छलमनको अनुज ॥
 सारसोप ईस दूजो२ बिक्रमदिनेस२ सज्ज,
 नाँती फतमल्लको जो रत्नसिंहको तनुज ॥

१ ठगों के पति ने २ उसको अपना करके ३ खुशाखीराम बहोरे को
 फोड़कर मछाप के कुमर यखतावरसिंह पर ४ अपसन्न करके ५ नाथाधतों
 से चुहाधतों को मिथ्या ही अपने मन से ताड़ना कराता है ॥ १९
 ६ गुप्त आज्ञा लेकर ७ राजा के महलों के सब ओर के द्वार ८ बन्द कराकर
 ९ मगर के द्वार १० सायबान ॥ २० ॥ ११ धूला नगर का पति १२ दलेलसिंह
 का पुत्र और छलमनसिंह का छोटा भाई १३ विक्रमादित्य

भूलिहु न आनों नाथ हेलनमें तास भ्रम ॥
 राम२०१।४ प्रभु असै व्है निरौगस बचिहु रहयो,
 संहारि सपत्नकों दिखानों उदासीन सम ॥
 भार उपकारकेसों स्वामीकों नमाइ भयो,
 बंचकता१ बीरता२में तैसो को पुरोगतम ॥ १६ ॥
 ईस अरिसिंह सीस अबेदयो आगस न,
 बित्त जो लयो सो दयो दंडमें डरि बिसेस ॥
 औसी ठानि अर्जुन कुरावड़के चुडाउत्त,
 पायो दाह दुख न गुमायो पै प्रभु प्रदेस ॥
 राघव१ सु माख्यो जसवंत२ सु विंडारयो रान,
 आदरयो सलूमरि१ कुरावड़२ जुग२हि एस ॥
 पीछै रान मारयो सो अंजा१९९।२नै यों उदैपुरमें,
 वर्तमानमें है अब हम्मीराख्य बंसुधेस ॥ १७ ॥
 द्रंग इत जैपुर कही जो दयारामद्विज,
 बनि न सकी सो जसवंतसों उचित बात ॥
 सो तजि उपाय तब भेजिबे तिलक साज,
 सूची कूरमनसों दुहुँ२घाँ हित दरसात ॥
 जैपुरपै दिष्टनै प्रकोप करिगख्यो जब,
 यातैं माँहिँ माँहिँ मचे पंचनमें उतपात ॥
 नारव प्रतापसे बिराजैं जहाँ बंचक तो,
 क्यों न परैं ताही ठाम घरघर घोर घात ॥

१ अपराध में २ हे प्रभु रामसिंह ३ अपराध रहित ४ शत्रु को मारकर
 ५ उपकार के भार से ६ अत्यन्त अग्रणी ॥ १६ ॥ ७ अपराध नहीं आने
 दिया ८ उस राघवदास को मारा ९ निकाला १० बुन्दी के पति अजितसिंह
 ने अरिसिंह को पीछे मारा ११ हम्मीरसिंह नामक राजा ॥ १७ ॥ १२ भाग्य १३ ठग

सधन विगारिवेकों राजगढवारो सोहि,
 चोर१कों जगावैं गृहस्वामि२कों जगावैं चाहि ॥
 औसी कछु मोहिनी मचाई कुँदकेस उहाँ,
 जाहि वहिकावै सो स्वकीय करि मानैं जाहि ॥
 फोरि बहुरे१कों बखतावर२पैं डारैं फद,
 बधि हित ता१सों बहुरे२को गहिवो निवाहि ॥
 रानी१कों रुठाई नाथाउत्तरन निकारैं नीच,
 तिन१सों प्रेतारैं चुडाउत्तरन मन मुधाहि ॥१९॥
 मित्र बहुरे१सों जसवत२की मति मुराइ,
 ताहि द्वार ता१सों नृपमाता२की मुराइ मति ॥
 गूढजै निदेस ता१को विप्र२ गहिवेकों गढ,
 माहि रहिवेकों गाढ क्रूरम बुलाइ कति ॥
 राजागौर द्वार सब ओरके कराइ रुद्ध,
 गोपुर जराइ सब पत्तनके गूढगति ॥
 राजाउत्त तीन३हि जलेबचोक सज्ज राखि,
 जपी कहि ज्यों न जाइ यों रहो प्रबुद्ध अति ॥ २० ॥
 जिनमें प्रवीर धूलाधीस रघुनाथ१ जानौं,
 नदैन दलेलको जो छलमनको अनुज ॥
 सारसोप ईस दूजो२ विक्रमदिनेसर सज्ज,
 नाँती फतमल्लको जो रत्नसिंहको तनुज ॥

१ ठगों के पति ने २ उसको अपना करके ३ खुशाखीराम यहोरे को फोड़कर झुठाप के कुमर बखतावरसिंह पर ४ अप्रसन्न करके ५ नाथाधतों से चुंदाधतों को मिथ्या ही अपने मन से ताड़ना कराता है ॥ १९
 ६ गुप्त आज्ञा लेकर ७ राजा के महलों के सभ ओर के द्वार ८ बन्द कराकर ९ नगर के द्वार १० सायबान ॥ २० ॥ ११ धूला नगर का पति १२ दशेधसिंह का पुत्र और छछमणसिंह का छोटा भाई १३ विक्रमादित्य

तीजो३ बखतावर३ भूलापको कुमर तत्थ,
 मानों तप३ लौकै सावधान अपनै मनुज ॥
 रुद्धकरि रादकों जलेबचोकमै ए रहे,
 दीसे घोर भूसुर२के रोकिबेकों भूदनुज२ ॥२१॥
 रीति सोही स्वीकरि प्रतापके पढाये रहे,
 नाथाउत्त संसदके अंतर धवल धाम ॥
 इनमै पुरोगै रत्नासिंह१ पुर चोमूँ ईस,
 दूजो२ पुर सामोदेस नाम सुरतान२ नाम ॥
 भिन्न मत केते भनै इनकों तटस्थ इहाँ,
 कोऊ चुडाउत्तन बुलायो सूचि इहिँ काम ॥
 बिद्यागुरु भट्ट१कों निर्मित राखि नारवरनै,
 रूठि पकरायो यों बहोश कुसहालीराम ॥
 पीपलदा काका सत्रुसालकों दयो लै पुब्ब,
 चित्त सु बिरोध बखतावर कुमर चाहि ॥
 मारिबे लग्यो वहाँ द्विजको सो छलघात मंडि,
 दुर्बचन पावक प्रयोग पाती उर दाहि ॥
 विक्रमदिनेस तब कुमर निवारयो बदि,
 मंत्री सब जानै मर्म अबहि नमारो याहि ॥
 मंत्र३१ कोस४२ दुर्ग६३नको यासों सब पाइ मर्म,
 मारिहैं सहज पीछै कोउक बिधि समाहि ॥ २३ ॥
 माधव महीप जब जाटतैं समर जीत्यो,

१ ब्राह्मण के कैद करने को २ भूमि के दैत्य ॥ २१ ॥ ३ प्रतापसिंह के सिख
 ४ सभा के भीतर महलों में रहे ५ अग्रणी ६ सामोद का पति ७ प्रसिद्ध
 तथा क्रोधी तथा निंदायुक्त ८ कारण ॥ २२ ॥ ९ छोटे बचनों रूपी आ
 से हृदय रूपी पत्रों को जलाकर १० यह ब्राह्मण मंत्री सब मर्म जानता
 जिससे ॥ २३ ॥ ११ भरतपुर के जाट से

जैपुरके जोध परे धुलापति आदि जब ॥
 राव१ रु बहादुर२ उभै२ पद मिलित राखि,
 एह *उपटक पायो बिक्रम तरनि तब ॥
 विप्र कुसहालीराम तामें भो निमित्त बुध,
 यातैं बीर बिक्रम सो धिति उपकार अथ ॥
 मृग्यमुख पैठो यों निकास्यो द्विज मत्री कुल१,
 धर्म२ सुद्ध व्है जो भूतिजाइ उपकार कब ॥ २४ ॥
 पीछैं राजकाज पूछिषेकी बात बध करि,
 देवगढ वासिनको मते कछु दै दबाइ,
 भाखी जो रहो तो लहो अपनै पटाको भोग,
 आहु न बुलायैं विनु अर्गजाको अपनाइ ॥
 रानीको पितासो पूछिबोहू करि तस रुँड,
 भाख्यो पिछिद्वार न बुलावहु जैनक१ भाइ२॥
 सूनु दुव२ रावरे न राखहु निज समीप,
 ससद रहन देहु पचनमें पधराइ ॥ २५ ॥
 औसो फद डारिकैं नरुका रहि दूर आय,
 राजकाज बाहिर जे भौदिक समस्त भट ॥
 भाख्यो भूप माधव जो मत्री निज कीनों मुख्य,
 विप्र कुसहालीराम साथैं काम नीति बट ॥
 राजाउत्त बचकन भेषिकैं पिहित रानी,
 मल्लिनाग मत्रमें जो इत पकरयो प्रकट ॥
 यातैं अधिकारमें न रहिबो उचित अहो,
 नगरतैं निकासि निवारैं द्विज भै" निपट ॥ २६ ॥

*राव बहादुरकी पदवी१बिक्रमादित्यने पाई१कारण॥२४॥१दोष४पुत्रीको१पूजन
 बंध करके१पिता को और भाई को खिड़की पर मत बुलाओ७समामें॥२१॥जनरुका
 प्रतापसिंह६ठगों ने१०गुप्त११बाणक्य के मन्त्र में(नीति में)१२आश्रयका अर्थ॥२६॥

राजाउत्त१ नाथाउत्त२ चुंडाउत्त३ मढिराखि,
 सेसन सिखाइ यों खुलाइ पुरके अरर१ ॥
 बाहिर निकसि स्वीयस्वीय घरतैं बुलाइ,
 सेससेस सुभट प्रताप रहि अग्रसर॥
 रानीसों कहायो राजाउत्त जे चहत राज्य,
 तिनको भरोसा न करो ए गिनौं सत्रुतर ॥
 बिप्र नैयपंडित जो रावरो हितहि वंछैं,
 ताहि निकसावहु नतो हैं हम पापपर ॥ २७ ॥
 भेज्यो जो बिदग्ध मरदृष्टन समुह भूप,
 भेज्यो जोहि मिच्छरनके सम्मुह दे भुजभार ॥
 भेज्यो अंगरेज३नके सम्मुह उचित भाखि,
 तूही यह राजपद राखिवे अति उदार ॥
 राजा१ भट२ सचिव३ प्रजा४ कों थिर राखिवेको,
 जाकै पन ताहि रोकैं जे जनें पिहित जार ॥
 यातैं बुध विप्रकों छुराइ करो मंत्री आप,
 हाहा नहितो ब प्रतिकूल भासैं होनहार ॥ २८ ॥
 फीरोजाभिधान सु महावत बुलाइ फिरि,
 मिच्छ राजाउत्तन रखायो राजकाज माँहि ॥
 बिप्र पकरायो सो विरोध बिसराइवेकों,
 आप टरिबैठे अब रानीतैं प्रनत आँहि ॥
 बंचक कहाइ द्विज कारतैं निकासिवेकी,
 नारव प्रताप इत कृत्यमें रहत नाँहि ॥

१ कपाट २ अपने अपने ३ याको के उपयोगी (उचित) सुभटों को बुलाकर
 तापसिंह अग्रणी रहा ४ नीति चतुर ॥ २७ ॥ ५ चतुर ६ छिपेछुपे जार से
 उत्पन्न है ७ पंडित ब्राह्मण को ॥ २८ ॥ ८ फीरोजखां नामक ९ नम्र है.

लोभिनकोँ प्रेरिकेँ उपद्रव करन लागो,
जितमित जाके जोध लूटिवेकोँ चढिजाहिँ ॥ २९ ॥
विप्र गहिवेकी पढिलेँ जो लिखी बचकनै,
रानीपास अरजी१ हुती सो बेग निकराइ ॥
एक१ लिखि पत्र निजनामको जवन उभैर,
पत्र कछुव्याज पुर बाहिर दये पठाइ ॥
यो लिख्यो उदत तुमहीकोँ बरिँ बचकनै,
विप्र पकरायो लेहु प्रतपय लिखित पाइ ॥
हेरि दित यातें पुर पैठहु प्रताप हनि,
विप्रहिँ कटाइदै है इत हम भद्रभाइ ॥ ३० ॥
सेखाउत्त१ खगारुत्त२ आदि कछुवाह सूर,
बाहिर हुते जे पत्र ते दुव२ लिखि विचारि॥
सेनानी हमोरदेव बसी राजसिंह१ सान२,
उत्तेजक१ सूर१ सख २ पैने करे धक धारि ॥
बोल्यो करी कुहक प्रताप सो लखहु बीर,
ढाकी कढिजैहैं अध राज्यपै गजवपारि ॥
तातें तुम सग हम अज्जहि अनेहतकिं,
मित्रन विरोधी महा अधमकोँ ढालें मारि ॥ ३१ ॥
पत्र सु महावतकोँ बाहिरके पचनमैं,
आतहि विचार्यो घात नारवपै क्रुद्ध अति ॥
पत्र राजाउत्तन पठाइ इहिँ अतरमैं,

॥ २९ ॥ १ वृत्तान्त २ ठग ने ठग कर ३ इस लिखावट को लेकर विश्वास
पोओ ४ राजगड्ढ के नरुका प्रतापसिंह को मारकर ५ कल्याण की रीति से
॥ ३० ॥ १ राजसिंह ने सान से प्रेरण पत्र और शस्त्रों को लक्ष्य किये ७ भक्षण
करनेवाला (पापी) ८ गजय पटक कर ९ समय देखकर ॥ ३१ ॥

नारवकों नीचन जनाइ दानी गूढ गति ॥
 दूर कछु भेजि यातैं आपुनै पिहित दूत,
 पीछे बुलवाये रूपात दोरतजे आपप्रति ॥
 आइ तिन भाखी राजगढकों लगे अहित,
 राखिहो मही तो इहाँ धरिहै नृपहु रति ॥ ३२ ॥
 सोहि सुनि लैके मुख्य मुख्य उँपहार संग,
 और प्रसरेही राखि डेरन सहित एह ॥
 कुंचकरि ताही निस चढिकै प्रताप कढि,
 छद्मघात भीत छद्मी गो निज कथित गेह ॥
 अयुत १०००० अनीकको अधीस राजसिंह १ अरु,
 सेखाउत्त १२ खंगारोत्त २३ हे मिलि हठ सनेह ॥
 ताँकतेही तदपि रहे छद्मघातक त्यों,
 पारदलों कढिगो प्रताप लै सु विधि लोह ॥ ३३ ॥
 बाहिरके पंचन प्रताप कढिगो विचारि,
 सर्प १ हि गुमाइ लेखार कूटिबेकों सज्ज बनि ॥
 मार १ लूट २ घाँघाँ तिन अधिक मचाई बिप्र,
 सचिव निकासिबेकों जोरकी मरोरँ जानि ॥
 आये पुर चाहैं तिन्ह राजाउत्त रोकि अँध्व,
 पैठन नदै ए प्रतिकूल पच्छभाव भनि ॥
 व्है तदपि व्याकुल प्रजा सब पुकारी हाइ,
 क्यों न द्विज काढहु रे तुम १ हम २ भद्रें तनि ॥ ३४ ॥

१ प्रतापसिंह को २ छिपछुप दूत ३ जयपुर का राजा भी प्रीति
 करेगा ॥ ३२ ॥ ४ सामग्री ५ फैलेहुए ६ छद्मघात के डर से राजगढ़
 चलागया ७ देखते ही रहे ८ पारा के समान ९ ब्रह्मा के श्रेष्ठ लेख ॥ ३३ ॥
 १० रेखा (लकीर) ११ दिशा दिशा (ठाम ठाम) १२ मरोड़ (घमंड) करके १३ मार्ग
 १४ तुम्हारा हमारा कल्याण फैलाकर ॥ ३४ ॥

दाहाकार सुनि सु पिताके मत बाहिरव्हे,
 हेरि अवकास भगिनीको गूढलौ हुकम ॥
 सूनु लैहुरो जो जसवंतको गुपालसिंह,
 लैगो निज आलपसो बिप्रहिँ छुराइ छेम ॥
 ताहि सतकारसौं कितेक दिन गखि तत्थ,
 ताके गेह पीछें पहुँचायो जाइ सूरितम ॥
 विप्लव निवारयो तब बाहिरके पचनपै,
 पुरमें न पैठनदै राजाउत्त सत्रुसम ॥ ३५ ॥
 अररं न खोलैं ए झलायके कुमर१ आदि,
 औबो चहैं नारव प्रतापको बहुरि अत्र ॥
 जाइ घर नारव न आयो देस१ काल२ जानि,
 पापिननैं जदपि झुलायो दै प्रचुर पत्र ॥
 बेला तिहिँ प्रत्युत प्रतापको प्रताप बढ्यो,
 लेख जवनेसके लहे छिति१ चमर२ छत्र३ ॥
 नालकी४ नृपत्व५ त्रिहजारी३००० उपटक आदि,
 औसैं घर बैठैं भयो भूपति अघ अमत्र ॥ ३६ ॥
 पहिले समय कोपि वीकानैर भूप पर,
 जोर डारि मागि साइ साइसके दम्भ जब ॥
 रूपय कतिक लख देकैं अवसेस रहे,
 तिनमें प्रमेयँ दयो बदी इक१बहु तब ॥
 देयँ सेस बहुरि दये न कछु व्याजँ करि,
 कोल टरिबैतैं यो बलिष्ठ रुकिजात कब ॥

१ बहिर्न का छाने हुकम लेकर २ राखत जसयन्तसिंह का छोटा पुत्र ३ समर्थ
 ४ अत्यन्त शत्रु ५ राज्य का उपद्रव ॥ ३५ ॥ ६ किबाकु नहीं छोले उपद्रुत पक्ष
 लेकर ८ उस समय सल्ला प्रतापसिंह का प्रताप बढ़ा और बादशाह की निज्जा
 बट से ९ राजापन लिया १० पाप का पात्र ॥ ३६ ॥ ११ दंड के रुपये १२ प्रमाण
 (रुपयों के प्रमाण में) १३ देने योग्य बाकी के रुपये १४ मिस्र करके

नाम नहीं जान्यों पै *कबंध जो जवन करयो,
 सो नजीब खान सुत मान्यों सोंपि गेह सब ॥ ३७ ॥
 बीकानैर नृपको सेनाभि जो तजि स्वबंस,
 कष्ट लहि कारामैं कबंध बजिबो बिहाइ ॥
 कथित नजीबखान नामक नबाब करयो,
 पुत्र जाकों अंकथित साहको हुकम पाइ ॥
 या समय ताको उहाँ चलन बढ़यो अधिक,
 अयुत १०००० तुरंगनसों बाहिनीकों अधिकाइ ॥
 जैपुरके जीतिबेकों साहको लै सासन सो,
 अज्जर्पन लज्ज छोरि सज्ज भयो अनखाइ ॥ ३८ ॥
 केते कहैं सो सुत नजीबको नजब नाम,
 सूचैं के नजीबसोही नाँ यह जनक नाम ॥
 दाबे देस दिल्लीके छुराइबेकों सज्जि दल,
 प्रस्थित भयो सो जेर जैपुर करन काम ॥
 साहसों लिखाइ दै कह्यो जो अधिकार सब,
 नारव नरेसकों बुलाइ तानैं सह साम ॥
 दिल्ली छिति दाबी जाटसो तिहि अधिक दैकैं,
 अमल प्रतापको करायो तहाँ अभिराम ॥ ३९ ॥
 संवतके एकऊन बीसम १९ सतक १०० समै,
 कतिक गये १ रु भये २ देखो नये २ राज्य कति ॥
 पुण्यापुर १ राघोगढ २ सोपुर ३ नलपुरा ४दि,

*जिसका नाम नहीं मालूम हुआ उस राठोड़ को यवन किया ॥ ३७ ॥ १ सपिडी
 (सात पीढ़ी के भीतर का भाई) २ कैद में राठोड़ बजना छोड़कर सेना को बढा
 कर ४ आर्यपन की लज्जा छोड़कर ॥ ३८ ॥ ५ पिता का यह नाम नहीं है ६ मिलाप
 के साथ नरुके राजा प्रतापसिंह को बुलाकर ७ भूमि ८ प्रतापसिंह को ॥ ३९ ॥
 ९ उन्नीस सौ के शतक में कितने ही राज्य चलेगये और कितने ही नये हो

औसैं बडे१ छोटे२ घनै विगरे प्रमत्त अति ॥
 लैवपुर१ अलपुर२ ज्योही टोंक३ जावरा४ रु,
 पट्टनि५ पुरोग यों नये के भये भूमिपति ॥
 उक्त काल नारव प्रताप इनहीमैं एह,
 मिच्छनकों वैचिकै महीप वन्धों छद्ममति ॥ ४० ॥
 अल्प मास याकै पहिले दो मचहेरी१ आदि,
 ताने देस१ काल२ छल३ बल४के सहाय तब ॥
 जोर लहि छोटे१ बडे२ वावन५२ गढन जीति,
 स्त्राय कीनो दिल्ली सन दक्खिन२।३ प्रदेश सब ॥
 अलपुर१ राजगढ२ तिमहि तिजारा४ आदि,
 याके वसवर्ती भये सहर अनेक अव ॥
 कर्मध्वज मिच्छ वा प्रतापकों सुद्धदे कीनों,
 जैपुरकी जीतिलैन नजब रुक्यो न जब ॥ ४१ ॥
 दावे कछवाहन जितेक उत दिल्ली देस,
 जीति तिन्ह जैपुर भू जीतिवो नियत जानि ॥
 मित्र बहुरातैं भेदि सचिव महावतकों,
 मित्र राजाउत्तन नयो जो लयो उर मानि ॥
 सग तस दैकैं सब वैभव मुसाहबको,
 तीनलाख३००००० मुद्रा दे उँपायनकों नय तानि ॥
 पठयो जवन सो प्रैतारक जवन पास,
 भारूपो जाइ टारो भय ब्रह्मै नतो छिति हानि ॥ ४२ ॥
 रानी१को निदेसलै सहाय जसवत२ राखि,

गये१छाहोर२अलपुर३कालरापाटन आदि४थानों को ठगकर ॥ ४० ॥ ५ माचैही
 ६अलपुर ७ आधीम ८ कमधज (राठोड) से यवन होनेवाला ९ मित्र बनाया
 ॥ ४१ ॥ १० जयपुर की भूमि मिरथय ही जीतना जानकर ११ नजर करने को,
 नीति फैलाकर १२मादना करनेवाले यवन के पास इसयवनमहावतको भेजा ॥ ४२ ॥

तब राजाउत्तन महावत यों भेज्यो ताम ॥
 प्रीतिपत्र भेज्यो संग यों लिखि प्रतापप्रति,
 करिये नरसै१को रु मित्रन२को यह काम ॥
 जैबोहु न भावतो महावतके गेह जाको,
 सो अब समुह आइ साधिवेकों छल साम ॥
 मिलि उरलाइ एक१ गजपै महावतसों,
 बाम२ अध बैठि लैगो मीन१ ज्यों बँडिस२ वाम ॥४३॥
 बस्त्रालय आइ तास आसन अधर बैठि,
 पीछें जाइ संग लै जवनकों जवन पास ॥
 आन्यों उपहार उक्त भेट सु१ कराइ इभ२,
 अस्व३न समेत रु दिखाइ आगमन आस ॥
 पीछे आइ भाखी यों महावत प्रतापप्रति,
 दावे देस जैपुरके छोरहु जिम स्वदास ॥
 लेहु नित्य मुद्रा सतपंद्रह १५०० नृपालयतैं,
 वैन जिम हे प्रबुद्ध आपुनैं मिलत हास ॥४४॥
 जोरि तँहें बँचक प्रतापनैं कपट जाल,
 घर बिधि ठानि घोर करन विसासघात ॥
 लोभी उक्त मानि ताकों आगरानगर लाइ,
 पिहित उपाय कर्यो ताहीको पुनिनिपात ॥
 तोप१ गज२ बाजि३ द्रव्य४ आदिक बिभव ताको,
 दाबि सब राख्यो प्रतिकूलता दृढ दिखात ॥

१ तहां २ जयपुर के राजा का ३ नीचे बैठकर ४ कांटा मच्छी को उल्टा
 लेजावे जैसे ॥ ४३ ॥ ५ डेरे में ६ गादी के नीचे बैठकर ७ महावत को उस
 नबाब के पास लेगया द सामग्री लाया था सो ८ राजा के घर से, जिस
 हे चतुर अपने मिलने की इसी नहीं होवे ॥ ४४ ॥ ९ ठग ने ११ छिपेहु
 उपाय से १२ उस महावत को मारडाला

औसेही प्रकार सेखाउत्तनके देस इत,
 ओज फैल्यो तिनको मनोहरनगर आत ॥ ४५ ॥
 तिनको दवावन१ फवावन सचिवता२ रु,
 राजाउत्त कुमार चवावन३ वही जमराज ॥
 पत्रन मिलाइ निज मोचक सुदि गुपाल,
 कीनों खुसहालीराम बहुरा लखहु काज ॥
 रानीको मनाइ बखतावर इनन रीति,
 टाटीकोसो ओट सेखावाटीको धिरचि वंजाज ॥
 बाहिरके वीर भेजिवेको पुरमें बुलाइ,
 सीखदै न तिनको सज्यो अब कपट साज ॥ ४६ ॥
 नाथाउत्त१ निखिल समज्ज्योसअ राखे सज्ज,
 चक्रपति२ खगारोत३ ए थित जलेबचोक ॥
 कुमारको काका४ वेग तबहि बुलायो वह,
 घातक बिचारि इन्ह पास राख्यो ताही ओक ॥
 राजद्वार बाहिर बजारमें सकल सेना५,
 राखी करि मज्ज कढिजाइ तो रचन रोक ॥
 सरदकीडोडी पथ राउत्त६ पठायो सअ,
 लैन बाँधिगखी दुहुँ२घाँ भरि प्रबल लोक ॥ ४७ ॥
 पुरमें अवाई यों मनोहरपुर१ पुरोगे,
 पीछे लये थान सेखावत्तन खिनाई पात ॥
 यातैं सेखावाटीपै इहाँके भट१ ओ अनीकर,

१ प्रताप ॥ ४८ ॥ २ भूनाथ के कुमार के अपने को श्रेष्ठ ॥ ४९ ॥ ३ सन मायावतों को
 समा के मफल में सज्जित रखने ५ सेनापति ६ वसी स्थान में ७ जयपुर के
 महलों की छोटी का नाम हैदराबत जसवन्तसिंह को उसके घर भेजा ॥ ४७ ॥ ८
 आदि १० समथ पाते ही ११ सेना, सेखावतों को विजय करने को सीखने

आये सीखलैन उहाँ जय करिबेकों जात ॥
 जासमै कुमार१ व्है कुमार नृपकी हजूर,
 सीखलै बिगत संक आपुनी हवेली आत ॥
 संसद निकेत हुते तिनतैं बिधेय साधि,
 सीमातैं नृजान बैठि निकस्यो अकसमात ॥ ४८ ॥
 आवत जलेवचोक अंतर कुमर एह,
 कटक अधीस राजसिंह यों दिय कहाइ ॥
 आपतैं न छानी हम जात अवही पे इहाँ,
 रावरो रहस्य कछु इच्छत करहु आइ ॥
 कुमर कहाइ तुम कमहु हवेली होइ,
 एतेमैं हरोल ओक देख्यो लोक उफनाइ ॥
 बाहिर बजारकीहु सुधि पहुँची वहाँ सुनौं,
 कुसलपिनाती आज कुसल न जान्यों जाइ ॥ ४९ ॥
 बेनीतंक आपुनौं मुराइ सो सुनत बेर,
 बोल्यो टेरी आवत मैं मंत्रकरिहैं अवहि ॥
 चोक१ बिच चोकी१सिकताको कोट छाती सम,
 लोक बहु ताके द्वार मारनकों सज्ज लाहि ॥
 कोटतैं नृजानैहिं भिराइ यह पैठो कूदि,
 ओरनकों छोरि छिग लीनो राजसिंह अहि ॥
 पूगे संग पंद्रह१५ तदीयें भट ताही पंथ,

आई है॥ जयपुर के बालक राजा से २ सभा के मकान में ३ उचित रीति
 साधकर ॥ ४८ ॥ ४ सेनापति राजसिंह ने ५ एकान्त चाहता हूँ ६ हवेली
 होकर जाना ७ आगे के स्थान पर लोक बहता हुआ देखा ८ खबर ९ आज
 कुशलबिह के पोते (कुमर बल्लतावरसिंह) का कुशल नहीं दीखता ॥ ४९ ॥
 १० बिना नीतिसे अपना पीछा फेरना सुनते ही “छिगलभाषा में नीति को नीत
 कहते हैं” जिसके साथ स्वार्थ में ‘क’ प्रत्यय करने से नीतिक हुआ है ११ धूलकोट १२
 पालखी को भिड़ाकर १३ राजसिंह रूपी सर्प को पास लिया १४ उस कुमरके धीर

कुमर सुनाई कटकेस अब देहु कहि ॥ ५० ॥
 काका सत्रुसाल ढिग देखि पृछ्यो आपे कव,
 भारूपो तिहिं याहीवेर आयो हुत हेमतीज ॥
 राजसिंह भारूपो आप क्यों यह विगारो राज्य,
 वार कव खात हाहा खेतमें फलित बीज ॥
 दिवस १ विभावरी २ घटावत चलन देखो,
 सोतो रन रावरी खटावत खलन खीज ॥
 परगना दावे आठ अयुत ८०००० प्रमेय धर-
 नासके निदेस विनु को करै यो हठ धीज ॥ ५१ ॥
 बहनादि गाम १ तीन अयुत ३०००० को दाव्यो दग,
 सोपे भाखि भोजनको चाकरी विनुविचारि ॥
 पिप्पलदा सटै पच अयुत ५०००० प्रदेस पुनि,
 सासन विनांढि दावे सासनसम सम्हारि ॥
 कीलिं बहुराको १ दुष्ट नारवरको मिल कीनों,
 मित्र कीनों जानै सो महावत सचिव मारि ॥
 वैभव धनीको दाविरारूपो स्वीय सम्मतिसो,
 को फल लड़ोगे अहो पापिनमें बट पारि ॥ ५२ ॥
 वेन कटकेसको यहै सुनि कुमर बोल्यो,
 अवहि सुधारो आप विरच्यो हम विगार ॥
 काकाकी कटारी बड़ी पीठिपै इतेक बिच,

१ हे सेनापति ॥ ५० ॥ २ शीघ्र ३ खेत के फलें हुए बीज को
 माड़ फप खाती है, दिन ४ रात में राज्य को घटाने का आप वा अतन
 देखो आपकी यह खीज दुष्टों पर युद्ध में खटाती है ५ अस्सी हजार के प्रमाण
 बाखे परगने राजा की बिना आज्ञा दपाये हैं ॥ ५१ ॥ ६ बिना ही आज्ञा वद
 फ के समान रख लिया है ७ यहीरा को वैध करके ८ नरुका प्रतापसिंह को
 ॥ ५२ ॥ ९ सेनापति का वचन

क्रोड़ बखतावरको भेद्यो सहसा दुर्सार ॥
 प्रैदवत प्राननलौ जैपुर चमूँप जब,
 तीजे३ पैँड पूगि ताकैं प्रहृत करयो प्रहार॥
 कुमर कटारी राजसिंह हिय भेदि कठी,
 प्रमदाँ कटाक्ष जैसैं छैलनके उरपार ॥ ५३ ॥
 क्रोड़ कटकेसको विदारि पारि यौँ कुमर,
 बैठो चढि ऊपर निजासन तिहिँ बनाइ ॥
 रंगि सत्रुसोनितसौँ मूछनकोँ भाख्यो राज्य,
 जात बिगख्यो जो यौँ सुधारयो भलो अपनाइ ॥
 ऊरध१अधर२ अँसैं दुहुँशन विहाय असुँ,
 आयतिउदर्क जथा उद्यम जस जनाइ ॥
 सत्रुसाल पारदलौँ सिटाकि सिटाइ स्यार,
 मारि याकोँ ताहीखिन गेह गो सुँर मनाइ ॥ ५४ ॥
 त्यों भट पचीसर५ इत१ उतर२के परे तँहँ,
 सपिंड१ असपिंड२ रु सगोत्र३ असगोत्र४ संग ॥
 द्वि२गुन ५० समीप संख्य घायल भये दुरदिस,
 आयुबल केते बचे तिनमैं अबस अंग ॥
 बनिक धनिक राखि नाव धनकाज बोरि,
 जियनचहैं ज्यौँ मूढ नाविक पकरि मंग ॥
 बिह बखतावर यौँ पहुँचि पलाँवतकोँ,

१श्रुजान्तर(छाती)। जयपुरका सेनापति२प्राणलेकर भागा तब३नाश करनेवाला
 ४स्त्री के कटाक्ष५छैलों (रसिकों)के ॥५३॥ ६राजसिंह को अपना आसन बनाकर
 ७इसप्रकार ऊपर नीचे दोनों ने प्राण छोड़े८आनेवाले समय का फल ९पारे के
 समान१०देवताओं को मनाकर “हम ऊपर लिखआये हैं कि संस्कृत में देवता
 शब्द स्त्रीलिंग है परन्तु लोकरूढि के कारण पुल्लिंग लिखते हैं” ॥५४॥ ११संख्या
 (गणना)१२नाव का मस्तक पकड़कर नावडिया(खेवडिया)रहै तैसे१३बेघन किये
 हुए (घायल) भलाय के कुमर बखतावरसिंह ने १४युद्ध में भागतेहुए राजसिंहको

रग१ राजसिंह२ राख्यो मूँछ१ न कुपित रग२ ॥ ५५ ॥
 पीछे खगारुत१ न उपेत नाथाउत्त२ननै,
 चुडाउत काढे अधिकार अपनो विचारि ॥
 राख्यो मुख्यमन्त्री वहुरा सो खुसहालीराम,
 धीधन जो जाके पच्छ सोही दच्छ द्विग धारि ॥
 रानीके प्रकोष्ठ निज जामिक सुभट राखि,
 रैन१ सुरतान२ सज्ज सख अपनै सम्हारि ॥
 पितृवत्त१ नरस सह सोदर प्रताप२ पोत,
 माँहि१तै निकासि माँहि२ राखे अन्य मद मारि ॥५६ ॥
 पावै नाहि मिलन प्रसू१ सुत२ परस्पर ज्यो,
 आपुनै भटन बीच धाता राखि यो उभय२ ॥
 करनलगे ए विप्र सम्मतिसो राजकाज,
 राजाउत्त काढे सेस बाजी जिम धीन रँय ॥
 तापै इन नारव प्रतापको मिलाइ तब,
 दोसा१ पुर लूटयो दोरि अनयमै जानि अय ॥
 नगर निवाई१२जो भलायके भटन जाइ,
 जेर निज कीनो ठानि ग्राम२३न समेत जय ॥ ५७ ॥
 कीर्तिसिंह सासक भलायको जँरठ काय,
 कुटिल हुतो जो अध तैसे महापाप करि ॥
 मूनु बखतावरसो सोयो मूरसज्जा सुनि,
 अधता बढाई अब रोइरोइ बोधे अरि ॥
 बेगहि मरयो सो लोभतै तिम कुल बिगारि,

॥ ५५ ॥ १ बुद्धिमान २ छोटी पर अपने पहरायत ३ बालक माँहि प्रतापसिंह
 सहित ॥ ५६ ॥ ४ माता और पुत्र ५ बेग रहित घोडा मिलाया जावे जैसे ६
 अनोति में अपना भाग्य जानकर ॥ ५७ ॥ ७ बूढ़ शरीरवाला ८ पखतावरीसह
 जैसा पुत्र ९ ज्ञान का दातृ

ताहूके पिनाती उनसत्त भयो पापपरि ॥
 जाहि प्रभु जानौ मरयो आपुने समयमाँहि,
 सासक अलायसो बहादुर भो नै विसरि ॥ ५८ ॥
 पीछे कतिवर्ष खोइ हाथतैं अलायपुर,
 आलंबनैं हीन लख्यो दीनलों दुख अछेह ॥
 ईरसातैं तबहु अलायपुरधारे द्विज,
 दीन बहु मारे१ करिडारे बहु व्यंग देह२ ॥
 केही अष्ट पारे जवननतैं मुख थुकाइ३,
 गेरी तिनकी तिय जनंगम जनन गेह४ ॥
 मनुजको मारिबो कुतूहल पतित मान्यो,
 असो भयो प्रथित बहादुर कथित एह ॥ ५९ ॥
 भावी१ सो उदंत वर्तमान२ अब भारूपोजात,
 रूँष्ट खुसहालीराम इनकोँ बिगारि इम ॥
 दाबे बखतावर जे दाबे पुनि दंग१ देस२,
 विद्यागुरु भट्ट१ बहुरा ए जुरे एक१ जिम ॥
 दोउ२नके नामके चलाये व्यवहार दैल,
 कूरम कितेकनके न रुची तथा प्रतिमै ॥
 पैति१नमै राखे दै२ बरुथ दादूपंथि२नके,
 सौदि१नमै राखे दुव२ दक्खिनी२ अनीक सिमै ॥ ६०

१ उसका पोतारहे प्रभु रामसिंह उसको अपने समय में मराहुआ जाना ३ =
 अलाय का पति बहादुरसिंह नीति को भूलनेवाला (खूब) हुआ ॥ ५८ ॥ ४ बि
 आधार ५ हीननासिका नफटे करदिये चण्डाल मनुष्यों के घरों में उस नीच
 मनुष्यों का मारना खेल समझलिया था ८ यह बहादुरसिंह ऐसा प्रति
 हुआ ॥ ५९ ॥ ६ यह वृत्तान्त आगे होमेवाला है १० क्रुद्ध [क्रोधयुक्त] ११ ८
 १२ अपने सदृश होना नहीं रुचा १३ पैदलों में १४ सेना १५ सवारों में १६ समान ॥ ६

इगलिया अवा १ सातसहस्र ७००० तुरगनतै,
 कीनों निज आश्रित फिरटन विजय काज ॥
 दक्खिनी चालुक्य जसवतरावर नाम दूजो,
 बाउलावजत सोपे सप्तिन इते ७००० समाज ॥
 सूचित पदाति १ सादी तल निज राखि तिन,
 काढि राजाउत्तनको लरि रु लुपाइ लाज ॥
 गेरि भय पीछे लौ निवाई १ भगवतगढर,
 जैपुरको अमल जमायो राम २०१४ नरराज ॥ ६१ ॥
 पित्यलनरेसहि चढाइ ए सचिव पीछे,
 विद्यागुरु भट्ट १ अरु बहुरा २ बल बनाइ ॥
 सग भट नाथाउत १ खगारोत २ आदि सजि,
 जाल जरि बिटयो मनोहरपुर १ हिं जु जाइ ॥
 पहिलै मनोहरपुराधिप सगतसिंह १,
 नाथ २ निज अंगज उपेत छोनि छक छाइ ॥
 दर्प कछु कीनों ज्येष्ठभावं कहि जैपुरतै,
 माधव महीप समै दायँदत्व दरिसाइ ॥ ६२ ॥
 तबही सगतसिंह १ नाथ २ ए पिता १ तनयर,
 माधवनरेस काढे दोउरनको मदमारि ॥
 अमरसर १ रु मनोहरपुर २ थान उभैर,
 सीमा सब सहित छुराये कर्म डर डारि ॥
 वर्तमानमै बलि उभैर ए आइपैठे अब,
 राजाको चढाइ लाइ मन्त्रिननै रचि रारि ॥

१ मरहटा जाति विशेष २ इतने ही घोडों के समूह से ३ हे राजा
 गमसिंह ॥ ६१ ॥ ४ सेना बनाकर ५ अपने पुत्र सहित ६ जयपुर से
 आदमी होना कहकर ७ भाईपन दिखाकर ॥ ६२ ॥ ८ बड़ा अप् दाखकर

दै भय पिता१ सुत२ वे पीछे निकसाइ दये,
 अमल जमायो पीछो आपुनों जस उबारि ॥ ६३ ॥
 पितृल नरेसकी सवित्री इत व्याधि पाइ,
 जैपुर असाध्य भई ताकी सुधि जानतहि ॥
 मंत्रीद्वैरहि तासों द्वैरहि पुत्रन मिलैवो मानि,
 लाये मोरि भूपतिकों प्रत्यह प्रयान लहि ॥
 अंतेउर आपुनों प्रबंध करि द्वैरही पुत्र,
 मातासों मिलाये कहि आये लाये जीति माहि ॥
 तीजे३ दिन तासों तज्यो चुंडाउति काय तिम,
 साधारन रीति भयो कृत्य पिछलो सबहि ॥ ६४ ॥
 जाट१ जवनन२कै मच्यो यों पुर डिग्घ जुह,
 पूगो व्है तटस्थ तँहँ नारव पता१ नृपहु ॥
 जैपुरके तंत्र दक्खिनी जो जसवंत२राव,
 बाउलासो चालुकहु गो तह सदर्प बहु ॥
 मंत्र करि बिजन पता१ रु जसवंत२ मिलि,
 कंरट कनीनिकालों द्वैरघाँ बनिसूचकहु ॥
 मायापटु जट्ट१नतैं पिहित२ मिलाइ मन,
 मिच्छ१नतैं प्रकट२ मिलेही रहे मंत्र महु ॥ ६५ ॥
 मंत्री बहुरानैं तब जाइ तँहँ मिच्छनसों,
 कामाँपुर पीछो लयो मंग्यो बसुं भेट करि ॥
 बचन कैलंबन प्रतापको हृदय बेधि,
 आयो बिप्र जैपुर यों लै जस दवात अरि ॥

॥ ६३ ॥ १ राजा पृथ्वीसिंह की माता १ प्रतिदिन गमन करके ३ ज.
 में ॥ ६४ ॥ अलवर का राजा ४ नरुका प्रतापसिंह ५ बहुत घमंड से ६ एका
 में ७ काक पत्नी के नेत्रों की पुतली के समान ८ जाटों से छाने मन मिला
 ६ मधु[मीठे]मंत्र से ॥ ६५ ॥ १० मांगा जितना धन देकर ११ वचनों रूपी बाणों

खीजि इत जुज्झत नबाव सु नजयखान,
 डिग्घगढ पैठा जाड भाजिगये जट्ट डरि ॥
 सृनु लेहुरो जो रविमल्ल१को नवत्तसिंह२२,
 जट्टराज सोतो पहिलैं गो काल ज्वाल जरि ॥ ६६ ॥
 पाकपन केसरी३१ तदीप सुत पायो पट्ट,
 काका रनजीत२३को न भायो यह नीति क्रम॥
 भावीकाल यादीतैं भयो रन भरतपुर,
 दूजी२ बेर दीनों जो छुराइ अगरेज छर्म ॥
 पीछो जयनेर इत नारव पता प्रबिसि,
 रूमयो पुनि मायावि समस्तनको सुद्ध सम ॥
 वचकको भायो सो दुवापो पटा बिप्रननैं,
 पित्तलसो भारुपो स्वामि सेवक पता परम ॥ ६७ ॥
 जासमै पताको भाग्य असो अनुकूल जान्यो,
 ठानै प्रौतिलोम१ जोजो सोसो अनुलोम२ ठाइ ॥
 प्रायुतं प्रमान दिल्ली१ जेपुर२ भरतपुर,
 भूमि इन तीननकी लौ सुहि सुद्ध भाइ ॥
 मान्यो सोहि दिरलीको वकील विज मत्रिननैं,
 जपी मिच्छ कामाँ पहिलैं ज्यो जिन पैठिजाइ ॥
 साक दत धृति १८३२तैं सुपर्व धृति १८३३ सबतलों ॥
 ओसे मचे जैपुर अनेक उपदव आइ ॥ ६८ ॥
 मंत्री दुवर बहुरि चढाइकै मदीपतिकों,
 दाधी छिति लैन गये साकभरदगें दिस ॥

१ न्होया [छोटा] पुत्र ॥ ६६ ॥ २ वृषावस्था में ३ समर्थ प्रतापसिंह ने
 ४ प्रवेश करके ॥ ६७ ॥ ५ बलदी चार्ता कार्य करता था सो ६ सुलदी
 होती थी ७ बलदा ८ मित्र ९ कामा नगर में ॥ ६८ ॥ १० सागर नगर की ओर

मानवंस खंगारोत कतिक रहे मुरारि,
 बेठ तिन्हँ बिखम रचाइ रारि धारि रिस ॥
 कूरम लरे न तहाँ प्रभुके बिजय काज,
 नारव मिलाइबेकी ईरखा धरै अनिस ॥
 यातैं भ्रम राखि मंत्री लौ नृप निलय आये,
 मान घटिबेकी जानि दोरहु ठानि कोहु मिस ॥ ६९ ॥
 जैपुरको चाकर कह्यो जो जसवंतराव,
 बंसमें चालुक्य मरदठ बाउला बजत ॥
 बिप्र दम्भ लखन चढाइ ताके बेतनमें,
 लैखकरि मालपुरा १ टोडा २ द्वै २ दये लजत ॥
 ग्राम हे भँटनकै जे दोउ २ नकी सीमगत,
 राखितिनकै तै कह्यो टारि इनको रजत ॥
 सैस सब ग्रामनतैं लेहु कर सासकव्है,
 भूपतिकों राखि सिर स्वामिधर्मतैं भजत ॥ ७० ॥
 जानी जसवंतराव साँसना यहै जदपि,
 मानी इम मानी हम दिल्ली दायभागी मानि ॥
 बापुरे ए करि न सकैं कछु अधिप बजे,
 याहीतैं करैं ए ओट आश्रित हमहिं आनि ॥
 मालपुरा १ टोडा २ अैसे मंदसों सम्हारि सठ,
 चालुकनके जेते हमारे यह पहिचानि ॥
 अबहु अधीस कीनों मैहि इनको अधिप,
 करिहै मदीयँ बस ग्रामनके मेरी कानि ॥ ७१ ॥

१ राजाउत २ निरंतर ॥ ६९ ॥ ३ सोलंखी ४ तनख्वाह में ५ उमराओं व
 ६ रूपा (हांसिल के रुपये) ॥ ७० ॥ ७ यह हुक्म है तो भी द दिल्ली के दावी
 दार [बण्ट] करानेवाले ८ गर्ब से १० मेरे आधीन ॥ ७१ ॥

दुर्घसह दुखिखनी विचार मन औसो बांधि,
 मालपुर१ टोडा२ बस जे हे तिन क्रूरमन ॥
 निकट बुलाइ कह्यो मँहे तुमरोतो नृप,
 जेहो तुम टोडा१ मालपुर२के निवासिजन ॥
 वत यह सुनत न भाई मन बिपनके,
 पकरन लागे याहि टारनको एक पत्त ॥
 यातें पुर टोडासों प्रमत्त जसवत आई,
 सेम्मद बलित भाख्यो एह हमरो सदन ॥ ७२ ॥
 ग्रैन चालुकनको सदासों यह टोडा आई,
 औसी कहि औद्विपै वनेवे लग्यो दुर्ग इक ॥
 मालपुर१ टोडा२के प्रदेशवासी क्रूरमत्त,
 अटकि सुनाइ भू हमारी तुम आधुनिक ॥
 जैपुरतें चैरहु बुलायो जो प्रबल जानि,
 करि तब सज्ज भेज्यो सगर भट दै कतिक ॥
 आयो चक्र यापर बसतको बिडबक वड़े,
 केतु१ सहकार२ पीलु१ पव्वय२ नकीव१ पिकै२ ॥ ७३ ॥
 काढ्यो जसवतराव आतहि प्रैघात करि,
 बदन बिगारि गयो लुटत सरैनि ग्राम ॥
 वनिक१ विरोधी प्रतिमँल्ल२हिं जिम बिहाइ,
 कोप बालकनपै करै सफल कछु काम ॥

१हप से घिरा हुआ २हमारा घर ॥ ७२ ॥ १ सोलंखियों का घर ४ है ५ पर्वत के ऊपर
 ६ अभी के आये हुए हो ७ सेना ८ बसन्त आयु का भ्रम करानेवाली होकर
 ९ सेना में ध्वजा है सोही आग्र ध्वज है १० हाथी है सोही पर्वत है ११ नकी
 प है सोही कोयल है ॥ ७३ ॥ १२ विशेष घात करके १३ सुख पिगाइ कर मार्ग
 के ग्राम लूटता गया १४ जैसे, पनिपा मुकापला [सामना] करनेवाले को छोड़
 कर पालका पर अपने कोप को सफल करै तैसे

अैसेँ प्रतिबसथ भूलाइ१पुर आदिनके,
 इंदगढ२ कोटा३के रु सोपुर४के धन१ धाम२ ॥
 लूटत गयो सो दुष्ट बुंदेलन देस लग,
 तक्कूको भतीज बापू१ भेद्यो तँहँ जाइ तामँ ॥ ७४ ॥
 ताहिसंग लैकँ आइ दोउ२न बहुरि तैसेँ,
 देस लूटि सोपुर१ करोली२के बढाइ दल ॥
 दिलीकेर चाकर भए ए जाइ पीछेँ द्वैरहि,
 खीजे अब जैपुरपैँ बिग्रह बिथारि खल ॥
 बेद गुन अष्ट इंदु १८२४ संवतके सुचि४ बीच,
 मिच्छन मिले रु पीछेँ जैपुरपैँ बंधि बल ॥
 हिंडोनि१ रु द्योसार खोहरी३के बनेँ हाकिम ए,
 छीनिलीनेँ तीन३हि प्रदेस केही गेरि छल ॥ ७५ ॥
 तीस धृति १८३० संवततँ दायन सअर्द्ध३- त्रय३,
 जैपुरके देस रहे अैसेँ बहु बिघन जब ॥
 दयाराम पार्हातँ पुगोहित इतेक दिन,
 ताकत खिनहिँ काढे जैपुर अंतंत्र तब ॥
 बिद्यागुरुभट्ट१ बहुरा२ इन उभै२ बुधन,
 उचित बिचारि आदिरीति व्यवहार अब ॥
 भूसुरके संगहि पठायो मिथोहित भाखि,
 सज्ज करि टीकाको विधेय उपहार सब ॥ ७६ ॥
 बेद गुन सिद्धि ससि १८३४ संवतके भाद्र६ विच,
 अैसेँ व्यवहारी जन जैपुर१तँ बुंदी२ आइ ॥

ग्राम २ तहाँ ॥ ७४ ॥ ३ आषाढ मास में ॥ ७५ ॥ ४ साढ़े तीन वर्ष तक पराजय
 र्य की चिन्ता से रहित होकर जयपुर में रहा अथवा किसी के आधीन
 में रहकर समय देखता रहा ५ पंडितों ने ७ ब्राह्मण दयाराम के साथ ही
 परस्पर का हित कहकर ६ उचित सामग्री ॥ ७६ ॥

एक१ दती एक१ मनिभूखन तुरग उमैर,
 लोनें सिरुपाव उमैर ससदै निवेदे लाइ ॥
 बालक नरेसको दिखाइ ए कथित बिप्र,
 स्वीकृत कराये रीति सचिवको समुम्माइ ॥
 आन्यो व्यवहार ताको अर्व१ सिरुपावर अर्पि,
 दीनी सीख जैपुर दुहूँरघाँ प्रीति दरिसाइ ॥ ७७ ॥
 विष्णुसिंह२००१ भूप जब बुदीके तखतबैठो,
 तबतै पुरोहित गयोहो जयनैर तिम ॥
 ऐसे बहु धिन्ननतैं अवलो रह्यो सो उहाँ,
 अविच्छिन्न बात यातैं भाखी उतकीहि इम ॥
 प्रीतिको लिखाइ पत्र जैपुर महीपतिनैं,
 जा द्विजनें लाइके निवेद्यो टीका सग जिम ॥
 पीछे जुस्यो नेइ पहिलैं ज्यो दुहूँरघोर पुनि,
 साधक सुबुदिनतैं स्वामि हिय होत हिम ॥ ७८ ॥
 ॥ दोहा ॥

दयाराम इम लाइ द्विज, सब टीकाको साज ॥
 बुदी१ जैपुर२ दुहूँरन बिच, किय पीछो हित काज ॥ ७९ ॥
 अति विलव हुव ताहि इम, सूच्यो कारन सोहु ॥
 अब क्रमकारि सुनिये उचित, पहुँ उदत पहिलोहु ॥ ८० ॥
 श्रीजित किय जात्रा सफल, ज्यो बढरी बन जाइ१ ॥
 प्रभुको प्रथम विवाह पुनि, सुनिये कहत सदाइ ॥ ८१ ॥

१ सुन्दर २ सभा में नजर किये ३ टीका खानेवाले को एक घोड़ा ॥ ७७ ॥
 ४ निरन्तर ५ हृदय ठंडा होता है ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ६ हे राजा अब क्रम से पहिले
 घृष्टान्त सुनो ॥ ८० ॥ ७ प्रभु (विष्णुसिंह) का ॥ ८१ ॥

इति श्रीवैद्यभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टमराशौ विष्णुसिंह
चरित्रे गृहीतसैन्यमेव पाटसुभटसलूमरेशराउत्तकुगवडेशराउत्तदेवगढ
गमनस्वपराजयप्रत्यागमन १ कुरावडेशार्जुनसिंहमाधजीसंध्याश्याल
कच्छलघातहेनन २ राजगढनारवप्रतापसिंहच्छत्रजयपुरखुशाली
रामकारानिपातनखुशालीरामवधप्रवृत्तभलायेशकुमारबखतावरसिंह
हतत्पितृव्यशत्रुशल्यवारणा ३ जयपुरनिष्कासितदेवगढेशजसवन्तसिंह
नारवप्रतापसिंहभट्टविद्यागुरुकारामोक्षणा ४ फीरोजखांनधोरणा
द्वाराराज्ञीमेलितसेखाउतादिज्ञातच्छलघातनारवप्रतापसिंहप्रच्छेत्रप
लायन ५ आक्रान्तदिल्लीजयपुरभरतपुरप्रान्तच्छलितयवनप्राप्तराज
पदनारवप्रतापसिंहलवरराज्यस्थापनतत्समयकतिपयराज्यध्वंसक
तिपयनवीनराज्यस्थापनसूचन ६ नारवप्रतापसिंहजयपुरागतमन्त्रि
हस्तिपकफीराजखांछलघातमारणाबहोराखुशालीरामभलायेशकु-

श्रीवैद्यभास्कर महाचम्पूके उत्तरायणके अष्टमराशि में, विष्णुसिंह के चरित्र
में, मेवाड़ के उमराव सलूमर के रावत, व कुरावड़ के राउत का सेना लेकर दे
वगढ जाना और वहाँसे हारकर पीछा आना १ कुरावड़ के राउत अर्जुनसिंह का
माधजी सिन्धिया के साले को छलघात से मारना २ राजगढ के नरुका प्र-
तापसिंह का जयपुर में ठग विद्या फैलाकर बहोरा खुशहालीराम को कैद क-
रना और भलाय के कुमार बखतावरसिंह को खुशहालीराम के मारने से
फाका शत्रुसाल का रोकना ३ नरुके प्रतापसिंह का देवगढ के राउत जस-
वन्तसिंह को जयपुर से निकलवा कर भट्ट विद्यागुरु को कैद से छुड़ाना ४
फीरोजखां मदावत द्वारा राणी के मिलाएहुए सेखाउत आदि से छाने नरुका
प्रतापसिंह का छलघात से बच कर राजगढ भागना ५ नरुका प्रतापसिंह का
दिल्ली, जयपुर, भरतपुर के परगने दबाकर यवनों को छलकर अलवर का
राज्य स्थापन करना और राजा का खिताब पाना, तथा इस समय कई राज्यों
के नष्ट होने और कई नये राज्य स्थापन होने की सूचना करना ६ नरुके
राजा प्रतापसिंह का जयपुर से आयेहुए मन्त्री महावत फीरोजखां को छलघात
से मारना और बहोरा खुशहालीराम का जयपुर में भलाय के कुमार बखताव-
रसिंह को छलघात से मरवाना ७ बहोरा खुशहालीराम का जयपुर में दादूपं-

वखताग्रसिंहजयपुरच्छलघातहनन ७ खुशालीरामजयपुरदादू
 मरहट्टसेनासमहृष्टासेखावाटीमनोहरपुरेशदमन ८ जयपुरेशपृ-
 सिंहमादमरणाढीगजदृषवनरणाकरणा ९ जसवन्तराववाउलार्थ
 पुरभूत्पामालपुराटोहाप्रदानश्रुततदुर्गनिर्माणातन्निष्कासन १०
 टितजयपुरप्रान्तजसवन्तराववाउलार्थपूरमरहट्टप्रान्तत्रयप्रहणजय
 टीकाबुन्द्यागमनवर्णन पञ्चमो मयूख ॥५॥ आदित ॥३५५॥

॥ प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

तातैं सक चोतीस३४ तक, बंदि जैपुरकी बात ॥

अत्र वतीसम ३२ अतमैं, जुंदि क्रम वरन्पो जात ॥ १ ॥

॥ घनाक्षरी ॥

उक्त दुव२ कामनमैं एक१ करि विष आयो,

तोलो इकतार उतकोहि वरन्पो उदत ॥

यातैं कसो जात मुरि पिछलो उदत अव,

असैं साकँ दत धृति १८३२ हायनको होत अत ॥

व्याधि तिहिंवेर सुखरामकै कछुक बढयो,

सो मिटयो तहाँलौ रहि श्रीजित परम सत ॥

येया की और मरहट्टों की सेना का मौकर रक्षना और सेखावाटी में मनोहर
 पुरबाखों को दह देना ८ जयपुर के राजा पृथ्वीसिंह की माता का और बी-
 न में जाटों और पवनों का युद्ध होना ९ जसवन्तराय बाबला को जयपुर की
 तरफ से तनसाह में मालपुरा और टोहा देना और उसको वहाँ गढ़ बनवाने
 देखकर निकालना १० जसवन्तराय बाबला और बापू मरहट्टे का जयपुर के
 राज्य को छूटकर सीम परगने बसाना और जयपुर से बुन्दी टीका आने के
 वर्णन का पांचवां ५ मयूख समाप्त हुआ ॥५॥ और आदि से तीसरी पचावन
 ३५ मयूख हुए ॥

१ कह कर २ यही बुन्दी का इतिहास ॥ १ ॥ ३ वृत्तान्त ४ विक्रम के शक के

चैत्र१ बदि छठी६ दिन आश्रमतैं आप चढयो,
 अच्युत बदरिकेस अर्चनकों मतिमंत ॥ २ ॥
 जैपुर नगर जात तुल्यपन रीति जिम,
 पित्थल नरेस आइ सम्मुह अवधि पर ॥
 भोन निज लैगो तहाँ अजिनपैं बैठो भिन्न,
 श्रीजित निहारेहू तपस्वीनमें अग्रसर ॥
 पच्छिम३५ प्रयानमें निबाही जैसे जोधपुर१,
 औसैं सब रीति इहाँ न्यारी साधि जैनगर२ ॥
 कास तास साखापुर बदनपुरेमें रह्यो,
 पील्लु१ इय आदिकन राख्यो उपदौ प्रकर ॥ ३ ॥
 केहीबेर पित्थल१ प्रताप२ तैं मिलाप कीनों,
 ओज अधिकार रह्यो वृत्ति राजसी रहित ॥
 आपुनों पुरोहित हुतो व्हौ दयाराम वह,
 आयो अरु ज्यौ बन्प्यो सुनायो हित१ओ अहित२ ॥
 संबत विबुध धृति१८३३ सम्मित लगत समा,
 सानुकूल राखि मन सबको कृपासहित ॥
 चैत१ सित २ छठी६ दिन बदनपुरा१ तैं चढि ॥
 संबसथ कूकस२ मुकाम विरच्यो सहित ॥ ४ ॥
 बंस बलभद्रकेमें कूरम जहां विदित,
 अबिदित नाम अचलोर३ द्रंग अभिधान ॥
 कीनैं तँहँ श्रीजित मुकाम अरु कूरमकी,
 भेटमैं कटारी एक१ राखी होत हठ भान ॥

॥ २ ॥ १ बराबर की २ मृगचर्म पर जुदा बैठा ३ नगर के बाहर का पुरा ४
 हाथी ५ भेट का समूह ॥ ३ ॥ १ रजोगुण की (राजाओं की) वृत्ति बिना ७
 सम्बत् ८ ग्राम ॥ ४ ॥ १ जिसका नाम नहीं मालूम है

सुद्धि तँहँ आई यों रुद्धिल्लन निकर सज्जि,
मगमै उपद्रव मचाइराख्यो मनमान ॥
पहिलैं नजीवदोला मत्री सुत वारे पच्छ,
पत्थरगढहिँ लौ तहा ए लरे अतिमान ॥ ५ ॥
भूतकालमै तब रुद्धिल्लनसों साह भीत,
पुण्या१ लखनेऊ२ कलकत्ता३को सहाय पाइ ॥
विराधि प्रधात अतिपात सख ब्रैतनके,
जीत्यो साह अलमनै पत्थरगढ सु जाइ ॥
जावितै१खाँ नामक रुद्धिला व्है पराजित जो,
उक्त गढ छोरि पर्यो साहके पपन आई ॥
उक्तगढ १ आमिल्ला२ वरैली ३ ए रुद्धिल्लनके,
लीनै लखनेऊपति साहसों मन मुराइ ॥ ६ ॥
पै जो लखनेऊ पति आमिल्ला२ जबहि१जीत्यो,
कैद तस सैसक रुद्धिलाको कुटुव करि ॥
नाकै डक१ कन्या ही सु वलसों पकरि तब,
डारि निज गेह परलोकतै न नैक डारि ॥
कन्यानै मिलन काल राखि छुरिका कितहु,
धार खै१ जारकै धकोई वस्तिदेस धरि ॥
सोतो हनी तबहि रुद्धिल्लेकी सुता रु सठ,
मास तीन३ पीछे सो नबाबहु गयोहि मरि ॥ ७ ॥
राम२०१४ प्रभु देखो कुलनारिनकी कैसी रीति,
जैसी अहो आधुनिक नरन न राखीजात ॥
जोवन गिन्यौ न१ गिन्यो एक१ पतिमोन२जानै,

१ रुद्धिल्ला का समूह सज्जर ॥ ५ ॥ २ शर्मा के समूहों के ॥ ६ ॥ ३ पति
(हाकिम) ४ तीक्ष्ण धारवाली ५ नखों (पेड़) में ॥ ७ ॥ ६ इस समय के

जीवन गिन्यो न३ ज्यों बिलासिबो बिभव ब्रात४ ॥
 माता१ पिता२ दै जिहिँ सुहि पति उचित मानि,
 औरनकोँ इंद्रलों बिडारै सील अधिकात ॥
 बाह जवनीकोँ फैजाबाद१ लखनेऊ२ ईस,
 गांजि रु गिरायो पै न रंजिँ रु भिरायो गात ॥ ८ ॥
 बांधी लखनेऊ१ राजधानी तजि फैजाबाद२ ॥
 नारीहंत कथित नबाबकेर सोहि सुत ॥
 बैठो वा पिताके पाट पै न तैसो भाग्य बल,
 जासौं नई दाबी सो गई भू१ छूटि कीर्ति२ जुत ॥
 दाव्यो पहिलैं जो पुर कासिका१ प्रमुखँ देस,
 आयो पहिलैं सो अंगरेज८नके हाथ उत ॥
 यातैं परयो मंद लखनेऊको प्रताप अब,
 लागो पुनि लुंठक रुहिल्लनको दाव द्रुत ॥ ९ ॥
 जीवतहो नोलसिंह जट्टन अधीस जब,
 खीजि तब साह मीरबखसी नजीबखान ॥
 जूझि जिहिँ सुगल स अर्द्ध२ समार३ जट्टनतैं,
 पट्टन छुराइल्यो आगरा बल प्रधान ॥
 जट्ट नोलसिंह१ भरयो आता तब रनजीतर,
 काका ब्रजेन्द्रादिकबहादुर३ गहि कृपान ॥
 नोलसुत केसरी कुमार बय ठानि नृप,
 हंकि पुर डिग्घ१ आयो कुंभेर२ को करि हान ॥ १० ॥

१ समूह २ सुखलानी राजधानी फैजाबाद और लखनेऊ के पति को
 कर प्रीति से शरीर को नहीं भिड़ाया उसको बाह (प्रशंसा) है ॥ ८ ॥
 के मारनेवाले ४ काशी आदि देश ५ छुटेरे ॥ ९ ॥ ६ छेह वर्ष ७ पत्तन ॥
 ८ ब्रजेन्द्रबहादुर ॥ १० ॥

कुम्भरशहिं भेज्यो गढ ढिग्घ २ सन पीछें काढि,
 पचननै जट्ट रनजीत जानि ब्रह्म पर ॥
 तब हो रुहिल्ला १ एक जट्टनके आश्रितहु,
 ताको चढयो मासिक परयो सो बहु कोल तर ॥
 जानि बहिकावत रुहिल्लानै पलाटि जब,
 निज वस कीनो जीति ढिग्घ तिनको नगर ॥
 एक तस दुर्गमै सकयोन करि सो अमल,
 तामें हुते जट्ट जे रहे ते रुपि धीर धर ॥ ११ ॥
 काढ्यो ढिग्घतैं १ जो रनजीति १ सोहो कुम्भरशहि,
 तासो मिल्यो बाउला जो जसयन्तराव २ तब ॥
 वा खिन रुहिल्लापै अचानक दुहु २ न आई,
 दीनो रतिवाह दल गेरि दलपै गजब ॥
 दुर्गकेहु जट्टननै ताही खिन दाव देखि
 आइ गढ बाहिर चखाये आसि बाढ अब ॥
 भीत दुहु २ रघातैं छारि सकल रुहिल्ला भज्यो,
 सगी भट तीनसै ३०० वचे जे भजे सग सब ॥ १२ ॥
 लीनो जसयन्त जो रुहिल्लाको विभव लूटि,
 पचदस १५ पीलु १ सँभि २ अठ्ठतीस अग्न सत ॥
 सस्त्र ३ वस्त्र ४ भुखन ५ खजाना ६ तोपखाना ७ सब,
 जट्टन जहर जारि सो सहो मतानुमत ॥
 सो तिन थिडारि दयो बाउला छली समुक्ति,
 आइ तब जैपुर रक्षो वद गगूर गैत ॥

॥ ११ ॥ १२ ॥ १ हाथी २ एकसौ अठ्ठतीस घोड़े ३ एक वृत्तरे की सत्तार
 साथ अर्थात् अभिप्राय और अनुज्ञा सहकर ४ निकाछ दिया ५ घमंड २

मातपुर१ टोडार ताहि बेतनमें पीछें मिले,
 बात इतनीसी रही पहिले प्रसंग बेत ॥ १३ ॥
 सो खिल कही अब रुहिल्लन प्रसंग संग,
 इत सिख जट्ट बडे नानक मत अधीन ॥
 आजि तिन जीति लवपूर१ मुलतान२ आदि,
 कोटि रिपु कही पंज ५ आबमें अमल कीन ॥
 जाबितखां जो कखो रुहिल्ला तानें अब जाइ,
 आनैं सिख जट्ट इत लूटनके लोभ लीन ॥
 दिल्लीके समीपलग पच्छिम३५ दिसाको देस ॥
 निखिल दबाइ लपो तिननैं तब नवीन ॥ १४ ॥
 जट्ट१ रु रुहिल्ला२ मार१ लूट२हिं मचाइ जब,
 पंथ प्रसरावत उपद्रव खिनहिं पाइ ॥
 क्रेता रुकिबैठे व्यवहारक बनिजकार,
 क्रेपलैकैं कोहू जोर रहित सकैं न जाइ ॥
 श्रीजितनैं सो सब उदंत अचलोर ३ सुन्पो ॥
 ताके पति कुम्हहु दयो यह सब जताइ ॥
 जन अवरोधक लै संग न उचित जैवो,
 अननमें चैन न उपद्रवन अधिकाइ ॥ १५ ॥
 श्रीजित कह्यो नाँ अवरोधजन मुख्य संग,
 लाये कछु दासीजन तित्यन समुझि लाह ॥
 पीछो अब तिनको पठैवो व्है न लैलै पनै,
 चिंति जिन्हें आइ तिन्हें साधिवो धरत चाह ॥

१ तनखाह में २ पहिले प्रसंगवाली चाना में ॥ १३ ॥ ३ युद्ध ४ लाहोर ५
 पंजाब में ॥ १४ ॥ ६ खरीददार ७ बेचने की वस्तु ८ वृत्तान्त ९ जनाने के लोव
 १० सागों में ॥ १५ ॥ ११ तीर्थों का काम १२ नियम ले लेकर

*उज्झीहै न बरन अइता तीजे३ आश्रममें,
 रोह रन व्हैहैं सिर१ देह२नको दुव२ राह ॥
 पोछैं पर सत्य इष्ट साधहु अभय पाइ,
 अथ तैंहैं कोन गोन करिहै सह उछाह ॥ १६ ॥
 औसैं मधु१ मासकी बलच्छ१ दसमी१०के अइ,
 श्रीजित प्रपान कीनों उक्त अचलोर३ सन ॥
 पथ दरकुचन मनोहरपुर४ पधारि,
 भामरा५ प्रयागपुर६ लघत भो धीरधन ॥
 कोटफूतली७ त्यों साइजिदापुर८दै मुकाम,
 राह रहि चोधारा९ रु रेवाडी१० प्रवीनपन ॥
 रोध२ बदि२ चोथो४ रविवार१ कौं रहयो सो बहा-
 दुरगढ११ जाइ लधि बीचको बिखम बन ॥ १७ ॥
 मिलन बहादुरगढेस११ ताजमुहुम्मद१३,
 एक१ कोस अवाधि नबाब जो समुह आइ ॥
 निष्कपटता१ सों नम्रता२ सों त्यों निहोर३नसों,
 पहिलैं प्रसन्न लौगो स्वीय संघ पधराइ ॥
 भूति अमुरूप वस्तु विविध निवेदे भेट,
 श्रीजित न राखे नृप राखैं यहै दरिसाइ ॥
 ताहूँनै कह्यो तव उपद्रव निचित औन,
 दासीजन यातैं इहाँ राखहु हित दिखाइ ॥ १८ ॥
 ईस अचलोर३ को कह्यो जो तिहिँ कूरम२सों,
 पहिलैं कही सों त्यों इघा नबाब मित्र प्रकाटि ॥

*पर्याय(विविध)पन का अहंकार नहीं छोड़ा है। वानप्रस्थपन में मार्ग में युद्ध होगा तो मरेंगे ॥१९॥ ३चैव सुविधविनश्वैषाख यदि ॥१७॥ ६अपने घर ७ अपने ऐश्वर्य के सदृशभ्राजा होवै सो रखते हैं अर्थात् हम वानप्रस्थ हैं। मार्ग में व्याप्त ॥१८॥

बाला जट्ट के गढ^{१२} मुकाम पंचमी^५ बिरचि,
 अर्कजा खवाई^{१३} घट छडी^६ रहघो गम्ये अटि ॥
 राध^२ बदि^२ सप्तमी^७ कलिंदतनयाको राति,
 पारजात सहसा तपहुत तुसार पटि ॥
 अर्धवसों डिगाई नाव बढिकैं सलिल ओघ,
 एक^१ कोस अवाधि रुकी जो निडि निडि रहि ॥ १९ ॥
 उच्च थल बालुकाको नाव अवरोध अरि,
 श्रोजित विताई रत्ति सकल उहांहि यह ॥
 प्रात निज संगिनमें पैलीतीर^{१४} पूगि रहे,
 तद्दिन मुकाम कीनों अष्टमी^८ अनेह तह ॥
 करत प्रपान चढि प्रातहि नवमि^९ काल,
 जलद अकाल कीनी बुडि करकानें जह ॥
 यातैं सैहकोस^{१५} हि लुवारी^{१५} लौं पहुँचि आप,
 ताही ग्राम रहे तब संगिन समाज सह ॥ २० ॥
 दसमी^{१०} दिवस वहांतैं जाइरहे जाबदल^{१६},
 एकादसी^{११} दोस रहे सामलीसहर^{१७} आइ ॥
 हीरासिंह नाम सिखको जह अमल हुतो,
 पंथ मिलि तासों तह आदर उचित पाइ ॥
 ज्वालापुर^{१८} होइ राध^२ असित^२ चउदसि^{१४} ज्यों,
 इंदुसुत^४ बीर गये गंगाद्वार^{१९} उमगाइ ॥

१ जाने योग्य स्थानों से गमन करके २ जमुना नदी के परली तरफ
 जाते समय ३ धूप से बरफ पिघलकर पानी से नदी भरगई ४ मार्ग से ५
 पानी का समूह बढकर ॥ १६ ॥ ६ रेत के ऊँचे स्थल पर ७ लक्ष कर नाघ रूपी
 ८ समय ९ मेघ ने बिना समय १० ओलों की दृष्टि की ११ छेह कोस ॥ २० ॥
 १२ वैशाल बदि १३ बुधवार

ठानि पचप वासर मुकाम तिहिं पुण्य ठाम,
 साधे न्दान१ दान२ श्राद्ध३ आदिक बिधि सुहाइ ॥२१॥
 चद२ सित१ राध२की चउत्पी४ दिन व्हाँ तैं चढि,
 मग्गबिच तीर्थ भीम ओहारक२० नाम मानि ॥
 साधि तैं न्दान१ दान२ थान तिहिंसो समीप,
 उचित मुकाम दीनो करखडी२१ ग्राम आनि ॥
 श्रीनगर भूपति प्रमार जो ललितसाहि,
 ताको हो अमल तिहिं ठा वह मुकाम ठानि ॥
 कुच करि व्हाँ तैं रहे जाइ तिम दधीकेस२२,
 रथ१ हय२ आदि राखे जत्यहि उचित जानि ॥ २२ ॥
 व्हाँ तैं नैरजान बैठि तपोवन२३ तीर्थ होइ,
 गगा न्दान१ दान२ करि रहे शिवपुरी२४ ग्राम ॥
 व्हाँ हुगरगाढ२५ ग्राम२५ त्यों ब्रह्मनकोटी२६ होइ,
 कीनें बदिपाकीकोइ२७ नाम ठाँ निज मुकाम ॥
 आयो एक१ कोस सन सगमैं सलिल उहाँ,
 छेटी करि व्हाँ तैं जानि सैलन सरानि छाम ॥
 सगी जन यातैं दूरदूरलौ चलाप सब,
 श्वेत१ राध२ दसमी१० जहाँ दिन रहत जाम ॥ २३ ॥
 म्रियोतन१ वार चढि अत्रि मनभग२८ पर,
 कोस तीन३ अतर मुकाम राजाखाल२९ किय ॥
 पद६१५ दिवस राखि तत्यहि मुकाम पुनि,
 जेष्ठ बदि२ दसमी१० जहाँ तैं चद२को चलिय ॥
 त्रिपथगा धारा३० एक१ झुला करि लघि तिम,

दूरकछुधारादुवर संगम३१ मिलान दिय ॥
 सोही देवआदिक प्रयागनाम तिथि सुभ,
 सेयो दिन तीन३ रह्यो श्रीजित वहाँ पुण्य प्रिय ॥२४॥
 नाम दुव धारन भागीरथी१ अलकनंदा२,
 औसँ रहि दोउ२नके संगम३१पै तीन३ अह ॥
 सुंडन१ रु न्हान२ दान३ आदिक सविधि मंडि,
 तिथिगुरु केसोराम कीनों धन पात्र४ तह ॥
 पीछै लंघि सुंक्र३ बदि२ भूत१४ गुरु५ वार पर,
 उक्त जो अलकनंदा३२ झूला करि वहाँ असह ॥
 रानीबाग३३ नाम ग्राम बिरचि मुकाम रहे,
 श्रीनगर सासक सो जानी बात जान जह ॥२५॥
 सो नृप ललितसाहि आवत समुख सुनि,
 इततैं कहाइ आइहोतो हम मिलि हैं न ॥
 तानैं तब आपुनो अमात्य जो परमपति१,
 नित्यानंद२ सेनानी२ ए भेजे अभिमुख अँन ॥
 सेना द्वैहजार२००० उभै२ इम जु समुख आइ,
 श्रीनगर३४ लेगये निहोरन सिविर सन ॥
 श्रीजित कहाई इम श्रीनगर सासकसों,
 तबहि मिलैं जो नृप मानि मिलो हमतैं न ॥ २६ ॥
 अभ्यागम१ अभ्युत्थान२ आदि करिबो न कहि,
 श्रीनगर भूप पहिलैंतो लई मानि सब ॥
 श्रीजित पधारत नृजानको तजत समै,
 जत्थहि मिल्यो सो आइ भूपति प्रमार जब ॥

१ मुकाम २ देवप्रयाग ३ तीर्थ ॥ २४ ॥ ४ दिन ५ ज्येष्ठ ॥ २५ ॥ ६ मार्ग
 सन्मुख भेजे ॥ २६ ॥ ७ सन्मुख आना ८ ताजिम देना

ससंदर्भे जात एक१ आसन प्रसभ साहधो,
 तदपि न मानि भिन्न बैठो निज पीठ तब ॥
 अधिप प्रमार पुनि श्रीजित सिविर आयो,
 सोहि तब साधि रु उहाँतें भयो कुच अब ॥ २७ ॥
 सुक३ सुदि२ दूजी२ तिथि चाले श्रीनगर३४ सन,
 सो३२ अलकनदा३५ आई बहुरि जैवी मल्लिल ॥
 ताको लधि मूला करि पार गये स्त्रीजन तो,
 ओलीतीर स्वीय सगी पुरुख रहे अखिल ॥
 तिनकी हरोल्लवारे मूलापै चढे तबही,
 तटी इक१ घाँकी तैति नहिँन बचीन तिल ॥
 पै जे लई पकरि समीपके नरन संध,
 यातैं जन आरोही कहे जे बचे उक्त किंल ॥ २८ ॥
 अध्वै वह छोरि ओर मूलातैं उदकें ओघ३५,
 अन्य पथ उत्तरि दये मिलान भरदार३६ ॥
 क्रमठै मलयकोटि३७ चद्रपुर३८ गुप्तकासी३९,
 कुड४० तस न्हाइ१ दै२ रु ठै सिधदरस कार३ ॥
 नारायनकोटि४१ रहि पुनि ठै गनेसकोटि४२,
 सग भेजि मूलमलपटना१ मग सुदार ॥
 त्रियुगीनारायन४३के दरसन काज तह,
 अल्प सत्य आप जाइ पूजे उक्त उपचार ॥ २९ ॥
 बुद्धि करकान कीनी जत्यहु जलदै बढि,

१ सभा म २ एक गद्दी पर बैठने का हठ किया ३ अपने आसन पर ॥ २७ ॥ ४
 वेगवाले जल के ५ सरसी तीर (इधर के किनारे) ६ पक्षि (होरी) ७ चमड़े की
 होरी ८ मनुष्यों के समूह ने ९ मूला पर चढे हुए पुरुष १० निश्चय ॥ २८ ॥
 ११ मार्ग १२ जल के समूह को ॥ २९ ॥ १३ मेघ ने

तातैं रहि तत्थहि त्रिलोक स्वामीके सरन ॥
 प्रस्थित व्है प्रात भूलाबलपटना ४४ पहुँचि,
 लंघे प्रात भूलाकरि अन्य स्रोत ४५ आवरन ॥
 मुंडकट ४६ नाम पूजि गनपति मग्गमें रु,
 सैल ढिग गोरीकुंड ४७ जाइरहे स्वाचरन ॥
 ओर संगी श्रीकेदार पूजिकैं बहुरि आये,
 तोलों रहे तत्थहि निबाहत सबै नरन ॥ ३० ॥
 पीछैं बुधवार ४ जुत ज्येष्ठ ३ बदि २ तेरसि १३ पै,
 मंडे भूमिआडोरक ४८ जाइ अपनैं सुकाम ॥
 श्रीकेदारगंगा ४९ बिच दूजे २ दिन १४ न्हान साधि,
 लंघि स्रोत ५० भूलाकरि अग्गहु क्रिया ललाम ॥
 ताही दिन श्रीकेदार ५१ पहुँचि जथा बिधितैं,
 धीरंधी प्रनमि पूजे प्रभुको उचित धाम ॥
 हो तँहँ बरफ रॉसि ढिगहि हिमालयको,
 ताम मरे जाइ जन सत्रह १७ प्रमिति ताम ॥ ३१ ॥
 भिन्न भिन्न तामैं जन पंद्रह १५ खपत भये,
 बरजत सर्वके न मानी तिन नैंक वात ॥
 पै इक १ उदैपुरके रानाको सगोत्र १ पुनि,
 दूजो २ बुंदीसीमगत बंसीपुरको द्विजात २ ॥
 जदपि निवारे इन दोउन २ तदपि जाइ,
 पानि निज जोरि तँहँ कनिो सहँ देह पात ॥
 जोलों परे दीठि तोलों जातहि लखाये जुग २,

१ भूला से ढके छुए प्रवाह को २ अपने आचार से अथवा अपने चरणों से
 (पैदल) चलकर ॥ ३० ॥ ३ धैर्य की बुद्धिवाला ४ बरफ का समूह ५ तहां ॥ ३१ ॥
 ६ ब्राह्मण ७ साथ ही

कैसी विधि जानै कोन गरिकैं गिरत गात ॥ ३२ ॥

हिदा-डम तैं श्रीजित ताहि अहै, करि अर्चित केदारपु ॥

पछो करिय मुकाम पुनि, आइ भीम ओढार ॥ ३३ ॥

गिरि टहरी १ गढवाल २ को, श्रीकेदारपु सु थान ॥

दिय पछो मुरि दाहिने, चलन अग चहुवान ॥ ३४ ॥

आइ भीमओढार १ ॥ ३५ ॥ पुनि मलमल पटना २ ॥ ३६ ॥

अग्र मूला ३ ॥ ३७ ॥ ऊतरे, अखिल निवाहत आसु ॥ ३८ ॥

हित मग राजाकोटि ५५ व्है, धामाँकोटि ५६ सु धीर ॥

कल्पानादिककोटि ५७ व्है, सगिन मग क्रम सीर ॥ ३९ ॥

पुण्य गुप्तकासी ५८ परसि, ओखीमठ ५९ तिम आइ ॥

दरस १ आदि केदारको ६०, बिरचिप जेजन २ बनाइ ॥ ४० ॥

उहाँ भोग उपहारके, प्रथित दम्भ पचास ५० ॥

करि अजलि प्रभु भेट करि, अगैं प्रस्थित आसैं ॥ ४१ ॥

हुलकर खडूनारि हुन, निपुन अहल्या १ नाम ॥

तास धर्मसाला ६१ तहाँ, कीने जाइ मुकाम ॥ ४२ ॥

धैव पीछे वह पुन्य धिप, करतभङ्ग सुभ काज ॥

बिबुधालय १ ठाँठाँ बिदित, सहित सदाब्रत साज ॥ ४३ ॥

वहाँ तैं मग तुगेस ६२ व्है, विधि क्रम भेट विधाइ ॥

ब्रह्मनकोटी ६३ व्है वहुरि, अलकनंदिका ६४ आइ ॥ ४४ ॥

तिहिँ मूला करि उत्तरि रु, पित्तलकोटि ६५ पधारि ॥

सनि ७ अष्टमि ८ सित १ सुर्क ३ की, किय मुकाम सुखकारि ४२

नवमि ९ गरुडगंगा ६६ नदी मज्जन करि तिहिँ माग ॥

॥ ३२ ॥ १ वस दिन ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ २ पूजन ॥ ३७ ॥ ३ हाथ जोड़ कर ४ गमन हुआ (किया) ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ५ पति के पीछे ६ यत्र पुत्रियाली ७ मंदिर ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ८ देखे सुदि ॥ ४२ ॥

व्है जोसीमठ६७ जात हुव, प्रबिदित विष्णुप्रयाग ॥४३॥
 अलकनंदिका६८ उत्तरे, पुनि भूलाकरि पार ॥
 अगग स्रोत लंघे उभय२, ध्रुव छुरिका१।६९ असिधार२।७०
 सित१ तेरसि१३ गुरु५ शुक्र३व्है, कल्यानादिककोटि७० ॥
 अलकनंदिका७१ उत्तरे, जँहँ पुनि भूलाजोति ॥ ४५ ॥
 वाहि१३ दिवस संध्या समय, बिक्खि१ रु जजि२ बदरीस ॥
 तँहँ क्रिय पंच मुकाम तब, श्रीप्रभु धारत सीस ॥ ४६ ॥
 आर३ द्वितीया२ सुचि४ असित, पच्छो करि प्रस्थान ॥
 कल्यानादिक कोटि१।७२ क्रिय, मुरतहु प्रथम१ मिलान४७
 षट्पात-असित१ तीज३ करि अप्प पंडकेश्वर२।७३ पूजादिक ॥
 मग जोसीमठ३।७४ बलि गुलाबकोटी४।७५ सुभ बादिक ॥
 व्है पीपलकोटि५।७६ हदगरुडगंगा६।७७ व्है संगत ॥
 बैरागीकोटि७।७८ बलि होइ पँढति अप्रतिहँत ॥
 राहि प्रात लंघि भागीरथिप८।७९ करन प्रयाग९।८० हु न्हान करि ॥
 शिवकोटि१०।८१ होइ लंघिप सहज श्रोजित राजा बाग सँरि ॥४८॥
 दोहा-देवीमहडा११।८२ गिरि दुगम, कम मग चढि चउ४कोस ॥
 सुचि४ बदि२ चउदसि१४ श्रीनगर१२।८३, आयो बहुरि अदोस४९
 मिलि पहिलैं तस महिप सन, आये पुनि पँटअँन ॥
 महमानी किन्नी महिप, दूजे२दिन सहसँन ॥ ५० ॥
 सित प्रतिपद१ नृपनिज सदन, बिच आराम बुलाइ ॥
 महमानी पुनि क्रिय मुदित, अँह तीजे३ उमँगाइ ॥ ५१ ॥
 चोथे४ अह वहाँतैं चढि रु, रानीबाग१३।८४ पधारि ॥

॥ ४३ ॥ ४४ ॥ १ ज्येष्ठ सुदि ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ २मगलवार ३ आषाढ वदि ॥ ४७ ॥
 ४ मार्ग में ९ विना रुकावट ६ चलकर ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ७ डेराँ में ८ सेना सहित
 ॥ ५० ॥ ६ बाग में १० तीसरे दिन ॥ ५१ ॥

देवप्रयाग१४८५ मुकाम दुवर, स्नान१ दान२ विधि सारि॥५२॥

रहिय बहुरि भागीरथि१५८६य, उत्तरि भोला आप ॥

राजखाल१६८७ विश्राम रचि, पचमि५ सित१ दिन पाप ॥५३॥

करि वहाँतैं दरकुच क्रम, सुचि४ नवमी९ सित१ सत्य ॥

द्वयोक्ते१७८८ आये हुलासि, तँकत भिले सब सत्य ॥५४॥

रच्छक जन१ हय२ रथ३ करभ४, जीवत रक्खे जत्य ॥

तहाँ पहुँचि लो सग तिन्ह, मडिय गमन समत्य ॥ ५५ ॥

॥ पदपात् ॥

सुचि४ दसमी१० पक्ख सित१ कुच श्रीजित वहाँतैं किय ॥

गगालकरघाँट गैल पँटगृह पठाविय ॥

गगाद्वार१८८९हि गमन अप्प करि मुरि तँहँ आयउ ॥

वारसि१२ न्हाइ विधेय आद कनखल१९१० सदायउ ॥

कहखडीय२०१९ग्राम विश्राम करि लकरघाँट२११२निवास लहि

सुचि मास विसद१चउदसि१४समय गगा२२१३लघिय नावगहि५६

इक्क१ पोत उत्तरत उहाँ बारह१२ लगगे अह ॥

अधिक उपद्रव इक्खि तजिय पँदति पहिली तह ॥

सित१ सावन५ सप्तमि७य सत्य गगा२२१३ उत्तारि सब ॥

आइ ग्राम आहार२३१४ अप्प मडिय मुकाम अब ॥

दरकुच विसद१ एकादसि११य आइ गुहवारी२४१५ अंयन ॥

उत्तरे स्रोत जमुना२५१६ उचित जथा तँरह निवाहि जन॥५७॥

करि वहाँतैं दरकुच हइ कामा२६१७ विसवा२७१८हद ॥

द्योसा२८१९ नामक दग पाइ इतिमुख निवास पद ॥

सिनिवाई२९१०नैरटौक३०११तिमसोनवाय३११२२टिकि

१२॥ १ शनिवार ॥५३॥२ छोडा कुआ साथ ॥ ५४ ॥३कट ॥ ५५ ॥ ४ डेरा

६ ॥ ५ दिन ६ पहिछा मार्ग छोडिया ७ नाथ से ॥ ५७ ॥ ८ इत्यादिक

अष्टमिद भद्वेद असित२ चट्टिय वहाँतैं न मग्ग चिकि ॥
 सरदारसिंह नारव नगर३२।१०३ अनियारापति करि अरज ॥
 पटु कियउ रति रक्खन प्रसभ गदि स्वगेह पावन गरज ५८
 घनेँ हठन दुव२ घटिय अप्प रहि नंगर३२।१०३नगर इम ॥
 उपदाँ बिच सस्त इक१ तुपक१रक्खि रु श्रीजित तिम ॥
 महमानी न करन मनाइ वहाँतैं इत हंकिष ॥
 जात रति इक१ जाम आइ दगपुर३३।१०४ रहि आंकिष ॥
 दरकुंच असित२नवमी९दिवस दुवलानाँ३४।१०५मग करि बिदित ॥
 आयउ स्वकीय आश्रम३५।१०६इहाँइम श्रीजित अतिपुण्य इत ५९
 ॥ दोहा ॥

या जात्रा बिच जे उदित, गिरि१ तीरथ२ पुर३ ग्राम४ ॥
 समुझहु ते मगँ चिन्ह सब, कहूँ कहूँ कथित सुकाम ॥६०॥
 इम सुर धृति१८३३ सक आगमन, जत्ताँ उत्तर४।७ जाइ ॥
 बदरीस३हिँ जाँजि भद्वेद बदि२, आश्रम पहुँचिय आइ ॥६१॥
 इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टमराशौ विष्णुसिं
 रित्रे मरहट्टाङ्गरेजसहायदिल्लीन्द्रालमशाहरुहिल्लाक्रान्तप्रस्तरदुर्गा-
 विजयनविजितामलाधीशलखनऊपतितदङ्गजासंग्रहणा १ नवाब
 ॥कालचछुरिकाप्रहर्तुरुहिल्लसुताहनन २ भरतपुरजद्वयवनरणाकरण

॥५८॥ १ नगर नामक नगर में २ नजराने में ३ वैष्णवा नगर में ॥ ५९ ॥ ४
 मार्ग के चिन्ह हैं अर्थात् ये सब सुकाम नहीं हैं; कहीं कहीं पर सुकाम कहे हैं
 ॥ ६० ॥ ५ यात्रा ६ पूजन करके ॥ ६१ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टमराशिमें, विष्णुसिंहके चरित्र
 में, मरहटे और अंगरेजों के बल से दिल्ली के बादशाह, शाहआलम का रुहि-
 ल्लों से पत्थरगढ़ आदि विजय करना और लखनेऊ के नवाब का आमिला
 के पति को जीतकर उसकी कन्या को लेना १ रतकाल में उस कन्या का नवा-
 ब के छुरी लगाना और नवाब का उस कन्या को मारना २ भरतपुर के जाट

जहादतडीघपुररुहिलरात्रिसगरपलायन ३ जयपुरागतजसवन्तराव-
वाउलाभृत्यत्वहेतुदर्शननानकमतानुयायिसिक्खपञ्चनदजनपदग्रह
गाजट्टरुहिलदिल्लीदेशलुगटन ४ श्रीजिदुत्तरदिक्तीर्थयात्रानन्तरधु-
न्यागमन पण्ठो मयूख ॥ ६ ॥ आदित ॥ ३५६ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

श्रीजित१९८ प्रस्थित जाहि सक, रुचि बदरीवन राह ॥
सुर धृति१८३३सम्मिमत ताहिसक, बन्पोप्रथम१नृप व्याहा१।
प्रथम कृत्य श्रीजित१९८ प्रथित, सबविधि पुव्व सधाइ ॥
चलिय अण्ण बदरीस चहि, सवन उचित समुक्ताइ ॥ २ ॥
सुभट भवानीसिंह१ सह, सचिव मुख्य सुखराम२ ॥
पीछें सन महिपालको, आरभिय उपयाम ॥ ३ ॥
कोटा१दिक धातन कलित, हुव उपदा व्यवहार ॥
सिसु नृप सग वरात सजि, किय प्रयान मँह कार ॥ ४ ॥
सजि पत्ते लौ भट१ सचिव२, बीकानैर वरात ॥
ससिसुत१४ तेरसि१३ सुक्रं३ सित१, सद्यिप लग्न सुहात॥५॥

॥ घनाक्षरी ॥

वयमैं चतुर्थ४ अव्द अतर कुमार वर,

और यचना का युद्ध होना और रुहिल्ले का जाट से डीघपुर लेना औररति-
बाह के युद्ध में रुहिल्ले का भागना ३ जसवन्तराव पावला के जयपुर में आकर
नौकर रहने का कारण दिखाना और नानकपयी सिक्खों का पजाय लेना
तथा रुहिल्ले और जाटों का दिल्ली के देश में लूट मार करना ४ श्रीजित (४
ममेदासिंह) का उत्तर दिशा की तीर्थ यात्रा करके पीछे बुन्दी में आने का छठा
५ मयूख समाप्त हुआ॥१॥ और आदि से तीस सौ छप्पन ३५६ मयूख हुए॥

१ बुन्दी के राजा विष्णुसिंह का ॥ १ ॥ २ ॥ २ विषाह ॥ ३ ॥ ३ प्राप्त ४
वरसष का कार्य ॥ ४ ॥ ५ पुषवार १ ज्येष्ठ सुदि ॥ ५ ॥

बीकानैर भूप गजसिंह सुता तुल्य बय ॥
 नाम पन्नकुमारि२००११ विवाही पट्टरानी१ नृप,
 निपुन कुमार सुरतेसकी स्वसा सुनय ॥
 देय बैसु जात दैकै कविन प्रसन्न करि,
 सुभट१ अमात्य२ नै लै सुजस तथातिसय ॥
 व्याहि यों महामहसों स्वामीकों प्रथम व्याह,
 बाल महिपाल आन्यों बुंदीपुरी बीत भय ॥ ६ ॥
 वेद गुन अट्ट इंदु १८३४ संवत लगत बेर,
 मधु सित१ अष्टमी८ प्रयान सुभता मिलाइ ॥
 गम्य गिनि रामेश्वर श्रीजित१९८ कियउ गोन,
 दक्खिन२१३ के तीरथ समस्त सेव्य दरिसाइ ॥
 पट्टनि१ प्रथम१ पूजि केसव२ पयपयोज,
 पत्तन बिसाला३ जाइ इसको दरस पाइ ॥
 सिप्रा५ न्हाइ गम्य भू परिक्रमि बिरचि श्राद्ध,
 देय दैकै द्विजन दयो बहु जस बढाइ ॥ ७ ॥
 राखि डेरा दत्तके अखारे बिच आप रहे,
 जात्रा होइ सफल जितेक दिन श्रद्धा जानि ॥
 बैरागी हजार च्यारि४००० सायुध इतेक बिच,
 आत सुनि वहाँके भीत संन्यासी पुकारे आनि ॥
 बोले जे सदातन हमारै१ उनकै२ है बैर,
 मत्त जे प्रगल्भ हम थोरे यह छिद्र मानि ॥
 आहव रचै तो आप करहु सहाय आज,

१ बहिन २ धन समूह ३ अतिशय (अत्यन्त) ॥ ६ ॥ ४ चैत्र सुदि ५ जाने यो
 ६ सेवन ७ चरण कमल पूजकर ८ उज्जैन ॥ ७ ॥ ९ आयुध सहित १० सा
 ११ युद्ध

दीनबधु बिरुद पुरातन जो पढ़िचानि ॥ ८ ॥
 सुनत पुकार सज्ज श्रीजित १९८। *स्वचक्र सह,
 उनको अभै दे रहे आपही लरन अगग ॥
 बैरागी यहै सुनि पराजय निज विचारि,
 मुरारि कहे जे वाम दक्खिन पकड़ि मगग ॥
 फेल्यो जस जाको खड भारत अमित फीत,
 लसत हिमालय १ सौ दक्खिन उदधि २ लगग ॥
 औसी विधि जाइ पूजे रामेस्वर नाम ईस १,
 अतुल उदार दैद विप्रन वसु उदग ॥ ९ ॥
 जाना यह कीनी ताको प्रतिदिन अध्वक्रम,
 लिखित न जान्यो यातैं वरन्यो समास लाइ ॥
 दक्खिन २।३ दिसाके हम तीरय करि असेस,
 आश्रमपै आये मास तेरह १३ में पुण्य पाइ ॥
 पृथ्वीसिंह १ भूप इत जैपुर तजत प्रान,
 अनुज प्रताप २ कीनो भूपति भटन आइ ॥
 बान गुन अठ इदु १८३५ सबत तखत बैठो,
 मास राध २ आसित २ चउत्थि ४ पै मह मचाइ ॥ १० ॥
 भूपति प्रताप यह जैपुर विदित भयो,
 गानमे रमिक राखि गायक गहिर गान ॥
 याके नृप होत अवरोधतैं फितूर उठयो,
 मान्यो जन्म लीनो पृथ्वीसिंहके कुँवर मान ॥
 साच १ मूँट २ ताकी निहचै न भई पै सबन,
 आदरयो न देखत प्रतापको जस उफान ॥

॥८॥*अपनी सेना सहित १ बहुत बिकसित[प्रफुल्लित]अथवा समृद्ध ॥६॥२ मार्ग
 का ३ सधेप से ४ वैशाख यदि ॥ १० ॥ ५ कछायत, गहरे गात्रेयासे ६ जनाने
 से ७ मानसिंह नामक

वृंदावन यातैं चिरकाल वह मान बस्थो,
 प्रभुके प्रताप पेरयो जात्राके समय जान ॥ ११ ॥
 जैपुर तखत बैठो भूपति प्रताप जोलों,
 अब्द प्रति जान्यो बुधसिंह १९७१ नृपतैं उदंत ॥
 बान गुन अट्ट इंदु १८३५ संवत अगारी बात,
 अब्द प्रति लिखित न जानी या १९ सतक १०० अंत ॥
 यातैं अब भाखीजात बिच बिच छोरि अब्द,
 भेकफाल न्याय जो जनाई कथा भगवंत ॥
 लेखालय सकल लिखायो प्रभु आपलेख,
 जैसैं पुब्ब लिखात न आये उक्त परजंत ॥ १२ ॥
 नगर करोली नाह तुरसमपाल तनै,
 मानिकर्यादिपाल १ अभिधान हुतो महिपाल ॥
 ताकै ही तनूजा नाम अमृतकुमारि २००१२ तास,
 बरं बर मानि तास बुंदी अधिराज बाल ॥
 हड्डन अधीस बय तेरहम १३ हायनमैं,
 व्याहन बुलायो गो बरात सजि सो बिसाल ॥
 संबत नयन वेद बसु भू १८४२ असित २ सही ९,
 कलित उछाह साध्यो बारसि १२ को लग्नकाल ॥ १३ ॥

१ हे प्रभु रामसिंह आप के प्रताप से तीर्थयात्रा को गया तब मैंने भी उसको देखा था ॥ ११ ॥ बुन्दी के राजा बुधसिंह से लेकर जयपुर की गद्दी पर प्रतापसिंह बैठा वहां तक २ प्रतिवर्ष (हर साल) का वृत्तान्त हमने जाना है परन्तु आगे की वार्त्ता ३ प्रतिवर्ष की इन उन्नीस सौ के शतक के अन्त तक की नहीं मिली इस कारण बीच बीच के ४ वर्ष छोड़ कर ५ मंडक के फदकने के न्याय से भगवन्तसिंह ने कही सो लिखी है ६ हे प्रभु रामसिंह, दफतर से सध लेख आपने ही लिखवाया है सो ७ कहे हुए समय पर्यन्त का लेख, पहिले के लेख समान नहीं आया ॥ १२ ॥ ८ माणिक्यपाल नामक ९ पुत्री १० श्रेष्ठधर ११ मृगशिर यदि में प्राप्त ॥ १३ ॥

श्रीजितके सम्मत बिबाह यह दूजो२ व्याह,
 आप१ घन१ पूरि *वसु१ विदुरन कविन अने ॥
 बुदी पुंठभेदन स्वकीय विधि काल विस्पो,
 देय सुख निखिल पितामह मुखने देन ॥
 सक गुन वेद अठ भू १८४३ मित समा समय,
 राजा गजसिंह मर्यो वीकानेर सिर रैन ॥
 सुनु तस जेठे गजि तीसरो३ सुरतसिंह,
 पीछे भो महीपति विसारि नय१ धर्म२ बैन ॥ १४ ॥
 पहिलै डगनको बन्पो स्वयल पातसाह
 नादिर स नाम जान दिल्लीको करी कतल ॥
 ताको मारि ताहीके भरोसाके प्रधान भट,
 खूब अपनायो राज्य अहमदसाह खल ॥
 मयुग कतल मडि जानै करि दिल्ली१ जेर,
 मारे मरहठुन विडारे परि हीन बल ॥
 साह आलीगोहर४९के जे भट मिले समय,
 ते जवन ताहीके अधीन कीनै छोरि छल ॥ १५ ॥
 सत्रह मतगज भू १८१७ सवत प्रथम समै,
 अहमदमाह रनजीति तव दिल्ली आड ॥
 दिल्लीपति मली लखनेऊ ईस१ उक्त दूजो,
 प्रवल रुहेला जो नजीबुद्दोला२ नाम पाइ ॥
 दिल्ली काज तत्रै इनको करिगयो जो देस,
 जावितखाँ पुत्र भो नजीबुद्दोला गेह जाइ ॥
 सुनु जा रुहेलाके भयो गुलामकादिर सो,

* आपने मेघ रूप होकर घन रूपी धुन्नों में १ कवियों के घरों का पूण किया
 १ पुर में ३ प्रवेश हुआ ४ आदि को ५ रतनसिंह का पुत्र ॥१४॥१५॥ ६ आधीन

दिल्लीलूटिवेकों आयो या समैं छल दुराई ॥ १६ ॥
 पहिलैं ख बेद धृति १८४० संबत अनेह पर,
 दिल्ली साहआलम५० नै दुर्बलवहै पाइ दुख ॥
 माहजि सनाम तामैं संध्याकों सबल मानि,
 मंत्री निज कीनों सो पटैल बज्यो लोकमुख ॥
 वाके बल स्वस्थ बेद बेद धृति १८४४ साक अब,
 सो गुलामकादिर चलायो लैन लूट सुख ॥
 साह इत लाह ताहि राहमें न रोकिसक्यो,
 रोकि अब दिल्लीद्वार पैठिवेकी जानि रुख ॥ १७ ॥
 जाकै ब्रह्मजार २००० जंगी कामके सिपाह जानि,
 रोक्यो तस अबो साह आलम५०।५ प्रमत्त रहि ॥
 अलैयार१ सुलैमान२ नाजर३ प्रमुख इहाँ,
 बोले करजोरि है रहेला स्वीय धर्म बहि ॥
 उज्जिभ भय भाखत भरोसाके जनन असैं,
 सो गुलामकादिर बुलायो सह सेन सहि ॥
 आइ तानैं साह दिय पट्टसों उतारि अरु,
 क्रुद्ध बनि मंगिय खजानाँ मनि मुख्य कहि ॥ १८ ॥
 कूर पछिताइ साह बापुरे नजर कीनों,
 मनि गन आदि बित्त बात जो हो ख्यात मन ॥
 तदपि न तृप्तिवहै बहोरि खिल मंग्यो तत्थ,
 धूजि सुगलेस भाख्यो असो अब तो न धन ॥
 साहकों इतीक सुनि मारन लग्यो जो मूढ,

॥ १६ ॥ १ समय २ तहां ३ चिन्ता रहित होकर ४ दिल्ली के द्वार बंद किये
 ॥ १७ ॥ ५ आदि ६ भय छोड़कर ॥ १८ ॥ ७ धन का समूह जो मन में प्रसिद्ध
 था ८ वाकी का धन मांगा

सोतो जिन आन्यो तिन रोक्यो नैतिभाव सन ॥
तोहू अति क्रुद्ध हाथ छुरिका निकासि तिहिं,
पूरे खल दीनों साह आलम५०। को अधपन ॥ १९ ॥
केते अधिकारी मुगलसके कतल करि,
ठानि कछु काल दिली आपुनो अमल ठाम ॥
पीछे मरदद सेना आइवेकी सक पागे,
हाथ जो लग्यो बंसु सो लै भज्यो भजि हराम ॥
ताको पलटाहु दीनों दिऐनै त्वरिततम,
वेर दुवर आपो पकरयो यह बुधन वाम ॥
पीछे कालिआख्यो घोर कष्ट मूलपजरमें,
छेदि छेदि थोरो यों रुहेला हन्यो छल छाम ॥ २० ॥
माइजि वजोर इम जावितखाँ सुनु मारि,
आनि साहआलम५० ही बैठारयो तखत अर्ध ॥
तत्रे निज कीनों सब मुलक परन्तु ताको,
वाहिनी बडी बल बंसुधरा विरचि बध ॥
साक सर वेद इम अवनि१८४५ अनेह इत,
भो पता अनसुँ भूप छुगगढको कमध ॥
ता सुत कल्यान गुँरुमानी पट्ट बैठो तास,
राम२०१४ प्रभु मातुल जो रावगे सिधिल सधै ॥ २१ ॥

१ अत्रता से २ हाथ से छुरी निकालकर ३ आधा कर दिया ॥ १९ ॥ ४ घन ५
भाग्य ने ६ अत्यन्त शीघ्र ७ बलवा शत्रुओं ने ८ पकड़ा हुआ आया ९ कैद करके
रफ्तार १० छोड़े के काटा के पीजरे में १० छल में समर्थ छली को मारा ॥ २० ॥
११ जाविदवा के पुत्र को १२ अपने (पादशाह के) आधीन १३ दृष्टी की पड़ी सेना
से घघन किया १४ राजा प्रतापसिंह प्राण रहित हुआ १५ बड़े घमंडवाला कल्या-
णसिंह १६ हे प्रभु रामसिंह यह आप का मामा १७ डीली प्रतिज्ञावाला अथवा
प्रतिज्ञा में डीला हुआ ॥ २१ ॥

तर्क बेद अष्ट ससि१८४६ संवत समय तामैं,
 ईस जयनैरको प्रताप नृप बुन्दी आइ ॥
 श्राम ईस७ सुभ्र१ बुध४ पंचमी५ लगन साधि,
 दीपसिंह१९८१६ तनया बिबाहो सुखमां दिपाइ ॥
 नामकरि दुलही बिचित्रकुमरी१६९१२ जो निज,
 अनुज तनूजा व्याही श्रीजित महँ अघाइ,
 पत्नी हीन आप यातैं दीपसिंह१९८१६पानि करि,
 कन्यादान कीनों बिधि गेहतैं खिल बनाइ ॥ २२ ॥
 गढ१ तैं अवधि लैकैं बुन्दीपुर गोपुर२लौं,
 मनुज न माये जे जिमाये ते बजार बीच ॥
 होत जन भोजन चली बहि तरंगिनी वहाँ,
 सर्करासो सोर ही करि आज्य१ जल२ भक्त१कीच ॥
 अनुजकी तनूजा प्रतापको बिबाहि असैं,

॥

आची सीख जैपुर१ अलोर२कैं भयउ आँजि,
 सीमापर संकुलि मचावत मरक सीच ॥ २३ ॥
 जाबदूके७१२२ वंस बर सांवतका७१२११ बार जानि,
 श्रीजितनैं पहिलैं प्रतापको दयो सुभट ॥
 सीम रनमैं सो अभिधा करि बिनयसिंह१,
 इहाँ काम आयो पायो अच्छरीन जो मकट ॥
 मुहुकमासिंहउत्तर७१३१ जाके बोल देत मुरि,

१ आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की २ अत्यन्त शोभा ३ अपने छोटे भाई की पुत्री को ४ उत्सव से तृप्त होकर ॥ २२ ॥ ५ नगर के द्वार तक ६ नदी ७ उस नदी में खांड [शकर] ही रेत ८ घृत ही पानी और ९ भात [चावल] का ही कीचड़ हुआ १० छोटे भाई की पुत्री जयपुर के राजा प्रतापसिंह को ११ युद्ध हुआ १२ भरकर (अवकाश रहित) १३ मरी रोग के समान मारकर ॥ २३ ॥ १४ नामवरी (यश) करके कछवाहे के पास

मगल २ स नाम वीर आयो काम वीरवट ॥
 जैपुर विजय राख्यो श्रीजितनै भाखि जैसो,
 पूजि तैसो कूरमपे धाड़मै रह्यो निपट ॥ २४ ॥
 सबत तुरग वेद वारन अवनि १८४७ समै,
 पोकरनि वारेनै विरोध बाध्यो छल पारि ॥
 जोधपुर दुर्ग नाती भीमकों तखत जोरि,
 याको तात तात भूप विजय दयो उतारि ॥
 कोप बस चपाउत पहिले कुसलसिंह,
 कीनो बखतेस जोधपुर वै अनयकारि ॥
 ताकै अत पाट बैठो विजय तनूज ताको,
 मान्यो उपकार भार तापे जैत मदमारि ॥ २५ ॥
 आउवा अधीस जैत १ कुसल तनूज अरु,
 देवसिंह २ पोकरनिवारो चपाउत दोरहि ॥
 केसरी तृतीय ३ ईस आसोपको कुपाउत,
 रासिपति ऊदावत केसरी ४ सनाम सोहि ॥
 चीनि पहिले ए अपने मत चलत च्यारि,
 राज परिखदमै इन्हें नृप विजय रोहि ॥
 पकरि पठाइ कैरा मारे दुख दैदे पूर,
 वरस अनेक बीते जोपै रह्यो बैर जोहि ॥ २६ ॥
 देवसिंह चपाउत कदतो असह दर्प,

१ प्रताप में रहा ॥ २४ ॥ पोकरण के ठाकुर मधार्हसिंह ने छल करके विरोध किया, जोधपुर के गढ़ पर २५० मी भीमसिंह को बिठाकर पिता के पिता अर्थात् पितामह (दादा) विजयसिंह को खतार दिया ४ अनीति करके मल्लसिंह को जोधपुर का पति किया था ५ उस मल्लसिंह का पुत्र विजयसिंह पाट पैठा ६ जैतसिंह का ॥ २५ ॥ पहिले इन चारों को अपने मत पर (स्वतन्त्र) रखते देखकर राजा विजयसिंह ने इनको राज्य की सभा में ८ रोक कर ६ कैद में भेजकर

भो कटार कोसैपुट जोधपुर दुर्ग माइ ॥
 सोतो कीलिं मास्यो भो तनै तस सबलसिंह,
 परिगो दगासौं सो पै तुपक प्रहार पाइ ॥
 ताको हुतो तनय सवाईसिंह नाम तह,
 जानै धरि बैर अब उक्त समै ढिग जाइ ॥
 आराध्यो विजय भूप ऊपरकी प्रीति सौं यों,
 भूलि कैत भरो जैसैं धीजिगयो मन भाइ ॥ २७ ॥
 कथित गुलाबराय जाटिनी खवासि करि,
 रानिनको छोगा करिराखी जो विजयराज ॥
 राखी बँधवाइ तापै भगिनी कहत रह्यो,
 कुदिल सवाईसिंह निबहन इष्ट काज ॥
 तेजसिंह नामक खवासिकै हतो तनय,
 बिस्फोटक रोग भयो ताकै सो बढत बाज ॥
 तामैं न्हान आदि काम नियत असेस तजि,
 सौंचो भ्रात भास्यो भगिनीकाँ सो उचित साज ॥ २८ ॥
 बिस्फोटक मिटिगो तथापि पटुता न बनी,
 चँपाउत भाख्यो भगिनीसौं यह हेतु चहि ॥
 मंडोउर जाइ पूज्य देवन मनाइ रचो,
 पूजन बढैं ज्यौं बाल जाभिजं अरोग रहि ॥
 दंपति२ पधारि सब भटन समेत दुत,

१ मेरी कटारी के ग्यान के भडारे में जोधपुर का गढ़ समा सकता है २ उसको
 तो कैद करके बारहाला ३ सवाईसिंह के पिता और पितामह के साथ कई
 प्रकार के कार्य किये थे जिनको प्रकृतकर जैसे भोले स्वभाव का मनुष्य धीजै तै
 से धीज गया ॥ २७ ॥ ४ उस जाटनी को पहिन कहता रहा ५ छोटे दिख-
 वाला ६ पुत्र ७ शीतला (चेचक) ८ शीघ्र बढा ९ सच्चा भाई दीला ॥ २८ ॥
 १० भानेज ११ स्त्री पुरुषों का जोड़ा अर्थात् गुलाबराय जाटनी (पासवान)

अभय करो यों तेजसिंह ग्रस्यो रोग अहि ॥
 सो मुनि गुलाबराय स्वामीकों सब समेत,
 मानिमत मढोउर लैगई बिसास लाहि ॥ २९ ॥
 आपुनो दिखाय अरे चपाउत पैठि उर,
 रीकत स्वसाज्यो वस कीनी सो गुलाबराय ॥
 ताकै परतत्र हो महीपति विजय तैसैं,
 कहती वहे सो करतो मन१ वचन२ काय३ ॥
 पीछे जो मरयो सुत तज्यो वहाँ अन्न दर्पति२नै,
 चपाउत तवहु लिवायो अन्न हित चाय ॥
 काहुमिस अरे उक्त १८४० सबत नृपहिं काहि,
 लैगो पुरबाहिर पूर बाहिर लगाय लाय ॥ ३० ॥
 स्वीय भट सर्व राखि पुरमें सवाईसिंह,
 सग वहे अकेलो काहि स्वामी समुपेत सब ॥
 गीपुर जुराड पुर पीछो पैठि गढगति,
 जेठो नृप नाती भीम कैरातैं निकासि जब ॥
 आप मंत्रीपनको करार करि ताको आनि,
 त्रानमो सभाके सोधे गद्दी बइठारि तव ॥
 नालींगन उच्छवके सूचक दगाड नैर,
 अखिल दुदाई फेरी भीमकी नवीन अब ॥ ३१ ॥
 भूपति विजयकं सुनें ए सुत सात७ भये,
 फतैसिंह१ जालम२ रु भीमसिंह३ नाम फवि ॥

और महाराजा विजयसिंह ॥ २६ ॥ १ पहिल प्रसन्न द्वाये तैस २ पासधान
 और राजा दोनों ने ॥ ३० ॥ ३ बाहर पूर्ण लाय लगाकर राजा को शहर बाहर
 लेगया ४ अपने भट ५ विजयसिंह सहित सबको शहर के दरवाजे बंद कर-
 वाकर ७ राजा के बड़े पोते भीमसिंह को ८ कैद में निकास कर दरवा से १०
 सभा के महल में ११ तोपे ॥ ३१ ॥

त्योंही सरदार४ सेरसिंह५ रु गुमान६ तह,
 सामंतादिसिंह७ नाम सप्तम७ को छाड़ छबि ॥
 तेजसिंह१८ नामक खवासिके भयो तनय,
 होइ सुत जेठे सम जासौं रहे सर्व दबि ॥
 भूखन१ बसन२ सख्त्र३ बाहन४ अतुल भासैं,
 रोचमान जाको बपु ज्यों जगमगात रबि ॥ ३२ ॥
 भोम३ सुत भीम११ रु गुमान६ सुत मानसिंह१२,
 सप्तम७ के सूनु भयो सूरसिंह१३ नाम सह ॥
 भूपको बडो१ सुत कुमारहि अनसु भयो,
 ताके पुत्र मान्यो भीम भोमको तनूज तह ॥
 बाहिरहो जालम१ जो जनक प्रसाद बल,
 जालपुर मानहो२ गुलाबराय इष्ट जह ॥
 और सुत नाँती जिते जियत हुते ते आप,
 कारा कीलिराखेहे विचारि घरमें कलह ॥ ३३ ॥
 कारातैं निकासि असैं भीमकों नृपति कर्यो,
 सो सुनि बिजयसिंह आन्यो उर कष्ट अति ॥
 रानी सम मानी सो खवासिहु गुलाबराय,
 मारिडारी चोरैं भेजि घातक सदंभ मति ॥
 कुटिल सवाई पुरबाहिर विजय काढ्यो,
 गोकुलरथ गुरुन मिलापहिं कहत कति ॥
 कैसें कछु होहु पै खवासिकों हनि रु काक,

१ प्रकाशमान (क्रान्तिवाला) शरीर ॥ ३२ ॥ २ भोमसिंहका पुत्र भीमसिंह ३ गुमानसिंह
 का पुत्र मानसिंह ४ सामन्तसिंहके पुत्र शूरसिंह ५ राजा का बडा पुत्र (फतहसिंह) तो
 कुमारपन में ही मर गया ६ जिसके भीमसिंह को गोद लिया ७ पिताकी प्रसन्नता के
 बल से जालमसिंह कैद बाहर था ८ मानसिंह जालोर था ९ बिजयसिंह ने कैद
 कर रखे थे ॥ ३३ ॥ १० कितने ही लोक गोकुल में गुरुओं से मिलना कहते हैं

बाहिरले विजय दयो दुख गरुण गति ॥ ३४ ॥
 सेस भट सगहे बुलाइ तिनको विजय,
 रकपन लै कह्यो समामै इम रोइ रोइ ॥
 मे जरठ कोलो अव रहिहो जियत मद,
 पचनको जो मत कह्यो वह लछन पोइ ॥
 पोखरिनवारेसो कहाई तब पचननै,
 खोज बस क्यो यह कबक लेहु जस खोइ ॥
 यो तिहिं कहाई मो१को भीम२को मिलै अभय१,
 होहु तुम बीच२ तो इहा विजय भूप होइ ॥ ३५ ॥
 आँट कछु बासर रही यह उभय२ ओर,
 जोरि छल गूढ जो महीपति विजय जानि ॥
 सवनको आगै निज इष्टकै करत सोई,
 इनको बुलायो मिल्यो चपाउत दुष्ट आनि ॥
 बोल्यो पच करहु करार दस१०कोस वट्टे,
 जूमि पहुँचैवो भीम१ मो२जुत जियत जानि ॥
 तुम सहधर्म यह वचन निवाहो तोतो,
 विजयको गाँदाद निकासो भीम हठ बानि ॥ ३६ ॥
 बायस सवाई लै यो पचन वचन बीच,
 जोधपुर आइ भारूपो भीमसो जस जनाई ॥
 एक दुव अव्व भूप रहिहो जियत अव,
 जाके अत नियत तुम्हारो पट्ट कित जाइ ॥
 लीजे रत्न दुलभ खजानाँ खोलि सग सब,

॥३४॥१ युद्ध २ सवाईसिंह ने कहालाया कि मुझको और भीमसिंह को अभय
 मिलजावे ॥ ३५ ॥ १ कुल दिन ४ मार्ग मे युद्ध करके दश कोस पहुँचाने का
 ॥ ३६ ॥ ५ सवाईसिंह काफ ने २ निरन्धय

कीजे कछुकाल बास भीघर यों बढिकाइ ॥
 भीमहिँ उतारि त्यों सवाईसिंह प्राप भट,
 चाल्यो कोस लूटि पीछो नृपकों गढ चढाइ ॥ ३७ ॥
 जात गढऊपर छली नृप पकरि जोर,
 धकि उर कोप तोप मुच्छनपै पानि धरि ॥
 जांजो निज मंत्रही चमूसो पठई जवनक,
 जवन१ गोकुलस्थ२ जालम३ ए मुख४ करि ॥
 भीम१ रु सवाईसिंह२ दोउ३न के तोरि१ भट,
 आनहु के पकरि२ अधर्मी अति सीम प्ररि ॥
 औसी कहि बाहिनी पठावत वचनदारे,
 भीमहिँ बचावन मिले उतकों धर्मभरि ॥ ३८ ॥
 चूकत करार भूप विजय अधर्म चहि,
 झेलि अघ सेना पठई सो पहुँची अँवर ॥
 वहाँके जाट चंपाउत देव पकरायो हुतो,
 तास नौंती वाको कुल लंहरयो असेस तर ॥
 कोल जिन कीनों उत वंहे तिन सुरन कह्यो,
 विजय अनर्क तोहू सुरिवो न मानि वर ॥
 खूब असि आरत दुर्घोरके सुभट खिरे,
 पखयो कछुकालसो सवाई१ भीम२ पालुपर ॥ ४० ॥

१ मेरे घर में २ खजाना लूट का ३ राजा विजयसिंह को ॥ ३७ ॥
 ४ अपनी सलाह में थे उनकी सेना को ५ शीघ्र ही यवन, गोकुली गोस्वामी
 और जालमसिंह इन तीनों को ६ दोनों के सस्तक तोड़कर ७ अथवा
 पकड़ कर लाओ ८ सवाईसिंह को अभय का वचन देनेवाले ॥ ३८ ॥ ९ विजय-
 सिंह ने १० अँवर नामक ग्राम में ११ देवसिंह चंपावत को गले में फन्दा
 डालकर पहिले पकड़ा था उसके १२ पोते और उसके सब कुलको मारा १३
 विजयसिंह की सेना को पीछा फिरना कहा परंतु तोभी उस सेना ने वापिस
 लौटना श्रेष्ठ नहीं माना १४ सवाईसिंह और भीमसिंह को हाथी पर देखे ॥ ४० ॥

जोधपुर राजकी समा ही होते सून्य जह,
 आपुने जे जूझे तिनके दग बचाइ अब ॥
 पीछुते उतरि भीम१ संजुत पिहित पापी,
 जो२ करभं बैठि लग्यो पोखरानि पथ जब ॥
 काके आगे लरत डैत इनतैं काहू कह्यो,
 ते जे कछु सेस सून्य बारन निहारि तब ॥
 कुयापन जाति गये ऊंचे निज निकेत,
 सेस इतके जे पहुँचे ते नृप पास सब ॥ ४१ ॥
 साक वसु वेद नाग भू १८४८ मित समा समय,
 जेपुर१ अवती२के विरोध बढ्यो क्रोध जगि ॥
 तुगापुर खेत आयो माहजि प्रसंभ तानि,
 लखख दुव२०००००० लो धन अद्वैत आपासं लागि ॥
 कूरम सचिव दोला आधारे राज्य दैन कहि,
 पर जो नवाव हमदानी आन्पो प्रीति पगि ॥
 ऊंचरयो अनीक जोधपुरको सहाय आयो,
 दोहूर ओर घोर अँवमर्द मच्छो तोप दगि ॥ ४२ ॥
 क्रोधवस जोध१ गये२ हय३ मैप४ नासकाक्ष,
 पेखत खरे दुव२ चमूँ परि गजन पीठि ॥
 गोलालगि एतेमें करीतैं हमदानी गिरयो,

१भीमसिंह सहित हाथी से उतर कर, यह पापी (सवाईसिंह)२ऊट पर बैठकर
 ३ हाथी को छाही देखकर ४ सुरदों को जलाकर ५ युद्ध से पछे सो अपने
 अपने घर गये ॥ ४१ ॥ ६ लखन के ७ दूठ कैलाकर ८ सेना ९ अहन्ता
 (मेरे समान कोई नहीं)का १०अम करके ११ऊँचर के युद्ध से पछाहुई सेना १२युद्ध
 ॥ ४२ ॥ क्रोध के वश १३घोर १४हाथी, छोड़े और १५ऊँटों का नाश होते समय हा
 थिया की पीठ पर राजा प्रतापसिंह और हमदानी दोनों ऊँटद्वय सेना को देख
 रहे थे इतने में गोला लगकर हमदानी हाथी के ऊपर से गिरा और जयपुर की

आकुलता होत जयनैरके कटक ईंठि ॥
 भ्रात हमदानीको तदीय गज सज्जभयो,
 कूरम कह्यो यों निज ओरके टकत नींठि ॥
 दोला यह गोला मम अंग लगतो तो देर,
 दैन असु नैकहु न होती यों परत दींठि ॥४३॥
 भनत इतीक दोला बनिक कह्यो हे भूप,
 स्वामीके निदेस बिनु आधोराज्य दैन पहि ॥
 आन्यों सो मरयो तो अब रावरो रहयो अखिल,
 भागधेय प्रभुको बलिष्ठ भास्यो लक्ष्य लहि ॥
 भूपति प्रतापकै इतमैं लघुबाधा भई,
 चिन्त्यो भूमि उत्तरन छोरिवो मतंग चहि ॥
 बोल्यो दै दुसाला मंत्री याबिच हरहु बाधा,
 नाँतो गज सून्य देखि टिकिहै अनीक नहि ॥ ४४ ॥
 तैसेही करत परदल्लके प्रवीर तह,
 आगैं बढि आवते लखे रजगुन उफान ॥
 हेति आरि सेना जोधपुरकी दसहजार १००००,
 समुख भिरी वहाँ ठानि सत्रुनको अवसान ॥
 काटि मरहठ करवालनसों संपरीय,

सेना में घबराहट की १ दृष्टि(इच्छा)हुई २ राजा प्रतापसिंह ने दोला नामक
 अपने मंत्री से कहा कि हे दोला इधर(सेना की ओर)दृष्टि होने से ऐसी इच्छा
 होती है कि हमदानी के लगा सो यह गोला मेरे लगता तो ३ प्राण देने में
 कुछ देरी नहीं होती अर्थात् अब निर्लज्जता से भागने की अपेक्षा वा शीघ्र
 मरजाना अच्छा था ४ आपके प्राप्त राज्य को लेने से अर्थात् हमदानी को आधा
 राज्य नहीं दियेजाने के कारण आपका भाग्य बलवान् दीखता है क्योंकि
 सब राज्य आपके ही रहा ५ लघुशंका (सूत्र करने) की पीड़ा हुई इससे ६ हाथी
 को छोड़कर नीचे उतरना चाहा ७ सेना नहीं ठहरेगी ॥ ४४ ॥ ८ शत्रु की
 सेना के धीरे ९ शस्त्र चलाकर १० नाश करके ११ युद्ध में तरवारों से काटकर

माहजि मजायो करघो कूरमको जय मान ॥
 मँवर१ वचे जो खेत तुंगा२ के आखिले भरे,
 जोधपुर रच्छक रहे सिसु नहि जवान ॥ ४५ ॥
 जय जो कवधनके जोर यों प्रताप पायो,
 या १८४८ ही उक्त सधतमें दक्खिन प्रदेश इत ॥
 टीपूसुलतान अगरेजनके आस टारि,
 जुद्ध पहिले हीमें भज्यो सठ कहाइ जित ॥
 हैदरअली जो महसूर नृप मंत्री हुतो,
 हो जनक टीपूको सु स्वामीको बिगारि हित ॥
 आप बँरजोर महसूरको बन्यो अधिप,
 चाल्यो मनमग्न त्यों गिनै न उचितानुचित ॥ ४६ ॥
 किंवदती जाने किरस्तान पकरे कहत,
 छत्रयुत६०००० प्रान तिनमें लक्ष चतुर्थ१५००० छोरि ॥
 क्रूर खिल पैतालीस सँदस४५०००करे कतल,
 बैरी सम भास्यो जो दयाकों अघसिंधु बोरि ॥
 ताकै सुत टीपू भो कहायो सुलतान तिम,
 जो श्रीरंगपट्टनमें राजधानी निज जोरि ॥
 सो सु सक उक्त१८४८वदिकायो फरासीसनको,
 सत्रु कपनीको सिन्धो मँधतै तुरग मोरि ॥ ४७ ॥
 नैर बुदी त्यों इत हमीरसिंह नाथाउत,
 विष्णुसिंह२००।२ नृपकी खवासी बैठि एक अँद ॥
 मंत्री वनि स्वामीको पितामहसों मारि मन,

१ सप ॥ ४५ ॥ २ जयपुर के राजा प्रतापसिंह ने ३ टीपू का पिता था ४
 बल पूर्वक जयरी से ५ मन चाहे मार्ग ६ उचित और अनुचित नहीं गिना
 ॥ ४६ ॥ ७ जनश्रुति (वृत्तकथा) है ८ चौथा अंश (भाग) ९ बाकी के १० पाप
 के समुद्र में डुबोकर ११ युद्ध से घोड़ा मोचकर ॥ ४७ ॥ १२ एक दिन १३ भीजित

भाख्यो आप भूपति१स्वतंत्र२बलि३ओज सह४ ॥
 ईस कोटा जालम अमात्य कहिबेको आज,
 इच्छत विवाही सुता आपको मचाइ मह ॥
 वहे स्वसुर बंदगी बनाइबे उचित होइ,
 जासों संधि राखत सितारा१ दिल्ली२ आदि जह ॥४८॥
 बात यह नृपहिँ मनाइ यों करी बिदित,
 श्रीजित निवारयो उक्त सगपन होत सुनि ॥
 सूचकन सिँच्छ१ बय जोबन उफान२ बस,
 चाह करि व्याह कीनों अंगीकृत लाह चुनि ॥
 भाख्यो सुनि श्रीजित बडे हमहु आज भये,
 गेह हमरेमें अबो भालीको अलख्य गुनि ॥
 मान्यो बरजोर तोहू सगपन सो महिप,
 पिसुन१ कहा न करै लागो प्रभुकान२ पुनि ॥ ४९ ॥
 साहसी जो चंपाउत इतकों सवाईसिंह,
 आपुने सदन दंग पोखरनि भीम आनि ॥
 दूजे२ अब्द लैगयो विवाहन अजलँ देस,
 जैसलसहित मेर भाटिन उचित जानि ॥
 व्याहिकै सुन्यो तँहँ महीपति मरयो विजय,
 ठोक लखि दुल्लहकों खल सल पीठि ठानि ॥
 जोधपुर लायो अर्धरजनी समय जोही,
 पाए जुरे अरर न खोले इन्हें पहिचानि ॥ ५० ॥

उम्मेदसिंह से १ उत्सव ॥ ४८ ॥ २ सूचना करनेवालों की शिक्षा से ३ व्याह ;
 करना स्वीकार किया ४ उस सम्बंध को जवरी से स्वीकार किया ५ चुगल
 क्या नहीं करता ॥ ४९ ॥ ६ अपने घर पोकरण नगर में भीमसिंह को
 लाकर ७ निर्जल देश ८ जैसलमेर में ९ ऊंट की पीठ पर चढ़ाकर १० कपाट ॥ ५० ॥

विजयसिंहकामरनाऔरभीमसिंहकागद्दीपाना]अष्टमराशि-सप्तममयूख(३६२७)

जाह उपद्वार जब साहसी सवाईसिंह,
वित दे अधिक पटा दैबेको करार बहि ॥
जामिक तद्दीके फोरि वारी खुलवाइ जाह,
गादी धरयो भीमहि दुराए चौर बाँहँ गहि ॥
तबहि अचानक बधाईकी चलत तोप,
कोलाइल माँच्यो दग जोधपुर त्राहि कहि ॥
बाहिर हो जालमै रहयो सो पुर बाहिरही,
मारे सेस रुद्ध राजबीजी भीम लेत महि ॥ ५१ ॥

॥ दोहा ॥

अक वेद बसु चंद १४४९ इह, नियमित संवत नाम ॥
अर्क१चतुर्दसि१४ सुचि४ असित२, तज्यो विजय वपु ताम५०
तदनंतर रठोर तह, अष्टमि८ सित१ आषाढ४ ॥
भट चपाउत भीमको, विजय पट्ट दिय बाढ ॥ ५३ ॥
वय तिसहि६३ हायन विजय, तज्यो कलेवर तत्र ॥
वय छवीस२६सम भीम बलि, छितिप बन्पौ धरि छत्र॥५४॥
पहिलै सूचिय जोधपुर, नाम अजित नरनाह ॥
तनय भए बाईस२२ तस, अभय१ आदि रज राह ॥ ५५ ॥
सुत जोरावर१ खेमसर१, स्वामी अके समप्पि ॥
पुत्र देव२ इत पोखरनि२, ईस अक घिर थप्पि ॥ ५६ ॥
कछुक दये हम भटनको, सुत अकस्थै सुभाइ ॥
भजे सेस बखतेस भय, हन्पौ अजित तब हाइ ॥ ५७ ॥

१ खिड़की पर २ पहरायतों को ३ जालमसिंह ४ राजधर्मियों (राज-
विगों) को ५ ५१ ॥ ५ आषाढ यदि ६ विजयसिंह ने तहाँ शरीर छोड़ा
॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ७ वर्ष ॥ ५४ ॥ ८ अभयसिंह आदि ॥ ५५ ॥ ९ गोद देकर
१० पोकरण के ठाकुर देवसिंह के ॥ ५६ ॥ ११ समरायों को, पुत्र गोद दिये १२
पल्लवसिंह ने, पिता अजितसिंह को मारा, तब पाकी के सय भागगये ॥ ५७ ॥

देव सु इम काकाहु दमि, भूपति बिजय भतीज ॥

कीलि हन्यौ न गिनै कुहक, बंधुभाव नृपबीज ॥ ५८ ॥

प्लवङ्गमम्—सु इम सवाईसिंह पितामह बैर पर,

दुख बिजयहिँ अति दै रु करयो सब राज्य कैर ॥

मग खवासि मराइ अजस अघ आदरिय ॥

अब भीमहिँ पुनि आनि कथित १८४९ तक भूप किय ५९

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणोऽष्टमराशौ विष्णुसिं
हचरित्रे बुन्दीपतिविष्णुसिंहविक्रमपुरविवहनाश्रीजिदक्षिणयात्राक-
णा १ जयपुरेशपृथ्वीसिंहपरासुतातदनुजप्रतापसिंहसिंहासनासादन
पृथ्वीसिंहसंदिग्धसुतमानसिंहवृन्दावननिवसन २ एकोनविंशतिश
तकसंबन्धिशकक्रमकथाऽपरिज्ञानसूचनविष्णुसिंहकरोलीविवहना
विक्रमपुरपतिगजसिंहपञ्चत्वतदनुजसुरतसिंहपट्टाक्रमणा ४ लुण्टित
दिल्लीकरुहिल्लयवनगुलामकादिरशाहालमान्धीकरणश्रुतदिल्लीशा-
मात्यमाहजिसिंधियागमनकांदिशीकरुहिल्लकारामरणा ५ कृष्णग

इस कारण देवसिंह काका था जिसको १ भतीजे राजा विजयसिंह ने कैद
करके मारा २ राज्य बंशवाले सम्बन्ध को नहीं गिनते ॥ ५८ ॥ ३ दादा देवसिंह
के बैर पर विजयसिंह को दुःख देकर ४ राज्य को अपने हाथ में किया ॥ ५९ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायणके अष्टमराशि में, विष्णुसिंहके चरित्र
में बुन्दी के पति विष्णुसिंह का बीकानेर विवाह करना और श्रीजित् का द-
क्षिण की यात्रा करना १ जयपुर के राजा पृथ्वीसिंह का देहान्त होकर छोटे
भाई प्रतापसिंह का गद्दी बैठना और पृथ्वीसिंह के सन्देश युक्त पुत्र मानसि-
ंह का जन्म होकर उसका वृन्दावन में रहना २ उन्नीस सौ के शतक में स-
म्बन्धवार कथा नहीं जानने की सूचना करना और विष्णुसिंह का करोली
विवाह करना ३ बीकानेर के राजा गजसिंह का देहान्त होकर छोटे पुत्र सुर-
तसिंह का पाट बैठना ४ रुहिल्ला यवन गुलामकादिर का दिल्ली को लूटकर
शाहआलम को अन्धा करना और दिल्ली के वजीर माहजी सिंधिया का आ-
ना सुनकर भागे हुए रुहिल्ला का कैद होकर मारा जाना ५ किशनगढ़ के

गधीशप्रतापसिंह कलेवरदानतत्पुत्रकल्याणसिंहगहिकोपविशनज
 पुरेशप्रतापसिंहबुन्दीविवाहकरणा ६ मरुदेशसामन्तपोकरणाठकुर
 नवाईसिंहस्वपितामहदेवसिंहघातकयोधपुरेशविजयसिंहराज्यच्युति
 मयतत्पौत्रभीमसिंहपट्टप्रदापनपुनाराजसिंहासनारूढविजयसिंह—
 कैवरग्रामयुद्धपलायितभीमसिंहपोकरणाग्रामनयन ७ तुगाग्रामयो-
 धपुरेशानीकसहायजयपुराधीशप्रतापसिंहावन्तीपतिमाधजीसिंधिया
 समरविजयनाइरेजसमरटीपूसुलतानपलायन ८ योधपुरेशविजयसिं
 हमरणाचापाउत्तसवाईसिंहभीमसिंहपट्टेपवेशनभीमसिंहस्वबन्धुमार
 ण सप्तमो मयूख ॥ ७ ॥ आदित ॥ ३५७ ॥

॥ प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ चूडालदोहा ॥

रुत बुदिय वय तरुन अब, विष्णुसिंह२००।२बंसुधेस बिराजत॥
 गज१हय२विद्या सख३गुन, श्रुति४पुराणा५इतिहास६काव्य७रत॥१॥
 असह बेग बेधत उडत, वार्जीन वल वरछीन बराहैन ॥

राजा प्रतापसिंह का देहान्त होकर उसके पुत्र कल्याणसिंह का गद्दी बैठना
 और जयपुर के राजा प्रतापसिंह का बुन्दी विवाह करना ६ मारवाड़ के सम
 राव पोकरण के ठाकुर सवाईसिंह का, अपने दादा देवसिंह को मारनेवाले
 जोधपुर के राजा विजयसिंह को छल से गादी से उतार कर उसके पोते
 भीमसिंह को गादी पर बिठाना और फिर विजयसिंह को गद्दी पर बिठाकर
 कैवर ग्राम के युद्ध से भागकर भीमसिंह को पोकरण लेजाना ७ तुंगा नामक
 ग्राम में जयपुर के राजा प्रतापसिंह का जोधपुर की सेना की सहायता से
 छज्जीण के पति माधजी सिन्धिया के युद्ध में विजय करना और अगरेजों के
 युद्ध से टीपू सुलतान का भागना ८ जाधपुर के राजा विजयसिंह का देहान्त
 होने पर चापावत सवाईसिंह का भीमसिंह को गद्दी बिठाना और भीमसिंह
 का अपने बान्धवों को मारने का सातवा ७ मयूख समाप्त हुआ ॥ ७ ॥ और
 आदि से तीनसौ सत्तावन ३५७ मयूख हुए ॥

१ मृपति ॥ १ ॥ २ घोड़ों के पल्ल से ३ सुवर्णों को

प्रदरं१तुपकरकरि मृगपतिन, सहज हनिहु समुझैं सु सराहन॥२॥
 कवि१बुध२भट२आदर करन, सचिव१न संसदें मान प्रसारन ॥
 पंच१अंग मंत्र१हिं परखि, बलि प्रगल्भ हित२ बैर३ विचारन ॥३॥
 रामभक्त कपिराजको, मन्त्रिय इष्ट सु दिष्ट महीपति ॥
 धुजत जिहिं सब धाटिधरें१, अरि२मेवास३अनिष्ट लहैं अति॥४॥
 नृप सगपन हुव नांनता, कोटामन्त्रिय भल्ल कर्नी सन ॥
 सो श्रीजित चाह्यो न सुनि, पालतैं पहु प्रतिसल्ल धनीपन ॥ ५ ॥

॥ पट्टपात ॥

सक ख पंच वसु सोम १८५० असित२ सुर्क३ग सप्तमि७ अह ॥
 इंदसिंह२०११अभिधान तनय जहोनि जन्मो तह ॥
 प्रथम कुमार भव पर्व तास उच्छव अति तानिय ॥
 विष्णुसिंह २००१२ बुन्दीस दये नानाविध दानिय ॥
 करि जातकर्म१ आदिक क्रिया लहि अवसर जग जस लयो ॥ ५ ॥
 श्रीजित तटस्थ भावहु सुनि सु भावत सह विरचत भयो ॥ ६ ॥

॥ घनाक्षरी ॥

नाथाउत चालुक हमीर पलटायो नृप,
 भावी बम सो सरयो रु मनोहर१ताको भ्रात ॥
 कृष्णसिंह२ तनय उभैरही राज काज करैं,
 ए काका१ भतीज२ द्रोह श्रीजितपैं उफनात ॥

१ तीरो से ॥ २ ॥ २ समा में ३ मंत्र (सलाह) के पांच अंगों "कर्म-
 णामारम्भोपाय, पुरुषद्रव्यसम्पत्, देशकालविभाग, विनिपातप्रकार, कार्यसि-
 द्धि" की परीक्षा करनेवाला और बुद्धिमान ॥ ३ ॥ ४ हनुमान को इष्ट माना
 अष्ट भाग्यवाले राजा ने ५ बाड़ा डालनेवाले ॥ ४ ॥ ६ भाला जालमसिंह की
 कन्या से ७ वह राजा अपने दादा से शत्रुता और स्वामीपन की पालना कर
 ता था अर्थात् उम्मेदसिंह के विरुद्ध था और उसकी आज्ञा में नहीं था ॥ ५ ॥
 ८ ज्येष्ठ वदि ९ जन्म समय १० आपकी ओर का, वा रुचि पूर्वक उत्सव ॥ ६ ॥
 ११ विष्णुसिंह को

सवत कहे १८५० में तिनहीनै सुचि४ मास सित,
 देवगुरु५ वार दसमी१० को लग्न दरसात ॥
 जालमकी तनया बिवाहो नृपकों लो जाइ,
 अजवकुमारि २००१३ नाम तीजी३ रानी क्रम आत॥७॥
 जालम स्वसुर तदनतर समय जानि,
 आपओर आन्यों मोरि जामाता धरार्थनिक ॥
 हँरनमै नानावस्तु कीने भेट साधि हित,
 मैगल१ तुरगर सस्त्र३ वस्त्र४ हेम५ त्यों मनिंक ६ ॥
 मोदसों पठाइ बुदी निकट महीपतिकै,
 फेली जन जूह राखे आपुने जथा फनिकै ॥
 उक्त १८५० सकहीमै इत कालख नगर आजि,
 वीर दोला जेपुरको मत्री सो मर्यो बनिक ॥ ८ ॥
 सवत अवनि पच अष्ट इक१८५१ मान समै,
 मत्तपनतैं करदलाके चोक जग मचि ॥
 भागपुर नरेस१ रु माहजि कुमार२ मिरे,
 लगत प्रहार भागे जवन सभीकें लचि ॥
 कपनीकी सेना सम निपुन कवायदमै,
 रारि तँह नौरिनकी पलटनि दोइ२ रचि ॥
 भागपुर लैगई नवाबकों निषहि भोन,
 सन्ध्याके सिपाहनके वेढेंतैं बचाइ बचि ॥ ९ ॥
 लीनों अगरेज७न मलाका१ उपद्वीप इत,
 वर्मा१ मास२ तैं जो लग्यो दक्खिन२१३ दिसा बिथैरि ॥

१ आपाठ सुदि २ वृहस्पतिवार ॥ ७ ॥ ३ जमाई ४ राजा को ५ दहेज में
 १ हाथी ७ जवाहिरात ८ कैल करनेवाले अनुष्यों का समूह ९ सपों के समान
 १० युद्ध में ॥ ८ ॥ ११ मय सहित १२ गाधरा पलटन १३ घेरे से वा पुष्प से
 ॥ ८ ॥ १४ फैलाव (विस्तार)

द्वैरही लघु टापू ओर तासों लगतेहि दाबे,
 सिंहपुर^१ नाम रूपि नाँग^२ नाम अग्रसरि ॥
 अच्छे जल^१ पवन^२ बनावत सुखद इहाँ,
 कालापानी कहत प्रजामैं इन्हें रूढि परि ॥
 क्रूर अपराधी इनहीमें बसिबेके काज,
 कौलिकैं पठावत न औबेको प्रबंध करि ॥ १० ॥
 पुण्यापति पेसवा नाम विप्र,
 जाति चितपावन जो अपने न सुत जानि ॥
 अंक निज लेतभो तनै गिनि अमृतराव^१,
 औरसभो पीछैं तास बाजेराय^२ सुत आनि ॥
 रीति कहि पीछैं टारि पंचन अमृतराव^१,
 बाजेराय^२ बैठास्थो पिताके पट्ट मह मानि ॥
 उक्त^१८५^१ सकहीमें कहे ए भये उदंत उभैर,
 कठिकैं अमृतराव^१ कीनों द्रोह तजि कानि ॥ ११ ॥
 पुण्याको प्रदेस सब लूट्यो इहिं दुष्ट पीछैं,
 बादी खल विप्र^१ गाइ आदिक हनै बहुत ॥
 पीछैं जिहिं कासी आइ लाखन खरच पारि,
 द्विजनकी दुस्थताँ दबाई व्है उदार हुत ॥
 पाप^१ मैं रु दान^२ मैं दु^२ घाँ जो अतिसीम पायो,
 सो^१ इम बिडारि राख्यो^२ इमहिं तदपि सुत ॥
 भोग बसु पुण्या बाजेरावहु कुपुत्र भयो,
 देसहि गुमाइदैहैं जो पुनि प्रमाद जुत ॥ १२ ॥
 संबत नयन बान बारन अवनि^१८५^२ समा,
 बुन्दी इत श्रीजित नरेसतैं भये विमन ॥

१ कैद करके ॥ १० ॥ २ गोद ३ कुलवंती विवाहिता स्त्री से ॥ ११ ॥ ४ दरिद्रता
 ॥ १२ ॥ ५ विष्णुसिंह से उदास हुए.

पेच पिसुननके उपायतैं अवस पाइ,
जात्रा जगदीसकी करी पुनि सभक्त जन ॥
आपुनै परिग्रह समेत जाइ आश्रमतैं,
पूजि उपचारन१ दै उपदो२ उदार पन ॥
जात१ अरु आत२ पहिले१ जे परसे न जानै,
तीरथ समस्त परसे ते सुख भाव सन ॥ १३ ॥
सोलखिन१ नागर२न दै इत नैपहिं सीछा,
कासी आत श्रीजित कहाई यह रोध करि ॥
आवहु न देस अब रहहु उहाँही आप,
भेट सतपच५०० दम्भ प्रतिदिन लेहु मरि ॥
एक१ सग बिक्रम११ हो थानाँपतिको अनुज,
धीर द्जो२ भूरा२ महासिंह१९४९ बसी धर्म धरि ॥
सामतके७१११ सगी च्यारि४ भैरव१३ बिनयसिंह२१४,
सूर खुसहाल३५ ज्ञानसिंह४६ हुते सग सँरि ॥ १४ ॥
सगी दुहितामृत कबधज नवलसिंह१७,
सोमानी प्रधान खुसहालीराम१८ पुत्र२९ सह ॥
सकर११० रु बिनय२११ तृतीय३ तैसैं शिवदान३,
तीन३ सगी चारन बुलाये तिनकोहु तह ॥
कृष्णराम११३ धोत्रेय रु भोप२१४ तिम कोटवाल,
श्रीजितके राज्य सग कोटवाली उज्जै वह ॥
कायस्थहु केसोराम११५ सालिग्राम२१६ वैरूप सगी,
विष्णुदास११७ नाजर हे इत्यादिक सार्थ वह ॥ १५ ॥

१ चुगणों के २ पूजा ३ भेट ॥ १३ ॥ ४ राजा विष्णुसिंह को शिवा देकर
५ श्रीजित का बुद्धी में आना रोककर कहलाया ६ हाथों की एक यात्रा का
नाम है ७ बधकर ॥ १४ ॥ ८ दौहिता ९ छोड़कर ॥ १५ ॥

स्वीय गुरु कुसल १।१८ भतीज तथा सुरतान १।१९,
 जाइ जगदीस द्वै२ मिले ये पीछे आत जिम ॥
 कापरनि हठन पठायो सुरतान १।१९ कह,
 आयो कछवाहनके रामपुर व्याहि इम ॥
 जानै तास सामंत २० रु सगत २००।२ तनूज जुग,
 कापरनि आयो सु१तो नायो गुरु मानि किम ॥ १६ ॥
 श्रीगुरु१ सहित जे१हे हाजरि तिनहिँ सभा,
 श्रीजित बुलाइ भाख्यो जाहु सबही सदन ॥
 जानि तिम बिनति करी तिन करन जोरि,
 जातबेर आपुन अयोध्या सुन्यो पाप पन ॥
 बुंदीके उदंतमें अनिष्ट जिम पीछै बन्यौ,
 सूनू सरदार १९९।४ जैसैं छोरि वास दुख सन ॥
 जेठै१ सुत ईश्वर २००।१ समेत गयो जैपुर जो,
 मुरनकी भाखी तब आप सो चही न मन ॥ १७ ॥
 नैर लाखनेऊ१ फैजावाद२के नबाबहुनै,
 आपतैं कहाइ कहो बंदगी बताइ अरि ॥
 मामकं पितामह१के रावरे पितारसौं मेल,
 हो यौ मिलि जाहु काल्हि मो घर पवित्र करि ॥
 सोपै प्रभु मानी नाँ नबाबकी वहाँ भेजि सेना,
 नाँती समुझायो क्यों न अन्पद्वारा जात जरि ॥
 नाथाउत कृष्ण१ अरु छाऊलाल२ नागरहि,
 भूप पलटायो जोर जालमके पाप भरि ॥ १८ ॥
 पीछे न पधारे१ लाखनेऊ न पधारे२ पुनि,

॥ १६ ॥ १ अपने अपने घर जाओ ॥ १७ ॥ २ मेरे दादा से ३ इस कारण
 पोते को ४ जालमसिंह आला के जोर से ॥ १८ ॥

जाइ जगदीस मुरि आत इहाँ सर्वजुत ॥
 कासी रहिवेहीकों कहाइ अब आप कहो,
 आसय कहाइ वनै पाले१ जेहि सत्रु२ उत ॥
 भारूपो तहाँ श्रीजित यौ बरजत मोहि भूपे,
 सर्व तुम जावहु सम्हारहु स्वनारि१ सुत ॥
 रहिहो इहाँ मैं वानप्रस्थन३ उचित रीति,
 इच्छा उनकीतैं पाइ कासी बसिबो प्रभुत ॥ १९ ॥
 ओसो सुनि सासन कितेक जन छोरि आये,
 श्रीगुरु१ कह्यो वहाँ मैंतो रहिहो सतत१ सग ॥
 श्रीजित कह्यो नहि निवाइनकों स्वापतेय,
 मगिखैहो मैं बिज कह्यो गुरु१ धरि उमग ॥
 विक्रम सुभट कह्यो तिमहि न चाहि बसुं,
 इत्यादिक कतिक रहे दिग ज्यों निज अग ॥
 जालेम स्वसुर इत बुदी राखि स्वीय जन,
 भेद बल भूपकों रचायो अपनैही रग ॥ २० ॥
 धाइभ्रात मंत्री मुखरामपै दैम धमाइ,
 लाख१००००० द्रम्म नृपपै लिवाये जपि जालमहि ॥
 जाकरि गनेसघोटी१ कोट१ दरवाजे२ नुत,
 तारागढ तैसैं बढाँका२ बर सिल्प बहि ॥
 कलाधारी हरिको निकेत३ रु पृथुल कोस४,
 श्रीजितकें सम्मत रचे ए ४पीछैं मेल रहि ॥
 वै अब कथित काल मालानै फरक पारि,
 जनहु स्वकीय राखे बुदी१ अरु देसर२ चहि ॥ २१ ॥

१ बुन्दी का राजा सुक्त बुन्दी आते को रोकता है ॥ १६ ॥ २ निरन्तर ३ घन
 ४ घन ५ जालमहि माला ने ६ अपने धीर ॥ २० ॥ ७ दंड ८ मन्दिर ॥ २१ ॥

तारागढ एक१ टरयो भालाके प्रबंधनतैं,
 नाथाउत१ नागर२ सु पै निज करन सीर ॥
 तारागढ लै चले नरेसहिं सिखाइ तिम,
 बंटतैं कहाई पहु आतहों लै कति बीर॥
 सरवर हुतो दुर्गपति सीसोलैस अरज,
 कराइ तानै आप आवहु गुन गहीर ॥
 जालमके पच्छको इहाँ न अई कोऊ जन,
 श्रीजितको सासन यों है इम धरहु धीर ॥ २२ ॥
 देसके सिपाह तिम छसत६००छुराइ दये,
 कामपर राखे तँहँ खारीतटके कबंध ॥
 मुख्य रनसिंह तिनमें करि निज सु मान्यों,
 दुर्गपति आवन दये न अई मदअंध ॥
 नाथाउत१ नागर२ वहाँ भाखन लगे नृपहिं,
 श्रीजित न छोख्यो राज्य आप रहे इत संध ॥
 जाकी आन सीस रहै स्वामी सो कहायो जात,
 रावरे निदेसमें न जोरकी गिनहु गंध ॥ २३ ॥
 स्वामीकों इहाँ इम मुराइराख्यो सूचकन,
 खीजबस यातैं रह्यो पन्नगलों बलखाइ ॥
 कासीपुर आत इहिं कारनतैं रोध क्रम,
 बरजि कहाइ रहिये तँहँ बिधि बनाइ ॥
 श्रीजितहु भाखी रहिवेकी जब एह सुनि,
 छोखि तब आये घनें आयतन मोहँ छाइ ॥
 मंगिहों न कछु साधिलैहों दासभाव मैही,

१ मार्ग से २ सीसोला ग्राम का पति ॥२२॥ ३ खारी नदी के किनारे के राठौर
 ४ विष्णुसिंह को कहने लगे ५ प्रतिज्ञा छोड़नेवाले ॥२३॥ ६ बरोंसे ७ स्नेह करण

औसी बदि विक्रम १ स्थो उहाँ प्रसभ पाइ ॥ २४ ॥
 श्रीगुरु कुसल १ भट बिक्रम २ दुव रहि सगी,
 साँचेमनसों ए रहे स्वामी पास प्रीति सन ॥
 सेनमें थारेसे मध्यभावतें रहे सुनत,
 ओर बहु छोरिआये मोह जोरि मोरि मन ॥
 सबकों परग्वि औसैं कासीतैं उचित साधि,
 आपहु प्रयान कीनो आजमके आयतन ॥
 मग बिच रोकन अनेक नृप दूत मिले,
 पै तिन्ह रुक्यो न नैंक श्रीजित समर्थपन ॥ २५ ॥
 माधोपुर आत यों कहाई कछवाह मनि,
 जैपुरतें मनुज भरोसाके पठाइ नद ॥
 आश्रम पधारहु व्है जैपुर प्रथम आप,
 ओहो जो न तो मैं आइ लाइहों सो पुराय अह ॥
 माधवपुरहि जाइ मालाके सचिव मिले,
 अरजकरी यों है न मतु इमरो असह ॥
 वय अनुसार नाँती रावरे प्रवल्त बनें,
 मानैं काहूकी न जानैं भोगनमैं नित्य मह ॥ २६ ॥
 मतु न तुमारो इम श्रीजित तिन्ह मनाइ,
 जालमल्लों जेहरि कहायो नमैं गालिजुत ॥
 जैपुरधनीको इत औबोही निर्यत जानि,
 आपहि पधारे सोधि जामांता अभीष्ट उत ॥
 समुह प्रताप आइ लैगयो उचित साधि,

१ हठ करके ॥ २४ ॥ २ स्थान में ॥ २५ ॥ ३ जयपुर के राजा ने ४ पवित्र दिन
 ५ इमारा अपराध नहीं ॥ २६ ॥ ६ जालमल्लों भी जयसिंह कहलाने लगा
 अर्थात् जैसे जयसिंह ने जयसिंह से बुन्दी छीन ली थी तैसे यह भी छीनना
 चाहता है अहो (मसकरी) ८ निश्चय ९ जमाई का

पुन्व जिम बैठो भिन्न अजिन तहाँ प्रनुत ॥
 जामाता कहयो यौ निज संग मम सेना जाइ,
 देस१ जुत बुन्दी२ करै रावरे अधीन हुत ॥ २७ ॥
 श्रीजित कहयो यूँ आहि नांती लारिका सुपहु,
 बात घरकीहै इहां हैं नहिँ कछु विचार ॥
 जात अब वहाँ मो समुझायेंतें समुझि जैहैं,
 आप जिन आनों नैक संसय मन उदार ॥
 अैसेँ कहि जैपुरतें बिरचि प्रयान इत,
 आए निज आश्रम पढावत जस प्रसार ॥
 बुन्दी कहि भेजी प्रभुरंगकै चरन बंदि,
 कासी पुनि जैहैं रहिबो चहि सव प्रकार ॥ २८ ॥
 ऊपर१ की बात अैसेँ कासीतें कहत आए,
 आप दंग जैपुरवहै आश्रम स्वकीय इत ॥
 अंतर२की नैक न जनाई बात दोहूँ ओर,
 हित हित१केन अहित२ न जो गिनि अहित ॥
 सुभट१ अमात्य२ गये बुन्दीके सबै समुह,
 माथावत कृष्ण१ कोँ निहारि कहयो आहि कित ॥
 मो दृष जैरातें होतजात अब अैसे मंद,
 अैसी सुनि ओरन दिखायो कृष्ण१ सो विदित ॥ २९ ॥
 कृष्णको विवाहबो समीप हो सो जानि कही,
 आयु तनुमैं बं है न व्याह करिबो उचित ॥
 पीछै तुम बुन्दीके मुसाहब सु मंत्र पटु,

१ शीघ्र ॥ २७ ॥ २ बुन्दी के इष्टदेव का नाम रंगनाथ है ॥ २८ ॥ ३ किध
 है ४ वृद्ध अवस्था के कारण ॥ २९ ॥ ४ अब अल्प आयु में (कृष्णसिंह को मरवावें
 इस कारण उसके विवाह करने को अनुचित कहा)

करिहो विचारि काज मानिबो स्वसुखि मित ॥
 सबको कुसल पूछि वै पुनि सबन सीख,
 धान निज केदारस पास बन्धौ तत्र यित ॥
 यौंस कछु अतर पितामह १ रु नम्रा २ द्वैरहि,
 जालमको पच्छ जोपै जानतहो मत्रजित ॥ ३० ॥
 एकदिन श्रीजित श्रीरगके निलय आय,
 आप रहते ज्यौं रहे उत्तर ४।७ त्रिशदर ओर ॥
 दक्खिन २।३ त्रिशदर दिसा बैठे नरनाह नांती,
 ठानैं बुधउत्तर ४।७ ज्यौं दक्खिन २।३ भटनैं ठोर ॥
 नम्राको कृपानलै निकासि लखि पानि लयो,
 तबतो सिटाइ सकि पलटे सबन तोर ॥
 तोहू धीर श्रीजित सो वै नृपहिँ भाख्यो तूहि,
 मोहि हनि १ ओरनपैं क्यौं इनात २ कुलमोर ॥ ३१ ॥
 सो सुनि सिटाइ भूपभूमिकौं लखन लग्यो,
 पीछो दयो आप सो कृपान लयो कोस करि ॥
 कछु न कछो गो न मिलाइ दीठि जोरि कर,
 भीत आत न्हीत नैन हेतैं जेत जेत भारि ॥
 जपी पच्छपोतिन कुपुत्रहु प्रजा जदपि,
 पितर दयालु होत तदपि दया प्रसरि ॥
 ऊठि तदनतर निजाश्रम सिधारे आप,
 सो पहु खिसैानु पछिताइबेके कष्ट परि ॥ ३२ ॥

१ पोता ॥ ३० ॥ २ मन्दिर में ३ छसर दिशा के तिवारे में ४ पोता बिष्णु-
 सिंह ५ श्रीजित की ओर पछित और राजा की ओर छमराय बैठे ६
 पोता की तरवार लेकर ७ यह खल्ल बिष्णुसिंह को देकर कहा कि हे कुल के
 मुकुट मुझे दूसरों से क्यौं मरवाता है तू ही मार ॥ ३१ ॥ ८ यह खल्ल म्यान में
 कर लिया ९ खज्जित १० स्नेह से ११ राजा के पक्षवालों से श्रीजित ने कहा
 कि १२ सन्तान कुपुत्र होजाये तो भी १३ राजा खज्जित हुआ ॥ ३२ ॥

कढत कितोक काल संसय बिधात करि,
 कीनों बिसवास जानि श्रीजितकों सानुंकूल ॥
 बीच नृप जानी पिसुननकी कपटबाजी,
 मानी मन सुद्धि पहिचानी प्रीति सुख मूल ॥
 याही हेतु पीछें कृष्णसिंह^१ रु मनोहर^२ ए,
 बाग रंग आदिक बिलासमें फबत फूल ॥
 मंत्र मिस भोजनादि सालामें बुलाइ मारे,
 सीढीनपैं आत परयो मनोहर प्रीत मूल ॥ ३३ ॥
 गयो भजि कोटा भीत छाऊलाल नागर सु,
 जोपै कुँहकेस मरतो पै तज्यो विप्रजानि ॥
 सेसहु भजे कति रहे कति उदास सम,
 महिप कहयो मैं रह्यो पितामह पूज्य मानि ॥
 नैर इत कोटा नाम महिप गुमान मर्यो,
 सम्मत त्रि सर अष्ट अवनी १८५३ प्रमित आनि ॥
 पायो तास तनय उमेदसिंह ताको पट्ट,
 जालमके तंत्रहि रह्यो जो होत हित दानि ॥ ३४ ॥
 आसफउद्दोला लखनेऊको नबाब इत,
 हो जो अतिसीम दानी पै गुन परख हीन ॥
 ताकै हो तँनै न यातैं एक जवनीको तँनै,
 बालक दलिद्रहु लख्यो रुचिर^१ त्यों प्रवीन^१ ॥
 ताहि सुत मानि अंगरेजन मनाइ तानै,
 कुलहिँ मनाइ वह पैट्टधर पुत्र कीन ॥

१ सन्देह मिटाकर २ प्रसन्न ३ रंगबिलास बाग में ४ बुलाह करने के मिससे
 ५ भोजनशाला में ६ बरछी में पोया हुआ ॥ ३३ ॥ ७ ठगों का पति ८ राजा
 गुमानसिंह ९ जालमसिंह भाला के आधीन ॥ ३४ ॥ १० उसके पुत्र नहीं था
 ११ पाटवी पुत्र किया

जनक अनतर वजीरअली नाम जोही,
 अवधि नवाब भो करे जिहि सब अधीन ॥ ३५ ॥
 जाको नाम जगमें सहादतअली सुनत,
 दाइभागी याको भो पितृव्य सुत बहि दोरि ॥
 दंग कलकत्ता अंगरेजन कतिक देस,
 जैवो लिखि भाख्यो देहु मोकहँ तखत जोरि ॥
 तबतो विकाल यह विन्नति लगी न ताकी,
 हाकिम वजीरअली चाहत सब निहोरि ॥
 पै यह नवाब पीछें मत्त बै तरुन पाइ,
 करन अनीति लग्यो साहसी व्हे बिधि कोरि ॥ ३६ ॥
 नीच सुनि पाइ जोहि पुरमें रुचिर नारि,
 इठन बुलाइ सोही बिलासी अभय होइ ॥
 पीछें तो पिताहुकी जनीं जे अवरोध पाई,
 बिलासि सबल तेहु तरुनी जस निगोइ ॥
 दंग^१ अवरोध^२ रु कुटुब^३ बल^४ मंत्री^५ देश^६,
 सबन कुपुत्र समुझायो पै खलसं खोइ,
 तानै नहिंमानी व्हा बडे नवाबकी तियन,
 अंगीकृत एह न यों रकलौ कहिय रोइ ॥ ३७ ॥
 भावी तब तैसो अंगरेजनको चाहयो भयो,
 वेग कलकत्ता जो सहादतअली बुलाइ ॥
 वासू लिखवाइ देस अह ओ दबिरो आदि,
 जोहि बइठारयो लखनेऊके तखत जाइ ॥

१ पिता के भरे पीछे । २ काका के घटे ने ३ पिता समय ४ तरुण अवस्था
 पाकर ॥ ३६ ॥ ५ पिता की इच्छा ६ जनाने में पाई हमको बल पूर्वक (जपरीसे)
 भोगी कुपुत्र से इनका समझाना लेकर दमगीकार करके ॥ ३७ ॥ एषन आदि

कामी जो नबाब सब सम्मतिसौं दूरकानों,
 सोपै अधिकारी अंगरेज^१हिं तँहँ नसाइ ॥
 उक्त^{१८५३} सकर्हामैं *सकलत्रसौं वजीरअली,
 भाजि आयो जैपुर प्रतापको सरन भाइ ॥ ३८ ॥
 नृपसौं कह्यो इम सभाविच मिलि नबाब,
 सरन सहाय सुन्यौं बिरुद तुमारे वंस ॥
 अत्र जो रहौ तो राखिलैहो^१ सौंपि दैहो^२ आप,
 द्रव्यकी न हानि देहु ज्यौं मिटै अरिन दंस ॥
 राम^{२०११४} नरनाह यौं जैनश्रुति सुनतरहैं,
 इष्ट बसु लैकैं कदयो रामवंस अवतंस ॥
 अर्थ लगिहै सो जो लगाइवे कदत आप,
 धाम तुमरो तो रहो को करि सकत ध्वंस ॥ ३९ ॥
 यौं पहु प्रताप राख्यो सरन वजीरअली,
 जैपुरको जानि अंगरेजन यह उदंत ॥
 आइ इष्ट महुर उपायनको लोभ^१ आनि,
 मंग्यो जो नबाब कछु ओरहु नियम^२ मंत ॥
 सूचि यौं नबाब मुहिं चोरैं छोरि सख सह ॥
 अरिन दिखैहो तोहु दुरित न पैहो अंत ॥
 सोहु ताकी न सुनि अहो तजि बिरुद स्वीय,
 कीलि अंगरेजनको सौंप्यो लखनेऊकंत ॥ ४० ॥
 मानि इन कांतर प्रतापहिं कनकैमुद्रा,

* स्त्री सहित ॥ ३८ ॥ १दन्त २ हे राजा रामसिंह ऐसे दन्तकथा (जयान
 वात) सुनते हैं ३ चाहा हुआ (इच्छानुसार) धन लेकर ४ रामचन्द्र के वं
 के मुकुट ने ५ धन ६ नाश ॥ ३९ ॥ ७ मोहरें भेद होमे का लोभ करके ८ तो
 मुक्तको सौंप देने का तुम्हें पाप नहीं लगीगा ९ कैद करके ॥ ४० ॥ १०कार
 ११ सुवर्ण की मुहरें प्रचार (चलन) की तो नहीं दीं मोहरों का प्रचार सुव

अपुरके उभासाय नारभली को भी प्रेजों के बाधोन करना] अष्टमराशि-अष्टममपूज (१६४१)

रीतिकी१ न बीनी दीनी रीतिकी२ कनकरंग ॥
 आश्रम बिसिख अष्ट भू१८५४ समा सक अनेह,
 अधिप प्रताप यों कलंक सु लगायो अग ॥
 पीछे पछितायो आरकूटकी महुर पेखि,
 सो लग्यो रहन गूढ लो अपा१ कुजस सग ॥
 प्रान जोलों कील्यो बहु सूल लोह पजरमें,
 तोलों अगरेजन वजरिअली अति तग ॥ ४१ ॥
 पट्ट लखनेऊको सहादतअलीहु पाइ,
 स्वीय मतमाहिं खिल दीनों सबकोहि सुख ॥
 पीछे व्हे प्रगल्भ नयपाटव अतुल पाइ,
 देसतैं मिटवो चाहयो कपनी निवेस दुख ॥
 जानैं गजउत्तर अगाऊ लिखि केहि जानै,
 मोरे अधिकारी सब लधनके स्वामि मुख ॥
 हुतहि इहाँको होतो छम सु इजारदार,
 पै न फल पायो कछु दिष्टके बडे कलुख ॥ ४२ ॥
 उक्त१८५४ सकहीमें तछू हुलकर ईस इत,
 विप्रह बिहात भो मत्तार नाती काल बस ॥
 इंदुर दंग असवंतराव एकदग,
 तनय खवासिको तदीयें बैठो पट्ट तस ॥
 उक्त१८५४ सकहीमें भीमें जोधपुर ईस इत,

का है सो तो नहीं ही और सुवर्ष के रंग की१ पीतल की सुहरें की २ पीतल की सुहरें वेष्टकर ३ खज्जा लेकर गुप्त रहने लगा ॥४१॥ ४ बुद्धिमान् अपवा जवरदस्त और नीति की चासुरी ५ विस्तार पूर्वक उत्तर ६ जाने (ज्ञात) हुए ७ आदि ८ भाग्य के बडे पाप से अपवा बडे पाप के भाग्य से ॥ ४२ ॥ ९ शरीर छोड़ा (मरा) १० काया ११ तबछू के ख्यास का पुत्र उसके पाट पर बैठा १२ श्रीमसिद्ध ने

जालपुर सेना भेजि बेढयो दुर्ग खोइ जस ॥
 पंद्रह १५ सैमा बयमै मानसिंह तास पति,
 पायो नाँ पराजय रचायो खूब रारि रस ॥ ४३ ॥
 संबत कलंब भूत अष्ट अवनी १८५५ समय,
 तामै हत बुन्दी दूजोर जादवी जन्यो तनय ॥
 बाल २०१२ वह नाम संस्कार बिधिलौ न बच्यो,
 इंद्रसिंह २०१२ अग्रज ज्यौ बालहि न पाइ अय ॥
 आश्विन ७ के असित २ त्रयोदसि १३ जनमि इहै,
 दूजोर हू कुमार न रह्यो ज्यौ रविलौ उदय ॥
 बुद्धि धन पहिलै १ बधाइ मै उभय २ बेर,
 प्रसरयो अकाल पीछै २ भावीवै बिसिष्ठ भय ॥ ४४ ॥

॥

॥

॥

॥

॥ ४५ ॥

उक्त १८५५ सकहीकै काल संहनन सन्ध्या उज्झि,
 माहजि वजीर मरयो उज्जइनी ईस इत ॥
 राज्य तस पट्ट बैठो दौलतसहितराव,

१ जालोरपुर में सेना भेजकर गढ़ को घेरा २ पंद्रह वर्ष की अवस्था में ॥ ४३ ॥
 ३ आनेवाले समय के शुभ फलों का फल नहीं पाकर ४ सूर्य के समान उदय
 होनेवाला वह दूसरा कुमार नहीं बचा ॥ ४४ ॥ यहां एक छंद की बुद्धि है
 ॥ ४५ ॥ ५ शरीर ६ छोड़कर ७ दौलतराव

हुलकर सीरी व्हैहु जित तित जग जित ॥
 उक्त १८५५ सकहीमें इत दक्खिन प्रथुल देस,
 आंजि केही हारि अब मद व्है जो मूळमित ॥
 अतकी लराई रुपि टीपू अगरेजनसों,
 दिष्ट प्रतिकूल भिरयो साहसी इहां विदित ॥ ४६ ॥
 सट्टिखट अघदद मृत १ घायल २ भये सुभट,
 सेस कपनी१के सूर अछूत रहे समर ॥
 जपोही दैहजार २००० मृत २ घायल २ अखिल जानें,
 भीलुक पलानें खिल टीपू के अनीक भर ॥
 ताही रनमाहि मारि टीपूको बलिष्ट तब,
 जेनरल बिलजली जई इम बढयो जबर ॥
 सो श्रीरगपट्टनमें ताको अवरोध सोधि,
 लूटिकें खजाना १ इला २ लेतभोर असेस अर ॥
 अंग सर नाग भूमि १८५६ सबत अनेह हत,
 —लखवाडिज पटैलको भट निदान ॥
 जैपुरसों आट कछुकारन उरकि जात,
 आयो देस दुढाहर लुटत बल अमान ॥
 जो मेल्यो प्रताप पहु कूरम समुख जाइ,
 घोर पुरलवाके समीप मच्यो घमसान ॥
 सेना मरद्वनतें अधिक हुतो पैसग,
 एक बिनु दोलाके सधयो न साचो अवधान ॥ ४८ ॥

देश में युद्ध अथ वे मूर्ख के समान मद होगये ४ चिरक भाग्य से छड़ा
 ॥४६॥ युद्ध में बिना छत (घाब) रहे ६ पाकी के कायर भाग गये ७ भूमि दक्षिण ॥४७॥
 ६ घजैन के पति पटैल का वमराय लखवा नामक आग्रहण १० युद्ध १ एक दोला ना-
 मक मन्त्री के बिना १२ सखी सावधानी नहीं सखी तथा मनोवांछित नहीं सभा ॥४८॥

स्वामी राम२०१४ सुनहु जनश्रुति जनावत ज्यों,
 दक्खिन२१३ अनीक लच्छो पहिलें बिदूर द्रुत ॥
 पै कछु समय अंत जैपुरके चक्र पर,
 भाग्य प्रतिकूल भयो जीत१ टारि हरि२ जुत ॥
 क्रूरम सभीकवहै अचानक भज्यो कहत,
 आइ खरे पीछे खेत पाइ मरहठ उत,
 भूप सु कितेनके निवारतहु असो भज्यो,
 जैपुरमें जात तामें धाम दुरयो धीर ध्रुत ॥ ४९ ॥

॥ दोहा ॥

बत्त जनश्रुति इम बदत, आयुअवधि नृप एह ॥
 कबहु न पुनि बाहिर कढयो, नय१ रु धर्म धरि नेह ॥५०॥
 उक्त जु लखनेऊ अधिप, साँपि वजीरअली१ सु ॥
 लखवासन भजि२ लज्जमें, बूढयो जदपि बली सु ॥ ५१ ॥
 इम जीवत मृत भो अधिप, पुर जयनैर प्रताप ॥
 रौचि रहित बिमना रहयो, अपजस विस्तरि आप ॥५२॥
 संवत हय सर अष्ट ससि१८५७, इत बुंदिय नरनाह ॥
 पुर सोपुर परन्यों प्रथित, बिहित चतुर्थ४ बिबाह ॥५३॥
 गिनहु लग्न साध्यो गनित, सुंचि४ सित१ छठी६ सोम ॥

१ हे स्वामी रामसिंह रदन्तकथा ऐसी सुनते हैं कि पाहिले तो श्वहुत दूर तक दक्षिण की सेना भागगई परन्तु थोड़े समय पीछे जयपुर की सेना पर भाग्य उलटा हुआ जिससे विजय को छोडकर ४ जयपुर का राजा प्रतापसिंह भय युक्त होकर अचानक घोड़े सहित भागा जिसपीछे मरहठे उस क्षेत्र को पाकर आ खड़े हुए ५तहां धीरता को छोडकर मकान में छिपगया ॥ ४९ ॥ ६ जी-वन पर्यंत ॥ ५० ॥ ऊपर कहेहुए लखनेऊ के पति वजीरअली को ७ अंगरेजों को देकर और लखवा से भागकर वह राजा द बलवान् था तमे भी लज्जा में डूबकर ॥ ५१ ॥ ८ क्रान्ति रहित उदास रहा ॥ ५२ ॥ ९ १० आषाढ सुदि

कविन त्याग बसु भ्रातृध करि, बिथारि किति छिति व्योम ५४
कन्या भूप कि सौरकी, सरदकुमारि २००१४ सुभ सील ॥
स्वसां राधिकादासकी, सो पदु ऊढ सलील ॥ ५५ ॥

इति श्री वशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे अष्टमराशौ विष्णुसिं
हचरित्रे विष्णुसिंहपुत्रजननश्रीजिद्विरुद्धविष्णुसिंहकल्लजालमसिंह
कनीपाणिग्रहणा १ कालखनगरसमरजयपुरमन्त्रिदोलावैश्यपरासुभ
वनकरदायामभागनगरनबाबमाहजीसुतसग्रामनबाबपलायन २ पे-
शवाबाजेरावविरुद्धामृतरावपुण्यपत्तनप्रान्तलुगटनकुपुत्रबाजेरावरा-
ज्यच्युतिसूचन ३ विष्णुसिंहविरक्तश्रीजिज्जगदीशयात्रागमनविष्णु
सिंहश्रीजिद्विबुध्यागमननिषेधन ४ रङ्गनाथदर्शनव्याजश्रीजिद्विबुदीम
त्यागमनविष्णुसिंहकरसमर्पितकृपायाश्रीजित्स्ववधसूचनविष्णुसिं-
हवीरडासमासादन ५ कोटापतिगुमानसिंहमरणात्सुतोम्मेदसिंहक
ल्लजालमसिंहायत्तीमवन ६ स्वजनन्यादिव्यभिचारहेस्वगरेजनिष्का-

१ घन से घनवान् ॥ ५४ ॥ २ बहिन ३ छीला सहिन व्याहा ॥ ५५ ॥

श्रीवशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायणके अष्टमराशि में, विष्णुसिंहके चरित्र
में, बुन्दी के पति विष्णुसिंह के पुत्र प्रकट होना और अजित से विरुद्ध होकर
जालमसिंह काला की कन्या से विवाह करना १ कालखनगर के युद्ध में जय
पुर के मंत्री दोला वैश्य का माराजाना और करदा में भागनगर के नबाब
और माहजी के पुत्र से युद्ध होकर नबाब का भागना २ पेशवा बाजेराव से
विरुद्ध होकर अमृतराव का पूना का देश छूटना और कुपुत्र बाजेराव से राज्य
छूटने की सूचना करना ३ बुन्दी में विष्णुसिंह से वदस्त होकर अजित का
जगदीश की जात्रा जाना और विष्णुसिंह का अजित को पीछा बुदी आने
से मना कराना ४ रङ्गनाथके मिस से अजित का पीछा बुन्दी आना और पोते
को छद्म देकर अपने को मारने की सूचना करने से विष्णुसिंह का अजित से
जयजित होना ५ कोटा के पति गुमानसिंहका मरना और उनके पुत्र उम्मेदसिंह
का काला जालमसिंह के वशीभूत होना ६ कल्लमेऊ के नबाब आसिफुद्दोला
के दत्तक पुत्र बजीरअली का, उसकी माता आदि से व्यभिचार करके अंगरे-
जों से उसका निकाला जाना और सहादतअली का नबाब होकर बजीर

सितलखनेऊपत्त्यासिफुदोलादत्तकपुत्रवजीरअलीजयपुरशरणाग्रहण
 शहादतअलीनबाबपदप्राप्ति ७ स्वर्णाद्रम्मप्रत्ययगृहीतरीतिमयद्रम्म
 जयपुरेशप्रतापसिंहस्वशरणागतवजीरअल्याख्यांगरेजायत्तीकरण
 बाबशहादतअल्याख्यांगरेजविरोधन ८ इन्दोरेशहुलकरतकूमरणात-
 दासीपुत्रजसवन्तरावपट्टासादनयोधपुराधीशभीमसिंहजाबालिपुरदुर्ग
 मानसिंहसमावरण ९ अवंतीपतिमाधजीसिंधियामरणसिंहासना-
 रुढदौलतरावकतिपययुद्धपराजयनांगरेजरणाटीपूसुलतानहनन १०
 लांबानगरावन्तीसामन्तलखवाविप्रयुद्धजयपुरेशप्रतापसिंहपलायन-
 बुन्दीपतिविष्णुसिंहसोपुरविवाहकरणवर्णनमष्टमो मयूखः ॥ ८ ॥
 आदितः ॥ ३५८ ॥

प्रायो ब्रजदेशीयप्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

इत काबल ईरानकै, उरझी प्रथम अनेह ॥

बन्यौ तबहि रनजित बली, इन लखपुर सिख एह ॥१॥

नानकमत अनुगत नियत, अवसर उचित उपाय ॥

अली का जयपुर शरण आना ७ जयपुर के राजा प्रतापसिंह का धोखे से
 पीतल की मोहरें लेकर अपने शरणागत वजीरअली को अंगरेजों के आधीन
 करना, नबाब सहादतअली का अंगरेजों से विरुद्ध होना ८ इन्दोर के पति
 हुलकर तक्कू का मरना और उसके पासवानिये पुत्र जसवन्तराव का पाट
 बैठना, जोधपुर के राजा भीमसिंह का जालोर के गढ़ में मानसिंह को घेरना
 ९ उज्जैन के पति माधजी सिंधिया का मरना और दौलतराव का उसके पाट
 बैठकर कई युद्धों में हारना और अंगरेजों की लड़ाई में टीपू सुलतान का मारा
 जाना १० लांबा नामक पुर में उज्जैन के उमराव लखवा नामक ब्राह्मण से लड़
 कर जयपुर के राजा प्रतापसिंह का भागना और बुन्दी के पति विष्णुसिंह का
 सोपुर विवाह करने के वर्णन का आठवां ८ मयूख समाप्त हुआ ॥ ८ ॥ और
 आदि से तीनसौ अष्टावन १५८ मयूख हुए ॥

१ पहिले समय में २ लाहोर में ॥ १ ॥ १ नानक मत के साथ चलनेवाला

अप्प सुनहु पभु राम २०१४यह, नृपति भयो जिहि न्याय ॥ २ ॥

॥ घनाक्षरी ॥

जातिकरि जट्ट रनजीतको पितामह जो,
 सो चरितसिंह नाम जानौ पहिलै समय ॥
 जबू आदि आठ्यपुर लूटे बहुवेर जानै,
 बिच बहु जोर्यो दोरयो धारि धारि मध्य वय ॥
 ताके भो तनूज महासिंह अभिधान तैसे,
 जिततित दोर्यो जोहु धांठि मेल खाटि जय ॥
 सो रंछो अधिक काल पत्तन अमृतसर,
 ताके यह वीर रनजीत प्रकट्यो तनय ॥ ३ ॥
 बिस्फोटक रोगमै गयो तम नयन बामर,
 पै जिहि पिता छत सपूती प्रकटाइ पूर ॥
 सैजातीय जाति चहुँ ओरके सिख समूह,
 स्वजनक पीछै बढ्यो सीमासौ अधिक सूर ॥
 साह पुर कावलको जवहि जमानसाह,
 आयो लघि अटक दिखायो जै इतहु दूर ॥
 तानै यौ सुनी तँह ईरानपति सेना तानि,
 जित्तन हिरात आत रिताँ न मुँरै जरूर ॥ ४ ॥
 सो सुनत पीछो भज्यो सजव जमानसाह,
 ताकी रही बूढि के बितस्ताके सलिल तोप ॥
 पूगि घर तिन रनजीतको द्यो यौ पल,
 नोलीगन भेजहु निकासि अधिकात ओपे ॥

॥ २ ॥ १ घनवान् २ महासिंह नामक पुत्र हुआ ३ बाझायतियों से मिलकर जय स
 पादन किया ॥ ३ ॥ ४ शीतला के रोग से ५ अपनी जातिवालों को ६ सेना
 का विस्तार करके ७ खाली नहीं सुझेगा ॥ ४ ॥ ८ अटक नदी के पानी में
 ९ तोपें १० घोडा से

तोप आठ८ भेजी रनजीतनै कढाइ तब,
 ओरहु अनेक साध सासन हित अलोप ॥
 व्है प्रसन्न यातैं साह काबल दयो हुकम,
 लवपुरँ छीनिलेहु करि रन कालकोप ॥ ५ ॥
 साहबादिसिंह१ चेतसिंह१ रु महुरसिंह३,
 देस१ काल२ मूढ हुते हाकिम ए लवदंग ॥
 जट्ट रनजीतनै मिलाय द्वारपाल जिन,
 सज्जि यह गो तब कपाट खोले छल संग ॥
 सो लाहोर लीनों इम पहिले अनेहँ सिख,
 जीत्यो बहु भूपनके दुर्ग१ देस२ जय जंग ॥
 सो अब भुजग पंच बारन अवनि१८५८ साक,
 उद्धत चलायो मुलतानपै धरि उमंग ॥ ६ ॥
 हाकिम मुजफ्फरखाँ नाम मुलतान हुतो,
 तानै सुनि आत गढमें बल अतुल तानि ॥
 तोपैं करि सज्ज रहयो अंतर१ लरन तोर,
 बाहिर निकसि भन्यो बाहिर२ विनति बानि ॥
 मंडि महिमानी१ त्योँ उपायन२ विविध मंजु,
 मनिगन आदि दये स्वामीखोँ महत मानि ॥
 तब रनजीत मुलतानकोँ दुर्गमें ताकि,
 आयो मुरि गेह दया छलमें प्रकट आनि ॥ ७ ॥
 उक्त १८५८ सकही इत कबंध१ कछवाह२ईस,
 पुष्करमें भीम रु प्रताप२ मिले प्रीति पर ॥
 द्वैरही भूप दुलही बिबाहे दुव२ घाँकी दुव२,
 जोधपुर१ जैपुर२ सगाई सोधि तुल्यतर ॥

१ हुकम २ लाहोर ॥ ५ ॥ ३ समय में ॥ ६ ॥ ४ सुन्दर भेट ५ दुर्गम देखकर
 ॥ ७ ॥ ६ दोनों ओर की (परस्पर) ७ अत्यंत बराबर पन देखकर

जेठी१ सुता आनदोदिकुमरि१ प्रतापकी जो,
 व्याहयो कछनाही इतैं कर्मध्वज भीम१ वर ॥
 भीम अनुजा भगिनी२ तिम अर्धुदनामधेया,
 भूप परताप२ परनी यौ उभे२ पतैं घर ॥ ८ ॥
 नैर इत कोटा मल्ल जालम निपुन नीति,
 भूपति उमेद निज तत्रकीनों मत्र भरि ॥
 देसकाल कोविद वढयो सो प्रभुराम२०१४देखो,
 कीर्तिराखे हाकिम समैके जिहिं दाव करि ॥
 जानैं निज गोर जाहि दिल्लीके सवै जवन,
 पेसवार प्रमानैं हमै चाहत त्यों छेष हरि ॥
 हुलकर३ सन्धपा४ गिनै जालम हमारो हितू,
 अगरेज५ मानैं मल्ल आपुनों धुतव धरि ॥ ९ ॥
 नीतिमल जानै देस१ काल२ की दसा निरखि,
 जेपुर जई जो विप लखवा१ रहत जानि ॥
 दुर्जनसाल २ खीची राखि ए अधीन बै२ ही,
 मौसिकमैं लाखनदै जगहि उचित मानि ॥
 वनत विरोध दुव२ घाँ कछु निमित्त वस,
 पेलि पृथ्वीनाको उदैपुरवैं अनख आनि ॥
 जाजपुर लीनों भीमैं रानोंतैं कलह जोति,
 पच्छिम३५ कितीक करी कोटाके अधिप पानि ॥१०॥
 मेवारन राख्यो स्वीय स्वामीतैं मुराइ मन,

१ आनन्दकुमरि २ कमधज (राठोड़) भीमसिंह ३ भीमसिंह की
 छोटी पहिन ४ जिसका नाम मालूम नहीं है ५ राजधानिया से प्राप्त हो हो
 कर ॥ ८ ॥ ६ अपने यथा में ७ अतुर ८ कैद कर रखे थे ९ छल भिटाकर
 १० निश्चयपन भरकर ॥ ९ ॥ ११ जयपुर को जीतनेवाले आक्रमण लखवा को
 १२ तनकाह में ११ सेना भेजकर १४ महाराणा भीमसिंह से ॥ १० ॥

प्रधान मरे न जानै नामी इम जाजपुर ॥
 भिल्लहड़ापुरलौ भई बस कैथित भूमि,
 धारत दुहाई महाशिवकी प्रधान धुर ॥
 इतको अमल रह्यो सोलह^{१६} सैमा अवाधि,
 अबल सिटाइ रह्यो राना कष्ट पाइ उर ॥
 भाखे १८५८ सकही यौ भल्ल जालमके नीति धरे,
 पेचनतैं कोटाको प्रताप बढिगो प्रचुर ॥ ११ ॥
 पंडितोपटंकी मरदठ लाल कोटापुर,
 काल पटुं संध्या को पठायो रह्यो लैन कर ॥
 मित्र कीनौ ताको भल्ल जालम उचित मानि,
 दोउ^२नके एक^१ चित मिटिगो कितोक डर ॥
 बिप्र लखवा^१ रु खीची दुरजनसाल^२ बलि,
 उक्त लाभ लै तिम छुराइ दये एहु अर ॥
 प्रभुके कुलादि भट देसके निबल पारि,
 प्रबल अनीक परदेसी राखे प्रीति पर ॥ १२ ॥
 उक्त १८५८ सकहीसौं कछु पहिले समय इत,
 जेनरल बिलजली मिलापमें सुख जनाइ ॥
 लेख जुत पेसवातैं मित्रता चहन लागो,
 संध्यानें दयो तब सो बाजेराव बहिकाइ ॥
 तासूं प्रतिकूल जसवंतराव भो तबहि,
 पेसवा मिल्यो वहाँ जेनरलसौं भयहि पाइ ॥
 दैकैं कंपनीको बुंदेलनको अखिल देस,
 आपुनौं इलाका तज्यो कोलके नियम आइ ॥ १३ ॥

१ इस कारण युद्ध में नहीं मरे २ कहीहूई (मेवाड़ की) भूमि ३ वर्षतक ४ निर्धन
 प्रपुत्र ॥ ११ ॥ ५ पंडित लिताबवाला ७ समयचतुर ८ शीघ्र ॥ १२ ॥ १३ ॥

वात यह सध्याकों न भाई यातें छेद्य बस,
नागपुर नृपशै पटैल तब मेल पा॥ ॥
काठमाँडू नृप२काँ स्वपच्छमें बहोरि करि,
रुचिमें मनाइ अगरेजनसों लैन रारि ॥
ज्योही लसचारी१ हाँघ२ दिल्ली३ मुखे जग जीति,
सध्या१को हरायो बिलजली२नै जु मद मारि ॥

१
॥ १४ ॥

अक सर नाग भूमि १८५९ सबत समय अव,
हारि इम दो२उन निरतर निबल होइ ॥
सध्या१नै समस्यलिका२ देस कपनीकोँ दयो,
घोसल्पा१नै ओहीसा२ दयो बन धन धिजोइ ॥
उक्त १८५९ सकहीमें अगरेजननै आगरा१ रु,
दिल्ली२पुर द्वे२ही लये दक्खिन२३को खेले खोइ ॥
जेनरल उक्त जो असाई रन उक्त जीत्यो,
हु खित हराये सध्या१ घोसल्पा२ तबहि दोइ२ ॥ १५ ॥
पास बिलजलीके वहाँ हुतो दैल सहस पच५०००,
दोउ२नके पास वहाँ हुतो हजार तीस३०००० दल ॥
तोहु बिलजलीनै भारि सैतत असह तोप,
वज्र गति गोले गेरि कानै सत्रु हीन बल ॥
आगरा१ रु दिल्ली२ होत कपनी अधीन इत,
दीनों भेटि दोउन२तै सध्याको सब दखल ॥

१ छल के पश २ भादि ॥ १४ ॥ ३ वल्लिखियो (सरहटो) का दु ख सिटाकर दे
नगर का नाम है ॥ १५ ॥ ४ सेना ५ निरन्तर

कैदी ज्यों हुतो जु साह आलम ४९ सु अंध काढि,
 मुदा लाख १००००० मासिक कराइ दीनों सायकल
 प्राची१के समुद्र२तें लगाइ सीमा दिल्लीपुर,
 कोस सतसप्तक ७०० लों कंपनी यों राज्य करि ॥
 हाकिम पुरातन इहाँके सब गंजे हंत,
 एक१ जसवंतराव२ मान्यों बरजोर अरि ॥
 जट्ट सिख दूजोर रनजीत२सो इतो न जब,
 बढन लग्यो ही जो मही तिय नवीन बरि ॥
 जित्वर अजेय अब लंघन सबन जान्यों,
 जे भये अधीन दीन अंतर विरोध जरि ॥ १७ ॥
 संबत ख तर्क बसु भूमि १८६० सिते सावनमें,
 जैपुर प्रताप मर्यो भूत१४ तिथि काज जाय ॥
 सूनु तब ताको मत्त उद्धत जगतसिंह,
 बित्रैप नरेस भयो रीतिसों सतत बाम ॥
 जीवत प्रताप मान्यों मारिबो उचित जाको,
 नाहिं सुत दूजोर हो बचायो यों रहन नाम ॥
 उक्त १८६० सकहीमें भीमें जोधपुर भूप इत,
 बाहुल८की विसद१ चउत्थी४ तज्यो बपु ताम ॥ १८ ॥

१ रुपये २ लाख रुपयों के ऊपर कुछ अंश ॥ १६ ॥ ३ पूर्व दिशा क समुद्र
 ल लेकर ४ पहिले के ५ पृथ्वी रूपी छा को ६ अन्य को जीतनेवाला और आप
 नहीं जीतने में आवै ऐसा ७ लंदन नगर को ॥ १७ ॥ ८ आबण मास के
 शुक्लपक्ष में जयपुर का महाराजा प्रतापसिंह मरा ६ जहां १० उस प्रतापसिंह
 का पुत्र उद्धत बुद्धिवाला और ११ निर्लज्ज (जगतसिंह) राजा हुआ सो १२
 रीति से निरंतर विरुद्ध था १३ इस कारण नहीं मारा १४ भीमसिंह ने १५
 कश्ती सुद्धि चौथ को तहां शरीर छोड़ा ॥ १८ ॥ वहां सुख सवाईसिंह ने

मातंगी करडपै दुसाजा तय डारि मूढ,
काढी सा सवाईसिंह चपाउत छद्म करि ॥
जात अवरोधतै दिखाइ त्यों घने जनन,

१(७) चचाखिन (मगिन) स्त्री के टोकरे पर कुशाळा बालकर रस चांचाखनी
तो निकाखी और जनाने से जाती हुई बहुत मनुष्यों को दिखाई और

(८) जोधपुर के महाराजा भीमसिंह के इष्टिम पुत्र घोससिंह की उत्पत्ति का कारण दिखाने के लिये
सवाईसिंह का यह फरेश रचना प्रकृता ने छिछा परंतु जोधपुर की क्वाति में यह क्वाति जिसप्रकार
छिछा है वह नीचे छिछा जाता है ॥

महाराजा मानसिंह जालोर ये जहाँ कौनमुसाहिब सिंघी इद्रान दिखे के घेग क्वाये हुए या इस अ
रसे में महाराज भीमसिंह ने अर्धाठ के फोरे से छीम दिम तक बाजार रहकर स० १८६० में कार्तिक शु
क्ला ४ की शरीर छोडा तब धाय माई शंभुदान, भवारी शिवचंद और मूषोयत ज्ञानमस जो जोधपुर का
काम करते थे इन तानोंने कौनमुसाहिब इद्रान को जालोर लिखमना कि महाराजा भीमसिंह का तो देश
त होचुका परंतु राणा देरावरजी को गर्म है और यहकि प्रधान पोकरन के ठाकुर सवाईसिंह पोकरन हैं
दिनकी बुलानेका कासिद भेजा है सो उनके आने पर सलाम करके जब तक आखिरी हुक्म तुमारे पास
न भेजाजये तबतक जालोर के किले का घेरावत ठठाना यहपर इन्द्रराज के पास कार्तिक शुक्ला ५ को
पहुंचा तो उसने विचारा कि अब महाराज बिजयसिंह के बय में केवल मानसिंह ही बच रहे हैं अगर रा
णी देरावरजी को गम होता तो साद बंदने वगैरह का उत्सव जरूर होता परंतु ऐसा न होनेसे पायाजाता
हकि गर्म का तो फेंकल ठात ही खडा फिफा है इसलिये अक्का हो कि महाराज मानसिंह को जोधपुर पहुंचा
कर गरी बैठावे यह विचारकर उनने उनसे बातचांत करके मृगसिर बदि ७ को उन्हें जोधपुर के किले
में दाखिल किया इधर पोहचकर ठाकुर सवाईसिंहने जोधपुर आकर महाराज भीमसिंह की राणी देरावरजी
को गम चांचासणी भेज दी और महाराज मानसिंह से अर्जे की कि राणी देरावरजी को गर्म है यह सु
नकर महाराज मानसिंहने लिखावट करदी कि यदि उनके लडका होगा तो हम वापिस जालोर चलेजावेंगे
और लडकी होगी तो उदयपुर या जयपुर ब्याह देंगे परंतु मुनते हैं कि उनको गर्म होनेका बिछकुल करे
य रचागया है सो उनको किले में दाखिल करदो ताकि सचमूट निकल आवे यह लिखावट करके महाराज
मानसिंहने चांचासणी के गोस्वामी को देदी तब सवाईसिंहने यह विचारकर कि देरावरजी को गद में दा
खिल करने से फरेश खुलजावेगा इसलिये उन्हें तलहटी के महलों में भेजदी और वहाँ राज्य के तर्क से प
हेर छडे होगये तब सवाईसिंह पिछली रातकी उमराय सिरदारोंके सौ सभा सौ चाहे इकठेकर तलहटीके मह
लोंके नाचे गया और वहाँ से बाजार में हो, दरयजा खोल मेहतिये दरवाजेके रास्ते शहरके बाहिर निकल
गया और सब घोड़ों को इधर उधर बिखेर दिये और दूसरे दिन सुबह को यह प्रकट फरदिया कि रात्रिको
भीमसिंह की राणी देरावरजी के पेट से बासक हुवा, सो उन्होंने खबरे में रखकर ऊपर से नाचे उतार
दिया जिन लडके कौं उसका मामा भाटा ब्रतरसिंह खेतरी लेकर चलागया ॥

प्रकट कही यों कैदयों१ कैगयो अत्र परि२ ॥
 असो दाव बिरचि पठाये पीछें दूत इत,
 लौबे जहाँ जालपुर घेरा रह्यो मान लरि ॥
 भीमकी चमूके जहाँ दल्ला बहुवेर भये,
 अगत अमाप तोप गोले रहे बज्र अरि ॥ १९ ॥
 सेनापति सिंघी बनराज आदि वहाँ सुभट,
 कही जोधपुरके ऐसे कमन आये काम ॥
 त्यों इत कालमें नष्ट संग्रह सकल ताकि,
 धारयो कडिजैबो मानसिंह सोपै तजि धाम ॥
 काहू सिद्ध जोगी बन काहूसों मिलत कह्यो,
 तीन३ दिन लंघितहू मान टिकिजैहै ताम ॥
 जोधपुर पैहै छत्र छादित इहाँतें जैहै,
 निजन बढैहै पटलैहै जग व्हैहै नाम ॥ २० ॥
 कानफटा लिंगी तहां देवनाथ नाम करि,
 दुर्गमाँहि जातो भीखमाँगिवे पिहितद्वार ॥
 भाखी सिद्ध जो सो जानि मानसों कहतभयो,
 स्वप्नमें कह्यो यों सोसों जलंधरनाथ सार ॥
 ताके बिसवास मान लंघन सहत तीजो३,
 जालपुर दुर्ग जो रह्यो रुपि भुक्ति भार ॥
 तिमहिं जु भीम मरिबेकी ध्रुव सुँधि आई,
 लौबे पुनि आये भट१ मंत्री२ मुख्य बहु लार ॥ २१ ॥

उद्धि में यह कहगया कि यहां यह कैद पड़ी हुई थी, यह दाव करके जिस
 १ जालोर में घेरा के भीतर २ मानसिंह लड़ रहा था उसको लेने को दूत
 ॥ १९ ॥ ३ अन्य भी सुंदर वीर काम आये ४ लघन (उपवास) करके भी
 ० ॥ ५ खिड़की के छिपे द्वार से ६ तत्त्व (सिद्धान्त) ७ भीमसिंह के मरने
 निश्चय खबर आई ॥ २१ ॥

बाहिरके सख्खदीन दुर्गमें कति छुलाइ,
 मानि नीठि सपथ भरोसाके दिवाइ मान ॥
 पीछे छत्र१ घामर२ चलाइ जाइ जोधपुर,
 बैठो पट्ट छट्ठी६ मंग९ मेचक२ सह बिधान ॥
 जालपुर चाकरी बिपतिहुमें कीनी जिते,
 सकल बढ़ाये ते छुलाइ दुख अवसान ॥
 कानफटा सोपे देवनाथ गुरु मुख्य कीनों,
 यापि तैंहँ दीनो महामदिर बिरचि धान ॥ २२ ॥
 उक्त१८६० सकहीके मंग९ मेचक२ चउत्थि४ इत,
 बुन्दी नरनाइ बिष्णुसिंह२००।२ कै स्वदिष्ट बस ॥
 तीजी३ मकुवानी रानी उदर प्रसूता तैंहँ,
 तनुजा भई सो मरी मानहु परयो न तस ॥
 इदु खट धारन भू१८६१ सवत अनेइ इहा,
 आमयँ असाध्य देखी श्रीजितके अतदस ॥
 आश्रमतैं लाये महलनमें बिदायो अग,
 जानैं मंग९ मेचक२ चउत्थी४ पै उबारि जस ॥ २३ ॥
 होती बुद्धि सुद्धि तो न आगम महल होतो,
 पै निज पितामह अचेत आनैं जाइ पढ़े,
 योंस दुवर अतर कहे समय छोरयो देइ,
 नाँती नरनाइ बिधि राइ दये दान बहु ॥
 अछद पहिलेतैं दुरभिच्छहु हुतो असह,
 लोक इत आये देसदेसके बिसेस लैहु ॥

१ सोगन दिखाकर २ मृगशिर यदि छठ के दिन ३ दुख के अत में ४
 अपने भाग्य के वश ५ काली रानी के उदर से ६ कन्या हुई सो ७ रोग ८
 अन्तदशा में ९ मृगशिर यदि ॥ १३ ॥ १० बुद्धि और चेत होता तो महलों में
 आना नहीं होता ११ राजा बिष्णुसिंह ने १२ पोते बिष्णुसिंह ने १३ लघु (शीघ्र)

तेहु सब भोजे द्वादसाह^१२में असन तानि,
 भूखे जन लूट्यो सेस दूजे^२ दिन भोजनहु ॥ २४ ॥
 भाखे^१८६१ सकहीके मास फागुन^१२ बिसद^१भाग,
 सोधित द्वितीया^२ कर्मबाटी लग्न अग्रसर ॥
 भाटिननै डोला आनि बुन्दी परिनायो भूप,
 कन्या रत्नसिंहकी अनन्या सील जौरि कर ॥
 नाम लाडकुमरि^{२००}५ ललाम गुन^१ रूप^२ निज,
 पंचमी^५ सु रानी आनी कित्तिके प्रसार पर ॥
 सालम हरामीकी हवेली माँहि लग्न साधि,
 बिलास्यो बिलासनमें बरनी^१ उपेत तर^२ ॥ २५ ॥
 उक्त ^१८६१ सकहीके समै पत्तन करेली इत,
 जो मानिक्यपाल भूप छोरत भो देह जब ॥
 नाम हरिपाल भो तदीय सुत छोटी नृप,
 तातके तखत बैठि उचित अनेह तब ॥
 संबत नयन तर्क नाग भू^१८६२ प्रमित समै,
 अंध साहआलम^{४९}१ने दिल्ली तज्यो देह अब ॥
 पहिलै कहायो आलीगुहर ^{४९}१ स नाम पीछै,
 साह भयै लागे साहआलम ^{४९}१ कहन सब ॥ २६ ॥
 सो आलमगीर ^{४८}१ दूजे^२ को सुत कथित समै,
 बुद्धिदुर्ग सुद्धि असै दिल्ली भयो काल बस ॥
 तैसै अभिधान करि अकबर ^{५०}१ हूजो^२ तहाँ,
 तात पट्ट बैठो पै गिरिसी फिरी आन तस ॥
 जोधपुर^१ जैपुर^२ उदैपुर^३ बढयो जहर,

१ जिमाये ॥ २४ ॥ २ तिथि ३ परम ४ दुत्तहन सहित ॥ २५ ॥ ५ वल्लभा पुत्र
 ॥ २६ ॥ ६ प्रज्ञाचक्षु (अन्धा) ७ अकबर नामवाला

राम २०१४ प्रभु सुनहु रहयो ज्यों माँहिमाँहि सर ॥
 मारयो अगिसिंह रान रावरे पितामहने,
 जिततित छायो र्यों बढायो वीरभाव जस ॥२७॥
 जेठो? अरिसिंहको तेनभय हमीर जब,
 बैठो विधिके बस पिताके पट्ट बाल बप ॥
 बेगहि मरयो सो रान हाथेन अलप बचि,
 दूजे० तस आत भीम० पायो राज्य अक्षयुदय ॥
 भीम रानके भई तनूजा इक ताको भयो,
 सगपन जोधदग भीमसो गये समप ॥
 पुहल विहायो जोधपुरके अधीस पीछे,
 पट्ट तस पायो मान आपुने बलिष्ठ अय ॥ २८ ॥
 कन्याकी सगाई तब मानसों करन फेर,
 जोधपुर भेजे तिसवासके राजकीय जन ॥
 माननृप तबतो नटयो तस मँहत्य मानि,
 जदपि निहोरयो इन१ उतरके किते जनन ॥
 कन्याकी सगाई जयनैर तब रान करी,
 पेखि जगतेसको समान१ कुल रुच्यरपन ॥
 होतहि सगाई तदनतर कुपित होइ,
 चपाउत भाख्यो देत कन्या पहिले१ बचन ॥ २९ ॥
 पहिले मगन भीम चेडाली करई पर,
 दुष्टने दुमाला डारि काढी अवरोधे द्वार ॥

॥२७॥ १ यहा पुत्र १ भीमसिंह २ छोटे बर्ष राना रहकर ३ भीमसिंह के छोटे भाई
 भीमसिंह ने ४ समृद्धियाला राज्य पाया ५ जोधपुर म भीमसिंह से ६ भीम-
 सिंह ने पीछे शरीर छोडा ७ शुभकल देनेवाले भाग्य के बल से ॥ २८ ॥ इस
 कन्या की अवस्था पढी समझ कर ९ जयपुर १० दुल्लह (पर) पन परापर का
 देखकर ॥ २६ ॥ ११ जोकरे पर १२ जनाने द्वार से

राजा मानकों अब अधीन निज राखिबेकों,
 बिरच्यो सवाईसिंह बायस यह बिचार ॥
 जानि यह मान लागो रहन स्वतंत्र जिम,
 आनि तिम जोरतैं प्रधान ताको अधिकार ॥
 भाख्यो यों हमारे अधिराजकी सगाई भूति,
 कूरम लहैं सो कोन दुलही प्रथम दार ॥ ३० ॥
 बिरचि प्रबंध यों लै पंचन प्रपंच विच,
 सूची नृप मानसों सवाईसिंह काक सम ॥
 रावरी बधूटी बरिबेकों कछवाह रंक,
 होइ सिर जैहैं मरिजैहैं जब सब हम ॥
 भूप तुम कैसे रह्यो बित्रपं चकित भाव,
 जान कब दैहैं कछवाहकों कबंध जम ॥
 आप सिर सारी धारि लीनी तो धरहु और,
 पट्टप उचित कोऊ धर्म ज्यों रहै परम ॥ ३१ ॥
 बचन प्रतोद अैसें दैदैं नृप मान बुद्धि,
 फेरी फेहैं चंपाउत के करि कपट फैल ॥
 जानि स्वान छोरयो इक बिप्र मख छाग जैसें,

१ जिसके साथ पहिले सगाई हुई उसी की स्त्री है ॥ ३० ॥ २ निर्लज्जपन
 ॥ ३१ ॥ २ बचन रूपी आवुक ४ गीदड़ रूपी चांपावत सवाईसिंह ने जैसे एक
 ब्राह्मण ने बहुतों के कहने से यज्ञ के बकरेको(*)कुत्ता जानकर छोड़ दिया तैसे

(४*) यह कथा हितोपदेश में इसप्रकार है कि एक ब्राह्मण यज्ञ के अर्थ एक बकरा लेजाता था उसे देख
 कर ४ धूर्तों ने यह बिचारा कि इस ब्राह्मण से यह बकरा छुडालेना चाहिये यह सलाह करके वे चारों रस्ते
 पर दूर दूर बैठ गये जब ब्राह्मण निकला तो उसे पहिला बोला कि तू ब्राह्मण होकर यह कुत्ता कंधे पर क्यों लिये जाता
 है. यह सुनकर वह ब्राह्मण आगे चला तो उस दूसरे धूर्त ने भी ऐसे ही कहा और ज्यों ज्यों वह ब्राह्मण आ-
 गे चला त्यों त्यों तीसरा और ऐसे ही चौथा धूर्त भी मिला और पहिले ने कहा वैसे ही कहनेलगे तब वह
 ब्राह्मण यह जानकर कि इन चारों ने जो कहा वही सत्य है और मेरी दृष्टि में फर्क है, स्नान करके उस बकरे
 को छोड़ अपने घर चला आया, और उन चारों धूर्तों ने उस बकरे को मारखाया.

औसैं बहुतनके कहेसौं एह गहि गैल ॥
 औचि कर मुच्छ भूप मानहु पलटि अब,
 सोहि मत भारूपो कोन लघहि कैनकसैल ॥
 रूच्य पहिले१ कौ जो सुवासिनी बरन रीति,
 छीनि हम लैहैं व्याहि गजि तो अपर छैल ॥ ३२ ॥
 पत्र औसो इतहु लिखाइ भेज्यो रान प्रति,
 कौ इत विवाहहु१ कौ मारहु कैंनी कुटिल ॥
 क्यों तुम विरोध पारयो जैपुर सगाई करि,
 क्रूरम नपोतेकौ विनासहि कवध किल ॥
 रडा रहिजैहैं हनिहोतो कहि भेजी रान,
 वारन नमाइहै पिपीलिकाके छुदं विल ॥
 अबहु कनीकौ हमरे मत बरहु एक१,
 खोलि रन भडे अरि जीति रहो जोहि खिल ॥ ३३ ॥
 औसी रीति दुरदिस लगाइ लाय चपाउत,
 कोऊ कुल बालककौ भीमको तैनूज करि ॥
 जाको नाम धौकल प्रसिद्धिमें अब जनाइ,
 पास विसवासके प्रवीर राखे बीच परि ॥
 मान महिपालकौ अधीन अपनैं न मानि,
 अट्टहि८ मिसल आदि भटन स्वपच्छ भरि ॥
 जैपुरलौं आप समुक्तावनके व्याज जाइ,
 क्रूरममे मिलिगो स्वमुच्छ करसौं कतरि ॥ ३४ ॥

१ सुमेरु का चङ्खन कौन करेगा १ कुल्लह ३ पिता के घर रहनेवाली कन्या
 ४ दूसरे रसिक को मारकर ॥ ३२ ॥ ५ कन्या को ६ नशा से यह शब्द नपोता
 हुआ ७ निश्चय ही कछवाहे जगतसिंह को मारोगे तो कन्या राख रहजा
 वेगी परन्तु कीड़ी के १ छोटे पिल मेंहाथी नहीं समावेगा १० शत्रु को मारकर
 जो बाकी रहे सोही कन्या को, विवाहो ॥ ३३ ॥ ११ किसी कुल क बालक को
 भीमसिंह का पुत्र बनाकर ॥ ३४ ॥

मिलि जगतेससौं कह्यो इम रहस्य मत,
 स्वामी हम सब चाहि धौंकल जो भीम सुत ॥
 आप चलि ताहि जोधपुरको करहु ईस,
 दम्म नवलकख ९००००० दैहैं १ होतहि अभीष्ट हुत ॥
 रावरो उदैपुर बिबाह १ कोऊ रोकिहैं नर,
 नामकरि अैसैं सब भूपनमें होहु बुत ॥
 मान सठ आपको निवारे सो कवन मद,
 जाहि गहि आनहु गहाडदैहैं वित्त जुत ॥ ३५ ॥
 सुनत इतीक निज बुद्धिके जनन सह,
 मत्त बारुनीमें जगतेस धारि अभिमान ॥
 भारुयो लिखिदेहु १ भट अहुहि मिसल आदि,
 धौंकलकी फेला लेहु २ टारिदेहु वैवधान ॥
 कग्गर लिखाइ इम तबहि कबंधनको,
 इष्ट धर्म सौहन सवाईसिंह अघवान ॥
 सौण्यो जगतेसको करारमें सबन साखि,
 पाघ बिलु व्हैवे १ पै बिपत्ति दैवे प्रभु प्रान २ ॥ ३६ ॥
 पापी इम पल इत भेज्यो मान भूप्रति,
 खूब समुझायो पै न मानै कछवाह खल ॥
 यातैं अब जुद्धको बिलंब न करहु आप,
 करहु चढाइ जीति लौ है प्रभुके सकल ॥
 कोन कोन ठाम जीते कूरम कबंधनसों,
 बाहिर करहु डेरा यातैं वेग बाँधि बल ॥
 मत्त यह धौंकल बुलाइ मिलि तुल्य मानि,

१ एकान्त मे २ स्तुतियोग्य ॥ ३५ ॥ ३ मध्य में मस्त ४ भीमसिंह के पुत्र धूंकल
 सिंह का उच्छिष्ट खाओ और उससे ५ अन्तर छोडदो ६ अपने स्वामी मान
 सिंह के प्राण को ॥ ३६ ॥ ७ सब आपके ही हैं दजगतासिंह

एक१ पट्ट बैठत इहाँतो मत है अचल ॥ ३७ ॥
 पूछे नृप मान तँहँ सँसद छुलाह पच,
 चपाउत पत्रहु दिखायो मत लैन चाहि ॥
 ते सच पिहित मिले धौकल सिसुहि ताकि,
 गाढे हठ जोभी लेख द्विगुन पटान गहि ॥
 जो लिखी सवाईसिंह सोही करतव्य जपि,
 बाहिर करहु डेरा सूची अतिदर्प बहि ॥
 माननृप चार१ ५ विचार२ दृग द्वे२ही मीची,
 कीनो कह्यो तिनको भरोसातँ प्रपान कहि ॥ ३८ ॥
 मद्य मदमत इत जैपुर अधीस मानी,
 जग उपहार सबै कीनै सज्ज जगतेस ॥
 तोहु डक१ बेरतो रुक्यो जो आनि कानि अंपा,
 छुदी प्रभु विष्णुसिंह२००।२ वरज्यो जव बिसेस ॥
 पै जँहँ सवाईसिंह दमनक रपार पास,
 आस मानिवेकी तँहँ कैसी लग्यो कान एस ॥
 डाँकदार जैसेँ मत बाग्नकों देदे डाँक,
 औसे कछवाह काढ्यो बाहिर विधि असेस ॥ ३९ ॥
 लाखन खरबि दम्भ राखि दल तीन लाख ३०००००,
 सज्जि पहु बीकानेर१ आदि बहु मित्र सग ॥
 भीमसुत धौकलकों जोधपुर देन१ भाखि,

१ पहा तो एक गद्दी पर बैठने का निरवग्र विचार है ॥ ३७ ॥ २ सभा में इ
 छाने धूकलसिंह से मिलेहुए थे क्योंकि कृष्णिम(करेयी) पातक ने दुगुने पट्टे देने
 के लोभ सभ को कर दिये थे ४ करमे योग्य कहकर ५ हलकारे और विचार ये
 दोही राजा के नेश हैं जिनको यथ करके ॥ ३८ ॥ ६ शुष की सामग्री उलज्जा
 ८ दमनक नामक गीवड़ पास था ६जैसे साटमार मस्त हाथी को कोष दिखाने
 के १०छोटे घाघ लगावे तैसे ॥३९॥ ११भीमसिंह के कृष्णिम पुत्र धूकलसिंह को

आप बलि ब्याहन उदैपुर^२ बय उमंग ॥
 कोटादिक दंडि पै^३ लगावन^३ विचार करि,
 जोधपुर हंकपो पहिलैं जय करन जंग ॥
 श्रावक^४ सचिव रायचंद बहुबेर रोक्यो,
 तदपि रुक्यो न बढ्यो पंथन करत तंग ॥ ४० ॥
 सेना यह राखि लायो अधिक जितीक सज्ज,
 ओरनकै नां सुनी तितीक तिहिं काल इम ॥
 पायो पै^५ १ हरोलिन व्हाँ चंदोलिन पायो पंक^२,
 अध्वकै^६ अरण्य तरु तूट भये चोक तिम ॥
 साक दुव तर्क अष्ट इंदु १८६२ के शिशिर^६ समै,
 जाम हुव ग्राम नाम गिंघोली मुकाम जिम ॥
 उततैं स्वसंगलैं अनीक सब मान आयो,
 कपटमैं जानैं जयलोभी रुकिजाय किम ॥ ४१ ॥
 अध्वविच आत कृष्णगढके छली अधिप,
 राज्य निज जैबो जानि मायाको प्रपंच रचि ॥
 स्वीय भूमि लैबे करकेरीवै अमरसिंह,
 संग पहु कूरमके हो तस सदाय सचि ॥
 मिथ्या पिसुनत्वं जगतेसको मुराइ मन,
 मरवायो जो दगासों ——पाप ताप तैंचि ॥
 जैपुरको आप बनिबैठो सुभचितक ज्यौं,
 जोधपुर छोरि जोरि याहीतैं प्रसाद जचि ॥ ४२ ॥
 द्वैरही मिले अैसें ग्राम गिंघोली समीप दल,

[नि २ चरणों में लगाने का विचार करके ३ सरावगी वैश्य ॥ ४० ॥ ४ न
 विचङ्ग ६ मार्ग के वन के वृक्ष ७ जहाँ ८ अपने साथ सेना लेकर ९ म
 ॥ ४१ ॥ १० करकेड़ी के पति अमरसिंह ११ झूठी चुगली करने से
 रसिंह को मारवाला १२ पाप की अग्नि से ललकत १३ मरवाया ॥ ४२ ॥

जोधपुर१ जैपुर२ बनै जे चित्त बरजोर ॥
 बाजिन उठाइवेकी घेरमै कबध कुल,
 आपे टरि टरिकैं सबही कछवाह ओर ॥
 मान यह देखत विचारसो करसों मरन,
 नीठिन निवारि सोपै सगके दुसह दोर ॥
 जोधपुर जाइ लारिवेकी यापि टेकी लागे,
 मानकौ निकासिकैं भजे लै च्पारि४ भठमोर ॥ ४३ ॥
 ऊदाउत अर्जुन १ स नाम रायपुर ईस,
 नाह र्यो कुचामनिको मेरतिया सिवनाथ२ ॥
 भद्राजनि१ लाइनौ२ के जोधे है कबधभट,
 साथ वसुतेस१३ अरु मगल१४ ए क्रम साथ ॥
 लछमन१५ मान१६ हुकमेस३७ ए त्रप३ दि लार,
 सोदर कनिष्ठ सिवनाथके पधनपाथ ॥
 काकासुत आता सिवनाथ१ अरु मगल२के,
 सगी सारदूल१८ पता१९ सक्रमगदितगाथ ॥ ४४ ॥
 ए नव९ विदित नव९ अविदित नाम औसै,
 अष्टादस१८ मान भजे मानकौ लै असवार ॥
 भूरि धूरि पूरि ख भई इम तिमिर भीर,
 आपुनै न भामे कैर आपकौ लखन लार ॥
 मानवारे डेरनमें आवत न मग मिलि,
 वाजि कछवाहनके उरभे जव विहार ॥
 जाँहीकरि मानको पलायन सबन जान्यो,

१मानसिंह ने अपने हाथ से मरना विचारा ॥ ३॥ २छोटे भाई शत्रुघ्न के अर्जुन४क्रम सहित कष्टीष्टई कथा से ॥ ४४ ॥ ५जिनके नाम नहीं जाने गये ६प्रमाण (गणना) पावे ७ बहुत घूल ८ आकाश में भरकर अघेरे में अपना ९ हाथ आपको नहीं दीया १० कछवाहों के घोड़ा का गमन रुका ११ जिससे १२मानसिंह का भागना जाना

पैठो जगतेस चित्त जाको *दर्प गतपार ॥ ४५ ॥
 १संभर नरेस वरज्यो बलि जगतसिंह,
 बुन्दीतैं पठाइ दूत दूजीर बेर नातिबल ॥
 सो जब नमानी चढ्यो कूरम तबहि सज्जि,
 द्वे सहस्र २००० भेज्यो इहु जोधपुर भीर देल ॥
 भूपालादिसिंह १ मुख्य पोत्रेस संग भट,
 बनिक प्रधान त्यों गनेसराम २ धीविमल ॥
 दोइ २ तिस तोप संग पलटनि दोइ २ दे रु,
 भेज्यो कपतान नाम भीखन ३ सज सकल ॥ ४६ ॥
 इन तब सूची आइ मानसों पैलायनमें,
 रावरे निदेस बस ४ हम रचिहं गरि ॥
 कीजे आप गोन रजपूतनके देखि कर,
 जैपुर समुख जंग पछिलें हमहिं पारि ॥
 माननृप भारुयो इहाँ व्यर्थ तुमरो मरन,
 जीतिबो १ रखो पै वचिवोर न बने विप जारि ॥
 आहु मम संग यातैं देहु न अनर्थ असु,
 जोधपुर जाइ रचिहैं रन पैर प्रचारि ॥ ४७ ॥
 जोरिकर औसैं तव बुन्दीके भटन जंपी,
 आपको न निदैं मिल्यो सत्रुनसों चक्र ईम ॥
 मुरि हम सज्ज सब भूपहिं दिखौहि मुख,
 कथन तँदीय टारि सम्मर्द विथारि किम ॥
 जातैं आप जोधपुर लरहु सवेग जाइ,

* अपार घमड ॥ ४५ ॥ १ बुन्दी के बहुबाण राजा ने १ सेना २ निर्मल बुद्धिवाला ॥ ४६ ॥ २ भागते समय मानसिंह से कहा ४ वृथा प्राण मत दो ५ शत्रुओं को ललकार कर ॥ ४७ ॥ ६ आपकी सेना शत्रु से मिल गई इस कारण ७ उनका कहना छोड़कर ८ दर्प

जुरि हम ठाढ़े इहाँ इकधौं तटस्थ जिम ॥
 चाहि हमपै जो बढिहैं तो करिहैं ज्यौं चित्त,
 पहुँचहु आप हम आढे आपगा प्रतिम ॥ ४८ ॥
 औसी कहि एक ओर छुन्दीको रखो सु बल,
 सत्रुनको भार टारयो तोपनके वार साजि ॥
 मान महिपाल मढयो जोधपुर जाइ जग,
 भाखयो कछवाहन सैमीक गयो सत्रु भजि ॥
 छुन्दी उत आयो राखि गौरव अधीस बल,
 त्यों गो जगतेस उत गम्य दुर्ग सक्र तजि ॥
 जाल बल^१ तोपन^२ को द्रग गरदाइ जोरयो,
 जगतें न रोक्यो चित्त भोक्खो वित्त इष्ट जैजि ॥ ४९ ॥
 जोधपुर सीम पैठो जगतें जगतसिंह,
 तबतैं चमूके लोक लाये गहि लैभय तिय ॥
 तिनके निकेतके विनम्र लैन आये तब,
 दोइ^३ दोइ^३ पैसे लौ रु पीछी तिन्हें सौंपि दिय ॥
 जोधपुर घेरयो जगतेस मत्त औसैं जाइ,
 केते काल पीछें जीति द्रगहु खतत्र किय ॥
 दुर्ग एक मानके अधीन गहिगो दुर्गम,
 जैसैं सब देहमाहिं आयुके अधीन जिय ॥ ५० ॥
 जंत्रविच इच्छूं जिम बिच्छूं जिम मत्त विच,
 रसना रवन बीच औसे कष्ट भौन रहि ॥

^१ एक तरफ ^२ नदी के समान हम आढे हैं ॥ ४८ ॥ समय सहित हाकर खाने योग्य
 (जोधपुर) गढ़ पर इष्ट की पूजा करके घन लगाया ॥ ४९ ॥ जो मिछी घन स्त्रियों
 को पकड़ लाये ७ उन स्त्रियों के घरवाले अधिक नम्र होकर ८ नगर को भी
 अपने अधीन कर लिया ॥ ५० ॥ जैसे ६ घाँसी (चरखी) में गन्ना (साठा) १०
 या दाता के पीस में जीभ ११ मानसिंह रहा

देस^१ जुत दंगर^२ माँहिं अरि^३को अमल देखि,
 कुहक^४ सवाईसिंह पास भेजी एह कहि ॥
 अर्द्ध^५ देस लेख जुत नागपुर लेहु आप,
 बैठारहु धौकल^६ वहां मोसों तुल्य^७ भाव बहि ॥
 इज्जत हमारी बिगरावहु कपों सत्रु आनि,
 मेहमें सभुझिलेहु नेहमें सु लेह गहि ॥ ५१ ॥
 मानको बिनय लेख सोहु न बिनय मान्दो,
 चंपाउत^८ मीन^९ बैन^{१०} स्रोत^{११} प्रतिक्ल चढि ॥
 दिन बिपरीत यातैं दुष्टहि सुगम दीर्यों,
 मान गहिलैबो^{१२} गढलैबो^{१३} धर्मस्तान मढि ॥
 पच्छी कहि भेजी यों सवाईसिंह मान प्रति,
 करहु न देर जोधपुरतैं वं जाहुकहि ॥
 सीसपै अधीस धारि धौकल करहु सेवा,
 पावहु उचित पटा प्रभुके अधीन पढि ॥ ५२ ॥

॥ दोहा ॥

कहिपठई पच्छी कुहक, चंपाउत इस चैंकिं ॥
 कोल संपथ नागोरकी, फरद लिखी वह फैकिं ॥ ५३ ॥
 इस परिगो संकट असह, महिप जोधपुर मान ॥

लुटयो सुलक सब सीमलग, न मिटयो द्रोह निर्दोन ॥ ५४ ॥

१ पुर मे २ इन्द्रजाली ३ आवे देश सहित नागौर लिखावट सहित ले ले
 ४ सुझले बराबर पन लेकर अर्थात् धौकलासिंह को मेरे बराबर कर द
 ५ लिखावट (लेख) ॥ ५१ ॥ मानसिंह की इस विशेष नम्रता को देख अर्न
 तिवाले सवाईसिंह ने नहीं मानी सवाईसिंह रूपी मच्छ, वचनों रूपी उपवा
 में उलटा चढा द मानसिंह का पकड़ लेना ६ युद्ध करके १० अथवा ११ धौकलासिं
 की ॥ ५२ ॥ १२, क्रोध करके १३ सौजन्य ॥ ५३ ॥ १४ द्रोह का कारण ॥ ५४

इतिश्रीवशभाकरे महाचम्पूके उत्तरायणोऽष्टमराशौविष्णुसिंह
चरित्रे काबुलाधीशसाहाय्यसिक्खरराजतिसिंहलवपुरग्रहणपोधपु-
राधीराभीमसिंहजयपुरपतिप्रतापसिंहपरपरविवाहसबन्धकरणा १
समाप्तजाजपुरादिमेदपाटप्रान्तकोटासचिवभल्लजालमसिंहकोटाप्र-
तापवर्द्धन २ विजितपेशनावुन्देखखण्डपराजितसिंधियाहुलकरगृही-
तोद्धीशान्तर्वेदजनपदस्त्रायतीकृतदिल्लियागरापत्तनराहलमार्थनियती
कृतवार्पिकवसुलार्हविल्लजल्पासमुद्रनराज्यस्यापन ३ जयपुरपति
प्रतापसिंहमरणाजगत्सिंहतत्पट्टासादनपोधपुराधशिर्भमसिंहदेवपात
जालपुरसेनासमावेष्टितमानसिंहपोधपुरपट्टपापणा ४ परिद्धतबुन्दी
राज्यवानप्रस्थश्रीजित्सुरम्यसमासादनबुन्दीपतिविष्णुसिंहपाणिप्र-
हणकगोलीनृपमाणिक्यपालपरासुताकालहरिपालगदिकोपविशन
५ दिल्लीन्दान्धराहालमप्रेतत्वपुत्राकवर्गपट्टसमासादन६ उदयपुराधी

श्रीवशभाकर महाचम्पू के उत्तरायणके अष्टमराशिम, विष्णुसिंह के चरित्र
में, कापल के अमीर के यहाँसे छाओर लेकर सिक्खरराजतिसिंह का पहना
और जोधपुर के राजा भीमसिंह १ जयपुर के राजा प्रतापसिंह का परस्पर
विवाह करना १ कोटा के सचिव भाला जालमसिंह का मेवाड़ का जाजपुर
आदि प्रान्त लेकर कोटा का प्रताप पहनाना २ लार्ह विल्लजली का पेशवा से बु-
न्देखखण्ड लेकर सिंधिया और हुलकर को पराजय देकर अन्तरवेद, ओढीसा
देश लेकर आगरा और दिल्ली पिजय करना और शाह आलम को पिनसन
देकर पूर्व समुद्र से दिल्ली तक अपना राज्य जमाना ३ जयपुर के राजा प्रता-
पसिंह का देहान्त होकर जगतसिंह का पाट बैठना और जोधपुर के राजा
भीमसिंह का देहान्त होकर छाओर में सेना से घिरे हुए मानसिंहका जोधपु-
र के पाट बैठना ४ बुन्दी का राज छोड़कर यानप्रस्थ आश्रम में रहनेवाले
श्रीजित् (उम्मेदसिंह) का देहान्त होना और बुन्दी के राजा विष्णुसिंह का
विवाह करना, ५ करोली के राजा माणिक्यपाल का देहान्त होकर हरिपाल
का गद्दी बैठना ६ दिल्ली के अन्व यादशाह शाह आलम का मरना और
उसके पुत्र अकबर का पाट बैठना ७ उदयपुर के महाराजा भीमसिंह की पुत्री
को विवाहने के हठसे जोधपुर के राजा मानसिंह और जयपुर के राजा जगत-
सिंह का सेना सजकर गीरोली नामक ग्राम में युद्ध क्षेत्र में मिलना ७ मार-

शभीमसिंहसुताकरग्रहणहेतुसज्जसैन्ययोधपुराधीशमानसिंहजयपुर
पतिजगत्सिंहगिंघोलीग्रामरखाङ्गखलमायोजन ७ पोकरखाठकुर
सवाईसिंहैकमत्यमरुसामन्तजयपुरसैन्यमिलनरखाङ्गखप्रत्यावृत्तमा
नसिंहयोधपुरागमनकृत्रिमदायादधोंकलसिंहार्थप्रतिज्ञातमरुधराधि
पत्यजगत्सिंहयोधपुरसमावेष्टन ८ कृच्छ्राक्रान्तमानसिंहकृत्रिमदाया
दधोंकलसिंहार्थनेममरुराजपसहितनागपुरदानस्वीकरणपोकरखाठ
कुरतदनङ्गीकरणं नवमो मयूखः ॥ ९ ॥ आदितः ॥ ३५९ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

पाइ कष्ट असो प्रचुर, भूरि परत सिर भार ॥

मान जबहि चिन्त्यो मरन, कलि करि खोलि किंवार ॥१॥

॥ पादाकुलकम् ॥

सचिव दोइ२ तँहँ कैरा संगत, हुने कैद पहिलैं सन मन हत ॥

इंदराज सिंघी१ अधिकारिय, मनत द्वितीय२ गंग भंडारिय ॥ २ ॥

इन दिय अरज मानप्रति असैं, प्रभु हम जो जैपुर भुवँ पैसैं ॥

तो मुरि गेह भजैं जगतेसहु, इक्खहु पति रति मतिगति एसहु३

इम सुनि मान अक्खि पठई डम, कलित तुम बिस्वास बनेँ किम

वाड़ के हमरावों का, पोकरण के ठाकुर सवाईसिंह के छल से जयपुर की
सेना में मिलजाने के कारण राजा मानसिंहका वहाँ से भागकर जोधपुर जाना
और मारवाड़ के झूठे दावीदार धूकलसिंह को जोधपुर की गद्दी पर बिठाने
की प्रतिज्ञा से जगतसिंह का जोधपुर को घेरना ८ राजा मानसिंह का घराना
कर नागौर के साथ मारवाड़ का आधा राज्य धूकलसिंह को देना स्वीकार
करना और पोकरण के ठाकुर सवाईसिंह का इस बातको अस्वीकार करने के
वर्णन का नवमा ९ मयूख समाप्त हुआ ॥९॥ और आदि से तीन सौ उनसठ
३५९मयूख हुए ॥

१ युद्ध करके ॥ १ ॥ २ जेलखाने में ॥ २ ॥ ३ जयपुर की सूझि में घुसँ तो
४स्वामी में बुद्धि पूर्वक प्रीति देखो ॥३॥ ५ तुम कैरी हो जिनका विश्वास कैसे

भूचिय तिन हमठा हमरे सुत, दुधर करि कैद हमें भेजहु द्रुत ॥

॥ वैतालियम् ॥

इम गग१ रु इंदराज२की, अरजीतैं तिनके तैनै उभै२ ॥

कारा धरि लाजें काजकी, दे कठि गठैतें उतारि दे ॥ ५ ॥

॥ घनाक्षरी ॥

सिंघीइंदराज१ अरु गगराम२ ए सचिव,

कैरातैं निकासि तिनकी ठाँ पुत्र कैदकरि ॥

दुर्गते उतारे मान भूपन कथित द्वेष्टी,

धारि विसवास आस भेजे भुजभार धरि ॥

आइ तिन अधर मिलायो छलि चपाउत,

भाजे गिनि कैदी मंत धीजिगो प्रमोद भरि ॥

बाजिं दुधर तारूँ लौ रु आरुहि स्वबुद्धि बल,

दगते कटे द्वै२ तिन सजुन समुद्र तरि ॥ ६ ॥

सग नृप मानकै रह्यो जो कह्यो सिवनाथ,

मेरतिया सोपै बहु गुनन बिदेग्ध मति ॥

अधिप पठायो छिदमें कठि निलेंप आयो,

गाढे चित्त सो इन मिलायो बुद्ध मत्र गति ॥

अल्प जीविकाके भट अखिल बुलाइ बल,

सहस्रन जोरिसग अधिकहु राखि अति ॥

छत्रै सिवनाथ१ इंदराज२ लौ उपाप छमें,

पेठे निस मग्ग अग्ग जैपुरके देसप्रति ॥ ७ ॥

कियाजावे १ हमारी जगह ॥ ४ ॥ २ इन के दोनो पुत्रों को कैद करके ३ इस काम की लज्जा सुमको है ऐसे अशामन देकर ॥ ५ ॥ ४ कैद से निकाल कर ५ नीचे आकर ६ इनको कैद से भगे हुए जानकर वह मल सवाई सिंह उससे दो बोधे लेकर ८ धन पर सवार होकर ॥ ९ ॥ ९ अतुर १० अपने घर (कुशामन) ११ छोटी जीविकावाले हमराबों अपवा बीरों को १२ समर्थ ॥ ७ ॥

सोधि भय पीछेंको प्रमत्तहु जगतसिंह,
 मंत्रिनके भाखें गति दैवकी दुगम मानि ॥
 भेज्यो सिवलाल फोजबखसी स्वकीय भुव,
 जैपुर^१रु देस^२ जान करन समर्थ जानि ॥
 फागीपुर हो जो तब लौकैं रही खिल फोज,
 ऐसे खिन सोपै मत्त तीज^३पै उमंग आनि ॥
 अल्प भट संगी आप जैपुर सदन आयो,
 कटक असेस सेस वहाँही राखि भय कानि ॥ ८ ॥
 बीर सिवनाथ^१ इंदराज^२ त्यों पिहित बट्ट,
 कितहु नहेरि रति फागी एक मग्ध कहि ॥
 पहुँचि निसीथ जयनैर दल सीस पर,
 मारि^१ बहु त्यों बहु बिदारि^२ कीनी सोन महि ॥
 सेस असु लौलै ताजि भाजे उपहारं सब,
 लूटे इन सोधि सोधि काहूकी न संक लहि ॥
 वहे अब बिदित घोरि जैपुरकों लैन हंके,
 गैल इक^१ काँकिनीमें नारिनकां देत गहि ॥ ९ ॥
 जैसे गरदायो दंग जैपुर बलिन आइ,
 तूटिपरयो सर्व हुंढाहरपै अतुल त्रास ॥
 मचिगो पलायन जितैं तित जि जिन मानि ॥
 आलस्य रहैंतैं रही काहूको न असु आस ॥

१ भाग्य की दुर्गति रक्षा करने को शिवाजी की सेना ४ जयपुर से छपने घर गया ॥ ८ ॥ १ छिपे छुप मार्ग से दरानि में जाने योग्य फागी नगर को कहकर ७ आधी रात को ८ भूमि को लाल कर दी ९ बाकी के प्राण ले ले कर १० सामान छोड़ भागे ११ मार्ग में जयपुर के देश की लियों को पकड़ कर छदाम (पैसे के चतुर्थी भाग) में उनके घरवालों को पीछी देने लगे ॥ ९ ॥ ११ भागना १३ रहने से अपना जीना नहीं मानकर तथा जिघर मन हुआ उधर भागे १४ घर पर रहने से

स्वामी इत सगमैं हजारन सिपाहनको,
 मासिक चढत सुनै देतदेत प्रति मास ॥
 मन प्रतिकूल मीरखानसे बहुत मुरे,
 हठि हैक लैन जगतेसको विरचि दास ॥ १० ॥
 सुरभिं१ निदाघ२ वरखा३ ऋतु खरच सहि,
 भूप जगतेस नीठि निर्बखो सो दल भार ॥
 चढत कितेक मास मूढ अकुलायो चित्त,
 जानी इत जैपुरको भोगिहै दुसह जार ॥
 मत्त मुरि आइबेको मत्र जग गूढ मान्यो,
 गोगाउत सभूके खवासिके सुत विगार ॥
 ठानि चपाउतसौ कहाई खुसहाल ठाम,
 दम्म खटलकख६००००० की भई सो देहु सरदार ॥ ११ ॥
 एक दुर्ग छोरि सबठा भो तुमरो अमल,
 दम्म उक्त६००००० देय यातैं चिंति स्वबचन देहु ॥
 दुर्ग दै तुम्हैं रु लोहैं सेस जे त्रिलकख३००००० दम्म,
 यौ न करिहोतो लोहैं गहिकैं विदित एहु ॥
 औसे कहिवेपैं दुष्ट चपाउत टेक आनि,
 गर्वसौ कहाई जाहु बापुरे व्है निजगेहु ॥
 बधिकैं हमैं जो लोहो जानिहैं तवहि बली,
 नारिनके भाग न तो लाजे भौन मग लेहु ॥ १२ ॥
 औसी कहि साहसी सवाईसिंह चपाउत,
 जैपुरके चक्रसौ रहयो टरि सटेक जब ॥

किसीको प्राण की आशा नहीं रही १ मनखा छेने को ॥ १० ॥ २ सन्त, ग्रीष्म
 १ सेना का भार कठिमाई से मियाहा ४ सवाईसिंह से ॥ ११ ॥ ५ कहेहुए रुपये
 ६ वेने योग्य है इस कारण ७ ये तीन खाल भी ८ खजाना पायेहुए स्त्रियों के
 माग्य से घर का मार्ग जो ॥ १२ ॥ ९ सेना से

सूची जगतेससौं यों जोधपुर दुर्ग रवामी,
 धौंकलकों ठानि धन उक्त काल लेहु अथ ॥
 नाँतो इम रीते बहिकाइबेमें सार नहि,
 कोलमें यहहि मुख्य सेस करिहो सु कव ॥
 लूटी मारवारि नाँतो आप बहु बित्त लीनों,
 सोही गिनि कोलमें पधारहु लै स्वीय सब ॥ १३ ॥
 उक्त करिहो न तो उदैपुर बिबाह आप,
 कैसेँ करिलौहो हमरे छत बर कहाइ ॥
 तंत्र मेरे अबहि प्रचारों मरुदेस तोतो,
 ज्यों बनी जयातैं त्यों बनाइहो घरन जाइ ॥
 जंपि अैसेँ चंपाउत देसके रँवबस जोरि,
 सुरयो करि डेरा भिन्न कूरम मन नमाइ ॥
 ओरहु जे संगी मीरखान^१ से बलिष्ठ अैसेँ,
 लागे जगतेस देस लूटन उलटि आइ ॥ १४ ॥
 अैसेँ जे इलेसँ बीकानैरके सुरत^२ आदि,
 जैपुर घटत जानि गर्दभकी गाज गति ॥
 के घर गये^३ तिम रहे सुरि तटस्थ व्है^४ के,
 मानी जगतेस अब मानी बल हानि मति ॥
 चंपाउत बँचकको संभवी कथन चिंति,
 प्रेयो मंडामात्रनको गै ज्यों कछवाह पति ॥

१ अपने सब लोकों को लेकर ॥ १३ ॥ २ मेड़ता के घेरे में (जया को छलघात से मरवा डाला था) जया नामक सिन्धिया से बनी सोही ३ मारवाड़ के लोकों को अपने वश में करके ॥ १४ ॥ ४ राजा ५ सुरतसिंह आदि ६ जयपुरवालों को गधे के चीखने के समान घटते हुए जानकर “गधा भौंकता है तब तो बड़े जोर से चीखता है और फिर उसकी आवाज धीरे धीरे घटती जाती है” ७ घमंडी जगतसिंह ने द ठग सवाईसिंह का होनेवाला कहना याद करके (छलघात से मरवा डालने को सत्य मानकर) ८ जैसे महावत का फेराहुआ हाथी फिरे तैसे

रायचंद बनिक पुरोगेन निहोरें नीठि,
मान्यो घर जैवो मूढ अवेमो सज्ज अति ॥ १५ ॥
अैसे पटु वीर सिवनाथ १ इदराज २ इत,
देकै त्रास जैपुरपैं लूटयो आढ्य अरि देस ॥
योही मीरखानसे अमानन मुरारि आइ,
लागि लूटयो बहुन न राखिजान्यो कहूँ लेस ॥
चिति भुव जैवो यो अचानक प्रमत्त चढि,
पैठो भजि गेह लजि निंदा उप सहि पेस ॥
आयो ज्योही नाकदै कवचनको चपाउत १,
त्योही कछवाहनको नाक दैगो जगतेसर ॥ १६ ॥
जोधपुर १ जैपुर २ को उरमो अधिक आनी,
भीमरान भूपति उदैपुरको भीरु इत ॥
भीरुनके भाखें डर आनि उक्त भूपनको,
मागिहारी कन्या वह पापी गैरदै अमित ॥
साक गुन तर्क नाग भू १८६३ मित सरद ४ समै,
जैपुर अधीस भजि गो यो गेह विष्ट जित ॥
तदपि सवाई मरुदेसमें अमल तानि,

कछवाहों का पति स्त्री हाथी सन्धिषों (प्रधानों) का केराहुआ पीछा किरा
"महामात्र नाम, प्रधान और महाबत दोनों का है" १ आदि ॥ १५ ॥ २
प्राप्त के धनवान् देश को ॥ ११ ॥ ३ कायों के कहने से ४ जोधपुर और
जयपुर दोनों राजाओं का भय मानकर ५ (६) बहुत विष देकर उस कन्या को
मारवाली ६ समय का तथा भाग्य का जीता हुआ ७ तो भी सवाईसिंह
८ अधिकार फैलाकर

(६) महाराणा भीमसिंह की वाइ दृष्टिकुमारिको मीरखा ने उदयपुर में बाकर बडे हठ से जहर दिख
वाया यह कहणामय दृश्य मेवाड़ व शमहास धीरविनोद में इदयनिदाग्य लिखाहुआ है सो वहा देखो
महाराणा ने उस कन्याको नहीं मारी थी परंतु मीरखा के भय से उसको चोक नहीं सके सो क्या छवी
होने के कारण वहा नहीं लिखसकते

स्वामी करिराख्यो सोहि धौंकल चमू सहित ॥ १७ ॥
 रच्छकन संग द्रंग नागोरहि ताकौं राखि,
 देसमें दुहाई फेरि वा सिसुकी आप द्रुत ॥
 लूटत जो सुलक इतैं उत अटन लागो,
 साल्यो मानके उर बलेस सबलेस सुत ॥
 लक्ष्म बसु१ हस्ती२ हय३ करभ४ गवा५दि लूटे,
 जोरवै बिसेस कर६ देसके असेस जुत ॥
 डारि डारि डाका मारवारिसु निचोरी डारि,
 दीपक जरन दीनों आपके अधीन उत ॥ १८ ॥
 उक्त सक बन्हि तर्क नाग भू १८६३ प्रमित इतैं,
 बुंदीप्रभु विष्णुसिंह२००।२ छट्ठी६ करयो निज व्याह ॥ १९ ॥
 रानाउत सीसोदे अमानकी सुता रुचिर,
 सो खुमानकुमारि२००।६ नाम बरी तस सराह ॥
 आयो निज बुंदीनैर डोला दुलहीको यह,
 पायो तिम दुलह महापट्ट नरननाह ॥
 सूचित तपस्य१२ स्याम२ छट्ठी६ निस लग्न साध्यो,
 बारही पंच कीनों व्याह सप्तम७ लै कविवाह ॥ १९ ॥
 भावत सनाम बंस सीसोदे उचित भाखि,
 नाम नंदकुमारि२००।७ तनूजा अपनी निपुन ॥
 भूपहिं विवाही इहाँ नैनपुर डोला भेजि,
 गर्दित तपस्य१२ काल२ एकादशी११ काल गुन ॥

॥ १७ ॥ १ फिरने लगा २ बलवान् सफलसिंह का पुत्र ३ जो मिलगये
 सो ४ जो जो घर अपने अधिकार में थे तिन तिन में दीपक जलने दिया
 ॥ १८ ॥ ५ खूबना कियेहुए फाल्गुन बदि ६ उसी पक्ष में ॥ १९ ॥ ७ पुत्री द
 कहेहुए फाल्गुन बदि में एकादशी के समय

ऐसे विधि रानी यह सप्तमी७ अधिप आनी,
 साजि इत चपाउत बाहिनी जथा सकुन ॥
 इच्छु खड जततै कढे जिम विरस अग,
 ऐसे मारवारि कीनी——नोहि जतन उन ॥ २० ॥
 पूरे कष्ट व्याकुल मदीप मान जोधपुर,
 देस अर्द्ध-देवेकी दढाई पुनि नम्रपन ॥
 सोपे नहिमानी काल केवल सवाईसिंह,
 धृष्ट कहिभेजी बहेहै धौकलही भूमिधन ॥
 लेख निज देकै तब धर्मके सपथ लैकै,
 मित्र गूढ कीनों मीरखानको मिलाइ मन ॥
 ताहि अर्द्ध-आसन धिभागी कहि मान्यो तुल्य,
 सूची मान चपाउत मारिलेहु छत्र सन ॥ २१ ॥
 द्रव्य बहु देनोकरि इष्ट विच साखी दे रु,
 मिच्छ इम धेरयो चपाउतको इनन मान ॥
 कैंपो इमहि धीजे सावधानीमें कितव काक,
 खोजहु निमित्त याँ पठाई कहि मीरखान ॥
 सूची इम मान जोधपुरके बजार सह,
 देस मम लूटहु बिसासमें गिनि निदान ॥
 नारी कहि गागि दै हमारी पै करहु निंदा,
 ऐसे फद सो खल परैगो आयु अवसान ॥ २२ ॥
 स्वीय सजि सेना मीरखान तब कीनी सोहि,
 लूटी मारवारि पैठि खधावारै नैर लग ॥

१ चरली से गधे का दुकड़ा पिना रसवाला निकले तेसे ॥२०॥ २ काल क आस ३
 धौकलसिंह ही राजा होयेगा ४ छिपाहुआ भिन्न किया ५ आधी रात्री पर बैठने
 याधा लिखकरमानसिंह ने कहछायाछछ से ॥२१॥ ६ इमको कैसे धीजेगा ६ कारख
 हेरो १० मानसिंह ने खपना की ११ आयुके अन्त में ॥२२॥ १२ राजधानी के नगर तक

दैदै गारि निंद्यो नृप मानकों तिमहिं दुष्ट,
 जान्यो सत्य इनके विरोध बढ्यो सब जग ॥
 चंपाउत धीज्यो एह प्रथित प्रमान चिंति,
 पत्रन विसास पारयो पहिलें मिलाप मग ॥
 सोपै खान नागोरहि आइ इनके सिंविर,
 मिलिगो प्रथम मिच्छ आडोदै विसास अंग ॥ २३ ॥
 पोखरिन नाह हित राह गो मिलन पीछे,
 जवन मुकाम ग्राम भूडवा सनाम जब ॥
 केते इहाँ तुरक कुरान बिच दीनी कहैं,
 तारकीन पीर वहाँ हो ताके करे सौह तब ॥
 केते कहैं सौहैं तिन मानें पै न सौहैं करे,
 असैं मिलिगो सो आये तास डेरा तेहु अब ॥
 मंत्रके निमित्त एक तंबू तिन्ह मारनकों,
 पृथक तनाड राख्यो मिच्छनैं चहे पँरब ॥ २४ ॥
 तंबूमैं बिछायो सौर सैन्यन विछोनैं तर,
 ररमें काटिडारनकों बाहिर सुभट राखि ॥
 तापैं इक ओर बहु तोपनकों राखी तीरि ३,
 सैन निज सूचन भगोसेपै दगन भाखि ॥
 बिरचि प्रबंध यों दगाको आप नम्र बनि,
 आयो तिन्ह आत सुनि साम्हैं घात अभिलाखि ॥
 आवन लगे ए तहाँ भेरतिया चंदाउत,

१ प्रसिद्ध प्रमाण जानकर २ सवाईसिंह के डेरे पर ३ विश्वास का
 पर्वत आडा देकर अर्थात् बहुत विश्वास देकर ॥ २३ ॥ ४ यवन मीरखां
 का बीच में कुरान देना कहते हैं ५ पीर का नाम है ६ चंपाउत सवाईसिंह
 ने तो मीरखां के सौगन करने मान लिये परन्तु मीरखां ने सौगन नहीं किये
 ७ समय ॥ २४ ॥ ८ भरकर ९ अपने इसारे की सूचना पर चलाना कहकर

इनतैं बढादुर१ टरयो इक सकुन साखिं ॥ २५ ॥
 बैठारे कुबुद्धि इम सादर सबन आनि,
 तबू उक्त अतर तथा जन निजहु तैरि ॥
 मत्रके निमित्त राखे इनके कथित मुख्य,
 सग दुव तीननसों आप रहयो छल सारि ॥
 व्याज करि पीछैं मिच्छ हैरजुत निकसि बच्यो,
 एक१ बधु रहिगो सक्यो न सु तिहिं उवारि ॥
 बाहिर कढत सोर सैनसों पटकि बन्दि,
 मानके अमित्र भूँजि हारे ज्यों चैनक भारि ॥ २६ ॥
 सोरके उडत१ गुन तबूके कटत२ सग,
 तोपइन गुवार२नके बार होत भिन्न तर ॥
 रठउर कुंपाउत बखसी प्रमुख राम१,
 नाम जाको सो बहौ कढयो तबू चीरि वीर नर ॥
 पैड दे समुख पारि अहित अनेक परयो,
 चढावल नाह चहे मूरनमैं अघसर ॥
 छेदके नरेसकै न होतो सग तोतो छेम,
 भेदिजातो सोतो रविमडल लै पुण्य भर ॥ २७ ॥
 सावनपूतै लगत कितीठाँ व्यवहार सैक,
 औसैं मिति भेद होत सो मत न है उचित ॥
 तदपि कितेक गुन तर्क६३ मान मानैं तथ्य,
 मानैं किते सबतको अग्र बेद तर्क६४ मित ॥

१ शकुनों की साची से ॥ २५ ॥ २ अपने लोको को ताड़ि (निकाल) कर ३ मानसिंह
 के शत्रुओं को ४ भाग में चणों के समान प्रज डाले ॥ २६ ॥ ५ रहते १ अ-
 स्थित कटगये ७ मलसीराम ८ अनेक शत्रुओं को मिराकर ९ छली राजा
 (बोकलसिंह) के साथ नहीं होता तो १० यह समर्थ ॥ २७ ॥ ११ व्यवहार का
 सम्बन्ध १२ थोड़ा फरक

इनके सिविर जाइ नागपुर लूटि आयो,
 औसँ मीरखान हनि मानके सबे अहित ॥
 जोधपुर भेजे काटि सीस तिनके जवन,
 खाननको डारि दैन सूची इन्हें मान इत ॥ २८ ॥
 चंपाउत बीर बखतावर बिहित चाहि,
 स्वामीको मनाइ दाहे मंडोउर भोजि सिर ॥
 मीरखान मित्र आइ मानसों सहित मिल्यो,
 चाहि समभाव बैठे एकासन भोन चिर ॥
 धाकल पल्लोइगो बच्यो जित जियन धारि,
 जाजगढ पीछे टिक्यो भीरु रनके अजिर ॥
 मारी भीमरान वह कन्या सो करी कुमति,
 याहीतैं उदैपुर कहायो अकितेसँ किर ॥ २९ ॥
 बेद रस नाग भूमि १८६४ साक इत नैर बुंदीर,
 अधिराज कीनो—अष्टम८ बिबाह बलि ॥
 मार्गशिर९ मेचक२ द्वितीया२ गुरु लग्न मेल,
 कल्याणगढ जाइ साध्यो संभर अभीत कलि ॥
 कल्यानकी भगिनी प्रताप नृपकी जो कन्या,
 सो अमानकुमारि२००१८ स नाम छवि मोद छलि ॥
 चरमं बिबाह विष्णुसिंह२००१२ नरनाह चारु,
 दुलही बिबाही दानी दारिद कविन बलि ॥ ३० ॥
 भो जिम समौल्य देस हाडोती उदित भाग१,

१ डेरे नागौर जाकर लूट लिये २ राजा मानसिंह के शत्रुओं को ॥ २८ ॥
 ३ उचित जानकर ४ हित सहित ५ धौलसिंह भगगया ६ कायरी के चोक
 में ७ अकितों (कायरी) का पति दक्षिण (निश्चय) ॥ २९ ॥ ८ कल्याणसिंह की
 बहिन १० अन्तिम बिबाह ॥ ३० ॥ ११ शोभायुक्त धनवान्

कविनके पूरन भये जिम अखिल काम२ ॥
 बिपनके गेह जिम रंरनाकर नाना बने३,
 जोधनके रूपात जिम निकसे नियत नाम४ ॥
 धर्म१ नीति२ सफल भये५ जिम धरनि धन्य,
 तत्वबोध१ भक्ति२हु भये जग प्रकट ६तामं ॥
 आँदरमै वेद भो७ सपुत्र होत जाके इम,
 रावरी सँवित्री एह आइ गेह प्रमुराम२०१४ ॥ ३१ ॥
 व्याहे जिहिं लग्न भूप रावरे पिता१ विदित,
 कविके पिता२ हु तिम व्याहे तिहिं लग्न काल ॥
 यातैं न पधारिसके हरिना स्वकवि भौन,
 साधी तउ रीति सो पधारिबे ज्यों छितिपाल ॥
 उक्त रनजीत जट लाहोराधिराज इत,
 भो बलिष्ठ दुरसह बढयो बलि सुविधि भाल ॥
 कीनों कपनीसों तानें उक्त १८६४ सकहीमें कोल,
 वार सतलजके न आवनको सहि साल ॥ ३२ ॥
 कपनीने ताहि समुक्तावन वकील क्रम,
 चारलिसासिकफ१ स नाम भेज्यो प्रीति चाहि ॥
 ताके समुक्ताइबे मै जट सु न आयो तब,
 दग लुधियाना लगे भेजी फोज दर्प दहि ॥
 आकटरलोनी करनेल फोजदार उद्दौ,
 शरिको उपक्रम दिखायो घरजोर रहि ॥
 जीतिवो न जान्यो सर्वथाही रनजीत जब,

१ रत्नों की खान अथवा समुद्र २ चौरों के निक्षेप ही नाम प्रसिद्ध
 हुए ३ तर्हा ४ वेद का आधार हुआ ५ आप (रामसिंह) की माता ॥ ३१ ॥ ६
 इस ग्रन्थकर्ता सूर्यमल्ल के पिता ७ अपने कवि के घर हरणा नामक ग्राम में
 ८ लाहोर का पति ॥ ३२ ॥ ९ उपाय पूर्वक आरम्भ

उक्त सीम कोल लिखिदीनों व्है करंड अहि ॥ ३३ ॥
 सो यातैं सतद्रु स्रोत वार न प्रसारि सक्यो,
 छोटे१ बडे२ छितिप वचे यौ इतके बहुत ॥
 ते न रहते जो अंगरेजके अमल तंत्र,
 जट सबकी भू तो छुराइलेतो जोर जुत ॥
 पै यौ रहे कंपनीको दुर्लभ सरन पाइ,
 आन रही ताकी स्रोत सूचितके पार उत ॥
 खग बल तोहू इनके उर रह्यो खटकि,
 सेनाके समत्व सूर सोहू महासिंह सुत ॥ ३४ ॥
 साक सर अंग अष्ट अवनि १८६५ अनेइ इत,
 काबल वजीर दोस्तमुहम्मद नाम करि ॥
 खल व्है हरामखोर खामी दूर कीनों साह,
 आप बनिबैठो साह साहको कहाइ औरि ॥
 अहमदसाह दुररानी जो कथित उहाँ,
 नादरकों मारि नाह भो जो अति१ दर्प भरि ॥
 जीतिलीनी दिल्ली१ करि मथुरा२कतल जानैं,
 प्राचीलग लूटयो देस अर्जुनको बाद परि ॥ ३५ ॥
 रुहेला नजीबुद्दोला१ दिल्लीको वजीर राखि,
 सानुकूल राखे लखनेऊ ईस२ आदि सब ॥
 अहमदशाह४७११ जो कलीज करयो पीछे अंध,
 जवनन ईस दिल्ली साह राख्यो सोहि जब ॥
 काबल गयो जो तहाँ तबतैं तदीयं कुल,

१ टिपारे में बन्ध कियेहुए सर्प के समान होकर ॥ ३३ ॥ २ राजा ३ अंगरेजों के
 आधीन ४ अटक नदी के पार ५ बराबरवाला ॥ ३४ ॥ ६ समय ७ बादशाह
 का शत्रु कहाकर ८ आयों का ॥ ३५ ॥ ९ कलीजखाँ ने १० उसका कुल

अधिप रणो सो मद्य१ प्रेमदार प्रमाद अव ॥
 कालिको सासक सुजाउलमुल्क१नाम१काढ्यो,
 ताके महमूद२ नाम सोदर समेत तव ॥ ३६ ॥
 अैसेँ उपटके जाको वारकजई सो एह,
 धारत भो छत्र दोस्तमुहम्मद१ नामधेय ॥
 तनय मुहमदोदि अकबर२ नाम तानै,
 आपुनो वजीर राख्यो धी१ बल२ गिनि अमेय ॥
 भावी बस बत बह काबल अधिप भाजि,
 लवपुर आपो जानि जट्टको सरन लेय ॥
 हीरा कोहनूर छीनिजीनों सिख यातैं इत,
 दाम पुछियेपै कह्यो मोल जूती इक देय ॥ ३७ ॥
 हीरा यह पायो हुतो साहजिर्दा३९१दिल्ली साह,
 जोहु लेगो नादिर मुहम्मद६४सौ वरजोर ॥
 नादरको मारि भो जो अहमदसाह नाह,
 ताके रह्यो तबतैं इहाँलौ भो न प्रभु ओर ॥
 अहमदनाम दुररानीको पिनाती एह,
 लेतभो सरन आइ जट्टको पुरी लाहोर ॥
 तासाँ लेत हीरक पदार्थ भाख्यो अर्घ तानै,
 दै सु पैवि पीछे लयो कपनी सरन दोर ॥ ३८ ॥
 एक कछु भावी वर्तमानमें वजीर अैसेँ,
 सूचे१८६५ सकमाईहि बन्पों काबल तखत साह ॥
 रुसिनसौ१ जानैं मेला पावत सहाय राख्यो,

१ स्त्रियों के प्रमादघाला ॥ ३६ ॥ २ लितायशेनाम ३ मुहम्मद अकबर ४ बुझि में और
 पलने अमाप जानकर ५ लाहोर आया ॥ ३७ ॥ ७ यहाँ तक इस हीरे का पचनों
 के सिवाय अन्य स्वामी नहीं हुआ ८ जूती ९ उस हीरे की कीमत में १०
 रणजीतसिंह को वह हीरा देकर ॥ ३८ ॥

राख्यो रनजीतहुसौं२ मेल बट दैन राह ॥
 अंग रस नाग ससि १८६६ संबत अनेह इत,
 संध्या दोलतादिराव स्वीयलौ सब सिपाह ॥
 कारन कछुक पाइ जैपुर दमनै क्रम्यो,
 लालच लग्यो सो लग्यो दूनी दंग बैसु लाह ॥ ३९ ॥
 जैपुर के निर्दय महा ठिग बिसेस जन,
 उनमें कितेक हुते गौगाउतके अहित ।
 संभूसिंह भूपति प्रतापकै रह्यो सचिव,
 सोपै सुमिराइ अर्थ अतुल दिखाइ इत ॥
 दूनीपुरपै यौ मोरि संध्याकों लराइ दीनों,
 माच्यो ताप तोपनको कल्पके कुंसाबु मित ॥
 जैपुर हो संभूसुत दूनीपति चंद्र जब,
 सद्गद्गो प्रधान सिंघी बीर जो लख्यो विदित ॥ ४० ॥
 रत्नचंद्रनाम जिहिं मासनलौं रारि रचि,
 टूटन दई न दूनी गोलनको सहिताप ॥
 दिनमें गिरैं जो कोट रत्तिमें बनाइ दैदैं,
 थोरे बलतैंहु मारी तोपनके मुख थाप ॥
 अर्थदैं मिलाइ राख्यो संध्याको स्वसुर अंबा,
 बैजांनाम नारी संध्या व्याही तास यह बाप ॥
 फोज याकी इकघाँ चलात रही खाली फैर,
 दुर्गमें रुकी न आत सामग्री इम दुराप ॥ ४१ ॥
 सोपै इन जैपुर पुकारयो चंद संभू सुत,

१ दोलतराय २ जयपुर को दंड दैन गया ३ दूणी नगर के धन का लाभ
 ॥ ३९ ॥ ४ बहुत धन देकर स्मरण कराया ५ प्रलय की अग्नि के समान ६
 घर (दूणी) में ॥ ४० ॥ ७ धन देकर अंबा नामक सिन्धिया के श्वशुर को द
 उस बैजां का यह पिता था ९ दुर्लभ ॥ ४१ ॥

ताको वह कष्ट भेटिवेको भूप जगतेस ॥
 कीनो खुसहालीराम बहुरा पैताने कैद,
 ऐसी ठाँ सदायी जयगढतै उतारयो एस ॥
 आत राजमइल रुकाई तोप१ तानै अहो,
 सिविरँ मुराई सेना२ पैठत तस प्रदेस ॥
 कही लाख मुदाँ लेन माहजिको लेख काढि,
 सूची व्यर्थ१ दह२लें हमारे देहु अब सेस ॥ ४२ ॥
 सत्प अर्थ बहु राखि पटेल पिताके सिर,
 दैनको दिखाये वहाँ जितेक दम्भ लेख देल ॥
 दह१ व्यर्थ२ लेंके जे सक्यो न दे खिलहु दम्भ,
 बैदन विगारि सध्या चढिगो उपेत बल ॥
 जैपुरहु जाइ बहुरा सु कैद भो बहुरि,
 बरजि पिता१ गो सो सो कीनी पुत्र२ धीविकल ॥
 जाइपरयो सध्या द्रग ग्वालिपर सीमा जब,
 चढि न सक्यो सो रक्षो तवतैं तहाँ अचल ॥ ४३ ॥
 जैसेँ रहि ग्वालिपर सध्या सो अवती ईस,
 दावत भो देस इत उतके बलिष्ट अति ॥
 राधिकादिदास काढ्यो सोपुरतैं गोर राजा,
 तरुन पचीस२५ सैम तोहू भुँगध कुठमति ॥
 ताहिदै वरोदा लाख १००००० मुदा मित आय ताको,
 सोपुर समेत सबै दाव्यो देस गढ गति ॥

१ राजा प्रतापसिंह ने २ खेरे में ३ रुपये ४ फौज खरच और दह सो
 लो और हमारे रुपये बानी रहे सो दो ॥ ४२ ॥ ५ घन ६ खिल्लाह्या पत्र ७
 पाकी के रुपये नहीं दे सका तब मुख्य विगाड़ कर ८ सेना सहित ९ विफ-
 ल बुद्धिवाले पुत्र (जगतसिंह) ने पिता (प्रतापसिंह) ममा कर गया था सो सप
 किया ॥ ४३ ॥ १० बल्लेन का पति ११ वर्ष १२ भोटी बुद्धिवाला (मूर्ख)

औसैं बढि राघोगढ१ नरउर२ देस आदि,
 काल कछु भावीमोहिं तानैं लये दाबि कति ॥ ४४ ॥
 भुंडापान मत्त इत जैपुर जगतसिंह,
 नग्नठहै जो नग्न रमनीनैनमें लग्यो रहन ॥
 लैकैं अंक नारि मारि द्वार परदेपैं लात,
 आयो कढि बाहर नसाबस निसा१ अह२न ॥
 द्वारसेवी जनन धकेल्यो पीछो मीचि दग,
 जुवती सतन बीच निस्त्रप करैं जह न ॥ ४५ ॥
 जोधपुर१ बिस्त्रठहै उदैपुर२ सकयो न जाइ,
 पीछो आइ तदपि जैई ज्यौं पाप दर्पपर ॥
 पूरे दठ लाखन उपायमें खरच पारि,
 काम१ कामअंकुस२ बढाय द्वैरहि चित्रंकर ॥
 सतन सुवाइ भोगैं नारिन विविध संग,
 आपुनी१ पराई२ गुरुलौं न गिनीठहै अडर ॥
 जाकौं रतिजंग गनिका रसकपूरि जीति,
 खूब बस कीनों जो खैरी१ ज्यौं चंडवेग खरै२ ॥ ४६ ॥
 याही लंजिकाको कृपापात्र बन्धौं विप्र इक,
 नाम सिवनारायन जो दधीचिके जैनन ॥

१ आगे आनेवाले समय में ॥ ४४ ॥ २ मद्य पीने के स्थान (मतवाल्) में ३ नर
 स्त्रियों में नग्न होकर रहने लगा ४ स्त्री को गोद में लेकर ५ दिन और रात में
 डोहीदार लोकों ने ७ सैकड़ों स्त्रियों में ८ वह निर्लज्ज नांही नहीं करत
 अर्थात् स्त्रियों के देखते हुए रत करता ॥ ४५ ॥ ९ जोधपुर से नकटा होकर
 विवाह करने को उदैपुर नहीं जा सका १० तो भी विजय पाया हुआ हो
 तैसे ११ लिंग १२ आश्चर्य करावेवाले बढ़ाये १३ सैकड़ों स्त्रियों को सुव
 (लेटा) कर अनेक प्रकार से भोगता था १४ जैसे गधी १५ भयंकर वेगवाले गधे व
 बश में करै तैसे रसकपूर नामक गणिका ने उस राजा को बश में किए
 ॥ ४६ ॥ १६ वेश्या का १७ वंश में

वैहासिक जैसे अतरगव्हे मिथुन२ बीच,
 मिश्र यह तैसे बढयो दोउ२नके जोरि मन ॥
 याही गनिकाको भयो भ्राता बीतलज्ज यह,
 पाँनि बधवाइ राखी पायो प्रभु सलपन ॥
 सोही कग्यो मत्री तहाँ भामसों पिसुन सूचि,
 धीसख गहायो रायचद लैवे भाटि धन ॥ ४७ ॥
 उक्त १८६६ सकमै यों रायचदहि कितेक अह,
 कैद राखि पीछे हनिगेर्यो बिनु दाह करि,
 भूपको संकार मिश्र मारनमै हेतु भयो,
 जारनमै हेतु न भयो जो मोघ मतु जरि ॥
 बहुरा१ निकारहु न१ हरदे२ बिडारहु न३,
 मारहु न२ रायचद३ यों कहिगो ताँत मरि ॥
 सोसो करी सबही सपूती जगतेस सुत,
 प्यारी गनिका१ सैइ सकार२ घारे फद परि ॥ ४८ ॥
 कगगर बैसन धारि नारिन सहित करै,
 बोरि फाग कोतुक दिगवैर बनै बहुरि ॥
 कुल जान धारै ताहि बहुरि बिगारे कामी,

१ यिदूपक (छीपुरुष को मिलानेवाला) २ श्री पुरुष के बीच ३ निर्लज्ज ४ वस
 वेरपा से अपने हाथ में राखी घन्घाकर प्रस्वामी (जगतसिंह) का सालापन
 पाया ५ यहिनोई (जगतसिंह) से, वस सुगल ने कहकर ७ घन घेने को वस
 मध्ये ने मन्त्री को पकड़वाया ॥ ४७ ॥ ८ दिन ९ राजा का साला (राजा की
 अविवाहिता 'पासवान' श्री का भाई) यथा "मदमूर्खताभिमानी कुक्कुलतै-
 श्वर्यसयुक्त ॥ सोपमनूदाभ्राता रयाल शाकार ह्स्वुक्त ॥" १० झूठा अपराधि
 लगाकर वस मन्त्री के मारने में कारण हुआ परन्तु वह बिना जलाया पड़ा
 रहा जिसके जलाने में कारण नहीं हुआ ११ पिता (प्रतापसिंह) मरते समय
 कह गया था ११ साले सहित प्यारी गनिका के फन्द में पककर ॥ ४८ ॥ ११
 कागज के घन्घ पहनकर १४ जख की फाग करता और १५ मग्न होकर

मोहैं चित्रबंध सुहि सोहैं लंक बंक मुरि ॥
 दंगकी सैतीन तजिदीनों अवरोध औवो१,
 दूर के पैलाई२ दुख छाई रही केक दुँरि३ ॥
 हीजरे किँसोर बय आदरे सुनत हंतै,
 जानैं कामग्रंध व्है बिधाता सोहु बाद जुरि॥ ४९ ॥
 मिश्र शिवनारायन स्वामीको संकार१ मंत्री,
 काज बिनु लाज सब राजके लग्यो करन॥
 सुभट१ सिपाह२ गन गहन दुमन सबै,
 सचिव३ त्रपा के गहि बैठे जित जो सरन ॥
 काढ्यो बहुरा तब रहस्यमें किते कहत,
 धृष्ट बल सत्य बंथ ताहूकों लग्यो भरन ॥
 भाख्यो मैं प्रसन्न तँहँ भाख्यो द्विज वृद्ध भो मैं,
 पुत्रहिँ पठैहों बै' नवीन निज१ जो पर२ न ॥५०॥
 ओरन बुलाइ बेग विप्र कढिगो रु अँसैं,
 सचिव रहस्य केक भुक्ते१ बच्चे२ सुनत ॥
 जो रसकपूरि गनिकाही तँस दर्प जीति,
 मान१ मैं रु प्रान२मैं अमान प्यारी स्वामि मत ॥

१ टेढ़ी कमर करके चित्रबन्ध आसन से मोहित करै सो ही स्त्री सुहावै
 "कामसूत्र में कहेछुए रतके आसनों में एक चित्रबन्ध आसन है सो स्त्री के
 टेढ़ी कमर करने से होता है" २ नगर की पतिव्रता स्त्रियों ने जनाने में आना
 छोड़दिया ३ कितनी ही स्त्रियां दूर भाग गई ४ कितनी ही छिप रह्यो ५ युवा
 अवस्थावाले हीजड़ों का आदर किया ६ खेदकी बात है ॥ ४९ ॥ ७ अपने
 मालिक का शाला और मंत्री (सलाहकार) ८ लज्जा ९ एकान्त में १० बाध
 [अंक] में भरकर ११ नवीन अवस्थावाला है और यह भी आपका ही है अन्य
 नहीं है ॥ ५० ॥ १२ कितने ही सचिवों का इस एकान्त को भुगतना और
 कितनों ही का बचना सुनते हैं १३ उस राजा जगतसिंह के घमंड को जीतकर
 १४ बल में अतोला

साध्यो वाजीकरन अकाल मरिवेकों सठ,
 ताते प्रतिमल्ल मोहि *हेला१ हावर भाव३ तत ॥
 जैपुर अधीस जगतेस करिल्लीनों निहिं,
 वाजीगर वदर नचविं जिम तारि तव ॥५१॥
 कामीपन हाका अजमेर नृप धीसलको,
 जैसो मयो भूपनमै तैसो इहिं बेर जग ॥
 ओरनको जाय्यो नाहिं एही महाराज उभैर,
 मत्त इहिं बेर भये जानि छैल छैल मग ॥
 जोधपुर१ भीम१ जगतेसरजु ए जैपुररज्यो,
 एक सील१ चरित२ निलज्जताके उच्च अग ॥
 कैसे भये जैसे परदेसी सुनि रोकैं कान,
 देसी कहा दुष्टनने भायो इम एक भग ॥ ५२ ॥
 एक१ काकिनीमें पीछो देदे गही नारि इत,
 सिंधी इदराज१ उक्त दूदाउत सिवनाथ२ ॥
 गगाराम३ सजुत ए जबहि इजूर गये,
 व्है कै जई लौ जस दिखाये आछे निज हाथ ॥
 मान महिपाल जै लगाये उर पूरे मोद,
 सबहि बढाये सतकारक विभव साथ ॥
 देनलागो सिंधीको मुसाहवी उचित देखि,
 नीतिसौं नट्यो व्हौ इदराज असें गुनगाथ ॥ ५३ ॥
 जोरि कर स्वामीके समस्त यौ बनिक जपी,
 आय१के अधीन वनै सबठा बिधेय उपर्य२ ॥

*सुरत की प्रपल इच्छा और श्राव भाव से तहां मोहित करकी ताड़ना देकर ॥५१॥
 १ रसिकों के मार्ग में रसिक वा पकरे के समान रसिक इन्हीं दोनों को जाने २
 एक से स्वभाव और चरित्रवाले ३ जैसे पर्यंत एक योनि ही अच्छी लगी ॥५२॥ ५
 अश्वाम में अश्वीतनेवाले होकर ॥५३॥ ७ रोपक = जितनी आमद होवै वतना ही

रीति यह इंद्र१ बिधि२ ईस३ हरि४ लौं जो रही,
 नर तो कितेक तहाँ कैसेँ बनेँ छोरि नय ॥
 रीझ आदि व्ययमें प्रमान जो प्रभु न राखे,
 मोपै बनिहै क्यौं नाथ काम तो प्रबंधमय ॥
 मान नृप भाख्यो हम तेरेही दिखाये मग्ग,
 अबतैं चलहिँ सदा तेरी मतिके उदय ॥ ५४ ॥
 कैसेँ वहै प्रतीति अरजी यों इंद्रराज करी,
 देवनाथ इष्ट गुरु रावरे जे बिच देहु ॥
 भीर तिनकों मै राखौं वहैन ज्यों नियम भंग,
 वहैतो हित हेरि अटकैं तिहिँ मिलित एहु ॥
 सुधरन काज श्रीजलंधरके लौ संपथ,
 हानि१ लाभ२ हमकों गिनौं इक१ दै निज गेहु ॥
 करन बिहीन रीझ१ खीज२ न बिधेय करि,
 लाह नरनाह पीछैं राहके पथिकँ लेहु ॥ ५५ ॥

॥ सौराष्ट्री दोहा ॥

जब प्रभुतैं करजोरि, इंद्रराज किय यह अरज ॥
 नाथ सु तबहि निहोरि, कर्मध्वज तस भीर किय ॥ ५६ ॥
 सूचे सौँहन साथ, हित जिम बनिक प्रतीति हित ॥
 नाम जलंधरनाथ, दोउ२ न अप्पन१ बीच दिय ॥ ५७ ॥
 लिपि प्रभुकी१ लिखवाइ, लिपि नाथहु२ की संग लहि ॥
 पुनि बिस्वासहि पाइ, काम बनिक लग्गो करन ॥ ५८ ॥
 व्यय१ तब अधिक बिडारि, सिंघी रक्खिय आय२सम ॥

खरच उचित है १ शिख २ नीति ३ स्वामि का (आप का) काम ॥ ५४ ॥ ४ स-
 हाय ५ जलंधरनाथ के सौगन ६ उचित ७ चलनेवाले ॥ ५५ ॥ ८ कमधज
 मानसिंह ने देवनाथ को उसका सहायक किया ॥ ५६ ॥ ९ कहे हुए सौगनों
 के साथ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ १० अधिक खरच था जिसको निकाल कर

नाथहिं भीर निहारि, उचित राह आनें आखिल ॥ ५९ ॥

नृपहिं वनिक १ जुत नाथ २, राह तजत अटकत रहैं ॥

सब बैभव नयै साथ, बढन राज्य लग्यो त्रिविध ॥ ६० ॥

इतिश्रीवशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणोऽष्टमराशौविष्णुसिंह
चरित्रे मानसिंहात्मघातविमर्शकारामोचितसिंघोन्द्रराजभाण्डागारि
गगागमकुचामण्डाकुरशिबनाथसिंहसहितजयपुरजनपदगमनफागी
नगरजयपुरानीकपलायनजयपुरावरण १ सेनाव्ययव्याकुलजग-
सिंहचम्पाउत्तसवाईसिंहविरसताहेतुम्बराष्टनाशभीतजगत्सिंहजयपु-
रदिगभिमुखपलायन २ राजयुग्मभीतराणाभीमसिंहस्वसुतागरक्षप्र-
योगमारणासवाईसिंहमरुधराह्मणन ३ बुन्दीशविष्णुसिंहविवाहदय-
करणाईगढिकोपवेशनस्वीकारमित्राकृतमीरखापोधपुरेशमानसिंहस-
वाईसिंहच्छायाघातमारणा ४ कृत्रिमदायादधोकलसिंहकादिशीकीभ-
वनबुन्दीभूपकृष्णगढाष्टमविवाहकरणा ५ लावपुरपतिसिखरणाजी

॥ ५६ ॥ १ देवनाथ साहू २ नीति के साथ ॥ ६० ॥

श्रीवशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायण के अष्टमराशि में विष्णुसिंहके चरित्र
में, राजा मानसिंह के आत्मघात विचारने पर सिंघी इबराज और गग महारी
का कैद से निकल कर कुचामण के डाकुर शिवनरायसिंह सहित फारी अंगर
में जयपुर की सेना को भगाकर जयपुर को घेरना १ सेना के अरब से घेराये
हुए राजा जगतसिंह और पोकरण के चांगडत सवाईसिंह से विरस होकर
अपनी भूमि के जाने के भय से जगतसिंह का जयपुर जाना २ महाराणा
भीमसिंह का दोनों राजाओं के भय से अपनी पुत्री को जहर देकर मारना और
सवाईसिंह का मारवाड़ को छूटना ३ बुन्दी के राजा विष्णुसिंह का एक
मास में दो विवाह करना और जोधपुर के राजा मानसिंह का मीरखा को
मित्र बनाकर उसको आधी गादी पर बिठाना स्वीकार करके पोकरण के
डाकुर अंगडत सवाईसिंह को छलघात से मरवाना ४ जोधपुर के कृत्रिम
दायादार धूकलसिंह का भागना और बुन्दी के राजा का कृष्णगढ में आठवा
विवाह करना ५ लाहौर के सिक्ख रणजीतसिंह और ईष्ट इण्डिया कम्पनी से
विरोध बढ़कर सुलह होना और कायथ के बजीर दोस्त मुहम्मद का, काबुल

तेष्टइंडियाकम्पनीसंधिविधाननिःसारितकाबुलेशामीरसुजाउल्मु-
ल्कमन्त्रिदोरतमुहुम्मदकाबुलाधिपत्प्रापणा ६ स्वशरणागतकाबु-
लेशामीरकोहनूराख्यवज्रसिक्खरणाजीतसिंहग्रहणामारकम्पनीशर-
णासमासादन ७ दूखापुरकृतसमरदौलतरावसिंधियापुनर्दक्षिणा-
दिगमनग्वालियरसमागतेतरततोदेशसमाक्रमणा ८ मध्यपकासुकज-
यपुरेशजगतिसिंहविवस्त्ररमणािरमणादिगर्हितकर्मनिन्दनसिंधीन्द्रराज-
विदितजयपुरजनपदोपद्रवहेतुत्यक्तयोधपुरावरणाजगतसिंहजयपुरप-
लायनमानसिंहसिंधीन्द्रराजप्रधानपदप्रदानादिवर्णनं दक्षमो मयूखः
॥ १० ॥ आदितः ॥ ३६० ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा॥

सौराष्ट्री दोहा ॥

इंदराज अधिकार, पाइ मुसाहवको प्रथित ॥

सब लखि सार असार, हेरयो हित प्रभुको हरखि ॥ १ ॥

कछुक भूत इहिं काल, संगी नाथ समर्थ नमि॥

नियमहिं आनि नृपाल, कोविद वनिक प्रधान किय ॥ २ ॥

जाके मतिगति जोर, नियम जदपि न रुच्यो नृपहिं ॥

तदपि लग्यो नय तोर, दिनप्रति चमक्यो अश्रयुदय ॥ ३ ॥

के अमीर सुजाउल्मुल्क को निकाल कर बादशाह होना ६ अपने शरण आये
हुए काबुल के अमीर से सिक्ख रणजीतसिंह का, कोहनूर नामी हीरा लेना
और अमीर का कंपनी के शरण जाना ७ दौलतराव सिंधिया का दूखा
नगर में युद्ध करके पीछा दक्षिण में जाना और गवालियर जाकर इधर उधर
के देश दखाना = जयपुर के मध्यपी और कामी राजा जगतसिंह का नग्न होकर
स्त्रियोंमें रमने आदि निन्दनीय कामों की निन्दा और जयपुर के देश में उप-
द्रव करके जोधपुर के घेरे से जगतसिंह को जयपुर में बुलानेवाले सिंधी इन्द्र-
राज को राजा मानसिंह का प्रधान बनाने आदि वर्णन का दशवां १० मयूख
समाप्त हुआ ॥१०॥ और आदि से तीनसौ साठ ३६० मयूख हुए॥

१ विदित ॥ १ ॥ २ यह कथा कुछ गये समय की है ३ चतुर ॥ २ ॥ ३ ॥

नेगम वहिर्गत न्याय, पचप मकौरक पथ पथिक ॥
 इत मत तदपि सहाय, कानफटा गुरु मान किय ॥ ४ ॥
 दयो मोहि इन दान, ग्रान वंसन खिन जोधपुर ॥
 मतधुव इम हुव मान, किंकर कानफटेनको ॥ ५ ॥
 इम नाथहिं बिच आनि सिंघी हुव प्रभुको सचिव ॥
 मानहिं बहुमत मानि न मुसाद्वय होतो नतो ॥ ६ ॥

॥ घनाक्षरी ॥

जैपुरके जोरतैं भज्यो जव महिप मान,
 आपुनों अनीक देखि बेरपैं बन्पों अहित ॥
 पाइ निज देस १ जगतेसहिं मुराइ पुनि,
 सगी रहे जे भट बढाये सबही सहित ॥
 उक्त सिवनाथसिंह १ मेरतिया दूदाउत,
 मानि हित चितक दै लाख १००००० को पटा मंहित ॥
 ओरनतैं अधिक समप्पि द्रम्म सिक्का १ आदि,
 राख्यो सबितेस ताहि ओरन तुला रहित ॥ ७ ॥
 सूचे तीन ३ सगी सिवनाथवारे सोदरन,
 सहैस पचीस मुद्रा तुल्य दै पटा सबन ॥
 नीवी १ १ २ मुख्य थान लछमन १ २ कौं दयो नृपति,
 मान २ ३ हित दीनों मान भदलिया २ ३ तुष्ट मन ॥
 स्वामी कर्यो थान धनकोली ३ ४ को हुकमसिंह ३ ४,
 सैंप्यो सारदूलता १ ५ कौं पिप्पलाद १ ५ प्रीति सन ॥
 द्रम्म पच आयुत ५०००० पटासों पहिलैं तो दयो,

१ वेद मार्ग से बाहिर २ ग्राम मार्ग में ब्रह्मनेवाला ३ तो भी उस कनफटा को
 मानासिंह ने गुरु किया ॥ ४ ॥ ४ प्राण नाश होते समय ॥ ५ ॥ ६ शरीर पर
 शत्रु बना अर्थात् आत्मघात करने लगा ७ हित सहित ७ पूज्य (आदरणीय)
 ८ रुपये का सिक्का ९ बराबरी रहित ॥ ७ ॥ १० बराबर ११ मन से प्रसन्न होकर

*भावीकाल देहें बलि बूडसूरा ॥ पुरी भवन ॥ ८ ॥
 ऊदाउत बंसमें प्रधान उक्त अर्जुन १६ कों,
 अयुतन आय ग्राम बारह १२ दये उचित ॥
 भद्राजनि ईस बखतावर १७ जो जोधा १ भन्धों,
 दम्भ लाख १००००० मानी पट्ट ताकों दयो हेरि हित
 जंघ्यो लाडनू पति द्वितीय २ जोधारे मंगल जो,
 मान नृप ताहूकै बढाइ पटा लाख १००००० मित ॥
 पंच अयुता ५००००००० तास बंधव पता १३१९ कों पट्टा
 यो दयो त्रिसत ३०० सौदी स्वामितार उपेत इत ॥ ९
 अल्पाजीव हे ए८ सब एक १ टारि अर्जुन १ कों,
 ऊदा कुल पट्टपति सोतो रायपुर १ ईस ॥
 आठ८ मिसलनमें सिरायत हो आदिर्हातैं,
 अष्टादस १८ संगी यों बढाये मान अवनीस ॥
 तिनमें कुचामनि १० भद्राजनि २ लाडनू ३ तो,
 बढे लाख १००००० लाख १००००० के पटाकी ठानि बखसीस ॥
 ऊदाउत भूलर्हातैं असो सो बढ्यो अधिक,
 जानैं जंग जैसे बढे संगी हीन द्विक २ बीस १८ ॥ १० ॥
 असैं भूत १ कालमें बढे ए बंदर्गातैं अरु,
 इंदराज १ मंत्री भयो नृपकों नियम आनि ॥
 वर्तमान २ में अब बुरो यह लगन लग्यो,
 मानी मानवारे मन व्ययमें अटक मानि ॥
 सौह लै जलंधर १ के साखी देवनाथ २ सह,
 तापैं पछिताइ हरैं छलतैं सचिव हौनि ॥

* आगे आनेवाले समय में देवेगा ॥ ८ ॥ १ पचास हजार की आमद का २
 तीन सौ सपारों की स्वामिता सहित ॥ ६ ॥ ३ ये थोड़ी जीविकावाले थे ४
 राजा भानसिंह ने ५ दो कम बीस ॥ १० ॥ दलरच रोकने से ७ सचिव को मारना

हाहा काहूँ न असो कपटो अधिप होहु,
 पापी लोम अचक जो मारे स्वीय पहिचानि ॥ ११ ॥
 सवत तुरग अग सजुत भुजग ससि१८६७,
 इदउर ईस जसवतराव छोरघो अग ॥
 जोलों रखो स्वास हुलकरकै निपति२ जोर,
 तोलों त्रास रखो अगरेजनकै बल तग ॥
 हंकि अरि तोपनपै जानै बहुवेर दय,
 ढकि छिति दीनी रुड मुडनके करि ढंग ॥
 पृथ्वीराज पीछे वीर तैसो यह जान्यो परघो,
 जाकौं वाह व्याहसो उछाह रहयो सब जग ॥ १२ ॥
 साहस१ उपाय२ बुद्धि३ विक्रम४ रू बिद्या५सिद्ध,
 एक१ अध्वै६ अध्वग ए अगरेज आह इत ॥
 होनलागे हाकिम इहाँको देस१ काल हेरि,
 हरै हरै क्रमते बढाते निज लाभ हित ॥
 एक१ प्रतिभटतैं मुरे न बहुवेर आजि,
 मोरे महसू१ मकसूदाबाद२ से अमित ॥
 जोध कपर्दीके जे मुराये बहुवेर जानै,
 वीर एक१ असो जसवतराव भो विदित ॥ १३ ॥
 सकटमे एकसमे बलको बुरज बधि,
 तोप दुव२ तामैं चटकारिर्न मित चलात ॥
 अगरेज६ दक्खिन२३ तैं उत्तर४७ तरत आये,
 काजहु करत आये पाउस३ सलिल पात ॥

१ सुमते ही पाल (रोम) लड़े होजायें ऐसा ॥ ११ ॥ २ भाग्य
 के यत्न से ३ पृथ्वी को ४ घेर (समूह) ५ एक मार्ग में चलनेवाले ६ युद्ध में ७
 पड़त ॥ १३ ॥ ८ सेना की ९ घुटकी यजने के समान १० वर्षा का जल पड़ने में

नीठि नीठि लांघि कृत्य कोविद मिली नैदिन,
 गंगापर व्हैंगये बढेक्रम निदहि गात ॥
 लरत उहाँलौं गयो हुलकर पीछैं लागि,
 बलको बुरज पै न बिगरयो जिनहि जात ॥ १४ ॥
 असे अंगरेज अतिसीम बुध१ वीर२ अहो,
 असैं एक काल दुर्ग भरतपुराख्य अरि ॥
 बाहिरतैं बेढिकैं करयो रन कछुक काल,
 टेक बल लौकनैं अनेकनमें एक१ टरि ॥
 माँहि१के प्रघात जट्टराज रनजीत मारे,
 काढे जसवंतराव बाहिर२के पातकरि ॥
 हारि न मुरे जे१मुरे तबतो कछुक हेतु,
 लौकैं१ दयो जट्टनको पीछैं उक्त दुर्ग लरि ॥ १५ ॥
 असे बजफेट जैसे अंगरेज६ आहवमैं,
 हुलकरराज जे भजाये बहुवेर हनि ॥
 एकवेर आवत दरेको करि रैख द्वार,
 माँहिं अंगरेजन लौ कोटाके प्रधान नमि ॥
 चम्मलि उतारि काढी सुखसौं कथित चमू,
 तातैं रंच रुद्ध जसवंत पीछैं प्रीति तनि ॥
 माँहिं नैतिसौं लौ धरि रोधन जु कौरा माँहि,
 बज कोप भेलयो भल्ल जालमनैं नम्र बनि ॥ १६ ॥

१ कार्य में चतुर २मार्ग में मिली हुई नदियों को लांघकर ॥ १४ ॥ ३अत्यन्त
 चतुर और वीर ४ भरतपुर नाम के ५ घेर कर ६ अंगरेजों के सेनापति का
 नाम है ७ बाहर के प्रहारों से ८ कुछ कारण से अंगरेजी सेना पीछी फिरी ९
 कहा हुआ गढ़ (भरतपुर) ॥ १५ ॥ १० युद्ध में ११ कोटा के राज्य में पर्वतों के
 बीच के मार्ग का नाम, दरा जिसको रोककर १२ नम्रता से १३ कैद में ॥ १६ ॥

औसो नीति पाटवे दिखायो जिम रीझै एह,
 हो तवहु पाउसं३ पै हेरी नाहिँ बित्त हति ॥
 दलही पटन ढाँक्यो भीजे करवाइ दूर,
 तवू जे नवीन पीन तिनकी तनाइ तँति ॥
 दैकै उपदामै ईए जो रह्यौ जितेक दिन,
 महि महिमानी दीखि अपुनैसे तास मति ॥
 रोकै मूढ रोधक तो औसी कहि राजी राखि,
 काढ्यो जसवतगव औसे खेलि दाव कति ॥ १७ ॥
 एकवेर असेही परघो जो पुर बुंदी भाइ,
 गोपुर जराए नृपनै वहाँ कछु हेतु गहि ॥
 रंचहु न भेजि महिमानीकी न ठानी रीति,
 सोहु हित हानी मानी मानी रख्यो तोहु सहि ॥
 श्रीजितको केदारेस आश्रम निवास सुनि,
 स्वल्प पत्ति सगी चल्पो तिनसौँ मिज्ञाप चहि ॥
 जो लौ बाँह्यपथ गिनतीके जन दरवाजा,
 ऊपरतै भारी एक१ तुपक तहाँतै रहि ॥ १८ ॥
 जाकौँ हो न सासन पै गोपुर जटित जानि,
 एक मूढ ऊँरुज सो आंगस करघो असह ॥
 पीछो आइ तवहि निदेस दीनों सेनाप्रति,
 लेहु१ गढ१ बुदी लूटि२ आजके प्रवृत्त अँह ॥
 पैरिखा कितोक जो पैदत्रनतै देहु पूरि,
 ताको क्रुद्धताको होत सासन इतोक बह ॥

१ नीति की चतुराई २ वर्षा ३ सेना की बज्रों से ढकी ४ यद्ये डेरों की पक्ति तना कर ५ इच्छानुसार भेट देकर ॥ १७ ॥ ६ नगर के द्वार बन्द करायें ७ नगर के बाहर के मार्ग से ॥ १८ ॥ ८ दरवाजे खुले जान कर ९ वैश्य ने १० अपराध ११ वर्तमान दिन में १२ खाई फितलीक है जिसको १३ जूतियों से भर दो

बाहिरकी *बुंदी१ साखापुर२न समेत बेग,
जबहि लुटीसी दीसी साखी हीन साख जह ॥ १९ ॥
पत्तनके कोट१पै रु दुर्ग२पै प्रसारि पंति,
तीरि दीनी तोपनकों मोरि मोरि सिरत मुख ॥
लौलै तूल भार बहु खातिका भरन लागे,
राहकों धरन लागे निश्चेनिन चाह रुख ॥
निजन निहारैं नीठि बुंदीके वचावनकों,
श्रीजितके आतहि सो साम्हें आइ पाइ सुख ॥
तंबू पधराइ उपालंभनको ओघ तानैं,
—अनखाइ दीनों तदपि मिटाइ दुख ॥ २० ॥
नाँतो जिन दिनन प्रतीपहो पितामहसों,
तीज बल आयो इहाँ हुलकरराज तव ॥
याही तैं विलांबि पीछें श्रीजित सहाय आयो,
जान्यों सह सचिव१ महीप२ को प्रमाद जव ॥
लुंठक पिटात१ वरजात२ के सरनि लखे,
उक्त विधि द्वैरही मिलि बैठे रवस्व थान अव ॥
सूचे उपालंभ जसवंतके असेस सुनि,
पीछो दयो उत्तर यों श्रीजित लहे पंरव ॥ २१ ॥
मातुल मलार कुल तू भयो कुपुत्र मूढ,
बुंदीपति मूढ भयो२ मो कुल कुपुत्र वैत ॥

* शहरपनाह जैसे बाहिर का शहर जिसको जूनी बुन्दी भी कहते हैं १ साखा हीन वृत्त के जैसी ॥ १९ ॥ २ भरीहुई रेखई के चोरे लेकर ४खाई को भरने लगे ५ वरहनों (ओलंभों) के समूह से ॥ २० ॥ १ पोता (विष्णुसिंह) ७ लुटेरों को ८ मार्ग में देखे ९ अपने अपने स्थान पर १० समय पर ॥ २१ ॥ ११ मामा मलार के कुल में (उम्मेदसिंह के पिता बुधसिंह की राणी कछवाही ने मलार के राखी बांधी थी इस कारण उसको मामा कहता था) १२ खेद है

अग अपनेको अहो काटन लग्यो तू१ आप,
 मडन लग्यो त्यों भूपर इतको प्रतीप मत ॥
 दोउन२को सत्रु भारि तुपक भज्यो जो दुष्ट,
 ताहि खोजि लावनको भेजे जन जूह तत ॥
 अखिल कुटुब मेरो आत मरिवेको इहाँ,
 मारि१ तिनको उबारि२ निज१तै निज मुरत ॥ २२ ॥
 श्रीजितके बैन ऐसे हुलकरराज सुनि,
 नीचे करि नैन दये लुटक सब निवारि ॥
 आश्रम पधारे इम तूटो हित जोरि आप,
 धीरपन पीछें नृप आइ मिल्यो हित धारि ॥
 स्वागत बलिष्टको बन्धो जिम सबहि साध्यो,
 बाँबासों बहोरि मिलि मंत्रिनको मद मारि ॥
 पीछें चढि गो जो पर्वतनपैं करत पथ,
 सूचे सक सोपे जसवत मरयो जपकारि ॥ २३ ॥
 भूत१ वत्त भाखी अत्र ताकी वर्तमान२ अब,
 बैठो तास आसहु मलारहि स नाम बैलि ॥
 नाम कहिवेको सो१ बढे२ सो बल धाम नहि,
 इदँउर१ पुण२पैं भो तोहूसो१ प्रसक्तअक्षि२ ॥
 हाकिमपनोंतो जसगतहीकी गैल गयो,
 छेल गयो छोनिको वहेही विप्रलेभ छलि ॥
 कटक कढ्यो जो अंगरेजनने मानि कीनों,
 उच्छव अपार कोऊ रोषक न जानि कैलि ॥ २४ ॥

१ विरह २ मनुष्यों का समूह ३ क्या सू जाता ॥ २२ ॥ ४ छटनेवाला का रोक
 दिये ५ श्रीजित से ॥ २३ ॥ ६ पुनि ७ इन्द्रोर रूपी पुष्प पर आसक्त अमर-मूर्ति का
 रसिक ९ वियोग कर गया १० युद्ध म रोकनेवाला कोई नहीं जानकर ॥ २४ ॥

एक१ बलहीसो जई कलि४ में सुनत आये,
 जाकै सुन्यौं धीबल१ न ताकै सुन्यौं बीर जस२ ॥
 आयो कलि४ देखो प्रभुराम२०१४ अपनीही ओर,
 ओरनकै आये कृतं त्रेतार विधि कर्म बस ॥
 देस१ काल२ बुद्धि३ विद्या४ पाइकै नवीन दृढ,
 रमनी महीको लैन लागे अंगरेज७ रस ॥
 अैन भद्र इननै विचारि गहिलीनो एक१,
 टेकसौं टरै न तासौं अध्वनीन नित्य तस ॥ २५ ॥
 उक्त१८६७ सकहीके मास बाहुल८ असुभ्र२ इत,
 दीपमालिका३० की आदि तेरासि १३ निसार दुसह ॥
 भूप विष्णुसिंह२००१२ को पितृव्यज कनिष्ठ भ्रात,
 मोरि मन स्वामीसौं हरामीपन मानि मह ॥
 ईस गोठपत्तनको नाम बलवंत२००१ अहो,
 द्रोहबस बूडिवेकौं पापके अगाध द्रह ॥
 निश्चेनी लगाइ सहसाही पैठि नैनपुरं,
 दाबिकै दगासौं बनिबैठो जो अभीस जह ॥ २६ ॥
 श्रीजितके जीवतरहे जे कहे तीन३ सुत,
 अग्रज अजितसिंह१९९ तिनमें लख्यो तखत१ ॥
 दूजे स्वामिधर्मी बीर अंगज बहादुर१९९१ कौं,
 गोठदंग दीनो जाको मान उक्त औंदि गत ॥

१ कलियुग में युद्ध में एक सेना के ही जीतते सुने हैं २ जिसको बुद्धि का बल है
 उसको वीरता का यश नहीं है "दानाच्च प्रभवा कीर्तिः शौर्यवीरप्रभवं यशः" ३
 दान से कीर्ति होती है और वीरतासे यश होता है ४ प्रभु रामसिंह ४ सत्ययुग ५
 शुभदायक मार्ग ६ इन मार्ग चलनेवालों से वह कल्याण अलग नहीं होता
 ॥ २५ ॥ ७ कार्तिक बदि में ८ काका का वेटा छोटा भाई ९ गोठड़ा का पति १०
 नैणवा नगर ॥ २६ ॥ ११ वह बहादुरसिंह इस कह्यो हुई कथा से पहिले ही मर गया
 अथवा उस गोठड़े की आमद का प्रमाण गये हुए पहिले कथन के अनुसार है

यशवंतसिंहकाविष्णुसिंहसेहरामीदोना]अष्टमराशि-एकादशमयुद्ध (४००१)

दीनों सुत तीजे३ सरदार १९९। हित दुर्ग पुर१,
कापरनि४दीप१९८। कोंजो लक्ष्म १००००० को पठाकहत
ओसरपै दाय भेद हेतु१ कदिआये आदि,
तत्र कदि आये उक्त तीन३ न प्रजो२ हु नत ॥ २७ ॥
तीन३ सुत तिनमें बहादुर१९९। के आयुवली,
जेठो१ बलवत२०-११ मध्य२ दलपति२००।२ नाम जुत॥
सरसिंह२००।३ तीजो३ तिम है२ही इत आयुसगी,
ईश्वरी१रुदेवी२आदिसिंह२००।१, २००।२ सरदार१९९ सुत॥
ताही के खवासिके पहार१ रु स्वरूप२ तने,
उक्त दायभागी— दीप१९९। के तनूज उत ॥
अत्र आयुवारे सुरतान१९६।१ रु सगतसिंह१९९।२,
॥ २८ ॥

इनमें बहादुर१९९।२ तनूज बलवत२००। उग्र,
वीर खल सौल पसु सिंहकी तुल्ला बहत ॥
केही भूत१ भावी२ जिहि सत्रुन समरकरे,
महिल१ रु विंझोली२ से दुर्ग लैनके महत ॥
विगरे उपायजेतो निश्रेनी लगत देर,
नगर१ नरुकनतैं लोहीलपो पे लहत ॥
तामें वेग आइपैठो भीमको कटक तातैं,
आयो कदि पीछो लूटि वैभव जो अग्रहत ॥ २९ ॥
कलह अनेक अैसे भूत अरु भावी करे,
केही रन जित्ति कित्ति बीरता करी विदित ॥

१उम्मेदसिंह के छोटे भाई दीपसिंह का दिया था सोरतीनों की सन्तान यहाँ
कह आये हैं ॥२७॥ १आयुवाले ईश्वरीसिंह और देवीसिंह ॥२८॥ १पशुके समान
दृष्ट स्वभाववाला १पराक्रममें सिंहकी परापरी करनेवाला १नगर नामकपुर ॥२६॥

एक धर्महीकों पीठि दैबैतैं दुरितै१ ओडि,
 हंत अपकिति२हु लै हेरयो एक लोभ हित ॥
 बाम२ अध्व पथिक मपंचक५ निरत बुद्धि,
 ईससौ बदलि सूचे १८६७ वर्तमानसो ब इत ॥
 पैठिकैं दगासौं घरहीके दुर्ग नैनपुर,
 आसु अपनायो जोध अंतरके ठानि जित ॥ ३० ॥
 सो सुनि सकोप विष्णुसिंह२००१२ नरनाह सज्ज,
 चित्यो आप चढन निवारयो सो भटन न्याय ॥
 बोले हम आगैं बलवंत२००१को कितोक बल,
 छीनिगढ१ लैहैं अरि व्हैहै कैद हत छाया ॥
 धोवरेस१ भूपाल रु विक्रम२ सु खीना२ धनी ॥
 अग्रज१ तदीय विरुदेस२ ————— आय ॥
 नाथाउत चालुक सता४ तिम पगाराँ४नाह,
 चंद्र५ कोरमाँ५ को पति क्रूरम चरित चाय ॥ ३१ ॥
 इत्यादिक सामंतन नीठिन निवारे ईस,
 काल१ देस२ धर्म३ नय४ अर्य५ को जनाइ जय ॥
 यौंही सचिवनमें प्रधेर्स प्रभु त्योंही आइ,
 मंत्री तुलाराम१ द्विज नागर सु नीतिधय ॥
 नंदराम२ भट्ट रु प्रधानहु गनेस३ निज,
 सेनापति चंद्र४ कृष्णधात्रेयहु जोरि संय ॥
 सज्जकरि सेनाकों पठातभये नैनपुर,
 नामी नरनाहसो बिराजत रहयो नित्य ॥ ३२ ॥

१ पाप भेज कर २ घाम मार्ग में चलनेवाला ३ पंच मकार में ४ नियुक्त
 होवाला ५ नैणवापुर को शीघ्र अपना किया ॥ ३० ॥ ६ छाया (आश्रम)
 रहित ॥ ३१ ॥ ७ शुभ भाग्य को द प्रधानों का ईश ८ हाथ जोड़ कर १० घर
 विशेष शोभायमान होता रहा अर्थात् राजा बुन्दी में ही रहा ॥ ३२ ॥

पैठत दगासौ बलवत२००। इत नैनपुर,
 गुज्जर गुमान१ दुर्गपति जो रन गरूर ॥
 जंघ्यो अनिरुद्ध नृपकौ भो देव धावरजो,
 साखापुर देवपुर१ सासक अतुल सूर ॥
 हाकल प्रभेद यह ताके कुल जात हुतो,
 तीर१ तुपकरनके प्रहारनमें गुनपुर ॥
 महे वीर गोलिन१ की माला बँटपत्र२ माँहि,
 वैदै पैत्रवाह१ पैत्रवाह२ खड्डे दूरदूर ॥ ३३ ॥
 अग१ वय२ जोर कमनैतनको मोर यह,
 स्वामिधर्म साधक बिबाधक विपेच्छ बल ॥
 जाके असुभाव छत कोऊ परिपंथक२ जो,
 छीनिहु सकै न पैठि छत्रहु प्रसारि छल ॥
 पै यह गुमान धाहभाई दुर्गपैठनमें,
 खोजि बंसु ताहीके बिसासवारे मोरि खल ॥
 डरतैं अडर एह तिनपै ईनाइ डार्यो,
 पार उर गोली भेदि जावत लग्यो न पल ॥ ३४ ॥
 औसैं बिसवासवारे माँहिके अधर्मिननैं,
 गोलीदै गढेस मार्यो गुज्जर वह गुमान ॥
 किल्लाके सिपाह भेदि१ केक इनि२ केक काढि३,
 थापि अपने गढ अधीन कीनों थान थान ॥
 सामतके११७१ सकर१ स नाम भुजनैरी स्वामि,
 स्वामीको लजाइ लोन छौमी होन अवसान ॥

गुज्जरों की जाति घिये २ घट वृद्ध के पक्षे में वदक की गोखियों की माला
 रथ देता था ३ तीरों से ४ पक्षियों को ॥ ३३ ॥ ५ शत्रुओं के बल को मिटाने
 वाला ६ जीवित रहने समय ७ शत्रु ८ बन देकर ९ बनसे बस घाय
 भाई को मरवा डाला ॥ ३४ ॥ १० किल्लादार ११ अन्त में दुर्योधन होकर

दुर्जन लौ दुर्जनकाँ पैठो जिम बुंदी दुर्ग,
 पैठो बलवंत२००१काँ लौ नैनवा यह प्रधान ॥ ३५ ॥
 बुंदी भट मुरुपनमै मुहुकमसिंह१९४५ वंसी,
 नैनपुर रच्छक हो दूजो२ फतैसिंह२ नाम ॥
 इत्यादिक ओर सुनि मरन गुमान सोर,
 आये मुख ठंकि व्है पलायन रन अकाम ॥
 बुंदीके बैरूथ इततै बाढि गढ सु बेढयो,
 तथ अर्द्ध बाहुल्लंत्तै भो रन तुमुल ताम ॥
 बीज सुहि पाइ हाइ देस१ काल२ दिष्ट३ बस,
 राज्य यह बुंदी तत्र दुर्गत भो प्रभुराम२०१४ ॥ ३६ ॥
 जाके रन नाथाउत चालुक सता१से जोध,
 महासिंह१९४१ वंसी बंधु छगन१२ मगन२२से ॥
 के अरि बिदारि रारि झारि असि आये काम,
 नठे केक कातर जु लघुत्वमै नगनसे ॥
 श्रीजितके जेठो१ इंदुकुमरि१ खवासि सुता,
 सूनु तस हत्थी१ आदि घायल संगनसे ॥
 आयुबल ऊबरे१ मरे२ के लघु हीसौं इहाँ,
 भाजि केक भीरु भये भीकरि भंगनसे ॥ ३७ ॥

१ जैसे दुर्जनसिंह शत्रु को लेकर बुन्दी में घुसा था तैसे ॥ ३५ ॥ २ भागकर ३ सेना
 ४ आधे कार्तिक से तहां भयंकर युद्ध हुआ ५ इसी कारण से ६ भाग्य के बश
 ७ हे राजा रामसिंह बुन्दी के आधीनवाला राज्य दरिद्री होगया ॥ ३६ ॥
 ८ भागे कितने ही कायर लघुपन में ९ नगण के समान होकर (नगण में सर्व
 लघु होते हैं तैसे होकर) १० सगण के समान घाव लेकर (सगण में अंतगुण
 होता है तैसे प्रारंभ में छोटे और अंत में बढनेवाले घावों से) ११ भय से
 भगण के समान हुए (भगण में आदिगुरु होता है) सो प्रारंभ में तो बडे वीर
 दीखे परन्तु अंत में लघु के समान कायर होकर भागगये ॥ ३७ ॥

कृष्णागढ १ आदि केक सवाधिन ताही काल,
 जोध कछु भेजे भीर बुदी यह बिघ्न जानि ॥
 आहव रह्यो जो कछु ऊनचउ ४ मास अत,
 खराचि खजानाँ परे होत न रजत खानि ॥
 भूखन १ अमर्त्र २ आदि बेतनमै जात भूरि,
 पूर धंसु कष्ट परयो देत न रुकत पानि ॥
 कष्ट असो जदपि सहयो पै बलवत २००। कँहँ,
 तदपि निकासिदीनाँ बुदीभूप बल तानि ॥ ३८ ॥
 तासदे निकास्यो बलवत २००। नैनवातै तासो,
 अहन कितेन आदि मेचक २ तपस्य १२ मास ॥
 द्रग बुदी चौथी ४ गोरि रानीके द्वितीय २ दिन,
 तीजो सु तनूज बलदेवसिंह २०१।३ नाम तास ॥
 जेठे हेगहि कुमर बचे न इम ताके जन्म,
 बुद्धि धन दुर्गत दसाहुमै जस बिकास ॥
 कित्ति प्रसराइ आप जिततित नाम कीनाँ,
 धामकीनाँ धवल खजानाँ खोली खिल खास ॥ ३९ ॥
 कुमर तृतीय ३ एह जनम्पो तदनु कढ्यो,
 अल्पहि दिनन अत भीत होइ भ्रात यह ॥
 बुदीको निसान फहरानाँ नैननैर बलि,
 विजय पताकाके बिसेस विधि लै निबह ॥
 जोर अगरेज ७ नको फैल्यो प्रतिघस्र जहाँ,
 दोही दल २ दक्खिनके होत मग्न लोभ दह ॥
 केतु कपनीको अपनैद्विग बढत आयो,

१ पात्र २ धन का पूर्ण कष्ट ॥ १८ ॥ ३ कितनेक दिन पहिले ४ कास्तुन यदि ५
 दरिद्र दशा में ही ६ पाकी का खजाना खोखकर ॥ ३६ ॥ ७ जिसपीछे ८
 पक्षधन्तसिंह ९ फिर नैणवा नगर में १० प्रतिदिन ११ कपनी का रुद्धा

एक१अनै पथिक प्रमाद हीन रत्ति१ अह ॥ ४० ॥

भ्रात बलवंत२००। नैनपुरतैं निकसि भीत,
मालिक अधीन भयो जोरि हाथ नम्र मन ॥

तबहि दयालु विष्णुसिंह२००।२ नरनाह ताहि,
सासि न मिल्यो पै ग्रामच्यारि४ दये नीति सन ॥

दूजे२ अब्द तासों सबदेसके सुदिष्ट दिन,
अंतिम८ प्रियाकौ अर्भ प्राची१ गर्भ ज्यों तपन ॥

भूप भोज१९१।२रतन१९२।१सता१९४।१के पुण्य संभव भो,

भूमि तबहीतैं भासी सोभामय संहनन ॥ ४१ ॥

सो भुजंग अंग रु मतंग ससि १८६८ संबतके,

बिसद१ संहस्य१० मास उत्तमके बुध४ बार ॥

तीज३ तिथि घटिका छबीस२६ पल आकृति२२ त्यों,

एकबिंसी२१ ताराद३२ छप्पन५६ क्रम उदार ॥

योगध्रुव१२ तेरह१३ ओ अठ्ठीस३८ तैतिल त्यों,

उत्कृति२६ दिनेत्र२२ इष्ट पंच द्वै२५ छपंच ५६ पार ॥

लवचउ४ जात धनु९ रविके मिथुन लग्न,

ताही काल राँम२०१।४ प्रभु रावरो भो अवतार॥ ४२ ॥

१ एक मार्गके चलनेवाले प्रमाद रहित २ रात दिन ॥ ४० ॥ ३ तरवार सहित नहीं मिला
४ श्रेष्ठ भाग्य के दिन से राजा विष्णुसिंह की अंतिम रानी के गर्भ से राजा
भोज. रतनसिंह और शत्रुशाल के पुण्य से पूर्व दिशा में ६ सूर्य उदय होवै
तैसे ५ बालक (रामसिंह) का ७ जन्म हुआ तभी से भूमि शोभा के ८ शरीर
वाली दीखने लगी ॥ ४१ ॥ ९ पौष सुदि तीज बुधवार छबीस घड़ी बाईस पल
और इक्कीसघां (उत्तराषाढा) नक्षत्र बत्तीस घड़ी छप्पन पल, ध्रुव नाम योग
तेरह घड़ी अठ्ठीस पल, तैतिल कर्ण छबीस घड़ी बाईस पल, इष्ट घटी पच्चीस
और छप्पन, धन के सूर्य के चार अंश जाकर मिथुन लग्न के समय में १० है
प्रभु रामसिंह आप का जन्म हुआ ॥ ४२ ॥



भास्पो तनुभावमें दृढस्पति५ मिथुन३ भोगी,
तीजे३ भोन सिंह५ को विधुतुद८ प्रविष्ट तह ॥
रवि१ कवि६ मद७ बुध४ सप्तममें धन्वी९ रहे,
अष्टम८ में इदुर मकर१० स्थित प्रकासि मह ॥
आर३ अरु आदिक९ ए कुम११ के नवम९ अैन,
औसो ग्रह जोग आत उक्त१० मास उक्त३ अह ॥
रानी अष्टमी८ सौ आप जनम अधिप राम२०१४,
सबके सुदिष्ट१ इष्ट२ बिया३ नीति४ धर्म५ सह ॥ ४३ ॥
स्वामी बिष्णुसिंह२००१२ महिपालके सदन प्रभु,
बालके प्रसव जन जाल के मिले मुदित ॥

लग्न में मिथुन का दृढस्पति, तीसरे भवन में सिंह का राहु, सातवें भवन में
वन राशि में सूर्य शुक्र शनि और बुध, आठवें भवन में मकर का चन्द्रमा स्थित
होकर वस्त्र प्रकाश करता है और मंगल और केतु नवम स्थान में कुम्भ राशि
के हैं ॥ ४३ ॥ १ घर में २ जन्म ३ समूह

आयो समै थानाँ कलिकालके उठावनको,
 रोध रिपु ढालके व्हे सालके रह्यो रुदित ॥
 गालके बजात चंद्रभालके निहाल गति,
 मालके मिलाप तंगहालके तज्यो तुदित ॥
 बुंदीपुर सूचे काल थालके वजत बाल,
 बालके बिकासी अंक भालके भये उदित ॥ ४४ ॥
 सारघ^१ सुवर्ण^२ मुख्य^३ दे मुख^४ कही सरनि,
 साधि जातकर्म^५ वंस विपन जिमाइ सब ॥
 रत्नार्कर रीभके दये तिन्ह विधिध दान,
 कविहु निहाल कीनै^६ अंहति उफान अब ॥
 भर्मतै^७ असेस गायकनके निलेय भरे^८,
 पुरमें बधाई वटी चहुघाँ चहे पँरव^९ ॥
 भावी सुखमूल होत सौनै^{१०} अनुकूल भये,
 बातकै^{११} बधूल तूल पातक पढार तव ॥ ४५ ॥
 धर्म धुर धोरी वेद रथके धुरंधरजे,
 आदि मनु^{१२} आदि गये कृत^{१३}में वहत वाम ॥
 नेतार^{१४}में निबाहयो राम^{१५}आदिक नृपन तैसैं,
 द्वापर^{१६}में कंकादिनै^{१७} लीनो भर जो ललाम ॥

१ कलियुग का थाया उठाने का समय. शत्रुओं की ध्वजा को रोकनेवाला
 तथा शत्रुओं को रोकने के लिये ढाल और शाल होकर उनको २ रुलानेवाला
 ३ गाल बजाने से शिव निहाल करदेवै तैसे, धन के मिलने से दरिद्रापन ४
 दुःख से भागा ॥ ४४ ॥ ५ शहद और सुवर्ण ६ सुख में देकर ७ कहेहुए मुख्य
 मार्ग को साधकर जातकर्म किया ८ रीभ के समुद्र ने ९ दान के उफान से
 १० सुवर्ण से ११ कलावतों के घर भरदिये १२ उस चाहेहुए समय पर १३
 शकुन १४ पापों के पर्वत बधूल के पवन की रूई के समान हुए ॥ ४५ ॥ १५
 वेद रूपी रथ के धुर को खँचनेवाले १६ सत्ययुग में १७ युधिष्ठिर आदि ने
 सुंदर भार लिया सो

आज कलिधमे तो हारे ११ विक्रम १२ प्रमुख अहो,
धारि धारि जो धुर गये तजि उचित धाम ॥
सोहि धुर जानि करतारनैं बहुरि सूनौ,
रूप रावरेत अतार लीनौ प्रभु राम २०१४ ॥ ४६ ॥

॥ दोहा ॥

हृदयती अथ उदित हुव, इम प्रभु जन्म अनेह ॥
भैमादिक वितरन भये, गेहगेह मह गेह ॥ ४७ ॥
सक नव खट वसु चद्र १६९ सम, मन जिन अमल उमाहि ॥
अंगरेजन वानिज्य इत, सब भेटयो नय साहि ॥ ४८ ॥
जिहि सक १८६९ सप्तम ७ जेनरल, आयो अप्पन देस ॥
अटक्यो प्रभुपनं मनि डहि, अब वानिज्य असेस ॥ ४९ ॥
चविठे पुनि प्रभुके चरित, जेनरलहु सब जेरि ॥
नेपालन मडयो अमल, बढि इत तवहि बहोरि ॥ ५० ॥

इति श्रीवशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणोऽष्टमराशौ विष्णुसिंह
चरित्रे योधपुरेशमानसिंहविपत्समयसेवारतसेवकोचितजीविकाप्रदा
न १ इन्दोरैगहुलकरजसवन्तराववलवत्त्वदर्शनतद्देवान्तसमयसूचन
कामुकमल्लाररावतत्पट्टासादन २ स्वपितृव्यजवत्त्ववन्तसिंहशत्रुभाव—

१ भर्तृहरि २ आदि ॥ ४६ ॥ १ आनेवाले समय के छुम कर्म फल ४ आप
के जन्म समय घर घर में और इस ग्रन्थकर्ता (धर्ममल्ल) के घर में ५ सुषण्य
आदि का दान हुआ ॥ ४७ ॥ ६ नीति ग्रहण करके अंगरेजों ने सोदागर पन
छोड़ा ॥ ४८ ॥ ७ इस देश का स्वामी बन मानकर घाण्डिय छोड़ा ॥ ४९ ॥ ८
रामसिंह चरित्र म समय जनरल को जोड़ कर कहेंगे ॥ ५० ॥

श्रीवशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टमराशिमें, विष्णुसिंह के चरि
त्र में, जोधपुर के राजा मानसिंह का आपत्काल में अपनी सेवा करनेवाले
सेवकों की जीविका देकर पढ़ाना १ इन्दोर के हुलकर जसवन्तराव का पछवान
पना पताकर उस के देवान्त की सुचना करना और उसके पाद पर भोगों
में आसक्त मल्लारराव का बैठना २ गुन्दी के राजा के काका के भेटे भाई

नयनपुराकूमणसोढानेकापद्विष्णुसिंहतन्निष्कासन ३ बुन्दीरावराडू
रामसिंहप्रादुर्भवनत्पक्तवशिग्भावेष्टइंडियाकम्पनीभारतवर्षनृपत्वसू
चनमेकादशो मयूखः ॥ ११ ॥ आदितः ॥ ३६१ ॥

॥ प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ।

सक नभ हय बसु ससि १८७० समय, इत नेपालिन आइ॥
नगरकोट लग अमल निज, किन्नो बल अधिकाइ ॥१॥
तनयाँ दै रनजीत तब, सिख करि स्वीय सहाय ॥
नगरकोट तब तास नृप, रक्खयो सह बलश्राय ॥२॥
प्रतिबल इम नेपालके, बढत उहाँ लग जानि ॥
जयकरि सप्तम७ जेनरल, प्रदुते किय असि पानि ॥ ३ ॥
तिनके रक्खयो पुँव्व१तट, काली सरिता केर ॥
पच्छिम३॥५ तट लग कंपनी, जित्ते सब करि जेर ॥ ४ ॥
संसारदिकचंद्र सो, नगरकोट नरनाह ॥
जो इम सिख रनजीतको, स्वसुर बन्धो अ-सिपाह ॥ ५ ॥
इत लखनेऊ याहि १८७० सक, अलीसहादत अंत ॥
तस लघु सुत बैठो तखत, पहुँचि थान परजंत ॥ ६ ॥
आगामीर स नाम इक, हो तस हुकाभृत्य ॥
करि दृढ मन ताके कहैं, किय दोउ२ न यह कृत्य ॥ ७ ॥

बलवन्तसिंह का अपने स्वामी का हरामी होकर नैणवापुर लेना और अनेक
आपत्तियें उठाकर विष्णुसिंह का उसको निकालना ३ बुन्दी के रावराजा राम
सिंह का जन्म और ईष्टइंडिया कम्पनी का व्यापारीपन छोड़कर हिन्दुस्थान
के पति होने की सूचना का ग्यारहवाँ मयूख समाप्त हुआ ॥१॥ और आदि
से तीनसौ इकसठ ३६१ मयूख हुए ॥

॥ १ ॥ १ रणजीतसिंह को अपनी पुत्री देकर ॥ २ ॥ २ हाथ में खड्ग लेकर
भगाये॥३॥ ३ पूर्व का किनारा ४ काली नदी का ॥ ४ ॥ ५ संसारचन्द्र ॥ ५ ॥
६ सहादत अली मरा ॥ ६ ॥ ७ ॥

अगरेज रक्खे उद्दी, राजद्वार सच रुद्ध ॥

चढिग जैए तउ कोट चढि, पहुँचे अवधि प्रबुद्ध ॥ ८ ॥

तरजि साह बहि तेग गहि, आगा मख अधीन ॥

हैदर अत अधीस हुव, दिपत गाजियुद्धीम ॥ ९ ॥

उक्त १८७० सकहि प्रभु सुनहु इत, जौधनैर १ जयनैर २ ॥

परनि उभैर नृप परसपर, वनै सुद्ध तजि बैर ॥ १० ॥

ए निज निज सीमा अवधि, द्वैर संक्रमि कुल दीप ॥

रूपनगर १ मान १ सु रद्दयो, मरवार २ जगत २ महीप ॥ ११ ॥

सुरहि कुमरि १ तँहँ निज सुता, व्याहि माने वसुधेस ॥

अप्प स्वसुर व्है आदरयो, जामाता जगतेस ॥ १२ ॥

निज मगिनी जगतेस नृप, चदकुमरि २ हित चाहि ॥

मरवा बुद्धि सु मानको, विहित काल दिय व्याहि ॥ १३ ॥

पति रटोरन मान पहु भयो स्वसुर १ अरु भामर ॥

जामाता १ सालक २ जगत, कूरम हुव हित काम ॥ १४ ॥

अहँ अष्टमि ८ भदव ६ असित २, व्याहयो मान बहोरि ॥

नवमी ९ दिन कछवाह नृप, जगतसिंह पटै जोरि ॥ १५ ॥

मान सिविर कूरम गयो, यित एकासन थान ॥

तँहँ बैठारयो तुल्य गिनि, मीरखान गहि मान ॥ १६ ॥

तदँनतर आतहि तद्दी, कृष्णागढ पै कल्याण ॥

बैठारयो जगतेसगहि, एकासन अति मान ॥ १७ ॥

इक १ तखत बैठे चउ ४ हि, ए तुवर २ सम्मुह अत्थ ॥

१ शोककर २ जीते ॥ ८ ॥ ९ ॥ १ मिश्र घने ॥ १० ॥ ४ गये ॥ ११ ॥ ५ राजा
मानासिंह ने ६ जमाई जगतसिंह का आदर किया ॥ १२ ॥ ७ मानासिंह को
मरवा नगर में पुजाकर ॥ १३ ॥ ८ पहिलोई ९ जगतसिंह ॥ १४ ॥ १० दिन
११ पल्ल जोड़कर ॥ १५ ॥ १२ मानसिंह ने मीरखान को घराबर आनकर एक
गद्दी पर बिठाया ॥ १६ ॥ १७ जिसपीछे १४ कृष्णागढ के पति कषपायसिंह को ॥ १७ ॥

न रुच्यो पै कूरम नृपहि, जवन तुल्यपन जत्थ ॥ १८ ॥
 पत्तो कूरम सिविर पुनि, मीरखान जुत मान ॥
 तखत न रक्खयो कुम्म तँहँ, बैठे ईतर बिधान ॥ १९ ॥
 सक उक्त १८७० हि बुन्दीसकै, पंचमपसुत गोपाल २०१५ ॥
 सप्तम७ रानीकै भयो, इसँ७ सित १ तेरसि १३ काल ॥ २० ॥
 जातक्रियादिक रीति जह, सब सद्धिय नरनाह ॥
 दान १ बधाई २ बहुल दिय, रोचक उच्छव राह ॥ २१ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

इत जैपुर ससि हय बसु इक १८७१ सक, छलि जगतेस भूप
 उद्धत छक ॥

रसकपूर गनिका अति मानी, रानिन मुख्य करी जो रानी ॥ २२ ॥
 ताहि महारानी १ पद दीनों, अधर १ जानि २ उपटंकहु कीनों ॥
 किते कहत याही १८७१ सक अंतर, पच्छिम ३ बढे गोरखे
 बल पर ॥ २३ ॥

तिनकों जीति कंपनीके दल, काली नदी उतारे हत बल ॥
 उक्त १८७१ सकहि लरि इत अंग्रेजन, लंकाद्वीप अमल किय
 अप्पन ॥ २४ ॥

बिक्रम राजसिंह अभिधाको, त्रासित करि काढ्यो नृप ताको ॥
 तह कोलंब राजधानी पुर, धरयो स्वीय हाकिम थंभन धुर २५
 इत संबत दुव मुनि अष्टादस १८७२, बनि नृप मान जोधपुर
 परबर्स ॥

इंदराज जिम राज्य अवेरयो, हित नय आय १ उचित व्यय हेरयो २
 १ मीरखां का बराबर पन जगतसिंह को नहीं रुचा ॥ १८ ॥ २ अन्य रीति से
 बैठे ॥ १९ ॥ ३ आश्विन सुदि ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ ४ राणियों की मालिक का
 खिताब ५ हिमालय पर्वत की जाति विशेष ॥ २३ ॥ २४ ॥ ६ नामवाला ७ लंका
 (सीतोन) की राजधानी का नाम कोलंबो है ॥ २५ ॥ ८ पराये वंश में खरच ॥ २६ ॥

सो प्रबध नृपकों न सुहायो, अक्खिय हम मरनहि मर्म आयो॥
इदराज सज्जन तब अक्खिय, सिंदी हम हनिहैं प्रभु सक्खिय २७
भूप कह्यो योंतो नहिं भावहिं, मीरखान प्रति सूचि मरावहिं ॥
तब किय मीरखान प्रति सूचन, जैपिय जवन कहहु नृप मो-
सन १ ॥ २८ ॥

कैं लिखिरेहु इन्हें तब ती हम, सुतो नृपहिं न रुची बचक सम॥
देवनाथ गुरु करि सकोचित, सपथ करे पहिलैं तिम सोचित २९
छत्रसिंह निज कुमार भेजि तैंहैं, मारन सचिव कहाई तापैंहैं ॥
मिच्छ सु सुनत जैन मासिक मिस, दुर्गमाहिं पठये भट नृप
दिस ॥ ३० ॥

रोकि द्वारकीनों तिन कलंकल, छितिप सचिव प्रठयो तब तिंहि छल
रोक्यो गुरु नृप तउ इठ रगहि, सिंधी जात नाथ लिय सगहि ३१
मोतीमहल माहिं तिन मिच्छन, जातहि दुव २हि अमृतु इन्हें जन ॥
बचे मिच्छ अतर नृप मंत बल, चिर करि जियत गये अपनैं दल ३२
धर्म सपथ हम जोपि धेराधव, भाखि अलीक बिगारयो निज भंव
छत्र रख्यो न मान कैंत यह छल, चलयो प्रकट जिततित व्है चचल ३३
दैं विस्वास सपथ मारे दुव २, हाहाकार जोधपुर हम हुव ॥

ओरमगग भास्यो न नृपहिं अब, तकि कपट उनमत्त बन्यो तब ३४
इक कोन रहियो निज आवरि कुँइक बेस तैसोहि लयो करि ॥

१ राजा मानसिंह दामी बहुत या सो उसका हाथ रुकने से कहा कि मेरा मरन
आया ॥ २० ॥ २ मीरखा ने कहा कि पातो राजा हम से रोयस करै या लिख
हैं तब मारैं ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३ तनखाह लेने के मिय से राजा की ओर धीर
भेजे ॥ ३० ॥ ४ कोखाइल किया ५ देवनाथ को जाने से रोका ॥ ३१ ॥ ६ बिना
अपराध मारे ७ राजा के मत के यत्न से ८ विषय करके अपनी सेना में गये
॥ ३२ ॥ ९ नृपति १० झूठ प्रोखकर ११ अपना जन्म बिगाड़ा १२ मानसिंह
का किया हुआ यह छल किया नहीं रहा ॥ ३१ ॥ ३४ ॥ १५ उस छत्री ने

जानि यहहि पंचन निहचै जिय, कुमर छत्रसिंह सु तब नृप किय ३५
 किय कतिकन पुहवीस परिच्छा, दीसी तदपि गहिलपन दिच्छा ॥
 सर्पहु तँहँ छोरे कति सूचत, गहि लिय तेहु डरयो नहिँ छलगत ३६
 अधिक बिपन्न रहयो नृप असैं, परिजन सुख कोउ न तँहँ पैंसैं ॥
 जो प्रभुकी सरसू तस रानी, सेवत रही सोहि भटियानी ॥ ३७ ॥
 पै तानैहु न आसय पायो, दह छल असो वेस दुराघो ॥

सुभट प्रताप बूढ़सू सासक, यह हो जदपि अर्धास उपासक ॥ ३८ ॥
 जानैं तदपि तथा जड़ जानिय, खेटक १ खगग २ उठाइ रु आनिया
 दुव २ हि करे पुनि कुमर निवेदन, भट सब मिले रहयो इम भेदन
 कतिकन परनारिन रस कहि कहि, चपल कुमर मोरयो उत चहि
 चहि ॥

उपदसादि रोग प्रकटे इम, कामुर्क चिर वैभव विलसैं किम ॥ ४० ॥
 भनैं १८७२ सकहि प्रभुके कवि भूवर, पायो भैव असिता २ दि ३ उ
 उज ८ पर ॥

कवि जैन कहु श्रद्धोचित मैह किय, दान द्विजादि बुँधन समुचित
 दिय ॥ ४१ ॥

इत बुँदिय सक गुन हय बसु इक १८७३, असित २ सैहस्य १० मा
 स तिथि आदिक १ ॥

सरसरंग नामक खवासि सुव, बिनयसिंह १ बुँदीस कुमर हुवा ॥ ४२ ॥

॥ ३५ ॥ १ राजा की परीक्षा की २ बावलेपन की क्रिया ॥ ३६ ॥ ३ विपद्ग्रस्त
 ४ पास के अपने मनुष्य ५ रावराजा रामसिंह की सासु और मानसिंह की
 राणी ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ १ ढाल तरवार ॥ ३९ ॥ ७ गरमी (आतशक) आदि ८ कामी होवै
 सो बहुत समय तक वैभव कैसे भोगै ॥ ४० ॥ ९ हे भूपति कहे हुए सम्वत
 (अठारह सौ बहत्तर) में आप के कवि (सूर्यमल्ल, इस ग्रन्थकर्ता) ने ११ कार्तिक
 यदि एकम को १० जन्म पाया १२ सूर्यमल्ल के पिता (चंडीदान) ने अर्द्धा के
 उचित १३ उत्सव किया १४ और ब्राह्मण आदि पण्डितों को दान दिया ॥ ४१ ॥
 १५ पौष बदि ॥ ४२ ॥

इहिं १८७३ सक इत पुणपापुर अतर, बाजेराय पेसवा *भूवर ॥
 अग्नेजनको अमल उठावन, इच्छा करि भू सब अपनावन ॥४३॥
 तत्य रजीडटी डेरन तक, अनल लगायो प्रेरि अचानक ॥
 समर रच्यो कपनी सिपाहन, इत उत बहुत भरे उच्छाहन ॥४४॥
 दोलतरावहु बैर दिखावन, पठयो दल नेपाल मेलपन ॥
 पत्र किमहु ते ईन पकरापे, अग्नेजन गोचर तव आये ॥ ४५ ॥
 आश्रम हय वसु ससि १८७४ सक अतर, सन दिस जित्ति कप-
 नी सगर ॥

लिय अजमेर गजि मरहठन, पापउ तजि लाहोर जईपन ॥ ४६ ॥
 खानकपूर १ रु भीरखान २ दुवर, हुलकर भट तासो बदलत हुव ॥
 तिनमें मीरखान इहिं अतर, सजि तोपन जेपुर किय सगर ॥४७॥
 ताको छिन्नि तोपखाना तव, अग्नेजन तस मद मेटयो अब ॥
 पुनि इतउत लुटंक जे पाये, ते सब ओरहि वृत्ति लगाये ॥ ४८ ॥
 सध्याकेहु मेदि मद १ साइस २, निखिल करे रजवारे निज बस ॥
 लार्ड मारकित हेस्टिंगज १ ७ जई, क्रम सप्तम ७ जेनरल हुतो तई ४९
 तिहिं पठयो रजगग्न अतर, टाड १ नाम पहिलो १ अजट बैर ॥
 कोटा तिहिं भल्ल सु सासितकिय, जाजपुग्गुगानहिं दिवाड दिय ५०
 पहिले सक अहावन ५८ अतर, भीम रान गनतैं भजाइ अर ॥
 भिल्लहडा लग जित्तिलई भुज, तवतै जाजपुर सु इनको हुव ॥५१॥
 सोलह १६ अब्द अमल कोटा किय, अत्र जालम रानहिं पच्छोदिय
 कोटाके धन करि पहिले क्रम, ईदुदा बधिय गढ उत्तम ॥ ५२ ॥
 तई भट विष्णुसिंह सगताउत, जालम रक्ख्यो निचित चक्र नुत ॥

* भूपति ॥ ४३ ॥ १ अग्नि लगाई ॥ ४४ ॥ २ अग्नेजा ने इदखने में आये ॥ ४५ ॥
 ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४ लुटरे ॥ ४८ ॥ ५ सय ॥ ४९ ॥ ६ अष्ट ७ आका जाखमसिंह
 को ८ दह दिया ॥ ५० ॥ ९ सीध ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ १० पूर्ण सेना सहित

मारें जिहिँ सहुँसन रन मैनेँ, पारे कुंठ रहे नहिँ पैनेँ ॥ ५३ ॥

इम तागढ जुत जाजपुर सु अब, रान तंत्र हुव सहित साज सब ॥

उक्त १८७४ सकहि चितपावन द्विज इन, बाजेराय पेसवा भ
जित ॥ ५४ ॥

पुण्या तजि अंग्रेजन पय परि, धी अबे ब्रह्मावर्त रहन धरि ॥

पाइ दम्भ बसुलकख ८००००० अन्नप्रति, रह्यो बिठूर फेलिँ भोजन रति
जिहिँ चाकर हुलकर १ संध्या २ सैम, पिसन लहि सु रह्यो इम
अप्रम ॥

हारि महीदपुरहि हुलकर बल, इनके बंस हुवहुँगा कि विना अल ५६

महिप नागपुरको तजि निज महि, गो भजि सरन जोधपुर भय गहि

मान नृपहिँ कछु प्रबल न मान्यौँ, पै अंग्रेजन नय पहिचान्यौँ ॥ ५७ ॥

वाको मुलक बहुत लहि अप्पन, थिर कछुमैं तस कुल किय

थप्पन ॥ ५८ ॥

सके उक्त १८७४हि नवमी ९ पोस १० असित २, इन जैपुर जगतेसैं

मरयो ईत ॥ ५८ ॥

गनिका उक्त आदि तरुनी तह, दुव चालीस ४२ जरी नृप बसु सह ॥

उक्त १८७४ सकहि लाहोर ईस इन, सिख रनजीत अरिन करि सा-

सित ॥ ५९ ॥

नाम सुजफ्फोरखान मंहाभति, प्रधन इनि सु मुलतान दुर्गपति ॥

ताके पुत्रहु मारि घनेँ तब, अमल कर्यो मुलतान दुर्ग अब ॥ ६० ॥

ताकोँ मिल्यो प्रचुर धन तामैं, सिखे इम बढ्यो अधिक सुखमामैं

१. वे मैनेँ भोटे होगये तीक्ष्ण नहीं रहे ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ २. ब्रह्मावर्तदेश में रहने

की बुद्धि करके ३. उच्छिष्ट भोजन में प्रीति करके बिठूर में रहा ॥ ५५ ॥ ४

समान ५. उत्कर्षता रहित ६. मानों विना डंक का बिच्छू ॥ ५६ ॥ ७. नीति

॥ ५७ ॥ ८. जयपुर का पति जगतसिंह ॥ ५८ ॥ ९. रसकपूर नामक वेश्या

आदि १०. दंडित ॥ ५९ ॥ ११. युद्ध में ॥ ६० ॥ १२. बहुत १३. परमशोभा में

सो कसमीर हारि इक १ सगर, दूजो २ रन तरिहै पुनि दुस्तर ॥ ६१ ॥
जगतसिंह जेपुर नृपकौ सुत, उज्ज्वात वपु न हुतो विधि अद्भुत ॥
मोहन नाम सचिव तब नाजर, नरउर दग पठाइ चतुर चर ॥ ६२ ॥
नरउर नृपको भ्रात मनोरथ, तस सुत मान बुलाइ नीति पथ ॥
जेपुर पट्ट धग्यो सु मान जब, रानिनकै जान्यो न गर्भ तब ॥ ६३ ॥
पहिले जालम विविध जतन किय, बुदीसहिं निजसुता व्याहि दिय
सो जब मरी तबदिसौं जो सठ, हुव बेरी बुदीको अतिदठ ॥ ६४ ॥
जिहिं बस रह्यो जाजपुर जोलों, तिहिं लुट्यो बुदी भुव तोलों ॥
दग सथूर १ वरोदार् आदिक, बुदीपुर ढिगलों प्रतिवादिक ॥ ६५ ॥
कटक भोजि सब लटिलपो कर, पुरबिच अमल रह्यो नृपको पर
अप्य मुदित तदपि न भय आन्यो, जालमसदा जथा नृत जान्यो ॥ ६६ ॥
उक्त १८७४ सकहि भल्ला वह जालम, लखि सु अमरेजनको
आलम ॥

बुदी सन पहिले बचक बढि, अंगरेज साधे छल नय पढि ॥ ६७ ॥
अधिक मुल्ल दै बहुत उपायन, पिहिते लुभाइ मिलाइ धूर्त पन ॥
जन अजान मानै छल जैसै, अंगरेजन अपनै करि औसै ॥ ६८ ॥
बुदीके भेंट वधु सदासौं, इदगढा १ दि ६ फोर उंपदासौं ॥
कोटा बस ए कुईक लिखाये, सब अजट १ मुँखतिमाहि सिखाये ६९
इदगढ १ रु खातोली २ ए दुवर, लुब्धि इदसल्लोत भिन्न हुव ॥
वलवनि १ ३ दग बैरिसल्लोत सु, आतरदा १ ४ मुहुकमसिंहोत सु ७०

॥ ६१ ॥ १ शरीर छोड़त समय २ यह अद्भुत रीति है कि ऐसे कामी
के भी पुत्र नहीं था ३ हलकारे ॥ ६२ ॥ ४ मानसिंह नामक ॥ ६३ ॥ ६४ ॥
५ विरोधी ने ॥ ६५ ॥ ६ हांसिख छाट छिपा ७ बिष्णुसिंह का अमल केवल
गुन्दी नगर में ही रहा ८ जैसा झूठा था तैसा ही जाना ॥ ६९ ॥ ६ ठग ॥ ७७ ॥
१० भेट ११ छाने लोभ देकर ॥ ६८ ॥ १२ समराय १३ भेट देने से १४ उस ठग
जालमसिंह ने १५ आदि ॥ ६६ ॥ १६ लोभ करके ॥ ७० ॥

लोतसु होतसु अन्त्यानुप्रासः१॥

करवाट१५ सु पिप्पलदा१६।२।७ जुग जुत, ए तीन३हि फोरे हर-
दाउत ॥

बंधु सु भट जालम प्रतिबादिक, दै इच्छित फोरे इत्यादिक ॥७१॥
बुंदीतैं न मिल्यो भद्वज जिम, सबको बहुन बढायो तिम तिम ॥
गहि कुलोभ.असो बंधव गन, परबस भये निबहि गनिकापन॥७२॥
आवत१ जात२ बैठत३ रु उठत४, जनम५मरन६ सेवन मुख सं-
गत ॥

समुखजान९ मुख रीति बढावन, कोटा रहत नित्य धन पावन७३
अधिक पटाहु मबन हित अप्पन३, सब पहिलैं सब देयँ समप्पन॥
इत्यादिक अधिकार अप्पि इम, जालम स्वबस करे सब जिम
तिम ॥ ७४ ॥

कोटा बस तिनसोहु कहाइ रु, जिम अंग्रेज प्रबोधे जाइ रु ॥
जालम छल पीछैं यह जान्यो, पछितैबोहि अजंट प्रमान्यो ॥७५॥
पै इक वचन अैन इनके पर, यातैं पलटिसके नहिँ अवसर ॥
इनको हितहु भल्ल सख्यो अति, हुलकर रोकि बचाई संहति७६
बहु उपकार ठानि यह याबिधि, निहचै इनहि भल्ल भाख्यो निधि॥
इम तंदीय छलमैं ए आयें, पुनि पुनि जाति जदपि पछिताये॥७७॥
उत रहि तदपि पिक्खि नय असहिँ, बलि दिय बंदि भूहु तस बं-
सहिँ ॥

इम नतं सिर जालम उपकारनैं, अंग्रेजहु प्रबिसे रजवारन ॥७८॥

१विरोधी जालमसिंह ने ॥७१॥२जैसा उन उमरावों को बुन्दा से बडप्पन नहीं
मिला तैसा ॥७२॥३आदि ॥ ७३ ॥४देने योग्य ॥७४॥ ५ अंगरेजों को समझाये
६ जालमसिंह का छल ॥ ७५ ॥ ७ अंगरेजों के एक वचन निवाहने का श्रेष्ठ
मार्ग है इससे ८ जसवन्तराव हुलकर को रोककर अंगरेजों के समूह को
बचाया था ॥७६॥९उसके छल में॥७७॥ १०मस्तक झुकाकर११उपकारों से ॥७८॥

उक्त १८७४ सकदि बुंदी तब आये, बुंदी पहुँ सब मान बढ़ाये ॥
तुलाराम मंत्री द्विज नागर, प्रभु सम्मति लाहिकै नय तत्पर ॥७९॥
उपाक्षिप्त दीनों अग्नेजन, जो सुनि रहे ठगे जिम जे जन ॥

सूचित १८७४ सक पचमी ५ माघ १० सित, अग्नेजन सु करार लि-
ख्यो इत ॥ ८० ॥

भारूपो हम ठिग भल्ल भ्रमाये, पुनि अब हेतु सत्य सब पाये ॥
बुंदी नृप हमरे हित बछक, तिहिँ भल्ल सु गोपित किय हम तक ८१
मोदित साइब टाढ़ महामन, सह लिपि काल कियउ बुंदीसन ॥
नत करजोरि मन्नि महमानी, बहुदिन रहि नृप किति बखानी ८२
सर हय अठ इक १८७५ पुनि सबत, इत रनजीतसिंह सिख
उद्धत ॥

पुर लाहोर अधिप साइस पारि, करि रन जय कसमीर लयो
लारि ॥ ८३ ॥

बहुरि जुज्जि पेसोर कियउ बस, तैहँ कति मरे १ भजे २ रच्छक तस
इह सेना काबल पुनि आई, लगि प्रसभँ करि घोर लराई ८४
तब पेसोर छुराइल्यो तिन, खिज्जि पुनि सु लौहँ यह लहि खिन
उक्त १८७५ सकदि जैपुर पत्तन इत, सगत राध २ मास पंच
ति १ सित १ ॥ ८५ ॥

नृप रानी भटियानी औरस, तनय भयो जयसिंह नाम तस ॥
मास च्यारि ४ अरु दिवस सप्त ७ मित, रहयो माने गद्दीपर रोचित ८६
लखि यह साइब अलटरलोनी, हेरन तब होनी १ अनहोनी २ ॥
दिल्ली सन जैपुर आयो हुत, सत्य किमहु करि कथित भयो सुत ८७

१ बुन्दी के पति ने ॥ ७६ ॥ २ अंगरजों को चरहमा (मोक्षमा) दिया ३ बुन्दी
से कोलनामा हुआ ॥ ८० ॥ ४ कारण ५ दियाये ॥ ८१ ॥ ६ लिखावट सहित
॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ७ इत ॥ ८४ ॥ ८ वैशाख मास के साथ ९ शुक्लपक्ष ॥ ८५ ॥ १०
माससिंह ॥ ८६ ॥ ८७ ॥

रूपय पंच ५ नित्य जीवन करि, मान सु दूर करयो मद संहारि ॥
 द्रंग फेरि जयसिंह दुहाई, सुनृप करयो यह सबन सुहाई ॥ ८८ ॥
 लखि सामोद नाह नाथाउत, राउल बैरीसाल बुद्धि जुत ॥
 साहब ताहि मुसाहब कीनों, निज संगहि नाजर वह लीनों ॥ ८९ ॥
 गो पच्छो इम अकटरलोनी, छोनिपें सिसु हुव जैपुर छोनी ॥
 तर्क तुरग बसु ससि १८७६ सक अंतर, इत कोटा उम्मेद धरा
 बर ॥ ९० ॥

बिधि अनुगत अब देह बिहायो, दुसह सोक तस भल्ल दिखायो ॥
 जीवन लहयो भूप इहिं जोलों, तखत रहयो प्रतिमा जिम तोलों ॥ ९१ ॥
 खाद्यहुं भल्ल दयो सुहि खायो, पहिरयो बसन इहिं जु पहिरायो ॥
 रक्खन सख दयो सुहि रक्खयो, उत्तर कछु न कबहु तिहिं अक्खयो
 असो नृप उम्मेद मरयो अब, तीन ३ तनूर्ज हुते ताकै तब ॥
 जे किसोर १ बलि बिष्णुसिंह २ जिम, तीजो ३ पृथ्वीसिंह ३ सून
 तिम ॥ ९३ ॥

जुव्वन बय ए त्रय ३ हि हुते जहँ, तखत तदीय किसोर १ धरयो तहँ
 पहिलै भल्ल जाजपुर दै करि, सुत दुव २ सहित रान भीमहिं बरि ॥ ९४ ॥
 व्याही त्रि कैनी बुल्लि प्रबल पन, तहँ मुख्य १ जु बयमें सु चिरंतन
 नृप उम्मेद सुता रानहि दिय, क्रम पुनि व्याहरान कुमरन किय ॥ ९५ ॥
 अधिप मध्य २ सुत बिष्णु २ सुता इम, रान कुमर अमरेस बरी
 तिम ॥

नाम अवान रानको लघुसुत, परिनायो सु इंद्रगढ जसजुत ॥ ९६ ॥

१मानसिंह के जीवन पर्यन्त ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ २जयपुर की भूमि पर, वह बालक भूपति
 हुआ ३ राजा उम्मेदसिंह ने ॥ ९० ॥ ४बिधि के साथ शरीर छोड़ा ५ भाला जालमसिंह
 ने ६ मूर्ति के समान ॥ ९१ ॥ ७ खाना (भोजन) ॥ ९२ ॥ ८ पुत्र ॥ ९३ ॥ ९ उस
 उम्मेदसिंह के तखत पर ॥ ९४ ॥ १० तीन कन्या विवाही ११ पुरानी (बुढ़ी) ॥ ९५ ॥ १२ ॥

इदगढेस नाम सिवदान सु, तत्थ एह ठपाइयो भगिनी तसु ॥
बलकरि बुल्लिरान कुमरन सह, जालम मल्ल बिबाहेइम जइ९७
वपु पीछे कोटेस बिहायो, पुत्र किसोर १ पट्ट तस पायो ॥
महाराय होतहि यह मानी, करतभयो जग कुजस कहानी ॥९८॥
जिहिं कछु साध्य असाध्य न जान्यो, पट्ट जिम रहन स्वतंत्र प्रमान्यो
जवनी इक जालम खवासि किय, जठर तास सुत इक १ जन्म
लिय ॥ ९९ ॥

हुव गोवर्द्धनदास नाम तस, सो बदलाइ किसोर १ करयो बस ॥
मुख्य सचिव तैहिं करन मनायो, इनमें मुरि गोवर्द्धन आयो ॥१००॥
अथ ३ भ्रात रु यह मल्ल १ चउ ४ हि तब, स्वयस करन चाहन
लगे सब ॥

पै जालम बल जाल अपूरब, कछु नय बिनु इन्ह तत्र होइ कब १०१
सैफअली अभिधान अजीठन, पलाटायो सु अप्पि बलपति पन ॥
जालम इनहिं पुत्र माधव जुत, दढमत को पकरहिं बलकरि हुत १०२
पिहित मत्र कित्रो यह पचन ५, मिच्छ १ मल्ल २ सोदर अथ ३ ५ इक मन
सोदर मध्यम बिष्णुसिंह मुनि, प्रकट रहयो इनके सम्मत पुनि १०३
चित्त मुरि सुं जालमको चाहत, बैठन पट्ट स्वबुद्धि निबाहत ॥
सैफअली अक्खिय अव सासन, देहु लखहु बुद्धि १ रु बल दासन १०४
नृप किसोर १ अक्खिय अवही नन, पुनि बिचारि सदहिं स्वतत्रपन ॥
सबतमुनिहयअट्टइदु १८७७सम, करिबिलब पहिलेनरच्योक्रम ॥१०५॥

॥ ९७ ॥ ९८ ॥ १ इस यवमी के वर से ॥ ९९ ॥ १ गोवर्द्धनदास ३ महाराय
किसोरसिंह ने उसको जालमसिंह से बदला कर अपने वश में किया
॥ १०० ॥ १०१ ॥ ४ नाम ५ सेनापतिपन से ॥ १०२ ॥ ६ पाँचों जनों ने यह
गुप्त सत्ता की ७ एक तो सैफअली यवन, दूसरा माला जालमसिंह का पास
यानियाँ पुत्र, और महाराय सहित तीनों भाई, ये पाँचों एक मन होकर ॥ १०३ ॥
८ यह बिष्णुसिंह ९ आज्ञा ॥ १०४ ॥ १० पहिले कहा हुआ कम नहीं रचा ॥ १०५ ॥

पुनि कहि सैफअली नृप प्रेरयो, अति भर पै सु झिल्लयो १ न अवेरयो
जालम हो पुरढिग बाहिर जब, तिम माधव कोटा *अंतर तब १०६
द्वार जरन सासन नृप देतहि, †लघु कठि निजन हाजरी लेतहि ॥
‡अरर जरत कछु बिधि मिस आग्रह, आत मध्य भजिगो जालम जह
जुझन द्वार हवेलीके जुरि, माधव सज्ज रूप्यो पुरमें सुरि ॥
गोपुर जुरन सुद्धि सुनि संकित, आयो सजव जैरठ जालम इत १०८
मिलि सग विष्णुसिंह मुजराकिय, लखि तिहिँ बस जालम स्वसंग
लिय ॥

सूरजपोरि आइ इम अक्खिय, खुल्लहु द्वार रोध किहिँ रक्खिय १०९
इन अक्खिय प्रभुको आदेशे न, अहो अरर खुल्लन खिन एस न ॥
तबहि कुठारन अरर तुराये, इम झल्ल रु तस भट पुर आये ११०
इक्खयो रँक्सुत हवेली आवत, माधव सकुसल जंग मचावत ॥
तब जालम तजि सोक ससाइस, गहि कर मुच्छ घोर पकरी
गस ॥ १११ ॥

बडी तोप दुव २ तँहँ बुंदीकी, लौगो भीम हुती तबहीकी ॥
प्रथित धूरिधानी १ बहु पूजी, दुस्सह करकविज्जुली २ दूजी ॥ ११२ ॥
इनके गोलांदाज बुल्लिँ अर, कह्यो प्रहार करहु महलन पर ॥
इत सुनतहि जालम पुर आयो, पगि भय सैफअली सु पँलायो ११३
तस संगहि नैठे संगी तस, बल रंचक रहिगो नृपके बस ॥

* जालमसिंह का पुत्र माधवसिंह कोटा के भीतर था ॥ १०६ ॥
† शीघ्र अपने लोगों की हाजरी लेता हुआ ‡ कपाट जुड़ते समय महाराव
किशोरसिंह का मध्यम आता (विष्णुसिंह) जहाँ जालमसिंह था तहाँ भाग
गया ॥ १०७ ॥ १ शहर के द्वार जुड़ने की खबर सुनकर २ बुढ़ा जालमसिंह
शीघ्र आया ॥ १०८ ॥ १०९ ॥ ३ स्वामी का हुक्म नहीं है ४ किवाड़ खुल्लने
का यह समय नहीं है ॥ ११० ॥ ५ अपने पुत्र माधवसिंह को ६ गांठ (घाँट)
॥ १११ ॥ ११२ ॥ ७ शीघ्र बुलाकर ८ भागा ॥ ११३ ॥ ९ उसके साथवाले

कोटाकेराजाकाभागकरबुदीआना] , अष्टमराशि-द्वादशमयुक्त (४०२३)

जब किसोर १ नृप अल्प भटन जुत, दुरघो जाइ महलन अदर
हुत ॥ ११४ ॥

पृथ्वीसिंह अनुज नृप पासहि, सस्त्रनको न दुहुन अकपासहि ॥
गन प्रासाद गिरत लाखि गोलन, फुल्ला जिम इल्लत गढ भो
लन ॥ ११५ ॥

ताजि अवरोध १ सस्त्र २ धन ३ तत्थहि, सके न लौ गज ४ इय ५ कछु
सत्थहि ॥

धन कछु इक १ सिविकाँ अतर धरि, तरि चम्मलि लौ इक्क मि-
ली तरि ॥ ११६ ॥

पयचर निकसि भज्यो सानुज पहु, बलि मगमैं जिहि छोरिगयेबहु ॥
इम व्याकुल नृप बुदी आवत, पै भबहन कछु मग्य न पावत ॥ ११७ ॥
रामलाल लछमीपुर सासक, सुन्यो इह ६६ बुदीस उपासक ॥
सोहु हुतो न तदपि तस तिप सुनि, पठई तिहि निज उभय २ इपी
पुनि ॥ ११८ ॥

दोउन २ पै चढि तब सोदर दुव २, वैं स्वस्थ रु इम अगग बढत हुव ॥
सौदर पृथ्वीसिंह ३ केर सुत, जो कोटा सासक अब छल जुत ११९
सिसु बय एहु हुतो तिन्ह सगहि, अनुचर खध बहयो जिन्ह अगहि
इम दुव २ कोस अवधि पर आवत, समुह जाइ बुदीस सुहावत १२०
अति आदर आतहि मइ आनिय, मडिप विविध उचित महमानिय ॥
अखिखप तिम तुमरो घर एसहु, देखि समय जितहि निज देंसहु १२१
इहाँ रहहु तोलौ निज आलय, जानहु धर्म जहाँ सु तहाँ जय ॥

वसके साथ ही भागे १ क्षीप्र ॥ ११४ ॥ ९ महलों का सयू ॥ ११५ ॥ ३
जनाना ४ पालकी म ५ जो मिली वसी ना ६ को लेकर ॥ ११६ ॥ ६ पैदल
७ छोटे भाई सहित राजा भगा ८ डौली आदि मार्ग म सवारी नहीं मिली
॥ ११७ ॥ ९ दो घोड़िया भेजी ॥ ११८ ॥ ११९ ॥ छोटे भाई पृथ्वीसिंह का पुत्र जो
इस समय कोटा का पति है वह पालक १ चाकरके कंधे पर चढ़ा ॥ १२० ॥ १२१ ॥

अप्पन लौ निज मतअंग्रेजन, टारहिँ१ झल्ल त्वचा जिस तेजन२ १२२
कौ मारहिँ२ कौ करहिँ सु कीलित३, कतिक बत्त खल झल्लकु-
सीलित४ ॥

कहुँ गोपाल धनीको गोधन, अपनावत न सुने रचि रोधन॥१२३॥
धरा स्वकर कर्षुक नहिँ धारत, रवासी जब तब ताहि सम्धारत ॥
कोटा इम अपनौ जैहँ कित, सडबल१ कोस२संग हम समुचित१२४
पै कुछ देस १ काल २ क्रम पिकखहु, सादहु धीरज त्वरा न सि-
कखहु ॥

विष्णुसिंह२००।२ भूपति इम बहु विधि, समुझायो कोटेस रवस-
न्निधि ॥१२५॥

महाराव तदपि न यह मन्निय, क्रम सँत्वर दिल्ली प्रपान किय ॥
इक अंग्रेज मिल्यो तह इनमैं, जालम पच्छ और सब जिनमैं ॥१२६॥
ए जिस निकसि भजे पलटत अँग, गोवर्द्धन झल्लहु तिम भजिगय ॥
इत जालम अंग्रेज उपासक, सबल रहयो कोटाधर सासक १२७
॥ दोहा ॥

इत नव९ हौयन वय उदित, राजकुमर मनि रँम२०१४ ॥

सिंह सिसु कि हथिन इनन, करै उचित वय काम ॥१२८॥

गुटिका चाप१हि पुष्प गहि, अँकुरि तस अभ्यास ॥

१ जैसे पांस की छाल (चमड़ी) निकाल देवै तैसे झाडा को निकाल
देवेंगे ॥ १२१ ॥ २ उस (जालमसिंह) को कैद करके ३ छोटे स्वभाव वाला
४ कहीं पर स्वामी का बोधन ५ रोककर ग्वाल को अपनाने नहीं सुना ॥१२३॥
और करसा ६ उसकी भूमि के हासिल को धारण नहीं कर सकता, जब तक
उस भूमि का स्वामी (मालिक) ही उसे सहायता है, ७ सेना और खजाने
सहित वह हमारे ही उचित है ॥ १२४ ॥ ८ शीघ्रता मत करो ९ अपने पास
॥ १२५ ॥ १० शीघ्र ११ सब अंगरेज जालिमसिंह के पक्ष में थे जिन में से एक
महाराव किशोरसिंह में मिला ॥ १२६ ॥ १२ शुभ कर्म के पलटते ही ॥ १२७ ॥
१३ नौ वर्ष की अवस्था में १४ रामसिंह ॥ १२८ ॥ १५ उस अभ्यास में ७५

रामसिद्धकापालपावस्थामेंशस्त्राभ्यास] अष्टमराशि-वाङ्मयमपूज (४०२५)

मात नित्य करि तदनु पटु, बिरचहिँ बेधेय विनास ॥१३०॥

॥ घनाक्षरी ॥

नित्य करि लौ निज वयस्पन कुमर राम२०१११११,

सानुज१ सुरीति खुरलीमैं खेल रुपात करि ॥

कोहल१ मतीर२ रु दसागुल३ कपित्थ४ विल्व५,

क्रमतैं कितेही स्थूल वेधनके पात करि ॥

मडूरक१ मृत्तिकार२ मिलाये गुरु गोत्र गाढे,

खातकरि जात ज्यो बढूकनसौ बात करि ॥

तारीदै तराके जत्र स्वस्तिक१कौ फेरिदेत,

गेरिदेत गुजरन गिलोलनकी घात करि ॥ १३० ॥

॥ दोहा ॥

कटुक अंभ उछारिकैं, मर्म गिलोलन मारि ॥

अनाधार रक्खत उहाँ१, इच्छित जेत उतारि२ ॥ १३१ ॥

॥ मनोहरम् ॥

छोरिकैं गिलोल१ तदनतर सरासन२सौ,

मित्रन अखारो मडि छोड़ छिति छैतीमैं ॥

आलीढ१ रु मँट्यालीढ२ बैसाख३ रु मडल४ त्यों,

(खड़ा) होकर १ निसाने का ॥ १२९ ॥ २ सपनी समान अवस्थावालों को
३ छोटे भाई सहित शस्त्राभ्यास में कोइला (कृष्णमाँड) मतीरा ४ सरबूजा
५ केत, पीला ६ छोहे के मल (कीटा) और मिट्टी के मिलाये हुए बड़े और
७ गोले अड्डे करजाते हैं ७ पन्त्र विशेष ॥ १३० ॥ ८ गेंद को आकाश में
छड़ाकर ९ पिना आधार यहीं पर रखकर यहाँ तब उसको नीचे छतार लेते
हैं ॥ १३१ ॥ १० घनुष लेकर मित्रों के साथ शस्त्राङ्ग रचकर अत्माएँ से अग्नि
११ये सब पैतरे हैं जिनमें दाहिने पैरको आगे थड़ाकर बाय पैर को समेटने का
नाम आलीढ है १२ आलीढ से छुटा करना मँट्यालीढ है १३ एक पित्तस्त
(वेध, विहस्त) के अंतर से दोमों पैरों को रखकर बाय अगाने का नाम बैसा
ख है १४ गोलाकार फिर कर बाय अगाने का नाम मडल है

साधि *समपाद५ थान रीति दित ठैतीमें ॥
 शब्दवेध आदिक समस्त विधि साधनकै,
 पूरन प्रगल्भ प्रभा पारथकों पैतीमें ॥
 कातर कपोल कोपे फीलन१कों फेरिदेत,
 गेरिदेत गुंजरन कलंब कमनैतीमें ॥ १३२ ॥

॥ पादाकुलक्रम ॥

इत नृप विष्णुसिंह२००।२ बुंदीईन, दिष्टंतल सुचि४पुण्यमास१५रवि
 दिन ॥

छोरंगो बपु तैं उचित रीति छत, विदित आयु दिष्टानुसार बत१३३
 ॥ दोहा ॥

सक नव दुव वसु इक्क १८२९ सम, आसित२सहस्य१०अनेह॥
 तिथि तेरसि१३ तैं अवतरंगो, उद्वं लहि पहु एह ॥ १३४ ॥
 व्योम त्रि वसु ससि१८३०सुंक्र३बदि२, तिथि एकादसि११तत्थ
 राज्यासन पायो रुचिर, संभर सिसुंहि समत्थ ॥ १३५ ॥
 वासरं दुव२ बर्जित रववय, पावत नितिनव१ पच्छ ॥
 विष्णुसिंह२००।२पायो विदित, अजित१६९।२पहु इम अच्छ
 कुलभव अहु८ विवाह किय, इनमें वय अनुसार ॥
 पंच५ तनय इक्क१ पुत्रिका, पाये अधिप उदार ॥ १३७ ॥
 तीन खवासिनमें तनय, इक्क१ विनैय१ लहि आप ॥

*दोनों पैरों को बराबर रखकर घाण चलाने को समपाद कहते हैं, ये ही पाँच
 पैतरे धनुषविद्या जाननेवालों के हैं १ पूर्ण बुद्धिमान् २ पैतरों (पदव्यासों) में
 अर्जुन के समान क्रांतिवाला ३ कपोलों के कायर ऐसे कोपे हुए हाथियों को
 फेरदेता है और तीरों से ४ चिरमियों को गिरा देता है ॥ १३२ ॥ बुंदी का पति
 वैभाग्य के आधीन ७ खेद है कि आयु भाग्य के अनुसार ही होती है ॥ १३३ ॥
 ८ पोष बदि ९ यह राजा जन्म लेकर उत्पन्न हुआ ॥ १३४ ॥ १० ज्येष्ठ मास ११
 बालक पन में ही ॥ १३५ ॥ १२ दो दिन कम साढ़े चार मास की अवस्था में
 ॥ १३६ ॥ १३७ ॥ १३ एक विना नीतिवाला हुआ

वसु इय७८ सक इम छोरि वपु, पायो लोक धुराप ॥१३८॥

नाम नयनसोभा१ निपुन, मजु पातुरिन माहिं ॥

कथित काल नृप तनु तजत, इहाँ गर्भ तस आहिं ॥१३९॥

पञ्चभास पीछें प्रसव, तनपा प्रकटी तास ॥

रूपकुमरि जो रावरी, भगिनी प्रभु गुन भास ॥१४०॥

पोस१० असित२ तिथि प्रतिपदा१, कनी सु भावीकाल ॥

पेहै अथ उद्गन प्रथित, प्रभु जँहँ अप्प नृपाल ॥१४१॥

ए क्रमकरि खट६ अरु उभय२, पैजा अड्ड८ नृप पाइ ॥

गदित काल परलोक गत, जग जस अतुल जगाइ ॥१४२॥

॥ गीति ॥

छत्र महलसौं लगतहि उत्तर४।७ दिस अक्षवाट१ अभिधानी ॥

बैजाग इष्ट धिति चाहि, तिनको प्रासाद निर्मयो नृपने ॥१४३॥

याहीविधि अभिरामकै, पच्छिम३।५ दिस अर्द्ध-कोस निज पुरतैं ॥

विष्णुविलास१।२ स नामक, उपवर्न प्रेक्ष्य निर्मयो असैं ॥१४४॥

प्रभु रावरी प्रभू इम, पुरतैं दक्खिन२।३ समीप बहु व्ययसौं ॥

जग सुखदा निज घर जिम, चतुष्टायतैं धर्मसालिका१ बिरची१४।५

निज पति इष्ट प्रमानत, ता बिध बजागैं मूर्ति पधराई ॥

इच्छित भोजन आनत, अथ जन जाके सदाव्रत उमहे ॥१४६॥

सुदर घट१ बनायो सुदरसोभा१ खवासि सभैरकी, ॥

हरिमदिर१ जुत ठायो, प्रासादगन२ जह तौल तट पुरमैं ॥१४७॥

१ दुर्लभ लोक पाया ॥१३८॥१३९॥१४०॥१४१॥१ सन्तान १ ऊपर कहेहुए समय

में ॥१४२॥४।१।५।१५।१६।१७।१८।१९।२०।२१।२२।२३।२४।२५।२६।२७।२८।२९।३०।३१।३२।३३।३४।३५।३६।३७।३८।३९।४०।४१।४२।४३।४४।४५।४६।४७।४८।४९।५०।५१।५२।५३।५४।५५।५६।५७।५८।५९।६०।६१।६२।६३।६४।६५।६६।६७।६८।६९।७०।७१।७२।७३।७४।७५।७६।७७।७८।७९।८०।८१।८२।८३।८४।८५।८६।८७।८८।८९।९०।९१।९२।९३।९४।९५।९६।९७।९८।९९।१००।

प्रनाया ॥१४३॥ ७ सुन्दर ८ बाग ९ मन्त्रीन बनाया ॥१४४॥१० हे प्रभु रामसिंह

आपकी माता ने ११ चौकोन (चौरस) ॥१४५॥ १२ हनुमान की ॥१४६॥ १३

चहुवान (विष्णुसिंह) की १४।१।५।१५।१६।१७।१८।१९।२०।२१।२२।२३।२४।२५।२६।२७।२८।२९।३०।३१।३२।३३।३४।३५।३६।३७।३८।३९।४०।४१।४२।४३।४४।४५।४६।४७।४८।४९।५०।५१।५२।५३।५४।५५।५६।५७।५८।५९।६०।६१।६२।६३।६४।६५।६६।६७।६८।६९।७०।७१।७२।७३।७४।७५।७६।७७।७८।७९।८०।८१।८२।८३।८४।८५।८६।८७।८८।८९।९०।९१।९२।९३।९४।९५।९६।९७।९८।९९।१००।

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टमराशौ विष्णुसिंह
चरित्रे नगरकोटाधिपनिपपालागमनांगरेजतत्पुनर्निःसारणा १ अंगरे-
जलखनऊपोधनजयपुरपोधपुरसुहृद्भावसंबन्धकरणा २ ईष्टइंडियाक
म्पनीगोरखाविजयनलंकाद्वीपसमासादन ३ सचिवेन्द्रराजवधदोषा
च्छादनमानसिंहोन्मादत्वप्रकटनयुवराजच्छत्रसिंहमरणा ४ ग्रन्थक-
तसूर्यमल्लजननसर्वतोविजयंगरेजाजमेराक्रमणा ५ अंगरेजप्रथमाज
शूटकर्नलटाडराजपुत्ररथानागमनभल्लजालमसिंहदण्डनपूर्वराणा -
भीमसिंहार्थजाजपुरादिप्रान्तप्रापणा ६ अंगरेजमृद्दीतव्यचपुत्यापति
बाजेरावपेसवाविठूरनिवसननागपुरेशपोधपुराधीशशरणागमनतद्वंश्या
र्थेषज्जीविकाप्रदापन ७ निःसंतानजयपुराधीशजगत्सिंहमरणा नरउरा
गतमानसिंहपट्टाक्रमणा विरोधीभूतभल्लजालमसिंहबुन्दीदेशलुण्ट
नपूर्वकरग्रहणा ८ छलकारितांगरेजसंधिपत्रभल्लजालमसिंहबुन्दीसा

श्रीवंशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायण के अष्टमराशि में, विष्णुसिंह के चरि-
त्र में, नेपालियों का नगरकोट तक घटना और अंगरेजों का उनको पीछा
हटाना १ अंगरेजों का लखनेज में युद्ध होना और जयपुर जोधपुर के राजाओं
का मित्र होकर परस्पर सम्बन्ध करना २ ईष्ट इंडिया कम्पनी का गोरखों
को जीतना और लका नामक द्वीप को विजय करना ३ जोधपुर के राजा
मानसिंह का अपने सचिव इन्द्रराज को मरवाकर उस दोष को दवाने के लिये
फरेब करके वावलापन प्रसिद्ध करना और मानसिंह के पुत्र छत्रसिंह का
राजा होकर मरना ४ इस ग्रन्थ के कर्ता सूर्यमल्ल का जन्म होना और अंगरेजों
का सब ओर विजयी होकर अजमेर लेना ५ अंगरेजों के प्रथम अजंड करनल
टाड का राजपूताने में आना और भाला जालमसिंह को दण्ड देकर जाजपुर
आदि प्रान्त खदयपुर के महाराजा भीमसिंह को दिलाना ६ पूना के पति
बाजेराव पेसवा का अंगरेजों से पिनवन लेकर विठूर में रहना और नागपुर के
राजा का जोधपुर में शरण आकर उसके कुल को कुछ जीविका मिलाना ७
जयपुर के राजा जगतसिंह का बिना सन्तान मरने के कारण नरवर से आकर
मामसिंह का पाट बैठना और जालमसिंह भाला का विरोधी होकर बुन्दी
के देश को लूटकर हासिल लेना ८ जालमसिंह भाला का अंगरेजों से छलके

मन्तेन्द्रगढखातोल्यादिकोटाराज्यसमेलन ९ पश्चाद्वुन्द्यगरेजसधि
 पन्नभवनरराजीतसिंहविजितपेशोरप्रान्तकाबुलसेनागमनतत्पत्पादा
 न १० जयपुरेगजगत्सिंहराज्ञीभटियाणीजठरजयसिंहजननहेतुदत्त
 पत्पद्मपञ्चमुद्रमानसिंहनिष्कासनानन्तरजयपुरप्रान्तजयसिंहज्ञापव
 र्तन ११ कोटानृपोम्मेदसिंहमरणाकिशोरसिंहतत्पट्टासादनकोटास
 चिवभल्लजालमसिंहविरोधहेतुकिशोरसिंहपलायन १२ बुन्दीपति
 विष्णुसिंहपञ्चत्नगमनतदनेहरचितस्थाननिर्माणसूचन द्वादशो मयू-
 ख ॥ १२ ॥

आदित ॥ ३६२ ॥

समाप्तमिदं विष्णुसिंहचरित्रम् ॥

साथ अहदामा करपा कर बुन्दी के उमराव इन्द्रगढ, खानोजी आदि को
 कोटा के राज्य में मिलाना ९ जिनपीछे गारेजों का बुन्दी के साथ अहदना
 मा होना और रणजीतसिंह के विजय किये हुए पेशोर को कायश की सेना
 का पीछा होता १० जयपुर में राणी भटियाणी के बदर से राजा जगतसिंह
 के औरस पुत्र जयसिंह का जन्म होने के कारण मानसिंह को पाँच रुपयेरोज
 की पिनसन देकर निकाले पीछे जयपुर में जयसिंह की बुराई करना ११ कोटा
 के राजा उम्मेदसिंह का देहान्त होकर किशोरसिंह का पाट बैठना और कोटा
 के लखिभ भालाजालमसिंह से महाराज किशोरसिंह का विरोध बढ़कर कोटा
 से किशोरसिंह का भागना १२ बुन्दी के राजा विष्णुसिंह का देहान्त होना
 और उनके समय में बनेहुए मकानों की सूरना करने का बरहवा १२ मयूख
 समाप्त हुआ ॥१२॥ और आदि से तीन सौ पासठ ३६२ मयूख हुए ॥

इति विष्णुसिंहचरित्र समाप्त हुआ ॥

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

॥ अथ रामसिंहचरित्रम् ॥

॥ प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

श्री मम राज१ सरस्वती२, बखसहु बुद्धि सु बित्त ॥
कहिपत राम चरित्र अव, जो इहि ग्रन्थ निमित्त ॥ १ ॥
एकादश११ दिन करि अखिल, कैरटा१दिक विधि काज ॥
पुनि अत्रसर लहि राम२०११४ प्रभु, अप्प भये अधिराज॥२॥
द्विज पुर१के अरु देस२के, भोज तदिन असेस ॥
दान विविध बहुतन दये, गोगन१ पुरट२ पदेस३ ॥ ३ ॥
संजातीय१ कविकुल२ सकल, जिम पुर३अखिल जिमाइ॥
ललित किति मुख मुख लई, भूप सवन मनभाइ ॥४॥
नव९ अब्द रु खट६ मास मित, इहि वष समय अर्धान ॥
विधि अप्पहि दिन बारहम१२, कुल इह६१न ईन कीन ॥५॥
सवत गज हय अठ ससि १८७८, स्त्रावन५ बारसि१२ स्पाम
गुरु५ मृगसिर५ व्याघात१३गत, तैतिल४करन सु तौम॥६॥
समरकद६ जहँ सहैरयो, नारायन१८७१२ नरराज ॥
भूपति तँहँ अभिसिक्त भो, कथित सद्धि विधि काज ॥ ७ ॥
आसापूनि१ अभिका, पीतांबर हरि पाप ॥

१ बुद्धि स्त्री श्रेष्ठ धन २ जो इस ग्रन्थ (व्रजभास्कर) के पनन का कारण है
वह रामसिंह चरित्र कहलात है ॥ १ ॥ ११ एकादशाह आदि सप्त आठों के कार्य
काके ४ है राजा रामसिंह आप स्वामी हुए ॥ २ ॥ २० उस दिन सप्त ब्राह्मणों को
भोजन कराया १ सुवर्ण ७ मूनि ॥ ३ ॥ ८ अपनी जातिवाल (द्विज) और
बारणों के सप्त कुल को ॥ ४ ॥ विधि पूर्वक आपको लाट्टाओं का ६ पति
किया ॥ ५ ॥ १० व्याघात नाम योग जाकर ११ तहाँ तैलिल करण में ॥ ६ ॥
जहाँ राजा नारायणदास ने समरकद को १२ मारा था तहाँ कहाहुआ विधि
पूर्वक कार्य साधकर राजा का अभिषेक हुआ ॥ ७ ॥

पूजन करि प्रनम्यौ सु पहु, समुचित मन्त्रि सहाय ॥ ८ ॥
 पुनि पधारि महलन प्रथित, रचि अर्चित श्रीरंग ॥
 पट्ट१ पंचप्रसिख सीस धरि, बैठो पट्ट२ अभंग ॥ ९ ॥
 गुरु१बुध२कवि३भट्ट४सचिव५गन, अतुल सभा सब आइ ॥

॥ १० ॥

॥

॥ ११ ॥

॥

॥ १२ ॥

पुनि अजंट आइउ इहाँ, साहब टाड१ स नाम ॥
 सभा बहुरि दूजी२ सुपहु, रची उचित अभिगम ॥ १३ ॥
 श्रावण५ विसद१ चउत्थि४ सिर, पंचमि५ आगम पाइ ॥
 सद्यो पुनि दसतूर सब, सूचित क्रम दरिसाइ ॥ १४ ॥
 टाड१ अजंटहु गज१ तुरग२, भूखन३ सस्त्र४ दुकूल५ ॥
 उपदा१ किय अधिराजकै, मुदित नख हित मूल ॥ १५ ॥
 उत्तारन१ सद्यो उचित, रीति सहित नति रक्खि ॥
 कह्यो कहहु हमपर हुकम, सब अनुगत नय सक्खि ॥ १६ ॥
 महिमानी आदरि बहुरि, कारि मभु हुकम बिकट ॥
 तदनन्तर लौ सिक्ख गो, साहब टाड अजंट ॥ १७ ॥
 अवसर क्रम भाँधी इहाँ, व्याह१ प्रंजारदि बखान ॥

॥ ८ ॥ १ मस्तक पर पांच शिला (कुलंगी) का शिरपेच धारण करके “हम ऊपर लिख आये हैं कि पांच शिला का शिरपेच धारण राजापन का चिन्ह है” २ किसी से भंग नहीं होनेवाला महाराजराजा रामसिंह पाट बैठा ॥ ९ ॥ ३ पण्डित ४ चाण ॥ १० ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ वस्त्र ६ राजा को भेट किये ॥ १५ ॥ नीति पूर्वक नम्रता रखकर अजंट टाड साहब ७ वाम ओर बैठा ॥ १६ ॥ ८ स्वामी रामसिंह के हुकम को निष्कण्टक करके ॥ १७ ॥ समय के क्रम से भाइयों सहित राजा रामसिंह के आगे होनेवाले व्याह और १० सन्तान आदि का वर्णन करते हैं सो

भ्रातन जुत प्रभुको भनत, समुम्हहु सैरूप सुजान ॥ १८ ॥

॥ पट्टपात ॥

भे उपयमं चउ४ अधिप प्रथम१ तिनपौहिं जोधपुर ॥

मानं सुता रठोरि परनि आनी रानी घुर ॥

नाम सुरूपकुमारि२०११ प्रसव जाके सु पुत्र मनि ॥

कुमर भीम२०२१ प्रभुकेर जई जनम्यो पाटव खैनि ॥

दूजे२ विवाह पुर मुम्हनां सेखाउति व्याही सु वर ॥

अभिधा गुलावकुमारि२०१२ सु उचित स्पामसिंह तनया सुघर१९१

॥ दोहा ॥

गया पधारे अप्प जब, पुर नागोद पधारि ॥

तीजो३ उपयम किन्न तई, वारिद कविन विदारि ॥ २० ॥

विदित सुता बलभदकी, मुन गन अतुल गहीर ॥

चन्द्रभानु कुमारि२०१३ सु चतुर, व्याही रानिय बीर ॥ २१ ॥

प्रनिहारी कुलकरि मथित, जाके औरस जात ॥

रगनाथ२०२२ सुत रावरै, दूजो२ जस भवदात ॥ २२ ॥

ए त्रय३ रानी अरु लहे, सूनु उभय२ कुल सुद्ध ॥

चउ४ खवासि तिनकी चतुर, सतति सुनहु प्रभुद्ध ॥ २३ ॥

पट्ट सुरूपलतिका२ प्रथम१, तामै हुव सूत तीन३ ॥

अर्जुन१ अविदित नाम अरु, गोवर्द्धन३ गुन पीन ॥ २४ ॥

सदानद२ दूजी२ सुघर, जाके जुग२ सुत रूपात ॥

नारायन१४ जेठो१ कुमार, जगन्नाथ२१५अनुजात२ ॥ २५ ॥

१ श्रेष्ठ बुद्धिवाले समासद् जानो ॥ १८ ॥ २ राजा के चार विवाह हुए
३ जोधपुर के महाराजा मानसिंह की पुत्री ४ रामसिंह के ५ चतुरता की खान
६ नाम ७ सुघर (चतुर) ॥ १९ ॥ २० ॥ ८ गभीर ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ ९
जिसका नाम मालूम नहीं ॥ २४ ॥ १० छाटा भाई ॥ २५ ॥

सरसरंग३ तीजी३ प्रसव, रवीय नियति अनुसारि ॥
 कन्या इक१ सुपठित भई, नाम सुभद्रकुमारि१ ॥ २६ ॥
 आनंदा१दिकवेत्ति४ इम, चोर्था४ चतुर खवासि ॥
 कन्या इक१ वल्लभकुमारि१२, भई तास गुन भासि ॥ २७ ॥
 सुत इम पंच५ रु दुव२ सुता, प्रजा खवासिन सत्त७ ॥
 प्रथम१ तृतीय२ रु पंचम५ सु, त्रय३ सुत सायुग तत्त ॥ २८ ॥
 बाल बयहि बल्लभकुमारि२ धीदा वसु विधि धारि ॥
 विद्यमान तनया बडी१, सूरि सुभद्रकुमारि१ ॥ २९ ॥

॥ पट्पात् ॥

प्रभुअनुजनु गोपाल२०१५ रठ्ठरन गागरनी ॥
 चन्द्रकुमारि२०११ रघुनाथ सुता अप्रज१ इक१ परनी ॥
 अरु खवासि भव अनुज विनय१ व्याहयो उनियारा ॥
 जालमजा आनंदकुमारि१ सुहु प्रसव असारां ॥
 अरु रूपकुमारि१ विनया१सुनैजा बीकानैर नरेस सुत ॥
 जीवै१रहि रक्खि आश्रित इहाँ परिनाई प्रभु प्राति जुत ३०
 काका सुत धौकल२०११कुमार फतमल्ल२०११उक्त दुव ॥
 बीकापुर नृप अनुज अजब तनया व्याहतहुव ॥
 चन्द्रकुमारि२०११ आनंदकुमारि२०११क्रम सन अभिधार्क१रि
 जैपुर विरचि विवाह बिंद सोदर आयेबरि ॥
 रहि अचिर१ परे पट्टनिसम१ जे जुग२ जनक१पितृ१व्य२नुत ॥

१ अपने भाग्य के अनुसार २ श्रेष्ठ पदीहुई ॥ २३ ॥ ३ आनंददेवल ॥ २७ ॥ ४
 तहाँ तीन पुत्र आयुष्यवाले हुए ॥ २८ ॥ ५ पुत्री दमर गई ७ पंडिता ॥ २९ ॥
 ८ रामसिंह का छोटा भाई ९ विना सन्तानवाली १० बालक जनने में असार
 ११ विनयसिंह की छोटी बहिन १२ जीवनसिंह को बुन्दी में आश्रित रखकर
 ॥ ३० ॥ १३ बीकानेर के राजा के छोटे भाई १४ नाम १५ थोड़े समय रहकर
 १६ पाटण के युद्ध में मारे गए १७ पिता और काका सहित

अल्पायु बीजे इनकेहु इम सके जनमिन सुता१ न सुत२।३१।

भोमसिंह२०१।३ इन्ह अनुज अप्प व्याहो रचि उच्छव ॥

नगर ऊमरी नाम मनित सीसोद बस भव ॥

भोम सुता महतापकुमारि२०१।१ रुपौपित अभिधाकरि ॥

पुत्री दुव२ इक१ पुत्र प्रकटहुव तास गर्भ परि ॥

तहँ अजयकुमरि१ जेठी१ सुता कृष्णाकुमरि२ दूजी२कथित॥

सुत विस्वनाथ२०२।१इनसौ अनुज विनु निकेत जो अव व्यथित३२

॥ दोहा ॥

भोम२०१।३ तनूज खवासि भव, बलदेव१ सु मृत बाल ॥

इक१ खवासि भव अगजा, नवनदा० इहिँ काल ॥ ३३ ॥

सेर२००तनय जयसिंह२०१।१सो, प्रभु व्याहो हित खुल्लि ॥

तनया देवीसिंहकी, डोला बुदिय बुल्लि ॥ ३४ ॥

कुल भटियानी नाम करि, कदियत वदनकुमारि२०१।१ ॥

सिसु इक१ मृत व्है तस सुता१, न सके नामहु पारि ॥ ३५ ॥

राजाउतिव्याहयोविजय२०१।२, राजकुमरि२०१।१अभिधान॥

ग्राम खजूरी धाम भव, उदय सुता मतिमान ॥ ३६ ॥

इक सुता याकै भई न परयो तासहु नाम ॥

अल्प आयु लहि पच५ अह, जो परलोक जंगम ॥ ३७ ॥

॥ चूडाल दोहा ॥

सभू२०१।१ देवीसिंह२००।२सुत, दुर्गापुर पति व्याह तीन३किय ॥

इक१नारव मुहुकम सुता, चद्रकुमरि२०१।१ पुर लाव व्याहिलिय३८

तखतकुमरि२०१।२ दूजी२ वधू, चालुक रत्नसुता सु लई वरि ॥

१ अल्प आयु होने के कारण ॥ ३१ ॥ २ नाम से प्रसिद्ध शिवमा घर (ठिकाना)

४ अथ पीडित है ॥ ३१ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ५ पाँच दिन की अल्प

आयु लेकर ५ परलोक गई ॥ ३७ ॥ ३८ ॥

कूरम सुरतानोत कुल, लघु आनंदकुमारि२०१।३ प्रीति धरि।३९।
संतति संभूसिंह२०१।१कै, पंच५ तहाँ सुत च्यारि४ सुता इक१ ॥
इक१ प्रथमा १ इक१ अंतिमा३, तनया १।५ जुत दूजी२ हु जन्य
त्रिक३ ॥ ४० ॥

इन पंच५नमें इक१ अनुज, बच्यो नाम ओंकार२०२।४ आयुवत्त ॥
इतर गये तजि तजि असुनै, तनया तनय बिदाइ छोनि तल ॥४१॥
उपयम त्रय३संभू२०१।१अनुज, कम सूचित सिवदानसिंह२०१।२क्रिय
जेठी१ राजाउत्ति जहँ, नाम सु चंद्रकुमारि२०१।१ बरी प्रिय ॥४२॥
बरी जवाहिरकुमारि२०१।२ बलि, ताही कुल दूजी२हु दिष्ट वस ॥
जेठी१ सुव सुव इक१जनि, तात सुनहु सिवराज२०१।३नामतस४३
छत्रसिंह तनुजा चतुर, रठुजरि नीजी३हु बरी बर ॥

ग्राम कचोले करि गमन, ब्रजकुमरी सिरदारसिंह१९९।४हर ॥४४॥
व्याह उभय२सामंत२००।१सुत, परन्यौं इत बलदेव२०१।१कापरनि॥
सुत चतु८क४ अरु दुव२सुता, जो सप्रज हुव तोकै इते६ जनि॥४५॥
जेठी पतनी जादवी, जो आनंदकुमारि२०२।१ नाम करि ॥

सर मथुरापुर जाइ सो, लई मनोहरसिंह सुता बरि ॥४६॥

रठुजरि दूजी२ बधू, जो महतापकुमारि२०२।२ बरी बर ॥

कमन सुता भूपालकी, इन्द्र फतैगढ जाइ दीप१९८।६ हर ॥४७॥

अय३जेठी सुत सुतनमें, हलधर२०२।१तिम हरदेव२०२।२नामहुवा ॥

अनुज सु बैरीसाल२०२।३ अरु, दूजी२कै सुत इक१ सुता दुव४८

सुत दुर्जनसल्ल२०२।४ रु सुता, राजकुमारि१ खुसहालकुमारि२जहँ

दंग सलहानाँ दिय बडी१, कुल कबंध तखतेस१ बिंद कहँ ॥४९॥

कृष्ण२०१।२ बिरुद २०१।३ बलदेव २०१।१ के, अनुजन इक१

१ शीघ्र ॥३६॥४०॥ २ अन्य प्राण छोड़ छोड़ कर गये ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥

३इतने बालक जनकर सन्तानवाली हुई ॥४५॥४६॥४सुन्दर ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥

इक१ व्याह करे हम ॥

प्रथित जाइ सिवराजपुर, तकि कवध चदेल बस तिम ॥५०॥

क्रमकरि नाम वैधूनके, उमरावकुमरि२०१११ कचनकुमरि२०११२

दुव२॥

इनमै इक१कौ अंगजा, स्पामकुमरि१ विरुदेस गेह हुव ॥५१॥

इम अनुजन जुत रावरे, व्याह१ प्रजा२ कम सग बखानित ॥

सब सतति उपपम सुनहु, अवसर अव प्रभुराम२०११४प्रमानित५२

॥ पट्पात् ॥

जगतसिंह नृप नवहि प्रचुर रानिन परन्यो पहु ॥

भट्टी जैपुर सुभट वने दे तब कन्या बहु ॥

जहँ राउल कुल१ देवराज कुल२ जात जथाक्रम ॥

बुदी पठयो विजय सुता डोला इक१ सत्तम ॥

अरु मेघसिंह पठयो अपर२ दुव२ डोला आये विदित ॥

पट्प कुमार भीम२०२११सु प्रगुन परिनाये प्रभु हेरि हित५३

कन्या जीवनकुमरि२०२११ विजय तनया पहिलो१ वरि ॥

व्याही बेलि वर बैगनि मेघतनया ऋद्धिकुमरि२०२१२ ॥

कथित गुलावकुमरि२०२१३ कैमन तीजी३ कुमरानिय ॥

वसवहाला व्याहि उचित अति जस घर आनिय ॥

रघुनाथसिंह२०२१२ तदनुजै कुमर मितै जीवितपाउससमय

नागोद द्रग मातुल निलर्थ, वपु उज्जिम्य दसअब्द वय५४

१५सिंह ॥ ५० ॥ २ जियो के ३ पुत्री ॥ ५१ ॥ ४ विवाह ॥ ५२ ॥ जयपुर का
जा जगतसिंह ५ बहुत राणियों को परना तब बहुत कन्या देकर भाटी ६
जयपुर के सम्राट बनगये थे ७ सुन्दर ८ विशेष गुणवान ॥ ५१ ॥ ९ फिर
१० सुन्दर बुद्धिमान ११ सुन्दर १२ बसका छोटा भाई १३ योद्धे समय जीवित
रह कर १४ मामा के घर १५ शरीर छोड़ा ॥ ५४ ॥

जाठरि धारि सुरूपलता १ जिहिं जामि सकारकी जच्चा बजी जनि
अर्जुन १ जेठो १ कुमार वहै परन्यो पहिलै १ मह भालरापटनि ॥
सो मदनधिप भल्ल सुता महिला बडी १ खूबकुमारि १ बधू मनि ॥
आयो निजोचितै व्याहियहाँ हितसौँकविलोकन दारिदकोँ हनि ५५

॥ थनाक्षरी ॥

पीछै जाइ तीन ३हि कुमार व्याहे जोधपुर,
अर्जुन १ द्वितीय २ बरी सूरजकुमारि २ इत ॥
त्योँ कल्याणकुमरि १ २ विवाहयो जगन्नाथ ३ ५ तहाँ,
एतो द्वै २हि भूप तखतेसकी सुता उचित ॥
सेवकीपुरेस नृप मानको खवासि सुत,
नाम सिवनाथ ताकी नंदिनी हुलास हित ॥
नामकरि राज सु कुमार १ कुमरानी निज,
मध्यम २ कुमार व्याहयो गोवर्द्धन ३ २ साम्य मित ५६।
जोधपुर भूप मानसिंहके खवासि जातँ,
पुत्र लालसिंह १ नाम द्रंग हरसोर पति ॥
सूनु ताको सुद्धकुलजा भव प्रतापसिंह १,
विहित बरातसौँ बुलाइ बुंदी मंजु मति ५
व्याकरण आदि बहु विद्यामें प्रवीन बुद्धि,
सो सुभद्रकुमरि १ खवासि सुता रम्य रति ॥
दुलही बनाइ लग्नकाल तिहिं दुलहको,

सूरूपलता ने जिसको १ उदर में धारण करके २ रामसिंह के शकार (साले)
की बहिन "पासवान" (अविवाहिता) स्त्री के भाई का नाम शकार है अर्थात्
सूरूपलता नामक पासवान जिसको जन कर जाचा (प्रसूता) बजी वह कुमार
अर्जुनसिंह ३ राजा मदनसिंह भाला की पुत्री ४ स्त्री ५ अपने उचित
अर्थात् पासवान की पुत्री विवाह कर आया ॥ ५५ ॥ ६ बराबर के प्रमाण
वाला ॥ १६ ॥ ७ पासवान स्त्री से उत्पन्न ८ शुद्ध कुल में उत्पन्न ९ सुन्दर बुद्धिवाली

आप प्रभु कूकुंद विवाही दै सुदार्य अति ॥ ५७ ॥

राम२०१४ प्रभु रावरे पितृव्यसूनु गोठपुर,
भोमासिंह२०१३ स्वामीके निवारै प्रतिकूल भनि ॥

राव फतमल्ल१ उनियाराके अधीस अर्थ,
जेठी१ सुता अजनकुमारि१ व्याही मोद जानि ॥

न गई नरूकनके कन्या इतकी कवहु,
बहुत कदाई आप तदपि स्वतन्त्र बनि ॥

व्याह यह कीनों दिष्ट तास फल दीनों वेग,
आलैय विहीन फिरै खीन अहि ज्यौं अमनि ॥५८॥

॥ चूडाल दोहा ॥

व्याह इक्षवल्देव२०११सुत, हलधर२०२१कापरनीस विवाहिय
मेरतिया रईया अधिप, देवसुत —————कुमरि२०२१ तिय५९

तस औरस प्रकटे तनय, राजसिंह२०३१ अरु वीरसिंह२०३१दुवा॥

जो हलधर२०२१इनको जनक, होत तरुनवय आसु अनसु हुव६०

उक्त उभय२ हलधर २०२१ अनुज, गलथूनी कछवाह कनी दुवा॥

————कुमरि२०२१ —————कुमरि २०२१, सह क्रम व्याहि गृहस्थ

इह ६१ हुव ॥ ६१ ॥

राजसिंह२०३१ पुर कापरनि, सासक सिसु उपयोम इक्षकिय ॥

कछवाहनके रामपुर, —————कुमरि २०३१ स नाम सबय तिय६२

इम सबही भावी३ इहाँ, सब बधुन प्रभुके विवाह१ सुतर ॥

सब सतानन व्याह बलि, जपिय अवसर रीति जथा जूत ॥ ६३ ॥

१ श्रुपण युक्त कन्यादाम करनेवाले आपने २ अष्ट दहेज देकर परगई
॥ ५७ ॥ ३ काका के पुत्र ४ भाग्य ने ५ सका फल दिया ५ बिना घर ६ बिना
मणिवाला स्त्रीण सर्प फिरै तैसे ॥ ५८ ॥ ७ रिया नगर का पति ॥ ५९ ॥ ८ ताब
(तप) से प्राण रहित हुआ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ९ कापरण के पति ने पालन में
एक व्याह किया ॥ ६२ ॥ ६३ ॥

॥ दोहा ॥

कारन पाइ प्रसंग कहूँ, भूत१ कथा क्रम भूप ॥
वर्तमान२ अब वर्णित, अप्प चरित अनुरूप ॥ ६४ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

धाइपनाँ प्रभु अप्प धवाये, इम कौमार१ लंघि इत आये ॥
अवसर पर क्रीड़न क्रम आयो, बलि पौगंड२ अनेह वितायो ॥ ६५ ॥
दसम१० अब्द अंतर दिनहुँलह, स्वामी हुव धरि धर्म१नीति रसह ॥
तबहि कालकीड़ा सब त्यागी, राजन रीति गही अनुरागी ॥ ६६ ॥
सहि सुकवि१ बुँध२ भैट३न समागम, आदरि हित समुझे सब
आगम ॥

श्रीगुरु आसानंद१ समज्या, बरनै आदि नृपन वरिब्रज्या ॥ ६७ ॥
पुनि कवि जनकै चंड२खिनपावत, सन्निधि रहि पढ़ैति समुझावत ॥
सह दुर्जनसल्ला१दि वयस्यैन, महिए विधेय सुनै सु धरै मना ॥ ६८ ॥

॥ दोहा ॥

विधिसह लिन्नोँ ताहि बय, वेद विहित उपवीत ॥

साँवित्री जप निज समय, सदै पटुन प्रतीत ॥ ६९ ॥

१ आपके सहस्र चरित्र का अब वर्णन किया जाता है ॥ ६४ ॥ २ हे प्रभु (रामसिंह) आपको पना नामक घायने स्तन पान कराया (चुलाया) ३ पौगंडता का समय विताया "पाँच वर्ष की अवस्था से लेकर दस वर्ष की अवस्था का नाम पौगंड है" ॥ ६५ ॥ ४ प्रतिदिन दुल्लह के समान रहनेवाला ॥ ६६ ॥ ५ श्रेष्ठ कवि ६ पण्डित और ७ उमरावों का समागम साधकर, आदर के साथ हित करके सब ७ शास्त्र समझे ८ सभा में ९ प्राचीन राजाओं के आचरणों का वर्णन करता है ॥ ६७ ॥ समय पाने पर कवि सूर्यभल्ल के १० पिता चण्डी दान ११ समीप रहकर १२ राजाओं का मार्ग समझाता है सो दुर्जनशाल आदि १३ समान अवस्थावालों के साथ राजा(रामसिंह) १४ उचित समझता है उसी को धारण करता है अथवा राजा के उचित समझता है उसीको धारण करता है ॥ ६८ ॥ १५ वेद के कथनानुसार जनेऊ ली १६ गायत्री के जप ॥ ६९ ॥

रामासिंहका चर्म सचची प्रश्न करना] अष्टमराशि-प्रथममयूक (४०४१)

॥ पट्पात ॥

पा५ दसम१० समं षट् सुपहु पटु राम२०१४ सम्हारिय ॥
 श्रुति निषेध१ विधि२ समुक्ति द्वय१ आदेय२ निहारिय ॥
 व्याकृति१ शिक्षा२ वृत्त३ कल्प४ ज्योतिष५ निरुक्तक्रम ॥
 वदन१ नक्र२ पय३ बाहु४ नयन५ श्रुति६ निज छद्म अग छेम ॥
 श्रुति चउ४ श्रृंगादि४ विद्यादसक१० सीमासा१२ पुनि तैर्क१२ मत ॥
 स्मृति१३ अरु पुरान१४ चउदह१४ सुपहु श्रवन किन्न विद्या तैतहु७०
 ॥ दोहा ॥

रचिहि नित्य ससैद रसिक, बुधजन दुत्तभहु बुद्धि ॥
 नाहि लखै व्यय और नृप, तत्व लखन हठ तुल्लि ॥७१॥
 पहु तैद्वय पुच्छिय पटुन, अज्जीवत अगार ॥
 कति हित मग१ कुमग२ कति, कति अद्वैत अनुकार७२
 ॥ पट्पात ॥

सूरिन अकिखप सुनहु सिमूहि पृच्छक पहु सादर ॥

१ दशम वर्ष में पाठ पाकर १ वेद में कहे हुए निषेध और विधिको समझकर ३ भाग में और ४ ग्रन्थ करने के कर्तव्यों को देखे ४ व्याकरण, शिक्षा, छन्द, कल्प [और तत्त्व] ज्योतिष और निरुक्त, यथा क्रमसे वेद के ६ मुख्य, ७ नासिका, पैर, हाथ, नेत्र और कर्ण (कान) इन छ. अंगों और ९ अंगवेद आदि चार वेद, ये दश विद्याएँ और सीमासा १० तर्क शास्त्र, स्मृति और पुराण, ये मिश्रकर चौदह विद्याएँ ८ वसु समर्थ राजाने ११० हों (वसी अवस्था में) अथवा को॥७०॥ यह रसिक राजा दुर्लभ पण्डितों को भी बुलाकर नित्य २ सभा करता है और तत्व को पहिचानना हठ तोलकर १३ अर्थ की ओर नहीं देखता है ॥ ७१ ॥ १४ वसी अवस्था में राजा ने विद्वानों से पूछा कि १५ आर्यावर्त स्थान में हित के मार्ग कितने हैं और कुमार्ग कितने हैं और १६] के सदृश कितने हैं "यहा सूत्र में [अद्वैत] वास्तव है इसका आगे कुछ वर्णन नहीं है और न यह वास्तव कहाँ सिद्धता है इस कारण हमने इसका विवरण करना छोड़ दिया है सो पण्डित लोग विचार लें" ॥७२॥ १७ पण्डितों ने कहा कि हे १८ पूछनेवाले बालक राजा आदर सहित सुनो अथवा पूछनेवाला बालक राजा भी आपर योग्य है सो सुनो.

श्रुति मत कहियत सैरनि१ ताहि उज्झैन कुसरनि२ तर ॥

मन्नहु श्रुति सु त्रि३मग्ग चैरम३ खट्ठ भेद विचारहु ॥

अधिकारी जन उचित धीन नानागति धारहु ॥

समुझहु त्रि३मग्ग पहिले श्रुतिहु जई कृति१ पुब्ब२सु अति जड़३न
मध्य२न उपारित२ दूजो२ महिप अद्वय१।३ तीजो३ उत्तम३न ।७३।

॥ दोहा ॥

तीजो३ मग्गहु छद्विधि तँहँ, पहिलो१ त्रिक३ प्राकार ॥

उत्तर उत्तर त्रिक३ अपर२, सुभ फल मति अनुसार ॥७४॥

जैन १ बौद्ध२है कुपथं२ जिम, लोकार्यंत३ गिनिलेहु ॥

१वेद का मत २मार्ग कहा जाता है और उसको रेखोड़ना ४अत्यन्त कुमाग है
तहाँ वेद के तीन मार्ग जानो और ५ अंतिम के छः भेद विचारो और अधि-
कारी लोकों की ६ बुद्धियों के योग्य नाना प्रकार जानो. पहिले वेद के तीन
मार्ग समझो. जिनमें पहिला कर्म मार्ग (कर्मकांड) अत्यन्त अज्ञानियों के लिये
है और हे राजा दूसरा उपासना मार्ग मध्य (जिनको ज्ञान उत्पन्न नहीं हुआ
और कर्मों में आसक्त हैं उन) लोकों के लिये है और तीसरा ७ अद्वैत मार्ग
उत्तम लोकों के लिये है ॥ ७३ ॥ तीसरा मार्ग (ज्ञान मार्ग) छः प्रकार का है
जिनमें पहिला तीन प्रकार का है अर्थात् न्याय, पूर्वमीमांसा और वैशेषिक
भेदवाले षैतवादी हैं अर्थात् जीव और ईश्वर को भिन्न माननेवाले हैं और
बाकी के ६ अन्य तीन अर्थात् सांख्य, योग्य और उत्तरमीमांसा [वेदान्त] ये
बुद्धि के अनुसार उत्तरोत्तर शुभ फल देनेवाले हैं ॥ ७४ ॥ १०वेद को नहीं मान
नेवाले कुमार्ग छः हैं जिनमें एक तो जैन (*), दूसरा बौद्ध जो चार प्रकार का
है, और तीसरा ११ चार्वाक[देहात्मवादी] अर्थात् एक जैन, चार बौद्ध और छठा

(*) जैनमत का कुछ विवेचन हमने इस ग्रन्थ के चतुर्थराशि में वीसलदेव के चरित्र की टीका में लिखा है
उसके उपरान्त प्रकरण वश कुछ यहाँ पर लिखा जाता है कि, कर्मफल को देनेवाले और जगत् का नित्यमूल
कारण जो ईश्वर है उसका स्वीकार यह(जैन)मत नहीं करता. जैन प्रत्यक्ष, अनुमान और शब्द ये तीन प्रमाण
मानते हैं, वे आगम सर्वज्ञके शब्द हैं. मनुष्य ही उत्तम ज्ञान, सम्यक्दर्शन और सम्यक् चारित्र्यसे आवरणका
नाश करके सर्वज्ञ बनसकता है “जिनको जैनी सर्वज्ञ पुरुष मानते हैं वे चौबीस तो अवसर्पिणी(भूत) काल
में होगये, चौबीस वर्तमान काल में हुए और चौबीस उत्सर्पिणी (भविष्यत्) काल में होवेंगे और वर्तमान
काल में, पहिले ऋषभदेव, तेवीसमे पार्श्वनाथ और चौबीसमे महावीर हुए जिन्ही का जैनियों में पूजन

होता है" जीव मात्र पर दया करने को ये मुख्य धर्म समझते हैं, इस मत में जीव और अजीव ये दो मुख्य तत्त्व माने जाते हैं, ये दोनों अनादि और अनन्त हैं, कितने एक पदार्थों का व्यवस्था नौ प्रकार की करते हैं अर्थात् जीव, अजाव, पुण्य, पाप, आश्रय, संवर, निर्जरा, वष और मोक्ष इनके भी कई अर्थात् भेद मानते हैं, जैनों की प्रसिद्धिया "सतभंगीनय" है यथा— "स्वादस्ति, स्वाभास्ति, स्वादस्तिचानास्ति, स्वाद्वक्तव्य, स्वादस्तिचावक्तव्य, स्वाभास्तिचावक्तव्य, स्वादस्तिनास्तिचावक्तव्य ॥" इन सात मणियों को स्थापन करने से ये स्वादादौ कहाते हैं इनका विशेष वर्णन 'सर्वदर्शनसंग्रह' में देखो जो जैन ससार का त्याग करते हैं वे 'यति' और जो गृहस्थाश्रम में रहते हैं वे 'घायक' कहाते हैं जैनों में दिगंबर और श्वेतांबर ये दो मुख्य यग हैं, इनका छद्म और भेद अवस्था के भय से यहाँ नहीं लिख सकते

बौद्धमत का दिग्दर्शन

इस मतके आदि प्रवर्तक कपिल वस्तुके गौतम कुलके शाक्य राजा शुद्धोदन के पुत्र सिद्धार्थ हैं, इस मतमें प्रत्यक्ष और अनुमान ये दो प्रमाण माने जाते हैं, चार भाषना से पुरुषार्थ की प्राप्ति मानी जाती है यथा— "सब क्षणिक है, सब दुःख है, सब स्वल्प है (एक जैसा दूसरा नहीं) सब शून्य है, सबमात्र सत् भी नहीं है, असत् भी नहीं है, सदसत् नहीं है ऐसा भी नहीं है, वह अनिर्वचनीय और निस्वभाव है एकही गुरुके एकही उपदेश पर चार शिष्यों ने चार प्रकारके सिद्धान्त बोधे, यथा सौत्रान्तिक तो ब्रह्मवस्तु को केवल शून्य नहीं मानते परन्तु उसको अनुमय मानते हैं और वैभाषिक, बाह्यपदार्थ को प्रत्यक्ष मानते हैं और सविकल्प ज्ञानको अप्रमाण और निर्विकल्प ज्ञान को प्रमाण मानते हैं योगाचार, अज्ञात के ज्ञान की प्राप्ति के लिये पूषने को "योग" और गुरु के कथित अर्थ के अंगीकारको "आचार" कहाते हैं, चारों भाषना को निर्वाण का हेतु मानते हैं और बाह्य पदार्थ को शून्य मानते हैं परन्तु भीतर अय-बुद्धि का स्वीकार करते हैं माध्यमिक, एकही पदार्थ में भिन्न भिन्न मनुष्यों की भिन्न भिन्न कल्पना होने से पदार्थ मात्रको केवल शून्य रूप मानकर सर्व शून्यत्व का अंगीकार करते हैं जैनों में यही चार भेद हैं जिनके सिद्धान्त ऊपर लिखे अनुसार हैं, इनका अधिक विवेचन स्थानाभाव के कारण यहाँ नहीं हो सकता ॥

॥ चार्वाक मतकी संक्षेप सूचना ॥

इस मतका आदि प्रवर्तक वृहस्पति कहा जाता है, इसमें ज्ञान साधन के लिये केवल प्रत्यक्ष प्रमाण माना जाता है, अनुमान और शब्द प्रमाण को नहीं मानते, अतः ईश्वर और परलोक प्रत्यक्ष प्रमाण से सिद्ध न होने के कारण ये इन दोनों को नहीं मानते, सृष्टिको स्वभाव से मानकर इसका कोई कर्ता नहीं मानते, आत्मा को देहसे अभिन्न मानकर देहके सुखको ही पुरुषार्थ मानते हैं और मरनेको ही मोक्ष मानते हैं, इसी मतका दूसरा नाम लोकायत है (लोक में फैला हुआ) अर्थात् इसमें अर्थ और काम की प्राप्ति ही पुरुषार्थ है और इन दोनों की कामना लोक में स्वतः और सर्वत्र देखा जाती है इनके सिद्धान्तके कुछ श्लोक संसारमें प्रसिद्ध हैं उनमें से तीन श्लोक पाठकों के अग्रजोकरार्थ नीचे लिखते हैं ॥ श्लोक—त्रयो वेदस्य कर्तारो मांभूर्त्त निराचराः । अर्करी तुर्करीत्यादि पक्षिस्तानां वच स्मृतम् ॥ १ ॥

पावज्जीव सुख जीवेदस्य कृत्वा धृत पिबेत् । मसीमूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुत ॥ २ ॥

पतिहिना तु पा नारी पत्नीहीनरथ यः पुमान् उमाभ्यां रणवरणदाम्यां न दोषो मनुष्यैस्तु ॥ ३ ॥

बौद्ध२ तहाँ चउ४ भेद बलि, इम नास्तिक छद्दि एहु ॥७५॥
 सौत्रान्तिक१ वैभाषिक२ रु, योगाचार३हु आदि ॥
 चउम४ माध्यमिक४ च्यारि४ही, सौगत मूँन्य समाहि ॥७६॥
 ति३ प्रथम१ श्रुति कहिय तहँ, सहँसअसी८०००० श्रुति मान ॥
 कर्म१ धर्म२हेतुक करन, पहिलो१ यह सोपान ॥ ७७ ॥
 निजमति बोध१ रु भक्ति२ जुग२, पायहेतु प्रकटैन ॥
 तिन अध्वग अंधन तरन, यह१ दिखात श्रुति अैन ॥७८॥
 कर्म उचित करतहि करत, इहिँ मग अध्वग आइ ॥
 गम्य सुद्धमति व्है गहत, बहु भव मिजल बिताइ ॥७९॥
 जे संसृति सन बिरत जन, स्वसुखहिँ जानि सकैन ॥
 पथ तिन्ह मध्य२ उपासना२, प्रतिगति इमहु पकैन ॥ ८० ॥
 यह अकखत सोलहसहँस१६०००, श्रुति द्वितीय२ सोपान ॥
 जन्म१ मरन२ औषध यह२हु, प्रभुदासैत्व प्रधान ॥ ८१ ॥

चार्वाक है इन्ही छहों को नास्तिक जाना ॥ ७५ ॥ सौत्रान्तिक, वैभाषिक, योगाचार और माध्यमिक ये चारों ही १ बुद्ध के २ शून्य भेद में समाजाते हैं ॥७६॥ अब वेद के उपरोक्त तीन मार्गों को कहते हैं कि प्रथम कर्मकांड पर कर्म और धर्म करने के निमित्त अस्सी हजार ३ गणनावाली श्रुतियां हैं जो यह ४ पहिली सीढ़ी है ॥ ७७ ॥ पाप के कारण जिनकी निज बुद्धि में जान और भक्ति प्रकट नहीं होवे उन ससारी अंधे पथिकों के तिरने के लिये वेद यह मार्ग दिखाता है ॥ ७८ ॥ ५ पथिक (संसारी) इस मार्ग पर आकर उचित कर्म करते करते ७ कई जन्मों की मंजिलों को बिनाकर निर्मल बुद्धि होकर ६ पहुंचने योग्य स्थान (मुक्ति) को पहुंचता है ॥ ७९ ॥ जो मनुष्य ८ संसार से तो विरक्त हैं परन्तु ९ आत्मसुख (आत्मज्ञान) को नहीं जान सकते उनके लिये बीच का मार्ग उपासनाकांड (भक्ति) है जिससे भी मुक्ति होती है परन्तु उपरोक्त मार्ग के अनुसार एक ही जन्म में १० निश्चय ही मुक्ति होवेगी ऐसा परिपक्व नहीं होता क्योंकि इसमें द्वैत भाव रहता है ॥ ८० ॥ ११ इस दूसरी सीढ़ी को सोलह हजार श्रुतियां कहती हैं जिसमें १२ ईश्वर का दास भाव प्रधान होने से यह भी जन्म मरण की औषधि है ॥ ८१ ॥

चपारिसहस्र ४००० खिल श्रुति चवहिन, ब्रह्म १ जीव २ इक बोध ॥

आरोहण तीजो ३ यहै, रचन जहँ थिति रोध ॥ ८२ ॥

पहिनी १ सीढी कर्म १ पर, स्मृति १ पुरान २ सब सार्थ ॥

वामा १ दिक भ्रामक बहुरि, पथ जिहिँ निव्य अपार्थ ॥ ८३ ॥

भक्ति २ अनन्या भाखिपत, सुभ दूजो २ सोपान ॥

पचपरात्र मुख ताहि पर, तात्रिक ग्रथ वितान ॥ ८४ ॥

साधत यहहु उपासना २, प्रभु व्है भक्ति प्रसन्न ॥

रचत भक्त उर बोध रवि, आकृत सब करि अन्न ॥ ८५ ॥

तत्व १ बोध बिनु मुक्ति २ तिये, भोगी इतरे भिरैन ॥

सतत पुकारत वेदसिरे, बारवार यह वैन ॥ ८६ ॥

इहिँ तीजे ३ आरोहँ पर, श्रुतिसिर १ प्रेमिति असेस ॥

व्याससूत्र १ तिनपर बहुरि, योग २ साख्य ३ त्रिक ३ एस ॥ ८७ ॥

इति श्री वशभास्करे महाचम्पके उत्तरायणे षष्ठमराशौ बुन्दीन्द

१ पाकी की चार हजार श्रुतिया ग्रन्थ और जीव के एक होने का ज्ञान कहती हैं यह तीसरी सीढ़ी है जिसमें मोक्ष की रथ मात्र भी रुकावट नहीं है ॥ ८२ ॥ कर्मकाण्ड रूप पहिली सीढ़ी पर स्मृति और पुराण हैं सो तो सार्थक (सत्य) हैं फिर जो चाम (फौल) मार्ग आदि ३ अभोत्पादक मार्ग हैं सो निन्दनीय और ४ अर्थशून्य (झूठे) हैं ॥ ८३ ॥ ५ जिसमें अनन्या भक्ति [भक्त को जिनके समान सत्कार में कोई अन्य पदार्थ नहीं दीसता] होवे वह श्रेष्ठ दूसरी सीढ़ी है जिस पर ६ नारदपञ्चरात्र आदि तात्रिक ग्रन्थों का ७ विस्तार है ॥ ८४ ॥ इस उपासना के साधने की भक्ति पर ईश्वर प्रसन्न होकर आकारबद्ध सप्त पदार्थों को ९ भक्षण (नष्ट) करके भक्त के हृदय में ८ ज्ञान रूपी सूर्य को उदय करता है ॥ ८५ ॥ तत्त्वज्ञान के बिना ११ अन्यभोगी १० मुक्ति रूपी श्री से नहीं भिखसकता सो यह वचन १३ उपनिषद् १२ निरतर (बारबार) पुकारते हैं ॥ ८६ ॥ इस तीसरी १४ सीढ़ी पर १५ प्रमाण युक्त सप्त उपनिषद् हैं और उन पर फिर व्याससूत्र (वेदान्तसूत्र) योग और साख्य ये तीनों हैं ॥ ८७ ॥

श्रीवशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टमराशि में बुन्दी के भूपति रामसिंह के चरित्र में, राघराजा रामसिंह का बुद्धी की गद्दी पर बैठना १

रामसिंहचरित्रे रावराजारामसिंहपट्टोपवेशन१ ससोदरगावराजाविधा
हसन्तानवर्णन २ रामसिंहश्रेष्ठशिक्षाश्रवणपण्डितसकाशधर्मवर्म
प्रश्नवर्णनं प्रथमो मयूखः ॥ १ ॥

आदितः त्रिपट्युत्तरत्रिशततमो मयूखः ॥ ३६३ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

उत्तरमीमांसा१ इहाँ, प्रथम१ उक्त सोपान ॥

यह १ हि सुक्ति फल चाहितें, मुख्य वेद सिर मान ॥ १ ॥

वाक्य तत्वमसि१ सुख बहत, जीव१ ब्रह्म१ इक जत्थ ॥

सत१ अनन्तर चित३ बोध४ सुख५ सत्य६ असंग ७ समर्था२।

सब प्राकृतै२ कल्पित असत, जिम गुन१ माँहिं भुजग२॥

केवल यह मन कल्पना, इक१ खिल आप१ अभंग ॥३॥

पट्पात् ॥

ब्रह्म स्वसुख प्रतिबिंब१ सहित जो प्रकृति२ त्रि३ गुन सम ॥

अधिष्ठान३ जुत यह२ हि ईसर२ कहियत असुधोद्यम ॥

भाइयों सहित रावराजाके विवाह और सतानों का वर्णन २ रामसिंह का श्रेष्ठ
शिक्षा को सुनना और पण्डितों से धर्म भागों के पूछने के वर्णन का प्रथम
मयूख समाप्त हुआ ॥१॥ और आदि से तीन सौ तेसठ ३६३ मयूख हुए ॥

यहाँ १ उक्त (तीसरी) सीढ़ी पर उत्तरमीमांसा वेदान्त प्रथम है इसीमे सुक्ति
रूप फल मिलता है इसी कारण से उपनिषदों में इसको मुख्य माना है ॥१॥

जहाँ तत्वमसि २ आदि वाक्य जीव और ब्रह्म की एकता कहते हैं जिस [ब्रह्म
का स्वरूप सत्, अनन्त, चित्, ज्ञान, आनंद, सत्य, असंग और समर्थ है ॥२॥

३ सब प्रकृति संबंधी पदार्थ (संसार) कल्पित है ४ असत (अस्थिर) है जैसे रस्सी में
५ सर्प का होना कल्पित है वैसे ही यह संसार मन की कल्पना है बाकी ए

६ ईश्वर ही अखंड है ॥ ३ ॥ स्वयं सुख रूप ब्रह्म के प्रतिबिंब सहित ज
तीन गुणों की [सत्त्व रज तमकी] साम्यावस्था [एक हावत] है उसीको प्रकृति

सत्त्व१ विमल माया२ सु तत्त्व यह विव२ ईस२ तिम ॥
मलिन१ अविद्या२ माँहि जीव३ तस वस अनेक जिम ॥
माया१ उपाधि ईश्वर२ अवस जीव३ अविद्योपाधि२वस ॥
कारन सरीर१ ताको कहत अमिमता तँह प्राज्ञ१ अस१।४।
॥ गीर्वाणभाषा ॥ गुरूपजाति ॥

नाज्ञ१स्प भोगाय तदीश्वरेच्छया तम प्रधानप्रकृते समुत्पितम् ॥
ख१वायु२तेजो३बु४भुव ५समाख्यया राज्ञा२दिक५पाकृतभूतपचकम् ५
॥ आर्या ॥

पञ्चा५ना भूताना सत्त्वाशे पञ्च ५ बुद्धिकरणानि ॥
श्रोत्र१त्वग्दृग्गन्धस्पर्शन४घ्राण५समाख्यान जातानि ॥
ते सर्वे सत्त्वाशेरन्त करण१ द्विधे२ति वृत्तिमिदा ॥
तत्र विमर्शात्म मनो१ निश्चयवृत्त्यात्मिका बुद्धि २ ॥ ७ ॥
भूताना५ च रजोशे ५ क्रमेण पञ्चै५व कर्मकरणानि ॥

जते हैं, अधिष्ठान देने में उसीकी ईश्वर सजा होती है वस माया में उस
पेशुद्ध आत्मा का पिय जैसे ईश्वर होता है वैसे ही अविद्या में मैला होकर
गिय फलता है और उस अविद्या ही के यश से यह अनेक होता है, माया
उपाधि स ईश्वर स्वतन्त्र है और जीव अविद्या की उपाधि से परतन्त्र है, उसी
के कारण स्वरूप कहते हैं, अर्थात् अविद्या में जीव की प्रथम प्रधानावस्था को
के कारण शरीर कहते हैं, जीव जब उस कारण शरीरम अभिमान युक्त होता
तब उसको प्राज्ञ कहते हैं ॥ ४ ॥ वस ईश्वर की इच्छा से प्राज्ञ शरीराभि
पानी चेतन [जीव] के भोग [सुख दुःख] के अनुभव के लिये तम गुण प्रधान
रूति से आकाश, वायु, तेज, जल, पृथ्वी नामक तत्त्व और उनके क्रमशः
स्पर्श, स्पर्श, रस, गंध ये पांच गुण उत्पन्न हुए ॥ ५ ॥ इन पाँचों तत्त्वों के
इतागुण अशा से प्रमदा कान, त्वचा, नेत्र, जीभ और नाक नामक पांच
गानेद्रिया उत्पन्न हुई ॥ ६ ॥ उन्हीं सत्त्वगुण अशों में अत क्रमशः हुआ जो वृत्ति
वेद से दो प्रकार का है जिनमें चिन्तारामक स्थितिवाला मन और निश्चय
मक स्थितिवाली बुद्धि है ॥ ७ ॥ उक्त पद्य महामूर्तों के रजोगुण के अशों

वाक्१पाणि२पाद३पायू४पस्थ५समारूपानि जातानि ॥ ८ ॥
 पञ्च५भिरेव रजोशैरेतैः प्राणाः१ स पञ्च५धा वृत्त्या ॥
 प्राणा१पान२समानो३दान४व्यानाः५ समारूपाभिः ॥ ९ ॥
 धीन्द्रियपञ्चक५कृतिस्वशरैः५ प्राणापञ्चकै५श्च तथा ॥
 मनसा११६धिया२१७शरीरं सूक्ष्मं सप्तदशभिः१७लिङ्गम् ॥ १० ॥
 प्राज्ञ१स्तु तदभिमानात्तैजस२संज्ञामियात्स द्वि व्यष्टिः ॥
 स हिरण्यगर्भ२संज्ञामेतीश्वर१ एष तु समष्टिः ॥ ११ ॥
 ये ऽविद्यावैविचित्र्याद्व्यष्ट्यव्यास्ते तु तैजसा२ नाना ॥
 सर्वेषां तादात्म्यादीश्वर एकः१ समष्ट्या१ख्यः ॥ १२ ॥
 व्यष्ट्यभिधानां भुक्त्यै समोग्य१भोगायतन२मनुष्ठातुम् ॥
 पञ्ची५कृतमीशेन प्रत्येकं१ पञ्चकं५ स्वादि ॥ १३ ॥
द्विदलीकृत्यैकै१कं१ दलमेकै१कं विभज्य च चतुर्धा४ ॥

से क्रमशः वाणी, हाथ, पैर, गुदा और लिंग ये पांच कर्मेन्द्रियां हुईं ॥८॥ इन्हीं रजोगुण के पांच अंशों से प्राण उत्पन्न हुआ जो वृत्ति भेद से प्राण, अपान, समान, उदान, व्यान इन नामों से पांच प्रकारका है ॥९॥ पांच ज्ञानेन्द्रिय, पांच कर्मेन्द्रिय, पांच प्राण, मन और बुद्धि, इन सत्रह से सूक्ष्म शरीर बना जिस का दूसरा नाम लिंग शरीर है ॥१०॥ उस सूक्ष्म शरीर के अङ्कार से प्राज्ञ की तैजस संज्ञा हुई सो विष्टि रूप समष्टिका अंश अर्थात् एक देशव्यापी है और वही ईश्वर हिरण्यगर्भ संज्ञा को प्राप्त हुआ वह समष्टि सर्वव्यापी है ॥ ११ ॥ जो चेतन अविद्या की विचित्रता से व्यष्टि होने योग्य हैं वे तैजस अनेक हैं और इन सबका ईश्वर में तद्रूप अभेद होने से समष्टि नामवाला ईश्वर एक है ॥१२॥ व्यष्टियों [तैजसों] को भोग के अर्थ भोग्य (भोगने योग्य पदार्थ) और भोगायतन (जिससे भोग भोगे जायें ऐसा स्थूल शरीर) बनाने के लिये ईश्वर ने आकाश आदि पांचों तत्वों का पंचीकरण किया ॥ १३ ॥ वह पंचीकरण इस प्रकार से है कि पांचों प्रत्येक तत्व के आधे आधे बराबर दो दो भाग करके उनमें पांचों तत्वों के पांच आधे भागों को तो वैसे ही रहने दिये और बाकी के आधे आधे पांच भागों में प्रत्येक के चार चार विभाग करके फिर इन प्रत्येक पांचों अष्टमांश भागों को उन प्रत्येक अर्ध भागों में ऐसे

भागानपरश्दलैरस्तान्सयोज्य च पञ्च पञ्चेति ॥ १४ ॥
 तेषुगृह तत्र च भुवनश्भोग्यश्भोगायतनश्मसृजदीश ॥
 स्थूलोऽहिरण्यगर्भो देवे वैश्वानरश्त्वमित ॥ १५ ॥
 तैजसश्सञ्ज्ञा विश्वाश्भिधानमीयुर्वाविद्यया जीवा २ ॥
 सुरश्नरश्तिर्षश्कृत्वभिदा पराग्दृशोन्तरश्स्वगतिमूढा ॥ १६ ॥
 कुर्वन्ति कर्म भुक्त्यै कृत्वा कर्माऽपि भुञ्जते तत्तत् ॥
 न जन्मन्ते सञ्चिश्सुखश्मनुषान्तो जन्मनो जन्म ॥ १७ ॥
 स्वस्वद्वदाहितमिध्यादैतश्सदास्था सदैव तप्यन्ते ॥
 आवर्तादावर्तं यान्तो नद्या यथा कुमप ॥ १८ ॥
 सत्कर्मोदकवलाद्यो यस्तेषूपदेशमेत्य गुरो ॥
 स्वयमद्वैती भवति हि स स जीवन्मुक्त उद्दिष्ट ॥ १९ ॥

मिलाये कि जिसस आधा तो एक तत्त्व और आधे में बाकी के चार तत्त्वों के चार अष्टमाश भाग मिलाकर पूरा तत्त्व बना दिया जैसे आकाश तत्त्व के आधे भाग में बाकी चार तत्त्वों के अर्थात् आकाश के अष्टमाश को छोड़कर दोष वायु, तेज, जल, पृथ्वी, इन चारोंका एक एक अष्टमाश आकाश के उस अर्ध भाग में मिलाकर आकाश तत्त्व को पूरा किया इसी प्रकार के सयोग से पाँचों तत्त्वों का परस्पर पर्याकरण किया ॥ १४ ॥ इन पर्याकृत पाँचों तत्त्वों से ईश्वर ने ब्रह्माण्ड बनाया, उस ब्रह्माण्ड में चौदह भुवन (लोक) बनाये और इन भुवन में भोग्य पदार्थ भोगायतन (भोगके घर) अर्थात् स्थूल शरीर बनाये इस प्रकार स्थूल शरीर होने पर हिरण्यगर्भ वैश्वानर सञ्ज्ञा को प्राप्त हुआ ॥ १५ ॥ स्थूल शरीरमें अविद्या के कारण तैजस नामवाले जीव विश्व नामको प्राप्त हुए, जो सुर, नर, पशु, पक्षि इन भेदोंवाले सहिर्दृष्टि होने के कारण अस्पृश्यादि (आत्मज्ञान) से मूढ़ हैं ॥ १६ ॥ ये जीव भोगके अर्थ कर्म करते हैं और कर्म करके उस उस फलको भोगते हैं, इस प्रकार जन्म जन्मान्तर में फिरते हुए भी साधिवानरूप परब्रह्म को नहीं पाते ॥ १७ ॥ ये जीव अपने आप हृदयमें ठहराये हुए मिध्या दैत भाष में आस्था रखकर नदी के एक बक से दूसरे बक में पड़नेवाले कीड़ों के समान सदा ही बह पाते हैं ॥ १८ ॥ इन में स जिन जीवों के सत्कर्मों का वक्ष्य होता है ये उस कर्मफल के बल से गुरु के उपदेश को पाकर स्वयं अद्वैत [अद्वैतस्मि] होजाते हैं वे ही जीवन्मुक्त कहाते हैं ॥ १९ ॥

अतिशोर्षमहावाक्पातत्ता१हन्ते२ विहाय तदुपाधी ॥
 स१च्चि१त्सुख१बोधा१त्मन्यस्मितयोना स्थितिः परमा ॥
 येशस्पेशनशक्तिर्नियामिका सर्ववस्तुजातस्य ॥
 चित्प्रतिबिम्बावेशाद्विभाति साऽचेतने चैव ॥ २१ ॥
 तच्छक्त्युपाधियोगात्सद्व्रह्मे१वेश्वरत्व२मुपयातम् ॥
 कोशोऽपाधिविवक्षा जीवं२ प्रत्याययति त१द्धि॥ २२ ॥
 यो हि पिता१ सुत१योगात् स नष्ट२योगात्पितामहो१प्येकः१॥
 पितृ३योगेन स पुत्रः१ श्वसुरो१ जामातृ४योगेन ॥ २३ ॥
 पुत्रा१द्युपाध्यसङ्गे क पिता१ क पितामहा२ङ्गजश्वसुराः४ ॥
 द्वो२कोश१शक्त्यु२पाधी हित्वा तदन्न जीवे१शो२ ॥ २४ ॥
 ईश२श्चिदधिष्ठानं१ माया२ मायागतश्च चिद्विम्बः३ ॥
 जीव२श्चिदधिष्ठानं१ लिङ्गतनु२स्तत्स्थचिद्विम्बः३ ॥ २५ ॥

उपनिषदों [वेदान्त] के महावाक्यों [तत्त्वमसि] से तरे मेरे पन की उपाधियों को छोड़कर सच्चिदानन्द और ज्ञानमय ब्रह्म में अहंकार रहित स्थिति है वही परम शक्ति है ॥ २० ॥ जो सब वस्तु मात्र को नियम में रखनेवाली ईश्वर की प्रभु शक्ति है वही प्रतियोग को पाकर चेतन स्वरूप में भासती (प्रकाशती) है ॥ २१ ॥ उसी शक्ति रूपी उपाधि के सम्यन्ध से सत् रूप ब्रह्म ईश्वर पन को प्राप्त हुआ है और वही (ब्रह्म) पच कोशों की उपाधि (अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय, आनन्दमय आत्माको आच्छादन करनेवाले ये पांच कोष हैं) योग से जीव भाव को प्राप्त हुआ है, ऐसी प्रतीति कराता है ॥ २२ ॥ जो पुत्र के संबंध से पिता है वही पौत्र के सम्यन्ध से पितामह (दादा) है और वही पिता के संबंधसे पुत्र है और जमाईके सम्यन्धसे श्वसुर है वास्तव में वह एक ही है, परन्तु संबंध भेद से भिन्न भिन्न कहा जाता है ॥ २३ ॥ यदि पुत्र आदि उपाधियां न होवें तो कहां पिता, कहां पितामह, कहां पुत्र और कहां श्वसुर है; वैसे ही कोश और शक्ति इन दोनों का त्याग किये पीछे न तो जीव है, और न ईश्वर है अर्थात् दोनों एकही है ॥ २४ ॥ चैतन्य का स्थान माया है और मायामें रहनेवाले चैतन्यका प्रतियोग है वह ईश्वर है और जहां चैतन्यका स्थान लिंग शरीर है उस लिंग शरीर में चैतन्यका बिम्ब है वह जीव है ॥ २५ ॥ अन्न (स्थूल

अन्न१ प्राण२ मनो३ बुद्ध्या४ नन्दा५ रूपेषु ५५ च५ कोशेषु ॥
 तेरावृत्त एका१त्मा स्वविस्मृतौ भ्रमति ससारम् ॥२६॥
 एव विचार्य विद्वान्नरस्य नानाभ्रम सुखमवाप्य ॥
 भ्रमनाशावधि दुःखमवगौर्य कूटस्थ आतिष्ठेत् ॥ २७ ॥
 अरूप सचिव१ सेनान्पा२ वात्मज्ञाना१ रूपसार्वभौमस्य ॥
 तौ साहचर्य१ योग२ सज्जौ भेदत्रिक३ त सदस्यभिमतौ ॥ २८ ॥
 आत्मसु भेदो१ जगति च तदपस्वरमथेश्वरोन्प३ इति भेदान् ॥
 त्यजतश्चेद्भजतस्तौ सत्राजा स्वेन साम्पमुभौ२ ॥ २९ ॥
 धीर्व्याकुला न पेपा ये चैक्यज्ञानविस्तृतात्मान ॥
 स्वैकात्मबोध१ येप प्राप्यत इति तै सकृत्सुखत ॥ ३० ॥
 पेपा बुद्धिर्मालिनाऽनन्तकलुषकर्मभिर्भमोदकैः ॥

शरीर) प्राण, मन, बुद्धि, आनन्द नामक इन पाँच कोशों से ढका हुआ आत्मा जो एक अद्वितीय, ईश्वर से भेद रहित है यह अपने स्वरूप को म्रुण जानने के कारण उक्त पाँच कोशों में आसक्त होकर ससार में भ्रमता है "अन्न जल से उत्पन्न और पुष्ट हुआ स्थूल शरीर अन्नमय कोश है, पाँच कर्मेन्द्रियाँ और पाँच प्राण यह प्राणमय कोश है, पाँच भ्रानेन्द्रियाँ और मन यह मनोमय कोश है, पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ और बुद्धि यह विज्ञानमय कोश है, और पुण्य कर्म के फल से दक्षिण अन्तर मुख मुँह श्रुति आनन्दमय कोश है ये ही पाँच कोश जीव को आच्छादन करनेवाले हैं" ॥ २६ ॥ इस प्रकार विचार करके विद्वान् मानवीय सुख को नाना प्रकार का भ्रम रूप जानकर जब तक भ्रम का नाश नहीं होवे तब तक दुःख सहकर दृढ़ होकर रहै ॥ २७ ॥ स्वजातीय, विजातीय और स्वगत, इन तीन भेदों की निवृत्ति के वास्ते आत्मज्ञान रूपी राजा है जिसके साख्यशास्त्र तो प्रधान और योग शास्त्र सेनापति हैं ॥ २८ ॥ आत्माआ में भेद मानना, ससार को सत्य मानना और परमेश्वर को जीव और जगत् से भिन्न मानना, इन भेदों को यदि छोड़ दें तो ये दोनों साख्य और योग इस जीव को राजा के बराबर आत्मज्ञानी करदेते हैं ॥ २९ ॥ जिनकी बुद्धि व्याकुल गड़बड़ नहीं है और जिनकी आत्मा अद्वैत ज्ञान से विस्तीर्ण है वे तुरन्त सुख पूर्वक एकात्मज्ञान को पाते हैं ॥ ३० ॥ जिनकी बुद्धि भ्रम के फल रूप अनन्त क्लृप्त कर्मों से मलिन है उनको प्रथम साख्य और योग हितकारी

प्राक् तत्र सांख्ययोगौ२ हितौ यथा धीमताधी ॥
 सांख्य१सचिव२योग१चनुपबोध१नृप२रयास्त्र१रमा ॥
 मीमांसन१काणभुजा२ऽक्षपाद३मेतत्त्रयं सर्वम् ॥३२॥
 धीनैर्मल्यवितृक्षौ केवलगन्तयत्रिकोऽपयोगोत्र ॥
 प्राप्ते स्ववीर्यसाम्राज्येऽस्त्र१चमूर्खदुर्गश्चिन्ता का ॥३३॥
 श्रुतिकोदिता तृतीया३ निर्मलतत्संविदध्वगारोहया ॥
 श्रीराम२०१४भूमिमृदियं विद्वद्भिरवाप्पते श्रेढी ॥३४॥

(इतिज्ञानकाण्डम्)

अस्या आदि१र्मधपा२ या श्रेढी सा ह्युपासनो२पाख्या ॥
 सारूप्यमेति जीवो विश्रब्धोऽस्यां२ परम्परया ॥३५॥
 प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

(दोहा)

श्रुति जिहिं जंपित मध्य२ सो, उपामना२ अभिधान ॥
 श्रेढी मध्यम२ नृप सुनहु, निखिल पै भक्ति निधान ॥ ३६ ॥

भिधान१ निधान२ अन्तपानुग्राहः १ ॥

हैं, क्योंकि वे बुद्धि के मल का नाश कर देते हैं ॥३१॥ जिस आत्मज्ञान रूप चक्र-
 वर्ती राजा के सांख्य तो सचिव और योग सेवापति है उसके मीमांसा, वैशे-
 पिक और न्यायशास्त्र, ये तीनों क्रम से जज्ञ मेना और गढ़ हैं ॥ ३२ ॥ इन
 में पिछले तीनों मीमांसा, वैशेषिक, न्याय केवल बुद्धि की निर्मलता बढ़ाने के
 उपयोगी हैं सो अपने पराक्रम से साम्राज्य प्राप्त कर लेने पर राजा सेना और
 किले की फिर क्या आवश्यकता है? ॥३३॥ हे भूपति रामसिंह वेद की कही
 हुई निर्मल बुद्धिवाले पण्डितों के चढ़ने योग्य इस तीसरी सीढ़ी को विद्वान् ही
 पाते हैं ॥३४॥ यह ज्ञानकांड समाप्त हुआ ॥ अब आगे उपासनाकाण्ड कहते हैं ॥
 इस तीसरे सोपान से पहिले की जो उपामनाकाण्ड नामक मध्य[धीच] की
 सीढ़ी है इस में भी विश्वास करनेवाला जीव परंपरासे सारूप्य मुक्तिको प्राप्त
 होता है ॥३५॥ वेद में जिसको उपासना१ नामक मध्यमार्ग कहा है, हे सबके
 पति और भक्ति के भंडार राजा रामसिंह उस(उपासनाकाण्ड)को सुनो ॥३६॥

अन्न १ प्राप १ असग १ कौं, सूरिहु जानि सकौ न ॥

तेराहु योग २ हुमें समुक्ति, हाहा जिनकी व्है न ॥३७॥

नासा ११ दिक त्रय ३ मनन, करिहु न बुद्धि रुकाइ ॥

सगुन ईस तवही समुक्ति, पटु निश्चयस पाइ ॥३८॥

॥ षट्पात् ॥

नव ९ विध भक्ति २ सुनियत जाहि प्रभुराम २० १ ४ भक्त जन ॥

अविरत कृतिं आचरहिं मोरि प्राकृत गनतैं मन ॥

श्रवण १ रु कीर्तन २ स्मरण ३ अघ्निसेवन ४ तिम अर्चन ५ ॥

प्रनति ६ दास्य ७ संख्य ८ पुनि नवम ९ जहैं स्वात्म निवेदन ९ ॥

ए भक्ति नव ९ हि मिलि त्रि ३ गुन अब सप्तवीस २७ भेदन सहित
ताहु भक्त १ गुन ३ भेद करि मान त्रि ३ विध कहियत मैहिता ३९ ॥

॥ दोहा ॥

सप्तवीस २७ विध भक्ति सब, त्रि ३ विध भक्त करि ते २ ७ हि ॥

कहियत एकासीति ८१ क्रम, जिन जिन जिम जिम जेहि ४०

॥ षट्पात् ॥

एकरस और असग १ परमेश्वर का २ पक्षित भी नहीं जानसकते [यहां 'आप्ल
व्याप्तौ' इस घातु से आप नाम सर्वव्यापी परमेश्वर का है] और जेद है कि
नाख्य और योग में भी जिस परमात्मा की समझ नहीं है ॥३७॥ ३ मीमांसा,
वैशेषिक और न्याय, इन तीनों के मनन करने से भी जिनकी बुद्धि स्थिर नहीं
होती तब वे चतुर सगुण ब्रह्मकी समझकर ४ मोक्ष पाते हैं ॥३८॥ हे प्रभु राम
सिंह वह भक्ति नव प्रकार की है सो प्रकृति सयधी (ससारके) पदार्थों से मन
को मोड़कर भक्त लोक निरंतर भक्ति का ५ कार्य करते हैं, वह नवधा भक्ति
श्रवण, कीर्तन, स्मरण १ चरणसेवन ७ पूजन ८ वदन ९ दासभाव १० सखाभाव
११ नवमी ११ अपनी आत्माको ईश्वरके अर्पण करनेवा, ये नव ही प्रकार की
भक्तियां तीन गुणों से सप्ताईस प्रकार की हैं और इन्हीं तीन गुणों के
भेदों से १२ पूजनीय तीन प्रकार के भक्त कहते हैं ॥३९॥ ये सप्ताईस भक्तियां
तीन प्रकार के भक्तों के साथ मिलकर जिन जिन की जैसे जैसे होती हैं वे
सब इक्कासी प्रकार की भक्तिया कहते हैं ॥४०॥

सात्विक^१राजस^२सुनहु भक्त तामस^३ त्रय^३ भूपति ॥
 इन^३ करि एकासीति^{८१} भक्ति पूर्वोक्त त्रिनव^{२७} भति ॥
 इह हिंसा^१ दंभ^२ अरु चित्त मच्छरपन^३ चाहत ॥
 तकै भक्त तामसिय^१ बलि सु कर्ता क्रोधी^१ बत ॥
 जस^१भोग^२भुक्ति^३चहि भक्त जब रचत भक्ति वह राजसि
 कर्ता^१हि तत्थ कामी^२कहत बहुत काम जिहिं हिय बसिय^४
 ॥ दोहा ॥

ईश्वरमें कृति आपिकै^१, अघ नासन^२ अनुरूप ॥
 चाहि सव्य प्रभु^३ आचरै, भक्ति सात्विकिय^३ भूप ॥४२॥
 कर्ता^१ कहै सात्विक^३ कहत, सगुन भक्ति ए^{८१} सर्व ॥
 कर्ता भक्त सकाम^१ है, अब निष्काम^२अखर्व ॥ ४३ ॥
 ॥ षट्पात् ॥

प्रभु गुन सुनतहि^१ पुरुष जानि अंतरजामी^२ जिहिं ॥

बिनु फल^३ बिनु व्यवधान^४ तकि एकाग्र चित्त^५ ति ॥

हे राजा वे भक्त १ सतोगुणी १ रजोगुणी और १ तमोगुणी, इन तीन
 के भक्तों से पूर्वोक्त सत्ताईस प्रकार की भक्ति मिलकर इक्यासी ४
 की होती है जो सुनो कि तमोगुणी भक्त हिंसा, कपट और ५ मत्सरता करके
 भक्ति करता है सो ६ खेद है कि वह भक्ति करनेवाला क्रोधी होता है. और
 यज्ञ, संसार के पदार्थों के भोग और उत्तम भोजन चाहकर भक्ति करता है
 वह रजोगुणी भक्त है, वह भक्ति करनेवाला कामी कहलाता है कि जिस
 के हृदय में बहुत कामना बसती है ॥ ४१ ॥ हे राजा जो पापों का नाश करने
 को अपने सदृश सब कार्यों को ईश्वर में अर्पण करके ईश्वरको आराधनीय
 जानकर भक्ति करे वह सतोगुणी भक्ति है ॥ ४२ ॥ इसको सतोगुणी भक्ति
 कहते हैं, ये सब इक्यासी प्रकार की सगुण भक्तियां हैं जिनका कर्ता काम
 सहित है और अब आगे निष्काम(कामना रहित) भक्त कहता हूं जो सबमें
 ८ बड़ा है ॥ ४३ ॥ प्रभुके गुण सुनते ही उसे हिरण्यगर्भ (परब्रह्म) और अन्त
 र्यामी जानकर बिना फल और व्याधरण रहित एकाग्रचित्त से देखें(ध्यान करें)

सागर१ गगा२ सलिल२ जया मन वृत्ति जमावहिं६ ॥

सात१ दास्य२ रस सख्य३ रु सुचि४ वात्मल्य५ रमावहिं७ ॥

कति जन सु भक्ति निर्गुन१ कहत स्वात विसय इम कति सगुन२ ॥

कीहिदेहु सकल आभिधान कछु मेम अतुल चहियत प्रगुन ॥४४॥

॥ मनोहरम् ॥

कहत परिच्छित१ ज्यो श्रवन१ तै आप्तकामं,

व्यासमुत्त२ कीर्तन२ तै विदित बखानिये ॥

स्मरन३ तै दैर्यपति३ लच्छी४ पयसेवन४ तै,

पूजन५ तै पृथु५ से प्रतापी जिम जानिये ॥

बदन६ तै विदित स्वफलकसुत६ पायो इष्ट,

दास्य७ तै कपीस्व१७ प्रतीति पहिचानिये ॥

मग्य८ तै किरीटी८ बलि९ स्वार्मकौ समर्पन९ तै,

बलि६ से विमुक्त पद प्रापित प्रमानिये ॥ ४५ ॥

॥ दोहा ॥

यह मध्यम७ श्रेढी इहा, भक्ति निरंत है भूप ॥

और जैसे १ समुद्र में गंगा का जल मिला जाता है तैसे मनकी वृत्तिको परमेस्वर में जमाते हैं और आन्तरस, दासभावस, सखाभावस २ निर्मलभावस और वात्मल्यस से प्रभुको रमाते हैं इस भक्ति को कितने ही लोग तो निर्गुण भक्ति और कितने ही इसको ३ मनका विषय होने से सगुण भक्ति कहते हैं सो ४ नाम कुछ भी कहो परन्तु तुलना रहित १ सरल गुणवाला अथवा प्रकृत गुणवाला प्रेम होना चाहिये ॥ ४४ ॥ अब आगे नवधामभक्ति के उदाहरण दिखाते हैं कि अवय से राजा प्रशिक्षितवैश्यरूपानन्द स तृप्त दुष्मा, ७ कीर्तन से शुण्णदेवप्रसिद्धदुष्मा, स्मरण से ८ प्रह्लाद, चरणसेवन से ९ लक्ष्मी, पूजन से प्रतापी राजा पृथु, बदन से १० श्यकटक का पुत्र अमूर, दासभाव से ११ हनुमान्, सखाभाव से १२ भर्जुन, १३ फिर आत्मसमर्पण से १४ बलि वैश्य, ये इष्ट फल पाकर १५ मुक्तिको प्राप्त हुए मानो ॥ ४५ ॥ हे भक्ति में १६ प्रीति करनेवाले राजा यह बीषकी सीढ़ी है जिसमें निष्काम भक्ति से विष्णु भगवान् को प्राप्त होकर

हरि पावत निष्काम ठहै, अंत मुक्ति अनुरूप ॥ ४६ ॥

तत्त्वबोध निरतहुं तथा, भक्ति सहित हुव मूरि ॥

सिव१ विरंचि२ सनका३दि सम, प्रेम द्विधा२ रुचि पूरि ॥ ४७ ॥

दत्त१ रु कपिल२ बिंदेह३ से, बहु रत केवल बोध ॥

व्यापहु भक्तिहु बोधमें, बोधहि भिन्न विरोध ॥ ४८ ॥

इत्युपास्तिकाण्डम् ॥

गीर्वाणभाषा आर्या ॥

भक्तेः श्रेढी प्रथमा १ यां स्वाधिष्ठाय धर्ममात्मीयम् ॥

आद्विजचाण्डालावधि कृत्वा कर्माप्नुते परमम् ॥ ४९ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

षट्पात् ॥

इहाँ धर्म१ आचरन प्रथम१ श्रेढी जो मूपति ॥

सो सामान्य१ बिसेस२ गिनहु द्वि२विध२हि श्रुति संगति ॥

आदि१ वर्णा सन एह१ स्वपचं परजंत समुद्धर ॥

१ अंत में सादृश्य मुक्ति होजाती है ॥ ४६ ॥ २ तत्त्वज्ञान से लगकर भी शिव, ब्रह्मा, सनकादिकों के समान बहुत भक्ति सहित (भक्त) होकर रुचि पूर्वक दोनों (ज्ञान और भक्ति) में पूर्ण हुए हैं ॥ ४७ ॥ ३ दत्तात्रेय, कपिलदेव और ४ राजा जनक जैसे बहुत केवल अद्वैतज्ञान में ही प्रीति करनेवाले हुए हैं और ज्ञान (आत्मज्ञान) में भी भक्ति होती है क्योंकि ज्ञान विरोध से भिन्न है इस कारण उसको भक्ति से भी विरोध नहीं है ॥ ४८ ॥

यह उपासनाकाण्ड समाप्त हुआ ॥ आगे कर्मकाण्ड कहते हैं ॥

भक्ति से पहिले जो कर्मकाण्ड रूपी प्रथम सीढ़ी है जिसको पाकर अपने धर्म में स्थित होकर, कर्म करके ब्राह्मण से लेकर चाण्डाल पर्यन्त परम पद (मोक्ष) को प्राप्त होते हैं ॥ ४९ ॥ हे राजा यहां अपने धर्म में चलने की जो प्रथम सीढ़ी है वह ५ वेद से सम्बन्ध रखनेवाली सामान्य और विशेष, इन दो प्रकार की है जिनमें सामान्य धर्म का भार सब मनुष्य मात्र के ऊपर कहा है सो ६ ब्राह्मण से लेकर ७ चाण्डाल पर्यन्त का द उद्धार करनेवाला है और दूसरा

सब मनुजनके सीस भनिय सामान्य धर्म१ भर ॥

दूजोर बिसेस धर्म१ सु वदिय अप्प बरन१ आश्रम२ उचित ॥

परधर्म बरहु सद्धि रु परत२ नित्य१हु निज निज होत हित५०

सुनहु धर्म सामान्य१ प्रथम१ सतोष१ छमा२ पुनि ॥

संस३ बहोरि दम४ सौच५ सुपहु अस्तेय६ लेहु सुनि ॥

सहित दया७ तिम सत्य८ विहित निज पठन९ विचारहु ॥

आत्म१ ब्रह्म२ एकत्व१ धी१० जु दसम१० सु हिय धारहु ॥

सामान्य धर्म लच्छन दस१०हिं मुख्य, इतर अनुगत सुमाति

आर्जव१ रु मैत्र२ अनेसूपता३ क्रम परोपकारा४दि कति५१

देसम१० माहिं नहि दिपत अर्थ जह तह इम अक्खहि ॥

सम१ मन मतिजय२सद्धि रु दम१ इद्रियजय२ रक्खहि ॥

सौच१ न्दान सुख२ सकल बहुरि अस्तेय१ बखानत ॥

विक्रवत परधन विजेन जु गन बिष्टा सम जानत२ ॥

विशेष धर्म अपने अपने षण और आश्रम के वचित कहा है जिसमें १ दूसरे का धर्म उत्तम होने पर भी उसको साधने (चलने) से गिरजाता है और अपना धर्म निन्दनीय होने पर भी उसमें चलना हित (मखा) होता है ॥ ५० ॥ अब सामान्य धर्म सुनो कि प्रथम सन्तोष, फिर क्षमा, २ मनको जीतना, फिर इन्द्रियों को जीतना, शुद्धि (पवित्रता) ३ बोरी नहीं करना, दया, सत्य, ४ अपने लिये जिसकी विधि होये उसका पाठ करना ५ अपनी बुद्धि में जीव और ब्रह्म की ५ एकता को धारण करना, यही सामान्य धर्म के दश ७ लक्षण हैं सो मुख्य हैं और हे श्रेष्ठ बुद्धिवाले राजा रामसिंह ८ अन्य ९ भ्रष्टता, मैत्री (मित्रता) १० दूसरे के गुण में दोष नहीं लगाना, इस क्रम से कितने ही परोपकार आदि धर्म उपरोक्त दश लक्षणोंवाले धर्म के साथ चलनेवाले हैं ॥ ५१ ॥ ११ उपरोक्त सामान्य दश धर्मों में जिनका अर्थ स्पष्ट नहीं दीव्यता उनकी व्याख्या करते हैं कि मन और बुद्धि को जीतना सम है, और इन्द्रियों के रोकने का नाम दम है, स्नान आदि सब पवित्रता को शौच कहते हैं, १२ एकान्त में देखेहुए भी पराए धनको बिष्टा के समान जानना १३ अस्तेय है, सो इस प्रकार सामान्य धर्म के सब लक्षणों और अपने अपने विशेष

प्रजाधान१ यजन२ रु पठन३, भोग प्रसक्ति अभान४ ॥
वीरभाव५ वितरन६ विधि सु, बाहुज२ वर्णा विधान ॥ ५८ ॥
अहति१ ईज्पा२ अध्ययन३, कृषि४ पशुपालन५ कर्म ॥
वानिज्य६ ए वैश्य३कै, धरे सीस खट६ धर्म ॥ ५९ ॥
पठन१ निर्जोचित यजन२ पुनि, वितरन३ शिल्प विधान ॥
त्रि३वरन सेवा५ कारुता६, पँज्ज४ छ६ धर्म प्रमान ॥ ६० ॥

॥ मनोहरम् ॥

वरन चतुष्क४कै ए खट६ खट६ कर्म तहँ,
तीन३ तीन३ जीवन उपाय अवधारिये ॥
खट६में सम त्रय३सौ विप्र१ अरु अप्रसक्ति१,
ज्ञान२ सूरता३सौ जीवै बाहुज२ विचारिये ॥
वैश्य३ पशुज्ञान१ कृषिकैर्म२ रु वनिज३तासौ,
सेवा१ शिल्प२ कारुता३सौ पँज्ज प्रतिपारिये ॥
गेद१ देह२ मडन१२ सुवैन३ पतिसेवा४ भक्ति५,

१ प्रजा की रक्षा करना, यज्ञ करना, पढ़ना, भोगोंमें आसक्त नहोना, और २ दान देना, ये छ ३ चरित्रों के कर्म हैं ॥ ५८ ॥ ४ दान देना, ५ यज्ञ करना, पढ़ना, खेती करना, पशुओंका पालन करना और व्यापार करना, ये वैश्यों के मस्तक पर छ' धर्म रक्ख हैं ॥ ५९ ॥ पढ़ना, ६ अपने योग्य यज्ञ करना, दान देना, शिल्प कर्म (दस्तकारी करना, तीनों वर्णोंकी सेवा करना और कमीशपन करना अथवा कारीगरी करना, ये छ धर्म ८ शूद्रों के हैं ॥ ६० ॥ चारों वर्णों के ये छ छः कर्म हैं जिनमें से तीन तीन कर्म ६ जीविका के उपाय के जानो अपने पत छ, कर्मों में से पढ़ना, यज्ञ कराना और दान देना, इन तीन कर्मों से ब्राह्मण जीविका करै और १० योगों में अनासक्ति, रक्षा और वीरता से ११ चरित्र जीविका करै, इन्ही प्रकार १२ पशुओं की पालना, १३ खेती करना और व्यापार करना, इन से वैश्य जीविका करै और सेवा करना (भौकरी), शिल्प, कारीगरी वा कमीशपन से १४ शूद्र अपना पालन (जीवन) करै, घर और शरीर को शोभायमान रखना, अष्ट (मैठे) वचन पालना, पति की सेवा करना भक्ति करना और सम्पूर्ण पशुओं को शुद्ध रखना, ये मुख्य छः काम लियों

वस्तुसुद्धि मुख्य छद्दि नारिन निहारिये ॥ ६१ ॥

॥ षट्पात ॥

आश्रम४ धर्महु अखिल धरहु अब कर्ण धराधवे ॥
 पौत त्रिबर्णज पाइ अनित बय परि द्वितीय२ भव ॥
 अर्जिन१ जटा२ उपवीत३ मेखला४ दंड५ कमंडलु६ ॥
 सबिधि धारि दर्भ सय रूपात गुरु गेह वसै खलु ॥
 मंगि सु द्विसंध्य भिक्षा मुदित आनि निवेदहि गुरु अरथ ॥
 वहे तस नियोग तो तास वहे असन१ नतो उपवास२ अथ६२
 इंद्रिय जित१ मित असन२ सील३ श्रद्धा४ नति संजुत ॥
 पुनि गुरु इच्छा पठन६ प्रथम पठनीय निगम७ नुत ॥
 पठन आदि१ अंत२ पुनि प्रनति मंडहि श्रीगुरु पय८ ॥
 जुग संध्या मौन९ जिम नियत साविली जप१० नय ॥

सायं१ प्रभात१ गुरु१ विष्णु२ शिव३ अर्क४ कृसां५ उपासना१२

के जानो ॥ ६१ ॥ १ हे राजा रामसिंह अब आश्रम धर्म भी सब सुनो जिनमें प्रथम ब्रह्मचारी का धर्म कहते हैं कि तीनों वर्णों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य) के २ बालक यज्ञोपवीत लेने की कही हुई अवस्था में ३ द्विजन्मा होवें अर्थात् यज्ञोपवीत लेवें और ४ मृगचर्म, जटा, जनक ५ कटिमेखला (मौंजी अर्थात् मूँजका कटिस्तत्र जिसको लोकमें करधनी वा कणगती कहते हैं) दण्ड कमण्डलु (जलपात्र) इनको विधि पूर्वक धारण करके ६ दर्भ (डाभ) को हाथ में लेकर ७ निश्चय ही प्रसिद्ध गुरु के घर में वसै और दोनों सन्ध्या अर्थात् प्रातःकाल और सायंकाल को भिक्षा मांग कर प्रसन्नता पूर्वक गुरु की भेट कर देवै जो गुरु की ८ आज्ञा होवै तो खावै और आज्ञा नहीं मिले तो वहाँ उपवास ही करै ॥ ६२ ॥ इन्द्रियों को जीतै १० प्रमाण से भोजन करै शील, अज्ञा और नम्रता युक्त होकर फिर गुरु की इच्छा होवै तब पढ़े उसमें प्रथम ११ पढ़ने योग्य और १२ स्तुति योग्य वेद पढ़े पढ़ने के आदि और अन्त में गुरु के चरणों में नमस्कार करै दोनों सन्ध्याओंके समय मौन रखै और नियम पूर्वक १३ गायत्री जप करै यही ब्रह्मचारीकी नीति (न्याय) है सन्ध्या समय और प्रभात समय दोनों समय में गुरु, विष्णु, शिव, सूर्य और १४ अग्नि की उपासना

स्रज१मधुरपल३भूखन४गध५सह वर्जहिं नारिन वासना॥६१॥

॥ दोहा ॥

इम गुरु गृह पढि आयुको, वटि चतुर्थ४ विताइ ॥

गुरु अभीष्टि दे स्त्रीप गृह, उपनयं विरचहिं आय ॥ ६४ ॥

जो असपिंडा१ जननि कुल, स्वक असगोत्रा२ सुद३ ॥

क्रम सवर्णा४ म्रैसी कनी, व्याहिं सु वटु१ प्रबुद्ध ॥ ६५ ॥

॥ पट्पात ॥

विवहिं नारि गृह वसहिं पच५ सूना जाके जिम ॥

कघट१ चुंछि२ बेहुकरिय३ आहि कडेन४ धरट५ इम ॥

पचन भेटन पाप पच५ मख नित्य गृही पर ॥

पाठन पठन१ प्रसिद्ध ब्रह्ममैख२ यह वसुधोवर ॥

वलि सुनहु श्राद्ध तर्पन नृपति मख२ पेश२ रु इवनादि३मत॥

सुरैमख३रु भूतमख४वलि सुनहु नैमख५अतिथि पूजन५नियत॥६६॥

॥ दोहा ॥

करै १पुष्पमाळा, दाहत, माम, श्रुपण, सुगन्धि पदार्थ और जियोंकी सगति, इन सबका त्याग करै ॥ ६३ ॥ इसप्रकार गुरु के घर में पढ़ने में अपनी आयुका चौथा भाग बिताकर गुरु को २ मनबोधित देकर अपने घर पर आकर ३ उपनयन संस्कार (ब्रह्मचारी का विद्या की समाधि का संस्कार विशेष) करै ॥ ६४ ॥ जो अपनी माता के कुलकी ४ सपिण्डी में नहीं होवै (माता के कुलकी सपिण्डी पाच पीढ़ी पर्यन्त और अपने कुलकी सपिण्डी सात पीढ़ी पर्यन्त मानी जाती है) और ५ अपने गोत्रकी नहीं होवै उस शुद्ध और अपने वर्ण की कन्या को क्रम से बिद्वान् ६ ब्रह्मचारी व्याहै ॥ ६५ ॥ स्त्री को व्याहकर घर में रहता है तथा उस गृहस्थी के पाच ७ हिस्सा होती हैं ८ जल का घड़ा ९ चूल्हा १० बूझारी ११ ऊल्ल और १२ घरटी, इन पाँचों का पाप मिटानेको गृहस्थ पर नित्य पाच पञ्च खोगे हुए हैं तथा १४ हे राजा रामसिंह पढ़ना और पढ़ाना यह तो १५ ब्रह्मपञ्च है, आश्रम और तर्पण यह पितृपञ्च है, पञ्च आदि १५ देवपञ्च है, यज्ञ देना श्रुतपञ्च है और अतिथि पूजन १६ मनुष्य पञ्च नियत है ॥ ६६ ॥

क्रम करि करि मख पंचक५ रु, जति१ बटु२ अतिथि३ जिमाइ
ज्यौ सब निज४न जिमाइकैं, खिल तव दंपति२ खाइ ॥६७॥
जाम१ रहत निस नित्य जगि, धर्म१ अर्थ२ गति ध्याइ ॥
सौच१ न्दान२ संध्यादि३ सब, बिधिसद कृत्य बनाइ ॥ ६८ ॥
॥ षट्पात ॥

महिला ऋतु प्रतिमास घस्रै चउ अंग जु लांघत ॥
अहं बारह१२ सो अधम बालहंताहि होत बत ॥
अष्टमि८१ भूत१४२ अमा३०१३रु अखिल चंद्रा१४१४ एकादसि१२१५
इन्ह५१८ तजि अरु खिल२२ अहन मिलहिं तियसन वांछा बसि ॥
गर्भ१ लखि करहिं तबतैं गृही२ संस्थार्वाधि संस्कार सब ॥ १६ ॥
गृहि२ धर्म एह लाघव गदित अरु वैखानसं३ धर्म अब ॥ ६९ ॥
॥ दोहा ॥

आयु भाग दूजो२ सु इम, व्याहि रु गेह विताइ ॥

पुवन दै सब तब बिपिनै, जीवैं दंपति२ जाइ ॥७०॥

क्रम पूर्वक ये पांचों यज्ञ करके सन्यासी १ ब्रह्मचारी और अतिथि को भोजन कराके और वैसे ही २ अपने सब लोगों को भोजन कराकर जो ३ शेष बाकी) रहै सो आप स्त्री पुरुष भोजन करै ॥ ६७ ॥ एक प्रहर रात्रि बाकी रहते नित्य जगकर, धर्म और अर्थ की रीति सोच (विचार) कर फिर शौच, स्नान, सन्ध्या आदि कर्म विधि पूर्वक करै ॥ ६८ ॥ प्रतिमहीने४ स्त्री की ऋतु (रजस्वलापन) के शुद्ध हुए पीछे आगे के चार ५ दिनों को लांघ कर इसके अनन्तर बारह ६ दिन तक ऋतु काल रहता है [यहां पहले चार दिनों का इस कारण से त्याग है कि उन चार दिनों में गर्भाधान होने से बालक अधम और हिंसक पापी होता है] और अष्टमी, चतुर्दशी, अमावास्या, पूर्णिमासी और एकादशी, इन तिथियों को छोड़कर बाकी सब ७ दिनों में इच्छा पूर्वक स्त्री से मिलै और गर्भ धारण किया हुआ देखकर गृहस्थ, गर्भाधान से लेकर द मरण पर्यन्त के सब संस्कार करै, यह गृहस्थ का धर्म संक्षेप से कहता है और अब १० वानप्रस्थ का धर्म कहता हूं ॥ ६९ ॥ इस प्रकार व्याह करके आयु के उस द्वितीयभाग को घर में बिताकर सब पदार्थ पुत्रों को देकर स्त्री और पुरुष दोनों ११ वन

पत्नी व्है सतति प्रिया, जव गृह छोरे जाहि ॥

विपिन नतो उभय२ हि वसैं, तकि अर्किचनताहि ॥७१॥

पट्टपात् ॥

केवल रहन कसानुँ उँटज१ कंदर२ वा आश्रय ॥

नख१ रु रोम२ मल३निबहि सवैं सीता१दि३कृतु३दन रँय ॥

नीवारा१दिक वन्य मन्न१ फल२ पुष्प३ कद४श्म ॥

पुरोडास१ चरु प्रमुख करैं सह रुम तिनसों तिम ॥

अवसेसको सु विरचैं असन वेर इक१ सबकरि विहित ॥

नीवार१आदि३जव होइ नव चतुर तजै तव पुब चित॥७२॥

॥ पादाकुलकम् ॥

जो गिनि विहिते न्हान डारैं जल१, मजैन करि खोजैं न देह मल
कैंति १ रु बल्कल२ दड३ कमडलु४, खिंजो दर्भा१दि५ रवैं धारत
खल्लु ॥ ७३ ॥

में जाकर जीये ॥ ७० ॥ यदि स्त्री १ सतान में प्रेम करनेवाली होवे तो उसको घर में ही छोड़े और वह भी सतान का स्नेह छोड़ देवे तो उसको २ कामना रहित देखकर स्त्री पुरुष दोनों ही वन में वास करें ॥ ७१ ॥ केवल ३ अग्नि रखने का क्रिय ४ मींगड़ी (टपरी) वा गुफा का आश्रय लेवे, नख और केश नहीं काटे, शरीर का मैल नहीं उतारे, सर्दी गर्मी आदि श्रुत्या के ५ वेग को सहन करे ६ तृणा से निकलनेवाले जगली घान्य (साया, मछीया आदि अन्न घान्य) आदि अन्न और फल, फल, कद, ७ जघके चूनकी रोटी, होमने के अन्न आदि से काम पूर्वक नित्य होम करके 'यहां चरु शब्द की सगति से होमका ग्रहण है' उचित कार्य कौ होमसे याकीयवे उसको दिनमें एकबार भोजन करे और ८ जप साया, मछीया, मुरट आदि वन के अन्न नवीन उत्पन्न होजायें तब वह चतुर पहिजे का समग्र किया हुआ अन्न त्याग देवे ॥ ७२ ॥ ९ विधि समझकर शरीर पर स्नान का जल ढाखे परन्तु १० मर्दन (माजिस) करके पसीना नहीं उतारे अर्थात् रगड़कर शरीर का मैल नहीं उतारे ११ याकी बामको आदि लेकर १२ मृगधर्म, वृक्षों की आल (भोजनप्र आदि) दूध (हाथ में रलने की पाटि, लकड़ी) कमडलु (जलपात्र) १३ निरवय ही धारण करे ॥ ७३ ॥

॥ दोहा ॥

इम तृतीय३ निज आयुको, वन रहि बंट बिताइ ॥

बैखानस३ सन्यास४ विधि, पुनि सद्धैं खिन पाइ ॥ ७४ ॥

जोन विरति तो वह जबहि, रचि अनसन विधि एह ॥

तत्त्व२४न तत्त्व२४मिलाइ तनु, छोरैं छँम लहि लाह ॥ ७५ ॥

ब्रह्मचर्य१हीतैं विरति, वा गृह१हीतैं आइ ॥

तो जुग२ आश्रम मध्य तजि, जती४ द्रुतहि होजाइ ॥ ७६ ॥

रहैं दिगम्बर १ बा धरैं, पढ कौपीन पिधान२ ॥

वस्तु कमंडलु१ दंड२ बिनु, न इतर जास निर्धान ॥ ७७ ॥

विधि न सिखा१ सूत्र२हु बहन, तो को विधि खिल तास ॥

मिटन अहं१ ममता२ अवधि, अटैं असंग उदास ॥ ७८ ॥

॥ षट्पात् ॥

संगति भिच्छा समय करैं खिन वसति अटन क्रम ॥

आप१ ब्रह्म२ जग३ इक्षु१ भेद विनु पिक्ख छोरि भ्रम ॥

इसप्रकार अपनी आयु का तीसरा भाग वन में रहकर बितावै वह वानप्रस्थ समय पाकर सन्यास साधै ॥७४॥ यदि वानप्रस्थ अवस्था में उपराम [वैराग्य] नहीं होजावै तो अथवा जिनको वानप्रस्थ अवस्था में ही वैराग्य होजावै तो वहीं पर २ अन्न जल का त्याग करके ४वह समर्थ तत्वों में तत्त्व मिलाकर लाभ के साथ शरीर छोडै ॥७५॥ यदि ब्रह्मचर्य से वा गृहस्थ से ही ५वैराग्य उत्पन्न होजावै तो दो वा एक आश्रम बीचमें छोडकर वहींसे शीघ्र सन्यासी होजावै ॥७६॥ सन्यासी या तो नग्न रहै या ७ ढाकने को कौपीन (लंगोटी) रखै, उस सन्यासी के कमंडलु और दंड, इन दो वस्तुओं के बिना और कोई धन नहीं है ॥ ७७ ॥ उसको चोटी और ६ जनेऊ धारण करने की भी विधि नहीं है तो फिर बाकी की उसके लिये कौनसी विधि होसकती है अर्थात् कोई वस्तु रखे ने की विधि नहीं है, जहां तक १० अहंता और ममता नहीं मिदै तहां तक वह (सन्यासी) ११ संग रहित और उदास होकर विचरै (फिरै) ॥७८॥ १३ वसती की १२ संगति (साथ) भिच्छा मांगने के समय क्षण मात्र करै, आत्मा, ब्रह्म और

ज्ञानकाङ्क्ष जो गदिन धरहिं चर्पा अवधूत सु ॥
जोओ जहँ जहँ जास पाय परसैं बड़े पूत सु ॥
सुप्ति प्रबोधन विंच सधिमें जो यिति सो निज जानिकैं ॥
जो रहैं मुक्ति वधनर जुगरहि मायामात्र प्रमानिकैं ॥७९॥
॥ दाहा ॥

नहि निरोध उतपत्ति नहि, बलि न साधक न बद्ध ॥
अरु न मुमुक्षु न मुक्तद इह, जहहि विस्मृत जह ॥८०॥
ए वरनाश्रमधर्म इम, सुभ सामान्य विसेसर ॥
अर्थर रोजनय सुनहु अब, मयपटु रामर ०१॥५ नरेस ॥८१॥
इति श्री वशभास्करे महाचम्पुके उत्तरायणोऽष्टमराशौ बुन्दीन्द
रामसिंहचरित्रे रावराजारामसिंहार्यज्ञानकाण्डोपासनाकाण्डकर्म
काण्डसहितवर्णाश्रमधर्मभावणा द्वितीयो मयूख ॥२॥
आदित चतु पद्युत्तराशिशततमो मयूख ॥३६॥
प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

जगत्, इनको भ्रम छोड़कर भेद भाष राहत एक जानै ? जो ज्ञानकाङ्क्ष में
फही है उस क्रिया को धारण करे वही अवधूत (सन्यासी) है, उस सन्यासी
के जहा जहा जो जो चरणों को स्पर्श करता है वह वह २ पवित्र होता है,
सुप्ति और जाग्रत अवस्था की ३ सधि में जो स्थिति है वही अपनी स्थिति
जानकर यधन और मोक्ष दोनों को माया माध मानकर रहता है ॥ ७९ ॥
नहीं तो नाश है, नहीं उत्पत्ति है और न साधन करनेवाला है, न कोई वधन
है, न मुक्ति की इच्छा करनेवाला है और न मुक्ति है, जो मिळता है वह
केवल विस्मृति (आत्मस्वरूप को भूलना अर्थात् अज्ञान) से मिळता है ॥ ८० ॥
इस प्रकार सामान्य और विशेष दो प्रकार के श्रेष्ठ वर्णाश्रम धर्म हैं हे नाति
चतुर राजा रामसिंह आप पुरुषार्थवालो ५ राजनीति सुनो ॥ ८१ ॥

श्रीवशभास्कर महाचम्पु के उत्तरायण के आष्टमराशि में बुन्दी के भूत
रामसिंह के चरित्र में, रावराजा रामसिंह को ज्ञानकाङ्क्ष, उपासनाकाङ्क्ष और
कर्मकाङ्क्ष सहित वर्णाश्रम धर्म सुनाने का दूसरा मयूख समाप्त हुआ ॥२॥ और
आदि से तीन सौ चौसठ ३६४ मयूख हुए ॥

(दोहा)

नृप१ अमात्य२ मंत्री३ रु निधि४, देसपटुर्ग६ वल्ल बुद्ध॥
 अंग सप्त७ वपु राज्य ए, स्वामी१ अव तर्ह सुद्ध ॥ १ ॥
 सक्ति तीन३ खट६ गुन समुक्ति, च्यारि४ उपाय विचारि॥
 नृप१ जु बहैं इन१३कों नियत, रहैं अजेय सु रारि ॥ २ ॥
 निज बस१ सो उत्तम१ निपुन, मध्यम२दुव२ बस मान ॥
 विकखहु अधम३अमात्य बम३, स्वामी१ त्रि३विध सु जाना॥
 पञ्चभटिका ॥

ए तीन३सक्ति समुक्तहुअधीस, इन३ कणि जिन गंजत सबन डिस॥
 सबसिर अमोघ सासन१विसेस, अवनीमहेन्द्र प्रभुसक्ति१ एसाथा
 उपजै जहँ मंत्र५ जु पंच५ अंग, सो मंत्रशक्ति२ नृप नैप प्रसंग ॥
 उच्छाह होइ उद्यम३ असेरा, उच्छाहसक्ति३ इम सो रैसेस ॥५॥
 अव सुनहु मंत्रके पंच५ अंग, ॥

इक१ उष्ट काज साधन उपाय१, दूस्रो२समर्थ तम ठहै सहाय ॥ ३ ॥
 राजा, अमात्य, मंत्री, १ कोश[तजाना], देश, गढ़ और १ सेना ये राज्य के
 सात अंग जानो. जिनमें प्रथम स्वामी [राजा] का शुद्ध लक्षणा कहते हैं ॥ १ ॥
 कि तीन शक्ति, छः गुण और चार उपाय, इनको विचारकर जो राजा धारण
 करता है वह ३ निश्चय ही ४ बुद्ध में अजेय रहता है ॥२॥ जो राजा अपने ही
 वश में रहता है वह तो उत्तम है, और जो वे अपने और अमात्य, दोनों के
 वश में रहता है वह मध्यम है, और जो केवल ७ अमात्य के ही वश में रहता
 है वह अधम है सो हे सुजान[रामसिंह]इसप्रकार स्वामी तीन प्रकार का जानो
 ॥ ३ ॥ हे स्वामी ये ही तीन शक्ति जानो. जिनसे स्वामी सब को दवाता है ८
 सबके ऊपर अमोघ[पीछी नहीं फिरनेवाली] आज्ञा होवे उसका नाम१हे राजा
 रामसिंह, प्रभु शक्ति है अथवा राजा की वह प्रभु शक्ति है ॥ ४ ॥ जिस मंत्र
 [सलाह] में १०पांच अंग उत्पन्न होवें उसको ११ नीति के प्रसंग से राजा का
 मंत्रशक्ति कहते हैं और सम्पूर्ण उद्यमों में उत्साह होवे उसको १२ राजा की
 उत्साह शक्ति कहते हैं॥५॥ अब मंत्रके पांचों अंगों का सुनो कि प्रथम तो अनुकूल
 [इच्छानुसार]कार्य साधने का उपाय है, दूसरा अंग समर्थ होने का है जो कार्य

वलि देस१ काल२ संगति विचार३, है चोथो४ अवयव विघ्नद्वार४
सुखहै अमोघ कर्मावसान५, पचम५ प्रतीक सो मत्र मान ॥ ७ ॥
नरनाह सुनहु खट६ गुनन नाम, तँहँ सधि रु विग्रह यान तामँ॥
आसन४तिम द्वेषाभाव५ मोहि, जहँ छटो६ आश्रय कहत जाहि॥८॥

॥ दोहा ॥

सधि१ मैत्र२ सन्धज३ रु, इतरंतर उपकार ॥

अरु उपहार४ स नाम इम, चउ४ तस भेद विचार ॥ ९ ॥

॥ पट्टपात् ॥

पेलैमै गुन पित्रिख आप गुन रांगी व्है इम ॥

छोरि लोभ छर्म सधि करै१ मैत१ सु जानहु जिम ॥

कन्या दे रु करै२ सु सधि संवधज२ धारहु ॥

मोहिँ मोहिँ उपकार व्है २ सु उपकार३ निहारहु ॥

१ पुहवि१ रु रत्न२ गज३ वप४प्रमुखँ दे करै४ सु उपहार४यह
चउ४ भेद सधि१ इम अब सुनहु अष्ट८ भेद विग्रह असह१०

॥ दोहा ॥

साधन का सहायक है, तीसरा अग देव काख के १ साध विचार करने का है,
चौथा अग कार्य के २ अग का विघ्न मिटाना है, और अतका पाचवा अग क
र्म[कार्य] खाजी नहीं जाने का सुखकारी है, सो मत्रके पेही पाव १ अग मानो
॥ ७ ॥ चांगे गुणों के नाम मूज में स्पष्ट हैं ४ तथा ५ है ॥ = ॥ प्रथम गुण सधि
के चार भेद हैं इनम मित्रता से, सपथ से, ९ परस्पर के वपकार से और भूमि
आदि देकर उपहार [नजराना] करने से होता है, जिसके लक्षण आगे के छद्
में स्पष्ट कहते हैं ॥ ९ ॥ चूमेरे (वायु) में गुण देखकर आप गुणों में ७ मीति करके
जोम छोड़कर = समर्पता से सधि करे वह सधि मैत्रेयज है और कन्या देकर
सधि करे उसको सन्धज सधि जानो और परस्पर वपकार करके सधि करे
सो वपकारक सधि है और भूमि, रत्न, हाथी, घोड़ा ९ आदि देकर सधि करे
उमका नाम उपहार सधि है इस प्रकार सधि के चार भेद हैं अब आगे नहीं
सहन करने योग्य विग्रह के आठ भेद कहते हैं ॥ १० ॥

विक्रमं१ मंत्र२ सहाय३ बैल४ रत्न५ दुर्ग६ आरोग्य७ ॥
इत्यादिक करि हीन ठहै, जो नृप विग्रह जोग्य ॥ ११ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

अष्टादि विग्रह२भेद सुनो इम, जे कामज१लोभज२भूमिज३जिमा
मानज४अभय५इष्टज६रु मदभव७, एक द्रव्य अभिलाष८धराधर्व९
स्त्रीनिमित्त१ इनमें कामज२ सो, श्रीनिमित्त२लोभज२जानहु सो।
भूनिमित्तभूमिज३ पहिचानों, विरुद निमित्त४ मानभव४ मानों१
विजय निमित्त५जु अभयसु५विग्रह, सरन निमित्त६नाम इष्टज६स
विद्या१धन२जुवन३मदिरावस, रचै७सु विग्रह२मदज७वीत रस१२४

॥ दोहा ॥

माँहिंमाँहिं विग्रह२ मचै, एक१दि अर्थ निमित्त८ ॥

एकद्रव्य अभिलाष८ वह, चिंतहु भूपति चित्त ॥ १५ ॥

मंत्री१मंत्र२ रु कोस३वल४, मित्र५हु न भजत जाहि ॥

१ पराक्रम, मंत्र, सहाय, २ सेना, रत्न, गढ़, ३ नैरोग्यता आदि
हीन होवै वह राजा विग्रह करने योग्य है ॥ ११ ॥ इस विग्रह के आठ भेद
हैं. काम से उत्पन्न, लोभ से उत्पन्न, भूमि से उत्पन्न, मान से उत्पन्न, भय से
उत्पन्न, इष्टवांछा से उत्पन्न, मद से उत्पन्न, एक द्रव्य की अभिलाषा होने
से ४ राजाओं में विग्रह होता है सो सुनो ॥ १२ ॥ ५ इनमें जो विग्रह स्त्री के
कारण से होवै उसको कामज कहते हैं. और ६ लक्ष्मी (धन) के कारण विग्रह
होवै वह लोभज है. ७ भूमि के कारण होनेवाला विग्रह भूमिज है. और ८
यश [स्तुति] के कारण विग्रह होवै वह मानज है ॥ १३ ॥ विजय करने के कारण
होवै जो मानभव, और किसी को शरण रखने के कारण से होवै वह इष्टज
कहाता है. विद्या, धन, यौवन और मद्य के वश से जो विग्रह करै वह विने-
रसवाला मदज विग्रह कहाता है ॥ १४ ॥ ९ एक ही अर्थ के लिये परस्पर विग्रह
होवै वह एकद्रव्यअभिलाष कहलाता है ॥ १५ ॥ जिस राजा को मंत्री,
सलाह, खजाना, सेना और मित्र १० नहीं सेवन करते होवैं अर्थात् ये जिसके
नहीं होवैं और जो मनु में कहे अठारह व्यसनों में से किसी में युक्त और

वहै व्यसनी१ बंरुणा२ सुदी, यान३ उचित नृप आदि ॥१६॥

॥ पादाकुलकम् ॥

यात्रा३इह तीजो३गुन अक्खिय, ऋपिन भेद सप्त७हि तस रक्खिय
सधानजा१ पारिणारोधा२ जिम, नाम मित्रविग्रहिनी३ है तिम१७
द्वद्व२जा४ रु कुलपा५ निर्व्याजा६, शीघ्रगा७हु रजत जिन्ह राजा ॥
श्रुति धारहुलच्छन अव सत्त७न, पहु जिन करि पहुँ दोइ प्रमत्त न१८
दोहा-पारिणारोधासों सधि करि, जु इतर अरिपर जात१ ॥

जो यात्रा३ सधानजा१, कहत नीति निर्णयात॥१९॥

पारिणारोधाके रोध पर, जु बैल रक्खि पुनि जाइ२ ॥

ताहि पारिणारोधा२ कहत, पटु नैपआगम पाइ ॥२०॥

॥ पादाकुलकम् ॥

प्रथम कलह अरि१ मित्र२न पारै, ताहि सत्रुपर सु पुनि सिधारै३
एह मित्रविग्रहिनी३ यात्रा, मिलि दुवर जँहँ छिन्न अरि मैत्रा॥२१॥

जौपर यात्रा सोहु समुख जब, ताके जाइ४ द्वज४ है तब ॥

सत्रु वधु लै सग सत्रुपर, जाइ५ सु है कुलपा५ बैसुधावर ॥ २२ ॥

मथपी होवै यह राजा यान (चढाई) के योग्य है अर्थात् ऐसे राजा पर चढाई करनी चाहिये ॥१६॥ इस यात्रा(यान)को तीसरा गुण कहा है जिसके श्रुतियों ने सात भेद कहे हैं २इस शीघ्रगासे राजा जोग प्रीति करते हैं १इ प्रधुरामसिंह अथ इन साता के लक्षण सुनो कि जिनसे ४ राजा प्रमत्त नहीं होवै ॥ १७॥

॥ १८ ॥ ५ पीठ पर से चढाई करके जीतने की इच्छा करनेवाले शत्रु से सन्धि करके जो अन्य शत्रु पर जावै उसको ६ नीतिनिपुण संधानवापाता (यान) कहते हैं ॥ १९ ॥ पीठ पर से चढाई करनेवाले शत्रुको रोकने के अर्थसेमा रत्न

कर जो अन्य शत्रु पर जाता है उसको ६नीति शास्त्रको प्राप्त होनेवाले पचतुर पारिणारोधा यात्रा कहते हैं ॥ २० ॥ प्रथम शत्रु से और १० शत्रुके मित्रों से कलह कराकर फिर उस शत्रु पर चढाई करे और ११दोनों मिलकर उसका घन कैंन उसको मित्रविग्रहनी यात्रा कहते हैं ॥ २१ ॥ १२ जिस पर यात्रा करें यह शत्रु युद्ध करनेको सन्मुख भावै उस यात्रा को द्वज४ कहते हैं और १३ है राजा रामसिंह शत्रु के सम्बन्धियों को साथ लेकर शत्रु पर जावै

स्वस्थभाव सन अरिसिर*संकम६, निर्व्याजा६ कहियत यह उत्तम
सत्रुहिँ इनन †प्रमाद छोरि सब, ‡सहसा जाइ७ सीघ्रगा७ तो तब२३

॥ घनाक्षरी ॥

आसन चतुर्थ४ गुन भेद दस१० ताके अब,
स्वस्थ१ रु उपेक्षा सन२ मार्गअवरोध३ नाम ॥
देस स्वीकरण४ रमनीय तैसँ दुर्गासन६,
निकट७ रु दूर८ पराधीन९ रु प्रलोभ१० ताम ॥
अरि सब मारि राज्य अप्पन अकंटक कै,
स्वस्थपनसौं जो रहै१ स्वरथासन१ सो लजाम ॥
बैरिन निबल जानि अप्पहिँ प्रबल मानि,
सैदय जनावै२ सो उपेक्षासन२ किति धाम ॥ २४ ॥
तटिनी प्रवाह१ दवदाह२ आदि कारनकै,
राह रुकै३ आसन४०है मार्ग अवरोध३ गेय ॥
जीति अरि देसकोँ करै जो ताँहँ४ आसन४ सो,
राम२०१४ नरनाह देस स्वीकरण४ नामधेय ॥
सत्रुनकोँ मारि तिन्ह नैर धन१ धान्य२ करि,

उस यात्रा का नाम कुल्या है ॥ २२ ॥ स्वस्थभाव से शत्रु पर*चढ़ाई करे जिस
उत्तम यात्रा को निर्व्याजा कहते हैं और शत्रु को मारने के लिये † आलस्य
तथा असावधानी को छोड़कर ‡ अचानक यात्रा करे वह सीघ्रगा है
॥ २३ ॥ चौथा गुण आसन है जिसके दस भेद कहते हैं १ तहाँ, सब शत्रुओं
को मारकर २ राज्य को निष्कंटक करके आप चिन्ता रहित होकर रहै उसको
स्वस्थासन कहते हैं वह सब से सुन्दर है और शत्रुको निर्बल और आप को
प्रबल मानकर ३ दया जनावै वह उपेक्षा नामक आसन कीर्तिका घर है ॥ २४ ॥
४ नदी के प्रवाह से वा अग्नि लग जाने आदि कारणों से मार्ग रुककर सुकाय
होजावै उसको मार्गअवरोध आसन ५ कहते हैं, शत्रु के देशको जीतकर वहाँ
निवास करे उसको हे राजा रामसिंह ६ देशस्वीकरण नामक आसन कहते हैं
शत्रुओं को मारकर उनके नगरको धन से और धान्य से

रंभ्य गिनि तत्त्यहि रहै५ सो रमनीय५ श्रेय ॥
 जीति दुर्ग अरिकों तहाँसों खिल जीतिवेकी,
 अच्छी गिनि जो रहै६ सु दुर्गासन६ हे अजेय ॥ २५ ॥
 दोढ़ा-धूल सह रिपु ढिग जाइ बलि, करन महर्घ कपान ॥
 राज्य विगारन तस रहै७, वहे निकट७ अभिधान ॥ २६ ॥
 निज देसहिं गिनि दर नृप, आयो पाउस इक्खि ॥
 रघै सिधिर८ दूरासन८ सु, सबत हित नय सिक्खि ॥ २७ ॥
 बेरी वस१ वा सुदद वस२, नृप जो निकसि सकै न ॥
 पराधीन९ नामक प्रथित, यह आसन४ नय अने ॥ २८ ॥
 कैटक जास बहु दैन कदि, रिपु गजन रक्खै१० सु ॥
 नाम प्रलोभासन१० नृपति, सूरि दसम१० अक्खै सु ॥ २९ ॥
 बली रिपुन वस करि निवल, कटिसकै जु न काल ॥
 तहँ वैधीभाव५ तव, पचम५ गुन छितिपाल ॥ ३० ॥
 मिटपामन१ मिटपावचन२, मिटपाकर्म३ उदार ॥
 जुग२ बेतन४ जुगर माभूतक५, पचपहि द्वैध५ प्रकार ॥ ३१ ॥

१ सुन्दर जागफर वहा रहे तो सुंदर रमणीय आसन है, शत्रु का गढ़ जीतकर
 पहा से हीरपाकी के देशको जीतना अच्छा जानकर वहाँ पर रहै उसको ३ है
 अजेय रामसिंह दुर्गासन कहते हैं ॥ १५ ॥ ४ पक्षपूर्वक तथा सेना सहित शत्रुको समीप
 जाकर ५ फिर १ माग लेने की वस्तु को महीना करने और राज्य विगाड़ने को रहै
 उसका ७ नाम निकट आसन है ॥ २६ ॥ जो राजा अपने देश को दूर जानकर और
 ८ पर्याको आया देखकर रहने को डरे रहै और नीति की शिक्षा से हित साधन
 करे वह दूरासन है ॥ २७ ॥ शत्रु के पक्ष में होकर वा ९ मित्र के पक्ष में होकर
 जो राजा नहीं निकल सकै वह ११ नीति का घर पराधीन नामक १० प्रसिद्ध
 आसन है ॥ २८ ॥ शत्रु को मारने के लिये १२ सेना को पक्षत देना कहकर
 रक्खै उसको ११ पक्षित लोग दूसरा प्रलोभासन कहते हैं ॥ २९ ॥ यज्वान्
 शत्रुओं के पक्ष में होकर जो निर्धन १४ समय को नहीं निकाल सकने की अ
 वस्था में वैधीभाव को देखे वह राजा का पाचवां गुण है ॥ ३० ॥ ३१ ॥

पादाकुलकम्

बैनन हित मनमें विरोध बहि१, मिथ्यामन१ यह द्वैधीभाव्यात महि
बैननहितरु विरोध कर्म विधि२, वरनत मिथ्यावचन३ नीति निधि३२
लघु१ अरि काज करै गुरु२ लोपन३, मिथ्याकर्म३ सु द्वैधीधरहु मन
इक१ सन प्रकट रु छन्न अपर२ सन, बेतनलै ४ सु वजत जुग
बेतन४ ॥ ३३ ॥

रिपुहिँ मरावन दै सु वित्त लाहि, तस अरिसौहु लहैं तिम वित्त५ हि
जुग२ प्राभृतक५ नाम तस जानहु, अब छठो६ आश्रय६ दहिय आ-
नहु ॥ ३४ ॥

अप्य निबल दैम भीत अनाश्रय, आश्रय सबल लै सु गुन आश्रय
जास त्रि३ भेद सदाश्रय१ जैसैं, अन्याश्रय२ दुर्गाश्रय३ अैसैं ॥ ३५ ॥
बली सत्रुकोँ जानि धर्मधर, निबल मिले१ सु सदाश्रय१ नर्य पर॥
रिपुसौभीत बलिष्ठअपरं लाहि, व्है तसबस अन्याश्रय२ सो कहि३६
भजिज निबल जो सबल सत्रु भय, सेवहिँ दुर्ग६ है सु दुर्गाश्रय३॥

वचनों में हित और मनमें विरोध धारण करै वह श्रुति पर मिथ्यामन नामका
द्वैधीभाव प्रसिद्ध है, इसी प्रकार वचनों में हित और १ कार्य(काम) में विरो-
ध होवै उसको नीति ही है धन जिनके ऐसे विद्वान् मिथ्यावचन नामक द्वै-
धीभाव कहते हैं ॥ ३२ ॥ छोटे शत्रु से २ बड़े के नाश करानेका कार्य करना
मिथ्या नाम का द्वैधी भाव है, एक से प्रसिद्ध और दूसरे से छाने ३ तनलाह
लेवै उसको जुगबेतन द्वैधीभाव कहते हैं ॥ ३३ ॥ शत्रु को मरवाने को देव सो
४ धन लेकर ५ इसी प्रकार उसके शत्रु से भी धन लेवै उसका नाम जुगप्राभृत
द्वैधीभाव है. अब आगे आश्रय नामक छठा गुण कहते हैं ॥ ३४ ॥ आप निबल
और ७ आश्रय रहित होकर ६ दंड के भय से बलवान् का आश्रय लेवै उस
छठे गुण का नाम आश्रय है ॥ ३५ ॥ बलवान् शत्रु को धर्म धारण करनेवाला
जानकर निबल उससे मिलै उसको ८ नीति के तत्पर लोग सदाश्रय कहते
हैं, शत्रु से डरकर ९ दूसरे बलवान् को बीच में लेकर उस शत्रु के बश में हो
वै जिसको अन्याश्रय कहते हैं ॥ ३६ ॥ बलवान् शत्रु से भागकर जो निबल
१० गढ़ का आश्रय लेवै वह दुर्गाश्रय है. अब उपाय के चार भेद कहते हैं सो

अव उपाय चउ४ भेद सुनहु यह, साम१भेद२उपदाम३दह४सह३७
जानहु भूप चउ४हि क्रमते जिम, उत्तम१मध्यम२अधम३कष्ट डम
इनच्चारि४नकेभेदमानअब, सहलच्छनप्रभुराम२०१४सुनौ सब३८

॥ दोहा ॥

कर्णसुभग१ दैविक२ कथित, स्मारक३ लोभज४ सार ॥
बहुरि अप्प अर्पन५ विदित, पच५हि साम१ प्रकार ॥ ३९ ॥
परचित्तहिं करि प्रीति वस, हित सलाप गहाइ ॥
साम१ व्है जु दुहु२घाँ सुखद१, कर्णसुभग१ सु कहाइ ॥ ४० ॥
सपयादिक करि परसंपर, विरचै जई विस्वास२ ॥
समुझहु दैविक१ साम१ सो, पावहिं नीति प्रकास ॥ ४१ ॥
सवधहिं सुमिराइकै, व्है३ सो स्मारक३ होहि ॥
ईष्ट परस्पर अप्पि व्है४, सार्वन१ लोभज४ सोहि ॥ ४२ ॥
मम वपु है तव अर्थ इम, जेपि रु विरचै५ जाहि ॥
पचम५ सात्वन१ भेद पहु, आत्मअर्पन५ सु आहि ॥ ४३ ॥
सिद्धिव्है न जई साम१सो, तहै भेद३हि करतै०प ॥
जल१ पैपर सजुन हस जिम, भिन्न किये व्है भव्य ॥ ४४ ॥

सुना ॥ ३७ ॥ १ अधमाधम ॥ ३८ ॥ २ अपने आपको अपना करना, ये साम
उपाय के पाथ भेद हैं ॥ ३९ ॥ ३ दूसरे (आप) के चित्तको प्रीति के वश करके
४ हित के वातावरण से साम हाथे वह दोनों ओर सुखदाई है जिसको
कर्णसुभग कहते हैं ॥ ४० ॥ ५ परस्पर लोगन आवि करके विस्वास कराकर
साम करे उसको दैविक साम कहते हैं ॥ ४१ ॥ १ सप्यन्ध को पाद कराकर
साम करे उसको स्मारक कहते हैं ७ परस्पर पाछा बोले सो देकर ८ साम करे
वह लोभज साम है ॥ ४२ ॥ मेरा शरीर तेरे अर्थ है यह ९ कहकर करे वह ८
राजा पाचवा आत्मसमर्पण साम१० है ॥ ४३ ॥ जहा साम से कार्य सिद्ध नहीं
होय तहा ११ करने योग्य भेद उपाय है सो जैसे इस पानी और १२ वृक्षको
भिन्न भिन्न करदेथै तैसे शत्रुओं को भिन्न भिन्न कर देने से १३ कस्याय (शुभ)
होता है ॥ ४४ ॥

अस्त१ अनादृत२ क्रुद्ध३ तिम, भेद२ उचित ठहै मृप ॥
रिपुंगत निजजन मुप्त रहि, रचै भेद२ अनुरूप ॥ ४५ ॥

(मनोहरम्)

प्रानभंग१ मानभंग२ चित्तभंग३ बंधक४ त्यों,
दारलाभ५ अंगभंग६ आदर भेद खट६ है ॥
प्रानभय दैकै भेद२ ठहै१ सो प्रानभंग मान,
हानि भय दैकै ठहै२ सो मानभंग२ बटहै ॥
तीजो२ बित्तभंग३ वित्तहानि भय दैकै ठहै३ सु,
कारा भय दैकै ठहै४ सु बंधक४ विकटहै ॥
पच्छ दुव२ पत्नी भय दै ठहै५ दारलाभ५ अंग-
भंग भय ठहै६ सो अंगभंग अति भेदहै ॥ ४६ ॥

॥ षट्पात् ॥

सिद्धि जो न भेद२ सन जबहि उपदा३ प्रयोग जिम ॥
सोलह१६ विध नृप सोहु कहत क्रमतेँ अभीष्ट१ इम ॥
देश्य२ आब्द३ कर४ द्विरद५ सप्ति६ निवराथ७ पट८ सासन९
पुरट१० कनी११ पननारि१२ खानि१३ बेलाकर१४ भूखन १५
सोलहम१६ भेद प्रतिपत्तिज१६ सु अर्थ नाम अनुसार इन ॥

नहि बोध प्रकट जिनको न पति ते कति कहियत सुनहु तिन ॥ ४७ ॥

हराहुआ, अनादर पाया हुआ और क्रोधी राजा भेद करने के उचित है सो अपने लोग ? शत्रुके पास जाकर अपने सदृश भेद रचै ॥ ४५ ॥ २ भेद का भय देकर करै सो भयंकर बंधक नाम भेद है और दोनों पक्ष में छली को छीनने का भय देकर भेद करै उसका नाम दारलाभ है और शरीर के नाश का भय होवै वह अंगभंग नामक भेद है ॥ ४६ ॥ ५ भेद करने से कार्य सिद्धि नहीं होवै तब इनजराना देनेका प्रयोग करै सो सोलह प्रकार का है ७ इनके अर्थ इनके नामों के ही अनुसार है परन्तु नामों से जिनके अर्थ का ८ ज्ञान (समझ) प्रकट नहीं होता है उनको कहता हूँ सो ६ है पति रामसिंह सुनो ॥ ४७ ॥

(पादाकुलकम्)

मगैमुहिदेवो१ अभीष्ट९ मत, देवो देस२ सु देश२ कहावत ॥
सह कुटुब निवहै जिहि धन सन, अब्द इक१३वह आब्द३महामन४८
हैसहिं रक्खि तास कैर देवो४, कर४ नामक उपदा३ वह कैवो ॥
सत्तिदान६ जह तुरग समप्पहि६, अरु निवसथ७ सु ग्राम जह अ-
प्पहि७ ॥ ४९ ॥

जबलग वहै आहक सपिंड जन, तबलग जो न लुपत९सो सासन॥
काचन१० पुरट१० कनी११ कन्या११ कहि, बेशपा१२ तिम पन-
नागि१२ नाम वहि ॥ ५० ॥

रतन१ सुवर्ण २ रंजत३ निकसैं जहैं, तिहिं देवो १३ खनिदान१३
रूपात तैंहैं ॥

जहैं वदित्र जीवन उत्तरैं धन, बेलाकर१४ कहियत तस बितरन५१
पीठ१ चमर२छत्रा३दि दान पहु, मान बढन१६प्रतिपत्तिज१६मन्नहु॥
गज५पट८भूखन१५अर्थमैकटगहि, लेहुसमुक्तिसैन्वरप्रबोधजहि ५२

जो मागैं सोही दै उसका नाम अभीष्ट है, देशका देना है उसको देश कहते हैं जिस धन से एक वर्ष पर्वण्त सय कुटुम्ब का निर्वाह होजावे उस दान को बड़े लोग आब्ददान कहते हैं ॥ ४८ ॥ देश को रखकर उस देश के २ वासिज को देना है उस भेट का नाम कर है, जिस नजराने में ३ घोड़े दैयें उसको सत्तिदान कहते हैं और जिसमें ग्राम बियेजायें उसको निवसथ दान कहते हैं ॥ ४९ ॥ लेनेवाले के ४ सापिण्डी (सातपीठी) तक के मनुष्य रहैं तपतक नहीं लुपै उस दान को सासन कहते हैं ५ सुवर्ण देने को पुरटदान और कन्या देने को कनीदान कहते हैं, बेशपा देने को पननारि नामक दान कहते हैं ॥ ५० ॥ जहा पर रतन, सोना १ पावी निकले उसका देना खानि देना प्रसिद्ध है, जहाँ जहाज (नाव) को उतराई के धन से जीवन होता होय उसको ८ देना पेक्षा कर कहा है ॥ ५१ ॥ ६ सिंहासन, चमर, छत्र आदि मान पशनेवाला राजा का देना है उसको प्रतिपत्तिज कहते हैं और हाथी देने से खिरद दान, घञ्ज देने से पटदान, गहना देने से भूषण दान कहाता है सो इन के १० नामों से ही अर्थ प्रसिद्ध है यह ११ शीघ्र प्रबोध लकर समझवो ॥ ५२ ॥

सिद्ध काज जो व्है न दान३ सन, पंद्रह१५ भेद दंड४तहँ प्रेरन ॥
 देसनास १ अरु अंगछेद २ जिम, गोग्रह३ धान्य हरन ४ बंधन
 तिम ॥ ५३ ॥

देसहरन६ अरु धन आदान७ हु, पुनि सर्वरवहरन ८ पहिचानहु ।
 दुर्गभंग९सहरस्थानदाह१० श्रुत, देसनिकास११ जुद्धघातन१२ जुत५४
 अवविसदंड११२३ आभिचारिक२१२४ इम, अनुचित छद्मघात ३११८
 जहँ अंतिम३ ॥

पहिले दम बारह१२ प्रबलनके, अंग तीन३निंदित अवलनके५५
 ॥ घनाक्षरी ॥

बेल१ बन२ छेदै१ त्यों निवाननकों भेदै२लूटि,
 जारैं पुर१ आमन२ कों३ सोतो दैम४ देसनास१ ॥
 छेदै परपच्छिनके अंग२ वह अंगछेद२,
 सर्व पसु अनैं घेरि३ गोग्रह३ दुख दुरास ॥
 धान्य सब लूटै४ धान्य हरन सु जानौ बंधै,
 धनक कुटुंबी५ नाम बंधन५ विदित तास ॥
 सत्रुकी प्रजाकों विसवासबडै तैसेँ रहि,
 आपुनी करै६ सो देसहरन६ बलिष्ठ बास ॥ ५६ ॥
 बलतैं दबाइ दंडि सत्रु धनलै७सो धन—

जहां दानसे कार्य सिद्ध नहीं होसके तहां पन्द्रह भेदवाले दण्ड की प्रेरणा
 जाती है ॥५३॥५४॥ प्रथम कहेहुए बारह दंड प्रबल लोगोंके करनेके हैं और २ आ
 (अन्त)वाले निन्दनीय तीन दण्ड निर्बलों के करने के हैं ॥५५॥ बाग को और
 वनको काटना, जलाशयों को फोड़ना और नगरोंको व आमों को लूटना और
 जलाना, इस ३ दंडको तो देशनाश कहते हैं ४ शत्रुओं के अंग छेदना अंगछेद
 है और सब पशुओंको घेरकर लाना यह छोटी आशावाला दुःखदायक गोग्रह
 नामका दंड है, सब धान्यको लूटना धान्य हरण दंड है धनवानों और कुटुंबियों
 को बांधना इसका नाम बंधन प्रसिद्ध है, शत्रुकी प्रजा का विरुद्धास बडै तैसे
 रखकर अपनी करै इसवल्लभास करानेवाले दण्डको देशहरण कहते हैं ॥५६॥

दान७ सरबस्वले८ सो जानौ सरबस्वहार८ ॥
 गढन गिरावै१ दुर्गभग९ सो ह्यौ ॥खधावार,
 सजुको पजारै१० सो हे स्थानदा१० नाम धार ॥
 देसतै निकासै११ देसनिर्वासक११ नाम ताको,
 जुद्धकरि मारै१२ जुद्ध घातन१२ सो हे उदार ॥
 राम२०११४ प्रभु असै यत्नवान होइ ताके करि-
 वेको कहे द्वादश१२ ही प तो दड४ के प्रकार ॥ ५७ ॥

॥ प्रकृति ॥

निबल उचित मय दम त्रय३ मनै, हे विषदह जु गर करि हनै१ ॥
 आभिचारिक२ जु आभिचारिसो२, छद्मघात३तिम छल वारसो३ ५८

(मनोहरम्)

सावधान असै प्रभुतादिक त्रि३ सक्तिमें,
 सधि मुख छद् गुन प्रपच पटुता धरै ॥
 साम१ आदि च्यारि४ हु उपाय अनर्पाय जानै,
 भेदन सहित सप्त७ प्रकृति दिये हरै ॥

वर्णा११ऽऽश्रम२ राजधर्म राजनय४ नेता न्याय५,

सेना से द्वाकार शत्रुको दूध देकर घनछेपे उसका नामघनदूध है, और सर्वस्व
 छीनने को सर्वस्व कहते हैं, गढ के गिराने को दुर्गभग और शत्रुकी ॥राजधानी
 को जलार्थ उसका नाम स्थानदाह है, द्येसे निकासने को देसनिर्वास और युद्ध
 करके शत्रुको मारै उसका नाम युद्धघात है, सो हे प्रभु रामसिंह ये बारह प्रकार
 के दूध तो यत्नवान् शत्रुके करने के कहे हैं ॥५७॥ अब निर्बल के करने के
 तीन दूध कहते हैं कि १जहर देकर मारै उसका नामविष दूध है, और जलमज्ज
 से मारै उसको २आभिचारिक दूध कहते हैं ३छलके बार(विष) से मारै उसका
 नाम छद्मघातहै ॥५८॥ इसप्रकार४प्रसुता आदि तीन शक्तियोंमें सावधान५सधि
 आदि छहों गुणों के रचने में शत्रु, १नाश रहित साम आदि चारों उपायों को
 जानै और भेदोंके साथ राज्य के सातों अंगोंको दूध में मारण करै, वर्ष वर्म,
 आश्रम धर्म, राज धर्म और राजनीतिको ७प्रवृत्त करनेवाला, न्यायशत्रु, वदार,

निपुन उदार६ कोस कुधन नहीं भरें७ ॥

ऐसो नृप आपुनै स्वतंत्र८ आप वही सो एक११९,

उद्यमी१० असेस अवनीकों अपनी करें ॥ ५९ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

सप्त७ राज्य अंगन विच रवामी१, नैयपटु१ सूर२ होत इम नामी ॥
अंग द्वितीय२अमात्य२सुनहु अव, सह लच्छन शेष५हु प्रतीक सब६०
श्रुतसंपन्न१कुलीन२धीर३सुचि४, रागद्वेष२वर्जित५आरितकरुचि६॥
वाग्मी७सम्मत८सास्त्राविसारद९, नयप्रमलभ१०अनुकारक११निर्गद१२
आय१व्यय२पटु३सत्यसंधै४इम, सूर५अनैर१६महासत्व१७हुतिम
उपधासुद्ध१८कुलकम पंडित१९, होत सचिव२ऐसे स्वामिनहित६२
अंग तृतीय३ सुनहु मंत्री१अथ, साध्वै१असाध्य२विवेक धरै सब१॥
देस१रुबिष्ट२अपोहन१ऊदन२, निपुन२३धीर४स्वाकारनिर्गुन५ ६३
स्वीय देस संभूत६ महामति७, गहैं सबन आकृति१ इंगितै२गति८॥

१ खजाने में छोटे धन को नहीं धरनेवाला २ संपूर्ण भूमि को अपनी करता है ॥ ५९ ॥ राज्य के सात अंगों में स्वामी (राजा) हैं वह इस प्रकार ३ नीति चतुर और धीर नामी होता है ४ पाकी के सब अंगों को भी अवलक्षण युक्त सुनो ॥ ६० ॥ ५ वेद की सम्पत्तिवाला अर्थात् वेद शास्त्र जाननेवाला कुलवान् धीर पवित्र राग द्वेष से वर्जित परमेश्वर को आनने में रुचि रखनेवाला ७ उत्तम बोलनेवाला, सम्मानपात्र, शास्त्रों का जाननेवाला ८ नीति में बुद्धिमान् ९ अपने सदृश कार्य करनेवाला १० रोग रहित ॥ ६१ ॥ ११ आमद खरच के जानने में चतुर १२ सत्य प्रतिज्ञावाला, इसी प्रकार वीर, धैर रहित १३ बड़ा पराक्रमी १४ धर्मार्थ आदि चारों पुरुषार्थों की परीक्षा करने में शुद्ध १५ कुल के क्रम से बड़ा हुआ, ऐसा सचिव होवे सो स्वामी का हित करनेवाला होता है ॥ ६२ ॥ राज्य का तीसरा अंग मंत्री है सो सुनो १६ होनेवाले और नहीं होनेवाले चारों कार्यों के विचार (ज्ञान) को धारण करनेवाला देश काज १७ काम क्रोध शोक आदि से व्याकुल बित्तवाले की १८ सर्जना करनेवाला, निपुण, धीर १९ अपने आकार को गूढ़ रखनेवाला ॥ ६३ ॥ २० अपने ही देश का उत्पन्न हुआ बड़ा बुद्धिमान, सब की आकृति और २१ चेष्टा से गति को जाननेवाला

प्रथित ९ मल्लुष १० मन्त्ररक्षन पर ११, कुपयभूपमार्तीप्यसुपयकर १२ ६४
 पच ५ हिमत्रभगपरिचार्यक १३, आप्त १४ कुलीन १५ पुरदृग दायक १६॥
 असे वहे मन्त्री ३ अवनपीपन १, पैन गजि प्रभु सुजस प्रदीपन ॥ ६५॥
 — अग चतुर्थ ४ कोस ४ कहिपत अग, सचित जह रत्ना १ पि दृष्य सब ॥
 पच ५ रत्न तह पुत्र प्रमानहु, जिनमै प्रथम १ वैज १ मनि जानहु ६६
 तास पच ५ गु १ पच ५ दोस तिम, जपिय चउ ४ छाया वृद्धन जिम ॥
 लघु १ छ ३ कोन २ रगु ८ कोन ३ रुनिर्मल ४, मप्रतिगम ५ ए ५ तो गुन अतिफल
 त्रास १ विंदु २ मल ३ रेख ४ काकपद ५, हीरक १ मै ए पच ५ दोस हव ॥
 छाया स्वेत १ चरुन २ पीत ३ अस्मित ४, हे क्रमते चउ ४ यों उचिताहित ६८
 मनि दूजो २ मुक्ता २ सु धैराधव, तस इमै १ अहि २ किं ३ तिनि ४
 सिर सभव ॥

उपजत सेख ५ मुक्ति ६ संस ७ न उर, धाराधर विंदुज अष्टम ८ धुर ६ ९

१ मसिह २ निर्दोष, आधुया मे अपया किसी अन्ध से मन्त्र (सखाए) का रचा
 करनेवाला, कुमार्ग भ चलनेवाले ३ प्रतिकूल राजा को शिक्षा देकर सुमार्ग म
 पानेवाला ॥ ६४॥ मन्त्र (सखाए) के पाया अगो को ४ जाननेवाला, सत्परादी,
 कुलपान ५ दूरदर्शी ६ राजाओं के एते मन्त्री (सखाइकार) होयें वेही ७ आशुओं को
 भारकर स्वामी के पथ ४ प्रकाश करते हैं ॥ ६५॥ राज्य का चौथा अंग खजाना
 है जिसको कहते हैं जिसम रत्न आदि सब द्रव्य संचय रहता है तथा प्रथम
 पाच रत्न हैं जिनम भी प्रथम २ हीरे को जानो ॥ ६६॥ जिस हीरे में पाच गुण,
 पाच दोष और पाच छाया हूय। ते कहौ हैं, इनमें एकका (भार रहित) होना,
 छकोन, अष्टकोन, मल रहित और आगे का भाग नीला होये ये पांच ता ६
 अत्यन्त फल देनेवाले गुण हैं ॥ ६७॥ त्रास (मणिदोष विशेष) अन्ध रग का छिड़का
 मैल, लकीर, काकतरण के समान चिन्ह १० हीरेमें ये पाच ही दोष हैं और स्वतः
 नाब, पीली, काली ये चार छाया क्रम से द्राक्ष्य, क्षयि, वैरय, शूद्र ११ यण
 १२ सो अपने अपने उचित हित करनेवाली हैं अर्थात् जिसवर्ण की छाया होवे
 वह उसी वर्ण को हित करनेवाली है ॥ ६८॥ १२ हे राजा दूसरा मणि मोती,
 हैं जिसका जन्म १३ हाथी १४ सप १५ सुषर १६ मच्छ इन के मस्तकों में
 होता है और शय, १७ सीप और यास के भीतर भी उत्पन्न होते हैं और
 आठवीं उत्पत्ति १८ तेज घारा के विंदु में भी होती है ॥ ६९॥

गुनसर५ज्योतिश्चतुत्तपन२गुरूपन३, अरुबिमलत्व४स्निग्धताउरूपन॥
 दोसदस१०हि चउ४ बडे छ६ छोटे, मन्नहु तहँ पहिले चउ४मोटे७०
 सिमिहंग१मुक्तिलग्न२ अरु तीजो३, जेरठ३ दीप्ति१ छायाबिन्दुहीजो
 बिहुमकांति४ चतुर्थ४ दोस बहि, लघु छ६दोस सुनिये अब क्रम
 लहि ॥ ७१ ॥

जुबलीबलित१ त्रिचुत्त१ सो तर्जित, बलि चर्पट२बर्तुलता बर्जित
 वहे मलंब३ कृमै३नाम कहावै, पुनि जु त्रि३कोन४ त्र्यस्र४पद पावै
 खंड५नाम सपिटक अचुत्त५ खिल, कहूँक भुग्न६ कृपापार्श्व६ ह
 ठो६ किलौ ॥

पीत१ मँधुर२ सित३ सिति३४ चउ४ छाया, इनमें चौथी४ असु
 अनाया ॥ ७३ ॥

॥ दोहा ॥

तीजो२ मनि मानिक्य३ तहँ, गुन चउ४ ओगुन अष्ट८ ॥

बहुसिता१दि धूम्रा२दि छवि, करै तथा सुख१ कष्ट२ ॥ ७४ ॥

जिनमें १ गोला २ भारीपन (बोझ) ३ निर्मलता ४ सच्चिक्वणता और ५ मोट
 (बडा)पन ये पांच तो गुण हैं और दश दोष हैं जिनमें पहिले के चार बडे औ
 पिछले छः छोटे हैं ॥७०॥ ६ बडे छिद्रवाला अथवा जिसके छिद्र में कीड़ा लग
 हुआ होवे वह ७ जिसमें सीप का टुकड़ा लगा होवे ८ बिना छाया, जिसके
 मंद क्रांति होवे ९ मृगा के समान क्रान्तिवाला ये चार तो बडे दोष हैं औ
 अथ छ. दोष छोटे हैं सो सुनो ॥ ७१ ॥ भूरियों (सुलौ) से विराड्वा १० ती
 गोलाईवाला होवे सो दरानेवाला अथदायक है, फिर चपटा ११ गोलाई रा
 त१२खंभा होवे उसको कृश कहते हैं, १३और तीन कोनेवालेको त्र्यस्रपद कहो
 हैं ॥ ७२ ॥ जो खंडित होवे उसका नाम १४ सपिटक है, वह खंडित होने
 याकी का भाग गोलाई रहित होता है १५ कुछ टेढा बांका होवे उसको १
 निश्चय ही कृपापार्श्व कहते हैं, पीली १७महुवा के रंग के समान १८श्वेत १९
 काळी, ये चार छाया होती हैं इन में चौथी श्याम छाया अशुभ और २०पीड़ा
 कारी है ॥ ७३ ॥ तीसरा रत्न साणिक्य है जिसमें चार गुण और आठ औगुण
 हैं और श्वेत आदि व घुम्र आदि बहुत छवि हैं वे २१गुणतो सुख करते हैं और

निर्मलपन१ अतिरक्तपन२, स्निग्धछवित्व३ गुरुत्व४ ॥

गदिते चपारि४ मानिक्य गुन, ए जिन्ह मद्र उरुत्व ॥ ७५ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

दि२ छवि२ दोषद्वै जई छाया दुवर१, व्है दि२रूप२ तस नाम दि
२ पद२ हुव ॥

भिन्न जुव्है३सु दोस भेदाव्हर्ष३, रेनुजुत४सु कर्कर निरसहुनय७६
जुपटदोस पर्य रग लसुन५ जई, तिम जड६ नाम रगविनु व्है तहँ
मधुं निभ काति७सु कोमल७मानहु, धूमकाति८धूम८सु उरघानहु
मन्नहु इव्दनील४ चोयो४ मनि, तहँ गुन पच५ छ६ दोस दये तनि
छाया अष्ट८ कहिय छितिनायक, देखहु गुनपजे अब सुभदायक
॥ दोहा ॥

स्निग्धछवित्व१ मुरगपन२, रजन पासपदेस३ ॥

गुरु४ता अरु तनघाहिता५, इहि गुन पचक५ एम ॥ ७६ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

मुनहु दोस जई पटलै अभ्रसम१, अभ्र१हि तस अभिधान अनुत्तम
अयगुन दुख करते हैं ॥ ७४ ॥ निर्मलपना, पटल खालपना, सचिकण छवि
और मारीपन ? ये माणिक्य के चार गुण करते हैं सो ये जिनके होते हैं २ बड़ा
कल्पाय होता है ॥ ७५ ॥ जिसमें दो छाया होवे उसका नाम दि२वि दोष है
३ जो दो रूप रगवाला होवे उसका नाम छिपद दोष है, जो माणिक्य फटा
होवे ४ उसका नाम भेद है ५ रेणु[रेत] युक्त होवे उस दाप का नाम कर्कर है
॥ ७६ ॥ ६ वृष के समान रवेत रग का जिसमें ७ भिन्न होवे उसको पट दोष
कहते हैं, जो बिना रग का होता है उसका नाम जड़ है ८ मधु के सदृश
जिसकी कान्ति होवे उसको कोमल नाम का दोष मानो और जिसका रग
धूम्र के समान होवे उसका नाम धूम्र दोषजानो ॥ ७७ ॥ ९ चौथा मणि नीलम है
॥ ७८ ॥ सचिकण छवि, अष्ट रग, समीप के प्रवेश को रग युक्त करना, मारी
पन १० आकर्षण शक्ति से तृण को अपने में चिपका लेना, नीलमणि में ये पाच
गुण हैं ॥ ७९ ॥ जिसमें यादल के समान ११ जाना होवे उसका १२ नाम ही
अभ्र है सो उचम नहीं है,

वहै सह रेनु२ सकरी२ आव्हय, दै जु भिन्न भ्रम३ त्रास३ सु दढ
दय ॥ ८० ॥

भिन्नै४हि वहै जु भिन्न४ तिहिं भाखत, मृदुगर्भ५ जु मृत्तिका ग
र्भ५ मत ॥

अस्मगर्भ६ अरमाहि जब अंतर६, वसु८छाया अब सुनहु धरावर८१
नीलीरस१ वैष्णवीसुमन२निभ, लवणीसुम३ इंदीवर४घन५निभ॥
मननिभ१ घननिभ२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥

सिंहगल६ विष्णुसरीर७ उमासुम८, तिने सन्निभ इम अट्ट८ गिन
हु तुम ॥ ८२ ॥

सिखिगल११मधुक१२पच्छ२१०समहु तस, द्वेपुनि धरि कति कहत
कांति दस१० ॥

पयमें नील४गेरि पिक्खहु पय, नीलहोइ सुहि नील४सत्य नय८३
मनि पंचम५ मरकत५ इम मन्नहु, पंच५हि गुन तस दोस सप्त०पहु
वसु८छावि अब. पंच५हि गुन बरनत, सुंरागत्व१नीरेनु२क२सम्मत८४
पुनि गुरुता३स्निग्धता४विमलपन५, देखहु पैहु सप्त७हि अब दूखन

जो श्रेत सहित होवै उसका नाम शर्करी है, हे दृढदयावाले रामसिंहरफूटे दूटे
हुए का भ्रम देखै उसका नाम त्रास है ॥ ८० ॥ और जो यथार्थ में रेनुटा
होवे उसको भिन्न कहते हैं, जिसके भीतर ४ भिन्नी होवे उसको मृदुगर्भ कहते
हैं ५ जिसके भीतर पत्थर होवे उसको अस्मगर्भ ही कहते हैं, हे राजा अब
आठ छाया सुनो ॥ ८१ ॥ नीलके रस और ५ तुलसी के पुष्प के सदृश ७
लोणीनामक वृक्ष विशेष के पुष्प ८ नीलकमल और मेघ के सदृश ९ शिव,
के कंठ १० विष्णुके शरीर ११ हलदी के पुष्प १२ इनके सदृश आठ छाया जानो
॥ ८२ ॥ और कितने ही लोग १३ दायूर के कंठ १४ अमरके पंज के समान दो
छाया फिर रखकर राव दम छाया कहते हैं १५ नीलमाखी को दूध में डालकर
देखो सो वह दूध नीला होजावे रोही सच्चा नीलम है ॥ ८४ ॥ पांचवां मणि
१६ पन्नाहै उसके हे राजा पांच गुण और सात दोष हैं और आठ क्रान्ति हैं १७
श्रेष्ठ रंग १८ बिना रेणु (रेत) ॥ ८३ ॥ भारीपन, सचिक्कणता निर्मलपना, ये पांच तो
पन्नाके गुण हैं और १९ हे राजा अब इसके सात दूषण हैं सो देखो कि जिसमें

वै कथित१ कुंरागरु घट्टै१ मृदुरु जै सबै कृत्रिम जानिये ॥
 इह रत्न पंच५ ए मुख्य अब मनि सप्तक७ लघु मानिये८९
 सूर्यकांत१ जो सूर्यकिरण लहि बनिह प्रकासत१॥
 चन्द्रकांत२ जो चन्द्रग्रंथ छवि स्राव उपासत२ ॥
 पुष्पराग३ बैडूर्य४ स्फटिक५ गोमेद६ रु बिद्रुम७ ॥

यह सप्तक७ लघु आहि सकल दादस१२ तक्कहु तुम ॥

गुन तीन३ सब१२हि रत्नन गिनहु कांति१ कठिनपन२ स्वच्छपन३॥
 तजि पवि१गुरुत्व४गुन ग्यारहम११गुन पवि१गत लार्घ्यव४ लखन९०

(दोहा)

इन१ रत्न१न करिकैं अधिप, करें निचित निज कोस४ ॥

हाटकें३ सोलह१६ वर्णवहै, इनमें अंत्य१ अदोस ॥ ९१ ॥

पावक तपि न घटै पुरैट२, सोलह१६ वर्ण सु जानि ॥

नवरैवि१ बिज्जु२ प्रकास निभै, अंजहिं कोस४न आनि ॥ ९२ ॥

रजत३ नागैमिश्रित रुचिर, सुचि ज्वालित विच सुद्ध ॥

१रंग बिगड़जायै और२धिसने में कोमल होजावे उसको झूठा जाना, ये पांच तो मुख्य रत्न हैं और अब सात छोटी मणियों को कहते हैं ॥ ८६ ॥ सूर्य की किरणों से जिससे ३ आग्नि उत्पन्न होजायै वह सूर्यकान्तमणि है, और चंद्रमा के किरणों से शोभा सहित ४ टपकनेलगै वह उसी की उपासना करने वाली चन्द्रकान्तमणि है ५ पुष्पराज, बैडूर्यमणि (लहसनिया) स्फटिकमणि, गोमेदमणि और भूंगा ये सात छोटी मणियां ६ हैं ७ हीरे को छोड़कर याकी की ग्यारह मणियों में भारपिन गुण है और एक हीरे में ही ८ हलक होना गुण है ॥ ९० ॥ ९ अपने खजाने में संग्रह करें, इन मणियों के अंत में सोलह वर्ण का १० निर्दोष सुवर्ण इकट्ठा करें ॥ ९१ ॥ सोलह बार अग्नि में तपाने से कुन्नय होता है वह ११ सुवर्ण अग्नि में तपाने से नहीं घटै तब उसको कुन्नय जानो जो १२ प्रभात के सूर्य और बिजुली के प्रकाश के १३ सदृश होता है ऐसे सुवर्ण को खजाने में १४ संग्रह करें ॥ ९२ ॥ १५ शीसा मिलाकर १६ अग्नि में जलाने से चांदी शुद्ध होती है

ऐका सति अकासरुचि, परिचित करहिं प्रबुद्ध ॥ ९३ ॥

रत्न१ रु दुव२ हाटक१२ रजत३३, अघटित१२ घटित२३ असेस
कोस४ अग चोथो४ करें, नय चित निपुन नरेस ॥ ९४ ॥

= करके च्यारि४ विभाग करि, धर्म१ अर्थ२ अरु काम३ ॥

तीन३नमें त्रय३ बट तजि, धरे चतुर्य४हिं धाम४ ॥ ९५ ॥

सख१ वखर धान्यादि३ सब, सचय इतरहु सज्जि ॥

पूरन रक्खै कोस४पहु१, गिनै सुकरं सब गज्जि ॥९६॥ मेक प्लुति
मुक्त१ अमुक्त२ रु मुक्तामुक्त३, यत्रमुक्त४ प्रहरन१ चउ४ उक्त॥
अरि१ असि२ सक्ति३ रुसर४ इत्यादि, विक्खहुए४ क्रम करि रनवादि६७
वादरे१ राकवे२ लोमै३ बखानि, जिम कोशेयै४ बसन२ चउ४ जानि
सूत्र१ रु रोम२ सन३ सु पुनिपट्ट४, वखन भवक्रम करि चउ४ बट्ट९८
सूक१ अनगु२ अगु३ धुरं त्रय३ धान्य३, महित सजातिहु सन्नहमान्य ॥

जिसकी क्रांति १ पार्वती (गौरी) और चन्द्रमा की वज्रलता की शका कराती होवे
पेसी पादी की चतुर लोग २ परीक्षा (पहचान) करके समझ करें ॥ ९३ ॥ रत्न, सुवर्ण,
पादी, वषट्पुष्प और विना घड़े इन पदार्थों से श्राव्य के साथे अग (अजाने) को नीति
चतुर राजा पूर्ण करे ॥ ९४ ॥ १ हासिल के चार बट करके तीन बट तो धर्म, अर्थ
और काम में लगाये और चौथा बट (हिस्सा) अजाने में रक्खै ॥ ९५ ॥ अन्य सचय
से भी अजाने को पूर्ण करके राजा उसको ७ सुख करनेवाला मानकर तथा
उसको अपने हाथ में (स्वाधीन) किया जानकर सब पर गर्जना करे ॥ ९६ ॥ चार
प्रकार के ८ वखर कहे हैं जिनमें हाथ से छोड़कर बछाया जावे वखर वक्र आदि
को मुक्त कहते हैं, और हाथसे बिना छोड़े बछाये जावें वन तखवार आदि को
अमुक्त कहते हैं, और हाथसे छोड़कर भी बछाये जाते हैं और बिना छोड़े हाथ
में रखकर भी बछाये जाते हैं वे भाला, परछी आदि मुक्तामुक्त कहते हैं, और
तो पन्त्रसे प्रेरजाते हैं वन पाण और गोली आदिको पन्त्रमुक्त कहते हैं, जिन
को युद्ध में पाव [बट] करनेवाले (वीर) वक्र, तरवार, परछी और तीर आदि
क्रम से देखो ॥ ९७ ॥ १० वस्तु के वखर ११ उनके वखर १२ सख के वखर १३ रेसम के वखर
ये चार प्रकार के वखर होते हैं ॥ ९८ ॥ १४ मुख्य करके धान्य तीन प्रकार का है,
जिनमें चावल, जव, गेहूँ आदिको सूकधान्य कहते हैं और अना, उड़द, मूँग, मोठ,

लौ इन४सौ कर आय लखि, छमहूकों कछु छोरि ॥
 जोतैं कृषि हल हरखि जिम, रहैं कुलोभहि मोरि ॥ १०५ ॥
 रत्न१ कनक२ अरु रजत३ के, जहँ आकरँ जे३ देस ॥
 पोतजीबै४ जहँ पोतसौ, उतरैं बसुं चय४ एस ॥ १०६ ॥
 अट्टरहि जैनपद५ मुख्य ए, महि तिम पच५ अमुख्य ॥
 उपवन१वन२गोचर३अर्ग४रु, खिल खनि५ए सब मुख्य १०७

पादाकुलकम् ॥

इन तेरह१३ देसनके आश्रित, होइ प्रजा जितनी चाहत हित॥
 तस्कर१ धोति २ आदि दुख तिनके, सकल हरै सिमा बासिनके
 तब सब देस रहैं घन बरसत, देस५ अग पचम५ यह दरसत ॥
 अगछठो६दुर्गा६भिधैअखिय, अपिनतदीपैमेदनव९रखिय १०९

()

महिपति दुर्ग६सलिलमय१गिरिमय२, अस्ममय३रु इष्टाँमय४अरय
 वनमय५ विदित मृत्तिकामय६ बलि, सो मरुमय७रु मरुमय८सत्य

इन देश की जैसी आमद देलै वैसा ही उनका हासिल लवै और १ जो खेती
 करने में समर्थ होयें उनसे कुछ छोड़कर हासिल लेवै जिस कारण खेती करने
 वाले प्रसन्न होकर हल जोतैं और छोटे जोम को मिटाकर रहैं ॥ १०५ ॥ रत्न,
 सुवर्ण, चादी की जहाँ खाने होय २ उस देश का नाम आकर है, और जहाँ
 चतराई का ४ घन देकर नाय से चतरते हैं उस देश को ३ पोतजीबी कहते हैं
 ॥ १०६ ॥ इस प्रकार बार देश तो अन्ध आदि और तीन देश खानेवाले और
 चौथा पोतजीबी ये आठ५देश तो मुख्य हैं, और भूमि के पाँच प्रदेश गौख हैं
 जिनमें ६ घाग, घन७गडवों के चरने की भूमि ८ पर्यत और उपरोक्त तीनों
 ६खानों के सिवाय बाकी की खानें ये अमुख्य हैं ॥ १०७ ॥ १० चोरों का १
 १०८ ॥ १०८ ॥ राज्य का छटा अग १२ दुर्ग नामक है १३ जिसके
 अपियों ने नय मेद रखे हैं ॥ १०९ ॥ हे राजा ये दुर्ग जलमई, पर्यतमई, १४
 पत्परमई (पत्थरों से युनाहुआ) १५ ईटों से रखाहुआ, १६ निर्जल भूमिमय
 १७मनुष्यमई (मनुष्यों के समूह का बनाहुआ),

वरनत नवम ९ दारुमय ९ इन ९ बिच, पहिले दुव २ उत्तम
पंढिचानि ॥

अगगे छ ६ मित मध्यम २ सुवै इकखहु, जो अंतिम ९ सु अधम ४
इक १ जानि ॥ ११७ ॥

तहँ अन्न १ रु उदक २ रु घृत ३ तैल ४ रु, तूल ५ दारु ६ गोलाक ७
तिम तोप ८ ॥

सीसक ९ सोर १० सूत्र ११ सन १२ सख १३ न, रकखहि गढहन निच-
य आरोप ॥

छठो ६ अंग दुर्ग ६ यह छोनिप, जो छोनिप सज्जै इहि ६ जुद्ध ॥

मुदित रहै सु बलिष्ठहुसों सुरि १, पुनि दवै पर अवनि २ मनुद्ध ॥

भनित अंग सप्तम ७ बल ७ भेदहु, मनुज १ गज २ रु हय ३ रथ ४
चउ ४ मान ॥

मनुज १ छ ६ भेद प्रथम १ तहँ मौलै १ सु, पीढिनतै सु विसास प्रधान १

दुजो २ भृष २ बस जु लहि बेतैन २, तीजो ३ मैत्र ३ जु लहि मित्रत्व ॥

श्रेया ४ सु वहे जु समय बस आश्रित ४, सो आर्टविक ५ बैभ्यजा
सत्व ॥ ११२ ॥

नवमादुर्ग काष्ठमई कहलैहँ इनमें प्रथमकईहुए दुर्ग[जलकाशौर पर्वतका] उत्तमहै
१ और आगे के छ दुर्ग मध्यम हैं २ ये आठ दुर्ग तो अष्ट घास करने योग्य हैं
और अन्तका काष्ठ(लकड़ी)का दुर्ग अधम है ॥ ११० ॥ ३ जल ४ रु ५ बलीला[ईधन] १
शीशा ७ इन का संवय करके रखैं, ८ हे राजा रामसिंह राज्य के छठे अंग
इस दुर्ग को जो राजा युद्ध में सज्जित करता है वह ९ बलवान से भी सुझकर
प्रसन्न रहता है और वह चतुर पराई १० शत्रु को दबाता है ॥ १११ ॥ राज्य
का सातवां अंग ११ सेना है जिसके मनुष्य, हाथी घोड़ा, रथ ये चार भेद हैं
इनमें प्रथम मनुष्य के छः भेद हैं, जिनमें पीढियों से १२ मोल लिया हुआ
होवे वह विश्वास में सुख्य है, दूसरा सेवक वह है जो १३ तनखाह लेकर बश
हुआ होवे, तीसरा मित्रता से बश हुआ होवे, चौथा सेवक जो समय के बश
से आश्रित हुआ होवे उसको श्रेण कहते हैं १४ वनके उत्पन्न हुए सत्व से
जो आश्रित हुआ होवे उसको १४ आदवी कहते हैं ॥ ११२ ॥

प्रत्व१ सत्वर अन्यपानुप्रास १ ॥

आरि व्हे स्ववस दवापो इतरन६, सो अमित्र६ ममुक्तहु नरनाह॥

उत्तम१ स्वप३ चोथो४ मध्यम२ इह, पुनि अतिम५ दुव२ अधम३ सिपाह

वज्र७ को अग द्वितीय२ जु वारन२, मुहु चउ४ विध नामन अनुसारा॥

भद्र१ मद२ मृग३ मिश्र४ भिदाभनि, पुनि मुनि सूचित सुनहु प्रकार१२३

मधुनिभे१ दंत१ जघन३ सूकर सम३, उन्नत३ वंस३ धनुख आकार३

सुडा४ वृत्त४ लोम५ मृदु५ सजुत, व्हे गर्जित६ वारिव श्रनुहार६॥

रग हरित७ सुरभित्त७ मद राजत, ओठ८ रु मुख८ काकुदं८ औरक

मत्त६ हु बाह्ये९ नयन१० मधुपिंगल१०, — वृत्त११ ग्रीवा११ सु विभक्त

जोकरसप्त७ १२ उच्छित्त१२ रजकै, अठारह१८ १३ किबीसनखआदि

इम२ जिह्वि भूप चतुर व्हे ऐरिस, भाखत भद्र१ जाति करि जाहि

सिंह१ नयन१ कच्छा३ उर३ मिथिले३ रु लव३ यूत१ पेचकं३ गलपेट

जास चतुर औसो इम२ जाकै, भनि सुध करत मंद२ पन भेट ११५

१ ह राजा जो अन्य लागा का दवाया हुआ अनु अपन पय में होजावे उसको

अभिप्रसक्तो, इनमें पहिले कहिये तीनतो वस्तुमई और चौथा सेवक मध्यम

है और अनेक दाना(पाचयाँ और छठा)अपमई सेना का दूसरा अग हाथी है

सो भी नाना के अनुसार चार प्रकारका है भेद कहकर ४ सुनियों के सुचना

किये हुए प्रकार सुनो ॥ ११३ ॥ ५ दूध के आधवा मधुपे के समान जिसके

दात होवें और सुवर के समान (पुष्ट) ६ जवा होवें और धनुष के आकार ७ ठी

हुई पीठकी हड्डी (पासेका हाथ) होवे ८ गोख सुठ कोमल ९ केयों सहित

होवे १० मेघ के समान गर्जना, हर रंग का और ११ सुगंधिवाका जिसका

मद शोभा देता होवे और जिसके होठ, मुँह १२ तालुवा १३ खाँक होवें मस्त

होने पर भी १४ सवारी देता होवे, जिसके नेत्र १५ मधुवा के समान पीले होवें

और श्रेष्ठ भाग में बटी हुई गोख गरदन होवे ॥ ११४ ॥ जो हाथी सात हाथ

१६ जवा और जिसके अठारह आधवा बीस मख होवें १७ ईरपा[ऐसा] हाथी

जिस राजाकी हस्तिशालामें होवे उसको भद्रजाति कहते हैं १८ जिस हाथी के

नेत्र सिंह के समान होवें कूख और आती १९ बीबी होवे २० पूँह का मूखना

ग, गला और पेट लया और मोटा होवे ऐसा हाथी जिसकी गजशाखा में

होवें उसको २१ भद्रजाति का हाथी कहते हैं ॥ ११५ ॥

कर्ण^१ उदर^२ मेह^३ न^४ प^५ कंठ रु, कैर^१ र^२ लोम^१ ह्रस्व जिहिं कैर
सो मृग^१ जाति गज^२ रु मिश्रित सब, बहि लच्छन मिश्र^४ सु इम बैर
बल^७ कौ अंग तुरग^३ तीजो^३ बलि, सूचित तास भिदा बहु सूरि
बल^१ र^२ रूप^३ आयु^४ तिम बिक्रम^५, पानिय^६ खेत^७ अर्घ^८ कमपूरि

॥ षट्पात् ॥

खुगसान^१ ताजिक^२ तुखार^३ भाड़ेज^४ खेत भव ॥
बालि बनायु^५ कांबोज^६ जात बालिहक^७ उत्तम^१ जव ॥
गोजिकान^१ केकान^२ प्रौढहर^३ राजसूत^४ अत्र ॥
मध्व^२ रु गव्हर^१ सिंधुपार^२ सार्कुर^३ कनिष्ट^४ सब ॥
तिम इतर^१ देस भव जे तुरंग^२ नीच^४ कहे पांडव नकुल^१ ॥
मुनि सारिहोत्र^२ पुब्बहु सुमति बाजितंल^३ वरनिष विपुल

॥ दोहा ॥

जल भव^१ कति कति ज्वलन भव^२, वार्ते प्रभव^३ कति बाजि
येन^१ घूकर^२ भव^३ क्रम इहाँ, रहत बर्ण चउ^४ राजि^१ ॥१८॥

॥ षट्पात् ॥

कुसुमगंध^१ गत्सगर^२ विनेक^३ द्विज^१ हयकै देखह ॥

कान पट^१ लिग चरण कठ रलुंड दन्त और केश जिनके छोट होवै वह हाथी
खुगजाति का है और जो अपने शरीर पर ये सब लक्षण मिले हुए धारण करे
उसको मिश्र कहते हैं. फिर सेना का तीसरा अंग घांड़ा है जिसके ५ पण्डित
लोग बहुत भेद कहते हैं ॥११६॥ इन खेतों के जन्मे हुए ७ मुनि [फिर] उपरोक्त
देशों के पैदा हुए तो उत्तम वेग वाले होते हैं ६ उपरोक्त चार देशों के घोड़े
मध्यम होते हैं ७ इन दो देशों के घोड़े अधम और ११ अन्य देशों के उत्पन्न हुए
घोड़े पांडव नकुल ने अधमाधम कहे हैं १२ नकुल से पहिल ही बुद्धिमान् शालि
होत्र मुनिने १३ घोड़ों के शास्त्र शालिहोत्र में बहुत वर्णन किये हैं ॥ ११७ ॥
जल से उत्पन्न हुए घोड़े मृग^१ अग्नि से उत्पन्न हुए उलूक (घूघू) और १५ पवन
से पैदा हुए घोड़े क्रम पूर्वक मगल करनेवाले माने जाते हैं जो चार वर्ण करह
कर शोभायमान रहते हैं ॥ ११८ ॥ १६ ब्राह्मण जाति के घोड़े के शरीर में

अगरु गध१ रप२ भोज३ प्रान४ बाहुज२ गत पेखहु ॥

सर्पिगध१ मन सभय२ अस्व ऊरुज३ अवगाहत ॥

सठ१ तिमिगध२ असत्त्वं३ चकित४ चोथो४ जु न चाहत ॥

१ सित१रक्त२पीत३हरित४रु असित५कपित६संबल७ तिन्द वर्णा क्रम
पीत१जु तुरग२सित१नेत्र३पय३चक्रधौक१सुभ छत्र छैम११९

स्वेत१चरन२मुख३संति अग१जवृफलं आकृति२ ॥

मल्लिकाक्षै२ वह महत भेद२ वर्द्धक नृप भां१कृति ॥

स्वेत१ अग२ जो संति स्पाम१कर्ण२ सु अति सुभ फल॥

पप१२।३।४मुख५केसर६पुच्छ७वच्छ८सित१सो वसु८मगल४ ॥

आगोधि वरन१मरु घउ४चरन सित१सु पर्व५कल्याण हय५ ॥

ए५सुभ१रु सित२जंघउ४पय५सितै२जमदूत१सु गेरतअजय२ ॥२०

पुत्र की सुगन्ध मत्सरता अन्यकी अकार्यमें देय करना और ज्ञान [विचार] होता

है ३ क्षत्रिय जाति के घोड़े के शरीर में १ अगर (काष्ठ विधेय) की गन्ध बेग

नेज २ पाण्य [पराक्रम] होता है ५ वैश्य जाति के घोड़े में ४ घृत की गन्ध

और मन में भय होता है ८ शूद्र जाति के घोड़े में सूखता ९ मच्छी

की गंध ७ पराक्रम होने और भय युक्त होता है सो नहीं रखना चाहिये,

इन घोड़ों के रंग वर्ण के क्रम से श्वेत (नकरा) लाल (कुमैत) पीला;

हरा (नीला), काळा (खफली), ६ दो रंगका अथवा १० अनेक रंग मिला

हुआ अथवा जानो और पीले रंग के घोड़े के चरण और नेत्र श्वेत हों वसु

का नाम ११ चक्रवाक है सो रखनेवाला यह १२ समर्थ घोड़ा शुभ है ॥११॥१३

जिस घोड़े के चरण और मुख तो श्वेत हों और शरीरका रंग १४ जम्बू (आम्रज)

के फल के समान हों वस पुत्र घोड़े को १५ मल्लिकाक्ष कहते हैं सो १६ मगल

[शुभ] और राजा की १७ क्रान्ति पहानेवाला है १८ जो घोड़ा श्वेत रंगका

होय और उसके कान काळे हों वह [स्पामकर्ण] अत्यन्त शुभ फल देनेवाला

है और जिस घोड़े के चारों चरण, मुख १९ केसवाला, बाळछा २० छाती ये

आठ अंग श्वेत हों वसको अष्टमगल कहते हैं जो शुभ है और जिसके चारों

चरण और २१ छिजाड़ श्वेत रंग के हों सो शुभ वाचक २२ पशुकल्याण नामक घोड़ा

है इतन घोड़े तो २३ शुभ हैं और २४ श्वेत रंग के घोड़े के चारों चरण २५ काळे हों वसको

दक्खिन धमं जिहिं कंठं दुवरं, इन्द्रं नाम तस आदि ॥

सुं ८ जनपदं वर्द्धकं सदा, वामावर्तं त्वयाहि ॥ १२४ ॥

असपार्श्वं आवर्तं इकं १२, पञ्चलच्छनं सु पुण्यं ९ ॥

नक्रमं ध्यं इकं वा दुवरं सु, चक्रवर्तिं १० सुभं १० गुणं १२५

उत्तमं ए दसं १० अर्धं अव, असं रु गलं भ्रमं आनि ॥

कुक्षिं नाभिं ४ ह्रियं ५ पार्श्वं ६ कटिं ७, जेक्रमं मध्यमं २ जानि १२६

॥ पटपात ॥

इकं १ पटं आवर्तं असुभं यह भनित भयकरं ॥

भालं इकं हु वामं भ्रमं कलहं द्रुतं स्वामि स्वयंकरं ॥

इकं वदनं आवर्तं अपरं कक्षातं सु अर्द्धकं ३ ॥

जानुदेसं धमं जोहु वाजि खलं ४ अर्धं विमर्दकं ४ ॥

आवर्तं जास सेफं सु असुभं प्रभुनासकं ५ पट्टिचानिये ॥

आवर्तं त्रिं ३ वलिं १ जाके वहहु नृप त्रिं ३ वर्गं इयं ६ मानिये १२७

॥ दोहा ॥

पटं वंसं इकं भ्रमं असुभं, धूमकेतुं अभिधान ॥

नाभिं पुच्छं गुदं त्रयं भूमनं, सोऽजमराजं समानं ॥ १२८ ॥

पाली दा भमरिय होयें उसका नाम इन्द्र है सो शुभ १ है, और ये सदैव

२ देश को पढानेवाली हैं और ये ही भमरियें ३ वाम मुखवाली होवें तो

पृथा हैं ॥ १२४ ॥ ४ कंधे के पसघाड़ पर एक भमरी होय उसका नाम पञ्च

लक्षण है सो ५ शुभ है, और ६ नासिका में एक या दो भमरियें होवें उस

का नाम चक्रवर्ती है सो शुभ जानो ॥ १२५ ॥ ७ उपरोक्त दश घोड़े तो वसत हैं

॥ १२६ ॥ पीठ की भमरी असुभ है और कलाट पर वाममुख की एक भमरी

होवे यह ८ अपने स्वामी से शीघ्र कलह करानेवाली है १० एक भमरी मुख पर

और दूसरी ११ काख के अत में होवे सो १२ पीड़ाकारी है, और घुटनों पर भमरी

होवे यह दुष्ट घोडा भी १३ मार्ग में ही मारनेवाला है १४ जिस घोड़े के लिंग पर

भमरी होये सो भी स्वामी को मारनेवाला असुभ जानो और जिस घोड़े के

लिंग पर तीन भमरी होयें उस घोड़े को भी है राजा त्रिवर्ग (बृद्धि का नाश

करनेवाला) जानो ॥ १२७ ॥ १५ पीठ की लयी हड्डी पर ॥ १२८ ॥

॥ रोला ॥

अध१ ऊरध२ आवर्त२ जुग२ न परसैं जमदूत९ सु९ ॥
 ओगुन खिल अवनीस सुनहु अव हय संभूत सु ॥
 अधिक१हीन२ रँद१ अंढ२असित काकुंद३मुसली४इम ॥
 बंदन५कगली६बहुरि घंटी७ शृंगी८त्रि३क९एतिम ॥१२९॥
 सह कंकोली१० द्वि२ सँफ११ पंच५ जट२अंजनी१३हु पुनि॥
 सँथन१४ चउदह १४ असुभ१४गँदित वृद्धन स्वबुद्धि गुनि॥
 इंदिदिर् सप्त१ असित१ तालु१ ठे तो वह असुभ न ॥
 सब भ्रम दक्षिण१ससुभ१सव्य२वर्ती कहूँ ससुभ न२ १३०

॥ दोहा ॥

इम बाजि३न लाखि सुभ१ असुभ२, ससुचित संग्रहि सँप्ति३।
 सह पौटव रक्खैं सुही, बाढैं अरिन विलाप्ति ॥ १३१ ॥

कैटक७ अंग तीजो३ कहिय, यह हय३ नाम उदार ॥

१ऊपर नीचे दो भमरियें होवें उसको जमदूत स्पर्श करता है २हे राजा वाक्के
 के अवगुण भी घोड़ेसे उत्पन्न होनेवाले हैं सो सुनो. अधिकदंता ४और हीन
 दन्ता इसी प्रकार हीन अण्ड और अधिक अण्ड अशुभ है ५इयाम तालुवाला
 ६ सब शरीर एक रंग का और एक चरण अन्य रंगका होवे उसको
 मुसली कहते हैं, इसी प्रकार ७ सुलकी अशुभ भमरी विशेषवाला ८ नीचे
 के ओठ से बाहर दंत निकला हुआ होवे उसको कराली कहते हैं ९ वह और
 गले की भमरवाला जिसको कंठभंजन कहते हैं वह और १०मस्तक पर सीं-
 गका चिन्ह होवे वह ११ तीन कानवाला ॥ १२९ ॥ १२ ककोली (खोड़विशेष
 सहित १३ दो खुरवाला १४ मस्तक पर केलवाली में पांच भमरियें होवें
 उसको पंचजट कहते हैं वह और फिर १५नेल के नीचे भमरीवाला १६ अदि
 कस्तन (बोवे) वाला इन चौदह प्रकार के घोड़ों को वृद्ध लोगों ने अपनी बुद्धि
 को फैलाकर अशुभ १७ कहे हैं. इन में १८नील कमल (गहुण) के समान रंग
 तालुवाला होवे वह अशुभ नहीं है और ऊपर कही हुई सब भमरिय
 दक्षिण मुखवाली शुभ और १९बाम मुखवाली अशुभ हैं ॥१३०॥२०घोड़े एक
 कौर और २१चतुराई से रक्खैं सो ही शत्रुओं को रुलाता है ॥१३१॥२२संन क

स्पर्धने४ अथ चोथो४ सुनहु, प्रस्तुत च्यारि४ प्रकार॥१३२॥
 कर्म उचित च्यारि४ न कायित, चउ४ छ६ अठ्ठ८दस१०चक्र
 व्है चक्रन मित१६।८।१०जुत्तद्वय, सुभ१सवेग२छितिसंक्र१३३
 रन समुचित चउ४ चक्र रथ, चउ४ द्वय सुखद विचारि ॥
 गखिखय अरु अथ रथरनहु, धरनि लुप्त कलि४धारि॥१३४॥
 अग राजपके सप्त७ ए, मुख्य बल्ला७वाधि मानि ॥
 इतरहु अग अवस्य इम, जेहु लेहु प्रभु जानि ॥ १३५ ॥

॥ घनाक्षरी ॥

त्रैपी३।१ त्यों अथर्व२ दहनीति३ साति४ पुष्टि५कर्म,
 कोविद व्है एरिसं पुरोहित१ प्रमान्यों जात ॥
 सहिता१ गनित२ होरा३ केरल४ सकुन५ पच५,
 भेद जाने ज्योतिष सो गणाकें३ वग्वान्यों जात ॥
 पीठिनतै सील१ कुल२ वारो१ धीर२ वाजि१ गजर,
 सस्त्र३ सास्त्र ४ विद्याबुध ३ सेनापति ३ जान्यों जात ॥
 वेद१ स्मृति२ कुसल आग३ द्वेप४ चेष्टाबुध५,

१ सेना का रक्षा अग रथ है यह २सेना के इस प्रकरण से चार प्रकार का है
 २ ऊपर फटे छत्र पहिय के होते हैं सो५१ पृथ्वी के इन्द्र (रामसिंह) इन रथों में
 जितने ४ पहिये होते उनमें ही घोड़े जुनने में शुभ वेगवाले होते हैं ॥ १३३ ॥
 इनमें युद्धके ६ दक्षित चार पहियों का रथ ही है और चार घोड़ों का जोतना
 ही सुग देनेवाले विचार कर रखे हैं परन्तु अथ ७ कलियुग में युद्ध के रथ
 भूमि पर मिटगये जानो ॥ १३४ ॥ राज्य के सात अग ८ सेना पर्यन्त मानो
 धरन्तु ० और भी अथर्व अग हैं वे भी हे प्रभु सुनो ॥ १३० ॥ १० ऋक्, यजु,
 साम, इन तीन वेदों और मोहन, वशीकरण, वशादन आदि अभिचार अथ
 मंत्र म ११ नीति शास्त्र, गान्ति और पुष्टि कर्म में १२पठित १३ऐसा पुरोहित
 चाहिये १४ऊपर फटे छत्र पाथ भेद युक्त ज्योतिष को जाननेवाला ज्योतिषी
 कहता है १५किसी में प्रीति और द्वेष नहीं करनेवाला १६ चेष्टा से अभिप्राय
 को जाननेवाला

अष्टकं ८ दसकं १० वा यौ न्यायकर्म ४ आन्यौ जात २३
 सर्व रनकोविदं १ परीच्छित २ रु सिद्धसर्त्र ३,
 हस्ती ४ हय ५ यन्ता ६ १५ दुष्टदंडक ६ वहे जोर्ध ५ जोहि ॥
 चो ४ उपाय १२ ६ गुन २ प्रपंचो १२ देस ३ काल ४ बुध ३ ४,
 मंडलोसमान्य ५ आप्त ६ सांधि विग्रहिक ६ सोहि ॥
 सर्व चंयकारी १ यंत्रयोधी २ आप्त ३ स्वामीके,
 दिवायैहू मरै दें गढ ४ दुर्गपति ७ असो होहि ॥
 आप्त १ रु अलुब्ध २ सर्व भाषा लिपि बेदी ३ कूट,
 गनित विवेकी ४ अधिकारी लेख साखाको ८ हि ॥ २३७ ॥
 स्मार्तकर्म कोविद १ जथा उचित दंडदाता २,
 धर्मधुर धीर ३ सत्यवादी ४ होइ दंडधर ९ ॥
 सुश्रुता १ दि आयुर्वेद अभ्यासी १ निर्दानपर २,

१ मनुस्मृतिमें कहे हुए क्रोधसे उत्पन्न होनेवाले आठ दोष "पैशून्यं साहसं व्रीह
 ईर्ष्याऽसुयार्थदूषणम् ॥ वाग्दण्डजं च पारुष्यं क्रोधजोपि गणोष्टकः" ॥ २ काम
 से उत्पन्न होनेवाले दश दोष "मृगयाऽक्षो दिवास्वप्नः परिवादः स्त्रियो मदः।
 तौर्यत्रिकं वृथाट्या च कामजो दशको गणः" ॥ इन सब के जानने में कुशल होवे
 ऐसा ३ न्याय करनेवाला रखना चाहिये ॥ १३६ ॥ ४ सब प्रकारके युद्धों में चतुर ५
 परीक्षा किये हुए ६ जिनके शस्त्र खाली नहीं जावें ऐसे ७ हार्य घोड़ों को
 उत्तम चलाने (सिद्धादेने) वाले, दुष्टों को दंड देनेवाले ऐसे ८ योद्धा
 (वीर) रखने चाहिये ९ साम आदि चारों उपाय १० संधि आदि छहों गुणों
 को रच जाननेवाला, देश काल में चतुर ऐसा ११ देशाधिप (नाकिम) मान १२
 पाने योग्य और १३ पही सान्धि विग्रहका कार्य करनेवाला होना चाहिये और
 सब १४ संवय का करनेवाला १५ तोप आदि यन्त्रों से युद्ध करनेवाला १६ स
 त्त्ववादी १७ ऐसा किल्लादार होवे, सत्यवादी १८ निर्लोभी १९ सब भाषाओं
 के लेखको जाननेवाला २० कूटगणित को जाननेवाला २१ दफतर का
 अधिकारी होवे ॥ ११७ ॥ धर्म शास्त्र का पंडित, उचित दंडका देनेवाला २२
 ऐसा कोतवाल होना चाहिये २३ सुश्रुत आदि आयुर्वेद का अभ्यास
 किया हुआ २४ रोग का कारण पहिचानने में श्रेष्ठ,

धर्मधर३ धीर४ क्रिया कोविद५ सो वैद्य१० वर ॥
 रत्न१ हेम२ रजत३ पटा४दिक विधान बुध१,
 आप्त२ रु कुटुबी३त्यो अलुब्ध४ सो११ है भाटघर ॥
 लेखन कुसल१ सर्वदेसलिपि१ बानी२ बुध२३,
 आप्त४ अग्रवाची५ते२ ँहै बाचक११२रु लेखकर २११३ ॥१३८॥
 पीढिनतै आप्त१ स्वादुपाची२ सुंदसास्त्र बुध३,
 लोमहीन४ वैद्यक बिसारद५है तूपकार१४ ॥
 मेधावी१ अलोभी२ परचितवेदी३ व्यक्तवोक्थ४,
 निर्भय५ प्रगल्भ६ सत्यवादी७है सदेसहार१५ ॥
 स्थानंदडपाती१ गजसिच्छा१ हयसिच्छा२ दच्छा३,
 सिद्धसस्त्र४ आप्त४है गर्जो१५च२अधिकारवार१६१७ ॥
 लोहभेद 'बोधी१ चित्रपोधी२ सानकर्मपटु३,
 मूर४ सखसाधक५ सैमाश्रित६है सैस्त्रधार१८॥१३९॥
 कान१ खज२ वृद्ध३ कुंज४ वामन५ खैलाति६ पगु०,

रत्न, सुवर्ण, चादी, ध्वज आदि के विधान में चतुर, सत्यवादी, कुटुम्बवाला २ निर्लोभीऐसा ३ सवारी (भट्टारका दुरोगा), सपदेशकीलिपि लिखनेमें कुशल, धो लने में चतुर, सत्यवादी, पधने में कहीं रुकै नहीं ऐसा आगे से आगे पाचने वाला, इस प्रकार का ४ पाचनेवाला और लिखनेवाला (अइलकार, सुनशी) चाहिये ॥ ११८ ॥ पीढियों से सत्यवक्ता ५ स्वाद्य भोजन पकानेवाला ६ रसाई के शास्त्र में पंडित ७ वैद्यक में निपुण ऐसा ८ रसोई पकानेवाला होवे ९ बुद्धिमान् १० दूसरे के मनकी बात को जाननेवाला ११ स्पष्ट बोलनेवाला १२ वप - स्थित बुद्धिवाला (हाजर जयाम) १३ ऐसा दूत होवे १४ बड़ के स्थान पर दंड देनेवाला, हाथियों की और घोड़े की शिक्षा में चतुर, शास्त्र विद्या में कुशल (शस्त्रों के पूर्ण अभ्यासवाला) सत्यवादी ऐसा हाथी १५ घोड़ोंका अधिकारी होना चाहिये, छोड़े के भेदों को १६ जाननेवाला १७ आरधर्य युक्त युद्ध करनेवाला, खुरपाण के कार्य में चतुर, शीर, शस्त्रों का साधन कियाहुआ १८ श्रेष्ठ रीति से आश्रित होवे वह १९ सकलीघर होना चाहिये ॥ ११९ ॥ २० काया, २१ छोड़ा, बुढ़ा २२ कुपड़ा, ठिंगना २३ खखवाद (टाटला) पागला, कोडी,

कुष्ट१ खैन२वारे८।९ अवरोध द्वारवासी१९एहि ॥
 आप्त१ रु अरूप२ लोभहीन३ जितइंद्रिय४वहे,
 चेष्टा१ऽऽकार२वेदी५।६ अवरोध अधिकारी२०जेहि ॥
 सर्वचित्तग्राही१ दर्पवर्जित२ मधुरवाची३,
 रूप१ तेज२ वारे४।५ बैत्रवारे६प्रतिहार२१ तेहि ॥
 ओरहु अनेक राज्यवारे उपग्रंग औसैं,
 जानौ प्रभुराम२०१।४ उपयोगी जे नृपनकेहि ॥ १४० ॥
 इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणोऽष्टमऽराशौ रामसिंह
 चरित्रे राज्ञे राजनीतिश्रावणां तृतीयो मयूखः ॥ ३ ॥
 आदितः पंचषष्ठ्युत्तरत्रिशततमो मयूखः ॥ ३६५ ॥
 प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

तहँ औसैं पंडित जनन, सब मग बरनि सुरीति ॥
 पुहवीपहुँ पहराम२०१।४प्रति, प्रथित कहै सहप्रीति ॥ १ ॥
 सूरि कथित सब प्रति समुक्ति, जोग्य१ अजोग्यहि जानि ॥
 नास्तिक मग खटवतजि नियत, आस्तिक मग पग आनि२॥२॥
 सहित धर्म१ तिम भक्ति२ सह, आत्मबोध३ उपदेस ॥
 पथ यह मन्थ्यौ सिसुपनहु, निज गिनि राम२०१।४नरेस॥३॥

१क्षय (थैसिस) रोगवाला, ये २ जनाने द्वार पर रहनेवाले हों ३ चेष्टा और
 आकार से अभिप्राय को जाननेवाला ४ जनानी डोढी का दरोगा होना चा-
 हिये ५ उपरोक्त लक्षणोंवाले छड़ीदार और ६ द्वारपाल हों ॥ १४० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टम राशि में रामसिंह के च-
 रित्र में राजा को राजनीति सुनाने का तीसरा मयूख समाप्त हुआ ॥३॥ और
 आदि से तीन सौ पैंसठ ३६५मयूख हुए ॥

तहां इसप्रकार पण्डितों ने ७ राजा के सब मार्गों का श्रेष्ठ रीति से वर्णन
 करके ८ राजा रामसिंह प्रति प्रीति सहित ९ प्रसिद्ध कहे ॥ १ ॥ १० पण्डितों
 के कहे हुए ११ निश्चय ही ॥ २ ॥ ३ ॥

॥ षट्पात् ॥

दस१० सैम वय इम दिपत सकल म्बविधेय भूप सुनि ॥
 दिपे सभा बुध द्विजन पुरट१ भूर पट३ भूखन पुनि ॥
 रक्खि निकट अनुरूपं भनित कवि१ सूरि२ मन्त्रि३ भट४ ॥
 लागिय सिच्छा लैन सबन समुचित वीरन बट ॥
 जगि१ ब्राह्मणमुहूरत१नित्य जिम करि मगल दरसन२कथित ॥
 दै३द्विजन भर्म१भोजनश्नदम स्वत्तखि आर्ज्प भोजन४सहित॥४॥
 द्वय१ गज२ सुरभि३ निहारि४ सौच आचरि६ सौचालय ॥
 कर१ पय२ रद३ करि७ सुद्व नियत विधि न्हाइ८ निपुन नय ॥
 सध्या विरचि९ सअग अष्टि१६ भेदन प्रभु अर्चन१० ॥
 श्राद्ध१० रु तर्पन२ सद्धि११श्रवन सुकथा जु सपर्वन१२॥
 सध्या द्वितीय२लगतहि करि१३सु पुनि सुनि१४भारत भागवत२
 अर्घ्यपेन धारि१५अप्पन उचित द्रुत अरोहि गज१द्वय२देवत१६।५।
 गवत१ द्रवत२ अस्यानुपास ॥ १ ॥
 इनहिं फेरि वय उचित अस्त्र अनुक्रम अ३पासहिं१७ ॥
 वैश्वदेवकरि१८ बहुरि असन मध्यान्ह२ उपासहिं१९ ॥
 मन्त्रिन सह रचि मन्त्र२० करहिं नय मर्म बिलोकन२१ ॥
 सुनि व्यय१ आय समस्त२२ सद्धि खेल२३हु सखिलोकन ॥
 अपरा१न्ह३ समय सध्याहु इम रचि२४गज१द्वय२ फेरत रहत२५॥

१ दश वर्ष की अवस्था में इसप्रकार शोभायमान होकर राजा ने २ अपना कर्तव्य सुनकर सभा में विद्वान् ब्राह्मणों को शुचार्ण, भूमि, वस्त्र दिये ४अपने सदृश ५ पण्डित ६ चार घड़ी रात्रि बाकी रहते छठकर ७ ब्राह्मणों को शुचार्ण देकर ८ दृग के पात्र में अर्पण सुन्न देख कर ॥ ४ ॥ ९ फानों में अष्ट फया का संयोग करते हैं १० अपने उचित पहने को धारण करके शीघ्र हाथी घोड़े पर चढ़कर ११ चलते हैं ॥ ५ ॥ १२ सखा लोका से १३ सन्ध्या के समय भी "तीसरे पहर से सूर्यास्त पर्यन्त के समय को अपराह्न कहते हैं"

सस्त्रहु समरत४पुनि सद्धिकै२६लै*अचवन१भोजन२ लहत२७॥६॥

बिलोकन१ खिलोकन२ अंत्यानुप्रासः १ ॥

॥ दोहा ॥

जननी१ गुरु२ कुलवृद्ध३ जे, बंदि चरन तिन्ह२८ वीरे ॥

मित्रन रमि२९ निद्रा समय, धरै सयन पय३० धीर ॥ ७ ॥

ब्राह्मचसुहूरत१ही बहुरि, अैसेँ जमि अवनीस ॥

चैर्या प्रतिदिन आचरै, श्रुति निदेस बहि सीस ॥ ८ ॥

अैसेँ क्रम बुंदी अधिप, हायन दस१० बय होत ॥

सद्धि बढयो स्वविधेय सब, इन कि मँकर उद्योत ॥ ९ ॥

महाराव कोटा महिप, जो इत दिल्लिय जाइ ॥

बिफल होत चिंतत विविध, भयो विमन खिन भाइ ॥१०॥

विष्णुसिंह२००१२नृप सिक्खविधि, चिंति सकल अव चित्त ॥

पछितावत महि विरतपनँ, बिरह पिक्खि भुव१ बिँत ॥११॥

अंगरेज अनुकूल इक१, मिल्यो तदुक्त न मानि ॥

मत अनुज सिखयो घुरयो, जुझत द्रुत बल जानि ॥१२॥

सब खिल सासक समयके, अंगरेज मति इँद ॥

जालम दिस अनुकूल जे, सज्ज भये बल सिद्ध ॥१३॥

॥ षट्पात् ॥

करन जुद्ध कोटेस सज्जि सानुज दिल्ली सन ॥

आयो सरद४ अँनेह मन्नि देसहि स्वकीय मन ॥

* आचमन करके ॥ ६ ॥ ७ ॥ १ आचरण ॥ ८ ॥ २ जानों कर संक्रान्ति का सूर्य बढ़े जैसे बढ़ा ॥ ९ ॥ १० ॥ ३ बुंदी के राजा विष्णुसिंह ने पहिले शिखा दी थी उस सब को याद करके श्रुति को ४ छोड़कर उस भूमि रूपी ५ घन से विरह देखकर अब पछताता है ॥ ११ ॥ ६ उस अंगरेज का कहना नहीं मानकर ७ अपने मस्त छोटे भाई को सिलाया हुआ ॥ १२ ॥ ८ बाकी के इस समय के सब हाकिम ९ बड़े बुद्धिमान अंगरेज जालमसिंह की तरफ अनुकूल थे वे ॥ १३ ॥ १० शरद ऋतु के समय में

कति छल्ल१ रु कति प्रकट२ मिले बधव मोधानी ॥
 इतरहु कोटा अनुग मिले इहिं क्रम जय मानी ॥
 परदेस सुभट१ जिनमें प्रचुर कहत देस सुभट२हु कतिक॥
 जालम अधीन जे सब जुरे मन भूपहि मारन मर्तिक॥१४॥
 तयहि गोठपुर तजि रु तानि साइस बलवंत२००१२हु ॥
 प्रभु पितृव्य सजि सत्य लरन जावन लग्गो लहु ॥
 पंहु माता तब पत्र कलिंत नय भेजि कहाई ॥
 लखहु कालगति जाल इक्खि आलय अधिकाई ॥
 तुमरो अधीस वय बाल तिहिं सिक्ख देहु हित अनुसरहु ॥
 भार जो परै अप्पन भवन कोविद तस उपसम करहु॥१५॥
 विन्नति लिखि इम विविध प्रसू प्रभुकी देवर प्रति ॥
 समुक्कायो सुमिराइ गेह१ कुल२ कर्म१ धर्म२ गति ॥
 बढत दर्प बलवत२००१२ सोहु मन्नी न जया सठ ॥
 महाराव सन मिलि रु भयो तस भीर हेरि इठ ॥
 अग्रेज१ मल्ल२ उत ए१हि इत मगरोलपुर ढिग मिले ॥
 पटकेहि मल्ल निज स्वामिपर गुरु गोले तोपन गिले ॥१६॥
 इतके इंकन अर्ब कहत थाके कोटेसहिं ॥
 कहयो तदैपि कोटेस सचिव करिहै न कलेसहिं ॥

१ माधवसिंह के बध के हाडे १ और भी कोटा के सेवक शपरदेशी बीर बहुत
 ये ४ राजा किशोरसिंह को मारने की बुझि से ॥ १४ ॥ तभी बलवंतसिंह १
 रावराजा रामसिंह का काका हठ फैलाकर ५ गोठड़ा मगर को बोलकर सेना
 भेजकर ७ शीघ्र जाने लगा तब रामसिंह की माता ने नीति का हथियार पत्र
 भेजकर कहाया १० अपने घर (पुदी) की ११हे चतुर१२सस समा को मिटावो
 ॥ १५ ॥ १६ प्रभु (रामसिंह) की माता ने १४माला जाक्षिमसिंह ने ॥१६॥ १५
 शहर के घेर घोटने के लिये कहकर पक गये १६ तोभी कोटा के पति ने
 कहा कि हमारा सचिव माला जाक्षिमसिंह क्लेश नहीं करेगा

इहिं अंतर सहसाहि फेर जालम२००।२ तोपन फवि ॥
 नृप किसोर ॥१२ दल निखिल छोरि नैहो कातर छवि ॥
 सुनि फेर बाजिं न रह्यो स्ववस गहि पैसुत्व इक१दिस गयो
 असवार तास नृपको अनुज भीत उतहि जावत भयो॥१७॥
 मन ओर१हि मग मुरत अँव भजिगो मग ओर२हि ॥
 कुंठ१कुंसा२हुँ२ करन जुरे इकत१ बरजोरहि ॥
 आयुध१ हय२ अभ्यास न दिय सिक्खन जालम जिम ॥
 चमकत हय हुव चकित अनुज नृपको परवस इम ॥
 जालम बरूथ बिच जावतहि पृथ्वीसिंह सु जानि पँर ॥
 मल्लार नाम इक१ आयुधिक धर पटक्यो दै कुंते धर ॥१८॥
 कछु न हुतो नृपकोहु बाजि१ आयुध२ बिद्या बल ॥
 अँव खर्व आरूढ देखि तोपन बिखरत दल ॥
 भाखी अब मै भजि रु कहां दुरिहौं अपजस करि ॥
 अब मरनहि मम अच्छ धुँत अरि समुह पैड धरि ॥
 प्रभुके पितृवप१ सुँख रनपटुन तहँ जंपिय नय तकि तिम ॥
 हम कह्यो तब न हंके हय रुअम न बिगारहु मिच्यु इम१

१ अचानक २ सब सेना को छोड़कर ३ कायर की तरह आगा ४ तोपों के फे
 सुनकर घोड़ा अपने अश में नहीं रहा और ५ पलुपना ग्रहण करके एक तरफ
 भाग गया ६ उस घोड़े का सवार राजा का छोटा भाई डरकर उधर ही गया
 ॥ १७ ॥ सवार का मन तो और ही तरफ जाता था और ७ घोड़ा और ह
 तरफ भाग गया, दोनों दार्थों से द बाग के दोनों कोने जवरी से मिल गये
 जालिमसिंह की सेना में जाते ही १० शत्रुओं ने पृथ्वीसिंह को जानकर शरी
 में ११ भाला मारकर ज़ूमि पर गिरा दिया ॥ १८ ॥ १२ राजा किशोरसिंह व
 भी घोड़े का और शस्त्र का बिद्याबल कुछ नहीं था १३ छोटे घोड़े पर चढ़के
 १४ धूर्त शत्रु (जालमसिंह) के सम्मुख कदम देकर मेरा मरना ही अच्छा है ?
 रावराजा रामसिंह के काका (बलवंतसिंह) आदि युद्ध के चतुरों ने कहा ?
 इस प्रकार मृत्यु मत बिगाड़ो ॥ १९ ॥

कहि हम सह कोटेस दुमन नष्टो हइ ॥
 पथ कछु तिहि पहुचाइ विजय करि मुरिग मल्ल पैल ॥
 अधिकार मधि अतुल धूम तोपन अवर १ धर ॥
 कति कोसन सक्रमत भये सैगत बिछुरे भर ॥
 अनुजहि न इक्खि कोटाअधिप कहिय राहियपिथल ३ कहा ॥
 बलि अग्न चलत सगिनबदिध त्वरित आहु मिलिहै तहा ॥ २० ॥
 नगर बरोदा निकट भूप पहुंच्यो गोरैन भुव ॥
 पुच्छत तहँ अति प्रसभ इन्हों अनुज सु जानतहुव ॥
 भनिय रोड खिल आत भरहु जिन तजहु संग मम ॥
 जालम कोटा जाइ राज्य निज करहु मेनोरम ॥
 अद्वार जाइ में अब सदा प्रभुको करिहों अनुगपन ॥
 पन सोहि रक्खि कोटेस पुनि जाइ तत्य किय हरि जैन २ ॥
 पीछै चिरकरि पट्ट आनि रक्ख्यो जालम यह ॥
 सून्य तखत तिहि समय तास कतिदिन रक्ख्यो तह ॥
 अक्खिय सुत माधवहुं विष्णुसिंह २०० ॥ २ ॥ हि बैठारन ॥
 जालम तउ तस जैनक कुमर वरज्यो कहि कारन ॥
 आवन किसोर—११ कोटा अवधि पेट्ट निकट धरि पावरी ॥

कोटा के पति सहित १ वदास होकर हाडाओं की सेना भागी २ काला की सेना किनारे ही कोस बल्लो पर बिछड़े हुए वीर १ साथ हुए ४ साथियों ने कहा ॥ २० ॥ ५ गौड क्षत्रिया की भूमि में बैठ करके पूछने पर छोटे भाई का मारा जाना जाना ८ बाफी के भाई मत मरो और मेरा साथ छावदी ६ सुदर राज्य करो १० विष्णु भगवान् का सेवकपन करुगा सोही नाथद्वारे में जाकर ११ विष्णु भगवान् का पूजन किया "मेवाङ्ग वेशर्म नाथद्वारा नामक स्थिति है" ॥ २१ ॥ १२ बहुत समय पीछे महाराज किशोरसिंह को नाथद्वारे से कोट में लाकर पीछा पाट पिठाया १३ तखत शून्य रहा वस समय जाह्नसिंह के पुत्र १४ माधवासिंह ने कहा कि किशोरसिंह के छोटे भाई विष्णुसिंह को पाट देवें तोभी १५ माधवासिंह ने फारण बताकर अपने पुत्रको मना किया और १६ किशोरसिंह के पीछा कोटे में आने पर्यन्त १७ गादीके समीप किशोरसिंह की

तिन्ह अग प्रनमि किय काम तिहिँ रसा सकल कहि रावरी ॥ २१ ॥

॥ अष्टपात् ॥

मंगरोल रन मचिग समय बसु हय धृति १८७८ संवत ॥
 निधि हय धृति १८७९ सक नियत इतहु सेना सजि उद्धत ॥
 जुझन सिख रनजीत प्रबल हंकिथ लखपुरपति ॥
 पुर १ सदुर्ग २ पेसोर अनखि घेस्यो आग्रह अति ॥
 चक्र सहँस चौबीस २४००० अरिन पंचहि हजार ५००० उत ॥
 भयकर संगर भयउ जदिन दुहुँ २० ओर जोर जुत ॥
 कैलि परयो मुख्य रनजीतको भोलासिंह १ स नाम भट ॥
 इक सहँस १००० कतल १ घायल २ इहाँ बिदित परे सिख बीरबट २३
 जहँ काबल सन जिति प्रहत करि कथित पठानन ॥
 प्रतिभट लहि पेसोर उहाँ थानाँ धरि अप्पन ॥
 हुव अजेय लाहोर बाहु बस करि पंजाबहि ॥
 कोउन हुव जट कुल महिप दबबत इतीक महि ॥
 स्वीय सचिव इत सुपहु नैर बुन्दिष मृत नागर ॥
 संभूराम स नाम जगत नय मत उज्जागर ॥
 द्विज तुलाराम १ संभू २ दुव २ हि आता बर मंत्री भये ॥
 तिनके अभाव धात्रेय तकि गेरन भर जग दग गये ॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥

पावड़ी रखकर उस (पावड़ी) के आगे प्रणाम करके १ सब भूमि आपकी है
 यह कहकर कोटाका काम करता रहा ॥ २२ ॥ २ निश्चय ही सेना सजकर
 लाहोर के पति सिख रणजीतसिंहने क्रोध करके गढ़ सहित पेसोर पुरको घेर
 ४ रणजीतसिंह की सेना ५ युद्ध में रणजीतसिंह का मुख्य उमराव भोलासिंह
 मारागया ॥ २३ ॥ ६ कहेहुए पठानों को मारकर पेसोर को अपना शत्रु समझ
 कर ७ तुलाराम और शंभु, इन दोनों के अभाव (नहीं रहने) में धायभाई पर
 राज्य कार्य का भार डालने को संसार के नेत्र गये ॥ २४ ॥

ग्राम सूहरीको गदिते, गैदा मुज्जर गग१ ॥

धावर नृप उम्मेद१९८॥४६॥, जो हुव पुच्च प्रसग ॥ २५ ॥

तस नैती धात्रेय यह, कृष्णाराम अभिधान ॥

तारागढको दुर्गपति, मन्प्यो नय मति मान ॥ २६ ॥

पचनमत प्रभुकी प्रसू, अप्पहिं समुचित अक्खि ॥

सचिव किन्न धात्रेय सो, राज्य भार भुज रक्खि ॥ २७ ॥

किय मोहन१ तस ज्येष्ठ सुत, तारागढपति तत्थ ॥

सुख२ मंगल३ याके अनुज, स्वामिभक्त हित सत्थ ॥ २८ ॥

कृष्णाराम१ कोविदे अनुज, रामकृष्ण२ धात्रेय ॥

दुर्ग अजितगढको हुतो, सासक जो रन श्रेय ॥ २९ ॥

तास तनय जेठो१ रतन१४, भट सोपे प्रभु भक्त ॥

वाजि१ सत्त्र२ अक्खास धुध, सब अधीस हित संक्त ॥ ३० ॥

सुभटनके पुत्रहु सबय, हुव सब भूप हजूर ॥

साम्प्य जु वानन सम्रहैं, सिसुपन बहैं न सूर ॥ ३१ ॥

पट्पात्-कृष्णाराम धात्रेय सु इम हुव मुख्य मुसाहव ॥

सब प्रभु राज्य सम्हारि तक्कि व्यय१ आय२ तुंजा तव ॥

मेदि असेस प्रेमाद कोस धन१ अन्न२ रीसि करि ॥

सूहरी नामक ग्राम का गैदा गोश्र का गूजर गगाराम उम्मेदसिंह की धाय का पति हुआ १ कहते हैं ॥२५॥ २६॥ सका पोता ॥२६॥ १ महाराज राजा रामसिंह की माताने ४ आप (रामसिंह) को उस कृष्णराम धाय भाई का सचिव होना उचित कहकर उसको सचिव किया ॥२७॥ कृष्णराम का छोटा भाई ५ चतुर ॥२८॥२९॥ ६ घोड़े और शस्त्र के अभ्यास में चतुर ७ स्वामी के हित में आसक्त अध्या समर्थ ॥३०॥ अपनी अवस्थावाले वसराओं के पुत्र राजा की हजूर में हाजिर हुए यह राजा अपने तुल्य युवा पुरुषों को सम्रह करता है और बालकपन को धारण नहीं करता ॥३१॥ १ आसक्त खरब को बराबर देखकर १० सय मूखों को मेटकर (अनुचित खरब को घटाकर) खजाने में धन और अन्न का १ सम्रह करके

कुनय करज दूर किय भूप आलय लैछी भरि ॥

अरु किय समाह्वय देसहु अखिल बसुधा किय जस रुयात बहु ॥

सुखराम सोहु बढिगो सचिव पहु अप्पहिं लहि राम२०१।४ पहु३२

()

नभअहिगजससि१८८०सकइतनिपुनन अंग्रेजनदिनदिनजय आस ॥

लरत लरत हायन दुवर्तै लागि पंचसहस५०००निज बल लहि पास

प्राची१ ओर बिलायत बर्मा आवा१पुर तस खंधावार ॥

अरु दूजो२जिहिं नाम अइन्वारत्नपुर३हु ताजो३रुचिकार ॥३३॥

अब तस निकट पहुँचि अंग्रेजन मंजिल दुवर्पर मंडि सुकाम ॥

बढि आवा१ लैबोहि बिचारिय तोपन लास धुजावत धाम ॥

तब करि संधि चकित बर्मापति दम्म कोटि१०००००००११बैलव्यक

हित दिन्न ॥

दूजो२ मोलमीनको जनपद२ कहि उपदा इनके वस किन्न ॥३४॥

इत कोटा जालम बपु उजिर्भय प्रतिभा तुल्य नृपहि धरि पट्ट ॥

माधव तब हुव मुख्य मुसाहब बहत जनकं जालम गत बट्ट ॥

विष्णुसिंह२००१२कोटैस मध्यरसुत जालमसौं जु मिल्यो हुत जाइ ॥

आय लख१०००००००दम्मनपुरअनतादियताकहँमन अभयदहाइ ३५

१ राजा के घर को लहमी से भाकर सब देश को २ धनवान् कर दिया ॥ ३२ ॥ ३ लड़ने लड़ने दो वर्ष लगने पर, पूर्व दिशा की बर्मा नामक बिलायत और उसकी ४ राजधानी आवापुर जिसका दूसरा नाम अइन्वा और तीसरा सुंदर नाम रत्नपुर है ॥ ३३ ॥ उसके समीप पहुँच कर ५ फौज खरब के लिये क्रोड़ रुपये दिये ६ देश ७ भेद कहकर अंगरेजों के अधिकार में किया ॥ ३४ ॥ ८ सूरि के समान महाराय किशोरसिंह को गद्दी पर रखकर कोटा में आला जालिमसिंह ने ८ शरीर छोड़ा १० मरेहुए पितृ-जालिमसिंह के मार्ग पर चलकर उसका पुत्र आला माधवसिंह कोटा का मुसाहब हुआ, कोटा के पति के मध्य पुत्र विष्णुसिंह को जो जालिमासिंह से शीघ्र जा मिला था ११ लाख रुपयोंकी आमदका अणता नामक पुर दिया ॥ ३५ ॥

रामासिंहका जोधपुरविवाहहोनेकीसूचना]षष्ठमराशि-चतुर्थमयूष (४१०७)

मास्थो जिहिँ पित्यल—॥३॥ हनि तोमर सो बाहुजं मल्लार स नाम ॥
करि सत दुव२००सादिनको सासक घुरि गिनि ताहि वये धन१धाम
भात१ भयो अनतापुर अधिप रु जिहिँ इक भूत हन्यो वरजोर ॥
अभय सु पे मल्लार२ बढ्यो इम कहिनसक्यो कछु भय किसोर३६
माधव अय जालम जिम मालिक अग अखिल करि अप्प अधीन॥
देस१कोस२सेना३दुर्गादिक४कोटा सब सासन बसकीन ॥
विष्णुसिंह२००१खुन्दीस विराजत नरपति मान जोधपुर नाह ॥
स्वमुताको प्रभुसौ किय सगपन कुमरपनहि सुनि सधन सराहा३७।
याँतै व्याह त्वरा करिवे अब मट विक्रम१थानापति भूत ॥
दूजो२ चदकुमर विरुदेस२हु खंगारज कूरम जस ख्यात ॥
ए दुव२ तवहि जोधपुर पठये बलि आये तहँ मडि विवाह ॥
प्रभु वय इत हायन वारह१२पर सद्धिय सब राजन नय राह ॥३८॥

मनोहरम् ॥

खेलत खलूरिकैमैं खुरली सरासनकी,
पानि धरि पाटवँ यौ राम२००१॥२ छितिपालके ॥
ऊचे अँवम उढत पतत्रिनेकोँ पारिदेन,
और न उतारिदेत बेम्हा चिरकालके ॥
दीठि जो परै तो दूर बेधनमैं हालहाल,

१ मल्लार नामक जिस क्षत्रिय ने आकाश मारकर महाराज किशोरसिंह के छोटे भाई वृष्णीसिंहको मारा था॥३९॥ उसको २ जोधपुरके महाराजा मानसिंह ने मुदापति विष्णुसिंह था तब ३ अपनी पुत्री कासम्बन्ध रामासिंह से किया था ॥ ३७ ॥ ४ खंगारोत कछवाहा जो जसमें प्रसिद्ध था ॥ ३८ ॥ ५ आकाश में अनुप का १ आकाशवास करता है जसा महाराज राजा रामसिंह के हाथ ऐसा ७ चतुराई वाग्य करते हैं कि ८ आकाश में ऊंचे उछल हुए ९ पक्षियों को गिरा देते हैं और दूसरा के बहुत समय के ठहरे हुए १० मिसाने को गिरादेते हैं और जो दृष्टि में आजायें तो छिलते हुए केशों को केशके अंतर से

बालबाल अंतर बचै न बट *बालके ॥
 केही चित्र क्रमतैं तयैमैं करि छेकछेक,
 एकएक बेधैं मनि मोतिनकी मालके ॥ ३९ ॥
 औसैं नरनायक अनेक क्रम आनि आनि,
 साधि सर१ बिद्या पानि तुपकरप्रमानकी ॥
 फैंकि नभ निंबू बेधडारत विविध रीति,
 दोलाजंत्र त्यों तैति उतारत बटानकी ॥
 कवि रविमल्ल १२ बुद्धि बिसत कितीक बात,
 सैरिभ१मैं सहित पखाल२ कडिजानकी ॥
 चोचा१दल२ चनक१ खुमा२दिनके खंडिदेत,
 मोचा१दल मंडिदेत माला गुटिकानकी ॥ ४० ॥
 यौ धनु१ तुपकर साधि बारहैं१२ बरस आप,
 कासू३ कुंत४ पट्टि५ कृपान६ कंला पकरी ॥
 हायन छद्वारे पीन कायन लुंलायनके,
 कंधर कठोरन ज्यों काटिदेत ककरी ॥

*केशके टुकड़े भी नहीं बचते हैं, कितनेही आश्चर्यके क्रमसे तवेमें छिद्रही छिद्र करदेते हैं तथा छिद्र करके फिर उस छिद्रको छेक देते हैं और मोतियोंकी माला का एक माणिया बेध देते हैं ॥ ३९ ॥ १ होंडते हुए (झूले में झूलते हुए) २ काष्ठ के गोलों (लट्टुओं) की पत्तिको गिरादेते हैं ३ कवि सूर्यमल्ल कहते हैं कि इन कामों में बुद्धिके प्रवेश होनेकी तो क्या बात है किन्तु पखाल सहित ४ भैंसे में तीरं कहजाता है और ५ तेजपात, चणा और दवारिपर्णी अथवा लता विशेष के पत्तों को काटदेते हैं और ७ केलके पत्ते में गोलियों की माला रचदेते हैं 'केलका पत्ता सामान्य चोट से फटजाता है इस कारण उस में गोलियों की माला रचने में विशेषता है' तथा नील और शालमली (सालर) के वृक्षों के नाम भी मोचा है जिनके पत्तों में ॥ ४० ॥ ८ बरछी, भाला ९ कटारी, तरवार की १० कलाको धारण की ११ छः वर्ष के पुष्ट भैंसों के कठोर कंधों को काकड़ा के समान काटदेते हैं,

साग्रगत माघहोत निस्सह निदाघहोत,
अस्त्रनको आघहोत बाघहोत वकरी ॥
टकरै टराड करी आवजाव अस्वनकों,
वीथी सकरी विच चलात जैसें चकरी ॥ ४१ ॥

॥ दोहा ॥

गत१ प्रत्यागत२ साचिगत३, पाटन४ रोध५ प्रहार६ ॥
हयोरूढ सद्धे हुलासि, ए खट६ तोमर वार ॥ ४२ ॥
वाईसरहि आसि मग्ग बलि, खुरली सद्धि स खेल ॥
वेधन लग्गो सवन वद्धि, सादी सिद्धन सेल ॥ ४३ ॥
सूचित वय सवगुन गहत, बहत टुंकोदर बेस ॥
प्रथित निर्धुद्ध१ पटैतपन२, सिकरूपो नृपति असेस ॥ ४४ ॥

॥ घनाक्षरी ॥

रूंकल१ तुरगनकों वाहन विनीत करि,
आरोहत१ मैंगल२ मतगन घराइ धीर ॥
काननके मेइ१ रु वराह२ खेइ३ कठोरव४,
फादन फलगें तिनके तैनु रुकैं न तीग ॥
निखिल नियुद्धमें न समवय साम्हें होत,
तत्त्वबोध१ भक्ति२ धर्म३ नीति४ सम साधि सीर ॥

इस शस्त्र विद्या में नहीं सहने योग्य १अग्रगत [आगे गया हुआ] पौष सहित
माघ मास और इसी प्रकार नहीं सहन किये जानेवाली ग्रीष्म ऋतु में भी शस्त्रों
का आघ होता है और जिनके सन्मुख सिंह बकरी के समान होता है २टकर
में हाथियों को टलाकर ३सकड़ा गलियों में आवजाव करके घोड़ों को चकरी
के समान चलाते हैं ॥४१॥४ घोड़ों पर सवार होकर ५ भाखेके ॥ ४२ ॥ ६ घोड़े
पर चढ़े हुए भाखे से सिंहों को मारनेका ॥ ४३ ॥ ७ भीमसेन की भाति ८
पाण्डुयुद्ध ॥४४॥ ९अशिक्षित घोड़ों (पछेरों) को शिक्षित करके १० हाथियों पर
११ वन में जंगली (आरथे) भैंसों को १२ गैडा, सिंह १३ इनके शरीरों में भी
सीर नहीं रुकता १४ सम्पूर्ण पाण्डुयुद्ध में

*पाटव जितोक षट् पागो पुहवीप ताहि,
 आसु अपनायो एक बुंदी अधिराज वार ॥ ४५ ॥
 सूरि१ सूर२ खोजनमें आलंबन आदि१ बनें,
 सोहत खेमज्यामें सरोजनमें गंध सम ॥
 जागै जस जाको भू पचास५० कोटि जोजनमें,
 रम्य रुचि रम्यतैं मनोजनमें अंध सम ॥
 ओजनमें भोजन२में पावे पर मोजन१में,
 फोजन२में को जन कहावैं बलाबंध सम ॥

॥ ४६ ॥

॥ चूडालदोहा ॥

अखिल हेय१ आदेय२ इम, ध्रुव धीकर्म तजि१ धारि२ धराधन ॥
 नाम निकारयो नृपनमें, डंग राघव मग डारि महामन ॥ ४७ ॥
 जिहि बतरावैं सोहि जन, मनें मोहन मंग पढ्यो मति ॥
 कवि१ बुध२ भट३ सचिवा४ दिकन, त्वरित करे निजतंत्र पढ्यो मति ४८ ;
 प्रभु पितृव्य इत गोठपुर, सुनि बाहुल्य सित१ अंत१ पुण्य सुख
 पट्टनि तीरथ न्हान पर, रुचि धारिष बलवंत२००१ नाहि रुख ४९

॥ ॥

कन्या निज उपयम पहिलैं किय दुर्गापुर सासक सरदार १९६।४ ॥
 सोपुर अधिप राधिकादासहिं बुल्लिय व्याहन सबिधि विचार ॥

*चतुर्दशी चतुर रामसिंहने शीघ्रा४५।\$पंडितों के खोजने में १ फूलों में सुगन्ध के समान सभा में शोभित होता है २ सुन्दर क्रांति मेरे कानदेव और कामदेव के अवतार प्रद्युम्न इन दोनों की गणना करने को यहां वहु वचन में नकार का प्रयोग किया है अर्थात् रामसिंह की सुन्दरता से उन दोनों की सुंदरता भी नहीं दीखती थी ४ प्रताप मे और दान में भोज भी ऐसा नहीं था और फोजों में ५ आडापळा नामक पर्वत के पति के समान कौन मनुष्य सुहाता है ॥ ४६ ॥ सम्पूर्ण छोड़ने और व्रह्मण करने को ७ बुद्धि के क्रम से निश्चय ही छोड़ा और धारण किया ८ रामचन्द्र के मार्ग में चरण देकर ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ९ रामसिंह का काका १० कार्तिक सुदि पूर्णिमा को ॥ ४९ ॥ ११ अपनी कन्या का विवाह

सध्यापति ताको सह सोपुग दोलतराव लघो सब देस ॥
 बैठनहित दिय ताहि वगोधा सासन वस रचक भुव सेस ॥ ५० ॥
 दुर्गापुर आयउ यह दुल्लहु तिहिं *मह गो बलवत २००।२हु तथ्य ॥
 सोपुर लैन मथ किय तासन सूचिय हम जुझहिं अब सत्य ॥
 सर हुलकर १ सध्या संध्या २ जुग २ मालव वटि अनीक अमान ॥
 भू जिततित दब्बी बहु भूपन पटकि आस पवलत्व प्रमान ॥ ५१ ॥
 कूगम १ गोर २ तथा खिच ३ कुल पुनि जहव ४ बुदेला ५ प्रमार ६ ॥
 गढ नरउर १ सोपुग २ राघवगढ ३ धूमि करोलिय ४ असिय ५ धार ६ ॥
 सध्या लिय इनकी अनीक सब मित्रतिपर कछु रक्खि निवाह ॥
 बुदेला १ न खिचि २ न तघ गहि बल दिय जुरि जुरि मध्या उरदाह ५२
 जत्यहु वीर रचहिं जुझिय रन रन रन इक १ जयसिंघ १ नरेस ॥
 बहु बेरहि लक्खन अरिदल विचइत १ मन उत २ कढिकढि गयएस ॥
 जिहि ईरर न हर्ने तिहिं को जन महत वरूथ हर्ने रनमाहिं ॥
 हम खिचि २ राघवगढ को इन निर्भय भिरत मरयो कहु नाहिं ५३
 बहुवेरन इहिं नृप किय व्याकुल रुद स्वसित सम दोलतराव ॥
 तोपन ईस फिगिन तीन ३ न दहि रनरन वन जिम तप दाव ॥
 जे भट मुख सिकदर १ जेकम २ निडर उपानवतीस ३ स नाम ॥
 ए त्रय फास गिलायत उद्व वतिन बल अधिप लहै जय ताम ॥ ५४ ॥
 तोप १ न भारि २ तत तरकावहिं ए ३ हरिमथ १ अरि २ न रन ऐन ॥
 तूनजिम गिनि जयसिंह १ सु तीन ३ न निजबल जुरिग मिचावत नैन
 ॥ ५० ॥ ५३ उम नृस्वमे पल्लवसिंह भी गया पल्लवानपन से आम पदकर ॥ ५१ ॥
 १ सिंधियान इतने लोकों की आभि छीन ली थी ॥ ५२ ॥ २ सेना में वसको कौन
 मार सकता है ३ रावोगढ का पति लड़कर फर्हा नहीं मारा गया ॥ ५३ ॥ फी
 पम शत्रु की आग्नि वनको जलावे जैसे ४ पुष्ट युद्ध में जयसिंहको जलाया शतहा
 इनके पक्षसे ॥ ५४ ॥ १ निरंतर तोपोंकी भाँट में शत्रुआरूपा ७ चणों को सङ्क्राते थे

आयु बिताय समय बपु उज्जैन राघवगढ जयसिंह^१नगरेस ॥
 ध्रुव सुव तास नामकरि धोंकल^२अंक^३रिथित भुवहित हुव एस ५५
 संगर सोहु जैनक जिम सत्रुन व्याकुल करतभयो बहुवेर ॥
 मानत असह कह्यो तिहिं मारन दोलतराव न करि छिन देर ॥
 परिचर रक्खि सिकंदर प्रमुख न धारत हुव अप्पहु अवधान ॥
 चरन पठाइ कहां इम चाहत धोंकल सुदि सुनत व्यवधान ॥५६॥
 अवधान^१ व्यवधान^२ अन्त्यानुपासः ॥ १ ॥

लिखि छेद तब धोंकल पठयो लघु गोठनगर अनुचर निज गृह ॥
 तामैं लिपि सोदर उभय^२ हि तुम आहव धीर^१ प्रवीर^२असह ॥
 संध्या रिपु हमरी भुव^१ लौ सब प्रान^२हु लैन चहत अव पाप ॥
 हम खिच्ची १।भाता तुम दुहुँ^६११न दलपति २००।३ देहु सहाय
 दुहाप ॥ ५७ ॥

दल^३ यह बंछि भीर गय दलपति २००।३ जो बलवंत २००।२ सहो
 दर जोध ॥

सन्ध्या सह जनजन मन सालत बालत हुव दुव^२ रवभुव विरोध^३ ॥
 सुदि दुहुँ^२न इक अह सुनि बलसह चपल ज्यानवतीस चलाइ ॥
 स्वल्पहि सुनि परिगह इन्ह संग रु जुंग^२ बंधुहि बेढे तहँ जाइ ५८
 मिलि सम्मुह दलपति २००।३ रन मंडिय भजि निकसन समुक्त
 जस भंग ॥

१उस राघवगढके राजा जयसिंहने आयु बिताकर शरीर छोड़ा, पृथ्वीके कारण
 निश्चय ही उसके धोंकलसिंह नामक पुत्र रगोद बैठा ॥५५॥ वह भी युद्ध में
 पिता जयसिंह के समान, दोलतराव ने सिकंदर आदिको सेनापति रखकर
 दोलतराव ने भी सावधानी धारण की ७हलकारों को भेजकर धोंकलसिंहकी
 गुप्त खबर सुनता था ॥५६॥ ८धोंकलसिंह ने पत्र लिखकर शीघ्र रगोठड़ा नामक
 पुर में भेजा १० तुम हाडाओं के हम भाई हैं इस कारण हे दलपतसिंह ११
 दुर्लभ सहाय दो ॥५७॥ १२यह पत्र पढ़कर १३एक दिन दोनोंकी खबर सुनकर ॥५८॥

पल्लवतसिंहकाशशुकोमारनेकाबचनदेना]अष्टमराशि-चतुर्थमयूष (४१।१)

तुरगारूढ सद्धि भुज तोमर जुज्झत बहुत हने अरि जग ॥

परत तुरग पदाति अभै पन पैढ घरत हयमेध प्रभाव ॥

वारह १२ वीर हने असि वाहत दलित तुरग पच५ धरि दावा५९१

तुष्टत खग कटार गहयो तिम कलह कितेकन बच्छे बिदारि ॥

तिलतिला रन दलपति २००।३ वपु तुष्टिग धोंकल कठिग लरन

पुनि धारि ॥

सोदर बैर इच्छ १ यह सालत बलि जाँमिप तुम अवनि बिहीन ॥

सोपुर लैन १ राधिकादासहिँ दुसहन इनन २ बचन इम दीन ॥६०॥

प्रथम भई सु कही दुर्गापुर भूत १हुमै सु क्या इम भूत १॥

सगर इनन ज्यानवतीसहिँ अनुज बैर बालन अरि ऊत ॥

सद्धि अभीष्ट राधिकादास सु भाम करन सोपुर भूपाज ॥

उभय २ कज्ज बलवत २००।२करन इम क्रिय रहस्य ताप्रति तिहिँ

काल ॥ ६१ ॥

अव वह वत सुमिरि मन अतर डक अहि वसु ससि १८८७ सैम

सकआत ॥

प्रसल्लै ५।१सिसिर ६।२भावी ऋतु खिनपर सोपुरसमरबिचारियवात ॥

मातुल स्वीय सवाई १ लछमन २ जदुकल दुर्ग अमरगढ जस्थ ॥

तिनप्रति इम छंद लिखि सूचिय तुम सब भेदेहु सोपुगढ सत्य ६२

१घोड़े पर बढकर हाथमें भाखा लेकर २घोड़ा मरने पर पैदल होकर ३ अश्वमेध

के ॥५९॥४क्षाती फाड़कर ५एक मो छोटे भाई वलपति सिंह का बैर सालता है,

फिर तम यहिन के पति शुमि बिना हो रहे हो इसकारण सोपुर को लेने और

शुको मारने का पल्लवतसिंह ने राधिकादास को बचन दिया ॥६०॥ ५यह गये

समय में नी गये समय की क्या है ७ छोटे साई का बैर लेने और शुकु को =

५५ रहित करने को ९यहिनेई राधिकादासको सोपुर का राजा करने को ॥१॥

१०विष्णु के शफ का एक सम्बत आने पर आगे आनेवाली ११ हेमन्त और

शिशिर ऋतुके समय १२प्र लिखकर १३सोपुरवालोंको फोड़ो (अपनेमें मिलाओ

सुनि यह तब चितिय जदुबंसिन जिन संहारि दलपति २००१३
जामेय १॥

अतिबलपन दब्बिय छिति २ अप्पन द्रुत अब ब्रास अरिन तिन्हदेय
भनि इम भेजि पिहिते जन भेदन लिय सोपुर भट कतिक लुभाइ ३
इहि अंतर बलवंत २००१२ चहयो इत पट्टनि गमन श्रवन सुभ
पाइ ॥ ६३ ॥

जिहि पहिले विरचहि बहु जंग रु निज प्रभुको दब्बयो हुगनेर १ ॥
जितिलयो बुंदीस वहै जब तिहि बंधिय जिततित बहु बैर ॥
लौ पुर नगर २ अबस पुनि लुटिय चहि व्याकुल किय नागरचाल ३
बिभोली ४ मंडिलगढ ५ बेढत बस न भये तउ चकित बिहाल ६ ४
अलन पर पहुँच्यो असि आरन मंगरोल कोटापति मेल ६ ॥
सत्रु करे चहुँ ४ घाँ भूधन सब खगगन अतुल मचावत खेल ॥
इहि कारन पट्टनि सुनि आवत बलवंत २००१३ हिं मारन चहि बंट १
माधव १ अल रहस्य मिलायउ अंगरेज कलफिल्ड २ अजंट ॥ ६५ ॥
सजि दल पिहिते रुद्ध किय मग सब इक अहि वसु ससि १८८ १
सम सक एस ॥

प्रथित तित १ बाहुल ८ तेरसि १३ पर दिन तीजैशगय गंस्प प्रदेश ॥
करि तहँ न्हान पूजि प्रभु केसव इक आलय पट्टनि बिच आई ॥
अप्प रहयो राकाँनिस आगम ईतर निलय हयगन पठवाइ ॥ ६६ ॥

१६११ भानेज दलपतिसिंह को जिन्होंने मारा है २ छाने ॥ ६३ ॥ ३ नैणवा नगर को
दबाया था ४ उखियारे के प्रान्त को ॥ ६४ ॥ ५ चारों ओर के राजाओं को
शत्रु कर दिये ६ बलवत सिंह को मारकर उसकी भूमिके बट (हिस्से) करना चाहे
कर ७ सलाह मिलाकर ८ अजंट का नाम है ॥ ६५ ॥ ९ छाने सेना सजकर
सब मार्ग रोक दिये १० कार्तिक के तेरसके दिन प्रस्थान करके जाने योग्य स्थान
(पाटन) गये ११ पूर्णिमासी की रात्रिके आगम पर घोड़े के समूह को १२ अन्य
मकान में भेजकर आप (बलवंत सिंह) के सोराय भगवान् के मंदिर में रहा ॥ ६६ ॥

रामसिंहकेकाफायलवतासिंहकामरना] अष्टमराशि-चतुर्थमयूख (४।१५)

देषकरन अनुचर इक निज दल स्वल्प बिच सु मालिक करि संग
बलि माधव साइब बल अतिबल भेजिय करन नाम बल२००भग
रहत मुहूर्त उभय२ खिल राँका बुजनन ताहि लयो गरवाइ ॥
३ लरतरइया स जाम सप्तक ७ लग सोदर १ सुत २ भट ३ सबन
सजाइ ॥ ६७ ॥

प्रतिपद१ रति निँसीथ कढ्यो पुनि पारि कुँडय गृह चरम प्रतीक ॥
जानत कढत ढक पुष्टिष जब उत रुकिय सब मेटि धनीक ॥
सेरसिंह २००।५ अभिधान सहोदर सुत धोंकल २०१।१ फतमख
२०१२ समेत ॥

सैंतालीस४७ प्रमित भट सगर खग्न रमत चले बिच खेत ॥ ६८ ॥
वित्तत बारि पिपाँसा बिकलन जल पित्रों वम्मलि तट जाइ ॥
हुँद सब तिलतिल तरवारिन पुनि रुपि खेत सुजस प्रकटाइ ॥
पानिन तुपक१चाप२असि३पट्टिस४सद्विष सब बलवत२००।२सधीर
पट्टिस फोंकि जवन इक१ जाँठर बिधिसु गिराइ दयो वह बीरा६९।
सोदर अनुज१ उभय२ जेठे सुत अप्प१ तिमहि भटवर्ग४७ असेस
सतकनँ हनि घायल करि सतकन गिद्धसँनाम असँ धरि गूढ ॥

१ काला माधवसिंह और फलकीबड अजदने यलवतसिंह को मारने की पड़ी
सेना भेजी २ पूनम की चार घड़ी रात याकी रहते शत्रुओं ने यलवतसिंह को
घेरालिया ३ सात पहर तक लड़ता रहा ॥ ६७ ॥ ४ पड़िया (एकम) की आधी
रात को ५ घर के पिछड़ी भीत (दीवार) के हिस्से को गिराकर
निकला १ गबनावाले ॥ ६८ ॥ पानी खुद जाने पर ७ प्याससे घबराये
छोगों ने चामल नदी के किनारे जाकर पानी पिया ८ कटारी ९ कटारी
१० एक यवन के पेट में छगाकर मारहाला ॥ ६९ ॥ ११ (४) सैकड़ों को मारकर
१२ गीघा नामक खाकर १३ अपने कंधे पर यलवतसिंह के बालक को लेकर
(४) राजपूताना में प्रसिद्ध है कि नैणया नगर दबा देने आदि विरुद्ध कायों से यलवतसिंह बुन्दी का शत्रु
समझा गया इसकारण रावराजा रामसिंह की सम्मति लेकर बुन्दी के सचिव कृष्णराम घायभाईने काला
माधवसिंह और अजयट साहिन द्वारा यलवतसिंहको दगासे मत्वाहाला।

निकस्यो लौ सु स्वामिकुल १ नाम २ हिं रक्खन सिसु वह जनन
प्ररूढ ॥ ७० ॥

प्रभु कवि जनक रचिय तिहिं रनपर बल २०९।२ विग्रह १ अभि
धान प्रबंध ॥

उद्धत गुंफ वीररस आलय सह बल २००।२ लारन १ मरन २ दंडसंध ॥
प्रकटत सुंदि इम सु बुन्दीपुर सुनि प्रभु अप्प असह किय सोक ॥
आप्लल ठानि दई जलअंजलि अब ऋतु प्रसर्त ५ छयो सबओक ७१
सो बित्तत प्रकटयो सिसिरादगम जहँ प्रभु व्याह प्रथम १ मह जात ॥
घरघर हरख नगर बुन्दी घन बहुजन हुलसत चलन बरात ॥

ससि पन्नग बसु इक १८८१ सूचित सक अविंसद २ फगुन १२
नवमि ९ अनेह ११ ॥

दुवदिस थप्पि लगनकंगर दिय आवन दुलह समय सुभएह ७२
॥ दोहा ॥

इम नवमी ९ फगुन १२ असित २, समै लगन थपि सुद्ध ॥

मचन लग्यो पुर १ देस २ मह, दिसदिस पटह प्रबुद्ध ॥ ७३ ॥

कृष्णाराम १ धात्रेय कुल, सचिव मुख्य सब साज ॥

सज्ज करे समुचित सुमति, करन स्वामि जस काज ॥ ७४ ॥

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणोऽष्टम ८ राशौ राम
सिंहचरित्रे भल्लजालमसिंहसमरस्वसोदरपृथ्वीसिंहमरणापलायित

अपने स्वामी के वंश का नाम रखने को १ वह बुढ़ा छाने निकला ॥ ७० ॥
हे प्रभु रामसिंह २ आपके कवि (सूर्यमल्ल) के पिता चंडीदान ने उस युद्ध
पर उद्धत वीर रसके ४ गुंथे हुए घर रूपी बलविग्रह नामक ३ ग्रन्थ बनाया
जो बलवंतसिंह के लड़ने और मरने की दृढ़ प्रतिज्ञावाला है ६ खबर ७ आपने
भी स्नान करके जलांजलि दी ८ अब सब घरों में हेमंत ऋतु छाई ॥ ७१ ॥
रावराजा रामसिंह के प्रथम विवाह का ९ उत्सव हुआ १० फाल्गुन के कृष्ण
पक्षकी ११ समय १२ पत्र दिये ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टमराशि में, रामसिंहके चरित्र

नाथद्वारगतकोटापतिकिशोरसिंहविष्णुपूजनसमासजन १ नाथद्वार
स्थकिशोरसिंहपादुकाज्ञयाभल्लजालमसिंहकोटाराज्यकार्यकर—
गा २ विजितकाबुलजनपवलवपुरपतिसिखरणजीतसिंहपेसोराविज-
र्यन ३ विजितवमाराप्रागरेजकोटिद्रम्मसहितवैशैकभागग्रहणा ४ को
टासिंहासनसंस्थापितकिशोरसिंहजालमसिंहमरणा ५ किशोरसिंहा
नुजविष्णुसिंहबल्लद्रम्मपट्टपापणाभल्लजमाधवसिंहकोटामहामात्यो
भवन ६ सिंधियाहुलकरकतिपयलघुराज्यहरणसूचनसादितराघव
दुर्गाधिपजयसिंहवीरत्वसूचन ७ बुन्दीपतिरामसिंहपितृव्यबलवत
सिंहपट्टन८ननिधनरामसिंहप्रथमविवाहप्रारम्भसूचन चतुर्थो मयू-
ख ॥ ४ ॥

आदित पदषष्ठ्युत्तरत्रिशततमो मयूख ॥ ३६६ ॥

प्रापो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

(उपदोहा)

१ कोटाके महाराय किशोरसिंह का अपने भाई पृथ्वीसिंह को मरबाकर म्हा-
रा जाखिमसिंह के युद्ध से भागना और नाथद्वारे में विष्णु भगवान् के पूज
में लगकर रहना २ किशोरसिंह के नाथद्वारे रहने के समय किशोरसिंह
ने पादुकाओं से आज्ञा लेकर म्हाजा जाखिमसिंह का कोटाका राज्यकार्य क
ना ३ लाहौर के राजा मल्ल रणजीतसिंह का कापलको विजय किये पीछे
सोरको विजय करना ३ अगरेजों का पर्माकी बलापत को जीतकर कोट
पर्यों के साथ देश का एक भाग लेना ४ महाराय किशोरसिंह को कोटा की
ही पर पीछा पिठाये पीछ म्हाजा जाखिमसिंह का मरना ५ किशोरसिंह के
पटे भाई विष्णुसिंहको बाल रूपोंका पट्टा मिलना और म्हाजा माधवसिंह
को कोटा का मुसाहिब होना ६ सिंधिया और हुलकर का कई छोटे छोटे
जामों के राज्य छीनने की सूचना के साथ राघवगढ के राजा जयसिंह की
मरणा की सूचना करना ७ बुंदीके पति रामसिंह के काका बल्लभतसिंह का
पट्टन के युद्ध में माराजाना और रामसिंह के प्रथम विवाह के प्रारंभ की
सूचना का चौथा मयूख ४ समाप्त हुआ ॥४॥ और आदि से तीन सौ छःसठ
६६ मयूख हुए ॥

हड्डवती भुव सैमइ हुव, अधिपति उपयमै उचित ॥
 निखिल भये उपहार नव, चित जन मन रुचित ॥ १ ॥
 लागि निमंत्रन दिसन लग, द्यौंस१ निस२ न मह दुँरत ॥
 सैह तुमुल भेरिन सतत, फैलि प्रतत जस फुरत ॥ २ ॥

॥ षट्पात् ॥

सचिव भरत बेसर१ न भोर्लि२ सकट३ न सु चित भर ॥
 दिसदिस देस बिदेस व्यावहारिक क्रमि कगर् ॥
 समय अंत सब सुभट होइ हाजरि सुख संधिय ॥
 हुव पूजित हेरंब१ बिहित क्रम कंकन२ बंधिय ॥
 जाजि माइ देव३ भजि तैल४ जव५ फबि बरात जस सर फलिय ॥
 इस अप्प बरस तेरह१३ उदित चित मुदित व्याहन चलिय ॥३॥

(मुक्तादाम)

चढयो प्रभु चैक्र बिशिष्ट बरात, सबै जन कुंकुम चैल सुहात ॥
 करी मदमत चले सह केक, सजे जनु कज्जल अद्रि सटेक ॥४॥
 जथाकुल भद्र१ मृगा२ दिक जात, भरै मद ज्यों भरनाँ गिरिगात ॥
 चलेकतिमकुन१ उद्धत२ याल२, कितेकल भा३ भिधबि४ बिसाल ॥५॥

हाडोती की श्रुति १ उत्सव सहित हुई २ राजा के विवाह के उचित ३ सम्पूर्ण सामग्री नवीन हुई ॥ १ ॥ दिनरात्रि उत्सव में ४ छिपते हैं ५ नौबतों का शब्द निरन्तर भर गया ६ निरन्तर फैलकर यश पुरा ॥२॥ ७ खच्चरों, ८ ऊंटों व छकड़ों पर ९ व्यवहार के पत्र चले १० गणेश का पूजन होकर उचित रीति से कंकन बंधा और माईदेव (मांयां) का पूजन होकर तेलदान चढ़ा ॥ ३ ॥ १२ जानके सहित राजा की ११ सेना चढ़ी वहाँ सब अनुष्य १३ केसरिया रंग के वस्त्रों सहित शोभायमान हुए १४ कितने ही मस्त हाथी साथ चले सो माँयों हठ सहित कञ्चन के पर्वत सज्जित हुए ॥ ४ ॥ जो हाथी भद्र, मृग आदि कुलों में उत्पन्न और पर्वत के भरनों के समान जिनका मद भरता हुआ, जिन हाथियों में कितनेही सुकने (बिना दांतवाले) और कितने ही उद्धत १५ तिरछी घात करनेवाले १६ कितने ही कलभ नामके (बच्चे) १७ कितने ही बड़े बच्चे ॥ ५ ॥

रामासिंहजाजोधपुरविषाएकरनेकोजाना]षष्ठमराशि-पञ्चममयूष (४११६)

महाजव जुथप५ मेगल६ मत्त७, रहै मग इष्ट*वसा८।१ सुख रत्त॥

अपोमप अद्रुक लव लगाड, जरे डगवेरिन जेर न जाड ॥ ६ ॥

गूहे नर मेगलुक भेरत गेल, डिगे डग डाकन चैक चरेल ॥

अपएने घात समुहुर अग, सजे हुव हाटक होदन सग ॥ ७ ॥

महावत बीत घुमावत मत्त, इठी फट कारत भोरन हरथ ॥

पगे कुंथपट१ जरी२ मप पिछि, हवाइन डाकन नोदत निछि ॥ ८ ॥

बहै खग सिंचत जे वमयून, जगे जिन लोचन खून जून ॥

कलापक कठ मिले मखेतूल, मरोरत जाखिन साखिन मूल ॥ ९ ॥

दुन्दतन कौनक वगर बेस, बजे लागि घटन घोर विसेस ॥

तनेतेनुहिगुलु१त्पोहरिताल२ जथाऽवर१गात२न भातजंगाल३१०।

कितने ही पद येगयाल यूपपति, कितने ही मदकल (मद में कलेहुए) कितने ही सामान्य मस्त ० कितने ही लाथी मार्ग में हथिनियों के सुख में प्रसन्न रहने वाले अर्थात् आगे एगरी होने से मार्ग में चलनेवाले जो १ छोटे की लमी ज जीरा में जड़े हैं तो भी पथे नहीं होने के समान जाते हैं ॥ १ ॥ जिनके पीछे १ आगे जिसे दृष्ट मनुष्य प्रेरणा करते हैं और १ क्रोध दितानेवाले छोटे घायल जाते हैं तब वे निडरनेवाले लाथी क्रोध करके आगे पैड (पग) देते हैं १ मनुष्य के सामान्य की घात से २ अग को बटाकर सुप्य के दोनों के साथ मज्जित हुए ॥ ० ॥ १ मगपत के हजने (पगों की ठोकर देकर प्रेरणा करने) से मस्त का दिखाने हैं और वे टठी ४ गुड मस्तक के भ्रमों को फटकारते हैं जिन पर रेसम की और जरी की ५ मूल पड़ा है वे हवाइया (वारुद के अग्निपत्रों) से और लखकारों से फठिनाई से १ प्रेरणा कियेजाते हैं ॥ ८ ॥ जो लाथी ७ सुडके जलकणों से बहते हुए पक्षियों को सींचते हैं और जिनके नेत्रों में ८ क्रोध का रून जगता है "कारसी भावा में जून का अर्थ पावलापन परन्तु पहा लाकरुदी से क्रोधके अर्थ में प्रयोग किया है" कठों में १० रेसम के ० कलाय लगे हुए हैं और ११ वृद्ध को मरोड़तेजाते हैं ॥ ६ ॥ दोनों दतों में १२ सुप्य के उत्तम पगड़ लगे हैं और घटाओं का विशेष चन्द होकर बजती हैं १३ जिनके शरीर पर दिगल और हरताल फैलायेहुए हैं और इसी प्रकार अन्य शरीरों पर जगाल १४ शोभित है ॥ १० ॥

उठावत पोगर दान अमान, पटावत पच्छिन लैन प्रमान ॥
 बढे अंग उच्छ्रय मेचक बर्णा, करै चल सुप्प समाकृति कर्णा ॥११॥
 अगहंग बानि बले अतिकाय, चले इम सामेज १ कामज चाय ॥
 खरे रचि राजिय बाजिय २ खेल, मलंगत ताजिय २ राजिय मेल १
 भये भुव बालिहर्क २ कच्छ ३ बनायु ४, सअव ५ इरान ६ हिरातज सायु
 तुखार ८ इराक ९ रु तिब्बत १० चीन ११, किते धट १२ कच्छ १३ रु
 बंग १४ कुलीन ॥ १३ ॥

किते सित १ नील २ हंलाह ३ कुंलाह ४, सुनावत सादिन ओरन बाइ ॥
 नचै बजि प्रोथेन आनिल नाद, बढै गति पंचक ५ अंचक बाद १४
 लसै छबि चम्मर डम्मर लूम, घलै कर मंडत घुम्मर घूम ॥
 घनै रय ठहै न कंसा अवघात, भरै खुरतारन अग्नि अंलात ॥१५॥
 समीर करै जिनतै अनुसारै, परै उडि पानि पचीस २५ न पार ॥

अमाप मदमें १ शुद्धके अग्रभागको उठाते हैं सो मानों उसको पक्षियोंको लेने
 को भेजते हैं २ बे काले वर्ण के ऊँचे पर्वत ३ छाजलेकी आकृतिके कानोंको चपल
 करके बढे ॥११॥ वे बढे शरीरवाले हाथी महावत और सांढमारों की ४ अगहंग
 बाणी से फिरे “यह हाथी को बढाने का सांकेतिक शब्द है” ५ इस प्रकार के
 हाथी कामना की चाह से चले, उधर खेल करते हुए घोड़ों की ६ पंक्ति खड़ी
 हुई और ७ झुदते हुए घोड़ों का उस पंक्ति से मिलाप हुआ ॥ १२ ॥ ८ बा-
 लिहक शब्द से लेकर बंग शब्द पर्यन्त देशों के नाम हैं जिनमें उत्पन्न हुए घोड़े
 ॥ १३ ॥ कितने ही स्वेत, नीले, ९ अवलख १० कुछ पीछे रंग और काले
 घुटनोंवाले जो दूसरों से ११ सवारों को प्रशंसा सुनानेवाले १२ नचते हुए घोड़ों
 के छुरखों (नासिका) में १३ पवन का शब्द होता है सो मानो घोड़ों की पांचों
 गतियों में बढने का १४ पवन से वाद करते हैं ॥ १४ ॥ जिनका बालछा (पूंछ)
 चमर के १५ आडम्बर से शोभा देता है सो घूमर में घूमकर हाथ में लिये चमर
 के समान रचता है, बढे वेग के कारण जिन पर १६ चावुक का प्रहार नहीं हो स-
 कता और खुरतालों से १७ धूम रहित अग्नि गिरती है ॥ १५ ॥ १८ पवन भी
 जिनके पीछे ही चलता है घरावरी नहीं कर सकता क्योंकि जब ये घोड़े उडते

सजे कसि खध ऋकवी मुख सञ्च, नचै पप चातुरि पातुरि नञ्च १६
 तुल्ले समभाग कुसा मखतूल, फवै गल्ल चोसर हाटक फूल ॥
 खरे मुख भापस पक्क खलीन, जरे जरजाल्ल बिराजत जीन ॥ १७ ॥
 वनी पप नाल ठनी गजवेल्ल, खनकत नेउर तडव खेल ॥
 गुये घन घुम्म उडे गजगाइ, वनेँ स्वरगच्युत गग प्रवाह ॥ १८ ॥
 किते अडिपेचै पटी रंगति ३ काव ४, फिरै पट्ट आदस फूल ५ फिराव ॥
 भुगगन साव १ सेटा तति २ भास, करै मनि १ ज्यो मनि गुफ २ प्र-
 कास ॥ १९ ॥

लसे वपु बोधि २ तैर छद १ लोल, कनी निप कै २ रगनिका दगगोल
 कर छवि नोक कडे जुग २ कर्ण, प्रदीप सिखा १ किं २ केतक पर्ण २
 ध्रमेय तरंगति निम्न अलीक, भुलावत जे सिबिका भरि भीक ॥

६ तो पवन २ वास दाध आग जागड़ने हैं, जिनके कपे कसकर सजे हुए और
 मुखा में ४ लगाम के छय और पगोंका पतुराई से पातुर (बेरपा) के समान
 नाचनेवाले १ रमय की पाग ४ परापर से जुले हुए जिनके गले में १
 सुवर्ण के कृष्ण की चोन्ने शोभा देती हैं, जिनके सचे मुख में पक्के
 २ लाले की लगाम और जरी की जाखीयाळे जीनों से शोभायमान ॥ १७ ॥
 गजवेल्ल (लोहा विशेष) की घनी हुई पगों में नालें लगी हुई और १ नाचने में
 नेवर मजते हुए, जिनमें पट्ट घुम्ने में गुंथे हुए गजगाय रहते हैं सो मानों
 स्वर्ण में ४ गिरती हुई गंगाका प्रवाह है ॥ १८ ॥ कितने ही ५ नागपेच, पटी
 (शीघ्रदाढ़), सर्पट तथा समान सीधी दाढ़, कावा (गोलकुण्डा) ७ फूल आदस
 (घीरी दाढ़) में पतुराई से फिरते हैं ८ मणों के पथों की भांति ९ केसवाली
 शोभा देती है और कम केसवाली में १० गुथी हुई मणिया हैं सो ही सर्प की
 मणिका प्रकाश करती हैं ॥ १९ ॥ जिनके शरीर चपलता में ११ पीपल के
 पत्ते के समान शोभा देते हैं १२ किना गणिकाके नेत्रों के गोलेकी पुतली के
 समान हैं, दोनों कानों की कटी हुई नोक दीपक की शिखाकी १३ किना
 केतकी के पत्ते की शोभा करते हैं ॥ २० ॥ १४ शीघ्रता की गति में अमाप १५
 गहरा छलाट (पैठा हुआ तथा) जो बहीर भरकर १६ पाखली को मुखावेवाळे

महामृदु लोम जथा पसमीन, बैटा नटके जिम अंप प्रवीन ॥२१॥
 अटै भुकि बक्र हयच्छट अच्छ, मुँरै छक बिजक ज्यौं दक मच्छ
 किधौं सफ १ आयस काँत कटोर, उडै अति अंबर जुबन जोर २२
 थरकहिँ अकहिँ संभ्रम थपि, बहै सुख बग्गहिँ मग्गहिँ मपि ॥
 जवाधिक रंध्य किते जुग जुत, मनोरय पानिय १ पावक २ पुत्त ३
 सुहात चले इम अंब २ समूह, जथा सुख मंद न स्यंदन ३ जूह ॥
 बैरपधि १ नाभि २ सँकूबर ३ चक्र ४, बनेँ जुग ५ चंदन संभव बक्र २४
 प्रभाकर जे जर जाल पिर्नद, बहै छुर उँडुर ६ रेसम बद्ध ॥
 लगे अनुकर्ष ७ बैरूथ ८ विधेय, रजे पथ यौ रथ ३ १ गो रथ ३ २ गेय २ ५
 चली बहुधासिबिका ३ १ सुखपाल ३ २ चले बहु भोलि १ बजावत गाल
 क्रमें सह जन्य ४ सु धन्य कुलीन, हजारन दान १ कृपान २ न हीन ३ ६
 और पसमीना के समान बडे कोमल १ केशवाले २ नटके पडे [छोकर] के
 समान कूदने में चतुर ॥ २१ ॥ उत्तम भुकेहुए टेढे ३ कन्धे से फिरते हैं
 और छक को ४ जनानेवाले ५ जल में मच्छी के समान पलटते हैं किना
 उँडुर लोहेवाले कटोरों रुपी ६ खुरों से यौवन के जोर से आकाश की तरफ
 उडते हैं ॥ २२ ॥ ८ सूर्य को भ्रम कराकर ठहरते हैं और बागों में मार्ग को
 मापकर चलते हैं ९ अधिक वेगवाले कितने ही दो दो घोड़े १० रथों में जुते
 सो मानों वेग में जल और अग्नि के पुत्र हैं ॥ २३ ॥ इस प्रकार ११ घोड़ों के
 समूह शोभित होकर चले और तिसी प्रकार बडे मुखवाले १२ रथों के समूह
 चले जिनके उत्तम १३ पूठियेँ, नाही और १४ पीनणी सहित १५ पहिये हैं
 १६ चंदन के बनेहुए जूवे (जूड़े) ॥ २४ ॥ १७ कान्ति करनेवाली जरीकी जालियों
 [खोलियों] से १८ बंधे हुए, १९ रथ का अग्रभाग और जूवा रेसम की रस्सी से
 बंधे हुए, जिनमें उचित २० अदण [रथके नीचे का आधार भूत काष्ठ] और २१
 रथ कवच (शत्रु के शस्त्रों से बचानेवाली लोहे की जालीयुक्त ग्वोली) लगेहुए
 इस प्रकार के रथ मार्ग में शोभायमान हुए और कहेहुए २२ बैलों के रथ
 भी चले ॥ २५ ॥ बहुतसी पालखियेँ और सुखपालें भी चलीं और २३ बहुत
 ऊट गाछ बजानेहुए चले और धन्यता योग्य कुलवान हजारों जानेती (बराती)
 साथ चले जो तरवारों से और दान से २४ क्षीण हैं ॥ २६ ॥ और ज्योतिवाले

भरै नग भूखन जोति जराय, कसैं सब हेति गिनैं तन काय ॥
 भले भुज१ हत्थिन ठिल्लनहार२, अहो कर१ आसुग२ पाय१ पहार२७
 नहार१ पहार२ अत्यानुपास ॥१॥

कहै अमृत तूटिपरो किन सीस, निहारत ईक१ वकारत बीस२० ॥
 सजे कछवाह१ कमधज२ सत्य, तृना१ हित तार२ देव जादव३ तथ्य२८
 मिले बडगुज्जर४ झल्ल५ प्रमार६, हिले गहिलोत७ तथा प्रतिहार८॥
 उमगत चालुक९ के चहुवान१०, स जावत११ सैगर१२ बैस १३
 सुजान ॥ २९ ॥

वली धनुउत्कट१४ गोर१५ रु बिंद१६, महारन सत्रु गइद मैइद ॥
 रमै खुग्ली पटु सद्धि कृपान, बढे धिन वेधत के नभवान२ ॥३०॥
 लहै कति लच्छय तुपक३ न तकि, छजै कति कुत४ न सगि५ न छकि
 कटार६ गदा७ इलिका८ छुरिकादि, बढे रमते इम सखन वादि३१
 चले झपटावत बाजि नचाप, किते उडि लंघत हत्थिन काय ॥
 टरै झपटावत है पलटाइ, जैधी कति हत्थिनपै कढिजाइ ॥३२॥
 सजे इम सूर चले प्रभु सग, वन्धो वर भूवर ओप अनग ॥
 मजी सिर कुंकुम पुजित पगघ१, नव९ पैह गो५ सिखपट्ट२ अनगघ३३
 महामनि पच५ सिखी तिम मोर३, जरयो तूररा४१ रु किलगि५१२
 य जोर ॥

नगों के जड़ेष्टुष्टु रूपणा से भरेष्टुष्टु १ सय शस्त्रोंको फसेष्टुष्टु २ शरीर को वृक्ष के
 समान जाननेवाले और वत्तम भुजांसे हाथियों को हटानेवाले ३ आश्चर्य कराने
 वाले पयन के समान सीधता करनेवाले हाथ और पर्यंत के समान अपक्ष ४
 चरणावाले ॥ २७ ॥ ५ सत्य ही कहते हैं ६ अकेले होने पर भी बीसों शत्रुओं
 को छलकारनेवाले ७ मृण रूपी शत्रुओं को खजानेवाला अग्नि रूपी ॥ २८ ॥ २९ ॥
 चपापोत्कट [चापड़ा] ये सय चात्रियों के चणोंके नाम हैं पक्षे युद्ध में शत्रु रूपी
 हाथियों के ९ सिंह १० पायों से आकाश में पक्षियों को घेन करनेवाले
 ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ कितने ही घेगवाले ॥ ३२ ॥ ३२ भूपति ३३ फेसर के रंग की
 पाय ३४ नय रत्ना का जड़ाहुआ पाच कलंगीका ३५ अमूल्य शिरपेच ॥ ३१ ॥

लगी मृगनाभि त्रि३ रेख६ ललाट, लसैं श्रुति२ कुंडल२।७ भल्ल
तलाट ॥ ३४ ॥

हसैं मनि पंच५ प्रपंचक द्वार८, दिपैं भुज२ अंगद२।९ ओज अपार
वन मनिबंध२ अनर्घ अवाप२।१०, छजैं करसाख १० मंहोर्मिक१
छाप ॥ ३५ ॥

रह्यो फवि कंचुक१२ जांगुडरंग, सटी सैमलंक कस्यो अधिकंग१३
धरयो सित१सानधुप्यो ईक१धार, कस्यो निज पतनजात कटार३६
बन्यो वर खेटक१६ पिठि विसाल, मनो कनकाचलपैं धनमाल ॥
सु शृंखल२।१७ सोहिरे गोहिर२ संग, अलंकृत१८ अंगिर२नं अंगु
लि१० अंग ॥ ३७ ॥

छयो मनिमंडित दंडित छल१९, प्रबीजित चामर२।२० बहैं२।२१ पतल
चल्यो बनि रूच्य इभेद्र अरोहि, सु ज्यो सतसलैं धनद्विपैं सोहि ३८
समै सिसिरोदतर पकृत सैर्य, तैपा११गत कैलप र गन्ध तंपर्य१२॥
नकीवन संकुल लागि ललक, चल्यो इस राम२०१।४ धराधवचक्र

१कस्तूरी २कानों में कुडल ३गालों के नीचे तरु ॥ ३४ ॥ ४ भुजबन्ध ५पूँचें ६कड़े
(कंकण) ७अंगुलियोंमें दबड़ी अंगूठियां ॥ ३५ ॥ १०केशर के रंग का रज्जु (बाजा)
शोभायमान होरहा है ११सिंहके जैसी कमर पर "सदा विद्यते यश्च ल नदी"
१२कमरबंधा बांधा साण से घिसाहुआ ताड़ण १३खांडा (खड्ग विशेष) धारण
किया १४ अपने पुर (बुद्धि) का बनाहुआ कटार बांधा ॥ ३६ ॥ १५ सुंदर बड़ी
ढाल बांधी सो मानों १६ सुमेरु पर्वत पर मेघमाला है १७पगों के गिरियों पर
१८सुन्दर पगसांकले १९ सुवर्ण के लंगर शोभित हैं २० चरणों की दस ही
अंगुलियां भूषण युक्त हैं ॥ ३७ ॥ चमर २२ओरछलों से २१पवन होता हुआ, बड़े
हाथी पर सवार होकर २३ दुल्लह चला सो मानों २४ इन्द्र २५ ऐरावत पर
सवार होकर शोभा युक्त हुआ ॥ ३८ ॥ २६शिखिर ऋतु के उतरते २७ खेती के
पकते २८ माघ मास के उतरते और गमन करने योग्य ३० फाल्गुन मास के
२९समय छड़ीदारों से ३१भरीहुई ललक लग कर इसप्रकार ३२भूपति रामसिंह

दिसा१ विदिसा२न निसानन नद, वजे सिर भेरिन कोन विहद ॥
दुर्घा१दल अगग१रु पिठिरदिपात, वनेँ अति ओपन तोपन ज्ञात ४०
बटीनैट१भंड२नटी३बंहरूप४, भये गन गैल रिभावन भूप ॥
अधीमहु दै तिन्ह इष्ट अच्छेह, महा वंसु बिंदुन सुदृत मेह ॥४१॥

॥ पट्टपात् ॥

प्रतिमुकाम क्रम प्रचुर सुकवि पडित सनमानिय ॥
सह वरात मह सुलह दिपत प्रस्थित तह दानिय ॥
पेणव१ स दुदुभि२ पटह३ मुरज४ ढक्का५ गोमुख६ मुख ॥
टुहिते१ हेसा२ विविध तुमुल घन तनिँत रनिन रुख ॥
रुचि भाग राग गायक रचत मनत वदि भोगीवलिय ॥
मोरीच हिरद आतहि महिप चतुर रूच्य व्याहन चलिय ४२
फुट्टि फुट्टि हय खुरन गिरिन पाखान गरद मिलि ॥
छुट्टि छुट्टि छितिसधि सिथिल भोगीसँ सीस मिलि ॥
तुट्टि तुट्टि तरु दुगम पृथुल पँदति हुव पदर ॥
कुट्टि कुट्टि वैत वज्ज कोन गत गज्ज दिगतर ॥
वित्थरि वखाँन जस दिस१विदिस२विदिस बत्त हुव नर नरन
बुदीस विंद पहु जोधपुर क्रमत अज्ज उँपयम करन ॥४३॥

की सना चली ॥ ३९ ॥ १ नगरों का शब्द २ नौयतों के ऊपर बेहद ३
ढके [ढाके] यजे ४ तोपों का समूह ॥ ४० ॥ ५ नट विशेष ६ भाट ७ स्याग
जानेवाला ये सब नटों के भेद हैं ८ बड़े घन की बुद्धों से ॥ ४१ ॥ ९ यद्युत
१० ये सब पाशों के भेद हैं ११ आदि १२ हाथियों की गर्जना १३ घोड़ों का
होसना १४ मेघ गर्जना के समान १५ भाट लोग स्तुति करते हैं १६ पाटधी
(राजा की सवारी के) हाथी के होवे पर आते ही ॥ ४२ ॥ १७ शेष नाग १८ सीमे
मार्ग होगये १९ छातों से कूट कूट कर नौयतों का यजना और हाथियों की
गर्जना दिशाओं में गई २० दिशा दिशाओं में यश के वात्साय [व्याख्यान]
होकर, २१ विषाह करने को जोधपुर के राजा के घर जाता है ॥ ४३ ॥

गजन फरकि बैहरक थरकि गन गगन विराजत ॥
 छोनी बैमथुन छिरकि भर कि भद्व घन साजत ॥
 बरकि दह बाराह तरकि फनमाल नाग ईन ॥
 धरकि धरकि भय धुज्जि दरकि उर असह अरातिन ॥
 गढ गढन संक अंतर उपजि करत मंत मंत्रिन कतिक ॥
 कुलरीति गीति हड्डन कहत समिति १ व्याह २ उच्छाह इक १॥४४॥
 गरद अक अच्छदिय सरद घन जरद सोम जिम ॥
 तोम गगन तोमरन प्रंदर पुंखन कलाप तिम ॥
 भजत भजत बनजंतु कटक अंतर थकि छुटत ॥
 कति कमनैतन करन सरन विकिरन वपु फुटत ॥
 इभ पिठि अप्प बिरुदन सुनत भनत दैन रंकन विभव ॥
 सुरनाह राह अतिछबि अटत रटत जलेब नकीव १॥४५॥
 उलटि उलटि दल ओट पवन मंडत प्रत्यागम ॥
 सुगम हरोल १न सलिल दुगम चंदोल १न कंदम २ ॥
 आसपास शहि चांस त्रास मेवासन पत्तिय ॥
 हेतुन हास हुलास बास सेतुन गुन बत्तिय ॥

१ हाथियों पर २ ध्वजाओंके समूह उड़कर ३ हाथियोंकी शृंङ्खले जलकणोंमें भूमि छिड़की जाती है सो मानों भादवाका झड़ सजता है ४ शेष नागके फणोंकी माला झुकती है ५ शत्रुओंके हृदय फटकर ६ युद्धका और विवाह का उत्सव एकसा ही होता है ॥४४॥ जैसे शरद ऋतुके वहल दचन्द्रमाको जड़ देवे तैसे रजने ७ सूर्यको ढक दिया और जैसे १ ० वाणों के पंखों से भाथा भरजाता है तैसे भालों के १ समूह से आकाश भर गया ११ वाणों से पत्तियों के शरीर फूटते हैं १२ हन्द्र के मार्ग से १३ नकीव शब्द करते हैं ॥ ४५ ॥ १४ सेना की ओट से १५ उलटा गमन करता है १६ सेना के पिछले भाग को कीचड़ मिलता है १७ इस खबर से १८ लुटेरों और चोरों के घरों में त्रास पहुंची १९ मित्रों को प्रसन्नता पूर्वक हास्य होता है और रामसिंह के गुणों की वार्ता का वास २० मर्यादा पर्यंत होता है अर्थात् भूमि की मर्यादा (सीमा) समुद्र है वहां तक गुणों की वार्ता होती है.

सुनि धन्य धन्य सूचक सुजस जन्य जनन अति मोद इत॥
प्रति ग्राम गाम वधत कलस धाम धाम मगल महित॥४६॥

भागधेय भौमिकन निकर लौलै प्रताप नत ॥

उपहित अंजलि आत नात सिर भेट निवेदत ॥

कहत नाथ किंकरन पूत करि ओर्देन१ पानिय२ ॥

मंडहु उचित मुकाम मशि स्वीकृत महमानिय ॥

विसवासि मिष्ट वेनन वरहु मन्त्री हम सूचत मुदित ॥

मगजाल जुगत आवरि मनुज होत निछावरि परम दित॥४७॥

॥ दोहा ॥

प्रतिमुकाम सचिवन प्रकर, गोनिन रूपय१ गेरि ॥

पटर भूखन३ हय४ मय५ प्रचुर, हाजरि रक्खत हेरि ॥४८॥

जहँ मिश्रन प्रभुकवि जनक, चारन मनि कवि चढ ॥४९॥

भट्ट रतन२ वटत भये, ए दुव२ त्याग अखड ॥ ४९ ॥

इच्छित धन इम कविकुलन, मिलत मुकाम मुकाम ॥

सुनत त्याग जस सक्रमिय, कूँचप मुकुटप्रभुराम२०१॥४५०॥

॥ घनाक्षरी ॥

प्रथम१ पगारां१ दिय देवली२ मुकाम दूजो२,

केकरी३ तृतीय३ सरवार४ चौथो४ जसकाम ॥

गमसर५ श्रीनग६ कावरि७ यौं बीच रहि,

१ पूजनीय तथा यहा मगल होता है ॥४६॥ प्रताप से नम्र होकर भौमियों के समूह २ हासिल (गिराज) खेलेकर आते हैं और ३ हाथ जोड़कर (अंजलि सहित) मस्तक नमस्कार नजर करते हैं ५ अन्न जल ४ पाषाण करके मनुष्यों के समूह की ६ आवलि (पक्ति) जुड़कर ॥ ४७ ॥ ७ गोशियों में रुपयोंका समूह बाणकर ८ ऊट ॥ ४८ ॥ हे प्रभु रामसिंह आपके कवि सूर्यमल्ल के पिता ९ शिषाण शाखा का चारण खड़ीवान ॥ ४९ ॥ १० चले ११ दुलहों के मुखद रामसिंह का यश सुनकर ॥ ५० ॥

अष्टम८ सु पुष्कर८ भो न्दंन दान अभिराम ॥
 अल्हनादिआवास९ रु मेरता१० निबसि ऐंसें,
 बोरुंदा११ पीपाड़१२नैर बीसलपुर१३स नाम ॥
 अध्व इम खंधावारै तेरह१३ विरचि आप,
 धन्यता धुरंधर निरायो नृप मान धाम ॥ ५१ ॥

॥ पट्टपात् ॥

किय मग बिच कासोर इक्क १ रानिय सेखाउति ॥
 आवन सम्मुह अवधि सौंहि निश्चित उक्ति १ रु श्रुति २ ॥
 अब तासों बढि अधिक पैड संख्या असीति८० पर ॥
 समुह आइ नृप स्वसुर मिल्यो मान सु बसुधावर ॥
 नालकी जान आरूढ नृप जुगर हि कुलक्रम रीति जिम ॥
 विरचित बिधेय मोदित मिलि रु आये गम्प निकेत इम ५२
 ॥ सौराष्ट्री दोहा ॥

प्रथित जोधपुर पास, राईको उपवनं रहत ॥
 नृप बल जन्य निवास, किय तिहिं सिबिर प्रबंधकरि ॥ ५३ ॥
 मइलन गो नृप मान, सिक्ख बहुरि करि मग्गसन ॥
 अंबेरघर चहुवान, ठहै कृत दान प्रविष्ट हुब ॥ ५४ ॥
 मिले स्वसुर १ जामातै २, सूचित क्रम जवतै सरनि ॥
 तबतै द्विगुन दिपात, जर भर बुधो इंद्र जिम ॥ ५५ ॥
 महुर १ द्रम्म अति मान, ऐसे बिधि नभ उच्छलिय ॥

१ सुंदर २ आल्हण्यावास ३ इसप्रकार मार्ग में तेरह सुकाम करके ४ राजा
 मानसिंह के धाम ४ राजधानी (जोधपुर) को समीप ली ॥ ५१ ॥ ६ तब
 ७ निश्चय ही कही और सुनी है ८ उचित रीति करके ९ जहां जाना था
 वहां आगये ॥ ५२ ॥ १० बाग ११ राजाकी सेना और जान के लिये डेरों का
 प्रबंध किया था वहां निवास किया ॥ ५३ ॥ १२मार्ग में से १३ डेरों में ॥ ५४ ॥
 १४जमाई १५ मार्ग में ॥ ५५ ॥

देखि पिहिते जिम दान, कर लिय भेलि अजाचकहु ५६॥

इत सध्यादिक अग, नित्य क्रियाके विरचि नृप ॥

पावत समय प्रसंग, सज्ज भयो पुर सक्रमन ॥ ५७ ॥

भरि जो लग अति भीर, रुच्य सदन बाहिर रही ॥

पाई सकट पीर, जिम तरउप्पर लब्ध जन ॥ ५८ ॥

इम मारीच अरोहि, पहु सज्जित अव समय पर ॥

मनमन जनजन मोहि, चल्पो विवाहन लग्न चहि ॥ ५९ ॥

जत्य रिक्तावन जानि, सामग्री समुचित सहित ॥

अभिमुख महिय आनि, नटन गानर पातुरि निकर ॥ ६० ॥

पदपात-पृथुल दारु पट्टिरिय कमन चित्रित लिपिकारिन ॥

असे नरन यित अटन नञ्च उप्पर पननारिन ॥

तैंढेव पट्ट वय तरुन भोक रागन सुम्मावत ॥

चडातकें चल चरन घेर घुम्पर घुम्मावत ॥

श्रुति१ जाति२ ताल३ बादन४ कुसल मोहित तत गीतन सुमति ॥

आरोह ग्राम अतिम३ अवधि ग्राम प्रथम१ अवरोह गति६१

१ सुतदान२ पाचना नहीं करनेवाला ने भी खेलिया ॥५१॥५७॥ बहुलह के घेरे से बाहर ॥ ५८ ॥ ४ राजा की मुख्य सचारी के साथी का नाम मारीच है जिस पर चढ़कर ॥ ५९ ॥ ५ मनुष्य आकर १ पातुरियों के समूह ने ॥ ६० ॥ ८ काष्ठ की

७ बड़ी पट्टी (तल्लते) १० चित्तों की १ सुदूर विग्राम की हुई ११ मनुष्यों के कर्णों पर चलती है उस पर १२ वेश्या का नाच हुआ १३ वृत्त करने में च

तुग और तरुण वेश्या भोक के साथ राग को झुकाकर चपल चरणों से घूमर में १४ लहंगे के घेर को घुमाने लगी और ताला से लेकर छोहनी पर्यन्त तक

के १५ स्वरों के पाईसों ही भेदों में राग की जाति ताल और बाध बजाने में कुशल वह वेश्या अतिम ग्राम तक आरोह करके प्रथम ग्राम पर उतारने लगी

[सात स्वरोंमें पञ्चम, मध्यम और गान्धार, ये तीन ग्राम हैं यथा—“पञ्चमग्रा-मो भवेदादौ मध्यमग्राम एव च । गान्धारग्राम इत्येतद्ग्रामत्रयमुदाहृतम् ॥”

इनमें मतान्तर से गान्धार के स्थान में पञ्चम को भी ग्राम मानते हैं] ॥ ६१ ॥

घुरि नेउरि घंटकिन अमकि सिंजित अहनावत ॥
 विधि क्रम ताल बढाइ बहुरि प्रतिलोम बनावत ॥
 मिलि संक्रम मुच्छनन मोद निकसंत नाद मय ॥
 कंदुक१ अहि२ गति क्रमन चढत उतरत अलाप चय ॥
 आनद१ बितत२ बादन उचित मादन मुदित नरेस मन ॥
 बसि बास आइ सायकबिसम निज निवास गावन१नटन६२
 ॥ नाराच ॥

तहाँ अलाप जाल बाल रुद्रतालतैं तन्यौं ॥
 अदोस घोसैं तोस पोस मालकोस२ उफ्न्यौं ॥
 भुजंग जाइ ज्यौं धुनाइ उँद छाइ थंभयो ॥

नूपुरों की १ घूघरियें बजकर २ भूषणों का शब्द हुआ, विधि पूर्वक क्रम से ताल को दुहरी, तिहरी, चोहरी यथाशक्ति बढाकर फिर चोहरी, तिहरी, दुहरी इस क्रम से प्रतिलोम बनाने लगी, जिसके स्मूर्तना पर मिलकर चलने से शब्दमय मोद निकलता है "सप्त स्वरों में उत्तर मद्रा से लेकर व्याला पर्यन्त इक्कीस स्मूर्तना हैं" अलापका ४समूह कंदुक और अहिगतिसे चलकर चढता है, उतरता है अर्थात् गैद की गति से आरोह, स्थिति और अवरोह, तथा अहि-गति से आरोह, स्थिति और अवरोह करती है; तहाँ ५चर्म से मढे हुए (मृदंग आदि) बाद्य विस्तृत होकर तांत के बाद्य (सारंगी आदि) बदित हुए जिन ६ मदन (कामदेव) सम्बन्धी कायों से राजा का मन प्रसन्न हुआ और ७ विषम सायक(कामदेव)ने नृत्य और गान रूपी अपने निवास के स्थानों में बास किया ॥ ६२ ॥ वहाँ पर उस नायिका ने अलापों के ८ समूह रुद्र ताल से उस राग को फैलाया "रुद्र ताल का यह लक्षण है कि जिसमें छठा ताल समेपर होवे और आगे के पांच ताल विषम होवें, जिनके आगे के पांच स्थान शून्य होवें फिर पांच ताल विषम होवें इस क्रम से ग्यारह ताल होवें उसको रुद्रताल कहते हैं" यह १०निर्दोष शब्दवाला और सन्तोष के साथ पोषण किया हुआ मालकोश नामक राग बढा "मालकोश राग की ऋतु शिशिर है और विषाद भी शिशिर ऋतुमें ही हुआ इसकारण मालकोश राग का ही वर्णन किया है" भुजंग की स्त्री [नागिनी] जावे जैसे जाकर, धुजाकर ११ ऊपर छाकर दहराया

पिकारवा पैप टारि उच्चर्यो छ६ में अचमयो ॥ ६३ ॥
 वढाइ मजु मुच्छनौ मिलाप माप बिधरयो ॥
 अधीन ग्राम तीन३ पीन डक्क१ डक्क१ उद्धरयो ॥
 भनकि जत्र तत्र गोन झारि कोन झमटै ॥
 अलीन आवलीन लीन मीनकेतु उप्पटै ॥ ६४ ॥
 स१ रे२ ग३ मे४ ध५६ ने६७ निवेस छक्क६ छक्क संचरयो ॥
 पकार१ दीन भो प्रखीन पंतिदीन ज्यो परयो ॥
 स्वरच्छटाऽनुलोम१ ठै बिलोम२ तान सकरी ॥
 मिंदा अपोह सोदनी समस्त मोहनी मरी ॥ ६५ ॥
 स्वलोकघाँ दिपात छान जात राग श्रेणिका ॥

कोयल के समान शब्द करनेवाली उस बेरया ने १ पचम स्वर को टोल [छोड़]
 कर पाकी के छ' स्वरों में उच्चारण किया [मालकोश राग छ' स्वरोंवाला
 ही है] यह अवभा [आश्चर्य] है क्योंकि "कोकिलो रौति पचमम्"
 कोयल पचम स्वर में बोलती है तो पिकारवा अर्थात् पिके के समान आरव
 (शब्द)वाली पचम स्वरको छोड़कर गई यही आश्चर्य है और मालकोश राग
 में पचम स्वर नहीं है ॥ ६३ ॥ २ सुन्दर मूर्छना मिलाकर उनके मिलाप से राग
 के मापको कैलाया, एक एक स्वर के साथ तीन तीन ग्राम हैं सा निकाले और
 ३ कोय (नजराय) से तार। को झजटे वह सखियों की ४ पक्ति में अन्नर्गत
 होकर ५ कामदेव बहा ॥ ६४ ॥ संगीत शास्त्र में स पञ्च, रे ऋषभ, ग गाधार,
 में मध्यम, प पञ्चम, ध धैवत, नी निषाद, ये सात ही स्वरों की सज्ञा है जिन
 में पञ्चम को छोड़कर पाकी के छहों रागों का छठे राग [मालकोश] में प्रवेश
 करके चला, बहा ६ पञ्चम स्वर दीन और अत्यन्त खीन होकर पक्ति पाहर
 होवे तैसे पड़ा रहा और स्वरकी शोभा अनुलोम और बिलोम तानों से बड़ी
 ७ अपोहनी नाम से शोभा देनेवाली अथवा अपोहनी आदि भेदों से शोभा
 देनेवाली सपको उस मोहनी (नायिका) ने भर दी ॥ ६५ ॥ रागों की
 पक्ति है सो ८ अपने लोक [गन्धर्व लोक] की और शोभा देती जाती है
 और तानों ग्रामों की रेख तथा मत्र, मध्य, तार, इन तीनों स्वर भेद की रेख

त्रिक३ प्ररोह रेल तीन३ मेलज्यों त्रि३ बेणिका ॥
 घुरंत पाय घुम्मरी घमंकि घोर घंटिका ॥
 उंपंग१ चंग२ के बजै सृदंग३ अंग अंटिका ॥ ६६ ॥
 तथुंग थुंग तत्त थेइ थेइ लेइ तालपै ॥
 क्रमै मतानु चुल्लि मान पै बिधान कालपै ॥
 बनाव हाव भावमै रनंकि हत्थ बंगरी ॥
 किधौ पिकादि चंप भंप रोर सोरकी करी ॥ ६७ ॥
 तती भुंखेंदुतै कहैं सती सिंगार तारसी ॥
 ढरी बिनिद्रै कंजतैं मनौ मरंदै ढारसी ॥
 पलटि अंग के भुकै लचक लंकपै परै ॥
 उरोज भार निट्टि जो बली त्रि३बंध उद्धरै ॥ ६८ ॥
 क्रमै अधोदुँकूल फेर घुम्म घेर केसिका ॥
 अपांग गोले लोल ज्यों बिछोह टोल पुँसिका ॥
 उरोज अग्रचार हार इंदुँद उच्छटै ॥

त्रिवेणी के मेल के समान १ अंकुर [खड़ी] हुई २ घुँघुरों का शब्द ३ विशेष ४ नकली [नजराब] अर्थात् वीणा आदि वाद्य बजाने की वस्तु ॥ १२ ॥
 ५ ये सब शब्द कृत्य के अनुकरण के हैं ६ राग के मत के साथ चलती है ७ पगों को उचित प्रमाणसे नहीं चूककर समय पर, हावभाव के बनाव में हाथ की धंगड़ी [श्रवण विशेष] बजती है सो मानों कोयल आदि पक्षियों ने द चम्पे के वृक्ष की शाखा से, शब्द करने की ९ केलि [क्रीड़ा] की है ॥ ६७ ॥ १० मुख रूषी चन्द्रमा से स्वरो की पंक्ति ११ श्रेष्ठ शृंगार रसके तार जैसी निकलती है सो मानों १२ प्रफुल्लित कमल पर मकरन्द [पुष्परस] की ढाली जैसी है पलटने कई अंग झुककर कमर पर लचक पड़ती है १४ कुचोंका भार कठिनाई से पेटकी त्रिबलि [तीनसल] उठाती है ॥ ६८ ॥ १५ चलनेसे ऊँहगेका बिस्तार घेर [वर्तुल अर्थात् गोलाई] घूमर में १६ छोटे डेरे के आकार होता है और उस घेरघाके १७ नेत्रों के कोये और गोले टोले से बिछुड़ी हुई १८ हिरणी के सदृश हैं, कुचों के आगे चलनेवाला १९ इन्द्रध्वज नामक हार "जिस हार में १००८ मूँगे होवें उसका नाम

अंगार इक्षु थान क्यों न तान सगही अटैं ॥ ६९ ॥

लुठत पिठ्ठि कैसेपास आस रासमें लगी ॥

पसारि गंत जानि मत्त कोलिपत्त पन्नगी ॥

छुटी अलक असपैं लसैं अतीव तच्छटा ॥

रहे कि लुब्धिमैं कालनाग बाल रागकी रटा ॥ ७० ॥

सु नीर छाँई बक्रवै रचैं दुर चक्र रगसौं ॥

मही रहैं समपि हत्य इक्षु उत्तमगसौं ॥

समीर चक्र नचमैं लखैं समस्त सम्मुही ॥

सु चित्त माधुरी मरैं स्मरेछु जत्र व्है सुही ॥ ७१ ॥

जु अंग जास दिठ्ठिगो सु देव अकव्है जुरयो ॥

अलाप आनके उफान पचप बान अकुरयो ॥

धुन्यो घुमाइ टोडिकाशदि पचप नारिको धनी ॥

त्रि३ अंग उत्तमाशदि सगै इक्षु लो तैंती तनी ॥ ७२ ॥

इन्द्र छन्द है" लुठता है जिसका घर और स्थान एकही है अर्थात् तानभी गले में रहती है और हार भी गले में रहता है इस कारण वह हार तान के साथ फया नहीं चले, अर्थात् तानका प्रयोग नहीं सहने के कारण साथ ही अटन करता है ॥ ६९ ॥ २ चोटी ३ नृत्य की आवा में लगी हुई पीठ पर छेदती है सो मानों, मस्त हुई सर्पिणीने ४ अपने शरीर को केलके पत्ते पर फैलापादे ५ फले पर अलक छुटी हुई दीखती है ६ जिसकी अत्यन्त शोभा दीखती है सो मानों उस स्त्री के रागकी ध्वनि पर फासे सर्व ७ लुमारहे हैं ॥ ७० ॥ अष्ट नीर में जैसी आपा टेही दीखै तैसी बक्र होकर रग[रस]पूर्वक दुःख नाच नचती है जिस में ८ मस्तक से मूँमि एक हाथ रहजाती है ९ पयन के अङ्ग के जैसी अर्थात् गोलाकर नाच में इतनी शीघ्र फिरती है कि सबको सम्मुख ही दीखती है १० उस कामदेव के यंत्र (चरखी) में चित्त रूपी गज्रा मिठास को टपकाता है ॥ ७१ ॥ जो अंग जिसको दीख गया वह उसके आगे ११ अटक होगया अर्थात् उसको यही दीखता रहा और अन्य अखायों के उफान से कामदेव उदय हुआ, टोडी, लभाचती, गौरी, गुनफली और कल्लम, इनके पति मास्त्रकोशको धुना, तहाँ उत्तमा आदि तीनों अंगोंमें खयकी एक १२ पक्ति

धरै प्रतीति यों न तान कोन थानतैं धेपी ॥
 करै पिधानं गान जानि वानि पानि कैच्छपी ॥
 निखंग१ चापर आदि हेतैं रूप मंडती नचं ॥
 विलोकिके त्रिलोक ओक नैन कोनके वचें ॥ ७३ ॥
 स्वरावली समुद्रमें तिरैं निसंक सुंदरी ॥
 तरंग तान रंग बीणा तुंबिका धरी तररी ॥
 जु मंदरमें सु मध्यरमें जु मध्यरमें सु तारमें ॥
 मजे तथापि भिन्नदेत सारमें सु भारमें ॥ ७४ ॥
 तंजै कुकै कुकै कुतथ धित्यधित्य तंडई ॥
 छैटा अनुद्रुतादि१तैं प्लुत५ प्रमानलों छई ॥
 ग्रह१ प्रकास अंस२ न्यास३ व्है विलास गानमें ॥
 तुलौ न इक इकसों असंख्य कूट तानमें ॥ ७५ ॥

तणदी ॥ ७२ ॥ यह प्रतीति नहीं छुई कि तान किस स्थान में १ चली है
 उस घेरघाकी बाणी है सो आनों २ छिपा हुआ गान ३ सरस्वती की बीणा
 कर रही है ४ शब्दों का रूप रचती हुई अर्थात् इनको चरणों के न्यास से
 रचती हुई नचती है जिसको देखने के लिये ५ तीनों लोक के स्थानों में
 किसके नेत्र वचें ॥ ७३ ॥ ६ स्वरों की पंक्ति रूपी समुद्र में वह सुन्दरी रस की
 तानें रूपी तरंगों में बीणा के तुंबों रूपी ७ नाव करके निसंक तिरती है जो
 रस मद्र स्वर में है वही मध्य स्वर में है, और जो रस मध्य स्वर में है वही
 तार (उच्च) स्वर में है, तोभी तार (बीणा आदि के तार) में और हनुमानदेव में
 आनन्द भिन्न भिन्न देता है ॥ ७४ ॥ १० ये सब शब्द नृत्यके अनुकरण के हैं
 ११ अनुद्रुत से लेकर प्लुत पर्यन्त शोभा छागई अर्थात् अनुद्रुत, द्रुत, द-विरा
 म, लघु, ल-विराम, गुरु और प्लुत, ये सातही तालकी कलाके अंग हैं, जिन
 सब में शोभा छागई १२ जिस स्वरसे राग उठावे उसको ग्रह कहते हैं और
 स्वर में रागको स्थिर करै उसको अंस कहते हैं तैसे ही जिस स्वर में राग की
 समाप्ति करै उसको न्यास कहते हैं, जिनका प्रकाश और विलास गानमें हुआ
 और १३ कूटतान (सूर्छना आदि के क्रम बिना तान होवे उसको कूटतान कहते हैं)
 असंख्य हैं जो एक एक से नहीं मिलती ॥ ७५ ॥ उसकी बीणा कमर का

वितस्ति दोहर मध्य लीन मध्य खीन यौ वन्यौ ॥

तुँटे घुँटे रुँटे मुँटे छुँटे प्रवाद यौ तन्यौ ॥

क्रम प्रमान ध्वान यौ अनौट१ फुल्लरी२ करें ॥

उदार भार चट्टसार भा प्रकार उद्धरें ॥ ७६ ॥

दुकूल ओट मास्य आस्य लास्य यौ कठेश दुरै२ ॥

बिछद कंद फंद ज्यौ अमद चद बिप्फुरें ॥

कठेपरें उरोज पीन चीन अगिका कसे ॥

फुवैं सरोज पत्त रोक मत्त कोकें ज्यौ फसे ॥ ७७ ॥

पलट्टि ताल तालमें अनेक कालमें प्रेमा ॥

बढैं घटैं घटैं बढैं तुलैं तुलैं तुलैं समा ॥

श्रुती दुयीस२२ तीव्रका१दि छोहिनी२२ वंसानलौ ॥

मिली स११मै म४२मै प५३मै ति८पारि४चपारि४मानलौ ॥ ७८ ॥

रि२१मै ध६२मै त्रि३रु छि३दैंरु दैरग३१मै नि७२मै रहैं ॥

मूल दो (पैतयिलस्त) के रसांतर बन गया ३ पद्म कमर तूटती है इधर उधर छुटती [धूमती] है, रुकती है, मुड़ती है, परन्तु उसमें खय आविका किसीको कोई प्रवाद (पद) नहीं रहा इस प्रकार यह राग आववा नृत्य कैसा ४ वसन्ते आने के क्रम के प्रमाण से अखण्ड और फोहरी (भूषण विशेष) शब्द करते हैं सो ५ उदार कामदेव की पाठशाला की क्रान्ति के प्रकार निकलते हैं ॥ ७६ ॥ वल्लकी आइसे १ वसन्ते सुलकी क्रान्ति ७ नृत्यमें निकलती और छिपती है सो मानों ८ पादलों के फंदके आधीन होकर मदता रहित चद्रया कइता छिपता है, वसनायिका के पुष्ट कुच ९ स्त्रीया कशुकी में कसे हुए निकल पड़ते हैं सो मानों कमल के पृगकी रोक से १० मस्त हो चकचे फसे हैं ॥ ७७ ॥ ताल ताल के साथ पलट और अनेक समय में ११ उस रागका निरवय ज्ञान बढ़ने उतरने से पड़ता और घटता तथा घटता और बढ़ता है परन्तु खय रूपी १२ तराजू में परापर तुलता है १३ तीव्रका की आदि लेका १४ छोहनी के अन्त तक पाईस भुतियें हैं, सो पहज में, मध्यम में, पञ्चम में, १५ ते(वे) भुतिप, चार चार के प्रमाण से मिली (रहती) हैं ॥ ७८ ॥ वे (भुतिपा) ऋषम में, वैषत में क्रम से

निचारि जो पं५ टारि नारि तास चपारि४ कयों बहें ॥
 रु जाति पंच५ दीप्तिका१दि१ अंत५ मध्यमा५ रजें ॥
 श्रुतित्व जाति२ संग प्राण राग अंग उत्पजें ॥ ७९ ॥
 चलाहि१ उच्चलाहि२ द्वैरहि अल कोशिको रचिता ॥
 समाइदेत भिन्न भिन्न रुद्रताल सन्मिता ॥
 समस्त चित्त१ भान२ कान३ नेन४ वेन५ संग्रहे ॥
 रुके निनाद ब्रह्ममें प्रलौ जड़त्व लैरहे ॥ ८० ॥
 अलंक्रिया१ कपाल२ प्रास३ ग्रामका४ दि अंगजे ॥
 सगति५ सूड६ मेल७ वर्ण८ भाग९ रागसंगजे ॥
 स्वरूप१ वै२ रु काल३ नाम४ लिंग जाति५ सूचनी ॥
 सुनीन धीनके अधीन भिन्न भिन्न जोभनी ॥ ८१ ॥
 सुतो विचार रागलार बुद्धिकार साध्यहे ॥
 बिगूढ लढ बादरूढ मूढ उक्ति वाध्यहे ॥

तीन तीन और गान्धार में, निषाद में, दो दो रहती हैं सो विचार पूर्व
 १ पंचम को टालकर वह वेइया पंचम की चार श्रुतियों को कैसे धारण क
 अर्थात् पंचम की श्रुतियों को छोड़दी और राग की पांच जातियां हैं जिन
 आदिमें दीप्तिका और अन्त में मध्यमा शोभायमान है, श्रुति और जा
 ये दोनों राग के प्राण और अंग हैं सो यहां उत्पन्न होती हैं ॥ ७९ ॥ पां
 जातियों में यहां चला और उच्चला ये दोनों २ मालकोचकी उचित स्त्रि
 हैं जिनमें सब ग्यारह तालों को भिन्न भिन्न समा देती हैं, सष के चित्त
 ज्ञान कान नेत्र और वचन रोक लिये सो ४ शब्द रूपी ब्रह्म में बरकर प्रल
 के समान जड़पना लेरहे ॥ ८० ॥ ५ अलंक्रिया को आदि लेकर भाग पर्यंत
 राग के अंग हैं ६ स्वरूप से लेकर लिंग पर्यन्त रागकी जाति है, रुनकी सूच
 सुनियों की बुद्धि के अधीन भिन्न भिन्न कही है ॥ ८१ ॥ बहू विचार तो र
 के साथ ७ बुद्धि के फैलाव से साध्य है अथवा बुद्धि के समूहवाले (विद्वान्
 से साध्य है, विशेष गुप्त [छिपे हुए] को धारण करनेवाले और ८ यथार्थ व
 की इच्छावाले वचनोंपर बड़ेहुओं (विद्वानों) से सुखोंकी उक्ति का बोध होता

सुरिंद बिंद संक्रम्यो नरिंद मान नैरमें ॥

वहे अपार तोष बार फार फेरफैरमें ॥८२॥

चलें दुःपास वहे प्रकास चंद्रभास १ भैचपा २ ॥

छई प्रेमा सु द्योसलों दई छिपाइ सो छेपा ॥

अयास दोर ओरओर निष्क १ दम्भ २ उच्चैरें ॥

किते बिहाल वहे निहाल माल जाल चैं करै ॥ ८३ ॥

बदै निहारि दंग नारि लोन वारि बिंदपें ॥

अहो निकाम कोटि काम राम २० १४छोनिइंदपें ॥

अहो सु धन्य दुल्लही लहो बिसिंष्ट इष्टकौं ॥

दहो अनिष्ट रिष्ट त्यों बहो अमीष्ट विष्टकौं ॥ ८४ ॥

नरेस यों सुगैस रूप देत रीम नृत्पयें ॥

प्रयान मुख्य द्वारलों करयो विवाह कृत्यपें ॥

कैसा प्रहार रूप द्वार रीति लौकिकी करी ॥

उहा अपार फार हेम १ तौर २ बुद्धि उच्छरी ॥ ८५ ॥

(शोदा)

सुपहु बिंद मारीचैं सन, करि लौकिक मत कैज्ज ।

ईभ सन तोरन उत्तरिय, श्रुतिमैत साधन सज्ज ॥ ८६ ॥

इस प्रकार इन्द्र के समान दुल्लह रामसिंह २ महाराजा मानसिंह के नगर (ओषपुर) में १ गया लछा तोपों के ४ समूह के ३ अपार फेर बले ॥ ८२ ॥ दोनों ओर प्रकाश होकर चन्द्रज्योति और भैचपे आदि अग्निप्रीड़ा (घातण यार्जी) चलने से दिन के समान ५ श्रान्ति छागई और उस ६ रात्रि को छिपाही ७ मोहरें और रुपये उछलने से चारों ओर परिश्रम से दौड़ दौड़ कर किनने ही बिहाल होते हैं और कितने ही निहाल होकर घन के समूह का ८ संचय करते हैं ॥ ८३ ॥ ९ पृथ्वी के इन्द्र रामसिंह पर १० दुल्लह धन्य है सो विशेष वांछित फल को लो ११ बिना इच्छावाले दुःखों को १२ इच्छानुसार भाग्य को धारण करो ॥ ८४ ॥ १३ तौरण पर आवुक्त मारना आदि १४ समूह १५ चांदी ॥ ८५ ॥ १६ सवारी के हाथी से १७ कार्य १८ हाथी से १९ वेद का मत ॥ ८६ ॥

॥ पद्धतिः ॥

इम दुल्लह तोरन मुख्य आइ, बंदन १ नीरोजन क्रम बनाइ ॥
 मंडप थला जावनहुव समोद, बिष्टर ४रू पाद्य ५वनि विधि विनोद ८७ ✖
 बिष्टर ६रू अर्घ ७ अंचवन ८ बहोरि, जहँ मधुपर्क ९रू गोठौन १० जोरि ॥
 कन्या ११ गम १२ उपवहित बसन १२ काम, वर १ वगैनि २ परस्पर
 तिलक १३ ताम ॥ ८८ ॥

बलि प्रवर १ गोबर २ आरुपा १४ विधान, वर पूजन १५ भूपन १ वस्त्र
 २ दान १६ ॥

कन्या करमाइन समय किन्न १७, दै कनक १८ दैखिना १९
 तदनु दिन्न ॥ ८९ ॥

क्रम गौ प्रदान २० तांबूल कर्म २१, पुनि दंपति २ सयमे लैन २२ सधर्म
 बरमाला २३ अंचल गंठि २४ बंध, खिन तदनु धरन दै ककुंभ खंध २५
 वर १ वरनि १ मिथो दरसन २६ विधेय, पुनि अग्नि परिक्रम २७
 सद्भि श्रेय ॥

पावक सन चैर्मा ३५ १५ १५ सन प्रविष्ट २८, आचार्य वरन २९ कुंसकंडि
 ३० इष्ट ॥ ९१ ॥

क्रम बिहित होम तहँ चउ ४ प्रकार, धुर १ तत्थ राष्ट्रभूत १३ १३ नामधार

१ आरती २ आसन ओर पैर धोना ॥ ८७ ॥ ३ आचमन ४ दधि मधु घृत
 मिली हुई वस्तु का निवेदन करना ५ गोदान "यहां दान शब्द को दान के अर्थ
 में ग्रन्थकर्ता ने विचार पूर्वक लिखा है परन्तु गोशब्द के योग में यह प्रयोग
 करना दोष है" ६ वस्त्रों से छिगी हुई कन्या का छाना ७ दुलहे दुलहनी (बौद्ध
 बिदनी) का ८ तहां पर परस्पर तिलक करना ॥ ८८ ॥ ९ हथकेवा जोड़ना १०
 जिस पीछे सुवर्ण की दक्षिणा दी ॥ ८९ ॥ ११ फिर गोदान करके बीड़ी चबाना
 १२ स्त्री पुरुष का हाथ मिलाना १३ वस्त्र गंठ (गंठजोड़ा) करना १४ जल का
 घड़ा ॥ ९० ॥ १५ परस्पर दर्शन कराना १६ अग्नि से १७ पाश्चिम दिशा के
 आसन पर बैठना १८ होम के प्रारम्भ की विधी ॥ ९१ ॥ ८ ये विवाह

सुजया२।३२ रु प्रणीता२।३३ नाम सत्य, तिम लाजहवन ४।३४
हुव चउम४ तत्थ ॥ ९२ ॥

बहुरिहु करघाइन३५ विधि विलास, दुलही पय दक्खिन१ उंपल
२ न्यास२६ ॥

वनि गाथा गावन३७तहँ विधेय, करि अग्नि परिक्रम३८पुनिहुप्रेय
सालक संतुष्टि३९ रु होम शिष्ट४०, पुनि सप्त७पदी विधि४१
क्रम प्रदिष्ट ॥

इह कन्या निविसन वाम२अग४२, अभिसेचन घटजल करि ४३
अभग ॥ ९४ ॥

क्रम इदर्याऽऽलभन४४ रु तिलक कर्म४५, चहि बैठन वृखमव
अरुन चर्म४६ ॥

किय तिम ध्रुवदरसन४७ रंति काल, बलि आप्पिय गुरु हित
बसुं४८ विसाल ॥ ९५ ॥

इत्पादि वेदविधि भाजि असेस, नववय विशिष्ट व्याहिय नरेस ॥
दे इष्ट नेग नेगिन उदार, फैलाइ दयो जस दिसन फार ॥ ९६ ॥

॥ दोहा ॥

जोरी लखि अवरोध जन, कहन लगे बलि कज्ज ॥

रुचि दपति२ पर काम१ रति२, वारै कोटिन अज्ज ॥ ९७ ॥

निस वित्तत रहि नैलकी, गत प्रच्छद पेटगूढ ॥

पट गूँह जन्प निवास प्रति, आये दपति२ ऊँढ ॥ ९८ ॥

के समय होनेवाले चारों होमों के नाम हैं १ सस्कार किये हुए चाबलों का होम ॥ ९२ ॥ २ दुलही के दहिमे पैर नीचे पत्थर रखना ॥ ९३ ॥ ३ यहाँ कन्या का घर के पाम और बैठना ॥ ९४ ॥ ४ छहय का स्पर्श करना ५ पैरके लाल रंग के चर्म पर बैठना ६ रात्रि के समय ७ घन ॥ ९५ ॥ ८ समूह ॥ ९६ ॥ ९ जनाने के लोग ॥ ९७ ॥ १० नरयान विशेष ११ वस्त्र से ढकी हुई १२ जानके डेरों में १३ व्याहृष्ट ॥ ९८ ॥

(४१४०)

वंशभास्कर

[रामसिंहके चरित्रमें]

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टमः ८ राशौ राम
सिंहचरिते रामसिंहप्रथमविवाहवर्णनं पञ्चमो मयूखः ॥५॥

आदितः सप्तषष्ठ्युत्तरत्रिशततमो मयूखः ॥३६७॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

हेम१ रजत२ मय बुद्धि हुव, इम जैन्यालय आत ॥

धन्य धन्य जय जय ध्वनित, खुलि ठाँठाँ हुव रूपात ॥१॥

वैदिक१ लौकिक२ सद्धि बिधि, बहि सम्मति निर्वाद ॥

पिता जनन दुलही सु पुनि, पधराई प्रासाद ॥२॥

संग सखि१ न दासि२ न सतन, नंद१ जीव२ छम३ नद ॥

भो तिम सहचर भूखनन, सिंजित कलकल सद ॥ ३ ॥

पधराई दुलही पिहित, इमि जो जनक अंगार ॥

पति दासी जन विविध पटु, लगे सतन गन लार ॥ ४ ॥

॥ षट्पात् ॥

इत डेरन खिनै इकिख अतुल आरंभि त्याग अब ॥

चतुर मुकुट कवि चंड१ जनक कविके बुलाइ जव ॥

बंदी रतन१ बहोरि पुच्छि संभव दोउ२ न पढ़ ॥

कहिय त्याग व्यर्थ कतिक कतिक परिमान कविन कहँ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायण के अष्टमराशि में रामसिंहके चरित्र
में राजा रामसिंहका प्रथम विवाह होने के वर्णन का पाँचवां ५ मयूख समाप्त
हुआ ॥५॥ और आदि से तीनसौ सड़सठ ३६७ मयूख हुए ॥

१ जानके डेरे आते ही सोने चाँदी की वर्षा हुई २ ठाम ठाम प्रसिद्ध हुआ ॥१॥

३ बाद रहित ४ पिता के वंशवालों ने दुलही को महलों में पधराई ॥ २ ॥

५ सैकड़ों ६ जीवको आनन्द देनेवाला ७ समर्थ शब्द हुआ ८ साथ जानेवाली

स्त्रियों के पुरुषों के बाजे का ९ कोलाहल शब्द हुआ ॥३॥ १० पिता के घर में

॥ ४ ॥ ११ समय देख कर १२ ग्रन्थकर्ता के पिता चंडीदान को १३ त्यागका खरच

नृप मान कृपापात्रहु कतिक मुख्य सुकवि इह मानियत ॥
करियत तंदीय सतकार किम जिम अच्छुत जस जानियत ५

॥ दोहा ॥

कवि अक्खिय चउ४ मुख्य कवि, अतिसय प्रीति अमल ॥
मानें जे नृप मानके, अतुलित वैभव अत्र ॥६॥

॥ पट्टपात ॥

प्रथम प्रंतोलीपात्र अर्चोनिपति वृत्ति उपासक ॥

नाम जास अवनड १ सु पुर मुष्पाहर १ सासक ॥

कयित जाति रोहड़िक पट्ट पचायुत ५०००० पावत ॥

इहि ५०००० प्रमान पति अधिप सुमट बहु तंत्र सुहावत ॥

इम लख १००००० अधिप चारन यह रु छिदतर्जति नृप उदय छत ॥

आउवा मरयो जबतैं अखय बीसरुसत १२० सासक बजता ७

बैलि द्वितीघर कवि नकै २ धीर सब गुनन धुरधर ॥

अयुतक १०००० सासन इम विदित छद्गिरौ गनिका बर ॥

बनि सु न्याय १ व्याकरण २ सर ३ १ रु साहित्य १ समुद्र २ दि ॥

कितना है और कथिपोंका प्रमाण कितना है १ और राजा मानसिंहके कृपापात्र
कितने हैं उनका सत्कार कैसे करना चाहिये जिससे अछूता यश जाना जाय
[इस छप्पय में एक श्रवण अधिक है सो मूल से बनाया जाना पाया जाता है
और यह मूल भी अधिक मश पानके कारण जानी जाती है] ॥५॥ ३ अत्यन्त
प्रीतिपात्र ॥६॥ ४ पोलपास "गोपुर हि प्रतोल्वां तु नगरद्वारयोरपीति महीप ॥"
महीप कोश में नगर के द्वार का नाम प्रतोली लिखा है जिससे ग्रन्थकर्ता
ने यहा सामान्य दृष्टि से द्वार मात्र का ग्रहण किया है ५ राजा की वृत्ति
की उपासना करनवाळा ६ मूष्पाड़ नामक पुरका पति ७ रोहड़िया शाखा का
धरण ८ ह्यामी (राजा) के उमरावों के आधीन ९ राजा चदयसिंह के समय
आखवा पुर में चारणों ने धरणा दिया तब १० उसमें अखयसिंह मरा जय
से रोहड़िया पारहठों को चारणों की एक सौ बीस शाखा के ११ पति कहते
हैं ॥ ७ ॥ १२ पुनि १३ पाकीदास १४ छ. भाषा रूपी गणिकाओं का पति

जो यह*आसिक जाति वत्त कलि भूत रूपाति वदि ॥
 †जगतेस१मान२किय मेल जब बुध यह हुव सब जग विदित ॥
 कछवाह बिग भाखा सुकवि जो पदमाकर किन्न जित ॥८॥
 महादान३ सहडू तृतीय३ जो भूप कृपाजुत ॥
 जुरत मान१ जगतेसर२ बन्याँ कर्मध्वज विद्रुत ॥
 रिपु हुव सब रहोर काव्य तिनको सहडू किय ॥
 सूचनबिलु निज सदन निखिल मारव भट निंदिय ॥
 सो कवि बुलाइ मेवार रान तिहिँ उत्थान१ नृजान२तह ॥
 दियमानअयुत१००००आयकद्रविर्नसासनरोठावास३सह॥६॥
 भीम जोधपुर भूप आजि दूजोर आरंभिय ॥
 जुरत मान जालोर बड़व अनसन विपत्ति दिय ॥
 सो चारन बनसूर जुगत१ नामक आश्रित जब ॥
 अप्तहुव तँहँ आनि रुदति१ भूखन समेत सब ॥
 पहु मान ताहि लहि जोधपुर जहँ उत्थान१ नृजान२ जुत ॥
 दिय तिथि सहस्र१५०००सासन दिपत प्रथित पाडलाउ३धनुत१२०॥

॥ दोहा ॥

इन४मैं आदि१ सु आदितैं, सूचित विभव सनत्थ ॥

* आशिया शाखा का चारण † जयपुर के राजा जगतसिंह और ‡ जोधपुर के राजा मानसिंह मिले थे तब १ पदमाकर को धिजय किया ॥ ८ ॥ जगत-सिंह और मानसिंह जुड़े जब २ राठोड़ आग गया ३ मानसिंह की दिना ही सूचना किये ४ अपने घर पर काव्य बनाया और सब ५ मारवाड़ के उजरावों की निन्दा की ६ ताजीम ७ पालखी ८ धनकी आमदनी वास्ता ॥ ६ ॥ ६ भीमसिंह १० युद्ध ११ भाग्यने मानसिंह को निराहार रहनेकी विपत्ति दी तब वणसूर शाखा के १२ जुगता नामक चारण ने १३ अपनी हत्ती के भूषण सहित सब धन मानसिंह को लाकर दिया १५ विशेष स्तुतियोग्य ॥ १० ॥ १५ मूँघि याड़ का पति तो पहिले से ही कहेहुए वैभव सहित है और बाकी के

भाखे हेतुन करि भये, ए त्रय३ प्रविवित अत्य ॥ ११ ॥

अभिउत्थान१ नृजान२ इभ३, संजुत त्रय३हि सुवाद ॥

बलि इनमें दुव२ बँक१न, पाये लक्ख१०००००प्रसाद ॥१२॥

पट्टपात्-इनच्चारि४नदितउचितग्राम१इक१इक१इक१इक१गज२॥

पचमईस५००० प्रत्येक विहित वितरन मुद्रा३न्नज ॥

खास विभूखन४ खिलत५ सुल्वपत्रर्क६ लिपि सासन ॥

पठवहु च्यारि४न पाय स्खल्प अखित रु पट्टता सन ॥

ए च्यारि४ मुख्य तिनको इहाँ कम जानहु यह मुख्य१करि॥

बलि सेस कृपाभाजन बहुत पच्छहु मध्य२ कनिष्ठ३परि१३

पट१इय२कुडज३कटक४पचसत५०००दम्म मध्य२ प्रति ॥

संसि१कटक२पट३दुसत२००गनित मुद्रा४कनिष्ठ३गति ॥

इम नृप सेवी अत्र सुकवि द्वैसत२००पावहिँ सब ॥

सोतो अधिक न सुनहु अधिक बैसु व्यय निदान अब ॥

सोरठ१कच्छ२गुजर३सहित मरु४जगल५ए पच५ मति ॥

कुल खानिदेस पौरानिकेन इम अयुतन अेकत्र प्रति ॥१४॥

दुलह छुट्ट६१ बुन्दीस इहाँ व्यादन बलि आवत ॥

लक्खन उप्पर लगि मिले कुल कविन नमावत ॥

तानों १ ऊपर कह हुन कारण से यहा प्रसिद्ध हुए हैं ॥ ११ ॥ २ ताजीम ३ अष्ट पचना से ४ पाकीवास ने ५ छात्रपस्ताव ॥ १२ ॥ ६ दान के रूपों का ७ समूह ८ ताश पत्र पर लिखेहुन सबक ग्राम इनको न्यून कहकर अर्थात् आप के योग्य नहीं है ऐसा कहकर पचुराई से भेजो १० फिर पाकी के कृपापात्र भी पहुँचें ॥ १३ ॥ मध्य श्रेणी के चारणा को बस्त्र, घोड़ा, मोती, कड़े और पाच सौ रुपये और कनिष्ठ श्रेणी के चारणों को ११ घोड़ा, कड़ा, पस्त्र (सरपाव) और दोसौ रुपये, इस प्रकार प्रति अनुभ्य देना चाहिये १२ अधिक धन के खर्च का कारण सुनो १३ ऊपर कहे पाच देश चारणों के कुल की खान है इस कारण हजारों शकड़े हुए हैं ॥ १४ ॥

राजादिग नहिँ रहत तदपि बैभव समृद्धिनेर ॥
 सहस्रैन कर सासनिक सतन मित इत अग्रेसर ॥
 उपबसथ नाम मंथान^१ इक तीन अयुत ३०००० कर दम्भ तहँ ॥
 ऐसे अनेक सासन अतुल जनपद पंच ५ प्रपंच जहँ ॥१५॥
 बंदी ३।२।१ पूरब^१ बंस सूत^१ १।२ संतति पच्छिम ३।५ सब ॥
 ऐसे पृथु अवतार तिनहिँ दिय देस बंदि तव ॥
 यातैं भट्ट २।१ न अधिक तदपि चारन १।२ अतिसयतम ॥
 तिहिँ निर्दान करि त्याग कठिन भासत बंटन क्रम ॥
 पहु सत्रुसल्ल १।९४।१ उदयादिपुर परे अगग कछु वाद पर
 रूपय छलख ६००००० बंदि रु रसा अद्भुत जस किन्नों अमर ॥१६॥
 तितो सुलक^१ धन^२ ताम अव न अप्पन अंगार इम ॥
 श्रद्धा^१ छिति^२ अनुसार करहिँ क्रम तो सु वनै किम ॥
 धीर सचिव धात्रेय जानि मत कविन एह जव ॥
 कह्यो कछु न भय करहु सुकवि बढि करहु तुष्ट सब ॥
 बुंदिय^१ कुबेर पुरतैं बिथैरि त्वरित जोधपुर^२ द्वार तक ॥
 सहपंति जोरि रूपय सकटैं सरैनि बंधि दैहौ सड़क ॥१७॥
 सहस्रपंच ५००० सिरुपाव^१ सहस्र १००० हय^२ दुरद^३ सत्तसय ७०० ॥
 दुलहसँता १।९४।१ अगग दिय रानघरैं लखख ६०००० रूपय ४॥

१ अत्यन्त वैभववाले हैं २ सालाना हजारों रुपयों के हासिल के उदकग्रामवाले
 यहाँ लैकड़ों हैं ४ मधाणिया नामक ३ ग्राम ५ ऊपर फहे पाँचों देशों में ऐसे तुल्य
 रहित अनेक सांसण हैं ॥१५॥ ६ भाट लोगों का वंश पूरब देश में और ७ चारणों
 का वंश पश्चिम में है ८ चारण अत्यन्त अधिक हैं ९ इस कारण त्याग
 का देना कठिन दीखता है ॥ १६ ॥ १० तहाँ उतना देश और धन ११ अपने
 घर में अब नहीं दीखता १२ अद्भुत भूमि के अनुसार है १३ सब श्रेष्ठ कवियों
 को बढकर प्रसन्न करो १४ कुबेर के पुर रूपी बुंदी से फैलाकर १५ रुपयों के छकड़ों
 की पंक्ति जोड़कर १६ मार्ग में ॥१७॥ १७ दुलह शत्रुशास्त्रने अग्ने १८ राना के

तव औरहु पहू तत्त पत्त वनि बिंद उदैपुर ॥
 पहुँचे तोरन पिहिते धुत्त छल्लसौ चढि सिंधुर ॥
 छम चढि तुरग जानि सु छल्लहु गम्प बल्लजँ हड्डेस६१ गय॥
 अक्खयो सु वार बाख्न उचित हैरि चारन तहँ निंदि यह२१८।
 कुजर यित राचि कपट इतर दुल्लह नृप आवन१ ॥
 दुखन विनु हरिदास विफल तस सँत्व बनावन२ ॥
 हैरि सता१९४१ दुवर हेतु रोकि रोधेक हठ रानाँ ॥
 तिम बढि बढिय त्याग खुल्लि अल्लकेस खजाना ॥
 तैसो इहाँ न सभय तुल्लत वनिहु जाइ तो टेक बस ॥

प्रभुराम२०११४अन देहौ पल्लटि सनुसँल्ल१९४१संचित सुजस १९
 सचिव बैन इम सुनत कविन सादर सराह करि ॥
 नृप भाऊ१९५१छत नियत घने नेगन चितन धरि ॥
 थैलिन बिच कर थपि पसिय निज निज भरि रूपय ॥
 इक१ इक१ महुँर उपेत लपे दोउ२न जन्पाँलिय१ ॥
 इम वीरमुठि नामक यहै दुल्लह कवि२ लहि नेग द्रुत ॥
 क्रम सग त्याग उपहार करि पहिलौ पुर प्रविसे प्रैनुत॥२०॥
 धारित क्रम अभिधान कयिते गौहड१ आसिक२कुल ॥

घर (बदयपुर) में दिये थे वहा अन्यराजा भी बिंघ बनकर आये थे घूर्त हाथि
 पों पर चढकर १ घाने आये और समर्थ हाथों का पति शत्रुशाल घोड़े पर
 चढकर जानेवाले (राना के) २ द्वार पर गया तब ३ हरिदास नामक चारण ने
 घोड़े पर चढने की निन्दा करके कहा कि यह द्वार हाथी के उचित है ॥ १८ ॥
 ४ हरिदास ने अपना थल पतामे के लिये ५अधिक खरब करने से रोकनेवाले
 राणा के हठ को रोककर ६ कुवेर का ७ शत्रुशाल के सचय कियेहुए
 यथा को पलट कर लार्धगा ॥ १९ ॥ भाऊ के समय में ८ निरक्षय किये हुए
 पद्म नेगों को घर में पाद करके रुपयों की धेखी में हाथ रखकर ९ मोहर
 सहित १० जान के डेरे में वीरमूठ नामक नेग दुल्लह के कवियों ने लिखा ११
 त्याग की सामग्री १२ विशेष स्तुतियोग्य ॥ २० ॥ १३ ऊपर कहेहुए क्रम से,

सहमहडू३वनसूर४ मिले च्यारि४न द्वित मंजुल ॥
 पंचसहस्र५००० प्रत्येक अग्न रूपय१ इक१ इक१ इम२ ॥
 सासनपत्र३ समेत निखिल रक्खे पद सन्निभ ॥
 भूखन४ पटा५दि जे लाखि भये राव प्रसन्न सूचित सुजरा ॥
 नृप सत्रुसह११४११नतिथ दुलह क्यौंन धरहिँ जस गृह कलसर२१
 चित्त सबन हुव चाह धन सु आदान करन भुव ॥
 भूप मान दिय विभव हृदय सोपै चितितहुव ॥
 लौबे मंगि निलज्ज धनी हेरि सु कर्मध्वज ॥
 नलये च्यारि४न नटि रु ग्राम१ पटधन३भूखन४गज५॥
 क्रम सौहि मान सेवा कविन लाखि ईतर न काहु न लाये ॥
 तकि वित्त चित्त ललये तदपि द्वैहिसतर२००न उत्तर दयो२२
 दह साहसदानीय निखिल कवि जदपि निहारे ॥
 ललचि मनन धन लैन जनन तदपि न हंग जोरे ॥
 साहस बस प्रभु सुकवि जतन बहु प्रेरिचुके जव ॥
 इन जन्पाँलय आइ सचिव संबोधि कहयो सब ॥
 नृप मान कृपाभाजन निखिल लये मनहु त्याग न लहत ॥

रोहड़िया, आशिया, महडू और पणसूर इन चारों कुलों के चार चारों से
 सुन्दर हित के साथ मिले १ हाथी २ ताँजापत्रों के ३ सहस्र सामग्री अपने
 अपने पदोंके सहस्र उनके समीप रक्खी ४ इन चारों ने कहा कि यह दुलहा
 शत्रुशाल का पोता है सो अपने घर पर यश का कलश क्यों नहीं धरे अर्थात्
 धरना उचित ही है ॥ २१ ॥ ५ धन लेने की चाहना हुई परन्तु ६ राजा राम-
 सिंह ने जो वैभव दिया था उसको सोचा कि ७ राठोड़ जैसा स्वामी होने पर
 दूसरों का दान लेना निर्लज्जता है पराजा रामसिंह की सेवा करनेवाले अन्य
 कवियोंने भी किसीने नहीं लिया ॥ २२ ॥ तोभी दह दानी (रामसिंह) ने ९
 सब कवियों को त्याग लेने के अर्थ बारम्बार निवेदन किया १० परन्तु उन्होंने
 उनसे नेत्रही नहीं मिलाये ११ जानके डेरे आकर १२ सचिव कृष्णराम
 (धायभाई) को समझाकर सब कहा

न विरक्त तोहु सबके नयन स्वामिस्थसुर कानिहि कहत२३
प्रभु आसय मानप्रति हुनहि सचिव सु जमाइ दिय ॥
मनविनु अक्खिय मान लेहु तदपि न तिननो लिय ॥
प्रभुके सुकविन प्रसभ जानि नाइक जपिय जब ॥
द्वैसत२०० लेहुन देय इहाँ ग्राहक अयुतन अब ॥

इम अक्खि भिन्न पैटगेह इक थिर बहु यमन थंभयो ॥
तहँ बैठि स्वामि स्व रुचिन अतुल अब बितरन आरभयो ॥२४॥
सतन स्वीय कवि१ सचिव२लिखन सब दिस पठये लहु ॥
जे बटि बटि बसु८ जाम बनें जामिक लेखन बहु ॥
आवन लागे अमित पत्र लिपिकृत चित पुस्तक ॥
हुव अर्हति आरभ सोम वसु धृति१८८१सगत सक ॥
अतर तपत्य१२दसमी१०असित२गोरन अँह तह मेघ गति॥
रचयो अँजल भर रूपयन त्याग प्रगुन सब देय तति॥२५॥
जाचक अनुचर१ जनन दम्भ पचास५० अवधि दिय ॥

सतजुग२००सोलाह सहस१६०००कविन उपहार१ पृथा किय ॥

हुँदा१ लखन प्रमित बैसन२ अयुतन मित बिस्तारि ॥

क्रम सहस्रन मित कटक३ सतन सम्मित कुँडल४ करि ॥

१सबके नम्र पिरक्त नहीं हैं तोभी ॥२३॥ २ राधाराज रामसिंह का त्याग देने का आशय रामसिंह के कवियों ने मानसिंहके कवियोंका श्रुत जानकर कहा कि तुम दोस्रो बारण भले हो ४ धान मत हो यहाँ और हजारों छेनेबाणे हैं, इसप्रकार कहकर पल्लव यन्मोंवाला ५ छेरा तनाकर ६ त्याग देने का आरम्भ किया ॥२४॥ ७श्रीघ लेका(निमन्त्रण पत्र)भजे ददामका आरम्भ हुआ ८कालगुन यदि१०गोरण के दिन मेघ की भांति रूपों का ११ निरन्तर झड़ रचकर वह विशेष गुणपाला त्याग स्रप पक्षियों को दिया ॥२५॥ १२बारणाके पाकरों को प्रत्येक मनुष्यको पचास रूपों तक दिये और प्रत्येक बारण को दोस्रो छेकर सौलहसौ रूप१२मेढ करनेका कार्य प्रसिद्ध किया जिसमें१४छाणों १५छाणों १६छाणों शिरोपाव१६सैकड़ों कड़े१७छाणोंमें बहिनमेके सैकड़ों मोती और इसी

[रामसिंहके चरित्रमें]

ताही प्रमान हय५ मेय६ वितरि सब देसन तर्कुकरै सकल॥
किन्नै निहाल सादर कथन बादरै पथन स्वबुद्धि बल॥२६॥

(दोहा)

द्रविन बुद्धि बिधि इम दुलह, प्रस्तारि त्याग प्रवाह ॥
उभय२ घटी मित रहत अह, चढयो स्वसुर गृह चाह ॥२७॥

[उपदोहा]

जिततित सब जाचक जनन, सुजस स्व संचित सुनत ॥
गोरन भोजन स्वसुर गृह, चलयो नगर सर चुनत ॥२८॥
कर्मध्वज हकारै क्रम, लघु१ गुरु२ मानव लहत ॥
महासुभट१ सचिव२न मिलित, चलयो स्वसुर मन चहत२९

(पद्धतिका)

प्रभु दुलह जोधपुरके प्रवेश, अधिरूप१ कमनै२पन लहि असेस ॥
साखापुर१ बहुविध लखि समत्थ, तकि भरत१ कुसीलधर२ भेंट ३
न तत्थ ॥ ३० ॥

बुद्धत स्वबुद्धि मधवों बनाव, भूपाल लखत मग सवन भावै३ ॥
दौलाअरैघट्टक४ कहूँ दिपात, पावत तिन प्रेरक वसुनै ब्रात ॥३१॥
गावत कहूँ बंसि५न धमि गवार, पावत प्रसाद धन प्रकटि प्यारा ॥
प्रमाणसं घोड़े १ ऊट देकर २ याचकों को आदर के साथ कथन करके ३ मेघके सदृश
वृष्टि के बल से निहाल करदिये ॥२९॥ ४ इसप्रकार धनकी वर्षा करके और त्याग
का प्रवाह फैलाकर दो घड़ी दिन बाकी रहते ॥२७॥ अपना संचय किया हुआ
यश सुनकर गोरण के दिनका भोजन करने को ॥२८॥ राठोड़ राजा मानसिंह
के ५ बुलाने के क्रम से ६ छोटे बड़े सब मनुष्यों को साथ लेकर ॥ २९ ॥
अधिक रूप और सय ७ सुन्दरपना धारण करके शहर के बाहर के पुरे सब
देखकर तहां ८ नाटक करनेवाले नटों और ९ कथक (नटविशेष) १० नाट तथा
नट विशेष को देखकर ॥ ३० ॥ ११ इन्द्र के समान धनकी वर्षा करता हुआ १२
मार्ग में सबका भाव (अभिप्राय) देखता हुआ १३ कहीं डोलराहिंदे शोभा देते
हैं जिनके प्रेरणा करनेवाले (बुलानेवाले) १४ धनका समूह पाते हैं ॥ ३१ ॥

बहुचित्रे ६ भाद१ नर्तक२ वनाइ, लावत बसुं पावत प्रेमव लाइ३२
मदिरमहाँ१दि उदयोदि२ मान७, निरखत स्वसुरार्चित नय निधान
लघुर्वाटि८न कहूँलघु मनुज२जीन, पिक्खत प्रसन्नवर बंधुप्रवीन३३
मालिक१०न सुमन उपहार मेल, हाटकै चय बुद्धत गनित हेले ॥
कजर११न कहूँक तहँव प्रकार, दु०हरी१ ति३हरी२ तिन्ह रचत
दार ॥ ३४ ॥

जोजोहि रिक्कावत जिम जयाहि, सोसोहि स्वसगत१३तिम तथाहि
कहुँ कहुँ खँट१ इधँन२ निचय कार, पहिलैहि पटाकि बरंदल
प्रसार ॥ ३५ ॥

लै रीम१४बहुरि लेवे लँवार, पावत धन१५करि अति नुति प्रसार
जुरि फिरिफिरि सम्मुह नट१६न जूँह, सु रिक्काइ लेत बहु बसु
समूह ॥ ३६ ॥

धन निपै१ कुंभारि१७न बसु गिराइ, पुनि कहूँ वागुरिक१८न
मृग२न पाइ ॥

देवहूँस१वखसततिन्ह निदेस, अबसौन करहु तुम कर्मऐस२॥३७॥

१बहुरूपिया, भाद[मुखसे मलाई करनेवाले]नाचनेवाले अपने वनाचों से २घन
लेकर देहर्ष प्राप्त करते हैं ॥ ३२ ॥ ४ महामदिर ५ उदयमदिर दोनों अपने ६
रवसुर [मानसिंह] के पूजन किये हुए स्थानों को ७ नीतिनिपुण [रामासिंह] ८
पट्टि परीचियों के छोटे मनुष्य ९ बहुत चतुर बुद्धिवादी जीन होकर देखते हैं
॥३३॥ १०मालियों के पुष्प भेट करने पर ११ सुवर्णका समूह १२ खेल के समान
देता है कहीं काजर १३नाचते हैं और कहीं पर उनकी स्त्रियाँ दोदो तीन तीन
कूछाटे लेती हैं ॥३४॥ कहीं पर १४लड़क(घास) और १५बखीता सचय करनेवाले
१६ वृत्तवादी की सेना में डालकर ॥ ३५ ॥ रीम लेकर फिर खेल के लिये वे १७
खापर(भूटे) नम्रता करके घन पाते हैं १८नटों का समूह राजा से घन का समूह
लेता है ॥ ३९ ॥ कुमारियों के १९ कलशों के समूह में धन डालकर २० मृग
पकड़नेवाले बागदिया (व्याध विशेषों) को २१ घन लेकर आज्ञा देते हैं कि
२२ ऐसा काम फिर मत करो अर्थात् मृगों को मत पकड़ो ॥ ३७ ॥

इम देत जनन धन घन अछेह, प्रविश्यो पुर *गोपुर उचित अह॥
नृप गोपुर पालन करि निहाल, बिक्रवत पुर२ जन जुव१ वृद्ध२
बाल३ ॥ ३८ ॥

कहुँ नट३ नानटन उहून१ कुरंग, भजि कहुँ३ नरेन्द्र४ दिखवत भुजंग॥
कहुँ द्यूत द्यूतदेवि५ ननिकार, समपन२ कहुँ जय३ कहुँ रय प्रसार३९
प्रबहतकुल्लयाजल२ कहुँ दु२ पास, मरुछि३ तिहुलसतजिमभाद्रमास॥
बैतालिक१७ चाक्रिक२८ विविध बात, जय१ जीव२ जल्प सबि-
रुद३ सुनात ॥ ४० ॥

नघत बहु बारन बारनारि९, पटु धाव१ हाव२ भाव३ न प्रसारि ॥
कहुँ सान भ्रमासक्त१० न सनंकि, भारत फुलिंग सखन अनंकि४१
बिरहुँदिसन असोसत द्विज११ न बैर, स्वेहासम पावत वसु प्रसार
कहुँ उघरि चित्रसालन कपाट, बिक्रवत तिय१२ बिंदहि नयन बाट४२
उत्तारन उद्ध१३ हि कहुँ करंत, बैलि१४ करन प्रान हित बित्थरंत॥

*नगर के द्वार में प्रवेश किया जहाँ पर नगर के द्वारपालों को निहाल करके, पुर के जवान, वृद्ध और बालक को देखता हुआ नगर में गया ॥ ३८ ॥ तहाँ कहीं पर तो † हिरणों के समान नट † नृत्य करके डडते हैं और कहीं पर § विष वैद्य (कालधेलिये) सर्प दिखाते हैं और कहीं द्यूत खेलनेवाले द्यूत देवी को निकाल कर कोई तो बराबर का दाव लगाते हैं, कोई जीतते हैं और कोई अपना वेग फैलाते हैं ॥ ३९ ॥ कहीं पर दोनों ओर विशेष मार्ग में १ जलकी नहरें हैं जिनसे २ मारवाड़ की भूमि भाद्रपद मासमें प्रसन्न होती है "बहतः पान्धे" इतिशब्दार्थचिन्तामणिः ॥ ३ स्तुति करके राजा को जमानेवाले भाट और ४ घंटा बजाकर राजाकी स्तुति करनेवाले भाट विशेष "बैतालिका षोडशराश्रुचक्रिका घाण्टिकार्थकाः" इत्यमरः ॥ जय होओ, जीवो, बढ़ो ऐसा ५ कह कर स्तुति करते हैं ॥ ४० ॥ ६ घरों के बहुत द्वारों पर द्वाचतुर दौड़ से हाव भाव करके ७ वेश्यायें नचती हैं ९ कहीं पर सकलीगर शाय पर शस्त्रों को भणकाकर १० अग्नि कण भाड़ते हैं ॥ ४१ ॥ ११ दोनों ओर ब्राह्मणों का १२ समूह आशीर्वाद देता है जो १३ अपनी इच्छानुसार धनका फैलाव पाता है ॥ ४२ ॥ १४ कहीं पर ऊपर से ही नोछावर करते हैं १५ पुनि प्राण नोछावर करने का हित

बिखरत नोछावरि बसु१५ वजार, अबि रक होत तिन्ह लहि उ-
दार१६ ॥ ४३ ॥

प्रभु१ आदि जन्प जन२ गजन पिछि, हुत परत निछावरि द्रविन
दिछि१७ ॥

सोसो आधोरन१ मुख२ समेटि, मग गेरिदेत१ दुख दुखिन मेटि४४
समेटि१ नमेटि२ अत्यानुपास ॥ १ ॥

कहुँ अन्नरासि१९ नाना प्रकार, मप्पत२० द्रोणा११ दिन बिनु सुमार
कहुँ आढंकर२ प्रस्थ३ न मपन कर्म२१, मुसियत अधर्म२२ न पि-
हित मर्म ॥ ४५ ॥

राचि ब्रोदि सुंगधिक१ कुजमँ२ रासि३३, पावत कहुँ बिक्रैप१ कँय२
प्रकासि२४ ॥

जव१ सुमन४ मदने५ हरिमथें६ जात, भरमुँदग७ राजमुदग८ न बि-
भात२५ ॥ ४६ ॥

जवनैल९ बीजपुप्पि१० न जया२६ दि, अति राँसिन इतिमुख सीतिय
आदि२७ ॥

कैलाते हैं, पजार में नोछावरका घन बिखरता है जिसको लेकर रकमी उदार होते हैं ॥ ४३ ॥ दुछइ रामासह आदि १ परात के लोग हाथियोंकी पीठके ऊपर नोछावर का २ घन पड़ा हुआ देखते हैं उसको ३ महाघन आदि शीघ्र सिमेट कर बुझी मनुष्या का कुत्र भिटाने को मार्ग में गिरा देते हैं ॥ ४४ ॥ कहीं पर मानाप्रकार के अन्न के ढर (समूह) हो रहे हैं जिनको ४ द्रोण (बत्तीस सेरके तोल का नाम द्रोण है) आदि तोला से प्रगणना रहित तोल रहे हैं और कहीं पर ५ आढक (लीलायमी म द्रोण के चतुर्थ भाग अर्थात् आठ सेरको आढक लिखा है) और ७ प्रस्था [आढक के चतुर्थ भाग का नाम प्रस्था है] से नापने का काम होता है और कहीं पर ८ अण खेनेवालों को भिषेष्टुए कामों से दूरे लोग द ठगते हैं ॥ ४५ ॥ कहीं पर १० धान्य में ११ आषण १२ कुलधों [धान्य विशेष] की राशि करके प्रसिद्ध १३ बेचते और १४ मोल खेतेष्टुए पाते हैं और कहीं पर जघ १५ गेहूँ १६ उरुद १७ चणा १८ मूँग १९ मोठ तथा चैवला ॥ ४६ ॥ २० जवार २१ बाजरा २२ इत्यादि २४ धान्य के २२ समूह

भासत कहूँ दृष्ट२८८ न भ्रमर भीर २९, पीतन १ कपूर २ मृगमद ३
पटीर ४ ॥ ४७ ॥

कहूँ कुसुम निकर ३० नाना प्रकार, अधिपतिपर वारत ३१ विविध बर
नृप करत रीति मालि ३२ न बिहाल, चलत १ खिन रहि २ खिन
सिथिल २ चाल ३३ ॥ ४८ ॥

प्रभु द्विरद अगग बहु दारुपट्ट ३४, बहि १ ढबत २ कहारन अंस बट्ट ॥
गनिका जन ३६ तिनपर नटन १ गान २, बज्ज ३ न सह विरचित ३७
बहु विधान ॥ ४९ ॥

उनपैहु महु १ रूपय २ उछारि ३८, बुढ़हिं जन जन्य कि भाद्र बारि ॥
तहतह तिन्ह बांदक लोभ तानि, लचिलेते ३९ होत लय ताल
हानि ४० ॥ ५० ॥

अधिकारी तिनके तिन्ह उतारि ४१, पुनि इतर चढावत ४२ न खिन
पारि ॥

बिखरत ४३ पदन सन दविनै जात, बहु लुटत ४४ बहु पय रज
दवात ४५ ॥ ५१ ॥

पुरलोकबहुरि जिन्ह दुंढि ४६ पात, बनि विविध गये बहु आढ्य ४७ जात
विकलत कहूँ इत १ उत २ मनिन बार ४८, क्रम विविध अर्थ ४९ नाना प्रकार ५०

शोभा देते हैं, कहीं पर दुकानों में भ्रमरों की भीड़ होरही है और कहीं पर
१ कुंकुम तथा हरताल तथा आमला, कपूर २ कस्तूरी, चंदन ॥ ४७ ॥ ३ पुष्पोंके
समूह ४ समूह ५ चण मात्र ठहर जाते हैं और चण मात्र धीरी चाल से चबते
हैं ॥ ४८ ॥ दुल्लह के हाथों के आगे कहारों के ७ कंधे पर रक्खा हुआ ६ काष्ठ
का बड़ा तखता है उस पर बेश्याओं का न नाचना गाना होता है सो वे
बेश्याएं वाद्य के साथ अनेक विधान रचती हैं ॥ ४९ ॥ ६ बरात के मनुष्य
भादवाके जलके समान मोहर और रुपये वर्षते हैं तहां उन बेश्याओंके १७
बजानेवाले लोभ करके ११ झुककर उनको लेते हैं जिससे लय और ताल
चूकजाते हैं ॥ ५० ॥ १२ धन का समूह ॥ ५१ ॥ १३ धनवानों के समूह होकर
१४ मणियों के समूह को देखते हैं १५ मूल्य के विविध क्रम से ॥ ५२ ॥

पवि१ नीलै२ मुक्तिभव३ पक्षराग४, बैदूर्य५ बहुरि चउ४।९ खिल
विभाग५१ ॥

दुहुँ२ओर घहुल कहुँ पट५रदिपात, जे राङ्गव१वादर२त्तोर्म३जात५३
कौसेपे४ सहित इम चउ४ प्रकार, बिकखत५३ दु२ओर बर विवि
ध बार ॥

कहुँ कुकुंम१ मृगमदै२ सुमै३ प्रकीर्ण५४, सब ठाम अंगुरु४ चंदन
५ विंशीर्ण५५ ॥ ५४ ॥

दुल्लह सुगंध पथम१हि दिपात५६, पुनि२ नगर जनन सौरम लि-
पात५७ ॥

फगुन१२ खिन उच्छव फाग५८ फारै, कति बिध तस खेलन ५९
मरु प्रकार ॥ ५५ ॥

प्रभु दगन कहुँक कर्पूर पूर, हितपुव्व डारि६० रिक्तवत इजूर ॥
बलिबलि सुगधमयद्रव्य६१जात, जनप्रीतजननजैन्यनजनात६२।५६।
वैचि अक्खि१न डारत६३ सुराँभि बारि, नृप दुल्लह हित सह आति
निहारि ॥

जागुडै१ मृगनाभि२न जानि जानि, प्रभु जन्यन सिंचित ६४ हित
प्रतानि ॥ ५७ ॥

दुहुँ२ओर नारि१नर२लाखि दुँरुह, धानत६५अनेक बिध सुजसऊँह
कहुँगंधिनि१मालिनि२बहुप्रकार, फैलावत६६बरसिरसुरभिकार५८

१ हीरा २ मोलम ३ मोती ४ माणक ५ बाकी के चार प्रकार के रत्न ६ वस्त्र ७
ऊन ८ सुत ९ सय से ऊत्पन्न ॥ ५३ ॥ १० रेसम सहित चार प्रकार के ११ केसर
१२ कस्तूरी १३ पुष्प १४ फैले हुए १५ अक्षर, चंदन १६ विस्तरहुप ॥ ५४ ॥
१७ हाग का समूह ॥ ५५ ॥ १८ फिर फिर (बारबार) १९ बरात के खोर्गो को
प्रीति जनाते हैं ॥ ५६ ॥ २० मेज बसाकर २१ सुलायजल आदि सुगंध का
जल डालते हैं २२ केसर, कस्तूरी ॥ ५७ ॥ २३ कठिनाई से तर्कना से आदि
ऐसे दुल्लह को २४ तर्कना करते हैं ॥ ५८ ॥

बहु कहत ६७ अन्ह नृप मति बिचार, सुभ बिधि गय ६८ बुंदिय
समुक्ति सार ॥

यह जोग दुलह १ दुलहिन २ अपुव्व, बिरचिय ६९ कबंध दै दहि १
रु दुव्व २ ॥ ५९ ॥

कहुँ कहत ७० स्वपत गिंघोली खेत, दुल्लह जनक न जो भीर देत
होतो ७१ अनर्थ तो द्वाइहाइ, पै हुव ७२ सुम दुलहिन १ दुलह २ पाइ ६०
इम लखत ७३ नगर सोभा असेस, पहु पत्त ७४ मुख्य तोरन प्रदेस
इम दुल्लह लोहापोरि १ अंत, बुठतगो ७५ बसु चय सुम बसंत १६१
मृगमद १ पटीर २ कुंकुम ३ मिलाप, छिरकपो ७६ बर फगुन समयछाप ॥
बुठिय ७७ पहु तह बहु बसु बिसेस, अंदर लिय ७८ सह बिधि
सुबर एस ॥ ६२ ॥

बहुविध बहुदासि १ न सखि २ न बार, किय ७९ पुनि नीराजन सह
प्रकार ॥

त्रिक १ नाड़िन जावत रजनि जत्थ, पहुँचपो ८० मह दुल्लह स्व-
पुर पत्थ ॥ ६३ ॥

पहुमान आइ पहिले १ पंडू, तक्रिय ८१ मिलि सम्मुह अधिक तुँड ॥
जावत घटिका चउ ४ रजनि जामे, किय ८२ सैमिति फतैमहल
सुप्रकाम ॥ ६४ ॥

१ हमारे राजा (मानसिंह) की बुद्धि का विचार ॥ ५९ ॥ गींघोली के क्षेत्र में ॥
२ हमारे स्वामी को दुल्लह का १ पिता सहायता नहीं देता तो ॥ ६० ॥
दुल्लह ४ मुख्य द्वार के स्थान पर गया ५ वसंत ऋतु में पुष्पों की वर्षा होके
जैसे लोहापोर (जोधपुर के गढ़ पर महलों के मुख्य द्वार का नाम है) पर्यन्त
धन के समूह की वर्षा करता गया ॥ ६१ ॥ वहाँ दुल्लह पर कस्तूरी ६
चंदन और केसर मिलाकर फागुन मास का समय होने से छिड़का वहाँ भी
राजा ने विशेष धन की वर्षा करी ७ इस श्रेष्ठ वर को ॥ ६२ ॥ ८ आरती की
९ तीन घड़ी रात्रि जाने पर ॥ ६३ ॥ १० प्रथम सीढ़ी पर आकर ११ अधिकतुष्ट
(पसप) हुआ १२ जहाँपर १३ फतहमहल में सभा की ॥ ६४ ॥

कापरनि ईस सामत काज, दिय गहि आदि८३ रठोरराज ॥

बैठारवो ८४ नृपदिस इम सु वीर, ध्रुव बैठे८५ संम थित दुव २
हि धीर ॥ ६५ ॥

ईसान ८ नृपन मुख दुहुँ २ न आस ८६, सामंत अनिल दिस
मुख ८७ सुभास ॥

थित सख्य १ मान २ दाहिन १ थिरेसै २, इम दुव ८८ समाजें कछु
काल एस ॥ ६६ ॥

रहि इक मुहूर्त ससद८९ रसेसै, पुनि परिग९० पति भोजन मदेस
पश्चिम ३।५ मुख बैठे ९१ तहँ नृपाल, थित पट्टन चउ ४ विध
असन९२थाल ॥ ६७ ॥

जुरि पतिन९३ पचम५ पर्य५ जुत, विस्तरिय९४ मिधा सैदन बहुत
जल २ थल २ भव दुव २ विध अन्न ९५ जात, पेल १६ त्रिषविधि
खंचर ३ जुत विधि दिपात ॥ ६८ ॥

प्रतिथाल साकगन ९७ दस १० प्रकार, विस्तरि पुनि तेमैन ९८
विविध बौर ॥

इम वरि परिवेमेंन ९९ हुत असेस, रस छ ६ जुत पत्तहुव १०० दुव २
१ दोनों राजा परापर स्थित होकर बैठ ॥६५॥ २ दोनों राजाओं का मुख ईशान दिशा
को हुआ और सब उमरावों के मुख वायु कोश में प्रकाशित हुए वहाँ राजा
मानसिंह नाम हाथ को और ३ राजा रामसिंह दहिना बैठा ४ कुछ समय यह
सभा हुई ॥६६॥ ५ भूपति के दो घड़ी तक सभा में रहे पाछे भोजन के स्थान
पर पात (पातिया) हुई ६ चार बाजोंटों पर विविध पुर्यक ७ भोजन के थाल
रक्खेगये ॥ ६७ ॥ ८ पाचमी पक्ति मद्य सहित जुड़ी जाया ९ रसोई एकाने
घालों ने बहुत भेद फैलाये जिनमें जलसे और स्थल से पैदा हुए दो प्रकार के
अन्न (जल से उत्पन्न थावल आदि और स्थल से उत्पन्न गेहूँ आदि) और ११
पक्षियों सहित तीन प्रकार के १० मास (एक तो पक्षरे आदि ग्रामपशु, दूसरे
खयर आदि घनपशु और तीसरे पक्षियों का) ॥ ६८ ॥ और पाल पाल प्रति
दश प्रकार के शाकों के अनेक प्रकार के ११ सनुह के १२ सीवयों (व्यसनों) की
श्रेष्ठ १४ परसगारी हुई. ।

रसेस ॥ ६९ ॥

जहाँ *चसक १ चसक २ मनुहारि जात १०१, प्रभुः रुच्य नट्यो १
सन्निधम दिपात ॥

रतपान बुद्ध दिय १०३ हारि राज्य, तस सुत उम्मेद सु कियउ
१०४ त्याज्य ॥ ७० ॥

बर १ अकिखय १०५ स्वसुर १ हिं इम प्रबान, सामंत तदपि किय
पान सीर १०६ ॥

पुनि लहि अदेस सब असन पाइ १०७, उठिय १०८ लहि बीटक
जल अचाई ॥ ७१ ॥

कछुखिन रहि १०९ संसद हित प्रकाम, तब दिय ११० सब जन्पन
सिक्ख ताम ॥

पधराइ प्रभुहिं अवरोध १११ प्रीत, गावत गन बंदिन विरुद गीत ७२
कुलदेवि कबंधन नागनेचि, पूजाइ ११२ प्रभुहिं सुम निकर सेचि
सज्जा पोढाये ११३ नृप स्वगेह, अभिलाखिन सुरतरु रजनि एह ७३
इह बर स्वासुर कुल तियन आइ, लहि कछुक काल अतिहित
लडाइ ११४ ॥

लखि समय कियउ दंपति २ मिलाप ११५, इहिं काल बुद्धि बसु
हुव ११६ अमाप ७४

॥ ६९ ॥ जहाँ * मद्यकी † चुसकी की मनुहार हुई तहाँ ‡ दुल्लह ने इनकार
किया और वह इनकार १ नियम के साथ दिखाया कि २ बुधसिंह ने मद्य
पीने में प्रीति करके बुंदी का राज्य गुमा दिया था उसके पुत्र उम्मेदसिंह ने
मद्य पीने का त्याग कर दिया ॥ ७० ॥ तो भी ३ हमरावों ने मद्य पीने में
सीर (सामिल हुए) किया ५ आदेश (आज्ञा) लेकर भोजन किया ६ पान बीड़े
लेकर ७ आचमन किया (आचमन लेने से पहिले पंक्ति में पान बीड़े देनेका
राजपूताने में कायदा है) ॥ ७१ ॥ ८ तहाँ बरातवालों को सीख दी ९ दुल्लह
को जताने में पधराया ॥ ७२ ॥ १० फूलों के समूह चढाकर ॥ ७३ ॥ ११ इस
समय स्वसुर के कुलकी निम्नलिखित हैं —

रामसिंहकायियाहकरकेरीछाबुन्दीजाना] अष्टमराशि-षष्ठमयूख (४।८७)

बहुरीति चतुर वर रचि विधेय ११७, सद्धि सब लौकिक ११८
सहित श्रेय ॥

रहि ११९ सुख सह वित्तत उचित रत्ति, घन गानाजीविन द्रविन
घत्ति १२० ॥ ७५ ॥

नृप आइ १२१ प्रात निज पटनिकाय, राजस सुख विलसत हृष्ट
६१ राय ॥

तिम निवासि १२२ दिवस बावीस २२ सत्य, सब तर्कुंक जन करि
वसु समत्य १२३ ॥ ७६ ॥

बहु अप्पि हरन १२४ सबविधि विसेस, नृप माने तुष्टकरि १२५
वर निसेस ॥

ग्रामक १ उपेत केकीन्द्रद्वंग, पुनि मान सुता हित हित प्रसंग ७७
अतिकृति सहस्र २५००० मित दम्भ आय, दै १२६ दुव २ लडाइ
पठये १२७ सदाय ॥

रडया पुगेस सिवनाथसीइ १, भेरतियन मालिक बल अवीह ॥ ७८ ॥
रुचिभाजन नाजर अमृतराम २, तिन दुहुँ २न सिक्ख दिय १२८
सग ताम ॥

लकखन मित सबसैन १ धन २ लुटाइ १२९, भूखन ३ गैय ४ हय ५
मैय ६ दान भाइ १३० ॥ ७९ ॥

सब चुकिसके न तव कति स्वसर्ग, आयो लै १३१ जाचक छवि
अनग ॥

१ गान से जीयन करनयाखे कथायत आदि को धन देकर ॥ ७५ ॥ २ अपने
देरे में जाकर ३ याचक लोगों को धनदान करके ॥ ७६ ॥ ४ पशुत दहेज देकर ५
राजा मानसिंह ने परको पूर्ण प्रसन्न किया ६ ग्रामों सहित ७ केकीन्द्र नामक
नगर ८ राजा मानसिंह ने प्रसन्न होकर अपनी पुत्री को दिया ॥ ७७ ॥ दुल्लह
दुल्लहनका प्यार करके ९ दहेज सहित भेजे १० निर्भय ॥ ७८ ॥ ११ प्रीतिपात्र
१२ वस्त्रों सहित १३ हाथी १४ ऊट रीति पूर्वक दिये ॥ ७९ ॥ १५ कितने ही

मधु१ असित२ आदि१ तिथि१ चढि१३२ महीप, दरकुंचन परिथत
१३३ बंसदीप ॥ ८० ॥

मीनाऽर्क बिसनै पुर न सुभ मानि१३४, पटगृह केदारेश्वर प्रतानि
इह करि१३६ बनीयकन खिलन आढ्य, संसद बुलाइ१३७ सब
जस समाढ्य ॥ ८१ ॥

सह मंह१ आस्वासन२ तिन्ह सराहि, दिय१३८ सिक्ख सबन दा-
रिद्र दाहि ॥

निवसन करि बहुदिन तह नरेस, आरंभिय१३९ अवसरपुर प्रवेस८२
॥ दोहा ॥

श्रामराधर गत पक्ष्व सित२, तिथि——दिन तत्थ ॥ ८३ ॥

प्रविसे१४० दिन पच्छिम४ पहर, सहर सकल वर्त्त सत्थ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टम ८ राशौ राम
सिंहचरित्रे महारावराजरामसिंहयोधपुरविवाहानन्तरबुंदीपुरप्रवे-
शनं षष्ठो मयूखः ॥ ६ ॥

आदितः अष्टषष्ट्युत्तरद्विशततमः ॥ ३६८ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

याचकों को अपने साथ ले आया १ चैत्र बदि एकम के दिन ॥ ८० ॥ मीन
संक्रांति के सूर्यमें पुरमें २ प्रवेश करना अशुभ मानकर केदारेश्वर शिवके स्थान
पर ३ डेरे लगाये, इसी स्थान पर सब ४ याचकों को धनवान् किये और
उनको ५ सभा में बुलाकर सबसे आप यशयुक्त (यशसे धनवान्) हुआ
॥ ८१ ॥ ६ उत्सव सहित उन (याचकों) का आश्वासन करके प्रशंसा के साथ
सब का दरिद्र जलाकर सीखदी ॥ ८२ ॥ ७ वैशाख मास के शुक्लपक्ष की
तीसरे पहर पीछे ८ सब सेना सहित पुर में प्रवेश किया ॥ ८३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायण के अष्टमराशि में, रामसिंहके चरित्र
में, महारावराजा रामसिंह का जोधपुर में विवाह करके पीछा बुंदी आनेका
छठा मयूख समाप्त हुआ ॥ ६ ॥ और आदि से तीनसौ अड़सठ ३६८ मयूख हुए ॥

पुर प्रविसन पुरजन प्रचुग, स्वामि लखन हित संग ॥

कढिहु करत दरसन किते, *अप१ चुबकर बिध अग ॥१॥

अटत जाय वन ताल तट, दिपत उदीची११७द्वार ॥

विसि मंगोपुर बिकरूपो सु वर, पुर निज बिबिध प्रकार॥२॥

॥ भुजगप्रयातम् ॥

उदीची११७दिसा द्वार यों भूपआयो, प्रवेस्पोपुरी सज्ज सेना सुहायो
दिप्पो अप्पनोदंगशृंगारसज्जपो, लखै इंद१को श्रींद२को नैरकज्जपो ३
पष्टो तहाँ दंग यों जेव पायो, अकस्मात ज्यो कायमें प्रान आयो ॥

कहो वैप्र१पाकार२सोहैं सुधारै, कहो कगुरे३मजु ऊचे अटारैं४१४।

कहो आवपैं टक मां मजु मडैं५, कहो मोन चक्री धरै चक्र भडैं६॥

कहो सार वपोकारके कटवज्जै७, कहो बर्याचचूनके लेख८रज्जै५

कहो वर्द्धकी स्पदनाली सुधारै९, कहो कंदुजीवी हवी कंदु डारैं१०

कहो चेल चगे वने ततुँवाइ११, कहो उव्वटें अग अतौवसाइ१२।६।

* जाहे और धुपक के मिलने की भांति ॥ १ ॥ उत्तर दिशा के द्वार से नगर

के द्वार में घुसकर अपने पुर की नाना प्रकार का दृशा ॥ २ ॥ इसप्रकार वह

राजा उत्तर दिशाक द्वारमें आया और सुहावनी मजीहूँ सेनासे प्रवेशकिया

यहा अपना नगर शृंगार किया हुआ ऐसा दीक्षा जिससे इन्द्र की पुरी (अम

रापती) और १ कुवेर की पुरी(अकका) लब्धित हुई ॥ ३ ॥ राजा भीतर घुसा

वम समय वह नगर ऐसी शोभा को प्राप्त हुआ कि जैसे मृतक शरीर में

अपानक प्राण आया, जिसमें कहीं तो २ घृत कोट कहीं ३ पक्षा कोट सुधारा

हुआ शोभायमान है, कहीं पर कागरे और कहीं सुन्दर छतें हैं ॥ ४ ॥ ४

पत्थर पर टाकी में ५ लक्ष्मी की सुंदर स्तूप माडने हैं और कहीं घरों में ६

कुमार चाक पर आठ (मिष्टी के पात्र) धरते हैं, कहीं जाहे पर ७ लुहार के

घण घजते हैं और कहीं पर ८ चित्रकारों (चित्रेरा) के लेख (चित्राम) शोभा

देते हैं ॥ ५ ॥ कहीं पर ९ सुधार रयों की पक्ति को सुधारते हैं और कहीं पर

१० कंदोई कड़ाह म घृत छालते हैं ११ कहीं पर जुवाहे वसम धस्त्र घुनते

हैं १२ कहीं पर नाई शरीर पर वपटन माखिस करते हैं ॥ ६ ॥

भ्रमासक्त मंजें कहीं हेति १३ भारी, धरें सान भंभान फुल्लिंग धारी
बढे बखजोरैं कहीं तुन्नवाई १४, छमकैं कहीं पिंजरी तूला १५ द्वाइ ७।
कहीं सूत १ कासी २ चित्तीमूत चोरैं १६, कहीं सीस ३ कथीर ४ के
जाल जोरैं १७ ॥

कहीं चिल आवास भंडें चितारे १८, कहीं स्तोत्र बंदी पढें नव्यं १९
न्यारे ॥ ८ ॥

कहीं के करैं मालिनी माल्य भंगैं २०, कहीं रंगरेजावली चैल रंगैं २१
कहीं ब्रीहि गोधूमरके गंज २२ भारी, कहीं रासि मप्यै २३ गहैं द्रोणें
१ खारी २ ॥ ९ ॥

कहीं रक्त १ रीती २ नके गंज डारे २४, कहीं नैर नाना रूपये ३ बि
थारे २५ ॥

कहीं स्वर्णकारावली हेम ४ तुल्लै २६, कहीं ग्राम गंधीनके गंध ५ खुल्लै
कहीं थंभ ६ संबंढ तुल्लै तराजू २८, कहीं हेम दिंडोल बंधे दुर्याज २९
कहीं निखसैं नीर कुल्या १ प्रणाली २। ३०, कहीं ब्रज सोहैं बनैं

१ कहीं पर सिकलीगर उत्तम शस्त्र मांजते हैं और साणको फेरनेवाला २ अग्नि
कणों को धारण करता है ३ कहीं पर तूनगर कटे हुए वस्त्रों को जोड़ते हैं और
कहीं पर ४ रुई से छाई हुई पीजण बजती है ॥ ७ ॥ कहीं पर ५ पारा ६ कांसी
के ७ समूह चोड़े पड़े हुए हैं और कहीं पर ८ सोला और कथीर के समूह
को जोड़ते हैं, कहीं चितरे ९ मकानों को रंगते हैं, कहीं पर भाट लोग जुदेही
१० नवीन स्तुति पढते हैं ॥ ८ ॥ कहीं पर कितनी ही मालनियें ११ मालाओं
के भेद करती हैं १२ कहीं रंगरेजों की पंक्ति वस्त्र रगती है १३ कहीं पर धान्य
के १४ गेहूँ के बड़े ढेर लगे हुए हैं सो १५ द्रोण और खारी नाम के तोलों से
राशियों को नापते हैं [वत्तीस सेर का एक द्रोण और सौलह द्रोण की एक
खारी होती है] ॥ ९ ॥ कहीं १६ तांबा १७ पीतल के समूह पड़े हैं और कहीं
पर नगर में अनेक शिखों के रूपये फैलाये हुए हैं १८ कहीं पर, सुनारों की
पंक्ति सुवर्ण तोल रही है और कहीं गंधियों के १९ समूह गंध खोल रहे हैं ॥ १० ॥
कहीं पर थंभों से २० बंधी हुई तराजू से तोल रहे हैं और कहीं दोनों ओर सुवर्ण
के भूले (हिडलाट) बंधे हैं २१ कहीं नहरों और २२ नालियों से पानी बहता है

आलवाली३१ ॥ ११ ॥

कहोंके घटीजत्र चले चठठै३२, कहों नीतिकी प्रीतिधी भीतिनठै३३
खलूरी कहों खगगके मगग सदै३४, कहों तोख२के राहमें लाह
लदै३५ ॥ १२ ॥

कहोंवान२संधानपेच्छीन पारै३६, कहों फारि वदूक४गुजा उतारै३७
पटेवाज के ढालतैं वारपेलै३८, कहों मल्लविद्या बढे दावमेळै३९ १३
कहों वाल१ हुल्लासकै रास रखै४०, कहों भट्टा बुल्लै४१ कहों न
द२ नखै४२ ॥

कहों खजरी१ मज्जरी० ढोल३ गजजै४३, कहों हिंडिमी४दुदुमी५
चग६ वज्जै४४ ॥ १४ ॥

कहोंतंति७की पतिपैं कोनलगै४५, कहों वारनारीनचैं दारअगै४६
कहोंसुद्धभृगार१की धार चले४७, कहों दास२उल्लासआभाउमल्लै४८
मचै४९ कांपि कारुण्य३ के उंग४ मडै५०, कहों वीर५ आतक ६
अकखै५१ अखंडे ॥

वनै५२ क्वापि बीभत्स७के चित्रे८ बल्लै५३, कहों सात९में कैत
१कहीं पर पावले पने छप छप आभा दत हैं ॥ ११ ॥ कहीं कितनी ही घरदियें
चलती हैं और कहीं नीति की प्रीति से १ बुद्धिका भय नष्ट होता है अर्थात्
नीति की चरया होता है ३ कहीं पर अलाड़े में खन्न के मार्ग साधते हैं और
कहीं ४ भाला फेरने के मार्ग में लाभ प्राप्त करते हैं ॥ १२ ॥ कहीं पर पाणों का
सन्धान करके ५ पक्षियों को गिराते हैं और कहीं वदूक खलाकर ६ चिरमी
बढाते हैं ॥ १३ ॥ कहीं पर उपासक हर्ष करके ८ नाचते हैं ॥ १४ ॥ ६कहीं पर
मातके याजा पर नजाराफ[नकली]लगती है और कहीं दार पर चेरपायें नचती
हैं कहीं पर शुद्ध भृगार रसकी धार चलती है और कहीं प्रसन्नता से हास्य
रसकी क्रांति पहती है ॥ १५ ॥ १०कहीं पर ११करुणारस मचता है और कहीं १२
रोद्ररस रचते हैं, कहीं पर वीर रस और कहीं पर पूर्ण १३मघानक रस बहार
ते हैं, कहीं पर बीभत्स रस बनता है और कहीं १४ अक्रुण रस कहते हैं और
कहीं पर १५सुन्दर निर्बद्ध है स्थायीभावजिसका ऐसा शान्त रस प्रकाशित करते
हैं "निर्वदस्थायिभावोस्ति शान्तोपि नवमो रस" बहुधा आचार्य रस आठ

निर्बेद खुल्लै ५४ ॥ १६ ॥

कहाँ भारती १ सात्वती २ वृत्ति आनै ५५, कहीं कौशिकी ३ आरभ-
टी ४ वखानै ५६ ॥

कहाँ नाटक १ प्रक्रिया २ भाषा ३ कहै ५७,

ही मानते हैं तहाँ कोई कोई ऋषियों का मत है कि वैराग्य है स्थायीभाव जिसका ऐसा आन्त भी नवमा रस है ॥ १६ ॥ अब यहाँ भारती से लेकर भाषिका पर्यन्त नाटक वृत्तियों (नाटकोंके भेद) हैं जिनके लक्षण साहित्यदर्पण के मतानुसार लिखते हैं सो जिनको इनका विस्तार देखना होवे वे साहित्यदर्पण में देखें १ जिसमें प्रायः संस्कृत के वचनों का व्यापार होवे और वह रत्नी के आश्रित नहीं किन्तु पुरुष के आश्रय होवे उले भारती वृत्ति कहते हैं, जिसका सविस्तर वर्णन साहित्यदर्पण की २८५ कारिका से देखो, १ महानुभावता शौर्य, दान, शक्ति, दया और सरलता से पूर्ण, हर्ष सहित, अल्प शृंगारवाली, शोक रहित और आश्चर्य सहित होवे उसको सात्वती वृत्ति कहते हैं, जिसके अधिक भेद देखने की इच्छावाले ४१६ वीं कारिका से देखें ३ नायिकाओं के भूषणों का मनोहर वर्णन जिसमें होवे उसको कौशिकी वृत्ति कहते हैं, जिसका पूरा वर्णन ४११ वीं कारिका से है, ४ माया, इन्द्रजाल, संग्राम, क्रोध और घबराना आदि चेष्टाओं से युक्त, तथा वध और बन्धन आदि से उद्धत वृत्तिका नाम आरभटी है, इसके चार भेद हैं सो साहित्यदर्पण की ४२० वीं कारिका से देखो, ५ जिसका वृत्तान्त प्रसिद्ध होवे, मुख आदि पाँच संधियाँ होवें, विनास और ऋग्नि आदि गुणवाला होवे, नानाप्रकारकी विभूतियों से युक्त होवे, सुखदुःख की उत्पत्ति से नानाप्रकारके रसों से परिपूर्ण होवे, इसमें पाँच से लेकर दस तक अंक होते हैं, प्रसिद्ध वंशवाला राजऋषि, धीर, उदार, प्रतापी, दिव्य, अथवा दिव्य गुणवान् नायक होता है अंगी रस एरुही होता है शृंगार अथवा वीर रस प्रधान होता है, अन्य रस अंगभूत होते हैं, निर्वहण नामक संधियों, उद्धत रस होने हैं, चार मुख्य कर्म करनेवाले नट होते हैं और गोपुच्छ के अग्र के समान जिसकी रचना हो उसको नाटक कहते हैं ६ प्रक्रिया नामका कोई जुदा भेद नहीं है परंतु प्रकरण को प्रक्रिया माना है सो इसका लक्षण ५११ की कारिका में है कि वृत्तान्त लौकिक और कथिकल्पित होवे, शृंगार अंगी, नायक ब्राह्मण अथवा क्षत्रिय होवे, जो धर्म अर्थ काम आदि सकाम साधन में परायण होवे उसको प्रकरण कहते हैं ७ जिसमें धूर्त नायक का चरित्र होवे, बीच

महासाठरूप दिवापरूप व्यायोग ६ पद ५८ ॥१७॥

समावादिकारात ७ को कांयि सखे ५९, कहाँ अक ८ वीथीएनसों

पीय में अनेक प्रकार की अवस्थाएँ बदलती रहें, एकही अक हावे, निपुण और पण्डित घिट एकही पात्र होवे, अनेक अनुभव किये हुए अथवा अन्यके अनुभव किये हुए पदार्थ को रंग भूमि में प्रकाशित करे, सपथ और शक्ति प्रत्युक्ति आकाश की ओर मुग्न करने कर, शौर्य और मौभाग्य के वर्णन से पीर और शृंगाररस को वृत्तितकरे, इतिहासकल्पित होवे, सुख और निर्वहण नामक दो सधिया होवें और दशो जात्य [वृत्त्य] अग होवें जिसको भाष कहते हैं १ भाग के समान सधि, सधिया के अग, जात्य के अग, और अक से जिस की रचना होवे, निदनीय पुरुष का जिस में वृत्तांत होवे, और कविकल्पित होवे, जिसको प्रहास [प्रहसन] करते हैं इसका अधिक वर्णन देखना होवे तो ५३४ की कारिका से देखे २ जिसमें माया, इन्द्रजात, समाम, क्रोध, घमराणा आदि चेष्टाय और सूर्य चन्द्र के ग्रहण विशेष कर होवें, जिस में पुराण आदि से प्रसिद्ध इतिहास होवे, योगी रीति रस होवें और अन्य रस पग होवें, पार आरु होवें, विष्कम्भक और प्रवेशक न होवें देवता गन्धर्व यक्ष राक्षस पक्षे सर्प भूत प्रेत पिशाच आदि उत्पन्न बडत लौहनायक होवें वृत्तिया में से कौशिकी नहीं हावे, सधियों में से विमर्ष सधि न होवे, हास्य शात शृंगार रसों को छोड़कर पाकी के छ रस बज्जल होवें जिसका नाम हिम है ३ जिन में प्रसिद्ध इतिहास होवे, स्त्रीजन प्रत्य होवें, गर्भ और विमर्ष सधि न होवे, बहुतसे मनुष्य होवें, एक अक होवें, बुद्धका उदय स्त्री के निमित्त बिना होवें, कौशिकी वृत्ति नहीं होवे, प्रख्यात नायक होवे, यह राज-ऋषि, दिव्य य घोर उद्यत होवें, हास्य शृंगार और शात इन रसों को छोड़कर अन्य रस अगी हावें, जिसको व्यायोग कहते हैं ॥ १७ ॥ ४ समव है आदि में जिस के और कार है अत में जिनके ऐसे "समवकार" का लक्षण यह है कि दंष्टता और दंष्टता के आश्रित प्रसिद्ध वृत्तान्त होता है, विमर्षरहित सन्धिया होती है तीन अक होते हैं उनमें से पहिले अक में दो सान्धिया होती हैं और पिछले दो अकों में एक एक सन्धि होती है प्रसिद्ध वेशता और दानध उदात्त पारह नायक हाते हैं इसका सविस्तर लक्षण ५१५ की कारिका में देखो ५ कहती पर ६ जिस में उत्सृष्टिक नाम अक होवें प्रयोग करनेवाले मनुष्य सामान्य होवें, करुणरस स्थायी होवें, बहुत सी स्त्रियों का उदन होवें, प्रसिद्ध वृत्तान्त को कवि अपनी बुद्धि से पढावे, भाग के समान सन्धि वृत्तान्त और

नैर नद्वै६० ॥

कहाँ केक ईहांमृगै१० अच्छ आनै ६१, बडे पंक्ति१० संख्याति

एकै बखानै६२ ॥ १८ ॥

कहाँ रूपकें अंतले यों उपादी, बदै अंग संख्या समाक्षेप वादी ।

मुखे१ नाटिका२ भाषिका१८ अंत२ मप्पी, थिरा पंक्ति१०ओ अ

८ ए सर्व१८ थप्पी ॥ १९ ॥

अङ्ग होवै, हार जीत होवै, बाणी से युद्ध होवै, और बहुत दःखोत्पादक पच होवै उसे अङ्ग कहते हैं। जिस में एक अङ्ग होवै, नायक चाहे स्त्री कल्पनाकर लिखा जावै, विचित्र प्रत्युक्ति का आश्रय लेकर आकाशयापित के वचनों से अधिकतर शृंगार को और कुछ और रसोंको भी सूचित करे, सुख और निर्वहण ये दो सन्धियां होवैं, और समग्र पांचों ही धीज आदि अर्थप्रकृतियोंका प्रयोग होवै, नगर को बांधते हैं अर्थात् ऊपर कही हुई वृत्तियों से नगर को बांधते हैं १ जिसमें मिश्रित वृत्तान्त होवै, चार अंक होवैं, मुख प्रति मुख और निर्वहण में तीन सन्धियां होवैं, नायक और प्रतिनायक प्रसिद्ध और धीरोद्धत मनुष्य तथा दिव्य होवै परन्तु यह नियम नहीं कि नायक असुक ही होवै और प्रतिनायक असुक ही होवै, नायक प्रतिनायक के सिवाय दूसरा एक अनुचित कार्य करने वाला होवै, यह इच्छा रहित दिव्य स्त्री को हरण करने आदिसे चाहता है इस कारण इसका शृंगाराभासभी कुछ कुछ दिखाया जावै, इत्यादि विशेष विस्तार ५१८ की कारिका में देखो। २ पंक्ति नाम का कोई भिन्न भेद नहीं मिलता परन्तु आगे के २०के छंद से रूपक को ही पंक्ति मानना लिखा है ॥ १८ ॥ इन सबके रूपक (दृश्यकाव्य) कहते हैं जिनमें ३ समाक्षेपवादी, मुख, नाटिका, भाषिका को अन्त में लेकर उल्लेख अंग कहते हैं। इनमें मुख का लक्षण यह है, जिस में नानाप्रकार के अर्थ और रसकी उत्पत्ति होवै, धीजकी उत्पत्ति होवै, प्रारम्भ होवै। नाटिका का लक्षण है कि वृत्तान्त कल्पित होवै, पात्र प्रायः स्त्रियां होवै चार अंक होवैं, नायक प्रसिद्ध धीरोद्धत राजा होवै, नायिका अन्तःपुर से संबध रखनेवाली, संगीत में तत्पर, नवीन अनुरागवाली, राजवंश से उत्पन्न कन्या होवै। इसका विशेष वृत्त ५३९ की कारिका में देखो। भाषिका का यह लक्षण है कि जिसमें उत्तम सामग्री होवै मुख और निर्वहण संधि होवै, कौशिकी और भारती वृत्ति होवै, एक अंक होवै, उदात्त नायिका होवै, नायक हीन होवै इसके उपन्यास आदि सात अंग हैं ॥ १९ ॥ साहित्य में दश प्रकार के रूपक हैं

मिती पंक्ति १० ह्यै रूपकारुया प्रमानी, जया अष्ट भू१८ ते उपा-
द्याहुजानी ॥

कहौ स्तंभ १ प्रस्वेद २ रोमाच ३ कर्तै ६३, स्वरामोठ ४ लो ६४ अश्रु ५
बैवर्ग्य ६ सत्यै ॥ २० ॥

कहौ कप ७ केठा प्रलो ८ भाव भासै ६५, कहौ पीठमर्द १ प्रहासी २
बिलासै ६६ ॥

सजै ६७ कापि सगीत १ कालानुसारी, भनेवतिके जातके भेद भारी २ १
मचे व्हा १ श्रुती वेद बाईस २ स्मोहै ६८, स १ में चो ४ म ४ में चो ४ प ५ में चो
४ दि सोहै ६९ ॥

गिने ७० रे २ रु धे ६ त्रि ३ त्रि ३ द्वै २ ग ३ नी ७ में, सुलै १ तीव्रिका १
छोहिनी २ २ अत २ २ श्रीमें ॥ २२ ॥

लसै ७१ पच ५ ही जाति दीप्ता १ दि लैकै, छटै ७२ जे जया भाग सों
राग छैकै ॥

मचे मोद त्रि ३ ग्राम खड्गा १ दि मंहे ७३, मिली ७४ मूर्छना इक्कीसी
२१ अखंडे ॥ २३ ॥

क्रिया १ गीत्य २ लंकार ३ ओ गार्मका ४ ५ ५ दी, बदै ७५ रम्यता जुष्ट
के पुष्ट बादी ॥

कहौ सेंधवी १ कंम्म आलाप आनै ७६, मुखारी २ कहौ गौड़ ३
कियागया है सो यहा पर ग्रन्थकर्ता न इसी रूपक को पक्ति लिखा है १ स्वर
भंग 'यहा पर स्तम्भ आदि सब हाव हैं जिनके अर्थ प्रसिद्ध हैं इस कारण इन
की भिन्न भिन्न टीका लिखना अनावश्यक है' ॥ २० ॥ १ कहौ पर समय के अनुसार
सगीत सजते हैं ॥ २१ ॥ १ पञ्ज में चार ४ मध्यम में चार ५ पंचम में चार ६
पंचम में तीन ७ वैषत में तीन, गाधार में और निषाद में दो दो अतिपा हैं सों
तीव्रा को आदि लेकर छोहनी के अन्त तक शोभा देती हैं ॥ २२ ॥ दीप्ति आदि
लेकर राग की पाछों ही जातिया शोभा देती हैं, पञ्ज को आदि देकर तीनों
ग्राम रचते हैं और इक्कीस ही मूर्छना छुटि रहित मिली छुटि हैं ॥ २३ ॥ ८
गमक आदि ६ सुन्दरता से युक्त हैं १० यहासे लेकर इक्कीस के छद् तक

सालंग४ मानै७७ ॥ २४ ॥

कहौ राग घंटा५ रमा६ टक्क७ कह्यै७८, पहाडी८ बिहंगा९ख्य सा

मंत१० पछ्यै७९ ॥

कहौ कोकिलै ११ कोकिलालाप कैजै८०, प्रगाता कहौ कर्णटी

१२ मारु१३ पूजै८१ ॥ २५ ॥

कहौ नाट१४ कल्याण१५ गौरी१६ कुरंगी१७, स सौदामिनी १८

कौमुदी१९ चक्रि२० संगी८२ ॥

बराली२१ कहौ एल२२ पट्टा२३ऽऽदि बंधै८३, सबैठाँ ग्रह१ न्यास २

अंसा३दि संधै८४ ॥ २६ ॥

अहो एकसो अग बावीस१२२ अँसँ, पुरी मुख्य रागावली प्रान

पँसँ८५ ॥

निबद्धा१ निबद्धा१ऽऽख्य व्है भेद न्यारे८६, अनुप्रासलै८७ आदि१

मध्या२न्त३ वारे ॥ २७ ॥

गह्यै८८ कापि वहाँ पंक्ति१० संख्या गुणा१०ऽऽली, सजै ८९ कापि

त्रेता३ प्रबंधा३ऽऽख्य साली ॥

कहौ ताल चंचत्पुटै१ लै क्रमावै९०, कहौ चचसौँ लै पुटै२ लीन

लावै९१ ॥ २८ ॥

कहौ षट् पितापुत्र३ उद्घट्ट४ कह्यै९२, वनै मार्ग१ तालाख्य यौ

सर्व बह्यै९३ ॥

तहाँतालदेशीय२लैमैक्रमावै९४, लखोजेजथासंभवीछंदलावै९५२१।

तहाँतालश्रीरंग१लैमैनिकासै९६, भलेमंठिके२चञ्चरी३मंठभासै९७

गनियों के नाम हैं ॥ २४ ॥ १ कोयल की अलाप से शब्द करती है ॥ २५ ॥

२६ ॥ २ रागों की पंक्ति में ॥ २७ ॥ ३ चञ्चुपुट से लेकर इकतीस के छंद

र्यन्त तालों के नाम हैं जिनके लक्षणों का संगीतरत्नाकर के तालाध्याय में

विस्तर वर्णन है सो वहाँ देखो. यहां इनकी अत्यन्त विस्तारवाची व्याख्या

हीं की जासकती ॥ २८ ॥ २९ ॥

कहाँ मल्लिकामोद१में मोद कहैं१८, पगे पूर्णा६ ककाल७ त्यों म-
ल्ल८ पहैं९९ ॥ ३० ॥

कहाँ मुम्मरी९ हंस१० म्पा११ क्रमावैं१००, सु लै स्कद१२ त्यों
सिंह१३ घत्ता१४ समावैं१०१ ॥

तया चित्र१५ कुता१६रूप१०२ लै एकताली१७, मचैं१०३ ब्रह्म १८
ज्यों रुद्र१९ त्यों बिंदुमाली२० ॥ ३१ ॥

कहाँ इक्क१ लै१सर्वही ताल सदै१०४, विधा व्याहके राहके ला-
ह१ लदै१०५ ॥

ठनै देव आगार घटा१ठनकैं१०६, कहीं मल्लरी२ *कबु३मम्मा४
मनकैं१०७ ॥ ३२ ॥

कहाँधामचोरामचामोद१खुल्लैं१०८, कहींदारुकेजोलहिंडोल मुल्लैं१०९
कहाँ द्वार१ बाजार२ इट्टा३ कवारी४, सुठारी सजी११०चित्रकारी

१११ सवारी ॥ ३३ ॥

कहाँ कुट्टिमोगार५ भंडार६ भासैं११२, नये ओक७ बैसोक ८ के
सोक नासैं११३ ॥

कहाँ सधिल्ला६ मग्ग १० शूगाटं११सोदै११४, कहीं चत्तवर्ग१२ऽजी
मिली चित्त मोहै११५ ॥ ३४ ॥

कहाँ गोख१३ जाली १४ लगे ११६ तोखकारी, कहीं ११७ सौध,
१५ संधानिका१६ चित्रसारी१७ ॥

कहाँ सुभ्र११८सदौनिनी१८हस्तिसाला१९, कहीं मदुरा२०चीतिमाला

॥३०॥३१॥अथ ॥३२॥कहीं पर घरोंम और १ बागों में सुगंधि खोलत हैं "दूर
सेफ जानेवाली सुगंधि का नाम आमोद है" *काएके चपल हिंडोले ॥३३॥कहीं
पर छोटे घर और कहीं पर महार शोभा देते हैं ४कितने ही नयीन घर और
५गयन घर शोक का नाश करते हैं ६ कहीं गुप्त मार्ग(सुरंग)और कहीं ७चौहट्टे
शोभा देते हैं ८चबूतरोंकी मिली हुई पक्षितया ममको मोहती हैं ॥३४॥९सतोष
कारी १०राज सदन (महल) ११मधिरा गृह १२ गौशाला १३हयशाला में घोड़ों

बिसाला ११९ ॥ ३५ ॥

कहीं भित्ति ११९ कित्ति बेदी २२ बिलासै १२०, कहीं अंगना अङ्ग-
ना २३ भा प्रकासै १२१ ॥

कहीं पुण्यप्रासाद २४ खुल्लै १२२ पताका २५, रजै १२३ हेमकै
कुंभ २६ ज्यों चंद रांका ॥ ३६ ॥

कहीं राजती देहली २७ गेह पक्की १२४, कहीं अर्गला २८ ताल २९
खासा १२५ खडकी ३० ॥

सुधामैं सने धामके थंभ ३१ धारै १२६, बने तीव्र ३२ गोपानसी ३३
भा बिथारै १२७ ॥ ३७ ॥

कहीं १२८ दंतै ३४ प्रघीवै ३५ अट्टी ३६ अलिंदी ३७, भिधौ सर्वतोभद्र
३८ लैकै बिछिंदी १२९ ॥

भनै सिलिप सोभा १३० कहीं सौलभंजी ३९, कहीं अंजली कारि-
का ४० रंगरंजी १३१ ॥ ३८ ॥

की बिशाल पंक्तियाँ हैं ॥ १५ ॥ कहीं पर दोवारें और १ चबूतरियाँ
बड़ी कीर्ति लेकर प्रकाश करती हैं "विलासः प्रकाशे" इति शब्दार्थचिन्तामणिः ॥
कहीं पर घर के आंगन (चौक) में २ स्त्रियाँ कान्ति प्रकाश करती हैं ३ सुन्दर
महलों पर ध्वजायें खुली हैं और जैसे शरद ५ पूर्णिमासी में चंद्रमा शोभा
देवै तैसे श्वेत महलों पर ४ सुवर्ण के कलश शोभा देते हैं "शरद की पूर्णिमा
की रात्रि में जल विष के कारण चंद्रमा का रंग लाल होता है" ॥ ३६ ॥ कहीं
घर की पक्की देहलियाँ १ शोभा देती हैं तथा चांदी की पक्की देहलियाँ हैं ७
आगल (भागल) ताले और उसमें खिड़कियाँ हैं ८ चूना में भीगे हुए ६ तीर
"तीव्र नाम तीर का है और देश भाषा में सीधे लंबे काष्ठको सेतीर कहते
हैं इसकारण यह शब्द बलीदेके अर्थमें प्रतीत होता है" १० मियालें (छादनाधार
वक्र काष्ठ) शोभा देती हैं ॥ ३७ ॥ ११ खूंटियाँ १२ झरोखे १३ महलों के ऊपर
की अटारियाँ १४ द्वार के बाहर का चौक १५ चौमुख (चौपाड़) १५ नामवाले
स्थान से लेकर १७ अभिलाषा युक्त परमेश्वर के मंदिर पर्यन्त १८ हाथी दांत
आदि की रची हुई पुतलियाँ १९ रंग से रंगी हुई लज्जा युक्त पुतलियाँ ॥ ३८ ॥

सजे१३२कापि सोपान४१ श्रेढी४२ निसैनी४३, नटै१३३ नटसाजा
४४ कहीं कजनेनी ॥

कहीं केंगिका४५१ थूल४६१२ उल्लोच४७३कच्छे१३४, कहीं
पीठ४८१४पल्लक४९१५ आस्तीर्ण५०१६अच्छे१३५॥३९॥

कहींविप्रमहै१३६कथाबेद१बादी, कृतीकापिअद्वैत२अर्घ्यै१३७अनादी
कहीं सत्य साहित्य३के अर्थ कहैं१३८, कहीं न्याय४की कोटिपै
चाय चहैं१३९॥ ४० ॥

दिपै१४० द्यूतविद्या५ कहीं अक्षदेवी, कहीं मोहमाया६ करें १४१
सौठयसेवी ॥

कहीं १४२ बापिका१ कुंडर कौसार ३ कूपी४, रुचे नीर नारी भैं
१४३ भानुरूपी ॥ ४१ ॥

धरे१४४ ग्लौ१ कहीं धीरै२ र्यों गर्धभूली३, फबै१४५ केतकी ४१
मल्लिका५१२ कापि फूली ॥

कहीं धूप धूमावली६१३जाल कहैं१४६, चहे सेवती७१४ तब रोलबै
चहैं१४७ ॥ ४२ ॥

कहीं ब्रह्मचारी१ क्रमै१४८रीति' रागी, कहीं दान अर्घ्यै १४९ गृही
१ पत्थरोंके रचेष्टए जीने (पगयिये) २ काण्डक रचेष्टए जीने और नीसरनिया, ये
सब पदार्थ सिलिप्यों (फारीगरों) की शोभा बताते हैं और कहीं नृत्य
शास्त्राओं में ३ कमलनयनी झिया नृत्य करती हैं ४ कहीं पर छोटे डेरों
५ बड़े डेरों और ६ थद्यों (सामियानों) के समूह हैं ७ सिंहासन तथा पाजोड,
दोखिये (पिल्लग) और वस्त्र ८ बिछोने हैं ॥ ३६ ॥ ९ कहीं पर पण्डित
लोग वेदांत के अनादि अद्वैत मत का उपदेश करते हैं १० साहित्य
का अर्थ निफाखते हैं ॥ ४० ॥ कहीं पर द्यूत करनेवाले द्यूत करते हैं ११ छली
मनुष्य अधिष्ठा की माया फैलाते हैं १२ ताजाधों में १३ अपने अपने सहस्र
पानी भरते हैं ॥ ४१ ॥ कहीं १४ कपूर १५ कुंकुम १६ कस्तूरी रक्खीहुई है
१७ बेला १८ सेवती के गुच्छों पर अमर चढ़ते हैं ॥ ४२ ॥ १९ मुक्ति में प्रीति

पंच ५ पागी ॥

जुरे अग्निहोत्री जुहू अग्नि अंचै १५०, सुधी के कहीं नव्य अन्धष्टि
संचै १५१ ॥ ४३ ॥

कहीं आल१ जंगाल२ सिंदूर३ केरे१५२, कहीं हेम१ ह्रीरे २ सके
रासि हेरे१५३ ॥

कहा नील३ गारुत्मती ४ चैं प्रकासैं १५४, भले पञ्चरागाख्य सु-
क्ताख्य भासैं १५५ ॥ २४ ॥

प्रवाली१७ रसोनीरा८ कहीं रंग पडैं१५६, कहीं पुष्पवंतारऽऽदिकां
तां२ त३।९।४।१० कडैं१५७ ॥

कहाँ १५८ तैल १ छीरा २ दि लौ स्फाटिका ५१२१६१२ऽऽख्या,
सगोमेद ७१३ इत्यादि केही समाऽऽख्या १५९ ॥४५॥

सुहाये कहीं सिद्धं बानिज्य साजै १६०, रचे चे कहीं हुंन १ निष्का २
दि राजै १६१ ॥

कहों लौ कैलाश नीवि २ बित्त बढावै १६२, प्रभा क्रेय १ कैयपा २५५
वली काणि पावै १६३ ॥ ४६ ॥

कलों बाहरेः क्वापि छोरैः १६५ घुरेः कों, कों केऽन रक्खै १६५
स्वर्धौ बाहरेः कों ॥

करनेवाले ब्रह्मचारी फिरते हैं १ होम की अग्नि का पूजन करते हैं २ कितने ही श्रेष्ठ बुद्धिवाले ३ नवीन विलक्षण यज्ञ का संचय करते हैं ॥ ४३ ॥ ४ पत्नी १५ माणिक नामक ॥ ४४ ॥ मृगा और ६ वहसनियां ७ पुष्कराज आदि सुन्दर ८ इत्यादि कितने ही नामवाले रत्नों से ॥ ४५ ॥ शोभायमान ९ सेठ वणज करते हैं १० कहीं पर संचय किये हुए मोहर और ११ रुपये "निष्क व्यवहाररूपके" इतिशब्दार्थाचिन्तामणिः॥ आदि शोभा देते हैं, कहीं पर १२ व्याज (सूद) लेकर १३ मूलधन को बढ़ाते हैं और कहीं पर मोल लेने और १४ बेचने की वस्तुओं की पकितियां शोभा पाती हैं ॥ ४६ ॥ कितने ही बहोरे धुरको १५ सूद छोड़ते हैं और कहीं पर कितनेही बहोरे १६ अपनी ओर अधिक

बिस्यो भूप बुंदीपुरी इक्खि औसी, कहीजाइ जोलाइ सामस्त्य कैसी
बिधा बैदिकी१ लौकिकी२ योग्य लखी, सबै भूप जे प्रीतिकी रीति
सदी ॥ ५२ ॥

॥ दोहा ॥

परिकर द्विरंदप्रतोद्धितैं, सविधि भिन्न हुव सर्व ॥
जंपति२ अंचलपर्व जुत, पेठे सहित पर्व ॥ ५३ ॥
उपयम देवशन अर्चि इम, बलि गुरुजन पय बंदि ॥
अंचल छुटि निज निज अयन, आये उभय२ अनंदि ॥ ५४ ॥
निज परिकर सब हित निरंत, बलि प्रासाद बुलाइ ॥
कवि१ बुध२ भट३ सचिवा४ दिकन, खिन दिय सिक्खखुलाइ ५५
करि भोजन नर्तन क्रिया, लखि कलुकाल ललाम ॥
इम अवसर सहिय सयन, राजराज प्रभु राम२० २१ ॥ ५६ ॥
जगि समय सूचित जथा, नित्य१ असन२ करि नाह ॥
बुध१ कवि२ भट३ सचिव४ नबिलासि, लिय संसद रसलाइ ५७

॥ षट्पात् ॥

सुनि१ लखि२ संसद सुपहु काव्य१ नर्तन२ आदिक क्रम ॥
रायं विविध दै रीझ रायं बढि चाय मनोरम ॥
समा अनंतर सबन कानि लोकन व्यवहितैं करि ॥

करते हैं ॥ ५१ ॥ १ उस सब पुरा का वर्णन कैसे किया जासकता है "यहां
लेखक दोष से सामर्थ्य के स्थान में सामस्त्य होजाना पाया जाता है जिसका
अर्थ है कि सब पुरी का वर्णन किस शक्ति से कहा जावे अर्थात् इस के वर्णन
की शक्ति नहीं है" ॥ ५२ ॥ परगह के लोग २ हाथीपोल से जुदे हुए ३ पति
पत्नी दोनों ४ बख के गणठजोड़े सहित ५ समय साधकर भीतर प्रवेश हुए
॥ ५३ ॥ ६ व्याह के देयताओं का पूजन करके ॥ ५४ ॥ फिर हित में ७ नियुक्त
होकर अपनी परगह के सब लोगोंको महल में बुलाकर उपंडित ॥ ५५ ॥ ५६ ॥
८ समा के रस का लाभ लिया ॥ ५७ ॥ १० धन ११ राजा को सुन्दर उत्साह
बढ़कर ५ अद्ब (लंकोच) घाले लोगों को दूर करके

सकलवर्षस्यन सहित सकल गुन पठन समुद्धरि ॥

बलि इम प्रदोस सध्या३बिरचि रत्ति कछुक सैवयस्य रहि ॥

लहि असन जाइ जननी निक्षयं जोग्यसपन बिषसैजुगरहि

इत धात्रेय अमात्य कृष्णाराम सु बढते क्रम ॥

रचि सिवनाथ१२ अमृतराम२२ सम्मद सभव सम ॥

पतिन सह आपान१असन२ बिहरन३ आखेट४न ॥

सर१उपवन२ प्रासाद३ मुख्य दिखवन फुकाइ मन ॥

सब स्वीय अधिप परिकर सहित प्राघुनं गन इम धस्र प्रति

बिलसन बढाइ रक्खे विविध कति मासन करि लाड कति ॥५९॥

रूपराम१ सरदार२ मिप्र१ ऊंरुज२ अमात्य बिय२ ॥

स्वसुता दायज सत्य देय पैहु मान सग दिय ॥

तिनहिं बुल्लि धात्रेय सुमति सिवनाथ१अमृत२सह ॥

किय पद्म लिपि कैलित महारानिय हित अति मह ॥

पुर हिंडउली१नवगाम२ पुनि इत पुर बच्छोला२दि इत ॥

कर अयुत पच५००००सह ग्राम कतिसचिवनतिन्हअपियसहित६०

उन मडिय तह अमल पट्ट रानिय१ सासन पगि ॥

इत प्राघुनं गन अखिल लोक मौरव सम्मद लागि ॥

प्रभु भट१ सचिव२न प्रथित लाड अतिसीम लढाये ॥

कतिक पैच्छ इम कहि प्रीति मरुपुर पढ्चाये ॥

इत भूप सकल गुन सक्षय सन उन्नति लहि प्रत्यह अधिक

१समान अवस्थाबासों सहित२अपनी समान अवस्थाबासों३माता क स्थान में

॥१८॥४पापमार्ग ५हर्ष छटपल होने से ६पानगोष्ठी (मतवाला)७प्राघुनों के समूह

को ८ प्रतिदिन ॥ ५९ ॥ ६ चैश्य १० अपनी पुत्री के साथ ११राजा मानसिंह ने

दहेज में भेजे थे १२पद्म लिखकर बिदित किया ॥६०॥ सब १३प्राघुने लोग १४

मारवाड़ियों ने १५ कितने ही पक्ष ऐसे निकालकर १६ जोधपुर में १७ प्रतिदिन

बुधपन बँयस्य गनतैंहु बढि सब पटु हुव मति साहसिक ६१
 करन अगघ बुध३ कविन२ बहुत हित पटु३न विवेचन ॥
 स्वगुन सिद्ध भट४ सचिव५ सद्धि हित रस अभिसेचन ॥
 माधव२ इम गत महत सुक३ आगत समाज सह ॥
 उचित समय उपहार बिभव विलासत दिनदुल्लह ॥
 प्रति जन बदान्य रीभूत प्रगुन सुष्ठ सगुन मन घन मुदित ॥
 इम अस्थिपाल अन्वय अरुन उदय अदि बुंदिय उदित ६२
 घनाक्षारी॥ सेखाउत स्यामसिंह जुंभुन नगर नाह,

कूरम कुहकं मुख्य भ्रात१ रु भतीज मारि ॥
 आप पाइ पत्तन बसाऊ गल अंगमि रु,
 धिगुं चित धीठ भयो धूतन धुरहिं धारि ॥
 ही गुलाबकुमारि२०२१२ तनूजा तास ज्ञात गुन,
 सगपन ताको कस्यो प्रभुसौ हित प्रसारि ॥
 जोधपुर जाइ बर विदालौ सिधारे सुनि,
 बुल्ले गृह व्याहिवे बडे जव संह बिथारि ॥ ६३ ॥
 तब सुंचि४ सुक्र६ सध्य२ रिक्ता९ पै सुमह तानि,
 व्याह पुं७ब१ बरने सबै बिधि सधाइ सिव ॥
 केदारस थान ढिग श्रीजित रचित कैम,
 आठहय सिकार अँट१ निवासि सुरेसँ इव ॥

१ समान अवस्थावालों से ॥ ६१ ॥ २ वैशाख मास गया ३ ज्येष्ठ मास आते ही ४ स्यामग्री ५ अपने गुणों से सब के मन लुराकर ६ अस्थिपाल के कुल का सूर्य ७ बुंदी रूपी उदयाचल पर उदय हुआ ॥ ६२ ॥ ८ ठग कछवा हे ने ९ धिक्कार योग्य १० गुणों को जाननेवाली उसकी पुत्री का ११ उत्सव बहाकर ॥ ६३ ॥ १२ आषाढ सुदि १३ पहिले विवाह में वर्णन किये हुए सब १४ मांगलिक कार्य १५ सुन्दर १६ जिसका सिकार बुरज नाम है वहाँ निवास किया १७ इन्द्रकी भांति

कज्ज विधि साधि मात वहुरि विधेय करि,
 *चक्र लौ चलत देखिवेकों जुरे देव दिव ॥
 योनि खुलाइ ताही धानसों बसुन बुद्धि,
 सिंचे काव कृष्णाराम सुमति महासचिव ॥ ६४ ॥

इतिश्री वशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणोऽष्टमराशौ रामसिंह
 चरित्रे विहितयोधपुरविवाहरामसिंहबुन्दीपुग्मवेशसमयबुन्दीवर्णन
 सेखावाटीबिसाऊविवाहार्थप्रयाणवर्णन सप्तमो मयूख ॥ ७ ॥

आदित एकोनसप्तत्युत्तरत्रिशततमो मयूख ॥ ३६९ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाप ॥

॥ आर्या ॥

विधि सब गद्दि बिवेकी, किय सिव केदार पात दल पहिलो ॥
 कविजन घन १ जनु केकी २, लसि सम्मद रीम लैन लगे ॥ १ ॥
 येताल ॥ केदार ईस निकत मभु कहैं सब विधेय सधाइ ॥

धात्रेय कृष्ण अमात्य धुरधर मह अमेय मचाइ ॥

पौगड १ जात किसोर २ प्रकटत अई सब उपहार ॥

वय तुल्लि छुल्लि दिखाइ बहु विधि देव देन उदार ॥ २ ॥

* सेना छोकर चलते समय † आकाश में ‡ घन घंटकर ॥ १४ ॥

श्रीवशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टमराशि में, बुद्धी के भूपति
 रामसिंह के चरित्र में रामसिंह के जोबपुर विवाह करके पीछे बुद्धी में प्रवेश
 होते समय बुन्दी के वर्णन का और सेखावाटी में पसाऊ विवाह करने के अर्थ
 प्रयाण करने के वर्णन का सातवा ७मयूख समाप्त हुआ ॥ ७ ॥ और आदि से तीन
 सौ उनसठ १६ मयूख हुए ॥

ई सेना का पहला पड़ाव किया २ मेघ से मयूरों के इसमान काविलोग हर्ष
 युक्त होकर रीम लेने लगे ॥ १ ॥ ४ केदारेश्वर नामक शिव के स्थान में ५ अमाप
 उत्तमकरके, पौगण्ड अवस्था (पाच वर्ष से छोकर दश वर्षकी अवस्था का नाम
 पौगण्ड है) जाकर ६ किशोर अवस्था (दश वर्ष से छोकर सौ छह वर्ष पर्यन्तकी अव
 स्था का नाम किशोर है) के प्रकट होने पर ७ पूजनीय तथा योग्य सामग्री करके दान

बहुरीति इम वसु बिंद बुद्धिनि पात्र जन मन पूरि ॥
 रचि भा द्वितीय^२विबाह विरचन सज्जहुव सब सूरि ॥
 बुध विप्र^१ सूत^२ रु मागध^३न ब्रँज सुमति बंदि^४न सत्य ॥
 इह दे अनेक विधान उल्लसि इक इकहिँ अत्थ ॥ ३ ॥
 निज रंठ जोलग संक्रमेँ नृप चाहि तोलग चित्र ॥
 पिकखाइ भाइ अनेक पाँटव मान चाँटव मित्त ॥
 बुंदीपुरी सन त्याग बंटत संक्रम्योँ पहु सूरि ॥
 मग लैनहारन तर्कुंकन मचि भीर जस रँव भूरि ॥ ४ ॥
 जसलेत देत अनेक बिध वसु संक्रमेँ तिम जन्य ॥
 इन^१ भिदा ईन^२ छत्र^१ चामर^२ अंक^३ अंकन अन्य ।
 सब बस्त्र^१बाहन^२भूखना^३दिन ओर रीति समान ॥
 करते चले प्रभु व्याह कौतुक किति कानन कान ॥ ५ ॥
 जे सूत^१ मागध^२ बंदि^३ लै बैसु^१ सिक्ख^२ गेहन जात ॥
 उनतै अतीव प्रसार ओरन अध्वमै अधिकात ॥
 नमि सेस जाचक जीत बाचक पंथ होत निहाल ॥
 प्रतिपाँत योँ बैसुजात पूरन संक्रम्योँ छितिपाल ॥ ६ ॥
 मैय^१ के चले हय^२ के चले गय^३ के चले बय मत्त ॥
 पहिलै कहे मैय^१ अंग उन्नत जंगली जयपत्त ॥

॥ २ ॥ १ पहिछत २ चारख ३ बड़वा भाट ५ स्तुति करनेवाले भाटों सहित
 ४ चले ॥ ५ ॥ ६ अपने राष्ट्र (राज्य) में चले तहां तक ७ चतुराई से द
 मान और मित्रता के प्रिय वचन बोलकर, याचकों की भीड़ होकर यश का
 यद्गत ९ शब्द हुआ ॥ ४ ॥ इन वरातवालों की भिन्नता दिखाने के कारण
 १० राजा छत्र, चमरों के ११ चिन्हों से चिन्हित रखा ॥ ५ ॥ १२ धन लेकर १३
 मार्ग में १४ सुकाम सुकाम प्रति १५ धन का समूह देता हुआ ॥ ६ ॥ अवस्थ
 में मस्त १७ फितने ही १८ ऊट, घोड़े और हाथी चले जिनमें प्रथम कहेहुए ऊँचे
 शरीरवाले जंगल (घोकानेर के) देशके पैदाहुए जय को प्राप्त करानेवाले १८ ऊँ

कतिबेग पूर चलाक बासर इक्क१में सत१००कोस ॥
 परिविष्टं दुंदुभि सिष्टं मस्तक प्रच्छदे सिरपोस ॥ ७ ॥
 जुग२ कन्न भावन बाह पावन छन्न जेवर जाल ॥
 थल उच्च१ नीचरु नौ ठरैं जिनपैं भरे जलथाल ॥
 गोधेरं आनन तिक्रवता गुन पीत अजलि अम ॥
 थकिबो न जानत ढानं तानत बाहु देउल थम ॥ ८ ॥
 आरूढ अक लगाइ मस्तक जाइ बान उढान ॥
 मिलि आंगि सोर घने चले जनु बान इक१ दिस मान ॥
 मग सूचनी जलि बाहु बजत तीर घुघरमाल ॥
 बहु दूर जानत जावते तिन्ह बेग धाव बिसाल ॥ ९ ॥
 लघु लैम संहित यौ लसैं परि पेट्ट रज्जुव पास ॥
 अटक्यो सैमीर कि ताहि भैचत अध्व पहुँचन आस ॥

बेग से पूर्ण । एक दिन में सौ कोस चलनेवाले जिनकी पीठ पर नगारे २ घन्ठे हुए और मस्तक १ अष्ट शिरपोयों से ४ छापे हुए ॥ ७ ॥ जिनके दोनों ५ छोटे कान प्रशसा पाने योग्य जेवर से ढके हुए, जिन कंटों पर ऊँचे नीचे स्थलों पर भी पाल में भराहुआ जल नहीं गिरता ६ जो गोह (गोहिली) के समान तीक्ष्ण मुखके गुण से अजली (घोषा तथा खुशबिया) में पानी पी लेते हैं ७ जो दाया (ऊट की शीघ्र चाल विशेष) को फैलाकर धकना नहीं जानते वे मंदिर के धर्मों के समान सुजोषाके ॥ ८ ॥ ८ सपार की गोद में मस्तक लगाकर तीर के समान वहे जाते हैं और जैसे बारूद का भराहुआ पात्र ९ अग्नि के मिलने से एक दिश में जावे तैसे जाते हैं मार्ग की सूचना करनेवाली १० ललित (सुन्दर) घुघरमाल सुजों में ११ ऊँचे स्वर से यजती है, वे ऊँट घिया ल बेग की दोड़ से जाते हुए दूर जाकर नजर आते हैं ॥ ९ ॥ ११ रेसम की खोरी से यही हुई छोटी १२ लूम (तग क पास यथा हुआ रेसम या ऊन का गुच्छा) ऐसी घोभा देती है कि मानों ऊट को १५ मार्ग में पहुँचने की आशा स रुका हुआ १४ पवन उसको झँपता है [ऊट जब बेग से जाता है तब लूम पीछे को रहती जाती है सो मानों ऊटसे पीछे रहजानेवाला पवन उसको पकड़कर उसके सहारे से ऊटकी परापर होना चाहता है इसीसे वह लूम पीछे रहती है] मृमि पर ऊटके चरणों के बिन्ह होते जाते हैं सो मानों अपनी कामेय और छोटी

(४१७८)

बंशभास्कर

[रामसिंहके चरित्रमें]

मृदु ऋस्व पायतलानि मंडत छोनि मप्पन छाप ॥
अति लोल बाजिन लज्ज आनत आवजाव अमाप ॥ १० ॥
उपविष्ट इड्डर १ बाहु २ अंगन मध्य के अवकास ॥
भूस धावते कडिजाइ सूलिक मोक खंडुक भास ॥
लागि पेट लूम दुर्पास लंबित गुंफ के गजगाह ॥
प्रतिपास पंढरयकै कि रंजित बारि चयारि ४ प्रवाह ॥ ११ ॥
महि तौर १ पिडि पलान दौरवर २ कुंति ३ कंबल ४ मेल ॥
ककुदंगे ले बिच जे कसे मखतूल तंगन मेल ॥
कृत कांति रंजित नक्कईल १ न राजती कंठि कान ॥
पगि बंध पेट बिचित्र रस्सिन जे इचे अतिप्रान ॥ १२ ॥

जमेल १ नमेल २ अंत्यानुपासः ॥ १ ॥

गन घंटिका बजि तौर द्वार १ हमेल २ शृंखल ३ ग्रीव ॥

१ पगल्लिया से २ भूमि को नापने की छाप लगाना है कि यहां तक की भूमि नापली गई, वे ऊंट अमाप आवजावमें अत्यन्त रेचपल घोड़ों को लाजित करते हैं ॥ १० ॥ ४ आसण में और ईडर व भुजों के बीच में जिनके अवकाश (छेदी) है अर्थात् जिनकी पीठ के आसण लम्बे और भुजों व ईडर के बीचका भाग छेदी वाला है और जैसे ७ बिलको छोड़कर ६ खरगोस निकलें तैस शोभायमान होकर ४ ग्रीव दौड़त हुए निकलजाते हैं ६ जिनकी पीठ पर दोनों ओर लटकती हुई ८ रेसम की लूमें और कितने ही १० गुपे हुए गजगाह लटकते हैं सो मानों ११ पर्वत के दोनों ओर जल का प्रवाह गिरता है ॥ ११ ॥ ११ काष्ठ १४ कोमल चर्म और कबल के मेल से बने हुए १२ चांदी के पलानों से जिनकी पीठ ढकी हुई है, वे पलान १५ भुभी (मोरों के ऊपर के मांसपिंड) को बीच में लेकर १६ रेसम के तंगों के मिलाप के साथ कसे हुए हैं और नाकों से १७ चांदा की १८ नकेलें (गुरबाणें) और कानों में चांदी की १९ कड़ियां शोभा देती हैं, ये बड़े बलवान (ऊंट) २० रेसम की विचित्र रस्सियों से कसे हुए जाते हैं ॥ १२ ॥ गले में २२ उच्चस्वर से २१ घूघरे बजते हैं और गरदन में द्वार, २१ हालरा (हारविशेष) और सांकलियां बजती

सह भेकै१ झिल्लिन जोर सोर कि ओरओर अतीव ॥
 जिनपै सु बाजिनके चढाकनके लुभे मन जाइ ॥
 छेम हाल कौतुक काल चाल अनेक चित्रन छाइ ॥ १३ ॥
 पंथुभाज१ वेग२ बिसाल उच्छिन्न अक्षिकूट३ पदेस ॥
 वतरात गात दिपात वातन बाततेहु बिसेस ॥
 चलमै क्रमेलैक यों चले कति जान छुटत वान ॥
 बिलसत वाहन दबि वाहन भुम्भि१ व्योम२ विमान ॥ १४ ॥
 कति भारवाहक धार लाइक पार गौहक पथ ॥
 नहि लारवाहक औरनाहक जे सहै गति मथ ॥
 मुख मध्य१ मँल्लन फुल्ल गँल्लन आनि वाह्य२ पैतीक ॥
 घटना कवर्ग१ चैतुर्य४की घन ठानि गज्जत ठीक ॥ १५ ॥
 धवली करै अँवली अटे धर बुद्धि फेनन वार ॥

१६ सो मानों पारों ओर १ मंडक ओर झिल्लियों का अत्यन्त फोलाहल होता है, जिन ऊँटों पर चढ़नेको घोड़ों पर चढ़नेवालों के मनजाते हैं इनकी समर्थता का म क्रीडा के समय की चाल से अनेक आश्चर्य होते हैं ॥ १३ ॥ ४ जिनके घड़े ललाट, पछा पेग और ५ नेत्रों के गोखों का स्थान ऊँचा उठा हुआ है उनके शरीर पतलाने से शोभा देते हैं (मस्त ऊँट को पतलाने से वह गर्जना क्रिया करता है) और चलने में ६ पवन से भी विशेष है "वा गतिगं घनयो" इस शब्द से बात शब्द का अर्थ चलना है उस सेना में कितने ही ७ ऊँट ऐसे चले माना पाण छटा, वे ऊँट भूमि के वाहनों को और आकाश के विमानों को दपाकर विशेष शोभायमान हुए ॥ १४ ॥ इन ऊँटों में कितने ही ९ ताम धारण करनेवाले भारको उठानेवाले और मार्ग के पार होने के १० प्राद्वर्ती ११ जिनके साथ में कोई नहीं चलसका, वे चलने में गुथे (लगे) हुए १२ घृथा प्रेरणा को नहीं सहन करते और मुख में ११ दातोंके भीतर १४ नाखोंको फुलाकर १५ शरीरके अग्रपक्ष (गाँवों के एक हिस्से) को मुखके पाइर लाकर कवर्ग के १६ चौथे अक्षर 'घ' की घटना कर के गाजते हैं (घ घ शब्द करके, और उस प्रागका आकार भाग घ के समानही होता है) ॥ १५ ॥ जिस भूमि में इन ऊँटों की १७ पक्षि चली है उसको मुखके माँगों के १८ समूह

अनेखे लगैं मग उठि अप्पहि पिठि धारि पैहार ॥
 जिनके दुस्पास कसे सलीतन भार हिंडत जाइ ॥
 असुमंत तोलत अल्प अदिन ज्यों तुला अधिकाइ ॥ १६ ॥
 उरुचारमें गुरुभार उच्छलि यों लगैं प्रतिअंग ॥
 करि१ कुम्भ२ पच्छन लौ तुले परखें कि राजपतंग ॥
 अपदी१ कनात२ बितान३ थूर्ल४रु कोणिका५ चिक६आदि
 विनु ॥ बिठि पिठि बहैं रहैं रय नाद उद्धत नादि ॥ १७ ॥
 लहि मंच१ आदि१ समूहनी२ लग२ अध्व३के उपहार ॥
 लदवाइ सर्व अखर्व गर्व तजैन स्वामिन लार ॥
 जिन संगको खिनै कुंचके तिनकोहुँ क्यों रहिजाइ ॥
 बहिजाइ अतिभर१ श्रांतपत्त२न ततो बाह्य बनाइ ॥ १८ ॥
 जिनतैं बसैं पुर रति पात सु प्रातलों उठिजाहि ॥
 बसि सोहिंसोहि बहोरि मंगल होत जंमलमाहि ॥

वर्षा करके श्वेत कर देते हैं २ पीठके ऊपर पर्वत रूपी बाभेको धारण
 के १ क्रोधित होकर आपसेआप उठकर आग लगजाते हैं, उन ऊंटों के
 दोनों ओर कसे हुए सलीतों का भार हींड़ता जाता है सो मानों ३ प्राण
 धारण करनेवाला तराजू पर्वतों को तोलता है ॥ १६ ॥ ४ लंबी (शीघ्र) चाल में
 उनके ऊपर लदा हुआ बड़ा भार उछलकर ऐसा शोभा देता है मानों हाथी
 और कछुपको अपनी पांखों में लेकर ५ पक्षिराज (गरुड़) उनकी परीक्षा
 करता है [वाल्मीकि रामायण में यह एक कथा है कि लड़ते हुए एक हाथी
 और कछुएको, गरुड़ अपनी पांखों में लेकर उड़ गया था] ६ पड़दा ७
 ७ चंदवा (सामियाना) ८ बड़ा डेरा ९ छोटा डेरा आदि को १० भार उठा
 ने के बिना ही क्लेश के उस भार को पीठ पर उठाकर वेग में उद्धत ११ शब्द
 करते रहते हैं ॥ १७ ॥ मांचा (पिलंग) से आदि लेकर १२ बुहारी तक १३ मा
 ग की सामग्री १४ बड़ा गर्व करते हैं १५ कूच करने के समय १६ तृण भी घा-
 की पड़ा नहीं रहता १७ वे ऊंट अम युक्त होने पर भी अत्यन्त भारको उठाकर
 बाहर नगर बनादेते हैं ॥ १८ ॥ १८ रात्रि का पड़ाव होने पर जिनसे पुर बस
 जाता है और प्रभात तक वह पुर उठजाता है १९ वही पुर बारंबार बस कर

रामसिंहकेदूसरेपिपाहकावर्णन] अष्टमराशि-अष्टममयूख (४१=१)

बहु यों चले मय१ नारवाह२ रु भारवाह२ दु२ भेद ॥

पहु त्यों चले हय२ प्रानके पवमानके छकछेद ॥१९॥

धट१ अग२ बंग३ कलिंग४ गुर्जर५ कच्छ६ जगल७धाम ॥

कंवोज८वाल्हिक९पारसीक१० बनायु११ भवं जवकाम ॥

तातार१२चीन१३ह्रस्वा१४ताजिक१५अर्व१६रूम१७इरान१८

खुरसान१९रूस२०फिरगर२१खेत भये नये वय मान१२०॥

जिनते प्रयोजन भिन्नवै जयधार पंचक५धाव ॥

आखेट१ आह्वर२ अटि३ वन४ मग५ साधध सिद्धिअमाव ॥

मुख बैजू गुफित केसरावलि भिन्न भिन्न समान ॥

इक१वै अधोगत लव अहि मनिमेत बहुफन मान ॥२१॥

समान१ नमान२ अत्यानुप्रास १॥

जिनकेप्रफुल्ल भुरे बहिर्नुत नासिकाय जनात ॥

मनु ईहीतवै जित ताहिमें घुसिजात वार्त नमात ॥

क्रम पत्र तिच्छन कर्तरी कि करै गतागत कर्ण ॥

मनवेग कहत जानि सत्रुहिं ठानि सत्व मैदर्य ॥२२॥

नुत पाइ नाइ हैपच्छटा कृत जेरवध निरत्य ॥

सिधिलैत्व धारत सिर्जनी जनु उत्तरे धनु सत्य ॥

जर गुफ नेत्र पिधौनिका ति३हरी लसै छवि जुत ॥

जगल में मगल हो जाता है, इस प्रकार के १ मनुष्यों को और भार को ले जाने वाले दो तरह के जट चले और इसी प्रकार पवनके घमड़ को फाटनेवाले राजा के २ पक्षपान घाड़ चले ॥ १० ॥ ३ इन देशों के जन्मे हुए ॥ २० ॥ ४ पाँचों गतिपा में जयको प्रारण करनेवाले ५ हीरों आवि से गुपी हुई केसवालियाँ ६ मणि युक्त पद्म से कणोवाले सर्प के समान ॥२१॥ बाहर भुके और ७ फले हुए फुरणों के अग्रभाग जमाते हैं = खलित होकर ८ पवन नम्र होकर झुसता है १० तीली करतली के पानों के समान कान गतागत करते हैं ११ पराक्रम का समुद्र ॥ १२ ॥ स्तुति योग्य १२ कवे को नमाकर १३ राजापन १४ जरवध रूपी प्रत्यया १५ नेत्रों के टकने का वस्त्र (पजाळी)

जेवनीनके विश्कर्तै करे जनु गँलकी हरि जुत ॥ २३ ॥
 पँबि गंड१ भंड२न भा करै नत१ वृत्त२ गोधिँ प्रदेस ॥
 जयलेख पट्ट कि जानि जो उपदा धरै मन एस ॥
 जिन्ह हिठु हिंदत जेबदै लारलूम मुत्तिय जाल ॥
 मनु मूर्तही जव द्वार अर्थिन बद्ध बंदनमाल ॥ २४ ॥
 बय जोर तोर मरोर मंडत मात खंधन ढपाम ॥
 छक जानि जुबनकों भरै बढि पारि प्रतिबल छाम ॥
 जिन्ह पास पट्ट कुँसा लसै मृकुटी भिरी अधिजीन ॥
 खर पक्व आयस शृंखला सह लास्य आस्य खलीन ॥ २५ ॥
 कलनाँ बिसाल कुलौल चक्र कि द्वैरहि पुछन दोर ॥
 अधिपिठि सन्नतँ मध्य आसन जेब मासन जोर ॥
 नतभाव यों सहजै लसै तस ज्यों दुरतंगन नैद ॥
 पसमीन पीन अधीन बैठक लीन जीन प्रबद्ध ॥ २६ ॥
 बढि व्योम भंपत होत चामर नाचि साँचि बिसेस ॥
 गति अच्छके गुनज्यों उडै चउ४ पच्छके पँतगेस ॥
 चँल बेरँ नच्चत बेर नच्चत लुम्भ भार चउक४ ॥

१ तीन पड़दों की ओट में २ शालिग्राम विष्णु सहित ॥ २३ ॥ कपोलों
 के ऊपर ३ हीरों के कलश और ४ ललाट के झुके हुए भाग पर भूषण का
 गोलाकार पत्र शोभा देता है सो मानों मनके वेग को जीतकर मन के ६
 भेद किये हुए ५ विजय पत्र को धारण करते हैं, जिसके नीचे मोतियों की
 जाली शोभा देकर झूलती है सो मानों जेगने सूरतिमान् होकर ७ पाचकों
 के अर्थ बंदनमाल बांधा है ॥ २४ ॥ ८ गरदन बाध में नहीं समाती ९ समर्थों
 को दुर्बल करके १० रेसम की बाग का मस्तक जीण के ऊपर भिड़ा हुआ ११
 पके लोहे की सांकलियाँ सहित १२ मुखमें नृत्य करती हुई लगाम ॥ २५ ॥
 १४ कुम्भार के चाककी मोटाई की १३ गणना के समान जिनके दोनों पुटोंका
 फैलाव १५ पीठके ऊपर आसण का मध्यभाग झुका हुआ १६ बंधा हुआ ॥ २६ ॥ १७
 विशेष वक्र होता है १८ चार पाँखोंवाला गड़ड़ उड़ता है २० नचने के समय
 चारों गजगाहों के भार सहित १९ चपल शरीर भी नचता है

मतजानि सिक्खत नञ्चको जह एहु आनि मउकं ॥ २७ ॥

प्रतिफल केकि कलाप फुल्लन बालहस्त प्रसार ॥

फवि के रहे छवि के गहे बनि तेहु चामर फार ॥

खुर पक लोह कटाहसों खेर यों भिरी खुरताल ॥

किमु सत्रुके सुत मद१ कों तम२नें प्रस्यो ततकाल ॥ २८ ॥

इम लगि अंग्रि छुवैं ईला जिम अंग्रि दज्मत जात ॥

वांले होत त्यों चपलत्व निर्जित चचला१ मन२ बात३ ॥

जित सथि सूचन वहे मुरैं तित नैथि देर जनाइ ॥

जव मग ठानत वगकों सिथिलत्व आनन जाइ ॥ २९ ॥

चपलत्व चक्रमके चलों चिर वातचक्र१ चलाव ॥

धरनी धुजावत धारि केचन नागपेच२न धाव ॥

लासि के कुविंदैन वान भान अटै अटरनि३ लेत ॥

वपपै चढे जपपै वढे कति भीक४ क्रम सैमवेत ॥ ३० ॥

भारि फूलआदस ५ के१ तिरै धर२ ज्यों फिरैं सैर१ भगर२ ॥

इम लै पटो६ कति अने श्रीसैन देन दीसन अग ॥

कतिभूप७ धारन लौ तरारन जात वारन कुहि ॥

जिन्ह वेग मारुत जोर दिठिहु दै महावत मुहि ॥ ३१ ॥

१ कथा कियहुए मगलीक समथ का लेकर माना ये जड़ गजगाव भी नृत्य को मोष्यने हैं "यहां म'मगलीकका और उक्त फथन कियेहुए का पावक है" ॥ २० ॥

२ मलग मलग प्रति मयूर पुच्छके समान ३ पालछा फूलता है ४ चमरों के समूह के समान घनकर ५ पक्षे लोहे की खुरताल, मानों अपने शत्रु (सूर्य) के पुत्र शनैःधर को ६ राट्टने पकड़ा है ॥ २८ ॥ ७ भूमिको चरख ऐसे छूते हैं

दुगुनि चपलता में विद्युत्, मन और पवन पराजित होते हैं ६ देरी नहीं जनाते ॥ २९ ॥ पवन के गोटे (घूर्णित) के समान १० चपलता के कारण इधर उधर फिरते जाते हैं ११ कितने ही नागपेशों से दौड़ते हैं १२ जुलाहे [यस्य धुमे वाले] के तार के समान अटने फिरते हैं १३ मिछे हुए ॥ ३० ॥ १४ टूटे हुए तार के समाग फूलआदस फिर कर भूमि को तिरते हैं १५ हिरण्यों की १६ शोभा से

७ हाथियों को कूदजाते हैं १८ जिनके पवन के जोर से महावत के नेत्र मिछ

खुरतार मारन ग्राव बारन खेरि फार फुल्लिंग ॥
 प्रकटात तास प्रकास पास प्रदेस भासन पिंग ॥
 पखरास्त चातुरि देत के नखरास्त पातुरि पाय ॥
 कति साचि कहूत तेगकीगति बेगकीगति काय ॥३२॥
 पलटाति छाड़ छटा करै कुलटा कँडच्छ प्रमान ॥
 मिटिजाइ जो लाखि मीन १ दर्पन बिबर अंबेक ३ मान ॥
 सननंकि नत्थत दम्पलों फबि फुल्लि प्रोथन स्वास ॥
 कर कँह नस्तित याल जाल कि काल व्याल प्रकास ३३
 प्रमान १ कमान २ अन्त्यानुप्रासः १ ॥
 त्रिककों नमाइ कितेक उहुत अँड अंग तुरंग ॥
 कमनैत किति गिनै न जिन्ह जब रोकि रँकुरंग ॥
 हरते हिँडोरन होंसदोरन और घोरन दाहि ॥
 गति एक मंडत केक डाँकर टेक माँकर गाहि ॥ ३४ ॥
 इत १ की मुरी इत २ मानवे तन आन देतन अंखि ॥
 पट्ट मग्ग अग्गल जान देतन मान एतन पंखि ॥
 मन सँदिके जित जात छुटि गुलाल मुठिय मान ॥
 उततैं तथा इत बाढ अंचित आत वात उडान ॥ ३५ ॥

जाते हैं ॥ ३१ ॥ १ पत्थरों के समूह से २ अग्नि कणों का समूह खेरते हैं जिनकी
 क्रांति से समीर का प्रदेश ३ पीला दीखता है ॥ ३२ ॥ ४ फटाख के समान ५
 नेत्रों का घमंड ६ जैसे नाथने के समय वृषभ (पैल) की नासिका बोलै तैसे
 फूलेहुए फुरणों में श्वास बोलता है ७ कूट्य के हाथ से नाथेहुए काली
 नाग के समान ॥ ३३ ॥ ८ कपूर को झुकाकर ९ शरीर के घमंड से १० जिनके
 वेग से दीन छिरणों को रोकने में कमनैत कुछ कीर्ति नहीं गिनते ११ कूदने
 में हठ करके १२ खंशूओं को दधाने हैं ॥ ३४ ॥ शरीर के इधर से उधर मुड़ने
 में नेत्रों को भी नहीं खाने देते अर्थात् उनका मुड़ना दीखता ही नहीं और वे
 चतुर घोड़े मार्ग में किसी को आगे नहीं जाने देते और पक्षियों के प्राणों
 का १३ निसासा लेते हैं १४ जिधर सवार का मन आवे उधर ॥ ३५ ॥

विधि बग मोटेन वपोम जात दिग्वात त्रोटन बट्ट ॥
 पटरी सहायक लौ टरी नटरी कि उडव लट्ट ॥
 जिन्ह भेट लगत फेट चक्रित केट गे' रहि जाइ ॥
 जिनकी कटीपर पै पटी पर जे छदित्य जनाइ ॥ ३६ ॥
 कति लेत कच्छिप मोर मच्छिप बेर वरच्छिप ग्राम ॥
 प्रतिधाव आवत पाव जे धरि पाव चिन्हन धाम ॥
 जुरिजात द्वे० कति ज्यौं कि संहिप१ सग तकिपे२ ओह ॥
 जिन्ह लाइ दानत होइ आनेत अफ१ सकै२ हु ईई ॥ ३७ ॥
 विसि चक्र सकैट जात वीथिन चैक सकम सिद्ध ॥
 डम केक बैट विवेक ठेकत छोनि छेकत इड ॥
 मृधमें मतगैन पिष्टि मगन आनिकें असवार ॥
 हनि ते निपादिनें बच्छ जे छुगिका बहावन हार ॥ ३८ ॥
 क्रमके बडे जयके पडे भटभेरदै ततकाल ॥
 सरकात जे रैपके चडे जयके चडे दडसाल ॥
 कति तोप गोलन सगकै परखे स्वधावै प्रमान ॥

आकाश में जाते समय १ याग मोड़ने में पक्षिपा की भाति दीखते हैं २ मानों ऊपर को नटनी उलटती है ३ हाथी पीछे (नीचे) रह जाते हैं ४ वीरता की दौड़ में जिनके चरण हाथियों की कमर पर ५ छापे हुए दीखते हैं ॥ ३६ ॥ ६ फितने ही घोड़े मच्छी के समान मुड़कर दो पाठियों के अंतर को कांदकर ७ विश्राम लेते हैं, प्रत्येक दौड़ में जहां चरण चलते हैं वन्हीं चिन्हों पर फिर चरण रन्वते हुए दौड़ते हैं और फितने ही घोड़े ऐसे जुड़जाते हैं जैसे ८ शाब्दिक (व्याकरणवाले) के साथ ९ तार्किक न्यायशास्त्रवाले की जिह्वा जुड़ जाती है और जिनके काम पर नम्र होकर सूर्य और ११ इन्द्र भी १२ इच्छा १० लाते हैं ॥ ३७ ॥ सेना की १३ सकड़ी गलियों में घुस कर १४ चकरी के समान फिरना सिख करते हैं १५ मार्ग में विचार पूर्वक कूदकर बड़ी भूमि छेकते हैं १६ युद्ध में १७ हाथियों की पीठ पर १८ हाथियों के सवारों की जाती है ॥ ३८ ॥ १९ वेग के २० अपने दौड़ने का प्रमाण

हंरखे बहैं करके गहैं सिथिलत्व संक्रम हान ॥ ३९ ॥
 सित^१ के उहैं जिम भूत^२ नालन घाव पावक संग ॥
 हिमबालुका^३ जित आलुका किंसु वहै अनाहत अंग ॥
 मनि नील^१ सच्छविके उहैं मिलवे कि व्पोम^२हि मित्त ॥
 कति बालबायुज^१ रंग क्रीड़न पोन^१ मित्र पवित्त ॥ ४० ॥
 कति पद्मराग^१ सराग भिंटन ज्यों रजोगुन^२ कज्ज ॥
 सुरराज^१ सच्छवि केक पीवल^२ सत्रु जीवल सज्ज ॥
 द्विक^२ बाजि रूप चउक्क^२ सच्छवि मेलमित्र नदैन ॥
 इम जे विनीत^१ विनीत क्रीड़त अने^१के क्रम अने^१ ॥ ४१ ॥
 जलजात^१ के कति बन्हिजात^२ किते प्रभंजन जात^३ ॥
 द्विज^१ आदि वर्ण ब्रह्म^३ जई पन तत्तई सुदिपात ॥

१ चक्षुनेमें शिथिलता की हानि करके ॥ ३९ ॥ नालों और ३ पत्थरोंके संगसे अग्नि उत्पन्न होकर कितने ही श्वेत रंग के घोड़े २ पारे के समान उड़ते हैं ४ उड़ने में कपूर को जीतनेवाले ५ मानों एलवालुक (गन्धद्रव्य विशेष) को जीतनेवाले बिना छिपेहुए शरीर से उड़ने हैं अर्थात् कपूर तो छिपाहुआ उड़ना है और ये दीखते हुए शरीर से उड़ते हैं ६ नीलम मणिके समान (नीले) रंगवाले घोड़े मानों अपने मित्र आकाश से मिलने को उड़ते हैं "आकाश का रंगनीला है जिस में मिलने को" कितने ही ७ वैडूर्य मणि के समान रंगवाले घोड़े मानों अपने पवित्र मित्र पवक से क्रीड़ा करने को उड़ते हैं ॥ ४० ॥ कितने ही ८ माणक के रंगवाले (कुमैत) घोड़े अपने समान रंगवाले रजोगुण से मिलने के कार्य करते हैं "रजोगुण का रंग लाल है" कितने ही पद्म के समान रंगवाले १० और शत्रुओं के जीव लेनेवाले ६ पीवर (पुष्ट, ताजा) सजे ११ शिचा पाये हुए विशेष नम्र घोड़े १३ मार्ग में १२ हिरणों के क्रम से क्रीड़ा करते हैं ॥ ४१ ॥ १४ पवन(*) से उत्पन्न

(*) उम्मेदासिंह चरित्र से लेकर रामसिंह चरित्र के इस स्थान पर्यन्त युद्ध घोड़े हाथी सर्गीत और वेदान्त आदि के प्रकरणों पर सविस्तर टीका कर दी गई परन्तु यहां से आगे इन्हीं प्रकरणों के वर्णन फिर फिर आते हैं जिन पर सविस्तर व्याख्या करना पिष्टपेषण के सिवाय निरर्थक विस्तार बढ़ता है इस कारण विस्तार वाली टीका करना छोड़कर कठिन शब्दोंकी सक्षेपसे टिप्पणी ही करेंगे जिसको पाठक लोग त्रुटि नहीं समझें और फिर भी कोई विशेष वर्णन आवेगा वहां पर टीका कर दी जावेगी परन्तु पीसेको नहीं पीसेंगे।

कति पच५ मगल अष्ट८ मगल मल्लिकाक्ष३ कहाइ ॥
 कति चक्रवाक४ कजाक महत मान पान न माइ ॥ ४२ ॥
 मनिवध१ नाभि२ रु व्रच्छ३मस्तक४आस्य५गोधि६रु अंस७
 त्रिक८ देस कठ९ पिचड१० रघ११ न भद भ्रम अवतस ॥
 आवर्त ए दसइक११ उत्तम भिन्न दै अभिधान ॥
 तहँ इद१ पय२ रु चक्रवर्तिक३ चिंतितार्थ प्रतान४ ॥ ४३ ॥
 विजया५ रूप शुक्ल६ रु चंद्रकोसक७ आदि जे इहि बट्ट ॥
 पाणि पुष्प१ चंदन२ आज्य३ गंधक राज्य सधक पट्ट ॥
 चउ४ दह वारह१२ दत२ सु स्थित रोचि मेचक चारु ॥
 कठिनत्वमें प्रभुता तनात बनात बजहि कारु ॥ ४४ ॥
 मुख१ मान सत्त रु वीस२७ अगुल कान२ मान छ६ मान ॥
 सत१० मान अगुल उच्च विंघड३ पिठि४ जिन२४ अवसान
 ललितत्व उल्लसि कंधरा५ वसुवेद४८ लब ललाम ॥
 तिहि मान४लूम६रु मध्य७ख प्रय३०सरूप अगुल तामा४५।
 इह च्यारि४दिग्घ१रु च्यारि४लोहित२च्यारि४सन्नत३ अग ॥
 सुभ च्यारि४ उन्नत४च्यारि४सुच्छम५च्यारि४ह्रस्व६ प्रसग ॥
 इम भव्य भायत च्यारि४ आयत७ पाड मजु प्रतीक ॥
 मन१ नैन२ चोर मरोर महत ठानि सगति ठीक ॥ ४६ ॥
 अब दिग्घ१ आदि गुनत्व अंगन सूचना क्रम आनि ॥
 मुख१ बाहु२ केस३ निर्गाल४ देस प्रलब१ता गुन मानि ॥
 क्रम सेक१ आठ२ रु जीह३ काकुद४ लोहितस्त्व लसाव ॥

॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ १ मुख का प्रमाण (माप) २ छ अगुल का माप है ३ शरीर ४ गरदन ५ घाऊछा ६ कमर "यहा घोड़े के शरीरके अवयवों के नामों के आगे अक रखे हैं वही छन अगोंके मापके प्रमाण(माप)के अगुल हैं अर्थात् वह अग इतने अगुलों का होना उत्तम है" ॥ ४५ ॥ ७ अग ॥ ४६ ॥ ८ गला पे चार अग छपे ९ छिंग १० तालुवा पे चार अग छान

भरि कैल्ल^१कुल्लि^२रु जानु^३पिडि^४प्रतीक सन्नत^३भाव ॥ ४७ ॥
 सफ^१ भालकोसिर^२ प्रोथ^३ पायु^४ समुन्नत^४त्व समान ॥
 पय^१ कोष्ट^२ बालाधि^३कर्ण^४सोभित सुच्छम^५त्व प्रमान ॥
 श्रुति^१ ओ तदंतर^२ बंस^३ आसन^४ बौमन^५त्व प्रसिद्ध ॥
 नलकील्ल^१ बैकि^२ रु खंध^३ आनन^४ ए बिसंकट^५इद ॥ ४८ ॥
 कहूँ बै बिसेस जवान^१ नञ्चत जै बिसेस जनात ॥
 कहूँ जोर दोर किसोर^२ तंडव मोरतैं अधिकात ॥
 स्वच्छंद^१पति^२न मान सत्ति^३नै मेल ठानत श्रेय ॥
 ईभ जानलो उडिजान उँद दिपात सौदिन बेय ॥ ४९ ॥
 प्रभु^१को बयस्य^२नै दान^१ मोदित^२ दान सूचक^२ पाइ ॥
 असवार^१को बहि स्वामि^२ अंतिकै देय देत दिवाइ ॥
 सुचि^१मास धर्म प्रकासके करि सेक बारि सुगंध ॥
 प्रभुसौ अभीष्ट^१ प्रसाद पावत स्वामिधर्मित संध ॥ ५० ॥
 क्रम^१में गहे गुनहै^२ रुहे अब^३गौ^३ लहे अवकास ॥
 बै^१ लहे तन जै^२ लहे रन रै^३ लहे पन बास ॥
 समवेत उत्तम खेत संभव जे तनै जस जूह ॥

कांख २ तार. ये चार ३ अंग झुके हुए ॥ ४७ ॥ ४ खुर ५ गुहा, ये उठे
 ६ पगों के गाले ७ पालछा ८ छोटे होवें ९ कान १० दोनों कानों के बीच
 का अंतर [छेटी] ११ बांसे की हड्डी १२ ये छोटे होवें १३ नली १४ मद्दू १५ मुख
 इन का १६ लंबा होना उत्तम है ॥ ४८ ॥ १७ बछेरे नृत्य करते हैं १८ स्वतंत्र
 पैदलों का १९ घोड़ों से २० हाथी के बराबर २१ ऊपर २२ खचारों को ॥ ४९ ॥
 २३ समान अवस्थावालों २४ समीप २५ आवाह मास की गरमी से २६ बांछित ॥ ५० ॥
 २७ क्रम के अनुसार २८ घोड़ों के गुण कहे “इस छन्द के प्रारंभ में प्रथम ऊंटों
 फिर घोड़ों और जिस पीछे हाथियों का चलना कहा, उसी क्रम से प्रथम ऊंटों
 का वर्णन करके फिर घोड़ों का वर्णन किया” और अब २९ हाथियों के वर्णन
 ने अवकाश लिया ३० श्रेष्ठ अवस्थावाले ३१ शरीर से जय लेनेवाले ३२ घुड़ में
 वेगवाले ३३ मिले हुए (साथ)

दिपती छटा जिनकी घटा घुमही घटा कि दुंरुह ॥ ५१ ॥

चलि भद्र१मद२मृगा३रूप मिश्रक४ जात जात चउक्क४ ॥

श्रम अच्छके परपच्छके गैय जे करें मय सुक ॥

मधुरोचि१ दत२ वराह१ जघन२ रु चाप१ रीढक१ मान ॥

द्युति१में हरित्व२ भरित्व सालि३सुगंध सोभित४दाम५ ५२

मधुमास१ पिंगल२ नैन२ ओ मृदु१ लोम२ अग३ ललाम ॥

तिम तास आनन१ ओठ२ आकुद३ रोचि रोहित४ ताम ॥

सम१ वृत्त२ पीवर१ कधरा४ कर५ मेघ१ वृद्धित२ सद ॥

नख१बीस२०१२कौ धृति१८३नेम षडैकर१सत्त७२उच्छ्रय३इह ॥ ५३ ॥

जिन्ह मत्थ१ मुत्तिप२ जुद्ध१में जय२ ओ सदा१अनुकूल२ ॥

इम भद्र१ लच्छन सूचना अब भद्र२ बोधन मूल ॥

गज१ कुक्षि२ पेचक३ शूल४लांबित५दिडि१इडि मृगेस२ ॥

पुनि कक्ष१वक्ष२उभै२ कहे सियिलत्व जुत्त३ प्रदेस ॥ ५४ ॥

मृग३कौ बडे१दगर२तत्थ ए वसु८ अग१ खर्व२ प्रमान ॥

कर१दत२अग्नि३पिचड४मोहन५कंठ६लोम७ रु कान८ ॥

सब चिन्ह१ मिश्रित२ मिश्र३ जाति चउक्क४यो गज३ सज्ज ॥

गति मेघ१विग्रह२विजु१ भूखन२ गाढ गर्जित१ मज्ज५५

अरि राहु१के सनि२केक सोदर ध्वातै३के धवअग ॥

प्रसरे तमोगुनके कुटुंब कि अन्य जुग्म२ प्रसग ॥

पय सेकै पूरत निर्भरै बपुसों प्रवृत्ति प्रवाह ॥

लसि ज्यों मनोरम अदि जगैम श्रोत संगम लाह ॥ ५६ ॥

१ फठिनाई से तर्कना में आनेवाली ॥ ५१ ॥ राशियों के १ मयको सुखानवाले २ हाथी ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ४ भद्र जाति के हाथी के ५ मन्द जाति के हाथी के लच्छन जानो ॥ ५४ ॥ ६ मृग जाति के हाथी के ७ मिश्र जाति के हाथी के ८ मेघ के समान शरीर और ९ दिजुली के समान शृणुओंवाले ॥ ५५ ॥ १० शनैश्चर के सगे भाई ११ अघरे के पति १२ मार्ग को साँथते हुए १३ चलते हुए पर्यंतों के ॥ ५६ ॥

तनमानदै मग तुंग साखिन बाम दक्खिन^२ तोरि ॥
 मनके बिचारत डिग्घ डारत मेरुशृंग मरोरि ॥
 धन कुंभिके उर दाहघल्लत राह चल्लत रोहि ॥
 जब ओघ मोघ जनाइ सत्तिन हँथ कत्तिन सोहि ॥ ५७ ॥
 दढ दंभि के खिन थंभि दोरत व्है समग्र हरोल ॥
 लवहू लगात न सत्रु सातन^१ तोप गोलक लोल ॥
 पय लंब लंगर पाइ जंग रचाइ चित्र प्रतीति ॥
 रद^१ हेम बंगर^२ रोचि दै ससि^१ सूर^२ संगर^१ रीति ॥ ५८ ॥
 मचलै हमल्लन भू हलावत के चलावत मग्ग ॥
 बट^१ लेत उब्बट^२ उज्झि के असु आनि अंकुस अग्ग ॥
 उलटान इच्छत अंभकेइभ फौंकि सुंढिन उड ॥
 रय अँड उद्धर के कटै तिरछे उपाय अँरुद्ध ॥ ५९ ॥
 चल केक बान^१ रु भैचपा^२ चिरखी चटच्चट चैकि ॥
 बहुधा बिचित्र तनै गँतागत बीति रीति बनै कि ॥
 छिरकै पतत्रिन^१ के बली बँमथून षोम अपाइ ॥
 उलटे कँ बुढन जानि सिक्खत मेघ मेचक आइ ॥ ६० ॥
 मचिजात अँदुंक अग्ग अँचत मग्ग^१ जंगल मग्ग^२ ॥
 दिपि बिंदुपझंक^१ ज्यौं जरे वपु पद्धराजै^२ उदग्ग ॥

१तृण के समान २ जचे वृक्षों को ३ सुमेरु के शिखरों को मरोड़ना ४ ऐरावत के
 उर में ५ घोड़ों के वेगको निरर्थक जनाकर ६ सुगडों में तरवारें शोभायमान
 हैं ॥ ५७ ॥ ७ शत्रु के मारने में ८ आश्चर्य युक्त युद्ध करके ९ दांतों में सुवर्ण
 के बंगड़ १० सूर्य चन्द्रमा के युद्धकी रीति से ॥ ५८ ॥ ११ उब्बट लगना छोड़कर
 मार्ग लेते हैं १२ ऐरावतको उलटाना चाहते हैं १३ नहीं रुककर ॥ ५९ ॥ १४ बि
 चित्र आवजाव करके मानों १५ घोड़े की भाँति बनते हैं १७ सुगडके जलकणों
 से ढककर १८ पक्षियों को छांटते हैं सो मानों काले मेघ उलटा १९ जल वर्षाना
 सीखते हैं ॥ ६० ॥ १६ जञ्जीर खँचने से २१ माणिक्य के समान शरीर पर २०
 बिन्दुजाल (धीरघंट) जड़े हैं

कति मग्ग लग्ग वहँ करे वस अग्ग लग्ग *करेनु ॥
 बहु मत्त१ ढाक लगे२ वहँ बहुगत्त१ वेधत जेनु२ ॥ ६१ ॥
 जरि रत्न ऽसीस१भिरी सिरी२ उदयादि ज्यो उहुजाँल ॥
 त्रि३पदी जरे त्रि३पदी तथापि चलोँ अनर्गल चाल ॥
 मचलोँ महावत वोँत पावत के घुमावत मत्थ ॥
 जनु छुत अँवर छत्ति२कोँ बिखरात ओ घसि जत्थ ॥ ६२ ॥
 मँखतूल झूल१ कपाल२ मंडित जो अखडित जोर ॥
 मृधमल्ल खडित खोम पंडित जोम तोम मरोर ॥
 केर कुंडली करि लंव अवर क्रुद्ध के फटकारि ॥
 वट लेत अखिन देत पखिन बेग बेत विडारि ॥ ६३ ॥
 जगाल१ डिंगुलु२ताँल३ जालित सीस१सुँडि२सुहाइ ॥
 बुध१ आर२ जीव३ कि चारवक्रन आक्रम्यो सनि१ आइ ॥
 कुँय रत्त१ पँ गुड कात आपस२ हेम३ रत्न४अमुल्ल ॥
 फवि ज्यो रहे रयि१गोद मँद२ रु चँक्र३ लोँ उहु४फुल्ल ॥ ६४ ॥
 बहुधा सुखासन१ पिडि सोइत नद्ध पट्ट वरत्त ॥

* इयनियों का आगे करने से वश म होकर चलता है । क्रोध विखानेवाले छोटे घाघ लगने से मालो से शरीर को घेघने से ॥ ६१ ॥ रत्नों से जड़ीहुई सिरी (मस्तक मृपण) ऽ मस्तक से मिड़ीहुई है सो मानों सुमेरु पर्वत पर १ नक्षत्रों का समूह है २ तीनों पैर खगयेडा से घबे हैं तोमी ३ बिना रुकावटकी चाल से चलते हैं ४ महावत के हलने को पाकर मस्तक घुमाते हैं सो मानों ५ आकाश रूपा छाते को मस्तक से घिसकर पिलेरते हैं ॥ ६२ ॥ ६ रेसमकी ७ गुड के मल्ल ८ बुरजों को गिराने में चतुर ९ पक्ष के समूह की मरोडवाले १० सुड की कुयडली करके ११ आकाश में पक्षियों के बेग को पिलेर देते हैं ॥ ६३ ॥ १२ हरताक्ष के समूह से रगाहुआ मस्तक और सुड शोभित हैं सो मानों बुध १३ मगल और १४ वृहस्पति ने शनैश्वर को १५ घेरा है १६ लाल झूल पर सुवर्ण और रत्नों से जड़ीहुई सुंदर १७ लोहे की सिलह लगीहुई है सो मानाँ सूर्य की गोद में १८ शनैश्वर और १९ शिशुमार चक्र में तारे फूलरहे हैं ॥ ६४ ॥ २० रेसम के रत्नों से घेघेहुए

कति भंड१भुंडन अगग संक्रमि मगग छेकत मत्त ॥
 सब हेबि होदन मज्झ१ बैज्झ२ असैज्झ स्वोचित सज्ज ॥
 करिबे निसाँदिन बीर बादिन सर्वथा जय कज्ज ॥६५॥
 बढिके महावत बोल्लदै जिम जाति लौ विरुदाइ ॥
 जवमें हठी तिम सँत्ति१ पत्ति२न पंति पिल्लत जाइ ॥
 मनधाव ज्यौँ चलभाव दोरनमँ सु घोरनमँ न ॥
 प्रतिकाल१ चाल२ विभिन्नता इम ओघ ओरनमँ न ॥ ६६ ॥
 घोरनमँन१ ओरनमँन२ अन्त्यालुप्रासः ॥ १ ॥
 गंभीरबेदि१ कितेक मैंगल२ केक परिष्णत३ गाढ ॥
 कति ँयाल४ चाल अंराल करि करि बेग धारतबाढ ॥
 कति फीत१ बाहक नीत कल्पित५ बीत१ अंकुस१वीत१२ ॥
 उँपबाह्य६ के कति दंतईषिक७ दंतिपंति अतीत१॥६७॥
 आटोप के अहिभोगँ सन्निभ उद्ध पोगँर आनि ॥
 पलटा गता१गत२ के करैँ मतके प्रमान प्रमानि ॥
 लघुनैन१ दिग्घ निहारिबे२ करि के रचैँ गति लीदँ ॥
 आगामि१ गौमि२ प्रकार आनत जे अनर्गल ईदँ ॥ ६८ ॥
 पटु पालकाप्य प्रणीत तंत्रेन हथिपालक हुल्लि ॥

सब शस्त्र २ बंधहुए ३ असह्य [नहीं सहने योग्य] ४हाथियों के सवारों के
 ६५ ॥ ५ घोड़ों और पैदलों की पंक्ति को हटाते जाते हैं ॥ ६१ ॥ ६ आठ
 ॥दि के घाव को नहीं माननेवाले ७मदकल [मस्त] ८पकेहुए दूढ़ ९हुपट हाथ
 १०टेढ़ी चाल से बेग को धारण करते हैं ११अंकुश की प्रेरणा और १२महावत
 के पैरों के हूँसने से १३ प्रसन्न होकर चलनेवाले सज्जित हाथी १४ कितने ही
 राजाकी सवारी के, कितने ही लंबे दांतोंवाले १५ दांतों की पंक्ति १६व्यति
 होगई ऐसे [मुकने] हाथी ॥ ६७ ॥ १७ सर्प के फंशके सदृश १८सुंडके अग्रभाग
 को ऊपर करके छत्र करते हैं १९दौड़ने की लफ़ीर रचते हैं २० आना और
 जाना २१ बिना रोक टोक वाली इच्छा से करते हैं ॥ ६८ ॥ पालकाप्य मुनि
 के बनाये २२ शस्त्र (हस्तयायुर्वेद) में चतुर महावत कूटबोली [दगदग आदि

विरुवाइ जाइ अनीक विरमय धुल्ल कूटिकधुल्लि॥
जिम जाइ जितजित आनि इतइत वानि१ अकुस२नोध ॥
वलजेषदात रिक्तातविंदहि जुद्धज जिम जोध ॥ ६९ ॥
इभपाल१ आसन२ प प्रेमा इक१ सम्मुहे न लखाइ॥
जनु पिष्टि जे धित घोर तेहि निसक पिल्लत जाइ ॥
इभपाल अगन छै न भुखन रोंचि जो अभिराम ॥
तो उक्तं अर्थ प्रबोध छै तिनके चढाकन तौम ॥७०॥
मननकि भृगुवल ज्यो वजै तिम पिष्टि विस्मित मंकि ॥
अति सेन संकट अगग सादिप वट विक्रमवत सकि ॥
मारीचगज१ ढिग के मतंगज२ यों निपादन आनि ॥
प्रभु पानि रीक दिवान पिल्लत जात किछित जानि ॥७१॥
कति हथि होदन भौर सक्रम गैत पत्तनगोपि ॥
अति लासे कज्जल भास आनत आसनावधि ओपि ॥
गज३ यों अनेक अनीक सगत देत खेत दिपाइ ॥
रथ१के सजे पयके मनोरंम जे मनोरंम जाइ ॥७२॥
कति पारियानिके२ केक पुं०प०था३रूप बैनैयिका४रूप ॥

पोलपर सेना में जाते हैं ॥६६॥ वन हाथियों के ऊंचे कुमस्यलों के कारण सामन
से महापता की १ जान्ति नहीं दीवती सो माने पीठ ऊपर के सवार ही
उनको २ पहाते जाते हैं, मण्डपत के शरीर पर शूषणों की सुन्दर ३ कान्ति
नहीं होये तो ५ तला वर पर चढ़नेवालों का ४ऊपर कटे हुए अर्थ का ही बोध
होता है ॥ ७० ॥ १ घोड़ों के सवार ७ राजा की सवारी के हाथी के समीप
॥ ७१ ॥ किमने ही हाथियों के होदों में ८ अमर चलकर अपनी पाखों से ६
मयारा के शरीरों को छिना देते और १० नृत्य करत हुए १ आसन की अवधि
पर्यन्त ओमित होकर अत्यन्त कज्जल की शोभा को जाते हैं १२ सेनाके साथ
१३ मार्ग में सुन्दर चलनेवाले १४ मन में रमते जाते हैं ॥ ७१ ॥ १५ चौतरफ
से खुलेहुए रथ १६ बिना युद्ध (हवालोरी) के रथ १७ सरआम्पास करने के
रथ, जिनके पहिये

अरिनेमि२अक्ष३रु पिंडिका४अश्वि५पेसलत्व मथारुष ॥
 संपादधुरा७जुगन्धो जुगंधर९गुंमि१० आदि सुहात ॥
 सबही प्रतीकै न सज्ज संपदन यों बढे बहु ज्ञात ॥७३॥
 हुव सज्ज आरुहि पट्ट हाथिय इष्ट सत्थिय अप्प ॥
 द्युति देखि दुर्लभ देवकी दुरिजात दर्पक दप्प ॥
 उष्णीषे१ सीस२ कुसुंभ अर्चित स्त्रीय बंध सुघट्ट ॥
 सह साल्पश्नैल्प किरीट३सेखर४पंचपरत्नक पट्ट ॥ ७४ ॥
 लागि मुक्ति अच्छत१धीर२चंदन३चंद्र४हाड ललाट२ ॥
 तिम रत्न कुंडल१२ कर्ण३ जामल२ लाल गल्ल तलाट ॥
 हद रोचि गुंफित रत्न पंचक कंठ४ हिंडत हार१ ॥
 बहुधा विचित्र अनेक आवलि जो जे ओज बियार ॥७५॥
 लठा ललाम सु काय५कंचुक१ बिप्फुरै जर बान२ ॥
 सौयंतनारुण अश्र१ सीम कि बिज्जु२ पंति बितान ॥
 कटिबंध१ मध्य६ लसै कस्यो पगि पग्घ राचि२ प्रकास ॥
 केयूर११कटक१२अवाप१३भुज७१कर८२भव्यमनि९३मनिभास
 बहु मुद्रिका१बहुरत्न बेढ२दु२पंच५१०पैलव१० पाइ ॥
 अहिद्वै२ कि कर फनपंच५ पंच५ उरुत्व मनि अधिकाइ ॥

१पूठियां २पाचर ३ नाभी (नाही) ४ अरों के ऊपर लगाने के काष्ठ (आंवल) ५
 सुंदरपन में प्रसिद्ध हैं ६ जूए की कील (सोल) ७ ओदण ८ जूआ (जूड़ा)
 ९ जूआ बांधने की जगह १० रथकवच (शत्रु के शस्त्रों से बचानेवाली लोहे
 की खोली) आदि से शोभायमान है, इस प्रकार रथ के सब ही ११ अंगों को
 सज्जित करके रथों के बहुत १२ समूह बढे ॥ ७३ ॥ १३राजा की क्रान्ति देख कर
 १४कामदेव का घमंड छिपता है १५कसुमल रंग की पाघ १६थड़ा मोड़ (मुकुट)
 १७ शिखाबंधन (लटकण) १८पांच रत्नों का शिरपेच ॥७४॥ १९ जय को और
 प्रताप को फैलाते हैं ॥ ७५ ॥ २० जामा (झगा) २१ संध्या समय के लाल बाद
 लों के समान किना बिजुली की पंक्ति के फैलाव के समान २२ भुजबंध २३
 पूंछा तथा कोई अन्य कर श्रृंखला विशेष ॥७६॥ २४इसों अंगुलियों में २५मणियों

कटि६।११सान सुह कृपान१पट्टि२कतिका३छुरिका४ऽऽदि
चउ१धुप्प अह्न१अष्टचदक पिठि१२ दिठि प्रसादि ॥७७॥
उपवीत१प्रतिपथ१३मेखला१इत रत्न रोचि२अपुव्व ॥
उर१३देस१जानि अगाध अर्योव२ एस१ वेस कि उँव्व२ ॥
सह धोत१ मायूत अघ्नि१४ कंचुक२ लंब आघट३ साजि
वनि जुग्म२ गोहि१५गत्तशृखल१२नेम हेम विराजी ॥७८॥
अभिरूप यो वर भूप प्रस्थित पट्ट पील्ले अरोहि ॥
सहचार जन्म वयस्य सत्थिय सकम्पो तिम सोहि ॥
नृपनाग१के चहुँ४ओर जोर मरोर मडत नाग२ ॥
परिवेस१ भेस२ सवेस प्रस्थित वेस१ देस२ विभाग ॥ ७९ ॥
इभ व्यूह१ बौद्ध समूह७ अर्वन ऊँह यो अधिकात ॥
जनु पच्छेद अभेद अदिन बेडि सँख्य जनात ॥
गजव्यूह१मै गजपट्ट२को गन पँत्ति२ के गरदाइ ॥
प्रभुके प्रसाद प्रसन्न प्रस्थित चक्र चंक्रम पाइ ॥ ८० ॥
सिर रुच्यके सह रत्न१ हाटक२ आतपत्र१ सुहाइ ॥
जनु रत्नसानु२हि भानुको तव ताप टारत जाइ ॥

से पहप्पन पढाते हैं १ कटारी २ चार फूलोंवाली छाल ॥ ७७ ॥ ३
जनेऊ ४ उदर पर ५ कापी (करघनी, कणगती) ६ चक्र के प्रदेश को अगाध
समुद्र जानकर यह वेस मानों ७ पड़वाग्नि है ८ घोषती से हफेहुए
चरण ९ दोनों गिरियों (चरण ग्रथियों) पर सुवर्ण के पगसाकल ॥ ७८ ॥ १०
सुंदर ११ पाटवी हाथी पर चढ़कर, समान अवस्थावाले परानियों के १२ साथ
शोभित होकर चला १३ राजा की सवारी के हाथी के चारों ओर १४ सूर्य के
चारों ओर कुण्डली होवे जैसे ॥ ७९ ॥ हाथियों के व्यूह के १५ पादर घोड़ों का
समूह है जिनकी ऐसी १६ तर्कना होती है कि मानों बिना पक्ष कटेहुए पर्वतों
का घेर कर वे घोंड़े १७ मित्रता जनाते हैं १८ पैदलों का समूह १९ सेना इधर उधर
चलती है ॥ ८० ॥ बुद्ध के मस्तक पर रत्नों का जड़ाहुआ सुवर्ण का २० छत्र
ऐसा सुहाता है मानों २१ सुमेरु पर सूर्य के ताप को बघाता जाता है,

दुहुँरओर बीजत सोममुच्छ कि रोमगुच्छर २२ दिपात ॥
 पुरटादि सूचित छत्र ज्यों पागि द्वैध गंग निपात ॥ ८१ ॥
 इम अर्द्ध १ बर्द्ध २ ३ अर्द्ध बीजत बित्थरे दुहुँरओर ॥
 मनु चोर १ अश्व २ अदध ३ मोदित मंडि तंडव मोर ॥
 दिसती २०० नकीबन दंड १ प्रेरित इत्थ हाटर्क दंड २ ॥
 अतिसीम अर्णाव फौज बाडव ओज २ जानि अखंड ॥ ८२ ॥
 पहु पत्त यों दरकुंच जैपुर मंडि चक्क मुकाम ॥
 तह भूप सिसु जयसिंह १ तैं नन रीति सद्धिय ताम ॥
 इह बैरिसल १ स नाम राउल कुम्म नाथकुलीन ॥
 कछवाह भूप प्रधान वहाँ सतकार स्वाचित कीन ॥ ८३ ॥
 तैंहें भूप कूरमकेर मुख्य प्रकोष्ठ पालक ताम ॥
 प्रति द्वारपालन जीन १ जैन २ स्वरूपचंद्र १ सनाम ॥
 जिहिं भेजि राउल भूप १ द्वार स्वरूप २ बाल्य जनाइ ॥
 भनि ऐन सद्धिय बैन स्वागत ऐन आगत भाइ ॥ ८४ ॥
 इम जैन जो प्रभुविंद तोरन दूर बाहन उजिर्क ॥
 वय अंबद सत्तरि ७० लंघि ओरन मंदलोचन बुजिक् ॥
 कहि बुल्लि मुख्य प्रकोष्ठपालक हह ६१ भूपति कोर ॥
 अवधान हानि दिखाइ अप्पन बाढ स्वागत बेर ॥ ८५ ॥

दोनों ओर चन्द्रमाकी किरणों रूपी चमरों से पवन होता जाता है सो मानों
 उपर सूचना कियेहुए छत्र रूपी २ सुमेरु पर्वतसे गंगाकी दो धारें पड़ती हैं ॥ ८१ ॥
 सी प्रकार ३ पूजनीय ४ मयूरपंखों (मोरछलों) से दोनों ओर ५ अनिन्द
 योग्य पवन होता है सो मानों चमरों रूपी बादलों से ६ बहुत प्रसन्न हो
 कर मयूर ७ नाचते हैं ८ सुवर्ण की छड़ियां हैं सो मानों सीमा रहित सेना
 रूपी समुद्र में पड़वाग्नि है ॥ ८२ ॥ ९ सेना का मुकाम किया ॥ ८३ ॥ १०
 कछवाहे राजा का मुख्य द्वारपाल ११ वृद्ध जैनी १२ यह आप का घर है ऐसा
 कहकर वचनों से स्वागत किया ॥ ८४ ॥ १३ बाहर के द्वार से १४ बाहन
 छोडकर १५ सित्तर वर्ष की अवस्था और मंद दृष्टिवाला दूसरों से पूछकर
 १६ हाडा राजाके द्वारपाल को १७ अपने आने के समय अपनी सावधानी की

जिम भूप वालम प्रमाद व्है तिम सर्व देर जनाइ ॥
 आहत दहृद१ इलोसै अतिक ऐसे एकक१ आइ ॥
 संयजोरि अक्खिय एह बिन्नति बैरिसल्ल१ संमुक्त ॥
 जो कलिद व्है रहिवो ततो वनिजाइ स्वागत जुक्त ॥ ८५ ॥
 क्रम सज्ज ससंद व्है मिलाप१ उभै२ अधीसन केर ॥
 विधि सद्धि दो२उन नेहसों सहभुक्त२ व्है मद बेर ॥
 धात्रेय१ मुख्यन व्है कही नरनाइ सम्मति धारि ॥
 सम मैगमान प्रमान जानहु लग्न विन अनुसारि ॥ ८७ ॥
 इम व्है न नैक विलंब१ ओ इम व्है दठी२ इत आत ॥
 वनिजाइतो कछवाह१के यह लाह नाह२ बरात ॥
 जो अधकल्प चल्यो यहै संचिवादि सूचित जानि ॥
 प्रतिहारसों इतकेन अक्खिय जाहु लै गहि पौनि ॥ ८८ ॥
 चहि जो अनर्महु१ नर्म२ बुल्लिय जैन जो हित चोर ॥
 आमैगनाथ गहयो यहै कर को गहै तिहि ओर ॥
 जड दर्भ खानि इसाइ दहृद१न जाइ यो उत जैन ॥
 प्रोक्त अक्खिय औन सत्वर व्हैन थभन औन ॥ ८९ ॥
 इम जात व्याहन ईस भो जयनैर एह उदतै ॥
 दरकुंच हकिय जुझनौ१ दिस सज्ज जन्य सुमत ॥

१ बुलाया हुआ २ हाहा राजा के समीप ३ यह अकेला आया ४ हाथ जोड़कर
 ५ रायल बैरीसाल की कही हुई विनती ६ आपका आदर सहित ॥ ८५ ॥ ७
 समा में ८ सामिल भोजन ९ धायभाई आदि १० राजा रामसिंह की सम-
 ति देखकर ११ मार्ग के प्रमाण के साथ ॥ ८७ ॥ १२ अथ के सहय १३ सविष
 आदि का कहा हुआ जानकर १४ बुद्धिवालों ने अपने द्वारपाल से कहा १५
 इसका हाथ पकड़ कर ले जा ॥ ८८ ॥ १६ यह हसी नहीं थी तोभी इसको
 हसी मानकर १७ यह हित का चोर जैनी बोला १८ कपट की खान १९ अभि-
 प्राय कहा २० मार्ग की शीघ्रता से २१ अपने घरमें (पहा) ठहरना नहीं
 होसकता ॥ ८९ ॥ २२ वृष्टान्त

पुर *गम्य अंतिक जात अंतर कोस द्वै२ परिमान ॥
 तह कुम्म †सेखकुलीन सम्मुह संजुरे बलतान ॥ ९० ॥
 सब मुख्य सेखनमें मनोहरद्रंग ‡वै हनुमंत२॥
 सहसत्थ तहँ खंडेला२ वै१२ सुत२ वातदा जुहि संत ॥
 बखतेस३ कूरम खेतरी३पति बाहबाहन बुद्ध ॥
 इक१ खंजपैहु विपर्यलखन४ सीकरेस४अलुद्ध ॥ ९१ ॥
 प्रभु रूच्यके स्वसुरत्व उद्धत रूपास५जुझनपाल ॥
 जिहिं दुष्ट भ्रात१ भतीज२ मुख्य दले दगा अधजाल ॥
 सहदंत६ रामगढा७दि इम सब कुम्म सेखकुलीन ॥
 करिकै महामद बिंद सम्मुह आइ स्वागत कीन ॥ ९२ ॥
 उपदा१ निछावरि२ सहि सादर संग जे सब आइ ॥
 प्रभुकों पंढालय मुख्य अंतर प्रीतिसों प्रविसाइ ॥
 लहि सिक्ख अप्पन अन संक्रमि आत अंतिक लग्न ॥
 मिलि सर्व मंडपके महामहँ मोद अर्खावै मग्न ॥ ९३ ॥
 चहुवान इंद्रहिँ लैचले पधराइ व्याहन प्रीत ॥
 गजपट्ट आरुहि दड्ड६ हंक्रिय होत मंगल गीत ॥
 सुँचि४ मासके सुँचि१ पक्ख द्वै अहि अठ भू१८२मितसाक
 दसमी१०दिपी पंतनी जहाँ पति मंद७ छंद मिलाक ॥ ९४ ॥
 निज लग्न पुव्व अनेह यों तहँ संक्रम्यों नरनाह ॥

* जिस पुर में जाना था उसके समीप † सेखाउत ॥ ९० ॥ ‡ प (पति) १
 घोड़े को चलाने (फैलाने) में चतुर २ एक पैर से खोड़ा ३ विपरीत लक्ष्य वाला
 ४ निर्लोभी ॥ ९१ ॥ ५ जूझनों का पति श्यामसिंह ६ दांता नामक पुर के पति
 सहित ॥ ९२ ॥ ७ नजर ८ डेरे में ९ लग्न के समीप आने पर अपने घर गये
 १० उस बड़े उत्सव में सष मांझावाले ११ हर्ष के समुद्र में डूबे ॥ ९३ ॥ १२
 आषाढ मास के १३ शुक्लपक्ष की दशमी रूपी १४ स्त्री शोभायमान हुई
 तहाँ १५ शनैश्चर वार रूपी पति स्वतंत्र होकर मिला ॥ ९४ ॥

चेउ४दत१ पै मघवार२ कि सोभित व्है सचोहित चाह ॥
 इचि अगग तोप१न पंति ओपन कति भति अनेक ॥
 वडि तास पिठि निसान धारन ईष्टि बारन२ केक ॥ ९५ ॥
 तिन पिठि गाहन व्यूह वपाहन३ लौ तरारन तत्थ ॥
 चहुँ४ ओर व्है तिन दोर चक्रमेँ जोर सक्रम सत्थ ॥
 तिनम०य पंति१न व्यूह तम्बिन व्है सहस्रन सग ॥
 इनम०य द्वितीय५न व्यूह सत्थिन जूह ऊह उमंग ॥ ९६ ॥
 तिनमै तथा परिवेसँ पत्ति६न व्है बिसेस प्रतान ॥
 बिच१ यो लस्यो बरनागर मेरु२ कि द्वीप जङ्गुव२मान ॥
 गज अगग व्है कछु चोक ता बिच नञ्च१बादन२ गेय३ ॥
 पननारि१ सज्ज भई कदार२न खध पट्ट३न प्रेय ॥ ९७ ॥
 वनि अगग१येई२तयुंग३धुकट१धक२पिठि३ बिभाग ॥
 रस प्रीति वास विजास मंडिय मेघ६१ मजुँल राग ॥
 मा१रभ मूर्छन ता१हिसो गृह१ अस२न्यास३गृहीत ॥
 गै३१नि७२हीन ओढव३जो अहोबल१वज्रवपु२मत गीत६८
 सगीत आदिक पारिजातक१ग्रंथमें सुर प्रसिद्ध ॥
 वगखा३ समागममें मनोज्ञ करै रंमरासुग बिद्ध ॥

२ इन्द्राणी के हित का चाहसे माना १ऐरावत पर इन्द्र शोभायमान हुआ ३.
 इष्टि (आभिलाष) युक्त कितने ही हाथी चले ॥ ९५ ॥ ४ इधर उधर दौड़ना ५
 पैदला का समूह ६ उस समय ॥ ९६ ॥ ७ पैदला के घेरे में ८ राजा की सवारी
 का श्रेष्ठ हाथी ऐसा। शोभित हुआ जैसे जयद्वीप में सुमेरु पर्वत ९ गाना
 ॥ ९७ ॥ १० ये सब नृत्य और वाद्य के अनुकरण के शब्द हैं ११ सुन्दर मेघराग ने
 “यह पियाह आपाह मासमें हुआ इसकारण इसी समय के मेघरागका वर्णन
 किया है॥” आरभ सहित जो मूर्छना उसी से गृह, अण, और न्यास ग्रहण
 किये १२ गधार और निपाव से हीन (ये दोनों स्वर मेघराग में नहीं खगते हैं)
 जो अहोपल और हनुमानके मतसे ओढव[पाच स्वरवाला] राग है वह गाया
 ॥ ९८ ॥ १३ सगीत पारिजातक नाम ग्रंथमें १४ कामद्वय के पाथोंसे बेधन करता है

रागार्णवादिदिक् तंत्र गत संपूर्ण १ आदि २ जु राग ॥
 वपु रूप धृष्टय ३ उत्तरायत १ मूर्छना २ प्रविभाग ॥ ९९ ॥
 मत बज्रविग्रह १ को प्रमानत वर्तमान विगेय ॥
 इम पुब्ब १ उक्त २ हि उद्धरयो सविलास लासित श्रेय ॥
 दिपि नीलउत्पल १ आभ विग्रह २ इंदु १ गोर २ दुक्कूल ३ ॥
 सपिपास चातक १ यच्यमान २ सु मत्त जुब्बन १ गूल ॥ १०० ॥
 पीयूष १ मंदस्मिता २ ऽऽर्दपल्लव ओठ ३ अंबुद १ अैन २ ॥
 गन धीर बीर १ न जुष्ट २ तुष्ट ३ बारि १ बुष्ट १ गैन २ ॥
 कैलकेक केकि १ रूंचा २ रचावन ३ व्है नचावनहार ४ ॥
 इहिरूप राग लयो उठाइ सु सर्वराग अगार ॥ १०१ ॥
 मल्लारको १ दिक् पंच ५ तिय पति उप्फन्थो बय मज्ज ॥
 अतिमोद ठानत रूंच्य १ आदिन रीझमै अबुरत्त ॥
 श्रुति १ जाति २ ग्राम ३ रु मूर्छना ४ सब थपि संभव थान ॥
 तिथ मंजु माप अलाप मंडिय ब्रह्मताल ५ प्रतान ॥ १०२ ॥

१ रागार्णव आदि ग्रन्थों में यह राग सम्पूर्ण (सात स्वरवाला) और आदि राग है जिसके शरीरका रूप ॥ ९९ ॥ २ [वर्तमान में गानेवाले बहुत लोग १ हनु मानके मनको ही प्रमाण करते हैं २ श्रेष्ठ नृत्य में इसी मेघरागको उठाया, इस रागका शरीर ६ गदून (रात्रिविकाशी कमल) के समान और अश्रद्धा जैसे श्वेत ७ वस्त्र हैं, ऐसे यौवनवाले मुख्य मेघराग की याचना करनेवाला ८ प्यासयुक्त चातक (पपीहा) है ॥ १०० ॥ ९ अमृत रूपी जिसका मंदहास्य १० गीले पत्रों रूपी ओठ और मेघ ही जिसका घर ११ धीर वीरों के समूह से युक्त, प्रसन्न होकर आकाश से जल बरसानेवाला १३ मयूरों को १२ मधुर ध्वनि की १४ इच्छा कराकर नचानेवाला, इस रूप के मेघराग को उठाया जो सब रागों का १५ घर है ॥ १०१ ॥ १६ मल्लार, ध्रुपाजी, टंक, सारंग और गूजरी, इन पांच स्त्रियों का पति यौवन में मस्त होकर बड़ा १७ दुल्लह आदि को रीझ में प्रीति कराकर हर्ष कराती हुई उन वेश्याओं ने बाईस श्रुति, पांच जाति, तीन ग्राम और इक्कीस मूर्छना को संभावित स्थानों पर स्थापन करके सुन्दर मापसे अलाप रचकर १८ ब्रह्मताल (हकताला) फैलाया ॥ १०२ ॥

चउ४कोन पट्टे१न तास यों पैपन्यास२ मंडित चित्र ॥
 मनु बाटिका१ बहु पुष्प भौरन भास३ भौरन मित्र ॥
 किंभु पत्र१ पै बहुचित्र२ सोमित चित्रकारन केर ॥
 इम अघि उद्धत इष्ट आकृति दैन भा कृति देर ॥१०३॥
 पयफेर अकुस घेर१ घुम्मत केणिका कि प्रतान२॥
 मुरिजात ज्यों लचकात लंक विवक तुष्टन मान ॥
 फविजात तंडव यों गता१गत२ सौचि३ चक्र४ फिराव ॥
 भ्रमिजात मैच्छरि भावमै गुमिजात अच्छरिभाव ॥ १०४ ॥
 ततै१ आदि वादन च्यारि४ नौदन धारि रारिहु तथ ॥
 सब भैकु१ धित्य२पिपी३ ठनंक४ न मान मेलात सत्य ॥
 उदैप्रादक१ रु मेलापक२ ध्रुव३ अंतर४रु आभोग५ ॥
 जहँ लखि गीतक पच५ भागन सखि सभय जोग ॥१०५॥
 पैद१ ताल२ ओ स्वर३ पाट४ तेन५ बहोरि बिरुवहु तथ ॥
 इम गीत अग छ६ भग आश्रित संतवी क्रम सत्य ॥
मिलि देस ताल१ रु दानि२ मानुज३ गीतें जो हुव गीत ॥

चार कोनेवाले। यस्त्र (विछायत) पर अथवा चार कोनेवाले वस्त्र पाटिये (तस्त्रत)
 पर चारणासे विचित्र२ विन्यास रचा सो मानों १५ गीतों में पुष्पों के बहुत गुच्छों
 पर उनके मित्र भ्रमरों ने प्रकाश किया है ४ किना पत्र के ऊपर चित्तरों ने शोभाय
 मान चित्र किये हैं ५ इस प्रकार उन नायिकाओं के चरख अनुकूल आकृति से
 उठते हैं सो ९ शोभा करने में दूरी नहीं करते ॥१०३॥ पैरों के फेर से ७ लहंगे का
 घेर घूमता है सो मानों ८ छोटा डेरा फैला है ९ विशेष पाक वाली कमर को
 छचनाती हुई तूटी हुई (कमर) के समान मुड़ती है १० मृत्प में जाने आने और
 ११ देखी होकर गोछाकार फिरने में ऐसी शोभा पाती है कि जिसके भावमें १२
 मच्छी भी भ्रम जाती है और अप्सरा का भाव भी गुम जाता है ॥१०४॥ १३
 तात आदि के चारों पाथों में १४ शब्द करके तहाँ पर युक्त किया, पहा भैकु
 आदि उन चारों पाथों के अनुकरण के शब्द हैं १५ गीत के इन पाँच भागों
 को लेकर जहाँ जिसका समय था वहाँ वसकी मिलाया ॥ १०५ ॥ १६ ये राग
 के छ, अग हैं १७ यह गीत जाने योग्य हुआ, स्वर के धुजाने को गसक कहते

स्वरकंप जो गमकाश्चर्य पंद्रह१५भेद तास प्रतीत ॥१०६॥
 *तिरपाश्चर्य आदि१म लौ तथा इम सर्व१५नामित१६अंत॥
 जिम अष्टि१६ सम्मित एहि मिश्रित१६सौलहैं१६परजंत ॥
 आरोह१में अवरोह२में थिति३ मैंहु ए१६ इम आनि॥
 लहरी मनो रचिबेलगी स्वर सिंधु तानन तानि ॥१०७॥
 जति१ प्रास२ प्रापित गीत१ दस१०गुन व्यक्तता१दिक जुत॥
 त्रि३विधत्व भिन्न प्रबंध३ जे तनु इक१इक१अछुत ॥
 तिन्ह नाम ए सूडस्थ१ अलिश्रित२ विप्रकीर्ण तथाहि ॥
 एला१दि रुपोपित अंग अठ्ठ८न सूड१ नामक आहि ॥१०८॥
 वर्णा१दि मित चउबीस२४सौ अलिसंश्रयाश्चर्य बखान ॥
 श्रीरंग१आदि१छतीस३६सौ वपु विप्रकीर्ण३विधान ॥
 जहँ पंच५ मान प्रबंध जातिहु आदि तत्थ छ६ अंग ॥
 पुनि अंग इक१इक१ हानि जे पगि सिद्ध ठहै क्रम संग१०९
 अभिधान ए तिन्ह मेदिनी१ अरु नंदिनी२ अभिराम ॥
 पुनि दीपनी३तिम पावनी४ तारावली५ जुत ताम ॥
 तिन्ह ठानि संभव१आनि संभव२में असंभव३ त्यागि ॥

इसके पन्द्रह भेद हैं ॥ १०६ ॥ जो * तिरपा को आदि लेकर सब पर्यन्त पन्द्रह हैं और नामितको अंत में लेने से सब मिलकर सौलह भेद हैं जिनको चढ़ाने, उतारने और ठहरानेमें, इन सौलहों गमकों को लाकर स्वर रूपी समुद्र में तानों को फैलाकर मानों लहरें रचने लगीं ॥ १०७ ॥ जती और प्रासको लेकर व्यक्त आदि राग के दश गुण हैं वे भिन्न प्रबंधों से १ तीन प्रकार के हैं वे एक एक से नहीं मिलते जिनके नाम आगे कहते हैं इनमें एलाको आदि लेकर आठ अंगवाला सूड नामक २ प्रसिद्ध ३ है ॥ १०८ ॥ वर्ण से आदि लेकर चौबीस के प्रमाणवाला अलिसंश्रय नामका कहते हैं और श्रीरंग को आदि लेकर भेदवाला विप्रकीर्ण है तहां पांच प्रमाण जाति में प्रथम के छः अंग हैं जिनमें से एक एक क्रम करने से क्रम सहित सिद्ध होते हैं ॥ १०९ ॥ ४ जिनके नाम आगे कहते हैं ५ सुंदर ६ तहां, इनको जहां जिसका संभव

रस प्रीति आलस्यवोर दै सव रजये अनुरागि ॥११०॥
 सिव१ सक्ति२ संभव ताल देसिय२ उक्त वहाँ किय सज्ज ।
 तस वर्ण पंच५ अनुद्रुता१दिक हेर देलय कज्ज ॥
 लघु इक१कै सु सपादलघु२ मत भेदतैं दुवर मान ।
 उच्चारिवे मित व्है अनुद्रुत१ वर्णा१ तस अभिधान ॥१११॥
 मिलि है२अनुद्रुत इक१व्है द्रुत१२वर्णा काल प्रमेय ।
 मिलिकै द्रुतद्वय२इक१लघु१३लघु है२मिले गुरु१४ गेय ॥
 लघुतीन३तैं प्लुत१५वर्णा व्है इक१ ताहि मान ललाम ।
 रहि तालमै मिति पच५ भेदक वर्णा ए५ अभिराम ॥११२॥
 अत्र तालके दस१० प्रान व्है तहँ काल१ उक्तहि एस ।
 मिलि गोध्य मग२क्रिया३रु अंग४प्रदा५रूप जाति६विशेष ॥
 पुनि है कला७लय८त्पोँ गिनोजति९दसम१०तहँ प्रस्तार१०।
 इहिँ दसक१०करि असुमत सद्धि५ ब्रह्मताल उदार ॥११३॥
 ता१नाम दक्षिण१पानि जानिल२नाम वामक२तत्थ ।
 सिव१ सक्ति२ ए मिलि ताल सभव व्है कहे कम सत्य ॥
 मिव१तैं समाहत सक्ति२ व्है बिधि३अन्यथा१बिधि दानि२।

धा यहा उनको लाकर असंभव को छोड़कर प्रीति रस के घर में बुझोकर सब प्रेमियों को प्रमन्न किये ॥ ११० ॥ एक शिष से और दूसरा शक्ति से उत्पन्न हुए दो प्रकार के देशी ताल कहते हैं सो यहा संक्षिप्त किये इनके अनुद्रुत का आदि लेकर लयके शिषे पाच वर्ण कहे हैं यहा मत भेद से कोई एक लघु और कोई १ सवाको अनुद्रुत वर्ण कहते हैं ॥ १११ ॥ दो अनुद्रुत मिलकर एक द्रुत होता है जिससे वर्ण के समय का स्वार्थ ज्ञान होता है, दो द्रुत मिलकर एक लघु और दो लघु मिलने से गुरु ३ कहते हैं और तीन लघु से एक प्लुत नामक वर्ण का ४सुवर प्रमाण होता है सो ताल में येही वर्ण नामके सुवर पाच भेद हैं ॥११२॥ अथ आगे तालके दश प्राण कहते हैं इन दश प्राणों से ५ प्राणधारी प्रप्राताल साधा ॥ ११३ ॥ इन में दक्षिण हाथ से यजनेवाला ताल शिव से और वामहाथ से यजनेवाला शक्ति से उत्पन्न हुआ कहते हैं जिनमें प्रथम ९ दहिने हाथ से यजाकर फिर वाम हाथ से यजायें वह बिधि

संपा१ रु ताल२ रु सन्निपात३ अघात वेद प्रमानि ॥११४॥

इम नर्तकी जन जूह पट्टनपैं कहारन अंस ॥

रचिबेलगी नृत्य गीत सुचि१ रस अन्य तिय अवतंस ॥

करि हाव१ भाव२ कटाक्ष३ के कम अच्छरिन अनुकार ॥

हुव मोहिनी मन जन्य१ मंडप२ लोक मोहन हार ॥ ११५ ॥

त्रिक३ गान१ वादन२ नाट्य३ संतत मान मेलित मोहि ॥

इक१ लौ प्रसारिय राग२ आदिक रोहि१ त्यों अवरोहि२ ॥

सह घेर अंसुक फेर घुटन लंक तुटन संक ॥

बिरचैं जथातथ आनि संभ्रम ठानि बंक१ अबंक२ ॥ ११६ ॥

लसि मोद लंबाहिं इखिख अबंभिहिं जन्य१ मंडप२ लोक ॥

शृंगार१ मैं सभिभाव जे भनि इष्ट चाहत ओकैं ॥

इम बिंद बुद्धत बित्त संचैय गम्य स्वासुर अैन ॥

पहुँच्यो पुरीजन लाजके निधि पाल ठानत नैन ॥ ११७ ॥

अति प्यार कार बजारके जन वारके दुहुँ२ ओर ॥

लखिबे अनारतकार लगिय चंद्र१ जानि चकोर२ ॥

उपदा१ निजोचितैं उद्धरैं रु करैं निछावरि२ केक ॥

दानीय जे खिनपैं दिपे इनमेंहु आढ्य अनेक ॥११८॥

त है और ऐसा नहीं करने से रीति बिगड़ती है ॥ ११४ ॥ १ इस प्रकार पायों का समूह २ कहारों के कंधे के पाटिये के ऊपर ३ शृंगार रस में ४ अन्य स्त्रियों का झुझुट ५ अप्सराओं के सदृश ६ मांढा और जानके लोकों के मनको मोहने के लिये वह मोहन करनेवाली हुई ॥ ११५ ॥ ७ चढ़ाकर और उतारकर, घुटनों से टलहंगे के घेरको फेरकर ८ कमर लूटने की शंका से ॥ ११६ ॥ ११ आकाश में इस १० लाभ को देखकर जान और मांढा के लोक प्रसन्न होते हैं (कहारों के कंधे पर आकाश में नचती थी इस कारण आकाश में देखना कहा है) १२ शृंगार रस में अजकर १३ बांछित घर को चाहते हैं १४ धनके समूह की वर्षा करता हुआ जाने योग्य स्वसुर के घर पर गया ॥ ११७ ॥ १५ निरंतर १६ अपने उचित भेट निकाळते हैं १७ अनेक धनवान शोभायमान हुए ॥ ११८ ॥

इम जाइ तोरन सद्धि लौकिक दै कसा अवघात,
 बलि बंदिशकै बलि दीपशंतिप केर बेरै बिभात ॥
 प्रविसाइ त्यों अवरोध भूपहिं थपि उद्वहं थान,
 वरन्ध्याँ अनुक्रम ठानि व्याहिय पुब्ब१ व्याह प्रमान ॥११९॥
 विधि वेद सूचित सद्धि दुल्लह१ दुल्लही२ बपु बाम,
 बपु बाम२ नेमै वरी करी बपु बाम२ प्रेम प्रकाम ॥
 कुल सेखके अभिजात कूरम स्यामसिंह सुताजु,
 कहिये गुलाबकुमारि२०२१२कोविद नामधेय नुंताजु ॥१२०॥
 गुन१ रूप२ उत्तम चाहि ताहि विवाहि कै पटगेह,
 अभिराम राम२०२१४ नरेस आइउ ओज१ मोज२ अछेह ॥
 निज कृष्ण१ धीसेख बुल्लि बटन त्याग अपि निदेस,
 प्रारभ मंडिय किति पूरन बाढ देस१ बिदेस२ ॥ १२१ ॥
 कैविके पिता कविराज चड१ रु भट्ट रत्न२ सुकज्ज,
 करिवे लगे सब द्रव्य चै करि स्वामि जे करि सज्ज ॥
 रजनी द्वितीय२हु सद्धि लौकिक रीम्हिकै अधिराज,
 किय इ१पै गाइक१गाइका२ कुल सर्व साज समाज ॥१२२॥
 रहि यों किते दिन त्यों बैनीयक बर्गकों अनुरत्त,
 द्वि१पै१वाजि२भूपन३वस्त्र४रूपय५आदि उत्तम दत्त ॥
 पुर जुज्झनौ सन सिक्ख१सग सु दाय२ओसर पाह,

१ तोरण पर चानुक का प्रहार करके २ शरीर विशेष शोभा युक्त हुआ ३
 विवाह के स्थान पर स्थापन करके ४ जोषपुर में प्रथम विवाह हुआ उसमें
 वर्णन किये अनुक्रम से ॥ ११९ ॥ उस स्त्री के शरीर को प्रेम सहित परकर
 अपने घाम शरीर में उसको ५अरधांगी बनाई ६सेखावत कछवाहे स्यामसिंह
 की पुत्री ७ स्तुतियोग्य ॥ १२० ॥ = डेरों में ८ मंत्री १० आरभ रचा (किया)
 ॥ १२१ ॥ ११ प्रयकर्ता सूर्यमल्ल के पिता १२ धनवान् ॥ १२२ ॥ १३ पाषाणों के
 समूह को प्रीति युक्त होकर १४ हाथी खड्गवान रामसिंह के खड्गने पर

चहुवान चल्लत भंडपी हदतैं सुरे चहुआइ ॥१२३॥
 तहैं सेख नत्तिप खेतरीपति नामतैं बखतेस,
 उपदा कस्यो तिहिं खास अप्पन बाज १ बेग बिसेस ॥
 अति दच्छ उडुन कच्छ संभव लाडिया १ अभिधान,
 बर अंग रंग कुमैत २ अंगन जंग गैन बिमान ॥ १२४ ॥
 लाहि निट्टि सप्ति सु व्है दुर्घां हठ सप्त ७ सप्ति लुभाइ,
 प्रतिमग्न प्रस्थित टारि जैपुर यौं बिरयो पुर आइ ॥
 बिरचे असेस बिसेस वंघाहत बेद १ लोक २ विधेय,
 दिय पट्ट १ तत्वहजार २५००० दम्भन दुलही हित देष ॥१२५॥

॥ दोहा ॥

स्यामसिंहदास जु सचित्र, स्वसुताकौ दिय सत्थ ॥
 सिविविराम १ नामक सुपै, आकारित हुव अत्थ ॥ १२६ ॥
 सम्मति करि तस तंत्रसौं, माटुंदा १ पुर मुख्य ॥
 कृष्णाराम १ धात्रेय किय, स्वामि हुकम चाहि मुख्य ॥१२७॥

॥ मत्तमयूरः ॥

यौंही बिर्दा १ जाहि प्रधानी करि अप्यो, माटुंदा १ पच्चीससहस्री
 २५००० बैलि मप्यो ॥

ताहूनें तच्छंद बढायो वसु तामैं, सारो पट्टा फुल्लनछायो सुखमामैं १२८

१ मांडा के लोग अपनी हद से २ चारों ओर से पीछे किये ॥ १२३ ॥ ३
 नजर ४ उड़ने में चतुर ५ कच्छ का पैदा हुआ ६ लाडिया नामक घोड़ा
 युद्ध क्षेत्र में ७ आकाश का विमान ॥ १२४ ॥ दोनों ओर हठ होकर बड़ घोड़ा
 कठिनाई से लिया जिस पर ८ सान घोड़ोंवाला (सूर्य) भी लोभ करता था ६
 बुंदी में प्रवेश किया १० उक्त (कहेहुए) ११ पट्टा ॥ १२५ ॥ १२ अपनी पुत्री के
 साथ शिवराम नामवाले को यहां १३ बुलाया ॥ १२६ ॥ १२७ ॥ १४ दुलहन ने उसी
 को प्रधान करके १५ हासिल १६ उसने अपने अधिकार में और भी धन
 (हासिल) बढाया १७ सब पट्टा १८ परम शोभा से फूलोंछाया होगया ॥ १२८ ॥

इतिश्रो वशभारकरे महाचम्पूके उत्तरायणोऽष्टमराशौ बुन्दीन्दरा
मसिंहचरित्रे रामसिंहजूझणोंनामकनगरद्वितीयविवाहकरणानन्तर
बुदीपत्यागमनवर्णानमष्टमो ८ मयूख ॥ ८ ॥

आदित सप्तत्युत्तरत्रिंशत्तमो मयूख ॥ ३७० ॥

॥ प्रायोजनजदेशीया प्राकृती मिश्रितभा ॥

दोहा—डम बिलसत बुंदिय अधिप, वैभव अतुल बिलास ॥

जुग२ रानिन अनुरत्त जहँ, प्रस्तरि खजस प्रकास ॥ १ ॥

सूरि१ सुकवि२ सुभट३न साहित, बिहरत रहित विकार ॥

सैर१धर२वन३उपवन४सदन५, मंसद६सग्धि७सिकार॥२॥

क्रतु पाउस अंतर रसिक, राजत अतुल रसेस ॥

समनुभूत सगीत१ सह, समुचित कुतुक असेस ॥ ३ ॥

पाउस३ सुख इम भुगिपहु, बिलासत सरद४ बहार ॥

इसँ७ प्रति अह बिलासिय आखिल, सह कतिप८महसारा११

सुचित दुव गज धृति१८८२ सकहि, अर्जुन२स्मरतिथि१३ उज्ज ॥

प्रभु अमार्य कोटापुगहि, प्रस्थित हुव गुनपुज्ज ॥ ५ ॥

()

कृष्णराम अमात्यकोविद स्वामि सन्नुनसाल,

कालफिल्ड१२ अजगटसों मिलिवे चल्पो तिहि काल ॥

सो हुतो तहँ थान सूचित दग बाह्ये प्रदेस ॥

वगला१ जहँ बद्ध बिस्तृत लक्ष लक्ष्य बिसेस ॥ ६ ॥

श्रीवशभास्का महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टमराशि में बुदी के मृपति
रामसिंह के चरित्र में, रामसिंह का जूझणों नामक नगर में द्वितीय विवाह
करके बाहे बुदी आने के वर्णन का आठवाँ ८ मयूख समाप्त हुआ ॥ ८ ॥ और
आदि से तीनसौ सत्तर ३७० मयूख हुए ॥

१ पण्डित २ ताजावा में ३ समा में ४ सामिक भोजन करने में ॥ १ ॥ २ ॥ ५
मृपति ५ अनुभव किया ॥ ६ ॥ ७ आश्विन मास में ८ बरसव का सार ॥ ४ ॥
१० कार्तिक ६ सुवि तेरस के दिन ॥१॥ ११नगर के बाहर ॥ १ ॥

॥ उद्गुरः ॥

जब सक बेद हय धृति १८७४ जात, बढि इत अंगरेजन *ब्रात॥
 छिति िकर दक्खिनीन छुराइ, इन लिय प्रांत यह अपनाइ ॥७॥
 जैपुर१ जोधपुर२ धुर जोरि, बुंदिय३ उदयदंग४ बहोरि ॥
 करि बस त्योंहि खिल कोटा५दि, छिति सब स्वीय सासन छादि८५
 इतिमुख थान थपि अजंट, बिरजिय तंत्र निज निज बंट ॥
 सहरन बाह्य सासन संधि, बहुविध बंगला लिय बंधि ॥ ९ ॥
 करि इक१ साँसिता सब केर, मालिक थपि दिय अजमेर ॥
 बुंदियनैर तब छाहि बंट, आइउ पुब्ब१ टाड अजंट ॥ १० ॥
 तिम हुव कालफिल्ड२ द्वितीय, सजि इन्ह अन्यतर१ घर स्वीय ॥
 किय तहँ बंगला१ चितिकाम, पुरसन पुब्ब१घर सिर धाम ॥११॥
 सो हुव पीठमाल समाप्त, पुनि रहि रुद्ध नहि चंप्राप्त ॥
 तजि कछु हेतु करि इम ताहि, चर्य तस नंदगामहि चाहि ॥१२॥
 तिहिँ पुरतैं सु उत्तर१७ ओर, दिय तस अस्त दिस१५ नदि दोर
 पगि कछु दूर नदि सन पुब्ब, परिचितं बंगला१ जु अपुब्ब ॥१३॥
 ॥ नपुब्ब१अपुब्ब२ अंत्यानुपासः ॥ १ ॥

तबसन हो अजंटहु तत्थ, प्रभु पुर आत अवसर अत्थ ॥
 इहि प्रति मिलन उक्त अनेहँ, आदरि कछु प्रयोजन एह ॥ १४ ॥
 तकि हित प्रभु मुसाहब ताम, नयपटु कृष्णाराम स नाम ॥

*अंगरेजोंके समूहने बढकर दक्षिणियोंके हाथसे भूमि छुडाकर इस प्रान्तको अपने अधिकार में करलिया ॥७॥ १ राजपूतानेकी सब भूमिको अपनी आज्ञासे छाई ॥ ८ ॥ २ इत्यादि स्थानों पर ३ नगरों के बाहर ॥ ९ ॥ ४ सब पर आज्ञा करनेवाला अर्थात् सब के ऊपर एक हाकिम करके उसको अजमेर में रक्खा ॥ १० ॥ ५ बंगले की नीम (बुनियाद) डाली ॥ ११ ॥ ६ पीढा (धाला) मात्र तयार हुआ ७ काम रुककर संचय को प्राप्त नहीं हुआ अर्थात् पूरा बन नहीं सका ८ कोटे में उसका ढ बनाना चाहा ॥ १२ ॥ १० जानने योग्य अपूर्व बंगला हुआ ॥ १३ ॥ ११ कहे हुए समय में ॥ १४ ॥ १५ ॥

सुमति सु पाइ प्रभु सन सिक्ख, तनि प्रभु राज्य बैभव तिकख १५
पत्तन *नदग्रामहि पत्त, तकि नय बगला गय तत्त ॥

भिंटिय कालफिल्डर-सु भाइ, वह जह रीति सम्मुह आइ ॥ १६ ॥

मदिर लौंगयो सनमानि, तकि हित उचित स्वागत तानि ॥

विरचन विविधा अवस्थनवस्थ, राचि कछु मत्र मंविजन रहस्या १७

पुनि लहि गंधतैल १८ पान २, दुवरहि दुर्दिस नेह निदान ॥

पुनि कारि सिक्ख सिविरहि पत्त, अर्थिन बितरि बसु अनुरत्त १८

इम तिथि असित १ मग्ग ९ उपादि २, विरचन मिलन भल्लहि बादि

विदित जु माधवादि विलास १, उपवन भल्ल कृत जह आस ॥ १९ ॥

जत्र तह हो सु जालम जात, माधव विफल दर्प मचात ॥

दामि निज नृपहि मासिक देत, अप्पहि बनि नृपत्व उपेत ॥ २० ॥

प्रतिबल कथनमात्र प्रधान, सबविधि स्वामिभाव समान ॥

घुदिय सचिव तब तिहि वेल, मडन दुर्दिस नय मय मेल ॥ २१ ॥

माधवसोहु चहत मिलाप, इम गय तास उपवन आप ॥

अभिमुख भल्ल सुनतहि आइ, बाहिर बेल बेलज बिहाइ ॥ २२ ॥

बढि मग पचसत ५०० मित वंस, सम्मुह भिंटे अधिक प्रसस ॥

पुनि दुवर उवत उपवन पत्त, विरचिय काल कछु हित बत्त ॥ २३ ॥

दिय १ लिय २ अतर १ बीटकर २ देय, पटकुट्ट पत्त पुनि सह श्रेय ॥

हुव यह दोजि २ दिन व्यपहार, बलि करि भूप भेट बिचार ॥ २४ ॥

अतर त्रिंशदिन दै तस अग्ग, मेचक १ मिलत गुहतिथि १ मग्ग ९ ॥

* कोटा पुर में गया ॥ १६ ॥ वही प्रकार से यश में नहीं थे वनको वदा में करने को ॥ एकान्त में सजाह की ॥ १७ ॥ १ आतर पान लेकर ॥ १८ ॥ २ माधव, पिछास न मफ भालों का किया हुआ ३ बाग ४ है ॥ १९ ॥ ५ जालमसिंह का पुत्र ६ माधवसिंह ७ अपने राजा को दूध देकर तनखाह देता था ॥ २० ॥ ८ वस पाग में ९ नीतिमय मिलाप करने को ॥ २१ ॥ १० सन्मुख ११ पाग को कोट को छोड़कर बाहर आया ॥ २२ ॥ २१ ॥ १२ डेरे में ॥ २४ ॥

माधव स्वीय नृपहिं मनाइ, बुलन उतहु *श्रील बनाइ ॥ २५ ॥
 परिकर सज्ज नृप ठिक पेलि, मनिगन आभरन२ पट२ मेलि ॥
 बुंदिय सचिव तहँ बुलवाइ, सब बिधि मिलन रीति सधाइ ॥ २६ ॥
 बर हय१ खिलत२ अर्घ बिसाल, मनिमय †पट्ट३ सुत्तियमाल४ ॥
 निज नृप पानि प्रति पहुँचाइ, दृढ हित बरतु चपारि४ दिवाइ ॥ २७ ॥
 आदरि नंदग्राम अधीस, सूचित ठानि इम बखर्सास ॥
 सेंद दिय कृष्णरामहि सिकख, तुलि मति अल सम्पति तिकख२८
 इम बलिं भिंदि उक्त अजंट, कृत दुव२ राज्य भुव गत कंट ॥
 इम मुरिं हड्ड६१इंद्र अमात्य, बुंदिय भू बहिष्कृत ब्रात्यं ॥ २९ ॥
 सासन स्वसिर निबहन सूर, हुव नत आइ रवामि हजूर ॥
 बिदलित बिक्खि प्रातिबल बाद, प्रभु किय कज्ज सिद्धि प्रसाद३०
 मेचक१ तदनु उतरत मग्ग९, अधिगत पक्ख धवलित२ अग्ग ॥
 बनि जहँ तीज३ तिथि ससि बार२, बिरंचिय गोठ६गोन बिचार३१
 करि दुबिलान१ इक्क१ सुकाम, रुचि गय गोठपुर२ प्रभु राम२०१।
 साहय कालाफिल्ड२हु संग, दैल सह पत्त सूचित द्रंग ॥ ३२ ॥
 पट्टनिनैर रन करि पुव्व, अरिदहि अंबुगसि१ कि उब्ब२ ॥
 खिरि बलवंत२०१।तिलतिल खेत, सूचित आत१ सूनुर२ समेत३३
 तिहिं किय सक्षय निज त्रिविवेसं, सुत लघु भोमं२०२ तस रहि
 सेस ॥

जब दिय तातैं आसन ताहि, नृपवर प्रीति१ रीति२ निबाहि ॥ ३४ ॥

अपने राजाको लक्ष्मीचान् बनाकर ॥ २५ ॥ २६ ॥ † बड़े मूल्य के ‡ शिरपेच ॥ २७ ॥ १
 सभा से ॥ २८ ॥ २ फिर अजंट से मिलकर, बुंदी की भूमि के बाहर से वह ३
 (कृष्णराम) ॥ २६ ॥ ३० ॥ ४ शुक्लपक्ष के प्राप्त होने पर ५ गोठड़ा नगर
 जाने का विचार किया ॥ ३१ ॥ ६ सेना सहित ॥ ३२ ॥ ७ समुद्र में द बड़वाग्नि
 समान ॥ ३३ ॥ ९ इन्द्रने उस बलवंतसिंह को अपना सभासद किया जिसका
 पुत्र १० भोमसिंह बाकी रहा तिसको ११ पिता का पाठ दिया ॥ ३४ ॥

लहि जस आइ पुनि दुबिलान, अहं कछु रमि सिकार अमान ।
 परतटं जो अजट पठाइ, इन पुर अप्प बिलसिष आइ ॥३५॥
 समुझहु यह १८८०हि लागत साक, जट्टन खडि मडि कजाक ।
 तोपन भरतपुर गढ तोरि, मृध जय सवन मान मरोरि ॥३६॥
 यिर सब देस १ पुर २ वस थप्पि, अर्भक नृपहिं सो पुनि अप्पि ॥
 करि यह कपना जय काम, नृप १ अय २ उद्धरिय जस १ नाम २ ३
 भाकत कतिक इहि १८८२ एक भाव, बर्मा नृपहु तास बढाव ।
 सूत्रा अराकान १ रथकीय, तिम बलि तनासरम २ द्वितीय २ ॥३८॥
 द्विक २ यह अगरेज ७ न दिन्न, कतिकन अत्र ससय किन्न ॥
 समुझहु ता १८८२हि सूचित साक, जैपुर ठानि कपट कजाक ३९
 श्रावक इक्क १ भुक्ते १ सनाम, करि तिहिं धुत्त धुत्तन काम ॥
 अतर भेदि सब अवरोध, बहु दल छवि रानिन बोध ॥ ४० ॥
 मुख्य जु भैटिनी तिन माहिं, निहँप नाहिं जिहिं किय नाहिं ॥
 तिय वह भट्टियानिय १ तास, हुव करि वै ३हि कुल उपहास ॥४१॥
 रूपा किकारिय अधरत्त तस हुव मुख्य मत्रिय तत्त ॥
 इत रहि भुन १ बाहिर ईस, उत द्वै २ उक्त मध्य अधीस ॥ ४२ ॥
 श्रावक बुद्धि फद प्रसारि, राउल बैरिसल्ल बिहोरि ॥
 बाहिर मुख्य भुन १ कुबोध, रूपा १ धासैखी अवरोध ॥ ४३ ॥

१ कुछदिन २ घामल नदा क परले किनार ॥३५॥ ३ युद्ध करके जाटो का मारक
 ४ युद्ध से ॥३६॥ ५ माजरा राजा को भरतपुर पीछा देकर ६ ईष्ट इष्टिया कपन
 ने जय का काम करके भरतपुर के राजा और ७ आगे आनेवाले समय के युद्ध
 माग्य के यश और नाश का उद्धार किया ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ८ कितनेही लोग
 हमम सदह करने हैं ॥ १९ ॥ १० भूनाराम नामक ११ धूर्त १२ सरावगी पैश्य
 धूर्तों का काम करके १३ सब जनाने को अपने में मिलाकर ॥ ४० ॥ १४ निकट
 १३ भट्टियानी रानी ने नहीं नहीं की ॥ ४१ ॥ भीतर रानी भट्टियानी श्री
 रूपा पधारन से १५ दोना ही माजिक रहीं ॥ ४२ ॥ १६ निकाछ कर १७ जना
 में रूपा पहारन उसकी मंत्री रही ॥ ४३ ॥

मन जिहिं भुंत^१ रानिश्न मेलि, खलपन खेल अद्भुत खेलि ॥
 महलन छन्न द्वैरहि मिलाइ, समुचित राउलहि निकसाइ । ४४ ।
 बहु बसुं अंगरेजनअपि, थिर सब तंत्र अप्पन थपि ॥
 कति अवरोधजन प्रतिकूल, सह हठ जे लखे हिय मूल । ४५ ।
 जे सब नारि^२ नाजर^२ जूह, आये न लखि निज मति ऊह ॥
 गहि तिन्ह पटकि कैद अंगार, दुष्टन रुद्ध करि करि द्वार । ४६ ।
 गन बहु ठानि अनसन गूढ, मारे सतन जन करि मूढ ॥
 सिसु बय पिक्खि नृप जयसीह, बहि त्रिक^३ लास तास अबीह ४७
 मिलि तह स्यामसिंह^४ प्रमत्त, प्रभु स्वसुरत्व चाहि जिहि पत्त ॥
 सठ इक चिमनसिंह^५ सनाम, धरि भव मनोहरपुर धाम । ४८ ।
 जो खल हो खवासिप्रजाते, यह द्विक^२ सेख कुल इत आत ॥
 मालिक उक्त रानिय^१ माहिं, अभिमैत किंकरी^२ जुत आहिं ४९
 इत हुव उक्त जुग^२ जुत एस, बाहिर भुंत^१ वैश्य बिसेस ॥
 तहँ इम नारि दुव^२ नर तीन^३, इम मिलि मुक्त राज्य अधीन ॥ ५० ॥
 दृढ दम भुंत^१ रानिय^२ द्वैरहि, हाकिम उग्र सब सिर ठैरहि ॥
 असहने जे लखे भट और, जिन्ह द्रिय कहि घर बरजोर^१ ॥ ५१ ॥

१ राउल वैरीशाल उचित था जिसको निकाल दिया ॥ ४४ ॥ २ अंगरेजों को बहुत धन देकर सबको अपने ३ आधीन कर लिया ४ कितने ही जनाने लोग विरुद्ध थे ॥ ४५ ॥ ५ इनकी बुद्धि की तर्कना में नहीं आये ६ कैद घर में ॥ ४६ ॥ ७ छाने निराहार रखकर ८ सैकड़ों मनुष्यों को मार डाले, राजा जयसिंह को बालक जानकर इन तीनों (एक भूताराम और दोनों उपरोक्त स्त्रियों) की ९ निर्भय आस बही ॥ ४७ ॥ १० रावराजा रामसिंह का स्वसुर ॥ ४८ ॥ ११ पासवान स्त्री से उत्पन्न १२ रूपां नामक दासी सहित तीनों आदर पाये हुए तथा उस रानी का अभीष्ट साधनेवाले थे ॥ ४९ ॥ १३ भूताराम वैश्य १४ इस प्रकार दो स्त्रियां भटियानी और रूपां और तीन पुरुष (भूताराम और दोनों सेखाउत) इन पाँचों ने मिलकर सब राज्य को अपने अधीन करके भोगा ॥ ५० ॥ १५ नहीं सहने योग्य १६ जचरी से निकाल दिये ॥ ५१ ॥

नतंसिर जे रहे बल नासि, मुरुपहु ते लयेहि बिसासि ॥

जयपुर ईस १ तजि भजि जार २, इम हुव अधकार अगार ॥५२॥

राउल जो प्रधान विरत्त, प्रेरित मान बिनु गृह पैत ॥

सो रहि दग निज सामोद, कट्टहि काल पत्त प्रमोद ॥५३॥

मिलि सक अग अहि धृति १८८३ मान, धिर गिनि अज्जभुव नि-
ज थान ॥

हो इह नवम ९ जनरल इत, जिहिं कहिं सिंधु जुग २ परजंत ॥५४॥

अवहित कपनीजन आनि, मन निज छद अज्जन मानि ॥

अब दिय यह निदेस अभग, स्त्री जिन १ दहहु निजपति २ सग ॥५५॥

थित पुनि नवम ९ जनरल थान, अह कछु मटकलप १० १ अभिधान

अज्जन रोध मेटि असेस, दिय जिहिं सुदि लेख निदेस ॥ ५६ ॥

तिम जिखि खबर छंद तब तेहि, हुव मिथे प्रहित जित तित हेहि ॥

सक इत उक्त १८८३ मिति अनुसार, बनि जहँ छद मुख तिथि ६

बुध वार ४ ॥ ५७ ॥

पागिसित १ पक्ख श्राम सैहस्प १०, रुचि मन कोहु कज्ज रहस्प ॥

पिप्पललव जहँ तहँ प्रात, अह चढि पंच ५ नाहिपे आत ॥५८॥

गदियत खेरला १ जहँ ग्राम, आवत मटकलप १० १ अभिराम ॥

१ मस्तक झुकाकर ॥ ५२ ॥ २ प्रधानपन से विरक्त ३ बिना मान होकर घर गया ॥ ५३ ॥ ४ आर्पावर्त को अपना निग्रह स्थान समझ कर खेद है कि जिसका कथन पूर्व और पश्चिम के दोनों समुद्रों तक था वस नवम गणरनर जनरल ने ॥ ५४ ॥ ५ कपनी के लोकों को सावधान करके यह आज्ञा दी कि स्त्रियों को अपने पतियों के साथ १ मत जल्लाओ अर्थात् सती होना बंध किया ॥ ५५ ॥ ७ कुछ दिन ८ आर्प लोकों की सम्पूर्ण रोक मेट कर खयर के लेखों (अलवारों) की आज्ञा दी ॥ ५६ ॥ वसी समय से १२ माघार पक्ष लिखे जाकर १० परस्पर प्रेरित हुए जो आप तक हैं १२ स्वामिकार्तिक की तिथि (व्योतिथ में छठ तिथि का स्वामी स्वामिकार्तिक है) ॥ ५७ ॥ १२ पौष सुदि १३ पाच वड़ी दिन अडे ॥ ५८ ॥

इतसन कृष्णारामः अमात्य, जिहिं जस जातरूप कि जात्य ॥५९॥
 पहुँचि सु खेरला हृद पास, मिलि जिम पंगुसुन कइमास ॥
 इम तिहिं लौ मुखो मग आस, सद्धिय तालः तालहराः स ॥६०॥
 जनरल नवमः प्रतिनिधिजोहि, संभर मंत्रि पटुः इत सोहि ॥
 रूपात जु जवन जमियतखानः, थित ढिग सो वकीलहु थान ॥
 जहँ इम जाम त्रिकः निस जात, परि खिल जाम इकःहि प्रात ॥
 वहाँसन होइ प्रस्थित प्रीत, आवत ग्रामः तीनः अतीत ॥६२॥
 गहि नवग्रामः उत्तरः ओक, चहि जह रम्य आयत चोक ॥
 प्रभु उत आइ सम्मुह पत्त, रहि थित रीतिक्रम अनुरत्त ॥६३॥
 मिलि तहँ मटकलपः माहिपालः, बाहुरि तुष्ट नेह बिसाल ॥
 रहि वहः चैल गृह अनुरत्त, प्रभुः इत सुभ्र सौधन पत्त ॥६४॥
 इह गुरुः सप्तमियः अवदात, जहँ निस इकः नाडिय जात ॥
 भिंटन भूपः सूरिः सतेजः, आइउ उक्त तहँ अंग्रेजः ॥६५॥
 सु बिसत छत्रसौध समाज, अभिमुख उठि तब अधिराज ॥
 जिम बिधि अद्भ अंगन जाइ, आनि सु संग हित अधिकाइ ॥६६॥
 बैठिय इकः पीठः बिसेस, अभिहित अंगरेजः इलेसर ॥
 जहँ कछु बिजैन मंत्रहु जोरि, बखसिय अतरः पानः बहोरि ॥
 जनरल दसमः सम्मत जोहि, हाकिम सबन सिरपर होहि ॥
 तिहिं क्रम अधिक आदर तास, करि दियसिक्ख प्रीतिप्रकास ॥
 जिहिं पुनि अजिर दल लग जाइ, प्रभु इम बाहुरिय पहुँचाइ ॥

जिसका यश १ श्रेष्ठ शचांदा के समान था ॥५९॥ २ जयचन्द्र से कैलास पिला
 जैसे ॥ ६० ॥ ४ कायम मुकाम ॥ ६१ ॥ ५ एक पहर रात बाकी रहते ॥ ६२ ॥
 ॥ ६३ ॥ ६ डेरे में ७ श्वेत महलों में ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ८ छत्रमहल की सभा में
 घुसते ही ९ पेसवाई को ॥ ६६ ॥ १० एक आसन पर ११ कहाहुआ अंगरेज
 और श्रुति १२ एकांत सलाह करके ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ११ आधे चौक तक

वह गय तदनु जनपद डए, संभर विभव बिलसत सिष्ट ॥ ६९ ॥
 सूचित १८८३ सकहि तनि गृह सोक, लिय इत सधिया परलोक ॥
 रहि अबलौं सु दोलतराव, पावत पद पटेल पसाव ॥ ७० ॥
 वितजिय वेर तिहि इहिं वेर, गृह गृह इत हुव ग्वालेर ॥
 इहिं सुत कृतक तात अभाव, रहि तस पट्ट जनकुवशराव ॥ ७१ ॥
 मादजि १ पुत्र २ पुत्र ३ सु मानि, किय तिम अगरेजन कानि ॥
 इत प्रभु अप्प दहदह १ न अर्क, सखन सिद्ध इह उदक ॥ ७२ ॥
 सत्यिन सत्य उक्त १८८३हि साक, कानन मडि दोर कजाक ॥
 बहिय घात पात विभक्ति, सक्तिन कोल बेधन सक्ति ॥ ७३ ॥
 दोरत पिछि बाजिन देत, लघु बढि अप्प किंरि हनि जेत ॥
 बढि बढि दै पटी इक १ बीच, करि करि मगग सोनित कीचा ७४ ॥
 दुव २ त्रप ३ बेधि इम छितिदोर, भूपति बढि सत्यिन भार ॥
 अगामि अप्प किति अहुत, जहँ मुरि तोहँ अरुगान जुत ॥ ७५ ॥
 आवहिं सिद्ध सस्त्र अगार, बत्सर पदहम १५ बय बार ॥
 मिलि चउ अठ धृति १८८४ सक माप, इत पुर नंदग्राम इलाप ७६ ॥
 जवल्लग आयु लहि विधि जोर, किय निज देह हानि किंसोर ॥
 पित्तिल ३१ मगरोल प्रघात, गय नृप भ्रात लघु तजि गात ॥ ७७ ॥
 तस सुन पट्टपति किय ताम, सचिवहिं रामसिंह सनाम ॥

१ जिसपीछ जहा जानेकी इच्छा थी समवेशमें गया और बहूयाख(रामसिंह)
 ने ३ अष्ट वैभव का खिलास किया ॥ ६९ ॥ ७० ॥ उसने इस समय १ शरीर छोड़ा
 ५ दत्तक (गोद लिये हुए) ने पिता के अभाव में ग्वालेर का पाट लिया ॥ ७१ ॥
 ६ अगामि शुभ कर्म फल से ॥ ७२ ॥ ७३ नमदपरछियों से दुबरा को घेवनेकी शक्ति
 ॥ ७४ ॥ १ शीघ्र पहकर सुबहों को मारलेते हैं ॥ ७५ ॥ १ सुबहों को १ शक्त से खाल
 भालों सहित मुड़ते हैं ॥ ७६ ॥ कोटाके १ नृपति ॥ ७७ ॥ १ किशोरसिंह ने शरीर
 छोड़ा १५ मगरोल के युद्ध में राजा किशोरसिंह का छोटा भाई १४ पृथ्वी-
 सिंह मरा था ॥ ७८ ॥ उसके पुत्र को १६ तहा पाट का पति किया

कहियत ता१८८४हि सक समकाल, मृतइत उदयपुरमहिपाल ७८
 *रतजस भीमसिंह जु१ रान, जिहिं सुत भो अधीस जवान २ ॥
 बलि अब लखनेउव बात, जहँ सुत लघु सहादत१ जात ॥ ७९ ॥
 दिय असु गाजिमुखयुद्दीन २, रहि इम तह नसीरुद्दीन ॥
 सूचित१८८४सकहि बाहुल ८रवेत २, प्रतिपद१बीर१रवि समुपेत ८०
 निजकवि जनक चंड सनाम, तुम प्रभु पूज्य मन्त्रिय ताम ॥
 करि इक बैठि अगग कुमंत, अंबकदंग लिय बलवंत २०१ ॥ ८१ ॥
 तबसन रावरे प्रभु तात, खिजि हुव आत सिर अनखात ॥
 कविवर चंड तदपि लुकेन, रुचि बस गोठ जात रुकेन ॥ ८२ ॥
 तब नृप इतहु भासत भीम, तिन्ह प्रति बंध किय ताजीम ॥
 सो अब उक्त१८८४खिन अनुसार, प्रभु पुनि अप्पदिय करिप्यार ८३
 सत्थाहि खास हय २ सिरुपाव ४, भूधव तुष्ट दिय हित भाव ॥
 आदरि चंड कवि इम अप्प, दलि किय नष्ट कृपनन दप्प ८४
 इत सर नाग धृति१८८५ सक आत, अह जह नवमि ९मंछु १ अब-
 दात १ ॥

विक्रमनैर लहि विधि बाम, नृप मृत सुरतसिंह १ सनाम ॥ ८५ ॥
 तस सुत रत्नसिंह २सु तथ, हुव नृप राज्य करि निज हत्य ॥
 सकतिहिं १८८५बिसद २फगुन १२श्राम, इतपुरकापरनिअभिराम ८६

॥ ७८ ॥ *यशमें अनुरक्त रहनेवाले महाराणा भीमसिंहका देहान्त हुआ जिनका
 पुत्र जवानसिंह उदयपुर का पति हुआ ॥ ७९ ॥ लखनेऊ का नवाब गाजियुद्दीन
 मरा २ कार्तिक सुदि पक्ष में ३ रवि वार सहित ॥ ८० ॥ ४ ग्रन्थकर्ता सूर्यमल्ल के
 पिता चंडीदान को हे प्रभु (रामसिंह) तुमने उनको पूज्य माना ५ बलवंतसिंह
 ने खोटी सलाह से नैणवा नगर लोलिया था ॥ ८१ ॥ ६ गोठड़े जाते नहीं रुके
 ॥ ८२ ॥ ७ आपने प्यार करके वह ताजीम पीछी दी ॥ ८३ ॥ ८ प्रभुपति ने प्र-
 सन्न होकर ९ दर्प (घमंड) ॥ ८४ ॥ १० चैत्र सुदि नवमी के दिन ११ वीका-
 नेर में ॥ ८५ ॥ फागुन १२ मास के शुक्ल पक्ष में ॥ ८६ ॥

हव लहि वधु *परिणय हेत, नृप गय निज पितव्य निकेत ॥
 करि तहँ कज्ज विधि सतकार, आगत किति जिति अगार ॥ ८७ ॥
 वनि सामत सुत उत बिंद, अहति उचित ठानि आनद ॥
 सरमथुराशरूप नैर सिधारि, सोधित लग्न खिन अनुसारि ॥ ८८ ॥
 कुमरिय जो मनोहर केर, वनि आनदकुमरि सु बेर ॥
 वासर कतिन तत्य विहाइ, छिति यिति अमिति चितिजसछाइ ८९
 सुत बलदेव १ इम बल सत्य, जनकहु जाइ व्याहि सु जत्य ॥
 लालित लै वधु १ वर २ लार, आगत रम्य गम्य अगार ॥ ९० ॥
 इत हय हति धृति १८८७ सक आत, मिति १ दल १ सुंकर ३ मास
 सुहात ॥

प्रभु तहँ अनुज निज गोपाल २०२१४१, सानुज विनयहरि २ अरि
 साल ॥ ९१ ॥

भेजिय दुव २हि व्याहन भ्रात, बल सजि भिन्न भिन्न बरात ॥
 गागरनी पुगी पति गेह, अग्रज १ बिंद गो इत एह ॥ ९२ ॥
 तिहि रघुनाथ व्याहिय ताम, नंदिनि चद्रकुमरि २०२१ सनाम ॥
 वरिवर १ रहुअरि २ विनीत, अह कछु किन्न तत्य अतीत ॥ ९३ ॥
 पित्यल १ रान वीज्य प्रधान, सह तह खाईभीद २ सुजान ॥
 किय जुगर मुख्य तहँ जस कम्म, दिय तिन त्याग सहुँसन दम्भ १
 भूखन १ वस्त्र २ गय ३ हय ४ भोलि ५, खिल सब द्रव्य को सन खोलि ॥
 अहति भट्ट लहि अधिकार, हुव ब्रजलाल बंटनहार ॥ ९५ ॥
 इम करि आढ्य जाचक जात, बहुरिय गम्य बट्ट बरात ॥

अविवाह के कारण १ काका के घर गये ॥ ८७ ॥ २ दान ॥ ८८ ॥ १ यश का
 समूह छाकर ॥ ८९ ॥ १० ॥ २ ज्येष्ठ मास के आधे शुक्ल पक्ष में ३ विनयसिंह
 ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ४ तथा कितने ही दिन वितीत किये ॥ ९३ ॥ ५ राणा के बश में
 प्रधान (राणावत) ॥ ९४ ॥ ६ ऊंट ७ दान का अधिकार ॥ ९५ ॥

इत पुर पहुँचि उनियाराहु, लिय बरि विनयहरि२ तिय लाहु॥६॥
 सुत तहँ भीम भव *दासेय, गुन पटु नाम जालिम भेय ॥
 तनुजा रूप१ गुन२ जुत तास, आनंदादिकुमारिय१ तास ॥ ९७ ॥
 बिधि सह विनयसिंह१ सु व्याधि, गनबसुदत्त जस अवगाहि ॥
 कूरम बिरुदसिंह१ कुमार, इत हुव मुख्यपन अधिकार ॥ ९८ ॥
 कहि तहँ रत्न१ भट्ट कुलीन, क्रम हित त्याग बंटन कीन ॥
 सदन स्वामिपन गत सल्ल, मन्नि सु जान सुत फतमल्ल ॥ ९९ ॥
 निज करि स्वामि तिहिँ जुत नेह, अरु हुव सचिव जालिम एह ॥
 जिहिँ जामात हित बसु जाल, बहुविध हरन दत्त बिसाल ॥ १०० ॥
 इत इन बंटी बहु बसु बात, हंकिय हुलसि बट्ट वरात ॥
 इन कहँ स्वसुर नारव आइ, चल्लिय सरनि हद पहुँचाइ ॥ १०१ ॥
 इम हुव उभय२दिस उँपयाम, किय बिधि बिचहि असहँन काम ॥
 इत नृप मान ताहि अनेह, बाढन बहुल सद्धि सनेह ॥ १०२ ॥
 निज लिपि पत्र प्रीति निकेत, सतदुव२०० सादि संघ२ समेत ॥
 चारन इक्क१ जिहिँ नृप चित्त, मानस खास खिलिवत मित्त ॥ १०३ ॥
 जो सुत जुगत नामक जात, भैरव स्वीय नाम भनात ॥
 सो इत पठ्यो बँनसूर, हित हित हड्ड६१ डेलिँ हजूर ॥ १०४ ॥
 दक्खिन२३ द्रंग बाह्य प्रदेस, आतहि उत्तरिय तहँ एस ॥
 बहुबल दुःखदिस प्रस्थित बिकिख, सठ इत दुगित छल बल सिक्खि

॥९६॥*दासी का पुत्र ॥९७॥९८॥९९॥१००॥१०१॥१०२॥१०३॥१०४॥
 विवाह १ नहीं सहन करने योग्य ६ उसी समय जोधपुर के महाराजा मान-
 सिंह ने ७ बहुत स्नेह बढ़ाने के लिये ॥ १०२ ॥ ८ दो सौ सवारों के समूह
 सहित ॥ १०३ ॥ ९ जुगता का पुत्र १० भैरवदान नामवाले ११ बणसूर शास्त्र
 के चारण को १२ हाडाओं के सूर्य (रामसिंह) की हजूर में भेजा ॥ १०४ ॥ १३
 नगर के बाहर दक्षिण दिशा में उत्तरा. १४बुंदी की सेनाको विवाहों में दोनों
 ओर गइहुई देखकर ॥ १०५ ॥

कुसंचिव पट्टरानिय केर, बिच पुर जे जुरे तिहिं बेर॥
 मिलि तह रूपराम१ अमात्य, बलि सरदारमल्ल२हु बात्य ॥१०६॥
 निस इक१ बिप१ पोखरनीय१, बानिज ओसवाल२ बिईय२॥
 इन बिच तीसरो३ अघऊत, बाहुज३ सिंहे३अत विमूत३ ॥१०७॥
 यह रठोर मेरतिपाहु, बलि हुव भीर कहि बल बाहु ॥
 इम द्विज१एक१ ऊरुज३ एक१, बाहुज२ एक१ हीन धिवेक ॥१०८॥
 मिलि त्रिक३ एह महिय मत्र, तनि छल प्रात होहु स्वतल ॥
 मारहु कृष्णगम१ अमात्य, प्रतिभट होहु तेहु निपात्य ॥ १०९ ॥
 इन्ह बल ँपाज जुग गत आई, निरखहु कोहु रीधक नाहि ॥
 बिलसहिं राज्य करि निज घर, रक्खहु रति गूढ रहस्य ॥ ११० ॥
 भूपति चहै इक सुख भोग, नकरहिं नैक जास बिजोग ॥
 मन इम रीति प्रभु जामातै, मन्नहिं मुदित बिलसन बात ॥१११॥
 जो कछु बिघ्न बिच परिजाड, प्रेरहिं भूप भट दठ भाइ ॥
 जुद्धहु जानि हैं भय भार, तो निज तंत्र दक्खिन२३ द्वार ॥११२॥
 हुवसत२०० सादि भट समुदाय, समुक्तहु अप्पनैहि सहाय ॥
 जिन्ह बल दग बाहिर जोरि, बस निज द्वार पेठि बहोरि ॥ ११३ ॥
 करि इम नियत इच्छित कज्ज, अगमि लेहु बुदिय अज्ज ॥
 जेपुर जो करी इम जाइ, पुनि इह क्यों न सभव पाइ ॥११४॥
 सुनि द्विज१ मत्र यह दठ संघे, कृतघन ओसवाल२ कबध३॥

१ पाटवी रानी के खाट सचिवन २ शत्रु ॥ १०६ ॥ ३ वैद्य ४ च-
 त्रिय ५ विभूतसिंह ॥ १०७ ॥ १०८ ॥ ६ जो मुकायला करनेवाला होवे
 उसको भी मारो ॥ १०९ ॥ दोनों सेना गई हुई है इस कारण अपने
 ७ छलको ८ रोकनवाला कोई नहीं है ९ राज्य को पशु म करके भोगे १०
 इस मलाह को रात्रि में गुप्त रख्यो ॥ ११० ॥ ११ राजा अपना जमाई है सो
 ॥ १११ ॥ १२ दक्षिण का द्वार अपने आधीन है ॥ ११२ ॥ ११३ ॥ १४ निरपय
 ही चाहा हुआ कार्य करके ॥ ११४ ॥ १४ दठ प्रतिज्ञा

तिहिं निस तीन३ ठहै इक१ तंत्र, सदनन सुप्त मंडिय मंत्र ॥११५॥
 प्रेरिय सुद्धि हित चर प्रात, जदपि न नेक अवसर जात ॥
 जहँ गत अंग्रि१ऊन दुर्जाम, तहँ लखि इष्ट संभव ताम ॥ ११६ ॥
 अग गज अष्टासि१८७सक आहि, अधिगत सुक्र३मास अमा३०हि
 तहँ तिथि उक्त भुक्त अनेहँ, अनुचित एह तकि त्रिक३ एह ॥११७॥
 बाहुज२ नाम सालुव१ बुल्लि, खलपन मंल तिहिंपति खुल्लि ॥
 अकिषय कृष्णाराम१ अमात्य, घर अब है जु इकल१ घात्य ११८
 आवहु ताहि जो हनि अज्ज, कृत मत होत सब निज कज्ज ॥
 तो भट ग्राम दै दस१० तोहि, करिहँ ईस सब बल कोहि ॥११९॥
 सुनतहि एह सालुव सज्जि, मन तस वीररस बस मँज्जि ॥
 सँय गहि मानसित खैर खग्ग, सुरि लिय सचिव पैरिखद मग्ग १२०
 हुत जिहिं सचिव सँसद द्वार, पहुँचत ठानि दंभ प्रसार ॥
 पठई कहि सुसाहब पास, बिन्नति करन संधिय१ व्यास२ ॥१२१॥
 भेजिय मोहि सँत्वर भाखि, अप्पहिं सूचिवे अभिलाखि ॥
 जो मुहिं बिजँन खिन मिल जाइ, तुमकहँ तो सु गोप्य सुनाइ १२२
 करिहो सिधँ जो इहँकाल, कहिहौ सोहि जाइ कृपाल ॥
 बिगरहिं कज्ज होइ बिलंब, बज्जहिं तो अप्पणुर बंब ॥ १२३ ॥

१घरोंमें सोते हुआओं ने यह सलाहकी ॥११५॥ प्रभात हीरखचरके लिये तलफारे
 को भेजा ३पौने दो पहर जाने पर४नहां ॥११६॥ ५ज्येष्ठ मासकी अमावास्या के
 प्राप्त होने पर ६उक्त तिथि के भोगने के समय ॥११७॥ ७सालूनामक चित्रि को
 बुलाकर द घात करने (मारने) योग्य ॥११८॥ ८ सब सेना का सेनापति करें-
 गे ॥११९॥ उसका मन वीर रख सें १० डूबगया ११ हाथ में साख से तीक्ष्ण
 कियाहुआ १२तीक्ष्ण खड्ग लेकर१३सचिव की सभाका मार्ग लिया ॥१२०॥
 १४ सभा के द्वारपर ॥१२१॥ १५ शीघ्रता कहकर १६ आपको सूचना करने को
 भेजा है १७ एकान्त समय मिलजावे तो तुमको वह १८ गुप्त वार्ता सुनाऊं
 ॥ १२२ ॥ १९ इस समय जैसा शिष्टाचार करोगे वैसा ही जा कहूंगा २० नि-
 न्दा के तथा विपरीत नगारे बजेंगे ॥ १२३ ॥

सुनियत धाइभ्रात असेस, जो पट्टु जदपि दिष्ट १ रु वेस २ ॥
 पै परि गहन कुक्कुटि पास, हुव बहु पट्टन पुब्बहु न्हास ॥१२४॥
 मन क्रजुं १ सत्पवैन २ अमृद ३, गहत न कुमति कुहकन गूढ ॥
 जु कहै सत्प सुहि दृढ जानि, उरकत पास मग पग हानि ॥१२५॥
 चतुरहु सचिव इम दित चाहि, तिहिंखिन निकट बुद्धिय ताहि ॥
 इम दिग सचिव सालुव १ आइ, सकुसल सब उदत सुनाइ ॥१२६॥
 लघुगति विम आसिख १ लार, जिहिं कहि ओसवाल जुहार २ ॥
 खल इनि पास पहुँचत खग, इक १ कर किन्न छिन्न अलगा १२७
 असि सुहि मारि पुनि तस अस, बाहिय साचिउर १ सह बस २ ॥
 परिजन दभ्रं तहँविस ३ १ पज्ज ४ २, कछु रहिदूर निबहत कज्ज १२८
 जिततित ते दुरे भय जानि, सचिवहिं सत्रु इत धृत मानि ॥

यह चतुर या तोमी १ देश काल के कारण २ उस छकी की पाश में पड़गया
 सो इसी प्रकार पहिले भी बहुत चतुरों का ३ नाश होगया है ॥ ११४ ॥ ४
 सरख (सीधे) मनबाछे और सत्य बोलनेवाले चतुर छकी लोगों की छिपी हुई
 बुरी बुद्धिको नहीं जान सकते और जो यह कहै उसीको सत्य मानकर उसकी
 पाश में बलक जाते हैं ॥ ११५ ॥ इस प्रकार उस चतुर सचिव ने भी
 हितकी चाह से उस समय उसको पास बुला लिया ॥ १२५ ॥ ५ जोटा कहै
 जैसे उस ब्राह्मण का आशीर्वाद कहकर ओसवाल वैश्य (सिंधी) का जुहार
 कहा और उस दुष्टने समीप पहुँचते ही तरवार मारकर उस पाप भाई का
 एक हाथ काट कर अलग कर दिया ॥ १२७ ॥ उसी तरवार को फिर उसके कंधे
 पर मारी सो ६ तिरछी होकर छाती सहित पीठ की थांसे की हड्डी को काट
 डाली ७ उस समय पास के लोग कम ही थे एक वैश्य और दूसरा ८ छद्म
 या जो भी कुछ काम करते हुए दूरही थे ॥ १२८ ॥ ९ (४) मराहुआ जानकर

(४) यहनोट लिखतेहुए हमको बहुत खेद होताहै क्योंकि इस ग्रन्थकर्ता सूर्यमङ्गले इसग्रन्थमें इतिहासलिखने
 में अपूर्व रीति से सत्यका निर्वाह किया है जिसमें यहाँ आकर इस नोट से उस सत्यता पर कंठक आताहै,
 परन्तु सत्यके अनुरोध से हमको सिखना पड़ता है, अर्थात् महाप्रवरत्ना रामसिंह के विवाह और कृष्णराम
 धायमाईके मारेजानेमें जो वृत्तान्त जोषपुरकी स्थातमें लिखा है उसमें और सूर्यमङ्गल के कथनमें बहुत अन्तर
 है और यह स्थात उसी समय की लिखी हुई होने से विश्वासनीय है इसके अतिरिक्त इस स्थात का

लिखना अनेक ल्यातों के लेखों से प्रामाणिक सिद्ध होगया है इस कारण जोधपुर की ल्यात का साराश नीचे लिखाजाता है कि रावराजा रामसिंह के विवाहके व्ययके अर्थ कृष्णराम धायभाईने कोटाके सेठ दानमल जोरावरमल से दो लाख रुपये ऋण लेकर खत लिख दिया जिसकी खबर जोधपुर के महाराजा मानसिंहको हुई तब अपने भले आदमी भेजकर उक्तसेठ के रुपये चुकाकर वह खत असल ही अपने पास मंगवा लिया और विवाह के समय वह खत, पचास हजार रुपये नकद और पचास हजार रुपयों की मौल्यकी मोतियोंकी कंटी इनके साथ अपनी पुत्रीके हतलेवेमें रख दिया, इस खतके हतलेवेमें रखनेके कारण कृष्णराम धायभाई बहुत अप्रसन्न हुआ कि महाराजा मानसिंहने असली खत हतलेवे में रखकर हमारे राज्य का हतक कर दिया और इसी अप्रसन्नता के कारण यह प्रसिद्ध किया कि इसी वरात से यहा से ही सीधे जूझनू जाकर रावराजा साहिबका दूसरा विवाह किया जावेगा, इस बात से महाराजा मानसिंह भी बहुत अप्रसन्न होगये और आज्ञा की कि एक बार जोडे सहित बुदी में जाकर पीछे जाँ चाहे जहा विवाह करे परन्तु बाईको मार्ग में छोड़कर जाना अनुचित है इसीकारण बाईको पहुँचाने के नाम से सिंघी मेघराज आदिके साथ अपनी सेना देकर पहुँचाने को भेजे जिन्होंने रावराजा को परभारे जूझनू नहीं जाने दिया और बुं दी लेगये और कंकनडोरे खोले पीछे दूसरे विवाह के अर्थ जाने दिया।

कुछ समय पीछे महाराजराजा रामसिंह की माता जो कृष्णगढ के महाराजा कल्याणसिंह की बहिन थी उससे और उक्त रावराजा की महारानी (महाराजा मानसिंह की पुत्री) से बहुत बिगाड़ होगया और कृष्णराम धायभाई उक्त मार्जीसाहिब का कृपापात्र था जिसको बाईजी साहिब (जोधपुर के महाराजा मानसिंह की पुत्री) ने अपने पीहरवालों के द्वारा मरवाडाला उस समय महाराजा मानसिंह ने अपनी पुत्रीको लानेके लिये बणसूर शाखाके चारण भैरवदानको जमइयत के साथ भेजा था उसकेवहा पहुँचने पर उक्त धायभाई मारागया तब रावराजा साहिब की माताकी आज्ञासे जोधपुरवालों पर तोप चलना प्रारम्भ होकर लड़ाई होनेलगी तब भैरवदान अपने लोगो सहित कोटाके राज्य नानते में चलागया और भभूत—सिंह आदि नौहरे के लोग मारेगये जिसपीछे महारानी राठाड़ी को मारनेके लिये उनका मइल घेर लिया गया परन्तु महारानी की लोंडिया बंदूक आदि शस्त्र लेकर खड़ी होगई और किंवाड़ बंद करलिये इससे बचगई और यह खबर कोटा में बूडसू के ठाकुर प्रतापसिंह के पास भेजी सो उक्त ठाकुर और भैरवदान पाचसौ सवारों से बुदी गये और अपनी बाईके महल का घेरा उठाकर चारदिन से अन्नजल रोक रक्खा था सो पहुँचाया और उसी समय पर अजेंट साहिबने आकर दोनों ओर का वखेडा भिटादिया, यह वृत्तांत सुनकर जोधपुरके महाराजा मानसिंह ने ठाकुर प्रतापसिंह का बूडसू का ठिकाना पीछा देखश दिया अर्थात् बूडसू का ठिकाना खालस होजाने के कारण ठाकुर प्रतापसिंह कोटे में जा नौकर हुआ था सो उक्त सेवा के कारण बूडसू का ठिकाना पीछा देखश दिया गया बुंदी और मेवाडवालों के द्वेष है इसी प्रकार बुंदी और जयपुरवालों के भी द्वेष चला आता है इसी कारण इन राज्योंवाले परस्पर एक दूसरे की अनेक निन्दनीय बातें उडा दिया करते हैं जैसे बुंदीवालों ने जयपुर के भूताराम आदि की निन्दा उडा रक्खी है जो इस ग्रन्थ में भी ग्रन्थकर्ता (सूर्यमल्ल) ने लिख दी है वैसे ही उक्त राज्योंवालों ने बुन्दी की घडतें कररक्खी हैं परंतु मूर्खता से इर्षा द्वेष करके अनेक लोग अनेक घडतें किया करते हैं वे विद्वान्

बाहुरि छिंप चोर बिधान, सो लागि उत्तरन सोपान ॥१२९॥
 कायथ सासिता बल कैर, बिच भिरि सम्पुहो तिहिं वेर ॥
 लागि इठ नामकरि सिधलाल, कर तस नग लखि करवाल ॥१३०॥
 धखसी ताहि भरि निज बत्थ, जुज्झिय रक्खि हानि न जत्थ ॥
 सत्रुहु जो सिटयो भय भार, परसिर दें सकपो न प्रहार ॥१३१॥
 इम तहँ लुत्थिवत्थन आइ, जुज्झत द्वैर गिरे अध जाइ ॥
 रचि जन जामिकन तह रीस, सालुव सो करयो गतसीस ॥१३२॥
 उपपम करन इत अनुजति, भूपति भेजि इम दुवर भात ॥
 तहँ कुल पत्तव जुगर सम तुल्लि, वीकानैर पति सुत बुल्लि ॥१३३॥
 जीवनसिंह नाम सु जाहि, बहिनिय रूपकुमारि ॥२॥ विवाहि ॥
 रक्खन गेह तिहिं नरराध, दिय दुवर आढ्य ग्राम ॥ सु दाय ॥१३४॥

१ दाय चार की भाति २ सीहिया बत्तरने लगा ॥ १२६ ॥ ३ सनापति ४ सालू
 के हाथ में नागी तरवार देखकर ॥१३०॥ ५ दाय के ऊपर तरवार का प्रहार नहीं
 कर सका ॥ १३१ ॥ ६ दोनों नीचे जागिरे लहाने ७ इरायता ने क्रोध करके सालू
 का मस्तक काट लिया ॥ १३२ ॥ ८ दोनों छोटे भाइयों को विवाह करने के
 लिये ६ दोना पत्र परापर भेजकर ॥ १३३ ॥ १० राजाने ११ दहेज में ॥१४३॥

लोगों की प्राय नहीं होती इसी कारण हमने भी निदनीय किम्बदन्तियों को छोड़कर जहाँ तहाँ प्रामाणिक
 छेलों की ही प्रशंसा किया है इस कारण यहाँ पर भी जोधपुर की स्थापना की नकल कर दी गई है

अब रहा यह कि जोधपुर का स्थापना में सिखे हुए विषय को इस प्रयत्नकर्ता सूर्यमल्ल ने बिपा दिया यह
 उनकी सत्यता पर फलक आता है परंतु सामान्यतया विचार किया जाये तो कैसा ही सत्यवक्ता होने पर
 भी वर्तमान समय का सचा इतिहास लिखना दुर्बल है यदि कोई लिखनी देवे तो भी बरनियर जैसा विदेशी
 ही लिख सकता है किंतु सेयक हाकर वर्तमान स्थान की सभी निंदा कदापि नहीं लिखसकता सो
 ही हम प्रयत्नकर्ता के लिये ज्ञान सेना चाहिये सूर्यमल्ल के समीप रहनेवालों से हमने सुना है कि महाराज
 राजा रामसिंह की निंदा लिखने से उक्त रावराजा ने सूर्यमल्ल को मना किया इसी कारण प्रयत्नकर्ता ने यह
 प्रयत्न बनाना छोड़ दिया इसीसे यह ग्रंथ अपूर्ण रह गया सो यह भी समझमें नहीं आता क्योंकि यहाँ सत्य
 का विषय छोड़गये और जहाँ जहाँ प्रशंसा की गई तो फिर आगे जाकर इसी बात पर अड़ना समझ
 में नहीं आता परंतु ऐसी बातों की ज्ञान चीन करना हमको भी आवश्यक नहीं है ॥

भूषन२ बस्त्र३ गय४ हय५ भव्य, दिय रथ६ दास७ दासिय८ द्रव्य॥
 सह मह ताहि समय बिसेस, व्याहिय जो स्वसा वसुधेस ॥१३५॥
 हे हैम द्विष्ट महलन माल, मुक्तिपसौध१ थित महिपाल ॥
 पगि इत छेद्य खग प्रहारि, सालुव१ सचिवमनि२ लिय मारि१३६
 सुनतहि भूप इत यह सुद्धि, बिस्तरि बीरपन१ नय२ बुद्धि ॥
 जहँ पुर पति संघ जितेक, तिन्ह करि मग मग तितेक ॥१३७॥
 चउ४ भट भेजि गोपुर च्यारि४, बस किय जे कपाट बिथारि ॥
 पुब्ब१हि रोकि दक्खिन२।३पोरि, ज्यों पुनि सेस रोधक जोरि१३८
 रन दुव२ दुर्ग सज्ज कराइ, असहन मंतुपर अनखाइ ॥
 बलि कंलि अप्प कसि कटिबंध, संसंद सज्ज रहि दृढ संघ१३९
 प्रभुढिग रहनहार प्रवीर, सब किय सज्ज कज्ज सधीर ॥
 आतप उँवगा१ऋतु अधिकात, जहँ सुत ज्येष्ठ१कृष्ण१प्रजात१४०
 मोहन१ रमन सिंह मृगव्य, भूधव सिक्ख लहि चहि भव्य ॥
 उत्तर४।७ गहन सह अवधान, मग वह गो त्रि३जोजन मान१४१
 लघु तस भ्रात मंगललाल२, संगर अजिरँ पर बल साल ॥
 नल निभँ बाजि बिधि मतिमान, नरवर स्वामिधर्म निधान॥१४२॥
 सूर रु सरलपन मन सुद्ध, बैरिहु जास मित्रहि बुद्ध ॥
 तिम यह कृष्णराम तनूर्ज, प्रापित स्वामि सेवन पूज ॥१४३॥

राजाने १ बहिन का विवाह किया ॥१३५॥ २इस कारण राजा नीचे के महलों
 में ३ मोतीमहल में थे ४छल से तरवार के प्रहार को पाकर ५ सालू ने सचिवों
 के मणि रूपी कृष्णराम धायभाई को मार लिया ॥१३६॥ ६ राजाने यह खबर
 सुनते ही ७ पुर में जितनेक पैदलों के समूह थे ॥ १३७ ॥ ८ शहर के चारों
 दरवाजों पर ॥ १३८ ॥ ९नहीं सहने योग्य अपराध पर क्रोध करके १० युद्ध १।
 आपने कमर बांधकर ११ सभा में दृढ प्रतिज्ञा से सज्जित रहा ॥ १३९ ॥ १२
 श्रीष्म ऋतु की अधिक गरमी में १३ कृष्णराम का बड़ा पुत्र ॥ १४० ॥ सिंहकी
 १४ शिकार खेलने को १५ राजा की आज्ञा लेकर ॥ १४१ ॥ १६ युद्ध के चौक
 में १७ नलके सदृश ॥ १४२ ॥ १८ पुत्र ॥ १४३ ॥

इह पर लोहिता अभिधान, थानाँ रक्खि नृप तिहिँ थान ॥

*सादिन सघ सासक मुख्य, मगल२ तत्थ किय प्रभु मुख्य१४४

काका तनय तस जस काम, सो पुनि रत्नलाल१।३ सनाम ॥

बिद्या तुपक मय जिहिँ बीर, सद्धिय बर्म मुख्य सधीर ॥ १४५ ॥

ए दुव भ्रात तिहिँ दिन अत्थ, सज्जित स्वीय हय१ भट२ सत्थ ॥

तिन्ह मन लोहितापुर जाइ, उँत्सुक इनन सिंघ अघाइ ॥ १४६ ॥

प्रिय मद अमल बितरत पान, जिन्ह हुष देर यह चढिजान ॥

तत्थहि बुल्लिलिय कैवितात, खिलबलि कतिक भटवरख्यात१४७

प्रभुढिग रहनहार प्रबीर, सब तहँ मिलित बिछुरन सीर ॥

व्यसुँ हुव सचिव इत तिहिँवार, परि सब ओर इक्क पुकार ॥ १४८ ॥

सुनतहि रत्न१ मगल२ सत्थ, इकिय सर्व भट असिँ इत्थ ॥

इनकँहँ सिँहचत्वर आत, बुल्लिय भूप ढिग सुहिँ आत ॥ १४९ ॥

ए तब सत्रुदिस मग उज्जिर्मा, सब गय स्वाभिढिग हित सुज्जि ॥

ससुभट रत्न१ मंगल२ संग, प्रभु कति रक्खि बिघ्न प्रसंग ॥ १५० ॥

लसंग१ प्रसंग२ अस्यानुपास १ ॥

सचिवहिँ देहनदत्त सहाय, पठये पुत्र२ सह समुदाय ॥

दाहन जाइ पच्छिम३।५ द्वार, इन गिनि इष्ट प्रेत अगार ॥ १५१ ॥

अबधुवनाथ सिव जहँ आहि, दिय तहँ जो मुसाइव दाहि ॥

पुनि सब न्हाइ प्रभुढिग पत्त, इत प्रभु भूत्यहित अनुरत्त ॥ १५२ ॥

* सबारों के समूह का हाकिम करके ॥ १४४ ॥ १ कवच पहना ॥ १४५ ॥

२ सिंह मारने को उत्कठित हुए ॥ १४६ ॥ ३ सूर्यमल्ल के पिता को बुला लिया

॥ १४७ ॥ ४ उस समय इधर कृष्णराम मारा गया ॥ १४८ ॥ ५ तरवारें हाथों में

लेकर जले ५ सिंहशौक में आने पर ० उस समूह को ॥ १४९ ॥ ८ शत्रु की

दिशा का मार्ग छोड़कर ॥ १५० ॥ ९ सचिव को जलाने में सहायता देने को

॥ १५१ ॥ १० जहाँ आशुनाथ शिव है ॥ १५२ ॥

सब लहि मंतु कारन सुद्धि, रंचहु छिद्र निकसन रुद्धि ॥
 ठाँ जुग२जे रहे थिति ठानि, तुपकन जंग बिच बिच तानि ॥१५३॥
 सुनि नृप दै निदेस प्रसस्त, बंधन धूर्त ठानि बिहैस्त ॥
 तब उहुँदुर्गकी दुवर तोप, अभिमुख राखि जममुख ओप ॥१५४॥
 जुग२ जुग२ देह चल्लन जंपि, कहहिँ छुद्र गोलन कंपि ॥
 पटुभट दानसिंह१ पुरोग, जुरि तहँ पिक्खि प्रंधवर जोग ॥१५५॥
 चुटकिन ओप तोप चलात, बिगरत बेध्य आलयेँ ब्रात ॥
 मतिगति मंडि फौरन फौर, निर्मित व्यग्र मन जन नैर ॥१५६॥
 व्यवहित भूँहर१न कति बैठि, कति गय कंदर२न प्रति पैठि ॥
 हुव यह दरित पूरन हाल, जय रस फुरित सूर२न जाल ॥१५७॥
 अद्रिन खोह फुटि अवाज, गिरि गृह१ जात पोतन गाज ॥
 तरकत थंभ१ मंडप२ ताव, लरकत फुटि छित्ति४ लदाव५ ॥१५८॥
 बिखरत गोख६ जालिन७ ब्रात, उहुत प्रजरि पटु८ अलात ॥
 बलज९ रु कुड्य१० प्रघन११ वितर्दि१२, उंबुर१३ अजिर१४ कु-
 टिम१५ अर्दि ॥१५९॥
 सह अधिरोहिनि१६ सोपान१७, बिदहत कोशिका१८ रु बितान
 गरिध२० रु उत्तरंग२१ कपाट २२, बलभिय २३ नीम्र २४ प्रसरत
 बाट ॥१६०॥

तेम दहि नागदेत२५ तमंग२६, पिट२७ पुट२८पेटिका२९जरिजंग

अपराध के कारण की खबर संगई सो २ कुछ भी छिद्र नहीं निकला ३ दो
 गह पर ॥१५३॥ ४ उत्तम आज्ञा ५ धूर्तों को व्याकुल करके बांधने की इतारागढ़
 ६ ७ शत्रुओं के सम्मुख ॥१५४॥ ८ दानसिंह आदि ९ पाधरी (सीधी)
 १५५॥ १० घरों का समूह ११ व्याकुल ॥१५६॥ १२ कितने ही लोग भौंहों
 तहखानों में तथा भूधरों (पर्वतों) से छिपकर बैठे ॥१५७॥ यहाँसे आगे का
 गो वर्णन है इस में उपमा आदि कोई चमत्कार नहीं है केवल स्थानों के नाम
 सो इस प्रकरण की सविस्तर टीका करना पिष्टपेय है ॥१५८॥ १३ अग्नि
 ॥१५९॥ १४ विशेष जलते हैं ॥१६०॥

कुट३० फुट मत्तधारन३१केतु३२, हुत हुव दहन असहन हेतु १६१
 खिरि खिरि थट्ट हट्ट३३न खंड, बिखरत बट्ट अट्ट३४ वरंड३५ ॥
 जिततित सालभजि३६न जू३७, दहिघन मच३७ पट्ट३८ दुरूह१६२
 उडिउडि ओघ गुमटन गाव, बिगचित व्योम पटल वनाव ॥
 प्रजगत डीन पत्रिन पत्र, अवभ कि चंग राल अमत्र ॥ १६३ ॥
 तजि तजि तीर नीर निपान, छिन छिन छिज्जि मैटन मान ॥
 कपिसिर१ साल२ खोम३कलाप, धुज्जत लोल गोलन धाप१६४
 प्रतिभट पूर सूग्हु सकि, स्मारत तुपक छिदन भाकि ॥
 जिनदिन१धूम२लखिनिस१ज्वाल२, मुग्न न देत गोलन माल१६५
 भेदत भयद बहु पुत भित्ति, अदिन असनि कहुन किति ॥
 वीथिय१त्रिक२रु चत्वर३वार, बिस्तरि जग्गि जग्गि बजाग४१६६
 वनिकन बिबिध किय क्रय बध, गन ससि१ धीर२ मृगमद३गंध॥
 छिति ठकि अन्न१ रासिन छार, इनउत प्रजरि तैल२अगार॥१६७॥
 बिदलित तरकि मनि३ गन वात, जारि बहु बिपनि औषध४जात॥
 हुत डुरि बग१ माग२ अदभ, उडि उडि चढत पारद३ अघ्रा१६८॥
 मचि पुर ध्वात निभ करमाल, जिहि सिति१भूत सित२गृह जाल
 मिलि मिलि धूम१सोग्समेत, लागि हग लेत घन जन लेत॥१६९॥
 डम हुव जाम सत्त७ अतीत, गोलन कोस दस१० गत गीत ॥
 बिससन सचिव करि श्रुति बंट, इत तब नंदग्राम अजट ॥ १७० ॥
 सुनतहि सरनि लागि प्रिउ लैन१ आगत अंघ करि रन अैन ॥

१ आग्न ॥ १६१ ॥ २ काठनाई से लकना कियेजान योग्य ॥ १६२ ॥ ३ छडते
 हुए पक्षिों के पक्ष ४ पात्र ॥ १६३ ॥ १६४ ॥ १६५ ॥ १६६ ॥ १६७ ॥ १६८ ॥
 ॥ १६९ ॥ ५ इस प्रकार मान पदर बितीत हुई ६ दश काण पर्यन्त गोलों का
 शब्द गया ७ विश्वास योग्य सखिष का माग जाना सुनकर ८ छोटा से
 ॥ १७० ॥ ९ म र्ग जगा "यहा जो अिच शब्द है यह कहीं नहीं मिला सो
 साल्य नहीं अशुद्ध है या क्या है" १० घोड़े पर यहकर

दिन इन जात जाम द्वितीय२, गय यह तत्थ पुर *गमनीय॥१७१॥
 खिरकिय सौम्य१७ द्वार खुलाइ, पुरविच लिन्न इन खिन पोइ॥
 सूचित सचिव सुत जुहि जिठ, सुहु यह सुनत उग्र अनिष्ट॥१७२॥
 मोहन१ ताहि निस हुत मग्ग, आगत स्वामि सविध उदग्ग ॥
 साहब समुख जिहि तब जाइ, आनिय उक्त पथ प्रविसाइ ॥१७३॥
 जमियतखान२ संगहि जास, निर्भय चिति रहन निवास ॥
 अधिपहु खास महलन आइ, स्वनिकट जालिनी९ सु बसाइ॥१७४॥
 जानिय इम अजंट१ जनेस, आइउ समर अटकन एस ॥
 पै तिहि कहिय प्रत्युत प्रेरि, गिनि खल गहहु१इनसुरकि हेरि१५७
 अई शिक३ असह तोपन स्त, —— हुव अब अहित बिहस्त ॥
 सीसक१ सोर२ उदक४ रु अन्न४, बित्तन घोर कष्ट बिपन्न॥१७६॥
 इत सुनि सचिव हत मग आत, बुंदिय पत्त द्वैरहि बरात ॥
 हाजरि सकल बल तब होइ, दब्बिय बेठि अरि गृहदोइ२॥१७७॥
 जानहु श्रीचतुर्भुज१ तत्थ, तिनसन बारूनी३५ दिस तत्थ ॥
 पंरिमित दंड बिसति२० पास, आयत जो हवेलिय१ आस ॥१७८॥
 थिर हुव स्वामिनी बस थान, परिखद तत्थ रहन प्रधान ॥
 द्विजकई जो हवेलिय दत्त, हाजरि सो हुतो तिम तत्त ॥ १७९ ॥
 गोलनसौं बै बिगरत गेह, आतुर रूपरामहु एह ॥
 लौ सब स्वीय अप्पन लार, कठि निस छिन्न खुल्लि किंवार १८०

? जहां जाना था उस पुर (बुंदी) में ॥ १७१ ॥ † कृष्णराम का ज्येष्ठ पुत्र ?
 बडा अनिष्ट (प्रतिकूलवर्ता) सुनकर ॥१७२॥१७३॥ २ चित्रशाला में ॥ १७४ ॥
 शेरजा ने यह जाना कि ४ उलटी प्रेरणा करके कहा ॥१७५॥ *तीन दिन ६ शत्रु
 व्याकुल हुए ७ आपदा से घिरे ॥ १७६ ॥ † सब सेना ने हाजर होकर ॥१७७॥
 ६ पश्चिम दिशा में १० बीस दंड के अंतर पर ११ मोटी हवेली है ॥१७८॥ १२ वह
 स्थान पाटली रानी के आधीन हुआ था १३ दीधी ॥ १७९ ॥ १४ अथ ॥ १८० ॥

रामसिंहकाराठोड़ीकेअमृत्योंकोमारना]अष्टमराशि-मधममयूज (४२२६)

॥विपनि सु पुव्व१ दिम लागि बढ, हरि बसु लुट्टि मग इक१ इट ॥
॥जमदिस२॥ उक्त गोपुर जाइ, परबस ईरुद्ध ताकहँ पाइ ॥ १८१ ॥
हैं ठिक व्हाँ पुरोहित इर्म्य, गजमुख गढित कौलिन कर्म्य ॥
तव सरदारमल्लहु तत्थ, ऊरुज३२ हो सु ठानि अनत्थ ॥ १८२ ॥
भनित जु सिंहअंतविभूत२३, सगढि सोहु पर रजपूत ॥
द्विज तिन्ह कहिय बिघटन द्वार, उन लिय एहु मध्य अगार१८३
महल सु जदपि दुर्ग समान, हुव तहँ तदपि जल मुख हान ॥
रहि द्विज१ बनिक२ तहँ दिन१ रत्ति२, पुनि दुव२ निक्खसिय
निस पति ॥ १८४ ॥

बाहुज रहिय तत्थहि बंध्य, ते लडि सचरत मग मध्य ॥
वनि भय१भूखरप्यास बिहाल, जुग२धामि परिग नागन जाल१८५
तिन लखि विष्णुस्वामि मंतीय, सिंचिय उँदक रक्खन जीपि ॥
जुग२ तिन भोजि१ पेय पिबाइ२, जोगिनै रक्खि रत्ति जिवाइ१८६
हुव खिल रत्ति जहँ दु२मुहूर्त, ध्रुव प्रभु पुनत पकरन धूर्त ॥
विप्र१हु बनिक२ सह हठ बाद, मारिय वप किसोर प्रमाद ॥ १८७ ॥
प्रभु तिहिँ दोष अग पछिताइ, भाखत दुरितै एह न भाइ ॥
महिँसूर१बनिक२इम जुग२मारि, निज पटु सचिव वैग निकारि१८८

० पजार में पूर्व दिशा के मार्ग लगकर १ दक्षिण दिशा के १ रुका हुआ (पद) पाकर ॥ १८१ ॥ १ मकान २ गजमुख नामक पुरोहित का बनाया यामियों के काम का ३ यनिया ॥ १८२ ॥ ४ ममृतसिंह ५ कियाइ खोजने को कहा ॥ १८३ ॥ ६ गढ़ के समान था ७ जल आवे सामान खूटगया ८ रात्रि में पैदल निकले ॥ १८४ ॥ ९ मारने योग्य क्षत्रिय ममृतसिंह यहीं रहा ॥ १८५ ॥ १० विष्णुस्थामी के मतमाने देखकर ११ पानी पिलाया १२ उन नागा जोगियों ने ॥ १८६ ॥ १३ चार घड़ी रात्रि यात्री रहते राजा ने फिशोर अवस्था के प्रमाद से हठ करके उन ब्राह्मण और वैश्य को मारहाले ॥ १८७ ॥ उस वाप से १४ रावराजा रामसिंह आय पछताते हैं और कहते हैं कि यह १५ पाप हमको अब अच्छा नहीं लगता १६ ब्राह्मण ॥ १८८ ॥

तिम पुनि होत *घस्र द्वितीय२, गिनि जमदंग निज †गमनीय ॥
 कातर जो रह्यो सु कबंध३, सखन डारि व्है हतसंध ॥ १८९ ॥
 पप्पिय पक्ष२ द्वार प्रवेस, आदरि पत्त बाहिर एस ॥
 जमदिस२।३द्वार जुग२बिच जाहि, रोचक भोजि१पाइ३सराहि११०
 मंद सु जवन इक लिय मारि, तिन्ह खल सख लहि दियतारि ॥
 इक१ द्विज अंगतैहु अवध्य, मन्त्रिय सेस अरिजुग१ मध्य।१९१।
 बाहुज१ बनिक२ सख बिहीन, करि हम अनसु अनुचित कोन ॥
 इम अब करत सासन आप, पै तब बय बिसेस प्रताप ॥ १९२ ॥
 त्रिक३ हनि हेतु बिनु खिल तारि, उद्धरि बैर बिजय उबारि ॥
 इत सब कहि मारव दिन्न, कंटक रहित पुर इम किन्न ॥ १९३ ॥
 चारन चिति इष्ट बिचार, आइउ दिसत२०० लहि असवार ॥
 तिहिं सुनि सचिव तिम मृत ताम, किष भजि कोस पंचमुकाम१९४
 रहि तहँ मरत त्रिक३ लागि राह, प्रनमिय पहुँचि निज नरनाह ॥
 बुंदिय त्रि३दिन बसि इत एह, गो इम अंगरेजहु गेह ॥ १९५ ॥
 इत प्रभु सचिव सुत आकारि, मोहन१ मत्थ ध्रुव कर धारि ॥
 पुनि दिय सचिवपन सिरुपाव, आदरि अधिक वृत्ति बढाव ॥ १९६ ॥
 अनुजनु मंगल२ जु तस आहि, तारादुर्ग पति किय ताहि ॥
 पुब्बहि आत गृह प्रबिसाइ, लिय चउ४ बरनि२ बिंद२ लडाइ १९७
 ॥ केकिरवम् ॥

माहिपाल१यौ मोहन२थपि मंत्री, जग किति बिस्तारि दिगंतगंत्री

* दूसरे दिन यमराज के नगरको अपने † जाने योग्य जानकर ‡ हतप्रतिज्ञ
 होकर ॥ १८६ ॥ १ दक्षिण दिशाके ॥ १९० ॥ १९१ ॥ २ रावराजा रामसिंह कहते हैं कि
 इनको मारकर हमने अनुचित किया ॥ १९२ ॥ १९३ ॥ ३ भैरवदान नामक चारण
 ४ तहां सचिव को मराहुआ सुनकर ॥ १९४ ॥ ५ अपने राजा मानसिंह से प्रणाम
 किया ॥ १९५ ॥ ६ कुष्णराम के पुत्र को बुलाकर ॥ १९६ ॥ ७ उसके छोटे भाई दचारों
 दुलहन दुलहों को ॥ १९७ ॥ ८ दिशाओं के अंत में जानेवाली कीर्ति फैलाई

वष वर्ष अष्टारह१८अग१६वर्त्तो, अभिरूप दूरीकृत देसअर्त्तो१९८
कुसलत्व आच्छोटन अमकर्मा, खुरली२ खलूरी धृत धुर्यधर्मा ॥
विविधत्वविद्याअनबुद्धि वम्मर्मा, मितसत्व४संसीदितदस्युमर्मा५१९९
अवधानता सज्जित अग६ अगी, सब सास्त्र७ ऊहा, पटु सूरिसगी
सचिमगगवेदोदित८एकरगी, जितजुद्ध९खट्वा१कवची२निखगी३१२००
करिबे लग्यो कज्ज१०सु तीन३ साकिसौ, धरिबे लग्यो धी धुर
राज्य रक्ति२सौ ॥

वरिबे लग्यो वीर१३न वीर व्यक्तिसौ, भरिबे लग्यो श्रीप्रभु रग
भक्तिसौ ॥ २०१ ॥

विसिष्ट१४ जो हय१ गय२ बाहि वेषली, भने सदा सबहित१५लै
विधा भली ॥

अधीसिता बुध१भट२मन्त्रि३आदरै१६, हठै१७सौ इतर सभा प्रभा
हरे ॥ २०२ ॥

॥ त्रिष्टुपजानि ॥

१ सुन्दर २ देश की पाङ्गको दूर करी ॥ १९८ ॥ ३ शिकार में कुशल होकर
अग्रणी हुआ ४अखाड़े में शस्त्राभ्यास करके बर्म के घुर को धारण किया और
नाना प्रकार की विद्या और युद्ध का कवच और निक्षय ही शस्त्रों के मर्म
को ५ कपानेवाला हुआ ॥ १९९ ॥ राज्य के सात अगों में एक तो स्वयं आप
और पाकी के छ अग और अगियों में सावधानी करके पण्डितों की सगति
से शास्त्रों की वनकता में चतुर हुआ और वेद के कहे मार्ग में एक रग होकर
गधि की, युद्ध जीतनेको खट्वा, कवच और भाषे को धारण किया ॥ २०० ॥ अष्ट
नीति और राजा की तीनों शक्तिया से कार्य करने लगा, राज्य में ७ प्रीति
कारके मुख्य बुद्धि को धारण करने लगा और वीर व्यक्ति से वीरों का अपने
करने लगा ८ अपने मनको औरग नामक परमेश्वर की भक्ति से भरने लगा
(पुन्दीयालों के इष्टदेव का नाम औरग है) ॥ २०१ ॥ जो बलवान् हाथी, घो-
ड़ों के चलाने में अत्यन्त अष्ट और सदैव भले प्रकार से सब के हितको कह
नेवाला, स्थापित से पण्डित, सम्राट और मन्त्रियों का आदर करने लगा ९
पशुत हठ से अन्य सभाओं की प्राप्ति करने लगा ॥ २०२ ॥

इलेस ऐसै सु बयस्य संगी, संगीत१नाट्यादि कला प्रसंगी॥
 संगीयमान स्तव भानु संगी, संगीर्ण अंधार ससी पिसंगी॥२०३॥
 न दानबेला कबहू नकारी, संपन्न सेना कुल घातकारी ॥
 साहित्य आस्वाद कवि प्रकारी, प्रमाद व्यापार बकी बकारी॥२०४॥

()

बुंदियपुर वैभव इस बिलसत, हड्ड ६१न हेलि अधिप पट्ट एस ॥
 ललित अखंड सुधर्मा कि लसत, महपुर अहप्रति समह सुरेस॥२०५॥
 इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे ऽष्टमराशौ बुन्दीन्द्ररामसिं
 हचरित्रे हतदाक्षिणात्यक्षोणिकांगरेजराजपुत्ररथानस्वाजंठस्थापन१
 विजितभरतपुरजट्टांगरेजपुनर्भरतपुरजट्टवितरण२ ब्रह्माराजसकाशां
 गरेजप्रान्तद्वयग्रहणसूचन ३ जयपुरराज्यराज्ञी भट्टियानी भूतारामवै-
 श्यदुराचारसूचन ४ पतिसगहमनार्थावर्तप्राचीनप्रणालीवाग्गणपूर्वा
 इस प्रकार १ राजा रामसिंह अपनी समान अवस्थावालों के साथ संगीत को
 आदि लेकर नृत्य आदि की कलाके प्रसंग में ३ प्राप्त की है स्तुति योग्य
 २ सुख से गाईजानेवाली, सूर्य का साथ करनेवाली और अंधेरे पर चन्द्रमा
 को ४ पीछा दिखानेवाली उज्ज्वल कीर्ति जिसने “यहां उज्ज्वलता और
 चन्द्रमा आदि के प्रसंग से कीर्ति का अध्याहार ऊपरसे होता है”॥२०३॥ दान
 के समय कभी इनकार नहीं करनेवाला ५ शत्रुओं की सेना को कुल सहित
 मारनेवाला, कवियों के प्रकार से साहित्य का स्वाद लेनेवाला और प्रमाद
 के व्यापार रूपी बकासुर के ऊपर ६ श्रीकृष्णरूपी ॥२०४॥ हाडाओं का सूर्य
 चतुर स्वामी रामसिंह इसप्रकार बुंदी में वैभवका विलास करता है सो मानों
 अमरावती पुरी सहित ७ देवसभामें ८ प्रतिदिन इन्द्र उत्सव करता है ॥२०५॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टमराशि में बुन्दी के श्रृपति
 रामसिंह के चरित्र में, अंगरेजों का दक्षिणियों से भूमि छुड़ाकर राजपूताने
 के राज्यों में अपने अजंटों को स्थापन करना १ अंगरेजों का भरतपुर को वि-
 जय करके पीछा जाटों को देना २ ब्रह्मा के राजा से अंगरेजों का दो सूबा ले-
 ने की सूचना करना ३ जयपुर के राज्य में राणी भट्टियाणी और वैश्य भूताराम
 के दुराचार की सूचना करना ४ अंगरेजों का आर्यावर्त में सती होने की रीति

गरेजसमाचारपत्रप्रचारण ५ जनरलमटकलप्रबुद्ध्यागमन ६ को-
टापतिकिशोरसिंहदेहातरामसिंहपट्टसमासादन ७ उदयपुरमहाराणा
भीमसिंहपरासुताजवानसिंहसिंहासनाधिरोहण ८ लखनेऊनवावगा
जियुद्दीनपरेतभावनमूरुद्दीनगद्दिकोपधिशन ९ विक्रमनगरेशमहारा-
जसुरतसिंहासुहानिरत्नसिंहराजतिलककरण १० बुन्दीसचिवधात्रे
यकृष्णारामच्छलघातवधवर्णन नवमो मयूख ॥ ९ ॥

आदित एकसप्तत्युत्तरात्रिशततमो मयूख ॥ ३७१ ॥

पापो व्रजदेसीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ ॥

अग्न दीधितिमें बडो१ अब भूप नंदन भूप ॥

भीमसिंह२०३१ कुमार भूखन पट्टरानि प्रसूत ॥

पुंज अ३८६ संहस्य१०में तस गर्भ दिष्ट प्रसाव ॥

भव्य धारन स्वामिनी२०१२१ किप भानु१ प्राचिय२भाव ॥१॥

कर्क४११नक्र१०१२ पैतगके क्रम रत्ति१ वासर२ रीति ॥

को यद करना और आर्यावर्त में समाचारपत्रों (अखबारों) का जारी होना
जनरल मटकलाफ का बुन्दी आना ६ कोटा के महाराव किशोरसिंह का देहात
होकर रामसिंह का पाट बैठना ७ उदयपुर के महाराजा भीमसिंह का देहा-
त होकर जवानसिंह का पाट बैठना ८ लखनेऊ के नवाब गजियुद्दीन के मरने
पर नसूरुद्दीन का गद्दी बैठना ९ बीकानेर के महाराजा सुरतसिंह का देहात
होकर रत्नसिंह का गद्दी बैठना १० पुन्दी के सचिव कृष्णाराम घायमाई के छ-
लघात से मारेजाने के वर्णन का नवम ६ मयूख समाप्त हुआ ॥६॥ और आदि
से तीन सौ इकहत्तर ३७१ मयूख हुए ॥

अथ आगे १ किरणों में पड़ा (पड़तेजयाला) राजा रामसिंहका पुत्र, कुमारों का
भूषण भीमसिंह पाटबी रानी से हुआ सो कहते हैं २ पहले वर्ष के पौष मास
में भाग्य की प्रसन्नता से उसके शुभ गर्भ को, जैसे पूर्व दिशा सूर्य को धारण
करती है तैसे स्वामिनी ने धारण किया ॥ १ ॥ कर्क और चक्र सर्काति के
३ सूर्य के क्रम से जैसे रात्रि और दिन पड़ता है और शुक्ल पक्ष का चन्द्रमा

पक्ख उज्जल १ इंदु २ ज्यो हुव एधमान प्रतीति ॥

पाइ सुर्जन १९१ १ भोज १९२ २ रत्न १९३ ३ सता १९५ १ रु भाउ-
व १९६ १ पुण्य ॥

गर्भ १ जो महिषो गहो अनला १ ऽरणी अनु गुण्य ॥ २ ॥

॥ पद्धतिका ॥

इम तनय जनन १ जस २ जन अगर्भ, गत अब्द ८६, प्रसर्ल ५ ऋतु
गहिय गर्भ ॥

आधान १ विहित संस्कार इद्ध, सीमंत २ पुंसवन ३ तदनु सिद्ध ॥ ३ ॥
रानीय अदोहद १ विविध रक्खि, संपूरन पावत २ स्वमन सक्खि ॥
पहुँचत ३ ढिग गम्पहु सखिन पानि, उत्थान २ अटन ३ अवलंब ४
आनि ॥ ४ ॥

प्रतिदिन गति ५ मंथर ६ -- प्रसंग, उच्छ्वास ७ क्रम २ हु श्रम ८ असह अंग ९
रवि विप्रह ३ गौरव १० हरिनैराग ११, भासन लागि गोचर १२ मध्य
भाग ४ ॥ ५ ॥

जिमतिम परि-- धन ३ कठिन जोट २, उन्नत १४ उठि चिबुँक ५ हु
बढता है तैसे १ बढना प्रतीति हुआ २ पाटवी रानीने ३ अरणी की अग्नि की
गणना से (दो लकड़ियों को परस्पर घिसकर यज्ञ के अर्घ्य अग्नि निकालते हैं
उनका नाम अरणी है) ॥ २ ॥ ४ हेमन्त ऋतु में गर्भ धारण किया ५ जिस पीछे
गर्भ के उचित सीमंत और पुंसवन बड़े संस्कार किये ॥ ३ ॥ रानी को ६ गर्भ
नहीं होवै ऐसे नाना प्रकार से छिपाकर रक्खी, अथवा रानी स्वयं छिपाकर
रही. उस गर्भकी संपूर्ण साज्जी अपना मनही पाता है, समीप जानेवाली सखि-
यों के हाथ का आधार लेकर ७ उठती और फिरती है ॥ ४ ॥ यहां छिपाने पर
भी गर्भ के लक्षण जानलिये जाते हैं उन्ही को दिखाते हैं कि ८ प्रतिदिन चाल
धीरी होती जाती है ९ श्वास लेने का और चलने का श्रम शरीर में असह
होता है १० सूर्य के समान क्रान्तिवाला शरीर भारी और ११ हरे रंग का होता
जाता है और पेट १२ दीखने लगा (ऊँचा उठ गया) ॥ ५ ॥ शरीर की जोड़ें (संधियाँ)
बहुत कठिन होकर १३ ठोड़ी और कुच ऊँचे उठ गये जो वस्त्र के समूह से

कुचन ओट ॥

इन दुःसुहृन् अगोचरश्च वनि विचाले, जिम घनससिर्न दुरतश्च

चोल जाल ॥६॥

व्यापारहलुवमितश्च वनत वैनश्च, कीडाश्चोडाश्च करि नमतश्च नैन
लहंगाश्च विवर्तलघुश्च चैलश्च चीनश्च, चोलीश्च जुत चीरश्च धृति

अधीनश्च ॥ ७ ॥

सौभाग्य चिन्ह द्विकश्चि सुहाइश्च, मर अल्प वलयश्च निष्काश्च
दि भाइश्च

अर्चित खिल भूखन सब उतारिश्च, धव मंगल सूचक नियतधारिश्च
असनीदि नियम सब सखिश्च आप, अहमेति सुख विलसिय

मह अमाप ॥

अवर्तने आश्विनमास आइ, वैजनने वेर तह मह तनाइ ॥ ९ ॥

नवए गत्र अवधिनिज अय उदके, अस्ताचल पहुँचत पौषअर्क

दककर १ नहीं दिखाने पर भी उनके विशेष पढ़ने से नहीं छिप सकते जैसे
पादलों से रचद्रमा नहीं छिपता है ॥ ६ ॥ योत्तने की किया हलवै (धौरे) और
कमती जाती है ३ फीका करने में लज्जा से नेत्र नीचे होते हैं ४ छोटे घेरवाला
लहंगा और काचली सहित ओढ़ने का वस्त्र ५ पारीक वस्त्र के धारण
तथा सन्तोष दायक होते हैं ॥ ७ ॥ सौभाग्य के दो चिन्ह अल्प भार के रक्खे
६ चूड़ा "यहा तिमणिया का नाम नहीं है, परन्तु सुहाग के दो चिन्ह कहने
से तिमणिया का ग्रहण है, क्योंकि स्त्रियों के सुहागका चिन्ह चूड़ा और तिम-
णिया ही माना जाता है" ७ स्वर्ण आदि के सुहाग हैं "यहा आदि शब्द से
मोती आदि का ग्रहण है" ९ पाकी के सय भूषण उतार दिये और ८ ये दो
मृपण पूज्य और १० पतिके मंगलकी सूचना करनेवाले होने के कारण निरक्षय
ही धारण किए ॥ ८ ॥ ११ भोजन आदि १२ दिन प्रति १३ जीविका प्राप्त करानेवा-
ला "यहा अव शब्द प्राप्त करानेका और वर्तन शब्द वृत्ति (जीविका) का वाच-
क है" अर्थात् राजकुमार के जन्म से सयको जीविका दिखानेवाला आश्विन
मास आकर १४ तथा गर्भ के जन्म समय का वस्तव फैला ॥ ६ ॥ १५ आगे आने
वाले अपने शुभ कर्म फलसे १६ चन्द्रमा के अस्ताचल पहुँचते समय महाराज

मधु सजि अनीक चोगान पत्त, देविय निमित्त बलि १ जन २ दत्त १०
 चे विविध सद्धि प्रहरन दुरुह, जहँ दत्त परिच्छा भटन जूह ॥
 त १ अचल २ बेध ३ गन सफल चोट, जिततित कहँ सादिन द्रव-
 त जोट ॥ ११ ॥

पन चिंति चलत असह ताप, मिलि समूह हंकत हय अमाप ॥
 न कृत्रिम आहव बल बिधान, बलि चढत बैस्त १ मह २ सुरन
 मान ॥ १२ ॥

त प्रसव सुद्धि तहँ पहुँचि तामँ, किय बिधि मन जनजन सफल
 काम ॥

क मुनि भुजंग बसु ससि १८८७ समान, ईस ७ मास पक्ख इह
 बिसदरवान ॥ १३ ॥

तत नवमी ९ तिथि मिहिर १ बार, पैतीस ३५ घटी पल द्विचउ ४२
 पार ॥

०षा० २० उडु विकृति २३ रु तिथि १५ प्रमेय, सौभाग्य ४ धृति १८
 रु पल प्रकृति २१ श्रेय ॥ १४ ॥

जा रामसिंह सेना सजकर चोगान में गये और देवोंको बलिदान व पूजन
 दिया ॥ १० ॥ १ कठिनाई से तर्कना की जावे ऐसी शस्त्रों की परीक्षा रहिल-
 हुए और ठहरे हुए निसानों को ३ सवार घोड़ों की जोड़ियाँ दौड़ात हैं
 ११ ॥ ४ तोपों के समूह, देवताओं के बलिदान में ५ चक्र और ६ अैसे
 दते हैं ॥ १२ ॥ ७ तहाँ रावराजा के (॥ पुत्र होनेकी खबर पहुँची ८ आसोज
 मासके शुक्ल पक्षकी नवमी ॥ १३ ॥ ९ बिचार पैतीस घड़ी बयालीस पल, पूर्वा-
 णाढा नक्षत्र तेईस घड़ी पंद्रह पल, सौभाग्य नाम योग अठारह घड़ी इक्कीस
 ॥) इस ग्रन्थकर्ता सूर्यमल्ल ने राजकुमार भीमसिंह की मृत्यु तक का इतिहास नहीं लिखा इसकारण नहा
 ॥ तूम कि वे इस विषय में क्या लिखते परंतु हमने बहुधा मनुष्यों की जवानसे सुना है कि महाराज
 कुमार भीमसिंह अपनी युवावस्था के घमंड में महारावराजा रामसिंह की आज्ञा को नहीं मानते थे और
 यत्नों का संग बहुत रखने व इसकारण रावराजा ने उक्त राजकुमार को विश्वास घात से मरवा डाला ।
 इन राजकुमार भीमसिंह के शरीरक बल और बाणविद्या व वीरता की हमने बहुत प्रशंसा सुनी है ॥

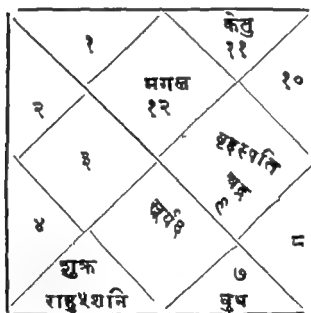
बान५ रु तिथि१५ बालव२ मिति बिमात, तीस३० रु छतीस३६
इह इष्टयात ॥

रवि१ सर५ रु हर११ रु अधिपति १६ रु अष्टि१६, सिव ११ रासि
दुर जव लग्नहु समष्टि ॥ १५ ॥

मगल३ सफर१२ स्थित लग्न१ मीहिं, अरिगृह६ कवि६ सनि७तम
८ सिंह२ मीहिं ॥

दयिता७ गृह७ कन्या६ थित दिनेस१, अतालपन ससिसुत४ धटग
एस ॥ १६ ॥

ससि२ गुरु कर्मालय१० चाप९ सत्य, आदिक९ सकुभ११ व्यप
भोन१२ अत्य ॥



पल ॥ १४ ॥ बालव करण पांच घड़ी पन्द्रह पल, इष्ट तीस घड़ी
और छत्तीस पल, सूर्य पांच राशि ग्यारह अक्ष, सौख्य कला और
सौख्य पिकला, लग्न ग्यारह राशि, दो अक्ष ॥ १५ ॥ मीनका मगल
लग्न में है, और शुक्र, शनि, राहु तीनों ग्रह छठे भवन में सिंह के हैं, कन्या
राशिका सूर्य सातवें भवन में, और बुधका बुध आठवें भवनमें गया है ॥ १६ ॥
चन्द्रमा और वृहस्पति दसवें स्थान में धन राशि के हैं, और कुभ राशि का

इम ग्रह९न भोग्य राशि१२न अधीन, क्रम कथित छ६ गेह९न वास
कीन ॥ १७ ॥

जँहँ ह६६१पुरंदर१ कुमार२ जात, केसव१ गृह दर्पक२सम सुहात॥
ऋतु मथन१ गृह कि कार्तिक२ कुमार, इन१ गृह वैवस्वत२किमु,
उदार ॥ १८ ॥

विधु१कै बुध२ विधि१कै मनु२ महंत, जंभादित१कै जय२ कै
जयंत३ ॥

आसुगै१कै भीम२कि असनिग्रंग३, अप्पति१कै---२किमु अभंग१९
कुह१ कुल नलकूबर२ किमु कुमार, किमु राम१ सदन कुस२
सुजसकार ॥

श्रीप्रभु ऋषभा१लय भरत२ श्रेय, कृतवीर्य१ कुट कि अर्जुन२
अमेय ॥ २० ॥

दुखंत१ सदन भरत२ कि द्वितीय२, बुध१ वसति ऐल२ इन हरि
द्वितीय ॥

धर्मा१लय ज्यौं अजमीढ२ धीर, बल१ निलय उल्मुक२क निसठ३
वीर ॥ २१ ॥

केतु वारहवें स्थान में है, ये ऊपर कहे हुए नवग्रह छः भवनों में वास करते हैं और छः भवन खाली हैं ॥ १७ ॥ जहां हाडाओं के १ इन्द्र के कुमर हुआ सो मानों श्रीकृष्णके घर में कामदेव (प्रद्युम्न) के समान शोभा देता है, इसीप्रकार शिव के घर में मानों स्वामिकार्तिक, २ सूर्य के घर में मानों उदार वैवस्वत मनु ॥ १८ ॥ ३ चन्द्रमा के बुध, ४ ब्रह्मा के मनु, ५ इन्द्र के अर्जुन किंवा जयन्त, ६ पवन के भीमसेन और ७ हनुमान, वरुण के मानों अभंग ॥ १९ ॥ मानों कुबेर के घर में नलकूबर, रामचन्द्र के घर में सुयश के करने वाले लव कुश, दक्षभ के घर में श्रेष्ठ भरत, कृतवीर्य के घर में मानों तुलना रहित सहस्रार्जुन ॥ २० ॥ दुष्यन्त के घर में मानों दूसरा भरत, बुध के घर में परमेश्वर का भक्त राजा ऐल, जिसप्रकार धर्म के घर में धीर अजमीढ, बल के घर में वीर उल्मुक और निसठ ॥ २१ ॥ अर्जुन के मानों युद्ध में नहीं सहन

जय१कै अभिमन्युरकि असह जुद्ध, *स्मर१सदा उषावर वरप्रबुद्ध
नरपति नल१ सदा कि इंदसेन२, नाहुष१ निकेत पूरु१अनेन२२
मनु१कै कि प्रियव्रत२ गुन अमेय, ध्रुव१कै किमु उत्कल२ नाम-
धेय ॥

वैवस्वत१ गृह इक्ष्वाकु२बुद्ध, ————— १२ अल्लुह ॥ २३ ॥
कालिंदमन परिच्छत१ नृप निकेत, पैनधन जनमेजय२ जयउपेत
उदयननृप१ गृह इत गृहसराह, नरबाहन दत्त२ कि कुमारनाह२४
पहु चंड मर्दासेना१ख्य पस्त्य, गोपालकुमार अरिकधि१अगस्त्य२॥
विक्रम१ निकाय क्रम चित्र२वीर, हुवभोज१ निलय २ गहीर ॥ २५ ॥
समर पितृल१७११२ एह रत्नसीह२, विजया१लय करन किरन
अर्बाह ॥

जयचंद्र१ महोदयपुर जनेन, सुत किंमु तदीय वरदायसेन२ ॥ २६ ॥
नृप सिद्धराज जयसिंह१ नाम, सुत गोभिलराज२ कि तस सुधाम ॥
सरवधिक कर्ण१रैवत रसेम, सुत तस कैवर्त२कि जस असेस२७
किपेजानेवाला अभिमन्यु, १ प्रभुन्न क बुद्धिमान् † वषा का पति अनिरुद्ध,
राजा नल के घर में इन्द्रमेन नहुष के घर में ‡ पाप रहित पूरु ॥ २२ ॥ मनुके
मानों अमाप गुणवाला प्रियव्रत, ध्रुव के मानों उत्कल नामक पुत्र, वैवस्वतके
घर म चतुर इक्ष्वाकु § निर्लोभी ॥ २३ ॥ १ कल्पियुग को
दंड देनेवाले परीक्षित के घर में २ प्रण ही है बन जिसके ऐसा जय सहित
जन्मेजय, राजा उदयन के घर में वर की प्रशंसा करानेवाला कुमार का पति
मानों नरपाहनदत्त ॥ २४ ॥ ३ महामेन नामक ३ प्रबुद्ध राजा के घर में कुमार
गोपाल, अरिकधि के अगस्त्य ५ विक्रम के घर में चित्रर्षि ॥ २५ ॥ ६ बभ्रुवा-
ण पृथ्वीराज के घर में रत्नसिंह ७ सरवहिया विजय के घर में युद्ध में नहिं
वरनेवाला करण, महोदयपुर के राजा जयचंद्र के घर में ८ मानों उसका पुत्र
वरदाईमेन ॥ २६ ॥ राजा सिद्धराज सोलखी के ओष्ठ घर में मानों गोभिलराज
१० रैवत के राजा ६ सरवहिया करण के घर में मानों सम्पूर्ण गुणवाला
उसका पुत्र ११ कैषाट हुआ ॥ २७ ॥ इस प्रकार गुणों की खान हाथाओं के

गुन आकर हड्ड१न हेलि गेह, इहिं तुलु' कुमार हुव तिहिं अनेह
नर पहुँचि सुद्धि दायक अनेक अधिगत अभीष्ट हुव एक एक २८
भू१ धन२ गृह ३ भूषन ४ बसन ५चाह६, सतकार पगे सब लद
लाह ॥

बांधव१ वपस्य२ भट३ सचिव४ वर्ग, सुनि कुमार जन्म अंहति
निसर्ग ॥ २९ ॥

वृत्तिहिं बचाइ सर्वस्व२ स्वीय, बहु देत भये रुचि जस वरीय ॥
कति संघ दत्त भूखन दुकूल२, मुद्रा३ दिय कतिकन प्रमदमूल३०
आँबिक४ दिय कतिकन अवनि आय, कतिकन दिय मासिक५
निज निंकाय ॥

महि६ दत्त कतिन श्रद्धा प्रमान, दिय हो ढिग जो सु७हि कतिन
दान ॥ ३१ ॥

इम दत्त कतिन भूखन८ अगार, बसनालय९ कतिकन बसन बार,
लुटवाइ मँदुरा१० कति अलुद्ध, सल११ महिषी१२सुरभी१३ वृषभ
१४ सुद्ध ॥ ३२ ॥

कतिकन दिय सस्त्र१५हि प्रमद काल, बटि द्रंग बधाई वसु
विसाल ॥

रीझहिं सक्यो न कहूँ कोहु रोकि, बिग्रहं १ अंसु २ आगम मह
विलोकि ॥ ३३ ॥

सूर्य (रामसिंह) के घर में १ इनकी घरावरी करनेवाला कुमार उस (ऊपर कहे)
समय में हुआ सो राजाको खबर देनेवाले अनेक मनुष्य पहुँचे उन सबको बां
छित फल २ प्राप्त हुए ॥ २८ ॥ ३ दान के ४ स्वभाव से सत्कार को प्राप्त
हुए ॥ २९ ॥ अपनी वृत्ति को छोड़कर अपना सर्वस्व ॥ ३० ॥ ५ अपनी भूमि
की सालियाना आमद और कितनोंने ६ घर की माहवारी आय (आमद)
दी ॥ ३१ ॥ कितने ही निर्लोभियों ने ७ हथशाला लुटा दी ८ जूट ॥ ३२ ॥
९ शरीर में १० प्राण आदि के समान उत्सव देखकर ॥ ३३ ॥

प्रभु विहित कृत्य महजन पधारि, पोढे पुनि दुस्यन दुक्ख दारि ॥
सद्विय दसमी१०दिन बिधि असेस, अवसरनिर्गमोदित बिरचि एस३४
क्रम जातकर्म ४११ सह बिधि कराइ, किय नाम कर्म ५१२ पुनि
समय पाइ ॥

कवि चह । पत्त दानाधिकार, सह सचिव छुलि तहँ मह प्रसार३५
अधिराज दुहु२न दिय हुकम एहु, दिन समह बधाई बंदिबहु ॥
भरि तव बहु थेलिन धन अभग, करि कर्म सचिव कति सुकवि
संग ॥ ३६ ॥

जब अखिल्ल दान संभार जोरि, पीताबर श्रीहरि निजयँ पोरि ॥
निज ठानि अधोमहजन निवास, पटु उचित बंधु१ कवि रक्खि
पास ॥ ३७ ॥

तिहिँ थान बधाई१ नाम त्याग, भनिहित प्रारंभिय क्रम विभाग ॥
भूखन१पट२हय३ गय४ भर्म५ भुम्मि६, घन दम्म७ददन जमछाक
घुम्मि ॥ ३८ ॥

बुध१ कवि२ द्विज१विद्या२समर सूर, पौरानिक३मागध३ बदि४पूर
वैतालिक५ चाक्रिक६भाह ब्रात, जंगर८बिरुदब्रत मट९जात॥३९॥
बहुरू५१० भैरत११ चौरन१२ बहोरि, जिम नैदो१३ सूचक१४जूह
जोरि ॥

पुनि पीठैमर्द१५ पार्थिक१६ प्रवीन, प्रीतिद१७ बिट१८ चेटक १९
१दरिद्रियों का दुःख काटकर स्वयं का कहालुआ ॥३४॥ १इस प्रय के कर्ता स्वयं-
मल्ल के पिता असीदाम को दान का अधिकार दिया ॥ ३५ ॥ ३६॥ ४सामग्री ५
मंदिर की पोछ [द्वार] में धनीषे के महलों में ॥३७॥ ७सुवर्ण ॥३८॥ ८वारण नाट
विशेष १० जांगरु (डोली) ॥३९॥ ११नट १२कत्यक (नाचमेघाळे मट विशेष) १३
नाटक के आदि में भगल पाठ करमेघाळे मट १४सूत्रधार (नाटक करनेवाले मट
विशेष) १५नाटक के नायक विशेष १६माया कारक नट विशेष और १७ विदूषक
१८ बिट, चेटक (ये तीनों कामी पुरुष के सजावों के भेद हैं)

स्वगुन पीन ॥ ४० ॥

पात्र^{२०} रु भ्रुकुंस^{२१} पैनजुत्ति^{२२} जत्थ, बादन^१ चउ^४ बादक^{२३}
श्रेनि^{२४} सत्थ ॥

पहिले^१ अधिकारी^१चउ^४प्रधान, मोताजदार^२पुनि मध्य^२मान^४
उपटंक बनीयक वृंद एस, गुन बेतन ग्राहक^३ श्रेनि^३ सेस^३ ॥
इह अन्याहि चारन^१ भट्ट^२ उक्त, पौरानिक^१बंदी^२पनप्रमुक्त॥४२॥
तकुर्क^१ विदेश्य^१ अरु देश्य^२ तत्थ, आये जुरि सहस्रन अत्थ अत्थ
इम भंग^१अवधि जुग^२मास अंत, दिय बंदि बधाई जस दिपंत^४
बंदि मंग^१ हय^२ भूखन^३ सतन जात, सिरुपावन^४ सहस्रन मित^३
सुहात ॥

वितरत अयुतन मित द्रम्म बार, सिंधुन बिलाघि हुव जस प्रसार^४
उच्छव^१ यह जान्यो दिसन अंत, क्रम संस्कार सोमित सुमंत ॥
निस्कासन^१ प्रासन^२ विधि वनाइ, पुनि अवसर छुरिका^३ बंध
पाइ ॥ ४५ ॥

सह चौल^४उपनयन^५पाह^६सिष्ट,दिपि है सब इतिमुख भांविदिष्ट
१अपने अपने गुणों में पुष्ट ॥४०॥२नाटककर्ता विशेष रेखी का वेष करके नाचने
वाले नट विशेष ४वेश्याएं ५चार प्रकारके वाद्य (तत, आनद, [*]सुषिर, घन)
बजानेवालों की ६ पंक्ति सहित ॥४१॥ इन पदवियोंवाले ७ याचकों के समूह
और बाकी गुण के साथ तनखा पानेवालों की पंक्ति ८ इन से भिन्न ऊपर कहे
हुए चारण और भाट जिनको पौराणिक और बंदी कहते हैं ॥ ४२ ॥ ९
याचक १० धनके अर्थ ११ मृगशिर मास पर्यन्त ॥ ४३ ॥ १२ ऊट १३ गिनती
में १४ रूपयों का समूह ॥ ४४ ॥ अब आगे संस्कारों के नाम बताते हैं १५
बाहर निकालना १६अन्न खिलाना १७छुरी बधाना ॥४५॥ १८चूड़ाकर्माहजामत बन
वाना १९जनेऊदेना और व्याह करना इत्यादि श्रेष्ठ संस्कार २०आगे आनेवाले
[*]“ततं वीणादिकं वाद्य आनद मुरजादिकम् ॥ वंशादिकं तु सुषिरं कास्यतालादिकं घनम्” इत्यमरः ॥
अर्थ—वीणा आदि वाद्य का नाम तत, मृदंग आदि को आनद, वशी आदि को सुषिर और कासी के ताल
आदि वाद्य को घन कहते हैं ॥

अब वर्तमान क्रम करि उदत, कोविद श्रुति धारहु अवनिकत ४६
बलि उज्जल मगग ९ अह मह बिताइ, अवलच्छ २ पच्छ अब पौ-
स १० आइ ॥

वर्तत तिथिपंचमिपतरनि १ बार, क्रम लहिय जन्म अर्जुन १ कुमार ४७
खनि १ मनि स्वरूपलतिका २ खवासि, जो रत्न १ जन्पौ २ रुचि १
रूप २ रासि ॥

कविजनक किन्न बलि कवि बिवाह, सक भावी १८८८ मधु सि-
ति १ लग्न लाइ ॥ ४८ ॥

कोटेस प्रतोली पात्रकेर, बहिनी सन सगपन किय सु बेर ॥
जहँ विद्यमान कवि मालजास, श्रुत बिजयसिंह १ अभिधान आस ४९
जो मालिक महियारियन जात, कविराज मोघ उपपद कहात ॥
सासन थोहनपुर १ प्रमुख सत्त ७, पूरन १ कति कतिकन बट २ पत्त ५०
सब कुल माधानि न नेग सत्य, आजीवन कोटा ब्रात अस्थ
तस जाँमि बधू हित मगि तौत, प्रारंभिय उच्छव समय पात ॥ ५१ ॥
सक हय अहि वसु इक १८८७ पकत संस्प, तिथि बारसि ससि
सुत ४ सित २ तैपस्य १२ ॥

अपेहि निमत्रि कवि निज अगार, बुल्ले सह परिगह मह विधार ५२
समुपेत पति १ सादि २ न सहस्र, घटिका दस १० जावत कथित धैस
समय म शांभा पावेंग [होवेंगे] १ हे अतुर राजा सुनो अथवा हे राजा
के पड़ितो सुनो ॥ ४९ ॥ २ कार्तिक ३ पौष मास का कृष्णपक्ष ४ रविवार
॥ ४७ ॥ मणिपौ की ५ खान ६ सूर्यमल्ल के पिता अहीदान ने ७ इस
ग्रंथकर्ता सूर्यमल्ल का विवाह किया ८ वैश्र सुदि ॥ ४८ ॥ ९ पौलपात्र की
॥ ४९ ॥ १० कवि नहीं होने पर भी कविराजकी मूर्ती पदवी कहाता था ११ शुद्ध
शुभुर आदि ॥ ५० ॥ १२ उसकी पहिन को १३ पिताने ॥ ५१ ॥ १४ खेती के पकते
समय १५ शुभवार १६ फाल्गुन सुदि १७ कविने आपको न्यूता देकर परगह
सहित अपने घर बुलाये ॥ ५१ ॥ १८ कहेहुण दिन

प्रभु निर्वसथ हरिना१ निकट पत्त, अभिमुखं कवि१ आगत त्वरित
तत्त ॥ ५३ ॥

पहुँचे न कास द्रोनि१ प्रदेस, सोदागर भैरव२ पहुँचि सेस ॥
सह बिरुद१ दत्त आसिख२ सुहाइ, उँपदा किय हय इक१ प्रमद
पाइ ॥ ५४ ॥

रक्ख्यो न तुरंग१ सु हड्ड६ राज, क्रमि अगग मगग१ लखि सम-
य काज ॥

बाहलि कारुंड२ सु संकट बट३, उत्तरि इत आये थरकि थट्ट॥५५॥
क्रमि मग हुंडुभ द्रह४ रु दुड़कूप५, दै छत्रिय६ दक्खिन१ भुजहिं
भूप ॥

जिम सब करि दक्खिन १ ईच्छुजं७, तजि तुरग रुंडतट ८ पुनि
स्वतंत्र ॥ ५६ ॥

थित देवी चालकनेचि थान९, तहँ बहु तनाइ पँटगृह बिँतान १०॥
अंतर प्रवेशि ११ कटिबंध उँजिक् १२, समयानुसार सब कज्ज
सुजिक् ॥ ५७ ॥

दै सैन्य जिमावन तहँ निदेस१४, पठये निंयोगि जन१५ निपुन पेस
जिल्ला निज लैलौ १६ तिनहु जाइ, जे सब कवि आलय दिय जि
माइ१७ ॥ ५८ ॥

आदरके भट१ खिल रहि उदार, रहिकैं अधीस ढिग रहनहार२ ॥
बल आत जिम्मि जनजन बिबेक, अवसेसँ रहत दिन जाम एक१
१हरणा नामक सूर्यमल्लके ग्रामके समीप पहुँचे वहाँ कवि चंडीदान २सम्मुखे
[पेशवाई] को आया ॥५३॥ ३पर्वत की संधि के स्थान पर ४ नजर ॥५४॥ ५गाढ़ा
[छकड़ा] के मार्ग से ॥ ५५ ॥ ६गन्ना पीलने की चरखी [जंत्र] को दहिने हाथ
रखकर ॥५६॥ ७ढेरे और = चंदचे तनाकर ९कमरबंध खोला ॥५७॥ १०जीमनेका
हुक्म देनेवाले मनुष्यों को भेजे ॥ ५८ ॥ ११एक पहर दिन घाकी रहते ॥ ५९ ॥

रामसिंहकाग्रन्थकर्ताकेविवाहोत्सवमेजाना]अष्टमराशि दशममयूख(१२१५)

सह सौच१ वि२ सध्या २ सद्धि सूर, आरौहि३अर्च हय मृग१इजूर
वृहती गोवाटी१ मुख प्रविष्ट४, आवत४ निवसथ२ बिच स्वकवि
इष्ट ॥ ६० ॥

१ तवते पामडे६ पट१न तानि, अति अर्घ पट्टमय२ अग्न आनि० ॥
तिम अग्न ८ मिलित जर १ तार २ तार३, अधिराज पत्त ९ इम
कवि अगार ॥ ६१ ॥

गनपति१ सिव२ थान जु चतुर गोल१०, तजि११इय तहँ जालित
१ जालित२ जाल३ ॥
चतुर १२ जु आव्हय करि रामचोक ३, अनि चउ ४ जुत करनी
संक्ति ओक१३ ॥ ६२ ॥

पैठे१४ तहँ संसदें प्रभु वनाइ, प्रविसे१५ पुनि अदर समय पाइ ॥
कवि आजय चत्तैर विविध कंति, परि चो ४ सर चत्वर भति
पनि१६ ॥ ६३ ॥

प्रभु तत्थ सखा१ सुभटन उपेत, हड्ड६१न इनँ वैठे१७ असन हेत ॥
आघात अनु १८ स्वदनाँवसान, पानिय पवित्र लहि १९ अप्प
पान२० ॥ ६४ ॥

पुनि इम अपन१तर अपन पत्त, मदिले कविकुलकी जहँ समत्त ॥
११ट दुजनसल्ल १ गोकुल २ भुँवाल, लहि सग कर्ग३ तिम रत्न-
लाल४११ ॥ ६५ ॥

त्रय३आदि महासिंहोत्त तत्थ, स्व सचिव काका—चउ४समत्थ

॥६०॥१ खादी और मोतिपों सहित ॥ ६१ ॥ २ खपख घोड़े को छोड़ा ३ करनी
माता के स्थान में ॥ ६२ ॥ ४ समा करके बैठे ५ चौक में ॥ ६३ ॥ ६ हाथों का
पति भोजन करने को बैठा ७ भोजन के अंत में आचमन लेकर ॥ ६४ ॥ ८
घर के भीतर के घर में पट्टे जहा कपि के कुल की १० सय ६ स्त्रिया थीं ११
राघराजा रामसिंह ने जिनकी लाज वे स्त्रिया नहीं करती थीं ॥६५॥ घन थार

ए ४ स्वामि १ संग चउ ४ बोर आस, पंचम ५ लहि मो^५कहँ
अप्य पास ॥ ६६ ॥

पंच^५न जुत अंतर गृह प्रविष्ट, पहिचानी सबतिय कवि प्रदिष्ट॥
कवि जननि नजर इक दम्म किन्न, लहि सो^१ रु न इतरन भेट
लिन्न ॥ ६७ ॥

उत्तारन^२ करि तब तिय असेस, अखिखय पवित्र किय सदा एस॥
प्रभु आसिख इम कवि तियनपाइ, उपविष्ट सभा जह पुब्बआइ६८
सिरुपाव जंकुट २ बर १ बरनि २ सीर, मुद्रा सतसह १०० हय
बितरि बीर ॥

॥ ६९ ॥

दासि^१न घट^२ मुद्रा पंच^५ दत्त, पुनि इक^१ पुरोहित^२कलस^३पत्त॥
इक^१हि निपं मोतीसर^३न आइ, पंचधावक नापित^४उभय^२पाइ७०
इक^१दम्म भेजि श्रीहरि^१ अगार, दुर्गा^१वी^२ मंदिर इक^१उदार ॥
उपदा इक^१चालकनेचि^३अत्थ, सखिय इक^१करनी^४भेट सत्थ^७१
इततैं इक^१ इक^१ सिरुपाव १ अर्ब^१, कवि जनक १ किन्न प्रभूत
२ सुपर्व ॥

रक्खयो न उपायन वह रसेसैं, मोताज मिलिय इततैं असेस॥७२॥
चैलाल^१प १ अधिकृत दम्म चपार, धुव चउ^४हि फरास^२न
निकर धारि ॥

भाइयों को और पांचवे १ अथकर्ता सूर्यमल्ल को पास लेकर ॥६६॥ २सूर्यमल्ल
की माता ने ३ दूसरी स्त्रियों की भेट नहीं ली ॥ ६७ ॥ ४ न्यौछावर ५ हमारे
इस घर को पवित्र किया ६ सभा में जहां पहिले बैठे थे तहां आये ॥ ६८ ॥
दुल्लह दुलहन के लिये ७ दो शिरोपाव द देकर ॥६९॥ ८दासियों के कलश
में १० मोतीसरो के कलश में ११ पग धोनेवाले नार्ह ने ॥ ७० ॥ १२ देवी के
मंदिर ॥ ७१ ॥ १३ श्रेष्ठ समय पर कविने भेट किये १४राजा ने वह नजराना
नहीं रक्खा ॥ ७२ ॥ १५फरासखाने के दरोगे को १६ फरासों के समूह को

दुव २ दम्भ द्वारपाल३न दिवाइ, पुनि दुव२हि नकीव४न
निकर पाइ ॥ ७३ ॥

ताबूलकार५ हपभृत्य६ ताम, दुव२ दुव० इत्यादिन लहिय दाम ॥
लहि सेमन डक१इक२दम्भ लाइ, अखिखप पाकस्तव सबन वाइ७४
पुहवीस व्याइ मह इम पधारि, बहु पोलिपात्र गौरव वधारि ॥
तिमसद्धि निमंत्रन दृढ६१हेलि, क्रिय आइ पुँषसर१वेले२केलि७५
खिन पुवन भोज१९०२ भूपति खवासि, रुचि सुजस ठानि व्यय
वित्त रासि ॥

निपतार्य फुल्ललतिका१ स नाम, जिहि नरन१ भरन२ करि अड्ड८
जाम ॥ ७६ ॥

भुन सोधि पवनदिस३६ कोस१ भाग, तहँ नाम फुल्लसागर१तडाग
विरच्यो विसाल जहँ तहँ सुबेस, आराम१२ रचिय भाऊ१९६
इलेसँ ॥ ७७ ॥

सत्रसाग्वी दत्त१ फल२ फुल्ल३ सालि, चहारि१ नला२दि जलजंत्र
चालि ॥

सुभसिल्ल कुड१वापिय२मुहात, प्रासाद३ बरन४ छविप्रचुर पात७८
लाहिकाल भयो उपवन सु लुप्त, गुरु१विरल तरु२न रहिगो अगुप्त
अप्पहु प्रभु विहरत कबहु आइ, लखि ताहिसज्ज विरचन लुभाइ७९
दिय कण्णाराम१ सचिवहि निदेस, अभिनव बलि विरचहु धर्तै एस
सुन जेठो१ मोहन१ प्रीति मत्थ, तारागढ अधिकृत धुलि तत्या८०
इम कहिय सचिव धर्तै वेले एस, नृप कियउ नव्य विरचन निदेस

॥७३॥ १पफवान की स्तुति करके सयने प्रशसा का १७४॥ २ फुल्लसागर नामक
तालाब के पाग म कीड़ा की ॥ ७२ ॥ फुल्ललताने अपना नाम शनिदण्ड रखने
के अर्थ ५ भरण पोषण करके ॥ ७३ ॥ ५ वायु कोण में ७ राजा भाऊने धहा
६ पाग बनाया ॥ ७७ ॥ दृष्ट, महल और हकीर्त ॥७८॥ १० थोड़े से पड़े धुँवाँ
स प्रसिद्ध रहा ॥७९॥ १० इस पाग को फिर ११वीन रखी ॥८०॥ ११ घघन कहा

सासन सु पुत्र सुहि धरहु सीस, मतिगति अरुद्ध मन्नहु मर्दास ८१
 सुनि जनकबैन प्रभु हुकम सद्य, इक्खि सु सुहूर्त तजि सब*अवय
 प्रारंभिय उपवन नियम पारि, प्राकार †सुधा धवलित प्रसारि ८२
 नवधातु ‡उदुंबर के बनाइ नलिका§उखादि बहुविध तनाइ ३ ॥
 तब गत छिति अंतर रक्खि ताम, जलजंत्र१जाल लागिगय ललाम ८३
 चहरि२ तिम चल्लत तनत चिल्ल, परिवाह सुद्धजल भूत पवित्र ॥
 सरसेतु १ बेल २ बिच अति विसाल, किय कुंड ३ किल्लोलन
 उप्पाकाल ॥ ८४ ॥

तत श्रोदि४न सबदिस जहँ तनाइ, बिच तास पृथुल छत्री५ बनाइ ॥
 दिस उत्तर ४७ तस तट रम्य देस, प्रासाद पंति ६ विगचिय वि-
 सेस ॥ ८५ ॥

चहरि७ जलजंत्र ८ हु तहँ चलंत, छत्तिन लागि नल जल उच्छलंत ॥
 महलन उदीचि ४७ दिस रुचिन मेल, बिस्तारिय सब ऋतु तरु ९
 न बेल ॥ ८६ ॥

सब कूप १० कुंड ११ बापी १२ सुधारि, चउ४ कोन वरन १३ किय
 द्वार १४ च्यारि ४ ॥

उत्तर तरु संभृत अखिल अैन, दल १५ फल १६ प्रसून १७ सबका-
 ल दैन १८ ॥ ८७ ॥

प्राची १ आसा भव द्वार पास, अभिगम राम प्रासाद १६ आस ॥
 दक्खिन २३ सन ध्रुवदिस ४७ रुचिर राह, बिच नहर २० बहत
 चहरि प्रवाह ॥ ८८ ॥

॥ ८१ ॥ * सब अशुभों को छोड़कर † चूने का उज्ज्वल कोट ॥ ८२ ॥ नवीन
 धातु की कितनी ही ‡ देहलियां बनाकर नलियां और फुहारों के नीचे की
 § हांडियां आदि उनको धूमि के भीतर रखकर तहां १ फुहारों के समूह
 ॥ ८३ ॥ २ आश्चर्य फैला कर ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ३ उत्तर दिशा में ॥ ८६ ॥ ४ को
 ॥ ८७ ॥ ५ पूर्व दिशा में ॥ ८८ ॥

विच तास चलत जलजत्र नात, जिन अवधि कुठे२१ नव९ नलन
जात ॥

अतिवेग अबु चढि तरुन उद २२, बरखा ३ दिखात बिनुकाल
बुद्ध२३ ॥ ८९ ॥

प्रतिवाटी१ *इच्छु२४न सुम२५न पाइ, छत्री२ लवग २६ दाक्षा
२७दि छाइ ॥

इत उपवन नैर्ऋत२।४कोन†अष्ट२८, बहु रमन सिंह आखेट बद्ध२९
निकटहि तस बाहिर कृत निपान३०, तस दु २ दिस चोक३१
परिमित बितान ॥

अतहपुर सह तह रहि उदार, प्रभु रमत प्रचुर सिंहन सिकार।९१।
सर सेतु सिरहु वाटिन सुदार, बहु कुसुम३२नैगबाल्लि३३न बिथार
कुंड१ रु तढाग२ विच विविच कज३४, गुन सौरभ विकसत कु-
सुम गज ॥ ९२ ॥

अति तुंग गिरिन चहुँ४ ओर ओघ३५, मुख१ अत्य ४ जाम२ रवि
रहत मोघ३६ ॥

अति जीरन१नव२इमविरचिबाग, सद्धिप प्रभु सासनरखिराग९३
यह भूतकाल१ उपवन उदंत, समुक्तहु हुव पहिले सचिव संत ॥

अव वर्तमान२क्रम वत आहि, कविगृह पवित्र करि इम उमाहि९४
नृप तहँ विवाह गौरव मनाइ, आये इहिँ उपवन प्रमद पाइ ॥

इत जाइ व्याहि सूचित अनेहँ, बहु त्याग बटि गय सुकवि गेह९५
इत सक अदि गज धृति १८८८ सरद ४ अत, मनसिंज तिथि १३

बाहुल८सित२मिलत ॥

॥८६॥इच्छु (गला) † कुर्ज ॥१०॥†प्रपा(खेली) ॥११॥तलाव की पाल पर २नागर
घेल ॥९२॥इज्जये पर्वतों के समूह से १आदि और अंत की दो पहर में सूर्य नहीं
दीखता ॥६१॥६४॥प्रसूचना कियेहुए समय में ॥६५॥६कामदेव की तिथि७कार्तिक

भूपति सुत अर्जुन १ मध्य १३ त, जो सिसु स्वरूप नत्ति का १ प्रजात ०६
१ सकपो परि नामहु तत्र ताम, विधि वाम विचहि विगचिप विनाम
नक तिहिं १८८८ तदनंतर माघ ११ आम, ध्रुव मितन थाप्य अज-
मेरु धाम ॥ ९७ ॥

पद्मेज ७ न अनुसारी मंत्र एस, एकल किज भूपति अमेस ॥
हैं उदयनैर १ जयनैर २ ताम, सह जोधदंग ३ बुन्दि ४ सनामा ०८
होटा ५ रु कृष्णागढ ६ प्रमुख केक, बुल्लिप नरेस प्रभुपन विधेक
सहिपति जवान १ सीसोद १ सोर, कर्म २ जयमिह २ सु दप
किमोर ॥ ९८ ॥

कुल हड्ड ६१ न दिनकर उक्त काल, प्रभु गम २०७१२३ पन
अप्पहु कपाल ॥

पुनि पत्त राम ४ कोटा पुरेस, इह सचिव भल्ल आयत्त एस १००१
कल्ल्यांन ५ कृष्णागढ विभु कहात, विभु करि सुत १ कहिय जु
२ भट नात ॥

इत्यादि अधिप सब बल सजाड, आहूत निगम अजमेर आइ १०१
१ इक १ जोधपुर ३ नृप प्रमत्त, पति अलस नरन नहि मान ३ पत्त ॥
सुरस्यो गिन्यौ सु जग मद मरोर, जिहिं फल पुनि पैं कुविधि जोर
सूचित १८८८ सक मेचक १ माघ ११ आम, तिथि नवमि ९ आंगिर
स ५ वार ताम ॥

तहँ नाडी चउदह १४ निख बिताड, पुनि सुभमुहूर्त तस अग्गपाइ १०३
सुदि ॥ ९९ ॥ १ माघमास में ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ २ आदि ३ जवानसिंह ॥ ९९ ॥ ४ साचिव
भाला माधवसिंह के वश में था ॥ १०० ॥ ५ कल्याणसिंह ६ प्रभु (राजा)
पुत्र को किसनगढ में मालिक करके उमरावों सहित निकला ७ अंगरेजों के
बुलाये हुए अजमेर नगर में आये ॥ १०१ ॥ ८ आलस्य करके नरनाथ मान-
सिंह वहीं आये ॥ १०२ ॥ ९ मास में १० गुरुवार ॥ १०३ ॥

रामसिंहकाअजमेरकेदरबारमेंजाना] अष्टमराशि-दशममयूख (४२५१)

वह लहि प्रभु प्रस्थित बल सुहात, पगि प्रथम१पगारौ१सिविर पात
दल पात देवली२किय द्वितीय२, तीजो३सु केकरी३अस्थितीय१०४
सरबाट४रासपुर५वीर६ सीम, किय क्रम मुकाम भट अरिन भीम ॥
सप्तम७मुकाम कछु देर सग, दल पहुँचि सक्यो नहि गम्प द्रग१०५
परिमग विपिन बिच कटक घात, भुगि सु निस सप्तम ७ हुब
प्रभात ॥

अष्टमदिन दुर्पहर लघिअप्प, आरुहि इम दुजनन दलतदप्प१०६
दुदुभि १ पटहारदिक विगच बज्जि, सब भट १ बयस्य २ कवि ३
सचिव४ सज्जि ॥

मप्पत लगिढोरिन गमनमग्न, बलईकिय इद ढिग सिथिलबग्न१०७
उततैं अंग्रेजहु पर्व पाड, अधिकारी पचक५समुख आइ ॥

मातंगारूढन हुब मिलाप, इम मुदित पटालय पत्त आप ॥ १०८ ॥
गोरेहु गये लहि सिक्ख गेह, अष्टम८ मुकाम अजमेर८ एह ॥

तहँ पुर सन उत्तर४७तालताम, अभिधान अन्नसागर१ सनाम१०९
उत्तर४७ प्रपात तस रचिय आत, जैपुर जन सर पृतना प्रपात ॥
तिम जानहु दक्खिन२१३ तीर तास, परि बल प्रभु अप्पन सिविर
आस ॥ ११० ॥

दक्खिन२१३दिस पुर सन कछुक दर, तहँ रान तत्र परि तत्र पूर ॥
बलिरान१के रु पुर२केविचाल, जोरिय कोटाबल सिविरजाल१११
इत्यादि अधिप उत्तरि असेस, पंटकुटन रहे परिसर प्रदेश ॥

लगि ललित कलित वसा१वलब, पंटवरन१ सरन२ आयत१ प्र-

॥१०४॥१०५॥१०६॥१०७॥१समय पाकर२हाथियापर चरहुए ॥१०८॥१०९॥३पट्टाब

(मुकाम)॥११०॥ ४ महाराणा के अधिकार म गूडा(ढेरों)का समूह हुआ ॥१११॥

५नगर के समीप ढेरों में रहे, सुदूर मोटे और लंबे पासों की ६प्रसिद्ध ७कनात

लंब२ ॥ ११२ ॥

वलंब१ प्रलंब२ अंत्यानुपासः ॥ १ ॥

शूल१न प्रति उच्छ्रित थूल थंभ२, सिर कनक कलस३ खचि म-
नि सदंभ४ ॥

बनि अग्र अजिरै५ नाना बितान६, सब ठां बनि स्त्रस्तर७ विविध
बान ॥ ११३ ॥

लागि बेणु इसीकैन चिकन ललाम, चिलन विचित्र धृत धाम धाम
सिचप१ रु जवफल२ मय कृत सुठार, परदा९ अपटी१० दिपि द्वार
द्वार ॥ ११४ ॥

सब कृत्य सदन११ बसु८ दिस विभाग, पल्लयंक१२ पीठ१३ रुचि
रूप्य राग ॥

गन तलिन१४न मलिन न निचुल१ गुप्त, ऊंधस्य फेन छवि फवि
अछुप्त ॥ ११५ ॥

प्रति थूल चूलै१५ सध्वज पताकि १६, लहरात बात बेणु१न ल
तारकि ॥

क्रम करि प्रभुबिलसनअप्पकज्ज, सिचयालय ऐसे बिहितसज्ज११६,

का कोट लगा ॥ ११२ ॥ १ डेरों के थंभ ऊची चौकों के लगे जिन पर मणियों से जड़े हुए सुवर्ण के कलश लगे २ जिनके आगे चौक रहकर अनेक प्रकार के शंखदवे (सामियाने) तने ४ अनेक प्रकार के शयन के तथा खसके डेरे बने “यह माघ मास था इस कारण खसके डेरे नहीं सभवते किन्तु शयन के डेरे ही जानो” ॥ ११३ ॥ ५ बांस की सुन्दर तूलियों की चिकें लगी ६ चस्त्र और ७ बांसोंमई श्रेष्ठ पड़दे और डेरों की ८ कनातें द्वार द्वार पर शोभित हुई ॥ ११४ ॥ भीतर मलिनता रहित १० वस्त्र की ९ बिछायत हुई जो ११ स्तनों से निकले हुए दूधके भागों के समान अस्पर्श कीहुई शोभा देती थी ॥ ११५ ॥ प्रत्येक डेरे पर १२ थंभो थंभों (चोबचोब) पर ध्वजा और पताका “अनेक वस्त्रों वाली ध्वजा और एक वस्त्रवाली पताका कहलाती है” उड़ती है सो भातों यासों की लता को पवन हिलाता है १३ उचित डेरे सजे ॥ ११६ ॥

प्राकार१७ कील१ मेस्कर२प्रविद्धे, सपुट त्रिक३ जवनि३न वल्ल-
ज१८ सिद्ध ॥

रहि तत्य रुचिर बिलसतविलास, पुनिसज्जिय जावन लाठपास११७
चलि अगग चक्र चरख१न चठछि, तोप१न गन लोपन गढन तैछि॥
थहरात हेतु भडन थरकि, फहरात केतु१ दडन फरकि ॥११८॥

वहि कतिन जुत हय३ कतिन बैल४, गुनं रत्त रत्त५ ब्रव पत्त गैल
तिन्हपिछि तरल नागधनानिसान७, रुचिपावल रोचन दिपिदिसान११९
सज्जित कति होद८न निंयहि सिंछि, परि मेघाढवर९ कतिन पिछि
वहि पिछि पलटनि१० बिछित व्यूह, जहँ सबत मेहरन पत्ति जूह१२०
इन्ह केटें आयुधिक पत्ति११ओर, जिन्ह केट सादि१२गन नियति
जोर ॥

पुनिकेट चोक१३रंजुनप्रमेय, सादिन प्रवेक गुन१४पिछिश्चेय१२१
तिन्ह केटें प्रमित पुनि चारु चोक१५, अति मुख्य पत्ति१६ तिन्ह
मध्य ओक ॥

रहि पास सामि तहँ अतरंग १७, तहँ पदग मुख्य तिम१८ स्वामि
सग ॥ १२२ ॥

आरुढ तुरग तिन बिच अधीस १९, सहदह१ खचितें मनि २ छ-
ब्र२० सीस ॥

पाडुरें रुचि चामर२१दुरि दुरपास, ससिपेर कि दुरघन सितें रचत
१प्रसिद्ध पासों की कीलें२कनातों के तीन घेरों का कोट और द्वार॥१७॥३गदों
का नाश करने की तष्टि [कुठार]रूपी॥१८॥ ४खाल खाल रंग को मार्गमें पहा
नेवाली ५ चपल हाथियों के निसान ६ पीछे रंग के ॥११६॥ दक्षिण [आशा]
को ७ निपाहकर १० पैदलों का समूह ८ शस्त्रों को साधते हैं ॥ १२० ॥ ११
इन के पीछे १२ खोरियों का नापा हुआ चोक ॥ १२१ ॥ १३ जिनके पीछे इसी
प्रमाण का सुंदर चोक ॥ १२२ ॥ १४ मणियों के जड़े हुए दह सहित १५ श्वेत
रंग के चमर दुखते हैं सो मानों १६ अन्ध्रमा पर दो १७श्वेत बादल नृत्य करते

रास ॥ १२३ ॥

मोरछल २२ *पुरट १ मनि २ दंड ३ मेल, खिल ग्रह ६ जनु १ सनि
सन करत खेल ॥

नरनाह १ बाह दय मनि २ नचात, प्रेक्षकन पंथ १ मेदुर मचात ॥ १२४ ॥
संक्रमिय सज्ज बल दैध बीर, उरभात अस्त्रि सेलन समीर ॥

नागन १ क्रम भ्रमि १ जिम उदाधि नाव, भुव भजत कंप २ तजि अ-
चल भाव ॥ १२५ ॥

फिरि लेत तरारन तुरग २ फाल, भिरि देत दरारन उरग भाल ॥

सिर अंगन डिगन लागि लरज संग, चिर्मट कि चरन चिपि भजत
भंग ॥ १२६ ॥

दुव २ दुव २ भट कुंतन करत दाव, पटु घात दैन १ टारन २ प्रभाव
बहु खगन खगन गनगगनबेधि, समलगन दैन तुपकन निसेधि १ २
संगिन कति भंगिन करत सिद्ध, सद्धत कति तुपकन मन समि
मंडत कति दुद्धर असिन मग्ग, अफ्यासत हेतिन इन उदग्ग ॥ १२८ ॥
प्रस्थित इम संभर धरनिपाल, बिधि क्रम पथ पहुँचत हृद बिचाल
उततैहु लाठ १ प्रभु २ समुख आइ, लौगो सु निलय बल जिनि
बिर्साइ ॥ १२९ ॥

हैं ॥ १२३ ॥ अणियों के मिलाप सहित * सुवर्ण के दंडवाले मोरछल
सो मानों बाकी के ग्रह १ शनैश्चर से खेलते हैं, राजा रामसिंह चाहने
के मणि रूपी घोड़े को नचाता है सो मार्ग में देखनेवालों को अत्यन्त स्नि-
ग्ध करता है ॥ १२४ ॥ १ अल्प सेना सभ्रकर चला २ भालों की अणिय
[नोकों]में पवनको छल्लाता हुआ, हाथियों के चलनेसे समुद्रकी भ्रमि [भमर
में नाव के समान भ्रमि धुजती है ॥ १२५ ॥ ३ पर्वतों के शिखर डिगकर धू-
नेलगे सो मानों चरणों से चिपकर ४ काकड़ी लूटती है ॥ १२६ ॥ तरवारों
आकाश में उडते हुए ५ पक्षियों के समूह को बेधते हैं ॥ १२७ ॥ कितने ही स-
धी यरछियों से ६ लहरों को सिद्ध करते हैं ७ शस्त्रों का अभ्यास करते
॥ १२८ ॥ ८ मकान के द्वार में प्रवेश कराकर ॥ १२९ ॥

निज सबय सुभट कति सूचि नाम, धरनीस सग लिय गम्य धाम
क्रम करि तहँ दुर्जनसल्ल१ कर्ण२, पर अहि३न विजय३ गि।
धर४ सुपर्ण२ ॥ १३० ॥

बलि ईश्वर५ मगल१।दरत्न२।७ वीर, धात्रेयज अतिम इह दुर्धीर।
थितिसत्त७स्वभृत्यन बलजयप्पि, इन्हसत्त७न भृत्यन कर्मअप्पि१३।
दोउ२न कर इक१ इक१ चमर२ दत्त, पुनि दोउ२न इक१ इक१
वार्हस्पत्त ॥

खिल तीन३न ठैपजन१।५ रु चर्म२।६ खग्ग३।७, इन्ह थप्पि अनुग
इम पिठि१ अग्ग२ ॥ १३२ ॥

छवि सारद कादंबिनि छटा१कि, धेनगज कुलीन कुमिन घटा२वि
जनु प्रालेयाचलं सिखर३ जाल, सिंवसैल सानु४ बिसद कि बि-
साल ॥ १३३ ॥

अद्भुत पटआलय ओरओर, ठनि बित्त रहे बनि ठोरठोर ॥
निज निपत लाठ पटकुट निवास, पाडुरं अनेक इमआसपास१३।
सचिवाग्रग मोहन१ सह सुसील, इन तैत्र खान जमियत२ वकीच
ए दुव२गत पुत्रादि लाठ अैन, लाये तिहिं सम्मुह प्रभुहिं लैन१३।
सह प्रीति१ रीति२ नृप नीति३ संग, अक्षय सब नय मय रक्खि
अग ॥

इन दुहु२न लाठ१के सगआइ, बिभु१जुक्त उक्तपटगृहविसाइ१३।
तत चारु दारुमय पीठ तत्य, उपविष्ट अधिप१ सह मुख्य सत्यः
॥ १३० ॥ भायमाई ॥ १३१ ॥ मोरकुल १पखा ४हाल ॥ १३२ ॥ मानों शरदश्रुतु की
मेघमाळा की शोभा किना ५ ऐरावत के कुल के हाथियों की घटा है (ऐरावत
का रंग श्वेत है) ६मानों हिमालय पर्वत पर शिखरों का समूह है ७किष्कंधास
पर्वत पर श्वेत रंग के बड़े शिखर हैं ॥ १३३ ॥ इस प्रकार के अद्भुत ढरे चारों
ओर हैं, ८ श्वेत रंग के ॥ १३४ ॥ १३५ ॥ १३६ ॥ १३७ ॥ ९ काष्ठमय सुंदर सिंहास
कुरसी पर १० राजा बैठा

हितजुत बिधेय व्यवहार होइ, प्रतिहित१ गुने२ गुन१ सुभ२ मा-
ल्य पोइ ॥ १३७ ॥

दलनागै१ अतर२ आदत्त१ दत्त२, रस१ रुचित रक्खि बदि उचित
वत्त२ ॥

नृप आतत सिक्खहिँ करि निकेत, पहुँचान आय लाठहुउपेत१३=
सिबिर मुख खरे हय स्वासँ सर्व, आरुहि तहँ नृप हयमृग१ सु अर्ध॥
लाहि लाठ हार्द फेरिय ईलेस, बलि तिहिँ तजि आरुहि हय विसेस२
————— धाम, नर्तिन सु मदनमतवार२ नाम ॥

तजि ताहि बहुरि आरुहि तृतीय३, हय मनि३ समारूप हय गुन
गरीय ॥ १४० ॥

तीय१रीय२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥

गोपालसिंह २०२।५ निज अनुज गेय, जुरि उभय २ भल्लफेरिय
अजेय ॥

हय फेरि रहिय थित जवमहीप, मनमुदित लाठ गत हयसर्माप१४१
हीप१ मीप२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥

तसँ थप्पलि निजकर खंध ताहि, अक्खिय यह घोरन लाठ आहि
थित रहिय लाठ आदिक स्वथान, हंक्रिय निज डेरन चाहवान१४२
सित १ माघ ११ चुत्थि ४ तिथि बार मूर१, प्रभु इम आये भिलि
प्रमद पूर ॥

अह त्रिक३बिताइ अष्टमि८अनेइ, आयो प्रभु१पटगृह लाठ२एह१४३
अधिपहु सीमालग समुह आइ, लौगो पटआलय भय लसाइ ॥

१ डोरे में पोई हुई इवेत रंग की माछा ॥ १३७ ॥ २ नागरवेल के पान १ लिया
और दिया ॥ १३८ ॥ ४ अपने सब घोड़े ५ राजाने ॥ १३९ ॥ ६ नाम ॥ १४० ॥
॥ १४१ ॥ अपने हाथ से उस घोड़े का कंधा थापकर ॥ १४२ ॥ दराराजा
रामसिंह के डेरे पर ॥ १४३ ॥

सुचि मोहन १ जमियतखान २ सत्य, संजलिपि अनेह कछु मति
समत्य ॥ १४४ ॥

यित रहिय सभांतिहिं सिबिर १ थान, इक १ मत्र पंतालयरपिठिआन
तिहिं प्रविसिय नृप १ सह लाठर तत्य, साहब सिकत्तर ३ अजट ४
सत्य ॥ १४५ ॥

सचिव १ रु वकील २ दुव चलिप संग, इक १ मोहन १ ५ जमियत
खा २ ६ अभग ॥

यित खुरसिन ६ हुव सब ६ मंत्र थान, जपिय नरेस लाठहिं सुजान १ ४६
केसवपट्टनि पुर पूर्वकाल, हमरो हुतो सु विख्यात हाल ॥

दक्खिन अधीस वह किय बजेल, मडिय मगदहन हिंतु मेल ॥ १४७ ॥
सबत श्रुति मुनि गिरि इक १ ८ ७४ सार, किन्नों जु अप्प हमतें
करार ॥

दिनोंहि लखो ताविच सु दग, सो देहु हमहिं अब लेखसंग १ १४८
कोटरिय इदगढ मुख ७ कुचाल, जे पारि सब जालम कपट जाल
प्रतिवार्षिक सूबा दम्म पूर, कोटा सम्मलि व्है देत कूर ॥ १४९ ॥
अब करहु सवन हमरे अधीन, क्यों अप्प राज्य यह अनय कीन २
पुनि रैन हिंतु हम चहत प्रीति, रक्खें वे हम सन द्वेष रीति ॥ १५० ॥

१ कूछ समय घात करके ॥ १४४ ॥ २ सभावाले वहाँ स्थिर रहै सखाह करनेका बेरा
॥ १४५ ॥ १४६ ॥ ४ दलेलसिंहने यह नगर दक्षिणियों को देकर पचन दक्षिणियों से
मेल किया ॥ १४७ ॥ १४८ ॥ ५ इन्द्रगढ आदि कोटाझियां काटी खाख से ७ जा-
लमसिंह काका की जाल में पड़कर ॥ १४९ ॥ आप के राज्य में यह ८ अनीति
क्यों की ६ उदयपुर के (४) महाराणा से हम प्रीति करना चाहते हैं ॥ १५० ॥

(४) पचम राशि के अन्त में गुन्दी के राब सुयमल के हाथ से महाराणा रनसिंह के मारेजाने में जो
कारण गुन्दीका रूपातके अनुसार इस ग्रन्थकर्ता (सूर्यमल) ने लिखा है वही कारण राखाना आबिसिंह के
हाथ से महाराणा अरिसिंह के मारेजाने में उदयपुरवाले बघाते हैं जिसको स्पष्ट रीति से लिखने की प्रतिज्ञा
हमने वही पर की थी परंतु मूलके कारण अरिसिंह के मारेजाने के प्रकरण में नहीं लिखागया सो प्रकरण

कलु द्वेस हेतु हुब पूर्वकाल, हम तिहि न गिनत वें गिनत दान्त ॥
 किन्नों बें चहत सम्मिलन काम, समअपमध्य रहि कगहु गान ॥१५१॥
 तहँ बिटक सुनि नृप वत्त तीन३, क्रमतेँ प्रत्युत्तर३ लाठ कीन ॥
 किय पूर्व ग्वालिपर दग करार, दिव पट्टनिता विच लेखवान ॥१५२॥
 बदलै सु लेख जब तबहि वत्त, तुमरो वकील यह कहहु तन ॥
 कोटरिय तिमहि कोटा कगर, विच पुन्व दई हम लेख बार ॥१५३॥
 सुहु जबहि लेख बदलै सु सील, कारित चिंतन तब व्हें वकील ॥
 तब होत होन संभवप्रतीति, नहि विचहि वचन बदलै सु नीति ॥१५४॥
 अरु रान मिलन जो चहत आप, मन्नत सु हमहु उचिनहि मित्ताप
 पै पुच्छि रान सम्मतहिँ पाइ, जो हार्द सु हम व्हें जनाइ ॥१५५॥
 तदनंतर स्वागत पर्व तत्त, द्विप१ इक१ अखर्व दुव० अवे० दत्त ॥
 मंजुल महर्घे सिरुपाव१।३श्रेय, महि वेद२१ मंरुपतखती प्रमेय१५६

१ अथ हम उनसे मिलाप करना चाहते हैं ॥ १५१ ॥ उस डेरे में राजा की
 तीनों घातें सुनकर ॥ १५२ ॥ १५३ ॥ २ याद करानेवाला ॥ १५४ ॥ १५५ ॥ ३
 स्वागत करने के समय ४ एक बड़ा हाथी ५ बहसुन्ग ॥ १५६ ॥

वशात् यहा लिखा जाता है कि कृष्णगढ़ के महाराजा बहादुरसिंह की बड़ी पुत्रीके साथ रावराजा अजितसिंह
 और छोटी पुत्रीके साथ महाराजा अरिसिंह व्याहे थे, और उदयपुर में निगी यवनों के नयेपेटे से घराकर
 महाराजा अरिसिंह कृष्णगढ़ में रहे वहासे मेवाड़के फरेवी राजा रतनसिंह के पक्षपाते उमराव जो महाराजा
 अरिसिंह से विरुद्ध थे उन्होने रावराजा अजितसिंहके नाम पेना पत्र डिया भेजा कि जिनने कोय में आकर
 महाराजा अजितसिंह ने अरिसिंह को छलवात से मारडाला, बुर्दावाले ने जो कारण महाराजा अरिसिंह
 के मारेजाने में बताया है इस पर करनल टाडने भी अपनी किताब (टाडगाजस्थान) में सक्ता प्रकट की है
 और मेवाड़ के इतिहास (वीरविनोद) में स्पष्ट ही उनारा किया है, जिनमे भी यही निज होता है कि यह
 मेवाड़के उन उमरावों की ही दुष्टता थी कि एक कल्पित अपराध पर अपने स्वार्थको मरवाता और
 इसी कल्पित अपराध पर मारेजाने के कारण उदयपुरवाले बुर्दावाले से कभी मिठना नहीं चाहते और
 बुर्दावाले बारंबार महाराजा से मिलाप करने का उपाय करने रहते हैं जिनमे यह पहला ही प्रयत्न था जो
 लाठसाहिब के द्वारा किया गया, इस पीछे तो अनेक यत्न हुए वे खाली गय किंतु सबसे पीछेका यत्न जो वपुर
 के मुसाहिब आला करनल सर प्रतापसिंह साहिबने इस टीकाकार[वारहठ कृष्णसिंह]के द्वारा किया था वह
 भी निरर्थक हा गया ॥

ढठ इक्क१ जटित मनि मुठ्ठिदार, कमनीय प्रतन बुन्दिय कटार१।४
अभिनव दुस्सह बल तुपक १।५ एक१, ए उक्त उभय२ प्रहरन
प्रवेक ॥ १५७ ॥

(इत्यादि आप्पि लाठहिं इलेस, दिय सिक्ख आइ सीमा प्रदेस ॥
दूजे२अहं नवमी९भाग्य दिष्ट, अप्पहुपहु बिरचन सिक्ख इष्ट१५८
पुनि लाठ पंटालय प्रगुन पत्त, बिधि आनि ठानि हित तानि बत्त
तीन३हिं मिलाप भट सत्त७तेहि, हितपुब्ब अनुगोपन रतरहेहि१५९
इक१ दंती१ इक१ हय१जव अमान, सिरुपाव १।३ इक्क ० सुचि
वर बितान ॥

तखती मिति निधि गुन ३९ सरूप तास, इत्यादि आदि प्रभु भेट
आस ॥ १६० ॥

दीरघ दुंरनालि१ हुक१ नालि२दार, बिनु अनल१ उंपल२ फल१
बल बिथार२ ॥

इम तुपक१ विधा अद्भुत अनेक, कटितत्र तमेंचार जत्र केक १६१
पुनि दूग्धीन१ घटिकार पुरोग, बिस्मय करि वरतुन जोरि जोग ॥
उपदा इत्यादिक पुनि अनेक, पुनि भेट लाठ क्रिय गुन प्रवेक१६२
करि सिक्ख आइ प्रभु पटनिकते, चितिय पुनि पुष्कर गमन चेत
इत उदयनैर१जयनैर२ईस, हुव मिलन उत्कं जिम कुल हदीस१६३
पै कुम्म १ भुते २ सिंघी प्रणोय, गुने ६।१ मक्ति ३।२ रहित जु न
प्रभु गणोय ॥

१सुवर २रात्र ॥१५७॥ ३वृमरेदिन ॥१५८॥ ४छेरे में ५सेषकपन में तत्पर होकर
॥१५९॥६अमाय घेग बाका ॥१६०॥७ बटुक ८ पत्थरकला ० पिस्तोल ॥१६१॥१०
घड़ी आदि ॥ १६२ ॥११छेरी में १२मिलने को चटकठित हुए ॥ १६३ ॥ जयपुर
का राजा कछवाहा जयसिंह १६३०ताराम सिंघी के बशीमृत और १४ सचि
आदि छहों गुण और मद्य आदि तीनों शक्तियों से रहित था इस कारण वह
प्रभु (स्वामी) गिनेजाने योग्य नहीं था ॥ १६४ ॥

इत तदपि भुंत सम्मति अधीन, कछवाहश्चावक न सज्जकीन १६४
 सामज चढाइ दल दैभ सत्थ, प्ररिथत किय कुम्म १६५ रान २ पत्थ
 जहँ हुकमचंद्र १ अंतार २ गजात, नृप पिढि खवासी थिति निभात १६५
 सह दंड १ जटित मनि छत्र २ सीस, मोरछल १ चमर २ बीजित म-
 हीस ॥

इम रान सिबिर जयसिंह आइ, कछु बढि गज हुँलिय क्रम चु-
 काइ ॥ १६६ ॥

प्रतिहार मुख्य तहँ रान पोरि, निज जनन पिल्लि गजपलँ निहोरि ॥
 कछवाह करी करि राइ रुद्र, उतराइ अधिप सीमा अलुद्ध ॥ १६७ ॥
 पटवरन पुटन अंतर पंडुठ, जयहारि १ इम पहुँचत स्वजन जुँठ ॥
 उततै तिम तदवधि समुह आइ, सीसोद राजकुँल क्रम सधाइ १६८
 कर १ तास अप्प कर २ रक्खि तान, जग विदित जनन आव्हय
 जवान २ ॥

बिष्टर इक पुनि किय थिति बिसेस, दाहिन १ जवान १ जँय २ वा
 मर देस ॥ १६९ ॥

इम बैठि सभाऽऽसन कछु अनेह, संलाप आप करि भरि सनेह ॥

१ हाथी पर चढाकर २ अल्प सेना सहित कछवाहे को राजा के पस्त्य (घर)
 को रवाना किया ३ भूताराम का बड़ा भाई ॥ १६५ ॥ ४ पवन होता हुआ
 ५ हाथी को हलकर उतरने की सीमा से क्रम चूककर आगे चढाया ॥ १६६ ॥
 राना के मुख्य द्वार पर ६ द्वारपालने अपने लोगों को ७ महावत को बारं
 बार कहकर कछवाहे के हाथी का मार्ग रोककर ८ उतरने की सीमा नहीं
 जाननेवाले राजा को अथवा राजा को उतरने की सीमा समझाकर हाथी से
 उतारा ॥ १६७ ॥ कनात के पुड़ों के कोटके भीतर अपने लोगों से १० सेवित
 राजा जयसिंह १ प्रविष्ट हुआ ११ अवधि पर्यन्त १२ राउल कुलवाला ॥ १६८ ॥
 जयसिंह के हाथ पर अपना हाथ रखकर, संसार में प्रसिद्ध १३ वंशवाला
 महाराणा जवानसिंह १४ गद्दी पर दाहिना जवानसिंह और बायें ओर जय-
 सिंह बैठे ॥ १६९ ॥

बलि अतर१पान२मुखवनिविधेय, पेटकुट गो कूरम भट प्रमेय१७०
रहिक्रम लहि अवसर तदनु रान, जयसिंह१पटालय२गय जवान॥
कुल रीति सद्धि किय मिय मिताप, दक्खिन१ दिस उपविर्सि

इतहु आप ॥ १७१ ॥

वोल१ अतर२लै१ दै२ तथाहि, स्वसिबिर गय रानहु नय समाहि
भु १ चहि निज मातुल मिलन प्रीति, कल्ल्यान कृष्णगढ नृप
पुनीति ॥ १७२ ॥

बुल्लिय स्व पटालय क्रम विधान, मातुल२ तहँ अनुचित गहिय
मान ॥

माखिय तुम लघुवय १ भागिनेय २, गुरु वृद्ध१ रु मातुल२ हम
गयोय ॥ १७३ ॥

कि तारतम्य कारन तदीय, इम बाढहु गौरव अस्मदीय ॥

उल्लांघि रीति विधि कज्ज एस, न गिन्यो हित ससचिव१ भट २
नरेस ॥ १७४ ॥

नहँ इम इतरेतरं दर्प जोर, अवनीस मिले जाने न ओर ॥

मेच्छननिदेस सब धग्गतमत्य, न मिले ति परस्पर मदअनत्य१७५

इत प्रभुहु तीर्थगुरु गम्य आइ, किय न्हान१ दान२ क्रम मह मचाइ

द्विज चिमनराम१मुख गुरु उदार, कियआढ्यसर्वकुल१बधु२वार१७६

तर१ नारि२ सिसु३न भूपन१ निचोलै२, अखिलेन अर्धास अप्पिय

अमोल ॥

उमराओ के साथ २ यथार्थ ज्ञान लेकर १ कछथाहा अपन डेरे गया ॥ १७० ॥ ४

परस्पर ४ यहा भी महाराना जवानसिंह ही दहिनी ओर बैठे ॥ १७१ ॥ राव

राजा रामसिंह ने अपने ५ मामा कल्याणसिंह से मिलना चाहा ॥ १७२ ॥

अवस्था न छोटे और ६ भानेज हो ॥ १७३ ॥ आप के छोटे बड़े हाने का कारण

देखकर ८ हमारा गौरव (यद्धप्पन) बढावो ॥ १७४ ॥ ६ परस्पर घमंड करके

॥ १७५ ॥ १० जहा जाना था वहा पुष्कर आकर ॥ १७६ ॥ ११ वस्त्र १२ सपको

इम १ हय २ रथ ३ मंडित एक १ एक १, इस धेनु ४ निकर अप्पिय
अनेक ॥ १७७ ॥

रुप्पय सोलहसत १६०० दै रसेस, अजमेर आइ रहि रति एस ॥
बुंदिय दिस परिथत हुव बहोरि, पहिले १ मुकाम पुनि २ जात जेरि १७८,
तिथि तीज ३ असित २ असित ७ रु * तपस्य, बुंदिय विसेस सह मह १ सेवस्य २
पुर १ पुर २ अमात्य १ जुव्वन २ प्रदिष्ट, विलासिय विलास प्रभु
अप्पि इष्ट ॥ १७९ ॥

॥ दोहा ॥

दिनदुल्लह होरिय जनन, सह मह कौतुक सद्धि ॥

सचिव १ सुहद २ भट ३ बुध ४ सभा ५, लिय क्रीडन रस लद्धि १८०

कुसुम १ रु रंग २ गुलाल ३ क्रम, करि वाहिर १ बहु केलि ॥

सह रानिन अंतर २ सभा, होरिय किय कुल हेलि ॥ १८१ ॥

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टम ८ राशौ बुन्दी
न्दरामसिंहचरित्रे महारावराजारामसिंहराजकुमारभीमसिंहजनन १
ग्रन्थकर्तसूर्यमल्लप्रथमविवाहतन्महसूर्यगल्लहरणाग्रामरामसिंहगमन २
योधपुरेशमानसिंहातिरिक्तोदयपुरमहाराणाजवानसिंहादिराजरथान-
भूपाललाडाभिधांगरेजप्रधानाधिकारिसंमिलनाजमेरराजमभागमन
दिये ॥ १७७ ॥ १७८ ॥ * फाल्गुन वदि तीज को १ सभासदों सहित विशेष
उत्सव से बुंदी में गये २ अमात्य रूपी यौवन ने शरीर रूपी पुर में प्रवेश
करके स्वामी को बाँधित फल देकर विलास किये ॥ १७९ ॥ ३ मित्र ४ परिडतों
के साथ सभा में ॥ १८० ॥ ५ कुलके सूर्य ने होली खेली ॥ १८१ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टमराशि में बुंदी के भूपति
रामसिंह के चरित्र में, महारावराजा रामसिंह के राज कुमार भीमसिंह का
जन्म होना १ इस ग्रन्थकर्ता सूर्यमल्ल का प्रथम विवाह और सूर्यमल्ल के ग्राम
हरणा में रावराजा रामसिंह का महमान होना २ अजमेर में ग्राम दरबार
होकर जोधपुर के महाराजा मानसिंह के विना उदयपुर के महाराणा जवान-
सिंह आदि राजपूताना के रईसों का लाठ साहब की मुलाकात को अजमेर

३ अजमेर प्रयागुत्तपुष्करस्नातरामसिंहबुन्दीप्रत्यागमनवर्णनदशमो मयूख ॥ १० ॥

आदितो द्विसप्तत्युत्तगत्रिशततमो मयूख ॥ ३७२ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

समरसिंह १=२।७ नृप चरित सने, लहि आरम १ उदते ॥

रु अजमेर सन राधरे, आगम लग जिहि अतर ॥ १ ॥

इते ग्रय विच किय अनिस, विदित वरन सबध ॥

त्पागि मनोहर १ आदि त्रिक ३, सबहि छद दृढ संध ॥ २ ॥

मनोहरा १ रूप धनच्छरी २, सरूपक ३ हु इन माहि ॥

युति १ छेक १ बहु पे निपत, वरनसगाई ३ नाहि ॥ ३ ॥

सब खिज छदन नियम सह, विहित वरन संबंध ॥

ज्ञाना ३ अजमेर न पुष्कर स्नान करके राधराजा रामसिंहके बुदीमें पीछे आने के वर्णन का दमया १० मयूख समाप्त हुआ ॥ १० ॥ और आदि से तीनसौ पद ३७२ मयूख हुआ ॥

राजा समरसिंहके चरित्र १ में प्रारंभ का २ वृत्तान्त लेकर राधराजा रामसिंहके अजमेर न पीछे बुदी ३ आने पर्यंत ॥ १ ॥ इतने ग्रन्थ में ४ निरंतर ५ [६] वर्ण सम्बन्ध (वरगसगाई) नामक अलंकार रक्खा है जिसमें मनोहर ८ धनच्छरी और रूपक इन तीन छन्दों को छोड़कर बाकी सभी छन्दों में दृढ ७ प्रतिज्ञा में वर्णसम्यक् है और उपरोक्त तीनों छन्दों में भी ६ छेकानुपास तो बहुत है परंतु वर्ण सम्यक् नहीं है ॥ २ ॥ ३ ॥

[६] वर्णसम्बन्ध [वरगसगाई] नामक अलंकार केवल चारणों की कविता में ही है अन्य कवियों की कविता में यह अलंकार नहीं है सा अन्य जातिके कवियोंके प्रयोगसे स्पष्ट सिद्ध है, इस अलंकारका सर्वोत्तम नियम यह है कि जो अक्षर चरण के आदि में आवे वही अक्षर चरण के अंतिम शब्द के आदि में भी चाहिये जिसके उदाहरणमें इसी ग्रंथका यह दोहा है “धामाके सिरकी चटक, खोज कटक रनछेत ॥ शम्भो कर आयास हर, हारखो तदपि न होता ॥” परन्तु इतने बड़े ग्रंथमें कहीं परभी कोई अशुद्ध शब्द नहीं आने देखकर इस नियमका निर्याह करना फटिन था, इस अवस्था में अशुद्ध शब्द के प्रयोग नहीं करने के नियमका पूर्ण रक्षा करके वरगसगाई का जो नियम सूर्यमङ्गले इस प्रथम रखता है यह भी प्रशंसनीय है ॥

इक१ चरन१ गत इक१ अरु, द्वि२ त्रा३दिहु श्रुत संघ ॥४॥
 चरन११ केर अरु१२रु चरन१३, इनके अल्पहु अंस ॥
 तिन्हलौ आदि१ रु अंत२ तक, सुहि संबंध प्रसंस ॥ ५ ॥
 स्मृत न भयो कहूँ तो सुबुध, न गिनहु कठिन वनै न ॥
 मनको धर्महि बिस्मरन, यहहि सनै१ अनै२ ॥ ६ ॥
 कथित प्रयत्न २ प्रबंध करि, अच्छर संगपन आनि ॥
 अब प्रयत्न तजि अक्खियत, ठांठां नियम न ठानि ॥ ७ ॥
 कवि के सविता चंड कवि, अति प्रभु प्रीति अमत्र ॥
 लैन सिक्ख तिन किय अरज, तीरथ सेवन तत्र ॥ ८ ॥
 षट्पात॥सुकवि चंड तिहिँ समय वरस चालीस इक४१वय ॥
 भाखा१ त्रिकें३१ साहित्य२ तुपक बिद्या३रु स्वरोदय४॥
 सकुना५दिक जय सदि अब जु श्रुति सिर६ आलोचिय ॥
 सक सत्तरि७० सन सैतत रमन मृगया२ रस रोचिय ॥
 पहिले समै सु७ दस१० अवद प्रति मृगया७ इम रुचिमें रहिय
 मारे छ६ सिंह१ महि रोके रहि अमित बराह२ न अँसु गहिय ॥९॥

१कही तो एक चरणमें एक ही वरणसगाई है और कहीं एक एक चरण में २ दो
 दो तीन तीन वर्णोंमें संबंध है ॥४॥ कहीं पर ३चरण की चौथाई में और कहीं
 आधेचरणमें है और कहीं कहीं इनसे भी अल्प अंशोंमें है सो इनको आदि से
 लेकर अन तक यह वर्णसंबंध ४ प्रशंसा योग्य है ॥ ५ ॥ ५ जहां कहीं उपरोक्त
 वर्णसंबंध रखना याद नहीं रहा वहां पण्डित लोग ऐसा नहीं जानै कि
 यह कठिन था इससे नहीं बना किंतु नेत्रवाले और बिना नेत्रवाले सबके
 मनका धर्म भूलने का है ॥ ६ ॥ ऊपर कहेहुए ग्रन्थ में प्रयत्न करके ६ वर्ण
 संबंध रक्खा है परन्तु अब इसका प्रयत्न छोड़कर जगह जगह नियम नहीं
 रखकर कहते (बनाते) हैं ॥ ७ ॥ ७ ग्रन्थकर्ता सूर्यमल्ल के ८ पिता चंडीदान
 ९ रावराजा रामसिंह के अत्यन्त प्रीतिपात्र थे ॥ ८ ॥ १० संस्कृत, प्राकृत
 और देशभाषा में ११वेद के मार्ग को शिर पर रखना विचारा १२निरंतर १३
 श्रुति में खुदी हुई ओदियों (खड्डों) में रहकर १४ अगणित सूवर मारे ॥ ९ ॥

सिंह१ न सन कछु खर्व सिंह२ आब्दय तदीय अथ॥

द्वीप१ वंगध२ सङ्गर्त३ सुनहु इतिमुख बाचक सब ॥

एक३ -- त्रिक३ मुख बहुत ञ्दस्व तिनमें अति हिंसक ॥

हनें प्रकट भुव बैठि१ कतिक ठहैरहि छये छक ॥

सूकर१ अदध२ खिल१दध२सब हायन दस१०मृग सहरिय
आरंभि१उज्ज८फगुन१२अवधि२काल पंजलन्हास न करिय॥१०॥

आवा१न करि आखेट सुपहु२ सद्यि रस सेजन ॥

सद्यि अवट१ सिकार सुकवि२ स्वतुपक३ सम्मेलन ॥

इम असीति८० सक अत अतुल१ इकल२कटेल३ किं१टि ॥

सीमा निज सबैसथ मदावल४ निहर५ गये मिटि ॥

अवतैहि दया१ अकुरि हृदय वलि रंगारदिक करि विजय॥

प्रभुके समीप निवसन प्रथित भुव भाविते हुव बीत भय११

अप्यहि प्रमुदित अप्य किन्न कवि अरज जोरि कर ॥

तीरथ सेवन सदि नसत मो कृत अघ निर्भर ॥

देहु सिख प्रभु सद्य स्मरित औहौं करि तीरथ ॥

वनिहै अघ न बहोरि पाइ कुमतिन सु सग पथ ॥

निम्न कुछ छोटे भिन्न मारे उनक ये १ नाम हैं२बीता ३ व्याघ्र४घेरा५बाईल
चाकूला (घेरा विशेष) ५ इत्यादि कहेजाते हैं ६ नीन भेड़िये७प्याली) आदि
हिंसा करनेवाले बहुत छोटे जानवर मारे ७ बड़े सुवर और पाकी के छोटे
सुवर, इस प्रकार के मृगा को दश वर्ष तक मारे ८ कार्तिक से लेकर फागुन
मास पर्यन्त ९ सुवर के मास खाने का क्षय नहीं किया अर्थात् इसका कमी
अंतर नहीं किया (घराघर खाते रहे) ॥१०॥ १०हे राजा रामसिंह जनने पाखों
से और भाजों से और ११ भूमि में खुदी हुई ओदियों में बैठकर बहुत से
अठारह सौ अस्सी के सबद तक १२ बाहोंवाले एकल सुवर १३ अपने ग्राम
की सीमा में १४ स्नेह आदि को जीतकर, आपके (रामसिंह के) समीप रहने
के कारण १५ शुद्ध होकर निर्भय प्रसिद्ध हुए ॥११॥

प्रभु कहिय *बाह१सेवक२प्रमुख कतिक संग लेंहो कहहु
 कवि कहिय बैरहि गृहजन बहुत प्रभु प्रसन्न राखे कगि रहहु॥१२॥
 जंपिय प्रभु दुख२ जनन१ काय सेवन२ सद्धिहिं किम ॥
 बलि न लेत तुम बाह१ राह२अति कष्ट अहो इम॥
 प्रभु१जुत मित्र२न प्रकर जदपि— हठ जोरिय ॥
 दोइ२ जनन गढि तदपि निखिल बिधि संग निहोरिय ॥
 सक अंक अचल गज बिधु१८८९समय मास भद६पाउस३अमा३०
 कविराज कढिय बुन्दि बितैजि, बिधु रु वेद४१स्वक बय रामा१३
 अखिखय पुनि अधिराज प्रीति अंतर पैर उप्पजि ॥
 रथ१ नृजान२हय३रहित तुम न बिहरे मृगपा१ तजि॥
 भारबाह इक१ भोलि१ न्हस्व इक१लेहु किधों हय१२ ॥
 इक१बाह१३चढि अप्प जाहु बिरचत श्रमादि जय ॥
 जामिक स्व संग लहि अठ८जन अभय पुरय बिधि आचरहु
 बालपन१ तैं जु अब२लग बन्यों कलुखँ भस्म वह सब करहु॥१४॥
 स्वामि१हुकम२जिम सुहृद३जन१न तिम प्रसभ२जनायउ ॥
 तजि हठ कवि हिय तदपि भृत्य तीजो३हु न भायउ ॥
 वनत असन इक१ बेर मद्य२ तब लै त्रि३चपक मित ॥
 बलि लहियत चउ४बेर अरक भंगार मय अंचित ॥
 अहिफेन३निसा दिन खिन उभय२हुका४जंत्र छ६जाम दित॥

* सवारी और सेवक आदि ॥ १२ ॥ † फिर तुम सवारी भी नहीं लेते हो
 १ बुंदी को छोड़कर अपनी इकतालीस वर्ष की अवस्था में निकले ॥ १३ ॥ २
 गरम प्रीति उपज कर रावराजा रामसिंह ने कहा ३ बिना शिकार के इन
 नवारियों को छोड़कर कभी नहीं फिरे ४ ऊंट ५ पहरायत ६ पाप को ॥ १४ ॥
 ७ मित्रों ने भी ८ हठ किया, चंडीदान दिन में एक समय भोजन करते थे तब
 ९ मद्य की तीन चुसकियां पीते थे और दिन में चार बार भांग का १० पूज्य
 प्ररक और रात्रि दिन में दो बार ११ अमल (अफीम) लेते और छः पहर हुका

चढि वाह चत्वनपुण्ड्र सुकवि सब उज्जिम्य बुंदियदसहिता१५।

महित१ साहित२ अत्यानुमास ॥ १ ॥

को साहस डम करहिं सूर तजि सब सरीर सुख ॥

चउ४ मादकै तजि चित्त दामि रु क्रमि पयन जहैं दुख ॥

स्वप्नमु१ मन लहि सिक्खर सुदृढलोकन इम सम्मति२ ॥

कढि बुदिय सन सुकवि पत्त हरिना१ हरिनापति ॥

वाधव१ कुटुब२ सब बुल्लिकै कडिय धाम चउ४मुख्य करि ॥

तिन्ह सरनि न्हाइ सन तीरथन एहो अछल अजात अरि१६

रुददान१ अभिधान सुकवि सविता सोदर सुत ॥

मम माता निजनारि२ जुगर्हि इम नैनय२४ विनय जुत ॥

अप्पन जन इत्यादि विरचि हारे सब विन्रति ॥

पै तीजा३ जन पास दास न लयो मनस्विमेति ॥

पैयिदेव१ पुज्जि डट२हिं प्रनमि करि निज ग्राम परिक्रमन३

पिछा१दि अस्थि४ले विधि प्रैयित गम्य सरनि मंडिय मनन१७

लीलावति१ निज लार भृत्य इक१ लिय स्वसद्वै भव ॥

दूजो२ सेवक द्विज सु रामकृष्णा२ अभिषेय रव ॥

सेवक ए२ दुव२ सग लै रु प्रस्थित कविंद लैहु ॥

जित चित मादक जात पयन गतैहु अयन पहु ॥

पीत य सो इनको और सवारी पर बधकर चलने का १ बुद्धी के साथ ही छोड़े ॥ १० ॥ २ चारा नशा को छोड़कर ३ अपने चित्तको दृढ़ देकर, पैदल चलकर इस प्रकार कौन दुःख लेता है ४ हरणा नामक ग्राम के पति हरणा में प्राप्त हुए ५ चारा धाम "जगदीश्वर, पद्मीनाथायण, रामेश्वर और मारका" और इनके मार्ग में आनेवाले तीर्थों में स्नान करके छल रहित और ६ अजात शत्रु होकर आऊंगा ॥ १३ ॥ ७ सूर्यमवल के पिता अर्द्धदान के सगे भाई का पुत्र ८ चर्डीदानकी स्त्री ९ सूर्यमवल और जयलाल ये दोनों पुत्र १० उस चारता की बुद्धिवाले तथा अभिमान की बुद्धिवाले ने ११ पथवारी पूजकर १२ प्रसिद्ध रीति से १३ जाने योग्य मार्ग में गमन किया ॥ १७ ॥ १४ अपने घर का वस्त्र (जानाजाद) १५ शीघ्र, नसावाले चित्त को जीतकर १६ मार्ग में पैदल

परब१ प्रयान पूरब१ कैकुभ करि सेवित ब्रजभूमि१ किय ॥
तिहि ठाम धाम कम तीरथन सुनहु राम२०१।४प्रभु नाम प्रिया१८।
॥ पद्धतिका ॥

गिरिराज१ रू गोकुल अनघ गम्य, मथुरा३ वृन्दावन४ रुचिर रम्य
जमुना५ अघहरनी न्हाइ जत्य, सुरबापी६ न्हाये प्रनति सत्य १९
पुनि सेवित सूकर७ छत्र पास, इह रामघट्ट८ सह कर्णावास९ ॥
जमुना१ गंगा२ जुग२सुविधि सज्ज, करि मुंडन१ मज्जन२ श्राद्ध
३ कज्ज ॥ २० ॥

सेवक जे सूचित स्वामि सत्य, तजि रति सुप्त दुव२ तेहु तत्य ॥
एँकाकी१ व्है इम पथ पिधान, सूकर७सन हंक्रिय अब सुजान२१
पुनि प्राची१अभिमुख रक्खि राग, पहुँचे कवितीरथ पति प्रयाग१०
सित१ असित२ संधि जल कृत सनान१, दिर्तलोम२ न्हाइ३ कृत
श्राद्ध४ दान५ ॥ २२ ॥

विश्वेश्वर पालित पुर बहोरि, किय कासी११जिय तिम कृत्पजोरि
पुनि स्रोत कर्मनासा१२ प्रवाह१, इहिँ आसय न्हाये धरि उछाह२३
सरसिंधु२ भस्म किय दुर्गित २ सर्व, यह१ पुराय २ भस्म करिहों
अखर्व ॥

तो सुगम मुक्तपन लक्ष्यताम, किय तहँ इम मज्जन मनअकाम२४

चलनेवाले प्रभु ने पहिले १ पूर्व दिशा में गमन करके ब्रजभूमि का सेवन
किया ॥ १८ ॥ १९ ॥ २ स्नान करके श्राद्ध किया ॥ २० ॥ साथ जानेवाले दोनों
सेवक जो ऊपर सूचना किये गये हैं उनको रात्रि में वहीं ३ सोतेहुओं को
छोड़कर ४ अकेले ५ गुप्त (छिपे) मार्ग ले ॥ २१ ॥ ६ पूर्व दिशा के सन्मुख प्राति
करके ७ गंगाकी श्वेत धारा और जमुना की श्याम धारा की संधि में स्नान
करके दमुण्डन कराकर ॥ २२ ॥ २३ ॥ यहां की पवित्र भस्मी से सब ८ पाप
भस्म होवेंगे तो मुक्ति पाना सहज है, इस प्रकार मनकी कामना करके तहां
स्नान किया ॥ २४ ॥

काचिषण्डीदानकातीर्थपात्राकरना] अष्टमराशि-एकादशमयूख (४२६९)

बलि न्हाइ सोननद१३में बिसेस, पुनि करि पुन पुना १४ धुनि
प्रवेस ॥

जिम उद्धरि गयपुर १५ पितर जात, प्रभु बिष्णु अंग्रि १६ करि
पिंड पात ॥ २५ ॥

धरि भेट गदाधर१७ चरन धाम, कृत फल्गु१८ प्रेत गिरि१९ बल्गु
काम ॥

गंगो१दधि२ संगम२० पगि प्रवीन, कपिलाश्रम२१ बदन१ न्दान
२ कीन ॥ २६ ॥

जगदीस द्रग२२ चढि पोत जाइ, प्रभु को प्रसाद१बहु बिबिध पाइ
करि उदधि२३ न्दान२ दाना३दि कज्ज, सेपे जगदीश्वर२४ प्रनति
सज्ज ॥ २७ ॥

रहि दक्खिन २५ अभिमुख सिंधु रोध, सक्रमि रामेश्वर १ दिस
सुबोध ॥

संस्तुत चिलका१ नदि सिंधु१ सग२५, इम प्रस्थित इक्खत भ्रम-
न१ भगै२ ॥ २८ ॥

हुन गोन अंग १ क्रमि बंग २ देस, बिसि इम कलिंग ३ जनपद
बिसेस ॥

गोदावरि२६ तटिनी जल गहीर, किय मजन भंजन दुरत भीर२९
कुष्णा २७ धुनि न्हाये सह प्रकार, भस्मीकृत कलिमर्ज असह
भार ॥

धर तहँ पनाइ नरसिंह २८ धाम, निज बपु असक्त जैजि १ किय
प्रनाम२ ॥ ३० ॥

१ नदी में ॥ २० ॥ २६ ॥ २७ ॥ १ न्हाये ३ समुद्र की भूमियाँ और तरगा को
देखकर ॥ २८ ॥ २६ ॥ ४ पापा को भस्म करके ५ अपने अशक्त शरीर से पूजन
करके ॥ ३० ॥

इम भुवकलिंगप्रविसत अनेह, दृढ *जग्ध ज्वर१ रु अतिसार२
देह ॥

मंजिल दु२कोस इक१कोस मान, पथ निठि निठि विरचत प्रयान३१
इकग्राम जाइ बपु गेद असक्त१, गृह द्वार गिरे नत२निबल२नैकत
गृहवासिन जानि सु कहियगच्छ, ए डिगिसकेन तउ बपुअनच्छ३२
मन मन धकि बढि हठ माँहिँ माँहिँ, न डिगत लाखि अक्खिष
गृहन नाँहिँ ॥

हुव तदपि प्रसभे दुखदेनहार, गल१ पय२धरि ईसा छल अगार३३
दृढ हठ उठाइ कमि ग्राम दूर, पलवेल इक तट तजि पाप पूर ॥
आये गृह अरु इत कवि उदास, बलि तहँ निस दस १० मित
बिमति बास ॥ ३४ ॥

संतत दस १० लंघन करि सहाय, बपु चेति जित्ति ज्वर १ रेक२
बाय३ ॥

अति अदय देस ऐसे अतथ्य, पटु तदनु चले भजि सुलभ पथ्य३५
बलि पत्त सह्य २९ कुलगिरि बिसेस, भजि लछमन बाला ३०
तहँ भर्गेस ॥

धर अधर पुरी त्रिपदी३१सुधाम, तहँ इंधन चंदन अरुन ताम ॥३६॥
भव १ हरि २ भट काँची ३२ पर दु २ भंति, पुर सप्त ७ मध्य

ज्वर और दस्तों के रोग से शरीर का अत्यन्त * चर्चण (कुचलना) होकर
॥ ३१ ॥ १ रोग से शरीर अशक्त होकर २ रात्रि में निबल होकर एक घर के
द्वार पर जा गिरे ३ घरवालों ने कहा कि यहांसे चलेजाओ ॥ ३२ ॥ ४ हठ
दुःख देनेवाला हुआ सो गला और पैरों को हलकी हालों पर रखकर
॥ ३३ ॥ इन पूर्ण पापियों ने एक ९ तलाव की तीर पर छोड़कर वे तो घर
आये चंडीदान ने उदास होकर दस दिन तक मूर्छित दशा में वहीं बास
किया ॥ ३४ ॥ ५ निरंतर दस लंघन करके ७ दस्त ॥ ३५ ॥ ६ विष्णु भगवान
६ लाल चंदन का ईंधन होता है ॥ ३६ ॥

कावेर्यहीदानकातीर्यपात्राकरना] अष्टमराशि-एकादशमयुक्त (४१७)

इतपाप पंति ॥

र लघु वेदाचल३३ नामधेय, सुहि पच्छी तीरथ३२नाम श्रेय३७
 रुमि पत्त सलवर३४ कुभकोन, वाहिनि कावेरी३५ भद्रभोन ॥
 रुढि कढितस धारा भिन्नभास, बिसतार त्रि३जोजन जन विलास३८
 श्रीरग छत्र३६ मंदिर१ सुठार, श्रीरंगनाथ३७ जहँ सेव्य सार ॥
 गखान स्याम मूरति१ प्रसिद्ध, अवनोतलसाई३ तल्प इद्ध ॥३९॥
 गकार४ घेर गैव्यूति१ पाय, श्रीरग द्रग५ छिग प्रभु सहाय ॥
 गु विभीषन६सेवक जातुजात, श्रीरंग३७प्रनुतं सबविधि सुहात ४०
 प्रगै समुदतट३८ पुराण अैन, बिनु तैरि तदग पहुँचत बनैन ॥
 तहँ नव नव पत्थर१ घटित जानि, पिकखत इम जगहग छे ॥

प्रमानि ॥ ४१ ॥

रि करि तरि सकर सफल संध, बिकखे रामेश्वर३९ सेतुबंध ॥
 प्रीरामचंद्र लंघत समुद, रुचि कपिल मुठि त्रय३ प्रमित रुद्र ॥४२॥
 प्रीज्योतिर्लिंग नति१ नुति२ समेत, कृत दरसन३ सेवित४ जय
 निकेत ॥

दनंतर ठहै ज्वर असह ताप, पच्छिम प्रयान टागिय बिपाप ॥४३॥
 गहितो जजि पच्छिम ३५ धाम धार ३, बदरीस ४ प्रनमि आगम
 विचार ॥

॥३९॥३८॥१भूमरूपी पड़ी शय्या पर सोने हैं ॥३९॥२ससके कोट का घेरा प्राय
 तो कोशका है शराखम विभीषणका बनाया हुआ है ४विशेष स्तुति योग्य ॥४०॥
 यिना नाथ जिमके आगे नहीं पहुँच सकते १सूर्यके प्रमाणसे दीखते हैं अर्थात्
 सूर्य की चमक से दीखते हैं ॥४१॥ नाथ से तैर कर अपनी प्रतिष्ठा को सफल
 करके सेतुबंध रामेश्वर शिव के दर्शन किये ७ कालियुक्त अग्नि की तीन
 ठूँठ रक्खी थी छतने ही शिवलिंग हैं ॥४२॥ ८ स्तुति सहित नम्रता करके
 ॥४३॥ द्वारका और बदरीनारायण को नमस्कार करके ६ आने का विचार

पै बिचहि मोरि ज्वर इत प्रयान, दृढ हुव निकेत आगमनिदान४४
अग सहय ४० व्है रु दिस सौम्य४१७ आइ, पुनि कृष्णा४१ गोदा
४२ न्हान पाइ ॥

पूर्णा ४३ अरु तापी४४ बपु पखारि, रचि मज्जन रेवा४५ विमल .
वारि ॥ ४५ ॥

रेवा१ कावेरी४६।२ मिलन रम्य, गहिरे न्हद न्हाये सहस गम्य ॥
सेवित मेकलजा पुलिन सीस, श्रीज्योतिर्लिंग ओंकार४७ ईस४६
सब ओर सिंधु पूरब१ प्रवाह, रेवा१ गति केवल बरुन राह३।५ ॥
उल्लंघ्य विंध्य ४८ कुलगिरि अमान, पहुँचे भुवमालाव४९ सिथिल
प्रान ॥ ४७ ॥

बिच द्रंग बिसाला५० जहँ बिसिष्ट, अरु ईस महाकाला५१ ख्य इष्ट
गुरु सप्त७ पुरन पुर जो गणोय, श्रीकृष्ण अध्ययन धाम श्रेय४८
सिमा५२ सैविलिनी पुण्य श्रोत, साकिनि कृत प्रासन पाप पात
तदनंतर प्रवणा ५३ सिंधु ५४ स्यास, तटिनी चर्मशवति ५५ न्हाइ
ताम ॥ ४९ ॥

मिलि सक ख नंद वसु इंदु १८९० मेय, सितर पच्छ जेठ३ नव-
मी९ सु मेय ॥

वसु८दिवस मासनव६के बिचाल, कविआये बुंदिय उष्णा२काल५०
क्रम भुव त्रिसहस्र दिसत३२०० कोस, दुवर धाम परसि भुव हुव
अदोस ॥

इकल१ पदाति२ सूचित अनेह, पुर बुंदिय प्रविसे दुबल देह ॥५१॥
दिनदुल्लह प्रभु सुनि न किय देर, बुल्लिय कवि परिखद आत बेर।
इम ठानिकुसल पृच्छादु२ओर, मोदित ससभ्य प्रभु महिपमोर५२
था ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ १ पश्चिम दिशा में ॥ ४७ ॥ २ उज्जैन ३ श्रीकृष्ण के
पढ़ने के कारण वह धाम श्रेष्ठ है ॥ ४८ ॥ ४ नदी ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥

काविघण्य [दानकायस्थानाकारमृगवादिवाग्यकरना] अष्टमराशि-एकादशमयुक्त (४२७१)

अखिल सु असेस पेक्षति उदंत, हरिनां निज निवसथ पत्त इत ॥
तत्र निज प्रकार तजि चरनचार, आलय गय रयहय अस्ववार५३
पथिदेव१ पूजि गुरुजन१ उपेत, कलु अह१ गंगामह२रहि निकेत
पत्ते दलि बुदिय काविप्रवीर, श्रीस्यामि स१-य१गुरु सुदद३सीर५४
मन१तहु पर स्नेहा मिटाइ, अघ काडक१ वाचक३ दिय उठाइ ॥
विनु सिंह१ छोरि मृगया१ विलास, हित समुक्ति नसा मया२दि
न्हास ॥ ५५ ॥

तह मिथ्या संसन३ काम ४ क्रोध५, मद ६ लोभ ७ मोह ८ सदरि
सुबोध ॥

असद्वत्त९ त्रगूया१० ईगखा११ रु, सठता१२दि उक्ति छम भ्रम
१३ सरारु ॥ ५६ ॥

मायामय१ गोचर२ अखिल मानि, स्वा१भित्त२ अगोचर३ बिभु३
वखानि ॥

इम अण्ण१ अवस्था तय३ अतीत२, पर१ बोध२ तुरीया ४ स्थिति
प्रतीत३ ॥ ५७ ॥

चउ४ वेदसीस वचनन विचारि, जड१ प्राकृत२ चेतन१सुचि२प्रजारि

१ मय मार्ग का घुत्तान्त कहा २ दृग्णा रामक अपने ग्राम में खेद के साथ ॥
पहुँचे ईषदण चलना छोड़कर ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ४मन से भी पराई वस्तु की इच्छा
मिटाकर शरीर म और वचन से होनेवाले पाप उड़ा [छोड़] दिये ५मय आदि
के नसे छोड़दिये ॥ ५५ ॥ ६ झूठ बोलना ७ उस अष्ट ज्ञानी ने छोड़ दिये और
हिंसा करना भी छोड़ दिया ॥ ५६ ॥ ८ शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध, इन इ-
न्द्रियों के विषयों को मायामय (झूठे) जानकर ९ अपने को अगोचर (इन्द्रियों
से नहीं जाना जाय) ऐसे परमेश्वर से अभिन्न (भेद रहित) कह कर इस प्रकार,
१० अपनी तीन अवस्था धिताकर परम ज्ञानवाली ११ चौथी अवस्था म अपनी
स्थिति प्रसिद्ध की ॥ ५७ ॥ चारा वेदों के उपनिषदों के वचनों को विचार
कर प्रकृति संपत्ती जड़ पदार्थों को चैतन्य रूपी १२ अग्निमें जलाकर,

आनंद१ अप्प२ अवयव३ असंग४, अक्खी१ सम२ रोचन३ एक१
रंग४ ॥ ५८ ॥

सुभ१ सत्त्व२ सत्त्व३ अनुभव४ अनंत५, सर्वोत्त१ प्रोत्त२ अज३
सतत१ अंत४ ॥

निष्ठा यह कवि मनि गहि अनिच्छ, दुर्लभ स्वबोध १ मख २ प्राप्त
दिच्छ ॥ ५९ ॥

प्रभुकै उत्तेजन तस प्रकासि, निर्णय जय संशय निचय नासि ॥
बोधन छद् तर्क छेम बुधन वार, देसीय१ विदेसज१ के उदार६०
करि मति तदीय तत्त्वानुकूल, मत और जोर तैत दलि समूल ॥
कविश्रजित बहिःश्रंतर२ करन काम, निज सख द्विज आसानंद२
नाम ॥ ६१ ॥

तिन्ह मत उत्तेजित प्रभु३ तृतीय३, सन्नद्ध बाद रन सुभट स्वीय॥
परिपूर्ण सत्त्व १ चित २ सुख ३ प्रभाव, धी सुद्ध रुद्ध गन करन
धाव ॥ ६२ ॥

१आनंदमय, अत्मरूप, नाश रहित, संग रहित, जय रहित, सम, प्रकाश रूप,
एकरस॥५८॥ शुभ, सत्त्वरूप, सत्य, अनुभवरूप, अनंत, सधमें ओतपोत अर्थात्
सर्वव्यापक, अजन्मा २सदा सत् रूप ऐसे परमात्मा में उस कविशिरोमणि
चंडीदानने इच्छा रहित होकर निष्ठा धारण की और दुर्लभ आत्मज्ञान रूपी
यज्ञ की दीक्षा ली ॥ ५९ ॥ और देश विदेश के बड़े विद्वानों के समुदाय में
छहों शास्त्रों का उपदेश करने में समर्थ ५उस कविचंडीदान ने राजा के मनमें
उस निष्ठा का उत्तेजन करके निर्णयका जय और संशय के ४समूहका नाश
किया॥६०॥ फैले हुए अन्य मतों के बल का मूल सहित नाश करके ६उस राजा
की बुद्धि को उत्तेजित की, और उस कविने बाहिर और भीतर की इंद्रियों
की कामना जीत ली, इनका मित्र आशानंद नामक ब्राह्मण था ॥ ६१ ॥ इन
दोनों के मत से तीसरा राजा रामसिंह उत्तेजित हुआ जो अपने सुभटों
सहित शास्त्रार्थ रूपी रणमें सज्जित रहता था और सच्चिदानंद के प्रभाव से
परिपूर्ण रहता था और उस शुद्ध बुद्धिवाले ने इंद्रियों के समूह की दौड़ को

आस्थाने १ गान २ तिम नटन ३ तूर, परिहास ४ संग्रिध ५ रसद नव-
कर पूर ॥

जय सिद्ध सत्त्व ७ सय ८ मल्ल जुद्ध ९, आखेट १० फाग ११ क्रीडन
अलुद्ध ॥ ६३ ॥

गज १२ वीति १३ न वाहन रीति गैल, फटकारे विहारत सठन फैल
इत्यादि रजोगुणके उफान, भुगै पड़ कौतुक विविध भान ॥ ६४ ॥
पै तत्त्व सत्त्व गुरु कैवि प्रसाद, व्युत्थान १ समाहित २ सदस बाद ॥
इम पत्त राज्य तरु फल अलुद्ध, सब रीति १ प्रीति २ पटु नीति ३
सुद्ध ॥ ६५ ॥

सँधा लो वितरन जस प्रसक्त, उल्लेखि सक्ति रज १ सत्त्व २ अक्त ॥
भडार भूपके भर्म भूरि, परे धात्रेपन सुमह पूरे ॥ ६६ ॥

संधा जिन्ह सचिवन सह विसेस, धन कोस नित्य धरि नुत निसेस
अन्नोदक २ पीछे लहत आप, पटु स्वामिधर्म सेवन प्रताप ॥ ६७ ॥
विसेस १ निसेस २ अत्यानुपास ॥ १ ॥

रक्खिय प्रभु तहँ इम दान रीति, जगके उदार सब अधिप जीति
होके दी ॥ ६२ ॥ १ सभा, गान, वृत्त, शबाय, हंसी, इसहभोजन (गोठ) पूर्ण नव
रस, शत्रु के साधने में जय, बाहुयुद्ध करना, मल्लयुद्ध देखना, शिकार, का-
ग खेलना ॥ ६३ ॥ हाथी घोड़े को रीति पूर्वक चलाया बुद्धि के फैलको फटकार
कर मिटाना, इत्यादिक रजोगुण के उफान रूप जाना प्रकार के कौतुकों को
अनासक्त होकर वह राजा भोगता था ॥ ६४ ॥ परतु गुरु (आशानद और कवि
अर्थोदान की कृपा से ब्रह्मभाष की विद्यमानता से उक्त ७ विरुद्ध कार्य और
समाधि ये दोनों बाद करके समान भाव से रहते थे इस प्रकार सब भांति
की रीतियों में और प्रीति में चतुर नीति से शुद्ध उस राजाने अनासक्त हो
कर राज्य का फल पाया ॥ ६५ ॥ रजोगुण और सतोगुण में ६ आसक्त हो-
कर जस में लगकर दान की प्रतिज्ञा ली और राजा के घायमाई (मंत्री) ने
उत्साह से पूर्ण होकर राजा के भंडार को स्वर्ण से भर दिया ॥ ६६ ॥ स्तुति
योग्य सय धनको खजाने में रक्कड़ पीछे आप अन्न जल छेते हैं और स्वामिधर्म

जँहँ द्विज १ पौरानिक २ बंदि ३ जात दिगविजयी १ सबबुध २ जो
दिपात ॥ ६८ ॥

तिहिँ अयुत १०००० दम्भ अप्पत इलेसँ, पट १ भूखन २ हय ३
गज ४ भू प्रदेस ५ ॥

बादीन १ तदपि जो सब प्रबुद्ध २, लहत सु सहस्र पंचक ५०००
अलुद्ध ॥ ६९ ॥

इक १ देस सूरि १ कल्पक २ अभंग ३, सो लहत सहँस १०००
मुद्रा प्रसंग ॥

बादीन १ तदपि इक १ देस बीर २, सतपंच ५०० लहत मुद्रा सुधीर ७०
सत १०० दम्भ लहत लहि अब्द सुद्धि १, बितरन क्रम संस्कृत
बुध १ न बुद्धि ॥

भाखा छ ६ कोहि जिनको न भान १, प्राकृत १ मुख पंच ५ हु हत
प्रमान ॥ ७१ ॥

केवल नृगिर्षा कवि जे कहात, जानै न प्रकृत भव अब्दजात २ ॥

पै जिन्ह कवित्व हिय जाइ पैठि ३, विकसाइ देन मन सबन वैठि ७२

जे काव्य केर सब १० अंग जानै, औचत ओता मन रीकि आनि

सत १० संख्य तदर्थहुँ दम्भ देग, सिरुपाव १ तुरंगम २ संग श्रेय ७३

के सेवन में चतुर ॥ ६७ ॥ ब्राह्मण १ चारण २ आठ जो विविजयी ३ और सर्व

देशी होवे ॥ ६८ ॥ उस को ४ राजा दस हजार रुपये देता है ५ शास्त्रार्थ कर

नेवाला नहीं होने पर भी सब शास्त्रों का जाननेवाला होवे वह गिलो भी

होने पर भी पांच हजार रुपये पाता है ॥ ६९ ॥ ६ जो एकदेशी (एक ही शास्त्र

को जाननेवाला पंडित होवे और उत्तम कल्पना करनेवाला, दूसरों से नहीं

जीतने में आवै वह एक हजार रुपये लेता है और एक देशी पंडित शास्त्रार्थ

नहीं करनेवाला) होने पर भी उस शास्त्रमें वीर कुशल होवे उसको पांच सौ

रुपये मिलते हैं ॥ ७० ॥ बुंदी में सालियाना उदान के क्रम से सौ रुपये मिलते

हैं प्राकृत आदि पांच भाषा में भी प्रमाण रहित है ॥ ७१ ॥ ९ केवल देश

भाषा का कवि कहलाता है ॥ ७२ ॥ १० उसको भी सौ रुपये मिलते हैं ॥ ७३ ॥

रामसिंहका पद्धतोंको दान देना] अष्टमराशि-एकादशमयूक (४७०)

सामान्य कविश् रु बजित विवाद२, सस्कृत ३ कवि लहत सु सत
१०० प्रसाद ॥

अैसे भासाकवि१मति अनिद्ध२, पचास५० दम्भ लहत सु प्रसिद्ध७४
इत्यादिनतें गुन घटि१अनेक, बितरन क्रम बहुविध तिन्ह विवेक॥
पञ्चीस२५ आदि१ करि अत२ पच५, रोहयो न चालिस१न बट
हु रंच ॥ ७५ ॥

हापन इक१ टारि१ रु लैनहार, पुनि लहत आइ सुहि सुहि प्रकार
इम खट६अतु बारह१२मासअत, अहति१कर मडिप जस२उदत७६
दुव २००० दुव २००० सहस्र कोसन विदूर, पुर लगगे आवन
बुधन पूर ॥

उज्ज्वल रुचि बुदिय तिहिअनेह, गिनिपे कि पुरदर१धनद२गेह७७
तन मान सबन मन धन१ तुलत, अकुरि मह१ सब अह २ सादि
१ अत२ ॥

अैसे उदारपन करि इलेस, प्रतप्यो परिपालत देसदेस ॥ ७८ ॥

आयुध सब साधक बहु उपाय, मृगयादि कुतूहल रमत राय ॥
आनन कलिंदिका निलय इह, सब ठाम तदपि अद्वैत सिद्ध॥७९॥
चोगान तुरग बाजी प्रचार, खेलैं बिदग्ध बिजई खिल्हार ॥
हाठि कुसल सिकारिन ठिगनहार, किरि१ केहारि२ अैसे छल
प्रकार ॥ ८० ॥

छलिकैं तिन्ह बेधत सर समूह, दै डाक थकावत गज दुरुह ॥
अवगोध जनन क्रीडन अनेक, विलसत विदग्ध इम एक१एक१८१

१ घड़ी बुद्धिवाला नहीं हाने पर भी ॥ ७४ ॥ २ दान क क्रम स ॥ ७५ ॥ ३ दान
का मरु रचा ॥ ७६ ॥ ४ इन्द्र का अथवा कुबेर का घर ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ५ यमुना
नदी यमराजकी पहिन है इस कारण उस का और यमराज का घर एक ही है
सो उपरोक्त कर्मों में तो रामसिंह का मुख यमुना का घर है तोभी सय जगत्
अद्वैत मत ही सिद्ध है ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ६ क्रोध दिखानेवाले छोटे घाय लगाकर ॥ ८१ ॥

व्युत्थान बनत ऐसे अनेह, अन्यत्र अधिप चित बोध एह ॥
 कवि चंड१ रु आसानंद२केर, सफली हुव सिच्छा स्ववय बेरा८२।
 पौरानिक१ कै हुव सुख प्रबोध, रहिगो द्विज२कै तस तदपि रोध ॥
 कवि चंडतैहु हय अगग हंकि, अद्वय२ मय अंतहकरन अंकि॥८३॥
 कवि१ सूरि२ सुभट३ सचिव४न कलाप, अखिलन रिभात मन

गुनन आप ॥

जिहिं गुन प्रसार जन विदित जोहि, स्वामीकहँ समुभत पठित
 सोहि ॥ ८४ ॥

प्रभु मँनु बसोकरन१ मनु प्रभाव, विद्या कि मोहिनी२ मनु बढाव॥
 करि नैन१बैन२करि ध्रुव धनेस१, जन जन मन पैठो जनु जनेस८५
 पिक्खन१संतापन२के प्रसाद, बिनु बेतँन सेवन प्रकटि वाद॥
 इम सबन चित कर गहि इलेस, देखत बलि हारत द्रंग१देस२८६
 इम अब्द पंद्रहम१५ वय प्रबेस, बिलासिय बिलास बैभव बिसेस॥
 हायन बिसति२०तम लगवहार, सुख राजस लुट्टिय नीतिसार८७
 अब सक नव गज बसु ससि १८८९ अनेह, सुरभि१ रु निदाघ २
 बिलासिय सनेह ॥

क्रम निज तजि सावन१ भद २ काल, बदल्यो ऋतु पाउस ३ वह
 विचाल ॥ ८८ ॥

बुद्धिय जल ढिग ढिग त्रि३चउ४बेर, पै सो न समय घन प्रंचुग्घेर
 ऐसे समय मे तो १ विरोधाचरण बनता है, याकी अन्य स्थानों में २ राजा के
 चित्त में एक ज्ञान ही रहता है ॥ ८२ ॥ ३ चारण चंडीदान के सुखकारी ज्ञान
 होगया तो भी आशानन्द ब्राह्मण के उस ज्ञानकी रोक रहगई अर्थात् आशा
 नन्द को ज्ञान प्राप्त नहीं हुआ ४ अद्वैत मत से अपने अंतःकरण को चिन्ह युक्त
 करके ॥ ८३ ॥ ५ मानों मनुके प्रभाव से मन बश करके, मानों कुबेर के समान
 ६ राजा निश्चय ही मनुष्य मनुष्य के मनमें घुसा ॥ ८५ ॥ देखने और बोलनेकी
 प्रसन्नता से ७ हठ करके बिना ही तनखा सेवा करते हैं ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ वस-
 न्त और ग्रीष्म ॥ ८८ ॥ ९ परंतु मेघ के अत्यन्त घेर से वर्षा नहीं हुई

सम्बत् २८९ के दुर्भिक्ष का वर्णन | अष्टमराशि एकादशमयुग (४२५९)

घर कर दहि दिस दिस सस्य १ खेत, अग किंसलय २ बीरुध ३
तून ४ उपेत ॥ ८९ ॥

अस्त्रपें अस्त्र ४।२ रु पच्छिम ५।३ दुश्घोर, राचि पोन गोन किय मोन
रोर ॥

पपीह १ प्यास खिन खिन बढात, घाटि लासँ मयूरन आस घात ९०
लालित्य बेज १ वन २ गिरिन ३ लोप, किय मखर मंखर किरन
कोपि ॥

हाकार मचिग गत हर्स ७ हु होत, श्रोत ७ न चंडन गय तुष्टि श्रोत ९१
गडि भेक १ कमठ २ मख ३ पक गर्त, व्यसु सम बिचेष्ट वर्तन
बिबर्त ॥

तउ तजन नक्र ४ गन तरफरात, जल प्रति पल छिति तल १ बिसेत
जात ॥ ९२ ॥

पवमान २ भान ३ इत विरचि पौन, निपरात करत इत छबि निपान
जलजात १ रु कौरव २ कुमुद ३ जाल, सैवल ४ नल ५ सजुत इत
बिहाल ॥ ९३ ॥

चिपान १ निपान २ अंत्यानुपास ॥ १ ॥

जनेपद मरु १ जंगल २ सिंधु ३ जस्थ, श्रमि मूरसेन ४ हरियान ५ सत्य
१ गरमा से दिशा दिशा में २ खेती के खेत ३ कोंपलें ४ मूमि पर फैलनेवाली छाता
और तृणों सहित सब सूख गये ॥ ८९ ॥ ५ दक्षिण कोण का और परिचय दि
शा का इन दोनों ओर का पवन चलकर सब भवन भयंकर कर दिये ६ क्षण
क्षण में पपीहे की प्यास बढ़कर मयूरों की आशा का माश होकर उनका ७
नृत्य घट गया ॥ ९० ॥ ८ आश्विन मास के जाते ही हाहाकार होगया ॥ ९१ ॥
९ मरे हुएों के समान बेछा रहित होगये १० मूमि के नीचे घुसे जाते हैं ॥ ९२ ॥
पवन और सूर्य की किरणें ११ पान करके समीप लेकर प्रपा (प्याव, पो) आदि
छोटे जलाशयों को शोभा रहित करते हैं १२ कमल, रात्रियिकासी कमल
(गुड़हल तथा गडूख) स्वेष कमल विशेषों के समूह, जलनीली (कुमोदनी) और
कमलिनी सहित उस बड़ी आग्नि में जल गये ॥ ९३ ॥ १३ देश

ढुंढार६ सेखवट्टी७ कुढंग, मेवार८ मुलक सु पहार९ संग ॥९४॥
 इत्यादि मनुज *उज्जट अगार, सकुटुंब कढे नत भूख भार ॥
 इन्ह सूचित देसन अंतराल, हड्डोतिय१० भुव हुव बिकल हाल९५
 कंकाल करंकन निचित कोट, इम पसुन अस्थि प्रतिगाम ओट ॥
 तरु पत्र असन कबलग कगाइ, पय नाम मिट्यो रव क्षाम पाइ९६
 कनिका१दि अठ ८ जल घोरि केक, बहिकात सिसुन जन पय
 विवेक ॥

जिम मृत तंपादिक ग्रामजन्य१, बचि तिमहिँ रहे कहूँ बिरलवन्य९७
 पसु तन१बुसा२दि प्रमितहु न पाइ, खिल ग्राम्य जियत कहूँ कीट
 खाइ ॥

नाकहिँ जिम नाकुन कच्छ रक्खि, करखत छिति कीटन रवास
 सक्खि ॥ ९८ ॥

इम चट्टि पिपीलिक १ दीम आदि, जीवत कहूँ गो १ महिपी २
 अजा३दि ॥

तिन्हँ थनन अँचि जन अधम ओहि, दित करुन लेत पय अरुन
 दोहि ॥ ९९ ॥

दधि तस बिलोरि तजि तंक्र दूर, कुभृतहु वह बेचन गहत कूर ॥

॥ ९४ ॥ * उज्जट घर ॥ ९५ ॥ १ हड्डियों और मस्तकों के समूह के कोट हो
 गये २ पशुओं की दुर्बलता के कारण दूध के नाम का शब्द ही मिटगया
 ॥ ९६ ॥ पाना में ३ गेहूँ का आटा घोलकर ४ जैसे वनके पशुओं में गऊ आदि
 कोई ही बचे तैसे ग्राम के लोग भी बिरले ही बचे ॥ ९७ ॥ पशुओं ने तृण
 और ५ तुष आदि का ज्ञान भी नहीं पाया अर्थात् इनको जान ही नहीं सके
 और ग्रामों में ६ कीड़े खाकर कोई ही बाकी जीवित रहे ७ जैसे रीछ अपनी
 नासिका को उदेही (दीमक) के ऊपर रखकर खँचता है तैसे पशु श्वास से
 भूमि के कीड़े खँचते थे ॥ ९८ ॥ ८ कीड़ियाँ और दीमक आदि को चाटकर
 ९ करुणा हीन मनुष्य लाल रंग का दूध दोह लेते थे ॥ ९९ ॥ उस दही को
 बिलोर १० छाछ को दूर रखकर छोटा वृत्ति करनेवाले उसको बेचते थे

रामसिंहकादुर्भिक्षमेप्रजाकापावनकरना] अष्टमराशि-एकादशमयूक (४२८१)

निज सिसुन बेचि कहूँ अन्न आनि, खल बहु असु धारत दुरित
खानि ॥ १०० ॥

ऐसो प्रवृत्त सकट अनेह, संवधिन ठहरयो नन सनेह ॥
दायिता१ मारी२ पति१ इहि दु२ काल, हाहारव बाढिय असहहाल १०१
अति व्याकुल तजि इम देस उक्त, आये हहोतिष मान मुक्त ॥
प्रभु बुद्धि सचिव धात्रेय पास, करुनापर सासन किय प्रकास १०२
अंवार निचित अप्पन अगार, वरखनतैं चित सब धान्य बार ॥
उनके सबरूपय करनकाल, बसुमतिरस बिलसन जसबिसाल १०३
जन रंक१ कुटुबिय२ दुस्य जानि, आसन चहि ओहैं आनि पानि
अपहुतिन्ह भोजन अर्घ्यउज्झि, सबभतिविसासहु पुण्यसुज्झि १०४
वसु आढ्य१ कुटुबी२ जे विपन्न३, उचितार्घ्य लै रुतिन्ह देहु अन्न ॥
नव कोस निकर भूत दम्भ १ निष्कर२, व्है अधिक गोप गृह
जिम हविष्क ॥ १०५ ॥

सचिवहु निवेदि आकून सोहि, अन्नालय खुल्लिय विविध ओहि ॥
प्रतिदेस पहुँचि तस जस प्रसार, हुत आये जे खिल तेहु द्वार १०६
इम अल्प अर्घ्य किय कल्प अन्न, वसु दुर्विध निबहे जिम विपन्न ॥
रहि मुल्लय आढ्य देसन परत्र, अष्टमप्लव ता सन लहिय अन्न १०७
इहि मोल तोल जिम कोल ऊखैं, भजि भाजि जन आये मनत भूख
वेचे जे अर्भक^३ जननि१ वप्प२, उनको छुगइ वसु अत्यि अप्प १०८
१ ने पापा की क्षान जीते थे ॥ १०० ॥ २ स्त्री को ॥ १०१ ॥ १०२ ॥ अपने घर म
घरों में सग्य किया हुआ धान्य के समूह का ३ दर पूरित है ४ जन्म पर
॥ १०३ ॥ ५ वरिष्ठी १ कर्मित छोड़कर ॥ १०४ ॥ ७ धनवान् कुटुम्बी व्याकुल
हैं उनको ८ उचित मोल लेकर, नवीन खजाने में रुपये और सुहरों का समूह
भरा है जिससे, श्रीकृष्ण की सम्मति से ब्रज के गोपों के घर में १ होम हुआ
या उससे भी अधिक होय ॥ १०५ ॥ १० अभिप्राय ॥ १०६ ॥ १०७ ॥ ११ जैसे
गर्जना पर सुवर आवै तैसे १२ पावकों को ॥ १०८ ॥

जानें जिम जाके बर्णा१ जाति२, ते भ्रष्ट होन दिय न सिव ताति ॥
 कंटक दुकाल इम अन्नसत्र, अधिपति बिस्तारिय जस अमत्र१०९
 प्रतिदिन चित सहसन दम्भ पूर, दुख भूख जनन हुव जनन दूर ॥
 जिन सिसुन लये कुल १ ग्राम २ जानि, तिनके संबंधिनहू ति
 तानि ॥ ११० ॥

बुल्लि१ रु मिलाइ३ परिचय त्रिवेक, सह बास निबाहे इम अनेक ॥
 बिप्रा१दि बर्णा१४ आश्रम२४ विधान, सब व्रत्य न किय जिहिं
 जो समान ॥ १११ ॥

जिनके बसुधा१ बसु२ निज निबाह, ते पहुँचे सु समय घरन ताह
 जिन्ह रंकन रंचन वृत्ति जोग, प्रभु सीस बसे ते सुख पुरोगा११२
 लकखन जमाइ इम पुण्य १ पारि, बलि कोस दम्भ २ लकखन
 विथारि ॥

इम यह दुकाल अंकिय १ अधीस, सब दीप जनन जस २ बहिय
 सीस ॥ ११३ ॥

निज जनन त्रि ३ हायन लाखि निबाह, लिय खिल करि दुर्लभ
 पुण्य लाह ॥

जस दूत बुलाये सुकवि जूह, आनायक कोटिन कोटि ऊह११४
 मूढहु तदीय कुल बिरचि मान, जाचक सब पोखे तिम सुजान ॥
 दलि दलि दयालु दुस्सह दुकाल, किय नृप सुभांड१८७१४ पहिलें
 सुकाल ॥ ११५ ॥

दबवत तिहिं धन धन१ अन्न२ दान, औसो सुकाल किय चाहवान
 इहिं जस उफान दिस१ बिदिस२ अैन, हतरोचि१ न्हीणा २ नत ३

१ अन्न का यज्ञ ॥ १०६ ॥ ११० ॥ २ शूद्र नहीं किये ॥ १११ ॥ ११२ ॥ ११३ ॥
 ३ यश रूपी जाल में ॥ ११४ ॥ ११५ ॥ ४ कान्ति रहित और लज्जित होकर
 राजाओं ने नेत्र नीचे किये

नृपन नैन ॥ ११६ ॥

॥ दोहा ॥

औसो असह दुकाल यह, दिनदुल्लह कुल दीप ॥

सु दुख दन्धि पोखे सकल, दहदहन हेलि महीप ॥११७॥

जनपद हुव उज्जट जिते, बचि दह्योतिय बास ॥

स्वस्व बसाये ग्राम १ गृह २, पुनि तिन स्वर्ध प्रकास ॥११८॥

इति श्री वशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणोऽष्टम ८ राशौ बुन्दी

न्दरामसिंहचरित्रे आगामिग्रन्थगुम्फनवर्णसंबन्धाख्यालकारपरित्या

गसूचन १ ग्रन्थकर्तापितृवरहीदानभृगयामद्यपानादिदुष्टान्तरणसूच-

नपदातितीर्थयात्राविधानाखिलपापमुक्तवेदान्तज्ञानसमाधिगमनप्र-

तिवर्षनियतीकृतरामसिंहदानविवेचन ३ एकोननवत्युत्तराष्टदशशत

तमसंवत्सरदुर्भिक्षरामसिंहोदारत्ववर्णनमेकादशो मयूख ॥ ११ ॥

आदितस्त्रिसप्तत्युत्तरत्रिशततमो मयूख ॥ ३७३ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

अन्वय दहदहन इदं ह्यम, देसन दलित दुकाल ॥

निबहं सब आपन्न नर, जे सीमागत जाल ॥ १ ॥

॥११७॥११७॥ १ दश में ऊजड़ होगये थे २ अपनी ओर से सूख्य बेकर ॥११८॥

श्रीवशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टमराशि में बुन्दी के

रामसिंह के चरित्र में आगे की ग्रन्थ रचना में वर्ष सम्बन्ध नामक

के छोड़न की सूचना करना १ ग्रन्थकर्ता सूर्यमल्ल के पिता चंड़ीदान के

कार और मद्यपानादि दुष्टाचरणों की सूचना करने के पीछे पैदल तीर्थ

सय पापों से मुक्त होकर वेदान्त के ज्ञान में प्राप्त होने का कथन २

वर्ष में महाराजराजा रामसिंह के दाम नियत करने का विवेचन ३

सौ निवासी के दुर्भिक्ष में रामसिंह की उदारता के वर्णन का ग्यारहवाँ

मयूख समाप्त हुआ ॥११॥ और आदि से तीनसौ तिहत्तर ३७३ मयूख हुए ॥

३ हाडाओं के वश के राजा ने ४ आपदा प्राप्त हुए मनुष्यों को निबाहे ॥ १ ॥

भूपति विक्रम^१ भोज^२की, पद^३ति लग्गि पवित्र ॥
दहि दुभिच्छ^४ महि मंडियो, चाहवान जस चित्र ॥ २ ॥

॥ पट्टपात ॥

नभ नव वसु ससि १८९० नियत सुखद लग्गत सुकाल सक ५
बारिद अभिमत बरसि दरसि आसार महोदक ॥
औषधि गन अन्नादि विविध निपजे सोमा बढि ॥
कर्षुक कुल मन मुदित उदित कृषि ताव चाव चढि ॥
बहु बहुरि देस उज्जट बसे प्रान बारि बुंदीस पर ॥
निज सत्रु^१आदि खंडल नृपहु पढन लग्गे नत नुति प्रसर ॥ ३ ॥
बुंदी इक^१ तिहिं बेर सहर बुंदी पत्तो सजि ॥
सावन^५ लग्गत समय भ्रमत अतिसीम दर्प भजि ॥
बाम मग्ग सठ बहत रहल रत पंच^५मकारन ॥
तुलसी^१ मालहिं तराजि रुद्र अक्षर^२हिं करि धारन ॥
नैकन छिपाइ बरतैं निलज स्वपचादिक सब कृत असन ॥ ४ ॥
स्वपचीहु गम्य जाके सुरत दुग्गन गज दरसन दसन ॥ ४ ॥
चंडबाद कवि चंड इहां प्रभुकै अनुकंपित ॥
तिनप्रति मुरि धाल्यै सचिव मोहन अनरूपो इत ॥
भनि सहाय वह भट्ट बुल्लि बुंदिय रुचि रक्खिय ॥

१ मार्ग २ दुभिच्छ को मिटाकर ॥ २ ॥ ३ महात्मा मेघ न अभीष्ट (चांछायोग्य) वर्षा करके मेघधारा दिखाई ४ तहां खेती का उत्साह बढ़ा ५ नम्र होकर स्तुति का विस्तार पढने लगे ॥ ३ ॥ उस समय एक ६ भाट ७ रुद्राक्ष पहनकर ८ भंगी आदि का कियाहुआ भोजन खाता था ९ जिसके मैथुन करने में भंगी भी जाने योग्य थे १० हाथी के दांतों के खान उसके पाप छिपे नहीं थे (हाथी के दांत किसी प्रकार छिपते नहीं हैं) ॥ ४ ॥ ११ रावराजा रामसिंह की कृपा में भयकर शास्त्रार्थ करनेवाले, अथवा शास्त्रार्थ करने में भयंकर इस ग्रन्थकर्ता सूर्यमल्ल के पिता चंडोदान थे जिनसे बुंदी के सचिव १२ मोहनराम धायभाई ने क्रोध किया

अप्प सचिव अवलब भयो प्रभुकवि *परपक्खिय ॥

करि निज सु भट्ट दै छन्न कछु अधिपति प्रति किन्नीअरज
आयु प्रवीन कवि भट्ट इक गुनकी जो कहहिं गरज ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

सुकवि चंड आदिक सदा, प्रचुर रहैं प्रभु पास ॥

तिन सबसों यह अधिकतम, बदी स्वगुन बिलास ॥ ६ ॥

॥ षट्पात् ॥

भूपहिं मोहन भनिय भट्ट यह अद्वितीय भव ॥

रामचंद्र अभिधान बाद वादन विजयी हुव ॥

तिन दिवसन कवि तात स्वीय प्रभुको लहि सासन ॥

किय भारत उद्योगपर्व नरभाखा भासन ॥

कावि तथ्य एह संधा करिय सुर १ नर २ बानी सब्दमय ॥

इम अर्थ १ विपुल २ अच्छर ३ अक्षर ४ जुहि आनै सुहि लौ विजय
सुरवानिय १ भव सब्द विदित जे पुनि नर बानिय २ ॥

इह द्विविधहि उद्योगपर्व अंतर सब आनिय ॥

पंच ५ अनुष्टुप प्रमित अर्थ अचिय इक १ अंतर ॥

संधा लिय तहँ सुकवि दिपत जस पूरि दिगतर ॥

बहु १ अर्थ २ अक्षर ३ अच्छर ४ विहित जो बिरचै कहँ अन्य जन ॥

*आपके कावि वर्णीदानका शत्रु हुआ, उस भाटको अपना करके मोहनराम ने
राघराजा रामसिंह से अरज की ॥५॥ वर्णीदान आवि भेट कावि आपके पास ?
पहुत रहते हैं ॥६॥ मोहन नामक घायमाईमे राजासे कहा १ शास्त्रार्थ करनेवालों
से १ सूर्यमल्लके पिताने राघराजा रामसिंहको आज्ञाकेकर, उसमें कावि वर्णीदान
ने यह प्रतिज्ञा की कि ४ संस्कृत और देश भाषाके शब्दोंमें इसप्रकार थोड़ा अक्षरों
में बहुत अर्थ लावे वही मुझसे विजय पा सकता है ॥७॥ १ संस्कृतसे उत्पन्न
हुए १ महाभारत उद्योग पर्व के पांच पांथ अनुष्टुप श्लोकों का अर्थ लिखकर
एक एक छंद में लाये वहाँ वर्णीदानने यह प्रतिज्ञा ली उचित अथवा राघर

तो खुल्लि पाय टुडर^१तजौं ध्रुवन बजौं अब काव्यधन ॥८॥
 करि संधा कवि चंड धीर लंगर पय धारिय ॥
 कहिय जोहि इम करहु कवि सु जय^२ जसर^३अधिकारिय ॥
 अर्जुन शृंखल अगग द्विजन भोजन हितदैहैं ॥
 जयपट्टहु लिखि जाहि सोपि गुरु गिनि गुन गैहैं ॥
 यह नियम धारि किय ग्रंथ वह नाम सारसागर नियत ॥
 निर्भयनिर्भोग प्रभुको स्वसिर जु किय सुजनमुख मुखजियत^४
 बंदी इक^५ ब्रजलाल^६ कृष्णधात्रेय आढर्य^७ किय ॥
 अधिराजहिं करि अरज ग्राम^८ गौरवर^९ गज^{१०} अप्पिय ॥
 सचिव कृष्ण तनु तजत अगग सहि साचि खगग उर ॥
 सुत तस मोहन सचिव धरयो अधिकार राज्य धुर ॥
 प्रभुकेर कृपाभाजन परम जानें कवि चंडादि जन ॥
 तिन्ह मानहान मिटवान तिम मोरन लग्गो स्वामि मन^{११}
 तब अक्खिय धात्रेय अरज इम प्रभुहि उपढरैं ॥
 चित्त बढत कवि चंड लहत जयमय पय लंगर ॥
 कविअनेक भुवचक्र परत पैर^{१२} जुरत परिच्छा ॥
 संसद^{१३} बानिय समर सकल उघरैं धृत सिच्छा ॥
 भारती जुद्ध रस स्वाद भर एहु लेहु आनंद इन ॥

१ चरण में प्रतिज्ञा का लंगर है जिसको खोलकर इस का पहनना छोड़
 दूंगा और २ काव्य ही है धन जिसके ऐसा कवि फिर निश्चय ही नहीं
 बजुंगा ॥ ८ ॥ ३ श्वेत रंग (चांदी) की सांकलियां ४ विजयपत्र ५ स्वासी
 की आज्ञा से निर्भय होकर ॥ ६ ॥ ६ धनवान् किया, कृष्णराम धायभाई ने
 छाती में ७ तिरछी तरवार सहकर ८ शरीर छोड़ा तब ९ चंडीदान आदि
 मनुष्यों को ॥ १० ॥ १० एकान्त में अरज की ११ चंडीदान आश्चर्य योग्य बढता
 है कि पैर में विजयी होने का लंगर पहनता है १२ शत्रु आकर जुड़े जब परी
 चा होती है १३ सभा में वचन के युद्ध में १४ सरस्वती के युद्ध के रस का स्वाद

कवि चह रचत सधा कुसल करिये बिभव बिन्नास किन ११
प्रभु अक्खिय जहँ प्रीति सो न भेटहु कूटाश्रय ॥

सुद्धदभाव जहँ सुनत तहँ न छल लेस कहन नय ॥

पुनि असहन यह पाप महत बिस्वासघात मय ॥

उज्झहु स्वमति उपाय एह बिधि बलिंत टारि रय ॥

तत्पर्य १ रु अतत्पर्य २ न दुरै तदपि जिहिँ जैसो कहिवेत जग ॥

दुख सहत चिंति करिकैँ हुरव मिलित दोह यह घोरमग १२

यातै कपट उपाय कधि न कोऊ आकारहु ॥

बहु आवत बिनु जतन बिबिध पावत बसु वारहु ॥

जो सभव वनिजाइ बिक्खिलैहँ बानी बल ॥

पर दुख चितन पाप त्वरित लैजाइ रसातल ॥

सुनि यह निदेस मोहन सचिव बिन्नति किय सब स्वाभिबस

प्रभुके प्रसाद जो धर्मपथ सु सब गम्य रहिहँ सरस ॥ १३ ॥

आवन लागि तिन अहन प्रचुर भूसुर १ पौराणिक २ ॥

भोगध ३ बदिप ४ सुमति बहुत बिरचहिँ कवि बानिक ॥

पुण्य कथित क्रम पाइ घरन जावत लौ धन धन ॥

तिहिँ अनेहँ धात्रेय पाष मेरिय कपटीपन ॥

ब्रजलाल भट्ट वह वुल्लिकैँ कुटिल उँपण्हर मत्र किय ॥

वुन्दिय अधीन बदिन बहुरि लौ बिच सम्मति सबन लिय ॥ १४ ॥

॥ ११ ॥ १ दंभ (छल) के आश्रय से २ इस उपायवाली अपनी बुद्धि को छोड़
देा रीति से ३ टेढ़े मार्ग के वेग को ४ मर्याद भूट नहीं छिपता ५ गीदड़पन
करके ॥ १२ ॥ ६ कपट करके किसी कवि को बुझाना ७ धन का समूह पाते हैं
॥ १३ ॥ ८ उन दिनों में ९ बहुत ब्राह्मण १० कारण ११ यक्षबाभाट १२ स्तुति
करनेवाले भाट १३ उस समय में घायल मोहन ने १४ एकांत में (गुप्त)
सलाह की ॥ १४ ॥

लंगर पय धृत लखत ईरखाको गिनि आकर ॥
 लौ ढिग वह ब्रजलाल चविय कवि चंड चंडतर ॥
 या कविको उतकर्ष सहयो नन जात सदस्यन ॥
 हमहु रुद्ध मुख होहिं बनत उत्तर कहूँ बरयन ॥
 कविचंड मान निर्मूल कारि अप्पन रहहिं अभीत डम ॥
 तस अर्द्ध कविहु पावहिं ततो जयी करहिं निज पच्छ जिम ॥ १५ ॥
 भन्यों सचिव सुनि भट्ट बदिय तुमरे सासन वस ॥
 रामचन्द्र अभिधान इक्क वंदिय जाहिर जस ॥
 वृत्ति नाहिं बाहुज २१ न पंज १२ बर्द्धकि तस पालक ॥
 पै सुनियत कवि निपुन व्यूह ऊहैन उतालक ॥
 जय आस प्रथम बिनुही जतन पच्छ २ न तो तावक प्रबल
 इक १ तंतु १ चटर्क २ तोरै अलप मिलिवहु १ गज २ मोरें मिसल १६
 स्वामी प्रति नटि सचिव ताहि न सक्यो बुलाइ तव ॥
 व्याह व्याह बाहुजन अटन ब्रजलाल मिल्यो अव ॥
 करि दु २ मंत्र १ सांकूत २ पिहित समझाइ प्रयोजन ३ ॥
 सो तिहि आवन सज्ज बिरचि आयो गृह अप्पन ॥
 सक गगन अंक बसु सासि समय १८९० ॥

सूर्यमल्लस्य काव्यं समाप्तमिदम् ॥

१ चडीदान कवि अत्यन्त भयंकर है जिसका २ बड़प्पन ३ सभासदों से सहा नहीं जाता ॥ १५ ॥ सचिव का कहा हुआ सुनकर भाटों ने कहा कि तुमारे हुकम में रामचंद्र नामक भाटप्रसिद्ध यशवाला है जिसके ४ क्षत्रियों की वृत्ति नहीं है ५ शूद्र खाती (सुथार) उसको पालते हैं ६ तर्कना से समूह को उड़ाने वाला है ७ तुम्हारा प्रबल पक्ष है ८ एक तंतुको तो छोटा चिड़ा भी तोड़ सकता है और बहुत तंतु मिलकर हाथी को रोक देते हैं ॥ १६ ॥ ८ क्षत्रियों के विवाह विवाह में फिरते हुए ब्रजलालको वह रामचन्द्र मिला १० अभिप्राय सहित खोटी सलाह करके उसको समझा कर ब्रजलाल अपने घर आ गया ॥

श्रीनीतिनिपुणा-बुद्धिविशारद-सज्जनशिरोमणि-हरिभक्तिपरायण-धर्ममूर्ति-वीर-वदान्य-सोदाधारदृढ-चारणकुलावतंस-शाहपुराप्रतोलीपात्र सुयोग्यपितुरऽवनाडसिंहस्याऽऽत्मजेन, विदुष्या शृङ्गारनामजनन्या प्राप्तप्रसवपालनबालशिक्षोपदेशेन, सुशिक्षितेराऽऽज्ञाकारिभिराऽऽत्मजै केसरिसिंह-किसोरसिंह-जोरावरसिंहैर्विगतभाव्याऽऽधिना, कविकोविदनिजमातुलकविराजश्यामलदासाऽऽप्रकाव्यशिक्षणा, सन्तोषादिसद्गुणसम्पन्नविद्वच्छिरोमणिपरमवैष्णवरामानुजसम्प्रदायिन श्रीमदाचार्यसीतारामाऽऽव्ययगुरोराऽऽसादितसंस्कृतविद्येन, सूर्यवंशोद्भवध्रुवंशीयगणोत्तशाहपुराधिपराजोपटङ्किनाहरसिंहवर्म, आर्यदिवाकररविकुलशिरोरत्नरध्रुवंशीयगुहिलोत्तमेदपाटदेशाऽधिपोदयपुराऽधीशसज्जनतादिसद्गुणसम्पन्न महाराणासज्जनसिंहवर्म, तथातदुत्तराधिकारिमहाराणाफतैसिंहव

श्रीयुत नीति निपुण बुद्धिविशारद सज्जनशिरोमणि हरिभक्तिपरायण धर्म मूर्ति वीर वदार सोदाधारदृढ शाखा के चारण कुल के मुकुट शाहपुरा के पो लपात सुयोग्यपिता ओनाडसिंह के पुत्र ने, पत्निता सबनारवाई नाम माता से पाया है जन्म पालन और पालन की शिक्षा जिसने, श्रेष्ठ शिक्षा पायेहुए आज्ञाकारी पुत्र केसरिसिंह किशोरसिंह जोरावरसिंह से मिटगई है आनेवा ले समय में होनेवाली मनकी चिन्ता जिसकी पत्नि कवि अपने मामा कवि राज श्यामलदास से पाई है काव्यशिक्षा जिसने, सन्ताप आदि गुणों से युक्त विद्वानों के शिरोमणि परमवैष्णव रामानुज सम्प्रदायी श्रीमत् आचार्य सीताराम नामक गुरु से पाई है संस्कृत विद्या जिसने, सूर्यवंश में उत्पन्न रघु वंशी राणावत शाहपुराके पति राजाधिराज पदवीवाले नाहरसिंह वर्मा, और आर्योंके सूर्य सूर्यकुलके शिरोमणि रघुवंशीय गुहिल राजाके वंशवाले मेवाड़ देश के पति उदयपुर के अधीश सज्जनता आदि सद्गुणोंकी सृष्टिवाले महाराणा सज्जनसिंह वर्मा, तथा उनकी गद्दी पर बैठनेवाले महाराणा फतहसिंह वर्मा, और सूर्यकुल के मूषण राठोड़ कुलके मुकुट मारवाड़ भूमि के पति जोषपुर

र्म, भानुवंशभूषणा राष्ट्रकुलाऽवतंसमरुधराधिपजोधपुगेशगजराजे-
 श्वरमहाराजयशवन्तसिंहवर्मभूषणोत्तमऽतीवदानमानरवर्णारचितपाद
 भूषणाऽऽदिसत्कारेण, तथातदुत्तराधिकारित्तुल्यप्रीतिपुरःसरप्रति
 पालकमरुधराधीशश्रीसरदारसिंहवर्माश्रितेन, अधीतविद्यां सफल
 यितुं प्राप्तावसरेण, विद्वद्भिर्निजमित्रैर्लब्धसहायोत्साहेन, शाहपुरानि
 वासिना कविवरद्वारहठकृष्णसिंहेन विरचितायामुदधिमन्थनीर्ठा
 कायां समाप्तोयं सूर्यमल्लविरचितो वंशभास्करनामको ग्रन्थः ॥

के स्वामी राजराजेश्वर महाराजा यशवतसिंह वर्मा से पाया है दान षडप्यन
 (पूज्यपन) और पैरों में सुवर्ण के भूषण आदि आदर जिसने, तथा उनके उत्त
 राधिकारी उनके समान प्रीति पूर्वक पालना करनेवाले मारवाड़ के पति श्री
 सरदारसिंह वर्मा का आश्रित, मिलगया है पढ़ीहुई विद्याकां सफल करने का
 समय जिसको, पाया है अपने विद्वान् मित्रों से सहाय और उत्साह जिसने
 शाहपुरा के रहनेवाले ऐसे श्रेष्ठ कवि द्वारहठ कृष्णसिंह की बनाई हुई उद
 धिमन्थनी नामक टीका में सूर्यमल्ल का रचाहुआ वंशभास्कर ग्रन्थ समाप्त
 हुआ ॥

॥ दोहा ॥

कविवर सूरजमल्लकी, यहाँ लग कविता आहि ॥
 तापर टीका बिस्तरी, सधाको इठ साहि ॥ १ ॥
 अगेकी कविता यहाँ, रची मुरारीदान ॥
 ताकी टीका तजतुहँ, देखत किने निदान ॥ २ ॥
 जे निजबुद्धि विवेकजुत, हैं अघुना निजगेह ॥
 तिनके विरचित काव्यके, जानो अधिकृत जेह ॥ ३ ॥
 तजनेहीके वपडतैं, सुकवि समुझिहँ सार ॥
 कुत्सितवचन प्रयोगको, विगचत नहिँ व्यापार ॥ ४ ॥
 को उपकारी ग्रन्थकरि, परउपकार प्रचार ॥
 अन्यहिँ हितसाधन उचित, भुजन उठावत भार ॥ ५ ॥

घनाक्षरी ॥

कवि रविमल्लको बनायो वशमास्कर सो,
 छायो कष्ट शब्द घन छोनीपैँ दिखायो छाम ॥
 बुद्धिबात बेगतैं विहारि मेघ मढलको,
 निर्मल दिखाय दीनों रचि टीका अभिराम ॥
 कृति कवि कोकनको दापन अमोघ सुख,
 ज्ञापन करायो हिय कज विकसैवो ताम ॥
 कूरन कुतर्कि धूक मूक करि कृष्णकवि ॥
 जीवन सफल जान्यो करि उपकारी काम ॥ ६ ॥
 रस व्योम ग्रह महि १९०६ पायो भव कृष्णसिंह,
 शाहपुर भूपको सुहायो सुखमा पसार ॥
 मेदपाटभूपमनि सज्जन रिझायो पुनि,
 फतैसिंहहँ पायो दान मान प्रीति फार ॥

जोधपुरभूप जशवंतनेँ बढायो ज्यैहाँ,
 चर्ननमें चामीँकर भूषनको धरि भार ॥
 इम सर नंद इन्दु १९५८ चैत्र श्याम सत्तमिकों,
 पूरन बनाय टीका कीन्हों उपकारी कार ॥ ७ ॥

॥ सवैया ॥

गावन वर्ष त्रिताय बराबर, सम्मदमें न लहयो कहँ अन्तर ॥
 नासन जाको महीपनके सिर, होय अमोघ रहयो सु अमंथर ॥
 प्रायस मात पिता सिर आनिकै, पुंगव पंथ निबाहयो परंपर ॥
 संसृतिभार सबै तजिहों रु, अबै भजिहों करतार निरंतर ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

समय मिले पर सद्धिहों, पर उपकार पवित्र ॥
 जाकों पुण्य महर्षिजन, मन्नत जगको मित्र ॥ ९ ॥
 वह डिंगलको कोस इक, रचि नव निज अनुरूप ॥
 काव्य पुरातन अति कठिन, परे निकासहिँ कूप ॥ १० ॥

सूर्यमल्लकी कविताके लोभसे हमने इस परोपकारी कार्य का भार उठाया था वह लोभ यहीं पर समाप्त होता है इस कारण हम भी टीका बनाने के भारको इसके साथ ही छोड़ते हैं अर्थात् इससे आगेकी पूर्ति सूर्यमल्लके दत्तक पुत्र मुरारिदानने की है जो स्वयं इस समय विद्यमान हैं उनकी विद्यमानता में भी हमारा टीका बनाना अनावश्यक ही समझा गया इतना ही नहीं किन्तु यह अव्यापार है जिसमें व्यापार करना अनुचित है इसीकारण से आगेके काव्यमें हमने कुछभी इस्तावेष नहीं किया है यहातक कि कविवर सूर्यमल्लकी छोड़ी हुई मयूख की इतिश्रिया हमने पनाई है वह भी आगे की कवितामें बनाना उचित नहीं समझा किन्तु जैसा कुछलिखा हुआ मिला वैसाही छपवा दिया गया है

इस ग्रंथकी प्रथम राशिमें ग्रन्थकर्ता सूर्यमल्लने प्रतिज्ञा की थी कि ग्रन्थ के अन्तिम चार राशिमें धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चारों पुरुषार्थों का वर्णन करूंगा परन्तु यह सूर्यमल्ल से नहीं होसका जिसके लिये हमारे कई मित्रोंने अनुरोध किया कि इस ग्रन्थकी उत्तरपीठिकामें उपरोक्त चारों पुरुषार्थों का वर्णन करके ग्रन्थकर्ताके अभिप्रायको सफल करदेना चाहिये परन्तु प्रथमतो हमारे शरीर में पक्षाघात, मधुमेह आदि रोगों के होजाने से इतनी शक्ति नहीं रही, इसके उपरान्त ग्रन्थकर्ता के समय में तो इन पुरुषार्थों के लिखने की आवश्यकता थी क्योंकि वे ग्रन्थ उस समय संस्कृत में होने के कारण सर्व साधारण को समझाना अवश्य था परन्तु अब तो वे ग्रन्थ भाषानुवाद सहित छप कर सब प्रसिद्ध होचुके हैं जिनका फिर यहाँ लिखाजाना केवल पिष्टपेष है अतएव हमारे मित्रोंका भी इससे सतोष होजाने पर यह विचार छोड़कर यहीं पर समाप्ति कर दी गई है इस ग्रन्थ के अपूर्ण रहने का कारण हमने सूर्यमल्ल के शिष्या से कई द्वारा सुना है परन्तु उस पर हमको विश्वास नहीं है जिसका संकेत रामसिंह चरित्र में जोधपुर में महाराजराजा रामसिंहका विवाह होना और बुढ़ीके पापभाईके मारेजानेकी कथा पर नोट किया है वहा दिखा दिया है

सूर्यमल्ल के मरे पीछे महाराजराजा रामसिंह ने सूर्यमल्ल के दत्तक पुत्र मुरारिदान से इस ग्रन्थ की समाप्ति कराकर एक ग्राम मुरारिदान को देकर सूर्यमल्लकी जो स्त्रियाँ उस समय विद्यमान थीं उनको भी एक एक ग्राम बनके जीवन पर्यंत देकर सूर्यमल्लकी इस सेवाका फल दिया अब हमारे पाठकों से सविनय प्रार्थना है कि इस टीका का बड़ा भाग हमारी ऊयावस्था में बनने के कारण जहा कहीं अथदोष मिले उसको कृपा पूर्वक सुधार कर हमारा दोष क्षमा करें किमधिक विज्ञेष्वात्म ॥

शाहपुरा के पोखपात सोदाधारदठ शास्त्रा के चरण कृष्णसिंह ने
इस टीका को जोधपुर में समाप्त की ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा॥

॥ दोहा ॥

बसु नव गज भू १८९८ मित बरस, समय सोधि सुभ भूप॥
पहु यात्रा प्रारंभकों, निज मन किय अनुरूप ॥ १ ॥
श्रीभट्टजी महाराज सह, प्रभु दुवर सासन पाइ ॥
उमरावन पंचधन अखिल, नरपाति हार्द सुनाइ ॥ २ ॥

॥ षट्पात् ॥

इस बिचारि अजमेर पत्र मंडिय पुहवीपति ॥
बाहुल्य बदि तिथि तीज ३ सोमवासर २ सादब प्रति ॥
रजीडेंट अंग्रेज सदरलैनहु सब सासक ॥
अरु अजंट चारलिस रिचारडिस तिनको आसिक ॥
कलकत्त नगर स्वामी सबन तहँ सु लार्ड प्रति पल तिम ॥
लिखि अठ्ठकलम जग जस रहत अधिपहिँ भोजिय छिप इम ॥ ३ ॥

॥ पद्धतिः ॥

मम सेना सन्निधि पंथ मान, व्है नाँहिँ धर्म १ गो २ प्रान हान १ ॥
प्रतिपंथ मम सु दरजा प्रमान, व्है सलक रालामी न तहँ हान २ ॥
सेना अरु पुरजन सत्थ मोहि, जो नागझाग रत रहत जोहि ॥
लिखि ताहि पंथ मासूल लैन, व्है हत्थ अमल तो रोष व्हैन ॥ ५ ॥
पुनि दुग्ग १ थान २ जो व्है प्रसिद्ध, सब जन हम जावै सस्त्र सिद्ध
बलि चक्र माँहिँ जो सस्त्रबंध, सो नाँहिँ रोक पावै सु संघ ४ ॥ ६ ॥
पुनि पथ स्नानयात्रा प्रसंग, अंतेउर उतरैँ जहँ उमंग ॥
जो नीच उच्च व्है पुहवि जत्थ, तो व्है प्रबंध हम तोर तत्थ ॥ ७ ॥
उतरैँ जो हम जिहिँ थान आय, पुनि स्नान निमित्तक पट्ट पाय ॥
बनवावैँ हम ताँपैँहिँ बात, रोधक नह बुल्लैँ दिन रु रात ॥ ८ ॥
हमरेहि सत्थ व्है नयन २ नालि, आवैँ इम भोलिन नालि नालि ॥

तस सलक सलामी निश्य माग, जाकोहु हुकम व्है सर्व जाग ॥६॥

कष्टादि वरतु सब प्रति सुकाम, दल मामकतै लै सुविधि दाम ॥

दृढ चित्त अग्न व्है थानदार, सबकों सु दिवावैं वस्तु सार ॥ १० ॥

खत बीच अष्टक कलमा लिखाइ, जो तूर्ण चार अजमेर जाइ ॥

अर्पित किय सादव इत्य अैन, लै त्रारित वचि दल सदरलैन ॥११॥

प्रतिउत्तर भेजिय इम प्रजेस, अधिपति सु अन्यतर जिम असेस ॥

जो क्रम सु सनातन तिन जवाव, सो सब व्हैजैहैं तिहिं हिसाब ॥१२॥

तिनदिवस जहाँ उपवहार तथ्य, आसय दृढ भोजिय तहँ सु अत्य ॥

इम करि रु सर्व भूपति उदार, साज्पादि श्राद्ध सास्त्रानुसार ॥१३॥

श्रीरग सिष्टि लै पुनि रसेस, क्रमकरि रु परिक्रम पुर असेस ॥

गुदात सहित पुनि किय प्रयान, दिय रंक रु भूसुर अमित दान ॥१४॥

पहु लिपउ भीम पदप कुमार, तिम कियउ कुमर अर्जुन तयार ॥

गोवर्धन तदनुज गुन गरीय, वचना सु सिष्टि भूवर बरीय ॥ १५ ॥

पथि माता पूजन करि प्रजेस, वलि किय सिकार बुरजहि प्रवेस

सितर पाँप द्वितीयाऽऽगिरस ५ वार, नाढ़ी त्रप ३ मध्यहि रजनि

कार ॥ १६ ॥

कोटैस राम प्रति अद्द काज, भेजे पउसाक सु प्रीति भाज ॥

सो पत्र सहित लै गनलाल, आडउ पचोली तहँ उनाल ॥ १७ ॥

घटिका सब वित्तत जव सु घसल, हाजरि वितर्द हुव अष्टक अल ॥

नजर रु निछावर करि सिरनाय, पढि कुसल तास कृत मिसल

पाय ॥ १८ ॥

आविक पुनि अवर अरज आखि, किय नजर पत्र संमदकराखि ॥

अरु कहिय जपश्रीकृष्ण आप, आदेस ममोपरि इम इलाप ॥१९॥

पयि सग रहन यात्रा प्रसग, तसमात चित्त ममहै उमग ॥

गो अरज सुनि रु तस कुसल किन्न, दयया सह ताकों सीख दिन्न
सेत१ पौष१० पंचमी५ सूर वार१, किय वर्षगंठि अर्जुन कुमार ॥
इदन्तर तहँ संबंध ताहि, मंदेस भल्ल नंदन उमाहि ॥ २१ ॥

हँदूमल जीवन भट हिताय, दिय तार भर्म लांगलि दुराय ॥
तेम पंच५ लांगली१ क्रमकर५ त्योंहिँ२, सिरपेच १ जटित इक
पुनि सुयोंहिँ ॥ २२ ॥

तेम दियउ२ इक्क१ उरसूत्रिकाहि २, मौक्तिक्य कर्णिका ३ हुव
उमाहि ॥

काहि१ माहि२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥

सिरुपाव४ चतुर्दस१४ पुनि सप्रीति, राजत मतंग५११ इक हय६१२
सुगीति ॥ २३ ॥

इत्यादिक हुव२ लौ आजगाम, हुव अरज त्वरित तहँ हितहि काम
सित१ सोम२ षष्टिका६ पुहवि सक, अंबकर सह घटिका रहत
अक्क ॥ २४ ॥

रचि सभा चोक मानिक रसेस, आहूत सर्व उमरा असेस ॥
देवपा१दिसिंह दुर्गापुरेस, जय१ विजय२ सिंह आइउ जयेस ॥ २५ ॥
सचिवा१दि ऊरुजा२ सर्व आइ, प्राघुन हुव हाजरि प्रीति पाइ ॥
अरु अप्प कुमर अर्जुन उमाहि, रहि ब्रह्मघट्ट त्रि३ द्वार काहि१२६॥
तिम कतिक तहाँ उमराव तत्थ, अर्चित करि नवग्रह कुमर अत्थ
प्राघुनक प्रथम हे प्रीति पाय, तिन अंक कुमर अर्जुन हिताय२७
भरि कियउ तिलक कुंकुम सुभाल, इम महर नजर करि तिन
उताल ॥

पूर्वाक्त जवाहर बस्तु पेस, सब कियउ भूप हित तहँ असेस ॥ २८ ॥
करि सगपन तिन्ह दिन कतिक राखि, अप्पिय सु सीख पुनि कु
सल आखि ॥

उगगत रवि सप्तमि७ आरवार३, सामतसिंह आइउ उदार ॥२९॥
 धोउर पुरेस महिपाल धीर, बाल सन्मुह भेजिय तस प्रवीर ॥
 जो उपवन भट्टजि अस्रजाइ, अति प्रीति मिलि रुपटगृह सुआइ३०
 पुनि रहत वेद४ नाखी पतग, कापरनि कात आये उमग ॥
 बलि बेल बिलासहि देवमाहि, अति स्वच्छ जलासय आवआहि३१
 सामत पितृव्यक तहँ सचाह, आतहि प्रभु गौरव दिय उछाह ॥
 मिलि बहुरि भुजातर उर मिलाइ, किय मुजरा तिन्ह अति भवि-
 क पाइ ॥ ३२ ॥

संलाप कुसल हुव पुनि सप्रीति, अरु कहिय रहहु रह अप्प रीति॥
 कहि इम रु तास दसतूरकिन्न, सीतहि सु जानि स्थुलसीखदिन्न३३
 आ धवल तप११पक्षति१जीव५आत, दुव लाल नयन२विश्रामदात
 रहि तत्य द्वितीया२ सुकद्वार, किय बहुरा जीवक कारदार ॥३४॥
 तिम अकित मुदा नाम तास, प्रभु दियउ निरतर रहन पास ॥
 हुव कुच तृतीया३सौरि७होत, दढ अप्प नयनपुर किय सु द्योत३५
 वदि बासर पंचमि५ चद्र वत्त, साहब रिचागडिस अर स पत्त॥
 पेपित किय लंघन हर्ष पाइ, आदि सु अजट गढइद आइ ॥३६॥
 करि साम कोटरिन तत्य काज, रहतहि तस खचरि सु आत राज
 प्रभु भेजिय सह दल अप्पपास, हुक् राणी विकटोरियाहुलास३७
 सुनि पत्त कियउ अति मेह प्रसारि, दारिद दिय सूरिन इम बिदारि
 उगगत बुध४ सप्तमि७ पुनि उदंत, भेजिय अजंट साहब भनंत३८
 दत१ नत२ अन्त्यानुपास ॥ १ ॥

सेना १ अरु पुरजन २ सहँस दोइ २०००, सुहि जावैं भूपति
 गहोइ ॥

अरु दुग्ग१थान२ तहँ पय आत, जँहँ ब्हे असस्त्र सह सेन जात ३
 साहब न जात जिम अप्प सत्य, इम सुनि मुकाम कम कारि ।

अथ ॥ ४० ॥

कादसि११वादि दिन अर्क१ जात, प्रभु अप्प सिबिरतैं सौध पात
मीरंग दरस करि तहँ सप्रीति, संसद रचि तत्रहि प्रभु सनीति४१
प्रीति१ नीति२ अन्त्यानुपासः ॥ १ ॥

गोत्रद अधीस मुहुकम्म उत्त, आब्हान राम प्रति दियउ छुल ॥
गजरि हुव सत७ सु जनहि आइ, प्रभुतैं सुहि अण्युत्थान पाइ४२
केय मुजरा तिहिँ अति भविके पात, दढ अप्प पानि सुद्धहि दिखात
केय कुसल तास तिन नजर किन्न, दुब २ नाड़ी राखि रु सीख
दिन्न ॥ ४३ ॥

गुदि होत प्रतिपद१ सुक्र६ वार, ॥
, तव कियउ पन्नानुरूप ॥ ४४ ॥

सेत सौम्य ४ चतुर्दसि १४ सूर आत, व्यापृत चतुष्क ४ राखिय
विरुपात ॥

एक १ ईस नंद जुत लाल १ आँहिँ, तिम राखि पठान जु जमित
खाँहिँ ॥ ४५ ॥

लि पन्नाजुतलालहिँ भुवाल, इह मंगल राखिय अंतलाल ॥
प्रेरराज चतुष्क ४ न अथ अप्पि, महिपाल लेख त्रिसति ३०
समाप्ति ॥ ४६ ॥

मतेँ जु लेख सुनिये कृपाल, बल आदि सर्व बच आलबाल ॥
नवार दसावर इतर पत्र, आवैं उदंत तामाँहिँ अत्र ॥ ४७ ॥
होइ आसु तो कटिति देय, न त्वरित जो सु मम प्रतिहि नेय
रु स्तेयो १ व्यापृत २ अन्य आइ, करि दंड इतर बिधि जुन
कराइ ॥ ४८ ॥

न स्वीय अन्यतर राज जाइ, इह स्तेय आदि करि जोहि आइ
मैं प्रमान डारैं सु तत्थ, पूरब स्वदंड करि तास पत्थ ॥ ४९ ॥

मेवारज मैंने जात मोसि, पूर्वोक्त लेख जिम स्तैन्य पोसि ॥

साहब अजंटतैं कडि सु जेय४, बिधिजुत इत्यादिक तब विधेय५०
इम करत प्रवध सु राज्य अग, महिपाल लगत फग्गुन १२ उमंग
रविवार१३तृतीया१४रमत फग्ग, स्थलकमल गुलालादिक समग्ग५१
इम रमत फग्ग पुणिया१५सु आत, प्रभु चलत सत्थ मागीन पात॥
मघु१ लगत मास पत्तति१६तग१, साहब रिचारिडिस अर उमंग५२

तग१ मंग२ अत्यानुपास. ॥ १ ॥

पट्टनितैं साहब भल्ल केर, मग बैठि डाक हय ना अबेर ॥

आराम नयनपुर राम आइ, तस अत्थ सिबिर प्रभुतैं तनाइ ॥५३॥

तस मिलन अत्थ प्रभु तहैं पधारि, साहब उदंत यात्रिक सु धारि॥

साहब सु उभय२ जे अप्प सत्थ, प्रभु सौध पधारे पग्ग अत्थ५४

तहैं छत्रमहल विच रंग ताहि, अक्खत कवि आढ्य तास आहि ॥

कौसुभि१ रु कुकुम२नीर कारि, बर्णाक३अवीर४तोखीर५पारि५५

पत्तग६नीर पुनि करि रु स्फोत, पिचकारिन साहब किय पुनीत ॥

साहब अजंट प्रभुपैं सु बारि, हठ प्रीति बहुरि दिय तबहि डारि५६

प्रभु अप्प डारि पुनि सडैंस १००० धार, किय बर्णाक जुत पट्टप

कुमार ॥

कारिफग्ग अजटहि सीखदिन्न, अरुअप्प स्नान२आदिक सु किन्न५७

आत्मीय शिविर साहब उम्हात, अंगार३ तीज३ मध्यान्ह आत ॥

तस सम्मुह डयोढी अप्प जाइ, आनदित तासह माहि आइ५८

क्रमतैं जु बैठि पुनि तहैं कृपाल, किय सार्द मुहूर्त२ रहस्यकाल॥

छुदी१ अरु यात्रा करि प्रवध, तिन्ह अतर१पान२ दै पुनि सुसव५९

इम सीख दै रु मग कुसल आखि, तहैं अप्प नयन२ विश्राम राखि

उगगत रवि षष्ठी६कवि६गरीय, विश्राम समाधी दिय तृतीय३ ६०

किय चोरू सप्तमि ७ सनि ७ मुकाम, माधवपुर अष्टमि ८ दिय

विश्राम ॥

नवमी९मुकाम किय पुर पडान, दसमी१० अंगारक३करि निदान६१
हुंगरमलारने किय मुकाम, बाटोंदै एकादसि११ विश्राम ॥

पुनि जीव५द्वादसी१२घस्र आत, नवमो९कुशालगढ चक्र पात६२
पुनि असिता तेरसि१३ कवि६ प्रभात, पीलोदै प्रभु किय सेन पात
हिंडोन चतुर्दसि१४ होत बास, परताप करोली पति हुलास॥६३॥
बलदेव१ बनिक दीवान रूपात, पुनि प्रियादास२ बाढ़व उम्हात ॥

अरु ऊरुज चूनीलाल३ एम, गुस्साही रक्तीगर४ हि तेम ॥ ६४ ॥

सचिवा१दि सुजन चउ४ए पठाइ, मनुहारि बिबिध विधि जुत कराइ
सतपंच५००रौप्य महमानि अत्थ, पक्कान्न मंथनी तास३०सत्थ६५
इत्यादि उहाँ लै त्वरित आइ, रहि रति प्रात पहु हुकम पाइ ॥

हाजरि हुव पटगृह होत कुच्च, आसिख सलाम करि प्रीति उच्च६६
अरु नजर निछावर अरज किन्न, भूपति जुहार भाखिय अभिन्न
अरु कहिय आगमन इह स्वकीय, गृह करहु पवित्रहि अस्मदीय६७

कीय१ दीय२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥

सतपंच५०० रौप्य पुनि व्है प्रसन्न, ॥

तामैं सुदोइ२ नारंग एम डाल्याँ कंडोल च्यारि४ फल कुसुम२॥६८
कूष्मांड इक१ इक१ भूमिकंद, अहिबल्लिपत्र सत चउ४००अनंद
महमानिकरहु स्वाकार एह, सो अरज सुनि रु पुनि करि सनेह६९
करि माफ रौप्य कंडोल राखि, जय रंग कहहु नृपतैं इमाखि ॥

दै सीख ताहि पुनि कुच्च पाइ, विश्राम कियउ सूरैट जाइ ॥ ७० ॥

पत्तति १ मुकाम सित दिय बियान, तहँ करत द्वितीया ३ दिन॥

मिलान ॥

चूड़ामनि जट्टहि बंस जात, लैवाल मुकुंदाऽऽतित्थ आत ॥७१॥

रचि सिबिर सभा लिय तिहिँ बुलाइ, हाजरि हुवतहँ सो हुकमपाइ

करि नजरिनिछावर पुनि सलाम, दुव२सचिवहेठ बैठि रु सुआम७२
 किय अरज मुकदहि फौजदार, बलवंत कियउ मालुम जुहार ॥
 अरु पचमतक५००नायाकसु एइ, स्वीकारकरहु प्रभु करिसनेइ७३
 विज्ञप्ति सुनि रु तस भव्य आखि, आतित्य रौप्य आदिक सु
 राखि ॥

व्यवहार भगतपुर करि सुवत्त, दुव२घट्टि राखि तिन्ह सीख दत्त७४
 पुनि सदरलौन साइव मिलाप, भोजिय हमीदखाँ मदल आप ॥
 तिहिँ जाय पत्र दिय करि सलाम, रुहि एइ मिलन प्रभु चउ४
 मुकाम ॥ ७५ ॥

पुनि दियउ तृतीया तहँ मिलान, सब जन दिय उत्सव गोरि दान
 पुनि होत चतुर्थी४ दिन प्रभात, खाअतहमीयद छदन आत ॥७६॥
 तामाँहिँ लेख पंचमि५ मिलाप, अरु सदरलौन उँई मुद अमाप ॥
 कहि रामसिंह राजाधिराज, दृढचित्त रु है वार्दक दराज ॥७७॥
 ताँतै हम चाइत मिलन तूर्गा, पुनि चइत भरतपुर ईस पूर्गा ॥
 आवत हम सम्मुह उभय तत्य, सुनि राम अरज करि कुञ्चसत्य७८

॥ दोहा ॥

पचमि५ दिन कगि कुञ्च प्रभु, बैर मुकामन आत ॥
 नगर कनावरतै निकट, पिप्पलतरु इक पात ॥ ७९ ॥
 उहा भरतपुर ईसके, बारीदारन आइ ॥
 रजित किन्न बिछात सम, मन बहु मोद मनाइ ॥ ८० ॥

॥ पदपात ॥

सदरलौन साइव१ रु भूप बलवत२ भरतपुर ॥
 बाजी४ रथ थित होइ उभय२ सम्मुह उमगि उर ॥
 तनि३ कोस लग आइ बहुरि ठहे बिछात पर ॥
 तव जीवन बहुरा रु हमिदखा तह वकील तर ॥

चहुवान तरनि सन्निधि त्वारित आइ निवेदिय अरज इम ॥
प्रभु वेर बिछात ठह्ये उपरि अप्प पधारहु देर किम ॥ ८१ ॥

(दोहा)

यहै अरज सुनतहि अधिप, तहां हय स्थित आत ॥
अस्र बिछायतके उपरि, हुलासित तुरग बिछात ॥ ८२ ॥
सदरलैन साहब समुह, अरु बलवंतहु आइ ॥
सय इक १ भरत पुरेसहु, लिन्नो सीस लगाइ ॥ ८३ ॥
प्रभु तब अप्प सु पानि इक १, आनन द्वयस उठाइ ॥
कुसल परस्पर किन्न पुनि, मुद जुत खंध मिलाइ ॥ ८४ ॥

॥ षट्पात् ॥

उत्तमंग पुनि सदरलैन कर इक लगाइय ॥
तब पहु आनन निकट अप्प सुभ पानि उठाइय ॥

गाइय १ ठाइय २ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥

खंध जुट मिलि मुदित दुवरेहि रचि कुसल परस्पर ॥
तुच्छ समय तहँ बैठि बत्तकरि देस १ काल २ बर ॥
जेट्स केर चउ ४ तुरग रथ बैठे तीन ३हि मुदित मन ॥
बलवंत बाम दक्खिन सदरलैनहु सम्मुह अप्प सन ९ ॥ ८५ ॥
सिरैरहि रु प्रभु अप्प १ चले डेरन प्रति सत्वर ॥
हुव सु अग जय १ बिजय २सिंह आरुहि तुरंग बर ॥
इम त्रय ३ डेरन आइ अधिप सह तजि रु अस्व रथ ॥
बाजी स्पंदन चढि रु वे सु दुवर चलिय वैर पथ ॥
इत होत सिबिर दाखिल अधिप ताप कीन नाली त्वरित ॥
दसपंच १५ फेर उततैं बलत इत नालिय चालिय सहित ॥ ८६ ॥

रित १ हित २ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥

हुव हाजरि बलवंत बहुरि जन तहँ सु प्रतिष्ठित ॥

अरज कराइय एह भूप महमानि सेनहित ॥

सासन करहु प्रसिद्ध लेहु पश्वान्न चक्र सब ॥

यह सुनि रु दिय जु हुकम सचिव आवैं मामक जब ॥

मिलि सचिव चक्रपति आदि तहँ जाइ दिवाइय स्वच्छ मन ॥

आमोद तथ्य इम राखि पुनि आये व्यापृत सठ सदन ॥८७॥

॥ पादाकुलकम् ॥

पण्ठीद दिवस मिलान तहाँ दिय, पुनि बलवंत भविक जन आइय

तब प्रभु निकट हमिदखाँ जाइरु, कियउ अरज प्रभुतें मुदपाइरु ॥

प्रभु बलवत सुजन पठवाये, पधरावन अप्पहिँ उत आये ॥

समय प्रजेस हार्द जो पाऊ, सो उनकोँ मैं जाइ सुनाऊ ॥ ८९ ॥

सुनि इम अरज निदेस दयो जब, नाहो नयन रहैं दिनकर तब ॥

इम क्रम क्रमन उहाँ तुम जानहु, पुनि तहँ साइब मिलन प्रमा-

नहु ॥ ९० ॥

इम वकील सासन सुनि आयो, सुजन त्वरित बलवत सुनायो ॥

स्वनृप जाइ तिन वृत्तानेवेदिय, तब सभ्य रु ससद तयारकिय ९१

पष्टप भीम २०३१ कुमार जुत पुनि, गोवर्द्धन कुमारहिँ प्रभु क्षिय

चुनि ॥

सेना सर्व चार भट सारे, प्रभु नवलकखा बाग पधारे ॥ ९२ ॥

प्रथम जात बलवत गेहपट, सम्मुह बिसति २० पैँह वे सु अट ॥

तुच्छ समय पुनि वस्तसदन रहि, साइब शिबिर बरव्वर क्रमचहि ९३

तहाँ अठपश्वलवंत २ सिधायें, रद ३२ पद सदरलैन समुदा ९४

करि सँल्लाप भव्य मुद पाऊउ, त्रय ३हिँ सौध ससद जहँ आइउ ९५

खुरसी अप्प मध्य आरुहि जहँ, भीम २०३१ कुमार दाछिन कुरसी

तहँ ॥

तदनतर जय १ विजय १ सिँह दुवर, उपवेशन गोवर्द्धन ततहुव ॥ ९५ ॥

तातैं बक्र मिसल सम्मुह सन, खुरसिन लागिय तास सुभट जन॥
 सव्यहि सदरलैन साहब रहि, सन्निधि तास भरतपुर ईसहि ॥९६॥
 समय मुहूर्त वृत्त तहँ जंपिय, अतर१ पान२ पुनि चरन निवेदिय ॥
 साहब उक्त१ सु अप्प लगाये, पानदान प्रभु नजर निराये ॥९७॥
 संग्रहि कहिय सिबिर संजावन, प्रभुकों तब वे दुव२ पहुँचावन ॥
 महलानतैं सु चोक लग आये, सदाचार तीन३हिँ तहँ पाये॥ ९८ ॥
 प्रभु पुनि अप्प सिबिर दाखिल हुव, तुरतहि तहां वे सु आये दुव
 जब वहि सिबिर दु२ दिस भट राखि रु, प्रभु पुनि सुख्य सिबिर
 रह चाहिरु ॥ ९९ ॥

खिरु१ हिरु२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥

प्रभु तहँ खुरसी मध्य बिराजिय, सदरलैन उपविष्ट सव्य किय ॥
 जिय१ किय२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥

पुनि बलवंत असव्यहि पाये, प्रभु तत लार्ड पलास दिखाये ॥१००॥
 तामें लेख कोल नामाँको, साहब देखि चविय नृप याको ॥
 उत्तर भटिति अत्थ नहिँ ऐहैं, बासर कतिक विचारिहु दैहैं॥१०१॥
 अतर अप्प दोउ२न पुनि अप्पिय, पहुँचावन प्रभु तिन्हैं गमन किय
 बाहिर सिबिर तनावहिँ आइ रु,दियउ सिक्ख तिन्ह सुवच दृढाइ रु
 बाजी स्पंदन चहि रु सिबिर प्रति, कियउ गमन प्रभु दुव२हि र-
 दिख रति ॥

इत पटआलय अप्प पधारिय, बलाधीस कटिबंध निवारिय ॥१०३॥
 षष्ठी६ दिन तहँ रति बिहाई, सुजवार१ सप्तमि७ अव पाई ॥
 सत्त७ कोस वहांतैं कवईपुर, हुव प्रभात दाखिल अंतेउर ॥१०४॥
 करत कुञ्च पुनि प्रभु तहँ भोजिय, सुजन प्रताप महीप करोलिय ॥
 इम बिज्ञप्तिआइ तिन्हअक्खिय,भूपमदीयमिलन प्रभुभक्खिय१०५॥
 पुनि निर्देस समयको पावैं, प्रभु मामक हुतही पधरावैं ॥

इम सुनि अरज नियोग दयोनृप, इमरो तुम जानहु द्रुतहीसृप १०६
इम सुनि सुजन पटालय आइ रु, प्रभु इत समय सस्कको पाइ रु
कर्म नित्य आदिक सब किन्नो, ससद रचन निदेसहु विन्नो १०७
वान ५ घटी रजनी पुनि बित्तत, चढि इम भूप प्रताप सु चित्तत ॥

उतरयो द्वार पटालय आइ रु, पहु सुनि सम्मुह अप्प पधारिरु १०८
इरु १ रिरु २ अंत्यानुप्रास ॥ १ ॥

शस्त बहुरि मिलि कियउ परस्पर, बैठे इक आसन धरनीवर ॥
समय देस वृत्तात सु जपिय, नाही इक १ उपवेसन रक्खिय १०९
दे तिन्ह सिक्ख कियो पहुँचावन, असुक सदन द्वार लग आवन ॥
इम दे सिक्ख अप्प तुरगासहि, सिविर प्रतापपालके आसुहि ११०
कियउ क्रमन प्रभु रति रक्खि रति, सुमट मुख्य—सह संहति ॥
तिन्हें तवहि आगमन रु सम्मुह, संलाप रु उपविष्ट आदि सुह १११
सुह १ सुह २ अंत्यानुप्रास ॥ १ ॥

प्रथम गीति जिम कियउ धरावर, जपिय सिक्ख अप्प तदनतर ॥
इम सुनि सोहु पुगावन आये, पटगृह द्वार द्वपसही पाये ॥ ११२ ॥
॥ दोहा ॥

सदाचरन करि तह सुबत, पुनि चलिप मुव पाइ ॥
नयन २ घटी रजनी रहत, हुव दाखिल स्थुल आइ ॥ ११३ ॥
अष्टमि ८ दिन पुनि तहँ अधिप, राखि रु श्रम विश्राम ॥
शस्त्रादिक पूजन सकल, रजित किय प्रभु राम ॥ ११४ ॥

॥ मुक्तादाम ॥

कियो नवमी ९ कुज ३ वार प्रपान, दयो सु कुमेर मुकाम दिवान ॥
यान १ वान २ अंत्यानुप्रास ॥ १ ॥

तहा बलवंत सुनाग पठाइ, जरी कुथ तास सिरी सुवनाइ ॥ ११५ ॥
सुतारन मंडित होदन साजि, पलास बहोरि सु यावनि राजि ॥

कियो तस लंच सु मानुस आइ, कश्यो मुररीकृत भाविक पाइ ॥ ११६ ॥
दियो दशमी १० दिन डिग्घ मुकाम, रहे तहँ रुद ११ तिथी प्रभु राम
तहां भवनाभिध सुंदर थान, तिन्है किय देखन गोन दिवान ११७
उहाँ ब्रजमोहन दुग्गप आइ, दये तैंहिँ भोन असेस बताइ ॥

बिताइ घटी वसुन्ढाँ क्षणा देस, कियो प्रभु अंबरओक प्रवेस ११८
चले पुनि द्वादसि १२ लै चतुरंग, गिन्यो सु मुकामहि मानुसि गंग ॥
तहां इक १ गोरधनाव्हय सैल, मिटै जहँ जातहि मानुस मैल ॥ ११९ ॥
अनंग १३ तिथी दिन स्नान उमंग, सु गोन कियो प्रभु मानसिगंग
उहां करि आप्लव अंहति अत्थ, मगायउ नाग १ तुरंगम २ तत्थ १२०
सिरी १ कुथ २ ताहि बनात सु साजि, बनाइ रु तादश त्योहि सुबाजि
महीप बहोरि सु दम्प पचास १०, तथासर ५ निष्क १ रु चीर २ सतास १२१
तुरंग १ बहोरि सनिष्क ३ हि तीन ३, दये पुनि दम्प पर्चास २५ सु दीन
बलापति ॥ १२२ ॥

अंबर १ पिठि रु तार खुगाहिँ, उहाँ दस १० दम्प दुर्निष्क सु आहिँ ॥
प्रदेसन दै इम प्रीति प्रजेस, कियो पुनि असुक ओक प्रवेस ॥ १२३ ॥
मुकाम तहां करि पुणिगाम दीइ, अगेस परिक्रमको पुनि ईह ॥
प्रभू किय लै अवरोध प्रयान, कियो गिरिराज परिक्रम यान १२४
प्रयान १ मयान २ अंत्यान्प्रासः ॥ १ ॥

निसीथ घटी दुवर उप्पर जात, प्रदेसन वहां करि डेरन पात ॥
तिथी पडिवा १ बदि माधव २ मास, बली सत वै किय बाहिनिवास १२५
॥ दाहा ॥

कियउ द्वितीया २ दिन क्रमन, राजराज प्रभुराम २० २१ ४ ॥

माहब सुनि आयो समुह, मथुरा जानि मुकाम ॥ १२६ ॥

सुहु डिपटी अभिधा बिदित, पद रु किलहर पाइ ॥

मथुरा तजि सम्मुह मिल्यो, इक्क १ कोसलों आइ ॥ १२७ ॥

रामसिंह का तीर्थयात्रा करना] अष्टमराशि-चतुर्दशमयूख (४१०७)

मिलत अनामय पुच्छि करि, सत्रह१७ नालिन फेर ॥

साधव सह आय उमंगि, वस्त्रमदन वह नैर ॥ १२८ ॥

पुनि व्रदावन नैर पहु, मातामही मिलाप ॥

कियो तुमग आरुहि क्रमन, अल्प सत्य करि आप ॥ १२९ ॥

जाइ अरज सुभ करि जहा, प्रसूमही पय वदि ॥

आधघरी रहि सिक्ख करि, आपे सिविर अनदि ॥ १३० ॥

इति श्री वगभारकरे

त्रयोदशो मयूख ॥ १३॥

॥ गीर्वाणभाषा अनुष्टुप् ॥

राधाकृष्णतृतीयाया कृत्वा श्राद्धादिकं नृप ॥

पद्मया विश्रामघटाय पञ्चम्या सायमव्रजत् ॥ १ ॥

॥ गीति ॥

जयसिंहविजयसिंहेत्पारुषमहाराजसंयुतस्तत्र ॥

आचम्य पट्सुवर्णमुपायनीकृत्य तस्थिषान् घटिकाम् ॥ २ ॥

॥ उपजाति ॥

विलोक्य नीराजनमत्र घटे नारायण चापि गतभ्रमाख्यम् ॥

नत्वोपहृत्य द्रुमिणं यथाहं भूपो निवासं स्वमलचकार ॥ ३ ॥

(५) राजा रामसिंह वैशाख मास तीज का आय आदि करके पश्चिमी के दिक्क पैदल विश्राम घाट गया ॥ १ ॥ महाराजा जयसिंह और विजयसिंह के साथ आपमन करके सुवर्ण का छ मोहर भट करके घड़ीभर बैठा ॥ २ ॥ और आरती के दर्शन करके विश्राम नामक नारायणको पृथ्वी पर साष्टांग बिधि

(६) हमारे नियमानुसार टाका का समाप्ति ऊपर कर दी गई वहीं पयन्त हमारा रघाहूर् टीका जाननी चाहिये परन्तु ऐसा सुना गया है कि राधराजा रानसिंह की तीर्थयात्रा के प्रकरण में प्रथमकी सूर्यमल्ल ने यह एक मयूख सायनार के समग्र पहिले बना रक्खा था जिसको सूर्यमल्ल के दत्तक पुत्र मुरारिदान ने अपनी रधा कथिता में मिला दिया इसकारण सायनार पाठकों की सुगमता के अर्थ जोधपुरके कविराजा मुरारिदान के अनुरोध से इस एक मयूख का अर्थ फिर लिख दिया जाता है जिसको हमारी नियमानुसार टाका के बाहर जाना इससे आगे की कथिता सूर्यमल्ल के दत्तक पुत्र मुरारिदान की रची हुई होने के कारण इस पर टीका बनाना छोड़ दिया गया है ॥

॥ प्रहर्षिणी ॥

सप्तस्यामुषसि परिक्रमाय पद्मयामायस्यन् दददथ तत्र तत्र वित्तम् ॥
विश्रामं प्रथममथ प्रयागघटं संपश्यन्नथ बलदेवघटमागात् ॥४॥

॥ वसन्ततिलका ॥

श्यामाभिधं कनकनाख्यमथार्थघटं घटं ध्रुवस्य कलयन्नथ मोक्ष
तीर्थम् ॥

रङ्गावर्मा तदनु भूतपतिं महेशं दृष्ट्वा तपे स्वशिविरं पुनराजगाम ॥५॥

॥ उपजातिः ॥

अथो भुजिष्यातनये निवृत्तमसूरिरोगेऽर्जुनसिंहनाम्नि ॥

आचारतः प्राप्तमुदस्तविघ्नमकारयद्रूपतिरम्बुसेकम् ॥ ६ ॥

अश्वे स्थितोऽध्यष्टमिभूतनाथपर्यन्तमेवाथ चलन् पदाभ्याम् ॥

विलोक्य रामं बलभद्रकुण्डेऽथ ज्ञानवापीमवलोकते स्म ॥७॥

॥ स्वागता ॥

बालकृष्णपटशोधनकुण्डं जन्मसञ्ज्ञा पितृबन्धनभूमिम् ॥

भूपतिस्तदनु केशवदेवं पश्यति स्म वनखण्डशिवं च ॥ ८ ॥

॥ शिखरिणी ॥

से नमस्कार करके अपने डेरे पीछा आया ॥ ३ ॥ छत्रमा के दिन प्रातःकाल में पैदल परिक्रमा करने को जहाँ तहाँ द्रव्य देता हुआ पहिले विश्राम घाट गया फिर प्रयाग घाट का दर्शन करके बलदेव घाट गया ॥ ४ ॥ वहाँसे श्याम घाट, कनक घाट, अर्थ घाट, ध्रुव घाट और मोक्ष तीर्थ गया वहाँसे भूतनाथ महादेव के दर्शन करके धूप में अपने डेरे पीछा आया ॥ ५ ॥ जिसपीछे राजा ने पासवानिये पुत्र अर्जुनसिंह को कुष्ठ (कोढ़) रोग मिटाने के अर्थ जल में स्नान कराया ॥ ६ ॥ अष्टमी के दिन भूतनाथ महादेव तक तो घोड़े पर चढ़कर गया और वहाँ से पैदल होकर बलभद्र कुण्ड पर राम (बलदेव) के दर्शन करके पीछे ज्ञानवापी का दर्शन किया ॥ ७ ॥ जिसपीछे राजा ने बालकृष्ण के बल धोने के कुण्ड जन्मघर भूमि और माता पिताके बंधनकी भूमि को देखकर केशवदेव और वनखण्डी शिव के दर्शन किये ॥ ८ ॥

महाविद्या देवीमगमददसीया च सरसी,
सरस्वत्या. कुण्ड तदनु च तदीयं स्मरमपि ॥
शिव गोकर्णेशं तदनु गणप दीर्घवदनं,
ततस्तीर्थं भूपो दशतुरगमेघाभिधमगात् ॥ ९ ॥

॥ उपजाति ॥

सरस्वतीसङ्गमकृष्णगङ्गावैकुण्ठघटानथ सामघटम् ॥
ददर्श भूमीपतिरष्टकुण्डघटे हनूमन्तमथैकवन्तम् ॥ १० ॥

उपजाति.

ततो द्वारकाधीशमालोक्येव पुन प्राप विश्रान्तिघटं क्षितीश ॥
परिक्रान्तिमेता यथाहं विधाय निकेतं निज भूषयामास भूप ॥ ११ ॥

उपजाति

ततोभिधाय प्रभुणा नवम्पामाकारणां मायुरपण्डितानाम् ॥
प्रश्नानुवादेतररीतिचञ्चत्कार्लिरश्रूयत शास्त्रचर्चा ॥ १२ ॥

॥ शालिनी ॥

एकादश्या प्राप्य विश्रान्तिघटं तत्र स्नात्वा सावरोध क्षितीश ॥
स्तुत्वा भानोर्नन्दिनीं भक्तियुक्त प्रादाह्वान शास्त्ररीत्या द्विजेभ्य ॥ १३ ॥

घटा से महाविद्या देवी के दर्शन करके अक्षयिना नामक सरोवर पर,
गया, वहां से सरस्वती कुण्ड और सरस्वती कुण्ड के करने को भी देखा तिस
पीछे गोकर्णेश्वर महादेव के दर्शन करके दीर्घवदन गणेश के दर्शन किये
तिसपीछे वृषाश्वमेध तीर्थ गया ॥ ९ ॥ सरस्वतीसङ्गम, कृष्णगंगा, वैकुण्ठ
घाट और साम घाट के दर्शन करके राजा ने वैकुण्ठ घाट पर हनुमान् और
गणपति के दर्शन किये ॥ १० ॥ जिसपीछे द्वारकाधीश के दर्शन करके राजा
दीक्षा विश्राम घाट आया, इस परिक्रमा को पयायोग्य रखकर राजा अपने
देरे आया ॥ ११ ॥ जिसपीछे राजा ने नवमी के दिन मथुरामिषासी पड़ितों को
बुलाकर शास्त्रचर्चा सुनी ॥ १२ ॥ एकादशी के दिन राजा ने विश्राम घाट
जाकर राणियों सहित स्नान करके और पशुमा की भाँति पूजित करके

॥ उपेन्द्रवज्रा ॥

गजं शतद्रम्मयुतं विचित्रप्रवेशिपर्याणनिबद्धशोभम् ॥
ददौ महेशो दश१०निष्कयुक्तं द्विजाय सर्वाम्बरपूजिताय ॥ १४ ॥

॥ उपजातिः ॥

अश्वं शतद्रम्मयुतं सपञ्चनिष्कं स्फुरद्राजसुभाण्डशोभम् ॥
वस्त्रैः समस्तैः परिपूज्य भक्त्या ददौ द्विजेन्द्राय महीपतीन्द्रः ॥ १५ ॥
एकैकनिष्कान्वितपञ्चपञ्चद्रम्मार्चिताः पञ्चदशान्न गावः ॥
द्विजेश्वरेभ्योम्बरपूजितेभ्यो भक्त्यात्यसृज्यन्त महीश्वरेणा ॥ १६ ॥
सुवर्णमर्त्यादिकमर्चनाङ्गं वधूचितं श्रीयमुनाम्बरौघम् ॥
अष्टाधिकं विंशतिमत्र भूमेर्निवर्तमानामदिशत्प्रजेशः ॥ १७ ॥

॥ इन्द्रवज्रा ॥

सम्पूज्य तं तीर्थगुरुं स्वमाघिशौचादिना जीवनरामसंज्ञम् ॥
नानाम्बरैर्मौक्तिककर्णवेष्टहारान्वितैर्भूषयति स्म भूपः ॥ १८ ॥

॥ उपजातिः ॥

भोज्यं द्विजेभ्यो वसु भूरि चापि संकल्प्य सम्यग्गुरुदक्षिणां च ।

शास्त्र के अनुसार ब्राह्मणों को दान दिया ॥ १३ ॥ राजाने सौ रुपये और दस मोहर के साथ हाथी दान, सम्पूर्ण वस्त्रों से पूजन करके ब्राह्मण को दिया ॥ १४ ॥ और सम्पूर्ण वस्त्रों से भक्ति पूर्वक पूजन करके ब्राह्मण को सौ रुपये और पाँच मोहर के साथ घोड़ा दिया ॥ १५ ॥ श्रेष्ठ ब्राह्मणों का भक्ति से पूजन करके एक एक मोहर और पाँच पाँच रुपयों के साथ पन्द्रह गायें दीं ॥ १६ ॥ राजाने यमुना पर सुवर्ण की मूर्ति आदि का दान दिया. और उस पूजा के अंगभूत स्त्रियों के योग्य वस्त्र समुदाय दिये. और अट्ठाईस निवर्तन भूमि दी. बीस बाँस का एक निवर्तन होता है. “ निवर्तनं विंशतिवंशसंख्यैः ” इति लीलावत्याम् ॥ १७ ॥ जीवनराम नामक तीर्थगुरु को अपने हाथ से चरण धोने आदि विधि से पूजन करके अनेक प्रकार के वस्त्र, मोतियों के झुंडल और हार से सुशोभित किया ॥ १८ ॥ दक्षिणा सहित ब्राह्मणभोजन और गुरुदक्षिणा का संकल्प करके थोड़ासा दिन बाकी रहने पर राजा ने राजकुमार को जनाने

रामसिंहका तीर्थयात्रा करना] अष्टमराशि-चतुर्दशमयुग (४३११)

दिनेल्पशेषे सकुमारमन्त पुर निकेताय समादिदेश ॥ १९ ॥
नरिजनानर्हीस तत्र पुष्पवृष्टिं विधायाऽऽब्रजता नृपेण ॥
अकार्यत स्वानुगद्वास्तिनिष्ठजनेन वृष्टी रजतात्मिकापि ॥ २० ॥
परेशुराहूय निजाऽनिजान्बुधान्पुरोधसाऽर्च्य प्रतिमूर्त्यदिक्षत् ॥
द्रुम तथान्नादि च पञ्चभोज्यं द्विजान्सहस्रं च तदन्वभोजयत् ॥ २१ ॥

॥ अनुष्टुप् ॥

त्रयोदश्या १३ दिगद्वयो ६७१० न्मितान्स्त्रीसहितान्द्विजान् ॥
अभोजयच्चतुर्वेदान्सपादद्रुमदक्षिणाम् ॥ २२ ॥

॥ उपगीति ॥

राधारमणो भट्टाचार्योपाख्यव्रजकिशोर ॥
पुत्रोस्य रामबाबूरेते वृन्दावननिवासा ॥ २३ ॥

॥ गीति ॥

माथुरगङ्गारामश्चेतिबुधा. प्रागनागता मुख्या ॥
आजगमुर्नृपहृता यमुनातीर्थान्तिकोत्सगतसदसम् ॥ २४ ॥

॥ इन्द्रवज्रा ॥

सरिरेन्द्रस्य वरेण्य आशानन्दस्तथा मेधिलबापुदेव ॥

मैं जाने की आज्ञा दी ॥ १९ ॥ सायकाल की आरती के समय में वहा (बिआम
घाट) पर राजा ने पुष्पों की वृष्टि करके रजत (चांदी) की वृष्टि भी
॥ २० ॥ दूसरे दिन अपने और दूसरे पंडितों को बुलाकर पुरोहित के द्वारा सब
का छुदा छुदा पूजन करके एक एक रुपया दक्षिणा के साथ पाच
से एक हजार ब्राह्मणों को भोजन कराया ॥ २१ ॥ फिर त्रयोदशी के
सवा सवा रुपया दक्षिणा के साथ स्त्रियों सहित छः हजार सात सौ
चौथे ब्राह्मणों को भोजन कराया ॥ २२ ॥ वृन्दावन में रहनेवाले
भट्टाचार्य, ब्रजकिशोर, ब्रजकिशोर का पुत्र राम बानू और मथुराका
पे प्रधान चार पंडित पहिले नहीं आये ये सो राजा के बुलाने पर आये ॥ २३
॥ २४ ॥ जिनमें से गंगाराम के साथ राजा के भेट पहिले आशानन्द

शास्त्रार्थमातेनतुरत्र गङ्गारामेण सार्धं घटिकोनयामम् ॥२५॥

॥ वसन्ततिलका ॥

ते प्रेषिता निजगृहान्प्रति पंचपंचदम्मारचिता अथ परत्र दिने तु पौरः॥
सदम्मदक्षिणामभोज्यतविप्रवर्गः शिष्टाप्यपूरि सहसत्कृतिदेयमात्रा २६
॥ वैताल्लीयम् ॥

अथ माधवशुक्लपक्षतावनुवृन्दाविपिनं ब्रजन्तपः ॥

निशि षड्घाटभाजि कालियन्हृददेशे शिविरं स्वमाविशत् २७

॥ वसन्ततिलका ॥

मातामहीसदनमेत्य परेद्युराप सार्द्धांमुषट्सु घटिकासु निशि स्ववासम्
आचम्य कालियन्हृदस्थ तृतीयतिथ्यां वृन्दावनस्य निरियाय परिक्रमाय
॥ इन्द्रवज्रा ॥

गोपालघट्टायमुनाल्पधारापर्यन्ततीर्थानि समेत्य पद्म्याम् ॥

अश्वेन वासं स्वमुपेत्य मातुः पुण्याय राजार्पित गौस्सनिष्का ॥२९॥

॥ द्रुतविलम्बितम् ॥

अथ विहारिद्विंशिरसा नतो मदनमोहनमेत्य च संस्तुवन् ॥

मैथिल बापूदेव ने एक घड़ी कम एक पहर तक शास्त्रार्थ किया ॥ २५ ॥ तिस
पीछे उन चारों पण्डितों को पांच पांच रुपयों के साथ पूजन करके घर पहुंचा
और दूसरे दिन पुरवासी ब्राह्मणों को एक एक रुपये के साथ भोजन कराया
और बाकी रही यात्रा को सत्कार के साथ पूर्ण की ॥ २६ ॥ इसपीछे वैशाख
शुक्ल प्रतिपदा को वृन्दावन को जाते हुए राजा ने कालीदह प्रांत में लगे हुए
अपने डेरों में प्रवेश किया ॥ २७ ॥ दूसरे दिन नानी के स्थान पर जाकर साढ़े
छः घड़ी रात गये पीछा डेरे आया जिसपीछे तीज के दिन कालियद्रह में
आचमन करके वृन्दावन की परिक्रमा करने को निकला ॥ २८ ॥ गोपाल घाट
से लेकर यमुना की अल्प धारा तक पैदल होकर तीर्थों की परिक्रमा करके घोड़े
से अपने डेरे आकर माता के पुण्य के अर्थ राजा ने एक मोहर के साथ एक
गौ अर्पण की ॥ २९ ॥ इसके अनन्तर श्रीकृष्ण विहारी को नमस्कार करके स्तुति
करता हुआ मदनमोहन को प्राप्त होकर अपनी माता की माता (नानी) का

रामसिंहा का तीर्थयात्रा करना] अष्टमराशि-चतुर्थमयूख (४११३)

स्वजननीजननीक्षणाकृन्नुप शिविरमाप निशि महरे गते ॥३०॥

॥ भुजङ्गप्रयातम् ॥

चतुर्थ्यां४ कलिंदारमजास्वल्पधारास्थलाच्छेषतीर्थानि पदक्ष्यामुपेत्य
परेद्युर्द्वेदे कालियस्याप्लुतस्सन् गजाना जलक्रीडनान्पालुलोचे३१

॥ उपजाति ॥

पष्ट्या नृपेणाद्भुतशास्त्रचर्चासभाजिताकारि समा बुधानाम्॥

भूय परेणा द्युयुगेन सान्त पुरेणा ततीर्थपरिक्रमोपि ॥ ३२ ॥

॥ पुष्पिताग्रा ॥

तदनु सदरत्नैर्महारेज भरतपुरेद्वलवतसिंदयुक्तम् ॥

प्रकटयितुमुदन्तमुर्व्यधीशप्रदित इषाय हमीदक्षा नवम्याम्॥३३॥

॥ भुजङ्गप्रयातम् ॥

दशम्या ययौ राजमाता स्वमातुर्विलोकाय घस्नेर्दयामावशेषे ॥

धरेशस्तु मातामर्दी वीक्ष्य नैज निकेत पुन प्राप रात्रौ निशीथे॥३४॥

॥ मन्दाक्रान्ता ॥

एकादश्यामकृत बहुलस्त्रीजनैर्देवयात्रा-

मध्वन्येवामिलदवानिपस्य प्रसू स्वप्रसूयुकू ॥

दर्शन करता हुआ पहर रात गये अपने डेरे पहुँचा ॥३०॥ चौथे दिन यमुना की
स्वल्पधारा के स्थल से लेकर यात्री के समतीर्थ राजाने पैदल होकर किये और
दूसरे दिन कालियग्रह में स्नान करके हाथियों की जलक्रीड़ा देखी ॥ ३१ ॥
छठ के दिन सभा को जीतनेवाले राजा ने पण्डितों की बिलक्षण सास्त्र
चर्चावाली सभा कराई तिसपीछे दो दिन में जनाना सहित घन्टावन की
प्रदक्षिणा की ॥ ३२ ॥ जिसपीछे नवमी के दिन भरतपुर के पति बलवन्तसिंह
के साथ सदरत्नैर्महारेज को समाचार जनाने के अर्थ राखराजा का भेजा
हुआ हमीदक्षा गया ॥ ३३ ॥ दशमी के दिन राजमाता चार घड़ी दिन यात्री
रहे अपनी माता से मिलने को गई और राजा अपनी मामी से मिल कर अर्द्ध
रात्रि को पीछा अपने डेरे आया ॥ ३४ ॥ एकादशी के दिन बहुत स्त्रियों के
साथ देवयात्रा की और मार्ग में अपनी नानी से मिलकर राधारमण आदि

नत्वा राधाप्रियतममुखारतत्र गोविन्दमूर्ती-
रवाक्सार्वप्रहररजनेराजगाम रवधाम ॥ ३५ ॥

॥ प्रहर्षिणी ॥

द्वादश्यां सदनमुपेत्य मातृमातुः प्रत्यागात्सपरिकरो निशि स्ववेश्म ॥
अन्येद्युः सुरसदनेक्षणां भुजिष्यावर्गेष्वाकृत नृपतेः कनिष्ठमाता ३६

॥ उपजातिः ॥

तीर्त्वा तरीभिर्यमुनां परेद्युः प्रतिस्थलं राजतपंचरूपैः ॥
रासस्थलीमानसतीर्थमानविहारिणः सत्कुरुते स्म भूपः ॥ ३७ ॥
संस्थानमायन्नपि वृष्टिरुद्धो मातामहीकेतनमेत्य भूपः ॥
संध्यादिकर्माण्यशनं च तत्र विधाय रात्रौ निजवासमाप ॥ ३८ ॥
सेवानिकुञ्जादिषु पंचदश्यामुपेत्य राधारमणां विलोक्य ॥
द्रुमान् शतं पंचसुवर्णयुक्तान्दत्त्वैक्षतान्या अपि देवमूर्तीः ॥ ३९ ॥
दिने तृतीयांशमिते व्यतीते निकेतनं रवीयमुपेत्य भूपः ॥
पितामहस्याथ महासतीनां श्राद्धानि चक्रे प्रतिवर्षजानि ॥ ४० ॥
इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टमः ८ राशौ राम-

गोविन्दकी मूर्तियों को नमस्कार करके डेढ़ पहर रात्रि से पहिले अपने डेरे
आया ॥ ३५ ॥ द्वादशीके दिन नानी के स्थान जाकर पीछा अपने परिवार के साथ
अपने डेरे आया और दूसरे दिन पासवान स्त्रियों के साथ राजाकी छोटी माता
ने देव मंदिरों के दर्शन किये ॥ ३६ ॥ दूसरे दिन नावों से यमुना को तिरकर
राजाने जगह, जगह पांच पांच रूपयों से रासथली, मानसथली और मान
विहारी का सत्कार किया ॥ ३७ ॥ चौराहे पर पहुँच गया तो भी वृष्टिसे रुककर
नानी के मकान पर पहुँच कर वह राजा सन्ध्या आदि सत्कर्म और भोजन
वही करके रात्रि में अपने निवास स्थान आया ॥ ३८ ॥ पूर्णिमाके दिन सेवाकुंज
आदि स्थानों में राधाकृष्णके दर्शन करके पांच मोहर के साथ सौ रूपये देकर
और भी देवमूर्तियों के दर्शन किये ॥ ३९ ॥ और दिनके तृतीयांश (तीसरा)
भाग व्यतीत होने पर राजाने पितामह (दादा) की पतिव्रता राणियों के
धार्मिक श्राद्ध किये ॥ ४० ॥

सिंहचरित्रे

चतुर्दशो मयूख ॥ १४ ॥

प्रापो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

तजि वृंदावन तीज ३ तिथि, रहत घटी चउ सूर ॥

किय आरुहि बाढन क्रमन, द्विजन दुख करि दूर ॥ १ ॥

पहर इक्क १ रजनी नृपति, गोकुल मग्न विहाइ ॥

हुव दाखिल हेरन हरखि, धीरन मोद बढाइ ॥ २ ॥

पट्टपात

भुजगतिथी ५ सु प्रभात प्रथम अंतेउर चल्लिय ॥

आरुहि प्रभु पुनि अस्व महावन अप्पहि क्रम किय ॥

कन्ह चरित जो पुहवि तास प्रभु दरस उहाँ करि ॥

अंतेउर सह सिबिर होइ दाखिल सु ध्यान धरि ॥

आप्लवन अत्य सुदान्त सह किय पुनि जमुनातट क्रमन ॥

महिपाल जोरि अचल महिषि कियउ अप्पमोदित सबन ३

मन १ वन २ अत्यानुपास ॥ १ ॥

तर्पन आदिक तथ्य बहुरि करि नित्यकर्म बलि ॥

अर्वारुहि किय अटन द्विजन वारिद वृद्धन दलि ॥

मदिर गोकुलनाथ जाइ करि दर्स महामति ॥

प्रनमि प्रभु करि भेट बहुरि किय गमन श्रीजिप्रति ॥

करि दरस रौप्य दुअरसतक १०० कर पच ५ निष्क उत्तारन सु

इत्यादि सदन ईश्वर आखिल चलि इच्छन किय बहुत बसु ४

दोहा

सुक्र ६ असित २ षष्ठी ६ सुरहि, सत्तामि ७ उगगत सूर ॥

मुदजुत प्रभुहि मिलानहु, दिय बलदेव हजूर ॥ ५ ॥

राम राम करि दरस बलि, पुनि करि सिबिर प्रवेस ॥

भावितादि नैवेद्यहू, भेजिय भोग धरेस ॥ ६ ॥

करत कुच्च अष्टमि८ अहन, पुनि चहि दरस जरूर ॥

तुरगारुहि हाजरि त्वरित, हुव बलदेव हजरूर ॥ ७ ॥

पट्टपात्

करि इच्छन सत१०० दम्भ पंच५ निष्क रु करिनी इक१ ॥

उरसुत्ती१ सिरुपेच२ जटित हीरक१ सौवर्णिक२ ॥

इम करि भेट सुजान ग्राम मइनाम अटन क्रिय ॥

तहँ अवरोधन सहित महामति सिविर प्रवेशिय ॥

करि कुच्च बहुरि नवमी९ अहन खंदोली सु मुकाम क्रिय ॥

बिश्राम बहुरि दशमी१०दिवस मिलन अत्थ तहँ लार्डदिय८

रहि एकादशि११ तत्थ बहुरि द्वादसि१२ धरनीवर ॥

तेरसि१३ दिन पुनि रहि रु कुच्च चउदसि१४ क्रिय सत्वर ॥

चल्लत अकबर नगर तास गव्यूति२ प्रभू रहि ॥

चउ४ इक१ ५ साहब त्वरित उत सु आये मेलन चहि ॥

इनकेहु नाम उपपद सहित भिन्न भिन्न इह आनिये ॥

सम्मुह उदंत आवन सबै छप्पय छंद प्रमानिये ॥ ९ ॥

आजम नायब लार्ड सिकत्तर जाके उपपद ॥

हमलटीम१ इम नाम प्रथम१ हुव हाजरि संसद ॥

दूजो२ मौलन२ सोहु किलद्वर पद स मजष्टर ॥

ढीपरसन३ पुनि राम३ तिमहि उपपद सु कमिशनर ॥

पुनि जंटमजष्टर रेडल४ सु डिपटी नेट किलद्वरहि ॥

जंगी अनीकपति जहँ हुलसि आयो जनरल५ मेल चहि१० ॥

हरिगीतम्

तजि अब्ब सब्बन गब्ब वे५ दुतही बिछायत आइकै ॥

जयसिंह ओ तस भ्रात बिजय सु सिंह पुब्ब मिलाइकै ॥

रामसिंहकायुन्दीआतेअभेजोंसेमिलना]अष्टमराशि-पञ्चदशमयुग(४३१७)

उमराव दुर्जनसल्ल१ गोकुलसिंह२द्वै२ पुनि त्यों मिले ॥
तिम महासिंह पउत्त दुज्जनसल्ल३ मेलनकों मिल ॥११॥
पुनि खधजुटि मिलाप आपहि हमलटीनहुतै करघो ॥
जनरत्न१ रु मोलन३ आदितैं इक१ इत्य भाविकपै धरघो ॥
चढि वाह चलत्त चढ साहव वाम दक्खिन ठहै चले ॥
रहि अप्प मध्य निसेसज्जों वसुधेस अकबरपुर इले ॥१२॥
इम शिविर अकबरनैर उपवन राम नामक आइकैं ॥
चउ४इक१।५साहव नैर चल्लिय सिक्ख सासन पाइकैं ॥
तव दुग्गतैं दस१०तीन३।१३फेरहु नालि कागनके करे ॥
अरु अप्प तस प्रासाद आइ रु आन्हिकादिक आचरे॥१३॥
पुनि रहत चउ४ घटिका दिवापहि अप्प तरनिन आरुहे ॥
प्रभु ताजवीवी मुकरवन क्रमि अप्प दिडिनतैं छुहे ॥

रुहे१ छुहे अन्त्यानुपास ॥१॥

तस इक्खि उपवन१ तोपजत्रन२ अप्प तुरगारुह भये ॥
जो जत्र२ साहव सिष्टितैं तस किंकरन किय करमये॥१४॥
सवितास्त भूधरपै गये हुव शिविर दाखिल आइकैं ॥
रवि रहत घटिका नैन२ नवमी९ सोमबासर पाइकैं ॥
रथ तुरग आरुहि लाहं अेलनबरा शिविरहि आइकैं ॥
तजि पान आवत तास सम्मुह अप्प२०२।४सत्वर जाइकैं१५
करहु परस्पर सीस मात्र उठाइ भावुक त्यों मन्यू ॥
वलि भीमसिंह२०४।१कुमार पट्टप लाहं मेलनह वन्यू ॥
जयसिंह१विजय२सु सिंह सोदर कुमर अर्जुन त्यों मिले ॥
साहव सिकत्तर तास सन मिलि मोद पकज मन खिले१६
तिमही सिकत्तर हमलटीन मिलाप इडिठिहू करघो ॥

अरु लार्ड बाम अबाम इडविट रहि रु संसद पद धरयो ॥
 खुरसी स्वकीया मध्य राखि रु लार्ड बाम विराजयो ॥
 बलि हमलटीन सिकतरादिक लार्ड बामक बैठयो ॥१७॥
 अरु महाराजकुमार पट्टप अप्प२०२१४दक्खिन ओरमें ॥
 स्वक२०४१४बंधु जय ओ विजयासिंह सु तास सन्निधि रोरमें ॥
 अध तास अर्जुनसिंह बाबा ताज कुमरन पालजो ॥
 अरु महासिंह पउत्त गोकुलसिंह दुज्जनसालजो ॥ १८ ॥
 तस हेठ दुज्जनसल्ल नाथाउत्त खुगसिनतैं ठयो ॥
 इत्यादि भटवर सुख राखि घटीदुर्परिखद मंडयो ॥
 लौ अतर दुव२कर राम२०३१४पहु पुनि लार्ड अंगहि लाइकैं ॥
 दै पान सिक्ख बहोरि पूरव अप्प२०३१४ रीति पुगाइकैं ॥१९॥
 दशमी१०बलाप हिताय अलनबरा वस्तु समाजयो ॥
 तरवारि इक१ गुजरात संभव मुट्टि हाटक प्रेसयो ॥
 अरु समरपट दल२ चर्म३इक१बार्धा सु किरणपल्लहरी ॥
 इक१ बेणु मथ सिबिका४बनानिय टाटवाफियकी करी२०
 तिमही इवह५ सु तारको लालित्य कुंजर प्रेसयो ॥
 अरु कुमर पट्टप भीम२०४११हित हय१साज राजत साजयो ॥
 उरसूत्रिका२ सिरुपेच३इक१मंदील४ सिवपुर जो भयो ॥
 बाणारसीज दुपट्ट५ नामक बुट्टि कासइहू दयो ॥ २१ ॥
 दुस्साल६इक१त्यौ गरमपोसक७ रवर्णमय घटिका८दई ॥
 ताकौ हुती इक शृंखली पुनि सो सुवर्णमई नई ॥
 दुव२ नैन मय दुरबीन९ इक१ सौवर्णमसि आदान१० जो ॥
 अरु कलमदान११ ससाज ओ बन्नात१२ रंग दुर्भोनजो२२
 इम लार्ड प्रेषित वस्तु जो सब अप्प२०३१४स्वीकृतहू करयो

अरु तास मानुषकों पचत्तर७५ भूप रूपय बिस्तरयो ॥
 भूपाज हरितिथि१२ भरतपुर बलवत सहर सु थानभो ॥
 तस द्वार जाइ तुरंग उज्झत सोहु सम्मुह आतभो २॥३॥
 करिकैं परस्पर हत्य मत्य बहोरि भावुकहू भयो ॥
 अरु तास करपर अप्प कर करि बामन्है परिखद गयो ॥
 अरु रागि दक्खिन अप्प २०३१४ओ खुरसी अदक्खिनपैं ठयो
 इक १ नाहिका तहँ देसकाल उदंत मोदमई भयो ॥ २४ ॥
 गहि अतर कर बलवत दहहनइद २०३१४ अग लगावनौ ॥
 बलि सिक्खदै अति मोद जुत करि पुव्वक्रमपहुँचावनौ ॥
 कर उभय २ उत्तमअग भो बलवत स्वक गृहमें गयो ॥
 चहुवान अज निसापको बलि आन डेरनहू भयो ॥ २५ ॥
 गगानाय तिथि४ दिन आगरापुरतैं सु कुच्च प्रभू मयो ॥
 अजमादपुर बलि विंधईस मुकाम बाढ़िनिकों दयो ॥
 तिथि५नाग पोरोजा सु बाद बिभावरी पुनि त्यौरहे ॥
 तिम पष्टिका बिश्राम सकरबाद जाइ रु उम्महे ॥ २६ ॥
 किप सत्तर्मा ७ सुधवार ४ वास धरोल नामक गाममें ॥
 तहँ आइ साइब टालवट सँग रहन यात्रा आममें ॥
 तव उट्टि गहिपतैं प्रभू पयच्यारि ४ सम्मुह जाइपैं ॥
 पुनि हत्य दोउ २न मत्य माल उठाइ भावुक पाइकैं ॥ २७ ॥
 कथ टालवट नरपालतैं पुनि अमा जावनकों कह्यो ॥
 चहुवान अज दिवापनैं सुनि एह ओपितहू चहयो ॥
 आदेस जीवनलालतैं तस सग भोलि सुजानकों ॥
 जो कहैं साइब एह मिळनसों कथा सब आनकों ॥ २८ ॥
 डम अग साइबकों चलाइ रु अष्टमी ८ सु प्रभातही ॥
 करि कुच्च मैनपुरी समीप महीप सत्वर जातही ॥

पुरतैं सु साहब आइकैं विज्ञप्ति भूपतितैं कही ॥
 प्रभु अप्पतैं पुर साहबन मिलनार्थ प्रीति घनी चही ॥२९॥
 अरु अप्प सम्मुह आइबे सुहि द्रंग परिसरपैं खरे ॥
 तसमात चल्लहु बेगहू ब मिलाप आपहितैं वरे ॥
 इम नालिकिस्थ प्रभू चले विज्ञप्ति साहब पाइकैं ॥
 उततैंहु मैनपुरीस्थ साहब भूप सम्मुह आइकैं ॥ ३० ॥
 मिलि मत्थ हत्थ लगाइ दोउरन ओ अनामयहू करे ॥
 अरु सत्थ साहब लौ महीपति आइ डेरन उत्तरे ॥
 करि सिक्ख साहब द्वारतैं चढि तुरग रथ पुरमैं गयो ॥
 इत होइ दाखिल तूर्णही कटिबंध भूपति उज्झयो ॥ ३१ ॥
 दिवसेस घटिका१ इक्क१ रहत सु शिविर साहब आतभो ॥
 तस संग रीवाँनगरके सुभमनुज संसद पातभो ॥
 कछवाह भेट गनेससिंहहिं पंच५ रूप्यतैं करी ॥
 अर नयन२ वर्तुलतैं निछावरि अक्खि सुभ प्रभु आचरी३२
 भानेज बैठकपैं तिन्हैं प्रभु अगग बाम बिठाइकैं ॥
 अरु धाइभ्राता रत्नलाल सलाम१ बलि२ किय आइकैं ॥
 पुनि देसकाल उदंत साहब अक्खि पुरपति संक्रमे ॥
 अरु रत्नलाल गनेससिंह स्वईस कथ इम कहि नमे ॥३३॥
 प्रभु विश्वनाथ स्वईसहू ब जुदार मालुमहू करयो ॥
 विज्ञप्ति सुनि तस भद्र आखि स्वसीस छीबन कर परयो ॥
 दै सिक्ख डेरन तास ओ कटिबंध अप्प निवारयो ॥
 करि नित्यकर्महि आदि सर्वरिहू मुकाम तहाँ दयो ॥ ३४ ॥
 रयो१ दयो२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥
 कविबार६ नवमी९ अर्क उगगत कुच्च सत्वर ओ करयो ॥
 प्रभु विवर नामक ग्राममैं दलपात जामिनि भो परयो ॥

सनिवार७ दसमी१० दिवसछपरामहू जाइ रु स्थोरहे,
 एकादसी११ गुर१ साहिगज मुकाम राखन उम्महे ॥ ३५ ॥
 पुनि चदवासर२ द्वादसी१२ मीरासरायहि पाइकै,
 अरु वहाँ फरुकावादैतै मिलनार्थ साहब आइकै ॥
 मिलि देसकाल उदत अखिख रु सिक्ख साहबकौ दई,
 विल्लोर होत मुकाम चउदसि१४ छष्टिदिवनिस वहाँ मई३६
 पुनि तत्थ पुण्ड्राम दीह सक्ति प्रसाद मेलनहू रहे,
 शिविराजपुर पति सम्मुहाऽगम कोस इक१ रहि उम्महे ॥
 तब मेघ बुद्धिनैतै प्रभु तिनकोहु द्रग प्रयानभो,
 आदेस तस सतकारकौ बलदेव अत्थहि दानभो ॥ ३७ ॥
 बलदेवहू ब प्रधान सत्वर तास पुरप्रति जाइकै,
 अनुशिष्टि जिम सतकार तस करि सिबिर अप्पन आइकै
 अरु सत्य साहबतै महीपति अगग जान कहातभो,
 बलि मिलन कन्ह पुरत्य साह— सुनि तहँ पातभो ॥ ३८ ॥
 ॥ दोहा ॥

सुचि४माम रु पडिवा१ असित, तजि बिल्लोरहि तात ॥
 चढि चल्लिय शिविराजपुर, हरि जिम बिभव सुहात ॥ ३९ ॥
 सुनि इम सक्तिप्रसादहू, प्रभु सम्मुह मुदपाइ ॥
 पुरतै बे गव्यूति२ पर, अधिप मिलन रहि आइ ॥ ४० ॥

(षट्पात)

सम्मुह सक्तिप्रसाद आइ कर मत्य लगाइय ॥
 तब प्रभु आनन द्वयस अप्प सय इक१ उठाइय ॥
 कुसल परस्पर कहि रु क्रमिय डेरन दुवरसत्वर ॥
 सिक्खहु सक्तिप्रसाद करि रु किय गमन द्रग पर ॥
 बलि रहत अठ्ठ८ घटिका दिवस महमानी प्रेषित करिय ॥

प्रभु पंच सतक ५०० नाणक बहुरि पंचक ५ मन पक्कान्न दिया ॥ ४१ ॥

कुच्च दोजिरदिन करत सचिव तस आइ शिविर तहँ ॥

भूपति भ्रातन साहि नाम जहुवारसिंह जहँ ॥

करजोरि रु किय अरज प्रभू प्रासाद पधारहु ॥

मामक भूपति मिलि रु बहुत दुवर प्रीति बढारहु ॥

सुनि एह अरज चढि तुरग बलि पुरप्रति सत्वर संक्रमिया ॥

सिवराजपुरप उततैं सुनि रु महिपति सम्मुढ गमन किया ॥ ४२ ॥

[दोहा]

पुर परिसर नृप पाइ पुनि, मिलि कर मत्थ सिलाइ ॥

कियउ अप्प उन जिम सु कर, अरु दुवर महलन आइ ॥ ४३ ॥

पहु तहँ सकितप्रसादहू, बैठिय नृप दिस बाम ॥

स्वभट सर्व अपसव्यहू, इग क्रम शाखिय आम ॥ ४४ ॥

पुनि भट सकितप्रसादको, उग्रसिंह अभियान ॥

अरु जुहारसिंहहिँ नजर, किय माखन दीवान ॥ ४५ ॥

[पट्पात]

प्रभुकै इक १ सिरुपाव पंच ५ तखतीसय तिन किय ॥

असि इक १ पट्टिस एक १ स्वर्णमय मुठि समप्पिय ॥

दंती इक १ कुथ सहित तास होदन सु कठ मय ॥

तिम वनात कुथ साजि तुरग किय भेट महारय ॥

पंचदश अधिक रूपय सतक ११५ ये प्रभु नजर निवेदये ॥

महाराजकुमर अत्थसु बहुरि सिरुपावादि समप्पये ॥ ४६ ॥

दये १ पये २ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥

पंचक ५ तखती प्रमित दियउ सिरुपाव १ खड्ग २ पुनि ॥

पट्टिस ३ हाटक चोक १ मुठि २ किय नजर अच्छ चुनि ॥

तुपक इक १४ तिम तुरग ५ रजत भूखन शंगारित ॥

रामसिंहका तीर्थयात्रासे पीछा आना । अष्टमराशि-पञ्चदशमयुक्त (४३२३)

कियउ भेट तिम दम्भ भूत^५ भूपाल निष्क^१ मित ॥
इम करत अप्प प्रभु उच्चरिय हमरो अब जानाअटन ॥
तसमात यहै दसतूर सब भूपति तुम रक्खहु भवन ॥४७॥
॥ दोहा ॥

पुनि प्रभु सक्तिप्रसादको, दढ पय घोटक दिन्न ॥
राजत भूपन सहित रय, क्रम शिरुपावहिं किन्न ॥ ४८ ॥
तखतो पचक^५ केरसहु, अरु तोमर सुभ तास ॥
तस नेउर करि रजत मय, ललित दिय रु हुल्लास ॥ ४९ ॥
करत कुच्च कल्ल्यानपुर, प्रभुको तव पहुँचान ॥
महिपति महलान द्वार लग, उमगि कियो उन आन ॥५०॥
॥ षट्पात् ॥

कुसल पररपर करि रु दुव^२हि कर मत्प द्वयस दिय ॥
करि तस प्रभु सतकार क्रमन कल्ल्यानपुरहिं किय ॥
इम चल्लत पटसदन पंथ उपवन इक^१ दिछो ॥
प्रभु सट्पादिक कर्म करन तहँ जाइ पइछो ॥
असनादि कर्म तहँ करि अधिप रहत घटी^१ दिन संक्रमिय
सर्वरी पच^५ घटिका गयँ अंसुकसदन प्रवेस किय ॥५१॥
पद्धतिका ॥

किय कुच्च तृतीया^३दिन दिवान, सुकथा जु एह साहब सुजान^२
जनरल जग आव्हय कहत जाहि, आमय बहु वासर तास आहि^५
तातैं सु मज्जर कालडीक, अधिपति मिलाप भेजिय सुहीक ॥
पुनि सुनि रु टालबट मोद पात, ए दुव^२हि मिलि रु तजि पुरहिं
आत ॥ ५३ ॥

कंपू रु कन्हपुर बिच मिलाप, करि तत्प बिछायत हित अमाप ॥
तहँ रहिय उभय^२ साहब दिताप, प्रभु तास बिछायत अप्प पाय^५

जज आदि मजष्टर कालडीक, जानि रु प्रभु आगम अति नजीक
तब कालडीक तजि अश्वतात, अति प्रीति बिछायत प्रथमआत ५५
तब अप्प टालबट तजि तुरंग, आइ रु बिछात मिलि तहँ उमंग ॥
करि कुसल परस्पर हित दिखाय, पुनि उभय २ प्रीति कर मत्थ
पाय ॥ ५६ ॥

जज आदि मजष्टर कहिय एह, जनरलहिँ अप्प शिव चविष नेह
प्रतिउत्तर दिय प्रभु पुनि पुनीत, व्यवहार तासतैं हम सुनीत ॥ ५७ ॥
पुनीत १ सुनीत २ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥

इम अक्खि तुरंगम चढि रुतीन ३, साइब सह शिविरहिँ क्रमन कीन
इक १ कोस हुती नाली तुरंग, किय फैर त्रयोदश १३ तिन्ह उमंग ५८
कथ कालडीकतैं इम कहाइ, आतप बहु यातैं गेह जाइ ॥

इम कहि रु सिक्ख दै तास आप, लैं टालबटहिँ डेरन अचाप ५९
पुनि क्रमन चउत्थी ४ किय प्रभात, सरसोल ग्राम दिय सन पात ६०
कर कुच्च पंचमी ५ दिवस राम २० २१ ४, कल्ल्यानपुरै दिय पुनि
सुकाम ॥ ६० ॥

विश्राम फतैपुर षष्ठि ६ कासु, तहँ रहत घटी दुव २ दिवस आसु ॥
साइब चउ ४ आये मिलन काज, सुनिये तस आव्हय राजराज ६ १
उपपद सु मजष्टर सुहि थरंट १, नायब सु मजष्टर आदि जंट ॥
पलियम जु पिरासन २ नाम ताहि, इम रीठ ३ नाम साइब सु आदि ६ २
साइब सु टालबट ४ सत्थ जोहि, मिलि च्यारि ४ सभा आये सु मोहि
अरु अस्त्र बिछायत लग उताल, आतहि तब सम्मुह क्रमि नृपाल ६ ३
मिलि सबन मत्थ कर तब मिलाइ, आनन तक प्रभु कर जमहि
आइ ॥

करि कुसल परस्पर हित बढारि, प्रभु बैठि तखत संसद पधारि ६ ४
दिस बाम दुलीचनहू बिछाइ, तिहिँ उपपर साइब सब बिठाइ ॥

रामसिद्धकातीर्थपात्रासेपीछाआना] अष्टमराशि-पञ्चदशमयूख (४३२५)

छाह १ ठाह २ अंत्यानुप्रास ॥ १ ॥

करि समय वृत्त गहि अंतर दान, चवि सिक्ख लगायो चाहवान ६५
किय क्रम पुरी साहब पुरत्य, तत्तेव टालवट रहिय सत्य ॥
इक सिविर अत तारा स आहि, प्रभु अप्प १ टालवट २ दुव ३ समाहि ६६
अब बहुरा जीवनलाल आइ, पुनि हुकम हमीयदखी सु पाइ ॥
किय मत्र अद्द घटिकादिवान, दै सिक्ख ताहि किय तखत आन ६७
बलभद्र हुतो नागोध पट्ट, दिन दिवस सोहु लग्गो कुबट्ट ॥
साहब अनाम किय कैद जाहि, गकिखय प्रयाग निवस्य रसाहि ६८
तस राघवेंद्रसिंह जु अप्प, दिप साहब तासहि राजकृत्य ॥
सुभ मनुज तिन्ह भोजिय भुवाल, सोती सु मारफत कृष्णलाल ६९
पोराणि क कासीनाथ २ पात, अरु पुगेधाहि नदन उम्हात ॥
सो रामरसीले २ नाम रूपात, पंडित ३ अनाम मिलि सभा पात ७०
दै ग्रामिख अक्खि रु भद्र भूप, इक १ तुपक निवदिय पुनि अनूप ॥
टहरी सु जात सौवर्ण अग, अरु कुद रजतमय कलि अमग ॥ ७१ ॥
त्यारी सु राजती बहुरि सत्य, बलि सम्मुह पैठि रु मिसल पत्य ॥
अक्खिख जुहाग नृप अस्मदी १, सुभ अक्खिख तिन्ह पुनि तस सुदीय
प्रभु पूछि राजवृत्तान्त सर्व, दिप सिक्ख सिविर दित करि अखर्य ॥
पट्टप सु भीम २०३१ आयठ कुमार, आमय ममूरि सिंधूततार ॥ ७३ ॥
कगि नजर निछावरि मिसल लेन, तस पूछि अनामय सिक्ख देत ॥
किय कासमहू सप्तिम ७ मुकाम, रीवाँपुर आगम सुनर राम २०२ १४
मथुराप्रसाद १ भूसुर भुवाल, नारायन २ पाठक तिम उताल ॥
सवय रचन तह दुवरहि आइ, इनकी सु प्रभू पुनि अरज पाइ ॥ ७५ ॥
अरु बहुरा जीवनलाल थान, आरुहि गज उप्पर कियउ आन ॥
ताजिगजरु शिविर प्रविसे सु विप्र मिलि कुसल अक्खि अरु मत्रछिप
तब बहुरा जीवनलाल १ तत्य, अरु अमृतलाल २ आता सु अत्य ॥

तीजो३ वकील हस्मीदखाँहिं, आचारज आसानंद आँहिं ॥ ७७ ॥
 नृप विश्वनाथ हम कथन गोप, ममगेह पुलिका तुमहिं देय ॥
 सुनि मंत्र एह घटिका सु तीन३, पुनि जीवनलातहिं सिक्खकीन ७८
 अरु बत्त नाँहिं स्वीकार एह, बलि विप्र गये दुव२आसु गेह ॥
 पुनि नयन२ सप्तमी७ दिन प्रभात, प्रभु सरैई सु किय संन पात ७९
 करि कुच्च अष्टमी८दिन सुकाम, पहु दियउ कर्साया नाम गाम ॥
 इक१कोस हुती गंगा उहांसु, अवरोध सहित किय गमन व्हांपु८०
 करि स्नान धेनु दुव२दियउ दान, हांकिय निज डेग्न चाहवान ॥
 इम आइ शिविर सर्वरि वितात, पुनि करिय कुच्च नवमी९प्रभात ८१
 मँगतीपुरा सु प्रभु दिय मिलान, दसमी०१किय हूमनगंज आन ॥
 एकादशि११वासर सोम पात, अति उमगि प्रयान सु राज आ त ८
 संमट१रु हलीहर२समट३नाम, कपतान लय३हि उपपद सु काम
 आइउ प्रभु सम्भुह अर्द्धकोस, जो जनरल साहबकै भरोस ॥ ८३ ॥
 मौलि क्रमन बरबबर बाम भाग, प्रभु आइ शिविरसन्निधि प्रयाग ॥
 तस दुगग बरबबर बाग ताहि, अवनीपति तामैं रहन आहि ॥ ८४ ॥
 किय शिविर तथ्य प्रभु हुकम पाइ, अवरोध रु भट सब शिविर आइ
 प्रभु सिक्ख साहबन पुनि समप्पि, कटिबंध निवारन बहुरि थप्पि
 ॥ दोहा ॥

श्रीप्रयाग संज्ञा किते, बदत इलाहाबाद ॥

किमहु होहु पै पाप गज, गज्जत सिंह निनाद ॥ ८६ ॥

॥ षट्पात् ॥

चढि तुंग किय क्रमन अप्प माधववेनी पहुँ ॥

करि मुंडन पुनि स्नान अस्थि पूजन प्रभु किय तहँ ॥

प्रनमि भूप उर द्वपस मोद सह गमन नीर किय ॥

पितरन पुनि करि स्तवन अस्थि कर अप्प प्रवेसिय ॥

रामसिंहाकातीर्थयात्रासेषोछात्राना] अष्टमराशि-पञ्चदशमयूग (४३२७)

आप्लवन करि रु पुनि धेनु इक१ उभयमुखी दिय भूसुरन,
बलि महुर पचपदै नित्य करि कियउ प्रभू डेरन गमना ८७।
द्वादशि१२ दिन नृप सदन गवरनर जनरत्न लार्हहु,
नाम अलोनवराहु तास प्रतिहार आइ पहु ॥

अरज कराइय एह लार्ह पहु मिलन अज्ज बहि,
अरु वकील नरनाह हमिदखी वृत्त एह कहि ॥

सुनि एह अरज प्रतिहारप्रति उत्तर दिय तुम इम चवहु,

अज्ज करि पितर तर्पन बहुरि कलिह मिलन हमरो चहहु ॥८८॥

इम कडाइ चढि अधिप चालिय गगा१मिलाप तहँ,
सरस्वती२जमुना३हु इक१ हुव नीर आइ जहँ ॥

पचम५ नामक गुरुहि बहुरि बुधजनन धुलाइय,
शास्त्र उक्त विधि सहित श्राद्ध तिन प्रभुहिँ कराइय ॥

दै दान द्विजन पचम सु मुख रस६घाटिका जावत रजनि,
आरुहि सु अर्थ नमि द्विजनन शिविर प्रवेशिय महीपमनि ८९
तेरसि१३ दिन पुनि रहत गमन साहब मिलाप सन,

नाम अलोनवराहु गवरनर जनरत्न कमरन ॥

मेजिय सम्मुढ त्वरित इस्तरेजी सु सिकत्तर,
सचिव लार्ह१को बहुरि नाम नाहि सु साहबबर ॥

सकटी१तुरंग चढि पुनि दुव२सु आइ रु मिलि प्रभूत सुमन,
कर मत्य करि रु सुभ लार्ह कृत अगग प्रभू सह किय अटन ॥९०॥

॥ दोहा ॥

पहुँचत कमरन अधिप तहँ, चोक अनायत पाइ ॥

अयमय नालिनके उतसु, तेरह१३ फेर कराइ ॥ ९१ ॥

॥ षट्पात् ॥

कमर लार्हसन क्रमत इस्तरेजी१ पुनि आइरु ॥

मैडकर साहब आइ बहुरि अतिमोद बढाइरु ॥
 करन परस्पर सीस कुसल करि कसर प्रवेसत ॥
 उततैं सम्मुह लार्ड द्वारलग सत्वर आवत ॥
 मिलि खंध जुट भावुक भनि रु वलि लगाइ दुवर्मत्य कर ॥
 संसदहिं पाइ साहब सहित खुरसिन उप्पर बैठि वर ॥ ९२ ॥
 बैठिय नृप दिस बाम अलीनबरा? सु लार्ड तहँ ॥
 मैडकर बैठिय सव्य बहुरि जयसिंह? विजय जहँ ॥
 याके अध भट? सचिव? तीस ३० अभुकेर मुदित मन ॥
 मध्य विराजिय अप्प समय चवि कृत धाराधन ॥
 घोटक? मतंग? भूखन? तुपक? वरत्रादिक प्रभु भेट दिय
 इम तुपक? तास पुर जात पुनि नाम रफल करि नजरकिय ६३
 ॥ दोहा ॥

किय अवरोधन सह क्रमन, गंगातट प्रभु न्हान ॥
 मज्जन करि डेरन गमन, चउदसि १४ दिन चहुवान ॥ ९४ ॥
 अमा ३ दिवस पुनि गंगतट, अंतेउर सह आइ ॥
 कियउ स्नान आदिक प्रथम, ग्रहन मगम तहँ पाइ ॥ ९५ ॥
 प्रभू दुवर्हि किय दान पुनि, रजततुला प्रभुअपि ॥
 अंबा अमानकुमरी उमगि, बैठि रु विप्र समपि ॥ ९६ ॥
 महिषी स्वरूपकुमरी दियउ, द्विजन दान सुद पाइ ॥
 कथन सस्ति पुनि अप्प करि, उमडित डेरन आइ ॥ ९७ ॥
 पाड़िवा १ सित पंचम सुरहिं, महिष बुलाइ मिलान ॥
 पूजन करि तस प्रीति सह, दियउ अप्प कर दान ॥ ९८ ॥
 ॥ षट्पात् ॥

शक १ मतंग बन्नात सिरी कुथ सहित समपिय ॥
 हाटक भूषन १ तुरगर बहुरि बन्नात जीन दिय ॥

रामासिंहकातीर्थयात्रामहार्हसेमिक्षना] अष्टमराशि पञ्चदशमयुक्त(४१२२)

सिरुपाव१।३रु सिरुपेच१।४कटक१।५उरसूत्रिका१।६हितिम
धेनू दुव२ शिविका१ रु निष्क८ पंचक५ रुपय९ जिम ॥

इसुख५०।९सोह पचक अरथ गाम१लोहली१।१०निष्कदुव२
इम करत बहुरि अवरोध सन भिन्न भिन्न तहँ दान हुव॥९९॥

दोजि२ दिवस उपवीत लियउ प्रभु ब्रह्मवर्ष पुनि॥

पचमि५ दिन लौ अप्प भीम२०३।१ कुमरहि सुभटन चुनि॥

शास्त्रउक्त विधि सद्धि भीम२०३।१ सह सुभट सधाइय ॥

दियउ दान भू१ भर्म२ द्विजन बहु मोद बढाइय ॥

पाटिका६ दिवस हुवे मेघ मर सप्तमि७ बुधहिँ मिलानरहि

अवरोध सहित एकादशिय११चलिय गगतट न्हान चाहि१००

मनोहरम्

भूप दशाश्वमेध उप्परि पधारि पुनि,

अप्प कर न्हाइ भरे दुव२ घट प्रवाहैं ॥

तर्पन रु नित्यकर्म आइ करि तीर्थ द्विज,

दैकै गो१ सनिष्क२।१ द्रम्म३।५ पंचक५ उछाहैं ॥

पुनि प्रभु अश्वदश१०मेधके वितर्द पर,

जाइ रु प्रनाम कियो पर्वईके नाहैं ॥

निष्क इक१ नाशक२।१ महीपति व्हाँ भेट करि,

भोजन द्विजन वषे रुपय सजाहैं ॥ १०१ ॥

शिविर प्रवेशि पुनि द्वादशी१२ दिवस पात,

भोजिय हमीवखाँ वकील लार्ह घरकों ॥

जाइ तहँ मैडक सिकतरसों अक्खि इम,

लैचलो डेरन हमारै गवरनरकों ॥

जाइ तिन लार्ह अलीनबरातें एइ कही,

चालहू मिलाप आप बुन्दीधरावरकों ॥

बहुरि हमीदखाँकी अरज यहही सुनि,
 आवत शिविर प्रभु लैकैं सिकत्तरकों ॥ १०२ ॥
 साहब सिकत्तर वजीर नाम डोरन१ आ,
 कालाविल्ल२ त्योंही हरीसन३ हर्लाहर४कों ॥
 लार्ड अलीनवराको अमात्य गखन तोस,
 समरढ६ नाम पै कुहात सिकत्तर६कों ॥
 अंसुकसदन ईस गाइब७ खुरम८ लोही,
 रथंदन सदन ईस आयो राग२०२४घरकों ॥
 टालबट९ आयो त्यों उमंगि नहिपाल पुनि,
 जनरल१० जंगी ईस तजिकैं गुमरकों ॥ १०३ ॥
 बैठक चउ४नको तुंगरथ इक१ तापैं,
 लार्ड चढि शिविर महीपतिके आतभो ॥
 एह सुनि लार्ड अलीनवराके सम्मुहकों,
 जीवनसहितलाल१ सचिव पठातभो ॥
 महासिंहउत्त भट धौकल२ रु गोकुल३त्यों,
 सासन भुवालकेतैं त्रिकन जातभो ॥
 जाइ मिले उक्त लार्ड साहब सहित सब,
 शिविर महीपतिके उमंगि सु आतभो ॥ १०४ ॥
 शिविका अरोहि प्रभु सम्मुह बहुरि जाइ,
 मिलिकैं परस्पर लगायो सीस करकों ॥
 कुसल दुहँ२घाँ होइ साहब बहुरि कही,
 भूप हम सन्निधि विराजैं बत्त बरकों ॥
 सुनिकैं नृपाल लार्ड साहबके वामभाग,
 बैठि रु कुसल कियो भूप सिकत्तरकों ॥
 मोदसह लार्ड भूप२ मैडकैं सिकत्तरहू,

रामासिंहकातर्पिणाग्रामेलाईसेमिलना] अष्टमराशि-पंचदशमयूख (४१३१)

बैठिकें तुरगरथ आये बस्त्रघरकों ॥१०५॥

गिविर प्रवेशि लार्ड साहब सहित आप,
ससद पधारि सब बैठे खुरासिनतैं ॥

खुरसी स्वकीया मध्य राजतीषैं बैठे अप्प,
भेडकरहू सब्य बैठो— राम२०२।४ इनतैं ॥

वामभाग बैठो लार्ड साहब महीपतिनैं,
समर जु आदि नव९ बैठे अध जिनतैं ॥

जीवन३ अमात्य हो हंमिदखाँ४ वकील बैठे,
करन५ कल्पान६ आदि वीर अध तिनतैं ॥ १०६ ॥

(दोहा)

समय देस वृत्तात चवि, करन मत्र एकत्त ॥

शिविर अत ए लार्ड सह, तिम मैडक क्रमि तत्त ॥ १०७ ॥

जीवनलाल बुलाइ जहँ, अरु हमीदखा आइ ॥

करि रहस्य डक१ नाडिका, पुनि पहु ससद पाइ ॥ १०८ ॥

अतरपान पुनि अप्पिके,

गिरुपेच१।२रु दुस्साल१।३पुनि, जटित गिलगी१।४अप्पि१०९

मुत्तिनमय उरसूत्रिका१।५, पट्टिस१।६ निज पुरजात ॥

चोक स्वर्ण बलदार मय, तुपक इक१ दिय तात ॥ ११० ॥

(घट्पात)

दती इक१।७ बन्नात सिरी कुथ माहित समप्पिय,

तुग्ग२।८ दोइ२ सौवर्ण बहुरि राजतखन—दिय ॥

इत दै सिक्ख सुजान वाइय डेरन लग आइ रु,

भनि भावुक प्रभु लार्ड मत्थ कर दुहुँ२न लगाइरु ॥

चढि लार्ड तुरगस्पंदन बहुरि मोदित बैंगलन गमन किय,

इकवीस२१फैरनालिन अधिपकरि कटिबंध निवारिदिय१११

॥ निश्शाणी ॥

चउदासि दिन भर मेघतैं डेरन रहि पाया ॥
 पुनि पुणिणाम नृप न्दानकों गंगातट आया ॥
 जानि तिथि क्षय जनककी तर्पन उमगाया ॥
 मज्जन करि विधि सहित श्राद्ध द्विजदान मिलाया ॥११२॥
 रजर्ना वित्तत बानपु बहुरि डेरनपर आया ॥
 सावन पड़िवा असित तत्थ प्रभु रहन उम्हाया ॥
 दोजि२ दिवस नृप दत्त लार्ड शस्त्रादि भिजाया ॥
 तब नृप सचिवन अक्खिक्कैं तस मोक्ष कराया ॥११३॥
 चपारिसहँस४०००सत अट्ट८००पंचनभ५०शौण्ड मगाया ॥
 दै हमदिखां हत्थ लार्ड बँगलन भिजवाया ॥
 क्रियउ नजर तहँ जाइ लार्ड लौ मोद बढाया ॥
 दिन चउत्थ४ दीवान शिविर साहब छुद आया ॥११४॥
 कग्गर बंघि अमात्यहू सब वृत्त सुनाया ॥
 उदयपुराधिप रान नाम सिरदार कहाया ॥
 वृंदावन सेवन करन अगैं तहँ आया ॥
 सो अट्टारह१८ दिवस रहि रु परलोक पलाया ॥११५॥
 पंचमि५ दिन पुनि पाइकैं चर एह सुनाया ॥
 जैपुर गोकुलचंद्रमा जयसिंह थपाया ॥
 सेवक बल्लभ तादिको गुस्सांइ कहाया ॥
 नंदन गिरिधर सहित उमांगि डेरन पहँ आया ॥ ११६ ॥
 तब प्रभु सम्मुह तास बाहय डेरन लग पाया ॥
 नमन करन करजोरि प्रीति सह सीस नमाया ॥
 अंसुकसदनहि लाइ बहुरि तिन तखत बिछाया ॥
 प्रभुको चोका तखततैं अपसव्य बिछाया ॥ ११७ ॥

बैठि रु चवि वृत्तात समय दुहुँ२सख दिखाया ॥
 नजर तीन३ किय निष्क प्रभु पट्टिस पुनि पाया ॥
 चोक स्वर्णमय तास समन करि सिक्ख दिवाया ॥
 बादध शिबिर लग बहुरि आई तिन मुद पहुँचाया ॥ ११८ ॥
 बलि प्रभु डेरन प्रविमिकै कटिबध विहाया ॥
 पष्टी६ दिन तिन सप्तमी७ अष्टमि८ तहँ पाया ॥
 नवमी९ साहब मिलन कज्ज वादापति आया ॥
 अत मुहम्मदजुलफकार नव्वाब कहाया ॥ ११९ ॥
 आगत डेरन दुगुगतेँ नालिन चलवाया ॥
 पच अधिक दश१० फेरहु मालुम करवाया ॥
 दशमी१०दिन पुनि शिबिर भूप साहब घर आया ॥
 मैडककेर सलामहु मालुम करवाया ॥ १२० ॥
 भाबुक सहित सलाम भूपतिप्रति दरसाया ॥
 एकादशि११ बागशासी पढि द्विज इक१ आया ॥
 गधी केसवरामके सुत ससद पाया,
 आठ्ठय सह हरखस जो पढि नृप उमँगाया ॥ १२१ ॥
 बैठक ताके गुननतै पहु रीम्कि दिखाया,
 द्वादसि१२ दिन बुधवार४को चढि अश्व चलाया ॥
 कोटेश्वर सिव दरस काज प्रभु पुनि उमँगाया,
 करि दरसन मृडकेर बहुरि गगाजल न्हाया ॥ १२२ ॥
 नित्यकर्म करि सदर ईस इक१ निष्क चढाया,
 गुन३ घटिका दिन रदत भूप डेरन पुनि पाया ॥
 मक्खनतोस१ रु टालबट२ जु जात्रा सँग लाया,
 पधरावन प्रभु लार्डगेह साहब दुव२ आया ॥ १२३ ॥
 ॥ दोहा ॥

चढि तुरंग तिन सह चतुर, लार्डकेर लग जात ॥

आदि सिकत्तर मैडकहु, अधिपति सम्मुह आत ॥ १२४ ॥

॥ पट्टपात ॥

भनि भावुक प्रभुकेर सीस कर मुदित समप्पिय ॥

प्रभु तव अप्प सु पानि मत्थ रक्खि रु सुभ अप्पिय ॥

साहब मैडक सहित लार्डबँगलौ सु प्रवेसत ॥

उमँगि अलीनबराहु प्रभू सम्मुह तहँ आवत ॥

कर सीस परस्पर कुसल करि कमरुअंत राजाइ दुवर् ॥

खुरसीन बैठि बेला अलप हाकिम सह एकान्त हुवा ॥ १२५ ॥

॥ दोहा ॥

तुच्छ समय एकांत रहि, कुसल जंपि करि मिक्ख ॥

आये प्रभु २०३ डेरन उमँगि, रक्खि द्रष्ट तहँ तिक्ख ॥ १२६ ॥

चढि तरंड करि कुच्च पुनि, अमा ३० तिथी दिन आप ॥

अँसी नामक सहरहू, अंसुक सदन अवाप ॥ १२७ ॥

॥ पद्धतिका ॥

सित प्रतिपदि १ सोमवार २, सहिदादि बाद रहियत उदार ॥

बहुरि द्वितीया २दिवस कुच्च, विश्रामवरोटहि दियउउच्च ॥ १२८ ॥

तु सिविर चंक्रमन गम २०३, अति सुद कासीपुर आजगाम

द्वेजन तहाँ करि न्हाँन दाँन, इंग्रेजन मेलन करि दिवाँन ॥ १२९ ॥

७धवल पुनि सुजवार १, लौ क्रमन कियउ कछु भटन लार

८सित अष्टमि ८जीव ५आप, सुदसहित गया पत्तनमवाप ॥ १३० ॥

सबन श्राद्ध तहँ भूरि दान, दै दंती अश्वादिक दिवान ॥

१० सासित षष्ठी ६ सौम्य २ वार, करि कुंच रहिय चरखी

उदार ॥ १३१ ॥

ल सहस्य ९ पुनि दोजि २ आप, बाराणसि नामक पुर अवाप

अविसदतपस्प१२सत्तमि७सआर३, राजातलाव रहि पटअगार१३२
 डम करत कुञ्च मभु२०३पुनि विश्राम, नागोध दग व्याहन जगाम
 पुनि सुक्ला नवर्मा९ लग्न पाइ, व्याहिय निसीय प्रासाव जाइ१३३।
 सो चदभानु कुमरी स नाम, बामाग अप्प करि राम२०३ बाम ।।
 असुकगृह आइ रु बहुरि आप, जाचकन अत्थ बहु धन दवाप१३४
 नभ गगन नद इक १९०० लगत साल, किय कुच्च मास मधु१
 बलि कृपाल ॥

विश्राम कुच्च करि करि ग्सेस, बुन्दीपुर सुम दिन किय प्रवेस१३७।
 इतिश्रीवराभास्करे महाचम्पूके उत्तमराशौ रामसिंह
 चरित्रे पञ्चदशो १५ मयूखः ॥

मायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

अत्र गगन नव इंदु१९०० सक, अनंगतिथी१३ आषाढ ॥
 पश्य असित बुदीस पुर, प्रविसे मभु गुन गाढ ॥ १ ॥
 तदनंतर भट्टिय प्रथित, जैसलमेरु जनेस ॥
 मूलराज बधुन समुद्र, आनिय होला एस ॥ २ ॥

पटपात्

कन्या राउल विजयकुमारि जीवन गुनगोरिय ॥
 राउल ज्ञान द्वितीय२ गिद्धिकुमरी तिम आनिय ॥
 पट्टप भीम२०४१ कुमारकेर सबध दुहुँन भनि ॥
 प्रोपित अक्खि रु तास कियउ सतकार महिय मनि ॥
 केदारनाथ शिवकेनिकट बुरजसिकारहि हित विजय ॥
 उपवन बहोरि ज्ञानहि अविप रक्खिप रूपविलास रय ॥३॥
 ॥ मनोहरम् ॥

इसतिथिः उत्तर कुमार भीम लग्न काल,

व्याह्नं पठापो पहु बुरज सिकारकों ॥
 राउल विजयसिंह उत्त उपहार ठानि,
 कन्या करग्राहन करापो कुमारकों ॥
 अनल परिक्रम औ सप्तपदी आदि दैकै,
 वेदविधि आये पुर तिहि बारकों ॥
 नवमी १ दिवस रूपआदिक विलास जाइ,
 ज्ञानसिंह तनया बिवाही गुरुद्वारकों ॥ ४ ॥
 ग्यारह सहस्र ऊन ११००० लक्ष दुव २००००० रूपय औ,
 तुरग द्विषष्टि ६२ अरु कटक दुसत्त ७२ भो ॥
 अप्प प्रभु सक्षप रविमल्ल कवि मास सुचि,
 एकादसी ११ हूतैं बिजैदशमी १० लौं दत्तभो ॥
 सुनिकै उदंत यह जन्मक विदेशहूके,
 आये नैर बुंदी प्रभु द्रव्य अनुरत्तभो ॥
 सुकवि समाज कति मिलिकै निवाजै आप,
 बाजे जस ताजे जेके बजाइ कति पत्तभो ॥ ५ ॥

॥ पञ्चटिका ॥

॥ त कोटारिन करि उछाह, औ द्वादस बलि आये बिवाह ॥
 म सहित सुनिये रसेस, यह भोमसिंह आये ससेस ॥ ६ ॥
 ॥ नाना सिंह कापरनिकेर, सकुटुम्ब रचिय आगम नफेर ॥
 व्यादिसिंह दुर्गापुरीस, सिवसिंह इद्रगढकै रईस ॥ ७ ॥
 कुटुंब कुमर यह अवर पाइ, आनंद अधीस पुनिराम आइ ॥
 व्यादिक आइ रु रहिय एस, आदरतैं रक्खिय सब इलेस ॥ ८ ॥
 ॥ रि सभा तास सतकार लेय, दै सिक्ख ताहि दिय वस्त देय ॥
 ॥ न करि बिवाह—राम २०३ आप, मोदित किय कविबुध भटअमाप ९
 ॥ हैं अवद १९०० जोधपुरके नृपाल, किय भाद्रैकादसि ११ मानकाल

अप्रजाक।दिधीपसिंहको।बिलापतभोजना]अष्टमराशि पौडशमयूक्त(४३३७)

पुरिगाम१५दिन पैठो तखत पट्ट, थंभिय समस्त मरुराज थट्ट॥१०॥
इक बिंदु अक ससि१९०१वर्ष माहिं, साहब अजट बटन सु आहिं
साहब सन सम्मुह प्रभु पधारि, हुव महलन दाखिल हितवढारि११
जपवती नाल प्रासाद जाइ, उत्तरि अजट पुनि प्रीति पाइ॥
तस सिविर द्वितीयक २ अहन आप, किय क्रमन महीपालक
मिलाप ॥ १२ ॥

उत साहब सम्मुह आजगाम, करि सीस परस्पर करन राम ॥
प्रभु किय उपवेशन तखत पाइ, उपवेशन साहब सव्य आइ॥१३॥
पुनि लौन देन किय अतर पान, हुव दाखिल महलन इह भान ॥
महलन पुनि साहब हित अमाप, अर्जुन तपस्य पट्टी६अवाप१४
--अभिमुख पायदाज जत्य, मिलि कियउ परस्पर इत्य मत्य ॥
तदनतर बोठेय तखत राम, साहब सु दुलीचन रहिय बाम ॥१५॥
बेलाल्प राखि करि अतर ताहि, पहुँचावन पायंदाज आहि ॥
दे सिक्ख ताहि दिय वस्तु देय, धरनीन्द्र अप्प २०३ किय जो
विधेय ॥ १६ ॥

अव सुनहु प्रभू२०३इहिअब्द१९०१अत, इमेजन किय जो रन उदत
व्यासा१सतलज२रु बीच देस, आक्रमन सिखन करि लिय असेस
सय गगन निधी अरु इक १९०२ साल, तेरसि १३ तिथि भाद्रा
असित भुवाल ॥

महाराजकुमार लघु रगनाथ२०४।२, उद्भवन भवन भव सर्व आथ१८
लाहोर ईस तिनदिन दिल्लीप, हुव सिष्टि कंपनी मनु महीप ॥
जवकरि इंग्रेजन जुद्ध जास, नालिन तस सेना करि रु नासा॥१९॥
बालि करि निरोध भेजिय बिलात, तस जननी चदा नाम तात ॥
नैपालज अटवी रहन कीन, इंग्रेज राज्य तस किय अधीन ॥२०॥
गुन गगन अक इक१९०३अब्द आत, भो तनय भुजिण्या जठर जात

अभिधा नारायनसिंह आई, बय बहुरि बाल्य पंचत्व पाइ ॥ २१ ॥
 पहु फल्ल मदनसिंहाभिधान, हायन इहिं १८०३ पट्टनि भयउ हान
 तस बैठिय पृथ्वीसिंह पट्ट, गनि प्रभू चलिय सामान्य वट्ट ॥ २२ ॥
 सक बेद सून्य अह इक १६०४ आत, पट्टन दुर्बंट पहु अप्प पात ॥
 वलि केसव उच्छव हित बढागि, सित राधमास पट्टनि पधारि २३
 दर्शन करि केसवके दिवान, अक्षयतृतीय ३ दिन पुनि विधान ॥
 उच्छव अरु पूजन करि रु आप, सब करि विधेय गिविरहि अवाप
 करि बहुरि तहाँ प्रभु न्हानदान, बटन अजंट वलि कियउ आन ॥
 चर्मश्वति घटोपरि बिछात, अधिराज प्रथम तहँ अप्प आत ॥ २५ ॥
 साहब सपुत्र आईउ उहाँहि, अप्प २०३ पु पहु सम्मुह छ ६ पद आँहि
 करि दुर्दिस सीस कर भद्रभाखि, गालीचन साहब वाम राखि २६
 बैठिय पहु गही सित अवाम, अल्पहि पुनि वेला रक्खि आम ॥
 दैअतर पान तस सिक्ख दिन्न, क्रम छ ६ पद तस पहुंचान किन्न २७
 राजेन्द्र राध सित नवमि ९ राम, करि कुंच सु बुन्दी आजगाम ॥
 सक बान गगन नव ससि १९०५ भुवाल, किय कुमर नरायन
 सिंह काल ॥ २८ ॥

तप असित नवमि ९ दिन बहुरि तात, रसरंग सुभद्र सुकुमरि जात
 इहिं साक १९०५ अधिप परतापपाल, किय नगर करोली भाद्र
 काल ॥ २९ ॥

सुत तास मदनसिंहाभिधान, व्है भूप चार भट कियउ मान ॥
 रस व्योम अंक भू १६०६ वर्ष आहि, लाहोर इंग्रेजन लिय
 उमाहि ॥ ३० ॥

इय गगन अंक इक १९०७ होत साल, दुर्गापुर देवीसिंह काल ॥
 सुत संभूसिंहसु गिनि अभिन्न, दुर्गापुर सासक अप्प किन्न ॥ ३१ ॥
 इहिं सक १९०७ इंग्रेजन युद्ध किन्न, नृप बर्मातै कछु देस लिन्न ॥

गज गगन अंक इक १९०८ आत साल, पट्टनि सु अज्ज प्राविसे
मुवाल ॥ ३२ ॥

साहव अजट तहँ मिलन काम, सो जानहु मारसैन नाम ॥
चर्मणवति तरनी उतारि चाहि, आइय विछात उप्परि उमाहि ॥ ३३ ॥
प्रभु अप्प तास अभिमुख पधारि, आइय समाज बहु हित बढारि ॥
कछु समय राखि दै मिक्ख तास, पहुँचावन पायदाज पास ॥ ३४ ॥
हुन दाखिल शिविरहि हह्मभान, दिन द्वितियरु कियउ तहँ न्हान दान ॥
कारि कुच बहुरि प्रभु अप्प राम, बुंदी पुर सत्वर आजगाम ॥ ३५ ॥
तदनतर बीकानेर राय, पहु रत्नसिंह तज्जिग सु काय ॥
सरदारसिंह तस पट्ट पाइ, जानै कछु प्रभुतै हित जनाइ ॥ ३६ ॥
ग्रह गगन अंक इक १९०९ आत साल, कापरनिकियो बलदेव काल ॥
सब मोटि विघ्न कापरनिकेर, महाराजा इलधर कियउ फेर ॥ ३७ ॥
रागिनि सेखावति हह्मराइ २०४, उज्जासित तिन दिन निधन पाइ
बर्मा उपवर्तन नृप बहोरि, इंग्रेजन लिय डक १ दुर्ग तोरि ॥ ३८ ॥
सक गगन इक्क नव ससि १९१० समात,

प्रभु मिलन अत्य सौधन अवाप ॥ ३९ ॥
किय करन दुर्दिसकछु कुसल कारि, पुनि अप्प तखत उप्प-
रि पधारि ॥

वर्तन गालीचन गदिख वाम, बेलाल्प रहि रु गय बख्रधाम ॥ ४० ॥
उप किय अजट अजमेर जान, अब सुनहु वृत्त इत हुव दिवान ॥
एकादसि ११ आश्विन असित आत, पटरागिनि पहु पचत्व पात ४१
तदनतर जीवाराम नात, ग्वालेरप जनकू नाम रूपात ॥
कछु रोग पाइ तिद्धि कियउ काल, सुत जीवाराम सु भो मुवाल ४२
सक भूमि इक्क निधि ससि १६११ उदार, शुक्रासित दशमी १० शु
क्रवार ६ ॥

मदनेस भल्ल धीदा उमाह, कुमगर्जुन पट्टनि किय विवाह ॥४३॥
तहँ त्पाग अमित पहु राम२०१४ आप, मोदित दिवाह किय कवि
अगाप ॥

सक इहिँ १९११ इंग्रेजन रूससाह, आरकंदन जीति रु किय उछाह ॥४४॥
सय भूमि अंक ससि १९१२ लगत साल, आयउ अजंट मेसन भु-
वाल् ॥

जयवतिय तात्त उत्तरन जास, आगत अजंट महत्तन हुत्तासा ॥४५॥
अभिमुख पहु पायंदाज आइ, करिको परिकर पुनि सय मिताइ ॥
ढपवेसन गही कियउ आप, आसन सु सव्य रहि हित अगाप ॥४६॥
रहि समय तुच्छ तस सिक्खिदिन्न, पहुँचावन आदिक पुव्व किन्न
तदनंतर जानहु नरनपाल, पट्टप कुमार वंसनवहाल ॥ ४७ ॥

उदाह करन भेजिय इत्ताप, सह जन्प कुंच करि तहँ अवाप ॥
सह मास ९ एकादशि ११ बुद्धवार ४, इहिँ लग्न भाम २०३ पट्टप कुमार ४८
ताउल सु भवानीसिंह धीय, अभिधा गुलावकुमरी सुहीय ॥
गरनि रु बुंदीपुर आजगाम, दंपति लिय महत्तन दिवस वाम ॥४९॥
तुन भूमि अंक मृगअंक १९१३ साल, किय इंदगढप सिवसिंहकाल
अंग्रामसिंह हुव तास पट्ट, बनि चलिय महाराजा कुवट्ट ॥ ५० ॥

॥ दोहा ॥

मेसन साहव मोटे अरु, बर्टन आइ बहोरि ॥

हुव अजंट हड्डोटिको, मद अरातिगन मोरि ॥ ५१ ॥

बल्लानाथ इहिँ सक बहुरि, प्रोष्टासित नरपाल ॥

रंगनाथ २०४१ सिंहहिँ कुमर, किय नागोधहिँ काल ॥५२॥

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टम ८ राशौ राम-

सिंहचरित्रे

षोडशो मयूखः ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

वेद इदु नव सासि १९१४ वरस, तपा मास सित पाइ ॥ ३

पहु इलधर पचत्वपन, पुणियाम १५ दिन प्रकटाइ ॥ १ ॥

तब कापरनिय तस तनय, राजसिंह नरराज ॥

आइय बनि महाराज इत, गौरवादि सुभ काज ॥ २ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

प्रसू अण्प २०।३ जो पहु तदनंतर, उज्जा ८।३ सित एकादशि ११

बासर ॥

जो अमानकुमरी ति जनावत, पन पंचत्व मध्यदिन पावत ॥ ३ ॥

याहि समय १९१४ सेना इंग्रेजन, अज्जावतज मनुज फिरे मन ॥

सत्तर ७०० ही पलटनके स्वामी, साहिब रेटकप्तान सु नामी ॥ ४ ॥

सासन गोरन एह सुनायो, टोटन सिर काटन प्रकटायो ॥

तामै मेघजीन खल्लासिय, ए उदत समग्र सु जानिय ॥ ५ ॥

इकदिन आयुधीप तहँ आइय, खल्लासी जातँ दक मगिय ॥

तगहि अदेय आयुधिक अक्खी, जब खल्लासि बात यह भक्खी ॥ ६ ॥

मंद मिलित टोटन गोश सूकर २, रद छेदन करिहो तब सत्वर ॥

जातिहु जवर पुण्य फल पेहो, दक जब इमहि पानको देहो ॥ ७ ॥

इम सुनि चमू आयुधिक आयो, सब अज्जन बह वृत्त सुनायो ॥

तब कप्तान रेट तिन्ह मारिरु, इकदिन सर्व छावनिन जारिरु ॥ ८ ॥

ससुत भेम साहब बहु मारे, कति भूपनके सरन सिधारे ॥

सुनि यह कौन दयो तब सासन, बाहिनि जाहु उपद्रव नासन ॥ ९ ॥

सेनासहित लार्ह तब आये, कारेजन सब मारि भगाये ॥

दिल्ली साहबहादुर सानी, अधिपतिता हिंदुन उर आनी ॥ १० ॥

पकरि सोहु तब साहब भेजिय, पिसन करि रु कपमैहँ रक्खिय ॥

तदनतर कोटापुर स्वामी, रामसिंह २१२ महाराव जु नामी ॥ ११ ॥

कायथ जैदयाल१ तस किंकर, भो महारापखान२ अनुचित धर ॥
मैम१ पुत्र२ सह बर्तन३ माख्यो, बैभव लूटि सदन तस वाख्यो१२
बाहिर कोटा निजबस किन्नौ, दुःख अमित भूपति सिर दिन्नौ ॥

॥ १३ ॥

सुनि यह वृत्त करोलिय सत्वर, भेजिय मदनपाल दल भूव ॥
पुर अंदर कछु यत्न प्रवेसिय, जैदयाल दारुन कलि मंडिय ॥ १४ ॥
कग्गर लिखि अजमेर खिनायो, महाराव अति नम्र दिखायो ॥
सु सुनि लार्ड तव - क सजायो, अति अमर्ष कोटापुग आयो ॥ १५ ॥
कतिदिन दुरदिस युद्ध तोपन किय, दुसह ताव साहब तस सिर
दिय ॥

जैदयाल१ महारापखान२ जब, सुभट मराइ तजि रू बैभव सब१६
भोरुक मनि कोटा तजि भज्जे, बंवि विजय साहब बल बज्जे ॥
मेदि सकल बिग्रह पुर करि मह, साहब गो अजमेर सेनसह ॥ १७ ॥
सक सर भूमि नंद सासि १९१५ जानहु, पुणिखाम१५ तिथि इस७
सुल्ल१ प्रमानहु ॥

देवीसिंह पुत्ति दुर्गापुग, मृत गोविंदकुमारि अंतेउर ॥ १८ ॥
अष्टि नंद इक१९१६ हायन आवत, मैनेजन मिलि धाटि मचावत
दुःख पंथजन बहुरि सु दिन्नौ, छुंदिय मुलक धाटि बस किन्नौ१९
महु तव तापर चक्र पठायो, रहि बन रोक सु समर रचायो ॥
कतिदिन कलि करि कतिक पलायन, कतिक नयारि चक्र कि-
य आवन ॥ २० ॥

इय भू अंक इक १९१७ मित हायन, फगुन१२ असित२ लयोदे-
सि१३ पावन ॥

यन१ वन२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥

मतिहारी किय महिषि उद्यापन, तापर लिखि रू निमंत्रित भूधन२१

रामसिंहका भोमसिंहको दब देना] अष्टमराशि-सप्तदशमयुग (४३४३)

कवि रविमल्लहिं दियउ कृपाकर, बलि भूदेवहिं वित दियउ वर
तिनदिन भोमसिंह २०३ तदनंतर, लागो चलन कुमग अनयकर २२
विगरन राज्य उपाय सु बलि किय, भीने मनुजहिं सरन अमित विष,
जब प्रभु अप्प इहाँतैं सुभजन, भेजिय भोमसिंह २०३ समुम्भावन २३
जाइ रु तिन अति नय समुम्भायो, इक न वृत्त तास उर आयो ॥ १
उत्तमाग विनु नक कहिय इम, कहो बिचारि ललित लगै किम २४
इम सुनि सब बुदीपुर आये, तास उक्त सब वृत्त सुनाये ॥ १
सुनत गहन मैनेन मारन मन भेजिय चक्र गोठपुर भूधन ॥ २५ ॥
ग्राम घेरि मैने छन मंगिय, नहि वै कहि रु भोम २०३ रन मडिय ॥
जब कुमार अर्जुन कलिकिन्निय, दुसह ताप तोपन तस सिरदिय २६
कतिदिन कलह भोम २०३ गोखिन किय, भीरु बनि रजनी
बलि भगिय ॥

नृप २०३ तस ग्राम सकल जब छिन्निय, कुमार सचक्र आगमना
किन्निय ॥ २७ ॥

वसु वसुधा निधि इहु १९१ अब्द मित, आवन किय बेलन अजट ५८
पुत्रगीति सम्मेलन पहु किय, दह दिखाइ पुनि प्रीति सिक्ख दिय २८
तदनंतर इहिं सक १९१ इंग्रेजन, किय अजमेर नन्हजी पकरन ॥
पुनि सु बिठूर भेजि गल अप्पिय, बोये बीज तास फल पक्षिय २९
बाजगायज एह बखानिय, मिलि कारन कलि नन्ह प्रमानिय ॥
बलि बहोद संगहि सन्पासन, सोपुग्पतिहिं दयो इंग्रेजन ॥ ३० ॥
सक इहिं बहुरि उदयपुर सासक, सिंहस्वरूप नामहुवनासक ॥
सभूसिंह पट तस पावत, जे अकस्थन रीति जनावत ॥ ३१ ॥

[दोहा]

सबंत इक निधि अंक ससि १९१९ तेरासि १३ तैस १०० स्पा
श्रीगद्दोदक क्रम सबन, राजराज किय राम २०३ ॥ ३२ ॥

श्राद्धादिक सब बेद बिधि, पहुँ अण्ण कर कारि ॥

सुभं सुहूर्त उडुदुर्गतै, रहि केदार पधारि ॥ ३३ ॥

॥ पद्धतिका ॥

पुत सहित --- पडवा१पयान, दुवल्लान प्रवेशन किय दिवान ॥

मौजिण्य भ्रात त्रिक३ कियउ आन, ॥ ३४ ॥

अह बहुरि तृतीया३ आर३ वार, सो दिवस भयो प्रभुकोऽवतार ॥

करि पूज नवग्रह आदि केर, पटवास नयनपुर बेसि फेर ॥ ३५ ॥

रहि तहाँ चतुर्थी४दिन रसेस, आहूत सभा भटवर असेस ॥

लौ लंचा सामाजिक समाप, अंशुकअगार दै सिक्ख आप ॥ ३६ ॥

सितपक्ख पंचमी५ दिवस आत, पहु दियउ समीधी दल प्रपात ॥

विश्राम करत चोरु बलाप, तहँ सुजन टोंकपतिके अवाप ॥ ३७ ॥

दोलांत वजीर सु पहु नवाब, सुभ छद लौ आये दुवर सिताब ॥

सु अजीटण अवदुल समनखान, विष्णुप्रसाद कायस्थ वान ॥ ३८ ॥

सामाजिक किय दुव रणि समाज, करि नजर अरज कियहडुराज

पहु मामकीन अधिराज एह, नाणक रु सहस्र १००० नय करि

सनेह ॥ ३९ ॥

हंडोल हागहूगादि केर, मिष्टान्न एक शत १०१ नियन फेर ॥

हिमानिक लंचा लेहु लार, धरनीन्द्र अण्ण ऊंदद-धार ॥ ४० ॥

दुनाथ उदित रस६ घटि अवाप, दै सिक्ख उज्झि पर्यरित आप ॥

नि दुर्हुँन सभा बुजवाइ प्रान, सिरुपाव दियउ छदहित दिखात ४१

क्रमन सप्तमी७ चाहवान, आंसल साधवण कियउ आन ॥

स नाम जवाहरमल्ल१ तात, अरु नायब बाजूलाल२आत ॥ ४२ ॥

म नायब जन मनसुख३ तृतीय३, तित सुनसी नारायण४तुरीय ॥

सम्मुह आये अदकोस, सुभ अरज नस्तरकि गत सतोस ॥ ४३ ॥

व दाखिल पटगृह हड्ड भान, पहु किय मिलान अष्टमि पड़ान ॥

नवमी९ दिनेस पुनि किय पयान, हुंगर मलारनें किय मिलान
 पदकन कोस तँहँ पुनि नृपाल, आइय बिश हाकिम रामलाल
 सुभ अक्खि नजर करि तिमसलाम, रहि तहाँ रति धरनीन्द्रराम४
 वाटोदे दशमी१०दिन सुजात, पुर परिसर पल्लाल आत ॥
 लै लचा सुभ तस अक्खि आप, अधिराज बहुरि पटगृह अवाप४६
 उगगत एकादशि११ सौम्यवार४, जावत खुसालगत पटअगार ॥
 आइउ दिज आमिल अढकोस, सिवदीन सु लचा किय सतोस४७
 असुकअगार पुनि अप्प पास, सिवदीन पुत्त नारायनाऽऽत ॥
 रहि द्वार कराइय अरज जोहि, व्है हुकम सरबराकेर मोहि॥४८॥
 तापे पहु अक्खिय तावकीन, दे रीति इक्क१ हम लियउ तीन३ ॥
 हमरे रु परस्पर एकबत्त, अब जानी यह तुम अममत्त ॥ ४९ ॥
 हम सुनि रु कराइय अरज एत, सामयी किय पुब्बहि असेस ॥
 सब पुब्ब माफ करिहे सुसंध, व्है हुकम ततो वैहाँ पबंध ॥५०॥
 सासन दिय सो सुनि पुनि रसेस, तब दिपउ सरबरा दल असेस
 आवत अंतेउर गढकुसाल, मच्छीपुर जेमन कियउ काल ॥५१॥
 मच्छीपुराप बलवत आइ, करि नजर पुहप कडोल काइ ॥
 किय नजर सखिबी अप्प केर, प्राश्रुतक कियउ महिषी सु फेर५२
 बैतनिक१ बाहुमव२ जोहि सत्य, सतच्यारि४०० सग्धि करवाइ
 तत्थ ॥

अतेउर बेसिय शिविर आइ, पहु रहिय तहाँ हम रत्तिपाइ ॥ ५३ ॥
 करि कुच्च द्वादशी१२दिन दिवान, पीलोदे पुनि हुध शिविर आन ॥
 तस सार्द्धकोस आमिल सुहात, आवक सुहि चुन्नीलाल आत५४
 किय बलि वजीरपुरकेर आन, आमिल सु उदयचदामिधान ॥
 लै भेट तास वै सिक्ख आप, असुकअगार पहु पुनि अवाप॥५५॥
 हिंडोनि पात तेरासि१३ अनंद, आमिल बहोरि गुलआवचंद ॥

करि पावकोसलंग नजर आइ, तहँ फेर रुद्र११ तोपन कराइ ॥५६॥
 लौ सिक्ख गयो हाकिम सतोस, पहु कियउ शिबिर आगम प्रदोस
 दिहँ नितैहि सब सेन माँहि, इंधन तृनादि अरु भांड आँहि ॥५७॥
 तहँ रहत चतुर्दसि१४ धरनिकंत, आमादसलेमाकेरहंत ॥
 नामसु—————, गोपेश्वरसरणा सु देवराव ॥ ५८ ॥
 अधिकारि नरायनदास आइ, रडिद्वार मिलन विज्ञति कराइ ॥
 तब कहिय अप्परविचाहुवान, मान्योदम पुणिगाम१५ मिलनमान५९
 पुणिगाम१५ सर४ नाडी चडि पतंग, अधिराज मिलन हं किय उमंग
 पट्टह गोपेश्वरसरणा पाइ, अधिराज नमन दारि भेट आइ ॥ ६० ॥
 रहि पहर इक्क१ धरनीन्द्र राम२०३४, असु कयगार पुनि आजगाम
 तप असित द्वितीया२दिन दिवान, सूटै माँहि विय तिलमिलान६१
 तिथितीज३वधानें किय मुकाम, हाकिम तस जागत मिलन राम
 बलदेवसिंह तस नामधेय, इककोस आइ सम्मुह अजेय ॥६२॥
 मातुल सु भरतपुर सहिप केर, तजि तुरग नजर करि भाँड फेर ॥
 रहि तहाँ चतुर्थी४दिन रसेस, नाडी१६क१ रहतहि अहन सेस ॥६३॥
 तल्लय सुजन पट्टार पाइ, पकान्न द्वयंक९२मन भांड लाइ ॥
 सरसतक५०० बहुरि नाणाकन सत्थ, माहिमानिक सामग्रा समत्थ६४
 सुदपाइ पहु यह मामकान, भोजिय सु अत्र हम अरज कीन ॥
 रक्खिय सु सर्व सो सुनि रसाप, इम लंचा लौ दै सिक्ख आप६५
 तिथि नाग५दिवस तहँ मोद पाइ, साहब सु मिठाई मिलन आइ ॥
 तजि तुरग सभा करतहि प्रवेस, सम्मुह द्वि२पैड क्रमकरि जनेस६६
 बलि करत सलाम सु हित बढारि, तब तास तत्र टोपी उतारि ॥
 सँलाप दु२विस हुव सब बहोरि, एकांत करन कहि सुभटओरि६७
 बाहिर उपवेसन करिउ सर्व, रहि अप्प मंत कारन अखर्व ॥

बलि भीम २०१।१ कुमार पट्टप भुवात्त, बहुरा अमात्य जिविन सु
लाल ॥६८॥

करिमत्र उक्त सबही समेत, दुवर् पाम बजत तिहि सिक्ख द्वेत ॥
छट्ठी ६ दिन चढत एक जाम, बलदेवसिंह पहु दरस काम ॥ ६९ ॥
हाजरि हुव ससद करि सलाम, करि नजर निह्यावर मिसल बाम
उपवेशनकिय अध सुभटतीन ३, कछुसमय १ बत शस्त्रोक्त २ कीन ॥
तत जाम उपरि बजत तृतीप ३, सिरुपाव सिक्ख दै गनि स्वकीय ॥
बलि ग्राड करोली जादवन्द, सो मदनपाल मेहन रसेन्द्र ॥ ७१ ॥
बलि होत सप्तमी ७ सोमवार, अधिराज अप्प सम्मद अप्पार ॥
रवि चढत जाम ५ रु १ राजराम, किय क्रमन शिविर तस मिलन
काम ॥ ७२ ॥

तजि तुरग प्रवेगत तह भुवात्त, अभिमुख तब आइय मदनपाल ॥
मिलिकरि रु परपर हत्थ मत्थ, तत मेहन खधा जुटु तत्था ॥ ७३ ॥
मिलि बटुगि मद्दागज सु कुमार, पूर्वाक्त सीति करि सब अपार ॥
डम दुवर्हि गढिकाउपरि आइ, पहु अप्प रहे अपसव्य पाइ ॥ ७४ ॥
आत्मीय सुभट रहि तिम अबाम, पुनि मदनपाल बैठिय सबाम ॥
वामजु तस रक्खिय सुभट सर्ग, दुहुँ २ ओर भयो इम सभा ॥ ७५ ॥
सागीर बत्त समयानुमार, करि क्रमन कियउ पहु मुद अपार ॥
पहुँचानन आइय मदनपाल, डोढालग-पूपा मध्यक्रान्त ॥ ७६ ॥
सप करि रु परपर बहुरि सीस, स्वस्थान गयो जाद्वेव सुधीस ॥
उपवेशन सिधिका अप्प आत, वस सत्त १ ७ फेर नालिन करात ॥ ७७ ॥
पहु अप्प सिविर आइय प्रजेस, नाडी इक १ रहतहि पुनि दिनेस ॥
पहु मिलन सुभट सहमदनपाल, आत्मीय शिविर आइउत्तात्त ॥ ७८ ॥
नरयान छोरि पट्टार पात, सम्मुह तहँ सत्वर अप्प आत ॥
सप दु २ दिस बहुरि हुव सीस रक्खि, अधिराज दुवर्हि आमोद

अकिख ॥७९॥

उपवेसन किय दुव२तखत आइ, पहु अप्प रहिय तहँ सब्य पाइ ॥
पट्टप कुमार तहँ भीम२०४।१ तात, अरु कुमार दुव२हि भौजिय
भात ॥ ८० ॥

सुभट जु बलि आत्मक रहि सु बाम,रकिखय सु महामाआदि राम
सम्मुह सु सर्व कवि बुधन ठल्ल, मिश्रन कवीन्द्र तहँ अर्कमल्ल८१
जालित्य यावनी अमृतलाल, नीती सुहु संकर मुकटलाल ॥

तलाल१ टलाल२ अंत्यानुपासः ॥ १ ॥

इम राखि सर्व अप्पन भुवाल, अपसव्य रहिय पुनि मदनपाल८२
प्रपसव्य चारभट तास रकिख, अरु उचित समय वृतांत अकिख ॥
नेस जात घटी त्रय३ सीख दिन्न, पहुँचावन पूरब रीति किन्न८३
उपवेसन किय नरयान आइ, दससत्त१७ फैर नालिन कराइ ॥

प्रामोद दुहुँ२न इम रहि अपार, पहु मदनपाल गत पटअगार८४
उगत सु अष्टमी८ दिन दिवान, किय गाम नभेरै शिविर आन ॥
वमी९ सु भासकर बुध मिलंत, किय शिविर फतैपुर धरनिकंत८५
हायस्थ सु हाकिम गुरुदयाल, इक१कोस आइ सम्मुह नृपाल ॥

आभृतक निछावर करि सलाम, पहु अप्प सोहु गय उचित धाम८६
समी१० दिन मंडा कर मुकाम, द्वादसि१२खंदोली बलि विश्राम ॥

नि गाम सैदआबाद पाय, हुव शिविर चउहसि१४इहुराय ॥८७॥
हरि कुच्च अमावसि३० सोमवार२, हुव दाखिल इतरस पटअगार

सेत षडिवा१मंगल३दिन दिवाप, बलि काचकेर नगरै अवापा८८
धवार४द्वितीया२ दिवस पाइ, किय गाम सिकंदर शिविर जाइ ॥

गोहन पुर चौथी४ दिन मुकाम, बलि कासगंज पंचमि५विश्राम८९
ष्टी६दिन सूकरछेत्र पाइ, किय धारा गंगा शिविर जाइ ॥

आप्लव करि सूकरछेत्र आप, करि भेट छपाधारा मवाप ॥ ९० ॥

करि सवन पूर्णिमा १५ दिन दिवान, नाग १ रु गो २ बाजी ३ छिति
४ नृजान ५ ॥

उष्णीष आदि सिरुपेव सत्थ, विय दान सु गगागुरुहि तत्थ ॥९१॥
॥ दोहा ॥

गगागुरु गोविंदकों, चाढि रु गज चहुवान ॥

वै पट संभूनाथ गुरु, आरुहि अस्व बिमान ॥ ९२ ॥

वस्त्रसदनके द्वारतें, इम दुवस्गुरुहि चढाइ ॥

महिपति राजकुमार सह, पहुँचावन तस पाइ ॥ ९३ ॥

गुरु नारिन वै वस्त्र गुरु, पिन्नस रथ सु बिठाइ ॥

इक निसान सादी कतिक, वै तस सद्य पुगाइ ॥ ९४ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे सप्तदशो मयूखः ॥ १७ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

प्रतिपदि १ फगुन अमित पुनि, गगधार तजि गेय ॥

मोहनपुरहि मुक्तास बलि, सब करि बेद बिधेय ॥ १ ॥

॥ मनोहरम् ॥

करत प्रवान श्रीदिवान राम दूजीरतिथि,

गाम कावनगरसो सिविर मुहातभो ॥

बहुरि तृतीया ३ सुक्रवासर बलापतिहु,

सैदाबाव आइ सुम थूलन तनातभो ॥

फगुन चउत्पि ४ श्याम सहावरै धाम राखि,

अकवरनैर पछी ६ दिवस दिखातभो ॥

सादव अजंट नाम बेलन १ शुरुक २ द्वैरही,

सम्मुह दिवाप चढै नाढी गुन ३ आतभो ॥ २ ॥

कारिकें सलाम ओ परस्पर भविक भाखि,

साहब सहित अप्प डेरनलों जाइकैं ॥
 आकबरनैर गये साहब दुरसिक्ख लैकैं,
 अप्प प्रभु सिविर प्रवेशे दरखाइकैं ॥
 एकादशी११ मंदवार जाम जुगर वज्जतही,
 हूतीहु पधारे लार्ड साहबको पाइकैं ॥
 बेलन अजंट ओ सिकतर द्वैर साहबहू,
 सम्मुह दसक१० अप्प डोरिनलों आइकैं ॥ ३ ॥
 जातहि समीप लार्डसाहबके बस्त्रधाम,
 आये द्वैर सिकतर न जानें ताके नाममें ॥
 रजीडन्ट आयो पुनि साहबहू लारनस,
 लैगये पहुकों लार्ड साहबके धाममें ॥
 दी आनरेबल दी अर्ल आफ अलजिन,
 आयो ऊठि सम्मुह त्रि३पैड मेल काममें ॥
 सीस कर करिकैंहू दुरदिस संलाप श्रेय,
 बैठे पहु संसद जु लार्ड नहि आवमें ॥ ४ ॥
 समय अतीत तहँ करिकैं कितोक आप,
 कालोचित्त बत्त करी राजराज रामनै ॥
 अतर लगाइ पान दैकैं सकुमार लार्ड,
 उठि दिय सिक्ख धर्मधारकके धामनै ॥
 होत अश्ववार लार्डकेर तहँ तोपनके,
 सप्तदस१७ फैरहु कराये नेह नामनै ॥
 पाइ इम लार्ड प्रीति अंलुकसदन आड,
 उज्जयो कटिबंध यों अतीत जुग जामनै ॥ ५ ॥
 आर३वार असित चउदसि१४ तपस्प दिन,
 बेलन अजंट आये पहु पधरानकों ॥

अरुहि अजट उक्त अप्प पहु अस्वरथ,
 सेना सह त्वरित पधारे लार्ड थानकों ॥
 पट्टप कुमार भीम२०४।१ अर्जुन रु गोवर्द्धन,
 जगन्नाथ वावातिक अत प्रविसानकों ॥
 जीवन अमृतलाल वीर बलवत भट्ट,
 सत्थलै दिखायो अपसव्य चहुवानकों ॥६॥
 तखत धितस्ति डक्क१ उच्चक विछाइ तापै,
 जातरूप जटित लगाइ खुरसी जहाँ ॥
 बैठिकै बुलाये लार्ड भूप रजवारेकेर,
 सव्य अपसव्यहू बिठाये क्रमतैं तहाँ ॥
 बेगम भोपालकी१ अपसव्यहू बिठाई पुब्ब,
 सन्निधि सिकत्तरोरपवेसन करघो वहाँ ॥
 अस्ति तास डेठ ग्वालियरको नरेस जीवाइ,
 आसन अजंट कक्षो अप्प४को पहु चहाँ ॥७॥
 भरतपुरेस५ भूप अप्प अध बैठो इम,
 मढागव कोटाराम६तातर बिठायोहै ॥
 उत्तर अधीस७ अलउरको बिठायो तहाँ,
 तास अध टोंकके नवाब८ थान पायोहै ॥
 मालाकर पट्टनिको राजरानी पृथ्वीसिंह९,
 रामपुर नवाब१० उत्तरोत्तर गायोहै ॥
 अक अधिराज अपसव्य लार्ड बैठो सब,
 जानहु जनेस अध सव्य क्रम आयोहै ॥८॥
 जैपुरजनेस राम१ आसन सु सव्य कारि,
 रजीडट लारनस२ईस रजवारको ॥
 इतर अजंट३ ओ सिकत्तर४ सु ससंधाम,

राम नरनाह जानूं सर्व सुभ कारको ॥
 दच्छिन जो सर्व रजवार भूप पीछें तास,
 आत्मज ओ भ्रात उपबेसन सुढारको ॥
 जाके पिठि सुभट ओ सचिव बलील स्वक,
 औसैं करि आमकदयो धामजयधारको ॥ ९ ॥
 राखिकैं कितेकबेर संसद बहुरि लार्ड,
 सिरोपाव१ दत्तभौ सु माला मुकतानकी ॥
 अतरमगाइ लगाइ जु उत्तरोत्तरहू,
 उठिकैं दियउ सिक्ख सर्व निज थानकी ॥
 अस्वरथ आरुहि स्वकीय क्रमैं भूप थान,
 आरुहि तुरंगगति शिविर चुढानकी ॥
 रहत दिनेस सेसनाड़ी कृत४ अप्प२०३।४पहु,
 उज्झिय पर्यस्तिका विसेस करि तानकी ॥ १० ॥
 दरस३० दिनेस सौम्य बासर बहुरि लार्ड,
 मध्यदिन शिविर पहुके आसु गाइकैं ॥
 अंसुकसदन द्वारउज्झित तुरंग रथ,
 सम्मुह क्रमि रु ताहि मोद दरसाइकैं ॥
 भविक भनाइ भनि संसद सलार्ड जाइ,
 बैठिकैं सुविष्टर उदंत कछु पाइकैं ॥
 सिरोपाव१ स्तंबेरम२ सप्त६ सब लंचा लौ रु,
 दै लै सिक्ख लार्ड गयो सम्मद जमाइकैं ॥ ११ ॥
 द्वादसी८२ रहत नाड़ी नयन२ दिनेस सित,
 आगरा किलहर बरून मेल आयोहै ॥
 जीवन सु अंत लाल आदिक समाजी लोक,
 सहित प्रजेस२०२।३ ताहि विष्टर बिठायोहै ॥

समय उदंत आखि रक्खि कै कितेक बेर,
 संक्रम चुदान साइबकों दरसायोहै ॥
 जामिनी जुगल २ जात नारीजन नाथ अप्प,
 आरुहि क्रमन काज बलन बढ़ायोहै ॥ १२ ॥
 सिविर बरोहै सावरोध गाम सेसै आइ,
 वासर सु तेरसि १३ फतैपुर बितायोहै ॥
 चतुर्दसी १४ चदवार ४ नभेरै मुकाम करि,
 शिविर वपानै राका दिवस १५ सुढायोहै ॥
 पहिया १ - अर्जुन २ अधीस २०३१४ इम मधु १ श्राम,
 गाम - सूरैट धाम स्वजन - नापोहै ॥
 मदवार ७ दूजी २ तिथि दहन अधीस इम,
 रहत हिंडोनी बल थूल तनवायोहै ॥ १३ ॥
 करोली मदनपाल भूपके प्रसस्त जन,
 सुभट अमात्य आये पहु पधरानकों ॥
 अभिधा ओंकार १ ओ मजूकपाल २ बोलसिंह,
 मंत्री बलदेव ४ ए बलदेव समा यानकों ॥
 मुजर ओ नजर निवेदि लौ मिसल कक्षो,
 भावुक बनायो भूप जावबके भानकों ॥
 बहुरि कहिय एह अनुकंपा करि --,
 ओमिति करांगे तूर्ण सबलक आनकों ॥ १४ ॥
 अगीकार तास अरज करि तृतीया ३ दिन,
 शिविर वरोवाको कृपाल करवायोहै ॥
 दिवस चतुर्थी ४ क्रमै अस्व जु सवार इतैं,
 भूप मदनेस उतैं अभिमुख आयोहै ॥
 कोस इक्क १ तटिनी करोलीतैं उतरि नीर,

आइ अरवाक ठाढो रहि रु जितायोहै ॥
 बावा ता कुमार नाम अर्जुन रु गोवर्द्धन,
 जगन्नाथ मुस एस भावुक बनायोहै ॥ १५ ॥
 महाराजकुमार पधारे पुनि भीमसिंह २०४१२,
 अस्ववार अप्प २०३१४ मिले मदन प्रजापतैं ॥
 दुहुँओर मुजरा स्वसोस सय भव्य कारि,
 चंक्रम बुहान करयो सव्यक जु आपतैं ॥
 उतरि नदीज जल उभय २ बिछात आइ,
 गद्दीकोपवेसन ससव्य मुद मापतैं ॥
 आप अपसव्य प्रभु रहिकैं विराज तहाँ,
 पट्टप कुमार २०४१२ बैठे पच्छिम मिलापतैं ॥ १६ ॥
 सुभट स्वकीय बलवंत राष्ट्रकूट पुनि,
 जीवनादिलाल द्विक सम्मुह बिठायोहै ॥
 बालू २ दिवान ओ ओंकारपाल २ अनपसव्य,
 सव्य रहिकैं कितबिर मनन मिलायोहै ॥
 अस्ववार होइ दुव २ भूपन क्रमनक्रम,
 सुभट समाज ओर पुब्बक्रम पायोहै ॥
 नगर करोलीके समीप भो शिविर तहाँ,
 प्रभुके प्रवेसतैं जु वदन उम्हायोहै ॥ १७ ॥
 सेस दिव तत्व ५ नाड़ी रहत करोली भूप १,
 बिप्र बलदेव द्वार नायक पठायोहै ॥
 पक्क एक अन्न चत्वारिंश ४१हूके भाड पुनि,
 पंचशत ५०० नाणाक सनेह दरसायोहै ॥
 नजर निवेदि भव्य भाखिकैं जुहार जिम,
 प्राइकैं परागत प्रवृत्तपन पायोहै ॥

तीन३ अगग त्रिशत३०० टकेनभर सेर इक्क१,
 पक्क अन्न सेना सयन प्रति दिवायोहै ॥ १८ ॥
 पचमी५ दिनेस सेस रहतहि नाही च्यारि४,
 महल पधारे अप्प मदन भुवालके ॥
 महाराजकुमार सु नाम भीमसिंह२०४११ बलि,
 अर्जुनादि भ्रात तीन३ बावा ता नृपालके ॥
 प्रासादन द्वार जात सेन सह हहइद,
 सत्तदस१७ फेर सु कराये अपनालके ॥
 अदर जु चोक लग जातहि मदनपाल,
 अभिमुख आयो अधसीढिन सुजालके ॥ १९ ॥
 करिकै करन सीस दुरदिसही मद भाखि,
 सव्य सातमा - पहु धारे ससदाममैं ॥
 स्वीय सुभटालि सर्व वामहि बिठाइ राम२०३१४,
 आप अपसव्य राखि बैठो तखताममैं ॥
 पट्टपकुमार भीम२०४११ ओर शिवदान भ्रात,
 अप्प२०३१४ दिस बैठे बीच गहिका अबाममैं ॥
 सुभट रवकीप अन्य सहति सचिव सर्व,
 औतैं आम वाम रवी सभा सुख धाममैं ॥ २० ॥
 करिकैं कितोक काल नरप अतीत तहूँ,
 हहइद२०३१४ सिक्खलै पधारे निज यानकों ॥
 मंजु क्रम तुरग अरोहन अधिप उहाँ,
 पुव्वक्रम जादवेन्द आयो गहुवानकों ॥
 आरुहि तुरंग द्वार प्रासादन बाहिरात,
 सप्तोत्तर दसक१७ कराये फेर जानकों ॥
 जावन गुनक३ घटी बहुरि नरेन्द्र राम२०३१४,

नेह कारि प्रबल प्रवैसै सिविरानकों ॥ २१ ॥
 सप्तमी० दिनैस पंच५ रहतहि नाड़ी सेस,
 करोली मदन भूप स्वीय शिविरायोहै ॥
 अंदरके द्वार लग वीरन सहित आत,
 हड्डन अधीस तास सम्मुह सिधायोहै ॥
 सोलह सहित इक्क१७ नालिन कराइ फैर,
 अप्प दच्छि नासा तरुत उपरि बिठायोहै ॥ २२ ॥
 अनेह अतीत घस्र करिकैं सिधायो सिक्ख,
 पुब्ब लग द्वार अप्प आयो पहुंचानकों ॥
 बाहिर शिविर द्वार आइ नरयान चढि,
 जादवन नेता गयो जेता निज थानकों ॥
 अठ नव१७ फैर स्वीय तोपन कराइ पुनि,
 आगत अधीस२०३१४ सभा बिहित बिधानकों ॥
 आदमीय सेना काज महीप जु सब अन्न,
 पिष्ट आदिक समस्त वस्तु — दानकों ॥ २३ ॥
 अैसें राखि दशमी१० निसालग मदनपाल,
 सिक्खदै न एकादशी११ थूल स्वक आयोहै ॥
 तजिकैं तुरंग द्वार अंदर प्रवेस पात,
 सम्मुह तहाँही अप्प आवन रचायोहै ॥
 संसद पधारि सव्य रहिकैं बहुरि आप,
 भद्रासन ताहि अपसव्य बिठवायोहै ॥
 एम क्रम तास आस सुभट समाज स्वीय,
 पाइकैं प्रवृत्ति पहु प्रीतिपन पायोहै ॥ २४ ॥
 मदन महीप गेह सिक्खदै स्वकीय गयो,
 कुच्च सर५ जात नारी रति करवायोहै ॥

रामसिंहकाठार्यसाहिबसेमिलना] अष्टमरात्रि एकोनविंशत्युत्तर (४३५७)

गाम कुर१ आइ थूल राखिकेँ द्वितीय२ दिन,
काम तिथि१२ धाम खुसहालगत२ पायोहै ॥
अमावसि३० अनेह सक्रमन चुदान करि,
वाटैदै३ बलाप चक्र पतन करायोहै ॥
पद्धिवा१ वलछ काव्य बासर बहुरि राम२०३४,
ग्राम कमलारनै४ सु शिविर सुहायोहै ॥ २५ ॥
॥ दोहा ॥

बलानाथ अथ पुब्ब सम, करि इम कुच्च मुकाम ॥
नवमी६ पुष्प तडाग निस, समुचित कियउ स्वधाम ॥ २६ ॥
लीलीनामक दूरवा, चउदसि १४ दिन चहुवान ॥
सिंहअत सिरदारके, उपवन किय थुल ग्राम ॥ २७ ॥
राध२ श्राम सित१ दोजि२ दिन, बेलज उदीचि विसाइ ॥
मगगराज छत्रकमहल, हुव दाखिल हरखाइ ॥ २८ ॥
इतिश्रीवशभास्करे अष्टादशोत्तर ॥ २८

॥ दोहा ॥

प्रायो नजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥
सिविर लार्ड आगम सुनत, जीवनलाल जनेस ॥
सोदर अमृतलाल सह, अभिमुख भोजिष एस ॥ १ ॥
सम्मुहजाइ रु लार्ड सन, मिलि करि इन मनुहारि ॥
सिविर द्वार लग तस समुह, प्रभु पुनि अप्प पधारि ॥ २ ॥
(पद्धतिका)

कर सीस परस्पर करि मिलाइ, अधिराज सभा सह लार्ड ।
विष्टर सु लार्ड राजत बिटाइ, उपवेसन बाम सु अप्प पाइ ॥ ३ ॥
प्रभु द्वेष्ट बैठि पट्टप कुमार, अर्जुन त्रि३ वधु बैठे उदार ॥
तदनतर बैठिय सुमट सत्य, पुनि सम्मुह जीवनलाल पथ ॥

तद्यु तास सहोदर अमतलाल, मंत्र रु रदस्य याविनि कमाल ॥
 गतर वकील तस जानि नात, पहु आस अप्प दिस सर्व पाता ॥५॥
 अरु काल उचित संलपि उदंत, करटी १ तुरंगर लंचा करंत ॥
 सिरुपाव पंच ५ तखती समान, बहु प्रीति निवेदिय चाहवान ॥६॥
 पहु बहुरि समप्पि रु अतर पान, पहुँचान कियउ जिम पुब्ब आन
 चढितुरग यान साहब चचार, अवनीसन इतरन थुल उदार ॥७॥

॥
 ॥ ८ ॥
 ॥
 ॥ ९ ॥

लौ सिकख प्रभू इम करि मिलाप, अतिप्रीति करोलीपुर अवाप ॥
 दसदिवस रहि रु चल्लिय दिवान, प्रविसे बुन्दीपुर हड्डमान ॥१०॥
 नभ नयन नंद महि १९२० साक मान, कन्या सु भद्रकुमरी सुजाने
 जिहिँ कहत भुजिष्या जठरजात, अरु ब्रध्नकुमरि भौजिष्यआत ११
 जानसाह दुर्गापुरप जात, करग्रहन दुहुँ २ न इक १ दिन करात ॥
 सहमास ९ द्वादसी १२ सोमवार २, इहिँ लग्न दु २ वर आइय
 उदार ॥ १२ ॥

जनी बहोरि इक १ पहर जात, दुल्लह दुव २ तोरन उपरि आत ॥
 हरि कसाघात अंदर अवाप, तहँ बेदरीति तनया ददाप ॥ १३ ॥
 खतेस जोधपुर ईस पुत्त, सिरदारसिंह सुभ गुनन जुत्त ॥
 देय ब्रध्नकुमरि ताकोँ उदार, किय भोम २०३ दान कन्या कुमार १४
 रसोर लाल सुत पुनि प्रताप, कन्या सु भद्रकुमरी ददाप ॥
 न्मथ तिथी १३ सु गोरन जिमाइ, पुनि रक्खिय कति दिन प्रीति
 पाइ ॥ १५ ॥

पयज सम दुव २ हित पुनि समप्पि, सोदर जामाता सीख अप्पि ॥

रामसिंहकाफिरकाशीयात्राकोजाना] अष्टमराशि-एकोनविंशमयूक(४१५६)

करि कुंच जन्म सह मुद अमाप, दुल्लह स्वसद मरुधर अवाप॥१६॥
अर्जुन१ गोवर्द्धन२ जगन्नाथ३, व्याहे सु जोधपुर इक साथ ॥
तपमास असित षष्ठी६२सेस, सद्धि सु लग्न इन विधि असेस१७
अधिराज सुनहु पुनि हुव उरंत, फग्गुन सित नवमी९ बुध मित्त
मतिमान भीम२०३ पट्टप कुमार, महती कुमरानी गद ममार॥१८॥
मधु१ मास चउदासि१४ पुनि वदात, विग्रह स्वरूपलतिका विहात
ससि नयन नंदभू१९२१लगत साल, आगत अजंतसाहव उताल१९
सो पीलपाट इहि नाम रूपात, प्रभु तास रीति मेळन करात ॥
करि अतर दान सतकार किन्न, पटगृह पधारि तस सीख दिन्न२०
हुव नयन नव ससि१९२२अब्द आत, सहमास९चतुर्थी४दिवसपात
कासीहु करन जात्रा जनेम, पटगेह प्रीति सहकिय प्रवेस ॥२१॥
लिय सत्थ भीम२०४पट्टप कुमार, भौजिष्य जगन्नाथहि उधार ॥
पटरागिनि लिय पुनिप्रीतिहारि, पुनि बुरजसिकारहि रहि पधारि२२
तैपासित तेरसि१३दिन दिवान, प्रभु अप्प२०३सबाहिनिकरिप्रयान
हुवलान द्रग दिप पहुं मुकाम, दूजा२मु नयनपुर दिप विस्राम२३
विश्राम समीधी तिम तृतीय३, किय पुनि मुकाम चोरु तुराय ॥
इमकरत मुकामन अधिपआप२०२, प्रतिमुद प्रयागनगरी अवाप२४
अनलावकअतिधृति१९२३लगत साल, मनु१मास असित ९ राति
थि१३ नृपाल ॥

बलि हह भानु आगिरसपवार, उडोसपुरी बेसिय उदार ॥२५॥
निर्वाहि वेदविधि कियउ न्दान, दिप इक पंचाशत५१ पुहविदान
नागोध राघवेन्द्रहि ममत्थ, किय भीम२०४कुमर सम्बध तत्थ२६
अरु जगन्नाथ भौजिष्य एम, पुनि वीरसिंह कापरानि तेम ॥
करि तिलक बहुरि दे नालिकर, सित सुक दसमि१०वे लग्न फेर२७
नागोध गमन किय राघविक, चक्रमन कियउ पुनि इडइव ॥

नागोध नवमि९ पगगृह पधारि, भेजिय उन मेवन हित बढारि॥२८॥

सित सुक्र दसमि पुनि सुक्रवार, सद्धिय सु लग्न पट्टप कुमार ॥

बलि वीरसिंह तस२०४व्याहि साथ, करग्रहन भिन्न किय जगन्नाथ
इनमाँहि राघवेन्द्राभिधान, कन्या स्वकीय दुव२ भीम२०४ दान ॥

सो सुरजभानु कुमरी गरीय, दिय तेजभानुकुमरी द्वितीय३ ॥३०॥

सुचि४असित२त्रयोदाशि१३आरवार३,—तकुन ग्रामठकुरउदार २०३

हरवंशराय तनया सु आहि, सुभ नाथकुमारि प्रभु अप्प व्याहि३१

सुचि४सुकल१पंचमी५सुक्रवार६, करि कुंच सिंहपुर रहि उदार२०३

इम चलत मुकामनकरत आप, हिंडोन हड्ड अधिपति२०३अवाप३२

महिपाल करोली मदनपाल, उत्तम जन भेजिय तहँ उताल ॥

सो जानि सभा करि लिय बुलाहँ, आहूत मलुकपालादि आइ॥३३॥

गौरव प्रभु मुजरा करत दिन्न, करि नजर निछावरि अरज किन्न

जयमदनमोहन—जन स्वकीय, कहि करहु सदन सुभ अस्मदीय३४

कर उत्तमांग करि अधिप आप, हठ क्रमन अकिख सीख सु ददाप॥

ओष्टा६ऽर्जुन नवमी९कारि प्रयान, विश्राम वरोदहि दिय दिवान॥३५॥

चिंक्रमन करि रु दशमी१०चुहान, इक१ — करोलीतें दिवान ॥

अहिफेन बेल रहि लिय नृपाल, प्रभु सम्मुह आगत मदनपाल३६

मिलि करि रु परस्पर हत्थ मत्थ, उत्तरन बहुरि हुव दुव२हितत्थ ॥

मिलि दुव२हि बच्छतैं उर मिलाइ, उपवेसन किय घटि अद्धपाइ३७

अधिराज प्रीति सह पुनिअभिन्न, नालकिं उपवेसन इक्क१किन्न ॥

अरु मिलि दुस्सेन मुदजुत अमाप, वसनोक करोली दुव२अमाप३८

तहँ घटी इक्क१ रहि पुनि उताल, पुरप्रति किय जावन मदनपाल ॥

एहि दिवस तिथी१५ तहँ हड्ड राम२०३, कुरगाम नाम बलि किय

मुकाम ॥ ३९ ॥

इम करत कुच्च प्रभु पुनि मुकाम, जनपति बुन्दीपुर आजगाम ॥

कोटेस राम २१२ इहिं १९२३ साक माहिं, अरु राध २ चउइसि १४
सुक्ल आहिं ॥ ४० ॥

महिपाल सोहु कछु गद ममार, तस पट्ट पंचसिख सुदत धार ॥
मो सत्रुसल्य २१३ इहिं नामरूपात, सुभ दिन भद्रासन तिलकपात ४
साइव सुवृद्धत ईडन सनाम, कोटेस २१३ हिं टीका देन काम ॥
आगतइह जावत तहँ उताल, कियक्रमन तास अभिमुख कृपाल ४
सल्लाप भव्य सय करि रु सीस, आगमन ससाइव किय -
पुनि सिंहचतुष्पथ प्रीति पाइ, दै सिक्ख तास प्रासाद जाइ ॥ ४३ ॥
आरामरत्नसाइव अवाप, असुकगृहसाइव जाइ आप २०३ ॥
उपवेसन खुरासिन कियउजास, समयाल्प रहि रु दै सिक्खतास ४
अधिराज कियउ प्रासाद आन, साइव किय कोटा दंग जान ॥
माघा ११ ५ जुन एकादसि ११ मिलत, मथुराहुवभाता भोम २०३ अतः
इति श्रीवगभास्करे एकोनविंशो मयूख ॥ १९ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

सक बिक्रम जिन नद ससि १९२४, अमा ३० रु चैत्र अनेह
भोमसिंह २०३ भ्रातृज भुवप २०३, आइ विश्वेश्वर २०४ एह ॥ १
काढि दिवस आराम कति, प्रभुके लगिय पाय ॥
तवहि स्वकर सिर फेरि तस, लिखों क्रोड लगाइ ॥ २ ॥

॥ मनोहरम् ॥

विश्वेश्वर २०४ १ सिद्धकों विसासि रु अधिप आप २०३,
प्रत्यह कराये वेद ४ नाणक असनकों ॥
राखी कछु भिन्न पुढव रीति सु महार करि,
पुढव जो हवेली सोहु तास २०४ दै रहनकों ॥
व्याकरण आदि शास्त्र अध्यापक मेलिह बलि,

दिनप्रति दूनी करि बुद्धिहु मननकों ॥
 बहुरि नागोध दंग करिकै विवाह ताकों,
 नयो ग्राम नाम राम२०३ बाम दै बसनकों ॥ ३ ॥
 मास नभ५ धवल१ चउदसि१४ रू आर३ वार,
 दुर्गापुरी ईस संभूसिंह२० अवसानभो ॥
 आत्मजहू ताको ओंकारसिंह२० पट्टपति व्है,
 गोरवादि काज प्रभु राम२०३तहँ जानभो ॥
 बिहित बिधान पुब्ब होजो प्रभु ताको तास,
 सो सब ओंकार२० सिंहको ब प्रभुदानभो ॥
 सस्त्र१ अरु सास्त्र२ तास२० अध्ययन सासन दै,
 बुन्दीपुर राम२०३ को प्रवेसन बिधानभो ॥ ४ ॥
 प्रौष्टादसित नवमी९ दिवाकर उदय होत,
 लध्वी प्रातिहारी जनी धीदा प्रसवकाल ॥
 अंकक२ दिवस सोहुरहिकै यतासु भई,
 सौवस्तिक ताको कर्म कारक भो नृपाल ॥
 अष्टमी८ नभस्प६ सित बहुरि सु व्यवहार,
 नाम रसरंग जो भुजिष्या कियउ काल ॥
 साइब जु रूसइस७ बुन्दिष अजंट आत,
 रामप्रभु ताको संमेलन कियउ ताल ॥ ५ ॥
 भूत दुव अंक ससि१९२५सुचि४ सुचि मास केर,
 एकादशी११ आर३ बेद४ नाड़ी दिवस आत ॥
 मिश्रन कवींद्र रविमल्ल बहु आमपतै,
 बुन्दीदंग माँहिँ प्रभु निर्जरनैर पात ॥
 सो सुनि अनंत शोक करिकै नरेंद्र आप,
 स्नानकरि अनल अंजली दियउ तात ॥

तास पुत्र अगुन मुरारिदान नामकको,
 अभ्युत्थान आदि दे विसासि हित दिखात ॥ ६ ॥
 भाद्रदसित पछाँद सदानंद जो भुजिष्यो भूप२०३,
 जगन्नाथ जननी पंचत्वपन पातभो ॥
 सहासित२ पक्ख दोजि२ उपरि तृतीया३ आत,
 सोमवार२रति सत्त७ नाढीकोँ विहातभो ॥
 पट्टप कुमार भीमसिंह२०४१हूके स्वर्ग जात,
 हाहाग्व बुन्दी घरघरहि दिखातभो ॥
 ताको दाढकर्महु पुरोधतै करापपुनि,
 ———कति अधिक कुमारन करातभो॥ ७ ॥
 सवत तर्क दुव अतिवृति१९२६ समय होत,
 रत्नग नभ५ भूप गो करोली मदनपाल ॥
 नवमी९ नभस्प६ सित१ बहुरि अमात्य आप२०३,
 बहुग गतासु भयो जीवन अतलाल ॥
 गो मुनि नरेन्द्र आप२०३चदनकोँ खड इक१,
 दैकेँ प्रेतवनकोँ पठायो चर उताल ॥
 सासनानुसारि प्रभु२०१३ सोहू तहँ जाइ पुनि,
 उज्झिप सकल सो कापालिक क्रियाकाल ॥ ८ ॥
 प्रातिपदि१ आरवार३ आश्विन७ आसित२ आत,
 लघ्वी प्रतिहारी प्रात होत जन्यो श्रीकुमार ॥
 ताको जातकर्म वेदविधितै सधाइ पुनि,
 आढ्य ताको रघुवीरसिंह२०४१३ भो उदार२०३ ॥
 सार आढ्य रकनकोँ करिकेँ बहोरि आप२०३,
 जाचकन अत्यहू दिवायो बसु अपार ॥
 भूसुर गणप अभिरूपजनहूकोँ बलि,

स्वापतेय१ बसन२ निवाजे तैं धर्मधार ॥ ९ ॥
 मार्गशीर्ष९ मासहू द्वितीया२ सित पक्ख होत,
 साहब वृहत अजंट सह बुंदी आइ ॥
 वृहत किटिंग इहि नामक के सम्मुहकों,
 गाम जोधसागरके संनिधि प्रभू जाइ ॥
 तुरग बिहाइ रु विछातके उपरि आत,
 सीसकरि पानि परस्पर हित दिखाइ ॥
 आरुहि सु अब्ब किय क्रमन वरव्वरतैं,
 आइ पू बुंदी सिंदचत्वर बहुरि पाइ ॥ १० ॥
 साहब सिबिर गयो मानिकसुचोकमाहिं,
 राजराज राम२०३अप्प प्रासादन पातभो ॥
 बहुरि तृतीया३ सोमवासर२ किटिंग आत,
 गोपुर बलवंत रठुऊर भिजातभो ॥
 हत्थीपोल उत्तरि सु अंदर प्रवेस कियो,
 अपाश्रय महल छत्र सन्निधि जातभो ॥
 जाइ तहँ सम्मुह मिलाइ कर सीस करि,
 मेवर अजंट सह संसदहि आतभो ॥ ११ ॥
 बेला अल्प राखि दुवर अतर रु पान करि,
 सिक्ख दै प्रथम रीति किय पहुंचानकों ॥
 अंसुकसदन तास बहुरि पधारि आप२०३,
 सम्मुह किटिंग पद पंच५ किय आनकों ॥
 अवसर अल्प राखि करिकैं समय वृत्त,
 अतर किटिंग पुनि दियउ दिवानकों ॥
 दैकैं सिक्ख ताहि श्रोवसीयस बचन भाखि,
 राजराज राम२०३ निज धाम किय आनकों ॥ १२ ॥

सत दुव अक ससि१ बाहुल८ अमावसि३०कों,
गोन अजमेर किय लार्हदि मिलनकों ॥

करत मुकाम कुच्च द्रुत अजमेर जाइ,
लार्ह मिलि गोन किय पुष्कर सबनकों ॥

न्दाइ तहाँ जाइ वेदविधितैं सधाइ पुनि,
भोजन जिमावहु भूसुरजननकों ॥

पचसत५०० नाणाक अनेकप दिवाये दान,
आये पुर सुदी अप्प बटि बहु धनकों ॥ १३ ॥

अहि दुव अक इक१९२० विक्रम नरेन्द्र सक,
अधवल तपस्य१२ द्वादसी१०हू सौम्यवार२ ॥

सत्त७ पल अमल निशीथके उपरि आत,
रानी प्रातिहारी जन्पो लध्वी लघु कुमार ॥

जात१ नाम२ कर्म वेदविधितैं सधाइ तास,
रगगजसिंह२०४१४ नाम मजुल भो उदार ॥

चारन१ रु भट्ट२ आदि दैन सब जाचककों,
राज राज राम२०३ दसो वसु कति हजार ॥ १४ ॥

नंद दुव अक भू १९२९ समा रु सुचि६ मास माहि,
बीकानेर भूप सरदारसिंह कालभा ॥

ताके वंधुगनमें दुगरसिंह नाम हुतो,
सोहू पट्ट पचसिख पाइकैं भुवालभो ॥

पुशियाम१५ दिवसतप ११ जोधपुर भूपतिहू,
स्वर्ग तखतेस जात रानिन विहालभो ॥

पट्टप कुमार जसवतसिंह पूरबहू,

राजकरि कज्ज पिता अतर नृपाल भो ॥ १५ ॥

नभ गुन अंक इक१९३० बाहुल८असुचि पक्ख,

सप्तमि७ सु बहुरि दिवाकर१ वारपात ॥
 साइब वृहत पेली१ बर्कली अजंटी दुव२,
 आवत नयर बुंदी दुतही सु प्रभात ॥
 सम्मुह गमन आदि मेलन सु पुव्व जिम,
 करि तस गेहपट जाइ हित दिखात ॥
 महलन प्रवेस किय दैकै सु सिक्ख तास,
 साइब वृहत अजंठ सह कोटै जात ॥ १६ ॥
 बाहुल८ धवल१ तिथी हरि१२ हरिवार होत,
 पट्टनिपुरीकों प्रभुराम२०३ किय पयान ॥
 ग्राम रहि ठिकरे बहोरि तिथि मार१३ सौम्य४,
 पट्टनि सिविरको प्रवेसितभो दिवान२०३४ ॥
 राका उपराग बलि केसव वरश करि,
 बिहित विधान करि वेद सु न्हान दान ॥
 सार्दमासइक्क१॥ तहँ रहिकै बहुरि आप२०३४,
 राजराज राम२०३४ नैर बुंदी कियउ आन ॥ १७ ॥
 इक्क गुन अंक भू १९३१ समान सक विक्रमके,
 फगुन चतुर्थी४ श्वेत जीव५दिन पायोहै ॥
 महाराज आदिक कुमार रघुराजसिंह२०४१५३,
 रजनी पहर१ गये उद्व दिखायोहै ॥
 लक्ष्मन लुटाइ द्रव्य भूमुर रु रंकनकों,
 जातक-वैदिक विधान बनवायोहै ॥
 राम२०३४ नरनाह सब देसनके जच्चनकों,
 इच्छामित स्वापतेय अमित दिखायोहै ॥ १८ ॥
 रस गुन अंक ससि १९३६ संवत बहुरि होत,
 अष्टमी८ अनेहाऽसित सुक्र३ अपनायोहै ॥

इक१ पल छप्पन५६।१ घटीके इष्ट लच्छी अंस,
लक्ष्मणा२०४।६ कुमारिहूको जनन जनायोहै ॥
नव गुन अक इक १९३९ हायन नवीन होत,
सावन प्रथम मास विसद सुहायोहै ॥

चढत दिवाप तीन३ घटिकाहू पंच५ पल,
रघुवरसिंह२०४।७ जन्म चउदसि१४ पायोहै ॥ १९ ॥

उक्त सक १९३९ हीमें जसवंत भूप जोधपुर,
पुत्री तखतेसकी स्वभगिनी बनाईहै ॥

असित ततीया३ माघ११ काव्य११ दिन लग्नकाल,
कुमारी सोभाग्य रघुवीर२०४।३।१सिंह पाईहै ॥

रंगराजसिंह२०४।४।२ लघु सोदर बहुरि व्याही,
सूरज कुमारि चोथि४ जोरावर जाईहै ॥

उक्त तिथि४हूमैं सिंहमुहुब्बत पुत्री बल,
दिव्य देवकुमरी रघुगज२०४।५।३ हित दाईहै ॥ २० ॥

वावाता कुमार तखतेसको जवानसिंह,
पुत्रिका समर्थ नाम कुमरी कहाईहै ॥

माघा५११सित२ चोथि४ मद७ वासरहू लग्नकाल,
जगन्नाथ पुत्र हरिनाथहित दाईहै ॥

करि उपयाम तथ रहिकैं कितेक दिन,
दुहुँ२दिस प्रीति रीति परम दिखाईहै ॥

महारावराजा श्री दिवान रामसिंह२०३।४ बलि,
आइकैं प्रवेशि छुरी नेगर बधाईहै ॥ २१ ॥

गोपुर चोगान बनायो सत्रुसाल१९५ तास,
गोपुर१ बनायो वाक्ष संनिधि अप्प राम२०३।४ ॥

तोरन प्रासाद जोब बज्जत हजारी द्वार,
ताके सन्निकर्ष त्रिंश्रहारिका२ बनाई बाम ॥

तास अग्ग अंदर बनायो इक द्वार गेह३,
 अंतिक बनाई तास बिद्वारि४ बंब काम ॥
 मोतीकूप निकट बनाईहू तिवारी५ पुनि,
 तामै विष्णुस्वामीकाति रहत अठ्ठ जाम ॥ २२ ॥
 न्याय६ मुल्क७ नामक कचहरी द्वैर बनाई पुनि,
 मंदुरा८ सुखम बनाई भीमकुंड पास ॥
 मंदुरा९ द्वितीय२ कौन नैर्कत बनाइ प्रभु,
 अज्जहू बजत सोनपाइगाँ९ नाम तास ॥
 छत्रमहल माँहिं जलजंत्र१० अरु होद११इक,
 त्रिद्वारी१२ भई पुष्पगो रखन वितर्दी जास ॥
 दूदा१३के महलहूतैं द्वार लग बाह्य दुर्ग,
 खुरा१३ किय तातैं लर्प जावत अनायास ॥ २३ ॥
 दोहा-तोरन१४ अरु त्रिद्वारिका१५, मंगल द्वार समीप ॥
 जीवरखा दूजेहु इक, महल१६ जु कियो महीप२०३१४॥२॥
 बज्जत चाहुंडा बलज, तास बाह्य त्रिद्वारि१७ ॥
 प्रभु भंडारन सहित पुनि, कमन राम२०३१४ प्रभु कारि२
 बायुकौन उडुदुर्गतैं, स्वापतेय सरसाइ ॥
 देवी चाहुंडा सदन१८, बलानाथ२०३१४ बनवाइ ॥ २६ ॥
 कौतुक मृगया कज्ज बलि, तुंग१९ रचिय अति बाम ॥
 बहुरि पुष्पसागर बली, रचिय मल्ल२० अभिराम ॥ २७ ॥
 कुंड२१ इक्क१ ताके निकट, मध्य जु छत्री पाइ ॥
 सागर पुष्पतड़ाग तट, केतक बाटि कराइ ॥ २८ ॥
 बालागढ किल्लादि बलि, इतर जु थान उदार ॥
 जँहँ जँहँ अंशित भो तहां, किय जीरन उदार ॥ २९ ॥
 इतिश्री वंशभास्करे
 विंशोमयूखः ॥२०॥
 इतिश्रीवंशभास्करनामको ग्रन्थः समाप्तः ॥

॥ श्री ॥

बुधसिंह चरित्रका शुद्धिपत्र

पक्ति अशुद्ध

शुद्ध

२३ सय ही का चत्कठा

सय ही की चत्कठा

४ ज्यों का त्पा

ज्यों की त्यों

२० चिता चिता

चिता चिता

१८ ताके घशमें

ताके घशमें

२० बुधसिंह को

बुधसिंह के

२० ताको तनया

ताकी तनया

१० अप्पनों सत्थ

अप्पनों सत्थ

२१ सोही कठीरय

सोही कठीरय

४ मेर खट ६

फेर खट ६

२४ अगगर आगरा

अगगरा आगरा

२५ अम अमावास्या

अमा अमावास्या

११ दकिठडो

धकिठडो

११ अयसानयो रतयो

अयसानयो रतयो

२७ मिलकर

मिलाकर

१७ आलमके च्यारि ४

आलमके ए च्यारि ४

६ एकघारि

घकघारि

६ घटी कुष

घटी कुष

५ पक्खर तीन

पक्खर तीन

३ घुग्घर नद

घुग्घुर नद

११ मेक कि भद

मेक कि भद

८ समगत

समगत

१५ नगरों

नगरों

१ रनपह

रनराह

२२ तुगऊची

तुगऊची

२२ हजार

हजारों

२ षडिपीबिन

षडि पीबिन

१ षडि घूम

षडि घूम

राजिहि रग

ए जिहि रग

२१ माणिक्य

माणिक्य

११ प्रछल गय

प्रछल गय

११ ददिरय

दीदारय-

७ मण्यो अनीक

मण्यो अनीक

(२)

२९७८	२५	कंधबंधतै	कंधबंधतै
२९७९	२५	अंगाली	शंगाली
२९८०	३	अग्निअकी	अग्निअकी
२९८१	७	सेरघटा	सेनघटा
"	२७	मडलाकार	मंडलाकार
२९८२	१८	फिफ लोके	फिफ लोके
"	२६	धनी भीर	धनी भीर
२९८३	२४	पट मतगज	पट मतगज
२९८५	६	बाहक महत	बाहक महत
"	"	बहत उछाहक	महत उछाहक
"	७	तिततेसजव	तित तित सजव
२९८६	३	तान मंडन	तान मंडन
"	१२	जालम जन्धो	जालम जन्धो
२९८८	५	कोच कहै	कोच कहै
"	११	तननकत	तननकत
२९८३	५	मंडलकोरि	मंडल फेरि
२९८५	१७	इहितर	इहि अंतर
२९८९	३	बलीतैरषी	बलीतैरषी
३०००	६	पाये केवल छत	पायो केवल छत
३०१०	२५	पिता को	पिता के
३०१२	२६	हर्ष के साथ भेजो	हर्ष के साथ भोगो
३०१३	२१	समान आनकर	समान मानकर
३०१५	२४	मेरा पुत्र	मेरा पुत्र
३०२४	१३	महाराणा सैन्य सहाय	महाराणा सैन्य सहाय
३०२५	५	प्रबुद्ध	प्रबुद्ध
"	९	चाहि मुद्धपन	चाहि मुद्धपन
३०२६	६	जैतसिंह	जैतसिंह
३०२८	१७	सादर सुख न	सादर सुख न
३०३१	१२	सतपंच ५०० तामभीर	सतपंच ५०० तोपभरि
३०३३	२	दगतारा	दगतारा
३०४४	८	पोतनचम्मलि	पोतनचम्मलि
"	२९	और आ आदि से	और आदि से
३०४६	२०	तह संघ	हत संघ

फाघसे
 भाईहनें
 पच्छो अप्पिय
 चीतोड़के राव थे
 सुपचीगीत,
 घाटा में
 सेनाओं को
 कटोपतिप्रति
 सुपकी किरणों को
 निज भवति
 भानजी की
 भुज्जहिं कल
 बहा जम्हो
 अप्पजा दिखी
 स्वामिधर्म सगलै
 देवयज्ञ कहलाता है
 धारनमें भरयो
 बुरे स्वभाववाला
 पुनारामपु लेखन
 भ्रात जाहि
 ज्योतिषियों में
 चाहना मिटाते हैं
 काल मर्चें
 योगिनियों का
 घोड़ों का
 खानेवालों का
 कुपायकें
 (खरणी)
 तिरती है सो
 हाडों के शस्त्र
 शत्रुओं को ठोक कर
 और घेरया
 धीर रु रवट्ट
 घूमके नाच से

फाघसे
 भाईहनें
 पच्छो अप्पिय
 चीतोड़के समराव थे
 सुपची गीत,
 घाटा में
 सेनाओं को
 कटोपति प्रति
 सुपकी किरणों को
 निजभूपति
 भानजे की
 भुज्जहिं किल
 बहा जाओ
 अप्पजा दिखी
 स्वामिधर्म सीसलै
 देवयज्ञ कहलाता है
 धारन में घस्यो
 बुरे स्वभाववाला
 पुना रामपुरलेखन
 भ्रातृजहि
 ज्योतिष में
 चाहना मिटाती हैं
 काल नर्चें
 योगिनियों के
 घोड़ों के
 खानेवालों के
 कुपायकें
 (खरणी)
 तिरती है सो
 हाडों के शस्त्र
 शत्रुओं को ठोक कर
 और घेरया
 धीर रु रवट्ट
 घूमर के नाच से

(४)

१८०	१९	भूपि बरकैं	भूपि फरकैं	१२७४	२१	सुरगे बाले	सुरगे बोले
१८३	२७	पुरकती है	फुरकती है	॥	१६	७ शख	७ शंख
१८५	२१	देवसिंह के	देवसिंह का	३२७१	१४	अक सत्रह	अक सत्रा
१८८	२४	साहयता के	सहायता के	॥	१७	धूम धोरनी	धूम धोर
१९४	१०	गहिमांहि	गहि बांहि	३२७७	२१	विनाविजला	किनाविज
१९७	९	जाबहु	जाबहु	३२७९	३	मुकल्या	मुकल्यो
॥	१५	रत	बन	३२८१	२०	तखत खान	तखतरवा
२००	२१	खैंचती हुआ	खैंचता हुआ	॥	२३	उतरा तब	उतरा तब
२०१	२२	संग्रामसिंहको	संग्रामसिंहका	॥		तखत खापर	तखतरवा
॥	॥	दुर्जनशालका	दुर्जनशालको	३२८२	१	भलीफल	भलो फल
२०३	१०	नसे हौ	नसैहो	३२८३	१५	उदघोस	उदघोष
२१२	१४	भजहु	भेजहु	३२८८	२४	कुलावंतस	कुलावंत
२१३	२	बससैन	सध सैन				
२१४	५	राम संग्राम	रान संग्राम				
२१८	२१	अधमी	अधमी				
२२२	२५	बाघसिंह पुत्र था	बाघसिंह का पुत्र था				
॥	२३	करनेवाला था	करनेवाला था				
२२५	२५	रहन तक का	रहने तक का				
२३५	१०	बधावनलाड	बधावनलाड				
२४४	१	कालिया देवि	कालिका देवि				
२४८	२१	सन साथ	सन के साथ				
२५०	१६	महाराणा जयसिंह	महाराजा जयसिंह				
२५१	२२	जीम अक्षर ऐसा होता है	जीम अक्षर बड़े पेटवाला होता				
२५१	२२	नरवर के राजा और कोटा के	नरवर के राजा गजसिंह सहित				
		महाराव गजसिंह सहित					
२९८	२१	कलीजखां का	कलीजखां का				
२९८	२२	खानदारा को	खानदोरां को				
२९४	३	पखर जरजीन	पखरे जरजीन				
॥	२८	चपलते हैं	चमकते हैं				
२९८	७	लंबसिखी	लंबसिखा				
२९०	२१	नादरशाह को	किसीको				
२९३	१	न नाँक है	न नाँक है				
२९४	२१	कलही हमस	कलही तुम से				

उम्मेदसिंहचरित्र का शुद्धिपत्र

—*o*—

१-६१	२१	छोटी	छोटी
३२६४	३	तब आयो	तब आयो
३२६५	१७	आभिषेक	आभिषेक
३३०१	१५	पच्छे फिरहु	पच्छे फिरहु
"	२३	षष्ठतसिंह	षष्ठतसिंह
३३१०	१४	दूजाघर	दूजाघर
"	१६	खगमकी	खगमकी
३३१६	२२	नेतादेकर	नेतादेकर
"	१७	दमहुष	दमहुष
३३२३	२३	जनान में	जनान में
"	२६	१५दोकड़	१५दोकड़
३३२७	२१	सेनाकी	सेनाकी
३३२८	६	पन्नगकी ७रुनमाल	७पन्नगकी फनमाल
"	२०	शेषनागका	शेषनागकी
"	२२	चलक कर	चलकर
३३३१	२०	दोनों ओर	दोनों ओर
३३३२	२२	उसके अग्निसे	उस अग्नि से
३३३६	१६	अरोहि	अरोहि
३३३७	२०	जुब जीतनेवाले	जुब जीतनेवाले
३३४०	१०	सुखम खाट	सुख खाट
"	२२	(लफला)	(लफला)
"	२४	रगवाले	रगवाले
३३४६	१६	आहिये	आहिये
"	२५	दोनों कानों के	दोनों काना के
३३५१	१८	मलग में	मलग में
"	१६	सखभौर	सखभौर
३३५४	१७	बुर्जनवाले	बुर्जनवाले
३३५८	१७	अथवा राज	अथवा राज
३३६२	२५	जघा कहते हैं	जघा कहते हैं
३३६५	७	अथ घन	अथ घन
३३७३	२१	दक्षिण में	दक्षिण में
३३८४	१०	चुकि	चुकि
"	२४	भूमिका	भूमिका

३३८४ २६ पड़ना जनाकर
 ३३८५ १ लैनाकिये
 " २७ तिरान
 ३३८७ २४ ७पुत्रीकी
 ३३९४ २ आपरु
 ३३९७ १३ चुरेल
 ३३९९ १९ उधरदादर
 ३४०० २४ और हधर १०
 ३४०२ ५ जगो अद्रिन
 " २६ भलेको निकालो
 ३४०५ ३ हेति बढाया
 " २३ हुरोंके
 ३४०६ २२ अप्सराओंकी छातीपर परतलेलगे

" २४ नाकेंफुलाये
 " २५ कानों में
 ३४०७ ६ सुराग
 ३४११ १६ निंदासुनत
 " २५ तबसे नीचेकी
 ३४१३ २१ अमरसु
 ३४१४ २० आदि स
 ३४१५ १६ आकाश में
 ३४१६ आडावाढ बज

३४१७ ६ पासतुसार
 ३४२७ १६ दचक्के हैं
 ३४३० २२ पैदल और
 " २३ १२ननीन
 पृष्ठकअंक ३३४
 ३४३४ २० काटिमेखला
 ३४३६ १८ दिवपत्त
 ३४३७ ६ संगित सैन
 " २४ खड्गका
 ३४३९ ८ कट्योकछु
 ३४५० ६ साजय

पड़ना जानकर

लैनाकिये

तिरानवे

पुत्रीको

आयरु

गुरेल

उधर दादुर

और उधर १०

लगगी अद्रिन

भूखेको निकालो

हेतिबढाया

हुरोंके

अप्सराओंकीछातीपर हारऔर
 र वीरोंकीछातीपर परतलेलगे

नाकफुलाये

कानोंके

सुराग

निंदा सुनत

तब नीचेकी

अमरसु

आदि से

आरंभ होके आकाश में

आडावाढ बजा अथवा हाडाओं
 की तरवारोंका ढालोंपरवाढबजा

पासतुसार

दचक्के हैं

पैदल और

१२नवीन

३४३४

काटिमेखला

दिवपत्त

संगिन सैन

खड्गकी

कट्योकछु

सजिय

३४५१	२१	मधुगढ में
३४६३	१३	विष बटन
३४७१	१४	काकतै बल
३४८०	७	सुहीमलि
३४८१	१	पोंकह
३४९१	३	आषह
"	२३	निमश्रित किये
३४९१	२४	ला डाल देते हैं
३४९७	२०	कहवाहे रूपी
"	२१	जातपेद ओरि
३४९८	३	धूम धीरनकी
"	८	बिजय वेद
"	२६	सय भर कषनार
३५०६	१५	कटत करकी
"	२५	मनी जाती है
३५०७	१६	पचरग डहे
३५०८	२४	बडती है
३५१०	१४	कैलनेम
"	"	चद्रमाक
३५१६	३	बदयपुर
३५१७	१	कटिगय
"	२५	पीकण के प्रहार से
३५२०	५	समसेर झार
३५२१	२१	बलिदान को है
३५२३	८	कपौघन
३५२४	५	जै नृपतिहू
"	१७	यहू
"	२६	निर्मय
३५२८	१०	जावन अष
३५२९	१०	ईश्वरिसिंह
३५३०	१४	बुदीन बिरुद
"	११	अरघ्यो
३५३१	१४	कर्मराज
३५३२	२८	तीनसो ३०६

मधुकरगढ में
विष बटन
काकतै बल
सुहिमलि
पों कहे
आषह
निमश्रित किये
ला डालते हैं
कहवाहे रूपी
जातपेद जोर
धूम धोरनकी
पिजय वेग
सय कषनार
कटत कीरकि
मानी जाती है
पचरग मंडे
बडती है
कैलने से
चद्रमा के
बदय पर
कटिगय
पीजण के प्रहार से
समसेर झारें
बलिदान को लेते हैं
कपौघन
जैपुर नृपहू
यहू
निर्भय
जावन अष
ईश्वरीसिंह
बदीन बिरुद
अरघ्यो
कर्मराज
तीनसो छै ३०६

३५३१	११ रवायअसि	खायअसि	३७०६	३ अंवदता	अंवदात
३५४३	१६ जयपर	जयपुर	३७१२	३ अंतर ननहू	अंतर सुनहू
३५४६	१६ दिक्खनरहि	दक्खिनरहि	३७१४	१८ समयमित्रसे	समयके मित्रमे
३५५५	८ यश१ दम१	यश१ अरुदम१	३७१५	२६ ६ पुत्र	६ पुत्र अथवा भाई
३५५६	१४ चित्रकूट१	चित्रकूट१	३७२४	२७ मटका कट	मटकाकर
३५६१	१५ भटसप्रीति	भटन सप्रीति	३७२९	१ लहिरागकछु	लहि रोग कछु
३५६८	२४ लोगों का	लोगोंकी	३७३१	२४ गोघूदेकाराजा	गोघूदेकाराज
३५७०	२६ डेढ़ेभाईको	डेढ़ेभाईको	३७३३	२१ इच्छावाल	इच्छावाले
३५७६	१ संग्रामवि-	संग्रामवित्सा	३७३७	१ पठवाये	पठवाय
	त्सदि१	दि१			
३५८१	१० के लगगत	कें लगगत	३७४०	१५ तिनमें सुनी	तिनमें सुनी
३५८७	२३ शुक्लपक्षको	शुक्लपक्षको	३७४३	१० फिफ्फ फलतैं	फिफ्फ फैलत
	द्वितीय	प्रथम			
३६०५	१६ बैरतीन	बैरतीन	३७४५	१४ महाजरका	महाकरका
३६१०	४ द्विजदीनकी	द्विजदीनके	३७४६	१३ चमउदैपुरकी	चमूउदैपुरकी
३६१२	२१ ६ राजा ने	६ गलेमें राजा	३७४७	२६ इसकारण	इसप्रकार
	विष खाया	नेविष खाया			
३६१४	१० भक्तभयो	भक्तभयो	३७५१	१८ भरतसिंह	भारतसिंह
३६२६	१३ सब अरज तब	अरज	३७५५	१६ व्यय औसी	व्यय औसो
३६२७	१६ तुम्हारे पिता	तुम्हारे पिताने			
३६४४	१४ फणों को धारण	करनेवाला		फणोंको नीचाकरके	फूटकारकरनेलग
३६४३	९ बाहवाइ			चाह बे बाह	
३६४९	६ पापी छकैं			पापी छकैं	
३६४९	१३ खेलहे			खेलहैं	
३६५०	३ मात तब			माततब	
३६५६	२५ राजावतावेक	मसिंहकेलिये		राजावत विक्रमसिंह	से लेकर
३६६७	२४ कुंभफलक			कुंभफलस	
३६८२	६ तमकेईत			तमकेईतैं	
३६८४	२३ गिरतमार			गिरतभार	
३६८६	५ सहन मार			सहनमार	
३६८८	११ पौनछैहि			पौनछैहि	
३६९६	१७ क्रीड़ामें ऐम			क्रीड़ामें ऐसे	
३६९९	७ परतापतियन			राजसिंह तियन	
७०५	१३ मंडि मंत्रन			मंडि मंत्रन	

॥ अजितसिंहचरित्रका शुद्धिपत्र ॥

पृष्ठ पं० अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ पं० अशुद्ध	शुद्ध
१७६० ६ छहें द्वे	छहें द्वे	१७८२ १३ प्राविसे	प्राविसे
१७६२ ३ बाधनपारकीवहुरि	दोहाबाधनपारकीवहुरि	१७८२ १७ गजपारि	गजपोरि
उदयमानुकुठपरिदेहा		उदयमानुकुठपरि	
१७६१ ४ संखर्प	शृंगर्प	॥ १८ संतपञ्च	संतपञ्च
७६७३ ११ गिरायर्क	गिरायर्क	॥ २५ देखोगे	देखूंगा
१७७१ १५ छेनगपो	छेनगपो	१७८३ १ वप्रधो महि	वप्रधो महि
१७७१ १६ प्रमुदित	प्रमुदित	१७८८ २१ [अंतर]	[अंतर]
१७७७ ११ नजरानियेदि	नजरानियेदि	१७९६ ११ बोभविष्याह	बोभविष्याह
१७७७ ११ है अजमेरु	है अजमेरु	१७९८ २१ राजाका	रानाका
१७८० ३ भणायपुरभव	भणायपुरभूप	१८०३ २१ निजपातिमगे	नि

॥ विष्णुसिंहचरित्रका शुद्धिपत्र ॥

१८१५ १९ सन्पाहर्षे	सन्पाहर्षे	१८०८ १५ सिंहरित्रे	सिंहचरित्रे
१८१७ १० कोटपति	कोटापति	१८१० ५ अमात्यरनै	अमात्यरनै
१८२२ २१ अनिपारा	अनिपारा	१८११ २५ जनानासे	जनानासे
१८३३ १६ कीमोही	कीमोही	१८१० ११ देवसिंह	देवसिंह
१८३६ १ धारनही	धारनही	१८३१ २२ बर्मासामर	बर्मासामर
१८४० १६ कपडनाहै	कपडनाहै	१८३५ ६ सन्ततसंग	सन्ततसंग
१८४१ १७ कन्याजाम	कन्याजाम	१८४४ १० बघाईमै	बघाईमै
॥ ११ मगहीसों	मगहीसों	१८४७ २१ मिससे	दर्शनके मिससे
१८५२ २० रणोपुर	रणोपुर	१८४८ २७ रत्नाहोरमै	
१८६१ १३ रीतिघटी	रातिघटी	१८५७ १२	
१८६७ ११ साँकते	साँकहीके	॥ २६ विष्णुसिंहमे	
१८७० १ महिराजि	महिराजि	१८६५ ६ टेकीलागे	टेकीलागे
१८७७ २३ रमलपुर	रमलपुर	१८६६ ६ बाहलमाय	
॥ २४ वअछपुर	वअलवर	१८७२ १२ बहुर्या	बहुर्या
१८८० १० कहाई	कहाई	॥ १६ नारिनकाँ	नारिमकाँ
॥ १४ मुरायसो	मुराययो	१८७९ ८ निचोरिहारि	निचोरि
१८८४ २० मराह्वा जाना	मराह्वाजानो	१८८० ६ घाकल	धूकल
१८८० ११ कीराजल	कीरोजल	१८८६ १० पापदर्पपर	पापदर्पपर
१८८३ १६ माताका	माताकाभरना	४००७ ५ आहिक	आहिक
१८८० २३ नायरूपी	नायरुकी	४०१४ १२ वपदसादि	वपदसादि
१८८३ ५ तयही	तयहि	४०१६ २१ अकटरलोमी	अकटरलोम

॥ रामसिंहचरित्रका शुद्धिपत्र ॥

४०४३ ४	प्रसिद्धत्रिया	प्रसिद्ध क्रिया	४१६० ४	जबओघ	जबओघ
४०४५ २१	भस्मीभूतस्य	भस्मीभूतस्य	४१९४ १४	राचिरप्रकाश	रोचिरप्रकाश
४०४५ २१	आकारवाले	आकारवाले	४१६७ २१	समंतिदेखकर	संमतिदेखकर
४०५७ १०	दसम१०माँहि	दसन१०माँहि	४१९८ ४	‡बै	‡बै
४०६४ ३	विधिपह	विधिराह	४२०० ५	दुकूल	दुकूल
४०६७ २६	सधि के	संधि के	४२०६ १६	मांडा के लोग	मांडा के लोग
४०७० १४	ताँह	ताँह	४२०६ १८	अंतर	अतर
४०७१ ६	पराधनि	पराधीन	४२१३ १४	मुक्तराज्य	मुक्तराज्य
४०७४ २५	कताहा है	कहाता है	४२१८ २०	माग में	बाग में
४०७७ २२	विष दंड है	विष दंड है	४२२६ १२	छित्तिरलदाव	छित्तिरलदाव
			४२२७ १७	बहुपुत	बहुपुट
४०८१ २५	केसवाला	केसवाली	४२३२ १२	सहगमना	सहगमना
४०९५ १५	१५आराग	१५अराग	४२३६ २३	नहा मालूम	नहीं मालूम
४१०१ २३	सभाकोमिटाओ	उसकोमिटाओ	४२४७ ३	ताबूलकार	ताबूलकार
४१०३ १७	पावरा	पावरी	४२४८ २६	खाली गय	खाली गये
४१०३ २७	माधवसिंहे	माधवसिंहेके पिता	४२५४ १७	वर्णसेसंबध है	वर्ण संबंध है
		जालमसिंहे			
४१११ ७	आपलल	आपलव	४२६५ ६	कालपलल	कोलपलल
४११८ २४	कञ्चन के	कञ्जल के	४२६९ ८	बुन्दितजि	बुन्दिय बितजि
४११६ १६	शुडमस्तकके	शुडसेमस्तकके	४२७४ १५	अत्मरूप	आत्मरूप
४१२० १३	१शुडके	१शुड के	४२७६ १४	प्रकृत भव	प्रकृत भव
४१२१ २७	जोवहीकभर	जो भीक भर	४२८५ ३	आयुप्रवीय	आयु प्रवीन
४१२४ १	भल्ल तलाट	गल्ल तलाट	४२८२ ४	पान बनाय	पूरन बनाय
४१३१ १	अंचभयो	अचंभयो	४३१० १५	वसु भरि	वसु भरि
४१३३ २३	गोलाकरनाच	गोलाकारनाच	४३२४ १३	सनपात	मेनपात
४१३६ २७	बाध होता है	बाध होता है	४३२७ १४	द्विजनन	द्विज जनन
४१४९ १९	छोटीवगीचियो	छोटीवगीचियो	४३३१ १५	ताजेजेके	ताजेके
४१५१ १५	चित्रदवल्लै	चित्रदवल्लै	४३४१ २४	कपमँह	कपमँह
४१५५ १०	द्वैरगनी	द्वैरगनी	४३५४ २२	भाडपुनि	भाडपुनि
४१७० २६	धुरको	धुरको	४३६१ २१	सिहको	सिहको
४१७७ २६	अटेरने	अटेरने	४३६२ १४	गतासुभई	गतासुभई
४१८४ १६	समीपकाप्रदेश	समीपकाप्रदेश	४३६६ २	अजगटीदुव	अजगटीदुव

तो खुल्लि पाय टुडुर^१तजौं ध्रुवन बजौं अब काव्यधन ॥८॥
 करि संधा कवि चंड धीर लंगर पय धारिय ॥
 कहिय जोहि इम करहु कवि सु जय^२ जस^३अधिकारिय ॥
 अर्जुन शृंखल अगग द्विजन भोजन हितदेहैं ॥
 जयपट्टहु लिखि जाहि सोपि गुरु गिनि गुन गैहैं ॥
 यह नियम धारि किय ग्रंथ वह नाम सारसागर नियत ॥
 निर्भयनियोग प्रभुको स्वसिर जु किय सुजनमुख मुखजियत^९
 बंदी इक^१ ब्रजलाल^१ कृष्णधात्रेय आढर्य किय ॥
 अधिराजहिं करि अरज आम^१ गौरव^२ गज^३ अप्पिय ॥
 सचिव कृष्ण तनु तजत अगग सहि साचि खगग उर ॥
 सुत तस मोहन सचिव धरयो अधिकार राज्य धुर ॥
 प्रभुकेर कृपाभाजन परम जानैं कवि चंडादि जन ॥
 तिन्ह मानहान मिटवान तिम मोरन लग्गो स्वामि मन^{१०}
 तब अकिखय धात्रेय अरज इम प्रभुहि उपवहरैं ॥
 चिलैं बढत कवि चंड लहत जयमय पय लंगर ॥
 कविअनेक भुवचक्र परत पैर^{११} जुरत परिच्छा ॥
 संसद^{१२} बानिय समर सकल उघरैं धृत सिच्छा ॥
 भारती जुद्ध रस स्वाद भर एहु लेहु आनंद इन ॥

१ चरण में प्रतिज्ञा का लंगर है जिसको खोलकर इस का पहनना छोड़
 दूंगा और २ काव्य ही है धन जिसके ऐसा कवि फिर निश्चय ही नहीं
 बजुंगा ॥ ८ ॥ ३ श्वेत रंग (चांदी) की सांकलियां ४ विजयपत्र ५ स्वामी
 की आज्ञा से निर्भय होकर ॥ ६ ॥ ६ धनवान् किया, कृष्णराम धायभाई ने
 छाती में ८ तिरछी तरवार सहकर ९ शरीर छोड़ा तब ६ चंडीदान आदि
 मनुष्यों को ॥ १० ॥ १० एकान्त में अरज की ११ चंडीदान आश्चर्य योग्य बढता
 है कि पैर में विजयी होने का लंगर पहनता है १२ शत्रु आकर जुड़े जब परी
 जा होती है १३ सभा में वचन के युद्ध में १४ सरस्वती के युद्ध के रस का स्वाद

कवि चंड रचत संधा कुसल करिये बिभव बिलास किन११
 प्रभु अखिय जहँ प्रीति सो न मेटहु कूटाश्रय ॥
 सुहृदभाव जहँ सुनत तहँ न छल लेस कहन नय ॥
 पुनि असहन यह पाप महत बिस्वासघात मय ॥
 उज्झहु स्वमति उपाय एह विधि बलिंत टारि रय ॥
 तत्पर्य१ रु अतत्पर्य२ न दुरै तदपि जिहिँ जैसो कहिवेत जग ॥
 दुख सहत चिंति करिकै हुँरव मिलित द्रोह यह घोरमग१२
 यातै कपट उपाय कवि न कोऊ आकारहु ॥
 बहु आवत बिनु जतन विविध पावत बसु बँारहु ॥
 जो संभव बनिजाइ विखिलैहैं बानी बल ॥
 पर दुख चिंतन पाप त्वरित लैजाइ रसातल ॥
 सुनि यह निदेस मोहन सचिव विन्नति किय सब स्वामिबस
 प्रभुके प्रसाद जो धर्मपथ सु सव गम्य रहिहैं सरस ॥ १३ ॥
 आवन लागि तिन अहन प्रचुर भूसुर१ पौराणिक२ ॥
 भोगध३ बंदिष४ सुमति बहुत बिरचहिँ कवि बानिक ॥
 पुढव कथित क्रम पाइ धरन जावत लै धन धन ॥
 तिहिँ अनेहँ धात्रेय पाष प्रेरिय कपटीपन ॥
 ब्रजलाल भट्ट वह बुल्लिकै कुटिल उँपढर मंत्र किय ॥
 बुन्दिय अधीन बंदिन बहुरि लै बिच सम्मति सबन लिया१४।

॥ ११ ॥ १ दंभ (छल) के आश्रय से २ इस उपायवाली अपनी बुद्धि को छोड़
 देती है ३ टेढ़े मार्ग के वेग को ४ सत्य भूट नहीं छिपता ५ गीदड़पन
 करके ॥ १२ ॥ ६ कपट करके किसी कवि को बुलाना ७ धन का समूह पाते हैं
 ॥ १३ ॥ ८ उन दिनों में ९ बहुत ब्राह्मण १० चारण ११ बड़वाभाट १२ स्तुति
 करनेवाले भाट १३ उस समय में धायभाई मोहन ने १४ एकांत में (गुप्त)
 सत्ताह की ॥ १४ ॥

लंगर पय धृत लखत ईरखाको गिनि आकर ॥
 लौ ढिग वह ब्रजलाल चविय कवि चंड चंडतर ॥
 या कविको उतकर्ष सहयो नन जात सदस्यन ॥
 हमहु रुद्ध मुख होहिं वनत उत्तर कहूँ बस्यन ॥
 कविचंड मान निर्मूल कारि अप्पन रहहिं अभीत इम ॥
 तस अर्द्धः कविहु पावहिं ततो जयी करहिं निज पच्छ जिम ॥ १५ ॥
 भन्यों सचिव सुनि भट्ट बदिप तुमरे सासन बस ॥
 रामचन्द्र१ अभिधान इक्क१ बंदिप जाहिर जस ॥
 वृत्ति नाहिं बाहुज२१न पँज१२ बर्दकि तस पालक ॥
 पै सुनियत कवि निपुन व्यूह ऊहँन उतालक ॥
 जय आस प्रथम१ बिनुही जतन पच्छ२न तो तावकँ प्रबल
 इक१तंतु१चटर्क२तोरैं अलप मिलिवहु१गज२मोरैं मिसल१६
 स्वामी प्रति नटि सचिव ताहि न सक्यो बुलाइ तब ॥
 व्याह व्याह बाहुजन अटन ब्रजलाल मिल्यो अब ॥
 करि दु२ मंत्र१ सांकूत२ पिहित समझाइ प्रयोजन३ ॥
 सो तिहिं आवन सज्ज विरचि आयो गृह अप्पन ॥
 सक गगन अंक बसु ससि समय १८९० ॥
 सूर्यमल्लस्य काव्यं समाप्तमिदम् ॥

१ चंडीदान कवि अत्यन्त भयंकर है जिसका २ बड़प्पन ३ लभासदों से सहा नहीं जाता ॥ १५ ॥ सचिव का कहा हुआ सुनकर भाटों ने कहा कि तुमारे हुकम में रामचंद्र नामक भाटप्रसिद्ध यशवाला है जिसके ४ क्षत्रियों की वृत्ति नहीं है ५ शूद्र खाती (सुथार) उसको पालते हैं ६ तर्कना से ससूह को उड़ाने वाला है ७ तुम्हारा प्रबल पक्ष है ८ एक तंतुको तो छोटा चिड़ा भी तोड़ सकता है और बहुत तंतु मिलकर हाथी को रोक देते हैं ॥ १६ ॥ ८ क्षत्रियों के विवाह विवाह में फिरते हुए ब्रजलालको वह रामचन्द्र मिला १० अभिप्राय सहित खोटी सलाह करके उसको समझा कर ब्रजलाल अपने घर आगया ॥

श्रीनीतिनिपुणा-बुद्धिविशारद-सज्जनशिरोमणि-हरिभक्तिपरायण-धर्ममूर्ति-वीर-वदान्य-सोदाधारहठ-चारणकुलावतंस-शाहपुराप्रतोलीपात्र सुयोग्यपितुरऽवनाड़सिंहस्याऽऽत्मजेन, विदुष्याः शृङ्गारनामजनन्याः प्राप्तप्रसवपालनबालशिक्षोपदेशेन, सुशिक्षितैराऽऽज्ञाकारिभिराऽऽत्मजैः केसरिसिंह-किसोरसिंह-जोरावरसिंहैर्विगतभाव्याऽऽधिना, कविकोविदनिजमातुलकविराजश्यामलदासाऽऽप्रकाव्यशिक्षेण, सन्तोषादिसद्गुणसम्पन्नविद्वच्छिरोमणिपरमवैष्णवरामानुजसम्प्रदायिनः श्रीमदाचार्यसीतारामाऽऽव्ययगुरोराऽऽसादितसंस्कृतविद्येन, सूर्यवंशोद्भवरघुवंशीयराग्योत्तशाहपुराधिपराजोपटङ्किनाहरसिंहवर्म, आर्यदिवाकररविकुलशिरोरत्नरघुवंशीयगुहिलोत्तमेदपाटदेशाऽधिपोदयपुराऽधीशसज्जनतादिसद्गुणसम्पन्नमहाराणासज्जनसिंहवर्म, तथातदुत्तराधिकारिमहाराणाफतैसिंहव

श्रीयुत नीति निपुण बुद्धिविशारद सज्जनशिरोमणि हरिभक्तिपरायण धर्ममूर्ति वीर उदार सोदाधारहठ शाखा के चारण कुल के मुकुट शाहपुरा के पोलपात सुयोग्यपिता ओनाड़सिंह के पुत्र ने, पंडिता सखगारबाई नाम माता से पाया है जन्म पालन और पालन की शिक्षा जिसने, श्रेष्ठ शिक्षा पायेहुए आज्ञाकारी पुत्र केसरिसिंह किशोरसिंह जोरावरसिंह से मिदगई है आनेवाले समय में होनेवाली मनकी चिन्ता जिसकी पंडित कवि अपने मामा कवि राज श्यामलदास से पाई है काव्यशिक्षा जिसने, सन्तोष आदि गुणों से युक्त विद्वानों के शिरोमणि परमवैष्णव रामानुज सम्प्रदायी श्रीमत् आचार्य सीताराम नामक गुरु से पाई है संस्कृत विद्या जिसने, सूर्यवंश में उत्पन्न रघुवंशी राणावत शाहपुराके पति राजाधिराज पदवीवाले नाहरसिंह वर्मा, और आर्योंके सूर्य सूर्यकुलके शिरोमणि रघुवंशीय गुहिल राजाके वंशवाले मेवाड़ देश के पति उदयपुर के अधीश सज्जनता आदि सद्गुणोंकी समृद्धिवाले महाराणा सज्जनसिंह वर्मा, तथा उनकी गद्दी पर बैठनेवाले महाराणा फतहसिंह वर्मा, और सूर्यकुल के भूपण राठोड़ कुलके मुकुट मारवाड़ भूमि के पति जोधपुर

र्म, भानुवंशभूषणा राष्ट्रकुलाऽवतंसमरुधराधिपजोधपुरेशराजराजे-
 श्वरमहाराजयशवन्तसिंहवर्मण्योलब्धाऽतीवदानमानस्वर्गारचितपाद
 भूषणाऽऽदिसत्कारेण, तथातदुत्तराधिकारित्तुल्यप्रीतिपुरःसरप्रति
 पालकमरुधराधीशश्रीसरदारसिंहवर्माश्रितेन, अधीतविद्यां सफल
 यितुं प्राप्तावसरेण, विद्वद्भिर्निजमित्रैर्लब्धसहायोत्साहेन, शाहपुरानि
 वासिना कविवरद्वारहठकृष्णसिंहेन विरचितायामुदधिमन्थनीटीका
 कार्या समाप्तोयं सूर्यमल्लविरचितो वंशभास्करनामको ग्रन्थः ॥

के स्वामी राजराजेश्वर महाराजा यशवन्तसिंह वर्मा से पाया है दान षडप्पन
 (पूज्यपन) और पैरों में सुवर्ण के भूषण आदि आदर जिसने, तथा उनके उत्त
 राधिकारी उनके समान प्रीति पूर्वक पालना करनेवाले मारवाड़ के पति श्री
 सरदारसिंह वर्मा का आश्रित, मिलगया है पढ़ीहुई विद्याको सफल करने का
 समय जिसको, पाया है अपने विद्वान् मित्रों से सहाय और उत्साह जिसने
 शाहपुरा के रहनेवाले ऐसे श्रेष्ठ कवि द्वारहठ कृष्णसिंह की बनाई हुई उद
 धिमन्थनी नामक टीका में सूर्यमल्ल का रचाहुआ वंशभास्कर ग्रन्थ समाप्त
 हुआ ॥

॥ दोहा ॥

कविवर सूरजमल्लकी, यहँ लग कविता आहि ॥
 तापर टीका बिस्तरी, संधाको इठ साहि ॥ १ ॥
 अगेकी कविता यहाँ, रची मुरारीदान ॥
 ताकी टीका तजतुहँ, देखत किते निदान ॥ २ ॥
 जे निजबुद्धि विवेकजुत, हँ अधुना निजगेह ॥
 तिनके विरचित काव्यके, जानो अधिकृत जेह ॥ ३ ॥
 तजनेहीके व्यङ्ग्यतै, सुकवि समुझिहँ सार ॥
 कुत्सितवचन प्रयोगको, विरचित नहिँ व्यापार ॥ ४ ॥
 को उपकारी ग्रन्थकरि, परउपकार प्रचार ॥
 अन्यहि हितसाधन उचित, भुजन उठावत भार ॥ ५ ॥

घनाक्षरी ॥

कवि रविमल्लको बनायो वंशभास्कर सो,
 छायो कष्ट शब्द घन छोनीपैँ दिखायो छाम ॥
 बुद्धिवात बेगतै विडारि मेघ मंडलकों,
 निर्मल दिखाय दीनों रचि टीका अभिराम ॥
 कृति कवि कोकनकों दापन अमोघ सुख,
 ज्ञापन करायो हिय कंज विकसैवो ताम ॥
 कूरन कुतर्कि घूक मूक करि कृष्णकवि ॥
 जीवन सफल जान्यो करि उपकारी काम ॥ ६ ॥
 रस व्योम ग्रह महि १९०६ पायो भव कृष्णसिंह,
 शाहपुर भूपकों सुहायो सुखमा पसार ॥
 मेदपाटभूपमनि सज्जन रिझायो पुनि,
 फतैसिंहहूँ पायो दान मान प्रीति फार ॥

जोधपुरभूप जशवंतनै बढायो ज्युँहों,
चर्ननमें चामीँकर भूषनको धरि भार ॥

इभ सर नंद इन्दु १९५८ चैत्र श्याम सत्तमिकों,
पूरन बनाय टीका कीन्हों उपकारी कार ॥ ७ ॥

॥ सवैया ॥

बावन वर्ष त्रिताय बराबर, सम्मदमैं न लहयो कहूँ अन्तर ॥
सासन जाको महीपनके सिर, होय अमोघ रहयो सु अमंथर ॥
आयस मात पिता सिर आनिकैं, पुंगव पंथ निबाहयो परंपर ॥
संसृतिभार सबैं तजिहों रु, अबैं भजिहों करतार निरंतर ॥८॥

॥ दोहा ॥

समय मिले पर सद्धिहों, पर उपकार पवित्र ॥
जाकों पुण्य महर्षिजन, मन्नत जगको मित्र ॥ ९ ॥
वह डिंगलको कोस इक, रचि नव निज अनुरूप ॥
काव्य पुरातन अति कठिन, परे निकासहिँ कूप ॥ १० ॥

उत्तरपीठिका

सूर्यमल्लकी कविताके लोभसे हमने इस परोपकारी कार्य का भार उठाया था वह लोभ वहीं पर समाप्त होता है इस कारण हम भी टीका बनाने के भारको इसके साथ ही छोड़ते हैं अर्थात् इससे आगेकी पूर्ति सूर्यमल्लके दत्तक पुत्र मुरारिदानने की है जो स्वयं इस समय विद्यमान हैं उनकी विद्यमानता में भी हमारा टीका बनाना अनावश्यक ही समझा गया इतना ही नहीं किन्तु यह अव्यापार है जिसमें व्यापार करना अनुचित है इसीकारण से आगेके काव्यमें हमने कुछभी हस्ताक्षेप नहीं किया है यहां तक कि कविवर सूर्यमल्लकी छोड़ी हुई मयूख की इतिश्रियां हमने बनाई हैं वह भी आगे की कवितामें बनाना उचित नहीं समझा किन्तु जैसा कुछ लिखा हुआ मिला वैसाही रूपवा दिया गया है

इस ग्रंथकी प्रथम राशिमें ग्रन्थकर्ता सूर्यमल्लने प्रतिज्ञा की थी कि ग्रन्थ के अन्तिम चार राशिमें धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चारों पुरुषार्थों का वर्णन करूंगा परन्तु वह सूर्यमल्ल से नहीं हो सका जिसके लिये हमारे कई मित्रोंने अनुरोध किया कि इस ग्रन्थकी उत्तरपीठिकामें उपरोक्त चारों पुरुषार्थों का वर्णन करके ग्रंथकर्ताके अभिप्रायको सफल कर देना चाहिये परन्तु प्रथमतो हमारे शरीर में पक्षाघात, मधुमेह आदि रोगों के होजाने से इतनी शक्ति नहीं रही; इसके उपरान्त ग्रन्थकर्ता के समय में तो इन पुरुषार्थों के लिखने की आवश्यकता थी क्योंकि वे ग्रन्थ उस समय संस्कृत में होने के कारण सर्व साधारण को समझाना अवश्य था परन्तु अब तो वे ग्रन्थ भाषानुवाद सहित छप कर सब प्रसिद्ध हो चुके हैं जिनका फिर यहां लिखा जाना केवल पिष्टपेषण है अतएव हमारे मित्रोंका भी इससे संतोष होजाने पर यह विचार छोड़कर वहीं पर समाप्ति कर दी गई है। इस ग्रन्थ के अपूर्ण रहने का कारण हमने सूर्यमल्ल के शिष्यों से कई द्वारा सुना है परन्तु उस पर हमको विश्वास नहीं है जिसका संकेत रामसिंह चरित्र में जोधपुर में महाराजराजा रामसिंहका विवाह होना और बुंदीके धायभाईके मारेजानेकी कथा पर नोट किया है वहां दिखा दिया है

सूर्यमल्ल के मरे पीछे महाराजराजा रामसिंह ने सूर्यमल्ल के दत्तक पुत्र मुरारिदान से इस ग्रन्थ की समाप्ति कराकर एक ग्राम मुरारिदान को देकर सूर्यमल्लकी जो स्त्रियां उस समय विद्यमान थीं उनको भी एक एक ग्राम उनके जीवन पर्यंत देकर सूर्यमल्लकी इस सेवाका फल दिया। अब हमारे पाठकों से सविपन प्रार्थना है कि इस टीका का बड़ा भाग हमारी कक्षावस्था में बनने के कारण जहां कहीं अर्थदोष मिलें उसको कृपा पूर्वक सुधार कर हमारा दोष क्षमा करें। किमधिकं विज्ञेष्वात्म ॥

शाहपुरा के पोलपात सोदाधारदृष्ट शाखा के चरण कृष्णसिंह ने इस टीका को जोधपुर में समाप्त की ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा॥

॥ दोहा ॥

बसु नव गज भू १८९८ मित बरस, समय सोधि सुभ भूप॥
पहु यात्रा प्रारंभकों, निज मन किय अनुरूप ॥ १ ॥
श्रीभट्टजी महाराज सह, प्रभु दुवर सासन पाइ ॥
उमरावन पंचधन अखिल, नरपति हार्द सुनाइ ॥ २ ॥

॥ षट्पात् ॥

इम बिचारि अजमेर पत्र मंडिय पुहवीपाति ॥
बाहुल्य बदि तिथि तीज ३ सोमवासर २ सादब प्रति ॥
रजीडंट अंग्रेज सदरलैनहु सब सासक ॥
अरु अजंट चारलिस रिचारडिस तिनको आसिक॥

कलकत्त नगर स्वामी सबन तहँ सु लार्ड प्रति पल तिम ॥
लिखि अट्टकलम जग जस रहत अधिपहिं भोजिय छिप इम॥३॥

॥ पद्धतिः ॥

मम सेना सन्निधि पंथ मान, व्है नाहिं धर्म १ गो २ प्रान हान १॥
प्रतिपंथ मम सु दरजा प्रमान, व्है सलक सलामी न तहँ हान २॥
सेना अरु पुरजन सत्थ मोहि, जो नागझाग रत रहत जोहि॥
लाखि ताहि पंथ मासूल लैन, व्है हत्थ अमल तो रोष व्हैन ॥५॥
पुनि दुगग १ थान २ जो व्है प्रसिद्ध, सब जन हम जावै सस्त्र सिद्ध
बलि चक्र माहिं जो सस्त्रबंध, सो नाहिं रोक पावै सु संघ ४ ॥६॥
पुनि पथ स्नानयात्रा प्रसंग, अंतेउर उतरै जहँ उमंग ॥
जो नीच उच्च व्है पुहवि जत्थ, तो व्है प्रबंध हम तोर तत्थ ॥ ७ ॥
उतरै जो हम जिहिं थान आय, पुनि स्नान निमित्तक पट्ट पाय॥
बनवावै हम तापैहि बात, रोधक नह बुल्लै दिन रु रात ॥ ८ ॥
हमरेहि सत्थ व्है नयन २ नालि, आवै इम भोलिन नालि नालि॥

तस सलक सलामी नित्य माग, जाकोहु हुकम व्है सर्व जाग ॥६॥
 कट्ठाँदि वस्तु सब प्रति मुकाम, दल मामकतैं लै सुविधि दाम ॥
 दढ चित्त अगग व्है थानदार, सबकों सु दिवावैं वस्तु सार ॥ १० ॥
 खत बीच अष्ट८ कलमां लिखाइ, जो तूर्ण चार अजमेर जाइ ॥
 अर्पित किय साद्व हत्य औन, लै त्वरित बांछि दल सदरलैन ॥११॥
 प्रतिउत्तर भेजिय इम प्रजेस, अधिपति सु अन्यतर जिम असेस ॥
 जो क्रम सु सनातन तिन जबाब, सो सब व्हैजैहैं तिहिं हिसाब ॥१२॥
 तिनदिवस जहाँ उपवहार तथ्य, आसय दढ भोजिय तहँ सु अथ्य ॥
 इम करि रु सर्व भूपति उदार, साज्पादि श्राद्ध सास्त्रानुसार ॥१३॥
 श्रीरंग सिष्टि लै पुनि रसेस, क्रमकरि रु परिक्रम पुर असेस ॥
 सुद्धांत सहित पुनि किय प्रयान, दिय रंक रु भूसुर अमित दान ॥१४॥
 पहु लियउ भीम पट्टप कुमार, तिम कियउ कुमर अर्जुन तयार ॥
 गोवर्धन तदनुजं गुन गरीय, बचना सु सिष्टि भूवर बरीय ॥ १५ ॥
 पथि माता पूजन करि प्रजेस, बलि किय सिकार बुरजहि प्रवेस
 सित२ पौष द्वितीयां२५५गिरस५ वार, नाडी त्रय३ मध्यहि रजनि
 कार ॥ १६ ॥

कोटैस राम प्रति अद्द काज, भेजे पउसाक सु प्रीति भाज ॥
 सो पत्र सहित लै रत्नलाल, आइउ पंचोली तहँ उताल ॥ १७ ॥
 घटिका सब वित्तत जब सु घस्र, हाजरि बितर्द हुव अष्ट८ अस्त्र ॥
 नजर रु निछावर करि सिरनाय, पढि कुसल तास कृत मिसल
 पाय ॥ १८ ॥

आविक पुनि अंबर अरज आखि, किय नजर पत्र संमदकराखि ॥
 अरु कहिय जयश्रीकृष्ण आप, आदेस ममोपरि इम इलाप ॥१९॥
 पथि संग रहन यात्रा प्रसंग, तसमात चित्त ममहै उमंग ॥

सो अरज सुनि रु तस कुसल किन्न, दयया सह ताकाँ सीख दिन्न
सित१ पौष१० पंचमी५ सूर वार१, किय वर्षगंठि अर्जुन कुमार ॥
तदनंतर तहँ संबंध ताहि, मंदेस भल्ल नंदन उमाहि ॥ २१ ॥

हिंदूमल जीवन भट हिताय, दिय तार भर्म लांगलि दुराय ॥
तिम पंच५ लांगली१ क्रमकर१५ त्योंहिँ२, सिरपेच १ जटित इक
पुनि सुयोंहिँ ॥ २२ ॥

तिम दियउ२ इक१ उरसूत्रिकाहि २, मौक्तिक्य कर्णिका ३ दुव
उमाहि ॥

काहि१ माहि२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥

सिरुपाव४ चतुर्दस१४ पुनि सप्रीति, राजत मतंग५११ इक हय६१२
सुगीति ॥ २३ ॥

इत्यादिक दुव२ लै आजगाम, हुव अरज त्वरित तहँ हितहि काम
सित१ सोम२ षष्टिका६ पुहवि सक, अंबकर सह घटिका रहत
अक ॥ २४ ॥

रचि सभा चोक मानिक रसेस, आहूत सर्व उमरा असेस ॥
देव्या१दिसिंह दुर्गापुरेस, जय१ बिजय२ सिंह आइउ जयेस ॥ २५ ॥
सचिवा१दि ऊरुजार सर्व आइ, प्राघुन हुव हाजरि प्रीति पाइ ॥

अरु अप्प कुमार अर्जुन उमाहि, रहि ब्रह्मघट्ट त्रि३ द्वार काहि ॥ २६ ॥
तिम कतिक तहाँ उमराव तत्थ, अर्चित करि नवग्रह कुमार अत्थ
प्राघुनक प्रथम हे प्रीति पाय, तिन अंक कुमार अर्जुन हिताय २७
भरि कियउ तिलक कुंकुम सुभाल, इम महुर नजर करि तिन
उताल ॥

पूर्वाक्त जवाहर बस्तु पेस, सब कियउ भूप हित तहँ असेस ॥ २८ ॥
करि सगपन तिन्ह दिन कतिक राखि, अप्पिय सु सीख पुनि कु
सल आखि ॥

उगगत रवि सप्तमि७ आरवार३, सामंतसिंह आइउ उदार ॥२९॥
 धोउर पुरेस महिपाल धीर, बलि सम्मुह भेजिय तस प्रवीर ॥
 जो उपवन भट्टजि अस्रजाइ, अति प्रीति मिलि रुपटगृह सुआइ३०
 पुनि रहत वेद४ नाडी पतंग, कापरनि कांत आये उमंग ॥
 बलि बेल बिलासहि देवमाँहि, अति स्वच्छ जलासय आवआँहि३१
 सामंत पितृव्यक तहँ सचाह, आतहि प्रभु गौरव दिय उछाह ॥
 मिलि बहुरि भुजांतर उर मिलाइ, किय मुजरा तिन्ह अति भवि-
 क पाइ ॥ ३२ ॥

संलाप कुसल हुव पुनि सप्रीति, अरु कहिय रहहु रह अप्प रीति॥
 कहि इम रु तास दसतूरकिन्न, सीतहि सु जानि स्थुलसीखदिन्न३३
 आ धवल तप११ पक्षति१ जीवप आत, दुव लाल नयन२ विश्रामदात
 रहि तथ्य द्वितीया२ सुकद्वार, किय बहुरा जीवव कारदार ॥३४॥
 तिम अंकित मुद्रा नाम तास, प्रभु दियउ निरंतर रहन पास ॥
 हुव कुच तृतीया३ सौरि७ होत, दृढ अप्प नयनपुर किय सु द्योत३५
 वदि वासर पंचमि५ चंद्र वत्त, साहव रिचारडिस अर स पत्त॥
 प्रेषित किय लंघन हर्ष पाइ, आदि सु अजंट गढइंद्र आइ ॥३६॥
 करि साम कोटरिन तथ्य काज, रहतहि तस खचरि सु आत राज
 प्रभु भेजिय सह दल अप्पपास, हुव राणी विकटोरियाहुलास३७
 सुनि पत्त कियउ अति मेह प्रसारि, दारिद दिय सूरिन इम बिदारि
 उगगत बुध४ सप्तमि७ पुनि उदंत, भेजिय अजंट साहव भनंत३८
 दंत१ नंत२ अन्त्यानुपासः ॥ १ ॥

सेना १ अरु पुरजन २ सहँस दोइ २०००, सुहि जावैं भूपति
 गहोइ ॥

अरु दुग्ग१ थान२ तहँ पंथ आत, जहँ बहै असख सह सेन जात३
 साहव न जात जिस अप्प सथ, इम सुनि मुकाम क्रम करि ।

अथ ॥ ४० ॥

एकादसि११वदि दिन अर्क१ जात, प्रभु अप्प सिबिरतैं सौध पात
 श्रीरंग दरस करि तहँ सप्रीति, संसद रचि तत्रहि प्रभु सनीति४१
 प्रीति१ नीति२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

आत्रद अधीस मुहुकम्प उत्त, आब्हान राम प्रति दियउ छुत्त ॥
 हाजरि हुव सत७ सु जनहि आइ, प्रभुतैं सुहि अश्रुत्थान पाइ४२
 किय मुजरा तिहिँ अति भविकं पात, दृढ अप्प पानि सुद्धहि दिखात
 किय कुसल तास तिन नजर किन्न, दुव २ नाडी राखि रू सीख
 दिन्न ॥ ४३ ॥

सुदि होत प्रतिपद१ सुक्र६ वार, ॥

, तब कियउ पन्नानुरूप ॥ ४४ ॥

सित सौम्य ४ चतुर्दसि १४ सूर आत, व्यापृत चतुष्क ४ राखिय
 विरुपात ॥

एक १ ईस नंद जुत लाल १ आँहिँ, तिम राखि पठान जु जमित
 खाँहिँ ॥ ४५ ॥

लि पन्नाजुतलालहिँ भुवाल, इह मंगल राखिय अंतलाल ॥

पेरराज चतुष्क ४ न अथ अपि, महिपाल लेख त्रिसति ३०
 समाप्ति ॥ ४६ ॥

मतैं जु लेख सुनिये कृपाल, बल आदि सर्व बच आलबाल ॥

जवार दसावर इतर पत्र, आवैं उदंत तामाँहिँ अत्र ॥ ४७ ॥

ो होइ आसु तो झटिति देय, न त्वरित जो सु सम प्रतिहि नेय
 रु स्तेयो १ व्यापृत २ अन्य आइ, करि दंड इतर बिधि जुन
 कराइ२ ॥ ४८ ॥

न स्वीय अन्यतर राज जाइ, इह स्तेय आदि करि जोहि आइ
 मैं प्रमान डोरैं सु तत्थ, पूरब स्वदंड करि तास पत्थ ॥ ४९ ॥

मेवारज मैंने जात मोसि, पूर्वोक्त लेख जिम स्तैन्य पोसि ॥
साहब अजंटतैं कहि सु लेय४, विधिजुत इत्यादिक तब विधेय५०
इम करत प्रबंध सु राज्य अंग, महिपाल लगत फगुन १२ उमंग
रविवार१तृतीया१रमत फग, स्थलकमल गुलालादिक समग५१
इम रमत फग पुणिया१५सु आत, प्रभु चलत सत्थ मागीन पात॥
मधु१ लगत मास पक्षति१पतंग१, साहब रिचारिडिस अर उमंग५२

तंग१ मंग२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥

पट्टनितैं साहब भल्ल केर, मग बैठि डाक हथ नां अवेर ॥
आराम नयनपुर राम आइ, तस अत्थ सिबिर प्रभुतैं तनाइ ॥५३॥
तस मिलन अत्थ प्रभु तहैं पधारि, साहब उदंत यात्रिक सु धारि॥
साहब सु उभय२ लै अप्प सत्थ, प्रभु सौध पधारे पग अत्थ५४
तहैं छत्रमहल विच रंग ताहि, अस्खत कवि आबहय तास आहि॥
कौंसुभि१ रु कुंकुम२नीर कारि, बर्णक३अवीर४तोखीर५पारि५५
पतंग६नीर पुनि करि रु स्फोत, पिचकारिन साहब किय पुनीत ॥
साहब अजंट प्रभुपैं सु वारि, दृढ प्रीति बहुरि दिय तबहि डारि५६
प्रभु अप्प डारि पुनि सहैंस १००० धार, किय बर्णक जुत पट्टप
कुमार ॥

कारिफग अजंटहि सीखदिन्न, अरुअप्प स्नान२आदिक सु किन्न५७
आत्मीय शिविर साहब उम्हात, अंगार३ तीज३ मध्यान्ह आत ॥
तस सम्मुह डयोढी अप्प जाइ, आनंदित तासह माँहि आइ५८
क्रमतैं जु बैठि पुनि तहैं कृपाल, किय सार्द्ध मुहूर्त२ रहस्यकाल॥
बुंदी१ अरु यात्रा करि प्रबंध, तिन्ह अतर१पान२ दै पुनि सुसंध५९
इम सीख दै रु मग कुसल आखि, तहैं अप्प नयन२ विश्राम राखि
उगगत रवि षष्ठी६कवि६गरीय, विश्राम समाधी दिय तृतीय३ ६०
किय चोरू सप्तमि ७ सनि ७ मुकाम, माधवपुर अष्टमि ८ दिय

विश्राम ॥

नवमी९मुकाम किय पुर पडान, दसमी१०अंगारक३करि निदान६१
हुंगरमलारने किय मुकाम, बाटोंदै एकादसि११ विश्राम ॥

पुनि जीव५द्वादसी१२घस्र आत, नवमो९कुशालगढ चक्र पात६२

पुनि असिता तेरसि१३ कवि६ प्रभात, पीलोदै प्रभु किय सेन पात

हिंडोन चतुर्दसि१४ होत बास, परताप करोली पति हुलास॥६३॥

बलदेव१ बनिक दीवान रूपात, पुनि प्रियादास२ बाढ़व उम्हात ॥

अरु ऊरुज चूनीलाल३ एम, गुस्साही रक्तीगर४ हि तेम ॥ ६४ ॥

सचिवा१दि सुजन चउ४ए पठाइ, मनुहारि विविध विधि जुत कराइ

सतपंच५००रौप्य महमानि अत्थ, पक्कान्न मंथनी तास३०सत्थ६५

इत्यादि उहाँ लै त्वरित आइ, रहि रति प्रात पहु हुकम पाइ ॥

हाजरि हुव पटगह होत कुच्च, आसिख सलाम करि प्रीति उच्च६६

अरु नजर निछावर अरज किन्न, भूपति जुहार भाखिय अभिन्न

अरु कहिय आगमन इह स्वकीय, गृह करहु पवित्रहि अस्मदीय६७

कीय१ दीय२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥

सतपंच५०० रौप्य पुनि ठहै प्रसन्न, ॥

तामैं सुदोइ२ नारंग एम डाल्याँ कंडोल च्यारि४ फल कुसुम२॥६८

कूमांड इक१ इक१ भूमिकंद, अहिबल्लिपत्र सत चउ४००अनंद

महमानिकरहु स्वाकार एह, सो अरज सुनि रु पुनि करि सनेह६९

करि माफ रौप्य कंडोल राखि, जय रंग कहहु नृपतैं इमाखि ॥

दै सीख ताहि पुनि कुच्च पाइ, विश्राम कियउ सूरैट जाइ ॥ ७० ॥

पक्षति १ मुकाम सित दिय बियान, तहँ करत द्वितीया ३ दिन॥

मिलान ॥

चूड़ामनि जट्टहि बंस जात, लौवाल मुकुंदाऽऽतिथ्य आत ॥७१॥

रचि सिबिर सभा लिय तिहिँ बुलाइ, हाजरि हुवैतहँ सो हुकमपाइ

करि नजरिनिछावर पुनि सत्ताम, दुवरसचिवहेष्ट बैठि रु सुआम ७२
 किय अरज मुकंदहि फौजदार, बलवंत कियउ मालुम जुहार ॥
 अरु पंचसतक ५०० नाणकसु एह, स्वीकारकरहु प्रभु करि सनेह ७३
 विज्ञप्ति सुनि रु तस भव्य आखि, आतिथ्य रौप्य आदिक सु
 राखि ॥

व्यवहार भरतपुर करि सुवत्त, दुवरघट्टि राखि तिन्ह सीख दत्त ७४
 पुनि सदरलैन साहब मिलाप, भेजिय हमीदखाँ सदल आप ॥
 तिहिं जाय पत्र दिय करि सत्ताम, रुहि एह मिलन प्रभु चउ ७४
 मुकाम ॥ ७५ ॥

पुनि दियउ तृतीया तहँ मिलान, सब जन दिय उत्सव गोरि दान
 पुनि होत चतुर्थी ४ दिन प्रभात, खांअंतहमीयद छदन आत ॥ ७६ ॥
 तामाँहिं लेख पंचमि ५ मिलाप, अरु सदरलैन ठहै मुद अमाप ॥
 कहि रामसिंह राजाधिराज, दढचित रु है वार्दक दराज ॥ ७७ ॥
 ताँतै हम चाइत मिलन तूखाँ, पुनि चहत भरतपुर ईस पूर्ण ॥
 आवत हम सम्मुह उभय तथ, सुनि राम अरज करि कुञ्चसत्थ ७८
 ॥ दोहा ॥

पंचमि ५ दिन करि कुञ्च प्रभु, वैर मुकामन आत ॥
 नगर कनावरतै निकट, पिप्पलतरु इक पात ॥ ७९ ॥
 उहां भरतपुर ईसके, वारीदारन आइ ॥
 रंजित किन्न बिछात सम, मन बहु मोद मनाइ ॥ ८० ॥
 ॥ पट्टपात् ॥

सदरलैन साहब १ रु भूप बलवंत २ भरतपुर ॥
 बाजी ४ रथ थित होइ उभय २ सम्मुह उमंगि उर ॥
 तीन ३ कोस लग आइ बहुरि ठहै बिछात पर ॥
 तव जीवन बहुरा रु हमिदखाँ तह वकील तर ॥

बहुवान तरनि सन्निधि त्वारित आइ निवेदिय अरज इम ॥
प्रभु वे२ बिछात ठहे उपरि अप्प पधारहु देर किम ॥ ८१ ॥

(दोहा)

यहै अरज सुनतहि अधिप, तहां हय स्थित आत ॥
अस्र बिछायतके उपरि, हुलासित तुरग बिछात ॥ ८२ ॥
सदरलैन साहब समुह, अरु बलवंतहु आइ ॥
सय इक१ भरत पुरेसहू, लिन्नो सीस लगाइ ॥ ८३ ॥
प्रभु तब अप्प सु पानि इक१, आनन द्वयस उठाइ ॥
कुसल परस्पर किन्न पुनि, मुद जुत खंध मिलाइ ॥ ८४ ॥
॥ षट्पात् ॥

उत्तमंग पुनि सदरलैन कर इक लगाइय ॥
तब पहु आनन निकट अप्प सुभ पानि उठाइय ॥

गाइय१ ठाइय२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥

खंध जुट मिलि मुदित दुव२हि रचि कुसल परस्पर ॥
तुच्छ समय तहँ बैठि बत्तकरि देस१ काल२ बर ॥
जेट्स केर चउ४ तुरग रथ बैठे तीन३हि मुदित मन ॥
बलवंत बाम दक्खिन सदरलैनहु सम्मुह अप्प सन९ ॥ ८५ ॥
सिरैरहि रु प्रभु अप्प१ चले डेरन प्रति सत्वर ॥
हुव सु अगग जय१ बिजय२सिंह आरुहि तुरंग वर ॥
इम त्रय३ डेरन आइ अधिप सह तजि रु अस्व रथ ॥
बाजी स्पंदन चढि रु वे सु दुव२ चलिय वैर पथ ॥
इत होत सिबिर दाखिल अधिप ताप कीन नाली त्वरित ॥
दसपंच१५ फेर उततैं चलत इत नालिय चालिय सहित ॥ ८६ ॥
रित१हित२अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥

हुव हाजरि बलवंत बहुरि जन तहँ सु प्रतिष्ठित ॥

अरज कराइय एह भूप महमानि सेनहित ॥

सासन करहु प्रसिद्ध लेहु पक्वान्न चक्र सब ॥

यह सुनि रुं दियजु हुकम सचिव आवैं मामक जब ॥

मिलि सचिव चक्रपति आदि तहँ जाइ दिवाइय स्वच्छ मन ॥

आमोद तत्थ इम राखि पुनि आये व्यापृत सठ सदन ॥८७॥

॥ पादाकुलकम् ॥

पण्ठी६ दिवस मिलान तहाँ दिय, पुनि बलवंत भविक जन आइय

तब प्रभु निकट हमिदखाँ जाइरु, कियउ अरज प्रभुतैं सुदपाइरु ॥

प्रभु बलवंत सुजन पठवाये, पधरावन अप्पहिँ उत आये ॥

समय प्रजेस हार्द जो पाऊं, सो उनकाँ मैं जाइ सुनाऊं ॥ ८९ ॥

सुनि इम अरज निदेस दयो जब, नाडी नयन२ रहैं दिनकर तब ॥

इम क्रम क्रमन उहाँ तुम जानहु, पुनि तहँ साहब मिलन प्रमा-

नहु ॥ ९० ॥

इम वकील सासन सुनि आयो, सुजन त्वरित बलवंत सुनायो ॥

स्वन्तुप जाइ तिन वृत्तानेवेदिय, तब सभ्य रु संसद तयारकिय ९१

पट्टप भीम २०३१ कुमार जुत पुनि, गोवर्द्धन कुमरहिँ प्रभु क्षिप

चुनि ॥

सेना सर्व चार भट सारे, प्रभु नवलकखा बाग पधारे ॥ ९२ ॥

प्रथम जात बलवंत गेहपट, सम्मुह विसति२०पैड वे सु अट ॥

तुच्छ समय पुनिवस्तसदन रहि, साहब शिविर बरव्वर क्रमचहि ९३

तहाँ अव्य१बलवंत२ सिधाय, रद३२पद सदरलैन समुदाँ ९४

करि सँल्लाप भव्य मुद पाइउ, त्रय३हि सौध संसद जहँ आइउ ९४

खुरसी अप्प मध्य आरुहि जहँ, भीम२०३१कुमर दाँछिन कुरसी

तहँ ॥

तदनंतर जय१ विजय१सिंह दुवर, उपबेसन गोवर्द्धन ततहुय ॥ ९५ ॥

तातैं बक्र मिसल सम्भुह सन, खुरसिन लागिय तास सुभट जना॥
 सव्यहि सदरलैन साहब रहि, सन्निधि तास भरतपुर ईसहि ॥९६॥
 समय मुहूर्त वृत्त तहँ जंपिय, अतर१ पान२ पुनि चरन निवेदिय ॥
 साहब उक्त१ सु अप्प लगाये, पानदान प्रभु नजर निराये ॥९७॥
 संग्रहि कहिय सिबिर संजावन, प्रभुकों तब वे दुव२ पहुँचावन ॥
 महलनतैं सु चोक लग आये, सदाचार तीन३हिँ तहँ पाये ॥९८॥
 प्रभु पुनि अप्प सिबिर दाखिल हुव, तुरतहि तहां वे सु आये दुव
 जब वहि सिबिर दु२ दिस भट राखि रु, प्रभु पुनि मुख्य सिबिर
 रह चाहिरु ॥ ९९ ॥

खिरु१ हिरु२ अंत्यालुप्रासः ॥ १ ॥

प्रभु तहँ खुरसी मध्य बिराजिय, सदरलैन उपविष्ट सव्य किय ॥
 जिय१ किय२ अंत्यालुप्रासः ॥ १ ॥

पुनि बलवंत असव्यहि पाये, प्रभु तत लार्ड पलास दिखाये ॥१००॥
 तामें लेख कोल नामाँको, साहब देखि चविष नृप पाको ॥
 उत्तर भटिति अत्थ नहिँ ऐहैं, बासर कातिक विचारिहु दैहैं ॥१०१॥
 अतर अप्प दोउ२न पुनि अप्पिय, पहुँचावन प्रभु तिन्हैं गमन किय
 बाहिर सिबिर तनावहिँ आइ रु, दियउ सिक्ख तिन्ह सुवच दृढाइ रु
 बाजी स्यंदन चढि रु सिबिर प्रति, कियउ गमन प्रभु दुव२हि र-
 दिख रति ॥

इत पटआलय अप्प पधारिय, बलाधीस काटिबंध निवारिया ॥१०३॥
 षष्ठी६ दिन तहँ रति बिहाई, सुज्जवार१ सप्तमि७ अव पाई ॥
 सत्त७ कोस वहांतैं कवईपुर, हुव प्रभात दाखिल अंतेउर ॥१०४॥
 करत कुच्च पुनि प्रभु तहँ भेजिय, सुजन प्रताप महीप करोलिय ॥
 इम बिज्ञप्तिआइ तिन्हअक्खिय, भूप मदीयमिलन प्रभुभक्खिय ॥१०५॥
 पुनि निर्देस समयको पावैं, प्रभु मामक हुतही पधरावैं ॥

इम सुनि अरज नियोग दयोनृप, हमरो तुम जानहु द्रुतहीसृप १०६
 इम सुनि सुजन पटालय आइ रु, प्रभु इत समय संभको पाइ रु
 कर्म नित्य आदिक सब किन्नो, संसद रचन निदेसहु दिन्नो १०७
 वान ५ घटी रजनी पुनि बित्तत, चढि इम भूप प्रताप सु चित्तत ॥
 उतरयो द्वार पटालय आइ रु, पहु सुनि सम्मुह अप्प पधारिरु १०८
 इरु १ रिरु २ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥

शस्त बहुरि मिलि कियउ परस्पर, बैठे इक आसन धरनीवर ॥
 समय देस वृत्तांत सु जंपिय, नाडी इक १ उपवेसन रक्खिय १०९
 दें तिन्ह सिक्ख कियो पहुँचावन, असुक सदन द्वार लग आवन ॥
 इम दें सिक्ख अप्प तुरगासहि, सिविर प्रतापपालके आसुहि ११०
 कियउ क्रमन प्रभु रति रक्खि रति, सुभट मुख्य—सह संहति ॥
 तिन्हें तवहि आगमन रु सम्मुह, संलाप रु उपविष्ट आदि सुह १११
 सुह १ सुह २ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥

प्रथम रीति जिम कियउ धरावर, जंपिय सिक्ख अप्प तदनंतर ॥
 इम सुनि सोहु पुगावन आये, पटगृह द्वार द्वपसही पाये ॥ ११२ ॥
 ॥ दोहा ॥

सदाचरन करि तह सुवत, पुनि चलिप मुद पाइ ॥
 नयन २ घटी रजनी रहत, हुव दाखिल स्थुल आइ ॥ ११३ ॥
 अष्टमि ८ दिन पुनि तहँ अधिप, राखि रु श्रम विश्राम ॥
 शस्त्रादिक पूजन सकल, रंजित किय प्रभु राम ॥ ११४ ॥

॥ मुक्तादाम ॥

कियो नवमी ९ कुज ३ वार प्रयान, दयो सु कुमेर मुकाम दिवान ॥
 यान १ वान २ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥

तहां बलवंत सुनाग पठाइ, जरी कुथ तास सिरी सुवनाइ ॥ ११५ ॥
 सुतारन मंडित होदन साजि, पलास बहोरि सु यावनि राजि ॥

कियो तस लंच सु मानुस आइ, कस्यो मुररीकृत भाविक पाइ ॥ ११६ ॥
 दियो दशमी १० दिन डिग्घ मुकाम, रहे तहँ रुद्र ११ तिथी प्रभु राम
 तहां भवनाभिध सुंदर थान, तिन्है किय देखन गोन दिवान ११७
 उहाँ ब्रजमोहन दुग्गप आइ, दसै तिहिँ भोन असेस बताइ ॥
 बिताइ घटी वसुन्वहाँ क्षणा देस, कियो प्रभु अंबरओक प्रवेस ११८
 चले पुनि द्वादसि १२ लै चतुरंग, गिन्यो सु मुकामहि मानुसि गंग ॥
 तहां इक १ गोरधनाव्हय सैल, मिटै जहँ जातहि मानुस मैल ॥ ११९ ॥
 अनंग १३ तिथी दिन स्नान उमंग, सु गोन कियो प्रभु मानसिगंग
 उहां करि आप्लव अंहति अत्थ, मगायउ नाग १ तुरंगम २ तत्थ १२०
 सिरी १ कुथ २ ताहि बनात सु साजि, बनाइ रु तादश त्योहि सुबाजि
 महीप बहोरि सु दम्प पचास १०, तथासर ५ निष्क १ रु चीर २ सतास १२१
 तुरंग १ बहोरि सनिष्क ३ हि तीन ३, दये पुनि दम्प पर्चास २५ सु दीन
 बलापति ॥ १२२ ॥

अंबर १ पिठि रु तार खुगाहिँ, उहाँ दस १० दम्प दु २ निष्क सु आहिँ ॥
 प्रदेसन दै इम प्रीति प्रजेस, कियो पुनि अंसुक ओक प्रवेस ॥ १२३ ॥
 मुकाम तहां करि पुणिसाम दीह, अगेस परिक्रमको पुनि ईह ॥
 प्रभू किय लै अवरोध प्रयान, कियो गिरिराज परिक्रम यान १२४
 प्रयान १ मयान २ अंत्यान्प्रासः ॥ १ ॥

निसीथ घटी दुवर उप्पर जात, प्रदेसन वहाँ करि डेरन पात ॥
 तिथी पडिवा १ बदि माधव २ मास, बली सत वै किय बाहिनिबास १२५
 ॥ दोहा ॥

कियउ द्वितीया २ दिन क्रमन, राजराज प्रभुराम २० २१ ४ ॥
 साहब सुनि आयो समुह, मथुरा जानि मुकाम ॥ १२६ ॥
 सुहु डिपटी अभिधा बिदित, पद रु किलहर पाइ ॥
 मथुरा तजि सम्मुह मिल्यो, इक १ कोसलों आइ ॥ १२७ ॥

रामसिंह का तीर्थयात्रा करना]

अष्टमराशि-चतुर्दशमयूख (४१०७)

मिलत अनामय पृच्छि करि, सत्रह१७ नालिन फेर ॥

राहव सह आये उमंगि, वस्त्रसदन वह नैर ॥ १२८ ॥

पुनि ब्रंदावन नैर पहु, मातामही मिलाप ॥

कियो तुरग आरुहि क्रमन, अल्प सत्य करि आप ॥ १२९ ॥

जाइ अरज सुभ करि जहां, प्रसूमही पय बंदि ॥

आधघरी रहि सिख करि, आये सिबिर अनंदि ॥ १३० ॥

इति श्री वंशभास्करे

त्रयोदशो मयूखः ॥ १३॥

॥ गीर्वाणभापा अनुष्टुप् ॥

राधाकृष्णतृतीयायां कृत्वा श्राद्धादिकं नृपः ॥

पद्म्यां विश्रामघट्टाय पञ्चम्यां सायमव्रजत् ॥ १ ॥

॥ गीतिः ॥

जयसिंहविजयसिंहेत्याख्यमहाराजसंयुतस्तत्र ॥

आचम्य पट्सुवर्णीमुपायनीकृत्य तस्थिवान् घटिकाम् ॥ २ ॥

॥ उपजातिः ॥

विलोक्य नीराजनमत्र घटे नारायणं चापि गतश्रमाख्यम् ॥

नत्वोपहत्य द्रविणां यथाहं भूपो निवासं स्वमलंचकार ॥ ३ ॥

(*) राजा रामसिंह वैशाख एादि तीज का आख आदि करके पंचमी के दिन पैदल विश्राम घाट गया ॥ १ ॥ महाराजा जयसिंह और विजयसिंह के साथ आचमन करने सुवर्ण का छः मोहर भेंट करके घड़ीभर पैठा ॥ २ ॥ और आरती के दर्शन करके विश्राम नामक नारायणको पृथ्वी पर साष्टांग बिधि

(*) हमारे नियमानुसार टीका का समाप्ति ऊपर करदी गई वहीं पर्यन्त हमारी रचीहुई टीका जाननी चाहिये परन्तु ऐसा सुना गया है कि रावराजा रामसिंह की तीर्थयात्रा के प्रकरण में प्रयकर्ता सूर्यमल्ल ने यह एक मयूख सावकाश के समय पहिले बना रखवा था जिसको सूर्यमल्ल के दत्तक पुत्र मुरारिदान ने अपनी रची कविता में मिला दिया इसकारण सामान्य पाठकों की सुगमता के अर्थ जोधपुरके कविराजा मुरारिदान के अनुरोध से इस एक मयूख का अर्थ फिर लिखदिया जाता है जिसको हमारी नियमानुसार टीका के बाहर जानो इससे आगे की कविता सूर्यमल्ल के दत्तक पुत्र मुरारिदान की रचीहुई होने के कारण इस पर टीका बनाना छोड़ दिया गया है ॥

॥ प्रहर्षिणी ॥

सप्तम्यामुषसि परिक्रमाय पद्ग्रामायस्यन् दददथ तत्र तत्र वित्तम् ॥
विश्रामं प्रथममथ प्रयागघटं संपश्यन्नथ बलदेवघटमागात् ॥४॥

॥ वसन्ततिलका ॥

श्यामाभिधं कनकनाख्यमथार्थघटं घटं ध्रुवस्य कलयन्नथ मोक्ष
तीर्थम् ॥

रङ्गावर्नी तदनु भूतपतिं महेशं दृष्ट्वा तपे स्वशिविरं पुनराजगाम ॥५॥

॥ उपजातिः ॥

अथो भुजिष्यातनये निवृत्तमसूरिरोगेऽर्जुनसिंहनाम्नि ॥

आचारतः प्राप्तमुदस्तविघ्नमकारयद्रूपतिरम्बुसेकम् ॥ ६ ॥

अश्वे स्थितोऽध्यष्टमिभूतनाथपर्यन्तमेवाथ चलन् पदाङ्ग्याम् ॥

विलोक्य रामं बलभद्रकुण्डेऽथ ज्ञानवापीमवलोकते स्म ॥७॥

॥ स्वागता ॥

बालकृष्णपटशोधनकुण्डं जन्मसद्यः पितृबन्धनभूमिम् ॥

भूपतिस्तदनु केशवदेवं पश्यति स्म वनखण्डशिवं च ॥ ८ ॥

॥ शिखरिणी ॥

से नमस्कार करके अपने डेरे पीछा आया ॥ ३ ॥ छत्रमो के दिन प्रातःकाल में पैदल परिक्रमा करने को जहाँ तहाँ द्रव्य देता हुआ पहिले विश्राम घाट गया फिर प्रयाग घाट का दर्शन करके बलदेव घाट गया ॥ ४ ॥ वहाँसे श्याम घाट, कनक घाट, अर्थ घाट, ध्रुव घाट और मोक्ष तीर्थ गया वहाँसे भूतनाथ महादेव के दर्शन करके धूप में अपने डेरे पीछा आया ॥ ५ ॥ जिसपीछे राजा ने पासवानिये पुत्र अर्जुनसिंह को कुष्ठ (कोढ़) रोग मिटाने के अर्थ जल में स्नान कराया ॥ ६ ॥ अष्टमी के दिन भूतनाथ महादेव तक तो घोड़े पर चढ़कर गया और वहाँ से पैदल होकर बलभद्र कुण्ड पर राम (बलदेव) के दर्शन करके पीछे ज्ञानवापी का दर्शन किया ॥ ७ ॥ जिसपीछे राजा ने बालकृष्ण के बल धोने के कुण्ड जन्मघर भूमि और माता पिताके बंधनकी भूमि को देखकर केशवदेव और वनखंडी शिव के दर्शन किये ॥ ८ ॥

महाविद्यां देवीमगमददसीयां च सरसीं,
सरस्वत्याः कुण्डं तदनु च तदीयं भरमपि ॥
शिवं गोकर्णेशं तदनु गणपं दीर्घवदनं,
ततस्तीर्थं भूपो दशतुरगमेधाभिधमगात् ॥ ९ ॥

॥ उपजातिः ॥

सरस्वतीसङ्गमकृष्णगङ्गावैकुण्ठघटानथ सामघटम् ॥
ददर्श भूमीपतिरष्टकुण्डघटे हनूमन्तमयैकवन्तम् ॥ १० ॥

उपजातिः

ततो द्वारकाधीशमालोक्य देवं पुनः प्राप विश्रान्तिघटं क्षितीशः ॥
परिक्रान्तिमेतां यथाहं विधाय निकेतं निजं भूषयामास भूपः ॥ ११ ॥

उपजातिः

ततोभिधाय प्रभुणा नवम्यामाकारणां माथुरपण्डितानाम् ॥
प्रश्नानुवादेतररीतिचञ्चत्कारालिरश्रूयत शास्त्रचर्चा ॥ १२ ॥

॥ शालिनी ॥

एकादश्या प्राप्य विश्रान्तिघटं तत्र स्नात्वा सावरोधः क्षितीशः ॥
स्तुत्वा भानोर्नान्दिनीं भक्तियुक्तः प्रादाद्धानं शास्त्ररीत्या द्विजेभ्यः ॥ १३ ॥

यहां से महाविद्या देवी के दर्शन करके अदसिया नामक सरोवर पर,
गया, वहां से सरस्वती कुंड और सरस्वती कुंड के भरने को भी देखा तिस
पीछे गोकर्णेश्वर महादेव के दर्शन करके दीर्घवदन गणेश के दर्शन किये
तिसपीछे दशाश्वमेध तीर्थ गया ॥ ९ ॥ सरस्वतीसंगम, कृष्णगंगा, वैकुण्ठ
घाट और साम घाट के दर्शन करके राजा ने वैकुण्ठ घाट पर हनुमान् और
गणपति के दर्शन किये ॥ १० ॥ जिसपीछे द्वारकाधीश के दर्शन करके राजा
पीछा विश्राम घाट आया, इस परिक्रमा को यथायोग्य रचकर राजा अपने
ढेरे आया ॥ ११ ॥ जिसपीछे राजा ने नवमी के दिन मथुरानिवासी पंडितों को
बुलाकर शास्त्रचर्चा सुनी ॥ १२ ॥ एकादशी के दिन राजा ने विश्राम घाट
जाकर राणियों सहित स्नान करके और यमुना की भाक्ति पूर्वक स्तुति करके

॥ उपेन्द्रवज्रा ॥

गजं शतद्रम्मयुतं विचित्रप्रवेणिपर्याणनिबद्धशोभम् ॥

ददौ महेशो दश१०निष्कयुक्तं द्विजाय सर्वाम्बरपूजिताय ॥ १४ ॥

॥ उपजातिः ॥

अश्वं शतद्रम्मयुतं सपञ्चनिष्कं स्फुरद्राजसुभाण्डशोभम् ॥

वस्त्रैः समस्तैः परिपूज्य भक्त्या ददौ द्विजेन्द्राय महीपतीन्द्रः ॥ १५ ॥

एकैकनिष्कान्वितपञ्चपञ्चद्रम्मार्चिताः पञ्चदशल गावः ॥

द्विजेश्वरेश्वरोम्बरपूजितेश्वरो भक्त्यात्यसृज्यन्त महीश्वरेण ॥ १६ ॥

सुवर्णमर्त्यादिकमर्चनाङ्गं वधूचितं श्रीयमुनाम्बरौघम् ॥

अष्टाधिकं विंशतिमत्र भूमौर्निवर्तमानामदिशत्प्रजेशः ॥ १७ ॥

॥ इन्द्रवज्रा ॥

सम्पूज्य तं तीर्थगुरुं स्वमाघिशौचादिना जीवनरामसंज्ञम् ॥

नानाम्बरैर्मौक्तिककर्णवेष्टहारान्वितैर्भूषयति स्म भूपः ॥ १८ ॥

॥ उपजातिः ॥

भोज्यं द्विजेश्वरो वसु भूरि चापि संकल्प्य सम्यग्गुरुदक्षिणां च ॥

शास्त्र के अनुसार ब्राह्मणों को दान दिया ॥ १३ ॥ राजाने सौ रुपये और दश

मोहर के साथ हाथी दान, सम्पूर्ण वस्त्रों से पूजन करके ब्राह्मण को दिया ॥ १४ ॥

और सम्पूर्ण वस्त्रों से भक्ति पूर्वक पूजन करके ब्राह्मण को सौ रुपये और पांच

मोहर के साथ घोड़ा दिया ॥ १५ ॥ श्रेष्ठ ब्राह्मणों का भक्ति से पूजन करके

एक एक मोहर और पांच पांच रुपयों के साथ पन्द्रह गायें दीं ॥ १६ ॥ राजाने

यमुना पर सुवर्ण की मूर्ति आदि का दान दिया. और उस पूजा के अंगभूत

स्त्रियों के योग्य वस्त्र सज्जुदाय दिये. और अट्टाईस निवर्तन भूमि दी. बीस बां-

स का एक निवर्तन होता है. " निवर्तनं विंशतिवंशसंख्यैः " इति लीलाव-

त्याम् ॥ १७ ॥ जीवनराम नामक तीर्थगुरु को अपने हाथ से चरण धोने आ-

दि विधि से पूजन करके अनेक प्रकार के वस्त्र, मोतियों के कुंडल और हार से

सुशोभित किया ॥ १८ ॥ दक्षिणा सहित ब्राह्मणभोजन और गुरुदक्षिणा

का संकल्प करके थोड़ासा दिन बाकी रहने पर राजा ने राजकुमार को जनाने

रामसिंहका तीर्थयात्रा करना] अष्टमराशि-चतुर्दशमयूख (४३११)

दिनेल्पशेषे सकुमारमन्तःपुरं निकेताय समादिदेश ॥ १९ ॥

नरिजनानहोस तत्र पुष्पवृष्टिं विधायाऽऽन्नजता नृपेण ॥

अकार्यत स्वानुगहस्तिनिष्ठजनेन वृष्टी रजतात्मिकापि ॥ २० ॥

परेशुराहूय निजाऽनिजान्बुधान्पुरोधसाऽर्च्य प्रतिमूर्त्यदित्तत् ॥

द्रम्मं तथान्नादि च पञ्चभोज्यं द्विजान्सहस्रं च तदन्वभोजयत् ॥ २१ ॥

॥ अनुष्टुप् ॥

त्रयोदश्यां १३ दिगद्यङ्गो ६७१० न्मितास्त्रीसहितान्द्विजान् ॥

अभोजयच्चतुर्वेदान्सपादद्रम्मदक्षिणाम् ॥ २२ ॥

॥ उपगीतिः ॥

राधारमणो भट्टाचार्योपाख्यव्रजकिशोरः ॥

पुत्रोस्य रामबाबूरेते वृन्दावननिवासाः ॥ २३ ॥

॥ गीतिः ॥

माथुरगङ्गारामश्चेतिबुधाः प्रागनागता मुख्याः ॥

आजग्मुर्नृपहूता यमुनातीर्थान्तिकोत्सगतसदसम् ॥ २४ ॥

॥ इन्द्रवज्रा ॥

सरिरेन्द्रस्य वरेण्य आशानन्दस्तथा मैथिलबापुदेवः ॥

मैं जाने की आज्ञा दी ॥ १९ ॥ सायंकाल की आरती के समय में वहां (बिआम घाट) पर राजा ने पुष्पों की वृष्टि करके रजत (चांदी) की वृष्टि भी ॥ २० ॥ दूसरे दिन अपने और दूसरे पंडितों को बुलाकर पुरोहित के द्वारा सब का जुदा जुदा पूजन करके एक एक रुपया दक्षिणा के साथ पांच से एक हजार ब्राह्मणों को भोजन कराया ॥ २१ ॥ फिर त्रयोदशी के सवा सवा रुपया दक्षिणा के साथ स्त्रियों सहित छः हजार सात सौ चौथे ब्राह्मणों को भोजन कराया ॥ २२ ॥ वृन्दावन में रहनेवाले भट्टाचार्य, व्रजकिशोर, व्रजकिशोर का पुत्र राम बाबू और मथुराका ये प्रधान चार पंडित पहिले नहीं आये थे सो राजा के बुलाने पर आये ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ जिनमें से गंगाराम के साथ राजा के श्रेष्ठ परिचित आशानन्द

शास्त्रार्थमातेनतुरत्र गङ्गारामेण सार्धं घटिकोनयामम् ॥२५॥

॥ वसन्ततिलका ॥

ते प्रेषिता निजगृहान्प्रति पंचपंचदम्भार्चिता अथ परत्र दिने तु पौरः॥
सदम्भदक्षिणामभोज्यतविप्रवर्गः शिष्टाप्यपूरि सहसत्कृतिदेयमात्रा २६

॥ वैतालीयम् ॥

अथ माधवशुक्लपक्षतावनुवृन्दाविपिनं ब्रजन्नृपः ॥

निशि षड्घाटिभाजि कालियन्हृददेशे शिविरं स्वमाविशत् २७

॥ वसन्ततिलका ॥

मातामहीसदनमेत्य परेद्युराप सार्द्धां सुषट्सु घटिकासु निशि स्ववासम्
आचम्य कालियन्हृदस्थ तृतीयतिथ्यां वृन्दावनस्थ निरियाय परिक्रमाय

॥ इन्द्रवज्रा ॥

गोपालघट्टाद्यमुनाल्पधारापर्यन्ततीर्थानि समेत्य पद्भ्याम् ॥

अश्वेन वासं स्वमुपेत्य मातुः पुण्याय राज्ञार्पित गौस्सनिष्का ॥२९॥

॥ द्रुतविलम्बितम् ॥

अथ विहारिहरिं शिरसा नतो मदनमोहनमेत्य च संस्तुवन् ॥

मैथिल बापूदेव ने एक घड़ी कम एक पहर तक शास्त्रार्थ किया ॥ २५ ॥ तिस
पीछे उन चारों पण्डितों को पांच पांच रुपयों के साथ पूजन करके घर पहुँचा
और दूसरे दिन पुरवासी ब्राह्मणों को एक एक रुपये के साथ भोजन कराया
और बाकी रही यात्रा को सत्कार के साथ पूर्ण की ॥ २६ ॥ इसपीछे वैशाख
शुक्ल प्रतिपदा को वृन्दावन को जाते हुए राजा ने कालीदह प्रांत में लगे हुए
अपने डेरों में प्रवेश किया ॥ २७ ॥ दूसरे दिन नानी के स्थान पर जाकर साढ़े
छः घड़ी रात गये पीछा डेर आया जिसपीछे तीज के दिन कालियद्रह में
आचमन करके वृन्दावन की परिक्रमा करने को निकला ॥ २८ ॥ गोपाल घाट
से लेकर यमुना की अल्प धारा तक पैदल होकर तीर्थोंकी परिक्रमा करके घोड़े
से अपने डेर आकर माता के पुण्य के अर्थ राजा ने एक मोहर के साथ एक
गौ अर्पण की ॥ २९ ॥ इसके अनन्तर आकृष्ण विहारी को नमस्कार करके स्तुति
करता हुआ मदनमोहन को प्राप्त होकर अपनी माता की माता (नानी) का

स्वजननीजननीक्षणाकृन्नुपः शिविरमाप निशि प्रहरे गते ॥३०॥

॥ भुजङ्गप्रयातम् ॥

चतुर्थ्यां ४ कलिंदात्मजास्वल्पधारास्थलाच्छेषतीर्थानि पदङ्ग्यामुपेत्य
परेद्युर्द्वेदे कालियस्याप्लुनस्सन् गजानां जलक्रीडनान्पालुलोचे ३१

॥ उपजातिः ॥

पट्यां नृपेणाद्भुतशास्त्रचर्चासभाजिताकारि सभा बुधानाम् ॥

भूयः परेणा व्युयुगेन सान्तःपुरेण तत्तीर्थपरिक्रमोपि ॥ ३२ ॥

॥ पुष्पिताग्रा ॥

तदनु सदरलैनमङ्गरेजं भरतपुरेड्वलवंतसिंहयुक्तम् ॥

प्रकटपितुमुदन्तमुर्वधीशप्रहित इयाय हमीदखां नवम्पाम् ३३

॥ भुजङ्गप्रयातम् ॥

दशम्पां ययौ राजमाता स्वमातुर्विलोकाय घस्नेर्दयामावशेषे ॥

धरेशस्तु मातामहीं वीक्ष्य नैजं निकेतं पुनः प्राप रात्रौ निशीथे ३४

॥ मन्दाक्रान्ता ॥

एकादश्यामकृत बहुलस्त्रीजनैर्देवयात्रा-

मध्वन्येवामिलदवनिपस्य प्रसूः स्वप्रसूयुक् ॥

दर्शन करता हुआ पहर रात गये अपने डेरे पहुँचा ॥३०॥ चौथे दिन यमुना की
अल्पधारा के स्थल से लेकर बाकी के सब तीर्थ राजाने पैदल होकर किये और
दूसरे दिन कालियद्रह में स्नान करके हाथियों की जलक्रीड़ा देखी ॥ ३१ ॥
छठ के दिन सभा को जीतनेवाले राजा ने पण्डितों की विद्वत्त शस्त्र
चर्चावाली सभा कराई तिसपीछे दो दिन में जनाना सहित वृन्दावन की
प्रदक्षिणा की ॥ ३२ ॥ तिसपीछे नवमी के दिन भरतपुर के पति बलवन्तसिंह
के साथ सदरलैन अंगरेज को समाचार जनाने के अर्थ रावराजा का भेजा
हुआ हमीदखां गया ॥ ३३ ॥ दशमी के दिन राजमाता चार घड़ी दिन बाकी
रहे अपनी माता से मिलने को गई और राजा अपनी नानी से मिल कर अर्द्ध
रात्रि को पीछा अपने डेरे आया ॥ ३४ ॥ एकादशी के दिन बहुत स्त्रियों के
साथ देवयात्रा की और मार्ग में अपनी नानी से मिलकर राधारमण आदि

नत्वा राधाप्रियतमसुखास्तत्र गोविन्दमूर्ती-
रर्वाक्सार्द्धप्रहररजनेराजगाम स्वधाम ॥ ३५ ॥

॥ प्रहर्षिणी ॥

द्वादश्यां सदनमुपेत्य मातृमातुः प्रत्यागात्सपरिकरो निशि स्ववेश्म ॥
अन्येद्युः सुरसदनेक्षणां भुजिष्यावर्गेष्णाकृत नृपतेः कनिष्ठमाता ३६

॥ उपजातिः ॥

तीर्त्वा तरीभिर्यमुनां परेद्युः प्रतिस्थलं राजतपंचरूपैः ॥

रासस्थलीमानसतीर्थमानविहारिणः सत्कुरुते स्म भूपः ॥ ३७ ॥

संस्थानमायन्नपि वृष्टिरुद्धो मातामहीकेतनमेत्य भूपः ॥

संध्यादिकर्माशयशनं च तत्र विधाय रात्रौ निजवासमाप ॥ ३८ ॥

सेवानिकुञ्जादिषु पंचदश्यामुपेत्य राधारमणां विलोक्य ॥

द्रुमान् शतं पंचसुवर्णयुक्तान्दत्त्वैक्षतान्या अपि देवमूर्तीः ॥ ३९ ॥

दिने तृतीयांशमिते व्यतीते निकेतनं स्वीयमुपेत्य भूपः ॥

पितामहस्याथ महासतीना श्राद्धानि चक्रे प्रतिवर्षजानि ॥ ४० ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टमः ८ राशौ राम-

गोविन्दकी मूर्तियों को नमस्कार करके डेढ़ पहर रात्रि से पहिले अपने डेरे
गया ॥ ३५ ॥ द्वादशीके दिन नानी के स्थान जाकर पीछा अपने परिवार के साथ
अपने डेरे आया और दूसरे दिन पासवान स्त्रियों के साथ राजाकी छोटी माता
देव मंदिरों के दर्शन किये ॥ ३६ ॥ दूसरे दिन नावों से यमुना को तिरकर
राजाने जगह, जगह पांच पांच रूपयों से रासथली, मानसथली और मान
विहारी का सत्कार किया ॥ ३७ ॥ चौराहे पर पहुँच गया तो भी वृष्टिसे रुककर
नानी के मकान पर पहुँच कर वह राजा संध्या आदि सत्कर्म और भोजन
वहीं करके रात्रि में अपने निवास स्थान आया ॥ ३८ ॥ पूर्णिमाके दिन सेवाकुंज
आदि स्थानों में राधाकृष्णके दर्शन करके पांच मोहर के साथ सौ रुपये देकर
और भी देवमूर्तियों के दर्शन किये ॥ ३९ ॥ और दिनके तृतीयांश (तीसरा)
भाग व्यतीत होने पर राजाने पितामह (दादा) की पतिव्रता राखियों के
धार्मिक श्राद्ध किये ॥ ४० ॥

सिंहचरित्रे

चतुर्दशो मयूखः ॥ १४ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

तजि वृंदावन तीजइ तिथि, रहत घटी चउ सूर ॥

किय आरुहि बाहन क्रमन, द्विजन दुःख करि दूर ॥ १ ॥

पहर इक१ रजनी नृपति, गोकुल मग्न विहाइ ॥

हुव दाखिल डेरन हरखि, धीरन मोद बढाइ ॥ २ ॥

पट्टपात

भुजगतिथी५ सु प्रभात प्रथम अंतेउर चल्लिय ॥

आरुहि प्रभु पुनि अस्व महावन अप्पहि क्रम किय ॥

कन्ह चरित जो पुहवि तास प्रभु दरस उहाँ करि ॥

अंतेउर सह सिबिर होइ दाखिल सु ध्यान धरि ॥

आप्लवन अत्य सुद्वान्त सह किय पुनि जमुनातट क्रमन ॥

महिपाल जोरि अंचल महिषि कियउ अप्प मोदित सबन ३

मन१वन२अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥

तर्पन आदिक तत्थ बहुरि करि नित्यकर्म बलि ॥

अर्वारुहि किय अटन द्विजन दारिद वृत्तन दलि ॥

मंदिर गोकुलनाथ जाइ करि दर्स महामति ॥

प्रनमि प्रभू करि भेट बहुरि किय गमन श्रीजिप्रति ॥

करि दरस सौख्य दुव२सतक१००कर पंच३निष्क उत्तारन सु

इत्यादि सदन ईश्वर अखिल चलि इच्छन किय बहुत वसु४

दोहा

सुक्र६ असित२ षष्ठी६ सुरहि, सत्तमि७ उगगत सूर ॥

मुदजुतं प्रभुहि मिलानहू, दिप वलदेव हजूर ॥५॥

राम राम करि दरस बलि, पुनि करि सिबिर प्रवेस ॥

भावितादि नैवेद्यहू, भेजिय भोग धरेस ॥ ६ ॥

करत कुच्च अष्टमिऽ अहन, पुनि चहि दरस जरूर ॥
तुरगारुहि हाजरि त्वरित, हुव बलदेव हजरूर ॥ ७ ॥

षट्पात्

करि इच्छन सत१०० दम्भ पंच५ निष्क रु करिनी इक१ ॥
उरसुत्ती१ सिरुपेच२ जटित हीरक१ सौवर्णिक२ ॥
इम करि भेट सुजान ग्राम मइनाम अटन क्रिय ॥
तहँ अवरोधन सहित महामति सिबिर प्रवेशिय ॥
करि कुच्च बहुरि नवमी९ अहन खंदोली सु मुकाम क्रिय ॥
विश्राम बहुरि दशमी१० दिवस मिलन अत्थ तहँ लार्डदियऽ
रहि एकादशि११ तत्थ बहुरि द्वादसि१२ धरनीवर ॥
तेरसि१३ दिन पुनि रहि रु कुच्च चउदसि१४ क्रिय सत्वर ॥
चल्लत अकबर नगर तास गव्युति२ प्रभू रहि ॥
चउ४ इक१ ५ साहब त्वरित उत सु आये मेलन चहि ॥
इनकेहु नाम उपपद सहित भिन्न भिन्न इह आनिये ॥
सम्मुह उदंत आवन सबै छप्पय छंद प्रमानिये ॥ ९ ॥
आजम नायब लार्ड सिकत्तर जाके उपपद ॥
हमलटीम१ इम नाम प्रथम१ हुव हाजरि संसद ॥
दूजो२ मौलन२ सोहु किलद्वर पद स मजष्टर ॥
ढीपरसन३ पुनि राम३ तिमहि उपपद सु कमिशनर ॥
पुनि जंटमजष्टर रेडल४ सु डिपटी नेट किलद्वरहि ॥
जंगी अनीकपति जहँ हुलसि आयो जनरल५ मेल चहि१०

हारिगीतम्

तजि अब्ब सब्बन गब्ब वे५ द्रुतही बिछायत आइकैं ॥
जयसिंह ओ तस आत बिजय सु सिंह पुब्ब मिलाइकैं ॥

रामसिंहकाचुन्दीआतेअंग्रेजोंसेमिलना]अष्टमराशि-पञ्चदशमयूख(४३१७)

उमराव दुर्जनसल्ल१ गोकुलसिंह२द्वै२ पुनि त्यों मिले ॥
तिम महसिंह पउत दुज्जनसल्ल३ मेलनकों मिले ॥११॥
पुनि खंधजुट्टि मिलाप आपहि हमलटीनहुतै करयो ॥
जनरत्न१ रु मोलन३ आदितै इक१ इत्य भाविकपै धरयो ॥
चढि बाह चल्लत चाह साहव वाम दक्खिन व्है चले ॥
रहि अप्प मध्य निसेसज्ज्यो वसुधेस अकबरपुर हले ॥१२॥
इम शिंबिर अकबरनैर उपवन राम नामक आइकै ॥
चउ४इक्क१५साहव नैर चल्लिय सिकख सासन पाइकै ॥
तव दुग्गतै दस१०तीन३१३फेरहु नालि कागनके करे ॥
अरु अप्प तस प्रासाद आइ रु आन्हिकादिक आचरे॥१३॥
पुनि रहत चउ४ घटिका दिवापहि अप्प तगनिन आरुहे ॥
प्रभु ताजवीवी मुकरवन क्रमि अप्प दिठिनतै छुहे ॥

रुहे१ छुहे अन्त्यानुप्रासः ॥१॥

तस इक्खि उपवन१ तोपजंत्रन२ अप्प तुरगारुह भये ॥
जो जंत्र२ साहव सिष्टितै तस किंकरन किय भरमये॥१४॥
सवितास्त भूधरपै गये हुव शिविर दाखिल आइकै ॥
रवि रहत घटिका नैन२ नवमी९ सोमवासर पाइकै ॥
रथ तुरग आरुहि लार्ड अलनबरा शिविरहि आइकै ॥
तजि यान आवत तास सस्मुह अप्प२०२१४सत्वर जाइकै१५
करहू परस्पर सीस मात्र उठाइ भावुक त्यों भन्यूं ॥
वल्लि भीमसिंह२०४१कुमार पट्टप लार्ड मेलनहु बन्यूं ॥
जयसिंह१विजय२सु सिंह सोदर कुमर अर्जुन त्यों मिले ॥
साहव सिकत्तर तास सन मिलि मोद पंकज मन खिले१६
तिमही सिकत्तर हमलटीन मिलाप इडविटहू करयो ॥

अरु लार्ड वाम अबाम इडविट रहि रु संसद पद धरयो ॥
 खुरसी स्वकीया मध्य राखि रु लार्ड वाम विराजयो ॥
 धलि हमलटीन सिकतरादिक लार्ड वामक बैठयो ॥ १७ ॥
 अरु महाराजकुमार पट्टप अप्प २०२१४दकिखन ओरमैं ॥
 स्वक २०४१४बंधु जय ओ विजयासिंह सु तास सन्निधि रोरमैं ॥
 अध तास अर्जुनसिंह बाबा ताज कुमारन पालजो ॥
 अरु महासिंह पउत्त गोकुलसिंह दुज्जनसालजो ॥ २८ ॥
 तस हेठ दुज्जनसल्ल नाथाउत्त खुरसिनतैं ठयो ॥
 इत्यादि भटवर मुख्य राखि घटीदुरपरिखद मंडयो ॥
 लौ अतर दुवरकर राम २०३१४पहु पुनि लार्ड अंगहि लाइकैं ॥
 पै पान सिक्ख बहोरि पूरब अप्प २०३१४ रीति पुगाइकैं ॥ २९ ॥
 शमी १० बलाप हिताय औलनबरा वस्तु समाजयो ॥
 रवारि इक १ गुजरात संभव मुट्टि हाटक प्रेसयो ॥
 अरु समरपट दल २ चर्म ३ इक १ बार्धा सुं किरणपलूहरी ॥
 इक १ बेणु मथ सिबिका ४ बनानिय टाटवांफियकी करी २०
 तिमही इवद ५ सु तारको लालित्य कुंजर प्रेसयो ॥
 अरु कुमार पट्टप भीम २०४१२हित हय १ साज राजत साजयो ॥
 उरसूत्रिका २ सिरुपेच ३ इक १ मंदील ४ सिवपुर जो भयो ॥
 बाणारसीज दुपट्ट ५ नामक लुट्टि कासहू दयो ॥ २१ ॥
 दुस्साल ६ इक १ त्यों गरमपोसक ७ स्वर्णमय घटिका ८ दर्ई ॥
 ताकौ हुती इक शृंखली पुनि सो सुवर्णमई नई ॥
 दुवर नैन मय दुरबीन ९ इक १ सौवर्णमसि आदान १० जो ॥
 अरु कलमदान ११ ससाज ओ बन्नात १२ रंग दुरभोन जो २२
 इम लार्ड प्रेषित वस्तु जो सब अप्प २०३१४स्वीकृतहू करयो ॥

अरु तास मानुषको पचत्तर७५भूप रूप्य बिस्तरयो ॥
 भूपात्त हरितिथि१२ भरतपुर बलवंत सहर सु थानभो ॥
 तस द्वार जाइ तुरंग उज्झत सोहु सम्मुह आतभो २॥३॥
 करिकैं परस्पर हत्थ मत्थ बहोरि भावुकहू भयो ॥
 अरु तास करपर अप्प कर करि बामन्है परिखद गयो ॥
 अरु राखि दक्षिखन अप्प२०३१४ओ खुरसी अदक्षिखनपैं ठयो
 इक१ नाड़िका तहैं देसकाल उदंत मोदमई भयो ॥ २४ ॥
 गहि अतर कर बलवंत हड्डनइंद२०३१४ अंग लगावनौ ॥
 बलि सिक्खदै अति मोद जुत करि पुव्वक्रमपहुँचावनौ ॥
 कर उभय२ उत्तमअंग भो बलवंत स्वक गृहमें गयो ॥
 चहुवान अञ्ज निसापको बलि आन डेरनहू भयो ॥२५॥
 गणनाथ तिथि४ दिन आगरापुरतैं सु कुच्च प्रभू मयो ॥
 अजमादपुर बलि विंध्यईस मुकाम बाहिनिकों दयो ॥
 तिथि५नाग पीरोजा सु वाद विभावरी पुनि त्यौरहे ॥
 तिम पष्टिका विश्राम सकरवाद जाइ रु उम्महे ॥ २६ ॥
 क्रिय सत्तमी७ बुधवार४ वास धरोल नामक गाममें ॥
 तहैं आइ साहब टालबट सँग रहन यात्रा आममें ॥
 तव उठि गहिपतैं प्रभू पयच्यारि४ सम्मुह जाइपैं ॥
 पुनि हत्थ दोउ२न मत्थ माल उठाइ भावुक पाइकैं ॥२७॥
 कथ टालबट नरपालतैं पुनि अमा जावनको कह्यो ॥
 चहुवान अञ्ज दिवापनैं सुनि एह आपितहू चहयो ॥
 आदेस जीवनलालतैं तस संग भोलि सुजानको ॥
 जो कहैं साहब एह मिलनसों कथा सब आनको ॥ २८ ॥
 इम अगग साहबको चलाइ रु अष्टमी८ सु प्रभातही ॥
 करि कुच्च मैनपुरी समीप महीप सत्वर जातही ॥

पुरतैं सु साहब आइकैं विज्ञप्ति भूपतितैं कही ॥
 प्रभु अप्पतैं पुर साहबन मिलनार्थ प्रीति घनी चही ॥२९॥
 अरु अप्प सम्मुह आइवे सुहि दंग परिसरपैं खरे ॥
 तसमात चल्लहु बेगहू ब मिलाप आपहितैं वरे ॥
 इम नालिकिस्थ प्रभू चले विज्ञप्ति साहब पाइकैं ॥
 उततैंहु मैनपुरीस्थ साहब भूप सम्मुह आइकैं ॥ ३० ॥
 मिलि मत्थ हत्थ लगाइ दोउश्न ओ अनामयहू करे ॥
 अरु सत्थ साहब लौ महीपति आइ डेरन उत्तरे ॥
 करि सिक्ख साहब द्वारतैं चढि तुरग रथ पुरमैं गयो ॥
 इत होइ दाखिल तूष्णीही कटिबंध भूपति उज्झयो ॥ ३१ ॥
 दिवसेस घटिकाः इक्कः रहत सु शिविर साहब आतभो ॥
 तस संग रीवाँनगरके सुभमनुज संसद पातभो ॥
 कछवाह भेट गनेससिंहहिं पंचपू रूपयतैं करी ॥
 अर नयनर वर्तुलतैं निछावरि अक्खि सुभ प्रभु आचरी ३२
 भानेज बैठकपैं तिन्हैं प्रभु अगग बाम बिठाइकैं ॥
 अरु धाइभ्राता रत्नलाल सलामः बलिः किय आइकैं ॥
 पुनि देसकाल उदंत साहब अक्खि पुरपति संक्रमे ॥
 अरु रत्नलाल गनेससिंह स्वईस कथ इम कहि नमे ॥३३॥
 प्रभु विश्वनाथ स्वईसहू ब जुहार मालुमहू करयो ॥
 विज्ञप्ति सुनि तस भद्र आखि स्वसीस छीवन कर परयो ॥
 दै सिक्ख डेरन तास ओ कटिबंध अप्प निवारयो ॥
 करि नित्यकर्महि आदि सर्वरिहू मुकाम तहाँ दयो ॥ ३४ ॥
 रयोः दयोः अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥
 कविबारद नवमीः अर्क उगगत कुच्च सत्वर ओ करयो ॥
 प्रभु विवर नामक ग्राममैं दलपात जामिनि भो परयो ॥

सनिवार० दसमी१० दिवसछपरामहू जाइ रु त्योरहे,
 एकादसी११ गुर१ साहिगंज मुकाम राखन उम्महे ॥ ३५ ॥
 पुनि चंद्रबासर२ द्वादसी१२ मीरांसरायहि पाइकै,
 अरु वहाँ फरुकावादैतैं मिलनार्थ साहब आइकै ॥
 मिलि देसकाल उदंत अखिख रु सिक्ख साहबकौ दई,
 विल्लोर होत मुकाम चउदसि१४ वृष्टि दिवनि स वहाँ भई३६
 पुनि तत्थ पुण्ड्राम दीह सक्ति प्रसाद मेलनहू रहे,
 शिविराजपुर पति सम्मुहाऽगम कोस इक१ रहि उम्महे ॥
 तव मेघ बुढिनैतैं प्रभू तिनकोहु द्रंग प्रयानभो,
 आदेस तस सतकारकौ बलदेव अत्थहि दानभो ॥ ३७ ॥
 बलदेवहू ब प्रधान सत्वर तास पुरप्रति जाइकै,
 अनुशिष्टि जिम सतकार तस करि सिबिर अप्पन आइकै
 अरु सत्थ साहबतैं महीपति अगग जान कहातभो,
 बलि मिलन कन्ह पुरत्थ साह— सुनि तहँ पातभो ॥ ३८ ॥
 ॥ दोहा ॥

सुचि४मास रु पडिवा१ असित, तजि विल्लोरहि तात ॥
 चढि चल्लिय शिविराजपुर, हरि जिम बिभव सुहात ॥ ३९ ॥
 सुनि इम सक्तिप्रसादहू, प्रभु सम्मुह मुदपाइ ॥
 पुरतैं बे गव्यूति२ पर, अधिप मिलन रहि आइ ॥ ४० ॥

(षट्पात)

सम्मुह सक्तिप्रसाद आइ कर मत्थ लगाइय ॥
 तव प्रभु आनन द्वयस अप्प सय इक१ उठाइय ॥
 कुसल परस्पर कहि रु क्रमिय डेरन दुवरसत्वर ॥
 सिक्खहु सक्तिप्रसाद करि रु क्रिय गमन द्रंग पर ॥
 बलि रहत अठ्ठ८ घटिका दिवस महमानी प्रेषित करिय ॥

प्रभु पंच सतक ५०० नाशक बहुरि पंचक ५ मन पक्वान्न दिया ॥ ४१ ॥

कुञ्च दोजिरदिन करत सचिव तस आइ शिविर तहँ ॥

भूपति भ्रातन साहि नाम जहुवारसिंह जहँ ॥

करजोरि रु किय अरज प्रभू प्रासाद पधारहु ॥

सामक भूपति मिलि रु बहुत दुवर् प्रीति बढारहु ॥

सुनि एह अरज चढि तुरग बलि पुरप्रति सत्वर संक्रमिय ॥

सिवराजपुरप उततैं सुनि रु सहिपति सम्मुद गमन किया ॥ ४२ ॥

[दोहा]

पुर परिसर नृप पाइ पुनि, मिलि कर मत्थ मिलाइ ॥

कियउ अप्प उन जिम सु कर, अरु दुवर् महलन आइ ॥ ४३ ॥

पहु तहँ सकितप्रसादहू, बैठिय नृप दिस वाम ॥

स्वभट सर्व अपसव्यहू, इम क्रय राखिय आम ॥ ४४ ॥

पुनि भट सकितप्रसादको, उग्रसिंह अभिवान ॥

अरु जुहारसिंहहिँ नजर, किय माखन दीवान ॥ ४५ ॥

[पट्टपात]

प्रभुकै इक १ सिरुपाव पंच ५ तखतीसय तिन किय ॥

असि इक १ पट्टिस एक १ स्वर्णमय मुठि समप्पिय ॥

दंती इक १ कुथ सहित तास होदन सु कठ मय ॥

तिम बनात कुथ साजि तुरग किय भेट महारय ॥

पंचदश अधिक रूपय सतक ११५ ये प्रभु नजर निवेदये ॥

महाराजकुमर अत्थसु बहुरि सिरुपावादि समप्पये ॥ ४६ ॥

दये १ पये २ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥

पंचक ५ तखती प्रमित दियउ सिरुपाव १ खड्ग २ पुनि ॥

पट्टिस ३ हाटक चोक १ मुठि २ किय नजर अच्छ चुनि ॥

तुपक इक १४ तिम तुरग ५ रजत भूखन शंगारित ॥

कियउ भेट तिम दम्भ भूतपू भूपाल निष्क१ मित ॥
 इम करत अप्प प्रभु उच्चरिय हमरो अब जालाअटन ॥
 तसमात यहै दसतूर सब भूपति तुम रक्खहु भवन ॥४७॥
 ॥ दोहा ॥

पुनि प्रभु साक्षिप्रसादको, दृढ पय घोटक दिन्न ॥
 राजत भूपन सहित रय, क्रम शिरुपावहिँ किन्न ॥ ४८ ॥
 तखती पंचकपू केरसहु, अरु तोमर सुभ तास ॥
 तस नेउर करि रजत मय, ललित दिय रु हुल्लास ॥ ४९ ॥
 करत कुच्च कल्ल्यानपुर, प्रभुको तव पहुँचान ॥
 महिपति महलान द्वार लग, उमगि कियो उन आन ॥५०॥

॥ षट्पात् ॥

कुसल परस्पर करि रु दुवर्हि कर मत्थ द्वयस दिय ॥
 करि तस प्रभु सतकार क्रमन कल्ल्यानपुरहिँ किय ॥
 इम चल्लत पटसदन पंथ उपवन इक१ दिष्टो ॥
 प्रभु संध्यादिक कर्म करन तहँ जाइ पइष्टो ॥
 असनादि कर्म तहँ करि अधिप रहत घटी१ दिन संक्रमिय
 सर्वरी पंचपू घाटिका गयँ अंसुकसदन प्रवेस किय ॥५१॥

पद्धतिका ॥

किय कुच्च तृतीया३दिन दिवान, सुकथा जु एह साहब सुजानर
 जनरत्न जग आढ्य कहत जाहि, आमय बहु वासर तास आहि५२
 तातैं सु मज्जर कालडीक, अधिपति मिलाप भेजिय सुहीक ॥
 पुनि सुनि रु टालबट मोद पात, ए दुवर्हि मिलि रु तजि पुरहिँ
 आत ॥ ५३ ॥

कंपू रु कन्हपुर विच मिलाप, करि तत्थ बिछायत हित अमाप ॥
 तहँ रहिय उभय२ साहब हिताय, प्रभु तास बिछायत अप्प पाय५४

मज आदि मजष्टर कालडीक, जानि रु प्रभु आगम अति नजीक
 तब कालडीक तजि अश्वतात, अति प्रीति बिछायत प्रथमआत ५५
 तब अप्प टालबट तजि तुरंग, आइ रु बिछात मिलि तहँ उमंग ॥
 करि कुसल परस्पर हित दिखाय, पुनि उभय२ प्रीति कर मत्थ
 पाय ॥ ५६ ॥

मज आदि मजष्टर कहिय एह, जनरलहिँ अप्प शिव चविय नेह
 मतिउत्तर दिय प्रभु पुनि पुनीत, व्यवहार तासतैं हम सुनीता ५७
 पुनीत१ सुनीत२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥

इम अक्खि तुरंगम चढि रुतीन३, साहब सह शिवरहिँ क्रमन कीन
 इक१कोस हुती नाली तुरंग, किय फेर त्रयोदश१३तिन्ह उमंग ५८
 कथ कालडीकतैं इम कहाइ, आतप बहु यातैं गेह जाइ ॥

इम कहि रु सिक्ख बै तास आप, लैं टालबटहिँ डेरन अचाप ५९
 पुनि क्रमन चउत्थी४ किय प्रभात, सरसोल ग्राम दिय सन पात
 कर कुच्च पंचमी५ दिवस राम२०२१४, कलह्यानपुरै दिय पुनि
 मुकाम ॥ ६० ॥

विश्राम फतैपुर षष्ठि६कासु, तहँ रहत घटी दुव२ दिवस आसु ॥
 साहब चउ४ आये मिलन काज, सुनिये तस आव्हय राजराज६१
 उपपद सु मजष्टर सुहि थरंट१, नायब सु मजष्टर आदि जंट ॥
 पलियम जु पिरासन२नाम ताहि, इम रीढ३नाम साहब सु आदि६२
 साहब सु टालबट४सत्थ जोहि, मिलि च्यारि४सभा आये सु मोहि
 अरु अस्त्र बिछायत लग उताल, आतहि तब सस्मुह क्रमि नृपाल६३
 मिलि सबन मत्थ कर तब मिलाइ, आनन तक प्रभु कर जबहि
 आइ ॥

करि कुसल परस्पर हित बढारि, प्रभु बैठि तखत संसद पधारि६४
 दिस बाम दुलीचनहू बिछाइ, तिहिँ उपर साहब सब बिठाइ ॥

छाड़ १ ठाड़ २ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥

करि समय वृत्त गहि अतर दान, चवि सिक्ख लगायो चाहवान ६५
 किय क्रम पुरी साहव पुरस्थ, तलेव टालवट रहिय सत्य ॥
 इक सिविर अंत तारा स आहि, प्रभु अप्प १ टालवट २ दुव ३ उमाहि ६६
 अब बहुरा जीवनलाल आइ, पुनि हुकम हमीयदखाँ सु पाइ ॥
 किय मंत्र अद्घ घाटिकादिवाँन, दै सिक्ख ताहि किय तखत आनि ६७
 बलभद्र हुतो नागोध पट्ट, दिन दिवस सोहु लग्गो कुवट्ट ॥
 साहव अनाम किय कैद जाहि, गक्खिय प्रयाग निवसथ रसाहि ६८
 तस राघवेंद्रसिंह जु अपत्प, दिय साहव तासहि राजकृत्य ॥
 सुभ मनुज तिन्हें भोजिय भुवाल, सोती सु मारफत कृष्णलाल ६९
 पौराणिक कासीनाथ २ पात, अरु पुगेधाहि नंदन उम्हात ॥
 सो रामरसीले २ नाम रूपात, पंडित ३ अनाम मिलि सभा पात ७०
 दै आसिख अक्खि गु भद्र भूप, इक १ तुषक निवेदिय पुनि अनूप ॥
 टहरी सु जात सौवर्णा अंग, अरु कुंद रजतमय कलि अभंग ७१ ॥
 त्पारी सु राजती बहुरि सत्य, बलि सम्मुह पैठि रु मिसल पत्य ॥
 अक्खिय जुद्धार नृप अस्मदी १, सुभ अक्खिय तिन्ह पुनि तस सुदीय
 प्रभु पूछि राजवृत्तान्त सर्व, दिय सिक्ख सिविर हित करि अखर्व ॥
 पट्टप सु भीम २०३१ आयड कुमार, आमय मसूरि सिंधूततार ७३ ॥
 करि नजर निछावरि मिसल लेन, तस पूछि अनामय सिक्ख देत ॥
 किय कासमहू सप्रिम ७ मुकाम, रीवाँपुर आगम सुनर राम २०२ १४
 मथुराप्रसाद १ भूसुर भुवाल, नारायन २ पाठक तिम उताल ॥
 संबंध रचन तहँ दुवरहि आइ, इनकी सु प्रभू पुनि अरज पाइ ७५ ॥
 अरु बहुरा जीवनलाल थान, आरुहि गज उप्पर कियड आन ॥
 ताजिगरु शिविर प्रविसे सु विप्र मिलि कुसल अक्खि अरु मंत्रछिप
 तव बहुरा जीवनलाल १ तथ, अरु अमृतलाल २ आता सु अत्य ॥

तीजो३ वकील हम्मीदखाँहिं, आचारज आसानंद आँहिं ॥ ७७ ॥
 नृप विश्वनाथ हम कथन गेय, ममगेह पुलिका तुमहिं देय ॥
 सुनि मंत्र एह घटिका सुतीन३, पुनि जीवनलालहिं सिक्खकीन ७८
 अरु बत्त नाँहिं स्वीकार एह, बलि विप्र गये दुव२आसु गेह ॥
 पुनि नयन२ सप्तमी७ दिन प्रभात, प्रभु सरैई सु किय सेन पात ७९
 करि कुच्च अष्टमी८दिन सुकाम, पहु दियउ कसीया नाम गाम ॥
 इक१कोस हुती गंगा उहांसु, अवरोध सहित किय गमन व्हांदु८०
 करि स्नान धेनु दुव२दियउ दान, हं किय निज डेरन चाहवान ॥
 इम आइ शिविर सर्वरि वितात, पुनि करिय कुच्च नवमी९प्रभात ८१
 मँगतीपुरा सु प्रभु दिय मिलान, दसमी०१ किय हूमनगंज आन ॥
 एकादशि११ वासर सोम पात, अति उमगि प्रयान सु राज आत ८२
 संमट१रु हलीहर२समट३नाम, कपतान लय३हि उपपद सु काम
 आइउ प्रभु सम्भुह अर्द्धकोस, जो जनरल साहबकै भरोस ॥ ८३ ॥
 मिँलि क्रमन बरब्बर वाम भाग, प्रभु आइ शिविरसन्निधि प्रयाग ॥
 तस दुग्ग बरब्बर बाग ताहि, अवनीपति तामैं रहन आहि ॥ ८४ ॥
 किय शिविर तत्थ प्रभु हुकम पाइ, अवरोध रुभट सब शिविर आइ
 प्रभु सिक्ख साहबन पुनि समप्पि, कटिबंध निवारन बहुरि थप्पि

॥ दोहा ॥

श्रीप्रयाग संज्ञा किते, बदत इलाहाबाद ॥

किमहु होहु पै पाप गज, गज्जत सिंह निनाद ॥ ८६ ॥

॥ षट्पात् ॥

चलि तुरंग किय क्रमन अप्प माधववेनी पहुँ ॥

करि मुंडन पुनि स्नान अस्थि पूजन प्रभु किय तहँ ॥

प्रनमि भूप उर द्वयस मोद सह गमन नीर किय ॥

पितरन पुनि करि स्तवन अस्थि कर अप्प प्रवेसिय ॥

रामसिंहकातीर्थयात्रासेषीछात्रानां अष्टमराशि-पंचदशमयूग (४३२७)

आप्लवन करि रु पुनि धेनु इक१ उभयमुखी दिय भूसुरन,
बलि महुर पंच५ दै नित्य करि कियउ प्रभू डेरन गमना ८७।
द्वादशि१२ दिन नृप सदन गवरनर जनरल लार्डहु,
नाम अलीनवराहु तास प्रतिहार आइ पहु ॥

अरज कराइय एह लार्ड पहु मिलन अज्ज चाहि,
अरु वकील नरनाह हमिदखाँ वृत्त एह कहि ॥

सुनि एह अरज प्रतिहारप्रति उत्तर दिय तुम इम चवहु,
अज्ज करि पितर तर्पन बहुरि कलिह मिलन हमरो चहहु ॥ ८८ ॥

इम कहाइ चढि अधिप चालिय गंगा१मिलाप तहँ,
सरस्वती२जमुना३हु इक१ हुव नीर आइ जहँ ॥

पंचम५ नामक गुरुहि बहुरि बुधजनन बुलाइय,
शास्त्र उक्त विधि सहित श्राद्ध तिन प्रभुहिं कराइय ॥

दै दान द्विजन पंचम सु मुख रस६घाटिका जावत रजनि,
आरुहि सु अर्घ नमि द्विजनन शिविर प्रवेशिय महीपमनि ८९

तेरसि१३ दिन पुनि रहत गमन साहव मिलाप सन,
नाम अलीनवराहु गवरनर जनरल कमरन ॥

भेजिय सम्मुह त्वरित इस्तरेजी सु सिकतर,
सचिव लार्ड१को बहुरि नाम नांदि सु साहबवर ॥

सकटी१तुरंग चढि पुनि दुव२सु आइ रु मिलि प्रभूतै सुमन,
कर मत्य करि रु सुभ लार्ड कृत अगग प्रभू सह किय अटन ॥ ९० ॥

॥ दोहा ॥

पहुँचत कमरन अधिप तहँ, चोक अनायत पाइ ॥

अयमय नालिनके उतसु, तेरह१३ फेर कराइ ॥ ९१ ॥

॥ षट्पात् ॥

कमर लार्डसन क्रमत इस्तरेजी१ पुनि आइरु ॥

मैडकर साहब आइ बहुरि अतिमोद बढाइरु ॥
 करन परस्पर सोस कुसल करि कसर प्रवेसत ॥
 उततैं सम्मुह लार्ड द्वारलग सत्वर आवत ॥
 मिलि खंध जुट भाबुक भनि रु वलि लगाइ दुवर्मत्य कर ॥
 संसदहिं पाइ साहब सहित खुरसिन उप्पर बैठि वर ॥ ९२ ॥
 बैठिय नृप दिस बाम अलीनवरा? सु लार्ड तहँ ॥
 मैडकर बैठिय सव्य बहुरि जयसिंह? विजय जहँ ॥
 याके अध भट? सचिव? तीस ३० अभुकेर मुदित मन ॥
 मध्य विराजिय अप्प समय चवि कृत धाराधन ॥
 घोटक? मतंग? भूखन? तुपक? वस्त्रादिक प्रभु भेट दिय
 इम तुपक? तास पुर जात पुनि नाम रफल करि नजरकिय ६३
 ॥ दोहा ॥

किय अवरोधन सह क्रमन, गंगातट प्रभु न्दान ॥
 मज्जन करि डेरन गमन, चउदसि १४ दिन बहुवान ॥ ९४ ॥
 अमा ३ दिवस पुनि गंगतट, अंतेउर सह आइ ॥
 कियउ स्नान आदिक प्रथम, ग्रहन मगम तहँ पाइ ॥ ९५ ॥
 प्रसू दुवर्हि किय दान पुनि, रजततुला प्रभुअपि ॥
 अंबा अमानकुमरी उमगि, बैठि रु विप्र समपि ॥ ९६ ॥
 महिषी स्वरूपकुमरी दियउ, द्विजन दान सुद पाइ ॥
 कथन सस्त्रि पुनि अप्प करि, उमडित डेरन आइ ॥ ९७ ॥
 पड़िवा १ सित पंचम सुरहिं, महिष बुलाइ मिलान ॥
 पूजन करि तस प्रीति सह, दियउ अप्प कर दान ॥ ९८ ॥
 ॥ षट्पात् ॥

इक? मतंग बन्नात सिरी कुथ सहित समपिय ॥
 हाटक भूषन? तुरगर बहुरि बन्नात जीन दिय ॥

सिरुपाव१।३रु सिरुपेच१।४कटक१।५उरसूलिका१।६हितिम
धेनू दुवर शिविका१ रु निष्क८ पंचक५ रुपय९ जिम ॥
इखुख५०।९सोह पंचक अरथ गाम१लोहली१।१०निष्कदुवर
इम करत बहुरि अवरोध सन भिन्न भिन्न तहँ दान हुव॥९९॥
दोजि२ दिवस उपवीत लियउ प्रभु ब्रह्मवर्ष पुनि॥
पंचमि५ दिन लै अप्प भीम२०३।१ कुमारहि सुभटन चुनि॥
शास्त्रउक्त विधि सहि भीम२०३।१ सह सुभट सधाइय ॥
दियउ दान भू१ भर्म२ द्विजन बहु मोद बढाइय ॥
पाष्टिका६ दिवस हुवे मेघ भर सप्तमि७ बुधहिँ मिलानरहि
अवरोध सहित एकादशिय११चलिय गंगतटन्हान बहि१००

मनोहरम्

भूप दशाश्वमेध उत्परि पधारि पुनि,
अप्प कर न्हाइ भरे दुवर घट प्रवाहतैं ॥
तर्पन रु नित्यकर्म आइ करि तीर्थ द्विजं,
दैकै गो१ सनिष्क२।१ द्रम्म३।५ पंचक५ उछाहतैं ॥
पुनि प्रभु अश्वदश१०मेधके वितर्द पर,
जाइ रु प्रनाम कियो पर्वईके नाहतैं ॥
निष्क इक१ नाणाक२।१ महीपति व्हाँ भेट करि,
भोजन द्विजन दये रुपय सत्ताहतैं ॥ १०१ ॥
शिविर प्रवेसि पुनि द्वादशी१२ दिवस पात,
भोजिय हमीदखाँ वकील लार्ड घरकों ॥
जाइ तहँ मैडक सिकत्तरसों अक्खि इम,
लैचलो डेरन हमारै गवरनरकों॥
जाइ तिन लार्ड अलीनबरातैं एह कही,
चालहु मिलाप आप बुन्दीधरावरकों ॥

बहुरि हमीदखाँकी अरज यहही सुनि,
 आवत शिविर प्रभू लोकें सिकत्तरकों ॥ १०२ ॥
 साहब सिकत्तर वजीर नाम डोरन१ ओ,
 कालविल्ल२ त्योंही हरीसन३ हर्लाहर४कों ॥
 लार्ड अलीनबराको अमात्य मखन तोस,
 समरल६ नाम पै कुहात सिकत्तर६कों ॥
 अंसुकसदन ईस गाइब७ खुरम८ सोही,
 रुंधदन सदन ईस आयो राम२०२४घरकों ॥
 टालबट९ आयो त्यों उमंगि महिपाल पुनि,
 जनरल१० जंगी ईस तजिकें गुमरकों ॥ १०३ ॥
 बैठक चउ४नको तुरंगरथ इक१ तापै,
 लार्ड चढि शिविर महीपतिके आतभो ॥
 एह सुनि लार्ड अलीनबराके सम्मुहकों,
 जीवनसहितलाल१ सचिव पठातभो ॥
 महासिंहउत्त भट धौकल२ रु गोकुल३त्यों,
 सासन भुवालकेतैं त्रिकन जातभो ॥
 जाइ मिलि उक्त लार्ड साहब सहित सब,
 शिविर महीपतिके उमंगि सु आतभो ॥ १०४ ॥
 शिविका अरोहि प्रभु सम्मुह बहुरि जाइ,
 मिलिकैं परस्पर लगायो सीस करकों ॥
 कुसल दुहूँ२घाँ होइ साहब बहुरि कही,
 भूप हम सन्निधि विराजैं बत्त वरकों ॥
 सुनिकैं नृपाल लार्ड साहबके वामभाग,
 बैठि रु कुसल कियो भूप सिकत्तरकों ॥
 मोदसह लार्ड भूप२ मैडकैं सिकत्तरहू,

रामासिंहकातथियाग्रामेलाईसेमिलना]अष्टमराशि-पंचदशमयूख (४१३?)

बैठिकें तुरंगरथ आये बस्त्रधरकों ॥१०५॥

शिविर प्रवेशि लार्ड साहब सहित आप,

संसद पधारि सब बैठे खुरासिनतैं ॥

खुरसी स्वकीया मध्य राजतीपैं बैठे अप्प,

मैंडकरहू सब्य बैठो— राम२०२।४ इनतैं ॥

वामभाग बैठो लार्ड साहब महीपतितैं,

समर जु आदि नवए बैठे अध जिनतैं ॥

जीवन३ अमात्य हो हमीदखां४ वकील बैठे,

करन५ कल्पान६ आदि वीर अध तिनतैं ॥ १०६ ॥

(दोहा)

समय देस वृतांत चवि, करन मंत्र एकत ॥

शिविर अंत ए लार्ड सह, तिम मैंडक क्रमि तत्त ॥ १०७ ॥

जीवनलाल बुलाइ जहैं, अरु हमीदखां आइ ॥

करि रहस्य इकर नाडिका, पुनि पहु संसद पाइ ॥ १०८ ॥

अतरपान पुनि अप्पिकें,

शिरुपेच१।२रु दुस्साज१।३पुनि, जटित गिलंगी१।४अप्पि१०९

मुत्तिनमय उरसूत्रिका१।५, पट्टिस१।६ निज पुरजात ॥

चोक स्वर्ण वल्लदार मय, तुपक इकर दिय तात ॥ ११० ॥

(षट्पात)

दंती इक१।७ वन्नात सिरी कुथ सहित समप्पिय,

तुरग२।८ दोइ२ सौवर्ण बहुरि राजतखन—दिय ॥

इत दै सिक्ख सुजान बाह्य डेरन लग आइ रु,

भनि भावुक प्रभु लार्ड मत्थ कर दुहुँ२न लगाइ रु ॥

चढि लार्ड तुरगस्यंदन बहुरि मोदित बैंगलन गमन किय,

इकवीसर१फैरनालिन अधिपकरि काटिबंध निवारिदिय१११

॥ निश्शास्त्री ॥

चउदासि दिन भर मेघतैं डेरन रहि पाया ॥
 पुनि पुणिणाम नृप न्हानको गंगातट आया ॥
 जानि तिथि क्षय जनककी तर्पन उमगाया ॥
 मज्जन करि विधि सहित श्राद्ध द्विजदान मिलाया ॥११२॥
 रजनी चित्तत बानप बहुरि डेरनपर आया ॥
 सावन पड़िवा असित तत्थ प्रभु रहन उम्हाया ॥
 दोजि२ दिवस नृप दत्त लार्ड शस्त्रादि भिजाया ॥
 तब नृप सचिवन अक्खिक्कैं तस मोल कराय ॥११३॥
 चपारिसहँस४०००सत अट्ट८००पंचनभ५०रौप्य मगाय ॥
 दै हमदिखां हत्थ लार्ड बँगलन भिजवाया ॥
 क्रियउ नजर तहँ जाइ लार्ड लै मोद बढाया ॥
 दिन चउत्थ४ दीवान शिविर साहब छुद आया ॥११४॥
 कग्गर बंघि अमात्यहू सब वृत्त सुनाया ॥
 उदयपुराधिप रान नाम सिरदार कहाया ॥
 तुंदावन सेवन करन अगैं तहँ आया ॥
 सो अट्टारह१८ दिवस रहि रु परलोक पलाया ॥११५॥
 पंचमि५ दिन पुनि पाइकैं चर एह सुनाया ॥
 जैपुर गोकुलचंद्रमा जयसिंह थपाया ॥
 सेवक बल्लभ तादिको गुस्सांइ कहाया ॥
 नंदन गिरिधर सहित उमांगि डेरन पहुँ आया ॥११६॥
 तब प्रभु सम्मुह तास बाहय डेरन लग पाया ॥
 नमन करन करजोरि प्रीति सह सीस नमाया ॥
 अंसुकसदनहि लाइ बहुरि तिन तखत बिछाया ॥
 प्रभुको चोका तखततैं अपसव्य बिछाया ॥११७॥

बैठि रु चवि वृत्तांत समय दुहुँरसख दिखाया ॥
 नजर तीन३ किय निष्क प्रभू पट्टिस पुनि पाया ॥
 चोक स्वर्णमय तास समन करि सिक्ख दिवाया ॥
 बाह्य शिविर लग बहुरि आइ तिन मुद पहुँचाया ॥ ११८ ॥
 बलि प्रभु डेरन प्रविमिकै कटिबंध विहाया ॥
 पष्टी६ दिन तिन सप्तमी७ अष्टमि८ तहँ पाया ॥
 नवमी९ साहब मिलन कज्ज बांदापति आया ॥
 अंत मुहम्मदजुलफकार नवाव कहाया ॥ ११९ ॥
 आवत डेरन दुगगतै नालिन चलवाया ॥
 पंच अधिक दश१० फेरहू मालुम करवाया ॥
 दशमी१० दिन पुनि शिविर भूप साहब चर आया ॥
 मैडककेर सलामहू मालुम करवाया ॥ १२० ॥
 भावुक सहित सलाम भूपतिप्रति दरसाया ॥
 एकादशि११ बागणसी पढि द्विज इक१ आया ॥
 गंधी केसवरामके सुत संसद पाया,
 आबहय सह हरवखस जो पढि नृप उमँगाया ॥ १२१ ॥
 बैठक ताके गुननतै पहु रीझि दिखाया,
 द्वादसि१२ दिन बुधवार४को चढि अश्व चलाया ॥
 कोटेश्वर सिव दरस काज प्रभु पुनि उमँगाया,
 करि दरसन मृडकेर बहुरि गंगाजल न्हाया ॥ १२२ ॥
 नित्यकर्म करि सदर ईस इक१ निष्क चढाया,
 गुन३ घटिका दिन रहत भूप डेरन पुनि पाया ॥
 मक्खनतोस१ रु टालंबट२ जु जात्रा सँग लाया,
 पधरावन प्रभु लार्डगेह साहब दुवर आया ॥ १२३ ॥
 ॥ दोहा ॥

मवल सहस्य९ पुनि दोजि२ आप, बाराणसि नामक पुर अवाप

अविसदतपस्प १२ सत्तमि ७ सञ्चार ३, राजातलाव रहि पटअगार १३२
इम करत कुच्च प्रभु २०३ पुनि विश्राम, नांगोध द्वेग व्याहन जगाम
पुनि सुक्ला नवमी ९ लग्न पाइ, व्याहिय निसीथ प्रासाद जाइ १३३
सो चंदभानु कुमरी स नाम, वामांग अप्प करि राम २०३ वाम ॥
अंसुकगृह आई रु बहुरि आप, जाचकन अत्थ बहु धन ददाप १३४
नभ गगन नंद इक १९०० लगत साल, किय कुच्च मास मधुश
बलि कृपाल ॥

विश्राम कुच्च करि करि रसेस, बुन्दीपुर सुभ दिन किय प्रवेस १३५
इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे ऽष्टमः राशौ रामसिंह
चरित्रे पञ्चदशोऽध्यायः ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

अत्र गगन नव इंदु १९०० सक, अनंगतिथी १३ आषाढ ॥
पक्ख असित बुंदोस पुर, प्रविसे प्रभु गुन गाढ ॥ १ ॥
तदनंतर भट्टिय प्रथित, जैसलमेरु जनेस ॥
मूलराज बंधुन समुद, आनिय डोला एस ॥ २ ॥

पटपात

कन्या राउल विजयकुमरि जीवन गुनगोरिय ॥
राउल ज्ञान द्वितीय २ गिद्धिकुमरी तिम आनिय ॥
पट्टप भीम २०११ कुमारकेर संबंध दुहुन भनि ॥
प्रोपित अक्खि रु तास कियउ सत्कार महिप मनि ॥
केदारनाथ शिवकेनिकट बुरजसिकारहि दित विजय ॥
उपवन बहोरि ज्ञानहि अधिप रक्खिप रूपविलास रय ॥३॥

॥ मनोहरम् ॥

रामसिंह-रामर कुमार भीम लग्न काल

व्याहन पठायो पहु बुरज सिकारकों ॥
 राउल विजयसिंह उत्त उपहार ठानि,
 कन्या करग्राहन करायो कुमारकों ॥
 अनल परिक्रम ओ सप्तपदी आदि दैकै,
 वेदविधि आये पुर तिहि बारकों ॥
 नवमी १ दिवस रूपआदिक विलास जाइ,
 ज्ञानसिंह तनया बिबाही गुरुप्रवारकों ॥ ४ ॥
 ग्यारह सहस्र ऊन ११००० लक्ष दुव २००००० रूपय ओ,
 तुरग द्विषष्टि ६२ अरु कटक दुसत्त ७२ भो ॥
 अप्प प्रभु सभ्य रविमल्ल कवि मास सुचि,
 एकादसी ११ हूतैं बिजैदशमी १० लौ दत्तभो ॥
 सुनिकैं उदंत यह जच्चक विदेशहूके,
 आये नैर बुंदी प्रभु द्रव्य अनुरत्तभो ॥
 सुकवि समाज कति मिलिकैं निवाजै आप,
 बाजे जस ताजे जेके बजाइ कतिपत्तभो ॥ ५ ॥

॥ पञ्चकटिका ॥

मरु भ्रात कोटारिन करि उछाह, ओ द्वादस बलि आये बिबाह ॥
 ॥ नाम सहित सुनिये रसेस, यह भोमसिंह आये ससेस ॥ ६ ॥
 ॥ मंतसिंह कापरनिकेर, सकुटुम्ब रचिय आगम नफेर ॥
 व्यादिसिंह दुर्गापुरीस, सिवसिंह इंद्रगढकै रईस ॥ ७ ॥
 कुटुंब कुमर सह अवर पाइ, आनंद अधीस पुनिराम आइ ॥
 व्यादिक आइ रु रहिय एस, आदरतैं रक्खिय सब इत्तेस ॥ ८ ॥
 ॥ रि सभा तास सतकार लेय, दै सिक्ख ताहि दिय बस्त देय ॥
 मकरि बिबाह—राम २०३ आप, मोदित किय कविबुध भटअमाप ९
 हैं अवद १९०० जोधपुरके नृपाल, किय भाद्रैकादसि ११ मानकाल

अंग्रेजोंकः दिल्लीपसिंहको बिलायत भेजना] अष्टमराशि-षोडशमयूख (४३३७)

पुणिया १५ दिन पैठो तखत पट्ट, थंभिय समस्त मरुराज थट्ट ॥ १० ॥
इक बिंदु अंक ससि १९०१ वर्ष माहिं, साहब अजंट बर्टन सु आहिं
साहब सन सम्मुद्द प्रभु पधारि, हुव महलन दाखिल हितवढारि ११
जयवती नाल प्रासाद जाइ, उत्तरि अजंट पुनि प्रीति पाइ ॥

तस सिविर द्वितीयक २ अहन आप, किय क्रमन महीपालक
मिलाप ॥ १२ ॥

उत साहब सम्मुद्द आजगाम, करि सीस परस्पर करन राम ॥
प्रभु किय उपवेशन तखत पाइ, उपवेशन साहब सव्य आइ ॥ १३ ॥
पुनि लौन दैन किय अतर पान, हुव दाखिल महलन हड्ड भान ॥
महलन पुनि साहब हित अमाप, अर्जुन तपस्य षष्ठी ६ अवाप १४
--अभिमुख पायंदाज जत्थ, मिलि कियउ परस्पर हत्थ मत्थ ॥
तदनंतर बैठेय तखत राम, साहब सु दुलीचन रहिय वाम ॥ १५ ॥
बेलाल्प राखि करि अतर ताहि, पहुँचावन पायंदाज आहि ॥
दै सिक्ख ताहि दिय वस्तु देय, धरनीन्द्र अप्प २०३ किय जो
विधेय ॥ १६ ॥

अव सुनहु प्रभू २०३ इहिं अब्द १९०१ अंत, इंग्रेजन किय जो रन उदंत
व्यासा १ सतलंजरु बीच देस, आक्रमन सिखन करि लिय असेस
सय गगन निधी अरु इक्क १९०२ साल, तेरसि १३ तिथि भाद्रा-
सित भुवाळ ॥

महाराजकुमार लघु रंगनाथ २०४ १२, उद्भवन भवन भव सर्व आथ १८
लाहोर ईस तिनदिन दिल्लीप, हुव सिष्टि कंपनी मनु महीप ॥
जवकरि इंग्रेजन जुद्ध जास, नालिन तस सेना करि रु नास ॥ १९ ॥
बालि करि निरोध भेजिय बिलात, तस जननी चंदा नाम तात ॥
नैपालज अटवी रहन कीन, इंग्रेज राज्य तस किय अधीन ॥ २० ॥

अभिधा नारायनसिंह आइ, बय बहुरि बाल्य पंचत्व पाइ ॥ २१ ॥
 पहु कल मदनसिंहाभिधान, हायन इहिं १८०३ पट्टनि भयउ हान
 तस बैठिय पृथ्वीसिंह पट्ट, ननि प्रभू चलिय सामान्य बट्ट ॥ २२ ॥
 सक बेद सून्य अइ इक १६०४ आत, पट्टन दुर्बंट पहु अप्प पात ॥
 बलि केसव उच्छव हित बढारि, सित राधमास पट्टनि पधारि २३
 दर्शन करि केसवके दिवान, अक्षयतृतीय ३ दिन पुनि विधान ॥
 उच्छव अरु पूजन करि रु आप, सब करि विधेय सिबिरहि अवाप
 करि बहुरि तहाँ प्रभु न्हानदान, बटन अजंट बलि कियउ आन ॥
 चर्मशवति घटोपरि बिछात, अधिराज प्रथम तहँ अप्प आत ॥ २४ ॥
 साहब सपुत्र आइउ उदाहि, अप्प २०३ सु पहु सम्मुह छ ६ पद आहि
 करि दुर्दिस सीस कर भद्रभाखि, गालीचन साहब वाम राखि २६
 बैठिय पहु गही सित अवाम, अल्पहि पुनि बेला रक्खि आम ॥
 बैअतर पान तस सिक्ख दिन्न, कम छ ६ पद तस पहुंचान किन्न २७
 राजेन्द्र राध सित नवमि ९ राम, करि कुंच सु बुन्दी आजगाम ॥
 सक बान गगन नव ससि १९०५ भुवाल, किय कुमर नरायन
 सिंह काल ॥ २८ ॥

तप असित नवमि ९ दिन बहुरि तात, रसरंग सुभद्र सुकुमरि जात
 इहिं सक १९०५ अधिप परतापपाल, किय नगर करोली भाद्र
 काल ॥ २९ ॥

सुत तास मदनसिंहाभिधान, व्है भूप चार भट कियउ मान ॥
 रस व्योम अंक भू १६०६ वर्ष आहि, लाहोर इंग्रेजन लिय
 उमाहि ॥ ३० ॥

दय गगन अंक इक १९०७ होत साल, दुर्गापुर देवीसिंह काल ॥
 सुत संभूसिंहसु गिनि अभिन्न, दुर्गापुर सासक अप्प किन्न ३१
 इहिं सक १९०७ इंग्रेजन युद्ध किन्न, नृप बर्मातै कछु देस लिन्न ॥

गज गगन अंक इक १९०८ आत साल, पट्टनि सु अज्ज प्राविसे
भुवाल ॥ ३२ ॥

साहव अजंट तहँ मिलन काम, सो जानहु मारीसैन नाम ॥
चर्मण्यति तरनी उतारि चाहि, आइय विद्धात उप्परि उमाहि ॥ ३३ ॥
प्रभु अप्प तास अभिमुख पधारि, आइय समाज बहु हित बढारि
कछु समय राखि दै सिक्ख तास, पहुँचावन पायंदाज पास ॥ ३४ ॥
हुय दाखिल शिविगहँ हड्डभान, दिन द्वितियरकियउ तहँ न्हान दान
कारि कुंच बहुरि प्रभु अप्प राम, बुंदी पुर सत्वर आजगाम ॥ ३५ ॥
तदनंतर बीकानेर राय, पहु रत्नसिंह तज्जिग सु काय ॥
सरदारसिंह तस पट्ट पाइ, जानै कछु प्रभुतै हित जनाइ ॥ ३६ ॥
ग्रह गगन अंक इक १९०९ आत साल, कापरनिकियो बलदेव काल
सब मोटि विघ्न कापरनिकेर, महाराजा हलधर कियउ फेर ॥ ३७ ॥
रागिनि सेखाउति हड्डराइ २०४, उज्जासित तिन दिन निधन पाइ
वर्मा उपवर्तन नृप बहोरि, इंग्रेजन लिय इक १ दुर्ग तोरि ॥ ३८ ॥
सक गगन इक्क नव ससि १९१० समात,

प्रभु मिलन अत्य सौधन अवाप ॥ ३९ ॥

किय करन दुर्दिसकछु कुसल कारि, पुनि अप्प तखत उप्प-
रि पधारि ॥

वर्तन गालीचन गदिख वाम, बेलाल्प रहि रु गय वस्त्रधाम ॥ ४० ॥
उप किय अजंट अजमेर जान, अब सुनहु वृत्त इत हुव दिवान ॥
एकादसि ११ आश्विन असित आत, पटरागिनि पहु पंचत्व पात ४१
तदनंतर जीवाराम नात, ग्वाल्लेरप जनकू नाम रूपात ॥
कछु रोग पाइ तिहिँ कियउ काल, सुत जीवाराम सु भो भुवाल ४२
सक भूमि इक्क निधि ससि १९११ उदार, शुक्रासित दशमी १० शु
क्रवार ६ ॥

मदनेस भल्ल धीदा उमाह, कुमगर्जुन पट्टनि किय विवाह ॥४३॥
तहँ त्याग अमित पहु राम२०१४ आप, मोदित दिवाह किय कवि
अमाप ॥

सक इहिँ १९११ इंग्रेजन रूससाह, आस्कंदन जीति रु किय उछाह ॥४४॥
सय भूमि अंक ससि १९१२ लगत साल, आयउ अजंट मेसन सु-
वाल ॥

जयवतिय ताल उत्तरन जास, आगत अजंट महलन हुलासा ॥४५॥
अभिमुख पहु पायंदाज आइ, करिको परिकर पुनि सय मिताइ ॥
उपवेसन गद्दी कियउ आप, आसन सु सवय रहि दित अमाप ॥४६॥
रहि समय तुच्छ तस सिक्खिदिन्न, पहुँचावन आदिक पुव्व किन्न
तदनंतर जानहु नरनपाल, पट्टप कुमार वंसनवहाल ॥ ४७ ॥

उदाह करन भेजिय इलाप, सह जन्य कुंच करि तहँ अवाप ॥
सह मास ९ एकादशि ११ बुद्धवार ४, इहिँ लगन भाम २०३ पट्टप कुमार ४८
गाल सु भवानीसिंह धीय, अभिधा गुलावकुमरी सुहीय ॥
गरनि रु बुंदीपुर आजगाम, दंपति लिय महलन दिवस वाम ॥४९॥
गुन भूमि अंक मृगअंक १६१३ साल, किय इंदगढप सिवसिंहकाल
अग्रामसिंह हुव तास पट्ट, बनि चलिष महाराजा कुवट्ट ॥ ५० ॥

॥ दोहा ॥

मेसन साहब मोटि अरु, बर्टन आइ बहोरि ॥

हुव अजंट हड्डोटिको, मद अरातिगन मोरि ॥ ५१ ॥

बलानाथ इहिँ सक बहुरि, प्रोष्टासित नरपाल ॥

रंगनाथ २०४१ सिंहहिँ कुमर, किय नागोधहि काल ॥५२॥

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टम ८ राशौ राम-
सिंहचरित्रे

षोडशो मयूखः ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

वेद इंदु नव सासि १९१४ वरस, तपा मास सित पाइ ॥

पहु हलधर पंचत्वपन, पुण्ड्राम १५ दिन प्रकटाइ ॥ १ ॥

तब कापरनिय तस तनय, राजसिंह नरराज ॥

आइय बनि महाराज इत, गौरवादि सुभ काज ॥ २ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

प्रसू अण्ण २०।३ जो पहु तदनंतर, उज्जाटासित एकादशि १२
बासर ॥

जो अमानकुमरी ति जनावत, पन पंचत्व मध्यदिन पावत ॥ ३ ॥

याहि समय १९१४ सेना इंग्रेजन, अज्जावतज मनुज फिरे मन ॥

सत्तर ७०ही पलटनके स्वामी, साहिब रैटकप्तान सु नामी ॥ ४ ॥

सासन गोरन एह सुनायो, टोटन सिर काटन प्रकटायो ॥

तामें मेघजीन खल्लासिय, ए उदंत समग्र सु जानिय ॥ ५ ॥

इकदिन आयुधीय तहँ आइय, खल्लासी जातैं दक्ष मंगिय ॥

तबहि अदेय आयुधिक अक्खी, जब खल्लासि बात यह भक्खी ॥ ६ ॥

मेद मिलित टोटन गो १ सूकर २, रद छेदन करिहो तब सत्वर ॥

जातिहु जवर पुण्य फल पैहो, दक जब हमहिँ पानकों दैहो ॥ ७ ॥

इम सुनि चमू आयुधिक आयो, सब अज्जन वह दूत सुनायो ॥

तब कप्तान रैट तिन्ह मारिरु, इकदिन सर्व छावनिन जारिरु ॥ ८ ॥

ससुत भैंस साहब बहु मारे, कति भूपनके सरन सिधारे ॥

सुनि यह कोन दयो तब सासन, बाहिनि जाहु उपद्रव नासन ॥ ९ ॥

सेनासहित लार्ड तब आये, कारेजन सब मारि भगाये ॥

दिल्ली साहबहादुर सानी, अधिपतिता हिंदुन उर आनी ॥ १० ॥

पकरि सोहु तब साहब भेजिय, पिसन करि रु कपमँहँ रक्खिय ॥

तदनंतर कोटापुर स्वामी, रामसिंह २१२ महाराव जु नामी ॥ ११ ॥

कायथ जैदयाल१ तस किंकर, भो महारापखान२ अञ्जुचित धर ॥
मैम१ पुत्र२ सह बर्तन३ माख्यो, बैभव लूटि सदन तस वारग्यो१२
बाहिर कोटा निजबस किन्नौ, दुःख अमित भूपति सिर दिन्नौ ॥

॥ १३ ॥

सुनि यह वृत्त करोलिय सत्वर, भेजिय मदनपाल दल भूव ॥
पुर अंदर कछु यत्न प्रवेशिय, जैदयाल दारुन कलि मंडिय ॥ १४ ॥
कग्गर लिखि अजमेर खिनायो, महाराव अति नम्र दिखायो ॥
सु सुनि लार्ड तब -क सजायो, अति अमर्ष कोटापुर आयो ॥ १५ ॥
कतिदिन दुरदिस युद्ध तोपन किय, दुसह ताव साहब तस सिर
दिय ॥

जैदयाल१ महारापखान२ जब, सुभट मराइ तजि रु बैभव सब१६
भीरुक मनि कोटा तजि भज्जे, बंवि विजय साहब बल वज्जे ॥
मेटि सकल बिग्रह पुर करि मह, साहब गो अजमेर सेनसह ॥ १७ ॥
सक सर भूमि नंद सासि १९१५ जानहु, पुर्णिमाम१५ तिथि इस७
सुकु१ प्रमानहु ॥

देवीसिंह पुत्ति दुर्गापुर, मृत गोविंदकुमारि अंतेउर ॥ १८ ॥
अष्टि नंद इक१९१६ हायन आवत, मैनेजन मिलि धाटि मचावत
दुःख पंथजन बहुरि सु दिन्नौ. बुंदिय मुलक धाटि बस किन्नौ१९
महु तब तापर चक्र पठायो, रहि बन रोक सु समर रचायो ॥
कतिदिन कलि करि कतिक पलायन, कतिक नयारि चक्र कि-
य आवन ॥ २० ॥

इय भू अंक इक १९१७ मित हायन, फगुन१२ असित२ लयोदे-
सि१३ पावन ॥

यन१ वन२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥

अतिहारी किय महिषि उद्यापन, तापर लिखि रु निमंत्रित भूधन११

कवि रविमल्लहिं दियउ कृपाकर, बलि भूदेवहिं वित्त दियउ वर
तिनदिन भोमसिंह२०३तदनंतर,लागो चलन कुमग्ग अनयकर२२
विगरन राज्य उपाय सु बलि किय, भीनैमनुजहिं सरन अमित दिय
जब प्रभु अप्प इहाँतै सुभजन,भेजिय भोमसिंह२०३समुष्ठावन२३
जाइ रु तिन अति नय समुष्ठायो, इक्क न वृत्त तास उर आयो ॥६
उत्तमांग विनु नक्क कहिय इम,कहो बिचारि ललित लगै किम२४
इम सुनि सब बुंदीपुर आये, तास उक्त सब वृत्त सुनाये ॥ ७
सुनत गहन मैनेन मारन सन, भेजिय चक्क गोठपुर भूधन ॥२५॥
ग्राम घेरि मैने इन मंगिय, नहिदै कहि रु भोम२०३ रन मंडिय ॥
जब कुमार अर्जुन कलिकिन्निय,दुसह ताप तोपन तससिरदिय२६।
कतिदिन कलह भोम २०३ गोलिन किय, भीरुक बनि रजनी
बलि भगिय ॥

नृप २०३ तस ग्राम सकल जब छिन्निय, कुमर सचक्क आगमन।
किन्निय ॥ २७ ॥

वसु वसुधा निधि इंदु१९१अब्द मित,आवन किय बेलन अजंट इत
पुत्ररीति सम्मेलन पहु किय,दृढ दिखाइ पुनि प्रीति सिक्ख दिय२८
तदनंतर इहिं सक१९१इंग्रेजन, किय अजमेर नन्हजी पकरन॥
पुनि सु बिठूर भेजि गल अप्पिय, बोये बीज तास फल पकिय२९
वाजेरायज एह अखानिय, मिलि कारन कलि नन्ह प्रमानिय ॥
बलि बड़ोद संगहि संपासन, सोपुरपतिहिं दयो इंग्रेजन ॥ ३० ॥
सक इहिं बहुरि उदयपुर सासक, सिंहस्वरूप नामहुवनासक ॥
संभूसिंह पट्ट तस पावत, जे अकस्थन रीति जनावत ॥ ३१ ॥

[दोहा]

संवत इक निधि अंक ससि१९१९ तेरासि१३तैस१०रु स्या
श्रीगद्गोदक क्रम सुवन, राजराज किय राम२०३।४ ॥ ३२ ॥

श्राद्धादिक सब वेद बिधि, पहु अप्प कर कारि ॥

सुभ सुहूर्त उडुदुर्गतैं, रहि केदार पधारि ॥ ३३ ॥

॥ पद्धतिका ॥

सुत सहित --- पडवाऽपयान, दुवलान प्रवेशन किय दिवान ॥

भौजिष्य भ्रात त्रिकऽ कियउ आन, ॥ ३४ ॥

अह बहुरि तृतीयाऽ आरऽ वार, सो दिवस भयो प्रभुकोऽवतार ॥

करि पूज नवग्रह आदि केर, पटवास नयनपुर बेसि फेर ॥ ३५ ॥

रहि तहाँ चतुर्थीऽदिन रसेस, आहूत सभा भटवर असेस ॥

लै लंचा सामाजिक समाप, अंसुकअगार दै सिक्ख आप ॥ ३६ ॥

सितपक्ख पंचमीऽ दिवस आत, पहु दियउ समीधी दल प्रपात ॥

विश्राम करत चोरु बलाप, तहँ सुजन टोंकपतिके अवाप ॥ ३७ ॥

दोलांत वजीर सु पहु नवाब, सुभ छद लै आये दुवर सिताब ॥

सु अजीटणा अबदुल समनखान, विष्णुप्रसाद कायस्थ वान ॥ ३८ ॥

सामाजिक किय दुव रणि समाज, करि नजर अरज कियहडुराज

पहु मामकीन अधिराज एह, नाणक रु सहस्र १००० नय करि

सनेह ॥ ३९ ॥

हंडोल हागहूगदि केर, मिष्टान्न एक शत १०१ नियन फेर ॥

हिमानिक लंचा लेहु लार, धरनीन्द्र अप्प ऊंदद-धार ॥ ४० ॥

डुनाथ उदित रसद घटि अवाप, दै सिक्ख उजिभ पर्यस्ति आप ॥

नि दुर्हुँन सभा बुलवाइ प्रात, सिरुपाव दियउ छदहित दिखात ४१

क्रमन सप्तमीऽ चाहवान, आमिल साधवपुर कियउ आन ॥

स नाम जवाहरमल्ल १ तात, अरु नायब बाजूलाल २ आत ॥ ४२ ॥

म नायब जन मनसुख ३ तृतीय ३, तित सुनसी नारायण ४ तुरीय ॥

सम्मुह आये अदकोस, सुभ अरज नस्तरकि गत सतोस ॥ ४३ ॥

व दाखिल पटगृह हड्ड भान, पहु किय मिलान अष्टमि पड़ान ॥

नवमी९ दिनेस पुनि किय पयान, हुंगर मलारनें किय मिलान
 पदऊन कोस तँहँ पुनि नृपाल, आइय बिश हाकिम रामलाल
 सुभ अक्खि नजर करि तिमसलाम, रहि तहाँ रत्ति धरनीन्द्रराम१
 वाटोदै दशमी१०दिन सुजात, पुर परिसर पन्नालाल आत ॥
 लै लंचा सुभ तस अक्खि आप, अधिराज बहुरि पटगृह अवाप४६
 उगगत एकादशि११ सौम्यवार४, जावत खुसालगढ पटअगार ॥
 आइउ द्विज आमिल अर्द्धकोस, सिवदीन सु लंचा किय सतोस४७
 अंसुकअगार पुनि अप्प पास, सिवदीन पुत नारायनाऽऽस ॥
 रहि द्वार कराइय अरज जोहि, व्है हुकम सरबराकेर मोहि॥४८॥
 तापें पहु अक्खिय तावकीन, है रीति इक्क१ हम लिपउ तीन३ ॥
 हमरै रु परस्पर एकवत्त, अब जानी यह तुम अप्रमत्त ॥ ४९ ॥
 इम सुनि रु कराइय अरज एस, सामग्री किय पुब्बहि असेस ॥
 सब पुब्ब माफ करिहे सुसंध, व्है हुकम ततो देहाँ प्रबंध ॥५०॥
 सासन दिय सो सुनि पुनि रसेस, तब दिपउ सरबरा दल असेस
 आवत अंतेउर गढकुसाल, मच्छीपुर जेमन कियउ काल ॥५१॥
 मच्छीपुराप बलवंत आइ, करि नजर पुहप कंडोल काइ ॥
 किय नजर सवित्री अप्प केर, प्राभृतक कियउ महिषी सु फेर५२
 बैतनिक१ बाहुभव२ जोहि सत्थ, सतच्यारि४०० सग्धि करवाइ
 तत्थ ॥

अंतेउर बेसिय शिविर आइ, पहु रहिय तहाँ इम रत्तिपाइ ॥ ५३ ॥
 करि कुच्च द्वादशी१२दिन दिवान, पीलोदै पुनि हुध शिविर आन ॥
 तस सार्द्धकोस आमिल सुहात, आवक सुहि चुन्नीलाल आत५४
 किय बलि वजीरपुरकेर आन, आमिल सु उदयचंदाभिधान ॥
 लै भेट तास दै सिक्ख आप, अंसुकअगार पहु पुनि अवाप॥५५॥
 हिंडोनि पात तेरसि१३ अनंद, आमिल बहोरि गुलआवचंद ॥

करि पावकोसलंग नजर आई, तहँ फेर रुद्र११ तोपन कराड़ा५६।
 लौ सिक्ख गयो हाकिम सतोस, पहु कियउ शिविर आगम प्रदोस
 दिंडोनिताँहि सब सेन माँहि, इंधन तृनादि अरु भांड आँहि ॥५७॥
 तहँ रहत चतुर्दसि१४ धरनिकंत, आमादसलेमाकेरहंत ॥
 नामसु—, गोपेश्वरसरखा सु देवराव ॥ ५८ ॥
 अधिकारि नरायनदास आई, रहिद्वार मिलन विघ्नति कराइ ॥
 तब कहिय अप्परविचाहुवान, मान्योदय पुर्णिमाम१५ मिलनमान५९
 पुर्णिमाम१५ सर४ नाडी चडि पतंग, अधिराज मिलन हं किय उमंग
 पट्टइ गोपेश्वरसरखापाइ, अधिराज नमन करि भेट आई ॥ ६० ॥
 रहि पहर इक्क१धरनीन्द्र राम२०३।४, असुकयगार पुनि आजगाम
 तप असित द्वितीया२दिन दिवान, सूरैत सहिप दिय तिसमिलान६१
 तिथितीज३वधानें किय मुकाम, हाकिम तस आगत मिलन राम
 बलदेवसिंह तस नामधेय, इक्कोस आई सम्मुह अजेय ॥६२॥
 मातुल सु भरतपुर सहिप केर, तजि तुरग नजर करि भयउफेर ॥
 रहि तहाँ चतुर्थी४दिन रसेस, नाडी१इक१रहतहि अहन सेस ॥६३॥
 तलतय सुजन पट्टार पाइ, पक्कान्न द्वयंक९२मन भांड लाइ ॥
 सरसतक१००बहुरि नाखाकन सत्य, सहिमानिक सामग्री समत्य६४
 मुद्रपाइ पहु यह मामकीन, भेजिय सु अत्र इम अरज कीन ॥
 रक्खिय सु सर्व सो सुनि रसाप, इम लंचा लौ दै सिक्ख आप६५
 तिथि नाग५दिवस तहँ मोद पाइ, साहब सु मिठाई मिलन आई ॥
 तजि तुरग सभा करतहि प्रवेश, सम्मुह द्वि१पैड क्रमकरि जनेस६६
 बलि करत सलाम सु हित बढारि, तब तास तत्र टोपी उतारि ॥
 सँछाप दु२दिस हुव सब बढोरि, एकांत करन कहि सुभटओरि६७
 बाहिर उपवेशन करिउ सर्व, रहि अप्प मंत्र कारन अखर्व ॥

बलि भीम २०४१ कुमर पट्टप भुवाल, बहुरा अमात्य जविन सु
लाल ॥६८॥

करिमंत्र उक्त सबही समेत, द्वय पाम वजत तिहि सिक्ख देत ॥
छट्ठीदिन चहत एक जाम, बलदेवसिंह पहु दरस काम ॥ ६९ ॥
हाजारि हुव संसद करि सलाम, करि नजर निछावर मिसल वाम
उपवेशनकिय अध सुभटतीन३, कछुसमय१वत्त शास्त्रोक्त२कीन७०
तत जाम उपरि वजत तृतीय३, सिरुपाव सिक्ख दे गनि स्वकीय ॥
बलि आइ करोली जादवेन्द्र, सो मदनपाल मेलन रसेन्द्र ॥ ७१ ॥
बलि होत सप्तमी७ सोमवार, अधिराज अप्प सम्मद अपार ॥
रवि चहत जाम इक१ राजराम, किय क्रमन शिविर तस मिलन
काम ॥ ७२ ॥

तजि तुरग प्रवेशत तहँ भुवाल, अभिमुख तब आइय मदनपाल ॥
मिलिकारि रु परस्पर हत्थ मत्थ, तत मेलन खंधा जुट तत्थ ॥ ७३ ॥
मिलि बहुरि मद्दागज सु कुमार, पूर्वोक्त रीति करि सब अपार ॥
इम दुव२हि गढिकाउपरि आइ, पहु अप्प रहे अपसव्य पाइ ॥ ७४ ॥
आत्मीय सुभट रहि तिम अग्राम, पुनि मदनपाल वैठिय सबाम ॥
वामजु तस रक्खिय सुभट सत्त, दुहुँ२ओर भयो इम सभा पर्व ॥ ७५ ॥
सागीर वत्त समपानुसार, करि क्रमन कियउ पहु मुद अपार ॥
पहुँचावन आइय मदनपाल, ढोढोलग-पूपा मध्यकाल ॥ ७६ ॥
सय करि रु परस्पर बहुरि सीस, स्वस्थान गयो जादव सुधीस ॥
उपवेशन सिक्खिका अप्प आत, दस सत्त१७फेर नालिन करात ७७
पहुअप्प शिविर आइय प्रजेस, नाही इक१ रहतहि पुनि दिनेस ॥
पहु मिलन सुभट सहमदनपाल, आत्मीय शिविर आइउउताल ७८
नरपान छोरि पटद्वार पात, सम्मुह तहँ सत्वर अप्प आत ॥
सय दु २दिस बहुरि हुव सीस रक्खि, अधिराज दुव२हि आमोद

अकिख ॥७९॥

उपवेसन किय दुव२तखत आइ, पहु अप्प रहिय तहँ सब्य पाइ॥
पट्टप कुमार तहँ भीम२०४।१ तात, अरु कुमार दुव२हि भौजिय
भ्रात ॥ ८० ॥

सुभट जु बलि आत्मक रहि सु बाम, रक्खिय सु महामात्रादि राम
सम्मुह सु सर्व कवि बुधन ठल्ल, मिश्रन कवीन्द्र तहँ अर्कमल्ल८१
जालित्य यावनी अमृतलाल, नीती सुहु संकर मुकटलाल ॥

तलाल१ टलाल२ अंत्यानुपासः ॥ १ ॥

इमं राखि सर्व अप्पन भुवाल, अपसव्य रहिय पुनि मदनपाल८२
प्रपसव्य चारभट तास रक्खि, अरु उचित समय वृत्तांत अक्खि॥
नेस जात घटी त्रय३ सीख दिन्न, पहुँचावन पूरब रीति किन्न८३
उपवेसन किय नरयान आइ, दससत्त१७ फैर नालिन कराइ ॥
प्रामोद दुहुँ२न इम रहि अपार, पहु मदनपाल गत पटअगार८४
उगगत सु अष्टमी८ दिन दिवान, किय गाम नभेरै शिविर आन ॥
वमी९ सु भासकर बुध मिलंत, किय शिविर फतैपुर धरनिकंत८५
हायस्थ सु हाकिम गुरुदयाल, इक१कोस आइ सम्मुह नृपाल॥
॥भूतक निछावर करि सलाम, पहु अप्प सोहु गय उचित धाम८६
समी१० दिन मंडा कर मुकाम, द्वादसि१२खंदोली बलि विश्राम॥
नि गाम सैदआबाद पाय, हुव शिविर चउदसि१४इहुराय ॥८७॥
हरि कुच्च अमावसि३० सोमवार२, हुव दाखिल इतरस पटअगार
सेत षड्विंशमंगल३दिन दिवाप, बलि काचकेर नगरै अवापा८८
धवार४द्वितीया२ दिवस पाइ, किय गाम सिकंदर शिविर जाइ ॥
गोहन पुर चोथी४ दिन मुकाम, बलि कासगंज पंचमि५विश्राम८९
छौ६दिन सूकरछेत्र पाइ, किय धारा गंगा शिविर जाइ ॥
॥प्लव करि सूकरछेत्र आप, करि भेट छपाधारा मवाप ॥ ९० ॥

करि सबन पूर्णिमा १५ दिन दिवान, नाग १ रु गो २ बाजी ३ छिति
४ नृजान ५ ॥

उष्णीष आदि सिरुपेच सत्थ, दिप दान सु गंगागुरुहि तत्थ ॥ ९१ ॥

॥ दोहा ॥

गंगागुरु गोविंदकों, चाढि रु गज चहुवान ॥

दै पट संभूनाथ गुरु, आरुहि अस्व विमान ॥ ९२ ॥

वस्त्रसदनके द्वारतैं, इम दुवश्गुरुहि चढ़ाइ ॥

महिपति राजकुमार सह, पहुँचावन तस पाइ ॥ ९३ ॥

गुरु नारिन दै वस्त्र गुरु, पिन्नस रथ सु बिठाइ ॥

इक निसान सादी कतिक, दै तस सद्य पुगाइ ॥ ९४ ॥

इति श्रीवंशभास्करे सप्तदशो मयूखः ॥ १७ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

प्रतिपदि १ फगुन असित पुनि, गंगधार तजि गेय ॥

मोहनपुरहि मुकास बलि, सब करि बेद बिधेय ॥ १ ॥

॥ मनोहरम् ॥

करत प्रपान श्रीदिवान राम दूजीरतिथि,

गाम काचनगरसो सिविर सुहातभो ॥

बहुरि तृतीया ३ सुक्रवासर बलापतिहू,

सैदाबाद आइ सुभ थूलन तनातभो ॥

फगुन चउत्थि ४ श्याम सहादरै धाम राखि,

अकवरनैर पछी ६ दिवस दिखातभो ॥

साइव अजंट नाम बेलन १ बुरुक २ द्वैरही,

सम्मुह दिवाप चढैं नाडी गुन ३ आतभो ॥ २ ॥

करिकैं सलाम ओ परस्पर भविक भाखि:

साहब सहित अप्प डेरनलों जाइकैं ॥

आकबरनैर गये साहब दुरसिक्ख लैकैं,

अप्प प्रभु सिविर प्रवेशे हरखाइकैं ॥

एकादशी ११ मंदवार जाम जुगर वज्जतही,

हूतीहु पधारे लार्ड साहबको पाइकैं ॥

बेलन अजंट ओ सिकतर द्वैर साहबहू,

सम्मुह दसक १० अप्प डोरिनलों आइकैं ॥ ३ ॥

जातहि समीप लार्डसाहबके बस्त्रधाम,

आये द्वैर सिकतर न जानें ताके नाममें ॥

रजीडन्ट आयो पुनि साहबहू लारनस,

लैगये पहुकों लार्ड साहबके धाममें ॥

दी आनरेबल दी अर्ल आफ अलजिन,

आयो ऊठि सम्मुह त्रि ३ पैड मेल काममें ॥

सीस कर करिकैंहू दुरदिस संलाप श्रेय,

बैठे पहु संसद जु लार्ड नहि आसमें ॥ ४ ॥

समय अतीत तहँ करिकैं कितोक आप,

कालोचित्त बत करी राजराज रामनै ॥

अतर लगाइ पान दैकैं सकुमार लार्ड,

उठि दिय सिक्ख धर्मधारकके धामनै ॥

होत अश्ववार लार्डकेर तहँ तोपनके,

सप्तदस १७ फैरहु कराये नेह नामनै ॥

पाइ इम लार्ड प्रीति अंसुकसदन आइ,

उज्झयो कटिबंध यों अतीत जुग जासनै ॥ ५ ॥

आरश्वार असित चउदसि १४ तपस्य दिन,

बेलन अजंट आये पहु पधरानकों ॥

अरुहि अजेंट उक्त अप्प पहुंच अस्वरथ,
 सेना सह त्वरित पधारे लार्ड थानकों ॥
 पट्टप कुमार भीम २०४१ अर्जुन रं गोवर्द्धन,
 जगन्नाथ वीवातिक अंतः प्रविसानकों ॥
 जीवन अमृतलाल वीर बलवंत भट्ट,
 सत्थलै दिखायो अपसव्य चहुवानकों ॥६॥
 तखत वितस्ति डक १ उच्चक विछाई तापै,
 जातरूप जटित लगाइ खुरसी जहाँ ॥
 बैठकैं बुलाये लार्ड भूप रजवारकेर,
 सव्य अपसव्यहूँ बिठाये क्रमतैं तहाँ ॥
 बेगम भोपालकी १ अपसव्यहूँ बिठाई पुंवा,
 सन्निधि सिकत्तरो २ पवेसन करयो वहाँ ॥
 असि तास हेठ ग्वालियरको नरेस जीवा ३,
 आसन अजेंट कल्यो अप्प ४ को पहुंच चहाँ ॥७॥
 भरतपुरेस ५ भूप अप्प अध बैठो ईम,
 महागव कोटाराम ६ तातर बिठायोहै ॥
 उत्तर अधीस ७ अलउरको बिठायो तहाँ,
 तास अध टोंकके नवाब ८ थान पायोहै ॥
 भालाकर पट्टनिको राजरानी पृथ्वीसिंह ९,
 रामपुर नवाब १० उत्तरात्तर गायोहै ॥
 अक अधिराज अपसव्य लार्ड बैठो सब,
 जानहु जनेस अब सव्य क्रम आयोहै ॥८॥
 जैपुर जनेस राम १ आसन सु सव्य कारि,
 रजिडंट लारनस २ ईस रजवारको ॥
 इतर अजेंट ३ ओ सिकत्तर ४ सु संसधाम,

राम नरनाह जानूं सर्व सुभ कारको ॥
 दच्छिन जो सर्व रजवार भूप पीछें तास,
 आत्मज ओ भ्रात उपबेसन सुढारको ॥
 जाके पिठि सुभट ओ सचिव बलील स्वक,
 औसैं करि आमकदधो धामजयधारको ॥ ९ ॥
 राखिकैं कितेकबेर संसद बहुरि लार्ड,
 सिरोपाव१ दत्तभौ सु माला मुकतानकी ॥
 अतरमगाइ लगाइ जु उत्तरोत्तरहू,
 उठिकैं दियउ सिक्ख सर्व निज थानकी ॥
 अस्वरथ आरुहि स्वकीय क्रमैं भूप थान,
 आरुहि तुरंगगति शिविर चुदानकी ॥
 रहत दिनेस सेसनाड़ी कृत४ अप्प२०३।४पहु,
 उज्झिय पर्यस्तिका विसेस करि तानकी ॥ १० ॥
 दरस३० दिनेस सौम्य बासर बहुरि लार्ड,
 मध्यदिन शिविर पहुके आसु गाइकैं ॥
 अंसुकसदन द्वारउज्झत तुरंग रथ,
 सम्मुह क्रमि रु ताहि मोद दरसाइकैं ॥
 भविक भनाइ भनि संसद सल्लाह जाइ,
 बैठिकैं सुविष्टर उदंत कछु पाइकैं ॥
 सिरोपाव१ स्तंबेरम२ सप्त६ सब लंचा लौ रु,
 दै लै सिक्ख लार्ड गयो सम्मद जमाइकैं ॥ ११ ॥
 द्वादसी८२ रहत नाड़ी नयन२ दिनेस सित,
 आगरा किलहर बरून मेल आयोहै ॥
 जीवन सु अंत लाल आदिक समाजी लोक,
 सहित प्रजेस२०२।३ ताहि विष्टर बिठायोहै ॥

समय उदंत आखि रक्खिकैं कितेंकैं बैर,
 संक्रम चुदान साहबकों दरसायोहै ॥
 जामिनी जुगल२ जात नारीजन नाथ अप्प,
 आरुहि क्रमन काज बलन बढायोहै ॥ १२ ॥
 सिविर बरोदै सावरोध गाम बेसैं आइ,
 वासर सु तेरासि१३ फतैपुर बितायोहै ॥
 चतुर्दसी१४ चंद्रवार४ नभेरैं मुकाम करि,
 शिविर बपानैं राका दिवस१५ सुहायोहै ॥
 पड़िया१ - अर्जुन२ अधीस२०३१४ इम मधु१ श्राम,
 गाम - सूरैट धाम स्वजन - नायोहै ॥
 मंदवार७ दूजी२तिथि दइन अधीस इम,
 रहत हिंडोनी बल थूल तनवायोहै ॥ १३ ॥
 करोली मदनपाल भूपके प्रसस्त जन,
 सुभट अमात्य आये पहु पधरानकों ॥
 अभिधा ओंकार१ ओ मलूकपाल२बोलसिंह,
 मंत्री बलदेव ४ ए बलदेव सभा थानकों ॥
 मुजर ओ नजर निवेदि लैं मिसल कछो,
 भावुक बनायो भूप जादवके भानकों ॥
 बहुरि कहिय एह अनुकंपा करि --,
 ओमिति करांगे तूर्ण सबलक आनकों ॥ १४ ॥
 अंगीकार तास अरज करि तृतीया३ दिन,
 शिविर वरोदाको कृपाल करवायोहै ॥
 दिवस चतुर्थी४ क्रमै अस्व जु सवार इतैं,
 भूप मदनेस उतैं अभिमुख आयोहै ॥
 कोस इक्क१ तटिनी करोलीतैं उतरि नीर,

आइ अरवाक ठाढो रहि रु जितायोहैं ॥
 बाबा ता कुमार नाम अर्जुन रु गोवर्द्धन,
 जगन्नाथ मुस एस भावुक बनायोहैं ॥ १५ ॥
 महाराजकुमार पधारे पुनि भीमसिंह २०४१२,
 अस्ववार अप्प २०३१४ मिले मदन प्रजापतैं ॥
 दुहुँओर मुजरा स्वसीस सय भव्य कारि,
 चंक्रम चुहान करयो सव्यक जु आपतैं ॥
 उतरि नदीज जल उभय २ बिछात आइ,
 गद्दीकोपवेसन ससव्य सुद मापतैं ॥
 आप अपसव्य प्रभु रहिकैं विराज तहाँ,
 पट्टप कुमार २०४१२ बैठे पच्छिम मिलापतैं ॥ १६ ॥
 सुभट स्वकीय बलवंत राष्ट्रकूट पुनि,
 जीवनादिलाल द्विक सम्मुह बिठायोहैं ॥
 बालू २ दिवान ओ ओंकारपाल २ अनपसव्य,
 सव्य रहिकैं कितबिर मनन मिलायोहैं ॥
 अस्ववार होइ दुव २ भूपन क्रमनक्रम,
 सुभट समाज ओर पुब्बक्रम पायोहैं ॥
 नगर करोलीके समीप भो शिविर तहाँ,
 प्रभुके प्रवेसतैं जु वदन उम्हायोहैं ॥ १७ ॥
 सेस दिव तत्व ५ नाड़ी रहत करोली भूप १,
 बिप्र बलदेव द्वार नायक पठायोहैं ॥
 पक्क एक अन्न चत्वारिंश ४१हूके भाड पुनि,
 पंचशत ५०० नाणाक सनेह दरसायोहैं ॥
 नजर निवेदि भव्य भाखिकैं जुहार जिम,
 पाइकैं परागत प्रवृत्तपन पायोहैं ॥

तीन३ अरग त्रिशत३०० टकेनभर सेर इक्क१,
 पक्क अन्न सेना सधन प्रति दिवायोहै ॥ १८ ॥
 पंचमी५ दिनेस सेस रहतहि नाडी च्यारि४,
 महल पधारे अप्प मदन भुवालके ॥
 महाराजकुमार सु नाम भीमसिंह२०४१ बलि,
 अर्जुनादि भ्रात तीन३ बाबा ता नृपालके ॥
 प्रासादन द्वार जात सेन सह हड्डिंद,
 सत्तदस१७ फैर सु कराये अयनालके ॥
 अंदर जु चोक लग जातहि मदनपाल,
 अभिमुख आयो अधसीढिन सुजालके ॥ १९ ॥
 करिकै करन सीस दुरदिसही भद्र भाखि,
 सव्य सातमी - पहु धारे संसदाममें ॥
 स्वीय सुभटालि सर्व वामहि बिठाइ राम२०३४,
 आप अपसव्य राखि बैठो तखताममें ॥
 पट्टपकुमार भीम२०४१ ओर शिवदान भ्रात,
 अप्प२०३४ दिस बैठे बीच गहिका अबाममें ॥
 सुभट स्वकीप अन्य संहति सचिव सर्व,
 औतैं आम वाम रची सभा सुख धाममें ॥ २० ॥
 करिकै कितोक काल नरप अतीत तहाँ,
 हड्डिंद२०३४ सिक्खलै पधारे निज थानकों ॥
 मंजु क्रम तुरग आरोहन अधिप उहाँ,
 पुव्वक्रम जादवेन्द्र आयो गहुवानकों ॥
 आरुहि तुरंग द्वार प्रासादन बाहिरात,
 सप्तोत्तर दसक१७ कराये फैर जानकों ॥
 जावन गुनक३ घटी बहुरि नरेन्द्र राम२०३४,

नेह कारि प्रबल प्रवैसै सिविरानकों ॥ २१ ॥
 सप्तमी० दिनैस पंच५ रहतहि नाडी सेस,
 करोली मदन भूप स्वीय शिविरायोहै ॥
 अंदरके द्वार लग वीरन सहित आत,
 हड्डन अधीस तास सम्मुह सिधायोहै ॥
 सोलह सहित इक्क१७ नालिन कराइ फैर,
 अप्प दच्छि नासा तरुत उपरि बिठायोहै ॥ २२ ॥
 अनेह अतीत घस्र करिकैं सिधायो सिक्ख,
 पुब्ब लग द्वार अप्प आयो पहुंचानकों ॥
 बाहिर शिविर द्वार आइ नरयान चढि,
 जादिवन नेता गयो जेता निज थानकों ॥
 अठ नव१७ फैर स्वीय तोपन कराइ पुनि,
 आगत अधीस२०३।४ सभा बिहित बिधानकों ॥
 आदमीय सेना काज महीप जु सब अन्न,
 पिष्ट आदिक समस्त वस्तु — दानकों ॥ २३ ॥
 अैसे राखि दशमी१० निसालग मदनपाल,
 सिक्खदै न एकादशी११ थूल स्वक आयोहै ॥
 तजिकैं तुरंग द्वार अंदर प्रवेश पात,
 सम्मुह तहाँही अप्प आवन रचायोहै ॥
 संसद पधारि सव्य रहिकैं बहुरि आप,
 भद्रासन ताहि अपसव्य बिठवायोहै ॥
 एम क्रम तास आस सुभट समाज स्वीय,
 पाइकैं प्रवृत्ति पहु प्रीतिपन पायोहै ॥ २४ ॥
 मदन महीप गेह सिक्खदै स्वकीय गयो,
 कुच्च सर५ जात नारी रति करवायोहै ॥

गाम कुर१ आइ थूल राखिकैं द्वितीय२ दिन,
काम तिथि१२ धाम खुसहालगढ२ पायोहै ॥
अमावसि३० अनेह संक्रमन चुहान करि,
वाटैदै३ बलाप चक्र पत्तन करायोहै ॥
पड़िवा१ बलछ काव्य बासर बहुरि राम२०३४,
ग्राम कमलारनै४ सु शिविर सुहायोहै ॥ २५ ॥
॥ दोहा ॥

बलानाथ अथ पुढव सम, करि इम कुच्च मुकाम ॥
नवमी६ पुष्प तड़ाग निस, समुचित कियउ स्वधाम ॥ २६ ॥
लीलीनामक दूरवा, चउदसि १४ दिन चहुवान ॥
सिंहअंत सिरदारके, उपवन किय थुल आन ॥ २७ ॥
राध२ श्राम सित१ दोजि२ दिन, बल्लिज उदीचि विसाइ ॥
मग्नराज छतकमहल, हुव दाखिल हरखाइ ॥ २८ ॥
इतिश्रीवंशभास्करे अष्टादशोमयूखः ॥ २८ ॥

॥ दोहा ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥
सिविर लार्ड आगम सुनत, जीवनलाल जनेस ॥
सोदर अमृतलाल सह, अभिमुख भेजिय एस ॥ १ ॥
सम्मुहजाइ रु लार्ड सन, मिलि करि इन मनुहारि ॥
सिविर द्वार लग तस समुह, प्रभु पुनि अप्प पधारि ॥ २ ॥
(पद्धतिका)

कर सीत परस्पर करि मिलाइ, अधिराज सभा सह लार्ड ॥
विष्टर सु लार्ड राजत बिटाइ, उपवेशन बाम सु अप्प पाइ ॥ ३ ॥
प्रभु देठ बैठि पट्टप कुमार, अर्जुन लि३ बंधु बैठे उदार ॥
तदनंतर बैठिय सुभट सत्थ, पुनि सम्मुह जीवनलाल पत्थ ॥

लघु तास सहोदर अमतलाल, मंत्र रु रहस्य याविनि कमाल ॥
 तातर वकील तस जानि नात, पहु आस अप्प दिस सर्व पाता ॥५॥
 अरु काल उचित संलापि उदंत, करटी१ तुरंगर लंचा करंत ॥
 सिरुपाव पंच५ तखती समान, बहु प्रीति निवेदिय चाहवान ॥६॥
 पहु बहुरि समप्पि रु अतर पान, पहुँचान कियउ जिम पुब्ब आन
 चठितुरग यान साहब चचार, अवनीसन इतरन थुल उदार ॥७॥

॥

॥ ८ ॥

॥

॥ ९ ॥

लौ सिकख प्रभू इम करि मिलाप, अतिप्रीति करोलीपुर अवाप ॥
 दसदिवस रहि रु चल्लिय दिवान, मविसे बुन्दीपुर हड्डभान ॥१०॥
 नभ नयन नंद महि१९२०साक मान, कन्या सु भद्रकुमरी सुजाने
 जिहिँ कहत भुजिष्या जठरजात, अरु ब्रध्नकुमारि भौजिष्याआत११
 जानसाह दुर्गापुरप जात, करग्रहन दुहुँ२न इक१ दिन करात ॥
 सहमास ९ द्वादसी १२ सोमवार २, इहिँ लग्न दु २ बर आइय
 उदार ॥ १२ ॥

जनी बहोरि इक१ पहर जात, दुल्लह दुवर तोरन उपरि आत ॥
 करि कसाघात अंदर अवाप, तहँ बेदरीति तनया ददाप ॥ १३ ॥
 खतेस जोधपुर ईस पुत्त, सिरदारसिंह सुभ गुनन जुत्त ॥
 देय ब्रध्नकुमारि ताकोँ उदार, किय भोम२०३दान कन्या कुमार१४
 रसोर लाल सुत पुनि प्रताप, कन्या सु भद्रकुमरी ददाप ॥
 न्मथ तिथी१३ सु गोरन जिमाइ, पुनि रक्खिय कति दिन प्रीति
 पाइ ॥ १५ ॥

पयज सम दुवर हित पुनि समप्पि, सोदर जामाता सीख अप्पि ॥

रामसिंहकाफिरकाशीयात्राकोजाना] अष्टमराशि-एकोनविंशमयूख (४३५६)

करि कुंच जन्य सह मुद अमाप, दुल्लह स्वसद्य मरुधर अवाप ॥१६॥
 अर्जुन१ गोवर्द्धन२ जगन्नाथ३, व्याहे सु जोधपुर इक्क साथ ॥
 तपमास असित पष्टोदरसेस, सद्विष सु लग्न इन विधि असेस १७
 अधिराज सुनहु पुनि हुव उदंत, फग्गुन सित नवमी९ बुध मिलंत
 मतिमान भीम२०३ पट्टप कुमार, महती कुमरानी गद ममार ॥१८॥
 मधु१ मास चउदसि१४ पुनि वदात, विग्रह स्वरूपलतिका विहात
 ससि नयन नंदभू१९२१लगत साल, आगत अजंतसाहव उताल १९
 सो पीलपाट इहि नाम रूपात, प्रभु तास रीति मेळन करात ॥
 करि अतर दान सतकार किन्न, पटगृहपधारि तस सीख दिन्न २०
 दुव नयन नंद ससि१९२२अब्द आत, सहमास९चतुर्थी४दिवसपात
 कासीहु करन जात्रा जनेस, पटगेह प्रीति सहकिय प्रवेस ॥२१॥
 लिय सत्य भीम२०४पट्टप कुमार, भौजिष्य जगन्नाथहि उदार ॥
 पटरागिनि लिय पुनिप्रीतिहारि, पुनि बुरजसिकारहिंरहि पधारि २२
 तैपाऽसित तेरसि१३दिन दिवान, प्रभु अप्प२०३सबाहिनि करिप्रयान
 दुबलान दंग दिय पहु मुकाम, दूजा२सु नयनपुर दिय विस्राम २३
 विश्राम समीधी तिम तृतीय३, किय पुनि मुकाम चोरु तुराय ॥
 इमकरत मुकामन अधिपआप२०२, प्रतिमुद प्रयागनगरी अवाप २४
 अनलांवकअतिधृति१९२३लगत साल, मनु१मास असित २५ राशि
 थि१३ नृपाल ॥

वलि इहु भानु आंगिरसपवार, उडोसपुरी बेसिय उदार ॥२५॥
 निर्वाहि वेदविधि कियउ न्हान, दिय इक पंचाशत५१ पुहविदान
 नागोध राघवेन्द्रहि समत्थ, किय भीम२०४कुमर सम्बंध तत्थ २६
 अरु जगन्नाथ भौजिष्य एम, पुनि वीरसिंह कापरानि तेम ॥
 करि तिलक बहुरि दै नालिकेर, सित सुक्र दसमि१०दें लग्न फेर २७
 नागोध गमन किय राघविंद, चंक्रमन कियउ पुनि इहुइंद ॥

नागौध नवमि९ पगगृह पधारि, भेजिय उन मेवन हित बढारि॥२८॥
 सित सुक्र दसमि पुनि सुक्रवार, सादिय सु लग्न पट्टप कुमार ॥
 बलि वीरसिंह तस२०४व्याहि साथ, करग्रहन भिन्न किय जगन्नाथ
 इनमाँहि राघवेन्द्राभिधान, कन्या स्वकीय दुव२ भीम२०४ दान ॥
 सो सुरजभानु कुमरी गरीय, दिय तेजभानुकुमरी द्वितीय३ ॥३०॥
 सुचि४असित२त्रयोदाशि१३आरवार३,—तकुन ग्रामठकुरउदार २०३
 हरवंशराय तनया सु आहि, सुभ नाथकुमारि प्रभु अप्प व्याहि३१
 सुचि४सुकल१पंचमी५सुक्रवार६, करि कुंच सिंहपुर रहि उदार२०३
 इम चलत मुकामनकरत आप, हिंडोन हड्ड अधिपति२०३अवाप३२
 महिपाल करोली मदनपाल, उत्तम जन भेजिय तहँ उताल ॥
 सो जानि सभा करि लिय बुलाइ, आहूत मलुकपालादि आइ॥३३॥
 गौरव प्रभु मुजरा करत दिन्न, करि नजर निछावरि अरज किन्न
 जयमदनमोहन—जन स्वकीय, कहि करहु सदन सुभ अस्मदीय३४
 कर उत्तमांग करि अधिप आप, हठ क्रमन अक्खि सीख सु वदाप॥
 ओष्टा६५जुन नवमी९करि प्रयान, विश्राम वरोदहि दिय दिवान॥३५॥
 चिंक्रमन करि रु दशमी१०चुदान, इक१ —— करोलीतें दिवान ॥
 आहिफेन बेल रहि लिय नृपाल, प्रभु सम्मुह आगत मदनपाल३६
 मिलि करि रु परस्पर हत्थ मत्थ, उत्तरन बहुरि हुव दुव२हितत्थ ॥
 मिलि दुव२हि बच्छतैं उर मिलाइ, उपवेसन किय घटि अद्धपाइ३७
 अधिराज प्रीति सह पुनिअभिन्न, नालकिं उपवेसन इक्क१किन्न ॥
 अरु मिलि दु२सेन मुदजुत अमाप, वसनोक करोली दुव२अमाप३८
 तहँ घटी इक्क१ रहि पुनि उताल, पुरप्रति किय जावन मदनपाल ॥
 रहि दिवस तिथी१५ तहँ हड्ड राम२०३, कुरगाम नाम बलि किय
 मुकाम ॥ ३९ ॥
 इम करत कुच्च प्रभु पुनि मुकाम, जनपति बुन्दीपुर आजगाम ॥

कोटेस राम २१२ इहिं १९२३ साक माहिं, अरु राधर चउदसि १४
सुकल आहिं ॥ ४० ॥

माहिपाल सोहु कछु गद ममार, तस पट्ट पंचसिख सुदत धार ॥
सो सत्रुसल्य २१३ इहिं नामरूपात, सुभ दिन भद्रासन तिलकपात ४
साहब सुदत ईडन सनाम, कोटेस २१३ हिं टीका देन काम ॥
आगतइह जावत तहँ उताल, क्रियक्रमन तास अभिमुख कृपाल ४
सल्लाप भव्य सय करि रु सीस, आगमन ससाहब किय ॥
पुनि सिंहचतुष्पथ प्रीति पाइ, दै सिक्ख तास प्रासाद जाइ ॥ ४३ ॥

आरामरत्नसाहब अवाप, अंसुकगृहसाहब जाइ आप २०३ ॥
उपवेशन खुरासिन कियउजास, समयाल्प रहि रु दै सिक्खतास ४
अधिराज कियउ प्रासाद आन, साहब किय कोटा दंग जान ॥
माघा १२५ जुन एकादसि ११ मिलंत, मथुराहुवभ्राता भोम २०३ अंत
इति श्रीवंशभास्करे एकोनविंशो मयूखः ॥ १९ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

सक विक्रम जिन नंद ससि १९२४, अमा ३० रु चैत्र अनेह
भोमसिंह २०३ भ्रातृज भुवप २०३, आइ विश्वेश्वर २०४ एह ॥ १
काढि दिवस आराम कति, प्रभुके लगिय पाय ॥
तवहि स्वकर सिर फेरि तस, लिन्नो क्रीड़ लगाइ ॥ २ ॥

॥ मनोहरम् ॥

विश्वेश्वर २०४ १ सिद्धकों विसासि रु अधिप आप २०३,
प्रत्यह कराये वेद ४ नागाक असनकों ॥

राखी कछु भिन्न पुंन रीति सु महर करि,
पुंन जो हवेली सोहु तास २०४ दै रहनकों ॥
व्याकरण आदि शास्त्र अध्यापक मेलिह बलि,

दिनप्रति दूनी करि बुद्धिहु मननकों ॥
 बहुरि नागोध दंग करिकै विवाह ताकों,
 नयो ग्राम नाम राम२०३ बाम दै बसनकों ॥ ३ ॥
 मास नभ५ धवल१ चउदसि१४ रु आर३ वार,
 दुर्गापुरी इस संभूसिंह२० अवसानभो ॥
 आत्मजहू ताको ओंकारसिंह२० पट्टपति व्है,
 गोरवादि काज प्रभु राम२०३तहँ जानभो ॥
 बिहित बिधान पुन्व होजो प्रभु ताको तास,
 सो सब ओंकार२० सिंहको ब प्रभुदानभो ॥
 सस्त्र१ अरु सास्त्र२ तास२० अध्ययन सासन दै,
 बुन्दीपुर राम२०३ को प्रवेशन बिधानभो ॥ ४ ॥
 प्रौष्टादसित नवमी९ दिवाकर उदय होत,
 लध्वी प्रातिहारी जनी धीदा प्रसवकाल ॥
 अंकक२ दिवस सोहुरहिकै प्रतासु भई,
 सौवस्तिक ताको कर्म कारक भो नृपाल ॥
 अष्टमी८ नभश्य६ सित बहुरि सु व्यवहार,
 नाम रसरंग जो भुजिष्या कियउ काल ॥
 साहब जु रूसइस७ बुन्दिष अजंट आत,
 रामप्रभु ताको संमेलन कियउ ताल ॥ ५ ॥
 भूत दुव अंक ससि१९२५सुचि४ सुचि मास केर,
 एकादशी११ आर३ बेद४ नाडी दिवस आत ॥
 मिश्रन कवींद्र रविमल्ल बहु आमयतैं,
 बुन्दीदंग माहिँ प्रभु निर्जरनैर पात ॥
 सो सुनि अनंत शोक करिकै नरेंद्र आप,
 स्नानकरि अनल अंजली दियउ तात ॥

तास पुत्र अगुन मुरारिदान नामककों,
 अभ्युत्थान आदि दै विसासि हित दिखात ॥ ६ ॥
 भाद्रदसित पष्ठी६ सदानंद जो भुजिष्या भूप२०३,
 जगन्नाथ जननी पंचत्वपन पातभो ॥
 सहासित२ पक्ख दोजि२ उपरि तृतीया३ आत,
 सोमवार२रति सत्त७ नाडीकों विहातभो ॥
 पट्टप कुमार भीमसिंह२०४।१हूके स्वर्ग जात,
 हाहारव बुन्दी घरघरहि दिखातभो ॥
 ताको दाहकर्महु पुरोधतैं करायपुनि,
 —कति अधिक कुमारन करातभो॥ ७ ॥
 संवत तर्क दुव अतिधृति१९२६ समप होत,
 स्वर्ग नभ५ भूप गो करोली मदनपाल ॥
 नवमी९ नभस्प६ सित१ बहुरि अमात्य आप२०३,
 बहुरा गतासु भयो जीवन अंतलाल ॥
 सो सुनि नरेन्द्र आप२०३चंदनकों खंड इक१,
 दैकैं प्रेतवनकों पठायो चर उताल ॥
 सासनानुसारि प्रभु२०।३ सोहू तहँ जाइ पुनि,
 उज्झिप सकल सो कापालिक क्रिपाकाल ॥८॥
 प्रातिपदि१ आरवार३ आश्विन७ असित२ आत,
 लघ्वी प्रतिहारी प्रात होत जन्यो श्रीकुमार ॥
 ताको जातकर्म वेदविधितैं सधाइ पुनि,
 आव्हय ताको रघुवीरसिंह२०४।३ भो उदार२०३ ॥
 सार आढय रंकनकों कारिक बहोरि आप२०३,
 जाचकन अत्यहू दिवायो बसु अपार ॥
 भूसुर गणप अभिरूपजनहूकों बलि,

स्वापतेय१ बसन२ निवाजे तैं धर्मधार ॥ ९ ॥

मार्गशीर्ष९ मासहु द्वितीया२ सित पक्ख होत,

साहब वृहत अजंट सह बुंदी आइ ॥

वृहत किटिंग इहि नामक के सम्मुहकों,

गाम जोधसागरके संनिधि प्रभू जाइ ॥

तुरग बिहाइ रु विछातके उपरि आत,

सीसकरि पानि परस्पर हित दिखाइ ॥

आरुहि सु अब्ब किय क्रमन वरव्वरतैं,

आइ पू बुंदी सिंहचत्वर बहुरि पाइ ॥ १० ॥

साहब सिबिर गयो मानिकसुचोकमाहिं,

राजराज राम२०३अप्प प्रासादन पातभो ॥

बहुरि तृतीया३ सोमवासर२ किटिंग आत,

गोपुर बलवंत रठऊर भिजातभो ॥

इत्थीपोल उत्तरि सु अंदर प्रवेस कियो,

अपाश्रय महल छत्र सन्निधि जातभो ॥

जाइ तहँ सम्मुह मिलाइ कर सीस करि,

मेवर अजंट सह संसदहि आतभो ॥ ११ ॥

बेला अल्प राखि दुव२ अतर रु पान करि,

सिक्ख दै प्रथम रीति किय पहुंचानकों ॥

अंसुकसदन तास बहुरि पधारि आप२०३,

सम्मुह किटिंग पद पंच५ किय आनकों ॥

अवसर अल्प राखि करिकैं समय वृत्त,

अतर किटिंग पुनि दियउ दिवानकों ॥

दैकैं सिक्ख ताहि श्रवणीयस बचन भाखि,

राजराज राम२०३ निज धाम किय आनकों ॥ १२ ॥

सत दुव अंक ससि१ बाहुल८ अमावसि३०कों,
गोन अजमेर किय लार्हदि मिलनकों ॥

करत मुकाम कुच्च द्रुत अजमेर जाइ,
लार्ह मिलि गोन किय पुष्कर सबनकों ॥

न्दाइ तहाँ जाइ वेदधिधैतैं सधाइ पुनि,
भोजन जिमावहु भूसुरजननकों ॥

पंचसत५०० नाणक अनेकप दिवाये दान,
आपे पुर भुंदी अप्प बंटी बहु धनकों ॥ १३ ॥

अहि दुव अंक इक१९२८ विक्रम नरेन्द्र सक,
अधवल तपस्य१२ द्वादसी१०हू सौम्यवार२ ॥

सत्त७ पल्ल अमल निशीथके उपरि आत,
रानी प्रातिहारी जन्पो लघ्वी लघु कुमार ॥

जात१ नाम२ कर्म वेदविधितैं सधाइ तास,
रंगगजसिंह२०४१४ नाम मंजुल भो उदार ॥

चारन१ रु भट्ट२ आदि दैन सब जाचककों,
राज राज राम२०३ दशो वसु कति हजार ॥ १४ ॥

नंद दुव अंक भू १९२९ समा रु सुचि६ मास माहि,
वीकानेर भूप सरदारसिंह कालभो ॥

ताके धंधुगनमें डुंगरसिंह नाम हुतो,
सोहू पट्ट पंचसिख पाइकैं भुवालभो ॥

पुशियाम१५ दिवसतप ११ जोधपुर भूपतिहू,
स्वर्ग तखतेस जात रानिन विहालभो ॥

पट्टप कुमार जसवंतसिंह पूरवहू,
राजकरि कज्ज पिता अंतर नृपाल भो ॥ १५ ॥

नभ गुन अंक इक१९३० बाहुल८असुचि पक्ख,

सप्तमि७ सु बहुरि दिवाकर१ वारपात ॥
 साहब वृहत पेली१ बर्कली अजंटी दुदर,
 आवत नयर बुंदी द्रुतही सु प्रभात ॥
 सम्मुह गमन आदि मेलन सु पुव्व जिम,
 करि तस गेहपट जाइ हित दिखात ॥
 महलन प्रवेस किय दैकै सु सिक्ख तास,
 साहब वृहत अजंठ सह कोटै जात ॥ १६ ॥
 बाहुल८ धवल१ तिथी हरि१२ हरिवार होत,
 पट्टनिपुरीकों प्रभुराम२०३ किय पयान ॥
 ग्राम रहि ठिकरे बहोरि तिथि मार१३ सौम्य४,
 पट्टनि सिविरको प्रवेसितभो दिवान२०३४ ॥
 राका उपराग बलि केसव दरश करि,
 बिहित बिधान करि वेद सु न्हान दान ॥
 सार्द्धमासइक१॥ तहँ रहिकै बहुरि आप२०३४,
 राजराज राम२०३४ नैर बुंदी कियउ आन ॥ १७ ॥
 इक गुन अंक भू १९३१ समान सक विक्रमके,
 फगुन चतुर्थी४ श्वेत जीव५दिन पायोहै ॥
 महाराज आदिक कुमार रघुराजसिंह२०४५१३,
 रजनी पहर१ गये उद्वव दिखायोहै ॥
 लखन लुटाइ द्रव्य भूसुर रु रंकनकों,
 जातक-वैदिक विधान बनवायोहै ॥
 राम२०३४ नरनाह सब देसनके जचनकों,
 इच्छामित स्वापतेय अमित दिखायोहै ॥ १८ ॥
 रस गुन अंक ससि १९३६ संवत बहुरि होत,
 अष्टमी८ अनेहाऽसित सुक्र३ अपनायोहै ॥

इक१ पल छप्पन५६।१ घटीके इष्ट लच्छी अंस,
लक्ष्मणा२०४।६ कुमारिहूको जनन जनायोहै ॥
नव गुन अंक इक १९३९ हायन नवीन होत,
सावन प्रथम मास विसद सुहायोहै ॥

चढत दिवाप तीन३ घटिकाहू पंच५ पल,
रघुवरसिंह२०४।७ जन्म चउहसि१४ पायोहै ॥ १९ ॥

उक्त सक १९३९ हीमें जसवंत भूप जोधपुर,
पुत्री तखतेसकी स्वभगिनी बनाईहै ॥

असित तृतीया३ माघ११ काव्य११ दिन लग्नकाल,
कुमारी सौभाग्य रघुवीर२०४।३।१सिंह पाईहै ॥

रंगराजसिंह२०४।४।२ जघु सोदर बहुरि व्याही,
सूरज कुमरि चोथि४ जोरावर जाईहै ॥

उक्त तिथि४हूमैं सिंहमुहुवत पुत्री बल,
दिव्य देवकुमरी रघुराज२०४।५।३ हित दाईहै ॥ २० ॥

वावाता कुमार तखतेसको जवानसिंह,
पुलिका समर्थ नाम कुमरी कहाईहै ॥

माघा५११सित२ चोथि४ मंद७ वासरहू लग्नकाल,
जगन्नाथ पुत्र हरिनाथहित दाईहै ॥

करि उपयाम तत्थ रहिकैं कितेक दिन,
दुहुँ२दिस प्रीति रीति परम दिखाईहै ॥

महारावराजा श्री दिवान रामसिंह२०३।४ बलि,
आइकैं प्रवेसि छुडी नगर बधाईहै ॥ २१ ॥

गोपुर चोगान बनायो सत्रुसाल१९५ तास,
गोपुर१ बनायो बाह्य सन्निधि अप्प राम२०३।४ ॥

तोरन प्रसाद जोब बज्जत हजारि द्वार,
ताके सन्निकर्ष त्रिशद्वारिका२ बनाई बाम ॥

तास अगग अंदर बनायो इक द्वार गेह३,
 अंतिक बनाई तास त्रिद्वारि४ बंब काम ॥
 मोतीकूप निकट बनाईहू तिवारी५ पुनि,
 तामै विष्णुस्वामीकाति रहत अठ्ठ जाम ॥ २२ ॥
 न्याय६ सुल्क७ नामक कचहरी द्वै२ बनाई पुनि,
 मंदुरा८ सुखम बनाई भीमकुंड पास ॥
 मंदुरा९ द्वितीय२ कौन नैर्ऋत बनाइ प्रभु,
 अज्जहू वजत सोनपाइगाँ९ नाम तास ॥
 छत्रमहल माँहि जलजंत्र१० अरु होद११ इक,
 त्रिद्वारी१२ भई पुष्पगो रखन वितर्दी जास ॥
 दूदा१२११के महलहूतैं द्वार लग बाह्य दुर्ग,
 खुरा१३ किय तातैं लर्प जावत अनायास ॥ २३ ॥

दोहा-तोरन१४ अरु त्रिद्वारिका१५, मंगल द्वार समीप ॥

जीवरखा दूजेहु इक, महल१६ जु कियो महीप२०३।४॥२॥
 वज्जत चामुंडा बलज, तास बाह्य त्रिद्वारि१७ ॥
 प्रभु भंडारन सहित पुनि, कमन राम२०३।४ प्रभु कारि२
 बायुकौन उडुदुर्गतैं, स्वापतेय सरसाइ ॥
 देवी चामुंडा सदन१८, बलानाथ२०३।४ बनवाइ ॥ २६ ॥
 कौतुक मृगया कज्ज बलि, तुंग१९ रचिय अति बाम ॥
 बहुरि पुष्पसागर बली, रचिय मल्ल२० अभिराम ॥ २७ ॥
 कुंड२१ इकक१ ताके निकट, मध्य जु छत्री पाइ ॥
 सागर पुष्पतड़ाग तट, केतक बाटि कराइ ॥ २८ ॥
 बालागढ किल्लादि बलि, इतर जु थान उदार ॥
 जँहँ जँहँ अंशित भो तहां, किय जीरन उदार ॥ २९ ॥

तेश्री वंशभास्करे

विंशोमयूखः ॥२०॥

इतिश्रीवंशभास्करनामको ग्रन्थः समाप्तः ॥

बुधसिंह चरित्रका शुद्धिपत्र

पंक्ति अशुद्ध	शुद्ध
२३ सब ही का उत्कंठा	सब ही की उत्कंठा
४ ज्यों का त्यों	ज्यों की त्यों
२० चितां चिता	चितां चिता
१८ ताके वंशमें	ताके वंशमें
२० बुधसिंह को	बुधसिंह के
२० ताको तनया	ताकी तनया
१० अप्पनों अत्थ	अप्पनों सत्थ
२१ सोही कंठीरव	सोही कंठीरव
४ मेर खट ६	फेर खट ६
२४ अगगर आगरा	अगगरा आगरा
२५ अम अमावास्या	अमा अमावास्या
११ धकिठट्टो	धकिठट्टो
१२ अवसानपो रतपो	अवसानपो रंतपो
२७ मिलकर	मिलकर
१७ आलमके च्यारि ४	आलमके ए च्यारि ४
६ एकधारि	धकधारि
६ घटी दुव	घटी दुव
५ पक्खर तीन	पक्खर जौन
३ छुग्घर नट्ट	छुग्घुर नट्ट
११ भेक कि भट्ट	भेक कि भट्ट
८ उमंगन	उमंगत
१५ नगरों	नगरों
१ रनपह	रनराह
२२ तुमजंची	तुंगजंची
२२ हजार	हजारों
२ बढिपीबिन	बढि बीबिन
६ बढि घूम	बढि घूम
राजिहि रंग	ए जिहि रंग
२१ मणिकप	माणिक्य
११ प्रछन्न गय	प्रछन्नगय
११ दीदारव-	दीदारव-
	मथ्यो अनीक

२९७८	२५	कधबंधतै	कंधबंधतै
२९७९	२६	अंगाली	शंगाली
२९८०	३	अग्निअकी	अग्निअकी
२९८१	७	सेरघटा	सेनघटा
"	२७	मडलाकार	मंडलाकार
२९८२	१८	फिफ लोके	फिफ लोके
"	२६	धनी भीर	धनी भीर
२९८३	२४	पट्ट मतंगज	पट्ट मतंगज
२९८५	६	बाहक महत	बाहकबहत
"	"	बहत उछाहक	महत उछाहक
"	७	तिततेसजव	तित तित सजव
२९८६	३	तान मंडन	तान मंडत
"	१२	जालम जन्यो	जालम जम्यो
२९८८	५	कोच कटै	कोच कटै
"	११	तननकत	तननकत
२९८३	५	मंडलकोरि	मंडल फेरि
२९८५	१७	इहिंतर	इहि अंतर
२९८९	३	बलीतैरषी	बलीतैराषी
३०००	६	पाये केवल छत	पायो केवल छत
३०१०	२५	पिता को	पिता के
३०१२	२६	हर्ष के साथ भेजो	हर्ष के साथ भोगो
३०१३	२१	समान आनकर	समान मानकर
३०१५	२४	मेरा पुत्र	मेरा पुत्र
३०२४	१३	महाराणा सैन्य सहाय	महाराणा सैन्य सहाय
३०२५	५	प्रबुद्ध	प्रबुद्ध
"	९	बाहि मुद्धपन	चाहि मुद्धपन
३०२६	६	जैतसिंह	जैतसिंह
३०२८	१७	सादर सुच न	सोदर सुच न
३०३१	१२	सतपंच ५०० तामभीर	सतपंच ५०० तोपभरि
३०३३	२	दंगतारा	दंगतारा
१०४४	८	पातनचम्मलि	पोतनचम्मलि
"	२५	और आ आदि से	और आदि से
१०४६	२०	तह संघ	हत संघ

२९ काधसे
 ४ भाईहनें
 २ पच्छो अपिपय
 २६ चीतोड़के राव थे
 ७ सुपचीगीतः
 २३ घटा में
 २६ सेनाओं को
 ८ कटापतिप्रति
 १६ सुपकी किरणों को
 ५ निज भपति
 २४ भानजी की
 १७ भुज्जहि कल
 १६ वहां जओ
 ५ अप्पजा दिद्धा
 ११ स्वामिधर्म संगलै
 २६ देवयज्ञ कलहाता है
 ११ धारनमें धरयो
 २६ बुरे स्वभाववाला
 २० पुनारामपु लेखन
 १४ भ्रात जाहि
 २१ ज्योतिपियों में
 २३ चाहना मिटाते हैं
 ७ फाल मचै
 २१ योगिनियों का
 २२ घोड़ों का
 २८ खानेवालों का
 १६ कुपायकै
 २८ (खरणी)
 २६ तेरती है सो
 २० हड्डों के शस्त्र
 १५ शत्रुओं के ठोक कर
 २४ और वेश्या
 ११ वीर रु रउट्ट
 २२ घूमके नाच से

क्रोधसे
 भाईहनें
 पच्छो अपिपय
 चीतोड़के उमराव थे
 सुपचो गीतः
 घटा में
 सेनाओं को
 कटापति प्रति
 सूर्य की किरणों को
 निजभूपति
 भानजे की
 भुज्जहि किल
 वहां जाओ
 अप्पजा दिद्धी
 स्वामिधर्म सीसलै
 देवयज्ञ कहलाता है
 धारन में धरयो
 बुरे स्वभाववाली
 पुना रामपुरलेखन
 भ्रातृजहि
 ज्योतिष में
 चाहना मिटाती हैं
 फाल नचै
 योगिनियों के
 घोड़ों के
 खानेवालों के
 कुपायकै
 (खरणी)
 तिरती है सो
 हड्डों के शस्त्र
 शत्रुओं को ठोक कर
 और वेश्या
 वीर रु रउट्ट
 घूमर के नाच से

१८०	१९	भूपि बरकैं	भूपि फरकैं	१२७४	२१	सुरगे बाले	सुरगे बोले
१८३	२७	पुरकती है	फुरकती है	"	२६	७ शंख	७ शंख
१८५	२१	देवसिंह के	देवसिंह का	१२७५	१४	अंक सत्रह	अंक सत्र
१८८	२४	साहयता के	सहायता के	"	१७	धूम धोरनी	धूम धोर
१९४	१०	गहिमांहि	गहि बांहि	१२७७	२१	विनाविजला	किनाविज
१९७	९	जाबहु	जाबहु	१२७९	३	मुकल्या	मुकल्यो
"	१५	रत	बत	१२८१	२०	तखत खान	तखतरवा
२००	२६	खैंचती हुआ	खैंचता हुआ	"	२३	उतरा तब	उतरा तब
२०१	२२	संग्रामसिंहको	संग्रामसिंहका	"		तरुख खापर	तरुतरवा
"	"	दुर्जनशालका	दुर्जनशालको	१२८२	१	भलीफल	भलो फल
२०३	१०	नसे हौ	नसैहा	१२८३	१५	उदघोस	उदघोष
२१२	१४	भजहु	भेजहु	१२८८	२४	कुलावंतस	कुलावंत
२१३	२	बससैन	सब सैन				
२१४	५	राम संग्राम	राम संग्राम				
२१८	२१	अधमी	अधमी				
२२२	२५	बाघसिंह पुत्र था	बाघसिंह का पुत्र था				
"	२३	करनेवाला था	करनेवाला था				
२२५	२६	रहन तक का	रहने तक का				
२३५	१०	बधावनलाड	बधावनलाड				
२४४	१	कालिया देवि	कालिका देवि				
२४८	२९	मन साथ	मन के साथ				
२५०	१६	महाराणा जयसिंह	महाराजा जयसिंह				
२५१	२२	जीम अक्षर ऐसा होता है	जीम अक्षर बड़े पेटवाला होता				
२५१	२२	नरवर के राजा और कोटा के	नरवर के राजा गजसिंह सहि				
		महाराज गजसिंह सहित					
२५८	२१	कलीजखां का	कलीजखां का				
२५८	२२	खानदारा को	खानदोरां को				
२६४	३	पखर जरजीन	पखरे जरजीन				
"	२८	चपलते हैं	चमकते हैं				
२६८	७	लंबसिखी	लंबसिखा				
२७०	२१	नादरशाह को	किसीको				
२७३	१	न नाँक है	न नाँक है				
२७४	२१	कलही हमस	कलही तुम से				

उम्मेदसिंहचरित्र का शुद्धिपत्र

—*०*—

१८६१ २१	झाटी	झोटी
३२६४ ३	तब आयो	तबआयो
३२६५ १७	आभिपेक	आभिपेक
३३०१ १५	पच्छे फिरहु	पच्छे फिरहु
" २३	बचगतसिंह	बचखतसिंह
३३१० १४	दूजाघेर	दूजीघेर
" १६	खगनको	खगनकौ
३३१६ २२	नेतादेकर	न्योतादेकर
३३२० १७	हमहुव	हमहुव
३३२३ २३	जनानमें	जनान में
" २६	१५दोकड़े	१५दोकड़ें
३३२७ २१	सेदाका	सेनाकी
३३२६ ६	पन्नगकी ७कनमाल	७पन्नगकी कनमाल
" २०	शेपनागका	शेपनागकी
" २२	चलक कर	लचकर
३३३१ २०	दोनोंआर	दोनों ओर
३३३२ २२	उसके अग्निसे	उस अग्नि से
३३३६ १६	अराहि	अरोहि
३३३७ २२	जुद्ध जीतनेवाले	जुद्ध जीतनेवाले
३३४७ १०	सुलभ लाट	सुभ ललाट
" २२	(लकखा)	(लकखी)
" २४	रंगवाल	रंगवाले
३३४६ १६	चाहये	चाहिये
" २५	दोनों कानों के	दोनों कानों के
३३५१ १८	भलगमें	भलग में
" १६	सच्चेआर	सच्चेऔर
३३५४ १७	शत्रुशाल	दुर्जनशाल
३३५८ १७	अथवा राज	अथवा राज
३३६२ २५	जघा कहते हैं	जंघा कहते हैं.
३३६५ ७	अथ धन	अथै धन
३३७६ २२	दक्षिण में	दक्षिण में
३३८४ १०	चुकि	चुकि
" २४	भूमिका	भूमिको

३३८४ २६ पड़ना जानकर
 ३३८५ १ लैनकिये
 " २७ तिरान
 ३३८७ २४ ७पुत्रीकी
 ३३८४ २ आपरू
 ३३८७ १३ चुरल
 ३३८९ १९ उधर दादुर
 ३४०० २४ और उधर १०
 ३४०२ ५ जग्गे अद्रिन
 " २६ भूखेको निकालो
 ३४०५ ३ हेति बढाया
 " २३ हुरोंके
 ३४०६ २२ अप्सराओंकी छातीपर परतलेलगे

" २४ नाकेंफुलाये
 " २५ कानों में
 ३४०७ ६ सुराग
 ३४११ १६ निंदा सुनत
 " २५ तबसे नीचेकी
 ३४१३ २१ अमरसु
 ३४१४ २७ आदि से
 ३४१५ १६ आकाश में
 ३४१६ आडावाढ बजा

३४१७ ६ पासतुसार
 ३४२७ १६ दचक्के हैं
 ३४३० २२ पैदल और
 " २३ १२ननीन
 पृष्ठकअंक ३३४४
 ३४३४ २० काटमेखला
 ३४३६ १८ दिवपत्त
 ३४३७ ६ संगित सैन
 " २४ खड्गका
 ३४३६ ८ कट्योकछु
 ३४५० ६ साजय

पड़ना जानकर
 लैनकिये
 तिरानवे
 पुत्रीको
 आयरू
 गुरल
 उधर दादुर
 और उधर १०
 लगगी अद्रिन
 भूखेको निकालो
 हेतिबढाया
 हुरोंके
 अप्सराओंकी छाती पर हाग
 र वीरों की छाती पर परतलेलगे
 नाकफुलाये
 कानोंके
 सुराग
 निंदा सुनत
 तब नीचेकी
 अमरसु
 आदि से
 आरंभ होके आकाश में
 आडावाढ बजा अथवा हाडा
 की तरवारोंका ढालोंपरवाढब
 पासतुसार
 दचक्के हैं
 पैदल और
 १२ननीन
 ३४३४
 काटमेखला
 दिवपत्त
 संगित सैन
 खड्गका
 कट्योकछु
 साजय

३४५१	२१	मधुगढ में	मधुकरगढ में
३४६३	१३	बिब बंटन	बिब बंटन
३४७३	१४	कालतैं बल	कालतैं बल
३४८०	७	सुहीमन्नि	सुहिमन्नि
३४८५	१	योंकह	यों कहै
३४९१	३	आयहू	आवहू
"	२३	निमंत्रित किये	निमंत्रित किये
३४९६	२४	ला डाल देते हैं	ला डालते हैं
३४९७	२२	कहवाहे रूपी	कहवाहे रूपी
"	२१	जातपेद जोरि	जातपेद जोर
३४९८	३	धूम धीरनकी	धूम धीरनकी
"	८	विजय वेद	विजय वेग
"	२४	सय भर कचनार	सय कचनार
३५०४	१५	कटत करकी	कटत कीरकि
"	२५	मनी जाती है	मानी जाती है
३५०७	१४	पचरंगो डंडे	पचरंग भंडे
३५०८	२४	डडती है	उडती है
३५१२	१४	फैलनेस	फैलने से
"	"	चंद्रमाक	चंद्रमा के
३५१६	३	उदयपुर	उदय पर
३५१७	१	कटिगय	कटिगय
"	२५	पीलण के प्रहार से	पींजण के प्रहार से
३५२०	५	समसेर भार	समसेर भारैं
३५२१	२१	बलिदान को है	बलिदान को लेते हैं
३५२३	८	कयोधन	कयोधन
३५२६	५	जै नृपतिहू	जैपुर नृपहू
"	१७	यहैरु	यह रु
"	२६	निर्मय	निर्मय
३५२८	१०	जीवन अच	जावन अच
३५२९	१०	ईश्वरिसिंह	ईश्वरीसिंह
३५३०	१४	बुदीन बिरुद	बुदीन बिरुद
"	१२	अरघ्यो	अरघ्यो
३५३१	१४	कर्मराज	कूर्मराज
३५३२	२८	तीनसो ३०६	तीनसो छै ३०६

३५३१	११ रवायअसि	खायअसि	३७०६	३ अचदता	अचदात
३५४३	१६ जयपर	जयपुर	३७१२	३ अंतर ननहू	अंतर सुनहू
३५४६	१६ दिक्खनरहि	दक्खिनरहि	३७१४	१८ समयमित्रसे	समयके मित्रमे
३५५५	६ यश? दम?	यश? अरुदम?	३७१५	२६ पुत्र	६ पुत्र भयवा भाई
३५५६	१४ चित्रकूट?	चित्रकूट?	३७२४	२७ मटका कट	मटकाकर
३५६१	१५ भटसप्रीति	भटन सप्रीति	३७२९	१ लहिरायकछु	लहि रोग कछु
३५६८	२४ लोगों का	लोगोंकी	३७३१	२४ गोधूंदेकाराजा	गोधूंदेकाराज
३५७०	२६ इयडेभाईको	इयडेभाईको	३७३३	२१ इच्छावाल	इच्छावाले
३५७६	१ संग्रामवि-	संग्रामवित्सा	३७३७	१ पठवाये	पठवाय
	त्सादि?	दि?			
३५८१	१० के लगगत	कें लगगत	३७४०	१५ तिनमें सुनी	तिनमें सुनी
३५८७	२३ शुक्लपक्षको	शुक्लपक्षको	३७४३	१० फिफ्फ फलतें	फिफ्फ फैलत
	द्वितीय	प्रथम			
३६०५	१६ बैरतीन	बैरतीन	३७४५	१४ यहाजरका	यहाभरका
३६१०	४ द्विजदीनकी	द्विजदीनके	३७४६	१३ चमउदैपुरकी	चमूउदैपुरकी
३६१२	२१ ६ राजा ने	६ गलेमें राजा	३७४७	२६ इसकारण	इसप्रकार
	विष खाया	ने विष खाया			
३६१४	१० भक्तभयो	भक्तभयो	३७५१	१८ भरतसिंह	भारतसिंह
३६२६	१३ सब अरज तब	अरज	३७५५	१६ व्यय औसी	व्यय औसो
३६३४	१६ तुम्हारे पिता	तुम्हारे पिताने			
३६४४	१४ फखों को	धारण करनेवाला		फखोंको नीचाकरके	फूटकार करने लगा
३६४३	९ चाहवाइ			चाह वे चाह	
३६४६	६ पापी छकै			पापी छकै	
३६४८	१३ खेलहे			खेलहैं	
३६५०	३ मात तब			माततब	
३६५८	२५ राजावतविक्रमसिंहके	लिथे		राजावत विक्रमसिंह से	लेकर
३६६७	२४ कुंभफलक			कुंभफलस	
३६७८	६ तमकेईत			तमकेईतैं	
३६८४	२३ गिरतमार			गिरतभार	
३६८६	५ सहन मार			सहनमार	
३६८८	११ पौनछेहि			पौनछेहि	
३६९०	१७ क्रीड़ामें ऐस			क्रीड़ामें ऐसे	
३६९१	७ परतापतियन			राजसिंह तियन	
३७०५	१३ मंडि मंत्रन			मंडि मंत्रन	

॥ अजितसिंहचरित्रका शुद्धिपत्र ॥

पृष्ठ पं० अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ पं० अशुद्ध	शुद्ध
१७६० ६ लहँ दैर	लहे दैर	१७८२ १३ मविसं	मविसं
१७६२ ३ बाधनवारेकीवहुरि	दोहाबाधनवारेकीवहुरि	१७८२ १७ गजपारि	गजपोरि
उदयभानुकुलधारिदोहा		उदयभानुकुलधारि	
१७६५ ४ संखपै	शृंगपै	॥ १८ संतपञ्च	संतपञ्च
७६७३ ११ गिरागकै	गिरायकै	॥ २५ देखोगे	देखूंगा
१७७१ १५ छैनगयो	छैनगये	१७८३ १ उदयो नहि	उदयो नहि
१७७१ १६ प्रमुदिन	प्रमुदित	१७८८ २१ [अंतर]	[अंतर]
१७७७ १५ नजरनिवेदि	नजरनिवेदि	१७९६ ११ बोभविष्याहं	बोभविष्याम्यहं
१७७९ १५ है अजमेरु	वहै अजमेरु	१७९८ २१ राजाका	रानाका
१७८० ३ भणायपुरभय	भणायपुरभय	१८०३ ३१ निजपातिमंगे	निजपातिमंगे

॥ विष्णुसिंहचरित्रका शुद्धिपत्र ॥

१८१५ १९ सन्ध्यापहँ	सन्ध्यापहँ	१८०८ १५ सिंचरित्रे	सिंहचरित्रे
१८१७ १० कोटपति	कोटापति	१८१० ५ अमात्यरनैलै	अमात्यरनैलै
१८२२ २१ अनियारा	अनियारा	१८११ २५ जनानसे	जनानासे
१८३३ १६ कीमोही	कीमोहो	१८१७ १३ देवासिंह	देवासिंह
१८३६ १ धारनही	धारनही	१८३१ २२ बर्मा१मास२	बर्मा१सामन
१८४० १६ फकड़नाहै	फकड़नाहै	१८३५ ६ सन्ततसंग	सन्ततसंग
१८४१ ७ कन्याजाम	कन्याजामें	१८४४ १० बघाइमैं	बघाइमैं
॥ ११ मगहीसों	मगहीसों	१८४७ २६ मिससे	दर्शनके मिससे
१८५२ २० रघोपुर	रघोपुर	१८४८ २७ रत्नाहोरमैं	रत्नाहोरमैं
१८६१ १३ रीतिघटी	रातिघटी	१८५७ १२	
१८६७ ११ साँझके	साँझकीके	॥ २६ विष्णुसिंहमे	
१८७२ १ माँहिराखि	माँहिराखि	१८६५ ६ टेकीलागे	टेकीलागे
१८७७ २३ रघुपुर	रघुपुर	१८६६ ६ शाहलमार्थ	
॥ २४ बअलपुर	बअलवर	१८७२ १२ बहुत्पां	बहुत्पां
१८८० १० कहाई	कहाई	॥ १६ नारिनकाँ	नारिनकाँ
॥ १४ मुरायसो	मुरायसो	१८७९ ८ निचोरिडारिनिचोरि	निचोरिडारिनिचोरि
१८८४ २० मराहुआ जाना	मराहुआजानो	१८८० ६ भाकल	धूकल
१८८२ ११ कीराजख	कीराजखां	१८८६ १० पापदर्पपर	पापदर्पपर
१८८३ १६ माताका	माताकाभरना	४००७ ५ आहिक	आहिक
१८८० २३ नायरूपी	नायरुकी	४०१४ १२ वपदसादि	वपदसादि
१८८३ ९ तपही	तपहि	४०१६ २१ अलतरलोनी	अलतरलोने

॥ रामसिंहचरित्रका शुद्धिपत्र ॥

४०४३ ४	प्रसिद्धत्रिया	प्रसिद्ध क्रिया	४१६० ४	जवओघ	जवओघ
४०४४ २१	भस्मीभूतस्य	भस्मीभूतस्य	४१९४ १४	राचि२प्रकाश	रोचि२प्रकाश
४०४५ २१	आकारबले	आकारबाले	४१६७ २१	समंतिदेखकर	समंतिदेखकर
४०५७ १०	दसम१०माँहि	दसन१०माँहि	४१९८ ४	‡बै	‡बै
४०६४ ३	विधिपह	विधिराह	४२०० ५	दुकूल	दुकूल
४०६७ २५	सधि के	संधि के	४२०६ १६	मांडा के लोग	मांडा के लोग
४०७० १४	ताँहँ	तँहँ	४२०६ १८	अंतर	अंतर
४०७१ ६	पराधनि	पराधीन	४२१३ १४	मुक्तराज्य	मुक्तराज्य
४०७४ २५	कताहा है	कहाता है	४२१८ २०	माग में	बाग में
४०७७ २२	विष दंड है	विष दंड है	४२२६ १२	छित्ति२लदाव	छित्ति२लदाव
			४२२७ १७	बहुपुत	बहुपुत
४०८१ २५	केसवाला	केसवाली	४२३२ १२	सगहमना	सहगमना
४०९५ १५	१५आराग	१५अराग	४२३६ २३	नहा मालूम	नहीं मालूम
४१०१ २३	सभाकोमिटाओ	उसकोमिटाओ	४२४७ ३	ताबूलकार	ताबूलकार
४१०३ १७	पावरा	पावरी	४२५८ २५	खाली गय	खाली गये
४१०३ २७	माधवसिंहने	माधवसिंहके पिता	४२६४ १७	वर्णसेसंबंध है	वर्ण संबंध है
		जालमसिंहने			
४१११ ७	आपलल	आपलव	४२६५ ६	कालपलल	कोलपलल
४११८ २४	कञ्चन के	कञ्जल के	४२६९ ८	बुन्दितजि	बुन्दियबिताजि
४११६ १६	शुडमस्तकके	शुडसेमस्तकके	४२७४ १५	अत्मरूप	आत्मरूप
४१२० १३	१शुडके	१शुड के	४२७६ १४	प्रकृत भव	प्रकृत भव
४१२१ २७	जोवहीकभर	जो भीक भर	४२८५ ३	आयुप्रवीण	आयु प्रवीण
४१२४ १	भल्ल तलाट	गल्ल तलाट	४२६२ ४	परान बनाय	पूरन बनाय
४१३१ १	अंचभयो	अचंभयो	४३१० १५	वसु भारि	वसु शूरि
४१३३ २३	गोलाकरनाच	गोलाकारनाच	४३२४ १३	सनपात	सेनपात
४१३६ २७	बोध होता है	बाध होता है	४३२७ १४	द्विजनन	द्विज जनन
४१४९ १९	छोटीवर्गीचियों	छोटीवर्गीचियों	४३३९ १५	ताजेजेके	ताजेके
४१६१ १५	चित्रदवल्लै	चित्रदवल्लै	४३४१ २४	कपमँहँ	कपमँहँ
४१६५ १०	द्वैरगर्नी७	द्वैरगर्नी७	४३५४ २२	भाडपुनि	भांडपुनि
४१७० २६	धुरको	धुरेको	४३६१ २१	सिहको	सिंहको
४१७५ ६	पैठेसज्जत	पैठे सज्जत	४३६२ १४	ग्रतासुभई	गतासुभई
४१८३ २६	अटेरने	अटेरन	४३६६ २		
४१८४ १६	समीरकाप्रदेश	समीपकाप्रदेश			

